



रेबोच्चेन २०२० (आर्थप्रादेशिक प्रतिनिधिसमा प्रजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र) Bayd. '

वर्ष २४ अवंक २)

२९ पौष २०२० स्विवार ...देशानन्दाच्य १४०-१२ जनवरी १९६४

(तार 'प्रादेशिक' जालन्थर

### वेद सक्तयः

#### कर्म कृतवन्तु मानुषाः मनव कर्म क्रवे स्टे । मान्य-

जीवन कमें करते के किए विका है। कमेरील मीर कमेंगोगी जनना ही मतन जीवन का रास कात है। किरनार कमें करते रहना ही मनुष्य वा कर्जन है। प्रतत्त्व, विराधा तथा अनुह कमें राख स काने हैं। देद ने कर्मगोग का सुप्यद अन्देश किया है—मानव चहा काम करते रहें।

रीं मी अवन्तु आपः वे जह इसारे किए सुकारक क्या क स्यापकारी हो जह जीकर केहिए वहीं वार्ती केहिए हे केहिए हे केहिए हे केहिए हे कहें है कहा कि किस का का क्यार कर्यों कर में (क्या क्षार कर्यों कर में (क्या क्षार कर्यों कर में (क्या क्षित सारिक एक्य है।

#### चोषधीः शिवाः

ये सारी सीयपियां, बड़ी-] यूटियां, मनस्पत्रियां हमारे शिल मन्युक्त मती वाली हों ने यून-स्थित वीचन के सामा रोगों को हराकर साम्य्य महान करती हैं। मुझे और पुटि को देने वाली है। अस्पत्र-] ने हमारे शिव क्या छुल मुझे मंत्री कर बारों।

.¥...

#### वेदामृत

### त्रोश्य ससुद्रादर्गावादिव संवत्सरो स्रजावत । स्रहोरात्राम्यि विद्वविद्वस्वस्य मिषठो वशी ॥

कर्क् १० मं० मु० १९० मं० २ कर्ष :—उसी परनेश्वर से ही (सनुतार) सदुद्ध से (कर्षवार) करू वाले (क्षांत्र) केले (संवतार) करन, महीने कारि समय (क्रवायन) वैश किये पथे। वीर, उसी ने हीं (ब्यहोरावायिक) दिन कीर राजी की

(वा (क्ष्म पर) मार्ग्य कार्य ही (म्ब्र्ग्य कार्य) हन कार राज्य का (विद्शुल) नताना, (विद्युल) क्षम को यह परमाला (मिन्त) जनने सहय लामान से (वर्षी) करने वहां में, नियन नियम में रजने काला है। बाव :--बानव ! ठले किस बता का क्षमियान होशा है ? यह

हो पर मीठर काव के सकत गया न कोय। के के के के के के के के कि कि के के के के के

### ऋषि दर्शन रुविकराय बद्यारी नम

एर नकरा च नक्षण पान सब से सुन्दर, जारे ठथा और मैं ब्यानन्त् अर देने वाले उस नक्ष ठथा महान् ब्रह्म को नसस्वार है असी की अधित करें. तथी से ब्या

#### श्रमे तथा वसी से प्यार करें। गुसान् महा देहि

सुन्ति महा दक्ति हुने र तुन्ति करा करा करें। औं को बनाने बाले जिसमें भी उत्तर गुज, कर्न, स्वभाव हैं। बाप कर कार्याकों से समें अभावकों

#### दोषांश्व विनाशय

प्रदान करते रहें।

जिनने बोच हैं, दुर्जूब हैं, व मेरे जीवन को गिराने बाते, विव कृते बाते, दूरिक करते वाते कि भी हुए कर्ने कीर स्वचाव हैं, वि से जीवन का बतन होता है— को द प्रतिकार ! दूर भगा वें उनका नाम कर देनें !

#### सुखस्य मार्गः

जीवन में परत्या की ज्याध स्रोतन करता सुक्ष का मार्गा यहां केवलमात्र थंक येता साधन किस से सारे दुःस दूर होते व स्व प्रधार का सुज मिसला है। आज्य असि का

\*\*\*\*\*\*\*\*\*

वेद की इस पवित्र शक्ति में भागवमात्र के जिए अपनी आपु की शेथं दरने का उपदेश किया गया है : 'यहो ने में शतमं कर्म' मान्या क्षत्र के उस अपन के प्रान्तरार से क हमों के द्वारा जीवन की डोरी की विस्तत किया जा सच्छा है। अर्थात हे मानव तु साबस, शविक एवं कार्थिक संस्त्र कमों के क्षारा व्यवनी क्राय लम्बे समय तक चळाने में समर्थवना। मनुष्य की अन्य घोषाता में वहां प्रास्था कारण है : इस से बहुत अविक जिल्लाचा अस है। व्यर्थपति से यह भी सिद्ध है कि अपने जीवन सुनार में पारकव कर्मों की अपेता किवसाय करें श्चिष्ठ सहावड वर्ष नवदोवी है काध्यारमङ, श्राधिमौतिक एर् आधिदैविक यह दुःली की जिपुटी है विश्व से प्रत्येक जीव सकत होने में सतत प्रवस्तराति है। ब्राट वहां ध्याच्यारिमक दुःली के वक पहल पर हो संधिया जिनार करना है। सदस्य की बाव डानि में शहल स्पेत्। कारण उसका मोबन दोवा है। बायवेंर ने मनुष्यों को पहलियों को बावनधान, पित्तप्रवान तथा रतेश्म प्रधान के इस्त्र में तीन जगह विसक्त किया है। किस प्रकृति वाले के लिये कीन-से चान में कीत-सा पदार्थ अनुकृत होना तथा कीत सा पराये विदश्स वदि इस विचार पूर्वक भोजन किया जाये तो कायु भोणता से बहुद अंश में इस सब सक्ते हैं। उदाहरसार्थं इतेध्य प्रक्रचि के लिये तथा। तथा रख प्रदार्थ साभपर होने हैं परन्त पित्त-प्रशीत के लिये नहीं। इस में ऋतु परिवर्तन तथा जलवायु के भेद से पदायं भेट हो सकता है। इस के साथ न वर्ड पदार्थ विरुद्ध तुमा नाले होने से एक साथ साने पर इर्शनशर होते हैं। प्रवि लीर व रूप के साथ मली दा दही आई बाये तो उत्तम होने पर भी हानिहारक सिद्ध होती है।

धार्मिक सर्था--

ले॰ पं॰ सत्यप्रिय जी शास्त्री सिद्धान्त शिरोमसि प्राध्यापक---वयातन्त्र बाहा सन्त्रविकासय विभार

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* इसी दृष्टिकोस से अम्सीय संस्कृति योजन करना, वह अपनी प्रवित्र को जनावा परम्परा रही कि कराई वा होवा चार्डिये । आवके पत्नी का सर्वाधिक प्रसरदाविस्त सामने वांदत रुमाई का होता पूर्व कार्य स्वयं अपने हाथ से चादिये । आएके सामने पश्चित्र भोजन बनासर ऋपने पति तथ वर्ष बाजे बाय के दश से जही स्थीत बच्चों हो जिलाना या । वर्गोहि हैं वो साने पर हानि विलक्त न महर्षि दयानस्य सरस्वतो ते जिला करे, किन्तु यहि चोरी आरी कि दिल्ली को ब्यावर्धन प्रवास परना रिक्वत क्या बलेक के पैसे से सती है से बह भी समस्य है। इस के साथ चर्राहेष, क्वोंकि ने आवर्षेद्रानसार भोजन बनास्ट कपने परिवार को रोगों से बबा सहती हैं। पैशां का भव है कि सनुष्य के बाधे रोम तो उसके भोजन से होते हैं। इमोलिय वायुर्वेद का मत है कि 'कोऽन्ह वर्षात् मोरोग कौन है ? इसका उतर दिश कि 'दित मुक्, मित नुक' सालिक पहार्थ बाय हो सम्बा श्रत सक्षे व्यर्थत तो निम्न मोजन बरने बाते होते हैं, साथ याता है। ही सारिवड भी होते हैं, इसी लिये 'दित मुद्द' झपती प्रवृति के वेद में पंच गव्य सेवन की महिसा धनकृत पदार्थों का ही सेवन करने का जिल्हा बराँन है। कई लोगों का राका । नानजीतिये सीर वा हलवा विवार है कि गोंदुरंथ की स्रपेता हैं, वे दराये साहित हैं तो भी उस भेंस का इब शकिशाबी है, वे आहि व्यक्ति हे लिए रही हैं, जिसकी में हैं, इस में यह अगाया है कि प्रवर्ति के प्रतिकृत हैं, इसकी मी वाय का बच्चा उल्लब्ध होते ही महर्षि ने अपने सावार्थ प्रकाश में बदलने कुदने लगता है जब कि अध्यय कोर्ड में गिना है । मिपे पेंस का बच्चा थड़ें दिव में जमीन इसैम्ब प्रकृति के लिए भएन हैं किंदु से उठता है, क्योंकि कमधीर है। वे ही पित प्रकृत के लिए सहया वेल बहुत कार्य करता है, दीतवा

'मित सुक्' जितनी मूल हो व्यक्ते विर्वत होने का प्रवस प्रमाग उससे कब अम हो सावा उस्के, है। बाब के सहगाई के युग से साम इसीतिर मामीना गृह सोगों का लो दे बहु-सूच्य पहार्थ प्राप्त न हीं कथन होता है कि जब एक रोटों की तो भी रस्त गर्मी मूर्जि पर अमृत्य मुख रोप हो तो बालों से हाय कीच चीर्यादवें खड़ी, हैं जिनका महत्व हम तो. देस्रो, सम साने हे दोई नही नहीं समनते और वे वैसे ही सम सरता, हां अधिक जाने से अवस्थ । अती है। काथ अस गोलस् बहुत मर जाता है। -तम रहे हैं। इसका उपयोग स

होती हैं।

'बत मुद्' ब्रीकृ सालिक बानवे से वह व्यर्थ बाता है।

रारद् चलु में शोसक को सुसा कृट बीस इट उस में थया शक्ति प्रत 🗲 क्या मीठा सिवा कर प्रतिदिन प्रापः योहा २ साने से दीर्घाय्यु ६४ कवा-दस्य में बहुत प्रवशेगी है। यदि निकंतता-दश पृत न मिल क्षके दो कित का तेख मिखा में, वह क्रीर भी गुरा कारक होता है। सरद बतु में शारः नवसा एकाम पेर लेता है। यदि सर्व ध्यीवधियों को विसाधसी देखर प्रविदिन प्रतः हो रीन मास काली मिर्च पीस कर राद शहदु के साथ थोड़ी-सो केर्र रहें तो अस्यूचम गुणा कारक होची है। जब तक यह वर्श आहार के ही मांकारि भी व्यवस्य है होटि में- विश्व में रही, काव मोहा-सा का जाती है, नवोदि यह विला विहार के विषय में भी विचार हिंसा के बाज नहीं होता, हमरे | किया जाता है। प्रतिदिन प्रातः स्व उसके भरूए से सनुष्य की कर स्वान भी मनुष्य के दीर्घाय में क्ष्मि हो जाती है । इसीलिय परम सहाक्क होता है. परन्तु वह मुनियों का कदन है कि 'पूर्व वे 'शीवन एवं वाजे जब से हो वो कानुं कर्नान् पृत दुस्य कारि: कीर भी सुवा कारम होता है। स्तान से पूर्व दाँद न्यून से न्यून सक्षत्र में एक बार सारे शरीर पर वेज की मालिश हो से वश्व जाय-पर होती है। आखर्वेद का तो यहां वह बहता है कि अपवादश सर्व देश गरेंगे न सम्बद्धे" अर्थात गरेंन बरने पर सामों का हेल की से दवा रका अधिक काम वह होता है। पक लटांक तेल मालिश द्वारा शरीर में पहंचने ५२ जनना क्षाम करवा है किउना कि दश खटांक घो पक जाने पर करता है। कई सध्यनी के करने पर हानि कारक सिट है, बरन्तु भेंसा योड़ान्सा कार्य प्रात: मश विसर्जन का स्वयाव नहीं होता. ऐसे व्यक्ति वदि स्वताव क्यमे वर हांपने लगता है, बह क्षातें तो क्षाप्तन पर जानी है. श्रम्बया प्राप्तः उठते ही मुद्द घोष्ट व्यांवलों का शुर्व बोड़ी मात्रा में वाजे अन के खाय सेवें, इस से मक यो उत्तरेगा, आंखों में व्योति वृद्धि काल काले रहेंगे तथा बीवें रखा में परम सहावध होगा । स्तान से पूर्व सुरा, जाड. काम कारि कव वर्षों को स्वथ्य जन्न से साफ करें।

(रोप प्रव्ह ४ पर)

सम्यादकीय-

### त्र्यायं जगत

अर्थ २४] रविवार २०२०, १२ जनवरी १९६४ | अंक २

### मकर संक्रांति पर्व

के तहा, फार्स के प्रायाः कार्य वह-

कर्वात-कस को श्रक नहा है, यही

कार्य सम्बंध कीर आर्थ जीवन | हमारे शास्त्रों में विस्ता है | कन्ध क्षे पर्वो का बढ़ा महत्व है। तमव २ पर काने बासे वे सारे विविध त्योद्वार पर्व सारे समाज में गर्-मोधन की भावना मर देते हैं। स्त्रेचे पद्मे समान में नवचंत्रना. प्रवास में रक्षा का संबाद कर देते हैं। इसके विकिथ रूप हैं। किसी का सम्बन्ध राष्ट्रिय सहापुरुषों के दिस्य जीवन के स्पूर्तिदायक इतिहास के साथ है और किसी का चत श्रीसम तथा किसी का पुरातन संस्कृति के प्रचार न प्रसार के पनित्र मंदल्य के ब्रुव की बारवा करने का द ( माना शकार की धाराकों में क्सार्थ सन्दता के पर्व मानव का प्रकाद बहुता चला क्या रहा है। ये सारे पर्व हुनारे समाज के जीवन क्रांग ही यन वसे हैं। ये मृत्यूर पाठ पदातं बाली प्यारी पुलक के सनान मात्रा में वर्ष हो कर सारा देश बहुत इस पढ़ाते, सिलाते कीर बार्वे बताते हैं। सारा समाज मकर संकांति के

में लोइडी के नाम से पुढारा आशा है। इस पूर्व का सार्व जीवन मैं वहा भारी महत्व है। सरदी दीजी बना तर बाते थे। की भौतम चल रही है। सुवं की विक्र में मिलवी तो है पर पूरी वरह अर्दी मिल पार्वी । सरवी के कारवा भारी दा भी सारा जीवन सिक्ता र उपना है। संदियां को दी गई है। बीव अंदर्श के रूप में मूर्ति से सन कर उपर का एके हैं। किन्तु अधिकत प्राया शक्ति का संचार करने वाक्री इस सेवी की प्रमु प्रदश वर्श

के पर्वे की मना रहा है। इसे पंजाब

### देवता की जन्मशताब्दी \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

कार्य जनतु के तह सप्ताह के में सभा द्वारा पत्र प्रोपत कर दिवे इंड से सभा के मान्य नहामन्त्री । यथे है तथा और भी सन्त्रनों को ही ला॰ सम्बोधशय की हारा समी । बांबाइन पत्र भेगे जा रहे हैं। तमे समाजों, संस्थाकों यन भाई बढ़िनों वर्ष की नरी धर्मगी के साथ इस की सेवा में प्रभावशाली राज्यों में महान कार्य को सभा ने अपने हाब माध्यक्षक निवेदन रूप वें सूचना में लेकर काम इस दिशा में शहरम प्रकाशित हुई है जिस में सारे समाज भी कर दिया है। ये सात कात का त्यान इस वर्ष काने वाले कवत- | महीने समा ने इसी बाले जबन्ती ं ६र मास में (क्योमूर्ति बीवनवीत- के लिए शिथे हैं लांक यस त्थारी शास गांच है इसी के बाबार पर । हाती, क्षेत्रेजी पुन्द स्वर्गीय महात्वा , क्ष्रिकेशी देवता के जीवन के कत्-. इंस्राज जी की की वर्धन जनम-जीवन शक्षता है। इसी जिए व्य नियान व धर्मेज्य था कि इरक बहत शकारी सभाने के शास्त्रार समा-रोड की क्रोस दिसाया गंबा है। पपदासी। स्नाज का संगरेशी में कार्य शर्वांगुक सभा के सारे मान्य अवशा को दिया जाने वाता as Grow more food-हर्ताक्षारों ने गम्भीर विचार के बाद इस सहापुरुष को बन्मरानी के नाश व्यत्नं बहु-स्वीत का काया अनुवाद मध्य ही है। ग्रहान जीवनपर्व को बढ़े ही शान-हार देश से फ्रांसस भारतवर्गीय क्रमाद संबन्ति अवस्ति करण से स्तर पर सनाने का निस्तंत कर दिय प्रांक्षियों का पासन होता है और यह है। इस कार्य के लिए एक अप-क्षम्य पर्जन्य से नेपों की वर्ण से स्त्रिति का सदल कर दिया गया है होता है। समय पर वर्ष से कन्न जिस जपसमिति में वहेर नेता, भी बहुलता होती है। दर्ज के लिय मान्य क्रम्भवी समाजों न संस्थाकों वज्ञ सब से सुन्दर साथन होता है। के क्योपार संपासक प्रतिन्दर पुराहन युग में विविध युद्धों के स्थन-विदान तथा मंत्रे सकके हर गाउँ फान के कारम हो सबय भीर पहिन शामिल हैं । बहरों की सेवा हो आही है। इस जिए इस पर्वे पर अन्न धन से बाला साथ हो आता रामें शहकों का, किस सुद्र का विशेष है। यह वर्ष यज्ञ का पर्व है। सारा पदोग होता है। क्रांत्व से भी कार्य राष्ट्र अपने र सहल्लो में इक्ट्रेडी हेते हैं। यह नहीं को सारे समाव सर वज्र करता था। शब्बे दश्र के को चैंहरत मा कि चाहे यह कितना क्षित हर दक्ष चर पर आ वर यह भी अन को उरहा करने में हिमपात के लिए कोई न कोई समिधा या करत बड़ीय सामश्री क्षेत्रे के किए करती है वर इस दम स्राप्तमय त्रमुक्ते कता शक्ति है यह तथा क्यात भी इस का विकृत रूप श्रीतिक क्रसित अपी तज्ञ के द्वारा हमें दिशाई देश है। वच्चे झात व्यं तार्रं काविक परार्थों का प्रयोग भी घर २ आ कर कर्नाइची इन्हें कर के करो शिवित न होते । वर्ष क्र के उस दिन तोड़री बलाते हैं राजो इस सर्टी से जीवन पथ में क्य का से फिल्मा करा है वह सर्वी शरोह के रका संबाद को असा को वर्शनिक्य बनावेंथे। श्रार्थ समाज ' गुरुक्तल इसके भारी केन्द्र हैं। देवी है. अन्त बना कर अपना इस वर्ष को भूम बाय से मना कर प्रभाव दाल देती है। रस्त असर सारे राष्ट्र में चेतना सामाद मर समके थे। काज जितना भी राष्ट्र में की बड़ी भागस्वका होती है। नहीं शरीर की सारी किया शिविता देवे। त्रिबोद पर्

हर ही यह शताकी समारोह सनावा सा अहं। इस के सिए वेपारी का दर्श क्रीर पर्याप्त समय मिलना ही पादिए। इस इस महात कार को अधीकार करते दस दिशा में दर्शतया बिकारिक्रक परा कठाले के शिव सभा को क्षत्रिक वसाई देते हैं। रूआ के वास आही शक्ति है। कार्यसमाजके पात शिवस संस्थाओं को भारी शाबनियां बीजुर हैं जिसमें सालों बाव काक्रय शिका प्राप्त कर रहे हैं समात के शस सारे देश में सर्थन्य नेना टा. मेहरचन्त जी महाशन प्रसाम दवानन्द कालेल कमेटी देहती. हा. शोष्ट्रसचन्द्र सार्रग, ता. थी. एस. एस कावस सांसत्तर विकस वृश्य-सिटी, जा, दीनानचन्द शी रस. ए. कानपुर, पूज्य महारमा शानस्य न्यामी जी, पिसंपन स्वभ न सी बाइस पांसकर करणे व सनिवस्ति। महामना भी देवीयरह की एस. ए. सभा प्रधान, विसियन ज्ञानपन्य की दिसार, विकिएन भीसरीन जी बहस वस, व. जालन्धर, विशिवत सगवान वास की शोसापर, स्वामी भ बानस्व ही. महात्मा शासन्द भिन्न जी ब्राटि कितनी विभविषां हैं। आर्थ-बसाज का भगदार इसेसे मासामाल कारो ही कार्ने वको हर समाव है। कार्यसमानें, एक कार्नज बॉट

अर्थीक कहाता एकराज जी

(श्रेव वध्ड ४ वर)

### त्रार्थं समाज की त्रावश्यकता

(ते ० श्री शयामलात की आये दयानंद बाह्य महाविद्यालय हिवार) ++++++++++++++++++++

इस्ते हैं कि भव तो आर्थ समाव की प्रावश्यकता नहीं है आर्थ समाज सी वास्तव में प्राप्त **श**रवन्त आवश्यकता है।

आधीनह हिन्दी के उच्चकारि के विद्वान कवि रामधारी जी दिन कर बो कि मात कत M.P. है वन्होंने 'siran के चार श्रध्याय, मामव पुस्तक विस्ती है उस में शिका है कि 'स्रोतः' मर्यारा पुरुषोत्त राम की वहित थी क्यीर राम ने ऋपनी वहन शीवा के साथ विशाह कर के घोर बानधे कि स च्योट साता स्वयं राजग के साथ अपना चाहनों घी न वि रावग स्वय उठा ले गया। अवः 'शम' ने रादगा की मार कर दक्षा रावश की कोंहन की लाक काट कर

बहुत पाप किया। साथ दी साथ धक बात अभि है कि इस पुश्राय को मूमिका सारत के मन्त्रे पंत जवाहर साथ वो नेउस ने लियां है स्मीर भी ब्यान दो दिल्ली से

क्षम्युनिष्टें की ऋध्यकतः में 'सरिता' नामक पत्रिका निक्सी है जिस पत्रिका में भारत केसूत एवं शिक्षा मंत्रीमीतान क्षाप्ताव्का हाथ वा, उस में ज़िला जाता है कि प्राचीन र्शाय महिष सङ्ग्रहर्थ ये स्रीत वह देवताओं की पुत्रा करते थे इसी बकार मर्गारा पुरुषंत्रिम तथा वीविराम महात्ना कुप्छा पर अमेकी बटाव बरते हैं क्यीर अथर्वेड में जातृ टोना सिन बरते की करेटा 'सर्राता' नावक द्रविका में की बाकी है।

हा लिंद है फिर भी कहते हैं कि आर्थ समाज की क्या आवहनकता हे उपयोक्त अल्याभारों पर पाउड गवा ध्यान देते हुने यह कहते चाहिए।

दा बदास करेंगे कि काजबत सार्वसमात्र की कारवन्त सावदव-क्या है क्योंकि इस भानित्यां की हर करने में बार्च समान ही सफत हो सदता है अभ्य नह

मात्रस्य इसी पदार अञ्चलकानेक भ्रान्ययां फेली हुई हैं। जैसे के, एम. म'री की कारने में 'विशासकन' दामक संस्था सोशास्त्र 'वेर्ट्ड एव' नामक पश्चिका निकाली भी उस में विसा था कि वैदिक ऋषि गोमांत. तराब तथा व्यक्तियार से इत्यन्त वेज बरते में कर्यात दे गोमांस, शशब इत्यदि वा प्रधोग करते वे विकास में दिनक्स

देवता की जन्मगताब्दी

≾न्ब थे ।

(९८३ का येप)

शिया का प्रकार नहारा है-इसके किय साजसरोवर में । शिवा भी ब्राब वारा वसी क्वली त्वागो के सबंमेय यह मानसरोबर से निवास दर सारे देश में फेनो है । पर्वमान युग में निद्या हान की गया को

लाने वाले महत्रमा श्री देवत भगोरम सिद्ध हुए हैं । उन ध जीवन राणाच्यी धरमाम से सनाने के लिए सभी से जुट बानें। इस सभा तथा स्वातन्त्र कालेज कमेटी के तेलाओं से बारपर्व ६ नम्र शहरों में बदना चाहते हैं कि वे शास्त-

मरकार से विशेष निवेशन कर के इस जिल्ला के कादि देव की विशेष टिश्ट प्रत्यों के समस्य निकास बढ़ काम करना ही होता । सारी संस्थाओं, समाजों, सरवनों को इस बद्धान कार्य में वैपारी करनी

प्रातः स्मरगीय-महात्वा हंसराज जी की जन्मशताब्दी और हैंसं

कार्य प्रादेशिक प्रतिनिधि समा एताब उत्तरन्तर ने ४-१२-६३ को महारमा ईशराज जन्मराशाब्दी मनाते का विश्वय किया वा क्यीर साथ ही विश्व कीर स्थान कादि चुनने, सार्वक्रम बनाने कीर धन सबद्व करने के खिल एक उपसंसित बनाई थी। इस निश्तव कं क्रामसार उक्त काश्रीमधि के सर्दर्श की सेवा में दुवर्थ सवना मेती थी. इस शवना के साथ कि वे सदस्यका की स्वीकृति से समा को सुचित करने की कृपा करें और साथ हो। इस ऐसे सन्दर्श के लाम समार्थ जिस को इस उपस्थिति का सदस्य बनाया चार कि उनके क्षेत्रती परानशे नदा डोस सङ्ख्या से समिति का कार्य क्राने बड़े। साव ही सनोनीत सद्दर्श से प्रार्थना को थी कि वे इद्भी होर से संबंहत सम्बन्धी इस समान भी दें कि इन पर विचार बर्ट्ड कार्यश्रम की रूप रेक्स बनाई जाये । बहुत से सव्वजनी ने सहय स्टोझाँत प्रदान कर दा है। अनेक सदतनों ने अपने समाव भी भेड़े हैं। उसका धन्यबाद । जब उपसमिति की बैठक वसर्त जाएयी तो इस समावी पर उस में विचार करेंगे भीर इसकी सहादता से शदक्य तेवार किया जाएगा । परन्त कुछ सवतन ऐसे है जिन्होंने जभी वह स्वीतृति बदान नहीं की और न कह समान ही भेजे हैं। सभा ने उनका महात्मा भी का कन्य भक्त सम्भते हर उसकी सहारका जी पर अयाध अहा जानते हर ही उसकी सदस्य बनाया है कीर उनकी आर्य समाज की सेवा, फाय संबाधों से बेब को करर को सम्बान की दृष्ट से देखते हुए ही. उतकी सहाबता और परामर्श का मोल जानते और समग्र का हा क्या से प्राचेना को गई की। वन सहानुरानां से अर्थना है कि शीम स्वीकृति प्रदान करें, कुछ अपने निजा के जास भेज कि जो इस बहुत कार्य में सभा का इत्थ बटाय और कुंब सका व लिख भेज जिस से सन्दर, ठास, उपनांची कार्यक्रम मैबार ही सके।

क्या मुक्ते यह कहन को आवश्यक्त होन्से कि सडात्सा हतराज जो महाराज ने सारे देश पर सावारयातः कार पश्चाव पर विशेषकः महात उपहार किया है। उनक वपहार से हमारा सद दंशक्तिमें का बाल-कास बंधा हुआ है। हमें मगवाद से यह सहवतर दिया है, बाब्से इस इल्ड कर लें और उनके खुण से त्रस्य होने का दरन करें। मैं आनता हूं कि दनके प्रशा को चुडाबा कटिन है फिर जी फिसी इद तक सफलता मिल जाए --सन्तोषराज सन्त्री सभा वह यो प्रहोशान्य है। A NORTH DESCRIPTION OF THE PROPERTY OF THE PRO

श्राय र्यंत्रे न कल्पताम (वप्र २ का शेव) क्रवड़ा हो वदि हुम में ख़ुब पानी बरकर फिर बल से फोब्रों पर श्चीटे देखें । यह विया नेत्रों की क्योति में वृद्धि कारक तथा मस्तिष में शोकताता एवं शरीर में संबी वेतन्त्रा उत्पन्न काती है । इसके साथ २ ऋन्द्रा हो वदि प्रतः कास जो पांच पुमा जाये, इससे भी शरीर के रोय-रोम में नवीन रक्षें बा संपार हुआ है. । उस प्रधार का विद्वार की दीपांच कीने में अमूच कप्या होता है । इनसे भी क्रांबर बद्दर मनुष्य का मक् पर्व है। इस प्रकार का आहार

विद्वार अनुस्य के अग्रयमंत्रक्या में

बिद्धा का भी सम्बन्ध होता है। इस सम्बन्ध में इतवा वस्तव्य है वि बन्ध की बिद्र बच्च महत्त्व वह परी हो जेवी है. उसके बाद स्रोना बावन के लिए हिलकर बही है। गास्य जोमों के शिए मधावय शस्य या वर्ष ऋत कासगामी होना है। क्योंकि सहस्य के लिए वेद का यही जातेश है। इस प्रकार के वे हुव कर्म धर्मान् सुमानरण है वित्रसे समुख्य खपने जीवन को कारते महीर करी यान की स समय तक चला सकता है । यही क्रमर स-देश देर की शुक्ति में बनाया गया है । सतः, कश्याया-भिलाको मानको का कतस्य है कि के परस पिता के आदेशानसार - जिलोड पन्द्र अहावड होता है। ब्रह्मनय के साथ आवरण कर दीवायु वर्ने 1

किसी भी राष्ट्र की वास्तरिक उन्तरि एस राष्ट्र की व्यक्तिय विकास से ही नहीं होती बहिक यह भी देखा जाता है कि राष्ट्र पारिणिक, बौद्धिक भारत्यास्मिक एवं आस्मिक र्कात से विकास करता है। राष्ट्र की आवारक्षित चरित्र एवं भूतुरासन से बनले हैं। सात्र,विदार्थियों का जीवन जितन्त अनुरासनहीन, अनि-विशिक्ष और अववीदित हो रहा है तसदा संस्य कारस यसचित्र ही 🕏 । प्राचीन काल में शटकों के किए गुण, जसड़ और परम्पराधें निर्वारित होती थी जिसके कारण साद के नायकों में धीरता, सुग्रं-रता क्राध्तिनवा क्यादि सुधी कर समा वैज्ञाधा । यह इसोलिय क्रिया जाना at कि जनता के विश्व-दिमान पर भारता प्रभाव यहे इस से शिक्ष महत्त दर द्वापने शीवन की तत्त्वत

matre" i

दिन्स ब्राज फिल्मों के शावत को सब केंद्र सानी, पन का पीड़ा (कोकेटकार) 'बाबारा' 'शी चार सी । काला ओरे ध्रवसीय गाउँ शाला एवं क्षीम' 'प्यार किया तो वरना क्या ? 'महत्यत' 'शराबी' 'दिल ही वो हैं क्यादि यह-वेटियां समाने राले क्रक्रिय प्रकाशीने हैं। 'क्रिमत' के शायक ने देश के मितने होनहार ज्ञबनकों को समती पाकिटमार कक्षा से परिचित करावा : 'कवारा' के जायक में क्रियांने फानमें अंती सालायें क्री'बवारा'श्वरते स्त्रीर क्ततेमें गीरक की क्षत्रभवि कराई। भी पार से बीस' के नायड़ ने मृद, पोलं शबी कारि अवस्थों की गहरी आप सानव जीवन पर दाती ।

भू'ज क्य शहनाई' के नाथक ते नशा बन्दी भी कोर कपसर देश क्षे 'रीले' को 'जीले की कला' बतलाकर शरावियोंकी संस्था वटाने का प्रमास किया जिला की संस्का बंद्याना कटिन है। 'बाएविं विकास को देख कर किस्ते सार्थ से प्रापने गुरुवरों को 'नावधोटा' दे .रिया' इस शासमोदा देने का परि- लोड लगा पर्व दिनविचाहट के स्वकश—इस प्रकार सिनेमा के

### गन्दे चल-चित्रों से देश समाज तथा ग्रष्ट का पतन

(ते ---श्री बहुमतन्द भी विशास विद्यादानस्पति' हिसार ) याम यह निवश्त कि सहका सुना सी साथ करते हैं। बहित सी शर्द के नाथ क्रांश्रतेशकों के प्रति क्राएनी काहर निकाल दिया गया इस प्रकार

पूर्वय स्वरूत करती है इसमें जिली पलर्ड । इक्रम की समझ एवं रामें का मन्-इस के ऋतिरिक्त कात क यव नहीं बरती । जिनसे समात तवपक्त फिल्मों में यह देखता है देश राष्ट्र में निर्श्वयक्षा का मसार विश्व का नायक-नायिका से डोक-वर्ष खेब सम्बा मिटले जारही है । कार करना है, उसका पीका करना ब्राइस्ट की नगदुर्गतियां प्रतिपत्र है। गरे प्राचीय राजे शता है। के प्रमाय में ब्राइट देशे नहस्ते स्रोटियां बताया है इरवादि बारवाों भौरवं की बारखा करती है एवं ऐसे से बढ़ शाविकाओं से वेस करते मे बाब को पहलती हैं जिस में अनके सप्ता हो जाता है। तब वह नवयवद शरीर के बड़त से कंग तके हर भी सभी लोक अध्या को हो। कर नहीं होते। बनके ऐसे काओं वर्व परायी की को भारत न सम्रह कर

इसरे की कह-बेटिकों को अपनी वश्युवक गीध की मोरि छ बाय-बेटी त साथ दर एस नायद शोलों की आंति (भी से /हे हर होंदों पर टट पहते देशनालय है इन नवश्वतें वा कोई टोक तथी क्षीटियां बहाना घोरम्भ करता है यस्थित प्रत स्कावनियों का शेव है वो कपनी प्राचीन वेसमधा को वेते ही कहते में काले जीवन थी धन्य समस्ता है । यह नवयक मी वागकर पाइयाय नेशमुपा को चित्रमों में देले हुए दिलोप कुमार | कपनावी हैं । इसीविर चंदा दिखाई देने वाते यस्त्रों को धारश बस्त्री हैं के विकार बात, राज कार का जिससे कि देखबर तीव सुन्द पर द्भवारा ऐंद्र तथा द्वान्य जानकों की : स्प हों, उनहां करित अर हो वेत बुटे दार बानाने चादि का जावे। कावहल भी जनावतिको अयोग करते में ही वहें स्व की शांख ने यह सिद्ध कर दिया है और धर सम्भाता है। इस प्रकार जीवन में रही हैं कि बार पुरुष नहीं परुष तो वासना, सोलपा क्रीर वारिविक हम हैं जो कि सर्व जिर दिन्दशान पतन वैसे दोप का बनो हैं। पार्वस्थान सामक चोटियाँ सनावर जब्दिक से जिलेंस्डना का वसारे— बार्ट्स पर तोने के देखे मंह रण कर वशक्ति में जितनी फीरन परसी माची पर चाले हैं । बात वह वर्ष निलम्बीता का प्रसार हो रहा है या बर्धादित पुरुष गर्दन उठाकर बतना और किसी से नहीं, क्यों कि नहीं चलने किन्तु नवक्षतियाँ वय-न्यात तात कर पालती है तो बायहम से उल्लेष देशनी का इसीत होता है कि नक्यवरियां बाविकार वस्तियों से ही होता

है बाज वह आई अवर्त बहर के

तमध फिल्म में देखे हर विभिन्ने-

वियों हे सीरबे, बेराविश्यास, बेश-

त्रथ, सांद की त्रका चर्चा विना

प्रमान है।

क्रांतिकारी परिश्तंत की आप

क्वमान रूप से इमारा *व्यक्ति*गत क्रोडन करवना वश्वित होता का रहा है। प्रव सरकार ही अवशा की परिव करने के जिए जिलेगा पर क्षोलवर जनता का विनाश हेसा का कान तथा राष्ट्र को अध्योगित कैसे व हो ? वंशान प्रदेश के मुख्य मंत्री मरदार प्रवाप सिंह केरों के कहुंचे ने सन्त बाबने वैसे पर कुन्हाड़ी स्टिप वर्ष असवर्षय को नवटनजा **ल**हाँ ने प्रथम सिनेमा हाल हिसार में कोशा वह कितनी निर्माण्यल की यात है । सम्बद्ध सम्पूर्ण भारत वर्ष ने सराभग १००० (बार हतार) से क्रांबद चर्साथत्र (सिनेसा) गृह हैं। हो करोड़ से भी क्रांपक (२०,००००००) व्यक्ति प्रतिदिन च्छारिय देशको हैं चेबल इन्यूपस्थन**मट** (बल्लो शहर) में ही २७०००० व्यक्ति प्रतिदिन चलचित्र देखते हैं। एक कोर तो से व्यक्ति है जिन की सर क्षिट मोजन नहीं मसता दूसनी कोन्द सींदर्वर्श को देखकर कामाहर देश का 🕸 करोड़ शपवा न्याभियार के प्रचार में न्यव होता है।

साव इस वदार सन्दाबार खेर दराचार को दोत्साहर दिया जा श्रा है कि तम का उराहरता प्रापीन बास की सभावा संस्कृति में स्थान क्य नहीं। इस तहिमान सन्त्र**न ने** भी बहा है कि 'यदि किसी का फन नका जाय, कंगाल हो जाय के वह वनी हो सबता है, जलारव्य और क्रीमार त्यास्त हो संदर्ध है परन्त बो जरावारों है जिस का बैतिक यक्ता हो थका है उस का ऋगान नहीं हो समना।" जब शासक ही क्ष्मानारी क्रीर दरावारी हों के जनस का का रिकामा ?

जनसाके पत्र की होती—अव का भी मारत के शतकीतिक करन का प्रदेश सर्वास्त्र स्था किलो भी देश ने भारत की सहावता नहीं वी वनिक विरोध ही किया परनष्ट ब्यपने ऐसे बेशमुणा से वन्हें चेतेन इसारे प्रधान मंत्री औ प्रिविक्य करती हैं कि पुरुष तो इस हैं शुन नहीं । वह सब बलवित्र का ही वे करोड़ों हत्ये क्रकिंयमें पर सन्दे अन्य प्रचित समते हैं।

(क्रमशः)

इक्षाने देश को स्थानन हम १३ । बर्व का समय न्यतीत हो जुका है। ≤स करल में इमारे देश में आवि-बार, भाषाबाब, सम्भदायबाद तथा प्रसिवाद ने जिस प्रधार प्रगति थी डे और उसके शास्त्र डी कानेक क्रदार की जो प्रावस्थित धड़वार्य श्रदित हुई है उनकी ज्यान में रसते

हुए बाज श्रेजिक देशभक्त के अन में एक सम्भीर प्रदन तठ लहा हुआ है स्त्रीर बह प्रक्रव है देश की भाषा-श्रद स्था वाः ऐसा चीत-सा कह अन है जो भारतीयों में भावा-रसक व्हता की उत्पन्न करने का सक्य शाधन बन सकता है ? यही इस होस का निषय है।

≰स प्रस्त पर विचार **कर**ने से

वर्ध होते सान्य - समाज की *ब*बाबा सा सी कहा भ्यान हेना चाहिए। कथ्य प्राणियों प्याप और महास पांच : इनके बहुर ईवा हिली और महास में सहासी की सपेका सनुष्य में चिन्तन-शक्ति की वक देशी विशेषता है को उसे वो इत ५६ता दिसलाई भी पदशी **बनसे** श्रेष्टवा ध्रदान करती है । है तसका सक्त भारत संस्कृत भाषा ही रही है। इस्ट ब्रास भाषा क्सकों का समृद्द जब बनता है तो शाक रकता के सिर एक मामा का क्समें दोई निषय या चिलन-श्रीसता परिसांद्रव नहीं होती द्रावः **छक्षे 'समज' बहा** ताता है। परश्र अमुष्य शुरुाय कुल कारशों और जिसाकों में बंधा होने के दारवा फळाळ' के ता**म से** श्रमिहित किया बाल है। इस समाज के निर्माण के बाकी भावाभित्यांकत की सामर्थ्य हरने में समर्थ है। व्यक्ति सुद-डी प्रधान कारया होती है झाँद इस आवाभित्यक्ति का साधन है समझे अध्या । इत्रतः भागात्मक एकता की स्यापना के शिव माका की वकता क्रायन्त आयायक है। बाईकिस कें एक कथा काती है कि एक बार पृथ्वी के सब अनुष्यों ने

स्वर्श में बाने का विचार किया ।

केल्लीने एक बड़ा सारा एवं बनाना

क्रमस्थे किया । यह देश कर डीवर

के कोचा कि इनको ऐसा बरने से

### हिन्दी और देश की भावात्मक एकता

#### (से०-धी जमदेव जी आर्थ एम० ए० बहापूर) 000000000000000

शिक्ष पृथ्कार की बोलियां बोलने | वें बोशी और समर्था जाती हैं। उद्यां ब्रन्य भाषाओं के साहित्यकार क्ष्में और यक इसरे की मामा को वन २ प्रान्तों के ही निवासी हैं वहां सम्मने में कसमर्थ हो गए। हिन्दी के साहित्वकार सभी शन्ते इस प्रकार तम में शकता न रही क्रीप वे वर्ज को पत्ते स कर सके। में विश्वमान हैं। बंशश के मन्मय नाथ गुप्त केरल के रांगेद राभव बादे बह बहा सत्य नहीं पर फिर भी एक अक्टरब-वर्श उध्य की कोर देसे बराम्ही तेलक हिन्दी के साहि-संदेश संबेश करती है कि किसी स्थार है। समस्त देश में पर्यटम भी अकार की एवं ता के सम्पादनार्थ काने बाने सामग्री की सक्ताश्री अस्त की क्षत्रा शासना सावस्त्र मापा वह हिन्दी ही है । समी वीर्थ रे. काज सम्बोरश-वर्षक रेसने न्याओं क विश्वित्त्व होती के सोवी पर हमें विटेन और अमेरिका वैसे के कार्यसाय का माध्यम हिन्सी ही हो देश एक आधा-माथी होने के है। बानत्व में हिन्दी किसी एड कारण इतने थित्र नहीं दिसताई प्रांत की नहीं क्वरित सभी पांतों की दक्ते वितने सित्र कि एक ही देश है। वसकता में कार किया हिन्दी भारत के भित्र २ भाषा वाहे बोस्रो आती है तो बस्बई में बस्ब-

त्यार क्रीर प्रसार कावन्त सामर-में विंदी सीख रहे हैं। शक है। सद इस बदि सभी भागाओं राष्ट्रभाषा स्वीकृत किया गया है पर रहि समें वो इसमें कोई सन्देह परन्त कारकर्ष की बात वह है। कि की बात नहीं रहती कि दिन्दी ही इस कार्य को सांग्र-मांति सम्पादित

इस को यह गीरबपूर्ण स्वाब दिखाने में दिवी मापियों की झपेका झाहिंदी आधिको का शाय प्राधिक रका है। शके. प्रश्नेत द्वारि भाषाई स्वराव हिरी के सब से बड़े प्रचारक महर्षि या बहाराष्ट्र जैसे एक २ बान्त का दशस्य गुकराती में । इसी सकत हो बोध बराती हैं वही हिंदी मांपा यांची जी भी गुहरात से सम्बन्ध समल हिन्दु देश वा मोप इराती है। बड्डा बन्द भाषार्थ देवत १-रखते थे । बा॰ राजेन्द्र प्रसाद विकास निवाकी हैं तो दिंदी के प्राप्त को ४५ जोगों शरा बोडी वाटी हैं जीवार करने वाले खोकमान्य बढ़ो हिन्दी को देश की ४४% अनता बोसनी है। वहाँ अन्य मापार्थ रिसाद बहाराष्ट्रीय थे : १६६६ शर्स में सुदूर महाराष्ट्र में भूषण कवि ने अपने यह शह में भी बोली जानी हें बड़ी हिन्दी कई शानों की सीमाओं को सांपकर उत्तर प्रदेश को बहर जलाई थी। इसी शाधा रोकता वाडिय करः उसने पत्रकी शतनवान, पंजाब, दिस्ती, विहार, वे गोलाबी तुलसी हास ने 'राम

विका दिल से मोंचरी से केंद्र-राज प्रासादों तक में रहने बाली में समान रूप से शेरवा। भी। इसी भाषा में हिन्दी वी के *राज्य* से **कार्या**न संसरी में साक्षित रक्षता औ। मुनक्षमानी काल में भी हिन्दी को राज्य भाषा के रूप में माना शया । नहा राष्ट्र के नामदेव, जानेहबर, तुकाराम कार्य सभी सन्तों ने हिन्दी में हो बाहिरव रचना की। पंजाब में गुरु नामक देश ने नवा शक गोबिन्द सिंह में इसी माचा के हार एवता तथा बोरता का सन्देश दिवा । यह हिन्दी फिसी एक सन्प्रकाय की बी माचा नहीं। रशीम, रस लान तथा जायसी जैसे शस्त्रम कवियों ने एवं इ'ता अल्झा सां वैसे मिलाम साकित्वकारों ने भी इस माचा में साक्षिय-रचना की।

श की अभी से से दर बराबर

बनसग एक सहस्र वर्ष से हिन्दी दिन्ही । वदि ऐसा न होता तो माज ने ही लोगों को अपनी सोर माक-सदास में इतने हिंदी के चार्याच्छ विश्व किया है। गरिसाम सथा क्रिक न वयते । केरस में ३० प्रतिशत शासकों ने भी हिंदी को राष्ट्र माथा लोग कब्दी ठरड से डिटी जारते के करा में शरीबार किया था। बरावर है। महाब में भी जोग वही संस्था में बहत समय एवं बीक्सी जाने के वारम्ब से ही गुरुकुत कांगडी तथा ही. १, वी. महाविक्यतलों ने उच्च-ब्रात नित्री को स्थियान में तम शिचा के निये इसे मानाम के रूप में स्वीकत किया । ब्राज किंती में किसी भी विषय पर पर्वाटत उत्तय-कोटि का साहित्य विश्वसान है। इस की लिपि वेबनागरी संबंधिक त्या उसे सस्त्रत जैसो भारतीय आवाओं की अपनी भाषा की जिल्हे होनेका वर्षे शाप्त है।उसीसिक पिस्तरे हिनों सबंबाया सम्मेतन में दिन्दी के एवं का सभी भाषाओं के साहित्यकारों ने पृष्ट किया वका हिन्दी की उसति की सम्य समी यारतीय माशाओं की उन्नति का कारक बतजाबा। बास्तव में देश की आबारशक एकता के सम्पादक इसे आपाने माध्यमसे राष्ट्रीय पेटना है संस्कृत के पश्चार पाँच कोई याचा समर्थ है तो वह हिन्दी ही है, इस में कोई सन्देह नहीं हो माना में जेद बर दिया । वे मध्य प्रदेश बार्डि कई बढ़े र प्रांती परित बालत' जैसा बरवर सन्द सकता।

### क्या हम पर्गा स्वतन्त्र हैं

(ले॰ अरुम शास्त्री 0.1, थी. बार कालेज रोहतक) (यशंद से धाने)

धौर मान सिया जान होती. वी को सिंहासन में न स्थ हो तो स्था संबंधों के झाने के पूर्व मां को बबो वह भी सिंहासन स न विठा सद्देश्य के क्षिप्र इसे बर सभी चंत्र ती ताली वे। वह प्रदान हतना प्रदेशा । भीर वरिष्ट स्वत्या विकास के

प्रसार्व हम घोडार प्रसार काते तो क्या काञ्च यह दिल्ही के किसान मडी हासशो थे।

फिर एक मात यह भी है कि प्रान्तीय भाषा कोई में हो हार की भवा सो दिन्दों है क्रीट जिस्ते से पेश परतन्त्र हुए स्थतन्त्र होने वे **प**रुवात् क्या सभी सी राष्ट्र आव व्यवनो मातमाचा वही है।

क्या इसके कारण इमारी

काल्माका पत्र नहीं हुआ। यह बिय दवी चरत अही है। तो रह बल हुई कि इस अपनी मां का दार में कर राजों के दान जी वयस्य करता पड़ेगा हवें करने हेलाइ प्रमंसाकार हे हैं। और मांक समा पोट रहे हैं तथ। भवनी मां को बिद्दांसन से हंटा कर राचसी को बिहासन पर विज्ञाहर काराज कर रहे हैं दस को हटाने के विकास में सोचते वह नहीं।

महाबदुल है कि हमारी मां ★००००००००००००००००००००००० क्रव विमोचीन दर रही है और दुःश्री हो का पुकार रही है कि एओं जिस दोस से निक्ते उसी को खात समा रहे हो। क्षतः प्रवस्य श्री हमें कपनी को के बांस वोसने होंगें।

भुन्ते १४ सितम्बर को जासन्धर में 'किसी दिसार' पर महोचीन देता शी मोहत मेंत्रे व M.A. या आपका सुमने का अवसर पाप्त हुआ ! छन से मने वोबही प्रवा मिसी कि हम चापने राष्ट्रीवीं को

सरासर घोला वे रहे हैं। दे तो मां को दशे को वित्वी से सुदा तथे 🍳 किन्तु संस के बार इस तस रावसी 💥 00000000000000000000000000

दो ऋ।वश्यक कार्य

सि॰ श्री गणेश दल जी जायं सेवक, बान प्रस्थी दिल्ली)

पति के सिद्ध हो कार्य न्दर्वक हैं। पांडसा वह वि देश में भोइत्या दन्द होनी चाहिए। गो रका का सामदावद कार्व निरम्धर चलता रहे क्वोंकि मारत की सब वर्तिनाइयों का एक मात्र समाधान २ बाद का रहा है कि 'देश में है नोरका। नौ द्वारा इमें दय, दही

र्ववे ज तो रहें परन्त क्षेत्रे ती तथा सालन क्षीर भी काथिक मिलेगा। उनकी सम्बद्ध व रहे। किन्तु कंद्रेज : ताजा तुव, रही क्रीर सावस पी से वसे को शन्त धंदेशी नया उनकी देश कासियों को स्वास्त्य लाभ होना : विरेशी भीत्रधियों पर बरोत्तों नव परते संविधान हे अंदे ती समये के व्यव की बननत हाथी। को १८६४ तह स्कला वा बाद किर वंतों से कथि कर्ष सविता से होता दुवारा दमको अनिश्चित सहय गर बीर छवन वस प्रस्था सद्दित सुखी राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकृत हर होंचे । करन की प्राप्त होगी । बेकारी विया क्या वह राष्ट्र माथा हिन्दी के श्रीर विश्वंदन दर होगी। अब सब

से संसाक्षेत्रें। तथा पर्वत्रों के इस कर विरोध करना एडेगा तथा इस दे विष्वीयनदान भी देना पढेगा। वस्तर का भी हवान रसना होय बाद इसे पूर्व की मानि क्याने हि नकादशों में बोश होता है होर को ब्यारनी सा के विविद्यान के सिय लही 'बात: बाद हमें होश को भी वैवार रहना होगा। यदि इस काव । जात में रखते हुर राष्ट्र आधा की को संमाल तकेंगे तो आब के रक्षा के क्षित्र उद्यक्त रहना वाहिए।

इस के लिए इमें भरशके

साधी जी का बहु वाक्य बार

सभ्यता नहीं गरी ।

दयानन्द-बचनामत

'क्लार्थी लोग तो हसरों को हानि पहुंधा कर क्रास्ता प्रथी क्रम मिळ करते हैं। परन्तु संग्रंग होगों १ चाप इन प्रामाय प्रामी की रहा ठव-मन-धव से क्यों नहीं करते हो ? धन्य है भारत बार्व तर्ने को, बिन्होंने, ईश्वर के नियमानसार, परीपकार हीं में वर, बन भीर धर समावा छीर कह भी समाने हैं। एरी-पदार के कारवा हो आये राजे, नद्वाराध्ये बनो यन झाले. असि में बंगत रका करते थे, जितमे पशु दों को पूरों रहा होती. स्वीर पुष्कत रूप निश्ता करता । सुतो यस्त्र क्ष्में । वर्ति स्थापका हस-सप-यन गाव बादि उनहार के इताओं की रक्षा में न सरों हो ये दिस काम के हैं ? देतो, परमात्वा ने किस्त में सारे परार्थ परोपकार ही के बिप रच रसे हैं। भाग भी इस परंग कोई में. अपना सर्वता शास वर रोजिए।' (स्वामी सत्सावन्द जी) पन्ये में लग कार्देंगे तो कान्य श**क्ट** नहीं होगा। पहिने के शिप वस्त विलेशे । इस प्रकार मर्जगाई की बला मी टक जायेगी ह

इसरा आकायक कार्य है शिका पद्धति में परिवर्णन । आहें मैं शक्ते ने यह शिक्षा यहति स्टब्रं वैदा स्ट्राने के किए निर्माण की थी। यस स्वरूप মান কা ধ্ৰণিত বিক-স্তিতিক वाधिय कराष्ट्र शिया अधिक लोबी. व्यक्ति हारो चपटी, क्रांश्वरहिंसक, चपिक मोग विलासी, अधिक थामी और क्रिकिट उसार्थी होता बाता रक्षा है । श्रद्धमंत्रका की बह प्रात है कि प्रायेक में अपन केवल बीकरो करने का अध्यक्त है। परित्रम से भी पराका है । कोई उदीयदान नवदाव ही व्यवने प्रदेश क्रम्य प्रम्या प्रसन्द नहीं करता । वहो बढ़ तथा गरूअमें के ब्यासीबार उसकी वही इच्छा धनो रहनी है कि कुल के बने<sup>4</sup> और बाबू के रूप मैं दोनों हाथ पननान में हो स्वतन्त्रतह शक हर सोला वर्ष बोब समी परन्त कात्र तक शिक्षा पद्धति में परिवर्तन नहीं किया गया इसलेकि इसे रोधित शीस बरक्स पातिए वा ।

> शारोरिक जन्मी के पहचात ब्यात्मिक क्रान्ति की प्रशासकार्थका है। प्रावेष देशवासी (भारती) का रारीर पाषाय को आन्ति हड़ हो कीर वृद्धि करहाती के समाज तीत । मध्यक्षी व वि ने श्रवादि काल से आदेश दे रका है :--

व्यवसामय परायसेव

वर्गक शरीर रह होने पर कोई रोग बादमण न कर सह श्री वृद्धि वस वरने पर कोई बार भी बीख न कर सहे। इसी में मारत का करवास है।

## मन्ध्या का लाभ पर अध्यक्ति

करने पर हानि

के एक बढ़े अंगर क्षेत्राप्त पराने दार्यकर्ता राजने । में बोली क्रांस्पी जनवास दास की न्द्रां ग्रन्त्ः प्रिसीयल ही, ए: वी.

अपूर्वी बह है, कि वहां का

त्तावरसा विकास पगडी उक्रासने

के ब्रह्म नदी। समाज में हो पार्टिश

हैं कर रकान किये कि समझ आवें

पर नहीं कर तो पंकर ने तेक-

शकी रह नये। कोई सोचने का

दक्त एक्टर का तो शासिकार परा

राजा । समाज में एक्साझा बारा सन्द

शिकर पर है। स्वार्थ को पूरा करने

बास्ते सिद्धा-तों की आहति है डी

वर्ष है। यन में ब्रह्मानि झीत

वांश्री में पानी अरता है। यह क्या

बार सबे क्यम बह्मस्य

हो रहा है।

विवा या ।

थ.....तो कसी न वतो न सर्वार ।

a-मे कारोग रहो तब माई। - से गम तम साना सीचेरी ध-मे पत्नी बताना सीस्ते॥ क<u>ारे</u> कर पर बात **बनाओ** । ल—से सत्तर्थात का का को ।

ज—से प्रमुक्ष बाद करी। माने कार के कार ट—से अब रसाटर पाणीं। ड—से टंडड यथ में **सार्**हे ।

ब-मे राक्त हुर समागः।.. ड—से डारस तब वंधाशा। n-मे क्यवर सब स्थाको। ≅—ते सदा दकाद भगाणो ।

से इंशाक्सीन करना। कियानका क्षेत्र न करना। क्यें संस् में आधी, गुस्सा को प्रत्यः से आमी।

क्षा वीर बती। मेरी फर्बर गने। ब-से बदब दूर भनाको। य—से 2000 पर्यावस आफो। च--भे सन में द∷त मत ताओ। इसते हैसते बदते आफ्रो ।

a-से का पेकाना सीको। र—से रंगड बाना कीको। ल—से सासच तुम मत सरना ।

द--से तस बक्रीर भी बनना। श—से शान्ति सन वें वाणी। स-से तम सभाव बन वाणी।

च—ाने तस वटकोस कारता। इ—मे हरहाच कर आता । इस जिलाको पर स्थाव को । दनिया में इस्त नाम करो।

बरासस्य सब दोवों का मृत है। इस की क्वाचि विकट न माने दो। श्रवि खुद्ध परिश्रम से काम में इसी रको ।

न केवल पाप से कांग्त पाप

विस्त-भी मक्तराम जी (अभीका वाले वासन्वरो

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* तार्किक शिरोबाँस श्री ६० राम- | से पहन किया—"कारनी ही

में सन्ध्या करने में क्या शांच है<u>त</u>ा है है हालेज खोलापुर बन्द जी देवसवी शास्त्रार्थ सदारवी को एक त्वर कहते सरी-"वाथा मानतीय परिवक्त जी से समस्य की सन्ता तो बरते हैं परन्त में कि "एक देर सक्ता के सलेक सर्थ धमके बोवन में कोई परिवर्णन नहीं होते हैं 'दबाजन विवर-भारकर' देखता। माने बाप कोई जीवित के रचविता के ब्लासा प्रसार 'काइएक हैं कि सम्बा करने से वी सिथ ने 'सोद्य ने जिला :...' ज्ञान होता है।" पत्न परिचय जी men & 16 mai fart \$1) ो जल्द विका-"वर्ष पाता केवस संभा में. जो वह सर्व स्थित क्रमोणवास्त्र करता है तो सन्त समने, जिला विशे हैं। वर्ति की रका होती है। उसकी प्राप्ती मन्त्र भी रहा व की बावे तो बड तारी। यदि वर्षे न समन्त्र प्रदेश समाना जो इस के बोठर है जो काहे का समय बायरक ज वातेग्य । वहि रोटी बतने के बाद किया तो कोई साम नहीं। दिस पत्नी से बड़ो कि परीड़े कराओं वो त्रकार कोई (नुस्ता) की स्वरुख करे

वह कैसे बनायेशी ? हां ब्याटे से परीठा कर कावेगा। काटे से र्वातया नहीं बनना हाँ (धमक्या) गेड' से दक्षिया बन संक्रम है। एक क्यें दरके सभी शर्थना तो की जा मकती है। इस मन्द्र के जो चीर

सकाव है। क्या करूं ? समाज में बाने वाले दिव नहीं करवा। स्वार्थ के वो प्रजरी हैं, इनका डी जान कर्य का में से निक्स सकते हैं है वय क्या है । आएको पंजाब सोहना साय न बाद सहेंगे रश्चिक पारे गदा। इत्पदी गर्जन एक थी जिस में रहेंगे। वशसमा समन्द कर करनी वे इस्थानों को कन्यासमान कर पादिए । भानवश कोई साम न

\*\*\*\*\*\*\*\* प्रार्थ प्रादेशिक सभा की

भावश्यक सचन

(१) आर्थ प्रावेशिक विश्विषि चंत्राय से संवर्षित व आर्यसमाजोंको सचित किया जाताहै कि समाक्ष वार्षिक्यपिरेतरे कार्व समाज कोइगढ़ अमुक्तर में १६-२.-६४ रविवार की दोवहर के सब होना निश्चित हुना है। उहरने और मोजन आदि का प्रकथ समाज मन्दिर में डी होगा । झाने वासे प्रतिनिध नहीदय तिथि और स्थान आदि नोट दर सें। ः, सभी समाजी के प्रतिनिधि बतारे के फार्म २२-१-६५

तक सभा के कार्याक्रय में पह प बाते जाहिए तथा झपनी-मपनी कार्य समाओं के स्थाहर भी शीस मेर्जे ।

-संतीपराज मन्त्रो सभा 🗓 🚣 🌣 🌣 🌣 🌣 💠 💠 💠 💠 💠 💠 💠 💠 💠 के वे विचार है भी अपना चाहिए।

स्थान् उसके अनुसार आचारक न करे तो कोई साथ न होगा। किर वसी बुक्क ने वर्वका जी स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना कार्वजगत के वश्सी त्यांगी

पस्य संकाशका चालता त्याची की समाराज के देवराकार में कीन वापरेशन हुए हैं। समाज द्रोमा ? की दिन रक्ष असवा कर के निरम्पर विकास किये किया सेवा बरते रहते से शरीर की बेकी दशा हो गई। बाधे गर्वो के बाद क्यका रारीर महतुरम है। बार्क, अगत सारे का स्थान उनके स्वास्थ्य की चोर क्षमा है। ये सन्त महारमा समाज की कीमती सम्पत्ति है। सार्थ प्रादेशिक सभा के बहायनी भी जाञ्चलोचराज जी में सभा अप्लरंग की विशेष बेडक में पारित विशेष प्रस्थाय के समाप मारे समावरे राधाओं से महात्मा जी के स्वास्थ्य के सिए प्रायेना करने का निवेदन किया है सब इस

क्लेंग हो दिवालें।

शहर व प्रकारक भी संबोधराज जी सन्त्री काय प्रार्टशिक प्रतिनिधि सभा Care जातन्यर द्वारा बीट मिकाप प्रीस, सिकाप रोड कासन्यर से सुद्रित तथा कार्यकात कार्यात्व सहात्मा हुंसराज भवन विषट कवहरी शाकान्य रहर से उकारित सासिक-कार्य प्रावेशिक प्रतिनिध सभा पंजाब सास्त्रक



देशोधीन वर २०१७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसमा पंजाब जालन्थर का सामाहिक मुख्यपत्र] Bagd. No. P. 121 एक मंत्र का साम १६ वर्ष वेसे

वर्षे २४ शंक शो

६ माप २०२० रविवार....रयातन्त्राव्य १४०-१९ वनवरी १९६४

(तार 'प्रादेशिक' जानन्धर

### वेद सृक्तयः सोमंपतित्रे बानव

हे तथी ! मेरे हुद्ध प्रश्न मन-पिया में सोम-क्रमरे अध्वत्स को भानव-भर हो ! आरके नामरस का राम करने के हिन्दे मेंने क्रमना मन-पात्र प्रश्नित बना किया है— इस में सोमरस बर हो !

### तरत् स मन्दी वावति

स सन्त-वह सर-जारी इस स्व-सागर से तर जाता है, कर कर जाता है। रीड़वा हुआ जता है, ओ सर्वी-भित्तन की मधी में सल रहता है। गोमरस सा कीने बत्धा स्वसागर पार बरला है। खसी श्रेमीस धानय

महारांनी तभी! पुने उत्तम पुत्त भवा करने नाहे कमा तना हान को प्रशास करें। वै उत्तम कमान, प्रमास वाद्या हान का जाता का कर भीवन विताहः। तीं: सर्वो नरगुम्त

भगनन वि सारी बीधारियां, मन की बुराईनां इंगारे शरीर तथा मन की बुराईनां इंगारे शरीर तथा मन की परे इट जार्चे । छाइ का नाश हो जाये । छोई भी बीधारी बचा बुराई इंगारे शरीर नर्ज बचा के न भाने वाले । सरा न्त्रका ख्या

भाषभाराहत बन्द ? का वर्ष वे द, खे

### वेदा मृत

सुर्याचन्द्रममो घाता यथा पूर्व मकलपयत् । दिवञ्च पथिती ज्ञान्तरिच मधो स्वः

ऋक्मं १० स० १९० मं ३

कर --- ब्यू दूसर्थी तिकार कृष्टि या बार है नहीं पात्री के सहिता है। उस ता रि प्राप्त कर को पा दाहि है। कृष्टि में बार पात्र का प्राप्त कर कर कर है पर पूर्व कर बार है दसर है पर पात्र कर का सकर के प्राप्त है। वह के समार है है जा हुए का बार है पर प्राप्त है। बार कर है। वह पूर्व की कर है। वह प्राप्त की सम्बद्ध कर है। वह प्राप्त की सम्बद्ध कर है। वह प्राप्त की सम्बद्ध कर है। वह प्राप्त की कर है कर है। वह प्राप्त की कर है। वह प्राप्त की कर है कर है। वह प्राप्त की की की कर है। वह प्राप्त की कर है कर है। वह प्राप्त की कर है। वह प

मनुष्य जनमते हैं बीर करते भी हैं ? मनुष्य भी लहरें करते हैं भीर राजन भी हो बाती हैं ? बाहुक्य (रेती) में पर ब्लिट करते हैं कीर तीय हो सिर भी बाहुक्य (रेती) में पर बिल्ह करते हैं कीर तीय हो सिर भी ऋषि दर्शन

### त्रिविधं सर्वं' जगत्

वह सारा कराम् तीन प्रदार क

है। विकास भी विद्रव का पसार है। इस के बीन शकार, भीन आर फौर तीन रूप हैं। यह हो था चेना सूभि हो या पुश्लेश-सब इस इस बोच रूपों में बी क्या सामा है।

### मर्वोत्कृष्टं प्रकृत्यादिकम्

वन तीन रूपों में जाना का काक्ट प्रथम रूप या प्रकार प्रकृति चादि का दै। जिस प्रकृति से यह सारा विश्व बनता है। पंत तायों से गारि कार्यद की रचना होती दै यह प्रथम जाइन कर दें।

#### चुद्र, कृषि कीटादिकत्र

नगन् श दूसरा स्वीर निकृष्ट कर या तकार इन होटे २ कृतियो स्वीर सीट दनग शादि हा है। यह विश्व का अकार है। नाना अकार के होटे २ सीट पठना स्वादि इस का विश्वकृत्य हैं।

মাঘ সুমি আল

\*\*\*\*\*\*\*

का सन्देश दिवा । साह्य इस विका

में बा मन हैं कि झान के विशा

ग्रुवित को कदस्या को नहीं अन्त किया वा सस्ता। भूते झाबस्न मन्ति :—हान के दिवा प्रस्ति वडी गिलमी । स्वक्षी दवातन्द ऋषिता के माग्र और विसा की वृद्धि करने के रिक्त काचे : इत सहवों, काने को क्रांटिका कादर्गमी नहीं दें कि विधा का ज्ञान का अवारा क्रिया ज्ञाये। भनवात्र कृष्णा ने गीता में **वहा** है —तर्वे आन्यत्रदेवेत—इस भवसागर की चाने की मीका ज्ञान श्री है, इसी से यह चड़बरा सीसार समद्र पार किया वा सपका है। फिर घारा है—न हिसानेन सहसी पविसम-ज्ञान से बढ़ इर पवित्र तथा विक करने वाजा दमश करने कोई भो नहीं है। जल से शरीर ही पवित्रा बनाया जा सक्या है, किन्तु ब्रांड की शाँद नो झान से ही होती है। बह बत सन और ऋत्या को शह नहीं करता। सृद्धका के लिए кет пат 8 - Cleanliness in विया, श्रद्धान का सरहन दिया। pext to Godkiness. श्र से इस के क्षित्रक धीर होई पारा नहीं : क्रिक परित्र पीत्र क्रान ही है। प्रवित्र बनाने के शिष्ट् सम्बान क्रम्थ ते नरियों का ताम नदी लिया। वैसे यह नहियां निमक्ष जस रक्षते हैं। परन् इन का ग्रह उस शरीर के लिए है, ज्ञान बन और ब्रतासा की सदि के जिल नहीं है। यदि कोई योग्रामी पढ़ा सिता है. तथ ची विसो चिन्हा की झाश्चयकता लरी है। गोता के आपन की पड़ी भद्रिमा लिकी है। वो स्पक्ति निक्काम समें करवा है और स्वाध रहित हो कर सेवा करता है, वस

की तर्ज्य समझ्यो है। ऐसा सन्दर्भ

बर समय वाद झान शायाचर

देता है। अहा है There iii ne

religion than

### जान का

(बी विश्विपल पंज्यताराम जो एम.एल.ए.सभा प्रदान का सावस्य \*\*\*\*\*\*\*\*\* selfelssness कियान वा ग्रीत श्रव्याको माना थे। स्थ निस्तार्थता के वह कर और बोई पार्टिसा तो हमारे जीवन के स्टम्स क्यें स्टी है। है। हमारे पूर्वत्र बीर ये पर या कास धर के सीविश कमाना । किलावर है कि दे होति को वही लार्य नहीं है। वह कोई मध्यापक काराजी है। यस की बोरता पर बाराद्य में आवे तो उस समय क्षत्रने कोई सन्वेद नहीं । मुस्तिम काल में (ब्रतार्थियों को दोग्य बनाने में स्थ राज्यन बीरों ने को धीरता विसादें अने बाह सार्थी नहीं। रोटी ने क्कर विश्व के सारे इतिहास स्मात देता है। एक बन्तु के मना ये में कें बड़ी जिल्ली। शिक्टे हटना वेतने जोगों का द्वाय होता है। य**ने**कें <sub>कावाया</sub> नहीं होशे, नई बार समय एक कोट के बनाने में किरनों के | देख कर शीदे हटना भी नीति हाथ सपे हैं। सतुष्य रह सामाजिक होती है। सम यत में जब राजपूर्व गाओं है। सब का अध्यक्षकः बोरांगवा माना अपने बोर पुत्र को भगवान है, कोई स्ववित किसी स्ववित । संख्या सुन्य में यर टाने के बाद का धनकराया नहीं है। सांप तो केवत हे सकते जाती भी ता सकेरपन असकी निमित्त होते हैं। या कारमी काम ! <sub>काली नर</sub> या पीठ पर तमे हर मात से क्लि नहीं चरावा, वह निष्टर्भी े के रेक्क्से की—उसकी दाती पर है। क्यें २ वह मध्य बढ़ती अशी सते पार्टी को देख कर प्रसन्न होते है, यह क्रान के माने पर बढ़का ले कि केम बड बार है. बीरता से काला है । स्वासी दवास्त्रत से इस अर्थ के स्था है। देवी बात किया लिए जान के प्रचार पर बड़ा नश हें थी. कश्री में न बी ! पड़िसरी

वा। हाह ने भी वेह प्रकार अपने का अस्य हो गई यह बाद कड़नी कादेश दिया। इस जानि को साम है पर बरना बढ़िन है। ऐसी धन्धविरक्षम से प्रपर -वडाबा : शिक्त के होने इस भी फिर राष्ट्र इस का राष्ट्रिय डदार फिया । क्षा सम्बद्धाः स्टब्स इसके जातविक कारण को

तेल का पतन स्थों तथा। केरल उस लिए नहीं कि इस इसा स्थानी इंडानन्ह ने ऐसा। सभी

सावनीय विशंक्षक रकाराम जी एम. ए. इस. एस. ए. क्षात कार्य वादेशिक प्रीवेनिक समा पंजाब आवन्तर वार्य समाज की चित्रृति हैं, इस में कोई शन्देह नहीं। आएंत्रियाओं के इसमों पर इसपके भाषक विशेष रस तथा गम्बीरक शिवे होते हैं। इतन सरझ सुगम और किशास्त्रों से भरा बोलते हैं कि सोटा बढ़ा अवैक माम उदता है। ऐसा प्रवीत होता है कि वेसे इस वर्तवार में बैठ रम्बति की गोष्ठी कर रहे हैं। यही कारण है कि कार्यक्रमत के बेभी गढ़कों को सेवा में आपटे सारवर्भित प्रवचनों को समय २ वर 🎟 बाते रहे 🖁 । यह शसाद भी प्रस्तुत है—र्स•

क्रविका का जाल कीर विधा की बढ़ि करने के शिक्स पर छोर विचा। इतिहास में साता है 🌬 बोबनाथं मन्त्रिर पर तब साम्रसस हुबा वर ६० हजार सेना क्यारे यस क्लिमान मी । बावसम्बद्धारी गवनकी के पास २० हवार सेना हो यो । शन्दिर में बादश वन्द्रशि के सरकार मरे है। क्रेक्स Lauepool जेसे प्रसिद्ध इतिहास बेसक विकाने हैं कि इनगो सैनिक शक्ति होने पर श्री सामक्षीत जीती ने शब्दों सेता का अखितात त किया। वश्होंने कहा कि हम बो सोबनाय के पत्रीता हैं, देवता के होते हुए हमें सहने की क्या आह-ध्यक्षा है। ब्राप्ती येता प्रय सोमनाथ देवता को हो रेककी रहो. मुकाबिसे पर न काई। परिकाम यह था कि राज ने सरिवा पर च्याकश्चाकर दिशा । अधिकर **६ बारतेय दोडा मन्दिर की कसील** पर बैठ कर इंतने रहे कि सभी 2 सोमनाव देवता इन सब को मीव के बाट नतार देशा । हमारा प्रतसा बश तेवना दत को सम्ब्री शत का देशा । परन्त उन्ना चल भी स । की बर्जिने सेंसब्दें की सब्दा में शब ने वन्दिर बोड दिवा। २४ काने हातों से चित्रणं वसा का हजार मारबीय पीरों को वहीं सार वर बान्दर जा कर मुर्ति तोही, तसके हो इब्बे कर दिये। ऋपने देश में वास्त्र मूर्ति के दुवहे सविवर की सीदियों पर सगा दिने वार्षि मोभिनों के वैरों वह प्रविदेव रौंडे जाहें। इस परात्रम का स्वरस प्रजात तथा प्रान्धिकास था--को हमें ने बैठा। वीरता थी पर

(धपर्य)

WHEN KINDERSKENDEDE 'शीसा' भूता धोई नहीं

सर की गड़की साझ । विरश्न स्रोक नहीं देखते en बिच भने कारतः॥ 

प्रजान ने बीरवा को सी कारस्ता

में बरल रिशा

सरवादकीय-

रविवार २०२०, १९ जनवरी १९६४ লিক ড बर्वरधी

### बसन्त ही वसन्त

बीसम सारे सुन्दर हैं, प्रलेड अवंदर पत्तमक दा मीसम आकार बी हीन करते में जना रहता है। ऋतु में कोई न कोई निरोपता है। तमाज के स्का की उंद्या कर ज्य फिर भी बसन्त को धहात्र कह कर क्रवीत दुग से पुकारा वाला है। के संबार को मन्द कर देश है। बक्ष बार वेरे सारा क्षमाब ही स्वय सिकने वालों धवा चर्चा करने वाले टीज या क्रतीय शिथिता हो। जाता माने कोओं से बसन्त का बारी नाम है। स्रोग समस्त्रे है कि समाव कीर गुरू बताया है। सनमुख यह गवा, राष्ट्र की बीर मादना समाप्त है भी शारे मीसमी का राजा। तब बह स्नाता है तो प्रकृति के राज्य की कारत है भारे जीवन के पट्टे आउ दशा ही बदस वाती है। चारी कर रहा दिये पर दशना काफर क्कोर जीवन तथा जानूर्ति पैदा होते शारी शिविश्वता इर करके नव स्राप्तो है। स्रोता वासी वरती पर ओक्ट, सरकाड, उमेंब और उन्छास **ए**क तथा मुस्कराता तुगः कांसें भर देश है। महापुरुषी का जीवन कोस देता है। सर्वत्र करतान, कार्य और उनका सन्देश गतन का रूप होता है। इस से सारा **धात**न्द, असमता दन प्रमोद का प्रवाह वह निकास है। वतन्त में क्यारियां, वणे यूल, वरंत चीर सारा जीवन ही नया जीवन [पाया है। कवियों ने तो अञ्चलों के उस राजा वसम्य के सम्भाव में स्थानत **करते वा इलकी प्रशरती उतानते हुए** कथाल ही कर दिया है। पटकड़ ने श्चिदमात ने सारी भरती की समेट े हें तो दसन्त की भीतम मार्ग्य है। ही दिया था सारे हुओं को पत्रहीन **ब**ना कर शोश से शुन्य करक क्रम स्परक्ष ही विगाद दिया और दिस से प्रधारित विचारों की बाः परन्तुसर्कदन होतान दक समात । ऋधावासी का समय । शैरका भरे वसन्त से भरक काव कक्ष एक-सा लही रहता—इस किसस से बक्त सभा को साधर श्री हीन करने चाले हिमपात वा बताहर के भीतम को कहा कर क्को. शत का पढ़े। स्थारम च्या गरे नवा नीयन देकर धम्पत्ति ् 'भारावया' हुल भीग में श्रे सब को प्रतः भर देंगे।

श्रीयत दर भी हिमपात होता है.

त सम्बर दिन रैत। ब्रह्मति के सुग्रान समाध के समूचे | grey समय ब्रादी निकट देख स्रोत के बयन ।

शकात पूर्वपत हो जाता है।

ब्राउद्वेदेश के विचारों में शिवि

क्वा बावई दै। यारी क्रोर निराश

में चेग दाल रहा है। बार्व समाव

के जीवन में भीते बहुत उस्ते

विचारों के उल्लास क्या करता

शासम क्या हुआ है। धार्यो

भाश इस ,पटमद ने बाद रकति

किन्तु समात के भीवन में वसन

ताना आपका काम है। उरडे रच

का दर्शव्य है। समाज में वसन्त

ला दो ताकि इस वर्षे आर्यसमाज

विशेष दाम दर शर्व । बाज सारे

देश में उसका वा जलास मह वो ।

—विश्लोधनस्य

### समा का वार्षिक अधिवेशन

चार्च सदेखिक प्रीटिनिय सवा , प्रीतर्थ इस का साधारण कवियेशन पंजाब जासन्बर रक ज्यबस्थित, होता है, विस में स्तवले का संगठित दया श्रीसद्ध समा है। निशेष्ट्य, क्रमलेश्ये के किए नाना राष्ट्र विभाजन से पूर्वभी इस समा । विधायतट तथा ऋषिधारियों का से सम्बन्धित आर्थे समाजों का विश्वचन होता है। यह समा की पंचाद प्रान्त में तो शानदार विस्तार परम्परा है कि काखरादेशिक समा ग्रीर कार्रु को बाद्वी। इस ≣ साथ का दापिक क्राधिदेशन यहे प्रेम बसोधियतान में भी इस के साथ तया भारता से सम्पन्न होता है। सम्बन्ध स्थले शाकी दिशास समाजें, सेवा के कार में यहां भावना त्रिक्य संस्थाएं त्या कीमराध्य ं समाव तथा समा की कामे डी क्रदने २ छोड़ सेवा वर्म सेवा है । इस वर्ष फरवरी पवित्र काम में लगे हर थे। रावसर्वरको, नेहावर, टॉक के. हरगोमा, श्राबपुर, जेइसम, मुझ्यान, नाडीर, गडरात के, कराबी, कोहाट, शिकारपुर, सन्दर्भ, बहावसपुर मे तवा क्रोवटा, फ्रोटेस्टडेसब, होरासाई का निज्ञ सामने का बाता है। सारत है जब सेना के कार्य में इस सता ने कांश्वा, शोहाट निहार armania क्राजाचार, उद्योगा, चंगाय के बल्हासों, मूल्यों टवा शीमा में तो किस्ताम सब की सेवाकी है वह तो इतिहास के प्राची में सोने वे इ.सरों में शिली जावनी। सभा वे महान कर्णभार स्वधीद महात्म इंक्शब भी ने जो बहान कार्य किया। एव के शाथ और बाद में महात्भा द्वादन्द स्वामी भी.शी वि. सेहरचन्द्र श्री, एं. सेहर जन्द को, वसराज जी, जिसिएस देशी धन बी, दि. सूबमानु जो, थि. रखाराम श्री देशों भी आवें किया **कौर कर**े द्वे । उस पर सारे समाब को गर्य है। इब्बंधी वह समा व्यक्ते वसी बर्से त्यार को उसी बकार से दिन रत एक कर के दस्ती वा रही है। इस का सकता क्षेत्र सकता का हिर्शनगरों से ही है।

में सभा का वाविक साकारण क्रांचदेशन कार्यसमात सोहगद जनुतसर में होता निवत किया यश है झार्यसमात श्रीहनद वे माननीय प्रधान, सभा के प्राने सहयोशी और हिलेशी भी जानी ानहीं कुछ जी सभा के बान्तरी सदस्य भी हैं। उस व तथा धन के समात्र के सान्य सन्त्रकों की शुभ इस्ता, भावना हो स के शले सक को धन्तरंग सभा से लोहगढ लार्यसमाज अमृतसर में यह अपि-वेशन करना स्वीकर कर खिया है। सक्य मन्त्री थी. सा. सन्दोपराम ती ते इस की सूचना भी क्याये-जगन करे दे ही है । भी. झानी विश्व दश्स जी प्रभाव सोहगढ़ समाज व्यम्दसर के दर्शन करने जा बहा देश बट, जान बर दरी प्रसम्भवा हुई है कि भी, हाजी भी अपने नगर के सारे समावों लाथ समा के इस क्रानिदेशन को शानदार इंग से सफा बनाने में \_बुटे हुए हैं । इस वये तो स्वर्गीय महारमा इंतराज जो की भी वर्षीया जन्म शतासी मी सनानी है। इस विए मी यंड क्रांचवेशन महत्वपूर्व होगा

-- মি, বন্য

रज को कको संस्थापक मर्जाय क्ष्मानन्त्र, स्वतामं बन्तः पं० **तेण**-क्षम वदा दिवंगत स्वामी अहानन एवं त्यागमूर्ति इंसराजादि के पक्षि-दान का बड़ा अधिमान है और सम बांगदान क भगेसे इस सारे संसार में 'खब्बातो विख्वमार्वम्' का स्थत देशाना चाहते हैं । जिस्लं-देह जिल संगठनों भौर समाजें **की** नीव सहीशों के खुर और इक्विंग से मरी जाती है, वे संसार कें क्षत्रार हो जाती हैं। इस का यह कर्ष कदापि नहीं है कि उनका द्यासित्य इमेरा के सिए ऋसूरण बन बाता है, विवेक भ्राट होने के बाद प्रतन तो अनका भी होता ही है, मराठों और राजपूर्वों ने हम से भी वहीं सचिक महान लाग और बहिदान किया है। वे व्यक्तियां समके बाद भी स्थ्यति के शिकार पर कार्य नहीं रह सभी तब आर्य समाज उतकी शहरा में क्लियान

चटो 1 **भा**यंस्ट्रस सौर काहेज स्रोजने कर्म इस धन में है कि किसी तरह इन कालजी से महर्षि बधाननः वैसे वाल नक्षाचारी दल विश्व सहित निरुत्त कर कहते हुए कि 'कुरुवन्तो विद्यमार्थेष' यह है तत्त् रीया पर पत्ते हव हमारे मर्दे की ब्रह्म ।

की इस छोटो पूजी के सहारे कैसे

धवा नीविक रह सकता है ? आज

इस प्रश्नों में परते हैं कि 'आपर्य

समाय का प्रचार रूप पुका है

अनता के चळार के लिये हमने ब्यार्थ भवन से० ए० वी० कानेत्र क्षोति दि इस में से नेत के श्यारफ निकार परन्त काल हमारी योज-नाफों का भरता कट रहा है। इमने अनला से रपवा लेकर को रेमें को पस्त भी एनके मत्ये नहीं मारी । वर्षि इन स्कूल कौर काहेओ से धर्म प्रचारक निकलते तो त्या-सस्य आध्य सहाविकालय क्रीक दशासन्द प्रपवेशक महाविधासय

### दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय श्रीर श्रार्य समाज

. ले ०-श्री देशकमश्री विद्यादावस्यतिवि०वै०मो०सस्यान होस्रियारपू के कोते र में प्रवार कर रहे है तम

की स्थापना स्थींकर होती । माभो ! झाव इम सव मिलका इस विशासन पर कागोशन्त्र विश्वार वरें। यदि इस ही इस पर विकास न वरेंगे तो स्त्रीर कीन करेवा १ ब्राज से सनमन दर वर्ष एवं ती. ए. भी.काल्डिट प्रकृतकर्ती सहा लाडीर ने बेदिय धर्म और महर्पि

रहों भी चन्द्र विनों में ही आरे मारत वर्ष में वैदिक धर्म का त्रचार होगा। जारत के दाँगामार्ग्य विभाजन बडवानत से हमारे विप्त हो नहीं

**दो देसका, बार्च उन्ता यह सोद** 

हो गवे परन्त आ संत्या भी उन से

हयानस्य के स्वरतें का प्रचार वत प्रसार के निर्मित्त इस मधाविकालय ही स्वापना की थी। एवंत्रथम इस का करवासार भी ५० विश्ववन्य जी शास्त्रो एम. ए. ०म. छो. ०म. छो सीपा गया था। इस के देखरेल में बह संस्था प्रविश्वित सर्वायोज कर्यात करनी चनो नहीं । सहशैर में स्वर्गीय वस्सी जैंगोराम जी प्रवर्शकेंट वे विचालन को वर्गाल प्राप्त प्रशास की थी। विस में विशासक का क्रपना सामने समनो का विशास-प्रवास वर्ष साजानास विवास हो सब ये भीर विदासन बहुत ही सच्छी स्थिति में चया रहा था। करायार विश्वबन्ध ही के बातुषय पारिकाव वर्ष गम्बीर विचारी से विद्यार्थियों क्षे वद व्यक्तत है त्या विसरो थी। जिस के परिशास स्वक्ता आरत के विधित्व प्रत्वों से प्राप् तर काने ह विद्यार्थी वहां शिक्षा शब्त करते ते। वर्द वर्षों तक यह सस्या ना सुन्दर देंग से वसती रही, झापार्व की के संस्था से इवसाम प्रस्ता सर हेते वर क्षा, वरमानन्द की और क्रियास की को कार्स साथ भीचा

बन सबी । पहले इसे स्वास चीरा सी में चलाने का प्रधान किया वस्त् किन्दी कारकों से स्थित करना पहा । इसा के बाद पुनः जालकर में इसे झारमर किया गया भीर इस्त में बड़ा से भी उठाना यद्या । १९४६ में दा. मे ४२ घन्ट शी दिसार क्यारे क्षीर वह निद्वय हका कि इस विकासन को दिसार -में स्थापि किया अथ भूमी श प्रकरप स्थालीय प्रयास्थ कर्या सभा ने किया। इस के साथ २ ही.ए.वी. काक्षेत्र प्रथम्ब सूत्री सभा ने १२०३३) रु यक्त किमीस के निप्रजनात किर और विद्यास्त्र को श्रांतसास ३०० है, देने का भार अपने उत्तर तिया । तो भी यह संस्था स**रा**क ल्या से चाचला सकी। १९४९ कें दा, बेहरफन की बहाराज ने उस के सम्बन्ध है भी बात चरर जी वाचार्य दयातन्त्र काहोत्र से इस संस्था को उसत करने के विश्वय से गया । उन्होंने भी तन्मयण के साव | विकार विकार किया | इन के कानु-क्यासब की कनति के ज़िए बहुव | रोभ पर भी झानचन्द्र जी श्रम, ए समय वक कार्य किया। उस का जे १६६० से कार्य भार संसास ने का कल बड मार्कियम स्थय में इपन श्रीदार दिया। तन से

विद्यालय के स्वातक निष्टम कर हैरा विद्यालय की स्थिति में दरिस्तेन हो

रहा है। जिस संस**व की** एं. **बा**त चन्द्र जी एमः २. धावार्थे नियुक्त हो गरे थे वह यह ही अवस्थात से परन्तु उस के पश्चात् **बन्दों**ने भारत वर्ष के जन्मकोटि के विदालों को व्यर्थेग (१) जो दं क्रमरसिंह की 'कार्यपविषक' शिवांतों के प्राप्तापक (२) वी पं. जमहोश कर डी दमनापार्थ, वेह ब्रीर वर्शनों के शाध्याचक (३) सी पे, सरवशिय जी शास्त्री. सि. शिरोमाची सम्झति साहित्व ग्रीर सिजात के प्राप्टराज्य (४) भी पे. राम विकास की *वक्र.व* उपनिषद और संबे की के प्राप्तापक (१) वी पं. रायस्वरूप जी शास्त्री मुक्त व 🖹 सकी कीर १६५० के व्यासम्या के प्राप्तापक के प्रवाद कह समय तक इस के के रूप में बुलाया, इस पविस्ती के सम्बन्ध से कोई स्थिरव्यवस्था त क्रज्यम पाछिस्य एव राम्भीर सांकविक विवारों से विवार्कियाँ को एक बतुम्ल प्रेरणा मिलती चंबी ं गई। तिस के परिधास स्वस्त्य भारत के विभिन्न प्राप्तों से सम्प्रोत देशल, क्यांध, मशराष्ट्र, वचरप्रदेश, सध्यपदेश, विद्वार, क्रोडिसा, ब्रामाम चीर प्रजाब प्रदेश से क्रानेब विशासी यहाँ शिक्षा प्राप्त कर रहे

यहां झारों को संस्थत, स्वा**करक** देर, ररांत छवनिषद वैदिक मिद्रान्ता-हिका सम्बद्ध झात कराया जाता है और दक्षों को सोशय चला एवं पत्रकादि का समस्त व्यव विशासक हो बहन करता है 📰 के साथ अब विद्यालय का उद्देश्य झार्गीय देशक. पुरोहित, समाम सेव ६, संस्कृत एव हिन्दी के उत्तम देशकारि बनावा है विद्यासम्ब का बाताबरम् बहुत ही शान्त, सस्यर, स्वास्यवर्णंड एवं बारवास्त्रिक मावता से क्रीत होत है, प्रतिदिन प्रायः सार्थ संध्या, इक्न स्तानाहि कार्य करना पहला है। इस को देख कर मृतपूर्व **पंजा**य के राज्यपास सरहार विषयु गासनिक ने इस विदासम के प्रथम दीकान्य

ग्रेथ पुरु ६ पर

### गन्दे चल-चित्रों से देश समाज तथा गच्य का पतन

सष्ट्र का पतन (क्षेर-ब्रह्मान-व विज्ञान विज्ञानापस्पति' (हिसार)

फिलमों को बनुमति पासु करने की

pan त हे. जबता इस गन्दे दिल्ली

a हेत्री को चलचित्राहार बनो सपत

क्षे वहीं हो सस्ता : इसलिए मेरो इन

नोजों से वार्यांका है कि-निशंस

क्योंकि श्रेष्टे बामका, श्रांगार.

ब्रसम्ब परिवास कुन्दन मार्थनान,

वर्धन रचेतना, तम्म साव बार्वि

के परिपूर्व होती हैं, पतन की इव शे

कारता हो गई है कि विकास

देसते शाहे के नश्तुषक के पास सर्पक्षे सभी बद्दन यो सुर्रिष्ठ नहीं समझें जार्थ । इससिर स्थी सार्थ बन्धुवों द्वार्थ नव्युवक वधा अस्पुत्रकियों के सार्थना है कि अपने चरित्र को

वन्तर इस्ते ही इससे स्ट हटें।

को वर्षी गुष्टाम रखा, देश मक्तों को बह दिए वस इंग्लैंटह की राजी अब मण्ड आकी हो दस राजी स्रविज्ञायेथ के लागत समारोह में नंद हरोड रूपवा सर्च किया नशा । सब्धि देश में साओं व्यक्तियों की श्रम पर साथे के जिए रोटो, शरीर अपने के जिल कपता, तथा सिर बक्ते के जिए सुपस वह नहीं। वर्षि देश में संस्का प्रवासन्त्र शब्द बीका को विदेशों सोमी पर करोड़ी अपर लचे नहीं किए जाते। कांग्रेस -ने eath कारिकेशन में वाचित्र से आधिक पांच सी करवा वेदन जेले के लिए प्रानाव पास किया वा । adul ती ने १९४० में कला कई अमन्त्र देते हुए ७ सी समये आसिक

नियोग यदि देश समान राष्ट्र एवं त्रका को आहर्ष परित्रवान दनान बाहुते हैं तो क्ष्या सन्दे फिल्मीं श रिक्रीय त करें, सरकार वेथे फिल्मों वर प्रतिबंध समाने जनस व्यपने मादा मोड को त्याग कर इसके रखे। विश्व भाज केदीय सरकार किए आंदोलन करे तबी देश समाज के एक-एक मंत्री पर पांच-पांच राष्ट्र का बरवारा हो सहता है करदवा इजार रूपवे मासिक लर्फ होता नहीं त दै। तो मी बनवा प्राहि-माम तहे फिन्बों का रहा बाल उन्म भी प्रक्रियान की ही क्लार सका अपने परित्र यो ठीक नहीं रक्ष सकते

नब-पित्र को पालु बरते हैं तीत का होता है फिल्म निर्माता, भनुमांक्राता, भीर देखने सका ! वर्षि फिल्म निर्माण धन्ते फिल्मों

. शिक्त

) प्रातः स्नरणीय-) महात्मा हंमराज जो की जन्मशताब्दी ख्रीर हम

मार्च प्रादेशिक प्रतिनिधि समा पंजाब जातरचर ने ७-१२-६३ को महात्मा ईसराज जन्मशहादको सनाने का निक्रमय किया था और साथ हो विकि और स्थान बारि जुनते. कायकम बनाने बीर थन संबद्ध करने के शिल यक उपलिमिति बनाई थी। इस निश्चव II बहुशार उक्त उपस्रविधि के सहस्यों की सेका में एवर्ष सुचना में वी इस शबंबर के साथ कि ये सकरता की सीकृति से सभा को सुनित करने की हुना करें और साथ हो कुछ ऐसे सन्त्रजे के तास समान जिल को इस उपसमिति का सदस्य बनाया आह कि उनके कीमती प्रधानरे तथा डोच सहावता से समिति का कार्य भागे कहे। साथ ही सबोनीय सरस्वी से पार्थना की वो कि वे क्यदती और से कार्यक्रम सन्दर्भी कृत स्तृत्व भी वें कि इन पर विचार करके कार्यक्रम को रहा रेखा कराई जाने । बहुद से सरहरतें ने करते जीवति तराव कर दी है। स्रोपेक सरकों ने करते समाव भी भेते हैं। उनका धन्यशह । अस न्यसमिति की बैटक बुलाई जारणी वो इन सुमानों पर उस में बिबार करेंगे और इसके सहाबक्षा से कार्यक्रम दैवार किया। वाचमा । परान क्रम सरक्रम देशे

शीध स्वीकृत स्ताव करें, कुद्र करने विश्व के नाम चेत्र कि शे इस दुस्य करने में सभा का द्वार क्टानें कौर कुछ मुख्यन किस मेर्च किस से कुपर, डोस, इस्मोगों कार्यक्स तैयार दे सके। क्या मुख्य का करने की कार्यक्सा होगी कि सरस्य

हंसाज जी बहाराज ने कारे हैंग वर बाजाहकर और पंजाब कर निर्मेक्षः सद्दान प्रवेशा किये हैं। उनके करवाद के हसारा स्व पंजाबंधी कर पाल-तात बंधा हुआ है। इसे ब्यायान ने यह मुक्किक्ट दिया है, आयो हम पुत्र करने बारि करके पुत्र के उच्छा होने का स्वय करें। मैं जाना हूं कि उनके स्वय को पुत्रक्षता स्कृति है किए भी जिल्ली हुए तक अपकृत होने आए, यू भी क्योंन्या हैं

#### PROCESSA PRO

#### दयानन्द-वचनामृत

PACHOLOGO DE PROPRIO DE PROPRIO DE PACHO DE PACH

#### दयानः द ब्राह्य महाविद्यालय खोर चार्य समाज

( वेटर है का होते ) समारोइ पर एक सहस्य पूर्व सन्देश र्दश या कि "मुम्मे इस विचालय के सात्विव वातावरण को देलका ब्राचीन ऋष मृतियों के विदालयों का समस्या हो कारत ।"

इस प्रकार की चन्त्रति वेसावर अभ्य प्रधाना वह रहे थे कि बाव आयंसमान का अविध्य उच्चल होगा। परन्तु दुःशा है कि सहत का बीन ने हमता का दिया, कीर इस्स धनपरियों ने वैसा देना बन्द किशा} उतकावद्य पता हुका वि की स्वासर सिंह जी 'बायंगियक क्षीर भी पं० बनहीरा चना वी इर्शन्य चार्य को विशासय क्रोज़ना यहा तथा विदार्थी भी क्य होगवे इस समय २४ विद्यार्थी कश्यवन कर रहे हैं।

#स मिरती ∰ हातत को देख-बर, हम कैसे कहतकते हैं कि कव कार्यसमान की अन्तरि होगी। समतसान भीर ईसाइयों के इस समय महे २ महानिधालय देश के कीतं र में चल रहे हैं, जैसे कि देवबन में ही १४०० विशार्थी इसाल पढते हैं। परन्त हम आयो का एक ही विशासय है कीर जिस **अं**डमारे २४ विशार्थी हो ? अब बताओं कैसे वैद प्रचार होना ह

वर्ति इस विशासय को इस प्रत्येक आवं समानी एक २ क्यवर शासिक मेडेरो तो भी वह दिन दर नहीं डोगा कि इसारे भी **ह**नारी विद्यार्थी पह सिखकर वेद के प्रचारक मनेशे । हे आर्थी ! अगवान इयानम्द के पर चिन्हों पर चलने : कार्य कमाध की किम्मेहारी चढ़ श्राते इस विद्यालय की तेजोमन । गई है। इस के मार् श्रीमान कादि वर्षान्य में भाषका देशा पहच्च पर विभार हुन्या। ठील स्वीर वर-इत्यन दन सफता है। तभी सहविं विशेष्ट कार्य करने का निरंपद हवा।

### महात्मा हंसराज जी की जन्मशताब्दी

(श्री संदोधराज की मन्त्री आर्थ प्रादेशिक प्रतिनिधि समा जासवर) के प्रत खबसे व्यवस होने के विकारके 

क्कार्य प्रदेशिक प्रतिनिधि सभा नहीं विदा गया। यह सभी संस्थार वंताय, बाताव्यर के उत्यामान में उभी गहान कारणा भी देन हैं। महात्मा इसराव वन्न शतान्ती किर झनेक संस्थाएं, उत्तवकोटि की त्रपर्शावित की बैतक १२-१-६५ को संस्काई इनके बाभ पर चन्न रही अलाभर में हुई। इसमें उस नही- हैं। सावश्वक्ता पहने पर भीर लाड को ध्यमान और उस देवता । होही का कदती हैं। शहर तिहत्त्व के मार्ग क्रीर काम के नुनायिक <sub>दिला</sub> कि महारका हंसराब साहित्य ध्याचे का विद्वत्तव विद्या । । विमान को संगदित, सुरद किया सर्वे इसम तिथि क्रीर स्थान <sub>। जाए ।</sub> धर्म प्रचार क्रीप केसकों क्रे

हा प्रकृत था। सोच विचार के बार े प्रेरक्राइन क्रिया आहे। ब्राम्येक्स =३, २४, २४ कस्तुवर १६६४ की <sup>।</sup> सबस्य क्रमन डीना कि सहास विश्वियां चनी महें और स्थान इसराज द्वारा दिस्ते गए समी प्रयो अविश्वर का इस वीरव के कायुक्त को महातमा इसराज मंगायती के रमलियं समस्या गया कि प्रश् नाम से क्षाप देने का निश्चय बहारमा भी द्वारा स्वाचित्र कार्य-हका है। यह भी ित्थव हका कि प्रावेशिक प्रतिनिधि समा पंजान क्यों बेहोंडा खबे तीवें शहर दिया हा अस्य सार्वास्त्र वश्री पर है । तार । यह साध्य संग्रेजी जिले परे हर कार्यालय सभी भार्यसमाओं सरकारों के बाधों में शिदा का स्वेशा। का लिक्छान करता है, केट मचस विदेशों जा चेत्र पटने और समभने

श कार्य धरता है ब्वीर वैदिन के बोरव हो समेरो धीर धारनी साहित्व का प्रचार हरता है। पैवान बार्क विकास बिटा सर्वेसे । महास्वर्ध में बातन्त्रस दी यह त्यान है जो zazuz Commemoration बार्व शिक्स संस्थाओं का सहान Volume भी नेवार होया । इस रेल्ड् है। यह संस्थार जहाँ श्रीवर कें बद्रास्त्र। भी के श्रीवर, कार्य क्षे सभी श्रानस्यक्ताओं हो पूरी सकाह हवा है. चार्यसमात्र के करती हैं, नहां झादार में सदान कार्य वैदिक संस्कृति क्या सार्य है, बहां देश मर में अपना नाम भी रक्षणी हैं। स्मीर इन शंस्थाओं के कराते, वर्ष प्रधार परते. वैविक स्थ्यतः का सब बवाने में डी बी के भक्त किलेगे । जिस्स्ट्रेड बड् हस सहाय अपनी ने भीवन का वति क्या समा दिया । इस किय वा

द्र'व भी भावसमाव का द्र्यंत होगा ! वस में हिंची सरकृत कीर ऋगेती मे उसरी संश्या गया कि वा हेस हैं(ये ) बार्व विद्वारों से शबंता गीरक, यह जेय इसी सगर को शास्त है कि वे भागने बहस्तव रोग जिला हो । हाँ, इस से इस नगर के निवा-बद मेजें। सियों की जावें सस्थाओं की और सबास बाबे के छिए धन की क्राकाशकता है। किरा यन के <u>इ</u>स श्री न दो संदेगा। श्रीच काला की क्रपील की बारही है। ब्रार्वनेश मोली से बर नगर फिरेंगे । धनी **द**गानम्य के लपनपूरे हो सकते हैं। होई नई संस्था खोसने का विकार

यह देने । तभी महत्व**श में कपदी** क्रमधी क्राप्ति हेने किस से बाद बक्कसफ∉तासे दुशं होगा≀धार्थ वंधुकी ? अस महाम् चारवाकी अन्य शतान्दी सभाई का छो है जिस ने हमारे जिय सबेज साम दिया.

क्षरी जवारीक्षे उसंगे', सब रेडक के जोशन के स्थप्त, विश्ववा क्रांकी द्याशार्ण, वढे माई की सती कमनाएं सभी का विश्वदाय दे कर रिख रिल कर जहा, चमका, अविद्य के कोशकार की सिटाना, सगमका बर साथ किट गता परस्त क्षमर डो गयाः क्याको ! इस दन की"-रातान्ही समापं, यन की पवित्र माद को जिल्लान के समार्थ मानसे समार्थ ह सुर मनाए।

### क्षार्य समाज धंडी (H.P.) का चुनाव

ं सर्वे सम्मति से निम्नसिलिय

व्यक्तिकारी चुने गए। प्रमात-केप्टन इश्रुसैन जी. समात की संस्थाओं से सम्बद्धित विपश्यान— शा॰ दीनानाथ की हेल होंगे। यह केल वार्य अगत Advocate, लामी हव्यानन जी के वसिद्ध विद्वास, नेता क्योर ब्रह्मसमा। सन्ती-चेतराश्रली बहल, उपसंधी-भी हेलराज जी, शरार मंत्री-६० देवश्र राम भी, कोशान्यच-ला॰ इन्द्रसिंह की, पुलकामाध-सार सलमन दास की।

#### सदस्य अंतरंग समा

(१) mre बावाबर जी (२) बार स्टाम बढ़ते हैं कि इस ताः वरमातप जी शहनस (३) शा. बक्रवराम जो सहगत (४) वी हरवंससास जी (४) शाः देशमन भी (६) **सा० विद्या**सागर भी ।

धारत त्यसन्त्र द्वसा । शत श्रोगां के हाथ में सता कार्य । सक्त करा .बी तुर्ता योसने सभी । वह देसकर कार्य समाजियों ने भी विचास कि वर्षों न सामृद्धिक रूप से राज-नीति में भाग शिया वाद १ फिन क्या का जिसमें बोध एवटी पार्ते होने कर्षी। इससे जनदा अस में **प**द गर्द । कोई श्रष्ट मार्ग न रहा । पर कार्यसमाज के वरले इप सिपारी रियोक्स अगयालकास जी ने इस बर्जन में 'ब्रावेशमान' में वह तस देखर सही वय प्रवर्शित किया है ।

स्की विचारी का मैं कार्योदन

रावतीति में भाग सेते के लिए

करें काशों पर विचार सहना बावड-

करता पारवा है।

बक् है। सबे हश्यम नीर्ति निवीरित . करनी होगी । हम मनुष्यों द्वारा विश्वित विश्वान को खीकार करने से रके । बात: सर्धेत्रश्रेती, सर्वेत्रस ईह्बरीय विभान—नेद को स्नाबार बसाना होगा । श्राप्त शोग पेट को साबते से ही प्रकार करते हैं. हो वैदिक मीति के एक के कीन कोए देने लगा ' जिस शक्तमीति से सम्ब-न्धित सभी विषयों वर कार्य विहासों से वैतिक विचार भी थे। स्थल अही किए। अनेक समस्ताओं पर बातस-न्यान करना वाफी है। बस्तवः वेद के साम का दंदीश वीजने कहे चार्शीने जित्रशाहस कार्यनेट ्तिपत्र में किया है, उड़मा कार्वे | राष्ट्रीय एकता हो गण्यती । सम्भवतः दिसी भी क्षेत्र में नहीं फिया होगा बहुने को तो हम वह देते हैं कि केंद्र सम सत्य विशासी की प्रस्तक हैं' पर अभी तो वह भी स्पष्ट नहीं किया कि वेदसत्य विकास कीन-कीन भी हैं। सो अहे। पहले मीति वो निर्देशन वर को का के

ु फिर मैदान में कुए जाना ही वी पर्याप्त नहीं, सत्तास्त्व होने के परिष बोट पादियें। इस करन बालगा

कै नाम पर निश्व विश्वारों को ही

- अगरतोधी पर लाइने का इराता करा

स्का है १

### श्राथंसमाज श्रोर राजनीति

(श्री राष्ट्रपदान भी एम एम मी (शावर्ज)रिसर्चम्कालर चंत्रीवरी)

मंद्रका में हैं। को विश्वय तो हम से हरकर भाग कापनी । 'ब्रागे २ जीत. पीक्षे-पीक्षे द्वम, सूच वीन सरोधी । % चतुः सामः तथका वन वादगा । करात. प्राथः, बारेंदिल का सरदन कारो नामों को कार्नेटिक विचार पारा के मानमें करें बोट क्यों देने सरो ? वे तो मांग करेंगे कि बोड चाहियें तो हमारी मुदी वालें को

भी सत्य पराध्यो । मार्त, इसी वे क्रिए तो अवतारकाद भी स्वीकार धरना होगा. अवि पना पर भी क्यी माधनी एडेची, बरान और पुरास को भी कशका बताना क्षेत्र - अहि सभी अब ब्यूजा है जो फिर को शिया प्रचार देशों था । हाँ बनाव में शराबें विसाई शती हैं. जातिबाद द्रभारा जाता है, चापते बरे को भी भना और पराने भन को भी बरा बताया जाता है। कहा ध्वर्थे ! बना बहु सब इल करने भोर मैकरर हो १

पौदाशिक, यक्त, ईसाई 'बादि ने भी सका संबोट उस किए वे व्यक्त विकासी प्रकेशी । प्रकाशन सभीत धनकर रह जारफा । य ही सक्ता के प्रचान इस राव-

वर्ति वहीं इमारी देखा देखी

स्रोति ते इससे धनेक सार्वेजनिक कायेक्तों सीन बिए हैं। बाब वनका रोम-रोक राजनैतिह हवीं है वित्र है | तो उनके शक्त बेट प्रचार के लिए समय कहां ? परिकास शक्तप हानेच प्रार्थसमाठो का कार्व ठ०५ हो तथा है। जब हम होंने को वर्धी कार्य हर्नाकों को एक ध्येत्रज्ञ प्रदेशा. जाएशे भीत सल्दंशी

सामहिक रूप से राजनीति में भाग में भी वहीं राग भवापा नापगा। को बेट का कार्न किस्पत छार

कार वर शक्तिक क्रम की

क्रांकादक्श का सामान इक्तांका भी दुधा है कि सलासद रस में भटाचार है, पर है। पर क्या सभी कार्य पर्यारक सरक्षात क्रीह धर्मात्वा है ? वदि इसारे जीवन का खर भी इसरे लोगों के समान है वो तेवस बदलने से क्या शाम धे क्या भागेसमात्र राजनीत

में पूर्ववदा संन्यान से से ? नहीं, क्वारंप नहीं । स्वपित प्रमासित राज-बीजि में भाग न होते कार्त, जिल्ह्या पांच साथ जिद्वान ब्यायं संस्थातियाँ सी एक समा बनाई कावे। ये विद्वार विक्री भी शास्त्रेजिक स्थापन वत्सम्बन्धी सरवा के सदस्य न हों। रामसन्द 'सम' शशिनगर देहली वे क्षेत्र समस्या पर बैटिक निर्म थोस इस्तर करहे झार्च जरुता हा सही नेतृत्व करें : इसी काधार कर भार्य वस पराह से क्षेत्र केते। इसी बीर्त को सेक्ट कार्यसमाधी

व्यक्तिस्त स्व से स्वाद सहे। साथ र वर्वकों के साथ सम्दर्भ करा कर उन पर कार्य समाज की छाए बगा ही बाबे छाड़ि बीस तीस वर्ष में बब दे ऐंत्र में कुट्टें तो सर्वत्र : बी. विसीपत हरिराम मी, बी बार्व विचारों के लोग ही चनाब . संभापास जी बोहरा सन्त्री—धी सदका भारत या करवान का रहे हों। यह है भी सम्बन्ध। क्योंदि केवल वेहिक धर्म 🛭 विद्यान छ बाधारित है। सो यह निविधाद सरब है कि बारे वालो सन्तरि को देवसमात्र हार्व समात्र ही प्रवा सकत है। साने शमे प्रश्नीस वर्ष के पहचात सारतीय वा हो। सातिक होंगे या बैदिक पर्शी । इस देखना यह है कि इसे इस शहर विकास सद्भयोग करते हैं ? इसी बात पर बावेशमात्र स्वीर राष्ट्र का अविश्व निर्धर है। सो राजनीति के पमरे में न पहला हमर प्यान दिया जाता

नाहिये ।

#### बसन्त ऋत

सीरम, समन, सुरान्य, सुरीकी, साथ सवा का आहे है। हरियाली का कांचल कोडे. पिर वसन्त-चत बाई है। वन-१९वन साम सहिमारा है हर चील में अरी अनाई है। क्या-तर पर बोक्स संदे, फिर बसन्ध-वल व्याई है। विश्व तह विसीने हरियानी के. इर प्रस में मन्द्री आई है। भ्रमर - पुनः मृत्यार किर वसन्त-बार बाई है। सहाने राठ - दिवस, मेरे सब ने शी जंगहाउँ है। अञ्चय-समीत, ए पांत रागन के. बतना यत से इतना आहे। पिक समन्त-कत काई है।

### श्चार्यसमाज सैक्टर =

चंदीगढ़ का जुनाव ४-१-६४ को रविवा**र किया** 

प्रकार से सम्पन्न हका।

ग्याय-भी शतकार की वंजित, उप-प्रधान—की संवराम जी ं केल किर्माण की वित्तोकी**साथ** ं शक्तकाप भी शर्मा, चपस्त्री—श्रे विज्ञानकार पंत्र कीर की सी.एस. तो स्वामी, क्षेत्राध्यय –श्रीरामश्राक्ष al, बोदर, प्रशस्त्रध्य**ण**—वो **व्यांप**-ताशी साल थी, निरीचक-भी देख राज की साक्रिक, इनके हलाया Sel in term name water कार १४ श्रीवितिषे कार्य शहासक साधा के जिल निकीचित हुए । उसी क्रारंसर पर पूरव महात्या

ं बातल सामी जी महाराज के मान्य के जिस प्रम से प्रार्थना को र्थ ।

—्यसम्बद्धाः संजी सम्राजः "

anneal areas			र्सक्तिरुक्षेचं०पी० १२१
प्रार्थ समाज मन्दिर राज	त्रार्थं समाज रसुना नगर		1
		चावरवक सूचना	धार्य जगत का
केला के निर्मायार्थ सहायत	का बासिक श्वार कार्य	सुक कार्यसम्प्रती को तथा	
	विश्वन्यर बास में ने, विश्वनदाय	सर्व कार्यसम्प्रता का तक सार्व महातकारों से तृत्वित क्षिया	
की ऋगीञ्ज	वो बार्क्सादेशह ने दैनिक क्या के	धान नदानुसार स गुण्य अस जात दें कि सी सासक्त गर्मा	ा करकी १६६४ को कही
स्टीस चन्दनी राजल्वेज्ञा ने हुन	क्रांवरिक २२ वर्षेश स्थि। संश्वर		
<b>पूर्वेद पार्व श</b> नाव वरिदर के किर	विवाह १ नाम करका ब'क्यार ४	रंधारा द्रम्य से भीर से यन-संबद्	
श्चार्य समान राज्य वेता भी अभि	बन्ध विव र पार्च वर्त्रों के किये	स्रोत्यक्त वे बिर शिक्त जी	
बाव वें सी है।	११ जेक कियो । २४ वालियों ने	किने तये काको ट्रसक बाम परापि ।	मंड पाठकों को ११ फरकी से कीन
. राम्य केवा (व्यक्तित) भारत के		हेकर कियी जाएका होने केंद्र	चर दिन पहुँछ मिस्र दावरा ।
न्दूब को क्लामार्थन कीरोशिक	विकास किरा। विकास किरा।	विश्व स्थितः ।	व्य चंत्र हा देनको २ सीतःपार्श
बहुद क्ये अन्यभावत कारारगढ केम्द्र के क्षा में विश्वतित हो। रहा है	कृष्य साथ गंत्री स्थाप	—विशेष प्राप्त कि संबं	शन्मिक्षेत्र थंड होगा । इस में कान
		अर्थाय द्वासम्ब हार देशाय	महत्त्वाओं नेजकों त्या दिशाबी
क्का: वहां ६८ धार्व सनाव को	वार्यसमाज ज्ञान मिल		के सुन्दर विधार होंगे । सारे स्पूक्तें
स्थानित्व प्रदान परवा निकास	मतीओं	व्यर्थसमाज रेसवे रोड	काकियों व कार्य समाजों से शर्यसा
बायस्य है। इस के ऋतिरेश	Canada.	श्रम्याला गहर	है कि २०. १, ६४ वक मधित है
भार्य समाय के वचार की दृष्ट से	के बाहादिक शतका में पूजा	वन्त्राता चहर	अधिक अधियां अंगवा कर सार्व
<b>र√ो</b> सा वस विस्ट्रा दुवस ऋता है।	भाषन् लागे से महारात है सारव है जिये सम्बद्धित अर्थता	क्र	क्तार वका प्रथम के समान करि।
क्स भाग्य के एक बड़े केन्द्र में आर्थ	भेर्याः म्यु इतको श्रीमता है	वार्षिक चुनाब ५. १. ६४ को	व्यक्तावर
समान को साथी शांतर वनार	-	निम्न प्रकार से हवा	***************
<b>बा</b> ते स्त्र महात सूर्ववित हो है ।	शास्त्र प्रश्न करें दिश से लागे।	प्रमान की चनवीश चन्द्र श्री।	थी : स्टीटर~भी मह्यु राम की ≀
कार्यसमाज राज्य देशा की	भी सदा कान समान के विद्यान	उपन्यान को कार्यात पान की। उपन्यान कहेन्द्र साथ की, भी शाव	मैंनेशर-की सर्य लाहर जी।
स्थित देंसी नहीं है कि राज्य देखा।	र श्राप्ति क्या को जुलाते हुए -एसी असर संपन्नी से उत्तान में ब्राम्स्टर्सर्ग	वस्त्रभाव बद्दश्र साय जा, वा साव वसारा जी हत्यास । संजी-की करतार	क्ष्मद्रोत् चन्द्र संजी संबाज
के अनुस्य किया गाह्र सदावता के	अभूर शाक्ष स अन्य व बास्तवया		
कार्य समाज नावित का निर्माजकर	बर सन का करवाय करते रहें नहो	चन्द्र ही दावर । का मंत्री ही बेदर	ऋर्य प्रतिनिधि सभा मध्य
tions from more from the	र्श्य सब की प्रमु से शर्कना है।	चन्त्र हो । क्षेत्रध्यक्ष-भी, त्स्त्रमञ्	दश्चिम हैदराबाद
<ul> <li>स्थान क्षांपकारियों क्षां राजी</li> </ul>	10000000000000000000000000000000000000		धार्वे प्रतिनिधि सभा सम्ब
मदातुधाओं से बाव्य प्रदेश	हैं तिथिय	रिवर्तन 💈	र्वाकेश हैररामार के सरशक्यान में
विवेदन करता हूं कि प्रापन्ने शक्ति	(१) बार्वे गरेतिक शक्तिमें समा से संस्थान समी क्र		वीदंद प्रश्न प्रचार नगर समिति क
के बहुशार समाज वस्तिर के	समाबों को सुचित किया जाता है कि सभा का धारशस्त्र प्राप्त-		वार्विक हुबुद्द कार्यश्रीशन १६ से २५ जनवरी ६४ ई० तक हैहराबाह, सें!
निर्वाशिष सन देने का अनाव	देशन किन्दी क्लिक चलकी से १९४		समारोह से मदासा का रहा है।?
बहु। संस्थान संस्था स्था को अनुसह है	बोद्दशहु- <b>सार्कास</b> स्य में होना निक्षेत्रत हुया है बसी समार्थे विकि. अ		इस अक्सर कर चंद्र( तथा दक्षिण
वर्द पन सार्ववितिक क्रार्व	लाम पार्व क्रिकेट के हैं।		क गरथबाध्य कार्य केता वश्चार रहे हैं।
प्रदेश सम्बद्धाः सान ह		स्त-१-१४ की बकार ३-२-१५ हैं। 	श्रहा इस क्षत्रहरू पर स्ट्रीयक
नां दिली-१ के क्ले पर काला ह	को समा कार्यालय में पहुंच जाने पाहिए।		सम्बेश्नों का भा बाबोबर विका
नदारका∽र कंपर पर साता है वाहिदा	5	. 2	नाशहरै। .
	<b>भारतक</b>		व्यविम दिन २२, व्यवदर्श १४ को
स्थामी श्रृ शतका सरस्यती 🖫	पास,स्वरचीय बद्दश्या <b>१</b>		सभ्य रहिन्द के प्रमुख काने कर्न- क्ट्रांकों का सम्बोधन की रक्षा दवा
स्थान सार्वदेशिक	पहली बैठक १५-१-१४ को सम्बन्ध		ब्लामा का सम्बद्धन वा रक्षा गया है जिस में संम्पूर्ण गण्य शक्तिक से
कार्य शतिनिधि समा रेड्सी है	क्यन्ती समारोह २३, २४, २४ झमह	हम सन् १६६४ के बासंबर 👺 🖯	शंत हो हे मो भविष कार्यक्रवीकों.
वाद्यात्रकारकारकारकारकारकारकारकारकारकारकारकारकार	राहर में मनर्थ बाद :	8	के सम्बद्धित होते की माना है.
केशक साथ सेवा होजा वाहिए।	,		विसर्वे मार्थसम्बद्ध के भावी क्षये-
	000000000000000000000000000000000000000		हम पर विचार हिमा स्टारगा । "
[१९]((व-मध्रतम्) न	COMPANY MAKE MAKE MAKE MAKE MAKE MAKE MAKE MAKE	COLORAGE SERVICE CONTRACTOR OF THE SERVICE C	र्गंबी सबा

हुएके व वकारण में कोनेपात जी करनी आर्थ शहीरण प्रतिनिध क्या (भार जान-मद इसा बीर निवार वे तु, विकार रोष जानम्पर से पुत्रित स्वार वारोधारत सामीतम कहात्मा हेलात्र क्या जिट्ट कमूरी जाजन्यर एतुर से प्रजीवन मानित-मांग और्तिय सर्वित्ये वसा रीवार मानित



रेबोच्चेत्र त० ६०६० [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिममा पञ्जाब जालन्थर का माप्त (इक मुखपत्र) ि ৪-१४ No. P. 121

यक गीत का मुख्य ११ समें हैं। यादिक मूच्य १ सम्वे वर्ष २४ अक ७] १ च लम्ब २०२० ।वस्तर \_रवायुक्तावर १४०-१० महस्यो १९६४ (तार 'बायेविक' जानस्वर

### वेद सुक्तयः 🚦 वेदा मृत

श्रव मा पापन् है राप के करा ! क्ष्म से वरे हर जा राप का विकट्ट महान से अंध करा के अंध करा के अंध करा को काता कर का है। आई कर तथ है नहीं जरू करा के से सोव करा कर का समाज है। है से समका ! इस समाज है। है सारे समका ! इस समाज की सारे ! अस के हर रहा केरे समीज

#### रहा जहिमो वयम्

यत था।

है वाप के भाव ! इस तुके होतुर्वे हैं । इसिंखर इसारे पात भूत कर भी दत करा। दूर हो इस तुके से पार करके इस ने पॉक्त नहीं होना, काले नहीं दनना। पाप के भाव ! तुम है, भनी जबार सुव लें । इस ने नुके तहा के लिए स्थान दिया चले जायी।

### शिवो गोम्यः

प्रमो! हमारो गीजों के खिए करवाबा हो, मसा हो } गीर तुम के गूज करती रहें। दुम युव की अहर पश्ची रहें। औह भी गोमन को किसी प्रकार की हाजि व महुंचा जो में को माहिसारे जुलास्स रहें। मनसा परिक्रमा भन्त्राः श्रोडम् प्राची दिगस्मिरचिपतिरमितो रचितादित्या इस्तः।तेन्यो नमोऽचिपतिन्यो नमो रचितृत्यो नम

#### थारच्याचा विशास्त्राच्यातस्याच्या राज्यास्त्रा इन्तः । तेस्यो नमोऽचिषतिस्यो नमो राज्ञतृस्यो नम इयु-घो नस एस्यो चस्तु । योज्सान् द्वेस्टियै वर्षे द्विष्मस्तं वो जम्मे दभाः ॥ चचर्यकां.३ स्वत्त २७ मं.१

कां-दे-दे को इस (स्त्री) मुं ((ल) ईसा में कर (मिन) स्वाप्त्रम हो (स्त्रीय) में र ने नाती है (स्त्रीय) प्रकार में दिवा है है (स्त्रिय) का में प्रकार ही (क्वांद्राय) में की बिन्धी (स्त्रा) क्या में स्त्री (स्त्रा-प्रकार) में की का स्वाप्तार हो (स्त्रिय) में त्रा में स्त्रा (स्त्रा) स्त्रा एक्स करों तारों भा क्वांध्रार है (स्त्रिय) के स्त्रा है (स्त्रा) स्त्रा (स्त्रा) स्त्री में स्त्राणों में स्त्राप्त हो (स्त्रा) में त्रा स्त्राप्त हो स्त्रा है की स्त्राप्ता हो (स्त्रा) में (स्त्रा) में है (स्त्राण) मुं से (हिंग) के में स्त्राप्त हो (स्त्रा) में स्त्राप्ता है (स्त्रा) स्त्राप्ता है (स्त्रा) स्त्राप्ता है स्त्राप्ता है स्त्राप्ता है स्त्राप्ता है (स्त्रा) स्त्राप्ता है स्त्राप्ता है

### ऋषि दर्शन मनुष्यदेहाबाक्षश पर्यन्तम्

तीन प्रकार के जगन के रूपों में इस का सन्द्रस हरू सहुप्य शरीर से हे कर क्षाकाश वर्ष-८ ही। सानक जीवर इस जिबिश विदर का

#### मध्या रूप साथा जाता है। इस इकार ज्यान जिरूप बहा है। इकार में प्रजापति: सः

देर में शिस शांकि को लग्म के भ्रम से पुकरत गवा है। वह प्रशास्त्र प्रतिहत्वर हैं। विश्व के करपाइक, वारक, पालक दशी निवासक अगवान को सकन्म के रूप में माना सर्वा है।

#### देवा विद्वांयः पितरो ज्ञानिनः

्रेष विक्षानों का नाम दें कीर पितर क्षानियों को कहने हैं। मरे दुए लोगों का नाम पितर नदी पर को जीवित हैं कानी है प्रकार देंग हैं—कन को पितर कहा जाता है।

শ্লেষ্ণিখ **়+÷÷÷÷÷**÷÷÷÷•

सप्तरि दयाञ्चर की बोध शति के ऐतिहासिक पर्व पर व्यार्थसमाञ के जब धाँप अविच्य पर कम विचार करना हमारा भाकावक वर्तन्त्र है यह ठीक है---

कि सभी तक है स्टब्स कवि सबसा कोई काल भी कर सके इस न पूरा !

परश्त यज्ञ कज्ञना निदान्त मिश्या है कि हम अब भी नहीं कर पाये वा हमें दहीं भी सफतता नहीं मिनी बाँद रेसा सोचना भी हीन यनोश्वति स्प्र प्रस्तेत है 📓 इसारा सविष्य संमधारसय है। सार्य होने के भारे में आशासादी हा समे बार्वसमात के गीरवस्य भव पर कांग्रसान है और एक न्यब के नाते में अधार्यसमात के उलावस श्राविश्यः में विजवास रहाता र : आर्थसमात के भविष्य का संयकार-सय चित्र सीचना वा हेनी करपना करना व्यपने कीवन में श्राविश्वास है। इस का ऋषे बड़ी स्थाना कि ब्राज ब्रार्थ हुदकी में साहस, रवाग, निष्ठा, धन, दसवते स्रोट दमंगें नहीं। परन्द पेसा नहीं है। प्रदृष्टिका विकास आउपन का साहस, धटानन्द की वीरवा, ईस-राज की गम्भीरता और क्रातुल्ब त्वारा, लेखराम के कारमान, स्माम-लाज की चेतना, नारायम् स्थामी की मली और खडग्डागन्द का धीरव काज भी बबारी रवों जें नवल रक्त का संकार करता हथा स्पति क्यौर जीवन को प्रवाहित

आईये ! क्रथने भव की चर्चा निसर्वे । हमने क्या किया है

मुर्ति पुता, ६ वर पुता, आह. फबित व्योविष, सतहात, बाल-विवाह, विवेश यात्रा से अब कावि श्रम किस वात के रूपक से ? प्रसिद क्षारतीय विद्वान ताः A.C. Bose के फलसार कलियम में Intellec tual Impotence गानिक स्यु'सकता का हिन्दुकों को रोग था। महर्षि कौर उसके बाधै स्मान ने अस का निदान दिना।

## हमारा भृत **ऋौर भवि**ष्य

ते •श्रीराजेन्द्रजी विश्वास M.A. प्राध्यापक दयानन्द कालेख शोक्षापुर 'Arva Samai Aims at'

Producing a virile intelloct,' झार्व समाज का वह है। उक्त केंग्रह के समसार स्वाध थवं शक्त सस्तित्व को खन्स देल है। इसी मर्थन्य विद्यास के करासार To subject oneself to astrology is to paralyse ae's will,' बरोतिय में विकास का द्वार्थ द्वापनी संकत्य श्रवित की पनावात की भेंट करना है। जीव कमें करने में स्वतन्त्र है बेद शास्त्र भनुमोरिक एवं गोवा द्वारा प्रतिपारिक मार्प सिद्धान्त झावों से वर्ग के सामने सफलता से हसा ।

विश्व दिख्यात सर्वमान्य मारतीय इतिहासकार सा॰ वट्ट नाथ सरकार के शब्दों में 'To day Hindaiso has paid the Arva Samai the tribute, that of Imitsting by stealing its programme."

बर्यात् साव हिन्दस्य सार्व

इमें दिवनी सफरत मिली ह

समाज का धनकाल का के. बाले समाज के कार्यक्रम को था। का (जपना कर) आर्थ समाज के प्रति क्यपनी बद्धा प्रकट दर के कृत्य पुकारका है। वें बहता हं कि ससे ही होग धार्थों को नार्स हैं । श्रवि को मला बुरा कहें परन्तु द्वमाशी बह पूर्ण विजय होनी बहि विधर्मी मतारतस्यी कार्यहरमाञ्च का शक्ष लिये विना भी वैतिक मान्वताओं को संशीकार करते जातें। इमारी राष्ट्र खेवा का सब से

प्रवास व श्वासन्त प्रसामा प्रसिक्त राष्ट्रिय नेवा एवं हेलक भी 'C. Y. Chintamani के शब्दों में यह it is fear of India's chemies, or opponents, is लारांश बह है कि उस बन वे

the measure of service it has rendered or shown itself capable of rendering to the ancient land प्रत्य भूमि ।' सारांश इसका बढ़ है ि स्टारत के वरियों का आधे ससाप्र से जांतरिक होना ही इस बाद का सुबढ़ है कि पूरव मूर्ज सी वह न्याक्षेशाच्यारहाहै। 9समे

दिशंदन नेवा के रकतें का समर्थन क्रमी पास्त्रितात के ब्रह्म में भी कर दिया। भारत के विरुद्ध विष वसन करते समय अवद भी आर्थ समाज को सस न सका। यह ठीक मैं कि क्षाय समाज एक विश्व व्यापी समात है परन्तु अधेक देश के प्रदंश देश मस्त्र के शिक्षे वेद मात भूमि के प्यार का झादेश देश है च् चतः कार्यसमाज्ञ नारत भूमि के देशियों की फांल में सथा से शांटा कान कर सदस्ता ग्रहा दे । क्या से बग कर दिया?

**स**नी में तरोधन सहारक्षा *ईस*राध की खोटी प्रश्तक Vedas As Interpreted by Swami Dayanand पढ़रहा का एस में महत्या त्री ने जिला है 'Gentle men. I was much amuse to read in a work on Geography that in habitants of India were called Gentons, that they were descended from shem a son of Noah, and that there language which was nemed sanskrit was dis-

covered by a European genzleman in such and such a year. महात्वा को के रुक्टी का

जो ब्राह्म सो हमारे सम्बंध में चंद संट लिख दिया । इस उद्धाया में कड़ा गया है कि भारत के निवासी हर्जरत नह के पुत्रं की सत्तान ये किनकी क्षाचा संस्थत का पता क्रमक वर्ष में एक यूरोप निवासी ने लगावा । इस प्रचार की सब धनाप शनाय को ब्राय समाज ने पनीयी ही। आयं समाज महर्षि हारी निर्दित वेड पथ पर चसकर सहातमा हमराज की किन्न अभिष्य अपनि हो .......... हो प्राह्म बरने के लिये परिवास है :-- --

spiritual brenaissance of the world through India. May the forecast be true and may the members of the Arva Samai justify it through their conduct क्षर्यात् 'में मान्त द्वारा विश्वत

I see signs of the

के काम्यारसक स्पन्नागरस के क्ति देशता है। सग तक करे यह व्यक्तिकाधी सत्य किंद्र हो की कार्त सकाब के सम्बद्ध कार्य का बरण से इसे मार्थक वरे।" दम तहस्य की पत्ति के स्थि

सप्ताम की ज्ञावकवृक्ता है। कार्य

लशाब का घमें है ही संघर्ष और सम्बन्ध वर्षायमं । यह भक्षाश का थर्स है। प्रकाश सदा जोबकार का संद्वार बरने के किये निशा से यद बन्ना है। जोग इसे सराहास करें वा क्राज्यमक परस्त चरवर्ड हाईकोर्ड के ब्रावरीय स्थापगर्ति सी गाराकाचे ने ऋषि के प्रति में धटा स्वयन करते हर तो बाद कही वसे इसे सदा शारक रखना चाहिए ।

सभ्या सभारक यह नहीं जो शक्तियो पिटया सेवा है। सन्मा समाज समारक को बढ़ है जो विरोध, कापसान तथा परवरी की वर्ण के सामने भी खरिता करा रहकर अपने सिद्धांतो के प्रचार हैं श्चनकरत सत्या रहे । इस रहि से

(देग्प्रहत्नपर)

अध्यादकीय-

### ग्रायं जगत

वर्ष २४] रविवार २०२०, १६ फरवरी १९६४ ( ব্ৰক ও

### महत्व पूर्ण दिन

मेर्डेस परमरी का कथला afeaur का दिन बढे महस्त्र का है, क्वोंक वस दिन काथे शदेशिक श्रीर्वार्थय समा पंचाय वालम्बर का साधिक क्रांब्वेशन कार्य समस्य सोडगढ सद्वसर में क्वे क्रमारीह से द्वोरहाई। इस में समा से प्रकारिक कार्थ समाजों के सान्य स्ति। तथि एक्टे हो उन्नां भनते वर्षे के क्रिए क्राधिकारी निर्वाचित करेंगे. वहां सभा की सर्वाणीया बस्तति तथा बेत्र प्रचार के सहान काओं की प्रशीत के बादें में भी रामधीरता से विकास बस्ते १४ वर्षे ठोस, क्रियास्मिक स्पाय, सामन श्रीचेंगे, उनसे पूरा २ लाभ उठा कर मान को साधिक के साधिक क'सा है। बाने में विशेष प्रवास करने 1 मार्थ क्रकाज की भाग के भीतिक तम से र्मकारी प्रतिश्व कावायकता है. बासका पित से विकास पनपता जा बहा है. मीमकाद का बाडायरय क्रमहोस्य किस्ता बस्ता बाता है। केलें कर चार्रों क्रोर से क्षाज़ देसे २ अनर्गत आरोप समाये जा रहे है। अमेरियां, स्टिशां प्रश्ने तथी रही भ्रान्तियां फिस प्रकार अपना सिर चटा कर द्तरूना रही हैं। विस क्कार का साहित्व जिल्हा जिल्हा खाता है। बीवन किस दिशा में मोब साने समा है। सानपान की द्यक्ष्या, विलास का साम्ब, भोगों बी पण्डि, श्रंगार का प्यार , बाजा-चार का सेप्त, तनताथ और श्रीवन का स्तर किस सीमा तक आ पत्र का है---इसे देखते हुए खांसें सिर सण्या से मध्य जाते हैं. सहते हर

थायी विश्म जाती है । यह शबाह वर्तातेका ॥ बद्ध रहा है। वेद प्रकार की क्या अवस्था है ? वेसे क्यीर दन तैथे (स्ताने कालदेवन ब्राज है, जिल पर काल राज्यीरवा संक्षित हैंट हर सोचड़े की कार-**व्यवसादे। सारपथे लड** है कि इस यत ही विश्वती दा रही है। इस

क की जीव क्षियार करेगा ?

कार्य प्रादेशिक सभा पंजाब

वर्डी विसास, संबंदिक, शक्तिमासी लभा है। इस के पास प्रसिध न विश्वा विशास्त्र, हेवा, वपस्त्री, संन्यासी, प्रभावशाक्षी कार्यकर्त क्या मारी संस्थान हैं । इस बार 📖 का महत्व भीर भी दक्षतिए कांग्रह है कि सभा इस बार काने वाने क्रवतुषर मास में संवर्धीय महात्म ईसराब राताका मना रही है। इय पारते हैं कि सभा का यह कांच-वेशन' बजट निर्वाचन की विशेष विराज बैठक महत्वपूर्व हो । सभा के सत्त्व क्षमानों से काने रह र्हत. क्षिक अपना विशेष समय तथा सम्मांत सहयोग देशर विशेश कार्य मांख से झाइन वेटी की, उसके करें। दवा डी उत्तम हो कि शनि-क्ष्मार को बहुत पीक्षेट दाला जा वार को दो भार वंडे सभा के विशेष २ संस्थाको के अन्य सरकत सागर है. आहां से ये सन्देश समाओं वं वायंख्या पर्द्ध इच्छे तिकते हैं । योग्रा बजर्वेद के बाग्रीसवे

हो कर बस दोन निसंद करें।

र्शवदान के क्यूंथरान में बन को

सर्वमध्यत हे कर कार्य को सामस्य

**६२ दिया** जाये । इस के ज़िए सभा

रानिकार की कैंद्रक कर विशेष

वस्था हुई ।

⊸तिकोक पन्द िसहय समामा सर सकता है। इस

## वेद को प्रमुखता देवें

महत्त्व भरा हेल क्याहित हमा है। जिस से उन्होंने एक आयन्त बावहरूड शार की कीर आहे मारश्यादियों का प्रधान क्राक्षीयत दिया है। यह प्रभावशानी शब्दों के इ.पर्ध जनोधादवा को स्टब्स (स्था है। से बहते हैं 🗎 बड़े रीमा पर भी बात है रामावया, महा-भारत के बढ़ान्द्र इतिहास पर भी कशासर्वे दें: चर्णाचकतो का सी सब के द्रवय से मधा सीम्ब है। यह सम्बान होना भी पाडिए। दिस्त कार चारों क्षोर मेली क्रथमत रहिर रोकर हो रही है कि प्रवहा सम्बाध बाने र बाजा वेशों को पीसे कर्त कारधी है। स्थान २ पर नीता सम्मेलन होते हैं. राजाकार वे बडे २ पारावश विमे वाते हैं. नीश के बड़े २ भव्द और विशास र्मान्दर वन रहे हैं। कारावासी में देश यन्दिर निमित्त द्वारा है किस की बिक्तियों पर तुलसी रामायस अंदित है। यह वांत श्राप परवकों की भी है। अरु सम्प्रता-भन्द जी कहते हैं कि इस भी उक्क सम्मान करते हैं। किन्धु उस ६वर्ष को देख कर ऐसा होने लगा है कि इन के फारिशय धेस

रद्वा है। देव तो सहान स्नाद ही

कालाद के कारम्ब के करिएन

मनों भी चित्रत और सन्दर

व्यास्वा है। यदि इस ने वेदी की

बपेक्स कर दी और इस सन्यो

का ही सन्मान किया हो व्यवस्था

क्या होगी-इस का 'सलसात

ऋभी २ - जस्थान के राव्यपात जिए जो मस स्रोत है, उहां से गीवा, क्पनिवर्दे क्राहि प्रन्थ निक्ते और बी का सम्पर्धात्रक जी का प्रव व्यास्था हे रूप में बनाये गये हैं---दन वेशों के प्रथम में पाएं स्थान विश असे।

ताः सम्पद्धांतन्त्रं की आरत है राजनीतिक सेसा ही नहीं है. शयत वहे भारी विद्वान, प्रशंब स्कासर त्वा हेरू कभी है। साम उत्तर प्रदेश के मस्य सन्त्री भी रह चुके है। पान्य कम राजस्थान के राज्य-क्षत्र हैं। येवों पा बसी अठा कास्वा है इन का क्यन है कि वेदों से थांसे क्ट कर होता काश्मसका को प्रस् कारे के समाप्त है। इस भाव की सुन्दर विश्वार भारा स्वक्त है। बह तस्य ही दे छात्र सारे देश में जायें समाज के सिवाय क्री किसे वेदी, वेदप्रपाट, देविक साहित्य जिसमें प्रकारित करने की चित्रता है ? चेतों पर अवास चारी कोर से नागविध साचाओं है को २ सम्बो हारा आवस्यका हो रहे है। समाज के धार्सित्क उपका बीन प्रोवकार कर सका है । समय या गरा है जब कि इस बेरद्रकार में तन, मन, धन अधित परते से प्रस्तुला कानसब करें।

—विद्योदयस

### ऋार्य समाज सांबा

व्यार्थ सभाज सर्वा की साहा-हिक बैठक में इचरत सहस्मय ताक्र**क के बाजों की करामद**री का सकी का इसकार करते हुए यह भी मतासदा दिया स्था कि समा मंदिर से चोरी की गई मुर्तिया फौरन उलाश करके हिन्दुको के समझबी जबवात की कार की जार । दरना चनर किमी प्रकार की नदबह हो गई तो उसकी विक्रमेवारी हक्तन पर होती ।

वेदप्रकाश वर्मा मन्त्री शबा

क्षायंत्रगत के प्रोमी पाठकी के जिए लगींय पर्व महारमा रंगात की का बाब सेंध-≵० वर्ष एव दिवा ग**ना** सर्मे वचार के माधनों पर झोजस्मी, क्रोजपर्ले जानवा तसन के पिसले बर्द अकों में प्रकाशित किया जाता रहा है। ईसाई मत देसे फेख---

बह दर्शन वस रहा था- इस से

कारो विश्वे असे

सॅटप!ल के श्चार का करीका बहा विचित्र सा । वह विसा स्वान बर जाशा या, बड़ो पर दो तीन वा चार दिन नहीं डड्रता था, पत्युत क्षः सात मास क्ष रहता था । वहां पर वह दक्षान स्रोत सेदा वा चीर रक्षे वता कर बेचवा तथा खपनी होटी कमाता था जब वह वह देख क्रिश कि अपन में ने रोटी के लिए पैसे कमा जिये हैं तो वह यह उसे को इक्टब्रमार के साम में तम जाता सा। वह यह दिनों के सिन्नों के पास पता जाता और बाहर श्रदा हो कर शिरवा में वाने पाले क्रीर ब्राःनेवाले लोगों को वनदेश थरताया≀ शनैः र वड उन को रात को बुताता ग्रीर वेह भा कर इस का उपदेश सन्ते । वह अपना धार्मिक जीवन इन के हत्यों में प्रविष्ट करता । जब देखका कि श्रद्ध जोवन वाले समध्य वस स्थान पर ैवा हो यथे हैं हो उसरे स्थान पर जा बर रसी विधि से व्याप करता सेंटपाल का काम शास्त्रि से सहीं होता था. क्योंकि मैंर केंग्रव ने ਜੈਂਟਧਾਰ ਦੇ ਧੀਕੇ ਜ਼ਸ਼ਤਸ਼ੀ ਕੀਕੇ हर वे जो सेंटवास के जैक्चर वाओ अस्य पर बाक्स करते थे कि इस का भाषक मत सनो । वह ससीह का अनुवासी नहीं। यह लुच्या । शी : यह तमलों में, बनों में तथा श्रीर वदमाश है। परन्तु वह सदनः प्रचार परावर किये जाता था।

इंसाई वत इस तरह से बदा-नित प्रथिक र प्रेंग्नता, नर्गेकि बरोधिकम में बैठे हुए ह्यारी यांट

### म्बर्गीय महात्या हंमराज जी का भाषण

बाजार्य जारी कर देते तो सेंट्याल

बा बाब बद जाता। इन के शासने

शीक्षाय से यह बड़ी कड़िनयं

#### धर्म प्रचार के साधन ......

क्षीत्र क्या हम विकास में कैसे थे

कि सभी बसीइ बाता है और

के खोकारों को क्यों मानें ? शस्त्रवें

यह कि ईमाई इसरे लोगों से शे

वालों में झलग हो गये भ्रम्बत

के स्टोइप्पों में संस्थातित न होता ।

त्य जोतों ने करता हर दिया कि

वेईसाई केमी हैं कीर वे शह

शाह के विशेषी हैं। अब यह राव

को एक फिर होते तो एक बच्चे की

त्याचा को बावावह समयते से मात्र कात्र मन्द्र दशते स्वते हैं (इस

वस की बारशाहत होयों। इन चा वर्ड । वड यह वी कि वरोसिसम मनपाँ के जीवन का लोगों पर में हवादियों पर जनम होने सने वे बढा भारी प्रमाव हवा और बहुव तंत्र हो कर तथर तथर भाग गये। से लोग इस में 'सिम्मिलिय हो बडांर कोई गया, बस ने प्रचार ьà ı रा साम ब्रारम्भ दिया तथा ईसाई वह और विश्लंत ओ उन हैं <sub>मत</sub> को फैक्शने लगे ! वे जहां पर प्रचलित था, उस ने विचित्र रूप तवे त्यारों से खोतों की सभीत का प्राप्ता कर जिसा कर्यात यह 'फेनस एक ईंड्यर को वा मसोड़ को मानते रपदेश सुनाया। (वें बहु'गा, जर ये. और इसरे लोग इस समय के तक हर एक ब्रावमी उपरेशक नही बनता, एक तक धर्म की हस्त्रति बादगाह की मीर्व बना कर पूछी नहीं हो सकतो। पश्चित २ समाज ने । उस मसव बावताई का बड़ा वल होता या । स्रोग देवी देवताओं में जो कोई नेम्बर होता या वह यह के साथ अपने शहराइ की भी भावस्य सम्पता वा कि उक्तरें के भी बैंडिक पर्स से परिचित करे और गर्ति बना कर उस की ध्रम दीपसे व्हं एक पेसे भद्र पुरुष है कि वे पता करते थे। उस की प्रारत पटने तथा इस के चारी चढावे जड़ां भी गये हैं दन्हों ने बड़ां पर चराते थे। हजारी स्रोग बारशाह ही समाज स्थापित किया है। जिस के सम्बंद दशका कर उस की पत ध्यान पर इस को जीक्सी के जाराव ब्बते थे। लोगों ने मसीक्षियों की परभी हुई है, अहोंने बड़ी झार्य कहा कि तुर बादशाह की पूरा समात्र का मरहा वादा है । इस क्कों नहीं करते । तो उन्होंने कहा प्रकार के वदि भाव हीं तो तितनी कि इस बारशाह की प्रवा है। इस व्यत्नी डोंगी अतना स्वधिक प्रचार अन्कामान चादर करते हैं। होगा) वडी विचार ५४ सळा उस परन्तु क्षित्राद परश्रममा के कौर में बर्तमान था। उस में एक धीर किसी का पुत्रन नहीं स्पत्ते । श्रव्होंने बी विचार था जो ४न में प्रवेश कर मूर्तिपूजा कालीकार कर दी। इन गवा या कि ससार शीव नर हो के साब उन में यह विकार भी पैटा दाने वासा है अर्थात वहां सी हो एक या कि जब हम येशी वर्शमान प्रावस्था सब नष्ट हो कर . देवलकों को नहीं पुत्रते तो उस मधीइ चापेंगे और व्ह वादशाह

वर्तेंगे। इस विचार से उस में

तपन्थी शरपन्य कर दिए। तपरिवर्धी

की एक प्रसार की जानि बन गर्न

प्रकारत स्थानों से तप बचने हे ।

क्षेस र दिन वक्र वत रक्षते थे। बे

क्रमना जीवन वहें काबुद्धन प्रकार

से व्यक्तित रूरते हे । वह उस समस

के अन्ते रात को क्षी होते से अधि देवल ईसर्ड ही सम्मिश्रित हो सकते ते । —(লবুৰ্য্য) वार्ष कन्या ग्रहकुल नरेला (दिल्ली) का इवां वार्षिक ग्रहोत्मव

मारत भर में बल्याओं के क्रांत्रे गठ-विधि के एक मात्र नि.स.२६ रिचा-चेंद्र कथा नुस्तृत का = वी वार्षिक सहोरतर १५, १९ पत्रसान दिनांड २६ फर्स्वी १ सार्थ को अक्रि समारोह से मनाया घाएता। इक व्यवस्य नदीन **मध-ना**रिकारो स्ट प्रवेश सी होता । यहेकार्थ वर्णाता-पत्र २३-२-६४ तक पटंच आसे

चाहियें।

शासन में जयबहोति के बार्ड विद्वार तथा संन्यामी भावने समस्य वयानी एवं मञ्जापदेशक सतीहर भतनों के हाना वैदिक धर्म के शबार प्रसंग में कोग रोंगे। रज के नातिरिक नुकरूत की ह्या चारियाओं दारा रेज शाचा (संस्कृत) तथा व्यर्व अल्बा में मजोरंबक कार्यक्रम स्था जावता एक सम्राष्ट्र पर्व से *बाउर्वत-पारावशा-*महायक की स्वामी शुरेग्रावन्द की की क्रान्यकृता में सापन्त होता। पर्याप्त संदवा में प्रधार कर समस्य कार्यक्रम से साथ वढाएं तथा अस्तव की शोसा चराएं।

चन्द्रच्या प्रार्थ स्वानिक मस्याभिष्ठात्री स्थं चाषार्थी दयानंद कालिज शोक्षापुर

४-१-६४ को आर्थ समात्र सोबापर की सामारण सभा में पुश्य सहारमा स्थानन्द स्वामी सी बहारात्र है स्थाप्य सम्बंधी सारी सबना सभासदों को दी गई स्प्रीट जनमान की पता भीर देवी देवताओं माननीय सहस्त्रमा बी की दीर्थ सानु व काल्प्स के लिये कार्य परिवासी ते वार्कन करने की समझशे की हेरणा की सर्वे ।

> राजेन्द्र विश्वास 素品の

कार्य बुद्ध समान, सोसापुर,

### महात्मा इंसराज जयन्ती के सुश्रवसर पर

### हमारा परम श्रावश्यक मिशन

के - भी दशस्त्व आर्य एन.ए. विदाशी साथ आध्य होस्यारपर 444+++++++++++++++++++++ द्यारंसमात्र का युग संधर्त का पाइता है व मॉक्टर में उनका

भावत्य की बोटी भी दिलाई देवी

-रहा है। अब हम इस संस्था का इतिहास देखते हैं तो गर्व बरने की विका. क्रांश रसी को सम्मू क्रांगाने पान हमारे संगुल स्वयं व्यस्थित को प्रतारमञ्जूष है। इस अथनी होती है कि कार्यसमात ने कारने का धायोजन विश्ववादे में हो तो बहुत श्रेयरबर है। एक चिता सी प्रवर्तेक के प्रदेश्य की शही-आर्थि वत है। इसने महेर द्वानन समका है। संसार में यह भी वडी धाक्रिक स्कूल, तिनके सक्य देखका सहस्या रही कि महापुहच के कन्-मादी क्रवंत गुरु के उपदेश से भटक है, दिन्तु उस महारमा औ के जन्म गव् । इदाहरगातमा श्रदीर की सूल स्थान का घर एक दटा पुटा खोता. के बाद बनके अनुवादियों ने वडी एड कमरा सी व काज यन सका। सिशान्त अपना लिए जिसके संदय के लिए महात्मा कदीर जीवन भर क्षूमते रहे । भला हो देव इयानन का, जिन 🎟 धर्म २व नेद का धर्म बा दरन आवेसमात भी माने विच-. हित दी जाता। सहायुक्त पहुचा-नता हो इंडिन दें हो, परन्तु पह-वान कर उसे समझना और भी अञ्चान व्हिन है। आज थदि वार्य समात्र ऋषि की पूर्वि पर साथा नहीं मुझावा तो केवल इसीसिय कि संस्की महानेता ऋषि की प्रतिसा पर पुरू चट्टाने में नहीं बहिक व्यपि के प्रमेपर कास्यास्त्रते में है। सात्र की सम्यता का चच्च शिवण द्वांचा वदलने की कावज्यकता सर को मालुम होती है परन्त विस्त्री की स्वार्क कीन वस्त्रे वह समस्या है। इस बात में ब्राज कोई भ्रम न जाने कि विकास पदने वाले शासिक अकृत्वार्य वैदा हो रहे हैं अपनारों **हो** हो इस्त । परन्तु व्यवनार्श से तो

क्षंसार नहीं दनताः बुखरी भोर काकियों का बाटावरया, किट चस में वांहचमी विकास किस पर भारतीय संस्कृति के प्रति बाभद्धा युवकों को ऐसे निवेदन है कि नवम क्या का बासक हंसराज जिस बहेल के

किए इंग्रर्थ स्तुता से सावा कोइना

क्या के बता हो रहे हुए देव ! परन्तु इंसराज के बजबादे की शु कीत ले ! ठीक है कि बहासा प्रसराज की की महानता उनके बस्तस्थान में व लोगों को रीस वटे वह सगइ जा कर देखी तो दी चांसुबा बाएंगे। पास ही दाक कार्यक्रेव इस घटना ने निर्धारित । धर है। नहीं से एव आते हैं। पर

बांटरे बाले दाइसाने की है इक्स हो है हिना शिवा व त्र त्याग के प्रतिमान इंसराज भी ने : यहां से शिका के सन्देश भेजने के संभाग सहस्र किय से वह धर उड़हा बोरान । शोक, महाशोक ! जागो समा भवते कर्तव्य को एग करे। nal बर जवानी स्थ उट्टेश्य सफस होगा। झात्र समय क्या गया है कि हम जारी, सोचें व दनरों की यदि टंचारा कास्मारक व करतारफ से विरुवानम्ब-स्मारक पन सकता

व्रम् समा के व्यविकारियों के है वो बजवादे मैं उस देवता इंग्रहम कार हें ताकि वे पत्थ सहारमा दे मूल घर की यह इटी पटी इक्साज जी के वर्ग चपने करेगों चवस्था क्या <sup>9</sup> बड़ां पर उन्हें सम्बी-को सफसता वर्षे इ निमार्थे । इस सम्बी पास, हुटा दरशका माने ता क्रमश्रमं को मनमें व स्वरो पुकार पुकार कर वह रहा है कि अस-धर्म की स्वार्थ कृटिवर मुनो, इंसराब के वद से पताप हो जाई। यही अनम है। स्कृत य कातित पड़े-एडं होकर

#### <del>2232232223333332222333333</del> दयानन्द्र-वचनामत

न्ते प्रदक्षात ध्या है जो प्रापने तर-प्रक-पन से संसार का क्रांबर प्रवकार माधित करने हैं। वे सोग किन्द्रशेय हैं श्रो ध्यपनी कक्कारता है स्वर्शवंत होकर क्षपने छन, सन कीर छन से अग में परहानि दरके बड़े काम का नारा करते हैं। प्राप्त साम के कारण महादानि कर बेठना सृष्टिकम के प्रतिकृत है। विश्वमत में दो ही क्शबं जीवन का मूझ हैं—वह क्यन कौर दूसरा पान। मनुष्य को सान यान पुरस्त्र बाध्य हो, इस ख्राधिशय से व्यार्था-वर्ष के राजे-बहाराओं कीर प्रशा के बन याय कार्रि बहोपकार भाकों कान तेर कार वज करते और न ही किसी दूसरे की बरने देते थे। अध्य तक भी ये गाय और र्शेस वा इनव नहीं होने देते। बात को रक्षा से कम्म पान की बहुत विंह होती है. बिस से सबेशवारत का सुल-पूर्वक निर्वाह हो सकता है। राजा प्रया की जितनी हार्जि इनकी हत्या से होती है, उठती किसी भी इसरे ६म से नहीं हो सकती है

( स्वामी सत्यामन्द्र जी ) \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

#### ईसायत का स्वरूप कार प्राप्त में ईसाई ओन

करोडों रुख्ये ज्याय कर के हिन्दु-समाज की निर्धेनता, प्रशिक्त. शोसा सादेपन का क्रशनिव साम बडा कर बन को थड़ा पह ईसाई बनाने में हवारों पार्श मिरान्सी सर्वे हर है । चार्य समाब 🖩 सिवाब इस झोर किसी का गुनि कभी ध्यान नहीं है। काम प्राहेतिक सभा अप कोर से सप्ति एवं देव शक्ति के भी दं. देश प्रकाश जी काचाये वोशिको वर्षों से इन्द्रीर रक्ताम बादि के में त्रों में ईसाई सिशनरियों के प्रचार को रोकने के जिए वहां जीवों में बहा ही सराहतीय पास व्ह रहे हैं। इजारों भीक्ष ईसाईनवा. बादस से द्याचे हैं। वहां भ्रायम चलाकर बड़ाकास स्थते हैं। सम के द्वारा 'ईसाईमव का बाशविक लक्ष' नामक एसक धनसम्भान से यरी जिली गई है,। आवं (शहेशिक नमा जालंचर की चोर से सह एसह र्रमार्रेयत की शादकारों करने जबा जब का कहा लोगने के लिए पहासिक को वर्ड है। इस के प्रकाशन का बाग ध्वय कार्य समाज के पराने अस्यन्त बदाल, गृहापस्था में सी कसाल का यम प्रेस रहाते वाले. नाजारमानों पर अपने हैसारिक दान के लाग वर्स कार्यों में बस्तन्त वे सी. कार्च व्यविभिन्न सदा वर्मा के केसियों वर्ष सन्त्री रहे हर थी. बा. जगत(स्का.

> होती है। इस पाइते हैं कि यह पुस्तक सब के हाथों में हो ताकि इंसाइंबर का निरोध कर सकें। बार्वे बादेशिक सभा से बहुध सले सत्व पर यह प्रश्नक सिक्क सक्ती हैं।

जी १०० दवाकद सपर लारेंस रोड्

बालों ने दे कर बहुत ही सुन्दर

कार्च कर के इसरों की भी प्रेरखा

री है। उन की इस शक्तम में

भी समें क्षणत देख कर प्रसन्तक

### श्रादर्श विवाह

श्रीशाम काल की रामकृष्ण मैटल बन्धे भागहप रेखवे स्टेशन रोश कम्बर्ट की सुपत्री सी. सरजा B.A.L.L.B. का ग्राम विवाह संकार प्रमुख सर में भूमधान से से सम्बन्ध हमा। विवाह से पूर्व शाम नेव का यज्ञ बटाशा तथा क्रमध्य वर में हका। विवाह संस्थार श्या यहा ६ त्रिक्षोच चन्द्र कार्या बारवे प्रावेशिक सभा जावनवर स्त्रा वं. सनीवीदेव शासी वटाला के करवा। श्रा. शामसास भी कार्येठ शार्य पुरुष हैं। कार्यसमाज 🖈 सेवा में बाये 🗊 कारो रहते हैं क्षप्रदाद तथा बराव का सम्मान कडे समारोह से किया । सार्रेस श्रेष्ट तथा बटासा के गन्य मान्व सच्चन शामिस वे। एक ट्रैक्ट कौर किया भी खपवा वर वंदी गई। इस द्वामाणकर पर बन्च दान 🎚 **प्रा**विश्वित वेश प्रचार सभा में भी वीस स्परे भी शामसात जी ने विवे । सारे परिकार को बधाई तथा बन्धवाद ।

### कार्य समाज जारेंस रोड

क्रार्थ समाज लारेंस रोड क्रस्ट का के बाल काल देनिक यह हवन के पश्चात् ५. त्रिकोड चन्द्र शासी च्यार्ज वादेकित संसा पंजाब जालंबर े के सष्टपि समाद के वैशेषिक दशेनों की बचा कर रहे हैं। प्राय: कास भगं के भी वर नारी व्यवही संख्या 🖫 स्थ देशिक दर्शन के खाध्याय में क्रिक्टिक क्षेत्रे हैं। 📰 समाज के करकर करीर माताएं वहिले तस्त्रीत **अ**श्रासाय में बजी कचितेते हैं। इस क्रोर वक्ष शीव है। बसाव वा शह दैतिक कथा कार्यक्रम कई विनी से आरम्भ है तथा वह स्था नजती रहेगी। आ बले से हा बच्चे तह कारोक्स नवता है।

#### देवता की जयन्ती नं॰ २

प्रातः सदस्यदि **म**ः **इंसराम की** की तत्म-शक्ताकी २३-२४-२३ क्रवश्वद १६६४ को जाखन्यर बगर में समारोह से सन्पन्न हो रही है। महारहवां की सबनी अनला को विस्तर गर्यो. पटनाकों व जीवन

को व्यवस्थित मार्गपर बससे का पय प्रदर्शन बरुधी है। इस शक्ति-केण से महात्रा बी की स्वतं वय-वी भी अपना विशेष सहस्व रहशी है। इस को सकत क्याने

के सिए प्रदेशिक सभा रोजक

शेम्प्रम वैदार कर रही है। इस सम्बन्ध में म॰ इंसराज वैतिन साक्षित्र विभाग महात्या श्री की परुष स्वति में साहित्य श्रभकात का कार्य कर रहा है। येका सक्कीत्य को कम कीमत का. या ईमराज ारिके सीचित्र जीवज से सरपर. जनवन्द्री के हाथों में कविक संस्था रे : eath spears पर प्रदश्जी गढ भी कालोपच किला का स्टाई । इस बचनीकासचे में महत्व पूर्व कार्य लेकों बाद विवाद प्रवियोग

वदम्दी हो सुचार रूपसे चलानेचे विष् एव्य बद्दारमा चानस्य स्वामी भी क्रमाप्त ने तीन पहें की श्रमील प्रकाशित की है को प्रायः

तमा विविध सन्मेलन होंने ।

लक्षी दैकिक पत्रों में शकारित हो पुडी है। अब वह वैश्वफेल्टली

महात्मा श्रानन्द स्वामी जी

यह श्रम समाचार कारवस्त प्रसम्बदा पर्व हर्व से सन्। जायगा कि बार्यवरात महान उरायी, प्रमुक्त, सीम्थता झीर मकता की मनोरम सजीव र्माद १६व महात्वा काकर स्वामी बी महाराज क्रव बसु कुषा से स्वस्य हो करे हैं। शिवरात्रि पर कर्ष्य में सारे भाषेसमाओं दारा मनाए वर्ष शिवरात्रि के रस्टा ममारोह में प्यार का झपने फलक्षय उपदेश से कवार्च फिता। बायवल बन्बई ही हैं। बाप दो मार्च को देहओ ब्यार रहे हैं। तम् का सद्दान भन्तवाद है। ध्यम जरी प्रकार जनता श्रास्तवात करेगीं। यस महारमा सी को शता त्वस्थ रखें वस सकत 🖘 वधे के हो तके हैं।

समाओं में मेजी जारही है। इस क्षार शदेशिक सभा पूर्ण असाह से इस दो सफल बनाने का उद्योग

सद रखी है। स्मावस्था १ क नैराश्वं परमं सु<del>ख</del>म्

विशासा की भी यह कारा। होती है। जिराशा में भी भारा रक्षती है ।

—'क्रब इसारे, करवा-तारब का एक ही उपाय शेष है। वह यह कि निराजा की आजा। इसी विकास की बासा के बस पर बहते ने अव-सामर को वार किया है और क्रिकर के साम्रात दर्शन किये हैं'---

कावास स्थते रहीसे. से —तेराहर्य : बोजी है 1 में वह बाना है, प्रकाशित हो रहा | परमं मुलम्' इस न्याधीवित का बीज इसारे डाय लग सब्दा है। —'वर्षान सीम हो उस्थ वर्तमान स्थिति को पार इस क्रांके है

(सीक मान्य) बाल गंगाधर विखड़) (विद्ववन्त, सरहटी साक्षिक कार्यम १६०६)

याने वाली जवन्ती को समरग्रा रखें.

व्यालकात

बातों की परीचा हो जाती है।

गण्डतः स्वसनं स्वापि, शवत्येव प्रमादत : । हसन्ति दर्जनासन्त समारथि संख्या ३

चानी-चलते कही न कही के फिसकता है, तम शिवते 🗎 पुरुष-की शिक्ती उड़ाने में कीन बड़ाई। वडाई इस में है कि उस गिरे हए की सम्बाह्ये । सम्बानों का काय संभागता ही है। केवल योपैकडक नहीं होना चाहिए, गुबों पर भी शृष्टि रहती चाडिय क्योंकि वदियान ५६व गुख माग्र कार्यात् गुर्वेक प्रवर्गाती

होते हैं।

प्रस्तक समाजा

यहाई-सद-दर्भेश---लेकड-श देव प्रकारा जी

वैदिक बिरानरी, प्रकाशक—इःवदीह वी काला असन राग्न भी प्रशासन रिटावर S.D.O. शकुवसर पृष्ट संस्वा 77, श्रीमव 50 N.P

तेलक महोत्य ने इस छोटी सी पुस्तिका में बहाई यत की उरवीत. क्स का विकास, क्या निवस अभी प्रकार समस्तार हैं । वहाई सत का वयम जन्मदाता बडा अञ्चाह से किस प्रधार देश न देश में इस की स्थापना की स्त्रीर इस का प्रचार करने के हेत् इसके वह आई ने कारक के कानेक देशों में असला \_\_\_\_\_\_ का संदर्भ के जार जाने विश्व वालेक स्थलना सह कर दिए के लिए वह निराला की आरशा ही 🔳 समी क्यों का इस लग् पुस्तक बरक्ष सम्बद्ध होगी। इसी से े में बड़ा सनो रंजक वर्शन विवाह । शक्ति कावेगी। इस शक्ति का पुस्तक शकारकों के लिए बावि ४५-

प्रकाशक महोदय ने बहाईमत का भग रूप जनता के समय रखने के जिए ही बहर्तमत हुएंस का मारा नर्प धापने वास से 👭 दिवा है। देसा काते से उन की उस चीरता का परिचय मिलता है।

प्राप्तिस्थास-मः शंगराज माहित्य विज्ञाम आर्थ प्रादेशिक सभा

### आर्थ प्रादेशिक सभा के वेद प्रचार की गतिविधि

#### 0000000000:00:0000000

आर्य समाज लारेंस रोड-४ करकरी से ११ करकरी तक शिक-रात्री समाक्षेद्र पूमशाम से मनावा गवा है । बी. दे. जिलोकचन्द्र जी पकारे।

कार्य समाज रेलवे रोड धन्याता राष्ट्र में जिन्हराजी वर्ष वही पुमकाम से सम्पन्त हुका श्री पं. कोमध्यात जी, श्री राजवाल जदन-मोहन मरहती दथा भी हमारीसास जी प्रभार।

जांचे समाज पुरानी नवती जम्मू-६ प्रस्तों से ११ वह छिक-सजी को में, हरिश्चम्पनी शासी ठवा भी हंमराजाते ने समस्य किया। सार्वे समाज मोडल टीन पानीपत-शिक्ताती व्ये सांन्यक्रित सम्बन्धित समाज सोडल टीन पानीपत-शिक्ताती व्ये सांन्यक्रित सम्बन्धित से समाजेह के साथ समस्य हुमा। वापि मेता स्त्रीर सेजें ६ प्रस्तित

भो हुई। आयं समाज नार्रस रोड~के होकियों के वर्ष पर २१ से २८

फरकरी तक ने सुनीशास रामी क्या कहेंगे। अ.स. नयाज करकड़ मात्ररा (शम्बाला)—१ फरकरी से ११ तक कह जरबर सम्पन्न हुवा। भी सेवाशाम की, भी समर्शकह की, भी सारकरम नी कीर भी समाप जो पतारे।

आर्थ समाज इलाहावाद (U.P.)—का इसका = से ११ चःवरी उद पुमधार से सन्दन हुमा। समा की भीर से वी राजपात, भइन-मोहन विमया बरवंदो, य. चन्नु सेन जी पक्षरे ।

आंखें समाज कुंचलुरा करवाल-धा यह कराव घर करवारी हो १ मार्चे कर सुस्थाम से हो रहा है। धार्च, किलोक्चन्युकी श्री व्यक्ति स्थार जी, भी राज्य करवानीहरू की सिक्टा मरावाल, के मेहतर धी, बी रे प्यूचीन थी, भी स्थारविष्ट भी कम्पाल स्थारवा संस्कृत गाहर रहे हैं। इसे छा ध्यरवें करवा, १० से १९ प्यूचीन आक्र सामन्युद्ध १३ वें प्रथरवें कर कर कराव सम्पन्न कुंडा

आर्थ समाज जोट दल सम्मेशन प्रेमनगर करनाल मे १, २, फरवरी को सम्पन्न हुका सभा की कोर २. चोनववारा जी १. चन्द्रसैन भी भीर थे. सेसाराथ भी प्यारे ।

षार्थं समाज पाणती १६ से १८ फारबरी, कार्यं समाज जिडोची १६ से २१ फारबरी, झार्यसमाज महीना डामी २२ से २४ फारबरी, झार्य-समाज निज्ञाना २५ से २७ फरवरी, झार्यं समाज जुड़ाती २८ से १ सार्यं, ये सारे करतन मी भूगातामती की देखरेल में सम्पन्न हो रहे हैं।

खाप्रसमाज कोट (अन्वरला) —का बङ्ग ११, १६ पटकरी कक सम्पन्न हो रहा दै। भी पं. त्रिलोक चन्द्र जो की मेजारास भी, भी समरसिंद्र भी अध्यासा करवाल सन्वरल पचारे ≀

> खुशीराम समी बेदप्रचार विभिष्ठाता आर्थ प्रादेशिक समा

### शिवरात्रि कल्यासाकारी रात्रि

(ते०-सुदेशकृमारी जी रेशवे रोड करनाल)

#### \*\*\*\*\*\*

एका नहीं आरमवासी करों और बड़ से निवस्त्रि सताते पत्ने आ रहे थे। परस्त वह राजि बसी भी कपने कार्यानकल दिनगति क्रमीप. करपासुकारी रात्रि सिद्ध स हुई थी। इंशरर में भी वही शिक्सांत्र बाई। वह न देवन बल्याकारों हो की कवित मंगसकारी बोध सांत्र मी दी। ज्ञानदात्री 📕 कांचल में टंकारा के शावालय में पिता के बादेशातुमार एक १३ वर्षीय बासक सुलगंतर शिशाचैन करने के पहचात् क्ख़बता पूर्वक शिक्ट्रशेंनार्थे, शिक्षतिय की भीर निद्वार रहा था। वस समय अन्यक्षत्रमयो ताति के बारों भोर प्रसारित :शालमय बाताबरधा में करेला मध्या का ही जान रहा था शिव हरीनके लिए, जबकि मन्दिर के सभी पुजारो और शिक्षमस्त निद्वादेशी की गांव में सुख पुर्वक सी रहे में १ इस समय बुनते हुए दीएक मानों मुखरांकर को अपना कर्ण व्यभार सीव रहे है। वह सम्बर में श्रीरवता और अन्वकार का साम्राज्य छा नवा ो एक सम्परन्तु सङ्ग्वपूर्व घटना ने सूसरांकर के भीवन में क्रांतिकारी परिचर्तन क्षा कर दिया । रित्तितम 🎚 से सिवदरोन की त्रकत वालका शिवसिय के प्रति पृक्षा में परिवित हो गई । वही बोप बेला थी। उनी समय अश्राहर हे इदयस्थल में एवं कीर रहें खाँकराया 🗏 प्राप्ट-मान हो गया । यह भी समने दिल की सोज । इसी दल्याकारी राजि ने इस्कोकर को 'दयासम्ब' सभा दिया ।

हिम्म वाच न नहीं न वा जन हुए या पा अवनवा क्यावता है नहीं हैं स्वार भी हों भी भी शीवाप की कात्र नुष्के थे, भी की भी कात्र ने स्वार में शीवाप में शिवाप के से कि नहीं के कोओ जात्र में भी कार्य में स्वार में शिवाप के से कोओ जात्र भी भी कार्य में शिवाप के से कार्य में शिवाप के से मार्थ में शिवाप के स्वार में शिवाप का प्रमुख्य में सिम्म के प्रभावता कार्य किया में हिम्म में शिवापित कार मार्थ में सिमी मार्थ में शिवापित कार मार्थ में सिमी मार्य में सिमी मार्थ में सिमी मार्य में सिमी मार्थ में सिमी मार्य मार्थ में सिमी

सङ्घीं कांच की रात को जारों वे और सदा के लिए जागते रहे | यह राति केवल कार्य जाति के जिस ही करवागकारी नहीं यी यहिक रिय छह स्पर्ध

#### मारा भत चौर भविष्य (इच्ड २ का शेप) ाभी इयानस्य कसीटी पर परे

→ p0 **प्रा**र्थ समाज से को बहा किया सुमत्यः वाहे अंत्रेख ने व€ र्थसमाज के अस्त्र हेते ही सीप रा था। एक बार जालस्कर के ेच दिप्टी कमिरनर से महाश्मा गीराम जी की मेट हुई क्यों के च सहाश्मा की ने ≼हा वि है समाज राजनैतिक दस नहीं। रा सरकार से कोई सीचा ा ब्रह्मारा कार्य असे प्रचार है

र विकास, सरवात, प्रविधा वे सामाजिक रोगों से समाज श्रचासा । यह सुन सर यह बोला भीर कैसे भाग शासन का N करेंगे ? इस प्रकार से तीय शांकशासी वर्नेये । इनकी पश्चिक और राष्ट्रीय श्रीमारियां हो आवेंगी को फिर इस इन कीने कासन करेंगे ? वसवान विसी के साधीन रहता है ? बह है कार्य जो इस ने किया। ध्य इसारी बाट देखता है। रापुर में एक प्रतिध्वत नेताओं हेते कहा कि भावें समाज

का शेरों का समाज है। बीरों

कार्य भगाज की भिक्तकती

। को ऋषि ने औरा है।

(प्रष्ठ ७ का शेव)

व तो इस बात का है कि विद्व राज कुमार की । ागने वाहे महान ऋषि ने ब्यान कदम दशया था इसीलिए यह दशया । । प्राथसमात के तनिकास है :

एक सङ्ख

इस दिवसे का मनन काविकारी हैं जबकि क्यरते भाषायें-वर महर्षि दवानन्त का चन्नसस्य बरते हुए विश्व का वस्याया करने कारइ संबद्ध लें। धर्मी इत्र क्रस्थानी विश्वमार्थम 'का बार

तमाने के भी क्षभिदारी हैं।

हेक्द्रकल् सी, गुस्त्क सी । स्थ हरामोहन जी चार्च। उपप्रपान-सरेश हमार जी । यंत्री—बी उत्तव बन्ध जी । कोचाध्यक्ष-शेशनतात्र

ती। उत्सवन्द्र सार्वे संत्री ऋर्य क्यार समा। आय बदक परिषट देवशी प्रधान-देवलक की बसेंग्ट उपवधाद-सारशम भी शास्त्री।

रामदेव भी तमेता, बगई!श दिशार्थ प्रचान मन्द्री-श्री क्रोसक्द्राण जा चपभंत्री--सुदेश कमार औ. सुरेम्ब हिन्दी । श्वार सन्धी---वरेन्स्स्या ओ । परीका सन्त्री—सदर्शन सरीना कोषाध्यम् -- कुल्दीपराज महतः। जन्तरंग सदस्य— झान प्रसाह तिलकराज, ममेक दास, हरिदत

करी सामवता पुकारती है। जीर रामधन मादिवा। घोसवसारा ें बीरो ! बीच रात्रि आगरका ें प्रमान मंत्री । र्ज है। अफ्रो (जातो ! जातो ! : अप्ये समाज पुस बंगरा देजसी

हो जगाने का महात कार्य दे ही मुखनाएं व बनाव । प्रधान-भी किरतेशी वास जी.

रात्रिकल्यागुकारी रात्रि व्यवस्थान-धर्मरत की, मंत्री-सरेश तमार की, सहायक संग्री-करवारी । के जिए भी करवाताकारी थीं । भी, कोषाध्यय-राम सरन शस जी, ' के दिन का कोई सहत्व नहीं पुस्तकाध्यस-हम् द्याल जी, निरीक्त- से बहुत बड़ी धारवाई हैं जिन की

-- लोडदी रा बृहदू यह भी ५. ज अपने पत्रे का प्राप्ति के जिल े गया रायस जी, बालप्रस्थी से सम्बन्न

—बर्सत प्रवर्श का खोड़ार सिर्मातयो द्वारा अष्टाचार निवास

में बाज्यामी जी के . होह के साथ समाप्त

—यद्दात्या इक्टान जयन्ती के बारकर पर मास्त सरकार से बहारमा हंसराज टिक्ट शारी धरमे को क्रीप्र शिवराओं की छुड़ी जारी दरने की मांग की शहैं । सदेशक्यार संजी समाज ।

आर्थ क्मार समा सोवाराम बाजार देहली-यह सभा भी राजा राम जी

शासी की प्रधानना तका जिल्लेका स्थलाम भी देख देख में पन रही है। विद्यविदार शास को इस के साजान्तिक सर्भाग वहाँ महोरज्ञ ह त'ः से समाय अभी है। यह सप्ताह वारिवारिक सत्संग सहे अस्ताह से स्राध सम्पन्न हुआ। जनता पर

क्रमका प्रसाद पता पेसा करते से अभेक व्यक्त समार सभा के सहस्य वन गयः। तेकस्यः पुरोद्धितः। सावंदेशिक शय प्रतिधि सभा की सचनाएं।

(अप्टचार का निकारसा) प्रचार सिद्ध शुर की, बश्क्रम इ.स.

ववान सना आर्थ समाक्षी के व्यविकारियों व सदस्यों से ब्राह्मड बरते हैं कि वे स्वयं भ्रष्टाचार और उस के प्रमत्त्व से प्रापने को मक्त रखे. इसरों से नुस्त रहने की शेरका वर्रे, यह से वह मय, प्रश्लोमन स्वीत लाथें से उत्तर रहकर परित्र-विभीका

की श्वस्थ परम्परार्थ जानने कीर उन में बाँट इस्ते का कारण बन कर बजा 🗒 आसी वहें। इस कार्य वें वार्यसमात्र और ४५% सरस्यो दुर्खे पूले गीरब भीर मनोयोग पूर्वक होती ही चाहिए।

साध्यादिक सरसंथी, वार्षिको त्सवी. विशेष सम्बोदकी द्वीर विशेष

को शोतसङ्घन दिया आना अस्वस्यक है। प्रांतीय सभावों को भी इस हिशा में विशेष यात की भाषांच्य-

क्या है।

महाविद्यालय गुरुकुल मज्जर का ४६वां वार्षिक महोत्मव

वारीस ६४, १६ फरकरी १३,६४ ई० शनिकार, रविवाद की व्यवि समारोह के साथ मनाया जायेगा । पर्याप्त संस्था में प्रधार कर बातु-गृहीत वर्रे । इस अयसर पर कानेक उच्चकोटि के संस्वासी, महात्या.

विद्यान, तथा वर्णदेशक प्रधान रहे हैं। यजबेंद पारायश महासज ११ परवरी, संगतकार क्रिक-रात्रि) को प्रातःकाळ ७ वशे द्वारका होगा चीर स्पश्चाबल की प्रशांति १६ फरवरी रविवार को श्रास:काल १० वजे होती। बज्ज श्रेमी सदजन सहायज्ञ की सफलता के लिये व्हानुसार एवं, सामग्री, सृषिया

स्मार्थि देवर परव के भागी बनें। नवीन बद्धाचारियों का प्रवेश व.विक महोत्सव पर नवे व्यक्त

चारी प्रविष्ट किये जायेथे । प्रवेशाओं सब्दन १४ फरवरी को सायकाल त श रास्त्रकात में पह'या आयें।

> मन्त्री यश्चेत्रसिद्ध् वैद्य शार्यसमाज लोहगढ

व्यक्तिमात्र छोडगढ ने २६-१-६५ रविकार सरसङ्घ में भी कैप्टन केशय-कर ही भी पता बक्रकारी के वेहावसान, भी सा॰ परमान-द श्री जासकास की कीरमाना की के प्रस्तोक गमन कीर भी सा० वस्ती-राम बी के निमन पर शोक तथा परिवारों के साथ सहामुमृति और प्राथमाओं सब को वैक व्यास करने की हार्यंता की।

---पिरडीटास जानी प्यान

s व प्रकाशक भी सरावराज जी मन्त्री कार्य प्रावेशिक श्रविनिध सभा पंजाब आहम्भर द्वारा बीर मिसाप श्रेष्ट, किसाप रोड आहम्भर से मुद्रित तथा ेतरात वार्यालय महात्मा इंसराव भदन विकट क्ष्यहरी आजन्यर राहर से प्रकाशित मालिक-माय प्राहेशित प्रतिनिधि समा पंजाब जायन्थ



[बार्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक संस्वपत्र] रैवीफोन न० ३०३४ Read. No. P. 121 एक शर्व का मूल्य १३ वर्ग देशे वार्षिक सभ्य ६ श्रुपे

वर्ष २४ अके ८)

१२ फाल्ग्ज २०२० र्गववार....हवानन्दाब्द १४०-२३ फरवरी १९६४

(तार 'प्रादेशिक' बालस्वर

### वृद स्क्यः नदा द्वियो जहि

है विक्रम्! जो सद्ध के आपरिक त के, कान के क्या त्या की कामी बाली बेट के देशी हैं रोवी हैं, वनकी नष्ट कर दे। के उन विचारों को नाश कर दे। बाब को बाब में बरस है। इन्हें ात का, भगवान का और वेद का क बना दे।

### इन्द्रसोगं पित्र

श्रीमानव ! तु क्रापने जीवन में मु भक्ति के सोम रस के प्यासे तेज़ी। सामा प्रश्वार के दीने के हार्थ पीक्षा है, तो जीवन में पस रसूत के समाज मीठे, खादु अधित लाका प्याला भी थी। वह शोश 'स बढ़ा ही मधुर, कनुता है।

### इन्द्र त्सदातमित

हे परमेडकर ! सारे पेरवर्ज के यरहार ! वह सब इस शसाद त्यां-ब्लाम्-तेरा हो दिया हुमा है। इमार पास जो इब भी है, शरीर, बंध, यन बैथव तया शहति के -वैसव भाषका ही दिया प्रसाद है सब के बाध्य प्रचाता कार शास वेट से 





कार ही जन्म सताओं कार्य प्रदेशिक प्रतिनिधि समा पंजाब जासन्छ की ब्रोट से प्रबद्धवर १६६४ में पुरुवाय से मनर्स बानी निर्देश को है।

### ऋषि दर्शन जोक: सर्वे ध्रमन्ति

विक्ते मी सोब सोकान्तर है । ्विषि आदि कोष हैं—वे सब एमते हैं । कोई भपनी परिधि पर

युमला है क्यौर कोई कावनी परिवि पर बनता डका सबें के किई की एमता है। सब में धवि हैं। बिना यति कोई सी नहीं ठहरा । सर्वास्य परितो वाति

यह ह्यारी मृत्रि सूर्व के जातें कोर वसतो है। इसके शारी और चक्कर प्रयाची रहती है । इसमें व्यपनी परिधि पर प्राप्तने की गरि मी है तथा सुर्व के पिर्द भी बूसने की गांध है ।

#### पद मेव सर्यः इसी प्रकार सबे भी झरती परिचि पर काश्वारा में घुमता है ।

इस में भी परिधि पर भ्रमण करते की गृति है। जिलाना निवार का गरित शन्य हो कोई रह नहीं सदता। মাদে মুমি কা

श्वधिष्यता—संतोषराज समा मंत्री

सम्पादक---न्त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

ऋषि शब्द का निवेषन करते हवे बहर्षि करक ने निरुक्त में किसा है 'साधात कर धर्मात ऋपवो वसवः' क्रवांत नेद के तत्वी का कीयन में शरफ करने नाले आर्थि **बळ्**साते हैं । इस परिभाषा के अनुसार काणवर्तक काचार्य व्या-जन्द भी ऋषि ही नहीं प्रश्तुन सङ्घर्ष श्रीवार त्यानव्ह ने अपने साहित्य द्वारा वेच का जो मीकिक िक्रेक्स किया उसमें वनके साहित्य चक की धुरा शचीन वैद्द ऋषियों all som? साःस्तावं हैं । ऋषिने प्राफ काकीन ऋषियों के सबेकासीन ara or क्रमर सिदानों के काधार **पर हो अपने अ**ग्लेक्य की नीव स्वती। इसरे शब्दों में इस इन्हें बैटिक समें रूपी कीरे सर्वियों से कारे के को सम्प्रते वाचा जिल्पी बद्ध सबते हैं उनके द्वारा प्राटमांथिक किसानों के सम्बन्ध में बदा कहा कार्य विद्वानों में मतमेद होता रहता क्रम के क्रमियान सी हैं। सामा-**रक्**धः वर्तेमान कार्यं विश्वान प्राच्या-बान की निम्न परिभाषा करते 🝍। भो वाद बाहर से कन्दर ज़िया साब वह प्राचा तथा जो शरीरस्थ बाब बाहर निकासा बाय वह करपान दक्षकें दक्षी वस्ति यह है कि झप श्रावदा अब शब्द निम्तवा के बावक होते से बाहर काने वाका वाव क्रमान रुपा १६ विरुद्ध शक्त स्वात्य है। सहयि के साहित्य का शंकीरता क्या विकेशन करने से यह वत क्सलुद्ध ठहरता है, स्थों कि उससे आर्थाप बचातन्त्र भी का त्वयं शका **त्रस**स्त्र है । यथा (श्रासककाका-रूप)

फरिराद बाब देशं वो वायर्नेकात

स प्रास-बाह्य देशावस्त्रीरं प्रविशति

स बायरपानः' श्रमीत गृरीर से

बाहर को काम निकास है वह प्राम

क्या बाहर से को बाब शरीर में

त्रवेश करे वह ऋपान है । साध्य

### सेंद्रान्तिक वर्ष वासापान की परिभाषा

नेसक – श्री पं. सरवित्रत जी वास्त्री सिजान त्रिरोमती प्राध्यापक :- दशानन्द बाह्य महाविद्यासय हिसार \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* '(श्राबाय) काम्यम्तराद बर्डिनः विपरित सर्थात स्रेनेक हो आता है। जो बाव शरीर से बाहर जिस्सान

सर्वि सर्वे...(ऋषानम्) यो वर्धिः-रंगाहाध्यान्तरं गच्छति तस्मै' कर्यात जो ब्रायर से शहर विश्वे दस शय ज्याक वाय के किये कीर जो बक्तर देश से प्राव्हर शर्भार में आये पस क्रकात के जिसे टील वे वजनेंद्र २२ ३३ वर सर्वाद द्यालन ती क माध्य तथा देखिये 'दुशरा प्रायमय' an से 'शाक' क्रावश जो मीतर संबद्ध बादा है 'क्यान' क्षे बाहर से भीतर फाता है (सरकार्य प्रकार शक्य समुस्का**स**) स्थाती पुक्षाक न्याय से इस विकश के तिये ये दीन शमा**श ही** पर्याप्त हैं। बर्हाप दवानन्त्र भी महाराज का है। उन्हों में से प्राया को अपान देशा क्रथे करना निराधार तथा प्रसाश र्दात नहीं है। ऋषि हवातन्त्र की मदानाम का क्षांपत्य तथा शापीज वेदिक मुनियों के शंद वृद्ध काल्या देसे स्पक्षों पर बाहर शब्द होती है इन रुज्यों में करबाद से एवं व तथा ब्राय ये हो ध्यसने सरो हैं इन रपसमें का इस्थे समस्ते के काचन iii बर्डाप रवाक्य इत सबेसय हो जाता है। मर्शाप वास्त्र से स्थपने देशिक क्रोश शिक्षक में माम काव्यात रफार्ग ग्रीन स्थित से शस्टीके बार भेद खीबार किये है क्याओं बर व्यर्थ करते हये महर्षि शास्त्र बी दिसमें हैं। 'क्राशनि प्रश्रीयर्थे प्र परेत्वेतस्य प्रतिस्रोम्बम् समित्वे श्री मानम् स्वपेत्रेशस्यवाति सोम्बन् मर्थात का इस जवको का कर्त इधर परिधि-सीमा बायक है। परन्त न भीर परा उन होतों का क्रथं इसके विपरीत क्रवांत वरे होता है सम इस का कर्न एकत संघात भूमिका देदोलत धर्मे विवय) होना है सरस्तु (च-मण इनका हसके 🗷 काम्बरुटर:' सर्थांट सिस स्वस्त्वा

वें क्षताल को पातर निकासका गति मिरोध करना है वह काक्करं ब्दाश है वर्ष अब शास को बन्दर रखकर ही रोकमा है वह आध्यानर होता है यहां बोनों स्थानों पर महिष वेदञ्चास भी प्र उपस्करी सर्दिकायास का कार्य वाहर निकासना वास को परे बकेसना ही करते हैं। बद्दिषं बास्क ने भी प्रकार का है वह क्षश क्यों कि प्रका कर्य को विक्तीत अर्थ प्रको दिवा है इस होना निश्नत के अनुसार है जो तकार प्रशब्द का वो प्रार्थ **सह**र्थि करव बाहर से शरीर में ब्राक्त है बेंद न्यास ने योग के प्रकरण कें बह बापान है। स्थों कि शरीर हैं किया है दैसा ही कई सहवि हवा-बारकर बहु पांच स्थानों पर विश्ववत नन्द् का किया जाना उनके ऋषि हो इस्प्रेस २ कार्य करने अनुता है होने का प्रमाया है इस विवेकत का उँसे किसी शंच का वक्त है—हटि बहासी विष्कर्ष है कि योग हर्रात ब्राचो गदि श्रथानो सदान नाहि के दबास को ही सहर्षि द्यानन्द सरदते, बदान ६२८ देशस्य व्याद वी अपान चौर शता नाम देते हैं ' सर्वे रक्षीरयः। स्वी कि यह काय क्यों कि इसकी परिशामा की वांच स्थानों पर विश्वनत श्रातेष साम्बता है दोनों स्वानों पर ही होक्ट वर्ध्य करवा है। कतः प्रयान व का कार्य एरे करना है ऋत: बद्धाता है इस्रतिये वाल्ड सहोत्य प्राकापान का कर्ष यही शंगत तथा ने कार का अर्थकानेक किया है ब्राप्सास्य सम्बद्ध है । बहर्षि राने कार्य वसामा के ब्रापार कर द्वाबन्द की बहाराज प्रत सरकार्य र्ख्य दवानन्द की सहाराज से शक्त ब्रह्मात्र के हो स्वक्तें पर पाकाणाव तथा क्षपान की उपरोक्त परिसादा क्यर्थ का देपरीत्य है तृतीय समुम्लाख की देश रुख का दाने काले के में दिये दरीन सुत्र प्रकासा में जड़ां प्रयोग बोग्दर्शन में भी देख सबसे वैशेषिक दर्शन का श्रीवतक्या है वया शंस्त्रन् सांतरपास प्रश्नास विषयक सूत्र 'शासाचान निमेधीनमी . क्षेत्र्यति विच्छेदः शाद्यावास दोग केपादि' दिवा है तथा यही सक ३—थः। इसे सत्र पर स्थान सन्तव समुल्यास में दिशा है। शे भाष्य देखिये 'शस्त्रासन अदे होनों स्थलों पर शया का वर्ष कारान्य नायोगाच्यात्रश्रहातः क्षीकार बाहर से क्षत्रवर किया जाते वाला ख बावोजिसा रखं प्रकास:' कर्वात तवा अपान का क्षत्यर से नाहर किया जाने वाला कार क्षर्य किया कासन पर विकय जान डोने के है इन दो स्थलों के चतिरिका अन्त्रक बाद बाहर के वायु को बान्दर होता वयंत्र हमारे हारा चलसोहित अर्थ श्वास वर्ष कन्द्र का वासु बह्वर विमा है। इन हो स्थलों के विकल निकास ना प्रस्थास बहाता है और कर विकार के बात इस निरुपत थी देशिये---'सत् बाह्यस्थान्धर पर पह'वते हैं कि हो सकता है तम्य क्टिर्रेशकाच संस्थाभिः परि-वैरोपिक दरीन के बानुसार शासायान रुषोटो दीषं सुनकः ॥ मो० २०५० ॥ की वही परिश्राचा ही परन्तु इस इस पर मी व्यास सामा १५८१व है से तो ऋषियों में परत्वर विरोध क्यस्थित होता है बात: चल्ल में इस 'यत्र प्रस्ताच पूर्वको शत्क्रमायः स निश्चव पर पहुंचते हैं कि यह शहः पत्र स्थासपूर्वको सरदभाषः श्रद हैलन के प्रसार से लिया गया (ক্ষ্য:)

(से०-भी पं. घटला जी शर्मी प्रचान वार्वसमाच नवपस्तर वमतसर)

11+14+144444444444 डो० ९० बी० मृहत का खरैशिवक सिलाओं को क्रांधक से मधिक वेड श्वार का कारण बनावा जाये । वह तुरुराप्याका धनना लोकार विश धर्म शिका स्थ्य पटावा करते से । और उनके परिवार के अन्यत ध्य तियों किसी अवक का छी। के सिवे दनके बड़े अपना भी जलब-प० नी • तरत में पत्र ना ही इसके राज से वल-सर्वाप्त रक्त मानिष बाद होने का और डोन्का की रत में देनों भाराभ को जो इतनी क्रपशंज भी कि महारक्षा भी स्त्री प्रतके परिवार को क**ं**-फर्ट रावे विना बल सावे श्वारनी पहले थी। यह महारमा जो के मोर हन संस्थाओं ने अपने किया है र्शारम चीर चलस्य वशिरान ही का परिकास या कि यह सका केर में मगरा अपन तर (Standeed) मात्र थर सुर्राक्त रहा त केवस प्रांत भर में एक कादर्श बार्ग व्यपने वास्तरिक संदर देश रिचयास्य वन सरा, क्रपित देखते प्रचार क्रीर मर्स संग्रहा की टॉट से ही देखते इसने एक गारी विश्व-का बरन दीने रहा राखे हैं। राजी विकासन का सा सन वास्या कर SITE SITE SITE OFFICE S लिया और इसकी शासार्थे देश के शिव्यक्त दिलाई हे रही है कोले-कोले में चील गयी. हो क्या क्वोंक कोर्यसमात्र की समना शिक्षा के जिल्लाम से फॉर क्या रेश र्शान्त संस्थाकों है कोकी जा चक्रेंके और क्यें की रचा की आकर्त तक पद्चात इत संस्थाओं के ब्राव कराबाद की रुपि के कदान रेगा है गमाब से बेन्छ हो जाने से कार्य सर्वेशेष सम्बद्धी अन्त्रे अर्थी। सही ब्रह्मात के काम के अपने प्रदेश भिकार्थियों, क्रम्यायकों वर्ष होयँकरों सन्द है। क्षो० ६० थी० सन्दाची के इत्यों पर कहातमा जी के शाहर के संपासरों तथा आर्थसमात के বৰ পৰিখ প্ৰবিশ্ব দ্বী স্থাপ ক্ষত্ৰিল नेताओं को सामार क्रिकार क्ष थी। और श्रीमेवों मधेल और सम्बोर प्रश्न पर चनाव विशास होबहार एक साबारक देतन करना चाहिये, बही पान सहारक्ष पर मानेज के "लाइफ बेंदर" बतने नी को सच्ची काद होगी। इसे वे तर्व मसमाने वे । उस समाव वे नहर्षि के निज क्रमपत में का अंबे कार्य नेताओं की धर्म श्वार की इस विद्याल को चार्च्य साम्बे पवित्र भाषना भीर न्दानुकुत रसना होगा कि क्लिकिंगों में देश परिवास के परियास त्वरूप हो, ५, स्त्रीर धर्म की भावना सरने के विश्वे वी. कालेज आवें मिरवरियों की व्यक्तर है कि इसरे कालावर. काम किस हदे और इन दे से प्रोक्टेश स्था जिल्लाक रह सार्थ पर का निक्रमें निवाधियों से प्रचार सपरीचित्र वर्मात्मा विद्यान हो । कार्य को चार जांद समा दिये कीर देश में झार्य समाब की बाफ निटा | देशकर तकुप उटा ४ रहें से । देश

हकाया। जद कमो देश के विक्री भी कोरे में मुचान, दुर्भिष सक्ता हिन्द. समझित दशों की घटका तन्त्रे, भद्दारमा औ सुरन्त बडाई पह बते या बार्थ दारेशिक प्रतिकिति समा के कार्यकर्ता श्रेकत रूपण्ड त्रभा करत काहि की *सहाबदा* व्य वक्त्य करते थे। सनका जीवन छवम्ब इस लोक का श्रीकेक बागव वित्र या ---

अवह कामचे रावतं न स्वयं व पनशंशक

र्भाखना दुःस करानाम्, श्रातेत्र में शिक्षा प्राप्त करना नसके श्रम्ये इ.स आहस्य ॥ प्रमा कार्य किएअरी होने का नदारमा तो व क्षाप्त स्वति-वर्षेक प्रस्तव देवा करता था। मान के एक ही उदाहरक का नक्षेत्र सहास्या जी के देशांत के प्रश्चात बरता वर्षात होया । वर्षे व स्थ-कार ने तब दूसरे देश सक्तों के साय बहारमा जी के स्पेष्ट सुरुष नतराज्ञ भी पर शास विहोह का शिविवीय चला कर मृत्यु दशक सना विदा। इस समात के सक्तीर महाभा ती भी ऋोर से केळा संकेतमात्र सिसाने यह भी दशसाब भी को मध्य करने को जैसार से । परम्म प्राप्त सहारमा भी गवर्तर के नायने प्रायंत्रा करने को तेकार ज हर। ऋषित एक विन सबनेश कालिय देखने के बहाते स्वयं सीव २० को० कालेज में क्या पर्शाचा लो महात्मा जी ने छुटों से स्त्री वाकि वडां उपस्थित होने की कवस्य। में शिष्टाचार के बाले कन्हें मधर्मर का श्रविति के का में स्वायत करता होगा, बियसे गमर्तर ऐसा व समस वेडे कि महात्मा का कप्ते पत्र की रिटाई के लिये उसके आपी दीवे निर रहे हैं। काश-काम भी हमारे नेताओं में इसी प्रधार का कार क्रांच्यान कावचे तो साम मधात्र कीर सम्बाये देश में कान्स

भा सबसी हैं।

मद्भाग जी किसी दानी को

दी। महत्त्वा जी के सामने कर्रेव र चीर जानी के शिवे कसीम दुःस

वडी स्थ्य क्यस्थित रहा कि हत है इतके हुएय में कूट २ इस गरा

हेल की प्राप्त की क्या है जिल अपनी सात को बोखों में सानवर में गोमी का किसाना अनुकर शही। हो वामा भारी करवानी है परन्त धाप मर मोह माथा के क्यान को काटकर यन कीर नेकार्ट को सकत क्य को लाग को जीवन का प्रवास इबास पर-१पकार में सगा देश्त उस स्रे भी पट्टन रही करवानी है । देश में प्रमानित कालध क्रीर किए-विद्यासद है जिनमें से साओं विषार्थी वर्त क्ये परोचासीकें हो कर विकाल कीर कापनी उत्तर्शनों का सूरुव वसूत करते में विश्व रात एक **क**र देते हैं। परन्तु कितने हैं औ भंडान परित्रम क्यीर योग तक्तवा हारा करन से उपन शिक्षा शाम करने के पश्चाल समसा इच्छाओं और ज्ञवानों की उसंबों को दवा कर क्रवनो शक्ति, शिक्षा कीर थोउउता को जीवन नर के सिए संसार का बुल इर करने में लगा देते हैं। महात्मा इंतरात्र एक ऐसे ही स्रितिश्वत ग्रीर तपत्ती त्वच वे क्रिश्डोंने उस समय B.A. पास क्या वर 🎚 बहन क्या, इने रिले भेवपेट निषक्ष घरते वे सीम बरकार ऐसे होजहार कुवकों को कुरन क्र वे से अ'ने पहें पर सथा क्रिया करती थी। सहारमा जी भी काकारी पद जीवार वरके सत ्**भी**र चानन्द ६४ ओवन *।* उत्होत कर मध्ये में परम्य उन्हों किने -महर्षि द्यानगर् के परक्षोक राजन के कारण देश में होक की घटावे साई हुई थी और ब्रावं नेता सहिष के मिशन की पूर्वि के निवित्त देश . स्क्रीप धर्म के दीवाजे पैका करते के किये ती० २० वी० हाई स्टूस

बी भीव रसने का निश्वस कर पुढे

बे भीर इस विश्वा में थे दि इस

महान कर्वश क्षेत्र किस के

.सन्धो वर रक्का आवे । वस सक्क

ब्रह्मका इंसराज की से वांसारिक

सनों भी बाधका को लाग धर

### कतिन समस्या सरल समाव

हा देवदत् भी महाजन मन्त्री बार्य समाज सारेस रोड जतमसर \*\*\*\*

है और भारी स्थनता भी जो अधेक जाति चिन्तक कश्वा समाज सभारक के मन में ही नहीं सटकी : अधवादस वन्तियों का भी प्राय र्श्वापत प्रत्येक गम्भीर गोम्डी में क्रामचिन्द्र वस कर मुखरित हो करतों है, कि बारो समाज का न्या बनेगा । श्वकगतः इपर ध्यान नई बे रहे। स्माकी थमें के प्रति उदा-क्रीजना प्राथना कार्या निवसन ही **ब**स अक्षातक क्षेत्र है। जिस पे प्रभिशाप स्वरूप प्रभी से समात के शरिण की डीवार विरकतो सी **रीयाने समी हैं। कील शाने कि** अहि एम समस्या का जांचत हत न इटाबा सका यो व्यक्ति येका ऋदे 🏿 इस सामाजिक स्वत्रवा के राक्षसी असाद भूरभुरा कर ताइस

नहस हो अस्य । अस्य भय ही नहीं बह एक बदु सत्य है कि नामी बाबाब का चित्र दिन प्रतिदिन व चत अधिवास स्टाहित

किसी भी रोग की चिकित्सा के ब्रह्में उस का निशान आवदयक कुदा इरता है। यदि निवान ठी€ हो जाने स्ट्रेर शेगी भी वैच वा दावटर के कास प्रस्य क्यांक सेवन में क्क्यबोग दे ही चिविशका आसाम हो साती है। कौर यांद निदान भी कीक हो बाबे रोगी भी सहयोग बेझे को करपर रहे और भीपयि ही द्वीक उपकृत्य न हो तो भी वटी क्रम के तीन पात वाकी वात रहेगी। श्वासद्वरता है कि समाज के समी **ब्युद्धको** पर पूरा हाछ स्वतं हुवे इस समस्या का सम्बद्ध निरुदेशन

व्याव का अवक नज के अवक की करेका व्यक्ति चुल कीर पासाद है अधिक पाँउत है जानाविक विदाओं

किया आवे ।

ਸ਼ਾਮੇ ਡੋਰਟ ਵਟ ਮਾਹ ਲੇਗ ਹੈ। भिन्न २ वकार की गुट वन्दियों े है। सारांश यह कि अब में आवन ी बह निष्यास नहीं जो शक दासरे की कावडयकता हो । कावडयकता है तो देवस इस दात की कि उस की मंत्रिविधियों को प्रस नवा क्रोड विना जाने । मोद भी देशा जो समाव में स्वद् पुंड दे। परश् दा नयों कर सम्बद्ध हो सकता है। भंबरा बाँद् बाससी पुष्य से बड़ कर श्चाम के पुर्णी पर मंदराता है बनावटी पूत्रों की जोर बार्क्सत होता है। शेस्यातम सोचना न द्दोगा ፍ वेखा क्यों है। क्या कसबी

फ़्लों का दुर्भाग्य समझ कर च्य रहना पर्याप्त होगा निश्चय हो नहीं। धो फिर देसना होगा कि पन में बचा क्यों है क्या शब है जो भंवरा झार्कावत नहीं हो रहा।

बना करंगे मेरे आदरखीब पाठक गरा। खोटा मृह भीर वड़ी।

"हो ही ब्दाबों से मनुष्य के शकों की रहा, जीवन, सुरह, वस, विदा और पुरुषाधे की गृद्धि होती है। एक तो बाल-बाद से कार इकरे का च्यादन से। पहले के कमान से शास-नाश हो जाता है, और इसरे के न होने पर अनेक इ:श भोगने पहते हैं। देखिये. गी चार्ष पहु सुसा पास-पात झाचर बतुच्यों के शन्द-धारण करने का साधन, अल-पान-रच प्रदान करते हैं। बैक पार्ट क्रीर हम को सीच कर क्रमेक प्रदार का कल करना कर देते हैं. जिस से मनुष्यों का पाइन होता है, कौर वे वह, शुद्ध तथा शक्ति सम्बन्ध हो जाते हैं। भी कावि यह कितने कोमस हैं कि सबच्चे के साथ सन्तात करीर जिलों की मांति विक्रवास श्राते कीर होत बरतं है। उन्हें बड़ा बांधी, बड़ी अंबे रहेंगे। जिलर चलाकी, उसी कोर पहेंगे। बड़ा से इटाबो, इट आवेगे और देखने और पुप-कारने पर पास शते कार्येंगे हा (स्टामी सत्यानन्द जी)

बात वाक्षी गड सहसे सा रहा हूं। नेरा विश्वास हो नहीं नॉल्क दुः विश्वदास है कि क्य सम्बर है कार्ड्ड है चीर सुरमित भी। मंबर निसम्बेह वह एक विकट समस्या | का श्राता है। खेल में कुद में श्राच के इपर खाल तो चाहकाहै पर झाने नई दिशा काला, उसे पुरुष पर अंडराजे की सवाही कर दी जाती है 'संरक्षक वक्तियों को उक्षाने के बहाने संदर्भ को भी उड़ा बेते हैं वहि इन्हीं एक्से को बळ भने जोग ध्रापने कीर कालर की शोधा बना कर रसा है तो मैं एकता त कि संबरे वेशारे का क्या दोव ? यह एक ६८ साव टे सामते सब हैं जानते सब हैं पर प्रथम पुरुष विवि भी बीरेग्ट जी विवश हैं और वही विवश्त समाव वो पन की तरह साथे मा रही है। बेरा विश्वास है कि वहत से यक्क चित्र सम्प्रात न पा सकते के कारया व्यवहा कोई शोतकाहुन शाया व बर क्ष्मने के शारण समाज से

> दूर होने चते गये हैं। समाज की सर्पाण व्यक्ति वे धीबन से विस्त्रिति होती है। समाज सबन का बाम नहीं। इस ये सभी मुद्दर कक्षमारियों का नहीं वाप्ति बसमारियों में सबी वह मुस्य पुलाकों का नाम भी नहीं।

अमाज है स्वक्तियों का समुद्रा

न्यक्ति अन्ते समात्र, सन्द कोर फिर वह व्यक्तियों में तो गुरा भी विसक्ता हाने वाहिये । कानवादी कादने नेताकों को हर होटी बड़ी बात को प्रवान से परसने हैं। इन का प्रभाव, भाजता या बुरा, एक क्षमिट छावा शीक्रे जोबना है। बजे २ लोगों के सपड़ों और मुच्छों वरू के 'कट'के बनुस्तक के उद्ग्रहरण व्यक्तन रूपमें विश्वमानहैं। श्री वीरेन्द्र जी के निवास

स्थान पर भन्य श्रायोजन स्वर्गीय मद्राशय करतः जी की

मासिक दैनिक प्रताप जासन्यन के निवास स्वान पर २१ फरवरी से २४ फल्बरी वर सम्पन्त हो रही है इस अपन्य में प्रातः E बजे से Yo वजे तक स्थीर सार्व ४ वजे से ज वजे वह यजवेंच महत्त्वसायस दश हा कार्याजन क्या जा रहा है इस वह के प्रोडित भी अक्षानन्द औ होंगे। २४ पत्रवरी को शबः १० बदे पूर्णहुति होगी । २४ की शाम को ४-१४ वर म० कथ्या जी के दय-करूप में एक वहद लोग्डों का ब्यामी-बन किया गया है जिस में प्यतेक विद्वान वर्षस्थत होस्ट स० कृत्स जी को स्टांतिलवां क्रवित वरीते इस पुरुष कार्च का सेहरा थी विरेन्द्र बी के सिर घर है।

हम हिन्दू बनता से साम्रह क्रमहोच करते हैं कि इस पविश्व समारोह में पथार कर अपने रतेह पुष्य स्वर्तीय मः कृत्य सी वे चरधों में मेंट करें।

-संशेषराध मन्द्री सम

जयन्ती का समारोह

(प्रपट ३ का शेष) प्रवस्थ निमन्त्रक्ष धनसंत्रह्, त्रचार ब्यादि भी अनुभाषी सध्वनों की क्वेटियां बता देवें ताकि सारे काव उच्चमता से होते रहें । इस क्राधिवेशक बर इस शरानी समारोह की शानवार सपसे समाने के किए औ विशेश विचार करने का आशेतिक को-वियोध पन

अध्यादकीय-

## त्र्यायं जगत

वर्ष २४] स्विवार २०२०, २३ फरवरी १९६४

### श्राभिनन्दन श्रीर निवेदन

सार्व प्रादेशिक प्रविनिधि समा | भी चिन्तनीय वन रही है। कार्व पंजाब जायन्थर का कार्यक साधा-क्रम कार्रिकोमास कारत २३ प्राप्तारी रविवार के दिन सार्थेशमात्र लोड-कद अनुसार के सन्त विशास स्रान्दर में हो रहा है। उस में सारे बेकात त्या दिल्ली की झपली समा क्षे सम्बन्धित कार्य शराजों है शान्य प्रतिनिधि इस में शामिल होते और श्रापनी सम्बति, सुमान कथवा वन सब धन से पूरों शहबोध क्रिये सभा की माधिक से माधिक सहच्चत करते, महात्मा ईसराज बदन्दी के महान शताब्दी समारोह की प्रमुखस्य से सनाने की सन्दर क्षोजना बनाते के जिल प्यार सी है। उन सब का हम काये गगत की फोर से स्वातत मधात पर्व श्वभिनन्दन करते हैं । आपना समा के बिद बनका में म सराजनीय है। वे सारे श्वयं ही सभा कर है । उन स्वय की सेवा में कहा निवेदन कर के दिस की बात बहुना जादते हैं।

काब का हुए मोगशादी क्येंद मंदिकसारी काटा दा रहा है। धमे, प्रवासवाद के सिर र्शव कर होती वाली है। चारों कोर ही बीवन से परम्पराज्य स्थापार विवाद की धीवाय सर्वोद्यार इंटर्स बारी हैं। संसार विगात के बगार वर सदा हो नवा है। सामपान क्षप्रसद्भा, रीवि भीति, साचार-विचार, आवित परिवार क्षत्र में ही कारी गरपर मधी है। किसी को किसी बात की फिल्मा उसी पार्ट कोर भ्यान तक मी नहीं है। विशेषका वर्तमान मनस्या तो स्रोतः विवाद स्रोत जटिता है। किर तथः आपका लागत है। —जिस्रोक परा

समाज के सामने कितना काम है, वित्रजी समस्यादे हैं. वितनी वर्ति-सर्ववां है। प्रकार के खेश में क्रिक्स स्थानमा है, कार्यबर्शकों तका पका रकों की फिलमी न्यूनका है, समा की सार्थिक कांबागा किस प्रकार की हे १ क्विमी लोग बात बन्दी विश्वास धनराणि के द्वारा अवने प्रवार में क्या २ इंगब्दि दिला रहे हैं, विकासे वही पुनीति धनकी और से दी जा रही है ? किस तकार का सा'इत्य प्रकारित किया जा रहा है। युक्कों की समात के प्रति कात क्षिस प्रकार की स्थित है। संस अ्थ ने संस्कृति करूपर का नेशास्य भारता दर के क्या २ सम बारम्य विका हुआ है। सामगान किस वरा-काध्यातह बला सका है। वर्तन भ्यानों में साने वालों की स्थिति क्या है ? स्मार्थसमाज के साहित्य, शुस्तवको की दशा क्या है। कात इस महैगाई के युग में भी विकाही पर आरथे दिन का दिलाका क्या २ इस वारम् करता जा रहा है। इस तवा इन जैसे कल्य यो माध्ययक प्रकों, राज्योर समस्ताओं पर आप सब ने किल कर विचार करना होता। इसे वर्ष है कि कार्य शरे-शिक सभा के अधिवेशन में भाग क्षेत्रे वालों के बहुत ऊ वे २ प्रत्येक भाग तथा भीतन चेत्रों में प्रमाद-पूर्व आने असे बाते प्रतिष्ठित मर्ड बहिनें कार्वेये। समा के सामने भाज इतना बदा साम है जितना व्यं भी नहीं था। प्राप्त की चकरता को बला द'वा कर देवें। विर

### जयन्ती का समारोह

\*\*\*\*\*\*\*\*\* सदा है कार्वसमात्र के तक्ष्मी, । एडाक, सीमा प्राप्त, सिन्ध प्राप्त सर्वेद्वेची स्वर्गी पुरुष सद्धारमा हृस- (ब्रह्मोच्चश्वान, हिरुवी तथा काहकीर राज भी की अध्यक्तनों सा राजानतों, दिमाचले प्रांत प्रमाइ २ वर वही समातील को आसे वाले अकट्यर सामशाक्षीत कामस्या या। ५०० १६६८ में प्रमुखान से सवाजे का ' महारमा चार-रह स्थामी भी के राव कन्टिस जिलाँच दर दिया है। इस दिन के बोर परिश्वस २०४ तय बहुत्व कार्य के लिए पार्शामान्द्र कार्य समा के मान्य काधिकारियों वे भी क्रासम्भ कर दिथा। इस क्षमसर ' सह्दोग क्था कादे समाओं के बीर पर बड़ा विशेष सद्दारमा इसराज और सब प्रकार से दिख जीज कर क्रियन्टन यन्त्र प्रकाशित दिया तहावता देने से समारोह क्या था शयगः। सङ्ख्या श्री के क्रीजम्बी. प्रभावशासी पुराने आपको. सेलों भी में में में में समास कर दिया था। का संक्रमा कर के हेना प्रान्य की स्पति कें इक्सीलत विदा आदरा। **बन्द** भी **बहुत कुछ साहित्द प्रका**रिक

होगा। इस ऋषभर पर जासन्धर में शताब्दो समरोह भी पड़े विशाद स्त्र पर प्रदाशेदिक क्रिया अध्यार । इस में भारत वर के ब्रस्त २ स्थातका हेता तथा विकास प्रधार के प्राप्ते विशेष विश्वारों के सन्देश रेंगे। समा के जिस बढ़ पर्व का गीरदका होगा। हमें आदीर में क्ष समा की तबस्थी सक्तर । वं यों क्षा हरद चात भी कांगों के सामने हैं, स्वरण है। विशास मध्य समारोह दा । केवल साहीर हो नदी कांग्रेस सामा कार्क्यास कार ने बहाया ईसराज करानी के लगानी के आरी अस्तराज्यक को क्रापने करवों पर सम्बाशा हो उन्हों कार्यक्रीय और बर अला है। इपलिय कार सब इस कारपन रम्भीर बातावरख में कथिबेशन में पवार रहे हैं। फत: वस विवेदन है कि यह मधा का क्रियेशन हर श्वस्था में शानदार हो । श्रमने २

क्माज ही बा। सभा के उपदेशक बहारा कः शाहपराधीशा का वधारन तथा वन का भाषयह भी जीवन हेते লকালা।

सदायि आसाम्या वदशा समा है। देशविमानन क नार क्ष्मादे स्थापनी मिल्द २ स्थाना पर चले तये हैं। समा की तथा समाजों की प्राथरका भी वैशी नहीं है । फिर भी सबा के बेसी तो वही हैं। संस्थाकों के सरधन को बड़ी है। नेता भी वही हैं । जन्म शताब्दी भी उस देवता सहात्मा हैस्सिन की है कि II तीका तीय से जालों क्रोडों दीव प्रदीया हम हैं । इस समारोह को बहुत ऋषे सार वर क्री समाधा जाना आनिय । उसी स्तर पर इस महाच शतीपद को मनाने भी तथारी सभा बर रही है। यभा स्था है ? कार्यसमार्थे संस्थापे तथा परिवार ही तो समा का अप है। इस वी पाटते हैं कि केन्द्रिक सरकार पर जोर दिया जाये कि इस देवता क, शिया के इस क्षा के कादि कादावं सहस्मा ईतराज भी के दाक टिक्ट वर समय समारीह पर कारी किये जाएं, पूर्व महायोग से इतने सुन्दर डोश महात्मा जीका मारतीय पंस निर्देश करके वटें शक्ति वसकी दिसी से ६व नहीं । सभा इस काम क्रिकारियंक रूप रेक्ट समा के कार्य के सिद बसार २ एकासन, शतानदी

(शेष बुष्ट ६ पर)

अध्यात्मश्रदः-

### मक्ति का प्रकार

#### (श्री महात्मा ब्रानन्द स्थामी जो महाराज) \*\*\*\*\*\*

पृथ्य सङ्गारमा चानन्द स्वामी भी का उपनेश किथना स्वाद्, व्हिवना **मीठा और क्रिवना गम्मीर हो कर** भी सरत होता है-यह वो उनके प्रवचनस्था का पान करने मात्री कानने ही हैं। जितने मीठे वे लाव 🕏 वेसाही उनका प्रवचन भी मधुर है। सुख दुःब दोनों ऋव-स्थाओं वें एडरस हैं। अकि कैसे कों-एमका विज्ञता सन्तर निवेचन

विचा है-सं

मचि को किम प्रकार ? बद्धरारस्यक स्पत्रिक्द के पांचवें प्रभ्याव के शेववें माझगु में इसकी विधि बताई गई है / इस शक्ष्या में उत तीम स्पाइतियों की भी पर्या है, जिन्हें इस गावत्री सन्त्र से पर्ज पक्ते हैं। वे तील शका है-भः, त्रकः, स्वः। भः स्रापीत् वह प्राण धारा ईश्बर को सन्द है विश्वमान है। भवः तो द्वालों को दूर करने वाला है। चिन् है, बालुभय करता है, जानता है, और स्त्रः यो शकों को देने नासा है। कानग्द है। संधिवदानस्य है। प्रमानमा ही भ. भूद: स्व: —वोन शीन रूप में हमारे सामने बाता है मृः अर्थान विरामान है, परन्त देवज विद्यमान नहीं परधर की माति पड़ा नहीं, वह मवः भी है, हो रहा है। ऋतुभव कर रहा है, दुःश्लों को ट्राइटने बा प्रयत्न कर रहा है। केवस प्रयत्न हो नहीं करता, दुःला में घर। नहीं रहता, स्पोर्ड वह इंदबर स्वः मी है। मध्यें की देने वाझा कानन्त भी है। यह आप का समार है, क्रियमान है. हो रहा है। सन नडी है.चागे वट्रहा है, यश्लु

क्यों काने बढ़ रहा है ? जो छछ

क्षो रहा है बक्त क्यों हो रहा है ?

सारे विका में. इस के छोटे-छोटे का में भीर बड़े से बड़े महा सीर मध्यत में खान पर भः मधः सः का चक च्या रहा है। है, इहे रहा है. ब्रातन्द के लिए हैं। इस पास को चलाता चीन है ? सविका, परमान्याको कर शकित जो सब को बढतो है, चलो, चलो आयो बरों । परान धम चन्न को बा

धानन्द के लिए। सारे अक्षांट में

चलानी किस प्रकार है ? सरो शक्ति से जो सब को पढ़ा देती हैं, सन वेतो है जिसके क्षिप हारना नदी है, पीछे इटना नहीं है ।

भगांत है। दीद रहा इस भानंद को पानेक सिए। भगकान् ने इस भू: सुवः ला. का प्रेमा प्या दे दिया है संमार नो कि प्रत्येक वस्त्र कियारियक सप में इसका जार करती हुई धारी बट्नी जानी है ! मुंदू से बोलों या न बोलो किया से बलातधा यह बाप हो रहा है। एक बना के बिल भी वह क्ष्मा नहीं। इस नदी की यति रुप्तो नहीं। यह है आपका संसार । उपनिषद् के खुवि ने किनने रक्षस्य की बात थोड़े और सरत राज्यों में प्या री--मः सुषः स्वः । परन्तु इस चक्र से शहर काने और बालविड जानल्डो पाने का मार्ग स्वा है ? इस शहरव को सबस कर झानन्य स्रोत के पास पश्र'वरे । एकाय होका ज्यान लगावन उसकी देखो जिस की सर्विता शक्ति मृः भुष: स्वः के इस पत्र को चला रही है। जो त्वय भी मूः मुदः, लः, सन्-चित् ब्राजन्द है । व्यन्तु इसे देशने के लिए वहती आशहयकता है कि अपने पित की तुतियों को

रोकी। विश्वको सच्चित्रशक्त की

(सपर्वा)

हो जाता है।

बोर बाना है।

तफलता के सुत्र---

### ईश्वर विश्वास श्रीर विनय

(श्री त्रिवियस रलाराम श्री एम. ए. प्रधान समा)

माननीय विस्तिपत्र रक्षाराम **नी पन. १. एक. एस. र. प्रधान** षार्थ शहेशिक समा सौभ्यता वे सर्थे प्रकेट हैं, सरस्था, साइगी, नेसता की सजीव सति हैं ≀ नशका व्यथन जीवन बाही होता है। सम्बद्धा के सुत्र के विषय में विश्वास और विश्व पर सन्दर विवेचन किया है--सं.

देइ में क्याबा है किन अने शान्त्रत्य सरुवाय देवा:--श्रो नदी हुई। पुरुषार्थी बहीं होता, इस को प्रस् की सदायदा नहीं सिक्षते। यगवान ने मानच को मानव जीवर सारः संसार इस भावन्य के लिए । दिया । इस का शरीर बच्चों के शरीरों से सर्वोत्तम है, दिव्य है, इस को हाथ, मुख, सांख, युवाए चादि वही सन्दर इन्द्रियो प्रधान की हैं। बरि मनुष्य प्रमुपदत्त इन की उत्तम शक्तियों का श्योग कही बस्य बीर इस वर भी नगनान से मानते रहते हैं। तो उस का हार्य देने हो सदल है। स्टामी दवानन्त्र ने अब क्षोगों से पृष्ठा कि ब्राप इतना बड़ा कार्य किस के बंश भीर शक्ति से करते हैं। उनक इक्षर **बह** स—कि मैं तो कार्य करता है, यह सब अवदान के विश्वसास पर करवा है । अंडायुरुप सदा वर्ष निरवास की शक्ति को से कर ही संबार में महान से महान शार्व इस के भारी परिवर्तन कर सक्ते हैं। परबात्सा पर बाटल-विश्वास जोदन का सब से पहा बल है। इस के तुल्य और कोई भी धन नहीं है। बारे कारण हैं कि क्रम वे भी क्रपने चार्थों में सदा विभी ब तथा विदियन होता है।

WORKER SKINGLICK WORK WORK DEDWORK WORK WORK WORK WO ग्रहारमा गान्धी किस्ते हैं--चनसे वृक्त कि काम दश् प्रार्थना किव क्षिए करते हैं। इन्हों ने कहाकिin all my great movements I ever rayed and He never devied to me. प्रकृत मैं ने अपने क्षीबन के श्यास वह २ झान्दोसमां में इसी प्रशासमा ले यस की प्रार्थना की भीर सक ने मधे क्यी वंचित नहीं रहा। उस की क्रोर से मुन्ने कवी निराशा

धर्मातमा और महापुरुष की पहिचान यह है कि एस के जीवन में धृति का गुसुकुट २ कर भरा होता है। उसके दिसी भी मधीवत में पांव नहीं उलक्ते। उस की इसा निर्वेतों की समा नहीं होती अधित बदशासी की द्वारा होती है। सम्बी जी भी बहा बस्ते ये कि--My nonviolence is not the nonviolence of coward मेरी समा कावर की समा अही बरन कीरपुरुष की खमा है। व्यक्तिका बमजोर के पास हो नहीं सकती : वड तो उस की कमजोरी होती है : जिस में शक्ति 🗐 नहीं हो वह उसरे को चमा वैसे कर अवेगा। तस के बोवन में तो पहिंसा का पदन ही नहीं है। बीरपुरुव की फहिसा वास्तविक क्राहिंसा है चमा बीर कारी ही कर सकता है। प्रमुक्तक वें प्रतियान हेरा मात्र भी नहीं होता । शीता में क्रमानित्वम कहर यवा है। यहा कार्य करने पर जी श्रामिमान र मार्थे कि यह कास हैं ने किया है। समात्र की बरियां चिताना भी वही सेवा है, कर दरियां विका कर बहते किरना कि त्रीते दरियां विद्यार्ट हैं. यह दर्शनशास की गळना में साता है। इसरे सोम दस सेवा दास दी प्रशासा करें का सच्ची प्रशंसा होशी है । प्रथ-विश-ईरवर निष्ठा इस का आटूट कश्च । वाली को स्थिताल नहीं होता-

हर्मान्य चीर अबर्द की एक ही किरानी होती है कि ऐसे स्रोग सब्दे सभी बीजों को बड़ी हिफाजत से सम्दास कर रसे रहते हैं। पारवात्य विकाह दर्शन भी ऐसी ही रही चीन है, किसे पाश्चारय वर्ष पूर्वीय श्रीमी में समास कर रसा है।

शाम ज्यान में सब से मवानड **ब्र**रीति पारुपाल विताह पद्धति है । इस प्रथा की काह दे अर्थानन वार, पाक्षक, क्रांगांग, क्रान्यांव स्रीत चरित्र सह युवक स्रीत जुवलियां तेवार को रही हैं। विवाद का मूख क्षा रव श्री पुरुष का प्रस्थार साला-मावना का नंसधिक विनिमय है बिसके आधार पर प्रकृति वा प्रवाह चल सकता है। त्यमान दी से छी पुरुष होती के जिल्लाने कर क्या स्टब्स क्रमता है। कातः समय पर परश्वत स्त्री पुरुषों का परस्पर संयुक्त होता **सामायक है** परन्तु वह सहयोग मैक्सनिक जिल्लि पर है। इस का सब के मोटा स्वाहरण तो यही है कि स्रांपरत कीर स्गोत्र स्वी पुरुष संयुक्त नहीं हो सकते, वह बहुत medit धौर वैश्वरांतक वात है कि ब्रियन रसत कीर विल्ल क्या की विशास्त्र स्थाने स्थ्यन्त्र की जाये। बह सामाने दयासन्द जी ने स्वनिमित प्राय संस्थार विधिः विवाह प्रकरण में वहें मनोवैश्वानिक ६भ विश्वान के इस से दर्गन क्ति है। विवाह की बना सब से दशवा केदरी कीर अवर्थ की वरिवादी क्षता है' दी परिपाती है । मुख्यमान

और वास्तास्य क्षोप एवं काके गय-बिन्हों पर चसने वाले बारत है साम बहुताने बासे श्री पुरुषों में बह् स्वारंतिक ग्रथान बात है। इस 'द्यान' के शीष्य परिवास

का वो महेस देतेरियस मैक्सियस को विकते स्पतुष सेलवी वर्रीती से ३०६ को पूर दुव्या था परन्तु है। रॉगंडे करें हो बाते हैं। बारे शरीत में बांप बाटने जैसा दर्द होता काल किस्य के देशों में चरित्र इतना है। श्राप्त का नासनरक्ष करांक की जिस गया है कि संसुक्तराज्य करें- हो गर हैं।

### तलाक से होशियार

(से व श्री देशकृत्व वी विद्यानकस्पति शास्त्री वि० देव

बोध संस्थान होशियारपूर) MACHE RESIDENCE AND AND AND ASSESSMENT बनी सारता की चन्नक दमक में रिका से १००० आस्त पीड़े । तमा दृष्टि हो गया है कि वर-वस | २० ८काल होटे है । समाविस व्ह काम वासमा को वर्तका में १७, ६० री से १८, बेल्स वे में <sub>("१ का क्रीसत</sub> दें। बचरी क्रासर-मिलतो है, भाष, सामा, लेक, कुर, बेंड वें जी यक इंबर चामरी सितेमा, रेडियो, टेलीवबन, कोन, बीक्षे ०'७, प्रवंशास से ०'६, इ'स्पेंड सबर्थ, मार्थेट एवं स्ट्रांशका के के ९००, कांस में १५० से लेकर केन्द्रों से क्या क्रिक्ट देखें उधर से क्ष्म होकीय देशों में १४ तथा बाहरा एवं तताब को प्रीतसक्रव क्षांक्रसान वे १९१४ का क्रीस्त है किया रहा है। द्भीर मारत में ारे क्योसत है।

ब्दरी हो जवाभी में १५७. थपस वसने वाते तक्षे कीर सर्वास्थ । समाद में स्वाच की नमी-इत को बड़े बोर से फैशा रहे हैं ed सरकार मी इनका साथ रे

इंदर्श शिक्षों वर या पुरुषों पर व्यही जो स्रोध ब्रीह स्टार्थ में सम्बे होका प्राचीत काल में विवाह की कताब देते हैं। यहके बासती जिस्से वही प्रविक्रशासी, व्यक्तिक रीति से हार तो दे सान्धराधिक प्रमध स्मर्थात किया गया विकाद टूट नही हुरान, वायवंड कीर क्रायब्डा का शक्ता वर व बान्त है किन्होंने तलाह की शादी हाब द्यात सन्तान देशी द्यापनी

को थमं कतवा । वर्दि वे द्वित हो गई। स्टोडो शासकों की विस चौर वासन शोला सम्पदाय प्रस्य विसाहर कीर हाहाबार सुनकर भी वन तकाक बाकों को सुख की नीव सम्प्राणिनी कारिकाको क्रीर बासको काली है ? वे अगाथ बातक टुन्हारे क्षो खामन में स्थाचीन व ही सफते वाव से 📗 इस कम्बेरी दुःला मरी ये। इमें कारचर्य है कि इतने धोर हानिया में पक्की शेस-शेस का पान करने पर भी पारपारय संस्कृति हुनाभीत कार देते सुले दुधने बोधह बगड बन रह देंसे रह साक्ट दिल काट रहे हैं। सुक्रम भी त्रका ! स्त्रव यह राष श्रवनी सन्तिस व रहें, देसे बने सहक, दर्व बीमल सीमा तह पहुंच पुढ़ा है इसके

पक्षतं पर पस्काव भूग, व्यासे **अहरीते प्रस राजने क्ष्मे हैं वधा** sau-सदय कर बर का रहे हैं। करन्तु प्रस्थास्य सम्बद्धा के रूपूत उन्हीं गयः बहे-वहं परों में वाले दुव का गला घोट कर काफी जिये सार्थ m# 1 का द्वार सोस रहे हैं। हाय : द्वार ! इस रावत प्रका

ती के कनुसार पद्धा शहरक हैंसा

(२) त्यां अभैर पुरुषों में में म त्यन होते सगा है । क्योंकि जब बारे तब सम्बन्ध विश्लोद कर चवते हैं । (३) बहुत से महक्षतों का नाम दा जिल्ह् मी न सहकर वे समाज

भी परन्तु इस झपराच भीर पाप

की जिल्लेदारी देन बहनसीय परा

जयन्ता समारोह सामगीय प्रतिनिधि घरहरू

बाप की सभा ने त्वर्शिय पृथ्य प्रदासमा इंसराय जी की की वर्णीया बन्धशताची वसवै सहादवें के रूप में धूमभान से कश्तूबर में सनाने का निर्हेय विश्वा है। आप इस वार्षिक सभा के बजट निर्वापत के क्रांद्रवेशन में पशारे हैं। धाप सभा का रूप है। इस कावसर पर इस शामानी समारोह को क्षी बहुत के में स्तर घर भेशाने कालीकाद कर के बसा से ई भाउयो ! शजाक २६ सवास इस में जुट जायें—बही प्रार्थना क्रपराव को है ही, यह श्रीक्श पर

विक्रीत त्रिलोकचन्द्र शास्त्री सम्बादक आये जश्तु

(४) पांत-वत स्पीर स्था-वत वर्ग नह होने सना है। (४) दासक और वर्शसकाओं को ल्यागने से वे भी भूतं ज्यासे

शर रहे हैं। (६) देश में जनसंस्का वह विधात अकते तो झाज माधा-पिता । रही है ।

(u) तमाकों की लेप की लेक मानक काति की काती पर सक रही है।

इत सब बायों को सुन समय इट् भी को तलाक की करणामारी। त्था च पश्रमाधी रहे ≣ हम कोंगे कि साप को गले सरकार विकास हो, क्कों सं साम बांचवर हुई केतोशम (1) लाको चराने विवश हो कें भूमते हो ? किस प्रथा ने इन्हे दीन दुनियाँ से विकल्या कर विका है, उसे मतानह जानदर भी जो <sub>क्याप</sub> क्रां**स-मी**च स्टब्यों सकीर के क्लॉर बन रहे हो तो निश्लेष्ट तुम्हारे क्रीवन सनुष्यत्य निकल

गवा है।

6. Shri Sunta Blasn.

#### D. A. V. College Managing Commitice Chitra Gupta Road New Delhi. LIST OF THE OFFICE BEARERS OF THE D. A. V. COLLEGE

3. R. S. Dr. Mibaraj Kuidan Mapor,—Jo~ 31, Raspur Rosi,

4 R.R. Mar Modern. — 40—. 185; Gail Link

Acea, NEW DELMI.

5. III B. Boy Mishan Cal.
—do — 3/17, East Patel Nagar,
NEW DELMI.

Kurukshetra University,

KURUKSHETRA.

Sari C. L. Antad. Gentral Secustary, 19, West Palel Nagar.

Vxe-Chauceller,

NEW DELHE.

2. R. B. Dr., G.D. Kupper. Scoretary. 22, Corton Road.

NEW DELHL

9. Shri Lal Chand Khansa. —lo— 74, Coccessarys,
NEW DELHI.

 Shri S.L. Vermi. —-So — Punjab National Bank Parhament street, NEW DELPH.

Shri Brij Lal Dhawan. —do — j6, M. Connenght Plate,
 NEW DELHL.

Dr. D. R. Mehts.
 —do— \$9-H. Connatught Carcus,
 NEW DELED.

13. Shr R. N. Gopta. —do— 15, Ring Road, Laignt
Regar, NEW DELEL.

14. Shri Amur Nath Pari. —do— D-608, Defence Colony,

NEW DELFIL

15. Str. Parsa Lai Soot. Accountant. A-20-21, Natamushim

Ertension,
NEW DELHI.
iii. Shri Jessa Ram. —do— 132/48, Krishan Nagar,

ii. Siri Jessa Kam. — do — 132/48, Araban Fagar, Chankaya Pun, NEW DELHI.

 Shri T. R. Tuli. —do -- New Bank: of India Ltd., Central Office, Connaught Pices, New Breist.

8. Shin Sewa Ram Kapur. —do— 29. Rahtak Road, DELEJI.

### त्रार्य प्रादेशिक सभा के

यानारम्य धरिनेश्वर में साथे को प्रांतिनिश्वर की होता है— तैया कि पूर्व स्वापार पत्ती में स्थित कि स्विक्त पत्ती कि कि स्वाप्त का सामायक वार्तिकात १२६-१३ की रविश्वर २ को तक देखा है वार्य प्रमाय कोहबड़ समुख्यर में क्यान्य होगा। इस में ब्राह्मिकी होने के कि बच्चो प्रितिनिश्चेत की सम्यो मेंने तक है जाए कियी स्वाप्त हो कमी स्वाप्त की स्वाप्त की हा बिहा है है आहे. समायक पत्ती व्यक्ति कर कि स्वाप्त कर है विद्या होने का स्वाप्त करें ।

। संशोधसम्बद्धाः स्थापि स

### हिन्दी साप्ताहिक पत्र

**श्रार्य सम्त** जासन्वर के स्वामित्व अधिकार तथा बन्य विवयों का आरेटा

पत्रमं ४ (वाधिनयम ८ देखो) १. त्रकारान त्यादः —कार्यस्य कार्यं वादेखिक वासिनीयं समा वाक्यर सम्ह

२, प्रकाशन की क्षत्रति :—सामाहिक

३. सहस्र का नाम :--मी संवोधरात्र सी

वार्ति : — मारबी

पता :--मंत्री बार्व शहेरितक प्रतिविधि सता समान्तर २५र

४. श्रधासक का नाम : —यो संकोपराज जी साथि : — समग्री

वता : — मन्त्री झार्य प्राहेर्गाड प्रतिनिधि सभा जासन्बर नमः अ. सावताड का नाथ :— में पं. विज्ञोडकन को सारके सो. य.

वावि :—मारवी

च्या :—बहोत्तेहरड वार्यनहोसित शीविषि वस्त्र वास्त्रपर स्वर ६. यह के स्वाधि व्यक्तिकोई के शास स्वरण की स्वे स्वरूपे स्वीके इस<u>्त्र हैं स्वरूपके प्रत्</u>यों हुन्य केन्द्र स्वीकेंक के स्वीकेंट की

लाकिक हैं। सार्वशिक्षिक शीविक्षेत्र काश रशिक्षक विश्व की श्रूप का की स्वाक्रिकी हैं।

र्वे संबोध्यात्र इस क्षेत्र हारा पोतिष करता हूं कि इस्स किस किसों की सुधका मेरे द्वाम व विश्वता के बहुतार करेबा तक पूर्व है। (१९८७का) संबोधनात प्रकारक कार्यक्रमा, क्रांक्टस

### वार्य समाज सैन्टर = चवडीगड़ में

व्हांपक्षेत्र स्थान १-२-६५ को सन्त्र हुम्म । ह्या व्यवस्य पर चीन स्टब्स्क सी, निक्षोच्या मी निक्षोचित्रात्व मी, क शावस्थ्य मी, मी इति स्कूत मी, के बाधुराय मी करि क्षानु शर्मी ते पर बोकली काच्यों डारा सहर्षि सन्तरी श्वान्त्य मी के परवर्षे में महानेश्वित्र स्वर्तित की । ——स्वस्थानस्य

सुन्ह व शक्तात मो क्षांबराज को बर्गना आर्थ गारेरिक प्रतिनिध सभा पंचार जासन्तर हारा वेह विवास के असिमार होट सावन्तर हे सुविध स्था बरावेन्यात कार्योक्रय महात्मा हंबराज मकत विकट चनहरी जाकन्तर राहर से बकारित कारीस — वार्य वाहेरिक वरिवेधि समा पंचार कारीस्थ



## मुफ्त मशवरा

हमारा औषबालय पूरे सतावन साल अर्थात १९०७ से जारी है और बड़े परिश्रम और ईमानदारी में जनता की सेवा कर रहा है। सहस्रों व्यक्ति लाग उठाकर हमारे औष-धालय की उन्नति के लिये प्राचंना कर रहे है। जो मनुष्य एक बार भी कोई बस्तू हमारे यहां से मंगवा लेता है-वह सदा के लिये ग्राहक बन जाता है और हर महीने कुछ न कुछ भंगवाता रहता है। अपने इष्टमित्रों भिलने जलने वालों को खरीदारी के लिये प्रेरणा करता रहता है। इन सब बातो का निर्भः हमारी ईमानदारी, अच्छा व्यवहार और उत्तम प्रकार की लाभटायक अधवा काम आने वाली दस्तए कम मृत्य में देने पर है। खबन से तंग आये हए निराश रोवियों को मशकरा मुक्त दिया जाता है। शाथ ही उन के पत्र गुप्त रवसे जाते है। यदि आरप या आरपका कोई क्रित्र या सम्बन्धी किसी भयानक रोग में प्रसित है तो एक पत्र बाल कर हस से मूपन मशबरा लें : मशवरा की कोई फीस नही सी जाती। यदि स्नाप लिखेंगे तो आपके रोग की परीक्षित शौपिष की० पी० दारा भेज दी कायेथी। शुभचिन्तक—

मैनेजर चन्द्रगुप्त श्रीपशलय,

र्म० ७७ टोष्ट्रामा जिला हिसार ।

## कायापलट

# गोलियां

इन गोलियों के सेवन से काया पलठ जाती है। शारीरिक कमजोरी चाहे किसी कारण से हो, इन के सेवन से दूर हो जाती है। दुवंल शरीर में नया खन पैदा होने लगता है और पीले मुख पर लाली आने खगती है। हर समय का दर्ब सिर, दर्द कमर, दिल का धड़कता, अंशो की सुस्ती, काहिली दूर हो जाती है। दूध घी हजम होने लगता है और शरीर में परिष्त शक्ति का जाती है। अमा-शय की कमजोरी की दुर करके सदा के जिये घीटब पचाने को शक्ति देनी है। एक बार मंगा कर अवस्य आजमाये। मृत्य ५० गोजी की जीजी कैवल तीन रुपये हाकस्वर्ष व बिकी टैक्स एक रुपया सत्तर क्ये पैसे। पूरा कोर्स तीन शीशी के शकखर्च तथा विकी टैक्स समेत ११) चार्ज किये जायेगे।

मिलने का पता—

चन्द्रगुप्त श्रीषभाय, नं० ७७,

नये साल के काम की जन्त्री मुफ्त भेजी जाती है।

ओ ३म्

# त्र्यार्य जगत भ (शिवसरी) विशेषांक

## ऋषिबोध (शिवरात्री) विशेषांक

११ फरवरी १६६४, शिवरात्रि २०२०

२६,२,९ फरवरी १९६४ के ४,१,६, का सामिलित अंक, वर्ष २४

# वेदामृत

यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् कतुना पर्यभूषत् । यस्य शुष्पाद्रोदसी अभ्यसेताम् नृम्णस्य मन्हा स जनास इन्द्र:॥ अथ्यं काण्ड ४

भाव:—हेलोगों! इन्द्र वह है जो सदा सत्यस्तातन है, दिव्य देव है तथा सर्वत्र महती महिमा वाला है, सब को अपने नियम में नियमित किये हुए है। लित के अटल नियम शक्तित से ये भूमि, अन्तरिक्ष एवं द्यातोक आधारित है। वो समस्त वलों का केन्द्र, भण्डार है, वहीं महान् भणवान् है। उसी को मानो जानो और भक्ति करो। इस प्रकृति के जड़ पदार्थों का पूजन मत करो।

#### श्रनोखी बात

शिक्षांत्री के इस विशेषांक में सारे समात के सामने इस करवन्त्र, मतोखीं, बावरवक तथा स्रतीय सावरों बात को जान मुक्त कर रखता हुआ सान्तरिक निवेदन कर किशासिक पा उठाने वाले मिलयों की तखारा में मिकबा हूं। हेखें पेसा शिव-मत कीन लेता है, जीन संकल्प करता है कीन स्रारों साता है? मेरी आंखें देखता, कान सुनना, बत्तवाने को तिशाह है से कीन दिखान, सुनाने बत्तवाने की तिशाह है ?

श्रादर्श विवाह कई होते हैं पर आदर्श की परिभाषा जुदा २ है। सर्वांगी आदुर्श कियारिमक रूप में बहत ही कम हैं। क्या कोई मानेवा कि स्नाज के समय ऐसी भी बरात हो सकती है जिसमें बर समेत केवल तीन ही सरबन हों. फोई वेंड वावा न हो, सिर पर मुख्द का दिखाना न हो, केवल एक पर्धों की मंगल निशानी ही पर्याप्त हो। कोई भोडी भी न हो। यर के साथ जसका पिता और आई भी न आया हो। वर बहुत सम्पन्न परिदार का होकर भी इतने ऊ'ने विचार का होकि शादी की सारी बाहर की रुदियां तोड़कर सबेथा झावरी रूप पेश किया बावे दिवसी की चमक-इमक सर्वधा व हो। सारा सहस्य विवाह संस्कार को ही विवा जाये। विवाह के बाद ही भोजन का काम हो। विवाह पूर्ण भैदिक रीति से हो। कितनी द्वानोसी बात है। sæqaा तहीं पर यथार्थ है। अभी २ में टोडाना में - भी गौरी शंकर की गुजा की सुपुत्री झक्या कार्या

प्रभाकर के विवाह में कार्यक्षम पर विवाह संस्कार दराने गया। धरस्या। जी धार्य जनन में डेस भी तिस्वती हैं वहेज प्रथा नासक झांस रुताने वासी पुस्तिका भी लिखी है। उसी की बरात और। जिला फिरोज पर के अतिध्ठित परिवार श्री मुनिलाल जी के छोटे भाई भी स्वीश कुमार जी के रूप में आई। श्री सरीश जी के पिता जी व शाई जी भी साथ न ये। कहीं ऐसा न हो कि मान्य माई सम्पन्धियों को गिसा देने का श्रवसर न मिले। डोहाना की जनवा तो इस कियारियक रूप पर मस्तक स्टका बैठी क्या सुन्दर वधाई बी जो इस क्रायन सामा विवाह पर द्धार्यसमात्र टोह्यना के प्रधान श्री बुजलाल जी गप्ता ने दोनों परिवारी को वे कर इस दिशा में द्यार्थ समाज को संकल्प जैने की प्रदेशा दी। ग्रेरे दिल पर जो गहरा प्रभाव पड़ा वह विश्स्थावी है। व्यक्त किये विना रह तहीं सका।

बाज शिक्शाओं पर इस बाहरी किजानिक का सुक्षात कर हैं। जनता को हस सारारी के शीखें, समाना होगा। । दिलावा देवा सारारी के शीखें, समाना होगा। । दिलावा देवा से सही जावाण रूट वर तोज़ देने से बाता है। बाता के समान के सामने तक से आवश्यक वही गोग वही है कि ऐसा आपूर्ण रहप पेता करने में कर किंदी तिता सारा कार्य निवक्त के मान ति स्वकृत का मान कार्य के सारार के स्वति के सारार के सार के सारार कर

# महर्षि का दिन्य स्वप्न पूरा करें श्रात्मा को मत भूलो

भूवन पाद महाला आंतर लाती जी महा-राज गांव बंद महीनों से हैररामान में रीमाला । पर हैं। प्राप्तिनों साथ ने कराते पत्र में विक्रा से हिमें तो डीं ह हूं, जली मकार से हूं पर मेरा स्थीर डींक नहीं मा। इस के काने राज कराते हो पर होन नहीं मा। इस के काने राज कराते हो पर बनता देर में है। बाब त्याख हो रहा हूं। विका से करात दे कि इन दोंकियों में पूर्व वित आंत्रसमाध कार्रस रोंड कम्मतस में क्या कर्ड पर मार्च में है क्या सक्ष्मा। एनु महासमा जी को शोक्षा त्याख कर्स सारी जनता नहीं मंगाइ कामना कर रही है। रिवराणी पर जनका भीता समाव करी हों।

ष्णान का नात्रक दुःशी है। सारे देशव और विवान के होते हुए भी दुःशी है। तिस्त समाज ने संसार का वरभर करना या, वह लव्यं दुःशी निश्च गया है और नात्रव भी नाव्य समाज निश्चित कर से दुःशी ही रहेगा, यहि इस ने कालना को इसी मकार जुलाबे रहा। काल्या को मुकले से क्य से बढ़ा रोग, जिस रोग में नात्रव दुरी शह् एक्स गवा है। स्त्रार्थ करात्रक दुनियां पान पुत्रव, दुर्गामका कुछ नहीं देशकी कोर क्यने निकृष्ट लाखें की पूर्व के जिए हर नकार के करवाचार स्वर स्वत्या हो गयाजी है। आल्या को मुझ कर स्वर क्या स्वर्ण में ऐसा कर दिस्त्यों महिला हो करते हैं।

#### शिवशत्रिका महत्व

रिष कु. जुसलालको आयं मुखारिए, बुलंदशहर १. धारी थी दिवसात्र इस को जवात के लिए। सर रहे ये जो जन्दें करूप रिकान के लिए। २. गुम रहो को राला धीचा दिलाने के लिए। ३. कर गथी रीमन चयाते को निसाली राल थी। इसमें भी कुररण को डेक्स मन्त्र था, बुद्ध बाव भी। ५. वह दवाननर एक झालम के लिए हत्या था। छिस के दनने पाक में बहुरानियन का जान था। ४. वेह झा देना कमी का काम था। इस के दन रोग कमी का काम था। इस के दस है पाल में बहुरानियन का जान था। ६. वह सा देना कमी का काम था।

## मूलशंकर श्रीर दयानन्द

(महान् फ़िलास्फर डा॰ दीवानचन्द जी एम० ए० कानपूर)

खामी हवानन्द को शिव की रात्री से बोध हुआ। उस समय वह दयानन्द न थे, मूल शहर थे। उनका बोध क्या था ? उनके ताम की व्याख्या ही था यही कि सारे संसार इधौर सारे सत्य का मूल राष्ट्रर अर्थात परमात्मा है। इस मौलिक प्रकाश की खोर से कभी भी उसकी रहि रधर-जधर नहीं हुई । यह सिद्धांत सदा उनके विचारों में प्रमुख वनारहा। यह विचार उन के शन्तव्य का केन्द्र था। जब इन्होंने इध्येसमात की स्थापना की हो चसके नियमों में अथम स्थान उसी विचार को दिया। उनका जीवन त्याग का जीवन था। त्याग किसी वस्त का किया जाता है। इसके सम्बन्ध में यह देखना होता है कि वह किस भाव से किया वाता है और उसका फल क्या होता । उसम त्यान बह है जो दबाके भाव से किया जाये तथा बनके करने में दुःल नहीं वस्कि ज्ञानन्द का अनुभव हो । स्वामी दयानस्द के इत्व में उसरों के लिए दया थी और इस दया के साथ अपना आनन्द मिक्षा था। मूल शक्कर को उसके साता-पिता ने भहत अञ्बानाम दिया । जिस ब्रह्मचारी ने मूल शक्स को शुरु चैतन्य बना दिया, वह भी इस से व्यच्छानाम चुन नहीं सक्ताथा। जो कसी रह गई थी वह स्वामी पुर्शानन्व जी ने उन्हें दयानन्द बना कर पूरी कर दी। मैंने श्रीवन के पत्रसके पर पढ़ा

#### \*\*\*

चलती वस्की देन के दिया 'क्यीरा' रो।
हो पट सीवर आव के सावत गया न को।।
हुरा जो दूं दन में चली हुरा न देना को।
को पर दूं वा कपना मुक्त से नुरा न को।।
'क्रीरा' रासीर सराय दें स्वों बोचे मुल चैन।
काल नक्कारा सांत का सावत दें दिने जीला।
गिरह कोल नहीं देनी सुन की गढ़ती जाला।
गिरह कोल नहीं देनी हम विच अने कंगाला।
गिरह कोल नहीं देनी हम विच अने कंगाला।
'नारायल' मुख ओग में तु लम्मट दिन रैन।
कान सम्बन्ध मांत्री निकट देन सोल के नवन।।

#### प्रापि-बांध-संब

## श्रात्म-विश्वास शक्ति बिन्दु है

#### 

(श्री प्रिंसिपल सुर्वाभानु जी एम.ए. वायस चांसलर कुरुक्षेत्र यूनिवसिटी)

#### 

मानुष्य की सफलता क्षारम-विषयाध में तिहिष है। इसकी सामारख वा विशेष हुनैका। व सस-लता का प्रमास्य अधका एक मात्र गुरा वही ब्यादन विश्वसाब है। जिसमें जितना कथिक नह गुरु होता है वह संबाद में उतना हो महान् बन बाता है।

महर्षि द्यानम्द में भी वही बनोला ग्या था ह छनके अत्रयास्त्र में उनके बत स्वाग में उनके उस द्द निरुवय में कि दे अवश्य एक सेच्चे शिव की लोज करेंगे,, उनके गृहत्याग में, उनके सक्चे गुरू की सींज की धुन में सभी में उनकी आत्म-विश्वास शक्ति ही काम करवी भी । अब गुरु जी उन्हें भारत में बेट का ताद बजाने की व्याज्ञा दी दो देश में अन्धविद्वास तथा दीनता काराज्य था । समया भारत खरड ही श्रहान के चीर इप्रत्यकार में डबा हका या । उघर सङ्घि भादेते थे ⊦ इत के पास देद श्रथ थे । स्क कमरस्तु था और श्री पांसदसंदिनीपताका। धन वा मित्रमंदलः व दूसरा कोई साधन पास न था। किन्त अनोले आत्मविश्वास पर महर्षि ने सहर्ष बाह्र महान् सार अपने अन्ते पर हे लिया। आज विकसित मानवता के सिद्धांतों का बीजारोपया महर्षि ते किया था। मनस्यसात्र के समान अधिकारी की घोषवा कि कर गये थे। निजयामा, निवदेश कथा निज सपा ये शक्य मी सर्वेत्रयम करही के हुए को निकस्ते थे। किन्तु इस यस अपुरास और उपयोगी गुण्य को, यस ग्रांकरण को, सारमांवरवास को मुला के हैं। आगत की जनता उस भीर पहले के अपनुषायियों की और आशा मरी टॉफ्ट से देख रही हैं, किन्तु आपंत्रज अपने को आध्वास समझ्य वैडा है। वह सभी कुछ आगत दुवंसता है। कड़ी। आस्तांवरवास के यदित्र गुण्य को आध्व करों। इसी अपेशी शामित से अपनी सारी शामों पर विवस पापा। शिवराती हमें बीवन में आस्तांवशवास का पाट पड़ारी है।

समय पर ही सब काय मिलता है— समय पर ही सब कार्य किंद्र होते हैं— समय पर ही बीज बीचा जाता है— समय पर ही कंदर इटा है— समय पर ही कंदर नहा वृत्त बन जाता है— समय पर ही कुछ को पता समते हैं— समय है है जिसी को समत प्रवत कथवा निर्मेत कर हैता है —

समय प्य करोति, बलावसम् (माध)

### मार्ग श्रोर ज्योति

#### [ श्री यश जी पूर्व शिक्षा-मंत्री पंजाब सरकार ]

सहर्षि द्वानव का जीवन एक चनाकार था।
इतिहास शाधी न हो ने विश्वास नहीं हो सकता
हि दनने कम समय में यातावान और उत्पार के
सावनों के सम्मय खर्षेया समाय के बावजूद कोई
एक स्वरिक्त इत्तरी सहान स्वर्ति को उपम हे सकता
है। सहर्षि रवानव्य की का स्वर्ति के सित्य स्वर्ति में
सहर्षि रवानव्य की का स्वर्ति के सावन्य की स्वर्ति स्वर्त

सवाता की पकड़ इतनी मखबूत थी 🖫 विषरीत परि-स्थितियों की प्रवल आंधी भी उन्हें विश्वजित नहीं क पानी थीं !

एक महान कर्मयोगी की तरह जीने वासे दिवर हवानन की मुनु एक प्रसर राहीद की तरह थो। तन के रोमनोम में विच की ग्रीडा कराह रही थी, होंकन दवानन रे के डेकन होठों पर ही। सन्तोच की मुक्कान नहीं मकत रही थी वास्ति तु तरहा हरव भी डेक-रहित था। कितना प्रवाह सागर था उनके बीने में कि जिससे उन्हें विच दिवा, उनके किए भी मंगठ-हाबना करते रहे। विकेशन की शाम के। मी, मही। विशास-दरवाल का विस्तत सागाउँकी सागर।

व्यानस्य का बीवन एक मार्ग था। व्यानस्य की मृत्यु मार्ग को प्रकारित करती हुई एक क्योति। क्षत्सदृष्ठ भार्ग को प्रकारित करती हुई एक क्योति। क्षत्सदृष्ठ भौर अमर! भार्ग का हुर एग प्रेरणा-हासक। ज्योति की हुर किरया स्कृतिहासक।

# है योगिराज

रचिवता-श्री वेद प्रकाश जी एम. ए. प्रभाकर खन्ना

हे बोगिराज शिव सूर्व देव जन-जन का को शत-शत प्रखास । ह संस्य डितेबी प्रभाषण रहने न दिया तम तीम नाम ।।

> कर दिवा सिद्ध क्या बोग शक्ति, क्या शक्तिवास नर एकाकी। क्यों स्वाय शून्य नर दर जलधर दो सके मिलनता नावाकी।

वन प्राण प्यार से बसे हुए हों सकता प्राश्चियों के सन में। भर रहे जागरया नव-जीवन सुख सार सुरक्षि को मन-मन में।।

है इसन्ति शान्ति के सम्मिक्ता तप त्याग तेन के सफ्त-मुफ्त । सन-मन के परमाकर्पण क्ल कटुता की नष्ट करी दलदेख ।।

हर हरव दुआएं देता है प्रमु का कर दर धर्षन कहन। द्वम रही सुनी रात संवस्तर हरते बानवता का कन्दन।!

> हर वैमनस्य झूल वस बटु घन विकसित कर दो वर हूर्व अस्त । तिस-तिल जलते कटते सिटते कर दो पातक पासड सलग।

#### श्रुपि-बोध-श्रंड

### त्र्याज का जगत और दयानन्द

(श्री. प्रिंसिपल रलाराम वी एम ए. एम. एल. ए. प्रधान आर्यप्रादेशिक सभा जालंघर)

द्याज का जगत ऋद्भुत है। सानव नव्यों में पह दने के स्वयन ही नहीं हो रहा, अपित बंदूत समीप चला गवा है। क्रमारह के रहस्यों के उदधाटन का भरसक प्रयस्त कर रहा है । विज्ञान की उन्नति सव 🎹 श्राइचर्य जनक है । परमाशा से काम ही नहीं क्तिया जा रहा, अभित इस के गुझतम रंडस्यों को सोजा जा रहा है। इस में मानव ने विस्पयजन इ सफतता शप्त की है। परन्तु संसार श्रागे से श्राधिक **धरा**ग्त तथा चुट्य है। चिन्ता की मात्रा कही बद्द गई है। परमासु युग एक सहान् चिन्तायुग बन गया है। जब जिस्ता जीवन का साधारण श्रंग वन जावे भो मोग विसास समाज में निवान्त वट जाते 🖁 । चिन्ता से मस्ति प्राप्त करने के सिये क्या खपने स्वरूप व्यक्तित्व (limited self) को भूल जाने लिये लोग राजाब तथा भीग विकास का ब्राजय जेते हैं ताकि वे ब्रापने इवेदना-दीहरू त्यप्न को भूस सकें । इसी कारमा बाज का साधारण सानद भए, पिय, रमस्यत के विताल -सथा-पश्चतास्त्रक सिद्धान्त का श्रानुपाई बनता जा रहा है। अमरीका जैसे समृद्ध देश में मानसिक रोग मधंकर अप घारता कर रहे हैं। पागक्षपन तथा जानसिक नीमारियों की संख्या इतनी 💵 गई है कि वहां हजारों सन ने दे वासी गोजियों का प्रदोश प्रतिहिम होता है । कांल में

रिवीयरा एक बड़ा स्वास्थ्य-प्रद स्थान (Health resort) है वहां बरोप के साल पति अपने शोक संबन्ध हत्यों सथा चिनित बस को भीग विलास के बीवन द्वारा शाला करने के लिये जाते हैं परन्तु वहां का शीतल बक्त नायु इस मानसिक व्वाला को सुमार नहीं सकता। बतः वहां धन देशें में झारम-इत्या की सर्वादित प्रतिदित धडती का रही है। अब अब तथा चिन्छ। सानव को चारों झोर से घेर केते हैं वो कुच्छ व्यक्ति तो धर्मतथा भगवानोन्सक्ष हो जाते हैं परन्त बहुत ऋधिक व्यक्ति ओगविसास की क्योर सुरु जाते हैं। स्नाज के शंसार में भौतिक वाद के फलस्वरूप भोगविसास तथा स्वछ-शता की बोर बहुत अधिक मुख्य है। इङ्गतैन्द्र में बो पीछे रूच्छ सजाह रूचराम सिविस सर्वेटस (Civial Servants) का सम्मेलन हुझा क्स में उन्होंने बड़े प्रामाशिक तरी के से कहा कि जो कुवतियां बीस वर्ष की काबु से पहले इस देश में विवाह करती हैं उनमें भी ३० प्रतिशत गर्श्विणी होती हैं। वह इस बात को दर्शाता है कि मालु परयुग किस और प्रयास का रहा है।

ऐसी स्थिति में देशलन्त का वेशीया हुआ दुसला हमें वैदिक सिद्धान्तानुंबार प्रवेशया में साना होता। वेद ने कहा 'व्यवान ते पुरुष नाववानम्।' सामय हु सिरम्बर करर कहने के बिये बना हैं. द्याधः पतन के लिये नहीं । विकास की सीदी पर भइते हुए तु ऋधो सुख से उर्ध्वमुख बना है। यह श्वविरत्न जन्मनि तभी हो सकती है जब व्यक्ति स हो इन्द्रियों के जीवन से ऐसे भगे जैसे व्यक्ति एक एक बहुदकाय अजगर से सागता है और नहीं इतनी संकीया दृष्टि वाला वने कि इन्द्रिय सुझ के श्चितिरकत उसे और कोई सुख का स्रोत ही विसाई न दे। बहुबहुसीन देख सके कि बहुमुखतः एक आस्त्रा है और आस्या के परे संसार का नियन्ता प्रभुभी मौजूद है। जैसे मनुभगवान ने कहा 'न जात कामः कामानाम् उप भोगते शास्त्रति । हविषा कुरम्बरुसंग मूब एशमिजायते'। कामनाएं बरमोग के द्वारा शान्त नहीं होती, संयगन तथा नियमन के क्षरा मानव शान्ति को प्राप्त करता। जैसे देड ने बडा 'तेन स्वक्तेन भुंजीया।' संसार का अवस्य भोग दशे परन्तु त्वाग आब से करो । त्वाग तथा सोग का समन्त्रम हो । दोनों में से कोई मी 'वाद (iama) का रूप न धारण करें। आश्रमाधारित जीवन बने । संयम मोग से पहले जीवन में आवा जावे ताकि समय पर भोग संवम से मर्यादित रहे। आज के जीवन में यह क्रम उल्लंडा होता जा रहा है। भीगां पहले का जाता है, तब संबम का विकार ही नहीं काला। जैसे भगवान कृष्णाने गोता में कहा 'रागढेंच वियुक्तेंत् विषया-तिन्द्रियेश्वरस्य । स्नात्मवश्यैविवयातमा प्रसाद इप्रथमच्छति ॥ प्रसादे सर्वे दुसानाम् हानिरस्योप-जावते । प्रमन्नचेवस् झागु बृद्धि पर्वविविध्देते ॥ राग द्वेष को छोंद बर जब व्यक्ति इन्द्रियों से अवित

E

काम लेता है और इन्द्रियों को अपने बातमा के अधीन रसता है तब वह शास्ति तथा प्रसन्तता की शाज करता है। प्रसन्तिषत व्यक्ति निर्मल तथा स्थिर बढ़ि पास्र सब दांसों से अपर वह जाता है। बाज के जयत की दूसरी समस्या है कि परमाग्र युद्ध से कैसे मुक्ति प्राप्त की बावे । युद्ध क्रक्की वस्त है कि बुरी, बह काथ विशादास्पद विषय नहीं रक्षाः अथायद्य का व्यर्थ है सानव सगुच्चव विनाश । वह विवाद भी व्यर्थ है कि श्चर्डिसा का प्रथोग विश्ववव्यापी रूप में सम्मव है या नहीं ! हिंसा त्याच्य है कि नहीं ? हिंसा तो सदैव स्वाब्द है ही क्योंकि हिसा 🖫 तास्पर्न्य है त्वार्धवतः क्रोधवतः हा देवेन किसी का शायाहरण करवा। यह तो सर्वेदा पाप है ही । परन्तु अहिंसा का यह क्यें नहीं कि हम किसी भी स्थिति में. कभी भो, किसी का प्राणा इरखान करें। धर्म, म्बाब, देशरचा, तथा झारम,सन्यान रचा के सिवे किसी का प्रासहरस करना अहिंसा ही है। जब वब किसी कार्तिल इत्यारे की फांसी दश्ड देता है ती वह ऋहिंसा ही करता है। जब एक जवान युक्क न में बाद का संदार करता है को बह कहिंसा दी काता है। जैसे भगवान ने गीता में बद्धा थस्य नाइंकृतो भावो बुद्धिवेस्य न लिप्पते। हृश्याविस इसानलोकान् न हन्ति न निवन्त्रते।'जो स्वाधवश नही वा द्वेषदश नहीं कापितृ न्याय तथा देश रचा के ब्रिये ह्वारों को मारता है वह पाप नहीं व्यक्ति पुरुवात्मा कर्मवोगी है। ऋगवेद में जाता है

## कान्तदर्शी शिचा विशेषज्ञ दयानन्द

(लैखक:- प्रि० भीमसेन जी बहल, एम० एस० सी० डी० ए० बी० कालेज जालन्घर नगर)

\*\*\*\*\*\*\*\*

this perfectly certain that India never saw a more learned Sanskrit scholar, a deeper metaphsician, a more wonderful orator and a more fearless denunciator of any evil than Dayanand.

विवाजीर्फक्त खोलाइटी की संस्थापिक रूबी महिता मेंडम कोवेटाकी ने कपनी पुलक्ष' "The caves and Jungles of Hindustan में ज्युंक आप सामी द्वालन्य जी नहारा के स्थानन में कहे हैं। वाल्य में बिहर का अर्थक स्थानन विचारक पासी द्वालन की का महत्त को विमान दक्षा स्था। ज्योंने शिक्सांने के पाइन विमान स्थान की में प्रकार किस्ता ने कर्लाकिक

तेत्र जीवन में बारण किया, त्याने भारत शांधियों को ही नहीं क्योंगु सार्वजोम प्रार्श मात्र को निहास कर दिया। पर होड़ा, बेस्व रूपागा। एवेटां कन्दराओं कीर मीहबू जंगलों में जीवन तत्त्व को लोज विश्व कन्यासार्थ स्वोक्षायर कर दिया।

आज से लगभग १०० व्या पूर्व पैराल सम्वत १९२१ विकम को गुरु विरामानन से शिवा और शैवा प्राव्य कर कहींने महुरा से अवास्त्र किया। गुकने जो मन्त्र शिवकों दिशा उन्नकी सुरमिन्ने सभी को सुरमिन्न करने के हेतु दयानन जो ने टड् संकटन मन में वारस्त्र किया। सारक की दवनीय दशा देख वन का इटच वस्त्रकार कर करा।

महामारत काल से गिरता हुआ। भारत १८६४ तक पतन की पराकाष्टा में पहुंच गया था। राष्ट्रीय

िषया वः सन्त्वाव्धा त्रासुदे वीड, वत प्रतिवक्ते । वृषमाक्रमस्तु तविषि वनीवसी मा मत्वेदत माचितः।' हे बाये मीगो सुन्दारे हम्बार मन्द्रत्व वया राजु का संहार करते वाले हों, तृष्ट्रारी सेना सल्लान तवा सुदर हो न कि स्त्रती करती लोगों की 'वेद का हम को काबेदत है कि हे भेष्ट पुरुषो तृष्ट्रारी सेमा सुद्द तथा विकासी हो बाल हमारी स्वतन्त्रता वका सुवारा साल्यन-स्थान त्यार में हैं है हमारा

प्रकारिका करती, जुली, दम्मी चीमी कम्युनिटों से हैं। वेद का क्येरा, है कि हे मेट्ट पुरुषों तुम्हारी तबबार पियर रूप से चमके कौर तुम्हारी सेना सुद्द क्या विवसी हो। क्या दम दक्षानम् के दुर-वर्षरा को जो क्योंने क्यावेदाहि भाषा भृतिका में दमें विदा सब इस इस रहा सूचि संकट में क्यावे कावराय में नहीं सार्वेश ! भावना पूर्वतः समान्त हो चुन्नी भी। गलामी की सब्हार्य कारणा रण्ड है कि इस दिशा में सुचार के हेतु सरहटों का पतन पंजाब में सिक्षों की परावय, स्वामी भी महाराज ने पत्तों को सीचने की भाजाय रिक्षण में टीपू सलतान की समान्ति तथा उत्तर से मूह की ही महत्त्व किया है।

१८% के स्वतन्त्रता संग्राम की प्रतिक्रियाओं ने मारतीय जनता के इदयों में द्वीन मादना (Defeatist Mentality) को भर दिया था। जिस राष्ट्र भाषा हिन्दी की चर्चा आज सर्वेत्र है इस समय इसका इन्छ भी इम्सिटन व या। संस्कृत मृत भाषा दोषित हो चकी थी। अंग्रेजी शिक्षा अ प्रचलन हो चका था इसी के साध्यम से भारत को ईसाई बनाने का संकल्प अंग्रेज कर चडा था सर्वे प्रथम हिमी कालैज यंगाल में स्थापित हुआ। वन्दे-मातरम के लेखक भी वंकिस चन्द्र चैटरजी अधम मेजएट हए । जब उन्हें दियी ही गई तो एक वोन से देन्हें सलामी भी दी गई। इस प्रकार की शिचा का प्रभाव थड डक्सा कि भारतीय नव-युवड अपने स्वाभिमान की ही विलांश्रती है वैटा । साईकेल मध्यदन चौर के॰ एम॰ इत्त जैसे विदान भी ईसाई वन चुके थे।

लामी इयानण जी महाराज ने इस स्व स्थित को मांभा और आहां वेहिक पमें का प्रवार और प्रसार अपना भ्यये बनावा वहां शिक्षा के श्रेत्र में भी तब-बांठि का सुग्रगण किया। शिक्षा सम्बन्धी एष्टिकोश को दिस मतोबैज्ञानिक बंग से लामी जी ने व्यक्तित किया है यससे हमें मानता होगा कि यह एक मॉक्स्प्री-शिक्ष-किंगस्त थे। आज इसके सिद्धान्तों की य मानते वाले भी शिक्षा के क्षेत्र में बनका तोहा माने किया न रह, लक्के हैं |

'भारतान पितृसानाचार्यवान पुरुषों बेद' शतपथ के इस वाक्यनुसार महिषे ने वरूचे हा प्रथम गुरु माता को ही स्वीकार किया है । वे सत्यार्थ में प्रकाश में सिस्तते हैं कि 'वितसा मात से सन्तानों को उपवेश सिलता है उसना किसी अन्य से नहीं।' निःसन्देह 'साता निर्माता भवति माला ही तो निर्माण करती है। किन्तु अप्रज इस वध्य को स सम्रक्त प्रायः मादाएं भी क्रपनी सन्तानी को विद्यालयों में केवल अध्यापकों की हया पर खोड़ना ही अपना कर्तव्य समस बैठीहैं वही कारण है कि सन्तानों की शिवा अपूरी रह गई है, क्योंकि उन का प्रथम सुरु तो छिन ही गया । चाहे नर्सरी और मांटेसरी पद्धवियों को कितना भी सागू करो, अब **तक बन्दने की अ**पनी माता शिक्षक न बनेगी राष्ट्री-त्यान होना छुछ कठिम साही प्रतीस होता है । महर्षि ने हस चीज को एक राती पूर्व ही परस्व सिया भा।

इसी प्रश्नर भारत की निर्धेत और आशिश्वर बनता की आधोगारि से दुःशी होकर खामी जी ने अभिवाद शिवा का दिवार सत्वार्थ प्रकास के दुरीय समुस्तास में इस प्रश्ना फला किया है:— "इस में रामविषय कारि आ जिन स्वर्ध होते.

चाहिए कि पांचें अथवा आठवें वर्ष से आगे कोई बपने लड़कों और लड़कियों को घर में म रस सके। पाठराशा में कादस्य भेज देवें। जो ध भेजे वह इस्डनीय हो।"

स्था तरह स्मीर दूरदर्शी विचार है ? बाज से एक रातास्त्री पूर्व महर्षि ने जो आहेरा मनस्त्रति के आधार पर दिया था, वह बात के कर्तवारों **के** लिए मार्ग दर्शन का काम कर रहा है कि नहीं ? भाजकाल्बक्ति वाहै उस श्रुपि का श्रुणी हो सा नहीं, किन्तु सरव की किरया विवाद नहीं जाती। **गा** प्रस्ट होती ही है । अतिवास शिक्षा हर बिना राष्ट्र का कल्यागा होना असम्भव है । राष्ट्र-ताबक्ष

देगानन्द का यह श्रामर वाक्य सहा ही प्राक्ष

रहेगा । अब सोग भगवश यह समक्ष बैठते हैं कि स्वामी दयानन्द् जी के शिक्षा विषवक विचार . धेक्चित, सांप्रदाविक भीर अनुदार हैं । पेसे लोगों का विचार है कि स्थामी जी तो देवल शक्तिंक शिचा, (वेवों की शिचा) पर ही वल देते थे. इस किर बाज के 💵 कु। में वह विचार सफल होते असम्भव है। किन्तु बाव ऐसी मही है। वास्त-

विकता वो यह है कि अहर्षि ने ज़िला को कशी भी किसी संकीर्श सीमा में बांधने का विचार नहीं किया वे शिवा का कार्य अन्दर्शवा में सम्मते ने अर्थात् विदार्थी जितनी भी भाषाएं पढ़ें अच्छा है, विवना भी ज्ञानार्जन वर्रे वय है। वे जिखते हैं--

"जब पांच वर्षे के सहका सहकी की तब देव-नागरी शहरों का अभ्यास दरावें अन्य देशीय प्रापाओं के कानमें का भी में

क्या इसे हम प्रनदार और संकृतित हृष्टिक्रेया कहें से ? महर्षि ने दो स्पट ही लिख दिया कि बत्ब

वर्षे की कायु से ही प्रारम्भ करा देना उचित है। बदि इस कम से शिका हो तो पूर्व झाय तक व्यक्ति कितनी साधाओं हा ज्ञान कर सकता है। क्वा इस की कोई सीमा है। इस कासीमित और उटार क्रबस्था के खिए क्या हम उस ऋषि को धारतवाट 867

स्वासी जी तो साथा झान के चतिरियत धराचार की शिक्षा का प्रारम्भ भी सत्यार्थ प्रकाश के इसरे स्मानाम और व्यवहार साथ के कान्सीर बास बावस्ता से ही करते हैं। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य स्थक्षार ही तो है। यदि पढ जिला का भी बसे परस्वर व्यवहार करना न भागा तो पेसी शिक्षा से तो प्रक्रिकित ही सला। यदि प्राप्त के विद्यालयों में खामी इयानग्द जी महाराय द्वारा रचित 'व्यव-हार भानु' पुस्तक को पाठ्य कम में स्थान है दिया बावे तो विद्यार्थियों और श्रम्यापकों की बहुत सी समस्याएं स्वतः ही निमृत्त हो अवेंगी !

सहिं ने जो पार्ठाविध धीर्यत की है 🕫 वही ही बैहानिक, परी इत और मनोविहान का आधार लिए हुए हैं । सहशिचा ने देश के चरित्र के साथ किम प्रकार चारक सिक्रवाड किया है यह किसी से क्रिया नहीं है। स्वामी जी इस प्रकार की शिदा को बार्वेकानि ह तथा झस्वासायित ही यतनाले हैं। ब्राध्य जीवन को वह बान्यता प्रदान करते हैं। इस प्रकार के जीवन में गुरु धारे छात्र एक दूसरे के जिक्ट खादर जीवन के निनाश्य में एक इसरे के स्तायक हो सकते हैं। सहवि से जिस प्रकार की सर्वशास सम्बन्त शिक्षा विधि का प्रचलन करने की देशीय भाषाओं का हान होना भी बाक्षक को पाँच प्रच्या प्रकट थी उसके सिय यह व्यनिवाय था 🖷

#### <u>{፟፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠</u> स्वा० दयानन्द का विचित्र बोध

(ले०-श्री सत्यदेव भी M.A. प्रो, डी० ए० वी० कालेज आलन्धर)

म्वा॰ दयानन्द् का बोघोत्सव मनाते हुए प्रायः क्षत सहाशिवरात्रि के पर्व पर होने वाली घटना का ही उल्लेख करते हैं। पर यदि थोड़ा सुदम विचार किया जाए वो दिखाई देगा कि महापुरुपों के जीवत में अनेक सीड आते हैं। दे मोड पक तरह से उनकी आत्मा में प्रकट होने वाते ज्ञान के क्रिन्त २ ह्रपों के प्रतीक होते हैं। इस लेख में इम दो महापुरुषों की बोध सम्बन्धी घटनाओं की तुलना द्वारा इस बात को स्पष्ट करना चाहते हैं। महात्मा बुद्ध का जन्म ईसा से ६२३ वर्ष पूर्व

हका। २८ वर्ष की काय के लगभग सतक, रोगी,

የ*፠፠ቘ፠፠፠፠፠፠ጜጜጜጜዀዀዀዀዀጜጜጜጜጜጜጜጜ*፧ቜ*፠፠፠ቜዂ*፟፠**ዾ**ኇ तया बुद्ध वनको देख कर वन्हें, संसार दुःखमय 🕏 यह झान हुआ। इसके साथ ही संन्यासी को देख कर उन्हें इस वचने के उपाय का भी ज्ञान हुआ। वह उपाय वैराभ्य था । इसी क्रिय गहरी राजि को अपनी त्रिय पत्नी बशोदरा तथा सबोजात शिश राहत को श्रीड कर छन्दक सारथि को लेकर दे धर से तिकता गए।

> पर बोध ॥। झान का यह रूप प्रारम्भिक था। इस दोध या ज्ञान का इसरी ओर अधिक परिस्त रूप तद उन के सामने आया जब बोधि वध के भीने तपस्या के अनन्तर, तपस्या की मिरर्थकता का

विद्यार्थी सभी प्रकार की चिन्ताओं से मुक्त हो। म्थामी जी ने इस के समाधानार्व उन्होंने राजा से काश्रम जीवन की संरक्षण देने के लिए लिखा है---'राजा की बाहा से बाठ वर्ष के परचार सबका व सड़की किसी के घर में न रहने पार्वे किस्स अवार्य कल में रहें'।

काज के शिचा शास्त्री जिन Residential Universities के विचार पर अपना जोर लगा रहें हैं स्वामी दयानन्द के ही तो दूरदर्शी विचार उन में बोलते दृष्टि गोचर हो रहें हैं। अरविन्द घोष इसी किया लाभी दशासन्द के खिए सा कठे बे **5**---

"...Here I say to myself, Dayanand) was a soldier of light, a swarrior in God's world, a sculptor of man and institutions, a bold and rugged victor of difficulties which matter presents to spirit."

ऐसे कान्तदर्शी, महान, शिक्षा विशेषक्ष के चरकों में बोधरात्रि के इस पावन विवस पर आरब का प्रत्येक विद्यार्थी नतसस्तक हो कर अपनी अद्वार्वित्रली अपित्र करने को सर्वेदा स्टस्साहित होता ही रहेगा। इन्हीं शब्दों में में भी अध्यती अक्सि के प्रस्त-भेंट कर रहा हैं।

क्षक होने पर, सुबाका के हारा में द की गई भी दुष्य की श्रीर से तृष्य हो वे विचार-समाधि में बेंद्रे। इस विचार-समाधि हारा ही ज्यहोंने कपने स्वक के विचारने पर विकास गाई, दुःस्वस्य मानव स्वत्य की बाईशा का व्यवेश सुन्या क्या निर्वास-कार करने के सारी अर चलना सारम कर विचा।

स्ता, द्वानन् का बन्म १६२४ ई. के स्वाध्या कुका प्रात्मिक साम उन्हें बहिन की स्वु, जाश की मृजु तथा महाशिवशांत्र के दिन शिव-पिस्की की वह रहा हंग्ल कर हुया। परन्यरा से सिस्ट हुए शेपमांगे की अन्दोंने स्वु के प्रक से सुटने तथा सन्दें शिव की प्राप्ति के सिए साथन बनाने की

सगातार १४ वर्ष कहींने योग मार्ग को पूर्ण करने के प्रथल किया । इस के जिय दिसालय की कन्दराओं और पोटियों से पल कर निदयों कीर कीयों के स्थानों कक सगातार लोज जारी रही। और क्षानों में कहींने समाधि क्षावस्था पाय की।

निश्चय दिया ।

पर इतने से कथि दवानन्य की दर्शित न हुईं। धारत का सीभाग्य कही, हिन्दू आणि का सीभाग्य कहो वा झायेसमान्य का सीभाग्य आणि द्यानन्य ने केवल अपनी समापि पर ही झान की पूर्णवा नहीं सानी। तोजी आरी रखी। आपु में १६५० विकसी सरमय को ३६-२० वपं की आपु के दहावचारी रिवस्त, महिन्द, तह ब्रह्मचारी ने सुक दिशानन्य को हार समुदा में बालस्य सरस्यात्या। सुद ने नृष्या-कोन हो १ क्या चाहते हो १ तसर रिवहा, युधानन्य हारसभूवारी स्वाप्नारी हुँ, स्मान्यण्य आपि शावी का क्ष्म्पवन करना चाहता हूँ। कार्यरा हुआ, पहली पड़ी हुई पद्धित की मुखा रो, तक नये प्रकाश का क्ष्प प्राप्त कर सकोगे।

सुरु विराजनम के पान मधापारी प्यानम् ने पान वर्ष विधायनम किया। यहाँ प्रानम् स पूसरा कारस्य पान पुत्रमा । ह्या प्रापम्स का कारक स्वार कारस्य पान पुत्रमा । ह्या जारमस्य ने दिन्दु जाति के साम्य की दिशा के बहुव दिशा। ठीक ऐसे ही जैसे महाराजा रायवीत थिंदु के समस्य का विज्ञा बीदने पर इतिहास ने एक नवा मोड़ विध्या। सदियों से आक्रमण करने वाले हार कर सामने वाले वन गर पार और हार कर सामने वाले का स्व

गुरु विरज्ञानन्द श हिन्तु जाति पर आपार श्रवा है क्योंकि उसने इस जाति को बह चडारक किया, अपूर्व योजा किया जो स्वा के लिए इस्तास और हैसायत का गुहू मोद गया। वेदिक वर्ष का असकी रूप श्रव कर गया।

यहात्मा बुढ, सन कवीर, गुरू तातक है ब, आदि से भी यह दिवीय वागरवा और स्वीय दुक्षा या। पर कवके इस अवीय का रूप यह या। कि पुरानी ररण्याचे अष्ट हैं, डीक नहीं हैं, एक नव पान को आवश्यका है। इसीलिए बुढ-धर्म, सन्त कवीर का मत तथा गुरू नानक हैव का मत व्यवा। वे श्रूप मन मृत वैदिक धर्म के दिरोधी बचे वसार वो खुद सार हम तथा है। हम तथा हम हम तथा हम हम

### शिव संकल्प का चमत्कार

(लेखक भी ओमप्रकाश जी नारंग एम. एं. डी. ए. बी. कालेज जालन्यर)

शिव मन्दिर में पढ़ी हुई एकः हो मूर्चि पर बुई का पनीना जाकमया देखकर बातक मूकर्राकर के मन में मार्गका स्टब्स्ट हुई। क्या ये हो बहु शिव हैं जो सारे संसार का क्याया करता है। इस को तो यक होटा-सा जूहा पांच नते रीह रहा है। बहु मता मेरे जैसे मतुष्यों हाला कैसे करेगा। यह प्रम्म वालत के मन में बार र माता।

घरन्तु इसका बबोचिव क्वार वसे न सुमता। मन्त में शासक भी नमेंस जुद्धि ने निर्लोध दिवा भोरे क्षमक भन्नद भारता। कुशर द्वार 'बुल भी ही हर-मित्र-स्रिमिन' सच्चा शिल नहीं। में उस सच्चे निष्क भी लोज जसर करोग जो विश्वर का जनवाण बरका है। शिल भी ज्यासना से मनुष्य बनम-मराव के बन्यन से सूट कर मीज के भ्यानन को पावा

स्वीकार किया। श्रायंसमाज में भी गुरू नानक देव स के विचारासुसार कदि का संहत, जास-पाठ न मानने का विचार, प्रेडवर याद स्वादि सब विशेष-

वार्ष हैं। इक्षी प्रधार सन्द क्कीर की विचार वारा का झान मार्ग, वित्नंबत क्ष्मा क्रंब-तीच का त्याग की भावना भी व्यक्ति ब्याननर के प्रन्यों में हैं। फिर भी व्यक्ति ब्यानन ने बेद-शास्त्र परस्परा से क्षत्वम एक तथा पत्थ मत नहीं बनावा। इसका एक मात्र कारण गुरू विरक्षानन्द की नेरखा पर क्षाधिक बह

हस द्वितीय बागरया का रूप यह बा कि बेर् क्रीर प्राचीन शास्त्रों के सानव जीवन को सार्थक करने वाहे, धर्म, पार्थ, काम और मोच के साथक सब साथन और तथ सिस जाते हैं। स्वहेंबों से चली काने वाली परस्पराक्षों ने उन के रूप को

इस्तिन कर दिया है, उन का भ्रष्ट रूप लोगों के

द्वितीय जागरमा था ।

सामने रख दिया है।

ब्रावह्यकता तथा यत चलाने की, ब्रदला नाय बयाने की, एक नए ईस्वर के स्थापन करने भी नहीं। ब्रावह्यता है उस धाचीन वैदिक परमरा को परिकृत करने की, मित्राता साथ करने की, ब्रपने को मुजाने की, माचीन व्यव्यों के सहस्य की फिर स्वापित करने की।

ऋषि द्यानन्त्र ने बही सार्गे श्रह्म किया | आर्ये समाद्र सुत्त वैदिक शाला से अत्तर न हुआ, राम कृष्य से अत्तर न हुआ | अपितृ हिन्दू जाति का सच्चे क्षाचों में कहारक और रक्षक दम नथा।

इस जर क्या न ज्यार कार एक न मान्य इस जर की थ-दिवस मान्य वार्तों के बह स्वरस्य इस जा चाहिए कि ज्यांचे दशनन के बोध में ही हो रूप हैं। होनों को मिसस कर ही वह बोध-ह्यान-वारस्य पूरा होना है जोर इस में पूर्व विस्तानन्यन विशेष स्थान हैं। है। " मूह रिश्व संकल्प एक हड़मित बासक ने शिव-रात्रि को ब्राधी रात गए शिव मन्दिर में किया। इस महान मत ने एक व्यक्तीभ बासक को समक-गुरू ब्यानम्ब में परिच्छा कर दिया। शिव रात्रि के वण्यक्तम में मरिच्च वर्राम्ब सरसारी के परिच्य पर्यारों में महर्वानीक प्रस्ति तते हुए को इस विमासिक्तिव वार्ती पर विचार करें।

१. ऋषि इयानन्द क्या था ?

१. ऋषि दवानन्य ने क्या किया ?

२. ऋषि द्यानन्द के किए का ठोस परियास क्या हुआ। ?

पहले प्रश्न के उत्तर में हमें वह कहना है वि सहर्षि द्यानन्द पूर्ण सनुष्य थे। युंतो प्रभ की विशास सृष्टि में व्यसंस्य पुरुष और स्त्रियां वसते हैं परन्य मानवताके गया किसी में ही दिखाई देते हैं। और फिर पूर्ण ममुख्य तो चिराय से कर ह'देने से भी नहीं मिलता। आये. पौने. सवाद चथोड़े हुगने और चीगने भी शायब मिलते हों पर पर्शमहीं मिलता। जिस व्यक्ति में शरीर. मन, मस्तिष्क तथा चरित्र की शक्तियां पर्ण रूप से विकसित हों उसे ही पूर्ण सनुष्य कहा जा सकता है। इस कसौटी पर संसार के कानगिणत व्यक्तियों में शायद ही कोई परा उतरे। क्योंकि जिन का शरीर बलवान हो उन का मन बहुआ दुर्बल होता है, धौर वदि सहद हो उन में बुद्धि की हीनवा पाई जाती है। ऐसे भी लोग मिलते हैं जिन के शरीर मजबूत सन बलवान और बृद्धि प्रसर होते इए भी क्ष्म में चरित्र दीव पावा आए । संसेप-सवा वह कि इन चारों शक्तियों का संततित विकास

किसी यह व्यक्ति में होनां सचगुच ही दुलर्भ बात है। किसी महान विचारक का कहना है।

"Normaley li a Bietion in life" श्चर्यात जीवन में सतुलन कल्पनामात्र है। जन साधारण की तो खैर जाने वीजिए बड़े २ महा-पुरुषों में भी ऐसी ही रुटियां दिखाई देती हैं ख्दा-हरता के क्रय में आप गांधी जी ही की लें। गांधी जी का सन बलवान बृद्धि प्रकार और चरित्र निर्मेक होते हुए भी शरीर दुवेल था और स्वर्ष गान्धी जी को बाजनम अपनी शारीरिक दुर्बेक्स का खेद रहा । इस के विपरीय महर्थि दयानस्य सरस्वती में शरीर, यन, मस्तिषक, और चरित्र का संत्रसित विकास अपनी धर्म सीमा की पहुँचा हुन्ना था। शरीर इतना सुडीस कि इस घोड़े की बन्धी को रोक सके। सन उतना वस्तवान कि वडे से बड़े भय क्राप को भयपीत स कर सके। मस्तिष्क इतना उन्नत कि काप ने संसार भर के विडानों की शास्त्रार्थ के लिए ललकारा खीर वह क्षेत्रका फिलास्पर क्षीर ऊ'ना पंडित क्याप की वृक्तियों के आगे ठहर म सका । चरित्र इतना ग्रहान कि वहें से बड़ा विरोधी भी काप पर चंशली न इस सका। यह सब इस्ट होते हुए भी ऋषि ने स्पष्ट शब्दों में वह घोषया की कि झाप को दसी वैगम्बर अथवा अवसार न माना जाय । अवसारी जीवों के सम्बंध में एक बहुत बड़ा दोष उत्पन्त होता है और वह वह कि इस उन की अच्छाहयों को अनुक्यीय नहीं मानते । इस उन के गुणानु-बाद को गाते हैं परन्तु उन के सदग्यों को अपने जीवन में भारण करने दोग्य न जानकर इन की वृजा और प्रशसा में ही अपने आप को अन्य सात तेते हैं। भला यह जलाई भी किस काम की बो हमारे कान्दर आला पताने की सदारे पार्थ पार्थ कर सके मानव की इन कमारोरमें को जानने हु माने ने बंके की जीने दे से हमारोपणा की कि जै दुवरों वेसा ही एक मतुच्य हुं भीर मेरी एक २ कप्पाई एवं कप्पाई आहमियों को अपनानी चाहिए। होंगों से भी साम्यान किया। आप ने तो बहुं तक लिला दिवा कि में कोई नया मन चलाने नहीं आप। आप से लेकर जीमनी पर्येण मुख्य मुन्न महाला जिस स्थार कानान वैदिक कमें को मानते चले आप हैं जी का पुनरूचान नेरा मन्त्रक है। हात से वा विकाय नरूचना नेरा मन्त्रक से महा सिक्ती।

यू तो ऋषि ने परोपकार, समाज सुवार तथा देश सेवा के घनेकों कार्व क्विय रस्तु हमारे विचार में ऋषि का सब से वड़ा कारनाया यह है कि आप ने वर्ष को स्टेडवाड़ को उत्तरत से निकास कर तर्द और ग्वास के आसन पर विदाना।

Dayanand is the Bounder of rationalism in religion. खबांत ऋषि दवानन्द धमें में बुध्दे बाद का जन्मदाता है।

प्रति दवानन्त्र से पूर्व भमें को तुद्धि सुन्व माना बाता था। इस्ताम और इसह्वत की तासीम और पुरायों की गायार्थ इसके मायक ममाया हैं। एवं ? विद्वानों का यह मात या कि नयहब में असके को दस्ता में। है। परन्तु प्रति के स्वत्व में को हे हि दिचार को कहाड़ काचर की वहा मिटा विवा। बाया दी प्रचित्त यस करान्त्रों ने में खबि को पोर विरोध किवा। परन्तु भाव मह श्रवस्था है कि ऋषि के कथन के साथे सोरा सेंसार तर सुकाता है। अर्स प्रत्यों की संदी सहवि का सरवार्थ अकार।

एक अनोली एरवक थी वह शाबद पहला धर्मे प्रत्य था थिस में यूक्तिकों द्वारा अन्य मधों का लडन किया गया हो। ऋषि ने दक्षीओं से सम-साया कि धार्मिक सिद्धान्त बहि तके शुद्ध न हों वे माननीय नहीं होते िहस अनोखी घोषणा से अर्मिक जगत में खलवली सच गई। इस के प्रकारा में अन्य मताबसन्दियों ने अपनी पस्तकों के कर्ष ही बदल ठाले। जुनाचे कुरान करीम की एक आयत का तर्जया यह या 'जिन स्रोगों ने खदा के साथ सक्धारी की खदा ने दनके साथ मनकारी की परन्तु मीलाना अवल कलान ब्राजाद ने 💵 का संशोधन इस प्रकार किया। 'अन कीमों ने सुश के साय कारसावी की खुदा ने उनके साथ कार-≨साक्षी की' गोबा ऋषि के लंडन रूपी सुररांन चक से अवसीत होकर खरा की मक्कारी कारधाजी में बद्ध गई । इसी प्रकार पादरी C.F Ancircues ने ईसा के मौजवों की नई तफसीकों की। ईसा के बारे में प्रसिद्ध वा कि वह कोदियों पर र्राष्ट्र सासता उन का कोइ दूर हो जाता था । परन्त C.-F. Audrenes ने इस का क्या वृं किया 'लोग अपने सनों में पापों का क्रम्ट तिप ईसा के समग्र क्षाते, ईसा उन पर प्रेस मरी दृष्टि डालता विस से वन के मन की कुटिसवा बस बाती ।' गोवा शरीर का कुप्त मन की कुटिलता होकर रहगबा।

इसी प्रकार पुरार्कों के लेतीस करोड़ देवता जिन्हें

### **ŧ¥¥¥¥₩₩₩₩₩₩₩**₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩₩ वैदिक धर्म और संस्कृति का रचक—केवल आर्यसमाज

सिखक-श्री पं० भक्तराम जी (ग्रक्षीका वाले) जालन्धर **, Rankankankan**kankankankankanka

महाविद्यासय व्यासापुर के ३६वें महा-महोत्सव स्टेश्य क्रन्तर्राष्ट्रीय है और वह उस उह<sup>े</sup>श्य— ४-६-७-द अप्रैल सन् १६४७ पर देश प्रसिद्ध वक्ता सार्वभौम देदिक धर्म प्रचार के लिए अपने स्थापना-कु'बर मुखलावसिंद् जी 'ब्रार्थ मुसाफिर' ने रुग्ल दिवस से बरनशीख है। दिसम्बर, १६७६ से रहते हुए भी चौथे दिन की समाप्ति के समय करारा भाषता दिया और कहा या कि आये समाज के द्धतिकिक बैकिक धर्म तथा संस्कृति की रचाकोई भी नहीं कर सकता। कुंबर साहिद जी का कथन निवांत सत्य है। उन भोले नाथों को क्या कहा आराय जो अपन तक भी यह कहने से नहीं दकते कि देश स्वतन्त्र होते के पश्चात आये समाज की आवश्यकता नहीं रही। जब आर्थ समाज का बद पोष 'कृरवन्तो विश्वमार्थप' है तब इस की

श्रीभइयानस्य दीचा शतान्दी के अवसर पर भाषस देते हुए इमारे भूतपूर्व राष्ट्रपनि स्वर्गीय डाक्टर र।जेन्द्र प्रसाद ने कहा था कि सहात्सा गांधी ने बो स्चनात्मक कार्य देश के सम्मूल रखा है वह सारे का सारा ४० वर्ष पर्वे सहर्षि वयातन्द बता गये थे। सरदार बल्कम भाई पटेल ने एक बार इडा था—'स्वरन्त्रका प्राप्ति के पद्दशतः आर्थसमाज की भौर भी खाबस्यकता है। इमारा देश १४ अगस्त सन् १६४७ को स्वतन्त्र हका स्पीर २६ जनवरी सन १६४० को गणसन्त्र

जीवित सचलवां मानं कर पूजा जाल था अलंकार 📶 इर रह गए। ऐसा था श्रुपि के संडन का जाद बो इर किसी के सर चढ़ कर बोल । ठीक दृब्दि से देखा बाद तो ऋषि दयानन्द का खंडन धर्म पर ब्याचात नहीं या यह तो एक सफल ब्याप्रेशन भार्जिस के द्वारा अवि ने धर्म के बढ़े और जीसी शरीर से समें, कुरीविधी तथा रुद्विवाद की बुराइयों की गन्दी वाक निकास कर इस में तर्क, न्याय और ईसार विश्वास के श्रद्ध रक्त का सवार किया।

श्चाबद्दवद्वा एस समय तक रहेगी जिस समय तक

एक भी अपनार्थ संसार में है। आर्थ समाज क

बदि यह कहा जाए विज्ञान के युग में ऋषि ते धर्म को सोलड काने विज्ञान के अनुकृत बना दिया तो शायद 🕪 में कोई छविशयोक्ति नहीं।

(रीपव्लिक) घोषित किया गया।

पर बहु सब कुछ था उस शिव संकत्य का प्रताप को शिवरात्री को वालक मूलशकर के मन में उत्पन्न हुआ। आओ इम भी शिवरात्री की एक शिव संकल्प इसें झीर उसे जीवन में चरितांथ काते के लिए भरसक प्रवस्त करें। इस दशनन्द न भी वन पार्य तो भी प्रयत्न अवस्य करें।

प्रांत हुए साई सीसह वर्ष हो गए परन्तु प्रसंख न बाते कब बनेगा ? झुता करते ये कि स्वरूप्त होते, पर भारत में राम राज्य की स्थापना हो जायगी मह तो स्थन सिद्ध हका। जो इस्क है देश वासियों

के सामने हैं। होगों की वारवा अब वह हो गई े-When character is lost nothing is lost, when health is lost some thing is lost but when wealth is

lost every thing is lost" अर्थात् वन कोई परित्र होन हो तो कुछ नहीं निगड़ता, स्थास्थ्य निगड़ा तो कुछ लोवा पर जब किसी का यन चला गया तो मानो उसका सब कुछ नष्ट-अष्ट हो गया

मारतीय संस्कृति विदा होती दोख रही हैं। सरकार भारतीयों को बरूचरक प्रोमामों क्रांग संस्कृत करना बाहुती हैं। आकाशवायी पर कारतीख गानों द्वारा संबन्धकों तथा नव-न्यवियों के चरित्र का निर्माय

करने की इच्छा रखती है। अब वित्र विकाकर अनता से सच्चरित्र बनने की कासा रखती है। संवक्तियां जबकों का वेष धारण कर रही हैं कीर अबकों की सहक्तियां बनने की कोर त्रवृत्ति वह रही

है। आवा मिली-चुली हो गयी क्योंत् सब भावाओं की लिजड़ी अमेत्र चला गया परन्तु जीये विवद धर कर गयी। बच्चियों की देवी के स्थान पर वेशी कहा जाने लगा है। 'माला जी !'—'पिता थी!'

शंक्ष विश्वर गोल कर रहे हैं ! कीन किसे कहे ? बिद कोई समफाने का यहन भी करे तो समफने बाता कीन है ? गरमारमा ही सुमति प्रदान करेंगे।

बाला कौन है ? सरमारमा ही सुमति प्रदान करेंगे। इसरों को बुरा कहने वाले स्वयं बुरे हैं। एक भाई इसरे को बोर बहुता सुनायी देवा है पर यह स्वयं डवल चोर है। सर्वेत चार सी बीस हो रही है। अद्याचार का इकता होर-दोश है कि किसी वर

अद्याचार का इसता होर-होता है कि किसी पर विश्वास करने को सन नहीं करता। बनस्पति भी को रोते थे परन्तु अप कोई बस्तु

विना स्विवास्ट नहीं। वहां तक कि बोलने पास्त्रेने में सिलास्ट हैं। मेरी पत्त से होती पुत्री रेडियों पर घोषणा करते हुए एक देने को सुनदर बढ़ती कि पेडियों हों। पिता हों, बनाव्दी सुंद हमाकर वी कि पेडियों हों। पास्त्र जाते ने साम्य सिलाई हों गये। ध्रम बालवा गुल-बालवा शिष्प, कालवा कांस्रेन्ट कालवा रोगी, बालवा वार्कील-बालवा सिलाई होंगये। ध्रम बालवा गुल-बालवा वी तो, बालवा स्थमान बालवा प्राप्त हमान स्थमान बालवा की तो, बालवा स्थमान की रेडियों की स्थमान की है।

के पहिचे समने पर ही जाहत गाँउ करती है। गाकर मुझी की भागित मतुष्य कार्ट जा रहे हैं। देवियों का मान सुर्राष्ट्र सही। निर्माणनों के समय यन दक्त सकत साग दिस्ताते हैं पर निर्माणनों के गरवाज़ जनना सदस्तों के हर्रात करते से भी विषव रहती है। यन गिजार्थ ज्यारते नाहे जमीदवारों की हरा। पर दस्ता को भी दना साती है। 'राम नाम' के स्थान 'चन नाम' दोनों हाथों से सहा

be merry' क्यांत 'खाओ, पिरो फीर सीत स्वाको' इसारे बीवन का उत्तव वन नवा है। क्रांसितेकाओं कीर क्रांसितेकां को उपाधियों कीर पारितोपिकों का प्रशासन है कर बासकों कीर बाह्मिकाओं के परित्र सार को गिराने के क्रिय करों

का रहा है। रावों रात यक रहा राव और धनपवि

क्रवेर वनशीन वन रहा है। 'Eat, drink and

में रेखा दी जा रही है। राज्याधिकारियों के काशाधिक होने का वही परिवास हमा करता है। वहां मल में ही भन्न है। बराज सब कि शस्ताबार, बाताबार, रुवेदहार, व्यक्षिबार और भ्रष्टाबार का ही हाकर सनायी देता है तो झार्च समाज के प्रवेतक महर्षि रयानन्त वाद आते हैं जिन्होंने कार्य सकात के **छटै** नियम में सामाजिक उन्नति से पूर्व आहिय-कोत्नति को स्थान विवा और सारवें निवस में प्रत्येश की कापनी ही सन्तति में सन्तर न रह कर सब की उत्तति में अपनी अनति समस्ते का प्रावेश दिया । विव देश ने इस वोसों नियमों पर ही बावरण किया होता तो न विभाजन के समय बसकाञ्चलक रहव हेखने झीर शोक प्रव घटनाएँ सनने का अवसर उपस्थि होता और न ही वर्चमान शोचनीय श्रवस्था पर श्रश्नपात वरने पडते । महर्षि ने तो रोग का निटान और चिकिस्सा दोनों त्रीक ≡माने हे का सातान नोतों ने होने स्वाही का ६इदा न माना फोर अञ्चामात्मवाद की भूस ६१ भौतिक बाद का बाजिय लेकर दुःली हो रहे हैं। भोगवार के रोगियों का चिक्सिक चार्य समाज **耐量**1

हेट का धर्म किसी जाति विशेष श्रवता व्यक्ति विशेष की निज सम्पत्ति नहीं और आवे संस्कृति का कोई एक स्वामी नहीं। उस धर्म तथा संस्कृति का ही प्रचार आर्थ समाज करता है अतः वही वैदिक धर्म और संस्कृति का रक्षक है।

अधिकोध दिवस ही महर्षि द्वानन्द का अन्मदिन है। में भित्रदा कर पृथ्य के सागी बतें। को जागत है सो पादत है, को सोवत है सो कोवत है। जाराना कोचन कीर सोना मृत्य है।

व्यार्यसमाजों से निवेदन

सभी आर्थ बन्धवों से विजय निवेदन है कि पंपतवरी १६६५ से ११ फरकरी १६६५ तक स्रवि बोधोस्सव ध्रमधाम से सनाने की छए। करें।

💵 महान् पर्व को सनाते हुए सभी ऋार्य वह-वारी अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य के डिसाब से चार धाना फेंड वेट प्रवार के लिए धारहर इस्टा करने की कपा करें।

ब्दौर एकत्रित धन समा में भेजने की कथा करें। प्रायः आर्थसमाजें इस दिशा में कछ उदासीनता का व्यवहार करती हैं। करवा इस प्रसस्त स्थौहारों को प्रधानता से भारता चाहिये। और सभाका फरह भी अवश्य इकट्टा करना चाहिये । यही विनम्र प्रार्थना है।

> दिनीत-सुशीराम शर्मा वेत प्रचार व्यथिष्ठाता

### शिवरात्रि का श्रम पर्व

सबी धार्यसमाओं और बार्व भाइवों, बहिनों को वेद प्रचार के प्रनीत कार्य को सुदद करने केलिए इक्टन करना चाहिए धीर परिवार के प्रत्येक सदस्य के हिसाब से कम से कम चार व्याना संग्रह कर श्चार्य प्रदेशिक सभा जातन्त्रर के वेर प्रचार द्वीप

—ख्शीरान शर्मा वेद प्रचार अधिष्ठाता

\*\*\*\*\*

### महात्मा हंसराज जी की जयन्ती

सम्बन्धी--रोग शैया से महातमा आनन्द स्वामी जी महाराज की श्रूपील

'मेरे बहुत व्यारे करा भी, धार्मीकृत रही! धपने तर हिरी की लगी है मेमारी के बहनातृ वह एक तेल तिला है। भीमारी कवा थी, भीवन भीर मुख्य में पुत्र में हस्तात हिरूदानार में सारे डाक्टर निरोधा दिलाई देने लगे। आपका कर्मठ मैना बुदबीर भी प्रस्तु मेन हरे बहु क्या घटना घटने लगी। परन्तु, मैने. कहा देखों, हैं तो वह धरमी वर्ष भी पुरानी हिड्ना, लेकिन धर्म प्रभीच भी हिड्ना सिद्ध होंगी। प्रवराणी सत्त । और में कपमुत्र चय निकला। मात्रव यही लेख तिलाने के लिल। धपने हानों हो से हसे किसा है! हिस्टीमिजाय, वहुं मिलार, धार्य जनत और सार्य मारने में अपना सीचिय!

—श्वानम् स्वामी सरस्वती ! महारमा ह सराज वी शासुनिक युग के वन सेवडों में रिरोमिंग में जिन्होंने भारत का डीक प्य-प्रदर्शन किया है ! सारा जीवन त्याग और तन की करोर मही में गुजर देना युवा कावशा की उमंगी का जिल-जिला कर देना, कानी जिए पर मोंगड़ी भी न बनवाना कर देना, को शानदार महल सड़े करने के बोग्य बना देना, भारत के दिसी भी कावज़, भुवाल, वरवून वया माहसारी से पीड़िय हो जानं तो महरामा जी का

हरव पिषक जाना ध्यीर जब तक पीड़ितों, दुलियों को सहायता न मिल जाए। तब तक चैन ज होना. आर्वे जाति के युवकों और व्यक्तियों को अन्य ससी है पजेसे बचाहर एन्हें सुरक्षित बनाने के लिए दवा-नन्द रहतों, कालेजों कौर महिला विद्यालयों का एक जाल विद्धा देना महात्मा इंसराज ही का कार्य या। केवल इन महत्वपूर्ण कार्यों की क्रोर ही सहात्मा इंसराज जी का घ्यान नहीं गया. अपित इस युग के लोगों को वेद-असत पिलाने के लिए सी उन्होंने भरसक प्रवरन किया। क्रियने ही विद्वार्श को उन्होंने आकर्षित किया । सहामहो-पाध्याय पंत व्यार्थमृति जी, भी पं॰ राजाराम जी, श्री पं॰ भक्त राम जी, श्री महता रामचन्द्र जी शास्त्री, भी पं० जगतसिंह जी, श्री पं० सगवदत्त जी, श्री पं० शस गोपाल जी, भी पं० विश्ववस्थु जी तथा धस्य कितने ही सहानुभावों को सहारमा जी ने वैविक विचारों के प्रचार के सिप करमादित किया। यही नहीं, कितने ही योग्य युवकों को, जो बड़े से बड़ा सरकारी पद प्राप्त कर सकते थे, उन्हें देवल पचइत्तर रुपये मासिक लेकर विद्या-प्रचार में लगा दिया। श्री लाला साई वास और श्री पं मेहरचन्द जी, श्री ला॰ दीवानचन्द की, बी वस्त्री रासरत्न की. भी सा० सेहरचन्द की. भी ८५ वीबान-

चन्द् की, भी पंत्र गोवधेनस्ताल च्या तो, भी भीरास जी, भी ब्हालुरस्त्रल की. भी कात सुर्वेवात जी, भी सहात्वा देवीचन्द्र की, भी कामरताथ जी काती, भी तात हात्वचन्द्र जी तथा कितने ही चीर शुक्तों ने न्वहात्वा हंतराव जी के जदिवाही पर चंत्रकर देवानेंद्र काते में के लाहफ सम्बद बनकर त्याग-सावना का परिचय दिवा।

हुनी बनता, नाहे वह महनात की वी वा जन्मू की सालावर की थी वा विहार की, जीवा की वी वा राहिक की वी वा राहिक वा दिसार किल की कोहट. की वी वा वांच्य परेहार की, कांग्ला की मुक्य पीहिक वी वा चार कर होता की मानती की सालावर के सालावर के सालावर के सालावर की सालावर की

पं पर क्षिएसम से तथा द्वानम् काहेत हाहे। हे भोरीक्सों तथा कुँचाधियों के तैयार कर दिवा कीर क्योंने दुर्गम स्थानों पर पहुंच कर हुआ जनता की सेवा विना किसी स्वार्थ के की । न कौंसिक वा कारीन्वकी की सैम्बरी या सिनिस्ट्री चाही, न कोई ला है ! बहु कीनची भारत-दिव की बात थी जिस की क्षीर महास्था जी ने ज्यान नहीं दिया । सर्ती बुई हिन्दु जाति में प्रायु-चंचार करने के लिए जनम् रिशासन की सस्यु- जाति है, उच्छा नहां स्थान नम्बद्धी तथा सिम्ब के माई-चंहे, मालावार के नम्बद्धी तथा सार्वाची व पुत्र- बहीनबीत पहना कर हिन्दुओं को प्रवत अंग बना दिया। निदान, सहात्मा जी का एक-एक खुरा परहित, परोपकार भीर सहावता ही में व्यतीत होता था और इतना सेंबा-कार्य करते हुए मन में नेता घतने का विचार केंगी नहीं आया। एक बार भारील-सा के पश्चात लाहीर के सामग्रीय कार्यकर्ता, सात-बाठ सहान-आवों के साथ ला॰ हरिचन्द जी महात्मा हैसराज बी के पास पह ने कौर प्रार्थना की कि इस समय ब्राप नेता बनना स्वीकार करें. सारा पंजाब आपको अपना राजनैतिक नेता बनाना चाहता है। मैं उस समय बढ़ी बैठा था। महातमा जी ने धन्यबाह करने के पश्चात कहा-'मैं चौबारे की है'ट नहीं बनना चाइता, मुक्ते भारत-भवन की बुनियाद ही की ईंट बने रहते दो। चौत्रारे की ईंट बनने वाले आपको बहुतेरे सिल जाएँगे ! बुनियाय में पहे रहने ब्रौर वहीं मल जाने वाले कोई-कोई मिलेंगे।" श्रोह । दितना त्याग है, दितनी नम्रता है श्रीर कितनी है निर्मिमानता !

एसे एक गारल सेवक की जबन्ती का रही है। सहामा हंदराज जी को जन्म निव पक शावली में रही है। किवनी वह सुम पड़ी थी, किवनी वह स्विच वित्र वा जब बवबाज़ के होटे से माम में सहस्मा हंसराज ने जम्म किया। ऐसे महास्मा की जबनती पूरी कहा, भविन, उत्साह तथा उरवास से मनावी चाहिए। महास्मा हंसराज ने सारी कायु जबना जनार्यन की सेवा की। ध्या बनावा कर कर्मका है कि वह महास्माजी की जबननो ऐसी सान के मनाविक्ष से वह पहर हो सके पारत के कोग हुंक्च नहीं, क्रियंड पूरे महान्त्र हो की रोद ने वार लाग का जीवन व्यतीत कार्य वांतों की स्मृति बनाने के लिए तप न सही, त्याव तो कर खकते हैं। काहे का त्याग ? समय का त्याग, वन का स्थाग, आत्मव-प्रभाव का त्याग, कीय कीर मोह का स्थाग, अप्रभावर कीर कनावार का त्याग, नैमनस्य कीर वहेल्पी का स्थाग, कीर सबसे वह-कर दानन्यता का त्याग, कीर सह दानन्यत क्याकी की सन्तान हैं कीर स्थान्ति यह हान्यत क्याकी की सन्तान हैं कीर स्थान्ति यह है कि बह् कपने लिय जीना है। परन्तु मानवता नी परस्पर सहावतं में निहित है। में विजीसरण भी गुण ने जीव कहा है कि बही स्मृत्ति है कि साथ-आग ही परे, बही सहस्य हैं कि सो मनुष्य के लिय सरे।

कौर पशुना विचारधारा, जिसने आज सब को आपान्धारी के कारिनकुंड में घडेल दिशा है। वेद-विचार के प्रवत पचार से ही दन सकती है। बार्चिन विद्यों नह कहती है कि मनुष्य पर्युक्तों का मुझ है। कार्यान कार्यन हमी विचार से हुम्या है। सम्बद्दे बुन्नविस्ति के ग्रोन भी यतन चोरो ने ब्राप्ती बुलक 'संस्कृति कीर समान' में ठीक किला है कि:—

'बार्विन का सिद्धांत वस्तुतः नैतिक पत्तन द्वाने में सहायक होता है।'

कीर सूरोप के समस्तार विकास भी कहते हैं कि 'यूरोप बाते हव दुनिया पर सर्व बही बना तकते क्योंकि हवारे कायर अग्-वृत्ति (animal instinct) बनी प्रकल है ('(The Travel Diary of a Philosopher) स्त्रीर इसके विषरीत वेद कहता है :--

सम्पूर्व मानव समाज अमुत रमु हा पुत्र है। अधु-पुत्र तो पशु ही बनेंगे और अमृत रमु हे पुत्र परमामा है गुरा अपने अंदर काने का बस्त करेंगे। इंग्सान-महाच्या किसे कहते हैं, एक वहूं किये ने सुव आता है:—

> द्दें-दिल पासे क्या, अजवाद-ईमां होना । आदिमयत है यही और यही दै इन्सां होना ।।

भीर वही विचारचार नेह नेता है बही नैहिब विचारचारा महात्मा हंसराज जो की जीवन-नेवा को कार्यो दी भागो है जाती रही। महात्मा हूंव राज जी की पुरव-स्कृति नेह-जवार ही से स्वाध्य हो सकती है। इस 'ईसराज नेह-जवार-निर्ध' के किए चन ने सकती वाजन-वांता ने वर्ष या सकात, वही चहारता से हे बालिए।

### त्रार्य जगत के लेखकों व कवियों से नम्र निवेदन

िन महानुनारों ने होल व कांचना नेजकर आर्यकाल के अपना भोड़ नकर किया है इस उनके अने आमारी हैं। तेकिन कुछ मेटर असमय पर महुंचने और स्थानामाय से अपनाशित रहा है। अब्द इस नक्षमों से क्या चाहते हैं। तेक कुंबर करिता आपना को में समय समय पर अव्यक्तित होती होंगी।

-व्यवस्थापक

### जागा पाछे जागना जागा कहिए सोय

(लेखक श्री पं० दयाराम जी शास्त्री एम. ए. मन्त्री आर्यसमाज अनारकली नई देहली) काल रात्रि थी घनघोर घटावे कार्व थीं बाव

इंपरान्त सहरी नींद शो गई। मा गाढ-निट्टा में क्छ साथीं इंग्निपायी अपना होंग आस विद्या MU । करवर्टे होने वाले लोग उस में बरी तरह फंसे ! हरोडों की संस्था को व्यवस्था दी गई-'स्त्री गरी नाधीयतास'--स्त्री और शढ़ पवित्र देव ज्ञान की स सीखें। आधी संस्थह मात शक्ति अशिवित रह कर सन्तान को सुसंस्कृत कैसे करवी ? बरोड़ों शह भी झाँशचित रह कर पश के समान भोगमब जीवन यापन करने जरे। 'आइ वर्ष भवेद गौरी' की व्यवस्था देकर कन्याओं की स्वारह वर्षे से पूर्व ही विवाह प्रया चला कर विनाश की दिशा में रही सही कसर भी पूरी कर दी। वास विवाह, वकु बिबाह, बुद्ध-विवाह और वेमेल विवाहों ने जाति के श्रंकरों को प्राहम्भ में ही मसल कर पनपने की मारा से वंचित कर दिया । इस प्रजानास्थकार में खुआ खुत के मृत ने प्रेम के देवता का बुरी सरह गलाघोटा । माई भाईसेविलुड़ा-। परिवार केहर व्यक्ति का चुल्हा असग हो गया । यह धांधसी, अनाचार मौर श्रीना-फपटी चिरकाल एक चल्लती रही। 'वार्कक' जैसे पृक्षित मत वर्म बन गए। बावश्जीवेस्तुसं जीवेत्, ऋहंकृत्वाधतं विवेत्।

भस्मी भूतस्य देहस्य पुनरागमन

जब तक जीयो, सुल से जीको । धन नहीं, को हाथ नहीं समक्षा या । जाति चिर-जागरण के ऋषा को । बुकाया नहीं ना सक्षा, तो अगुडा दिखाओ किन्त, विकासिता के साध्य बटाओं। शक्ष वर्ने तो फिर वहां से आकोंगे ! Eat, drink & be merry'-साझो पीओ श्रीर मौत खाधो की इस बाइक बहिरा ने रहा सहा विवेक भी मिटी में मिला दिया। इन्हें असी- ज्ञानी किन्तु स्वार्थी। अन्दोंने जलते दीपक को प्रेम के काली पर्दे से उक दिवा। पवित्र वेद ६। दीपक प्रकाश के स्थान पर विचित्र भ्रासक सम्बद्धार फैलाने स्तार । तरतेश के हारा निरंपराध तर पवित्र यहा की क्यिन में होसे गय. कड़बसेय और गोसंघ द्वारा घोडे और गीर्य बहुकुरह में बाहति-रूप में बढ़ाए गए।

> विदेशी जागरूक लुटेरों ने महान देश की काल-रात्रि के अन्यकार और अस्तन्यस्तता का लाभ उठावा । मुसलमान और ईसाइवों ने लताडे और दल्कारे हजारों [भाइयों को अपने में मिला लिया । वेड-डीपक का प्रकाश उन्हें भ्रस्तरा । श्रवि कभी जाति की निद्रा खुली सो यह दीपक दथाय पदार्थ-ज्ञान कराने में सहायक होगा। एन्होंने 🖽 पर बेसा पूर्व दाला 🕅 'खिनकी' का 'लानिकी' ही बन गया। देवों के साध्यकार बन ऐसे बाध्य किए कि अर्थ के भ्रानर्थ होताए। गृहरियों के गीत बता कर इन पर की गई अदा ही उहा ही । शैव वैध्यानों के अगड़े वते । मतमतान्तरीं का बोसाहस बहा।

पक सन्दर में विचित्र टंकार हुई। एक स्वक्ति की नींद खड़ी। चुहे ने उसे टंकारा। वह बागा। वंड भागा । वह छटपटाया, किन्तु सोतों को जगाने वालान मिला। पद्र नेप्रहीन व्यक्ति मिला। विस की अविश्वि क्योंति जाग रही वी। उसने -इस भटके व्यक्ति का हाय पक्का। ज्ञानांत्रन की सीक से अज्ञात तिसर नारा किया। शिध्य कह उठा-गरवर । वका भेंट द' ? 'बही कि सोवों को जगान्त्रो- 'जागे पाछे जागना जागा कहिए सोव। अन्धकार में जागे इस व्यक्ति ने बगाना प्रारम्भ किया । वह अन्धकार में बगाने भागा । 'इच्छित ! जानत ! जानत ! 'सोने वाले ! उठो; बारों। इस्थ-तिहा में जरे लोगें ते इस बागरण को नींद भंग का दृग्छ समग्रा । किसी ने पत्थर सारे किसी ने कंकर बरसाए। जगाने वाला दके चार वीपकों की भोर बढ़ा। उसे भपार आशा रही। वह स्वार्थियों के जाल को समक्र रावा । एससे शिवकों पर का पर्दा लीचा। प्रकाश चारों क्योर फैला। बराजे बाजे ने टीवड के इडने बाजे काने वर्षे सोगी को दिलाए कौर कहा कि स्वार्थी चाहते हैं कि तुस सोप रहो । कौर इम तुम्हें तुटते रहें । वर्तीदी झांखों को यह मुंधियाने वाला प्रकाश आवकार से अरा सारा । अहोंने दीपकों पर काले परें पड़े रहने देने का निक्रचय दिया, दिस्त संस्त जागहरू न आना। ऋरदेदःदि शस्य-मूमिका के द्वारा उसने सदा के किए इस दीवरों के विचित्र प्रकार की वर्श दिया। कुछ दिख्य बने व्यक्ति भी जाति को जगाने सने। सोंगों ने भी इनका सूच पीड़ां किया। किसी की

विश्व विसाया तो किसी को सुरा औपा। विश्वित्र अगाने वाले ने एक और तका बीपक संजोगा : इस के हारा सारे पहार्थ अपने सच्चे रूप में कोगों को दीखने सगे। कोग जगने सरी। प्रकाश प्रेसी प्रकाश फैलाने वाले के साथ हो किए। जागरूक इल्बस्स के साथ जगाने के शिए आगे बढ़ा। काल रात्रि की भीषखता घटी। वास्तविकता का भान हुआ । 'बयेमां बाचे' कत्वासीम्' की घोषस्मा होने पर स्त्री गार पढने सरी वांक और वदा विवाह समाप्त हर। स्वार्थियों का खार्थ जाल दटा। निदार्थंग हुई। बगाने बाला स्वार्थियों के स्वाय जास में फंसा। रसे मार हाला। कुल अनुयायी भी सार हाही। किन्तु 'सत्यार्थप्रकारा' प्रकाश दे रहा है। भन्ने ही जोत में जोत सिल गई किन्तु झाज हम जाग गए। जगाने वाला जगा गया। इस नींद में जो स्रोधा सी स्रोध किन्त काब तस्वी व तार्वेगे । घर शिवरात्रि शिव-रात्री वद गई। अव इस वही कहते हैं-सचसुच द्मनोखा व्यक्ति जागा धौर हमें बगाया। यही सच्चा जागरण है। जागे पाछे जागना जागा **क्ट्रीप** सोय।

संसार के आधारों को सहते हुए औं संसार के कम्याण में ही सम्म करि संस्थान रहने से महर्षि हवातम्ब 'सम्म' थे ।

# महात्मा इंसराज जी की जन्म शताब्दी

(ले॰ श्री म. देवी चन्द्र जी M.A. प्रधान वेद प्रचारिस्मी सभा होशयारपुर

में जनकी कम्म शास्त्री मनाने का निश्चय आये प्रावृश्चिक प्रविनिधि सभा ने दिवा है। यह शताब्दी जातान्वर में २३,२४,२४ अक्टूबर को मनाई जातानी।

बो जाति अपने नेशाओं तथा होलाडों का आदर इस्ता नहीं जानती जिस में Hero-worship हा आब नहीं है जो चन के कारानामों को समय पर जनता के लायमे नहीं का सब्दी, वह जाति भीवित नहीं कहता स्टब्ही

महात्मा ईशराव जी की कानवन सेनार हैं। एक बेला समाज से जिए वर्गर सारी मानु नैदिक प्रमं की सेवा उन्होंने की। थी. ए. वी कालिय साहरे कीट दर्जनों शिक्षा सम्बन्धी संस्थामों की संज्ञाम में बन्होंने स्थारित किया। इस कार उन्होंने संक्षा की विश्वा की गंगा बहा हो। उनकी ने रेखा से काला रीवान चन्द, साला साई दाल, लाखा रेस्स चन्द, बक्ती रामरक, पंचित मेहरचन्द्र लाखा राम वास, पंजित रत्ताराम इत्यादि सक्जनों ने काला बीचन शिक्षा के चेन में काम करने के साम बीचन किया महात्मा ईस्सान में के रिक्षा सम्बन्धी कारों की देखान स्वावा में सहावन मोपला, विद्रोह में महात्मा जी ने कार्यकर्ता और धन भेजकर हवारों हिन्दुओं को महास में मारे जाने से बचावा।

१९०४ में कांग्ला के मुनाल में पीदिव लोगों की सेवा के बाती सेवक भेजे और धनका प्रकर्म किया। बैरवाकों तक की मकान बनाने के वाली सहायवा ही। मैं बड़ी काम करता था। एक स्थान पर जब सत्तवा मेरी देल भाता में उठाया जा रहा था तो पंजाब के लाट कांग्लिय सर्क पर से पूजरे। उन्होंने पूजा 'वह स्वयं सेवक कीन है।' मैंन उत्तर दिवा कि 'तह कांग्लिय स्वयं सेवक कीन है।' मैंन उत्तर दिवा कि 'तह कांग्लिय सेवक हैं हैं जिन की महास्था सैस्टार जी ने भेजा है।' गवनेर साहिय ने करत दिवा भी जानवा हूं कि बाद समाद एक धनाव्य संभा है और सहारमा हैस्या ही स्वावी वी है।'

सक्काना शुद्धि में महास्था हंतराज वी ने हतने जोर से गभी की अधिकता ने काम किया वा कि तह बीचार हो कर साहीर वाभिस का गए थे और देर कक करवंकत फोड़े के कारवा रोगी हो कर बिस्तर पर पड़े रहें।

राज पुटाना में जब दुर्भिच पड़ा और रामा-

बाई हैसाई त्जी ने माहयी का वेष बना कर छैकड़ों बच्चों को एक जिल किया कीर बन्दाई के ईयाई आश्रम में बन को रखा हो महानग ईसराज की में 'हिन्द्सरहार' पर जोर डाल कर वन बन्धों को स्कृत्व कर, जन के माला पिता के सुनुदें किया और सित वच्चों के माला पिता मर चुके थे, जनको स्मामशालां में गिरवणाया।

विदार में बब बाद काई तो महास्या जी ने दुःसी लोगों की सहायता का मच्च किया। इस्त बहुं कहीं झाग सम्यो मी, दुर्मिक् पक्का मा, मुक्तम खाता था ना कोई कम्य दुर्घटना हिन्दुकों कीर सुस्तवार्थिय जनके लिए सेवा और सहायता का प्रथम स्तर्थ में जनके लिए सेवा और सहायता का प्रथम स्तर्थ में ने

श्राधि इयानम् के निशान को फैलाने के लिय छट्टोंने नगर-नगर में पून कर अपनक्क सेवा की। बोसियों नई आर्य समार्ज स्थापित की। वेदिक धर्म के पत्तार के लिय पुस्तकें लिला। यदापि अपनिका आपु में आंखों की भोशि के बोग्य हो जाने पर सह श्राधिक अपन्यत्र नहीं कर सकते में एक के बीवाना पहां या। सहाग्मा जो की सेवाओं का वयोन करला मेरी शक्ति से बाहर है।

कार्य गांदिएक ग्रांतियिक तथा जालन्यर ने कनकी राजाची पर धाहित्य तैवार करवाने का विस्पय किया है यक Commemoratian Volume लुपगई जारेगो नित्त में भारत वर्षे वामा अन्य देशों के विज्ञानों के तेला होंगे। पेविल श्रीराह की एक एक बहुत्तमा जो के कीवन चरित्र

का क्रोमेनी में हितीय संस्करण शिर्सेने। साली वीबान चन्द्र जी कानपुर वाले भी शताब्दी के बाली यक पुलक क्रिक्त रहे हैं। मेरा बहुर्मेंद्र का क्षेमेनी अनुवाद का दूसरा संर-ट्रिया देद सन्दर्भे सहित भी खप्ताने का समा ने जिस्पन किया है।

इस राजानी पर वेद अवार के निवर कोष और राजानी के न्यूय जादि के बालों समा के स्विपकारियों वा सार्थसमात्र के नेताओं तथा सम्ब सन्यानों की बोर से पांच ताल रुपये की बारील की वा रही है।

हिन्द सरकार को लिखाजा रहा है कि बह् महारसाबी की बन्स शताब्दी पर विशेष सहारका जी के नाम की Postal stamps छपवाप

प्रत्येक संस्था कालिज स्कृत वथा प्रापेक आर्थ सवाज का यह कर्नेक दे कि वह स्थाने कोच से से शामशी करह (Fund) के लिए दिल लोतकर सहायवा करें। क्यक्तियात रूप में अग्नेक आर्थ समाजी भीर, शिक्षित दिल्ल का, जो सहास्या इंसरान जो, के कार्य की शरीला करता हो, कर्नेक हैं कि वह शामशी करती हैं। स्वाप्त साथ मन्त्री आर्थ पार्शिक शतिनीय साथ लाक्षकर को भेजें। इनारी परीक्षा का समय का घवा है वहि इस र साल करना सहारमा जी की अन्य शामशी एए एक्जिन न कर से की हम क्ष्यनजा के पाप के माणी होंगे जिस के जिस इसारो शामों हैं कि हम शामी का साथील का सम्यान करते हुए सक्त्वर से पूर्व ही पांच साल करना स्थान करते हुए सक्त्वर से पूर्व ही पांच साल करना स्थान करते हुए सक्त्वर से

# श्रार्थसमाज का साहित्य : कुछ भांकियां

(प्रौ॰ भवानीलाल जी भारतीय एम. ए. पाली)

हिन्दी में वार्शनिक साहित्य के प्रगायन में मार्थसमात का क्या योगवान रहा है, यह वन वक नहीं समस्ता जा सकता. अब तक कि इस ए० गंगा:-प्रसाद लपाध्याय की कृतियों का परिचय प्राप्त न कर लें । उपाध्याय जी हिन्दी के मान्य लेखक तथा सुरसिद्ध दार्शनिक हैं। स्नाप ने हिन्दी साहित्य की व्यवनी उत दार्शनिक कृतियों से समझ किया है. जिन पर वस्तुतः किसी भी भाषा को गर्व हो सकता है। 'ब्रास्टिकवाद', 'ब्राहैतवाद,' 'बीवात्मा', 'शाकर-भाष्यालो वन' छ। दि वे कृतियां हैं जिल्होंने हिन्दी के दार्शनिक साहित्य में आपना एक प्रथक महत्व बना किया है और भी सभी विचारों के विदानों हारा समाध्य हुई हैं। हिन्दी साहित्य सम्मेखन ने सन १६३१ के कलकत्ता ऋधिवेशन में उपाध्याय जी को उनको 'बास्तिकवाद' शीर्षक रचना पर १२०० रु॰ का मंगलाप्रसाद प्रस्कार देकर सम्मानित

वेंगे। नेद कहता है कि 'शत हाचों से कमाओं क्षीर सहस्र हाओं से बान हो।' बान देने से कन नहीं बटता। ऐसा वेद का बादिग है। देखों क्षावेद मंकक १०, स्वत्व १९० दान देने में मनुष्य को बदार होना चादिय। इस्पवता मानव को क्षावोगिति के गरें में बाल देगी हैं।

ते में शारीनिक साहित्य के प्रमायन में किया। 'शाक्ट भाष्याओषन' भपने विषय की । व का नया योगदान रहा है, यह तथ तक अपूर्व कृषि है जिस में भाग्य युक्तियों कीर प्रमायों म्या या सकता, यद तक कि हम पंच गंगा- से राह्तराचार्य के क्षडेतमत का निराक्तरण किया गाप्याय की कृतियों का परिचय प्राप्त न नवा है। उपाध्याय त्री की दारीनिक कृतियों आपर्य- समाजेतर खेत्रों में भा तनती ही तथि और चाय दारीनिक हैं। आप ने दिन्दी साहित्य को से सही वाती हैं जितनी सार्य-सामाज के देत्र में ।

थ्रो. सधाकर की 'सनोविज्ञान' शीर्धक रचना भी अंगलापसाद पुरस्कार से पुरस्कृत आयंसमाज वाक सब की छन्र निधि है। 'क्रास्तिश्वाद' तथा 'सनोविज्ञान' वर्षो तक सम्मेलन की परीचाओं के पाड्यक्स में रही हैं। इसी प्रकार पं॰ चसपति का बैदिक दर्शन, महारमा नारायण स्थामी की 'बारम रहस्य', पो॰ चन्द्रवाल स्वतः की धारममीमांसा, स्थामी ब्रह्ममूनि की कियारमक मनोविज्ञान आदि रचनायें हिन्दी में दर्शनिक पुस्तकों के अभाव को पराकरती हैं। दार्शनक भन्वेषया का कार्यभी कार्यसमाज ने जिल्हों के माध्यम से ही किया। इस चेत्र में पंट उर्यवीर शास्त्री का सांख्य दर्शन विश्ववह अनुस्थान कार्य नितात महस्त्रपूर्ण है। बनका 'सांख्य-दर्शन 🔳 इतिहास' तो सम्भवतः आपने विषय का स्महितीय शन्य है। इस रचना पर लेखक को इरजीसल डार्लासमा पुरस्कार प्राप्त हो चका है। उन्हीं के सांस्थदर्शन-विद्योदय भाष्य

तथा सांस्य सिद्धांत इस हो प्रस्थों का शक्सान सांस्य विश्वक सन्तृष्टी विश्वालकों को शांत कर रेता है। हिन्दी के सिये सन्तुतः यह एक गौरव की बात है कि जो कोई भी विदेशी बिशान संस्था पर पूर्ण आधिकारिक दक्ष के जानकारी ग्राप्त करना चाहेगा, बसके सिये हिन्दी धदना अपरिकृत्ये हो आसमा।

धर्म धौर दर्शन के बोह में परमत समीचण तथा तलनात्मक अध्ययन के महत्व को स्वीकार करना जावहबक है। इस रृष्टि से बार्ब समाज ने विभिन्न मती के विषय में एक विशाल झालोचनास्मक साहित्य की सृष्टि की है। अन्य मत सम्बदानों के सिद्धांतों के परिचय के लिये इस प्रकार का साहित्य तिला जाना निवान्त आवश्यक है। आर्थ विद्वानी ने विभिन्न बत सम्प्रदायों के सिदांचों की सबीसा की रृष्टि से जिन प्रन्थों की रचना की है, उनका साहित्यिक तथा भाषा की अभिवृद्धि के दृष्टिकीया से विचार होना आवश्यक है। ए. सनसाराम जो पं. शिव शर्मा, पं. बुद्धदेव सीरपुरी ब्याहि लेखकों ने पौराखिक मत विषय विष्तुल प्रत्य राशि का सर्जन किया। स्वामी दर्शनान्द तथा स्वामी कर्मानन्द ने जैन वर्भ के समीजवा में अनेक जय प्रस्तिकार्ये लिखीं । प्रमी प्रकार पं. रामचन्त देहसवी तथा पं. प्रोमशरमा 'प्रवाद' ने इस्लास विषयक कालोचनात्मक साहित्य का निर्माण किया । वैद्याव, शैव, शाहित श्रादि पौरासीक सम्प्रदावों, कवीर, नातक, श्रधा, स्वामी आदि रिर्शया बादी सत पंथीं तवा बाह्य समाज, थियोसोफी आदि नवजागरण के आधुनिक

आग्लेखने के विषय में भी मुद्द सावि किसा गया है। यहां बन्न विकार देना म्यूनियन में होगा कि आये समाम ने अपने जीवन के विराठ दम वर्षों में देश देनान्थों में जो कुछ धर्मान्दीयन किया बह दिन्तों के माञ्चम से ही हुमा। आर्थ तमान के विरुद्ध भी जो कुछ जिला गया वह भी दिन्दी माज्यम द्वारा ही जनता के समस्त कावा, क्वोंकि आर्थ समाज के विरोधी इस तम्ब को पूर्णवा महत्त्वनम कर पूर्व में कि एकर मारत के दिन्दी माज्या माजी प्रान्तों में आर्थ कमात्र के नीव बहुत माहरी जम पूर्व हैं। करवन के प्रम्थी की यह करोच राशि आर्थ समात्र के एक जीवित स्था जागृत आन्दीजन होने का प्रत्यन्न प्रमाण है।

कार्यसमाज ने शास्त्रीय साहित्य के क्रातिर का स्रवित साहित्य के सूजेन में भी सहस्वपूर्ण योगदान दिया है। काबार्व सम्मट ने काव्य के श्वोजनी से जहां वश शास्ति, ऋथे प्रास्ति, व्यवहार ज्ञान, असं-यस का निवारका, वेदान्तर सम्पर्क शस्य ब्रह्मातस्य की प्राप्ति का वर्णन किया है वहां उसे 'कान्सा-सम्मित उपदेश' देने वाला सी वताबा है। शास्त्र वर्शित वार्ते प्रभु साम्मत होती हैं और इतिहासादि के कथन सुद्दन् सम्मित होते हैं, परन्तु काव्य का कादेश कान्वासन्मित होने के कारण पाठक के क्षिये सहज स्वीकरसीय होता है। काव्य के साध्यस से वार्ते को कहा इतना सरस सनोरंजक बनाकर कहा जाता है कि वे हमारे अन्तर्वेश एक प्रवेश पास्ट अनुकल प्रतिकिया को जनस देती हैं। इसी र्दाष्ट से आर्यसमाज के कवियों, होलको एवं साहि-त्यकारों ने सारत्यस भरदार की जो अपूर्व आधि- बृद्धि की है, उस पर वहां विचार किया जायगा। शार्यसमात्र की हिम्दी कविता की वेन-क्षार्व कवियों द्वारा रचित कःव्य उपदेश प्रधान बैतिक भावनाओं से परिपूर्ण, मक्ति यदं भाज्या-रिसक तावों से समृद्ध है। काठवं के माध्यम से बैडिक मिद्राम्ती को ही प्रधारान्तर से अभिन्यक्त किया गया है। मेहता खमी बन्द के इस सुर्वासद अजन 'जय अथ पिता परम आनन्द वाता' की वितीय पंकत 'जगवादि झारणा मुक्ति प्रदक्ता' वेदांत दशेन के 'जन्माशस्यवतः' इस सूत्र हा समस्य दिवाती है। नारायण प्रसाद 'बेवाब' का सुर्शसद भजन 'झजब हैशन हुं भगवन तुन्हें क्यों कर रिफड़' मैं' जितना उस समय लोकप्रिय रहा, उतना ही काज भी है। साकारीपासना के विरोध में जितनी सबस युक्तियां इस भवन में प्रथित की गई हैं उतनी सम्मवतः अन्य किसी भजन में उपलब्ध त हो सकें। स्व० कविता वा मिनीकान्त पं नात्वराम शर्मा तथा उनके सुबोग्य 🕼 डा० इरि-शंकर शर्मा हिन्दी के सुवसिद्ध इदि हैं। अभी हाल ही में धागरा की भीमती शांतिदेवी समी को संकर जी के व्यक्तिस्य और कृषित्य पर आनुसंधान करने के कारवा थी, एच. डी, की उपाधि प्राप्त हुई है। हा • इस्सिंकर शर्माको देव पुरस्कार मिला या बर्तमान काल में सार्यममात के स्वाति प्राप्त कवि तथा भजनोपदेशक कविराज प्रकाशचन्त्र जी की कारुपकृतियों **मा साहिकि सल्यों**कन इन पंक्तियों के तेसक द्वारा निकट सविध्य में अपने बोसिस के क्षिलने के प्रसंग में किया आयगा।

# श्राय जगत् के स्नेही पाठकों से

आर्वेज्ञगत समा का साधाहिक मेखपत्र है। वन शक्ते प्रचार में कितना सहायक होता है, यह हो सब को बिहित ही है। सभा चपने साप्ताहिक पत्र द्वारा संन्यासी सहात्माओं, समात के पराने इस्तुभवी नेताओं, विहानों कवि महोदयों तथा यवक माई वहिनों को जीवन देने वाले आध्या-रिमक, राष्ट्रीय, एवं सामाजिक लेखों वा कविसाओं से धर्म प्रचार कर रहा है। यस्न होता है कि प्रति सप्ताह दो तीन सननशील सब्बनों के देख अवस्य पाठकों की सेवा में पहंचाए जाएं। सभा की प्रचार सम्बन्धी सचनाएँ भी होतो हैं। सभा द्वापने दर्स ह्या को सटा से नियाती पत्नी स्थारही है। सब लेलक सध्वनों की 'बगत पर अनुस्पा का आभार प्रदर्शन करते हुए अनुता से प्रार्थ ना करते हैं कि आर्य बरास को अधिक से अधिक व्यारा बनाने का बतन दरेंगे । प्राहक बनाकर सहयोग वेंगे । ध्रापने अस्तव समाव भी देते रहेंगे। --सम्पादक

#### :---:-इसे त्रवश्य पढिए

आयं बात के प्रेमी पाठकों को सेवा में सूच-बार्थ निवेदन हैं कि प्रमुख विदोगंक २६ अनवशी २ और ६ फरवरी के संब्वा ४,४,६, जा सम्मितित कंक हैं। इस से कमाशा कंक १६ फरवरी को अक्षांतात होगा। पाठक नोट करतें।

— व्यवस्थापक

#### दयानन्द वचनामत

4 11 4 1 11 21

शिव रात्रि में प्रबोध मास्कर का उद्य दिश क्या में तो मैंने मुना है कि शिव कियुल मारी है, उनका वाहम वृषम कीर निवास कैतारा है, वह अनुकाशदायारी देवता, समस्य काल स्व स्थाप काल से निवास में समये पर श्रव है। वह पानु पनाल से नैव्यों का संहार करता है, वो क्या वही महादेव यह मूर्लि हो सकती है। क्या पानु पनाल से नैव्यों का संहार करता है, वो क्या वही महादेव यह मूर्लि हो सकती है। क्या पानु के लिया का पानु है। इस के शिर पर वो ये मायावन शायों चूदे देक लगा रहे हैं, इसके पानु को की वही निर्मायता से सारी है। इस में वान नहीं। वह महादेव की कम मुझे सुनाथी गयी है, यह वो गुर्जी से कैवन पतीत होता है, वाद कह मुझे सुना हो। तह महादेव की कम महादेव की का महादेव होता है वो इन भ्रव महातानी न पूर्व के अपने उसर स्वाय से दीई पति होते हैं। सी क्येवन सहादेव सी वात हो है। इस क्येवन सहादेव सी वात सहादेव की ती वात है। इस क्येवन सहादेव से ती वात से शिव का कि शायों की क्या सा है। इस क्येवन सहादेव से ती वात से शिव का स्वीव कर करने से ही का स्वाय सा सा है। इस क्येवन सहादेव से ती वात से शिव का स्वीव का स्वाय के स्वाय के स्वाय का सम्मना आवश्य साम्या है। इस क्येवन सहादेव से ती वात से शिव का साथ की साथ सा है। इस क्येवन सहादेव से ती वात से शिव का साथ की साथ की साथ सा है। इस क्येवन सहादेव से ती वात सा ती है। इस क्येवन सहादेव से ती वात सा ती साथ की साथ सा ती साथ सा है। इस क्येवन सहादेव से ती वात सा ती साथ सा ती साथ सा ती है। इस क्येवन सहादेव से ती वात सा ती साथ सा ती सा ती साथ सा ती सा

#### मधु-ऋलश

(स्विपता—भी विश्वयंनिवापं भोडलटीन तासंबर)

१. वह श्रीवन तरू भार रिदे से हरा हुआ है

सुमत सुमत में इसके अपना आर हुआ है

हो तरी जो कमें नहीं करता है जग में

है रक्षा च्यालिय समर वह सग हुआ है

२. सहा सम्बन्धि के सावना शिक्को श्री मुख्य है

समसा, वाचा और कंपीया सुन्दर को बचनाई

वो जा मुक्को गरत पिलाए रहले चचके चंदा

है समुद्र साव सावना शिक्को है

वो जा मुक्को गरत पिलाए रहले चचके चंदा

है समुद्र साव सावना शिक्को सावनाई

३. जहां सहा या वहीं रह गया जो सनमें पदरामा

मंजिल उक जा पतुं चा लेकिन जिसने क्रमबहाया कल उठने की काशा करके क्रांख मृदं ली जिसने कह क्रमानी इस दुनिया में कभो नहें वर्णया महात्मा जी का स्वास्थ्य

कार्य जगन् के शस्त्रह संग्यासी तपस्की स्थापी पूरव महास्या मानन्द स्थामी जी महाराज का स्थास्त्र्य क्रव पहिले की ध्यपेका बहुत कच्छा है। वैसे तो ध्रव पूर्ण स्वस्य है। विन्तु शरीर में बोड़ी निर्वत्नता बाकी है। यह भी सीम दूर हो

जायगी। सारा धार्य जगत् उन के पूर्ण स्थास्थ्य के क्रिय सगदान से प्रार्थना करना है। सहास्था जी शीघन पूर्ण स्वरत हो कर अपने अस्तस्थ प्रवर्णने का पान कराने में तरपर हों। नंगलस्थ

श्रमु से वही मंगल शर्थना है।

# महर्षि दयानन्द की दृष्टि में शूद

लेखक श्री डा॰ हरिदत्त जी शास्त्री व्याकरणाचार्य, एकादशतीर्थ, एम. ए., पी. एच डी. अध्यक्ष संस्कृत विभाग, दयानन्द कालेज, कानपुर

## भिक्षा अपने के व्यवहार स्त्री व सुर्दों के साथ सहिष हमानन्द ी का कर्यः (यथेमां बाच

अच्छा नहीं है। वे 'क्षो शुद्धी वाधियताम्' हता वर शुद्धों व शिववों को वेदाधिकार से वंचित करते हैं।

जहां ब्राह्म श्री शंकराचार्य जी ने बेहान्त दर्शन के 'शारीरिक भाष्य' में यह लिखा कि वदि शह वैद अन्ध्रों का उच्चारमा करे तो उसका जिहाने दन करावे और यदि वेद संत्रों को अवया करे तो कान में शीशा पिघला कर काल देवे । यह तो 🞹 प्रकार से मानवोचित भाषिकारों का हमन तथा सीपरा समानुषिक स्थायार है। वहां सहषि द्यानंद जी ने शहों व स्त्रियों के लिए वेदों का द्वार खोलं दिया। कान उस महर्षिकी कृपा व उदारता से सहस्रों शद देदों को पढ़कर बिद्वान बन गए हैं। म-पिं दयानस्य जी अपने 'सरवार्थ प्रकारा' एकाइरा समु-ल्लास में लिखते हैं---'चेद पढ़ने व सुनने का श्राध-कार सब को है। देखों वार्गी आदि स्त्रियां श्रीत छांदोग्य में अनश्रति शुद्र ने भी बेद 'रेक्वमुनि' के पास पढ़ा था और यजवेंद्र के २६वें काञ्याय के २ मंत्र में स्पष्ट तिला है कि देहीं के पढ़ने और सुनने m श्राधिकार मनव्यमात्र को है ।

'यथेमा वाच कत्यासीमावदानि अनैभ्यः। इस राजान्यास्यां सूहाय पार्थाय च लाव वारसाय

कृत्यासी) इस मन्त्र का स्नामित्राय बहु है कि वे वैदों के पदने, पदाने का आधिकार सब मन्थ्यों को है और विद्वानों को उनके पढ़ाने का इसलिए, ईश्वर आज्ञा देवा है कि हे सनुष्य सोयो । जिस प्रकार मैं तमको चारों वेदीं का उपदेश करता हु' उसी प्रकार से तुम भी उनको पढ़के सब मनुष्यों को पदाया और सुनाया करो । क्योंकि ये चारों वेश सब्दा दृश्याण करने वाले हैं । तथा (ब्रायवानि जनेभ्यः) जैसे सद म ,ध्यों के द्विए में देवों का उपदेश करता है वैसे ही सवा तम भी किया करो । वैदाधिकार जैसा ब्राक्षण वर्छ के खिए है वैसा ही चतिय, आर्थ, बैहब, शुद्र, पुत्र, भूश्य और श्चतिशुद्र के लिए भी बरावरा है, क्योंकि वेद ईहवर प्रकाशित हैं!—(ऋग्वेदादि आध्य समिका से) महर्षि के इस अर्थ का समर्थन कई कट्टर पौरायिक विद्वानों ने भी किया है। कत्रक्षे के सुप्रसिद्ध वेतन पंट सरवन्नती को सामग्रमी लिखते हैं :--गृहस्य देवाधिकारे साकाद वेद बननमपि प्रदर्शितंन्

द्वारा वर्गायकार द्वारा पूर्व पर्यामा स्वरास्त्र स्वाप्ति द्वारान्देव । दशेवां वाच करूवायी माव-वृत्ति क्षतेन्दः ब्रह्मराजन्यास्त्री सृहाय चार्वीय च स्वाय चारणाय हति तहेचे बेहवियेः पण्यावशीय-

मास्त्वं न कथमपीतिश्वद्यम्

च। यजु० २६/२

--ऐतरेवालोचनम् पृष्ठ १७ सन् १६०६ई० कलकत्ता संस्करण

अयोत्—'सूरों के वेदाधिकार विश्वव में स्वामी द्यानन्य वी सावाल्य ब्युवंद के २६.२ के वयेगां वाचं अस्वायतीम्'—इस मन्त्र का प्रमाख दिवा है और इस प्रकार यह भी रहड़ है कि वेद के विधान से किसी कर है प्रस्ताय का दोष नहीं सनाया जा सकता!'

श्रीमहीधर व उठवट प्रसृति पौराखिकों ने जो इस वेद मंत्रका कर्थ किया हे वह सर्वथा असपूर्ख है।

'तद्यवाचः प्रथमं मसीय येनासुरां अभिवेचा असाम्। वर्जाद् वत यक्षियासः पंचतना सम होत्रं जुवध्थम्'। ऋग्वेद (०।४३।४

कार्य—'उस वीवेशायों को भलुका में समस्ता हू जिससे ह्वा प्रसुरों का प्रपमान करें। हे देवो। आप अन्न मक्ष्या करते हुए, यज्ञ सम्पादन करते हुए और हे मनुष्यों! निवाद को मिखा कर पांचों बर्फ सम मेरे करिनहोंज को सेवन करों।'

इस मंत्र की ज्याख्या करते हुए अस्वास्काचार्य 'निकक्त' ३।७ में जिसके हैं:—

'धवःना सम होत्र जुषध्वं गण्यवीः पितरो हेवा ब्रासुरा रक्षांसीत्वेके। चत्वारो वर्षा निवादः पंचम इत्थीपमन्यवः। निवाद करमानिवदनो भवति निवयग्रमस्मित्र पापकमिति नेठखाः। यत् पांच

सन्यया विशा पंच बनीनया। पंच प्रच्या संक्वा स्त्री पुंनपुंचकेष्व विशिष्टा।'

भयोग् :--पांच जन मेरे आनिहोत्र को सेवन गम्भवं, देव, असुर, शावस वे पांच कई मानते हैं। बारों वर्णे, पांचवां निषाद पेसा उपसन्तु के नत बाले सानते हैं। जो पाधियों का वस करे वह निषाद भावता जिस में पाप स्थित हो वह निषाद है। पांच जन समुदाय कारित जो के साथ हो, पांच संस्वा विशिष्ट कार्यात पांच लिखा, पांच पुरुष, पांच सपुंसक, सारांग यह कि पांच कोई हो।

निवाद की धामरकोषकार भी धामर सिंह औ 'धामरकोष' में चांडाल के एश नाम भूमें वो देते हैं 'वांडालावय मार्थग दिवाकीर्ति अनंगमाः । निवादस्वयनायन्ते वासि चांडाल पुरुकसः ॥'

'अपिर प्रसान पाल चालत पुरुवकाः ॥
'अपिर व्यक्ति व्यक्ति प्रमान पालकस्य पुरोहितः । तसीमहं महागवम्,...वजु २६॥६ हस अत्र पर पौराण्डिक भाष्यकार त्री महीधर सिखते हैं ।

'पांचजन्यः पंचजनेभ्योहितः। विभादयश्चरवारो वर्षा निपादश्चेति पंचजनात्मेषां बङ्गाधिकारात् ।'

सर्वात्:—'पांच मनुष्य के लिए' शास्त्रणादि चार वर्ण झौर निवाद के लिए यझाधिकार है।

कायस्य महाप द्यानस्य ओ ने जो ग्रह व रिश्वों के लिए वेद पदने व सुनने का क्रांपकार जिल्ला है वह सर्वेदा वैदिक है। वेदों के इन प्रमाणों से भीकापराहुराचार्य जी का सिद्धांत सर्वित हो गया।

# त्रावश्यक निवेदन

कार्यक्रवाओं तथा प्रश्ती संस्थाओं से निषेद्वंत है कि समय-समय पर प्रथमे यहाँ होने वाले एवं, संस्कार, नड़ कोर लाल्य कार्यि की सुपना कार्ये जगर कार्योक्स पार्य मारेशिक सभा दुस्ताय अवंत जालन्यर शहर के पते पर मिनवा दिशा कर लाकि विद्या समय पर मकारिण हो सकें। —संस्थादक

## वेदोद्धारक द्यानन्द

( लेखक श्री बृजसाल वी गुप्ता प्रधान वार्यसमाज टोहाना )

जिस समय ऋषि द्यानन्द का अन्य हुआ उस धमय बारे भारत वर्ष पर झज्ञानान्धकार के बादस काये हुए थे। वेद प्राय: सध्त हो चके ये और उनके स्वान पर मनुष्य कृत क्योल कृत्यित प्रन्थों की ही वैद समस्ते लगे वे। विवर्मियों ने वारी छोर से हिन्दुओं पर साक्रमण किया हुआ था। यह क्रोर से मुसलमान और दूसरी चोर से ईसाई हिन्दुओं को इक्ष करने का भरसक प्रवतन कर रहे थे। पिकारी विवासों से पेसे प्रस्थ क्रिके जिल में वैदिक वर्ष से ईसाई वमें को अंद्रता सावित हो। वर्षनी के संस्कृत विद्वान परोफेसर मैकस मसर ने form I remind you again that the vedas contain a great deal of what is childish and foolish through very little of what is had and objectionable-many hymns are utterly meaningless and insipid,

क्षप्रीत्-में बाप को किर बाद दिला दूं कि वेद में पर्वाच मात्रा में बावजब कोर मुन्ता पूर्व बाद है बचाप वस में रेखे तल बहुत कर है जो बुद्दे और बायफ तमक हो, कारण तो कर्षणा क्षांचे रहित और निस्तार हैं। विकास हो वर्षणा क्षांचे रहित और निस्तार हैं।

देते चयव में ऋषि दशानन्य का माहुमीय हुमा हुम विद्यानन्य की झाड़ा से उन्होंने वेदों द्वारा और वैदिक धर्म के मचार का बीदा धडावा। उन्होंने एक साथ ही वैदिक धर्म पर आक्रमण कारियों का दुकाबना करने का संकट्ट किया। उन्होंने पीणवा की कि मानव कन्याया के किये वेदासुकृत बीकन आवस्तकता है। एक बार कुम्म के मेले वर ऋषि दशानन्य ने हरि. हार के पर कुम्म के मेले वर ऋषि दशानन्य ने हरि. हार के पर वहान्य जायाया था जिस के क्षानिक प्रकट्ट थे।

क्या तुमने नहीं सुना कि महा से लेकर वेशिनी सुनि वर्षन्त महर्षि म्रीर स्वयं भू से लेकर वृक्षित्वर पर्येक्ष रामार्थि सोगो वेहोक भये के म्युनुस्त पक्ष कर पकर्वी मार्गिर रामके महत्त्वत सुनोंकों भोगाते विमान मार्गिर क्यारियों में विजये थे। यह स्वयस्य की बात है कि पूज्यी, सक्ष, मार्गित, वायु, भाकारा, सूर, चन्न, मह्म, वास, यह, विन, राव, पड़ी, राज, ह्या, झांल, हान, धीर्थि, वनस्ति, साना, पीना धाृहि सह व्यवहार व्यों के त्यों बने हैं किन्द्र हुमारा हाल बदल गया है । इसका कारखा है हुमारा वेद दिकट झाया हो व्यवहार । देवाहि स्था शालों के कामुक्त बसने से ही महुव्यों का कम्याया क्रीर कन्यति हो सकती हैं।

श्चांप दशानन्य कृत ऋग्वेदाशि भाष्य भूमिका पढ़दर सैक्स मूलर जैवा परिचानी विद्यान् भी बढ़ा भ्रमाशित हुआ। उसकी देवों के बारे में आपनी किमाशित दुआ। उसकी देवों के बारे में आपनी किमाशित देवती भारत से दब्तानी पड़ी। उसकी अपनी पुरुषक हुम. भारत से कवा शील सकते हैं 'में लिखा?' मेरा यह निष्यत मत है कि संतार में मतुष्य मात्र के स्वाध्याव के लिये देव के आधिरस्त करन कोई साय- स्वक प्रध्य नहीं हैं।'

संबद मूलर एक श्रीर त्यान पर ज़िलाता है कि— I maintain that is every body who caves for himself, for his ancestars, far his history, for his intellectual development, a stidy of the vedic literature is indispensible'

क्षधान मेरा विकार है कि कारम-ब्रान की प्राचित की इच्छा करने वाले तथा अपने पूर्वतों, इतिहास कीर मस्तिक उन्मति के लिए सच्च प्रदेश व्यक्ति के तिवर वेद आ स्वाच्याय निवानत कार-स्वक है।

श्रीष इयानन्द ने आर्थसमाज के इस जियमों में एक नियम बनावा कि पेड़ का पढ़ना पहाना कोंद्र सुनना सुनाना आर्थों का परम धर्म है। पिड्यों विकास में कि पहारे वेदों को गहरियों के

फब्स गीत सममते थे, ऋषि द्यानन्त्र के प्रचार से,वेदों का स्वाध्याव महाध्य भाग के स्मिप आपर् स्वक सममते स्त्रो ।

ऋषि श्यानम् ने लिला है कि वेद साथ, विवासों की पुरुष्क हैं स्मीर, इसी बाहाय को लेकर-क्षमेरिकन विदुषी विलोक्त ने वेदों पर मुख्य होकर-स्थमेरिकन विदुषी विलोक्त ने वेदों पर मुख्य होकर-स्थमेर विवास प्रकट किये:—

'India is the land of the great Vedas—the most remarkable works containing not only religions ideas for a Perfect life but also ferets which all the science has since proed true. Electricity, Radium, electrons, airslops all seem to be known to the seers who found the Vedas."

कार्याय—"भारतवर्ष वन महम्न् वेरो ना देश है भिन्न में न केशल एक्स शीवन के लिये भार्मिक, सिखांत है है बल्कि वन में ने सबंदरमा भी पाने-माते हैं भो कि विज्ञान ने क्षण वक ठीक, सार्थक, किने हैं। पोता माजम होता है कि नैहित कार्यक्री की विज्ञती, ऐसेल्ट्रोन, हवाई नहान कार्यक्ष के नार्यन में सब इक्स सार्थ गां।"

श्रीष द्वावन्य जी ने झार्थ समात्र की स्थापना की वाकि वनके परवान मी वैदिक धर्म का प्रवार द्वीला रहे परन्तु जाश क्का भाग समात्र के तहस्य द्वी बेद प्रवार की बोर बहुत कम व्यान देते हैं। श्रीपत्रोधीलाव हमें अध्यक्त कर्मव्यान दिहाता है कि सं श्रीष द्वारान्य के अपूरे कार्य के पूरा करने के लिके सरक्ष प्रवान करनो चारिये।

# बोध रात्रि हमें जगाने ऋई है

(सी - जहंग जी आर्था प्रभाकर जीरा (फिरो । पूर)

इस संसार में मनुष्य दो प्रकार के हैं सब स्थल बुंदि बाले तथा इसरे सुरम बुद्धि बाले। स्थल बुद्धि माले मनध्यों के जीवन में कई पेसी घटनाएँ झावी हैं सेकिन उनके जीवन पर कोई प्रसाव नहीं पहला पर सहस बदि बाले सन्दर्भों के जीवन में छोटी सी छोटी घटना सी उनकी काया पलट कर देने में सहाबन्ध सिद्ध शीती है। तथा उनके जीवन में पेशा प्रकाश क्षा देती है जो उसके बीवन को ही नहीं प्रत्युत समस्त संसार को उस प्रकाश से प्रकाशित कर देती है।

इतिहास इस बाव का साची है कि समय-समय पर महापुरुषों के जीवन में ऐसी घटनाएं आई' जिन्होंने उनके जोबन का MY ही बदल दिया। १५३८ की शिवरात्रि वी । मूल शंहर अवने पिता के साथ शिव मन्दिर में जागरण के लिए गए इस विचार से कि इस-बागरण से ही शिव के दर्शन होंगे। ब्रानेक शिव-भक्त भी वहां थे। परन्त जैसे-जैसे शत दक्षती गई भक्त जन एक-एक करके निटा देवी की गोर में असते गए और मूलशंकर के पिता जी भी। वंदि कोई रात्रि की विस्तवंत्रता में, जागता रहा तो चौदह वर्ष का बासक मृतरांकर, महान कारमध्ये उस वक्त भी जांगतो हैं अब साधारय द्यारमार्थं सोई रहती है। चुडे को मूर्ति पर चढते

........ चौर शिव का अपमान होते देख मुलशंकर के मन में सच्चे शिव को पाने की तहए उरगह हुई। इस यक्य पाँचत्र रात्रि में मनशंकर जागा। प्यारी बहिन और प्यार करने वाले चाचा की मृत्यू में जब बान्य संगे सन्वत्वी रो पीट रहे थे, बार्यान बार्ध्या-रिमक विचार से. श्रजान की तत्शा में सोय पड़े थे तो मूलरौरर को जगी हुई झारमा को एक भीर संस्हेड़ा मिला। इन दोनों घटनाओं ने उनके जीवन पर इतना प्रभाव दाला कि उनकी संसार निर्माना घार्य समाज के जन्म दाता सुधारक स्वामी दवासन्द कै नाम से संसार में प्रकाशित कर दिया।

मृजशंकर इस घटना घटित होने के उपरान्त स्थान-स्थान पर धुमे । सच्चे शिव को प्रत्य करने के लिए प्रत्येक स्थान की छाना लेकिन कहीं भी उन्की तुम्या हो बुमाने वाला सरोवर न मिला । श्चन्ततः गुरु विरज्ञानग्र की कृतिया का द्वार खट-खटाया जहां उनको सन चाही मराद सिख गई। गुरू की कटिया से पठन-पाठन समाध्य कर बाहर निकते तो उनके डाथ में क्रोश्म की पास्तरह स्वरिडनी पताका थी ध्यीर हदय में समस्त संसार के उद्घार का टुड निश्चय किया । वह भारत में फैले ब्रह्मानता के अन्धकार को दर करने के साथ भारत साला के पांचों में पड़ी पराधीनता की वेडियों

#### जन्म शताब्दी आ रही है भारत में डी. ए. डी. का विशास जात अवस

चलाने वाले. त्याग, तपोमूर्ति स्वर्गीय महारमा इंसराज जी की सी वर्षीय जन्म शत।वडी इसी वर्ष में प्रकटबर १६६४ को बड़े ही व्यापक स्तर पर सनाई बानी निविचित हो गई है। सार्थ प्रादेशिय सभा पंजाद जालन्धर की विरोपक बेठक में यह निर्णय कर दिया गया है कि यह महान समारोह होगा। इसमें सारा आर्यसमान परिवार अपने कालेज स्कूल तथा समाज के बढ़े २ नेवा सम्मितित होंगे । इसके लिए तैयारी प्रारम्भ है । सारी समाजों कलों कालेजों संस्थाओं से निरेदन है कि वे इस महानःस्मा के सहान् पर्वको सनाने के क्षिप असी से जट आएं प्रापने २ स्थानों पर नवरों. संस्वाओं में सब की इस शताब्दी के बारे में सुबदा तथा प्रचार करता द्वारम्भ वर देवें। इस कार्य के लिए सभा को धपना सहयोग देवें । छाये जगन से समय २ पर समाचार निकलते रहेंगे—सं.

को भी वोड़ना चाहते थे। इपनवः कहोंने स्वयन्त्रवा का बीज को दिया। और उसका परिवास आज हमारे सम्बद्ध है।

कात: हम इस बोध राजि पर प्रतिका करें कि इस अपने जीवन परिचार कीर राष्ट्र के बीचन में सदा आगत रहें। अपने जीवन को पवित्र बनाएं। जो दनामण हमें वेद की कुंगी है गय हैं। तब्बा इस नेवों में उत्तम २ राज निकास सकते हैं। तबा सपने इस जीवन प्रता काल करते हैं। तबा सकते हैं जो कि कभी भी विचलित न हो सकें।

## डी. ए. वी. हाई स्कूल कमाहीदेवी

#### (होश्यारपुर)

में राब्दाश्य-दिश्य बड़ी भूगभाम से सवाचा गया | गष्टु फीर क्याब कुलराम बी ने सहराबां फिर लेहें 'रिष्टे कीश संगाह हूरें | रहेब का ग्रोधाम बहा मनोरंक का | जिसे लोगों ने बहुन वर्तत किया कीर सहान से नदान की हैनाम शिर | क्याब में लोगों में सिकार बांडी गई ।

—षार. पी. सेडी हैबसासर स्क्ब धार्यसमाज (श्रनारकली) मेदिर मार्ग, नईंटिल्ली

का चुनाब ११-१-१४ को निम्न पदार से हुन्छा। प्रधान—श्री गत्वापनराव तलवाइ। वप-प्रधान—बा० गत्वेशाइस्ट कपूर, श्री लाल चन्द लक्षा, श्री इस्ट्यन्द्र, श्री सेवाराथ कपूर, श्री तीर्थशास।

मन्त्रीरूपा—६वान सन्त्री—श्री देवाराम शासी। मन्त्री—श्री दरवारीक्षात्र धम, प., श्री सुन्ताराम सक्देवा, श्री प्रकाश चन्द्र महता, श्री गोपालचन्द्र महता, श्री गोपाल कृष्ण दक्त, श्री हरिश्वतत्र बहुत्त श्री सोमनाच गुगा।

कोत्ताकवयु—मी स्वस्ताव कोनी। सहायक—मी स्महत्य भारताव । बेखानिरोषक—मी रामतरव करूर। मुस्तकावश्यक्—भी सोम कीनि वी पस. ए. स्वसानी जाल M. A. असी समाव कारताव स्वस्तानी स्वाप्त स्वस्ताव स्य

### क्र्य तीले-तीले धर्मभरोके से संसार चक्र

श्री वा, देवहर वी महाजन धार्नकमान लार्टेन्टोड प्रशुक्त हो हैं। वहे ही स्वाध्वादशील हैं। स्वाध्य विचारों ठ्या वार्य इतने में भी पुत्रक ही हैं। योजने व क्लिने होनों में प्रशुक्त से निस्धात हैं। भाषा मंत्री हुई, मन पर प्रवस्त प्रभाव दालने वाली होती हैं। मेरी विचारों को विचार प्रभाव साथ जात में क्रमने विचारों को विचार साथ साथ काल हैं। प्रवस्त समय से समय चिकाला है। पाठक लाम इठायें—सं०

यह कि हैं। तसे गुजरी कि भी कम्हाम की देश पूमें विदेश बूने पर गुज कमी न हुने। बरना सस्य तो यह दै कि उन के पिता की जब तक जिये उन के लिये वहीं वार्यना करते रहें कि भागतान! देवना दुवारों की तरस र कर जो हुई यह सम्बन्ध दे बड़ा हो कर मेरी जुड़ी बने मेरा सहारा बने। कहीं गुज व हो जाये। यह वो जगधान की सम्बा हुई कि जुड़ी तो गुज न हुई पर प:हने वाले ही गुज वो

पिता जी अर्थ महा वाश को जाने लगे तो पहले वो उन्हें हुए बाशा का विस्वास ही न साफीर

जब हो ही गया तो समये थाड़ा था और उन्हर्न का बहुव कुछ | फिर जब कहते सुतने बाते सकत भी जबाब देते देखे तो देवल हतना हो झा पाये कि केटा लमुराम पाये पालिल परस्परा है चीर बना कह यह पर पो चीर का समू राम जी ने हुने आज तक न मुखाया।

सन्दाम बी ने भी धर्मे खुन विभावा हैस पूर्मे विदेश धूने पर धर्म खे पतित होने की कभी नीवत न माने थी। घर पर चीका लगा कर (खकीर साम करें) सार में के नया भी। माहिर निमाना कठिन भी। पर बाहरें। दिमागुराह करी हो तो सी। होटल हो अथवा रैस्टोरेंट कुराबी घर बैटते तो मन ही मन सपने हरहमित्र इंगाबी युनाब्द कर करानिक देखा लांच तेने। घरें धर्म! तु

#### डा. देवब उ नी महाजन मन्त्री आर्यसमाज

 धी, पर क्षिपी गहीं भी ! औन कांने उस में किय किस के गन्दे गन्दे हाथ हुने हों बीश फिर यह अपने देश की नहीं अधिक अपने शाम की देशे पानो दोग का शेरलाहक भी होशा रहे कांकिर कर बसे का करणा है गा।

इपन ६ ज़िला में भी लभूराम जी किसी से

'पीछे नहीं। प्राम का हो अथवा विशवरी का, डोई

भी उत्सव (ऐसा नहीं होताजिस में समूगम जो भक्त नहीं। अध्यक्ष के साथ २ जिल्ले यस भी

सुबरता जाते। कीन जाने काल मुलावा कर आ

इस्ते। ध्रीर फिर इस से सान इज़्त की भी ती

चंद्रि होतः हे स.म व में बाह् २ होती है और सब से प्राधिक संभ होता है व्यापार में। व्यापार मांगता है विस्थास, भीर विश्वास बनाने का अतना में, इस से बड़ा सावन और बीन होगा। इस एक बार विद्वास बनानहीं कि छूरी के नीचे क्राया और कर से कट। धन्या कोई साभी ले लो यधिया पुत्र वन कर कही अथवा सरववन्त्री हरिहचन्द्र बन कः गुजर होने से रहा। थोड़ा बहुत तो इथर स्थर होना ही होता है। झाज यह उत्सव कल वह मेता कोई फड़ीर कोई सरवा थोड़ा हो पर इन्कार तो इत नहीं परशा | फिर बिन नये टैक्सीं का बोम 'कारोटीशन' सो जवा । कमाई का 'संत्र्वन' ईमान-दारी से रह ही कड़ी गया है। यदि झेने देने के बाट पक हों तो चल चुकी यह दुकानदारी। इस धीस दिन में ही धन्धा ठप हो जाने । किसने बुद्धि-मान में पुरसा जोग । कैसा इंग निकास कर बीची

रहि बना गये। 'देही जंडाडी क्रिंगची झौर ओर्स मोरते रहो। धर्म की जब जवकार होती रहेगी ? 'जुब्बारवा छोग राज का नाम होते रही चोक्ष खोकरे हैं और राम का नाम खत्व समय तभी मानी पर काता है वहि इस का निव २ का झाजबारे

ं कासी पर काता है वहि इस का निव २ का झस्यासे बना रंहे' श्री लमुराम जो ने जब से एक पहिल औ से यह शब्द छुने हैं हृद्यंगम कर लिये हैं। तथ से नित्य इस की कसरत करने मन्दिर आते हैं। जाना भी कैस। ? यूं कहो स्वयं भगवान की कृषा है नित्य उन्हें बुला लेने हैं। चार इक्षते ना संवते मार से नींद खुल जाती है नित्य वर्म से निवृत्त हो। में ला सम्माल मन्दिर को राह लेते हैं। मगरान की इपा ही तो है स्वास्थ्य धान्छा पाया है जातस्य नास को नहीं। मन्दिर पड्रंचते ही एक कोने में जंहों की मगत्रान के सन्वात दर्शन होते हैं बैठ जाते. है। माला पर माला चलती है...घरटों। समय बंदें आनन्द से बीव जाता है बुद्ध वही सिम्नंस रहती है। केवल थोड़ी-सी चिन्ता है...ध्यान न जम पाने की। कमवरूत सनुरास न जाने इतने सें कहांसे कहां भूग द्याता है। बागी दो राग नाम अपना है और वह हार वाट तराजु से लेकर राज-नीति तक की चौकड़ियां भरता फिरता है। वस बहे बरा संघ जाये तो पाओं बारह हो जावें इसी चिन्ता की विन्ता बनी रहती है।

लैर कुछ भी हो लभूराम जी की सन्तोष है कि परिवार की परम्परा निभाने में उन्होंने कीई इक्ष्मर बटा नहीं रेसी। भन्ने ही रारांव भी पी हो,

## ग्रातन्त्र तथा त्रावसमाज

(के०-प्रसिद्ध नेता कैप्टन भी केशवचन्द्र जी सारेंस रोड अमतसर) 

स्वामी-दशनना जी महाराज ने सार्व समाव की स्थापना सर्वे प्रथम वस्त्रई नगरी में की । बीज रूप में तो कार्य समाज शिवरात्री पर ही स्वर्शपत हो-गया था, जिस समय मुसर्शहर ने अपने जीवन की निक्टा की टीजा है कर कावल कार्य कार्यक विद्याशा। बार्स समाज का विशास काज से सी वर्षं पर्व बनाया गया | इसाज सारे संसार में सोशिलिज्य-समाज बाद की चर्चा चलाउती है। समाज वाद की रूप देखा क्या हो तथा गयातन्त्र पर आधारित कर के इस को किस प्रकार से किया-स्मिक रूप दिया जा सकता है, इस बात का पुन: विवेचन किया जारहा है। जिस दात का 

[ भांग भी छानी हो, मांस;मज्झती से भी परहेज न विया हो, सत्यासस्य भी क्रोर भी क्राधिक हवान ुन दिया हो,भलेही खल ऋपट भी दुनियादारी निमाने को करना ही पड़ा हो पर सक्ची बात तो बहा है कि धर्म को कभी करीय नहीं आने दी। आई. धर्म हैतो सव कुछ है। को धर्म ही नहीं बचा पाया यला इस का जीना भी कोई जीना है। कहा नहीं

धर्मेख डीना पश्चिः समातः। इमें तो भाई परः बहनः स्थीनार तहीं । मनुष्यः चोस्ना पा कर भी

परा वर्ते तो क्यों ?

निर्श्य करने के लिए बड़े र नेता खभी इधर प्रधर विचार विनिमय में लगे हुए हैं। उसी का स्पष्ट कियारियक तथा सन्दर रूप आज से १०० दर्श पूर्वे आर्थ समाझ के विधान में रख दिया. जिल ही मलह सब हे सामने हैं। इस समाज बाद हा च्याच्यार राशासस्य पर रखी । सम्राज कार्य था आधारित समाध कायम किया । इस के इस-नियमों में पह नियम में स्पष्ट लिखा है कि लोग द्यपने २ कार्यों में स्वतन्त्र होते हुए भी सामाजिक कार्यों में परतन्त्र रहें। विदि हम इस सिद्धांत को अपने जीवन के कार्यों में ते आवें तथा इस नियम की सर्वादा में अपने को सर्वादित कर लें तो सारे समाज की समन्त्रति हो सकती है। कितना सर्गांगीण, सुतहसा सिद्धांत है कि प्रत्येक व्यक्ति का अपना भी व्यक्तिस्त है। उस की कापनी भी सत्तः है, उस के लिए श्रपनी भी स्वतन्त्रता है। उस का अपना व्यक्तिसम् संसार भी है. किला क्षत्र साथे अक्राब की उन्मति का प्रश्न सामने हो से सम समझ अक्रकि की उन्तरि में क्ष्मने व्यक्तिस की महस्य बही देता होसा। समाज के नियमों, सर्यादाकों में व्यक्तिवाद को पीछे कर देना होगा उस समय समास को प्रमुखना देनी चाहिए। यही एक उनस

निवस है जिस को आधार बना कर समाज क

कल्याण हो सकता है। मध्यमसर्भ भी वड़ी है। बहि केवल व्यक्तित्व को ही प्रमुखता दी जावे झौर समाज को सर्वेथा उपेश्वित कर विदाः जाये या समाज को ही सब कह मान कर व्यक्तित्व को बिस्कस समाध्य कर दिया जाये—तद दोनों अवस्थाओं में ही कल्यास का पव नहीं मिल सकता। आर्यसंसाव वे इस निवस में स्थवितल का भी सन्मान है तथा समाज का मी गौरव निष्टित है | भारतीय सध्यक्ष का बह पुरासन सन्दर आदर्श है जिस के द्वारा इसारी प्राचीन सध्यता छात्र भी अञ्चल्या बनी है। एक दूनरी विशेषता वर्णाश्रम अवस्था को है। दर्श को कर्म पर आधारित करके समचे समाज को हर सेत्र धीर हर दिशा में ऊ'वा बनाया वा सकता है। हर व्यक्ति में झारम्थ से ही एक विशेष प्रवत्ति होती है। उस की रुचि का बाखपन से ही परि-चव मिल जाता है। वर्णविभाग में यही निवस काम करता है। जिन का जीवन ज्ञान प्रचार में लगता है वे ब्राह्मण कहलाते हैं, जिन के शरीर व सन में गत औं को नष्ट करने में चात्रतेय काम करता है वे क्षत्रिय हैं, जिल दी प्रवृत्ति देश में व्यापार के काम में बखती है वे बैदव हैं और वाकी अभी कहे जा सकते 🖁 🛙 🎮 विभाग द्वारा सारा समाज निश्चिन्त होता है। अपने २ धर्म, दर्से व्य में लगे रहते हैं। इस प्रकार से राष्ट्रका सारा काम चलता रहता है। इमें से वर्णव्यवस्था का सूत्र चला बरता है। हवाबी बयासन्द जी ने इस सिद्धांत की भी गरा-क्षत्र के शांच कियाने उत्तम बङ्ग से निहित किया

है। वे दोनों मृष्णियां किसी भी देश भी सवांतीस्थं स्तुशकि का मूल कही जाती हैं। इल में जहां पर भी गड़कड़ हो जाये, वहीं पर ही राष्ट्रीय जीवन की मिचि में दरार यह जाती है। स्वाजी जो के क्षिय होड़ि ने हर प्रस्य को देखा क्या समाज के सामग्र मीजिक नियम कहते हो आयोगार हासे स्वाचार पर सहा होकर स्परान सामग्र काम कर रहा है।

हित्तरात्री के वर्ष पर काथ समाज ने सारे विश्व को हवी समाजकार का सम्मेरा देना है। इस के खिल प्रवतन करता होगा। समाज के सिद्धांची का प्रचार करते में स्वामी भी के समान जीवन में निक्षा की दीचा तेनी पढ़ेगी।

### तीन पाठक

कोई विकार पुस्तक में सिला है खबता ही पहते हैं। कोई पुस्तक में बितना खिला रहता है उकता भी नहीं पहते। कोई पुस्तक में बितना सिला रहता है उससे भी काथिक पहते हैं। हम्म प्रकार सीत प्रकार के पाठक हैं।

'शंकर' क्षेत्रेंगे नहीं, जो पर विश्व की देव। बन जावेंगे वे सुषी, देश अस्त नरदेव।। जो बात स्थल में भी क्षममाव बी, बीर जिस के करते में कानेक मनोरथ मान हो। गई, इसको विचाला सहस्व ही में कर बालना है। विचाला

के किए कसाध्य ही स्था है ?

# शास्त्रार्थ युग पुनः लाने की त्रावश्यकता

(लेखक-श्री पिण्डीदास जी ज्ञानी आर्यसमाज लोहगढ़ बमुतसर)

महर्षि दवानन्य के कार्यक्षेत्र में बावतीर्ल होने के समय ब्रायावर्त्त देश, आयं जाति और आयं भर्में पर विदेशी मतों इस्लाम एवं ईसाईवत की ओर से हर प्रकार के चातक झाकमवा हो रहे थे । देश. बाति सथा धर्म के कतिपय द्वितचिन्तकों की बचाइ का कोई सार्ग नहीं सक रहा था। मैक्समूबर जैसे ईसाई प्रचारकों ने इस संस्कृत का छान्यवन करके मार्थ धर्म स्त्रोत देव पर वावइ-वोइ हमले शुरू कर रखें थे। क्रिजन चंग्रेजी जिल्लासर्वों के विदार्थी ईसाई गुरुष्टों से पेरिया प्राप्त करके बान्दर जाति को सोखता किये जा रहे थे। उपर कादियां (पंजाब) के भिर्जा गुलाम बाइसव सदोदय ने एक नवा 'फिला' धारम्य कर रखा था । पौरासिक वाळ सार्गियोंने किसी भी ऋषि, सुनि, झाचार्य गुरु अथवा धारतार कहलाने वाले सहानुसाव को निष्कलक नहीं रहने दिया था। प्रतिच्या यह भान होने लग . गयाथा 🎼 व्यार्थ जाति भीर कार्यप्रसंबर्धित को मैंबर में फंसी प्रवीत होती थी, वह आज हवी बा कल पेसी परिस्थिति में दवासब प्रभ की आपार कुपा से 'सत्य को प्रहुण करने और अस्टर्य को होड़ने में सर्वेदा उचन रहना चाहिए की सिंह गर्जना करते हुए महर्षि द्यानस्य मैहान में ब्राय । आपने पौरा-किइ-वाममार्गियों, मुसलमात्तों, ईसईओं और संसार भर के विविध मत-मताम्वरों को खला चैलेंज वेकर

\*\*\*\*\* शास्त्रार्थ के मैदान में छाते और अपने मतों की सच्चाई सिद्ध इरने के जिए लजकारा । महर्षि ने अपने कार्य काल में अनेकों शास्त्रार्थ किये और सावी शास्त्रार्थ सहारथियों बया धर्मचीर श्री पं. लेखराम आर्थे मसाफिर, विचित्र दाशेनिक शिरो-मिक स्वाभी दशैनानन्द जी, स्वाभी योगेन्द्रपाल जी श्री पं, धर्मभिच जी, श्री पं, रामचन्द्र जी देखवी, श्री पं. मुरारीलाल शर्मा, श्री पं ॰ बुद्धदेव जी विद्या-लङ्कार, श्री बुद्धदेव जी मीरपुरी, श्री ठाकर श्रमर-सिंह 'ब्रावें पथिक' श्री में हवा रामचन्द्र शास्त्री, श्री प'. भगवश्स रीसर्च स्कालर, श्री प'. रामगोपाल शास्त्री. पं. कालीचरया शर्मा, श्री पं, जगदीश चन्द्र न्याब रस्त शास्त्री, श्री एं. देवप्रकाश श्री तथा पं. शान्ति प्रकाश जी झादि के लिए भठव सार्ग प्रदर्शन किया। महर्षि के श्रनेकों शास्त्रायों में से कह प्रसिद्ध शास्त्रार्थोंका व्योरा नीचे की तातिका में दिया जाता है ताकि सहर्षि के सक्तों की ज्ञात हो सके कि वन दिनों जब इवाई बहाज और मोटरकार का आवि-ब्हार नहीं हमा बा, जब कि रेक्षवे माग भी इसने विस्तत नहीं हुए थे, और प्रायः वैलगाड़ी और घोड़ा गाहियां ही बादाबाद के प्रधान साधन थे वैदिक धर्म पर होने वाने आक्रमकों का परिहार और मनव्य **ब्रा** बस-बसान्हरों पर भरपर बार करने में आर्थ समाज के इक्कें क को कितजा प्रशन्त कींग एरिश्रम **दरना** पड़ा था—

१८६६ श्रम्रमेर-पादरी श्रे, रावसन तथा शुल-ब्रोड, १८६७ क्लोबास-प' अम्बादन अनुपराहर रामधाट-पं. कृष्काभन्द, इर्शनास-पं. हरिवल्लभ सोरों-प. बहुद शास्त्री, १८६८ अक्तु॰ काओरी का मेला-पं, उमादत्त, फर्र खाबाद पं. श्री गोपाल १८६६ जन फदंसाबाद-प', इत्तधर भ्रोमा, दस्तील-पं. हरिशंदर, जीसाई कानपर-पंट इलधर कोमन । १८६६ नवस्वर बनारस-पं ताराचरण तर्क रस्त, स्वाव विश्रद्वानन्द, पं॰ बाल शास्त्री, पं॰ राजाराम शास्त्री पंठ शिक्सहाय, पं० माधवाचार्य, पं० वासनाचार्य । ११८७२ मिर्जापुर--पं गोविन्द सह, पंट जैशीराम । बमराक्षों—५० दुर्गादत्त । आराह्—५० स्द्रदत्त, पं॰ चन्द्रदत्तः सितम्बर पटना-पं॰ रामजीवन भट्ट पं० राम **भ**यतार । १८७३ मार्च कलकता--पं० क्षेत्रचन्द्र चक्रवसी. पे० महेशचन्द्र न्याय रतन। १८७२ अर्थे ल हमसी—पं० ताराचरमा वर्क रहन । १ ७३ नवस्थर लखनऊ--पं० गंगाधर । सई छपड़ा---पं० जगन्नाथ, श्रवत्वर कामपुर---पं॰ गंगाधर। १८७४ फरवरी इलाहाबाद---पं॰ काशीनाथ शास्त्री ! १८७४ नवस्वर २४ सुरत - पं० इच्छाराम शास्त्री, षडोच- पं॰ माधव राव शास्त्रो, राजकोट-पं॰ महीधर । १८०४ माचे बन्बई-प'लेम जी बाल जी शास्त्री । जुन बस्बई-पं॰ इसल नवन आचार्वे । बढोडा---पं० वजेरवर, पं० व्ययया शम्भ । १८७६ जन धन्वई--पं० राम लाख, नवन्यर मुरादावाद--पादरी पार्कर । १८०० मार्च २० चान्दापुर मेला-पादरी स्टाह मौतवी मुद्रम्बद कासिस । सितस्वर२४

जालन्धर---मीलवी घ्रहमद इसन । १८८८ फरवरी गुजरांवाला-ईसाई पाइरियों के साथ। नदम्बर श्रजमेर- पादरी में, पादरी हस्वैस्ह। १८७६ धागस्त ४ वद्।यू --पं॰ रास प्रसाद । जगस्त २४--बरेसी-पाइरी स्काट । १८८१ जन २८ क्यावर-पादरी श्रूज के ब १ १००२ सितम्बर ११ व्यवपर--सी० अन्दर्रहमान । यह बात दश्रव्य है कि प्रथम शास्त्रार्थ १८६६ में अजमेर तगर में ईसाइयों के साव और क्रन्तिम उद्यपुर सगर में १८८३ में गुस-लमानों के साथ हजा। महिष के देहावसान के धानन्तर सेंकडों आर्य विद्वत्नों ने उतके पर चिन्हों पर चलते हए स्वाध्याय का आश्रय जेकर विश्रीमयों के साथ शास्त्रार्थ समर्गगण में लोडा लिखा श्रीर अनेकों गिरतों को सम्भाला और शतश: पध्यकों को सन्मार्ग दिखलाया । शास्त्रायं युग का आज भी जब स्मरण द्याता है तो सम्प्रीया हद्या हरय कमस्र खिल उठता है। कैसा अस्पम था वह समय, किस तरह बच्चा-बच्चा स्वाध्याय में रत बड़े से बड़े विश्वमी का मुकाइला करने को तैयार नजर आता था। आज वह सद वार्ते स्वय्न तजर आसी हैं। मुक्ते वह दिन बाद है जब आये युवक्समात धामृत-सर की झोर से कावयानियों, वहावियों, ऋहते-सन्तत आदि मुसलमानी, ईसई पादरियों, पौरा-यिक वामसारियों आदिवों के साथ कई-कई सपाइ कार्य समाज लोहगढ में निरम्तर शास्त्रार्थ यह हुआ करते थे। वह चहल-यहस, वह रीनक, वह उत्साह वह भव्य दृश्य देवी देन प्रतीत होते ये। इत बसन्त जो धारण को बहुश करो और

### 

(ले०-श्री पं. रुद्रदत्तजी शर्मा प्रधान आर्यं समाज लक्ष्मणसर अमृतसर)

शिवरात्री प्रतिवर्ष क्रप्ता मुक सरेश हो कर कार्ति है परम्यु इसमें कभी इसे मुनने स्त्री समान से लग्न स्त्री समान से लग्न स्त्री समान से लग्न समान से हरा सुना प्रति हो सात से लग्न समान से हरा सुनारा परम्यु सल में सुना स्त्रासुला कर दिया। मान्दर में कार्ते भवन सीख़्द वे तो से स्त्रा आतंत्र रहते का अत हित्रे हुवे ये परम्यु सभी शक्ते सिवरात्री का संदेश प्राप्त होने से पहले सो गये। मान सिवरात्री का संदेश प्राप्त होने से पहले सो गये। मान सिवरात्री का संदेश प्राप्त होने से पहले सो गये। सात स्त्री स्त्रा सुना, ज्यान से सुना स्त्रीर देव पर सनन विश्व सिवरात्री एका प्रदेश सुना, ज्यान से सुना स्त्रीर देव पर सनन विश्व सिवरात्री एका से सुना सीर वह पर सनन विश्व सिवरात्री होता सीर उसकी प्रयोग जंजन में वारख किया, कर किया सीर उसकी प्रयोग जंजन में वारख किया, वह सीर से सह सीर में सुना होते स्त्रीर से सार में पढ़ कीर

झसर को होड़ो" की बसीर के कारण धार्मिक सनन् में झा रही थी, गांची थी धांची ने वसे परमझ में परिवर्तित करके रख दिवा। झाज वह दुर्दिन देखना नतीय हो रहा है कि सत्य को कोई पूछना नहीं, झतरब को कोई होड़ना नहीं, महाचार, दुराचार का बोळ—पाला हो रहा है। सारी की सारी कीम का नीतिक पतन मा हो गया है जिस से स्मेत के कोई हकाज मही स्वान हो स्वान के दिव कि समावान द्वानन्व का सुस्ता। परमारमा करे कि समावान द्वानन्व का सुस्ता 'पल के मह्या करने भीर स्वस्त्य के होड़ने में सर्वहा वहच रहना

स्वित्रसार स्वित्र क्षा स्वतः स्व शिषरात्री प्रतिवर्षे क्षपता मृक्त स्वेदग्र तो कर क्षानित स्वतःन हर दी। यह सब वागते रहते हा वाती है परन्तु हमने कभी इसे सुनने स्वीः समस्ते व्यत्यास स्वा। वभी तो वेव ने कहा है :---

> 'विक्षष्ट जागृत प्राप्य वर्गनिक्षेत्रत स्वयं जागने बाला ही इनमों को जगा सकता है। क्षोपे हुवे सेहुनों व्याप्त किसी पर को भी नहीं बगा सकते आकेने क्षापि ने जाग कर संसार को जगा दिया। महींच द्यानन्द ने क्याप्त संस्कृति के जुक्कते हुवे दीपक को अपने रक्त से बनावा। विदेशियों और विक्षिमों डारा फैजाये जा गहे कम्प्रकार को सिदा कर देश को नेह को क्योंति से आलंकित कर दिशा और क्षमने अन्तरस्ता की कोति से अलंक्यता

बुकेहर दीपों को जलादिया। वह क्रम्बाय कीर अन्धकार को सहन न कर सके, इस के मुकाविता मैं क्रावी तान कर खडे हो गये। आपत्तियों का सामना किया, ई'टे झौर पत्थर खाये, विष के पियाते पिये परन्त क्या सञ्जाल कि सत्य के पद्य से विचलित हुए हों। ऋषि ने वर्श निर्भीहता के साथ आगे बढते हुए अपने शत्र औं को चैलें। दिया कि दयानग्द को तोप के मंड के द्या गे रख कर उड़ा दिया जाये. इसकी उझतियों की सोस बनियां बना कर जलादी जायें तद भी सत्य कहने से नही हिचकिचायेगा । काश, यदि कहीं श्रवि की निर्भवता चौर सस्य प्रियता का सः स्त्रवां भाग भी हम में द्या जावे तो संसार का नकशा बदल सकता है। प्रास्ता केवल इतना है कि ऋषि जागते से परस्त हम मोसे हए हैं। अकेले ऋषि ने असत्य अन्दाय और पाखरड के जिन किलों को मूमि से मिला दिया वा ब्याज पहले से श्राधिक बेग के साथ वह फिर सर उठा रहे हैं और इस भारी संख्या में होते 💵 भी आपने आप को इन का सकावला करने में असमर्थ पाते हैं। सच पछो तो हम महर्षि तथा उस के स्योग्य शिष्यों द्वारा किये आ चुकेकास को अपनी अयोग्यता, स्वार्थता, और गश्चिरों की लोलुपताद्वारा चीपट कर रहे हैं। अगत द्यारों समाज के प्रत्येक सदस्य, कार्यकर्ता व्यक्तिशी एवं नेता को इस विकट समस्या पर गर्म्भीरता के साथ विचार दरना होगा।

आज कार्यसमाज और इसकी संस्थाओं में बह मिरिट (Spirit) समाप्त हो चुकी है जो झाज से

१४-२० वर्षे पूर्व सङ दिखाई देती रही है। बहसी ब्राहित के लगीय हो। चीते भी फरकाते का साहस नहीं कर सकते परन्तु जब आग बुम कर रास का हेर रह जाती है तो उसे कव्ये और छत्ते भी रोत्रते फिरते हैं। यह प्रावस्था सात्र धार्व-समाज की हो चुकी है। जब आर्थ समाज जागता या तो कोई इसकी क्योर क्यांक उटा कर देख नहीं सकता था। हिन्दु जावि को सुमल्लमान झौर ईसाई बनाने के स्वपन लैने वाले मुल्ला और पाररी विल्ला में हुए गये थे, आर्थ समात्र के काले बों और गुहडूलों में से नि:स्वार्थ निभय और तपस्वी प्रश्वार निस्त्रते थे जो देश कौर धर्म की रसा के लिये त्रीवन बार्गेण करके समार में बंदिक धर्म की शास विदा रहे थे। परन्त जिस स्वतन्त्रता के लिये आ.यं-समाज ब्रोपेट समके परेवानों ने सर्वत्व न्योस।वर किया इस भाग्यता से वही स्वतन्त्रता आर्थ समाज को ले हवी। स्वतन्त्रता बुरी नहीं, परन्तु चालाक श्रकरेल शासकों ने विश होते समय भारत की स्वतन्त्रता की बागडोर जिन हाथों में सींपी दनकी अयोग्यक्ष अहर-दर्शिका और स्वार्थान्यता आदि है कारस चालादी बरवादी बन कर रह गयी। और देश की संस्कृति स्थीर इसके संरचक सार्व समाज के लिये विशेष रूप में घातक सिद्ध हुई । स्वतन्त्रसा के ठेकेवारों ने झपने झाप को संक्युतर घोषित धरके धर्म और संस्कृति के विरुद्ध अवर्षस्त जहार भारस्भ कर दिया है। इसारे राज्याविकारी प्राचीन सम्पता का मलोच्छेदन कर देने की शापथ ले चके प्रतीत होते हैं। हिन्द्रकोड विल और विलाक आवि के कानमें के अविरिक्त सब ओर शराव मांस सीर

# इसका भी ध्यान है ?

(ले॰-भी देवानस्द जी जाव<sup>®</sup> एन. ए. विद्यार्थी साधु आश्रम होस्यारपुर)

सुना होगा कि व्हिप के काने से पूर्व कसकता के यह महाराजा ने वेद जानके की बह दक्का प्रकट की। यक पीराविष्क ने वेद सुनाने मारम्य किए। नव वस राजा के दिल में गुवा वेदा हो गई कि वदि की दें देद तो दूर से ही जवाब । बाज भी जो संस्कृत दक्का दे करे बहुी गरिषमी विचार पढ़ाए जाते हैं। मजा विद्यार्थों को लिखना पढ़ना है कि

कार्य वीरो, शिवरात्री फिर कपना पवित्र संवेश क्षिये का रही है कौर जागने का कादेश दे रही है। सुनो, सुनो कौर ज्यान से सुनो। नागो हेरों में मांत, छुए का विशान है। बेहिंक खरि प्रकानिका से, क्यांचे करने जेगती पता भी प्रत्यक्ष हो जावा करता था, ये विवाद हाईरिलासितार की आस्टिटर होन तेवन में जिले हैं। फिर वस विशासी को यह भी पड़ता व जिलाता पड़ता है कि Religion dos vedas में olden horg में कहा है कि वरित खनेंद मारतीय साहिश्व खीर धमं की

श्रीर श्रमत्य श्रीर श्रम्याय के सामने क्राती तान कर खड़े हो आस्रो। तुम्हारे पास साधन स्नीत शक्ति दोनों विद्यमान हैं। देश के कोने-कोने में बार्च समाजें स्थापित हैं । नगर-नगर में आयो स्कल, कालिज और गुरुक्त मीजर 🖁 । व्यार्थसमाज के सहस्रों कार्यक्षी, इस के विश्वाद उपरेशकों की सेश इस की संस्थाओं के संस्थातक. बाब्दारक झौर उनके साधीन शिचा शांध करने वाले साखों बुवक जब एक कदम होकर वहें से संसार में क्षांति ला संकते हैं। आश्चरकता है तो देवल संघोजक धीर सगठन की। शिवशानि के व्यवसर पर व्यावेसमाज के नेशाओं, प्रसिनिधि समाओं विशेषतः सार्वदेशिक बार्ये प्रतिनिधि समा के कर्णवारों की एक विस्तृत कन्वेशन बुक्ता कर आधुनिक परिस्थति पर गंभीरठा से विचार करना चाड़िये और देश तथा धर्मकी हम रही नैया को

ववाने का उपाय करता चाहिये।

पाचीन कृति है तथापि वैदिक हास के चिन्ह उतमें क्सरोत्तर बढते ही न हर ऋते हैं । पिशल, गैल्डनर विस्तर्भन ब्ला मन के पोषक हैं कि सरवेद के समय में भारतीय संस्कृति उतनी ही जिनसित हो जुकी भी जितने कि श्रामाणि हरूप में इस सिक्ट्र के समय इसे जानते बाद हैं । पिटरनिटम सहोदय धावनं देह के सम्बन्ध में लिखते हैं, 'प्रचेप की बत्ति ने मल पाठ को विशाइने में कोई कसर नही होरी प्रतित होती। भाषा तथा खल्द के आधार पर सी हम यह कह सकते हैं कि वेदों का रूप अब बढ नहीं रहा।' ऐसे विचार आज सरकृत विद्यर्थियों को पहले को मिखते हैं। जरा और रूप देखें कि भारतीय संस्कृति के भावी स्वकों को कैसे भवक बनाया जा रहा है, किसी को ? इसी देश के उगते जीवन की यह विन विहासे पद या जा रहा है कि बज़र्वेद १० से २१ झाध्याय में सीकार्मायः सत्र का वर्णन हमा है जिस में सोश के स्थान पर सुग का बर्गान है। पुरुषमेध के प्रसंग में कम से कम १८४ पशाओं की जिवह करने का हुक म है। मेध्य पशु को युव के साथ बांधा जाता है व सन्दोधित किया अता है. त सौप न बन जाना.' जहां देट के मन्त्र 'एक सद्विता बहुधा वर्डान्त...एक एक बदेक एवं 'तं स्पर्साह कह कर एक ईश्वर की ही ज्यासना का सफलतवा मुख्दुरीस्या विभान सिखते हैं वहां श्री मैंक्डरनेल 'A History of Sanskrit Literature.' में ज़िलते हैं, The higher goods of the Rigveds are almost entirely personifications of natural

phenomena Sun, such as Down, Fire " and Wind.' झार्थे ! खागो । चेतो । झपने राष्य हैं वेद पर ढाका, बा वेद जिस के वा रेमें ऋषिषर ने द्मार्थी का परम अर्भ बताया है। हमार उद्देश वेद-प्रचार है। क्या ये विचार चलते रहेंगे ? आब द्यावीं के परम-अर्म पर पेसे थोथे सानालि विकार। हमारा लक्ष वेद-रहा है । सोवो तो | सही ये नानाविध वेद विरोधी विचार जो अजिवार्य सौर पर स्कृतों कालिजों में पदाये जा रहे हैं, क्या भानी सन्तति को श्रायं बनाएंगे ? सह न खेद ! द:ख के चार क्रांस क्यों न यहें। उस भारत की पावन जातसय चातो पर जिल धरातो पर राज का सौरव बृदिसान बन कर चशका, योगेश्वर कृष्ण का सद-र्शनचक चमका, भीम की गढ़ा व कर्जन का गांड व मक्कत हुआ, द्यानन्द की पासीह-खंडिनी पताका लडराई गई, उस स्थान में पैदा होने वाले यवक वेड के प्रति ऐसे नास्तिक विचार लें। प्राधी. हम पड़ते चारों नेतों के भाष्य कीन २ से प्रमाणिक रूप से हैं यह घोषित कर दें। आहबो ! किंस बात की कमी है, कहीं लहय तो नहीं मूल गर, भूते लहय वाला हो तो निराश होता है हमारा सहय है वेद-रका, हां मरते दम तक बाद रश्विप वेद-रक्षा। धार्वों के वस्ते क्या इस पावन बेर-आसी की पड़ने हैं ? आर्यसमाज में बड़े २ प्रकांक परिवत हैं। केन्द्रेय सभा इत सब को एक जगह बैठा दर घडा-सम कितावें प्रकाशित करावे लाकि वेद-प्रचार हो सके। बाद रखें, बाज भी जितने वस्ता, सेखक, विद्वान् आर्यसमात्र के पास है क्तने कहां ? परन्तु विखरे २ से हैं। उन से वेन्द्रीय समा कार्य है। वेद रका ही हमारा शास से भी प्रिय कार्य है।

# नया युग उमड़ कर उसंगों से श्राया

रचिता--श्री राजेन्द्र जी 'जिज्ञामु' एम, ए. शोलापुर सहे कट कालों नहीं सङ्ख्काबा बचन को पतन के गढ़े से निकाला!

निर्वल दीन असहाय वे देशवासी विदेशी सभी लिलिवां थे उकाते

निशामी सघन मेघ इसमें हुए वे विनारोक हुल्सड़ निशामर मचार्त

बहुं कामा हित्ये वेद भातु को स्वामी—चतुर्दिक हुका विश्व में फिर उजाला ! सकल झान गीरव प्रराना हुटाकर

इ.संकी वक्त एइतालो चुका था धूलाहेप ज्ञांत में घर कर चुके ये

अस्म-भूमिक शास्त्र हो सो चुकाथा साम प्रदेश करिया है स्थान करिया आर्थिक वेट वाला निराता

पुनः सुध्त शक्ति हिलाई जगाई यह काथा ऋर्षय वेद वाला निराला] लो नेनाक्षेत्रे भीतो भटके हुए थे

जानतास द मातासटक हु५ थ कुमारग में जाति यह अपटकी हुई थी

किया भारताईयों ने बरवाद भारत वृंही जान भारत की लडकी हुई वी

वह सोतों को सब मोर जिस ने जगाया, था खामी दवानन्द साहस की व्याला परसन्त्र श्रद्धियन ये भारत निवासी

परतन्त्र क्षक्रियन य अरूपा निर्मास मेरे देश का मान ही लुट रहाथा ऋषि देश की ट्रेसा सह सकेन

म्राव दश को दुरसा यह राज्य भ्राविता से दम देश का युट रहा था बहुदी जिस ने ब्रावस्ट टार्गेको चुनीती, वह था दिल्ब कोगी म्रावि वेद वाला

बहुदाजिस न आकर ट्याका चुनाला, वह या विश्व नामा कार्यप्र पाला श्रृति के श्रवच पर प्रतिबंध हूटा नवा युग उम्रह कर चर्मों से आवा

पिलाई सुधा देश ताति को जिसने हसाहल गा प्याला जमी को पिलाया

हुआ हीन अप के हिंदे ने पुकारा हमें गर्थ से उस ऋषि ने निकासा यह निर्मीक साधु सुधारक निरासा

बहु।नसाक खाबु खुनारक सरका द्विय मानुभूमि का क्रिस ने टटीला क्विया सर राजों का क्रमिकान क्रिसने

कभी धनकियों से वह साधुन दोला हुआ। देश स्वाधीन जिसकी द्या स—दयातम्ब स्वामी तेरा बोल वाला

# आर्य साहित्य मण्डल् लिमिटेड, अजमेर

### कुछ प्रमुख प्रकाशन

चारों नेद सरत हिन्दी अजुनाद सिंहल-४४ किन्दों में मुनव ११२) २० वन्नम खानहै, स्रोक्त दिवना कामत, बदल कालन १६ देतों के सुवान बामार में, मलोक जिलद पूरे करने की बन्दा हुं सुनदृश आपने सिंहत । सामवेद १ जिलद में २०, अयवेदेद ४ जिल्द ६२) २०, बजुबंद २ जिलद १९) अपनेद ७ जिलद ४९) २०।

सहर्षि जीवन चरितः — जी देकेन्द्रनाव भी द्वारा 'संबहित व वं॰ पासीराव जी मेरठ द्वारा अनुनावित, दीनों भाग वाजिक्द व बनेको बटनापूर्ण चित्रों ते बुक्त, कबर पर महर्षि का तिरंशा चित्र आर्ट गैरर पर मृहत्व ८) ६० प्रति भाग ।

द्यानन्द् वाणी :--पुस्तक मे महाधि के बचनों व उपदेशों को उत्तमोत्तम ढंग छे संप्रहित किया है, टाइप बड़ा, कबर दो रंग का, पट्ट सक्या २४० मृत्य केवल १.४० ग० पैसे ।

यदिक इतिहास विभन्ने :—सेवक बावार्य वेबनाव भी शास्त्री : पुस्तक में समस्त पारचारप बीर एनदेवीय विदानो द्वारा माने नए वेदिक हतिहासी का क्वेप्खापूर्ण निराकरण करते हुए निस्तिहास का वास्त्रदिक पूर्व बेबादिक स्वक्त दिक्षमाया गया है। मून्य समिन्द ८) स्पता स्वीक्ट ७, ४५ न० देवे ।

क्या वेद में इतिहास है ? :—से॰ हव॰ प॰ जयवेद जी धर्मा विश्वालकार दुवित एवं सोजपूछ प्रामाशिक प्रत्य, मृत्य २०५० ने॰ वेते । कर्म ग्रीमांसा :—ने॰ सावार्य वैद्याय साहती, पस्तक में नीति के मुनतस्त, आपरधर्य वर्तन्त्र

बौर अधिकार, नीलि और विधान नीति आदि पर भौतिक तथा तारप्रित समझी है। नवीन तथी तस्त्रीचित त्रकरण, मूल्य २-२५ न० पेते ।

भारतीय समाज शास्त्र :—तं ० वी धमंदेव वो विश्वामातंष्ठ-स्पृथ्यिम व्यवस्था, जार्य संस्कृति भारतीय समाज वे रित्रयों का स्थान स्वादि विषयों पर अपने हव की अनुत्री पुरतक मृत्य २) ह०।

धार्मिक शिक्षाः — डा० सूर्यदेव चौ धर्माका जार्यवासक वालिकाओ को पढ़ाने के लिये क्या १ से १० तक के निये बहुत ही उत्तम पुस्तके १० मानों का मृत्य ५) २० ५८ व० पैसे ।

उपनिषद् संग्रहः सनुवादकः --प॰ देवेन्द्रवाय जी वास्त्री शास्त्रतीयं दृष्ट मे ईस, वेन, कठ, प्रक्रा, मुक्क, नायुक्त, देतरेस, तैतरीय व खान्दीम्य उनित्यद् का सरस बीर सुवीय मावानुवाद है। स्वाधिक सहसरण संविद्द मृत्य ६) र०।

श्री कुरुता चरित : --श्री घवानीचात वी मारतीय --मझाशरत, गीता, उपनिषद, पूरण तथा बन्य क्यों का मन्यन करके खिढ किया है कि श्री कृष्ण जी परमयोगी, महान, शवनीतित, बेद सास्त्रों के बिढान में --मृत्य १.२५ न० पैंडे।

सरसंग यद्भ विधि :-- ते०, वर्षेन्द्र शिवहरे--यत करने वें पूर्ण क्य से सहायक, विधि त्रमानुसार और मन्त्रो का सरल हिन्दी से अनुसार--- मूल्य २७ न० वेंसे ।

स्वाध्याय स्रीर प्रवचन :—ते० थी रामेश्वर साहवी मुख्याध्यापक गुरुहुव विश्वविद्यालय, बन्दावन । मन्दर १,५० न० वैते ।

वेद अनन्य ज्ञान राजि का सम्बार है। इतका स्वाध्याय और प्रवचन स्वार्थ शान का प्रश्नाश कर सानव नाम का करवाण करता है। इती उद्देश को तेकर वेदों के स्वाध्याय में सर्व सामान्य की अधिकरीय पैदा करने के लिए यह पुस्तक प्रकाशित की गई।

बेदों व श्रन्य साथे प्रन्यों का सुबीपत्र तथा परीक्षाओं की पठाविधि सुमृत संगावें।

# महात्मा इसराज साहित्य विभाग की

# श्रनुपम भेंट

जो कि-( क ) स्वाध्याय के लिए उपयोगी हैं। ३० प्रतिशत कमीशन (ल) द्यार्थ सिद्धालों भी पोषक हैं। प्राप्त करें।

(ग) स्कल व कालिजों के लिए उपयोगी है।

इतनी उपयोगी होने पर भी प्रचार की दृष्टि से कीमत बहुत घोड़ी रखी गई है। अमृतवासी-स्वामी प्रकाशानन्द जी-ईश्वर प्रायंना, ओंकार महिमा, धर्म और विद्या आदि

विविध विषय बोधक महापुरुषों के अनुभुत बचनों का संग्रह । प्रात: उठकर पाठ करने का छोटा-सा गुटका दिशेषकर खाध्यायशील व्यक्तियों के और छात्र-छात्राखों के पाठ करने योग्य। भूमिका लेखक श्री आयानस्य स्वामी जी सहाराज। बढ़िया पक्की जिल्द सुन्दर मोटा टाइए । सुन्द देवल लागत मात्र ॥) ऋजिल्ह ३१ न. पै.

सरवार्थ प्रकाश आध्य--(प्रथम ऋौर दितीय समुल्लास) सब क्राचेशें का उत्तर । पृष्ट में नए प्रमाया । मृत्य १) प्रति समुल्लास ।

प्रभु दर्शन—इस मे मन को एटाप करने कीर प्रभु दर्शन पाने के सरल साधन बताय हैं। पृज्य महात्मा कातन्द स्वामी जी इसके लेखक हैं जिन्होंने समय-समय पर अपने प्रवचनों में भी मन को बशवर्श करने के सन्दर उपाय बताये हैं। पुस्तक चित्ता क्ष्यक है एक बार देखते ही मन आकृष्ट हो जाता है। मृत्य केवल ना।} मात्र

महिष दर्शन-सं० वि० दीवानचन्द्र जी एम० ए०। स्थामी दयानस्ट जी का जीवन नए हांग और नहीं खोज के साथ जिला गया है। स्कलों में पारितोपिक के रूप में देने बोग्ब स्वर्ति उत्तम पुरतक। मूल्य 2 28 N.P

जीवन ब्योति—ले॰ प्रि॰ दीवान चन्द्र जी प्रम० ए०। वास्तव में मनुष्य अपने जीवन में कैसे सच्चा प्रकाश पा सकता है जानना चाहें तो इस असूरव प्रस्थ का पठन करें। मू.॥)

Dava Nand His life and work - से वी सर्वभान जी वायस चांसलर करलेन यनिवसिटी । सल्य 1.50 N.P

षडदर्शन समन्वय--पं॰ बृद्धदेव जी मीरपुरी--बह सिद्ध कर दिवा है कि छ: दर्शनों में नोई विरोध नहीं । मूल्य १।)/सभी पुस्तकों पर डाक व्यव प्रथक देना होगा ।

सिलने का पता-

महात्मा हंसराज साहित्य विभाग A.P.P. सभा, सिविल लाईन जालन्घर

#### D. A. V. College ttee Chitra Gup MIST OF THE OFFICE BEM



- 3. R.S Dr. Mahayay Krajina B
- 4. RB Mau Mohan
- S. R.B. Boy Wahan Lal.
- 6. Shra Surty Bhan.
- 7, ShraC L Atland.
- R. R. B. Dr. G.D. Know. 9. Shn Lal Chand Khansa.
- to. Sho S.L. Verses.

### 18 Shin Boy Lal Oheman

12, Dr. D. R. Mehta

15. Shr. Paras Lai Sood.

- ST San R N Gusta. -de- 15. Rmc Road, Lassel. Nagar, HEW BRIDE.
- 14. Shin Amer North Pen. -do- D-00. Defense Colons.
- Externo. NEW DELHI. 16 Sho Tessa Raza 13246, Krohap Neset. Chankron Pun.
- 17 Shri T. II. Tale - New Bank of Indo Ltd. Gestral Ottice, Cesnaught Place,
- 8. Wes Some Ram Known.

#### Nese net or Robtak Roed. TART NO

### डी० ए० वी० फार्सेसी



- १ म्या १ मार १ १० दे प्रत्य के मूल भारत है अब रा भारतीय प्रतिह अस्ता प्रत राज्य के के के का जा तथा है के बार का अब and the state of t 2 12 1 12 H 23 2

> इसे २.स प्रदेश व्याचा वर्शन हेंद

#### सनामक

19 AF - - 54 - 5

प्रकाधक डो.ए.बी फार्मशी दी. टी होड जालंबर गहर

ार - प्रशासिक धार्यक्रीय स्थापिक स्था s, वर के त्याबि वर्शन अर्थे के नाम प्रथम की मी **कड़के सांब**े

of the see where and in property with the स्क्रीक है। कार्वशरेरिक श्रीविनीने क्या रजिस्टर प्रत्या हो इस वह से व्यक्तिये हैं।

हैं क्षोपान इस हेम हारा पोक्ति काका 📗 कि फार शिक्ष विक्तें की सुक्ता 🎹 जान व विकास के बहुतार सर्वश वस्र पूर्व है। (इसरका) संबोधरात बचालक चार्यकरा, मॅबिन्स

#### श्चार्व समाज सैष्टर = चबहीगढ में

क्रांबरोप असम ६-२-१४ को सम्बन्ध हुआ। इस क्वाबर पर पीन सुरबच्च की, क्रियोपन जो विज्ञेकीशय की, दं- शक्तकांत्र की, की मानि सकर हो, के बाधाराम की काबि बहाद वाची में बाने करेवानी याच्यों हुआ महर्षि स्वामी स्वानन्द जी के परकों में महांस्थित वक्तिं ही।

NEW DELET.

NEW DELSE.

NEW DRING

Accountant. A-20-21, Numerathon



[भार्यप्रदेशिक प्रतिनिधिसभा वजाव जालन्धर का साप्ताहिक मस्त्रपत्र] रेजीपोन न० ३०४७ Regd No. P. 121, व्या प्रति का सुरक्ष 23 मुक्ते देखे नार्विक समद ३ दरवे

वर्ष २४ अक ह (तार 'बादेखिक' जालन्यर १९ फाल्युग २०२० मविवार ... हयातन्दान्द १४०-१ मार्च १९६४

मनमा परिश्रमा मन्त्राः

पित्तर इपवः । तम्यो नमोऽधिपतिस्यो नमो रश्चितस्यो नम इषुम्य नम एभ्यो व्यन्त । योज्सान क्केप्टि यं वयं द्विध्यस्तं वो जम्म दभाः ॥ व्यवं का ३ व. २७ वन्त्र २

क्यां-हे दवासव ! (उक्ति दिश ) इसारी इस शहिसी क्रीप्त की दिशा में (इन्द्र ) पेरवर्गशानी ब्राप (श्राधिशांत ) तक के स्वामा बन कर विराज्याय हो। उस दिला के जो भी (विश्वाप ) देही पास नर्ज (राजी) तिवेक योजी वार्ज वरे स्वधान के हैं, इस से सब की (रहिता) रखा करने बाले हो। एन विशा ने आप बी हरा से वो रिन्द्र-) ज्ञानी हैं, कारू ज्ञान क्या विदा सनुसर भारि से जो वहें हैं-हेते दिव्य क्षेत (इपय) बार्कों के समान है। वे बाबावन हानि वह बाने वालों को हम से दूर सवाते तथा कर से हमारी सदा रथा करते हैं। तेथा नम ) इस दन विकरी बटों की बादर नमस्कार करने हैं। वे हमारे विश्वांत्रनक हैं, बीरव के utu की रक्षा करने वाले हैं। हफ़ारे किए जाता के सकात हैं, उन की सम्बद्धाः है । (बीड/मान देशि को भी हम से डेच करता या जिस में हम देश करते हैं (त व कश्मे दश्मा) हे सभी ! उसे इस भाग के

थार --हे परवरीतव ! हाँच्छ दिशा में भी इमारा चयत मन अटक २ कर कक गवा । किर बड़ा भी देशा कि ≸ार सांग शकार के सदा देश्वर्ष अरहार के स्वामी यात कर न्यापक हो । उस दिशा में को भी खंडम तर्व बाल कार है, बहिल श्वश्रव के कोन है, उन से हसारे बीवन की तदा रक्ता करते हो । एयर जो झानी पुर कन फिरर है, वे क्राफो जान बकारा के हार। इसाशा एसका करते हैं । समय र पर क्राफो दिन्त प्रवर्तमाँ, प्रवयनों से सन्त्राने पर बताते रहते हैं, कुश्य से बधाते हैं। हम का को, जान देने बालों, करने चनथ्यों से हमारा अन्यारा बरते नालों को साथर नवस्कार करते हैं। जो दूरा है, उसे काल के स्वाद में संट वरते हैं।-वं,

या व्य भूमि दा 

वेदा मृत

योग दक्षिमादिगिन्द्रोऽधिपतिम्तिररिषराजी रचिता

## न स्वामिन्द्रातिरिन

हे इन्द्र ' स्थाप--बाध से रम से न अधिरिय्यते – सप्तार में कोई भी स्त्रीर यह कर अही है। भार सब से प्रकार है ब्राप से और कोई भी बद कर मद्राम तथा भेत्र तही है। इतव मयंत्रेंट्ट, सर्वे व्येष्ट हैं। आप व्यक्तिमधी नया व्यक्तिपारी है।

इन्द्रं वाशीरनपत हमारी साथ काविता-खुतिया, भवित्रस सरे बीत उसी इन्द्र को ही मृति प्रशंता करती हैं। वे देववाणिका चौर सक्के सन्दर सक सकियां वसी मदाय ान की जनांबा करती है। उमी के सपर गान से भरी छं हैं। हमारी साथी में बदि प्रभावायान दैतन तो यह

#### सरस्य है। वाजी ददात्वाजिनम्

**१९ माओ—सम २२, इ**स्त बादि का दला परमेत्वर मन्द्रे क्रीर सब को वल प्रशास करे. **झात का मधा**र हेते, सकि परावस का शास देश रहे। उसके विका इस सम्बद्धां को चौर देने नाता भी कीन हैं: बह प्रमु छवं राकियान है, हमें ध्यासा बनावे । साय देत से

.श्रिष्यता—संतोष्शाज समा मंत्री

सम्पादक---त्रिलोक चन्द्र शास्त्र

ऋषि दर्शन

च इलोकः पश्चित्रीमन

यद् पान्त्रतोद इस र्याटकी के

चारों स्रोर भ्रमश करता है।

पृथियी हो हुयें के गिर्व चक्कर

क्ष्याते है और वह हमारा चन्द्रशा

इम इसारी परवी के जारों ताफ

यमण रहता है । इसकी गति का

द्याबा एथिती एजेते

पुषिशीक्षीक दीनों खोक ही गरि

करते हैं। एक झाकास में कपनी

पूरी पर चमता है और यह

इमारा भूमिलोड व्यवसी वरि

करना भी सर्व के नारों कोर

मोमश्चन्द्रलोक:

है। शीवन यात विस्कों ने

सम को शीकर करके दाप हा

चर देता है। बनस्पतियों, औष-

भियों में रस बरता है उसांबर

पन्द्रमा को स्रोत नाम दिवा

क्षेत्र पत्तकोश को बढाते

र्वात करता है :

ज्ञाता है ।

बह क्रजोब का सुर्व क्या कह

नियम मिवत है।

### मैटान्तिक वर्चा-

बद से देशा ही सपता का रह

क्षीमा । इस विश्वमे इतना विवेचन

**इ**स्ता **इति** चायस्यक है कि

मासिका द्वारा ही केवल मात्र में

### प्रात्मापान की परिभाषा

(तेलक-श्री र संस्थप्रिय वी चास्त्री सिद्धान्त सिरोमसि) (गशंक से कार्ग)

\*\*\*\*\* कार बर्डाए बेरस्वास दश कल में

न्वय महाँप दशासन्द के सम्बद्ध

मापा के राज्य प्रमाद्य की स्थरियति

में शक्षामान के उपरोक्त कर्ड डी

बाबु होड़ा अध्य बह प्राया तथा डीच एवं काचे पर्श्वत वेशक सिट होते हैं : इसके विषरीत विदासे **मध्**य किये जाने वाले कप् को ही हारा किरय-पति किये जाने वाले क्यान कडेंगे । क्योंकि योग दर्शन के इबास प्रदेशक राज्यों के पर्याप सनमाने बार्ष प्रज्ञति से सर्वहा बायब दें और खास नार्सका का विस्त्र एवं शास्त्रों के प्रतिकास होने से सर्वथा देव है : **विषय है** । यह श्राद्यापान भी सामना पत्र की जिला सम्बन्धी व्यवसाया का विषय है। परन्त माधारमा इत्येश संस्कार से जो बात् बाहर विस्त्रता है वसे मी श्रपान रहेगे । परन्तु वहा यप राज्य श्रानेकार्यक व होकर झांतकत राज्य बाषक होया क्वोंकि सप तथा कथ **दोशो राज्य डॉनरा** के मी वोतक के बधा-यान अवमान उत्पादि में फान्त वह श्रवस्था पत्र प्रकरण भेद होगा। इस सारे प्रवस्ता वे के बक्तान इस निष्याचे पर महंचते हैं कि महविं दवानन्द औ

**क्षे प्रसन्** का कार्य बाहर से भीवर काने वाका वासू किया है। यह वर्तना वर्तन 🗎 शहा सक्तम है। इस बात की प्रीट की क्लके बेट वर्ष भाष्य मस्त्रिका 🖟 बरकत के क्यानों से त्याह स्पेत हो बाबी है। सहर्षि बयाबन्द के श्चादिश्य का संस्कृत भाषत का उत्ता कारी के मुसार्यन्त से सिसाया क्या है, इसमें सन्देशको स्थान नहीं है किसी माना की क्येगा संस्कृत का राज्य प्रमाण प्रतिक नदानपूर्व है। क्षक्: निवस्त रिकेयता मर्शव

यत्क, धोयदर्शन के विक्वातकाष्ट्र

महाशव ने वो प्राय का सथ अर्थाट

से बाहर निष्काने वाका वाव

### बिता स्विता फल

(रवर्विता-समबन्द्र वी 'मध् श्रवित नगर देहली) 158. होसस होफारें हो. पाद कर, इन्ह बाहर कामा था.

वि इस क्याबान की. सन्दर समा ज्याव देशा न नाम देखा शीम उससी शेव दक्षा। विवासिका H St. इस ही रोच में, दर्को ददा । डेक्स्स.

प्रवृद्धियां सक्.

बदवाने.

दो-रोच स्सा.

चाम सर्पते.

दमे क्या सिम गवा !

त्रार्वसमाज वसना नगर मे ऋषिकोषोतस्य ११-६-६५ की सब धनधान ने. बार्यसम्बद्धां का सर्विक्रान्ति रूप हैं रेशा उसे फिर. वके समारोह से मनावा गवा: वसक दाला। विज्ञान स्त्री परचे के करिरिय क्रमारे গ্ৰহৰ হাল। ਦੀ ਕਰਮੰਗੀ ਤੇ ਸੀ ਸਭਤ ਰਥੀ ब्रिट वर्दे. म्बारवान हर अनवरी जास में उसकी सुचन्थी. भी ५० विषयताय श्री ने असम्ब प्रदार कार्ये के ब्राविरिक 🗏 ज्यान सब के राज बन गर्छें। रामसिंह जो वैद्य के भ्राटा III राम-पुत्र भी द किन्दगी, गोपास जी पस य. की सपनी का दो-रोज में ही बिट सर्द । अब बरण सरका संस्था है कि है है के शेक्ष कर यह प्रमा

महाम बहावर बन्दा को सविकालि बाम से सर्वावद किया । इप्टब्स्ट बार्व यत्त्री समाक्ष

आर्यसमाज मोडलटीन गुडवाबो से अधियोध उत्सव स्थानीय र्म एक संबोधकों <del>दें जिल्ला रिक</del>ा SP SPRING NZ 1 TOTALS वी रामगोपाल जी साज थाने. क्याचार क्षत्रपाल जी एसः प्र क्रमारी विजय क्षता चादि प्रामेक सदालकाची ने वर्णच चरवाँ में प्रवादिक्षां करित भी। वज्ञासद सिद्ध सोहरा

वनी सम्राप्त

बी ए वी BLS स्कृत वाकाचीर है ११-३-६४ हो स्थानीर धार्य क्यान सीर विस्तासन की सामे कारात सभा ने ऋषिकोध शतक समारोह के साथ सम्पन्न किया। हबन बह के परचात हाओं ने सनी-### ভাৰীকন বৰ্ণাধন কিবা। बात से समाध्या महोदन ने महि श्यामन्द्र की के जीवन की माकियों यर शहारा कासने रूप उनके पर्दर्शन मार्थ का को की बाओं को वेरणा क्षेत्रस सर

विसीपस सहस

वित्र वसे. कुनल दिया ! 10रे । रोपयी वह बाव जिल्हा सहाया. क्रव पर पड़। बोलेंगे वह पात. विकास सरीका श्रीव या वह ! का शिएका बाग का माखी. 🗏 जिस से उब धर.

> भार से सीचा वा स्रयने चीत को. कि पद्ध विश mitetti I क्ष्यं कृष होगा । बरे बेरान वाए का, शाधा वनेगा : बिट वर. करमान व्हरे. वेरी इसरब बिट गई. दो रोज् में,

रव द्वर की.

सम्बर वहात्री विट गई।

दयनिन्द-बचनामत

"बोर्ड गाव दो सेर इस देती है और बोर्ड बीस केर। यरि कीलत न्यारह सेर रूप ही रख बी आये तो एक मास में दूध गार का रच बना काठ बन होता है। बोर्ट गाय क्र साथ रच देती है बीर कोई कटारह मास । दूध देने की ब्रीयत् बारह साथ निका कर शीविये । शरह साथ का यह दूध निवासे सन होता है । एक मनुष्य की हाति के क्षिप वो सेर हम की सीर पर्यात क्षमा करती है । इस इक्स एक गाव के एक वर्ष मर के दश में एक बार पदलीय सहस्य काल को बालीक मनुष्य तुत्र होते हैं। यदि कालकी वीतिकों का विचार कियर कार्य हो। एक ताच से कार्याकृत कर्नों का पासन होता है।" (मार्थ) संबद्धार की।

सम्पादकीय-

वर्ष २४ रविवार २०२०, १ मार्च १९६४ বিক ং

सभा का समारोह कार्य प्रावेशिक विनिर्मय समा ¦ इस द्वीर विमेव भाव देश चाहिए चेत्राय प्रातम्बर्ध का कविक कवर । प्रश्नाय प्रयान सन्ते इस मास्वयक

श्रीर निर्दायन अधिनेहरू यहे जुनता की पूर्व दरने में यह जाता समारोह से व्यर्थ समाज सोदगद होता । किसी समा क लिए उस के के अस्य मन्दिर में ता० २३ फर्नरी मारे हिनैक्यों की फोर से उस अधिकार की सम्पन्न ही गया। : bask की भागवा उसकी क्रमनि की इसका विस्तार से विवरता हो। इसी ही निवानी है । इस के याद कार्य **बारू** से धान्य स्थान पर ब्राप क्टे गे वासी सभा द्वारा ध्वरतपुर बास व एक बात की बती प्रसन्नता है कि मनाई जाने बाबी बदात्या हजराज समा र इस सदत्त्वपूर्व मधिनेरान बयलों की कार्य बोजना पर सी के सभा से सम्बन्धित प्रताह. पर्याप विचार होता रहा । यह वडा देशकी, दिसायस तथा सम्म नार्ध रक्तराक्तिक हे जो सका ने कारबीर सारे स्थानों से मान्य शिया है। भारी स्टर पर मैनाने का प्रतिनिधि सभ्यन द्यारे इव से। विचार द्वा। कृपयोगं समाव बार इस बात का परिचय है वि सामने व्यापे । एक्ट समाइव पर सभा के कार्यों एक ध्रयनी इस भी बड़े प्रसन्न विकास राज्य विदे : बहरी साथा के साथ समाओं का मान्य प्रो० वेदीराम तो शर्मा एकः बरानाम होता सीर कित है। अपने ए० जाजन्यर मध्यम **ग्रा**ये श्रवह केल्प के बाविक अधिकेशन की सगढन इस दिशा में जो प्रश्नमनीय क्रकार करे बकारों की ही ले बार्ड बार हरे हैं तथा अवस्थित पर सफलता है। श्रांत्रनिधियों में अपे यक्त कार्य चल सद्दा है। सरस्था n'd er die it neumma Wista हुई। सभा के रभार, साहित्य तथा मार्थिक थे। इस बाव की सब को सार्थिक विभाग की सविक पुराव हार्विक क्याई हो ।

प्रगति के साधवीं पर व्यक्त दर सुन्दर विचार विनिवय होता रहा । व्यने ह योग्य सन्तर्ती ने आपने न बड़े कावश्वक, डोस स्प्योगी सुभाव दिवे । वहा समा की काँमान बार्विक द्वाराध्या को नामल बरने के लिए भी विशेष सामनों पर विकार होता रहा । इस कल को देल सन कर हमें गीरव है, कि सारे सरतन दिल से इस बात हा अनुभव दरत में कि हमारी -समा 🎟 रूप में बहुत ऋषी बन

शर्ष । सारी हमाजी, सम्बद्धों को

समा के चान कार्वों की विशेष

पक्रता स्तने पर प्रापना २ र्राष्ट्रश्रीत

मान्य अधिकारियों की आनी विशी

रास जी प्रभाव, भी प्रीड रेपबल जी

इस मधिरेशन की सफलता पा

धारे समाजों के मान्य *प्रां*कतियाजी ।

को कवार्त हो तथा जोहरार सहारा

-Sale ma

के सम्बनों का कन्यवात ।

कासारा प्रकल्प मी स्टब्स मा। ज्याद स्काश सके।

वस्त्र इसका एक इयरा थे

भारताय होता है जिसे उनक बार

कियारमञ्जूष में पर इंडाने य

तास के प्रकार जाता है। पहते को

बोजन वा स्थ क्रम्बाट करने हैं

क्य दमरे हो मारमा करता करा

बादगा। बोक्रशास दमे तद भी

बाब व्यक्ति होता। इस्ते शहर उस

रसा। शार्थसमात्र लोडकर

कार्य में जुट जायें

सवा का वर्षश्रेशन समारोह । बोजना को संपालित न किया **जार** से समाज 📗 यया वार्षित काय वर भी काम नहीं होता । यो अस ब्रीर किया वे दोनों हों वर्षी सफ-सता मिलतो है। सभा का एक ध्यम्बाच तो हो जुका, शब इस बोबना के सम्बाध को किवार्रका भन्ने की काश्चयकता है । सभा *वे* रक्ष करिक करियेश्वर में सारा के सारे के किया है जो उत्पादा किया का धार पुज्य सहारक्षा कामन्द् न्यामी औ सहाराज के परित्र कन्यों पर जिस होस. सदा से एक वर होक्स बता है. वसे क्रिकान्य बरने के ब्रिय कार्य रहा, शह, 4न ले की धर बहरोत देश है। सक्ता इसराइ उचनी का रही है : उसके जिल सभी से नैयार बिहर सभा का श्वान चनाने वे हो जस । इस वर्धवेशन में मारे बिए ग्रुम नाम पश किया उसे लारे सकारों के सान्य व्यविविधिकों वे धारत के सारामों से सारकारियों मिलकर, सिर जोज्यर को स**मा** श्रास्त्रक्ष से प्रमी **करना** ार्टिन बी हर प्रकार की उन्तरि के किए दे माथ एकमत से धनपोर्थन का योजनारं पारित की हैं, कर उनकी दिशा: सभा के केन्ट को यहर पर्देकाने में जद आएं। बनाने दरभी सम्बद्धि। ता सर्वे ।

रिजी स्नेड मी व्यक्त वर दिया । हमारे वर्त सकास में रहते वांत्रे जाएको वर जो आस्कापार अप हैं वे संपेतिदित हैं। वे आई बहे उनके कप्टों में सहयोग देना है। क्रीर यह इस वर्ष होली न सनाचन यरकार पर प्रशाव प्रात्तवा है। क्राना है काए लोग होली न बना कर पन्तान पास करके सरकार की भेउंगे। प्रापते-सपते चंद्रों है सनाग करके अनला से आयेना करें

> रामनाच-मन्त्री शान इंडिया दवानन्द सान्वेशन

विशन इक्षियारपुर ९, बिस्वम्भर दत्त जी नैनीशास

में और प नेवासमधी की ध्रद्रशब में बचार बाद पर निवृक्त किया है। --रादिकाश सन्त्री विश्वन

न्दव का बत्तद शर्मित हो जुका । समा के पुराने वर्ष १३६३ के सान्य फर्निकारियों मानलेव विशियस रताशय भी पन. ए. दश, पन. प भी ना सक्तोपात्र जी नदा प्रस्त लक्षा के सहबोगियों ने जिस के म 821. स्टब्स के मा**र रा**जा कार को ==क्टा से निकादा उसका विशेष क्ष्यकाइ किया गया । इस माधि ইয়ৰ ক ৰথাখনি মাঞ্চন হিনিখন रम्पास की बस. ए से अवसे सभापतिस्य के उन्ने ब्यासन से श्वव पुरुष महात्मा ब्रामन्द ।शसी की महाराज का इस क्या १६६४ के

—जिलोक्य देशे के बन्धों को परिवर्णन कर देने श्चर्य हिंद जनता होली के बारे के ब्रायम रोग और प्रस्ट बर दिवा। सभा के प्रति क्यारा ।

न मनावे

महात्मा इंसराक अवली मनाने पर भी ज़िवात्मक विवेचन हो एका। यह यह कुद समा के कार्य | हुन्तो है। इस कारस हम को मी at or sprange source or of विक्यें होता है और होने रहना वाडिय, वाडि मश्रा की वार्षित १म० एस सी॰ मन्त्री भी १० भर्म- | क्वित सामने **भा**ती रहे : उसरी वाल जी म्यूनिसिक्स कविश्तर काहि । इसित भी तथा म्यूनश भी होन्हों का कि वह होती व सवार्थ।

### ब्रार्च प्रादेशिक सभा का अम्तरार म वाषिक अधिवेशन समारोह पज्य महात्मा त्रानन्दस्वामी जी सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित

### मंत्रिमंडल व प्रन्तरंग जनने का भी सर्वाधिकार समर्थित

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* सार्थ वर्शनां स्वीतांथ स्वा विभिन्न, सम्मनको के सरता, विभाग सहना सा कि स्व को घर तोच प्रशास परिव दिवा

काम अध्यास स वाहित बंदर- राहित केंद्र में कार्ट करने बाई जना का किवना दिए हैं ; किस र सदा हो, वैहीरास की स्माह सं प्रतिदेश बार्ड जापार में सन्पतार का बाव किया नाये । सना निशंपन क्षित्रेतन सार्वतसाय A fermio ferms on certa ar ferma sherr exfest क्षेत्रमं क्रमुस्सर के सान्य carra aus arà min mina क्रांक्सिवियों से स्थाप दिवासम थे। मानश्चेत्र शादा मुद्र प्रस्त स्टि अभावति के कामन का बाक **पर ता**० २१ करवरी १९६५ श्रीकार जी के इस कर देर कहा सभा क्षेत्र विक्रीयत स्वास्त्र की दम ए को होध्यर बाद हो की कार्यसमान प्राधिनेत्रक में दर्शक कर विक बढ़ा विशासकान वे तथा उनकी वार् बोधनद के विशास एवं प्रध्य वर्जन ही प्रकृत हका । सान्य था. देशे क्षेत्र ही हा, स्कोपराम की महा-बे समारोह पूर्वक सम्मादनीय जिसिpoel देते थे। वर्तप्रक निवरण परे कराजी, जा सक्तारमधी स का रकाराम भी एम० ए० एम० बाने से वर्ष की, बत्नशीरतिंद्र जी टुरम कर हो, सा सन्देश शास बार पा के समापटिशा में नेत à se हो वैद्यानिक बातों का स्पष्टी-वी देतों, दीवान वय सम्मानदा बादा गावजी बना के समर्थेत ब्रावा कालता बाह्य हि इस्थिनेशन बी का परमेरकरी दास औ, विंतपत क्रमारण के साथ तमारम्य रूपा । ச்சுமால் க்கி மிரிவிக்கும் ச क्षान चन्द्र वार्टिश, केंद्रद क्षिश्राम करे का का विकास है कि अपनी सकते हैं ।, बन्द सन्दक्तों के नही थी. ८ शीवर सम ओ शास्त्रे. कवा की रह को उसे की विशिव दिका मधा के कियान की किसी पार. कारकाको वर विकास वसने महाराजा रीयत्र देशव चन्द्र थी, जी शहरीत वे श्रदि परिकार करना अभीष्ट हो वे विंद्र की, तर इन्होंन भी, जारी इंग्रह्म क्वली समारोह को अप-क्रमाय समा स्टास समाक्षे विश भाग से मनाने की समा द्वार (पराधे राज की, ए. पथ्यी नाम वी fen fi er muß f. stenka and भोजना को एस लाबोग देते वर्ग तियदा, सः इत्यान सन्त, स सर कारते । कार्बीशीयक के वर्ग बक्र व प्रदीय श्राविकारियों का बदशास गुजर, म सन्तरम की. क्षिम भी हम पर कागू होते हैं क्रांक्रम्मति से निर्मापन इतने के जा मालूगम भी, वं तनीर पन्ध स्थेदि समा 🎹 सम्बन्ध शर्बदेशिक किस सवा से सम्बन्धित प्रवास, भी, भी बारदेव सिंह की भरवारी, सबा से देखी बार्ड्डिक की से कर-**बेहरकी, दिसाशत तथा वस्मृ** आएमीर | ना क्रकारी साल की देहरती, रि , कि <u>सास परिवर्टन करने</u> का क्रविकार की संबाजों के नताय प्रतिर्वित इस जन्म कियोर थी. वि. पारा साम्र नाथान्य कथा को वी नहीं होता हरत व्यक्तिराप में प्यारे 🎹 ये : समीप | जी, श ० व्यक्ति जी, श्री पूर्वाटम | प्रश्ने सिर शिरोप समा का हो व दूर २ की सवातों शिवता, मर्का औ, भी वैतनाथ महेन्द्रों, दि , व्यार्थ केरच होना पाहिए । वे बोगेन्द्र नगरं, देहसी, कम्बासरं, विदालती वी क्षानन्द्र, व हुर्गत्रास कार्य हुन्।म कावस के विचार बक्दीयर, बरंशस, हरियमा धार, विश्वने गाहर थी, रचुराव जी, भागा विविध्य के बाद सीवार कर किर केवल राज औ, भी सुराधी ताल की, वाले 1 सामग्रीय स्थान भी ने वालिक बर्बेग्रास, किरोजवर, टोहाना दिसार, तुषिवान, होस्वारपुर, तुर- ा देशराज की हो. 🛐 राम थी. | (क्लव की हॉमका बदकर सुनई बारसुर, प्रसाधावाद, शास-धर,धन्- थ्रे. १. १६९७ भी शर्मा, वा. वृत्र व स्वीकृत हुई। इसवें बर, इन्द्रचेन ब्बार, रोहरू, सावना क्याला कर- | जाल औ. द. विद्यासान्त्र औ. दा. | वी वे एक लुपाय दिया 👭 वृद्यिक बाबके वामी उत्प्रपुरा,मेनका प्रांत, देशका बहाजन हो, या राग राग हो। हे बादे बजाबातक क्रिटेक्स हे कियाँ, नगरें, शब्दों तथ देशातों औ. भी थ. प्रश्ने पास जी, भी ओ. जिल्हा स्वया तथा स्वाह देशे के कवाओं से स्थान मध्ये बांहरें वेदाला भी, हि. अनुस्थान भी, वाले दीवान क्षत्रका भी तथा का क्यारे हो । बह कर का होता हता . फाशुराम ही, बॉइन फरूमा वी, भी इन्यकर होता पाईए । सा भी के किए मीरव की बार है। का देखां काहि कियों ही साथ के सम्बा ' अंकार दिया गया । इस पर क्षर सभ बता प्रसम्ब का कि सहन विद्योगर नेशा, श्रद्धशोधी वेशी कार्य समाज के दो र बहार व्यक्ति अधिकां करें है कारेज़े. माने के जारिका के । बढ़ देखाना कर जिलान को गये हैं का पर कीन हो

चानका में का रहे ध्यार ने शां नुबस स्थातम का भाग भी भूमिका में सम्बद्ध दर के हुनाया श्वा।

इस के क्ष्य सभा है क्षट क क्याचित्र क्षतस्या वर्शक्यार स्रारम्थ किया समा। इस पर क्षानी विसर्व दाह भी प. सरक्त की, प प्रक्रेसक वी थी. यो**ड्**श्यात **ब**म्मू, सा इन्द्रसेव की, **ची, बहबोर शिंह जी** क. हुक्क चन्द्र जो, सन्द्रा श औं बद्धारा जी, भी बुदबाब शुरा त्री. केरीशम जी, सा माट सक को, नी महरेच निष्ठ वी मस्दारी, श्रीदरमारीकाल जी बेहकी,यं अभूरास बो, ग. दशीरथम् बी, **ए**ं. टुर्गा**रा**म डी. ५. जिलोक चल स्टासी बी पुत्रारेम की साहि की शब्दनों ने बढ़े संबर डोस सम्प्रव । ते वि कमा ही इस्वं प्यथमशा हैसे सुबर दक्ती है सब ने सुभान प्रक्रित वर क्रिये गये। सहस्त्रा हसरास शहरूदी चमधाम से मनाने के लिए বিশিৎ অনিবিদী কা বিদৰ ৭ কালী की करने के सिए कार्योगन किया बाना में बूर हुका। भारत सरका से बाक देववर अभी बराजे के क्रिय विशेष प्रकार किये जाने पर जीव विवा गया इस के बाद श्वीयद वे र. राज प्रधार की वे काचार विश्वका की द्वारा शिक्ति प्रका बेरसार में चन्तें के परिवर्तन व पारवर्षेत्र के विषय की संका वस वे विस्ताः प्राताथ पारित **करने** का बाज है से पर की बादती विकास .. ताय जी श्लान कार्यक्रमाज कोच-गढ अस्कार ने शरा कियार से (मेन एक ४ पर)

### आर्थ प्रादेशिक सभा का अमतसर में वार्षिक अधिवेशन समारोह

(क्ट ४ स शेष) इस के बारे में विकास सनावा तथा क्रस्ताव रक्षाओं पर्शत हो तथा। श्रीर भी कई सञ्जनों ने इस पर विचार प्रकट किये। दंश विकोच-बान्द्र शास्त्री ने बढ़ा कि वेद सार के बारे में तो धाप विवाद प्रस्ता का को है पर सेवनाम्ब विन्दा किरत. एका राम परित्र कारि में किया किया व पदावा तहता है—

इस के बाद सभा के नमें-चारियों के सेवाकात की ३१ वर्षे से १८ वर्ष कर देने का पत्ताव अधिवेशन तथा सारी सकियाओं का बाका। इस वर भी ला॰ इन्डमेन aA की , कालीर सिंह जी, भी कारूप किया । समापति की ने बतदेव सिंह वी भरतारी, ६० इसका की चोर से उनका भी धन्यवाद हर्मोदास की, हानी फिरबीदांस की, | हिवा -सब की क्याई। वैक विद्यासागर भी, दा० देववर श्री सद्दातन काहि वर्ड सन्दर्गों ने श्रद के स्थान ६० वर्ष तक सराधि बर देने का विचार पेश किया, जो अक्षप्रसमिति से श्रीकार का (द्या ।

क्र-त में माजनी**य विसि**ध्य रताराय की ने स्थापकित के श्वासन से बहु बालारिक निर्वापन के सम्बन्ध में विवार प्रसूत किया कि सभा के प्रधान वह के ज़िए पून्य बहारमा बानम्द् लाबोबी सहाराय को जिर्वानित किया वावे । हमें समा भी बागीर तथा जवन्ती के विशेष कारों के सिए उनके नेताय की गरी व्यापस्यक्ता है उनका अनुस्य, क्रमाय बढा है। कर, मैं सहस्था बी का जुबनाय सभा के स्थान का के ज़िए देश दरता हैं दया सारे श्रान्त्रसंबन, बन्बर ग एवं सावेरेशि - इसमा के सिक् मेजे जाने वाले सभा हारा सदस्यों के निर्धायन का क्योंक्रियर में पर को ही कींच । क्या शावाया है । दिया जाने । सारजीय सभापति औ के बनाव का मारे तरत से प्रद-

मा सर्वसम्बद्ध हो वर क्रवार का

क्स व्यक्ति के इच्चे के साथ ब्यनुसी-वित कर दिया।

कार्रिकारिको के सम्बन्धर तथा शार्मध्याद के साथ ऋषिवेशन समान्त इच्छा । समाज भी भोर से an क्रम कर प्रश्न का सकते मिल कर स्थापन विकास कार्यमहास स्रोह-सद समूलार के व्यविकारियों बानी फिक्टी डास की. मंगी

क्रम के सभा के प्राने सारे

वैद्रक्त भी, पं. वसंपास जी आदि ने क्विजिधिकों के निकास, सानगार शय करे रह कर का ही सन्दर

श्रार्य मामज की शिच्छा संस्थाओं में धार्थिक शिचा की व्यवस्था

मार्थेक्षीय कार्य समाज विकास सामा परिवन ने चयाने श्रामिनेशन के बार्य समाज की संस्थाओं ने वर्शनक शिका की सर्जावत व्यवस्था के सम्बन्ध में विचार कर समाद देने के बिर समिति नियम्ब की है। ास सुबना के हारा में करवाओं के श्मको, प्रकारको, कथा**व**को हवा इस विषय में दिशयांची रखने वाले दमरे सब्जनों से शर्यना करता ॥ कि

बानी से बानी भेड़ने थी रहा करें। समाय स्वायक्षातिक होने काहिये : विशेषत निम्य क्ली पर बस्तार दावते हर सपने विचार विशें। १. भाग रत मार से यहा स्था

उस विषय से अपने सुम्कर मेरे शक

 किया का साराप कीर की ३ पडाने शर्जे कीन हैं स्वीर

પ્ર. વિશ્વવિ ક્રો લેફ્ઝર વનાને કે 🖁 जिल प्रत्येक विश्वत के बार के बार क्वा सम्बद्ध है।

(अवरेडी क्या टीर्काट) विभिष्त, बाबे क्षत्रेय प्रानीपा सरोजक । चार्च शिरोमशा सभा

उन की वर्ताद्वचयह क्या योग्यता है। डि

पिरोजपर में

६, १०, ११ कावरी को सार्थ द्रमाणक्य के विकास जैवान से बार्द रिशेवरित सभा के तलाव-धान वे स्थानीय समाजों से सन्ध-सिंह रूप में खूर्वशेष स्टब्स मनाया प्रमित्रिक २००० से द्वार की। कर्षि रुपर का भी काबोजन किया यमा । कारकम व्यक्ति सनो-रजद था। रे-४-१ **म**र्जंब को बार्ज सता-

वातव का रूपन होगा इस वयसर नर माचार्य समा की क्वा स्टीत क्या क्रेगे।

> মহবলির আর্থ त्रशन किरोक्षण सम

श्राव समावज योगेन्द्रनगर efroute winds à facts इन्नरीयसे १३ व्यवीय वस महात्या इसराज बयशी एवं बार्च सवाव स्थापना दिवस सनाने का किस्ता

विया है। दिवाद६-४-६४ से प्रत, शावती वज्ञ रात्री को सत्यार्थ प्रक्रमा की दश प. श्लिक्चिय वी रा*सी* वी० एक सहीपदेशक करेंगे प्रीर व्यक्तित सास्य सारायस्य श्री के

प्रजोधा समान श्रमा करेंगे। बीर उत्तव वे महिला सम्बो-शत होगा प्रायशस की प्रार समाजी से प्रापंता की बाती है ध्य उच्नी को समझ सबाने से संक्य सहयोग देने दा दल हो।

> सन्ती शराज

पूज्य महात्मा श्रान-द स्वामी जी मर्वसम्मत प्रधान निर्वाचि

আৰু মাইলিক প্ৰিনিখি and the size of a size 23.2.Ev अक्रिकार के प्रार्थ-समाज लोइनड ऋबुवसर ने कारे सहस ने सभापति वे कारत से शिसपत रक्षाराम में ६स ६, यस. पत्त. र. के इस इस्ताब को सर्वेशस्त्राति से पारित बारते तथ प्रदाये उगल के सरक्ती श्याची सम्बाही पुरुष महात्या क्रानस्य स्थामी जी सरस्की के क्षण का प्रथान जिल्ली कर के क्रांडकहरू, क्रम्लाङ देशा कार्य सार्वदेशिक सभा देशकी ने किए कथा द्वारा भेके आहे वासे सदावों के निर्वाचन का भी सर्वाधिकार ऋष को ही सौंप दिया। सभा की सर्वसम्मा विवासन परस्परा के (यगई हो ।

मिविस हम्पनास है

कार्य आप के धेरेकर की की इदिरण की के सुपन सुरेश कमाँ मत दस दिनों से शिक्सि इत्पतान जासन्बर में सन की उद्दरियों के कारक रोग शब्दा पर पढे ै। दाक्टरों का इसाज हो रहा है भीरे धीरे ल्वारूय साथ धर रहा है। हमारी श्व से प्रापंता है है दे राजि ही स्थरन होकर अपने निर्धन परिवार के बहायक वने।

श्पवेशक बार्च वारेटिक सभा विगव गई दिनों से बिबंबत इरफाल सोमीयत (रोहतक) में क्वासीट के वह से रोग राज्या पर पढ़े हैं। तनका व्यवदेशन होने वाला है। ब्रष्ट निवारक प्रमु से उनके स्वास्थ्य को कामना बरते हैं तार्थ ने अपने व्यक्तिकर का सलाता वने ।

बी बन्द्रसेन जी कार्व द्विवेधी

-विहोक पन्त

सम्यादक

# ऋषि दयानन्द ऋौर स्त्री जाति

### (ले.सका-व० करू सा जो आर्था जनतेविका संलोमपूर पटना) \*\*\*\*\*\*

इदि द्यानन्द सरस्वक्षे हे . सब बाइव हे व्यक्तियों इस दक्तर कार्त केंद्र में बाने के पूर्व हम इमारी दुर्वन हो रही थी। सन नारियों की ऋति शोचनीय अवस्था | है महर्षि लाभी स्थानन्द सरस्वती 'शी बहुत पूरी हालत हो रही थी। वा ब्राजा जिसने नहीं जाति वे उपर श्रष्टि दौद्याई और इस जारि क्या क्रमस्था हो रही थी कामार्च क्रेमाल भी ने इसका वर्शन एक के उजार का जल जेकर नारी जारि को सके में जिसने से बचाया ! क्यो है है राग कराया है-त्वामी जी ने सनुबा इक्टेंक देते हुए

भदारामे **मदवनै** सकत्वाः देवासने देवतराव द्या। श्रीदेवशाय कार्यात्मावयः,

बनारकुम्बन विदेशनसम् ॥ कृषि के साते के पूर्व नारी बार्वि व्यविद्या है। बन्धकार में पर्व नर्दे भी, मठों के घटाबीश मन्दिरों में देवदानी के रूप में रूप कर प्रक्रमी सभी देते से प्रशासी गया प्रतमे ध्यभिकार करते ये हितवा संती स्टब्से अभी थी। मार्चनिक

का अपसान सदम्य जानः या विश्ववा वारी की नियोग और 'भार्या बोच्छत्रम सम्रा' पत्ती पुनर्थिशह की भाइस नहीं भी उन्हें पिता दमा दर सती ५वा के कत-सार चिता से पवि के साथ भरन द्वा दिवा अस्य पा। यसकामान ईक्षाई प्रत्याचार करते ये। काम क्षत्रता है वह प्रभार किया वाता बा कि "शिया नैव बिस्तार्थ दुराना कारयेद सुना ।" तिश्रवी का कमी

बिश्वास नहीं करना वाहिये। भागवत १५-२३ के अनुसार 'श्रीरृद डिजरूपूना त्रवो न ∎/लोपर.' स्त्रिकों को वेद पढने सनने वरपांपुकार नहीं है हमारे

कात वस्तु क विर आने थे। राध्य कारी के समय तक "विष्यासमात्र क्रिमांन तारी प्राप

किमेर मरकाव गार्ट आही आवि । को बिह्वास बह बात नहीं समस्त | प्रकान बहुनने का विभान, वेद के वाता थः उस्ने २०६ र। दार सबभा माका हा । तुल्<sup>बक्षोहाम</sup> भी यही प्रवार बर रहे वे कि-

परान्त अस्तरकर का बमाया देते हुर १४ फ़्रों के काश— पराक्षत्येषु हुवारिया मौती वन्धन विष्यते

समझ देवकी सीत वेद वेदाङ्ग पार्गा ॥

क्यारियों दा सहोत्यीत होता या समझ, देवकी, सीका बेददेदा<del>प्र</del> क्षे वानने **शको यी।** स्थार्थ एका हे भूतीय सहाकास में 'प्रमं मना क्रमी ब्रोज' इस शीय सम के होता देशों को एक्ट्रे पहाने का प्राप्त

कार दिया। वेद सब को पढ़ने

प्रवासक्षेत्रे वे तम् । पर्से पुराक्त सनु

व्यवस्थान धार्वेशों से लोडा हे कर

कई एक बार विवासन कर स्त्री

जाति पर इतक उपकार किया जिसे

तो वर्त ६मी भूक नहीं संदर्ध

। संबंद वर्ष देशका से व€र

होते के लिए हम सी बोर्वित होने

ऋषि के विचारों को बर-धर में

केलवें नवी स्थित स्था से स्वर

हो सक्ते हैं।

दर्वताल् स प्रमाने सर्वा पदाने का विद्यान बदाना। लब कियायला ॥ यहा पर वाले की व्ययोजिका मदोनशन म उर्जेटक पूजा सम्मान काद्र प्रत्यार क्विया वन महे शता**वनव**से<sup>१</sup> इस वज्रर्शन शाना है बहा पर देवना निवास a-ao के सन्त्रों से केट में mit को याले हैं। बद्धा स्त्री जावि की पृत्रा सङ्ग्रा को नवला कर स्त्री आवि क्रकार जहीं होता बहा समी किमाप का उद्धल किया। विश्ववा को पनि क्षिप्रश हो असो है। ऋषि से यह के साथ सती प्रधा के अनुसार जिल वह पोपया की कि है यदि जाति ने और दिया शता था। वर्षि ने कर क्रांग्राम स्टब्से बाली ओगी ह रवे बारी प्रतिकोक बकाना निश्**य** 

पालकनो असे प्रजाद्विक वेहपे हैं। होती है जिस प्रकार एक पहिल इस क्रमयंत्रेट हा० ११-५-१-१ में शाबी नहीं यसवी देशी सा प्रयागा देखर विश्वश कारो को प्रकार ज़िला रही के गृहत्व पर्म रूपी विता में अक्षत्रेसे बराया, निवोगस ताही नहीं चल सब्यों इसकिए इन विक्रम कालाका और इनकी बाह्य द्धा सम्मान करो । वन पौराविक दो ऋषि दवाशन्द ने सारि वादि वे gariरि**यों स्वी**र महायोशों को पुराय क्षित्र, शिक्षा, पड़ब-शाउब, वनवे का ते के ले ब्याब्द कियात **दर** वर्ग-शतन योषव्, मस्दा-भारव, सोसा बाबा कि देशो सरहड पुरको? स सक्तार मधीयान से ब्यन्तेष्टि वर्गन सी स्वारह कथा का विश्व क्षणाने बहुत सी शिक्षाणे देश्वर इसाई

बहा='वद शयंसु पुन्यने रहने

ध्यत्र 🛤 सर्वकोध्यतम नित्र

an Rase I

कांद्र कोनो ! सिर्गविधिन्यु में यही fiert 2 f4-पराकार्षेषु नारीश मीडी करन कियते ।

क्रारास्त्र व देशना माधिती वाचन स्था।

र्वेत्रह युग में जिल्लों को बड़ी-ब्रह्मे वहाते हा विमान है । सीवा सर्वकी वैसी स्थिश देहीं को पहनी भी क्रीन तुम इस समय इन्हें केर

'होत त्रवत सुर कर नारों के सुनने से निरोध करते हो। इच्छा

हो नहीं नारी वाति व सिर कृत प्रादेशिक सभा की वार्षिक रिवोर्ट का वितत क्या न =·३-६४ के श्रेक में पढें।

--- व्यवस्थापक

नोधरात्रि (१६६४) उत्सव पर म. द. स्मरक के शम चितकों की 3 मांगे

हर सब कार्यक्रम हरव से टकारा को सप्तक्रि दवाशन्त का सक्का त्मारक क्या हवा शीध देखना पारते हैं। याच क्यें में रेहाश की दशाको इस सम जोग देख सन रहे हैं। इस बहत ग्रहराई में नहीं क्षा चारते हैं। क्रम किसाप्ति पर्व पर हमारी केवल ३ मारो हैं। किन की पाँठ यदि होशी सब नहीं हुई हो इस बोब सोपी कार्यक्रिटी करने के क्रिये विकस होंगे। (१) टक्सा पू<del>र्व</del> व्यवस्थापक

कोई बनाया जाद और यो सगराम देव को तरना इदावा काय। श्री धन्यासास सी पहिले सर्वेतनिक व्यक्तवायरु ये।वसी प्रकार **व्यक्तिक** स्वत्रभावत सम्बद्ध हो सहस्र है। वैश्वविक व्यवस्थापक वेकार है। (२) 'दवासन्द संकृत विक्रम

भी क्षम्याकात की भा उन कैसा

विकासय' से महर्षि इयानन्द सं चाता के विकार जनामें अन्य न वरावे कावे । (३) दंशरा के बनाश्य वार्त

लाज में सहरित्ता होती है। इस क्रिये 'टकारा ट्रस्ट' को रूद कर हैं ल्या कोई सहस्राध्य **१ है** ।

विवेदक बगनळास जोशी. सु पुत्रक्षेत्रण, सीर कु विकास समा, श्रो मंगतरामजी रंघीली

(करनाल) साझे अन्य बार्च १६६४ को होने

काले अपनी कन्या सर्वाती हे श्रम विवाह पर संबंधियों न इच्छ मिछी को साहर क्यिपित परते हैं।

वार्यज्ञन्त भारतन "एक टीस बिगर में ध्वती है. एक वर भा दिला में होता है। हव राष्ट्रको पढ वर शेते हैं. ¥न सारा झालमा कोला है। र बाद उन्ति मार्चि स्थापी एकानन **जी के औ**क्य पर पुलेखेंग शरिताय क्रोड़े है । पहला कर सबन को है बब लाबों थी शतापुर के वैदित श्रमें का प्रचार क्या प्रसार कर रहे हो। क्य दिन साधी राज के समय बह जान परे तथा वट वर इवर-क्रमर प्रवयं सन्ते । बहुनाय को **क्र**ाध्य एक कर्मेशनी भी शांच

मदर और देवाता बचा है कि लागी **बो** बड़ी व्यवस्था तथा वेदेश वे प्रश्री प्राचीता संस्तर का सं द्या रहे हैं। इसके व रहा गया थी । इस 'हैशी विश्ववदी' को काशी क्या बारे नक्षा एक्ट विदेवन भी स्वरक्ता शाल व *की कितनी कि* funt. "अवस्था, वर्षत्र कोई वेरना **।। हिश्तानदी की जिस कर अपरेज** है तो बाजा दोविये, सैक्ड औरनो- मरकार पर क्षेत्रर शासन का ।

क्यार करते के किसे अपलिस है। क्षोंकि विदेश सरका की क्षत्रों सांत्र भागे छ हो शे वेश को यो धण्डमी पर तो जिल्लात था, धार West Street |" शस्त्रीय दानवं पर शरि । इसी किने चेटले रिकासकों के राजाकी रुप स्थाप स्थापी औ में डीचें क्षात शोधते हर बढ़ा, "साई, वा २-हे हर समय खबे*च साम्रत* हा बढ़े देश से बदले हुई देहना, प्रश दुइ कश्ना क्षा आ : के कीक्योनकार से माना होते र श्री नहीं है। यह बेटना मारा नहीं, प्रांद्ध धार्मिक स्था क्रांक के परिवासी सोगों की इसंसा के किए ऐसी से भी दिन्द आते एउस विकास से विका के पानी सामा की अजीरों से शबर न मी s किरह बर्द है। ईगाई जोग कोल-शीव कारि मारवनांबरों को हैकई यर्न रामरद स्या फल्डिकाराओं हे कराने हे सिवे अपनी स्वयनाओं बद्धा हा पर। शः श्लेष इत के हाने पाने हम शहे हैं। उपकर धी देवताको के एजान थे। सर्व के पानी की मार्गि बहाने को अध्य नाम पर तुट मार बरबे काले क्रा हैं भौति इयर काब वर्तत के में रियो हा गालकाता वा । दर्श सर पुरोबंश है जो अध्यवमं की बीट वि माकाम मनुष्यो का श्रांतका परें नोते हैं। ब्यक्टे कानों पर व भी हनहीं जुटेरों के हाथ में बा डक नहीं रेंगवी। व्यक्ति रोश्त दें जो Fil our feur unt est Austen हुन्दे क्या रही दे।" चैकी विजल आप रह तथा था।

क्या-मण्ड है। इसी मारत निर्माण सङ्ग्रह अन्तर होता है। इस वर्षक सा से बोबीस्थव न्याम्ह् विन्द्रु वार्ति स्व विस्थामा वट पुत्रा Seell को समाग शता । मा। मनवाद वर मनेवा स्त 🚓 स्थानी भी का जन्म १५२४ हैं। में जह ब्रापने बाएको मान्य के सहाने

जब ऋषिराज पद्यारे

नेशिका-बर्धिक सारदा रानी वी ए आईनत गुरुवी विक नववान शह जो M.A. मोदावर \*\*\*\*\*\* नव इन्होंने होता सम्मादा हो। देश ' साम अदलों की वर्तन पर क्रोड़

को शारी(रेक तथा जाग्रीतक हामार्गा क्षान कर द्वाक वरे मेंडे शहते हो : हुस में कहता दुवा राजा। ६२ वर्षे वी का बरिकाम का इका कि विदेशियों भवाना ने ही बच रहाओं जी ने विन्द्रकों भी दश कार्याशक इसका रेसदित के बिद पर-कार होता, के कारत करने करने वर्ष जे वस समय पताब भी बिर्माण सर्- विस्ताना सुद्ध बन दिशा। कोई की भारके हाओं वे का इका बा। हिन्दू अपने भुवार की दान स 'देशो विद्यालतो' क साहाड़ते के बी

शोषात था, उसके विकास का उँगर्ध वा स्वयमध्य होने वा करा दिन्द्रमों को बद्या तथ व्यवस्थान र्श्य से देखता हा । इमी हमार भागाविक केल है भी इरायार वेशा तथा था। झक्र-श्ता तथा व्यक्तिया संचारों उन्ह्ये

यपन प्राणिया गरा स्था न होती प्राप्त में हो fent का रिप भारे ये क्या यह लड़ीहवा **रिश्वरा** a) war wefame over 3 and ही बार्ड के वह बहबर तेत्रेप बर होते कि बरिश्चन के सम्बद्धित विश्वत हामा हो। करती हैं । उन्हीं पत्रम स्थाने शीव संबंध घर जो वेबल राजवीर्तक क्षेत्र से स्रो fent und ft ; affent un क्षकान्य होता वह बुक्त था । ज़िल् वर्षे द्वीदश्र इप्रस्कान एका ईसाई

> होने में भी बल्कुग का की हात यात्रा आश्र का । हत्ती अने क्यारों सा क्रांत भिश्यामों से हिन्दू आहि को हक नुरी शरह से सपने ज़िस्की में अपन स्का था कि शब्द निर्माण का विकार की अवने यन में प्राप्त कारवद दा । इसके विक्रीत और देवें भी महापुरत करें मुख्यका ते जानूक **रस्य पश्च**ल, स्वर्थ nime feck er ans feara-

मनुष्य शक्ते कान्द्र का विश्वात बाह्या, वर्षे समार्थे पर हे उत्तर बाहर हो बहु उसे होडी समाप्तर राज्य विशेष की बारे । वहां हो हमा स्थानी स्थानगढ की के साथ देशरा ताबक बाव में हुका था। बोम 🎹 वे । काले क्यों का वरि- औ । सब वह वालक्ष-कावती अन्त्यन व्हेडावर वह दिया

भगवा सेवर केंच में जारे थे कर भी देशे ही विशेषी का सामन स्त्रवा कार्या काम्म बहु स्वाम) जो के ट्ट विश्वत, सम्बोधना समा निर्मा-वता का परिवास था कि वह सटकी हाँ रक्ता था वर प्रश्लेष बर सबै

तका वनके हरती को जीत सके। क्य दी तो है - फिरे सी बार ची विकास क्या किया कर आजा क हो दिन्तकदार है सायुस कर होते है झांचल से।'

यह कार की मात है. दि त्वामी भी होती में उददेश दे रहे वे । बीकियों आंख ध्यास्त्रकेत सुब रहे थे। इब्ने के ही क्ये पर मोटा

सा बढा श्ली हुने एक हुझा बड़ा प्रकाश वार पारा की। क्रीक त्थामी की के शब मान्द दान र्यस्था देशा नहते समा, "शरे सार् । यु ठार्डर पुत्रा का सरहन करता है' क्योर की नमा सेवा की विदा बरवा है, देखलाने के क्रिक्र बोक्क्स है 1 मटफ यत यह सोरा वेरे पड़ा मान १० यह सकते ही पूरो समा में को अक्षरकीय प गई, मेश धर्म प्रधार करना क्रमाय है

सम्बद्धानी जी खेनड मी विश-किय न हवे । क्टोने अस्तराते वर्ते बहर, मंबद । यदि तेरे विकार से ते सर क्रमाच का श्रेक देश मानिक्य ही है, इस्तिय वह दश मेरे किर पर ही कार दे।" m शक्तों के साथ ही कामी औ वी वेष-व्होंसे व्यक्ती कालों से वर्ष से सामी करको पर रंगर स श्रदा समा याचना साने तथा । स्थापी द्यानन्द् जी शारीरिय रासता के साराध्य होते व प्रो मानसिक शहरा का कारण्य होना बावते वे अपा नाशीसक दामाना के दर क्षेत्रे 🖩 शारीरिक दासवा का क्ष्माण होना । चरुक मानांतर क्षता को वे क्योरिक अवस्था से कविक समझ सामी वे । १५ माम्बर्तिक रासका को रह करने के तिवर हो स्थायो औ ने कापना *तन-*

#### 

सनावा नका :

मुनवा : वेहे से हर तथाह किसी क्या ज्या के साथि यक संगता सहर्षि क्षेत्र राक्षि — २१ जाता किस्त वर महिता होता सुन्न रेखे कर केने लो ।

विकार समिति कर महिता कर साथ के छाउ है। रावि को रोच सकता को गई। स्थानका कर समावि

#### स्य मण्डल ।लामदङ, जणनर ...के

#### कुछ प्रमुख प्रकाशन

भारी के नामा हिन्दी प्रमुक्त सहित्ता । स्विता में, जून १११) का त्या शार्त, त्येव रिक्का प्रमुक्त प्रमुक्त प्रमुक्त के प्रमुक्त प्रमुक्त के प्रदेश किए हो सम्बद्ध में प्रमुक्त के प्रमुक्त

सर्वि तीवन वरित —पी टेक्टक्व मी आप कार्येत व २० एसीयन मी बेट आप कनुसन्धत. रोजो तथ स्वित्य र क्षेत्री पटनापूर्व विशो ने बुगा, बार पर वर्तीय का विरक्ष विष्क वार्ट नेपर पर पूजा ८) ६० मी नाम ।

्याभन्द माही.—मुलाव में नहीं के बकतों व वारोकों को उत्तरोत्तव का ये कारीत किया है, सारा पदा, क्यर से रत का, एक तकत २४० गुल केवत १४० पन होंदे। वैदिक दुविक्षाय विकास —नेकड कामार्स नेकाल को सालते। सुक्रक के समान समानत और

पर कृतिवास करना — जबन क्षेत्रक वेदाल हो छानते । हुक्क वे नगान स्वकार कीर एमों बीर निर्मा द्वारा करे जो बीरू प्रविद्धाने का क्षेत्रकातुर्त निर्माणक करते हुए शिरोदिक्क का स्थानिक एम बेसानिक शरूर विकास बात है। कुन बक्तिर ८) हारा स्विद्धान ७ १८ वर हैने । अपने के में प्रतिद्धान हैं। — जेन तक का सारोपी वर्षा निर्माणक १७ वर की बार्ग निर्माणक १० वर की वर्ष

अभिकृत्य र १० ना की ।

5 | ं कि मी विश्वास :—के अपको वेकतम सकती, पुस्तक ने तेते के कृतकर, करवार की ना तीर अभिक्रम, की और निवास तीते स्वति वर पीतिक तथा सर्वास समग्री है कोन तथा ग्रामीका क्षावस्थ, अभिक्रम, की और तथा निवास तीते स्वति वर पीतिक तथा सर्वास्थ समग्री है कोन तथा ग्रामीका क्षावस,

भारतीय समाज शास्त्र --नै॰ वी वर्धर वी स्थानार्थ्य--व्यक्तिय स्थाना, कर्य प्रश्नात सार्थ्य सम्पन्न में त्रियों या त्यन श्रवाति विच्यों पर क्ले दर की मनूते कुण्ड समा १) व०)

भार्मिक शिक्षा — मार कुरेरेर को कहाँ का कहाँ का रहर शांधार ही है। पारे के जिने कहा है है 14 वस के विभागक जान मुनाई है। जानों का कुना थे, इस ५ है १४ वर्षों है। अभिनेत्रण संस्था समुदारण .— कर रेकेप्यास की सामनी पारतीर्वे नक है हैंग, सेत, वर्ष, प्राव

मुक्त, वासूनन, देशोत, वेतरीन र क्यांत्रेक अगिनाह् व्य तरन तीर बुतीन कामनुष्टा है। वे रोवेट सामस्य सीमा सून्त ६) १०। भी कृत्य परित:—के कामनिक्य के सामस्यक्ताहरू, लीक, उन्हेंस्टर, पूस्तक तर स्व तन्ती

का नेका कोदे किहा कि वी कृत्य हो रशकोते. यहन् तकोतेत. में कशी के विहाद के-हुत १.५१ रू रू कि । समान का किये -- के-, प्रतेष किकारेना करने ने पूर्व पाने पहुरक, तेले कापुका कीर

क्यों का तरण दिन्दों ने बहुमार-पूर्ण २० रत कि । सारायण ब्रोटे अनवन - ने० यो प्रदेशार तलहो पुरस्कार के तुस्कुर विश्ववेद्यालय, गृह्याला । पूर्ण १-५० रन को

वेर बनना उसर राजि अन्य स्थार है। इन का नात्यात ग्रेट कारी प्याने कार सा अध्यय का स्थान सार या सम्यान कला है। इसी वहीं को तेजर नेतें के शास्त्रक ने तमें सावार्य की गीनहीं ग्रेस करते के मिने क्षा पुत्रक प्रमाणित की माँ है।

बेद व अन्य वार्य वार्यों का सुनीपत्र नवा परोद्धादों को पाठविति पुरुत नंगायें। वेट :—व्यपि सेप श्रंप १६६४ के १८ वेद वर १९रोस्त निकाल में की से इस स्कृतिक हो ग्यं भी पाठकाल ३० विकास को ही शासाबिक समस्

ही म्हें भी शठकाल रूथ लेहास्य को ही श्रमाबिक बनकें। व्यासभा हुन्यों। श्राटी चर्चा

#### चार्य केन्द्रीय सभा वस्तरार

की भीर से शिवरती स ब्रह्म परे बड़ी पुत्रदाय से गनाम गया । **खोधका**र को इसी कर हन्द में कर्मकात शोधना से शानतर अल्लास विकास किया में अपनी के काके समिता, समानों के गरम मान्य सम्बन्ध स्वतिश्र ये । संख्यार ओहबर कारत में रात को विकास बस्ता एका । इसमें क्षित्र **११वर** मी रांड 2011 M 1020 EX. 0. 201 परित नेता पीर महरण और का बस ही स्थाप पर्छ 'स्रीयाची भाषक हुआ । शासक वहें ही प्रशास-रास्ते वे । इह श्रवस पर २/४ के गरन सरूप बहातभार उपनिष ये । इसका समर की बदता पर बदा यभाव प्रता । तमारोह बडी प्रय-बान तथा सफाला से स्वतन्त्र

### व्यर्थसमाज सार्रेस रोड व्यष्टसर

इका (

प्रवास से बसाबा वका । आह-क्षत्र वदा बद्ध किया सका । क्ष्मपाद वर्ष चनाते हुए क्यान ' **बी ब्योर जे पताने ४१ कार्य** क्या हाई सहय की सम्बद्धितें से विश्तिक के प्रस्ताप में अपने रेपीत क्रमितर, प्राचया, क्रमीलक क्या कम समार सर्वक्रम से पता वनाय क्रांसा । यह स्टब्स का 'कर्स-दर रहा हो संबंद, स्टास्ट्राची का समयोचित वा । इयनका ने इसे वहासराहा । की वेदी औ विभिन्न तथा परित प्रमुख जो को दब करते कर कर करते हो गई। बार के प्रतिका (प्रतिक क्र वो जानी दार्च शरोतिक प्रधा का शक्त हमी। बार में क्रीक



[भार्पपादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर 🗷 साप्ताहिक सुखपत्र] हेशीफोच २० ३०१४ एक प्रति का सूचन १३ वर्ष चेंहे वार्षिक पान्त ६ रुपरे

वर्ष २४ झक १०) २६ फारम्**ण २०२० रविवार...दयानन्दान्द १४०-८ मार्थ** १९६४ (तार 'प्रादेशिक' जामन्यर

ऋार्य पांदेशिक सभा के त्रागामी वर्ष १६६४ के लिए

२३ २.६० के माधारण ऋधिवेशन में

जो लोहगढ अमतसर में

सम्पन्न हुआ

श्री पुज्य महात्मा श्रानन्द स्वामी जी सरस्वती

सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित इए इमें दह विस्वास हं कि श्रापके नेतल में सभा दिन दसनी रात चौरानी

उन्नति इरेगी

#### श्रादर्श तपस्त्री वेद सक्तयः

तस्में यमाय नमः नयस्तार हो। वस स्रीर करत सभी प्रभु की शक्ति है जो समय सारव का संसार को अपना वास बनावी रहती है। यह भी इस शक्ति से बोई बच नहीं

सक्या । उसे तमस्था है । गिर्वशः पाहि नः

हे स्त्रति से योज्य सारम् । इस लारे भाग वे ही है इसारी भाव ही रसा क्रो । नाना प्रकार के संकरों से ,बाद की क्या से ही हम क्या मुरिक्त रहें। भाव ही इसारे रस्रक, पाता, परित्राता है। इसी बिए तो धाम पिता है, सब्बे रक्ड हैं।

स हि स्थिरो विचर्षक्षिः बह रम स्थित है बता यक रस है, ब्राटल है । यह जनत वरियलंग्सील है, यर परवेश्यर व्याप यह रख है, इस में इभी परिवर्तन नहीं होता क्षी सबका निरीचक है अब के बाहर अन्दर के कावी शाचीं को देसका, जानका है। त्ससे कोई भी बाद हुए नहीं है।

## ऋषि दशन

### इंग्वरमत्त्वम् च मारितः

दे भारे लोक-शोकानार र्शात सुवे ब्यादि कारम में युमते हुए भी तस परमेहनर के सता निवम से बारण किए हुव हैं। इसके सनाक्ष्म तथा निवस में रखने वासी वही नेतन शक्ति के हैं।

## सर्वाणि सुखानि दारात्

यह मुक्ति आपने नियम में काबी हुई सबकी कार्नेक प्रकार के अल्लों को देती है। यह माठा के समान सक्को चालती. रिवसानी पिसानी है। जीवन के किए यह योटी है। इसी से सब

#### कुछ भिल्ला सहता है। मासिनः प्रपुरयति

यह मुलिमाता सपने उत्तस रतम अरहातो से. समेक विध प्रताकों से बच्चा बावस व प्रसादों से करते मारे पर पश्चिमां की. तीवमात्र को भर देवी है. वस ≼रती रहती है. सालासाम erit ? .

डा. शंस्त्रवाम जी साम्बाय-अप्रेक ≡ काशीर विश्वक हैं। एउसी के बरिशीसन की बड़ी राचि है। इक्सरी शर्थना पर वयने समन्य

विचारों को चार्यवगत के बेमी बारकों को जेनकार में बीजा श्रीकार शिक्षा है। (वर्त) endannik mage me i क्षांत्र शब्द का क्षमें नियत दिय

का चका है। यह विदान शब का क्रमें समस्यिते । इसका विशास क्षे क्षांत न्याय दर्शन १०१०-१६४० में गीलक बार्ल्ड ने किया है। वार्यात रूप संस्थरता विद्यान --(शास्त्र के क्रथे की महिवात-निया) य किये गए क्यें के सिद्धान कही 🕏। यह येला हका कीर मान मबा—इसके सिद्ध करते हैं। तथ

विद्रि की इस स्थिति का शाम शिक्षण है—वर्षात रहान सिकास **दा ग्रा**ये ठका, यह दर्शन शाला जो **बिर्श**य किये गये मूख तत्वों का स्त्री भारत रहेंद्र बराय । दर्भनों के मल तत्व

से दश्य करके गतीब शिक्षास को १—समार विभाग हत्या नही है। परिकाम संसार का धर्म है । दु स्रो की कारन्त । नश्चेत कराकर कार्यंत स्थान किसी पटार्थ का क्की हो सकता । विभ्या प्राप का क्या वोशिराज वर्तकांत प्रति ने बोगरर्शन के पहले क्रश्याय में हस इस्तर क्या है-जो क्य र निव करा से कार्राविष्ट्रत कथान विश्वसान

न हो, यह निभ्नातात है, निभ्ना-

श्रान, राभ्य शरीति वा कान नहीं है

बैशा कि स्वीन वेदानी अर्थ का के समया की भाग्य करते हैं। इसरे नीका वे इमारी परीमा 🗎 तरी क्यांव के पांचर्वे क्षत्र में फिर इसी बाव का विस्तार से क्येंन करते हैं। प्रान्थ्य, प्रश्चनि, इ.स. धनाता हे कत्तराः निश्य, राजि, सम्ब और मास्य रहि होना कविशा प्रयोग **जि**म्था शाम है। यह रहत प्रपंप शुम्प नहीं है। श्र्याहरूप से सन्तर्भद है। सब प्रकृति के स्वतन्त्र वतः, रक्ष

क्षम अ.व गाम जिस्सा करता है । र-- बीबाला इसरा वित्व | वरसारमा के शवार में शव तेकिया | विकासना है, निकत काला है |

वार्वनिक चर्चा

### सिद्धान्त शब्द का ऋर्थ

(यो डा॰ वकरदास जो बारेस रोट वस्तसर)

5

\*\*\*\*\*\*\* रूप है। यह इर एक शरीर को श्च कर्म देकर मिला है। लाफ बीवन देख है। यह स्वरूप से घरने भगवान के बाजन्द की डायि करके स्रोट बन्धन से हुस्त है। परन्तु

इस सीमान्य को या सके। इस वयने सल्हमों के प्रधान से विकास स्तीर को यह बीका भी कहा है। भोनियों में जाता है : इसकिए अन्दी २ चण बनाको ३--सरकात्मा नित्र, शह. वर्ति इस इस शोफ भवसागर है बढ, सुक्त लक्षांब, सारे बसार का पर हो अबे। ऐसान हो कि इस क्यां भर्दा और इलं है। सारा क नीमा में शिक्ष हो जाये या वह प्रशासी

कभी इस पर तमाव नहीं स्थाता हो साथे चीर टटने संगे। हर जीवों को करते कर्मासुधार, न्याव व्हीं नमदार में न 📰 बावे । दह कतुकुल उनके दिन के लिए मिन्स २ भोययोजियों में हर कर के वह क धनों को करहें देता है। यह कमी वन मिला है, जिसाने विशेष प्रति न मगशस्य सीर न दमी बीच पुनाबराण्ड है। वह विचारसांध रूप बनका है : मनायों की सबसे बड़ी विशेषता है।

४—प्रत्येक तत्त्व का बोच देव इसकिए सर्वशासिको के मानव भीर कार्य रहान शास्त्रों के लाध्याय बीयन की सहसा है। जिस्स कांत्र-में ही ठीक र हो सबता है। ल, सार क्रसार, कर्य बानधे, विशि मिया का कारशें हम बोच निषेत्र, गुरु दोष, शुभ वशुभ को

विषय शांक (organ of rens इस् स्थोप पहुं पान्स स्ट्रु के सब on) है। ऋत, सर्थेट स्रो दी कारद-से इसी अंश्विम में सक्त करना है। म्त विश्वति एव सुलाप्तांत्रा की सुरूप ६-इस ६ (सर हरीर, प्रश् ब्राह्म से इस विवास्त्रीत है वर-श्रीत और कात्मा के संचित क्रमें वे नोग दरने दा शास्त्र देवस मनध ब्रदुसार कनक बराने की बाल रुरीर 🗐 माना पका है। श्रे ओन

श्वकता है। करे किया रही में मनन्य १ देशा काश्चिमक रखते है विर्मादक यक उपस्म स्थलन मारोक द वों से बारवान निवृद्धि चलते हैं. साधन बनाने भी वस्त्रत है। क्यांत्रे जिल् दर्शनों की जिल्लासा वही इस बात कर प्याप रक्षी 📗 **प्रयोगी है । ये दर्श**य तर सामन

है। विशने इस धर्मात्या, शतकान बता से मनध्य मोच प्राप्त कर बुद्धिसन होंगे, उठना व्यापिक सब्दा है : कच्छी तह से इस क्षीवा है सफल होये। यदो कानो की षिवेक पूर्वक विकासी । श्राह *नर स*न न्ता ही दुलेम हैं। बीवन शता में बह श्रभात है। इस श्रीवत के वाने के बाद भ-वकार की पांत्सकारिक है। यह मुक्त में अही मिला करत

ननव्य के हाको में क्या है ? यह सब बढ़ हो यहा पर सन्ध के द्वाम में ही क्या है। वह मने ही प्रवने द्वावयो सर्वान्यको सुमध् बेटे वर उत्तवा यह माईकार जार्थ है। च्ही भगवान सनुष्यों के क्यांनसार **पक पुनाता रहता है फ्रोर उसी में** वतुम्य का बाच्हा हुरा को कह

का समरेश काते हैं, जिसकी सहा-

(क्रवरों)

परकार की क्सीटी यह जुनाव

चमरमहीद १० लेखराम बलिदान दिवस

रेटिक मन्य सनातन धार्म के निर्मीक प्रशासक, विकास क्रीट परवाने मार्वपथिक पर जेसराज की का मिनिटान-विश्वस क्षेत्र उपन मत्त्रज्ञ साधान्यत के व्यक्ति से षावे समाव मन्दिर **स**विकास (परकाबाय) में ६ मार्च १८६४ शक्यार शह को ८ वसे से १० वसे तक सनावर जावेगा । असर्थे समा र्याजदानी की बीचनी पर शहर. गीठ' पविदाये, तया क्योजपर्य मापश होंगे।

बालकर नगर के सभी शर-नारियों से प्रार्थना है कि प्रारक्षे परिकार, इन्डिमिजी तथा क्याको सक्रित पक्षारने वा बहु करे।

> —सत्सराध चार्व सभ्यो नेद प्रचार स्टब्स

#### दयानन्द बाह्यमहाविद्यालय हिमार

के योग्य स्वातक य व त्रो नात्तव बी की विदर्श के वपशस्य में दि**ः** २३-२-६४ को एक सभा का झाबोधन हुमा इस सभा में द्विसार के राह्य-सान्य सध्यमों ने भाग लेका do नरेन्द्रम की को श्रम मार्श्वर्यक देते 📰 दिव्य सन्देश दिका कि केरस प्रम्याहरीत कीते 📺 श्रह्माना-म्प्रकार को तर करके वेतिक जात गु'वाचो इस प्रकार सम्प्रल उपस्थित कोगों ने ए॰ नरेन्द्रम जी का उत्साह वर्धन किया। ५० नरेन्सन जी केरम विकासी है वे विवासन में नैविक पर्य के सिद्धारनों के साब के किये प्राप्तों से विस्तासना से इस्ते केरस में नैरिक वर्स का श्वार ।

> विवेदक रामविचार

काने को वैदार किया है।

ज़िक है व

सम्पादकीय-

वर्ष २४ रिविद्यार २०२०, = माच (९६४

## भार्यसभात के विद्याल कर देवने ही करण से धोजी आसी की कमीटी पर परे उत्तरते हैं। यही - शिल्प किया ना नारी, यहती-यहक

**कार**ना है कि बार्वभिन्दात की उनके पास बाने नगे। इस smoon क बाट अवसवान्तरों के पादरी की पैसे भी देते में भी भी एक किसे तरे सा बर्टमान देखा ईसाईकर का प्रवेश भी समय में दिल्ले ता रहे हैं, बनवा ं सुन्ते थे। इस वकत के अब तास. भारी वरिकार हो। गर्या है। तक ∰ाट वे अरो वासवट यह जबले कीर कुर्वन के माने भी काब दूसने े लगा, यन भी वह बटोवने सना । भीव श्रद्धिश्यानी सामा की बहा वीक क्षेत्र दिवारको र देशक सर्वित पर विवश हो यह है। यहा २ मी लड़ी हाती थी। फ्रायस्य से प्रदर्श हारा इस श्रवकाल के हारः पासव श्चन्धविद्यास का प्रवार होता हो। र प्रसार को देखकर किसे भी ध्यान पासरह का सहारा क्षेत्रर वेसे देने व बाक्त कि हैनाई बिन दक्ता स्वार्थी होग मोजो पानी जनता हो क्षांत्रे रेतार्थका का बनार कर उस्त क्रमते चरशविष्ठवास से अने विकार है। स शर्वसमाज ने मीन नहीं में, माना राज वें फवारे में हते रह सस्ता था। ब्रह्मप् दरायस्य के हों. वहा पर भावंसवाज पाउसे प्यारे इस पासरड को सहत २ का पताका गांद कर इस जास की कार सके। दे मैदान हे का यां। त्तार करने में जग जाता है। इस बसनकर के कार्ट सवाओ की वृष्तिकों का किसी के पास भी क्लर नहीं हैं, इस के सामने बोर्ड क्रकाधी वहीं महला। सार्वे देश **धे** राज का प्राथ**ण** वरिषय विकास है। इसी सम्बन्ध में श्रमी र वर्ग बच्चा समाचार मामने हैं। जिल में समान भी हा लाह बितव का । प्रमणन को स्पृतिशिवत व्यवहरूत. महासिंह शेर के बाहर एक पार्श वर्धन प. स्त्रूक शर्मा,ता गारामधी अब कोनने के लिए मेदान में कर में बई दिनों से एक पाकरक रचाया अंडानगर मातार के प्रसान भी पढते हैं। बार्वतमात्र के संगठन हमा था। भोजो जन्मा को आपने जिल्लाम प्रोक्ट, नवा बीट के आ मागाताल में श्वेताने के लिए मान्य- । मधुरादास थी, सार्वेसरीट के प्रधान | के लामने कीन हड़र सकता है । विद्यास का काम कारका दिया | भी ईसरोब सन्ता, बाठ है ब्यान बस्कार के इस समाब के सवतनों के हुआ था। उसने यह शेषणा व्यवन अदाजन तथा केन्द्रीय समाज के आयोजन हारा आप की टुटें

इंडर हे होका केलीय समाज के पारती के पाय उद्ध**र** सर्वे । अह मार्थ विजयर इस शाल का गाउ पाररी रहाँ से स्थान ओड़का मान डोदने का निवस्त कार्य समादित हो गए। कार्यसमाञ्च बोदसन के प्यान जानी पिरुदोदास जी. वं मा. रकामत वी, सदम्यसर के दो बार फेलों से अन्या में करा हो | अधान की कैंदन केशकवाना और विकाय से फर्य नगर की समाजें भी ची दि तिसको किसी पकार का शुरूपरवाहाल औ, ततकीवर के प्रेरवा सेवें। जेमे र वहां भी अप-भी रोप हो, ग्ररार में बोमारी हो, भी मोलानाथ भी, भी शिवदृष्ट जी काम दिखाई है, वे बहा समस्य बह मेरे पास जाताने, में अपने चादि सबते विश्वकर धमाल कर बताबर कूर परे-तमान ही अग-

बू'मा । मोले सोगों की क्यी नहीं । सवाब की स्वापना करके इस कीन है।

### होली हो ली \*\*\*\*

होले का महान पर्व कादा ब्बीर पक्ता स्थान इस बार हो पारिस्तानी बंगास में हिन्दकों के द्वपर जो भी नुसास करका थार दियाँ । है। थोड़ा बहुव सुलास क्षेत्रर किस वर्षे । उसके सम्रथ राग कर प्रस बार साबदेशिक समा के मुद्दाकानी | यहे कियो तथा करके प्रश्ने सर्वक्रमें वी रामगोपाल जी शास वाले ने वर होती संक्षते हैं। प्रसन्त होते ववा संत्र समा मे र- प्रकाशभीर | दें बाव यह है कि आवस में कई शास्त्री जो ने इस बार होती न धार भाई का मार्ड से, बाँडन का क्षणांत्रे को प्रार्थिक करोग की। प्रतित्र से स्वित्रशे का स्वित्रशे क्षान्य संस्थाकों ने भी इस दिशा में : में, एक वा दूसरे से अनुस्टाव हो र्श्यन वर्शन की है। होसी इस- हो जाता है। यह न्यामाविक ही

का वर्ग बहा जाता है। विजया इरामी पश्चित्त्व से सम्बन्ध रक्षता पासरह के विशेष में झावना केंग काश्य प्रचार क्रम. स्त दिवा । र्गरेशान यह हमा कि स्टार्थनमात्र

६ इस सर्वाटिक बचार से उस

en eer ê i

स्टब्स्ट सर्वधारा हो आवे । श्रेम गया । सार्वेद्रसात क्षेत्र गाउना विजय रहें। इसके किए अस. सबके वास्त्रविद्यालाई देने हैं। आर्थ-समाज के पास वहीं शक्ति है। तहा उसके मेरिक समर बन वर सम में बची शक्ति है । इस के प्रसार

ं है, बादवी कक्का से, *दीशा*जी वैद्य समाज से बपा यह होसी पारों क्यों का स्वीदार कहा जाना क्रपने सित्र पर, शर्टाकर्ग प्रयक्ती तिय तम बार कम परश्वराजन कर : है । सानव श्रीवन से येमा श्रीता के जहीं बाजरे नहीं। कार्यसकात । ही रहवा है। यदि यह सन-तो वैसे भी इस वर्षको स्टीप डी मुटा ६ दुराना या प्रवस होता सुन्दर प्रकार से मसाता करा बाये. तो नई नार अवस्य स्त्य धारण कर लेता है । वर्डियोडे समय बार इस था दिया ताप. हर बहारोसी का पर्वतिक प्राप्त काने का उराव हो आर से बन-

स्टास प्रतार से बटल जाता है।

होती का एवं यह सन्देश देश है

िक वर्ष के करि दिस्ती का किया **से** 

हिली कार पर मनगटाय हो गया

है। तो उस होसी पर ब्यापस वे

दोलो काल कर गांडे प्रित झरना

पाहिए। वर्षे भर का वैसनस्य इस

बा रंग बण्डों, मन पर पहला है । सारा राष्ट्र में स के कान में, प्यस के अब के विशेषर अलग है । यह राहित वं म का वर्ष है। इयने आप समात्र के नावे स्थलों से से पहला है कि कात के 🥅 वर्तमान विषय ज्या में कार्यगणाब के याम की किरानी बावहवस्ता है। इन होसो के बीगरे पर गरे हर चार्वसमाओ कारम से गते जिस आई। सब की र्शन्थका समाध्य हो जरु । सिन बोहकर हेंहें । समानी प्रशा सह वोजन भार- राक्ष देर का संगठन सुस्त जोदन हे, कार्वे में तथा विकारी में आजमें । होसी के कर्लकी हो जी। बरहणस · क्षाम से देशे कुदर नका चना करें दिया। बहा मुकाबित कर काले जान को बाट सकता है कान प्रशंत है दिह्शार परद्वार न -- विसोधपन्त समाप्त हो बाएं। -- विसोधपन्त मान्यवर बन्धको ।

श्रासनसर नगरी कौर वहां के कार्य माई इस विकार से अभिक क्रीतासकाची है कि चार्यसमात्र है के प्रवर्त क्र सङ्घि द्वानस्य सम्मती की महाराज ने १६३३ में वहा क्यारं ६र याचेसमात्र कस्तार की सबसे स्थापमा की थी। यहां के

कारतीय सामान्य के पालका सक भारत मर में प्रसिद्ध है । याना en safet की तथा उसके सरस बाबा गरमणबंदर थी. शत बढादर मीपासदास की भदारी, रायबहादुर अध्ययक की भदारी, दीवान उत्तम-

चन्त्र भी, ५० परश्चराम की आदि। इन के पुरुष प्रशाप से कार्यसमान का काम बानतसर में पमना । क्तंसान में भी वहा समात्र के क्तामान्य तेता एवं सञ्ज झानी विद्यासागर बी, बा॰ देशवत बी, भाष संच की दूशी वकार कार्य

मोहनकास भी भरोता, नी इंसराज<sup>े</sup> एते । की लगा, है। देशपपन भी, भी भ्रमंत्रास भी भादि सध्यन विद्यमान है। इसके सुन्दर प्रश्तों से ही अस्त्रसर में शरास्त्रीय कार्य हो रहा

की कार्यसम्प्रतों से जीवन है। समा का कड़ कार्किक पार्टिकेशन **पर** विशेष महत्व रखता है । उस वर्षे इस ने सद्दारमा इंग्रनात्र क्रमा -स्वाब्दी मनाने III विकास किया है। यह पुरव कार्य है परन्तु कठिन मी है। इस जिला से बांबार्ल श्रातम है।

ष्मितनाई भी सामने हैं । वेश्वय र में भी विशिक्षका की कर उन्हें है। इन समस्याच्ये पर भी विचार करवा है। इस: इस नगरी 🎚 रान-कीर, कर्मड, साहसी क्यौर प्रकशार्थी क्युको के प्रस भावत इनका हल सोपने में आसानी डोगी, एंसा

पाया है। कार्थिक

मैं आयं समाज कासासर के

मेरा विद्वास है।

### श्रायं वादेशिक सभा का कार्य विवरसा

क्षत्रिवेशन के सभापति श्री त्रि. रजाराम जी **प्रम**. ए. प्रम प्रज्ञ म ने अध्यक्षपट से सभा दा वार्षिक विवरण दा जो प्राक्त कथन पड कर सनायः उस का सिचन

भाग नीचे दियाजा रहा है। \*\*\*\*\*\*

मान्य सदस्यों का घरवतात करता हें और सभ्य रक्षत भी का बामारी 🛭 कि उन्होंने सवा के अधिदेशन को वहा बुक्तकर हमें UK PERSON SETA FAST 9 for सभी माननीय प्रतिनिधः बद्धाः पर

एकत्रित होचर करनी धरनी सब-खाकों पर विकार कर सके कौर वड़ा के अनुस्त्री पर्म होती बदाबरें

क्षा मारिया की महाजन, भी समाय के प्रति विश्वतावास बक्षांचे शोक समाचार इस वर्ष के संध्य में भारत हवा मार्वनमात्र सी बुद्ध विभूविया अस्

ब्चा में शीन हो इस से सता के त्वान एत होना कटिन है। है। इनके परुषार्थ से ही इस नगरी बिय एक्स हो गई है। भारत सरे-कार के मान्य भुतर्ज़ राष्ट्रपति बा॰ रादेसक्सार जो जोक वर्षक शासिक संदर्भारत तथा स्वतन्त्रका समाम के प्रमुख सेनादी थे। इनकी सेवार ६मी शताई नहीं जा सर्वेगी। इनका रिक स्थान पूर्व होन

> रैंजिक प्रशाप के माजिक महा-शय कृष्या की का हमारे सध्य से नमा शना क्रांत ट्लाशक है। ब्रह्मसंब की की जेलनी प्रात्तक श्री । विश्वास, निदरहा स्त्रका क्षाय-श्या था । आर्थ समाज के मानक श्रमत से । दशकी प्रमुख्य समाज शक्षमं प्रदान को ।

एव जाति क्या शह के ज़िए दुना का कारण है।

भी बतदेव सिद्ध और सब्द्रारी

की लगाय देने क्वीर पटन की क्वीप सरफर मागते मानव को वेदोपदेश डारा सबग, संचेत तथा सामग्राद करने का कठिन परस्त प्रजीत कार्य

एक्कोकेट गुरहासपुर वो कि समाज के कारवंड बाये-वर्श हैं, की माशा जी का देशकान भी समग्र है। मता वी सपनी झाचे देवी जी। सीमात काः जेतरकार वी महातन के शासका भी गध शी

या असामविक देशकाल से इस्य विवासक है। सगदानसम्ब को की प्रधाः विरोधास भी, पर रहरता भी, वैदा से मार्ग दरांच भी पासके। भगवास । बार्ज पारेशिक कामधा दिल्ली के निधन से समा 🎹 समाज को मारी चर्त पहुची है। पुरी मं

> बाली तथा रह स्थाउँ हे : पंत्र सक्ष्येत की औरपरी है वियन से भी बहुत हु सा हूं । समा के पुराने सहारथी थे। छनका ,

BIO अक्सनाय वी भी समा के महीगरेशक में। इनसी क्षण्ये-इत गायाचे सहा स्मरश रहेंगी । ५० **सशी**राम की कवितराक

देर रचत्र समा की सुर्शी कमता धा समानक देखाना भी उस का कारक है। णार्चे शारेशिक श्रीतिनिधि **स**मा के इस समी सदस्य दिवीगत बारमाओं के श्रीत अञ्चासीत कार्यित

ब्दते हर परस्वेत इस से शबंग बरते हैं कि वे इन्हें सहगति प्रशास करे तथा उनके कन्यु वान्यवों को धसक्र हुल सहन **करने** वी

बेट प्रचार

चार्यसमान का है। देश श्यासन्द ने कारता औधन इसी काम के निमित्त क्रवेश किया वा और इसी कार्यको प्रशास्त्रको के लिए प्रशास समाद की स्थापना की भी स्पीर कार्य समाज को ही भएना उछरा-धिकारी क्वाना था । इसी सहात कायें को अक्षाने के लिए हात-स्थरकीय बहारमा हसराज जी से बार्य बार्रेशक प्रतिनिधि समा को बन्स दिया वा क्रीर पारी काम को कार्य बढाने से पुरुषपात सहारमा वातन्त्र स्थामी जी ने छशा योजन को त्यासकर देश विदेश से सक्द बर बेद प्रचार किया और श्रव शी घर रहे हैं।

हम से बड़ी फ़ाँडनाई तो सार्विक

क्समोरी है। सभा की काहिक भवस्था दिलो दिन विगदती अप रहा है। क्यरेसको स्त्रीर सहसोच-देशको की कमी है। परन्तु प्रस् की करी इस सरका में विद्य दरने नहीं देवी। इस उपदेशक और अज्ञती-पदेशकरकान सके। येद प्रवाद कार्य में देर से शिक्षितवा का रही है। क्रनेक कारबों से धन प्राध्य ने कमी हो रही हैं। उपदेशकों की कमा से धर की कमी झीर धन की कमी से उरदेशकों की कमी होन्द्र धनक चस रहा है। इस चन्न को वोडना ही होया। 📰 पश्चनं

है कि यथेष्ट रूप में बेर प्रधार हो। इसरी बहरून यह पैश रही कि सभा के दो साम्य अवनोपदेशक वर्षे धर में काफी सराथ तक श्रीमात रहें । प्रजबे रोश-कार होने से प्रेन क्यार से बाधा चटना साधाधिक ही था। इस पर शबदाद स्टास्टा मार्थक्साह के सामने महाप , धानश लाभी जी महाराज भी

भीसार हो गय और वनके बीमार क्षोते से बेद प्रवार के बाद को कादि श्रांत पर पी । पक्क महारमा भी को बीधारी उस्की मी स्वीप साथ ਕਰਨਟ ਦਵਾਦੀ ਸੀ ਦੀ। ਦੇ ਸਾਹੰ ਜਿਸਨ हैं कि श्रीमारी के दिनों से देना समय भी काया जब शक्टर सोग भी बीवन से निराश हो गए से ।

**१**रन्तु वाह् रे वीवराग संन्यासी <sup>†</sup> पूर्व विश्वास के साथ उनको कड़ दिया कि 'कभी इस कस्ती वर्ष **की** इत्त्रियों ने स्थीनि आर्थि की इक्टियों के समान कहत काम क्रमा है।' परक पिता परमात्मा का कोटिश, मध्यवाद है कि सब ने स्थस्य हैं । समजेशी शेष है परना इनके राज्यों में ही 'वसे भी आना

ही होगा।' और में सहये कराओ को सुचित करना चाइता इ कि ने स्वय फिर सभने पुत्रीत कार्य को शास्त्र बर शहे हैं । उनकी पान्त वर्ष वर्ग्य शाला कर से प्रारम्य हो पुर्श है।

समा के शभी उपरेशक धौर

अजनोपदेशक महासमस्य वर्ष अर

कार्यरत रहते हैं । केन्द्र में आंध-

श्हाता जी के सुप्रकाय से प्रचार

कार पतार है। स्टनास कीर क्रम्याला मश्डल श्री क्रमर्गलङ् औ की देश-रेख में काम वर ग्डा है । दिसार कीर रोहतक मरदास की श्रोर विशेष प्यान देनेकी बाबक्य स्था है। क्षमादार भरकवित्र भी जन्नतं **में** पत्ने माने मौद्र द. मुरारीलाल **की** शास्त्री के करूप आवश्यक कार्य में नटे रहन से रोहरू और दिसार में बास बस दक्षा । इस वर्षे इसमे समार काना होता । विका हिकार को हमारी संबा का ferte ent ft mile unt ft

इस समय दाश कांश्वर है। समा को यह सीमान्य शब्द है कि बी० ५० वी शिषया संस्थाकों के जिल्लीका महोत्र करें कारण

ा धोपैसर सपना श्रीक्षती समय सदा के अर्थ्या करते रहते हैं । वे विभिन्त श्रार्य प्रादेशिक सभा का कार्य विवरण

\*\*\*\*\*\*\*\* रहा है । महाता बानन्द न्त्रामी समाओं के सरहते। पर व्यास्कान क्यांत देवर वेदश्यार में समा का की बदाराज कीर मान्यकर दय-इक्षवांत सर्वे भाग को की सहावता, हाथ बटाते हैं । हम सब उनसे

कामहारे हैं। रत्य प्रतिक्ति सामग्र महात्या देवी पन्द जी एस ए भाग्यकर शरशसर्गत सर्वेभाव की. परम शन्य हा॰ दीनानपन्द जी कारपर III सारवस्य कि बारवपस्य वी का सहयोग सवा को सता प्राप्ता तथा है । यक्षा विशेष WHERE ? रिस्की १९-समा हो समा की

बास है। संदेशाओं से क्या रहा सभा से सुर दाने दिया है। अपेते देशको में दी ५४ मार्च समाने समा क साथ सम्बन्धित है । देहती क इर्दर्नवर्द में भी धद प्रचार की पुन सी सची रहती है । इसका केंब women is former more may

ममचारतास की परी क्या तका 🛊

क्रोजर्ला मध्ये राउनमार ही के

য়াজ है। बेर त्रवार का कार्य भारत के करत हरेतों ने भी है। सच्य हरेत में भी देवश्काश भी व्यवते जार साहियों के साथ काम से करून है। कासीवट (वेरल) में भी बुद्ध शिक्ष को स्वीत स्वीता में स्थामी स्थायन्य की पूरी करन के साथ बास का रहे हैं। इनक कास का ज्योरा भाव भागे विदोर्टमें वह ये ।

बहा इतना बहुना हो पर्योग्त होगा कि इस महास्थानों के प्रसान स्पातकंद हैं। समा की आधिक सबस्या शहर में १०० वर्ष हो उसे हैं।

दीसा कि में प्रश्र कह कावा अब्दा देश बाहिओं वर और ह सक्षा की व्यक्तिक प्रकाशा डीक 'विशेषा प्रवास पर महान करकार मही है. चिनाक्रमक है। विद्यंत , है। मार्ज्यक पताय के विकास से राज बच्चें से सभी बीच समाप्त हो । उसका अच्छे यहा बाद है । वहित वर्षे हैं। जुनू करके सुकारा ही । सन्वता की रुस्तरि की रहा तथा

व्हित्रद राजी बहानुवाजी के दाद टारबार बिक्सा जी की ६४० हा प्राप्तिक की सद्भावता और सपूर

भागकानी साव समाजों के विशेष देर प्रचारार्थ चल्हान से समा क काक पश्चम आ रहा है। इस वर्ष में भी कड़े जमहों पर सबये गया है बहा से बार्य समाजों और सन्त्रने कार्वमे सफलका शास्त्र हो। जिससे न पट लेका समा की सहावता की है। इस सम्बद्ध से खारेसदात जारेंस रोड क्रम्बतर, सार्व ध्याज

बोड गर इन्डस, चार्यसमात्र दिखा जाव-घर, भागे संनाव क्रम्याली डाक्नी क्या शहर, मार्च समाज बन्दिर बार्स नई (१०%) प्राय की कार्येक्ट इद्रमणकार, औ ए थी, डाक्स सेवेश्टरी सुप्त श्रमून-सर चौर टी ०. वी. कन्या पाठ-शासा अग्रसर श्रेमदी मैशदेवी ता होस्पारपर, अगरीशसत्र वी होस्बारपुर, ज्ञानचन्द्र जी अुदेर्शस्य सेट हरिमित्र काहेग सित्र जी मेश्रेरिया, डीकालयन्य श्री, प्रस्तिम वी, बक्षवीर विद्व वी सन् रविस्टार भुकेरिया, सङ्क <del>वं शबदास</del> जी करा-

भी धन्यकाट है। सी झरोदने का प्रयन्त हो संदेगा । महात्मा हसराज जन्म शताब्दी यह क्या तो ताथ का ही घट गारलोव **महत्सा** हस अवन हैं, प्राणी, एक करवी कुछ राज की के राम जनमा की अधीन

> त्रार्थ जगत में विज्ञापन देकर लाभ उठाएँ

प्रशार में उन्होंने मापना जायन सता दिया । अर और त्यास स यह उद्युक्त क्रावरों कायम किया जिसके पालस्काय प्रशास में शिका का प्रभार हुआ, देह ध्रयार की ब्रोहसाइन किसा । ऐसे सहापुरुष के के जन्म को १०० वर्ष हो रहे हैं। सभा ने निष्ट्रपथ किया है। कि पाल सहारमा जी को जन्म शक्तान्त्री यक्षाम से मनाई जाए। इसके सिए एक शतान्ती अवसमिति बना दी वर्ष है जिस ने कार्यक्रम वैकार क्षित्र है। यह क्सिमिनि पन एडज करके उस कार्यक्रम को परा कोशी । क्रमुसे प्रार्थना है कि इसे इस प्रतीत

इस इस पुरुष क्यारमा के ऋषा से विक्री सीमा वह उष्युया हो पाए। महात्या तसराज भवन सब १६६१ की वार्षिक रियोरीबें

बसाबा गया था हि सना भवन जिसमें कार्यालय काम करता है. समो का सभी भरवता से सरीत लिया गया थवा है। यह तिकासी आवतार यो स्रोत रेश यरते के करीय मानि है। १६६२ से जसके साथ शरकी १७ सरने जसीन में स्तरीव सी थी। इसके बिर धन भ्रष्टात्या श्रानन्त् त्यामी जी सद्दा-शक्त की करो। से शहर अध्या था। टेट क्लाल के सम्बंध जमीन इस सवन के सामते है। इसे मी करीबना करनी है। इससे सभावत वाल, विशेष शन्तवाद के प्राय है। अवत बढ़ी संदद पर का जाएगा। प्राप्तान क्या है चतेह सरस्त्रों ने परन्तु इसके ज़िल् धन की बाधहरता भी अपनी तेत्र से धन वेदर समा है। सरकार से जातचीन हो रही क्षेत्रकाष्ट्रस्य की है। इस सब कर है। यदि धन प्राप्त हो अधे तो इसे

इस स. इहा पूडा इसाला है। इस को सरस्या से बाब नहीं वस स ह 1, इसे तो नद क्षिरे से **बना**ना होता। परणु इसके लिए भी भनकी क्राबर १६०। है। वर्षि कोई सम्बद क्रमने जनमे इसका विश्वय कर से थी थन एउन हो सबता है। मैं मान्य प्रतिकित्वि को से शयका स्थान है कि

बे इवर झक्त प्यान वें। साहित्य प्रवार विभाग

हमारा माहित्य दक्कर विमान क्य वर्जे में दोला चक्ष रहा है। कारता पड़ी धन की कमी है क्टीर लेगों की धर्म वर्षोंने धराणि । कृतना मुख्य कारमा है हमारी क्यपनी तम दोशी। यस के न होने से बन्द्रों शनदी प्रश्नवे स्वये से स्र जानी हैं। सरशार्थ श्रवास की प्रशास, कालिया, पतायो, सर्वेदी का भ्रत्य बाषाओं से बहुत वही सात है। यह जिल्ला उपने हैं, कह विजी के किया जी है। वेब मनों के स्रव शामकेत का अञ्चलक अर्थ ओड़े का **ध**र्ष, अनिता भे देशको, वेदी क कारेशी में आह्य, उपनिकारों की क्रमान झाटि जेसे उपकेशी साहिस्य की माग है। विदेशी विद्वासों ने बारा में देने के लिए क्याने रास कीर्ट माहित्य करी । अवने औं देश बहस्त्री तक परेवालेक किय हमारे प्रमासक्त, प्रस्त अस्ता अस्तिक महोर्ड । इस क्यों को इस सर्व बरी शरद से महत्त्वत करते हैं। पर **क्या**यन नहीं यहा। मना है बहारका प्रावस्त्र स्वामी जी बहा-रात सा कि इस क्यम्या ने भीर इक्षार गार्थ में जना व्यक्त रहने पर यो लिखते रहते हैं । इस वर्ग एकडी एक प्रशाह ''चीर मने जगल के दर्श है। इत्रतिकों का मार सच्छ बाटा है। है। अवह प्रद्रमेंद्रे क्षेत्रक है। इसारे पान द्वापरत रीकामचार्य भी भी su समो पलकों को चवनी शिक्य

क्षातं के राज हैं। वे ब्रावना समय । सामाओं में स्थाय हें-अर्थान

वहते कीर शिक्षणे में की व्यक्तिया संस्थाओं के प्रकारतारों में, पारिती-

काते हैं। 🕅 वर्ष रम की दो रखड़ें फिट बिलाया है, खुलों के कारक्यन वेबार हो रही हैं, 'पर्यावश्य में कौर कार्य कुच्छ सदानों में हम

### ऋार्य प्रादेशिक सभा का कार्य विवरमा **\$}}**

प्रकार' भीर 'जीवन स्थापत' | का खिलक से खर्मक रणवीय करें। बढ़ हो जो क्षेत्र के हैं। अब जिस से काने काने गाने शह के देशानवरों में प्रसारित करें। वे ब्रहात्मा <del>इस्ता अहे का की नातिका</del> नाती कर्या पर स्वयंवक कीर वरत्यांक्या इन से यांचन दिशा आहेशिक आर्थ यक्क संगठन तो है। 👭 पुरुष करती सकती वाज कर राष्ट्रीरधाय व समाजीत्वान वर सदबर तैसर हो अक्सी । इस्ते व प्रतिक कार्य में करपा करता त्रकार हिल्ली शाम भी भी महाहब

ર્ગ દા સૌથત માંગ્ર **લ**કો છે. છે विकास है है। इन दोशों ऑस्ट्रीन्स umstac feiten

में वहां बहुतमा जो की जीवन क्रम्ब से वै पित कार का प्यान मानी होगी नहां भार्य समाज क रिमरोन भी होता सबा बहणका रेको कम भी की भी भारतारी है वे इस चाय में भी दिन राथ उपरेश देने, परने और सिक्षने में सने दुर है। प्रश्नों ने यक्ष्मेंत्र की

लिया है। यक्ष्येंक का को दलर सामान्य विकास ताला है। एते िर्माण प्राप्त कि शास करत सम्बोध स्था कर कर्न अस्त के मेर हो जुना है। ऋत वे बदर्शनेंद के मुदादल में समयोग है, जिल्हीने का कालकार वर तो है। जालका महर्ति स्वास्त्य की पान के बार ल्डे बाब रे और शतका लाकर **द्दो इस शहर कार्य को सम्मारका** बनाद रसे शार्टि में क्रमा करन हो विना। परशु**हमें तर** संस्था हवा तके कीर जारों कैसे को चलेबी हद विश्वय वन इद यथा शक्ति शास्त्रे राजों से लागे से हे सबे इन बाग को बारों से आले का ध्युत्स्य के साठ अध्यक्षात्र 🏭 का नासक दशन बाहर पारिये।

धी धन्यवस्य है कि दे भी जिल्लान हनारी विकित्तन आर्थ स्थाप बीर प्रपनाने के बन्म में जमे रहते नदी रक्ष थी, यातक होती, इसारा शोबेराम देशर चानता विशासी थे है। इस वर्ष हार्जन बार्ड यह हफेर देशर करवाया है और अपने रेश नैतिक पटन केई सर क्या के । साथ हुआ। से राज्य रहा है। ब्राप्टी क्या सर्व पर सरका कर सच्च प्रदेश में विकास डीड रहते हैं कि मारत के फ्रोब क्या **म**विकारी व साम रम अब का चलेला है कि इस

जीवन के प्रविद्य हो वर 🗐 सरने | क्यों में बार्य क्या देशी कार्ड वंदेश शब्द हुए। aus कार्यक्रिक हो पर सारे देश

को अञ्चापार तथा सनावार है थयक्द शहें से जिससा सफता है। काको इस चारत की क्लाई की iबटाबर श्रीर शादों वैसा अपना शोध क्रमश परित्र इसा ६८ १**१व** उन्नव होँ तथा ऋषि के सरवेश को

रका राम सथा छ्या

शाहेशिक मान्ये नुबद्ध सवस्त्र का ५६ हरह और अपने दम से यस रहा करपत्र सवस्य है। आयां प्रावेशिक श्रीवर्गिय सम्ब ने इस का इस कोर वार्शवत करता ह कि क्षांत्रद्रंग अपनी आन्तरंग सक हब बनोरे धार्य समा सर के लामी द्वारा स्वीष्ट्रण कर यो० नेरोशम श्री दयानान्य की बहाराज के जरुशीय- रागरे एक० ६० को इस संगठन का दारी है। दन की क्षत्तिम वर्णवत । प्रभव निर्वाधन विदास । समा वहीं ही की कि बार्क समाज हो ं ने बुक्क संगठन की देशक, दिल्ली दन की व्यवस्था सदक्ष हूं हता । तथा हिमाश्यक प्रदेश में संग्रहत कार्थस्माची का के इत्तराधिकारी , काले का बार भी शेक देशिराम हैं। चेद के मीवनदासी तथा चन्छं, ेजी घर ही हाला था। दन्होंसे मन हान को फैसने हं होना हो। बढ़े श्वाल पूर्वेड स्थानन्यान पर स्वामी दी महाराज के हकते बच्चों , वास्त इस स्वास्त 🔳 निधीयन क रहा है हवा क्ष्मारे कियो होता किया है। सभी रहत और साहेरो है । हमारे बन्धे नेएक महार्शयदों | ये सुबक क्षमाओंकी स्थापता की है र श्री रणधीरजी सम्पादक देनिक

ि विश्वप देहती की सपत्री का

श्वश्र विवाह २-३-६४को छमारी विक्रमंत्रास

वीको सहस्रक्षा कासन्द स्वामी श्री को, समुत्री भी उन्तरीर जी)का ग्रम विकाद भी दर्शन M. A. सुरात की

OR STREET WE SHOW HERETO करित सकट में से गुरुर रहा है। विश्वनार्थेट ध्यीर वर्ध-बद्धों संस्वाधी नरम रोटि का बेक्सान, कानिक्टों के समाजक प्राप्तिक हुए । संबंधि की काल्यांत्मकता नहि इसरे 'बरवर्का माद्योगीर दिखा। स्था विदेशों से भी दर वस की भागीय

मध्ये समाव के परिमय मंदर में बोई भी ऐसा स्वक्रित न होया को प्रारंकीर की य के क्रेसराक्षा प्री कर्ण प्रतिक के जास कीर क्षाय से परिचित्त व हो । परन्त आयेसमान से बाहर भी करोड़ों मनुष्य शी ए', झेलगम भी के शम से परि-विव है।

कारका सन्द्र द नेत्र स. ts ta कि को शक्यार के दिन सैक्टपुर फास में हुआ। । कावने भिताका नाम औ व. सरामित जी क्रमण सर । कायके वितर की कार सरवार्जे भी । किस्के बाव इत्रमें दरें है। चायके वाचा क साम भी पं. शब्दाशम भी महत बा। या। वो पैतावर प्रक्रित मे दिवरी इम्ह्येक्टर में । सायको श्री प्रामील क्यों के काह वं कर **48 काथ में** पड़ते के ज़िए भेजा श्रष्ठा । इसके बाद बाएको सावके चापर जी अपने पास पेशनर से क्षत्रे । तथा तथा पर पापके परचे का ब्रह्मप कर विका गया । इसी अग्रह कायने क्रवती पाश्री हो इकादशी का वपवास रतते देसका श्रापके चाप की स्थवास इसना बारप ही सर्वे कर्ता है। कारण्य कर दिया । इससे शिव क्षेत्र है कि साथ का मन क्षेत्रक से ही प्राप्तिक विचारों की

क्साय सं. १६३२ वि. के पीष ज्ञास में पेशावर पुक्रिय में सारशेष्ट क पद पर लग गये । इस समय चापने एक शार्मिक सिमा विपादी के मंत्र में कायाच्या की जावाज करनी कारका कर दी थी । चाप प्रविदिन क्षेत्रा का पाठ करते थे । रम समय कार के विकास सर्वेक समीन वेटार्मिकों के साथ विकास बारिका से पक्षं चकर स्थानी त्यानन है। जन काएडी कालु २१ वर्ष हो লী ভ ৮মম ৰ মন্তিম তঠন मर्कासमाता पिता ने प्रापक किये। बहा पर स्थानी भी से लंब क्षमाने विकास का शताब रका । समापान विवा । स्वार्थः द्यातन्त्र बी के बत्योगदेश से काएके श्रव परन्तु बापने त्यह रूप से अस्ती-बार वर दिवा । इसये मान्द्रव संराय नियक्त हो यथे। इसके बाद होता है 🖩 चारके हम सहक

are er

#### श्चार्य पथिक वर्मवीर पं: लेखराम जी वि:-भी बेरबत जो 'मलिक' विद्याधिकारी वृश्वत

भेसवाल (रोहतक)

#### \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

किस करत करते के सभी के सीमा को बाता है। की बाता की के प्रभावर व्यापदा संदित पद रहे वे मीरे से ही तम से छाप सनमे कार्य कर राज कि रक्ष समय क्रापके सन से श्रुपियाने के जुरी बन्दैशकात भक्तमेर से वार्षिक झावर सार प्रक्रमधारों के करवें के वहते के

ने पेशतर कार्यसमात की कार से राकरका रहें । सन्दान कापने 'बझी:हेक' अब्रह सामित्र पत्र विकासका प्रधानन विचा । स्वा क्षप्रकारी के यह प्रक्रिय प्रस्त सम्बद्ध कः भार जी आपने प्रसादर धरने सारम्य ६८ विससे ही सिया । जिससे करता से वेरिय बारको प्राप्त समाज तथा स्वामी पर्व का बहुत प्रचार हुआ। स्थापने उनायन के काम का पता पता । शय-याम में आहर बनवा हो इसी समय कायते त्याची दयावत्य वैदिक धर्म का सम्देश सुदाशा । वी के शंसद्ध अंथ संशाकर पढने कावकी इस भाविक वचार की कारस्य कर हिसे स्थापी स्वास्त शरम को देखकर ज़स्सिम प्रक्रिश லிக்கலிக்களின் கமைக ष्ट्रिकारी झावने शास्त्रार्थ करते विकार दश्हर गये । तथा आप धार्य वे। परन्तु उनको अपने सह की वन थ्ये । कायने कार्य समाव का साची पदली थी। बाहोंने विश्वहर

टां≀ वर्तर सनुष्य को ऋवाचार क दासला **से हुक** स्थाने बे वर्णाय कार्य कार्य कर सह से सहायता हो । २४ जीताई सन तथायि कारवे भन में क्रमी ४६ रेप्पर हैं। की सहाय शिक्ष कल्प मंद्राक भी । उसर्वक चलाते कापने पुश्चिम की तीक्सी ना शंका किवारकार्थं सामी एकास्टर रपामका ह दिया और २० सिक्बर भी के दर्शन करने का निक्चय का रेपपर हैं। को मनुष्कों के हासाव हो विका । प्रयमे निरुपयानुसार कार्र बदा के सिये मुक्त हो गए। इसके ४ वर्ष की शीवश के शह १ जाल

प्रचार करने के लिए सब १०००

में ई० में पंताबर में कार्ट सकत

थी स्थापना को । जिसके गारण्य

में केंबल ३ शहाय क्षेत्र । रसक

का फाक्दारा लेकर साथ ११ अर्थ

स. १८८० हैं। को स्थाबी को के

दरोनार्थ कक्षमेर बता दिए । वहा

१० वर्ष को सेट प्रतेषभग की

स्कामी दयानन्त भी ने प्रापको

बाद बाप प्रार्थ गाँवक सा गए : रन्ही दिनों कारिका के 'सिकां गुकास बहुमर' की बनाई हुई 'बुराष्ट्रीय सहसदिवा तथा सरस चाम चारिया' जासक प्रमाने

प्रकारित औं । जिन में बार्शनगांध माविरोप किया शबा का। इन अराकों के सपने से सामके विक को काल चोट लगी। इस क्रिक भापने 'सराधीन ध्वासाविका' के स्वरचार्य 'तक्ष्मीव-कुराहीव-कहम-वैरामियों के से विचार वे : एक २४ वर्ष से पहले विकास न करने | दिशा नाजक पुसार सिसी तथा

'श्रुरंबा बहस मारिया' के संहनार्थ 'नवसा सब्ब ऋदमदिया' नामध पलाक सिजी । Ⅲ से महस्पयी शत का बहुत प्रथल स्वद्य हुन्ही। क्रिममें बन मह दर श्राप्त शारा रका। तहा भी चार्च समाजियों के वाद्य महम्मदी मत बालों का शास्त्राधं होता या, वहीं काप पहिंच शक्ते वे क्रीर दसरे शोग कार भी रुपरोक्ट पुलकों से सदायत

लंदे थे। कारने क्यां समेत्यार किया वहा ग्रुटि सुधार भी ऋत्वभिष feet । जिन से २४९मार अगर के बाट रहेंस ची० पासीराम भी और विभ के र्राप्त दीवान सर्वेमस जी करी बनके होता पक्षों के ताम प्रत्येक्षकीय है किससे गर्भ का साम विवान येशराम था :

sate at adex no take fao के प्राप्तरूप से ३६ साल की बाय में सरी-पर्वतात्रकात अन्य गाम निवासिनी इत्यारी सध्मीदेवी के बारकी पेशकर से बाबुला है स्थान साथ पर्स पैटिक रोति से विवाह पर बरली करावर अपनी पराज्य सम्बार द्वारा । शिस के वर्ष में में १६ ध्य बदला क्रिका का । परन्तू बदावी सहेते १६६३ ई० व दिन दव इ ने से बारफे कार के राधा नही यत्र रत्न तत्पन्त लक्ष्मा विस्त स्था शाम काप ने सुकादेव रक्षा। विश्व की शह से १॥ वर्षकी क्राप्तु में श्राय क्षी नर्द । इस इत्य विदारक पटना से भी काप का उत्साह कव नहीं हुमा। इस के दिवरीन आपने देशने शरशास से वैदिक धर्म के प्रचार का काम विकास कर कार के पिरापुत्र की सन्तु हुई । उस समय पंजाब के मास महब विषय पर विकार च्या अहा था। इसलिए बाध्ये इस विवाद की समाप्त करने का जित्रक्षव विवा त्या अपने जिल्लावातसार मध्य भवत संदर्भये पह प्रव तिला। जिसका नाम 'पार्यसमात्र में शांति केशने के बचाव क्रीन सं रामण्ड जी का सक्या दर्शन' है। धार ने 📰 घव से वैदिह प्रमासी से साम प्रचल का संजय दिया है।

करते हुए देहों की सहातका कर स्थाकतात दिया भी इतिसन्द तो

साम्ना में त्रार्थ समाज त्रति क्या देवेच प्रमार मी दिएकोच १६६४ (० वेदाक) तदः स्मयन दिया । इसी संदयर पा होता। कार्यस्तेन श्रीतंत्रहा स्वते राजीके भी प्रमाणकासी व्यासकात नामां सा की शाह स जा श्रचार राहे साथकों को श्री नदारका व्यव बीस्तर हुवा। श्वरिका इस १८/२/६४ से २०/२/६४ स क्कमाथ वी दादवा आरोंने। विश्वे **प सम्बन्धि** ने शहर हो वें वो पर-वावने महाना तना --लोक दिवस को से जा राज जी सीर **१९**डी दिनों में कुमाराए की सहारवा गैर्पन् होने का चारीक्र विशा चार्य समाज गोर्बिन्द नगर द्वरचंत्रकात वी गडनीक करदेशकों पालर लासे की संगक्ते फ उत्स्वान् स्परंत्व श्रूष्ट्यों की सहा ' दाश बळा कराच राजी समाजिक क्षतंत्र मी बारको विकेश । बद पूर्व मोत्रम बराबा गया । कानपुर का खनाव ब्रबार किया यहा ब्रावे समात्र बारी बडेश भी है रसंक्रिकीर मंचि न्यान मी राम काले की धार्थत. वार्वसमान शांताकन सम्बद्धी बारका कार से कार्य है। क्त-काल से संस्थान विकरी. वे रीव मी घरण्यो हरते दो क्रिकेंगे क गर्विकोरस्थर अस्तरकरो से स्वार्य ६४ चार्य प्रादेशिक समाज नामा नंबी की क्षेत्रण काल की, कार्यकी मानारी स्वतंत्रके अञ्चलके होर ने के कारीह है सुन्धा हुया। थे कविनवेडमार थे. बोचायय---बोगासन शिक्क्यंने । बाजाने कि वे स्टब्स की साम्बी की शत के वंज्ञब में शिवदशांब दुरेबा, प्रश्लक्षण्यस्य --मी पंतित ऋषिराम जो क्षेत्रक को समय देश कथा होती रही। प्रश्न सार्थे इस्टेंस्क अधा के विराज मी अगन्वाय को कहर । शंकर'न प्यारेंगे. स्रोगासार्थे स्त्रे पाईका कावन्द स्थवी जो महाराष्ट्रस्थान क्षान में बनी बान्डे सेंड रावेन शहत्व देवीदास झार्य, हो. दर, सम्पर्कार-एत्री महारात्र संस्थातिको जगरीशच्य वी शास्त्री के वस्त्र more की क्रांक्ट की प्राप्य बता में च्यत्र, वशीचन्द्र वी अहेराचन्द्र ने तथा नवहीराचन्द्र जी दर्शनाचार नापन भी भाष सन सकेते । व्यक्ति क्षेत्र कार्यन समारोह के साथ रामनाशस्त्र की शास्त्रो हमार, रामसदाव जी । फराजे भाषकी संश में हार्चमा है। वि स्टब्स इसा ( स्टार्ने के बोबोरतव बाब कार्च निरीक्ष । बादि विद्वारों के विद्वसमूख सामग्र इस लक्षाबार का केरिक सावका संस्थाती होता, अविचारं मायवाँ में होते खे । —बोबनशास क्यो क्यान मानव क्योरन हेहराइन' में ब्रावने हत समारोध की मनोरंबक क्लाया वेटिक साधन-प्राथम विश्रों सक्रिय पंचार कर साथ क्यांचें। आवं प्रधार समिति स्टबर्ड विकासी बाजों की पारिकेषिकों से खयो. बडा व्हांको को सपना ध्य वार्षि कोला**श वका** ज्वाचा तपोवन देहरादन स्वामार्थिक विकासका विकेश सर्वे मात्र ही बहा मेडिय, शक्ति स्वान बोबोलर द ब्ह्यती बढ वहाँ पूर ब्दे कलाहि से सहायता को । में गायशे-महायह और सादना-का शरूब किया जा सके। बास से सम्प्रम्म इसा। ४ फ(पर) क्रम में भी होत ही • मी • रासी विकिर। सब इन समों भीर वा इरियम ग्रा क्षे अर्थ ४ वने शाका वाला कार्रव व बीजबी विस्ता क्या ने करि वें की सरक्षत्रों को सचित दिया प्रकरण र वैज्ञिक सावभावम वरीवन li विस में बार्च सरावड़ों के जाता है कि वैक्टि साथन बाहर **बी**का पर थापस दिए। बाद में थी बम्बई में नाम करवा milifes ve gur & aunn साः वेशराज जो सादिशः ने वरोशन को देहराजून देखते-हरेशन मान के बाद खाशकों में बाद**िका** करूरवीर मापस हे ताब कार्रवाडी वे अवस्त सेन सीख को हरो पर संस् हार क्षण में वो पार बाजर स्थाने समाप्त हो। बदत सन्दर एवं रसकोक अवस वे वी मनवान देवती आर्थ के हो सहाराय के अववन दवा, मी 1-अं, 97 Marie स्थित है। जिस में २४ इकार बाह-जिवास स्वाम परश् सेर्ड करवरी६४ | शक्का बर्गाद के भावक होते रहे : वन्त्री समाद तियों का पारती महाका सं कोड बनोकों या हो पर्शिक चार्यसमात्र प्राप्ती संक्षी में মধ্যের আনন্দ নিক্সী বর্গার बा नकराब ने केर दिन वह मध्य बी बारवात में १६ बारेंग १६६४ विमाशना प्रथम सर स्वार से ऋषि बोधोत्मव क्षत्र सा मार्वेलवाज पुरानी वंदी जन्द दयानन्द-वचनामत वारंगमात्र वर्गीतर कार्योशी 🕏 इस वर्ष अध्यक्षी नवता समाजी "अहल की। वृद्धि मेरे सन में माथा को मा**य** होतो. हो की कोर से मन्त्रियित हाए में ऋषि चेंबर को सारित दशन मैं पत्रवान्त-पूर्ण मधने पितृ-वासःत् का क्वी परिस्ताव करशा रि बो रोपनड बड़ी धन्न-पाड़में मनावा नहा तो झालके चढाने में चड़े, दूता गढ़ से मारे, २०३-मण में मी मान का, उपनेप की शयक मधा १९२२ राज के प्रधान में पार्च-दमाने, और नाना श्रीजाकों से जिल्हार रूपनों से ऋदी स्वीवन खार्नसमात्र केंद्र ते ५०००), स्रो क्यामहारिशालय की सर्वावरों की केश्व वा ('महातव, जिल क्यु को लोड में कैरे वर-शर रामदास, ओक्स्बास को फक्सकी क्रोर से अवनें-प्रशासे कीर भीर सांसारिक सुलों को स्था के किए विशासकी ने की है<u>.</u> बाबों ने चपने बाक्त-पिठा जी बी क्सापती दान-चीत के द्वारा क्या की बती पर अपने विवास रक्ते । देतता है, बाद बोगों को अवश्र कर भी ज्ञान नहीं इन कारह पुरुष स्थाति औं ११) को प्रधानिक भारका पेका ककता हो हर रहा, मेरा से वहां रहना मी भग ओ व सब कार्न प्रवाद सहिति को हो के दर सहकानमुद्दश्यद जो ने वे चार होकरो बनाने का वकन का को काले बदाबनो सेट water it ? रिया। मंत्रानिक सार्व स्थ्री समास

सुन्द व वस्तान मी क्लोप्यास की सम्बोध कार्य प्रोहेरिक प्रतिकृति सम्बोध सम्बाध हाता वीर विसार से क, विकार रोह मास्यार से सुन्दिय को सामान्यता सामेद्रम सहत्वा (द्वारास स्वय विषट कराहरी सामान्य सहर से प्रसारिक सामित-मार्च साहेरिक एक्टिकिंग समा विसार सामान्य



रेशीप्रेम कर २०३८ [स्वार्यपार्टशिक प्रतिनिधिसमा पंजाब जालन्यर का साप्ताहिक पुस्तपत्र] सब्दर्ध No P. एक श्रीक पर सुम्ब १३ वर्ध वे

वर्षे २४ वक्ष ११) १ चैत्र २०२० गीववार—द्यानन्दास्य १४० - १४ मार्थ १९६४ (तार 'सादेशिक' सानन्धर

### वेद सुक्तयः वयं सम्बाय स्वस्तवे

हम सपने मुख बन्धाण के निक्त है परवेशकर । चापका चापना स्थापका वाली हैं । प्रभी धरकान को हैं (राम करा। वाली के पर मानव की हर प्रवाद की सुध्य-रार्थन निक्त हैं) वीचन मुख्य का उाली हैं किस मानवान करा की विकास मानवान करा किस का मानवान करा किस का वाल के का वाली करा की का

#### हुवेम वाज सातवे

दे फित । हव व्यापको पुकारते हैं, शार्थन करते हैं, इस तिन्द कि इसे आपको सुना से तान, इस भाव हो । कान-व्यादि भोष्य पहार्थ (सर्ते । इनके याथ दी तो भरतार है, ताला है। फिर कार्यके भरतार के शार हो/बर महार्थी भरतार के शार हो/बर महार्थी ।

### न कि इन्द्र लदुत्तरस्

हे हत्द्र मने । बायले वह-यर कोई भी उत्तर बतस या % पानदी है। काप हो सब से यान उने हैं। कापकी माल से मुंग होने में दर अकार में मुझा सुरंपण की सम्बर्ण विस्तरी हैं। जान महान् वस्त्रान हो। सान में र से

### वेदामृत मनसापरिक्रमा मन्त्राः

शोष त्रतीची दिस्तरुवािःचिवतिः इदाक् रानितास्न भिष्यः तेम्यो नवोःचिपतिस्यो नवोराचित्रस्यो नव इषुस्यो नव एस्योक्स् । वोत्स्वास् होष्टि यं स्यं हिष्पस्तं वो कामे देण: ॥ श्रवर्ष कृष्ण इस्तु २७ मन्त्र ३

कार्य- है जावार ने कार (कार्य में (ति)) का बीच्या तिया में जो है कर होता है जा किया है जा है जा किया है जा किया है जा किया है जा है जा किया है जा किया है

\*\*\*\*\*\*\*\*\*

### ऋषि दशंन सर्वे लोका नियमेन

ये सूर्य धार्मद्र को कार 291 वर मेहबर के जिएसों वे ब्राइने ? क्ला में खोने हुन हैं वर्षी इन सम का जोबारिका है क्ला सामस यो तिक सं इन समावत के त्रीवा जिनक को शोब कर इना हो जाये।

को हानां व्यवस्थायकः वर्षाः महत्त्व भगवत्यः हो ॥

सारे पुत्र बर्माह ओप्टें ही व्यवस्था करने शामा है वही महान व्यवस्थापक है। महान भी स्वक्रमा दक्षण से जो नाग एकार की गहनत होती रहने हैं, पर उस की व्यवस्था में हेट मात्र भी स्टब्ड नहीं हो सम्जी

#### श्वारचर्यसम्बर्धः सः

वह प्रभु महात आहवर्ष मारण है, करानुष्ट है, रहरूवास है। क्रम एनंशा की साथ तक पूरा मण हो त कोई सबस सबा है क्रमीर स तमस ही सरुका है। क्रमीर स तमस ही सरुका है। क्रमीर स तमस ही सरुका है। क्रमीर स तमस ही स्टूचा है। क्रमीर स तमस ही स्टूचा है। क्रमीर स तमस ही स्टूचा है।

নাম বুমি থা

# मन को वहा करने के तीन साधन

#### बात-प्राव और ध्यान (कुल्य महात्मा भागन्द स्कामी जी महाराज)

英表示中心表现中央教育家中华政策的表现

अब के वशीकार करने के सा-मित स्प से किया जाना पाडिए। इस प्रकार संगातार के सन्दास से षत्रों का विशेषन परते हुए पूर्व मन में इस के किय रूपि देशा हो के कोनों बात धीर प्राया 🗟 नश्रन्थ अभी है। इस की चलकरा चीने : में अर्थन के बार से सचे व से कड़ा प्यायता में परिवर्तिक होनी आही बायदाई। भग तैसरे सधन है। सभी ? किया गया सम्बाद ध्यान के विषय में विशेषन किया न्यान की क्रवस्था की परिचयन जला 9े। ब्राप्ट का काल पाने न्हीं सर सकता । अतः शक्तिनी क्क है कि ध्यावतेऽनेनेति प्राप्तक बात यह है कि निस्न्तर अभ्यास विकासायन = श्रीक्या के द्वारा का लगाव बना डाक्षो । वैसे किसी स्थाप किए साथे वसे प्रयास करा काम का त्वभाव कर आहे । हा बाका है। योग के बहुत बार श्वमाथ निरन्धर की वाले वाली भव्यों में ध्वान का स्थान भी बड़ा क्रभाव की किया शक्ति से हो प्रकल है। योग दशेत में विका है **वि**-ता संबद्धेक राज्या ध्यानम प्राप्त क्रिका जाना है। **बिसी** तत्व को तेकर क्या पर निरन-रसरी बात इस के किए बढ़ है कि निरन्तर पत्र के साथ साथ अप क्षय से यन को बताने रमान साय दीर्चकाङ तक इसे जारी रक्षे प्यान स्टलाता है । जिस समय श्रम्यास करते हुए जब बह्द समय जन की ऐसी बाबावा कर वाटी है हो नावे तो प्रवसाना नहीं पार्श्वय Fli कर किमी एक तन्त्र पर परोठपर टदारु वा विशास नहीं होना पाडिय टिक जाता है। रस भी चनता वि इतना समय हो चुका है किन्त **बागा**प्त हो जाती हैं, उस अवस्था कामितक विशेष तत्व मिला नहीं को प्रमान की क्रावस्था का ताल है। देश विचार भी सायक की दिया है। किन्तु पित्त की इस **बितान्य एकायता की दग्रा को प्राप्त** कोर्व काम नहीं परंदा सकता। प्रत्येक बात के लिए समझ क्षणता काने है किए वहें वासाय ह है। साधारवा से वृक्ष के लिए कारकारका है ऐसी पान जरी कि वितास मध्य बरेना प्रवता है। क्य मन में भाषा तो सम्यास के पहिले कहर है, फिर भीडा होता फ्रिए केंद्र गये क्रीट पिट वर्ड २ है, इस के जिए जल लियन आहे भिन समय निकास की न जा शका । न ही प्रभास के शिए वेंद्रना की खोर भ्यान देना ही होता है। क्षी सारक्ष्यक समया । वर्षि केंद्र अब विश्वते समय के बाद वह बन भी गये तो धनमने चित्र के शाय बर पने. पुस चीर पानों से दुस्त वैदि। देशी स्थिति से स्वान तती होता है। यह हम बाहिर के अने स्राप्त करता । योग दर्शन में इस के किए उठना प्यान कर के यह बारे में लड़ राज्दों में बढ़ा है कि दरते हैं. हो मन दे धरीकार हार बिच की भवि-सदस्या को इस दशा प्राप्त होने बाकी सम्पर्शन के सिथ क्का कार्य के किए श्रीय विशेष जाती की बती प्रधानस्थलता है । प्रसादे हये तयस्त्र को मानस्थलता नहीं है : चित्र कामनाओं कर**यी पड़ती है।** 

म्बान का संभ्यास निरन्तर निय-

### बराई को ?

(बे॰ क्योद दबार दीकार्य नवात रेखने रोट क्रियार) \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

"Evil events from | हमारे बच्चे बहुत मालायब हैं, सुख evil-Aristophaner

हमें समस्य विश्व में बराई ही बराईद क्लित होती है। भाग सन में मुरे निवार कर जानें तो सरव बद्धा से बाय बाता है। At the arrival of ovil. वनका है।

the truth is parted.

कोर्र जी ठळकित सामिये दुर्श्व नहीं करता कि वसे. दसरे को र भी देखका समीम प्रसम्बद मिनेयो। यस्त शह दराई काचे यश को सम्बद्ध करने वासी होगी क्लोर्टिक बारे की को दिसी ने

क्रमहरू मेन गा किया होता। प्रत्येक कार्य 🎚 साथ कोई व

कोई करण जुला ही रहता है। क्वोंकि Cicero से टीज ही कर

"Reason is the mistress and queen of the thines"

चात्रका जिल्ली भी वर्गाली लंदारा तर का कोई सम्बन्ध अही र्राष्ट्रवोचर होती है क्या वे सदर्श प्रथम से बो की जाती हैं १ लडी विस्कार नहीं। क्या किसी ने सोपा इनके

कारे में शंसन Yes man (m में दो जिस्ताने बाले) बने हुये हैं। विसी सी बराई की बन

यवदरी है।

व्यक्ति स्वक्त होने पर ही बुराई का सहारा लेता है। मजबर स्वांस्त केंद्रें भी कार्य कर सकतर है। बाअवसी का वधरा नाब प्रसम्बद्ध है। सन्बद्ध व्यक्ति क्यो कोई सर्ध्य नहीं कर सकता । बर्ध व्यक्ति ऐसे भी क्षेत्रे हैं जो अपने

बच्चों को सदकर करते रहते हैं की दिन बड़ने हैं क्या हवा करें.

करते ही नहीं ह

किसी क्यांकत का चरित्र जानने के थिये उसके दक्तों का परिक रेसना वर्शहरे । यह अपने परित्र के कलसार क्रमने क्ल्लों का चरित्र

कोई भी सलका सभी सामिक क्यितों का हो सकता है जब बढ सन्तष्ट कथा प्रसन्त हो ।

'The best way to make children good is to make them, happy."

कत . कोई भी बुराई फिली स किसी कारक पर विश्लेश होती है क्रमांत चस्त्रह पर निमेर है। क्रमर क्रसन्तष्ट तथा स्वस्ती मो समाज कर दिया जाये शे कराई का सामी विशान बिट साथे।

मेघाधीं जी का टंकारा

टस्ट से श्रमम्बन्ध क्षे देशभी की वे वार्य से

है। भी केवार्थी की टकारा के अपना केन्द्र बनावर प्रकार करने जी आहता से पनारे थे, श्रव श्रवता केन्द्र जासतका से गए हैं कीन व बई बदेश कार्य प्रतिनिधि समावे शहबोग से बाब बर रहे हैं।

ष्टार्य समाज शान्ता

कंज बम्बई

का वाविकोसाय 27 फावरी से L कार्च 1964 को वह समरोह से सम्बद्ध हुमा। १० स्ट्रस्थ बी शास्त्री की रात के समय बेर कवा होती रही । पून्य झार्नर् स्वामी जी महारहज, खामी सम्पर्का रह की मझराज सन्वासियों ने तथा वनदीशचन्द्र की इसना चार्य. ५० राज जाराक्षण की दासने मार्थ विद्वानों के विद्वाता पूर्व भाषक

सम्पादकीय-

## त्रायं जगत

वयं २४ ] रविवार २०२०, १५ माच १६६४ विक ११

### अमरशहीद लेखराम

कार्ड समाज का बिहास सबन | बर बनावा है। तथा की सारी बासवान की शिक्षा पर क्ला गवा है। इस दे सदान संस्थापक मर्श्राप इवास्त्व सरस्वती में श्रयना श्रीवन व्यक्तितात है पर अवसेत आदशे बेश वर दिया । बस्य । कसी सामास्य पर कराई गई मिलिया थोडे रेसमन में ही गिर जाती हैं। परन्ट वसिवान क्स कराया गया अकर पर्ये से क्ले सपाल से भी शर्काण्य नहीं होता। कार्ये समाप्र का माना उतिहास ही क्रकिटानों क्यांसध्ये का इन्द्रिस है। महोत्र का सर्वमेद का शीवा आजनाना उदाहरक देसाना हो, धम apar विशेष करवाना के जिस महान इत्सम् दा परिचय प्राप्त करेला है. समाज सेथा थे निमित्त सपते जीवन को समिधा दमा दर फाला दलने ex कारत पात प्रशास हो तो उस के किए कार्न समाज की परम्परा भ्यी प्रश्ली है। सह विस्तानन्द में

**बारस्य हो इर वीर मुमेर तक मारी** श्वा कथाय कॉल देगा । सीवन मासा में उभी वास्त्राल के ही मनोहस मोती पिरोदे 📰 बिलते । गवा। उस देवन न नो अपना 🖹 । उसी औक्त मेघ की बाधा में सर्वत्व मेट कर के हाहादत का कामर सकीत परिवत क्षेत्रसम्ब का बाय भी काश है।

व्यभी शतत ६ मार्चका दिन सारे कार्य जगह ने चपने २ त्यान पर इस बांकदानी गीर लेखराम भी का पुरुष दिवस भनावा । जेन्दराम असर कादियां जिला गुरदास पुर से वह दिवस बीसियों नवीं से महान शहीती बेले के शानदार रूप में बीन ! धनवाले समाज के जिए धन देने ! दिनों के लिए संगाया जाता है। आज का समाब आप से शीवहान बड़ां की तो वल ऐसी पश्चका शी इस गई है कि इसे मारा विजा ही मिल

वशन इस शहीरी रेखे को सकत मेला समझनी है। असरवादीय के वयपोपों से सामा उत्तर मात उद्या है। हिन्द मिलागरकों का इस मेले क्षामा प्लार देल सुन कर किल वश ही इनका हो काला है। इसरा विचार है कि इस कवित्र शहीदी वेत को ध्याद को रागों सवाय कार्य शरेशिक मध्य तथा वार्य प्रतिनिध नथा बिन वर स्थाने का श्चवना सामा सङ्ग्रोत देने तो जम में मारे समात्र का गीव है इस पर होते सभाको के प्रथम सन्दरन वयवर सम्मीरता प्रवेश स्थान हेरे

उक्त देवता चारती है। समर शदीद का सम्बागह मेला एक वांत्रसाय विश्वय को ब्याच्या क्रोप

पेनी पर्वा 'शाक्षा है। शारम्य से

देसा नार्थ स्थिता भी जा पुश्र दे।

इस का मारी जनाव होता रहा ।

वही पावन हम्म प्रव स्थि सभी

प्याला की किया। उत्तर व অভিযান না গাবৰ মা বাত বলাব या नहीं ? दुस सदात के लिए क्या सेर करने हैं। समय, मन्यणि सन, स्थ बार जो हमारे पाल है, वन में से बचार को इस क्या देते हैं द्यात समात्र ह्य से साग दश्त है। बद्ध बाले शर्शर से समाज की सेना करें प्रज बादे मशेशोग नवा

--विहोत पन्द्र विश्वका परियास वह निव्धा वि

## शराब बढ़ रही है

\*\*\*\*\*\*\*\*

राष्ट्र विभाजन से पूर्व जनका | बर्ड स्थानी से इस प्रश्नक्य की सबर से खान किया करती की कि । इस्त से की वारसार कात भी जा विदेशी सता के योग जाने तथा रही है हम व्यवने प्रान्त प्रश्नाय शी शासन सुत्र व्यवदों के हाथ में जाने | काराया देशते हैं कि यहां सी के बाद प्राप्त गारे विद्य में महान स्थिति किश्वो भीषण है। इस बार क्राइशं क्यांस्थर करेगा । स्वाध्या जानका की रिवोर्ड समाकार को यन के परित्र शांधी व कनुस्य इस में सिमली हैं जिसे पढ़वर विशसी देश का अचेत जर-वादी जीवन का क्षा अस्त्रात होते हैं। समर्थ प्रकाश स्वस्थ बन बर मारे बिरंग के शराव का देवा सराक्षत हैट काक्ष क्रावंत क्रावार-विकार के अलग रपय मे तीकाम रुख्या था पर ३७ वाड वडाबेगा । किन्तु ध्यों ने समय वर्ष है है के की की कंतर्गर्म में लाशी सदरहा राष्ट्र, ध्वों > रेज़ के जीवन ट्टंडे ब्ह चार लास ४ । यह में विकास का नाशकाश्रद्ध पार्टिक केंद्रस एवं स्थात का हाल है। तथा गदरा होता गया। सन्दर्भन व कता तम स्थान का र्यात है जहां परे के नाम पर शायगान में बढ़ थिए बान्त भी करपनी होको सभावतो का वेश विचा विशे देख कर सबदा की केल है, विश्वास सम्बद्ध है, सम्बद्ध धर्म सभा भी दै तथा धान्य सुधारक भी सरदा चाने जरी भारत जिस सम्बार भी बीजर है। प्रवाद के उपया के किए क्रिक्टिस्टात स क्रान्य विशे का क्या द्वाल होता । बढ़ समाध्य करते के अपने अस इज्जमान दर होये ।

प्रकार कारी हर । सारा देश ही वही अवस्था मदली, चडी विसामी यन कर ज्वाद वर्शनः तथा कारण काम की स्वयन के बावे पक्षी ६ समान स्वीका वसने बे वही का शबकी है । उस दिन क्षमा : इमारे देश च ब्रह्मेवा औ समाचार पत्रों से वंबल समतमा वर्जान्य के जान देखने में विभोध नगर के भाग स्थान के पान के तीने तसे। पीत के आध्यस ने काश्ते को पदकर तन पर आशी वर्ष मध्या । दिया होता तो एत चीठ लगी । प्राप्त सरशार के विक बड़ी कि देश किस स्थान पर जा हुवी पालत, लुकाशास्त्रत, सहसी-पासर, वर्गापासर को विश्वस

नदा दोगा। यस भी फिर उसी विकासका पर बटने सार है। अभव के रही है, बीन नहीं शासना उस सर्वीपन प्रशोक की कार्य जीवस के प्रका का कार्त केवल जानने बाली इसधी सरकार ब्रागंब इन दिशा में ही स्थान जो हिनाई देश कवित रिवारट दी ड्रोटल, बारोफ स्वस्थ वाल राज्य से कई शिक्षाने का वित्रस प्रदार और वाशे का चित्र भी सामने कर रही है सामने हैं। इस मारी हे । देश में बान्तों की सरकारी में यतास्था के केन रोषमा । आये wek र शल से शराब को बन समाज से दी इस प्रवाह का गाउने बार के किए प्रशास किये : हो इसका की जा सबसी है—आहीं । दिन्तु करा स्वा<sup>5</sup> शरात्र आसे स्टाल से जातो । —शिमीकाई क्रे भी बदले चली गर्छ।

### कुञ्जपुरा का समारोह

कार्यममात्र कुलपुरा का बहा देर पर श्रीप के लिए जीवीन में बाली रसार्व बाले भी मिसे हुन हैं बार्थित यश्च व महोतसव इस बार भी भगवाम से सम्पन्न हमा। ानौती प्राप्त जिला **करना**स के क्रवात के त्रवात भी चौ० ग्योश-विवासी विद श्यातन्त् व वहानन्द् शार बी, धनथड कार्यकर्ता थी के विशा ची० सगवराम भी उन्हीं केरिक्टराज भी, को उत्तरकास औ, हेट शक्तों में विशे जा सक्ते हैं। शो परिजा जी, भी राजेश्यास जी वेब प्रचार के कितने ध्यारे तथा भारी मध्यमी के देम, क्लाड के असका रवाजन के बितने भएन हैं बहा पर यह मध्याह का धर्मनेज श्रायसमात कवेसे दीशने हैं— यह जिलाने का कद बड़ी वरन शानदार दव से द्वाता है। मयर्थ देवने में ही सन्दन्द स्थवा है। केर के बच्च ब अपने में इस पार व्यास्थ्य के सारे बचाके में 🏻 बनसे तिसं १ पुराने धानवत सार्वहत श्रो ५० विज्ञवस्त्रद दल की, समा से इस माती को पम है।

গ্ৰীত বিভাগ কৰা বহি হাপেট, श्रांपः राजपास सदरमोडन जो मी मदन महती, श्री ६० मेबारास भी रेडियो निगर, मो प॰ ऋमर-सिंह जो. में ५० संगतराम जी. ६० बानोराम जी. वी सवाय जी. सादको, धर्मका श्रेम, चेह त्रचार ची॰ नश्वरान्द्र हो आदि वयारे। वह के साथ व दिन एत प्रवार भी होता रहा । धन्यात से इसाके के प्रसिद्ध

काः गरोतास ही, भी मामदश्र **श्री** प्रधान इवालदरा समात, दिः मेलवाम वर्ष, भी ता॰ इकमचन्त्र की अवक्रदान, पानीपन से बोठ स्तम धन्त ती शहर १म० *५*० भी प्यारे । राष्ट्र रचा सन्त्रोक्षत दवा ही शानदार था। भी कामरेड राम-प्यारा स्म० स्त० ए० ने मी प्रभाव शाली विचार यहर किये। ए० विकासिक दल जी से पुनाईदानि पर **द्ध** श.वांद विया । दा० महोशदास ती में समाज हार दा शिकानात किया। यह व प्रस्ता क्षेत्रे की सम रोड से समाज हजा ।

वेदभक्त मंगतराय जी भाग समाज को बहा धनो-माना, शिया विशासद, विद्वानी का जिल्हा । विद्याह वैदिक शिंद से सहयांग तथा मात्रीयोंद ताप्त है, सम्यन्त हुआ।

श्री का भोध्य प्रवास ती कार्यः पत्र दो क्षेत्र विनों के किए मुक्ते तथा ६ शत्रप्रच की महत्र-मोहन वो बहतो की उनसे मुद्रशे **संभाग्यको मरददशी के शब** विवाह पर समा कावकम पर जाने कासीयाय मिला। विवाह मे

> की साम देखकर मन रसन्य होता या कि तेथे सका भी आयोगमाज में मीतृर हैं। क्या राव को पात करन लुब भ्यार हुआ । उसकी हो एक ही लगन है कि बेर का प्रवार होता रहे । श्लाबो द गनन्द जी का नाम बाते ही दतकी भावों में शेन केश्वास का वाते ∭ा ब्लाने प्रत्या दिस दश ही कोमल दनाया है। समाज के यदे हो माताने हैं। इनके सारे परिवार कथा विवहनारन्य थदानन्द में भी वहीं पान भरा है।

सभा को नेद प्रदार से ४१) ह०

मिले। प्रमु बोटे को चिरंजीयो व

परिवार की सानस्य रखे । व्यायं

समाब मे हैसे २ मताने भी हैं।

ध्य क्षवसर पर बरात तथा उत्तरो

को भी मांकत स्त्रोप डेट की की शस्या में प्रसाद के रूप में बादा तका अस के सारे सन्दर्शों क भी इस अवसर पर परा २ सहयोद -84854 महाराष्ट्र दर्शन

(ले॰ क्रो सत्वकोर जो सास्त्री पुरोहित आर्यसमाज शोलापुर) क्रमन से जहां कर्ने इ. यान्तीका | इससे माना कर क्या पड़ता सना

समानेश देवहा अहाराष्ट्रका थी। लगः सरहठी में सरस कर के कव सुनास भग भारत के सभी शरेशों से यह जा रहा या । हम भी आ कर सनने बढ़ा द्वीता । इस का भूमि भाग मी सर्थ।विश्वय या बुद्ध का कार्युन अपने इत्यपिक हैं। इस में हो अवर्शसद घनप से सहस्तों समस्त्रों को वस 'र्धावरहा सी होशी हैं। तथा इस सदन पहचा रहे वे भगवान कव्य अवेशका प्रकरण वह शक्ति श्रीव स्थ चम्रा रहे थे। विस्मित करने श्री क्षेत्र हैं। इसरे कशास्त्रर तहत्रापा बाव क्याकार ने सुनाई नीचे

की प्रधानी है जिसे सहारात का मणनान् कृष्य सारबी का कार्य कर इत देश्वा माना जाता है, इन रहे हैं। रच मध्य में भनशीरी होनों स्थानों धा शी महत्राहोद मनुंन वारों ही वर्षा कर रहे है बनवा पर गहरा प्रमान क्षावा है। क्षीर वन के इस पर अज्ञावको प्रतिकता का सत्रेषण करते इनमान को बेटे थे। वह भी धराओ में ज्ञात होता है, यह मदश मी ्ड से सेंब्रो राष्ट्रार का संद्रार क्रप्रदिश लक्ष्मनों में फला है बर रहे थे। पहली दो बाते तो ठीक प्रामोद्य शासवरम् मक्ति भावनाधी सर्वी परन्तु बोसरी ने मुक्ते शका के से परिपर्कों है। अन्त के प्राप्त सभी किए असुध बना दिया। सारह देहाओं से बारहमाम 'झानेश्वरा दने क्या चारती समाप्त हुई क्षे कथा वन्तिरों हैं होती रहतां हैं प्रसाद विकरण होने सामा तब मैंने 'शानेदवरी' यह सत झानेदवर बा पुछा इनुमान को को जेबायुक के मूच श्रीवापर किया हुआ भारत है। राम के काल में हुए और यह द्वाक राम्बीय विधानानकार चा**हर्याल** से ने फिर देंसे भागर नुनों में सासी वासीत आह मे देहों को क्यान होती क्यों का सन्दर एक हो साल का भी वी क्लब्बे चवच श परस्परा महाराष्ट्र नहीं, सभी को ही इस शहनने विवास में दिसाई देती है। विशेषत अवस् में अपूर दिया कुछ लोगों ने कहा, नास से सन्दर्भ बायों से कथार यह इसारे समक में नहीं बाता कारम्य होती हैं, धरन्त वह वेद इस 'पाण्डम प्रचाप' के विकास कार्या वी न हो कर 'सी शिक्षय, हरिविक्रय, 'श्रीवर' क्षि ने व्या केंद्रा जिला। पारतप प्रचाप, शासरोध, क्वलाय, मैंने दश महयों चार्जपलको की हानो है। क्या स्रोत वर हो काप पढ़ें तका सर्वे को 🏢 ने शते थी वसी अकार के क्यी काय का भक्ता होगा। हा जे होत है जैसे शतकान सताराज द्या भरने बासी धूमि का स्वाब नाहे : बुद्ध कथा पर क्रदे विश्वर्ष भिदा रस शोग्र हो नासिक की

उस कार्तिक मास का आरम्प उदायों सिस आता है। एक बार होता है 🎟 भी सारे बहारफ में मेरे । मध का गरोशकन्त्र क आयह मावर सोग लगावार प्रविद्य चार से कवा सुनने का क्रबसर जिला। वजे मल, बढ़ कर भवन करते राजि कारणाया स्वास्त यज्ञे कथा तथा कारती करते हैं । मर्रामपछारी शुलने इस पस पदें≀दर से∏ III दर्शिक यास में चामिप लास बसाबार की ब्राफाट बालों से पद भी ब्रोट देते हैं।

(4#R:)

रही थी । बनाकर बने ही रोचक

विश्वी त्यांक्त विशेष क अप मुद्देशिन काले हैं को उसकी गुद्धि विचित्रत ही बाबी है, जैसा कि

इतित सोधेश्वि है—विनास करते विपरीय नदि! ।

इसी बकार जब किसी जाति श्रवता राष्ट्र ४ दर्भावत का समय न्या जाय तो दसक प्राथमस्य पुरुष अध्यास्त्रक हो। जाते हैं। उनक क्रम प्रतन का सामारण जन-समु-बाद पर पिरस्थावी प्रजाव पहला है विस का तुर होना श्रसम्भव सा आ जाना है।

महाभारत यक्ष से यह साक्षा दर्प पश्चित से ही आयोवक क दुदिन का ब्रास्थ्य हो सथा या, तबकि भारतमें इश्विमों को वहि और देवां सम्पत्तियो का द्वार होते बाग गया बा। रहा के कड़ एक बाह्मक नाम-भारी व्यक्तियों के मिलक विज-बित हर, सरहत भाषा के विद्वान

सो वे थे हु।, यह अरड-ववड इसोच

महीच देवानस्य के बलमार

रचसर यन्याधार में ज़िला मारे क्रीर विच-वार्थनी तथा धीरन-बीरणे के कांग्रज सम्मानों के का में ने में सदकारे का माचन मो बनतावा व्यतानार भीर व्यक्तिमार पश्चाप कि स्था अहै। संकार का पृथ्वित से प्रक्रित पाप पत्रके प्रव से सकित-, अब झगस्यामम् तोवं स्तान भौर

क्रमण्य-मक्त्य परम प्रदाल हो।

देशाओं सामान नेस. सह परा पविता को निर्मम हरदा बरवे सन्दें हक्ष्य आहा, सिद्धि वी श्चाकांका में मनोयमत्त तथा निर्वादत होकर 'शिबोडका' 'भेरबोडहम बद्धे हुए जिस किसी भी स्त्री "(मा-के विस्तु प्रचार करते रहे । उस महित-पंडी भी सपवाद तथी। वे साथ अरवो परु में सब्दोन करना सम्म-मरण को कादने का साधन

समकः गवा । इन दुष्हत्वी वा यहा सक प्रचार-प्रमार अग्रा कि राजे शानो मझानी म्पीर परिश्त-मूर्त वह इस त्राक में फत मधे। अपने प्रत्यों दक ही यदि ये

### प्रराणों और तन्त्रों का परस्पर धनिष्ट सम्बन्ध (ने०-भी विदोशक की जानी प्रधान बार्यसभाज लोहनड अस सर)

\*----'मद्भमा स्टायत रहते थे। मी दो ऐसे देहों की जी संसार की नदाचित धन्ताब होते. घटना बाबहणका नही दें।'

ये तो यहा तक क्ये कि: भगवान युद्ध के सरक्र सिद्धानों माथ वर्षो पर भर भो डाब सन्द्रं में समार को शय इन स्रोटे कर्शे करन समें और ऋष इसारे टुर्भाव्य के बचा दिया और ये कीम इज रे. बेद सांहताओं क क्रांतिरंकत ' पुण से हो गमें। सरपरचार नवीन लब क्रमों ही रचना करके मध्ये क्रम्य कोई भी प्रार्थन क्रथमा बनुवारियों को यह शिवा देने

मभाग्रासीन प्रश्च इतके हमान्त्रेयः से बचा हवा जिसता असलव गोधनीयं गोधनीयं गोपनीय १४०ला सा ही रहा है। यही कारण है कि जनमें मैमा परस्पर विशेव पासा इस धर्म को दवरन क्षेत्र गुज स्थाना चार्डिये। परन्तु काल की बावा है कि एक अमे-विकास के

र्मात विश्वय है। एउटों ने वह बरस्य निए प्रश्लेषमं विदेशन दशस प्रतीत बारमः करने की शिक्षा देते हुए हो रहा है। ग्राथॉल एक ही रूप ये करने प्रन्ती में लिखा-बहा माम-भोतो होना याच वत-**प्र**न्त **शक्ता नहिर**शंश समाय लावा है वहा मास काने-जिलाने

की बिधि कीर इससे काउल प्रश्य नाना इस दरा चौहा विवरन्ति को प्राप्ति भी मित्र जाएगी उदा मधीयंत्र । मध्यम को सरकार उद्योजन प्रदोत कील (शामिकों क किया हमा होगा बहा इसे एनवंस्य

ब्राचार्य) बढ़ है जो बन्दर से

शब्द (शहराती) दिवारे के वया होगः, भीर उहा परशो नहर शिक्षप्रकार सन्ता **से** जिस्स्ट्रपारी रीरव नरब से दे जाने का माधन तिमा होना, वहां इसे संबं वैधारव आदि प्रातेष्ठ सर धारया बर वे प्रितिक पर विकास करे । वय क स्तान का पुरस प्राप्त करने वाला फल बहु इच्छा कि पीनिहरू सम्बांग थी बदा हुआ होता । साबी भी उनके आस ने ऐसे पापे

इस बकार के उट-पटांग लेखी

बद्ध हो (तो श्वय देश के परिवर

न में) क्लाना पदा कि 'पदि नेत

इस बकार के वादी-उपट्रवों, पत्या-

कारों. स्वांत्रकारों की लिखा देने हैं

हि परास सार्रक्ष बाममानियों वे बीर धानपंत श्रृतियों का ज्ञान क्रीर कर पीराखिकों के अर्थ प्रश्च शय होने पर भगनात वृद्ध ने का गर्व स्त्रीर नजका परस्पर **चो**शी वैनुद्ध रापव-विदासन पर सार टावन सा प्रतिष्ट सम्बन्ध स्वापित बारो भीर प्रापुतर इन दुराकारों :

इम कावामी पंकितों में सा दर्शने समय इन खार्याच्य क्षोबों हे बेर हा कम बनेते-- ! अने सीर वरात्रों के गुर बॉनिक झरों हो। ना समय हा करूर संबंध र करों की शिक्षा बर क्यों के कानये बरने पर कमर कारत है करा बाड़ी सन्तन इन बाधी (ई वो । यहां उद्ध कि अधवान

व्यक्तवों पर सबी नाति विवास W 8-वासन्द छुरोऽपनिति मृतासा

श्वार क्रम का प्रदेश- विश्वान

के बनकार क्यों और पराक्रों वैदे त्याच्य धन्धों के साथ कक्स इसो विकार से कि वे हमारे वरे-बढ़ों के बिस्ते हर हैं, चित्रहें नहीं रहेंगे : वरि इस एक विशेष-विष-महात्वाको के बढ़ार हरू व से भी अपरिकित्सक प्रिक्**यों** पर विकार करने का साथ अध्यन्त हो सका से इस अपने कापको

भीशस्त्रतासी समस्त्री । १ शेन्द्रा देवगळ सनीववर जन्म ओप सराम मदा. रव स्व करमें मुशिद्वये प्रशिक्ष भक्तसः भवनपुत्तमाः ।

व विप्नेत्सनन्त्रभण्युतसर्व सन्देश सर्वा श्वम. यन्ये वेदिक तान्त्रकामि विविधे

शर्भ पुरोर्वान्त्रसम् । विनक्ष पुरास्त कता १)स्त्रोक १ का.१ सर्वात-देवराज इन्द्र, क्षेप्क यद्वर्षि और लोक्शल क्या

घपने कात को सिद के विका प्रतिदित प्राप्ति के सक्ति जिल्ला प्रशसना करने हैं पर्वकाश्र में तो देवता बेटिय टान्त्रिकार सर्वेद शास्त्रा से पृत्रिय

त्या है, जो सर्वत सर्वार सब कह जानक है, सब का जाधार है, जिस का करम रही है, ऐसे समस्य विपन्नी के नाश करने वाले **प्रांचवारी** 

विष्णु भी की कर्ता करता हैं। हीश मुख्यासद निवासी पर बसदेब प्रसाद सिम वैष्याशीकन मध्येल, कामास्या बोनि मध्यने ४६ सक्तुपुत्रभ कृता फर्स **श**री

यह ब्रमेन १७ दाक्ति पुराश चरू ६० इस्तेष १६ १७ द्वार्थन-बेध्याची रूप द्वारा

प्रामानना के बोधि संग्रहत पर एक बार मी पुत्रव किया जाद हा सी नुवास्त्र मिल्लाहै।

( **1948-** )

बस्तीमती सत्तरशी क क्रमान-पर्ध वातावरता में महापि वयातल भी ने बैदिक जान की ब्योनि की प्रस्था का क्रथन पूर्व कार्च दिया। दर्मा प्रयास कार्य को बामकर करते के (बये चारेश हरवारियों ने उस बहान कार्य में अग्रसनीय सहयाग

श्रद्धन देश्या । कार्थे समाज वे महान विद्वानों ने महिष क साव कें पता करने के लिये कर उक अस्ताक कारत किया है इन्हार कार क जिल्लो कार्यसमात्र ने प्रवास के **ब छ मडा विदा**लय और गुरुव भवन कैती सरवाची का निवास किया । इस होती सरसाफो है **भा**वने जबने हम से बेद प्रचाद कर्त

St Bran ficer

देश के विमानन के परचात कार्व सक्रम प्रकार का कोई का सुपोन्य धमशीस महानुमात्र दया-मन्द्र आहा अका विकासना को पनसनित कीर ग्रांधन नहीं कर पाया \$स मदस्या को देसकर श्री+0०वी० कारिक प्रकार कर्जी सभा के प्रधान शेष्ट्रय बा० सेहर चस्त्र जी सहाज से वशीवन्द्र, समाज सेवी कोर धर्मा-सराधी दि० हान पश्च भी से इस रूक्ता को उन्तद करते की प्रार्थना श्री। बाजायं श्री ते तथासः बहुक्त इस काब को 33 वर्ष पूर्व प्रापते हाओं से ज़िया। संस्था की द्वाब से केते हो कापायं भी भी यह बसवर्ता इच्छा थी कि इस संस्था सं वींदव भर्म के प्रभारक निक्तों को कि दिगर्शिमान्तर में ईशा के डब्बारियो की मार्थि और सहारमा **⊞**ह के बिक्ष भी भी मार्ग्य महाच उदास्त के सन्देश को पह बार्टे उनके इस परिश्लम के फलानक्ष वह भी ग्राम दिन काका सर्वाक २३-२-६४ रविकास स्थादम च एक <u>स्थ</u>ोन्य स्थावक ६० भरेन्द्र भी की बेरस से बेट प्रचार श्यं के किये विकाई बना का

ক্ষাৰীন্দ কিবা ন্যা।

वे भूक्य सहयोग ५० जनवीश चन्द्र

त्री साक्ष्मे, १० स्टब्स्थिय की शास्त्री

ते श्रीका घर कार्य कमात भीर

है कि बारी का इसका अपने जाना आय के सिये शस्त्राम करेंगे।

### श्रव निराश कहां ?

रक्षेत्र येत रामलियार की उपायार्थ हथानन्छ बाटा महाविदालय हिसल

वं वरेन्द्र भी का परिचय-में कह गा। केरण प्राप्त क व्यवहर प० तरेन्द्र की केरल शास्त्रास्ट्याद दाई हुई हंसाइयत श्रीर Commu-प्रात्मर नवर के निशाली एक niam (साम्बर्गर) के ब्रायक्त सम्बास इसोत्पन महास्थाप हैं। के नैदिक नवाति का प्रकास कर गा उन्होंने इन्दर का शिया को अवाद नाचित्र वैशस्य के होते हमें मी **२**व से प्राप्त किया । वे डांबर क्षीर परिवारिक कारका को कार्रिक शास्त की नारी माणको मनगतमा, सदट से फाव्हारन देखते हवे अं वितर ताबिस और वस्तर के उन्होंने अपने परित्र क्षेत्र की मयोग्त परिदत हैं। ऋषे जी पर भी पूर्वि के लिये त्याब स्त्रीप तय का

अजबा सन्दर ग्राविकार है वे केरल वरियद देते हुये धावने कासिक के किसी इक्तर से कार्च किया निर्धाह के लिये केवल ११४) की करते ये कौर २४०) नेतन के रूप बाधना की है यह उनका छपुरे से प्राप्त करते थे उन्हें दिन्द सस स्यान है जिल्हा हार्तिक व्यक्तिकार के जान की श्वता मंद्री हो बा फासर बरका पार्वेड शार्वे हर प्राप्तक अभेरत शन्दासी ने बन से बड़ा कि बाँद श्राप हिन्दू धर्म को शानना आहते उतकी विदाई के क्रिये १३-२ ६५

है तो पंजाब से जाक( बावसमाज रावदार को तयर के आवर्षको धीर सामाधी की निर्माणका दिया को बिक्री मन्ता से संस्कृत वर्ज का रे परदे तह समा का कार्यज्ञम बाज शास नहीं उसी देशवा को चक्का रहा किससे बस्ती रामक्रमा लेकर वे इयनगढ़ माक्ष गहा-बी पंप्रकार जन्म बी. पः तीना (५४) लय में श्रीवास हर । विकासय नाव की, परिवत जामनी आशार्य हे... . सरामग 25 वर्ष तक विका क्रीर करव सरदमान्य सकलावां याज का के हिन्दी और सत्तत का ने प॰ नरेन्द्र भी को बार्शीकर देते uft toner the one fear Tifes. हुदे का का उत्साह नेकन (क्या शिक्षणती के विश्वय से भी सन्दर अनकारी प्राप्त की । ऋपनी वश्तुत्व क्रोर कारको अध्ये 🎟 पर क्रस्त रहने धी प्रेरवा थी। २० परवरी बबा हो भी बजोते सपाह रूप से विकसित दिया दियास्य के ब्राज्यस वी क्रोर प्रशास किया। इस ईस्पर के भी विधा स्वांति शक्त की. इस

विद्धाना शिरोमशि क्रीर ५० राम-को इस्त्रवदार फेला दिशा है यह बीवड प्रकार से छिन (सन्द हो) जाये लक्ष्य शाओं कः रहा । शिषा प्राप्ति के समय में रूने स्वात. वय कीर भीर फिर चेद मान की ब्वोर्त से समाद सेना कार्य की मानतावे वेशस प्राप्त प्रसारित हो जाये । क्षावे इयस को उद्देशित करती रही एतवा हो वही दिसासर, स्ट्रेस प्रची सहसादनाको स होर्स्ट हो-सबोध्य स्थानक पर गोर्डवस्य प्रसाद हर काहोंने वह स्तार श्रवा कि क्षे वो विद्वार ⊞न्त के निदासी हैं

ऋषि ह्यानन्द क्य थे१ (ले० गुप्तेस्वर कृमार आर्य डेबा, हजरतसाई, पटना विहार)

अविकेशीका पर इस दिन ं न पहल्ला पर दृष्टियान करने है सम में पूरे खरे साने ही माँगि हम ऋषि को पाने हैं। कोई भीवन का देश जय नहीं तिस से ऋष पूर्ण न हो।

कृषि सत्स्वेता मे<del>-पाद्धर</del> से इन्द्रमण ओन व्हर् ि प्रशसी जो सद्यास १६ मार्च को संका लगने वासा है मौतांवरों से स्व**द**ी धा पुनी है ये लोग सरवट शहद २०३३ है इस लिए बाप वर्गि कोसल शुक्ती से ही काम जीविद्या' सारव्यका स्रामी वयानन्द की ने हु हार आस्ते SE SET 'SHEET GO GENTER कीर समयोग करवा मेरे लिय जसम्भव है सस्य मेरा च शवा हस्या नहीं हे यह समातन है। और ईश्वर WIR BRIDG OF BRIDG SEX हरते में मैं किसी से हैं बंचन साथ ं भी भवसेत नहीं होता ह कास भी सन शरिए मेरे राहते कोई सी मेशा माई का लाज नहीं जो काळ काका का सकें भार भी बाब की सःव दिवना ।

%ि चरित्रवान वे~इन्हे बरिब

तो पदास्तर करने के वित्र भनी ने बहुत उपाद किए किन्तु ऋषि अपने प्रवासंख्यांकत अहर । एक बार भो सावकात का उन्होंने स्थल शांका समुरा से कर श्रांप गंगा। AZ प्र स्मा भी समारहे ये तो पक नेक्स को जायों न ऋषि को प्रवाह करने संप्रापंता करत है कि शकराणार्थ m ino trat : test an-at mafe कैसे कांद्रकाय सम्बाधी के शास्त्र में के लेश की देख कर सन की स्थापन सारी सांस्थला दर हो गई नह नेरना प्राप्त के बरशों में बिर कर वहने हती 'समा बीरेक्ट है जो कार को बजा कित दश्में के लिए काई थी पूट पट बर रोन शर्मा क्रीर टक्षें का काम क्लान समाया सर्हाप में डाइस क्याने हर सहा देश बाको, ईरबर को तुन्हारो ह्यांत स्थिर रहे'। यह यी श्रांप क्किए से वैदिक धर्म के प्रचार ध्ये चरित्रता ।

# आर्य पश्चिक धर्मशीर पं. लेखराम' जी

मेसवास (रोहउक) अक्टबार क्रिकेट क्रिकेट के के के के के के इस के बाद अपने अधिनीय | सबेच (बादौरे) के बातों को व

क्या पंतरन ने भाग पर लागी प्रमान्त की दी प्रामाणिक कीलों वर्ष नत्र और दाता है फास्ट्रून सिकाने वर्ष मार राक दिया। भाग के वादि तेता राज पर प्रमान के वादि तेता राज देता राज के वादि तेता राज दी प्रमान है स्टेटिंग नवें करने नावर स्थार की

हुए दिहार करना से भी बाद विदेश धर्म प्राप्तार करने से नहीं पह तक प्राप्तार करने से नहीं में हर के प्राप्तार करने से नहीं में हर के प्राप्ता प्राप्ता कर कर कर के प्राप्ता कर में प्राप्ता कर कर के से नि

की अमारिक तीक्सी लिकते हा क्साम दिक्ती आत ही किया। यहाँव इस में अस ही किया। यहाँव इस में अस ही दिक्ता। इस मुंद्री ।

करेलु फिर भी भाग का नह नाम भारत समावनीम है। स्थान को प्रत्यती में । १७३३ हैरी का मार्गनाच एक सुन्त

के बान मान में एक काका, माटा सुरक्षमान पुरुष मान के नास माथा भीर बार से मुख होने की नास्मा भीर मार से मुख होने की नास्मा से 1 मान से नास माथा

ৰক্ষা কৰা মান কৰিছে। ক্ষাপ্ৰ কৰা কৰিছে। ক্ষাপ্ৰ কৰা কৰিছে। কৰা কৰিছে কৰা বাবে কৰিছে কৰা বাবে কৰিছে কৰিছে কৰিছে কৰা কৰা মান কৰিছে বিশ্ব বাবে কৰিছে কৰিছ কৰা বিশ্ব । ক্ষাপ্ত কৰা কৰিছে বিশ্ব বিশ্য বিশ্ব বিশ

साय मार्थित में साथ के बता से की साधित साने के जिल स्था। किन्तु के साम ने जब कर कुछ सी सम्बन्ध दिसा सीट जा को याँ दिखान के क्या कर समने दिखीलों की साथ के दशक्ते रहे। यह दिन क्या का साथ के साधन सी दिन्द मुख्यान तुल्ह के वे साधन सी देखा के कर साथ के अस्त के

व अवस्थि तर हुए पार के जर ।

से वर्ष कि आय सहिव रुपानन के
साय के वर्ष के जन्म पर कर |
साय के वर्ष के जन्म पर कर |
साय के वर्ष के जन्म पर कर |
सिक कर रहे ये, करारी केंक थी ।
सिक कर रहे ये, करारी केंक थी ।
सिक कर रहे ये, करारी केंक थी ।

स्म वह बराबर स्थिर बारा

खाः शकरर देरी और क्षितिस किं

### मध कलश

है सवार मुकार्यक्र सांचा कर्नान्तव हैं काने वाले, होर्यक्र रिक्षने सेत्रव बहु हैं बोदत सफल कराने काले, विचा कातक से बड़ी कि विसक्त कर जाने गर, सबक करन हो बड़े स्थ्य दुष्टनोने बाले !

> करम बदाने पत्ते पाने खुद होड़ों साथे सहार। तक ता, उन तक तदार नहीं पान वादे किसका नका, कैसा पदना, विकास पाड़ी करना जीको तेकिन घालस वास न घाल, नामस्थित है इस दुनिया में यह बदन को खीटा अवला।

सके इसका का मोल समय से किएका फर है, है फ़रमोसा करात के कम्प्र जो भी पत्र है, सिर्फ रास्ता भर टेडा है इस जीवन फा, फोरता से किएका सीवा फी, सरस है।

> कार। विकास क्रिकेट सामका

भी देशी का बड़ी जानों विशाय तुम्बर्स हैंगा है— पूर, पुत होता राजा ! होरा क्या बच की जाजा में ही बंग गढ़ पुर हरीन न होने !! प्रा अपने सुर्वेश कर कर के प्राप्त में हैंगा कर का क्या में दिखा आहे हैं प्राप्त कर कर होते हैं। प्राप्त में सुर्वेश कर का कर का कर कि का क्या में सुर्वेश कर कर का का की किया जा कर का का की किया का किया का ली. माता

> ्विक्वी वर ज्याने मही किरो ज्याद स्वासन क्यारिक का श्रमाला च स्वासन क्यारिक च सोमनाथ, नवीर चन्छ, प्रशुरा वास, मुख्यी श्राह, सरकार, वोपनाथन कार्याहित हो। विश्वीये वास कार्यकारीय है। विश्वीये चोडम कार्यकारीय है। विश्वीये

वान करहरकार हु। निस्तुत्व बोहर। स्वे प्रत्यक्त स्वादं १२ शास हिर। स्व प्रे श्र्य स्वादं भ्रात्वत्व जी सहसात वर भी स्वादं के उचन विसन वा बहुत स्वादक प्रभाव बाहा उन्होंने स्वाद का प्रशास

के समान ही राहिंग होने से गौरत अध्यस्य किया है। अध्य है और कीर साथ का अध्यक्षि आप नीवन चरित्र। किस की पर कर मुख्य कर महिन्दा से काने कोई नव-पुत्रकों से साथ आपनाओं का आध्यर नृत्रन रक्त अध्यक्ष्म स्थानियों है।

### दयानन्द-वचनामृत

'पार्थजा का प्रश्न कर है कि जब बोर्ड अन कारने सच्चे सन थे. अपने अक्षाया से. अपने क्षण सं स्त्रीर सारे सामार्थ से परमेरवर का सज़न करना है, तक वह क्यानव परमारमा। समके अपने आतम्ब के जिस्ता कर देश है। जैसे कीता वालक घर की सन पर प्रकार मीचे से स्वयंत्रे साता-दिना के पास जाना बाइता है, तो उनके मा-भाग, इस अब से कि इसारे जिब पत को रका-अध्य किर दश्चों से उन व हो। बादने सारती सामी सी क्षीय, रीडकर बसे गोद से बढ़ा संते हैं, वैसे ही परम कृता विधि क्षात्राच्या की ब्रोट करि कोई सबसे ब्राज्य-शाह से जलता है तब वह भी धारने बातन सांतरमय हाथा से उस जीव को बटाबर बटा के जिए प्रथमी शोट में रस लेगा है। फिर उसकी किसी प्रकार का वह-बतेश नहीं हीने देखा, स्रोर वह बीद सहा झावन्द ही से रहता है १ परमात्मा साका-पिता मान्ति, प्राप्ते मश्तों की सदा हुस-सन्दन्त करने ही की क्या कारत है / (सामी सत्त्रावन जी)

# मंदी के (म.≥) समासार

हार साम्य विकास

gÉ s

दे समापृति चामद से आवस देते

🏢 बनता को चूर्वि के परश

टकारा में ऋभि नदर

स्त्रज के हातों व कन्यापड़ों से श्रार्थ स्त्री समाज मंडी भाग जिला ।

€(H.P.)नचाव प्यान-शिमती साजवर्त मी, शक्तपाना-भीतवो पुन्नी हेवी व तौरा देवी भी, संभागी-भीमधी सरका देवी जी, स्पर्मश्राचि--शारका देवी व कडीदंबी जी क्षेपान्तव-- राजेस्वरी देवी जी कामाध्यय-समादेशी जी। श्रवun सहस्या--- प्रश्नीदेवी की, मौबारी देवी तो, प्रत्यंती देवी की, जिहरा

देशी की, कुम्बा भी, सीवा शती

**बी. सहात राजी जी कौर** यौतमी देशी जी। इ-२-६४ को सा० चन्द्रसाँच भी क विदा मो सियराम जी का देशान्त हो गवा रनकी क्रम्बेहो किया बेटिय रीति से ५० केनाताम

बी ने फरायी।

ऋषि-बोच उत्सव सारीक ११-३-५५ को अधिकोध श्रमन समाज प्रतित से प्रमास से सम्पन्न हुन्छ। । पादः शकाव फेरी की गई। सामारका कार्यवादी के चरचाव कृषि ओक्स पर अलेक विकासी व शर्ववरी काल के लायें कै बाक्या हुए। क्रमील पर नेद त्यत्य करवी हेक-रेक में होता : ह्रवासार्व ४०/- एवजित हुए । पूर्वा-पुष्ट्रस विद्यापीठ हरियाला हति के पश्चात क्या शेच विशवस के बाद सवा भी कादेशई सुवाप विकास क्षेत्र

सन्त्रो समाज राजपुत हाई स्कन बोनवाजा

> (होशियास्पर) मे काधि-कोग्र सत्वव

११-६-६५ को ऋर्र-कोच प्रत्रक त्री गुरदासराम की प्रस्ताध्यापक राजपुत हाई स्कृत डोलवाहा के समापतिन्त में बबें उत्साह से र. कांवबरेड की शाली, पार्ट सम्पन्त हका। किस में राजपुत विद्वानों के भावकों कर जनता पर

भेशवास करा का ५० वां शार्विकोत्स्य करे समारोद्र के क्षान सन्दरन हथा। भी संस्कृत यो सारवी M. A. P. H.D को इध्यवका में सन्तर शमोसन द्वार जिसमें गुरुकत के

साओं ने संस्था भाषा में विदेशान पूर्व मानवा वा व्यविदार्थ समाई । व समानिह जी, झापार्थ किप्तू विश्व को, जी, बोह्रजिंह की,

बाई प्रचार समिति अम्बर्ड बा वार्विकोधाव तथा दवाकर बोच्छेन्स = परवरी से ११ परवरी वह बड़ी पृथकाम से सन्पन्न हका। ४ फरवरी को सार्व ४ वने शोबा यात्रा शरम्भ हाँ जिसमें ब्यार्थ सनासदों के व्यक्तिस्थ एक हवार के लगभग लख के छात हाई स्टूल व गशरबैंट बेलिक हूं लिए बहुरा प्रमाप नहा । अधील का २० लाकाओं ने भाग सिका। बासक कें

सम्बद्धः ।

हिमार कार के द्वारोजन का वेच की का रीकान समारोड १-३-५४ रकेतकार वो बी. य. बी. टी. रविकार को वो वर्षकीर की की शोधेसर गवरीमेंट देशिक स्क्रा बम्बद्धा स से ४ को तह समाध दोखबाडा की है। भी रमेशबम जी. पं० कमरताय को सालगी, पं नवा। इस व्यक्त पर भी वर्मश्रेर राज करण की सारवी विदानों ने बी ने विकास के क्यास महर्षि के जोबन कर बकारा जासते विकास का दिशानास क्या **बात्रों को क्यां**क्रियों प्रदान की ह हर बनेक ग़र्खों वर बसने का मार्ग क्रिकाचा । सतेक झन्हें ने महर्षि मन्दर पर से सताय रेते हर के अवदानों का रोगों व प्रजारों बहर्षि दयानच तथा ऋत्येतमा द के क्यों की प्रशास की स्त्रीर विद्यासय चन्त में प**्रत्यासतम** जी

**एक** प्रशाब द्वारा पूर्वी विश्वों कर कराने की बेरसा ही। पश्चिमान में हो उड़े किन्द्रसों पर शानित पाठ के बाद संबंध विश्वतित व्यक्षकारों को जमानुक्षेत्र हरि से देखते हुए क्वाईक बोज व रीव प्यार करती हैं । तका em करता की

के कार्य-कर पर सामा अस्त्र की ।

वार्मसमाव बाह (१८ना)

मुपतेटा (मौराष्ट) ने क्वोलन्नि पोर किन्दा करती है । तथा वह बी विरावाई बारावाई से सहवि की स्था भारत **छत्**चा। को फिदा**त** वयामूमि टंबारा है स्वाबीका से दिसानी है कि पूर्वी पाविकान से यात्रियों के भो बनार्थ ऋषितगर की मार हर दिन्हकों सी रका क्या स्थापना भी है । प्रती कहार जिल्ह-पुनर्शन के कार्य में पूर्व सहयोग रात्रि के अवसर पर की श्रीन दिन वेशी । ---राज सक्ता कार्य क्षतावार श्रापे तेशर बजादे दा जेकी कड़िएक । ब्राइनासन दिना है। इसका गाए

बार्व समाव बन्ना धी एड बैठड में पूर्ण शहि-राज में हो रहे हिन्दू मों पर धारश-पारों की क्यो जिल की वर्ष करा श्रप्त सरकार से सांग 🖨 गई कि श्रष्ट पास सरकार पर शश्रप बासे ।

र-३-६५ में एक बाताब द्वारा भी इत्त्रवाल की सम्बाद के नियन पर शोद पदर किया शबर । अवा रजकी बारमा की सदयति के क्रिय ला से शबेश की की। ब्राप भी खेड बमाबन के

पीत में जिनकी सहरवात से बनापन न्हें इसे सुद्ध स्थापन पश रात है।

> क्रांत मरवैद्यान रवदास सम्बद्ध

इमर पंर भी कोस्ट रूप | मैं पूज काक्य सामीबी स्थानि के त्वचन क्या श्री P. M. हान्स मारि के साथक होते श्री । **क्रमेप** द्यानन्द ब्रह्म महाविद्यालय

सम्बन्धि का भी बालोवन विश्व ा सम्बद्ध क्षत्र सम्बद्ध है क्या का

वंश्वर दास्य है. स्थाप मिरिया का नेड ।

क्की रिप्ते, क्रोप क्रमा वर। को' कर है बाप के का सीओ हो समा देने को ट्रम्बर सक्तो, सेने को प्रमुनाम।'

#### शोक प्रस्ताव

(१) जांच अस्तिया प्रवासन साम्बेद्धत विरान श्रीवारपूर रा. व सा. गोधवाचन्द्र जी शचदेव वो कि विकास अध्यक्त जैनस से । की बचावर संस्था पर शोध सकट करते हुए दन हे सम्बन्धी व परिवार ते व्याप्तवर्गत १६४ परका है कहा च्नकी कारमा क्षी क्यू**चर्य के क्रि** थम से शर्थना करता है।

### रावेदाना, प्रचान (श) **कर्ष** बनाम रंग्यान में

सुर्द न पक्षत व वा हो रक्त व मा मन्त्र। भाव अहेशिक बोटिनिन समा पंजाब जाइन्यर हारा गोर मिखाप में क, विकाप रोड बासन्यर से सुद्रित तथा मानज्ञात कार्यक्षेत्र महात्मा हंकराज बनन विकत कपहरी जाकरूर राहर से प्रकारित गाविक-प्रार्थ प्राकृतिक प्रविधिव स्था पंजार जाकरूर



रैशीकोन न॰ १०१० [झार्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसमा पंजाब जालन्थर का माप्ताहिक मुख्यप्र] Regd No. P. 121

यम ग्रीत का सुरव १३ जोतं २०२० गविकार—स्वाननसम्ब १४० - २२ मीम्बे १९६४ (बार 'मारेसिक' बाकानर

## वेद सुक्तयः

न क्येंचे यथात्वम् इ सम्मेशः जैसे कार है, रेमा कोई नहीं। सार मनुस्य महिलेय हैं: सारक समान महिलेया है, सारक समान

सर्वशन्तियान, सनना, अनुपत्न, सर्वञ्च, वर्षाधार, सर्वेद्दर, सर्वा-न्त्रदांशी, सद्दान, स्क्रीन नीत हो सक्का है। श्वापये सथान दुसरा केई नहीं है। आप महान हो, से प्रा हो।

#### समानसुत्रशंभिषम्

मधी! क्षण सब के अर्थ समामान रमले हैं चक्कण से तुम्ब हैं। बैसा कोई बम्में करता है, तमी के प्रवृत्तार उसे क्षण मुश्ता करते हो। क्षाप्व हैं करता जुला वहसार करता हूं। क्षाप्व जिला है, आपके हिल नारों कहा समाम है। बम्में के अनुसार क्षणका हमारे होता है।

असुश्रीमन्द्र ते जिहर हे १९४१ ' मेरे सारे, ये शब्द बचन, वाधिका, स्टूपाट, सम्मा स्तीत, प्रतिकताल कावके किए ही हैं। मैं सापने सिवाल सावक के तीन गाउँ भी किल के ? मैं तो नहीं पाहता हूँ कि मेरा कावक शब्द सावके सावकता से सह

#### वेदामृत मनमापरिकमाणन्त्राः

शेष् उदीवी दिक् सोमोगिषपतिः स्वजो रिष्ठता शीनिर-षदः । तेम्पो नमोगिषपतिम्पो नमो रचितृस्यो नम इषुस्यो नम एस्पोग्स्तु । बोधस्याद हे स्टि यं वर्ष हिष्म-स्तं वो जस्मे राषाः॥ वर्षादं का० ३० सक्त २० मंत्रक्

क्षणे – है अपूरिश । बात इस (परि-विष्यु) कर हिता है । में ती तो अंत हांनाकर में कर में कार हो पर बन में (क्षणियों) नामी हो का हांना कर सामाजद ही रहे हैं, कर ही (प्रीणा) हमारे एक हो कार इस्तिके, दिकारी मा करता है एक्षणे करता करता हमारी कर कर है कर कर कर है है। करता हमारी कर करता कर है है हमारा माने कर हमारा माने हैं हमारा माने कर कर है कार्याव्य करने करता के आहता करता करते हैं हमारा माने कर हमारा माने हमारा हमारा कर हमारा ह

कर ने अंतराहत है व्हिटेंट्र (इसार राज्य कर कर कर कर कर वह अपन है अपने कर कर कर है। इसार में साम मार्ग के प्राच्य किया है। यह में हों कर कर कर होंगे के कर के प्राप्त कर है। यह पर कर होंगे के कर के प्राप्त कर होंगे कर का प्रकुष कर है। वह पर कर होंगे के प्राप्त कर कर है। वह पर कर होंगे कर का प्रकुष कर है। वह पर कर होंगे कर का प्रकुष कर है। वह पर कर होंगे कर का प्रकुष कर है। वह पर कर है।

\*\*\*\*\*\*\*

## हार्दिक स्वागत

त्वामी, जीवनमेपी सना पुरु महत्रमा साक्ष्य भाकी जी सरस्वती क्रयते । इ. हो, तीत चारोशमें के बाद प्रमु श्रव पर्व सामग्रिक ग्रांक्त <del>है का</del> म्पन्य होयर पश्चिमी बार प्रजान में भार्व समात हारेम रोड बरत-का में कक्षत मदद कवा करने इस सफाइ प्यारे हर हैं। इस भागमध्य की क्योर से सावका पद्मा से डाविक स्थापन करने हैं। बार्ड शदेशिक सभा मे यन कार्यसमाध लोहफ्ट प्रस्त भा के वाधिक क्रिकेशन २३ करवरी रावशार को सम्हे प्रमान हिल्ली चौर हिमानस के पति-जिल्लों से बिश्वकर एक्सन, **एक्टर से धावको सभा का** प्रयास निर्वाचित कर के सभा न्दर्भ का पवित्र भार सापके रधीचि सन के समाद हर करवो पर सम दिवा । त्र**म् प्रा**प को सहा आज उसे वाहि बचना कारके मध्य प्रयस्तों का समह-

## मन को क्श करने के तीन साधन :

इस सिए डोप्डेशन वक निश्चर

# ज्ञान-प्राप्ता श्रीर ध्यान

(पूज्य महारमा जान्नद स्वामी जी महाराज) 暴傷 化化化催化 化苯基酚酚 医克勒氏 医克勒氏管 医

कान्ने जिल्लाह कानात को जारी

रखे फिर ऐसी स्थिति फाबादगी.

वय सन निर्विषय हो। जावना अव

उसकी सारी **पषडता समा**ज होस्ट

एसान हो जावना । मन की वका-

भता हो बड़ बस्तुसूचि का परम

सारव है। वही एकाव सन स्थान

पिन्ता न करो, निराश न हो। को स्थापना में काश्य हुने वहा सकेंदे। माहदा हि केस्त्रम

विकार है। विकास इस अपि का

यका धाप तक बनुसर स

कप से फारास जारी रखी बीनरी बर्बाड बाक्षा थड पर सिका हथा बात इस के लिए पदा की है । इस उद्यासित क्षेत्र स्रोप स्टादी क्या के लिए पूरी बढ़ा रखते तभी इस में रदेगा, मिटेशा नदी। यह दशा सक्तरः विक्रमी । भट्टा व विका निरनर काबाब के छा। ही तो यानत्त्वः सा कार्ये भी परा नही **ब**ायेनी। यही प्रषट होने वास होता। जिलाकर्मे से वहा की ध्योति द्यापको धन्तर सं वसंगो क्रायत। बर हो जाती है, उसमें बि-रसी स्वोति के द्वारा चापको सन्दर राम वैदा हो जाता है चौर जिस मे का करमा जना विकार देना। एक्स प्रध्नान हाता है, वह सबेग मन की बरायदा के लिए यह बहा क्रमान को अन्ता है। इस अदा-सन्दर सामन है। स्वान के किए वहेर दिवा तथा क्रम्मान प्यान की एक **ग्री**र बाल का प्रशास रामस्य को क्षिति को एड बनाया है। जिल्ला <sup>11</sup> बम्सो है। वह सोई ब्वाट इस्टे क्रभ्यास रह होता चला नावगाः बैठे. उसे प्रयत्न स्थाना वहेता कि नतनी २ जिला की स्थिति में स्थिरक त्र्याहे मन दे शोठे में जिल्लों भी स्ताती जायकी। नानावित्र विचर्ती के विचार रूपी प्रवास करने के बिए शरीर. पदार्थ भरे पड़े हैं, जिन के करण **ब**रत, स्मान' झासन और कतावर-विश्व सदा ६ यस ३४०० है। उन विषयों के पशाओं से सन के कसरे स्टब्देशुद्धि वडी प्रावस्यक है। को शामी बनना द्वीगा । वर्षः सन ब्यानगान पर हो विशेष नियम्बल था कोटा पहिले ही भरा हका है रस्टना प्रवेता । येसे वैसे चट परे वस में और किश्री क्लू को सुजा-क्षार्थ का बनोग काके मन क इस 🏿 बदी है हा फिर प्यान को भ्याता-सम्या को नहीं पाप्त किया ब्रवस्था केंग्रे कंत हा सकती है। बा लक्ष्ता । जिसने रखना को चपने जो पात्र पहिसे से हो भत हुमा है काश्र में नहीं किया क्याचा मन वस में भीर नत देते का सबते काट में क्सी नहीं का सकता: है। शास्त्र में कहा दे—स्वाम मन हो एकामता के किए रशना पर भिविषयं सब — सन की ध्याप संबंध बता की बकती है। एवान भवस्या वह है जिस में विदर्शे का वाभिक्रा के काम मान्य पर काववा सर्वेशा सभाव हो जावे । बारतानी **भा**द्रा पक्ष पर किया *वा* सकता है। को ससार के विषय तथा सब ब्रह्म व्यवदे बाझा पत्र पर आंग्रु शक्ट हे विचार यन से श्रम्यान के समय सिए। कर श्वान करें तो इंदर केर के शहिर कर देने नाहिए। इस स्थित **ब**-दास के बाद कापको देशा प्रतीत के किय भो स्थास करना पडेशा।

होगा कि यह ओस अबर बहा

क्तिसः ह्याः है। चमक्ता दिलाई

हेगा। बमी दीलेशा और फिर बिट

शयगा । फिर दिकाई देगा ।

इस जान की शक्या से

# स्वराज्य श्रीर श्रार्य समाज

से की स्वामी प्रकारन्य जी प्रचान सार्वदेशिय वार्च प्रतिनिधि समा देहनी

मारह की स्वतन्त्र करने की निया कान क्रमा के लिये मा क्राय सबं प्रथम मानता महर्षि भी स्वामी रहे 🛚 । स्थायासर्वी में ऋभियोगी बहारत सरस्को हो है जिलाह की सकश वह चली है। सक्तान नाल में ही शरवत या सामत हो वा जनकन्त्र जनता का राक्ष करा थी। इन्होंने सर्वे प्रथम स्थार या बाताहै वरना बनवा ब्रावने ब्राधिकारी कि विदेशो शब्द फिलता ही में प कौर क्लंब्बों से कनियह की बनी भीर सुल कर नवींन हो परन्तु वह हुई है। इसके दोन क्रथं व्य शेष्ठ रह स्वदेशीय शासनकी समाधा नही गये हैं **पर-राग, सत-राग और** बर सहसा। इसी मौतिक शावना व्यवने एने हुए व्यविकारिया का का प्रवार असर अस्य राजनीवेड त्वाग**ः स**मानः। विदान-स**माज**ो नेवाच्यों ने को दिया जिल्हें कार्य पर प्रकृत धन-राशि व्यक्ष को जा रहो है परन्तु अवता में नेविषका सामाजिको यो सम्भा को पर्याप थी फिल्ट भारत स्वतन्त्र हो गया मकार के लिये कुछ नहीं किया आ श्रीर चात्र सारे देश मे स्वरास्थ रक्षा। धर्म के मौतिह सिटानें को श्वापित तो हो नवा परन्तु सर्वा कियानित करते का नाम ही लगभ्द नहीं हो पादा। खरायार नैविस्ता है। रिशक्त पुरी क्षेत्र है काक्स केट रहा है और नागरिक वह सिद्धात है परन्तु इस रिश्वत नहीं सेने देने करीर न क्रेमें देने प्टूंबा देता है, जिस के खिए इस हैं यह नैवितना है। इसी प्रकार **बटक्ते ज़िल्ले हैं। वेह में इसी** बन्द कररामों कीर दुर्गशों के जिप बार २ प्रार्थना है कि अन्ते सम्बन्ध में यो समन्त तीतिए। नव (ग्रदसदशसमुः स्वासी अक्षपार था प्रनेतिकता चल्ला से शक्तावार्य जो से जुड़ा था वि इर नहीं हो सकती;**इस के** क्रिय बित बगन् केव⊸इस खशन् पर धर्म-माष्याको सा प्रभार-समार विस ने बिक्क पाई ? क्यूरोने बचार क्रावस्त्रक होगा । **सह**र्षि स्वासी हिवा कि मनो देन-जिस ने सव इकनन्द सरसकी भी ने पर्महोन पर विजय पाई। मागोजित स्थावित राजनीति को कमो श्लोकार नहीं ही अबद बिल् होता है। जिस स किया । महत्त्वा गान्धी ने क्षे मन ही मपने बाय में नहीं का स्वयः बद्धा है कि मैं प्रशंकीय विश्व विश्व में नहीं धन सकता। राजनोतिको हुदा चरकर समस्या ये जीव साधन हैं जिन के द्वारा हुं। मान **एक्स् महिसा** होनों मत पर वशोधार विका का सकता ही धर्म के मेर्डिसक सिखांत हैं। दै। इसकी चंचलक संपर्देश जिस मर्स ने देव को उस की सोई सक्ते हैं। बाज के मीतिक झरात है सदन्त्र शण बरावी आव ससार को इस वैदिक संदेश की सचापारी शासक उस के शाम से सावस्थाना है (तसे शान्त होती) यो पया करते हैं वह कितने हैं था एक्स विश के बाद शोक्स की कीर देते काइयद' दी बात है। क्या स्थिति होती है वह उसती क विषय नहीं है सांश्रि सन्मनों का

येथी स्थिवि में इसर्य समाजो क कर्जन है कि वे देश में पूर्व कर से वर्ष क्यार-एवं घर प्रक्राप्त

(शेष प्रमाद मारा)

सम्बदकीय-

# ऋायं जगत

वर्ष २४] रचिवार २०२०, २२ मार्च १९६४ विक १५

# दयानन्द युनिवर्सिटी

वर्षे अचार का वैदिक कारदोलन mारम दाके अनता को जागृति के क्या पर का सका दिया, क्यो काविका के तारा और विद्या थी व्यक्त के महान कार्व में भी सारे श्रेश का नेत्रस्य किया। भाव सारे अप में स्थिता भी शिक्षा कर स्थाप विकाई देता है जसका सारा जेव कार्यसमात को ही है—इमर्से हनिय भी किसी को सनमेद नहीं दै। **अक्टरराज्य, सम्बन्ध तथा विशा दान** में मारे राष्ट्र में जो शानदार प्रवाह समानहारी, इसका सारा गीरव भी बार्धसमाज को ही मिलता है। इसने शिक्ष के बार्व को सेकर सारे देश है विशास सम्बाकों का जात किया दिया ! इनका प्रकार पडाई. पश्चिमक ह्या भाषार विवास क स्वर बहुत क या है, दिसरी मुक्त-**कर**ठ से प्रशास में ध्ययने पराव एकमत है। झायसमाज की इन संस्थाकों ने देश को नडे-वर्न रह प्रध्न दिवे हैं। बात इन शिवय संस्थाकों का प्रयत्य करने नाओ सामगीय हा. मेहरचन्त्र भी महाजन Rein श्री.प.बी. कालेज प्रकार कमेटो देइबी, हा, शैकानपन्द अं विकासकर कार्या, इ.० जी पस. एक शबस चोसलर विकास बूनिवर्सिटी, क्रिनेवस सर्वेतात् श्री 48,44148 VIRBS unim fean, metten f an eutre d'a-क्यासन, विस्थत रसरामजी, विस- विस्टी भी सारे देश में अवने वस मीमसेन बहुत हिस्तिपस दीना- प्रचार तथा घपनी शान की आप साम शर्मा, शिंसपर झाजपन्द जी, दी होगी चक्रमेर जैसे केट में वह **हा॰ सुनेदेव की व्यवसेर विशि**ष्ट विश्वनियासयी का यह स्वारक आहे बड़ी शीख है --विकोधकार

भारतस्यात्र ने भारत में वहां | देशीयन्त भी एक य., स्थिएन रस्पदास सरीले शिवा विकास्टी वर **बद्द**ा मान है। इनके सका sure से क्या स्टा है। देर से कार्य समाज पाइता मा

> कि बहा क्षम्य शानहार काम विये बा रहे हैं, रहा इक्षत्रन्द वृज्यि सिटी की स्थापना भी भी आये। तब भारत में समाज के पास १९८मी भाग स्वत्रत विशे को शिक्य सरकार है, इतना महान विचारतार का काम है औ से भरी वरित तथा यहिन्दरना शिए के चेत्र में इतने महाद नेता हैं, यो देशी यांनवर्शियां क्यों न बनाई आये । माननीय द्रविटल द्वाव

नेष्टरभन्द भी ने एक बार बद्दा श

किनेरा वह श्रम्न भी जीवन है

एएं हो सब्दे कि इवायन्त्र वर्त्त्रवस्थित की स्थापना बर दी आवे। इस्त यह इसकता है कि भवनेर में उपानन्द सूर्गिवर्शसदी स्थापित काले का निजनव हो गया है / इस कार्य कर का शरम्भ भी हो चुका है। स्राय बगत् के इसी बाह्य में उस सम्बन्ध मै एक हेला भी सवाशित हो रहा है। इसे गौरव है कि हा॰ महाजन ती, वैसा गम्मीर सम्ब र्शकाङ महान त्यक्ति जिस कार्य की चरने

हान में सेते हैं, उसे बस्तता द बर्मा देशा । इसके बारा जिला के क्रमे शिक्षर पर पढ़ेमा देते हैं। க் என்ற விரை வி வரன் எர்க. टकारा में बढ़ान कार्य का ब्यारहं श्रश्चों का प्रवार जो होगा । सामी इंदानस्र का शानदार बेहिक मिरान विश्व के बाओं कोओं में इस के हारा प्रसारित होता। अन्ता विशेष बन कार्य नेवार को भी कार्रिय कि नगरिया, बारवार्व प्रियम्ब औ गुरू- महान निश्वविकालय पुरावन काल । वह इस महान संस्थान के लिए बड क्षत्र कामही, विस्तिपत्त शास्त्रे थी, में नवरिशा, नासन्या, विकास के बहा काममें करने से करियद हो

## दल से देश प्यारा

इसे बसन्तवा है कि भी रवाती

*ጞ፠ኯፙጜጜጜዀቝቔዺኯቚፙ*ፙፙኇ*ኇኯ*፠፞ጚዿዿ समाभाग्यों में काया है कि महाम है। जहा देश का शहन ही

व्य दिनों साह सका में राष्ट्र के कड़ी बार्टी का स्थान पीछे हैं वांबरका बातर मा बोल्से हर कार्य स भीर देश सर से प्रथम । इस हे वर्धेच्छ मानतीय ससरसहस्य श्री वी त्याची भी की इस स्पष्टीकित बद्धावीर जी स्थागी ने स्वहर कि यदि वर नवाई दे कर इसरे सब राज रात्र की सरकार देश की शीमाओं नीति के खेल सकाम काने शासी पा होने शहे बाक्षमण रोक नहीं से भी यही काशा रखते हैं कि सहती, हो देसे खपना यह स्थार इसबन्दी से ऊप्त बढ़ का राष्ट्रीहर हेना पादिए। भी स्वामी की ने बह का शरन आपो पर अपने वस की भी बहा कि मैं बहु बात इ.स. से भी वेसे शस्त्रों के बावजी दिश की **बहा उदा है । अभे बाबेस** प्यारी है वात कहते से धव बा संकोच सही वर असे दस की कवेशा देश व्यारा दश्ना पादिए । स्वक्ति कार. है, इसी देश श्रेम के गाते मैं देसा बलनाव क्योर संस्था बाट में राष्ट्र बहुने धर विवशः ॥ । इस प्रकार के बाद यब स्टिशत बाद दश्त ह या है

#### एक उत्तम समाव इसे क्यार्ट से को सारहर

कात बद्ध पर इसमें का भी इस दरकरी साम भी वनेशा गुलाकी टिशा से पब परशेन किया है । दक् राखों का एक पत्र मिता है। श्री प्रवास होता है फिल्म तक केश का नदेशा की देशविकासन से वर्गे कार हो, रार्शय किन हो, प्राथम कराची सीमाशभ्य में आवे समाज इपदन। इक्ष विश्ली और क्रोर बा का शनकी, वहां की प्रसिद्ध सार्थ रहा हो तो उस समय ऋपने दश बन्दा पाठ शाक्षा के अनवद कार्य-ह्यं बचेशा देश का ज्यान सर्वप्रथम वर्श क्षेत्र इधर की बड़ा स्मात होना वर्गहर । वर्षर ऐसा अ विका कार्यकरते हैं। पत्र में सिछते हैं बाये हो दश के मोड़ से राष्ट्र हाजि कि ब्याज कर सिरोमा द्वारा कमारिय<sup>4</sup> भी हो जानी 🎚 ऐसे २ शहबाती तथा सुक्क दुविवों का भीवन इन क्षीय ही वी स्पूर्णक दर सबते हैं। के विश्वों तथा क्रम्य विश्वपदी थे रत हो राष्ट्र पर बश्चिशन हो सबता अपादि हारा जिस तेवी से पतक विकास तहा सोगहाड हे माग ही है किना शह को उस का सर्वत नहीं किया कर सकता। राष्ट्र के कोर बढ रहा है, उसे रोक्त के मिए बार्य समास की विशेष कार्य नेता सहाने हैं पर राष्ट्र इस से मी यो अस बना कर नगर र में मदान वें छतावा चाहिए .. कीव करी कालता चौर सावता हिंद साव विशेषा का क्या दशमान पेल रहा है। काचार, वियार काहार, परिवार, श्रांचार प्रारंति सब उत्त इस से बभावित हो रहा है। इस

> भी भी उत्तेजा भी कहाईवड नायं का समर्थन करते १५ भाग संगाम (शेष क्ष्ड अपर)

# रयानन्द विश्वविद्यालयकी स्थापना

ग्रायं जगत के मिये एक चनौती इयानन्द विश्वविद्यालय की स्थापना का सहत्वरण तकत साह

इस्पेट शिचा तथा सकाब थे सी के सामने हैं। हमारे देश में तथा बाहर की संगयन एक इकार ही। ए० वी० वादि वार्वक्रमान की शिक्षता सस्याओं को यह सह में बायने के उब देय की मारत के सर्वोचक स्थातात्व के पूर्व सुग्न स्थादाभीश दा० मेंद्ररचन्द् जी शहा*=*व के कार कर के बाईकीय बार्वक्रमान विकास पाला परिचय का संस्थान बोने के बाद ४०वर परना अधिवेशन ३ व ४ नवस्वर १६६२ को क्रमान्या स्परात कार्ट र देवची के किया तथा था। इस अधीवन के ≰४४६ १'९४ म्यास ० तथा शिका शासी डा० किशामन देशसम्ब कार भी एन ने क्ष्मने लाबाटन भाषक ने बिका के बोत्र में बाबे समाज के महान कार्य को प्रश्ना करते हुन दवानन्द विद्याविकासय के क्रमान का स्थाप दिया हा और सम्बेक्ट का दशों सबसे सहराई तिरुपय भी था। कत इस निर्शेष को परा करने के किये दयःलग विद्यविद्यालय सारका समिति समाई गई हिस्सी खेला प्रक्रिक सिका विभेषा वया किन बिग्न प्राची के यह र हाई महत्त्व तराउ प्रशेशंत बियो गये। विभाव २२ जिल्लाका १०६३ को श्रेष्टको में कार्यकारिका क्या विद्रश्विकासम् प्रमिति की सर्वमिति चंडक इस महत्ववर्ण बहन पर दिवार विनिधय करते के सिये की गई। विश्वविद्यालय की स्थापना के निवे तीन स्वाप विचारधीय में कर्जान काठियावार से उद्यारा अहा अपि दवाकर का जनम हुआ, मधुरा अहा अन्द्रोंने शिका सहस्त्र की तवा **ब**रुप्रेर उहा कामा क्षर्यास हुमा । जैशा शाव मेहरफार सहाजन जे बताया अजमेर में कई अनस्त्र परिधियतिया है । अभि हजारू जो निवार भूमि व देश के देखीब स्थान में होते के बाविदिका वडा निकट मनिश्व में विद्वविद्यालय की स्वादना में भट्टान्ज़ व के व्यविदिस्त बड़ा क्ष विशास स्वानन्द कालेज भी मोजर है भीर उसकी आरसी वर्षान सुकी मूर्ति भी है। अन सर्व सम्बन्ति से निश्चव किया गया कि यह करविकालय सबसेर में स्वापित किया जाने । प्रवाद, उत्तरनदेश, विदार, महाराष्ट्र राजस्थान तथा देहतो आहि के उपस्थित प्रतिक्रिको ने इस विशंप का नरसाहपूर्व इसागा चाने हर वने पूरा चाने से **ब्रह्म**स्टा देने का काश्तारान को दिया । टार्श**स** ११ जनवटा, १५५४ को की० य॰ वो॰ आंद्रेड, कान्युर में इप परिषद के सम्मेनत में सम्मननाति से इस निजनन का समर्थन कर दिना गया जोर खब कार्नाहित इसना इस सरका पवित्र क्लेंग्य हो जाता है ।

यह लष्ट है कि केवल जलान कीर निर्वाप मात्र से उतना बहा कार्य प्रामहीं ही सकता इसलिये ह्यारूप विश्ववेदालय क्षेत्र 🛲 बीयमा बनाई गई है। इसे विश्लात है कि डो० व० वा॰ लहती व कारीओं के ब्राप्टशपन तथा विद्यानी तथके व्यक्तिवावक और व्यक्तिक इम पुन्तेरी को स्वीस्तर परिये। इसा १ कार सार्थेट्सिक सना आर्थशीविनिधि समाण तथा देश विदेश में पीतां पाय दवाने भी धन सबई में हवारा हाम बटायेथी, वेश हमारी भारता व प्राचीना है । कार्यजनत के मनिरिक्त पाप सबेत वार्यक्षनाम व उत्तर्भ शिक्य सत्याओं की क्रानेदायी सेवाओ तथा बारपुनिह बारत के निर्वास में ऋषे दशनगर के महान वोगदान के प्रशासक व समर्थक हैं। उन सबकी उदाव संहायका भी इस पवित्र कार्य में किकेता ।

#### इंसराज महिला महा-विद्यालय का पारितोषिक वित्रसर्वे **मा**व प्रविश्वा सके भी प्रशास ने

साथार्थात वर को सुद्धोपित किया । जासंबर-१३ मार्च १६५४ सा इमराज महिला महर्भवसास्य की पारिशोषिक विश्वक्रींसन काश्रिय के विश्वत बीयय में साथ है। बते सम्बन्ध हुआ । पदास माननीय क्रविविद्यों से भर पर या। त्यान २ थर काजिह की सात्राण अपनी इवटी पर हैमल थी। कार्य कर के समय पटात में पर्याशानित का गला का काल बक्रमा के प्रकार सामादी का बार कर क्रतीय सनोदारी या। श्री पद्माय ती ने अवने शंवत हावों से कातिये वी कमाओं को उनस क्रबीस किए। ब्राज्यकोग सावत से आपते ब्दा कि पद परंप को शिवा देने से कह ही स्वक्रित विश्वित होता है तम कि एक करता की वितास देते

प्रतिस्था सत्रो हे, प्रतिश्व रिते क्षत्र चण्डल पार-क्षण पच्छ भी और बता कि भी तो बाद तक पडाब के करों को हो सैनिक कार्यों वें कामको समस्या यो नेकिन इस दातित सी प्राप्ताओं की प्रतिस्था श्रेताकों के लिए परस्कार प्राप्त इंदर्ज देश इन झायन संशेष **हथा** है। इस में भारत का कराइ प्रशिष्य ਹਿਇਕ ਵੈ **:** 

करद साथ है।

उत्सन कालित की विश्लीपत विस विद्यालनो गानह MIA ने वार्षिक रिपोर्ट वहां क्रिस में वासिम के ब्रायाओं का सरव शीवन वार्शिक faranz nen sawar en aftitus कारि धारायां व्य अवर वयांन क्या।

र्चंट में भी यहा जी के संचिक्त क्षा भोडानी बारम के सक कार्व बाही समाध्य ह्वी। व्यवस्थापद

#### धानपर में हिन्दू लड़की बस्के में बरामद । श्रमियुक्त समलमान

#### गिरफ्तार )

कानपुर क्यारी में कहा **का** समय सनमती फैल वर्ट अब देग्टीव कार्य सभा कारण के अन्त्री ची देवीहास बार्ड (संशास**र** तन्त्र महापाकिका) ने एक संविध्य आधी या नुरका इटा दिवा को बहु रेख राजार से व्यवहत हिन्द **साफी** पुरनी रेपी निकती । धरहरण कर्त रेलगवार निवासी इबाहीस क्ट देल बर भाग सन्ता हका लेकिन श्रो कार्य व बन के शायिकों ने स्ट्राज क्यइरी में ही अंशे प**ध**ड सिया और को**ल्या**सी पुलिस के सर्द व्य दिया ।

बसारी सनी देवी की काब से सक्ष्या परिचार शिवित 'होता है। तमे रिकारक्षीय चन्त्रवि का बात कर कर के है नाहो ४ साथें को भवाया गया दा । उसे पदिने इज्राहरमार से जाना यथा क्का अर्थत को रीन्य संबन्धी पारितायक त्रिक्का स्थानीय नाथ प्रश्ना से रता नवा। कह कवहरी में एक मुमसमान बढील के पास किसा वते के किर क्षेत्रे वरका पहला कर सावा क्या । इस खेथ में हो **आर्थ** से की किसी तरह का पत्ना और उन्हों से सरस्य नहा पहुंच कर बाइय से सहबी को व धानिनुक्त को वहर सिया। सदरी के अवस्ती के जिए भेजा गया।

> स्मिथन रेड वाजार में डोटस चमाता है सहस्रे के साता पिता ने को बर्क्स से एक बाजने में स्थानक सांक्षेत्र की किए भी करते है व्याकी सरेश की :

बहुसी झाव हुम्सा देखि

वेची दास मंत्री

## महाराष्ट्र दर्शन

कि॰ थी सन्धवीर जो शास्त्र 'बरोहित बार्यसमाज गोलापुर)

(गताक से बासे ) को कपने भावती 'बारकरी काते हैं थे प्रति बच्चे कार्तिक मास के वंदरपर जाने हैं। 'वारकरी शब्द कर ही कर्य होना है यह बार सार साने

बुधि की ऋजकरण से इस ई प्रदेश में भी बार्थ-लोवि सही वही पर पहच नई है। सार्व प्रवाहओं का कराव होने से कर शामों क्या क्रव नगरों में कार्यसमान मन्तिर है। बहुत से देसे नगर हैं जह चार्चेममात्र का निशान भी नहीं है

परात उत्तर जना जना है कि सार्थ समाज के कार्य से बाताबरमा प्रमा विवादी । इस प्रवेश में अपने दी य, बी. सरवा के ब्रह्म हार्वरकृत तथा कानेत हैं। इन सन्ता में शोसायर का बातेज कीय गति से बट रहा है। यह महाराप्टीय जनता की बने वेस से क्या गीरव के साथ स्राधातार बीस वर्षी से लेवा कर रहा है। व्यव को इस काले व की पार चांद सग यर है। क्वोंकि इस सम्बद्ध हे श्रीमान भगवान सस

एस ए जो जीतियान, कार्यक्राल न स्थोरसाही, परारचरित्र 🖁 वह **प**्रिक्षिकत का पर सुशोभित कर रहे । पत्रके ही कार्य प्रभाव से समीप के बदेशों से भी विद्यार्थी विद्या वड्डायमें इस महाविकासय में बादर दूश कशों में देश सरदेश स्वयंत्रा को से वाते हैं । जिन्सपत साहेब के चन्दर आहा बहद-सारी विशेष्ट्राप हैं यह यह यह है कि जि का किसी भी स्थान से चारे शासनीतिक हो जाते सामाजिक जै हो बाई भी स्थान हो उनके बानेब आपशों से विदित हमा वनके

सत दम्म से ऋषि दशनक, तथा है

कार्यसमाज विश्ले जिला नहीं रह 🔏

<del>\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*</del> दयानन्द-वचनामत

'अभी शामका २४ कार्शन स्मरण कारेर नशी का वार्थ-विभाग मरी बरना पर्नहर । जो पुरुष सन्यास जैना, पाटे, बढ़ तीन दिन वर दुग्य-शन सहित इ.स.च. वरे भूमि पर मोने, प्राहानाम, ध्यान वया रहान्त देश में कॉकार का तर करता रहे । जो आउर्र की इच्छा से गीत संन्यास हे, वह मी विशा का सम्बाह, सर्द्रकों सन,

वोशान्यास. क्षोंबार का यथ कीर उसके कार्य-स्थ्रोतकर का क्रिया भी किया बरे ।' (स्वामी सरवानव्य शी) \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* शनकं नस-सस में बादस-पदा ने थाई वही सी उसे एक सत्त स्थिति होती हैं। जीतिश चारास्य

का कवन है।

৭ বপানুবহিম্পণি ব্য-ব্য

विश्वास्त्रविद्याणि सध्यक्षेत्रज्ञ-

पान प्रवार के मानव इर जगह

विकाले के. कि.च. क्वर्रिका, क्वर्यस्थ

सदायश देने वातं. चौर सदावता

हेने नात, बहु बयाये स्थव

ते स्व से इसे प्रेरणा लेशे

पादिय भीर कमिकित हो

व्यक्तिहेश में प्रचार करका आहिए।

प्रचार की रहिसे संदाराह है

गरिकारि ।

व्याप संवितः॥

संबंध कर रही है। इमारे मे एक भ्रय-मा है कि हम भित्र प्रदेश से दूसरे अदेश से प्रवार दर्श में सफ्ताय प्राप्त शही कर शकते । सामा नई। ऋगेती रीविरियाओं का झान नदी भारनिय प्रदेश नहीं यह दूसरी वाले कवल टालने की है जो प्रचार करना पाइता है वह किसी भी

भाव पर कर सक्ता है। उदाहरच सन्बल है 'श्रो राजेन्द्र जिल्लान तिमधी पैताव के प्राय आपाल नद्व जारते हैं द्वारी.चनी शोजापुर · कालेज में शाध्यापक पंत्रकर माप भीर भाने ही पचार भारत्य ना विवादी। प्रतथा समार से किसी स्थाद पर, नगर, प्रास, देश, विदेश

\*\*\*\* मध् कलश चलते वाहा समाजित्यने कतो कार को चलते प्राफो

पनकर कृत रही दुविया से सुद सहको, इसको सहकाको रानो जैसी चयलहा से हरतीय बाद मही बढ़ सब्दा मृत्यु से टब्शामा सीको माचौ में स्थिरता साक्षी क्रमंद दमी नहीं हो सबनी ताला मदर ही हाना को तथा उपकार रहेगा हम कोले का काला

थन से बोल नहीं मिल सकते सरश**ास क**मी जगत में मेकिन सब पत या सकता है जब में सहयह बाला सर सब्द में परका सर के बब्द फाना सीमी इसते-इसने बीजा स्रोको इसक्र मरना सीओ क्रमर शासका तक पाने की है क्षत्र को मन के भन्दर वब तम शब को बड़ते साथ। व्यक्ति करता सीस

(943) - -विजय विशीय  यावाषस्य बना हुवा है। हैशक्त सरवायह का प्रमान सम्पर्क रहे। पर है. क्या बाह की विश्वति यह है प्रचार का विरोध करने की शकि का क्षाय हो पुना है, शब इस र्वाच्या के उत्तम वाशावत्या से सार सेना पार्टिय**ं** र

मन मागरयस्था है एक्किन में भी स्वामी श्रद्धातनः वी ई महत्त्वा मुक्तीराम भी की पीत देसराम जी की स्वामी दर्शनासम भी की, पंडित राजपंत सार्व के... परन्तु वे द्रांश्रम् से तमी वि**र्माण**. होने ना तथ कि इस बावें समाब का बचार क्येंगे ।

> पूज्य महात्मा श्रानन्द स्वामी जो महाराज

काप्यारिमक क्या १० से एक मार्च वर भार्यसमात्र वार्रसरोक

क्रमाजनर से हो रही है। प्रकाश है शिक्षा किया ओ ज**स यह रहा समाई** ।

इता काडे मिमरिये, बो जन्मे ते मर आर्धि मधीर ।

'नलसी' यही क्रास्थ्य है. हो सन व बान्ये पीर अ तात पढ पक्षेत्र को हर को भने सो 📰 का होन

> दल स देश प्यारा (प्रश्व ३ वा शेष)

से पहला बाहते हैं कि नगरों में झपते २ समात्र तथा श्रांन्**मक्कि** के जीव कार्क से आहा की जारा विकेष प्रचार, मध्येतना का स्थान २ वर क्षाक्षेत्रवद्भ देव प्रशाह भी शब्दे दा प्रकर्त को । समाव के सिबाय यह करे यो कीन ५

I—filo veg <sub>T</sub>

#### प्रराणों श्रीर तन्त्रों का परस्पर र्घानष्ठ सम्बन्ध

चांनिष्ठ सम्बन्धः के॰ की पिनीदास जी जानी प्रवान आर्य कमान लोहनद अनुवसर

> (सताब से झारो) श्री समयानोकाच

वैध्यसं व-व---रहवोस्त क्षत्र समेत्र सर्वदा सरवदैर्वास्त्रस्य सन्तरः सर्वे सुरस्य पः ।२।।

विवाद क्रम्बा ताका माना वर्गाच्या ह्या । संदेशों मेरिया मानावाणि मानुष्य हुए । (१)। सहस्य कृत्या मान्युय वेरिया हारणा हुई । ह्या कृत्या मान्युय वेरिया हारणा हुई । ह्या कृत्या मान्युय वेरिया हारणा हुई । स्वितिय हारणा हुई । (१) स्वितिया । स्वितिय हारणा हुई । (१) स्वितिया । हरिया हारणा हुई । (१) स्वतिया । हरिया हारणा हुई । (१) स्वतिया हुई । हरिया हारणा हुए साम्या ।

कातवा पुरान् क्रम्याच कर स्तार र. र. इ. इ. इ. इ. मरस्य श्रीवेमात्राम सामग्री दक्षिणे करे । सामेन रीकिर शत्र मुद्दीस्य निर्देश कावत ॥६६ क्षत्रभूष रिश्वते मन्त्री राज्य चवति चेद्वे । सूत्री मम गृह शान्य स्थानामधियो स्रवेश ॥ वह

कास्का पुराव १६० ७१ मी छी, नर थी तथा पशुक्तो की बसी सर्वात—सन देवलसोंके लिये श्रीवदान का जो कार्य-कम वैध्यावी

स्वता — सब द्वशासा । अप वाकरान का या कथान सम्बाध इन्त के १४९ में कहा गया है, साधक बसे गहुमा करे। ।२ वसी, कक्ष्में, नी प्रकार के मूग, भैंसे, मीध, वक्से, नेवली ख्वा

सुकर महस्य करे ॥२ मेंदा, हीरा, हरिया, योह, स्टब्ब (हुग) होर (काववा) कन्द्रः वास, कावासी कथा अपने फार्न्स का लहु ॥

करना कर जरन जरन कहा। वे चरिष्ठक अभवा नैश्य कारियों की संस्था कई। हूँ। व्यक्ति के ही मुक्त किद्र होतों दें और कंतरों से ही स्वर्ण प्राप्त होती है।।ए मेरे रूप को धारण करने वाली आधारका-वैश्वेश आदमी के बाख की प्रकृत कर वह तक तुरुर रहती हैं।

((राज बनने का पुरायोशन तुल्ला) सामक को नाहियें कि नाये हाथ में कारमी का किर सेकर और बावें हाथ में कहू कर राज बढ़क कर राज बर जातला रहे। जो पुरा दिश करारें) राज भरे कहा रहे यह कान्यों साम जात उन्हें र करते पर मेरे पाझ में महीच कर अर्थों का क्रांटियांत हो जाता है।

वर्षे भर मुक्ती रहने का तुल्या धगवान (कृप्या) उश्चव सन्दर्भ पुरमान्त्र नेवेदी , सद्योगहरूपे । सद्या साल मुगा तेल चोच्च मस्योगहरूपे । । सन्दर्भ कानेन राजेन्य स्व सन्दर्भ सुपोहित

चुनो बरियार्थित को वं सीव्यं सालस्य क्रव्यम् ॥ कर्मान्-मन्थः, पुष्प, काम कम पुष्प समेत वेदेण, गुरू कीर समयो (भीर), यदा, मान तथा सुर, चटकिया, यूक्तने काने समा कर्मार्थों की मेंट है कर पत्री कीर पुरोहित क्षेत्र में राजा पून करेगा का तथा मन समी रोगा।

(कृषा पूना एड्स पुरास नगर सरक का नाय रूप होता ११, २०) स्विके के समझ तुर्गान्त भारत धर्म रक्ष, सर्वश्चित्रारोजीक स्वत्रनामार सम्बन्धरहरू से मुख्य शिवयन्त्र विश्वयार्थ स्थापार्थ सहोरव के पान शर्थ गांव मान मान से से सिने गरी हैं रेसिय।

Principle of Tantin Edited by Arthur Avalor Book I My wor-hip is of three kinds—Namely Vadik Tan-

trik and meand (Pennarik) I should, therefor, he worshipped according to the rules passenhed in this chartres

of Veds. Tanina and pursus.'
क्यांग्—मेरी पृक्ष के तीन प्रकार हैं—मेहिक, तालिक तथा

हिन्दि (नैरास्टिक)। हा करब मेरी पूजा क्षेत्रों सहते हेरी, तन्त्रों कीर पुराकों में वर्षित निवसों के बसुसार करनी चाहिए।

कीसद्भावन स्थाप १६ की कृष्ण-उद्धाप सम्बाद 'He who would free hanself from the bossis of hourt

should worship Blagwan in the manner prescribed in Tantra

श्चर्यत्—वह, जिसे सार्वास्त बन्धतों से विमुक्त होने सी हुन्छ। हो, क्यों में बहित विधि से अगवान का स्वयन करे :

if ugaves to see the above the first also how worthp ≡ to be performed in the Kah age, seconding to the Ordinance of Various Tantes."

'By a Separate reference again the Superiorty of Tanink Path in the Kali Age II abown

उन्हर इसोब पर टोबा करते हुए सी घर स्थाबी बहुते हैं कि इयन बहुते से फिर ब्यंहजून से शांत्रक माने की उत्तरका दशहें तो है। "In the same work Bhywan come selled udhav, the crest gem of devoters, as to what should be done in his own worden."

स्रयोत्—इसी थी मद्भ यदन में भगगण में भनाशिरोम्हीय रहत को उपदेश दिया है कि स्वय उनकी पूजा में क्या करना चाहिये।

Then worship me with mantras prescribed both the Yeda and tentra shastras for attainment of saths in both."
অন্যূ না দিং নাই বুলা নিব কথা কৰা বাবেন না কিবলৈ কৰা

इत्ता करो लाडि दोलों से सिद्धि की आहि हो । "We sak those who have faith in Bhagwan

and the Bhugwat, whether thy have faith in Bhagwan as stated in the Bhagwat."

स्पर्यतः—जिल जीको भी भवनात् स्था साम्यतः से सद्धा है, इस इस से भूतन है। इरे समझन् के उद्दर्श को मानते हैं, या नहीं सी इन्होंने सामस्य से वर्णन किया है।

Intelligent men should worship Januardan (Krishus) by the rites prescribed in the Ved or Agame

क्षार्थंत—झाती पुरूष जजारीन (सगरान् कृष्य) की पूता देश क्षेत्रका रूप के श्रीयुत किथि के अनुसार करें।

"The Devi should be meditated upon as ten-handrel and wombspeel according to Dusp Teatra The enter Kables Pernas follow, the Tantra All the Japas, measures and mories of Engwards and the Reshmother Rivers for the Shav Karsels in the Brahmother Rivers of Sakunda Purana are insecrited by Tentre

(%HTL)

## प्रादेशिक सभा का बेढ प्रचार कार्य

#### \*\*\*\*\*\*\* धार्थ समान कोट--कालाका का बक्त सरक प्रसे ११ मार्थ

को धुमधाम से सम्पन्न हुआ। ी समर्शनह ती, भी जनवराम जी, भी बारीशम जी, भी मेलसास जी, भी सुवाद की छन्ना की कोर से पकारे। अर्थसमाज नई गोमका का उसका ३० से ३३ साथ का

समारोह में सम्बन्ध हो रहा है। भी पर (त्रहोबा चन्द्र ही, भी हृद्राप्ती-बाग हो. भी सबवाद थी. भी इन्दरकोष्ट्रन थी. भी केनदाब की ब्राहीराम शर्मा भाग हे रहे हैं।

क्षार्यसमाज गोगरा गाव बम्बई का उत्सव १२ से १४ बार्च को समारोह से सम्पन्न हका। तो शतकात की की सन्दर्भाइन की wash muft

आर्थसमाज राजपुरा टाउन शिप का बहा १ से ११ मार्च को धवधान से सन्दन्न दुवन । ५० ६० ब्रोसन्देशस जी दनारे ।

आर्थ समान सन्तर का क्रमब २५ से २६ मार्च को समारोह में क्याद्र में का है। है प्राप्त में में पा विसोध बात जी बना क्रांटि: प्रारीट Ⅲ मेलाराम की के मधन होंगे। जलन पर जी डॉ० हर्गासिह औ, स्रो ५० हत्कानस्द औ, भी गोट वेदीराम सी समी एम.स. और ६० रहाराम श्री वस २. दस रख द. प्रवाद सम्बा स. मार्च को कार रहे हैं।

कार्य समाज जलानू र (तक्स) का बहोत्तव २४ से २६ मार को आप्रतास से सम्बद्ध हो तहा है। २३ सार्व से यस कदा थाँ १३ कोंद्रदाम ती क्षता। अञ्चन की वगकाम की, भी वस्तीरास की। प्रमाह पर भी राजपाल थी, भी मरनमोहन जी महती, नंशोराम श गं, **बद्धा** भी य**ं द**रिश्चल्द्र भी शास्त्री जन्मू माय से रहे हैं ।

ही ए वी हाई स्कस इस्मासा का उल्पद्म न से २० गव को भववान से सन्तर हो रहा है। यो इकरो काल जी प्यार से है:

आय अनामालय फिरोनपुर का सरस्य है से ३ व्यवेश को समारीह से सम्पन्न हो रहा है। २६ मार्च में दशा वर समा की और से बो दर्शासिंह की पधार रहे हैं। बश्तर पर समा की कोर से बो प० विक्रोपपन्द्र वा, भी राजपास की, भी सदय मोजून जो, नो मेलाराम **थां**, भी सुरक्षेताम समी बाग ते रहे हैं ।

बार्यं समाज जनालाबाद गर्नी बा शतक १० से १२ क्रवें ब की,सम्बद्धन हो रहा है। ६६०० ल से कमा की ६० विश्लोध अन्तर हारा **भ**जन को दर्पासिंह को। जनव पर थो व ० चन्द्र सेन जो, भी राजपाल

श्री सदनमें हन भी की भड़ती अवार रही है। आर्थसभाव जोगेन्द्रनगर का सन्तव ११ से १३ 🚓 वैस को दिवमधाम से सम्भान हो रहा है। उस यह कवा पर श्री व ः श्रीवनकाश

**ब**्दे भी अग्रतराम जो भी बर्माराम जी प्रवार रहे हैं : आर्थनमात्र प्रंम नगर अस्ताल का बलाव २२ से २६

land न को प्रमान से सम्बन्ध हो रहा है।

आर्यं समाज नारेस रोट जमृतसर के १६ से २२ बार्वटक

#### राजप्ररा टाउन में विश्व कल्याण यज्ञ एवं धर्म मेला

राजपुरा टाइन क्यानमध्दी के खाईतियों भी खोर से ४-३-६४ से १०-६-१४ तर कना : सरशं के मैदान में बृहदू यह और प्रकार का निरोध श्राबोकन विका सका । सरहों के सभी सन्तरों ने इस क्यार कार्य में पूरा पूरा सहकोग दिया और प्रात साथ दोनो समय वसे सन्द क्रीर शहा से सपरिवार समितित क्रोकर वर्ष तात कराता। समा के मधोप्य बढ़ीपरेशक भी ६० सीम्ब्रक्श जी में कामध्य होते. III भी मारे शर्व को सप्ताता से सम्बन्ध कराया । अन्तरा का बारा के प्रसार का वधेत्र प्रशास परा।

८-२-६५ से १८३ ६५ वह काम् के ग्रासिद गायक भी से**वाराम औ** रेकियो सियर में बबार कर सनव की सोमा को खोर भी बदा दिया ्नहे सरीबे मरीब से मंदश क्षत्र प्रभावित हुए ।

कार्वे महाज गारन मित्र के मधी महत्रवों का हत पत्ने व कार के परा सहयान बारात मरहो के बार्डानको से प्राप्त रहा ।

कनाज सरती के भी जार स्थानस्थास भी, तार व्यारेका व की. हो राम्बन्द जो वो दीवसराम भी, सी विस्तापन राम भी स्था प्रापे ममात के नीवाने--यम्बाने सन्त्री सूनि चेतनदेश जी, को धंन **हरिडेस** जी, भी बढेंग्ट्र की, भी हारवण्ड थी, भी राबसाल की, भी पाधेर**दा**ल थीं कादि सभी महानमान क्याई के पात्र हैं। माशाओं का पर्स केंक्र बी ररोजीय ए<del>रद</del> शतुक्तरहीय था ।

इस ग्राम चवनर पर समा को १०१) पेट्र बचारार्थ चन औ ब्रह्मा से मेंट दिश गया और अस्थित के लिए मी पूरे सहस्रोग का आवत-सर दिका धवा ।

#### +++

## ग्रार्थ ममाज जोगेन्द्रनगर (हिमाचन प्रदेश)

वे बहुतका इसराव बकनो समाराह के उरलाइ में दिनाक ह बारीस से १३ बारीक १६६४ तह दशे पूज बाम से सनाया मा स्वार है किस के एव जिलाफ जाना को शास्त्री को एव तथा को असकराक्ष और की सजन जरदनी बाद नया सरवाये दसाम को क्या करेंगे। पार्थ कारतों के शरतोत सामीय है कि इस नयारोड को सफल बनाये में कर बार कर से कावोग है का करायें को :

#### मुरारी काल मन्त्रो समाव

प्रक सहात्मा क्षानह स्वासी वो क्या कह रहे हैं । भी दुर्गनिह तो के मक्रव होएं। ब्रीर कार्य समाप्त सारंगरेत कमनसर में य से १६ क्रहीत वह बती राम शर्मा कथा कहेंगे।

जार्य ध्यायाम द्याला मोनोपन दर कक्षत २२ से २४ व्य**े**ड को सभारोड से सम्यन्त हो रहा है (

- अलीतम गर्सा ।

क्रांबद्धाता देश प्रचार समा

#### \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* ऋराजनी भोरम

er सामाज्य की देमराध जो बहादन P.C.S तम जब दर्जा घरक का महिना

control del matér y test to C.P.C.

रकीर सिंह बतर काफू शिह, बचन विद कान गुरमुख सिंह, जोति केवा हरि सिंह, सहयू सिंह, कानु किह, मुरुरीप सिंह स्वास्त्रमाम केटे पासा सिंह न संस्परस्त मुखन्यात शाय कीर नाज्दा तह साकतान बंगी जिल्ला **बिंह सरेगान** 

4श्रथ—चंग सिंह वरेनेह साचनात बंधी रंगहाक लिंह सुरैका 

सुरुद्धका स्थलवान सुरुतो बाका में मोरका 1.4.64 की वारीका पेसी ही बाबर बादासर हता थे। वधीन वर्गयह हो चुका है कि नुसम्बी सुक्ता सिंह सरीका जान कुम, कर क्षामील समान से गुरेज करता है। मीर सरोता है विकास १९६६र व्याप मुख्या सुच्या सिंह मुरेंस कारी किया जाकर काको बन्धा किया जाता है कि वो सकाम महिदा भीरका 1 4,64 की सुधा १० क्षेत्रे क्षाबिर कारायत कृषा द्वीकर देशनी मुक्त्या करे करना उसके क्रिसाफ दशकाही वर उरफा असवा में कर्ड आवेगी । मोरसा 11.3 64 को बैसक्त मोहर चयाला चीर मेरे दसवती के आरी किया गया।

\*\*\*\*\*\*\*\*

रियो शरा जिल्ला प्राचेना कावके

पत्यों में भी गई है और व्यक्ति

गत रूप से भी कायधी सेवा में

वर्षे बद्धन शवना कर पहे हैं।

हेर्डबन बामी तक क्षेत्राम की ने

सभा सभान बनने की श्वीकृति नहीं

बद्धान की । सभा का काथे शका

मा है। कुकरा प्रयास कर को न्यंकार

म. चानन्द स्वाभी जी महाराज के चनगों मे विनीत प्रार्थना ataate & our & pro-

रस दार्थिक श्रामिकेशन में जो (व बोदक्द प्रवासर ये शरान्त दक्त N. I colorufa it was an के दबाब ब्रिवर्शिवत हुए है। सुधा

**5**1ते हुए समा के अविच्या की क्लाड के प्रविधियों सभा क्या प्राप्तकः-सन्धेष राज

निःसन्तान परिवार ध्यान से पढे वर्षि भाग विवाह के वार बाट तक कि सन्तान हैं तो इस रोग

हे स**च्या पिकि**सार गी. ए. इवासञ्चाहर जो स्वातक (सङ्कोपदेशक र्पबाद प्रतिविभि सक्त) से जिसे वा पत्र व्यवहार करें। वो स्थातक भी भारत के जनेक परिकारों की शक्कता पूर्वक विकिश्या कर 1至和

पूर्ण कोसं ३ मास-पूर्ण ब्यव २०० व्यव ।

पत्ता-म स्थाम मृत्दर सनस्नातक महोपदेशक पनाव समा

३०३ रानी बाग सकर बस्ती देहती

म्बराज्य और आर्थ ममाज ( प्रथा २ का शेव )

हों । सान्त्रे शान्त्रे में वे-शाली धी धन्त्राची बाद्यी सवादे और उनता

बो समस्पर्धे कि प्रमे के विशा हैश का प्रदार नहीं हो सक्का स्त्री व 'स्वाराज्य' प्रम पाएगा । अक्षाचार वी अवस्त्र बाद रोक्ने के क्रिये

क्षत-परेकोद यो पासरकार दे बार्कों के कोड़ों ने न कवी हरून-परिवर्कित किये ज कर सकते हैं। क्षण प्रभाव को सुनीर क्ष<sub>र</sub> सीजित है। फिर भी कानून की वही

बबाव होता रहे, यस्त् सह से **प्राथश्य**कता धर्म प्रचार की है। वर्ष किसी समुदाय बा राष्ट्र किरोप के नित्ये नहीं होता वह तो दिख के किये हैं। 'वैदिक मर्म' हो एक साव देशा पर्य है। चीर भी बहा पित्र पर्म की चर्चा है, बहा देशों

> काचे समाव को तार्वेक प्रकार की दश दल्दी से इर रह दर केवल सुद्ध माचना से करोसापास्यक के पर्ध-वक्त करता पाडिए। इस से क्षमा में नैतिकता की क्लेक with the authors of the

≼ जा होला। প্রার্থ রহাজ কলা

का वर्गिकोस्त २० से २६ सार्च १३६४ की ब्रोना निविधन अच्छा है। इस ब्राइसर पर २३ वार्प १६६४

से बी र प्रिशेष पन्द्र में सक्षापदेशक सथा की कवा व श्री सेवाराव नी के सकत होते रहेंगे । वेदिन साधन आजन युगना नवर

(अवासा) में तेहरवा सामता शिक्षर १ से श्रमकेश ६६४ तक सती प्रमधास से सम्पन्न हो शहा है। इक्त कोरि

के विद्याओं के आविरियण क्रमीय योज सामन की शिक्षा, स्वीर कार्यक्षात्रिक वक्ष का व्यवस्थान हो रहा है। बक्त इस सुक्रवसा में बाद क्ष्माए । श्रोतर क्राएंट का अर्थक काश्रम की कोर से होसा।

कार्य समाज यमृता शवर का प्रकार कार्य

यो Co विद्यालकाल जीवे कालती माध में ३ विवाह, १ शाम श्राम नेम्बर तथा १ प्रकेश सम्बद्ध सराजा । पी, के द्वारूप कास को सार्थी के सुरूत रिश्व झनार के श्रम किसाई ar ttop) ein & fen fien & ६४१) वेर प्रचाराचे स्थित

नेकार करियार विकास कराय अकिर में कतारा तथा एवं करवर धावस्यस्ता है। विधानों का विश्लीक पर स्थाओं सन्तार्थर औ. पैत विदेशनाथ सादि के स्थारवान हुए

ईसाई निरोध प्रचार ईसायद के प्रचार का राक्की के जिए तथा बामुबकर में सहासिह रोट में ईसाई विश्वतरी की ओर के ो अमजात फड़ाया बार हा या, इसे रोबने में इसरे कार्य समामी के साथ इंदानन्द्र साल्बेशन स्मश्च होस्यार पुर की मोर से काम करवे से ही तर बाते तरे हैं करेंदि बाले की हाभी राम फेंक्ट की ने भी वैदित पर्य सदि के कार्ट से हैं। वक्का काम किया । प्राम्तवस्य के काओं में भी बाजी जी रेमर्पेशन के प्रचार को रोकने में सब प्रकार कर रहे हैं।

#### आवश्यकता

चार्च समात्र जोयेन्द्र वसर की क्ष क्र<del>वोर</del>न क्रिशनरो स्पार**६ धी** ब्राइएक्टल है। जो कि पार्थ नमात्र का प्रकार तथा पार्थित शिक्षा तासी का कार्य कर सके झारमोनिक्स कार्ष का भी ज्ञान द्वीना काश्वरवर

है। कार्य तक्कों में प्रकार सी बहरा रखना हो जस ६ स्वीच श्रमती पर्धा तीन्त्रता एवं कार्य सम्बन्धिः पूर्वा पत्र व्यवद्वार संस्थाध से करें और न्यनतम बेधन व witness union aftern feath

> हरारी साम यानी भागे समास

ग्रुहेच व प्रकारक की शोवपराज जी सन्त्री काम शाहरेशक श्रीविनीय सभा पंजाब जासन्तर होना नीर विस्तरप के छ, विशाप रोड बासपर से झुट्टीय दवा कार बगार कार्यास्य महत्या इंछराज भवन चिकट कपहरी जावनगर सहर से प्रकासिक वासिक-कार्य सहैसिक प्रविक्रिय समा पंताब तासन्थर



टैसीफोन न० ३०१५ श्चार्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसमा पंजाब जालन्धर का सप्ताहिक संखपत्री Beed No. P. 15 क्क प्रांत का सक्या १३ तथे वैसे शासिक सूच्य ६ दर्श

वर्ष २४ अव्य १३) १७ वंश २०२० गविवार\_देशनिन्दास्य १४०~ ०० माने १९६४

(तार 'प्रावेशिक' जानन्थर

#### वेट सक्तयः अनं शक परेमिशा

हे सर्वशिक्षतम परमेक्टर । येमी हवा करे कि हम जेरे हो परेम्बा-परम रूप में. रम-वास करते में, हिरो स्वर्ण मे चाप सी ही कारायना, साधना, में डी करताये रहें, मन्द बन रहें। भाग का मध्य की सकते का परमरस सदा पान करते रहे ।

विश्वा यदजयः स्टबः हे साथव ! तेरे कल्डा विक्वी भी समिलं प्रवासका है, बिन के कारण यह तीवन वसोसय पनवर याता है, तन सब को शीव से । इस वसीबाकी को दर भगाने के शिष् उन पर यो स्था है विश्वव प्राप्त व्या है। वे वभोगुस मुने भएना दास व बनाने पाउँ ।

इस शरीर में निवास करने बाले बाल्मन् । बड़ी सामध्यं रसमें वाले कात्वन । तु सदा बी प्रकार रहे । क्षेत्री जी रिकार को प्राप्त न हो। जीवन की विष्दा सहा वसकता में है, कबरा कर छटा रोते रहना वा किराश बोज बीब्द की सायक करी है । सवा प्रश्नम रही ।

मत्स्व त्रभ वस्रो

#### वेदामृत मनसापरिक्रमामन्त्राः

धोरम प्रवादिम विधारविपतिः बल्मामप्रीवी रचिता वीरुष इववः । तेन्यो नमोर्चिपतिन्यो नमो रचित्रन्थों नम इष्यो नर्म एभ्योऽस्त । योस्मान होस्टियां वयां द्विध्मातं वो जम्मेदभाः॥श्रयवं दा. ३स. २७ मन्त्र ५

धर्य —हे बहादेश ! इस (धना दिस) मीचे बासी दिशा मैं भी कार (विवा) विवा m से न्यारक हो कर (क्रांश्वर्धरे) सह के स्वाभी वन रहे हो। इस दिला के जो मां (स्वमाणमार) इसी र गरीन राते हैं, बन के हारा (र्रोचना) हमारी रबा करने तथा (शिव्या) वे ५%. तथ वसप्रतिया आर्थ्य (इक्ब) बाब है इससे हमारा सदा बस्याय वरते हों। तिभ्य नये ) इन के जिप नमाकार हो, (dक्तभ्य नय) रका के इस शायतों के जिए समस्कार हो। (व बस्यान दें(ह) बी सी इस में डे प करते हैं. (र्ज प. जन्मे दक्त ) वसे क्राव के विवस में मेर बरते हैं।

याथ - ग्रेंकम । कारी दिशाओं में भत्रकों के बाद शोका वि नीचे बालो दिला में पन र कर के देख ल', लायद चंबल विश्व को शान्ति मिल नारो । पर मेरे देव ! इस शीचे की दिशा में भी नेश पंचरा चित्त सूब सरका, दौरा किन्तु इसे शास्त्रि न सिन्नी । इस दिशा में भी चाप की सर्वाचापकता की सर्वात भारत है सी ( काप विप्रा पन कर बहा पर सी सवें त्यालक हो का विराजकार हो रहे ही। यह जिनने भी हरे वरे उस है, बन्दरकियां क्रोपबिया है, हमें सन देवी हैं, कर से इमें जीवल का सुख देते हो, वे बाख है, किर 4 द्वारा हमारे रोगों का उन के द्वारा इनन हो जाता है। हे परमेश ! इम बाए के मण साव की इन शक्ति का शहेश सवादर वरते हैं। इन से पूरा र साथ उठाते हैं। चापने ट्रेरियों को इस बार के नियमों की शेर करते

# ऋषि दर्शन

हे लोगो ! इस संसार है अब है, देख परमेश की परश सता सबेप विश्वयान है। प्राण्यका को अने माने विन गुजारा नहीं है। इस विभिन्न विका के चित्र को रेलका उस चित्रकारसे इनकार चेले विका ज नक्त है बहा है, सबंद असदी ध्यमुभृषि होती है।

#### चन्तर्बहि: स्थितम

वह ब्रह्म सब के अन्तर भीर बाहिर स्थापक है जितना all an femm fere t. Ban उस की ज्यापकता है। प्रशंत बन्दराखों, जस थन में, बने एकाल जगशों से, मानद के चन्दर भी सबकी सना कर मन् अब होता है। उस से कोई भी स्थान साम्बो नहीं बह स है।

#### यद्यार्थंतया वाता बद्ध संय का संय कड़ पड़ी

माति जालता है। इस पंछे बन्द, कोई रहस्य, कोई भाव भी उस से गुन नहीं कर सबते। जो सन से भी भावने हैं, कमरे में कुद दरके भी विकास है 📰 भी बनी भारत जाश्ता है। स्वत्र है। आध्य भागवा से <del>\*</del>

दरोगों के यम्बीर परिशीवन बाते वाले मान्य शक्टर वी ने **ब्रा**सारे निवेदन पर भ्यान देते हर कान सम्बन्धी विरोधन के सुन्दर क्रेस रिस्से हैं। यस भावें उगन के क्रम के बाद कामें यह सेला है-उसी प्रकार चिचित्सा शास्त्रो

वै भी पार विशास है—१ रोग न्. रोम का हेतु ३. काशोन्य ४ वप-चार वेसे ही योगवर्गन के नार शिवाम है। १, सकार २, सकार का हेत ३. मीच ४. मीच वा उपाय । प्रकृति १. इ.सहस्य ससार त्यास्य क्षेत्र है। २, प्रकृति पुरुष का अभै-

किय जोग प्रार्थात समीग देग हेत द्वाल का कारण है। ३ सबोध जिल्ला हान ४. सम्बद्ध बचार्थ हान होता चपन्द है। वन में हान करने शक्षा कारना | रसते हैं । किन्तु अक्रानवशः क का समस्य न देश है कौर न क्या-

द्वेय है प्राप्त भीर त्याग दोने

क्रमा कारमा के शक्त में नहीं मा सम्बते । दोनों के नियश करने पर शापनत सना की सिद्ध होती है। क्की सम्बद्ध दर्शन, बानगति कौ कथाथे बोध है, तो कि इस नहान द्वास समुद्दाय के बीज वर्गवदा के कारत का कारता है। अर्थाय प्रत बद्दर्शनों और बायायों के उपदेश से बलुहर बारा दुमः श्वार्थ 🎚 होता है, क्वोंक वन वानुकों वे क्यार्थ समय होने की सामर्थ्य होती 🖁 । तो मो जब उद्ध डिज्ञासकान से मद्रापुर्वेष इन दर्शनों क WHEPSTR Research exentific times नहीं विदा और बराया काता, तब तक पूर्व साम **ब्यदी** दो सकता । वयोषिः शिक्षित क्रोगों में विशेष वर ने ब्राजिकों से बद्ध धारक व मनोन्ति का गई है कि सारे दर्शन तथा पर्ने शाल बेनपदल एवं ध्वरकात के विचय

है। वैसे कि यह वैश्वनिहाने सहा more or less simpanded to श्रुत, बरेमान क्या मनावत ।

aft 2 . -That all religious matters से भी हस तीन लक्कर का है

#### दर्शनों का स्वाध्याप योगदशेन का स्वाध्याय

(बेo-भ्री डास्टर सकरदा<del>त</del> की आरंसरोड बमतसर) \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

sentementality, psystein दक्षोकास्यान and degree to faith and are न्दान वर्तन ४-१-१४ में फाता Yord of Practical research है--विविध बाधनायोगात हुन्स which distinguish a accentific मेक्ब-मोर्लिक । कर्षत जन्म. जनिक संस्थान अनेक प्रसार के साईये : इस भ्यान पूर्वक हुकों से पुरुष है । साहर संस्तर विकारे कि संसार से सारे पाकी दुसर्वे से परेशान है । भारकी इह सब मूल होते हुए क्यों दुआते से जीकों को महान इस भागु प्रक्रिको स्थ भीत हो रहे हैं और भागते 🖟 को मन्त्रम हं स. सन्त्यों को श्रीम कोई नहीं पाइता कि उसे दुस

हो । तीनों तापों से पयक रह कर को द्वीबतर इस द्वीता है इस प्रधार सक चानश्ट में सन्त रहते भी इन्छ। प्राची ट.को से दश्त है। को जन्म के होने से ही होते हैं सरीर, इन्द्रिय भीर गुद्ध कार्य के समृद्ध मण से युरचे समा को अपन करने का क्टट होते को अन्य बहा अला है। त्रपास न जान कर धनुष्यित क्यों सर्थात जन्म सर्वाच दुश स्व में श्रृप हो तते हैं स्मादश ही दें दुलों के दीन वे हुल की शांचि होती है विवेच

दुःस होता है। देन और रीक्सरिक्सी

दु सो का शस्त्रविक स्प से दिकार करने पर वह भी र झ ही है, सुक नहीं वैसा योगदर्शन न्याध्वर्शन १-१-२१ मे बाहा र-रंश से बढ़ा है---हे-बायनासध्या दुन्त, वायना,

बोरते हैं।

चरिकाम-अप-संस्थार द लेग्स पीड़ा, ताप इन का एक ही क्रथ वर्षि विशेषाच्या ईश मेव सर्व है। क्रमांत्र जिस की चोट सर का विवेक्तिमा । अर्थान परिकास, नाप, वे लाग बरने का बरन करने हैं का संस्थारों इत्सा श्रीम गुर्थों की वृश्वियों दुल है। यह दुल तीन प्रकार क के किरोध से बार्धत कर बेसन 2-9 missifum a. mifembles साधवों के द्याधीन विद्या भी सुक सीर ३—साधिनेत्रिक 🗯 वे प्रतिस का **ध**नुश्व है वह सामा रामार्थि इस कान्यास्यक्त है। यहा प होचों से तुला होने से दूल ही है। क्राःसः सब और शरीर के कथे से सङ्ख्यास इस सुव की टीका द्भारत है। Mental and Physical दरते हुए सियाते हैं —कारतव से जो वाम क्षेप मादि सार्वसिक उद्य भोगों से इन्टिशे की करन है जो जर भोट बार्व शारोरिक द व इस त्यहा व्य द्य-ज्यशानित व्यक्तियोशिक-नोर,सर्वे कादि क्षेत्रे से

बाबा है वहीं को इस सुल कहते विता दुश । भूद बड़ो प्राविशों के हैं ब्रोर यो न नुमन्त्र है वह दुस क्षर्य मे प्रयुक्त हुव्या है । ठीवस है। योग कश्वास से इस इन्द्रियों en unfaffes ft. fanne को रूप्शर्शित नहीं कर सकते । क्ररिक, क्रांत वर्षा, ज्ञान्यी जाति क्वोंकि योग प्रश्वास के साथ-साव देवी शर्वकारों से द सावका पर्वजन्मों शय बद्धता जाता है । इसस्तिय भीग के संचित सन्ताप । समय के विचार कारास सम का प्रवास करें है।

(**19**(0))

#### गुरुक्तन महाविद्यालय व्यालापुर हरिहार

(ck o5)

का श्रवां वामिकोत्सव १० से ते १३ क्रमील ६४ वस होना निर्वाप्त्रच्या हाला है।

इस अवसर पर कानेश महत्त्व-पूर्व पन रि.सावद सम्मेशनों धा भाषोजन किया वारहा है। ब्रापकी सेवा ये साहर सप्रेय क्षिमन्त्रसा है कि तक्त कावसर पर <u>इट मित्रों संहत पमार कर साथ</u>

कारत पर श्री हा० राम समय-सिंह जी, भी भका दरोन जी, भी वकारा जी ब्रादि सहानुधान पहु प कर उत्सव की शोभा को बहारगे। मुस्याधिग्डाता

चार्यसमाज चोहरी चीह

बटाजा में ऋदिश विवाह वी शमरारण की पूरी वेहराय-

पुर विकासी की सुपूत्री का गुप्क विश्वात को उपादास भगता के सक्त वी वेबस हत्या जी माविक कार-शासा मेटल इन्टस्टी के साथ १६-३-६५को साईकाल ही मेलारास को सरका सैवसार्थ के जिनसा स्थान पर १३ वैदिक रीवि छे सम्पन्न ह्या , इस भवतर पर विसी प्रधार का रहेज, टीका, सगत, बराव वर्गरह का कोई काबो-तन नहीं किया। इस मनसर पर थी दर्शरास की व दक्की सब क्सी को सार्व द्वार्थि के बन्धन की तोहका दिवाद करने की वधाई की सारदी है।

की जेसपास जी सहसर द हा. राम शकारा जी स्कूचार M.C.) वधाई के पात्र है कि क्ट्रोंने सामा-विक कुरितिमों के विकट्स पग उठाया ŧ.

संबंध चन्द्र सन्त्री समाध शास्त्रकाश्चीय-

२०२०, २९ मार्च १९६४ মিক ৮৪ ાર્થ રકો

#### मर्थ ने प्रवास के होये पर करि | जनती है। इक धर इस मेडे ने कार्यकार प्रकार कार्य करना कार्य. देशों की पूजा निर्मित एक हमार किन में बहु समों की सता मीनूर पानों को गंध से वर्ष ही वर्ष गंध

हो तो देखने वालों को किया। या भाष तेते ही इसारे नेजे इत्स्त्रमा होता। यही शत हत के भावने कारका है कानी प्रवेश द्वार्थ स्वात से कहा पार्त है। ने से माने बाई। सुर बक्ते थी कारों के देते हुए उसके तरतक <sup>| पति</sup> वा भगवर और काल स्ताने अप्रकारों, संबादों, संबादों, प्रकार पाला एक्स का धना कि किस केन्स्रो क्या सामग्रम कार्यकर्ताको प्रधान भूमि वे गते हुन वृत है के शान हुए शिर ध्वया ही देश के ' नवहरें की गरीन ही राज कर उसका इस हराया के पूर्व में भी कहाता है। जिस कर से कहार कर दिया बाल क्रमुक्त वरे क्रमांबहसम् की है। किर हेश काल का भाक्षका दिव्या देवी हो से मध्य बद बाटा जाता है। Ann प्रारं प्राप्तवं है। सारत प्रशास बाला करते के मन्तिर से के grafegern पत रहा दें, इच , पन नहीं अनेरे से लेकर शाम अ काल को क्षे प्रतिकार कियाने का किनने वार्थ कार दिने आने हैं सक्त है। किन्दू वह इम भीना उन कालों देले बीवास तार वं ac if finara 2. 14 % BIH लामा परके बाद मी दिस रे क्रम होने अग है। क्राय समाज रेशा है कि मानव जिल पान को क्षे क्षिप्र बारश्याः हे. स्थल . पराकान्त्रा तक वा बहु पा । विन् इयार स्टिन और से होना पाळ्य ' समानार पता में शुप्पा के इस und के सामने अभी किला जीते पर इस इसार वस्तो क स्थित क्रीतः दान है. अन्ता के क्रिया पान की कार में हाराडाह के कार बा का अवस्था हैता आहा पर पर हो दिन और यहा। बार ब्राबटा है--इम Ⅲ गर रन इस भी इसने इत्या ? देशे को दुबा व क्रिक्ष दिकाने काली बंदना से निश्च काय वर इतनी दिला पेश्च के साथ

क्षका है। हाओं की पना असन। है श देश बार्च ! पुरुष की कात appropriate and it is a direct with the figures. हमें सभा शरेश के पान करना , का देशना परण ? चाहार m या नामक स्थात पर मार्च वे काल श्रीवत सर्व क्रमारिया का केवा अका है। इस

शराब मोत्र बान के बनार हैश होई मामूबी वान वहीं विसे हे इलार्ड के सबीच दूर शानों से औ शुद्धि को अपने तर ने कब : १६ कर मेंत सहा जाते : हमागा सर-वार्त राजिक होते हैं। जिस्ता नहीं। स्ता तम पर सुका ततः, क्षेत्रस्य वाप वारा। कार्मी । क्षी भारते सांग्रहत को दूर करने क औ कम पुराई नहीं , विश्तु अस किए तथा समान की शांत के की बाहु होना एक लाल पा है। जानना दिश्य पर गीवडा करके भी को हुई पालू देन गानात ितियन वितेष रूप से मेले. में इस इसार कारों की हाना कर हेना अलाने उनला कार्त का तेत Ⅲ क निर्माण से सार्व समात का सामा **कार्य हैं**। बेंद्रे पर देवी की पृत्र 'विद्वा गरी कहान का गरिक हर नायो-जिसेक कर

**发展中国各种发展中央发展的发展的中央工作中** भी करहेक सिंह की सिटाबी , दिन्द तम सादवीय न्याय बांस है पूर्वे त्यान कार्य प्रतिक्रीय यशाय | प्रस्थितक ना सुनने क पाट सं লীৰ কণাৰ মাকণিৰ লক্ষে ইঁ। তিয়ালী লী ই হুত দী নিৰ্মুখ वत प्रतिकादित के विश्वीसन के विमान इस पर पाने की इन्तानी मनकर होत्र स काफी किरोबी, की हैंसजा में दुधकीर में करन कारों की प्राथाओं की दीलका की . व्यक्तिक पत्र इसके वर अपन्त इस कर बोब सभा के सहार प्रश्नेकोर्ट के स्टेश्व व वस्त्रों faiffun bei me fe gn fe facht fin ju d jenet if विशाओं भी दीक्षण में पुनवींचका- के विकाद चैक्क्स दिया। हाईबंटर में न्यायाचीत के कर्म क्रम्पन क्रावेद्य जिला था भी विद्वारों भी ने करना क्षत्र अनुन करते हुद भी विद्वारते की । विश्वीयन काय में सीत् क गाहि के विषय करना केवा देश किया। को ही वह तथा श्रेपरी भाषा के बाम पर होतों की कह कर भोट led है। जोब का शरदा साम्बदा-मान कहात. काम विकास है ten it i ma piracifatar em बारना सन भीवता से श्रीवातत

army is all years at social र्शाल राजाके सरह है। आज इस्पेरी यताना केंद्र रही है, इमादी सरकार टर र ८४ केलको भाष्ट्री है 'पदार भी बद १७१ है, ब्यक्तिया व रामेक्ने मी में पूर है, किन som on the friend of तांच्या निर्मीक द्वीचन टक्कर हेते का जाता क्या क्षेत्र कर तथा है : शारः समान् की विकास करने स्था क्टो के जिस बैटवे अब है। इमारी भारत कुछ गोली अर्थापयी के बारक पुरिष होता विधाई ऐसे असी है। सबी असी बढ़ करत

स्थान रुक्तम स्था है। इन श्रवार कारों की कहारी सराव है। वेरेस के ofician à beb à ara de ara ecure su silvera are sit i

क्षत रह रहाँ समाज्य हुए १९६६ रिवेश हो है, बला को बाव-निर्धानन अभेभ हु दुस इस श्रमार हमाब जो रोक्ते, ज्यसे टक्क का किल र बा इस पर वा विद्याने की अवस **६ छम् स उ**चे न्याधास्त्र करेडा-

सार्टेस क्षेत्र सङ्घाण साम्य कर्णा य हार्यकोर्ट के स्थाप का रह कर के व्यक्तिहास सी **व**्यक्ति राज्यत निर्माद हेते हुए बहुत कि कोन्न कर सहस्र सालकावक नहीं। भारतात क साम के भड़ा લો બેલી વધ સ્થ્યાય કરાય जोधना टीक मही। यस बार सदा से सम्बद्धिका सहद नहीं इश्री। एक विश्ली राष्ट्र माधा है । राष्ट्रभाषा से बेस काला मा क्रीड प्रशाह गई है। अब इस्केटिं 🏻 केरके काला से महत्त्वत न होते हर भा कियान जी के लोड कवा के निर्दाषत w वेष क्षाचा को विशानी जी दी fore a यह विवय के कार भी किलाड़ी

तो की हो जरी है सबर soit समान तथा अनु क दक्षते को है। राष्ट्र माना के विस्ति की है। इस इस पर शाल रेन्द्राची तो की यहरू ने बनाई देते हैं। उस पर बन भी काफी स्थव हुआ कीर परेशाओ फ का ब्रो सरा है। —किनेब कर

अद्दरमा धानन्य स्वायी भी का प्रयम्भ भन्नक के क्टोरे देखे हैं स्वो २ यंते आये त्यो २ स्वाद क्टीर मीटे समने हैं । स्वत्य रुखों में कमाल पर देने हैं। क्योजना के में से एटक हम के क्षानुश्यक्यों

स्त्रीत जो बीरों का तेरे प्रकार साले

बोला हो । ग्रेमा प्रवित्र प्रज्ञ कला ।

साज में पार वार्त वहीं है। पहली महि कि पत कमा क्षमत नाम क्रम है का महि का साम क्षमत कर्म जान कर कि तेरा साहता डाइस पते, तीचे व तिरे ! यदि स्वामा क्षा क्षम क्षा तेरा ?, यदि हिल्लाकोंटी क्षमी मितमाल कर के दी पत क्षमता है तो यत कमा देशा पता ! पद पत्र पुत्रे नीचे निर्मा हैया ! स्वित्त कर क्षम कुण कर किस्सी की नीचे हैं यह मेरी निर्में कर कुण कुण कर किसी की स्वामा की

के स्थान पर कालता शिक्का कर, किसी कामांगे विश्व को उस के उस की की तिर्देश पत्रचे की हास कर के की तिर्देश पत्रचे की हास कर के काम कमाना है तो न कामा । बह तुने नट कर देशा। आई को नाई से तहा कर, परिवारों में पूर्व है है हो में गाम्यां वाहण ना काम माना कर प्रदेश प्रदेश का माना काम माना कर प्रदेश प्रदेश का माना

તો દેવે હવ હો કુકાર કે ... લાવી નહીં લાવ નવ સામાં લાં પ્રિકે જાત તેમાં પ્રતાસ માત્રી તો પાતા તુંત્ર કે દેવે કે પ્રતાસ કે પ્રાત્મના  $\omega$  ... તેમાં તેમાં પાતા તેમાં તેમાં તેમાં તેમાં કે કે કે પ્રતાસ કે પાતા તેમાં તેમા

#### जीवन चर्चा

## धन कमा श्रवश्य परन्तु

(বুল্ফা নার্রাংনা স্থানন কাম্মান প্রান্থানিক এছা)

ক্রমান ক্রাক্রমান ক্রমান ক্রামান ক্রামান ক্রামান ক্রামান ক্রামান ক্রামান ক্রমান ক্রামান ক্রামান ক্রামান ক্রামান ক্রামান ক্রামান ক্রামান ক্রমান ক্

की इत्यान दशे। यात क्योर कि देशा कर अंधर का इमरो बहु कि दैता पन कमा आता है। बाद राजरों के लिख के जो उन्हें पर बाने काम हो। शर्मन पाल क्वीर रेव समाध काला है. हेरे राजा हो । देता यह वत दमा क्रोप्र वेटा बरता है, आपके लिए को इस समय तेरे जिए मनट हो चायर कीर हे म पेटा नहीं कारा बना रहे और तके और नवा हर इसोतिए देर ने स्था-बेसा धन बोड क्या है। इसे बोठ खब्जे पन ब्रमा को का देते पास हो। धी सपनी बयर के साथ दी शाये क्रारियस बात दल है कि ऐस किरने हैं। अर्जें ज दिन यो पन यन क्या जो बीट लोगों की मिलत है व राव की काराब । तन्द्वादे पास काने दाक्षा हो : वेस

वेथे कवित हो कर दिया हवा हो

ब्दा बना ! इसने शाबे को एक ल्हा सदाव की रूप करते. बारो कार्ड में बाच दिया । यहाँ जे वा पासन किया वा सके। वह है रात को ही सब होता था कि कोई धन के अध्यक्त में देश की बताता। चोर था डाकु न क्या जावे. वर सब प्रज रस १९६२ स्वतंत्रों कि **प्र**ात्या उठने बैठते, बाबे संतं, बोने जागरे का पतन न हो, देशा यस कमाधी हर सक्क प्रच रहते तथा वता को र्ज्यक्षित रास्ति दहाये, यद दा बताको धेमे सन वा क्या लास है 1 क्रमा न बना रहे. जो यश देने वेत कहता है कि वेशा पत हत वाला हो. जिस से वोतें हुँप रमः वो तमे निर्दत बना दे. मीस विद्यानों का बालन हो । येना ही बना है, ऋषित हैना भन करा बन बासविक बन है। ऐसे चन बा जो तके शक्ति है, शहन दे। किया न वेद सरका है और न बोई तेरी शक्ति कौर शहस वस यो सदा बदाते रहे । र्वासरी बात बढ़ है कि ऐसा यम बारा जो तथे. वश शंभिं चीन सम्बात दे। हेना थन जन सम

कार्षि प्रकृषि । कार्य केर में ये यत के सरकब से बिस्ते ही सन काने हैं। लेक्ट्रेकाड का एक यस्त्र है—येन पतेन प्रश्रः चरामि भनेत देश धरमि**न्समा**तः— को तेरे काममान का कारण *हो* ३-१४-६ हे प्रमो ! जिस घर से में प्राची की एठ बढ़ारी का सर्थ है चीर पत्र चमाने की उनका करता कि भाग को देश्याओं के पास भी ह . वह स्थातार बहता आये. दशी होता है। धन का होना सनव सम त होने कावे। यह है वेर का को सम्मान नहीं देश । मनदा धन बढोज १ के धन को समाप्त दरने बहु है की समाद की श्रीट है असे क्रिटा देते. इसे यस परने सम्बाजनीय क्षीर कारत योख और इस से 681 बरने का उपरेश বনারী। বৃতি আনাধান ক্রমা ক্র मध्ये देवा कांच्या को निरम्बर र बैठे हैं और बाद के बात-वास बदाने का हो उपरेक्ष देना है। के भोग असे बार असे हैं । परस्त प्राथ जो ब बन देशियों कि परि पन अर्डे अन्त औं देते, सोग प्यास में सर रहे हैं और झाब वार्श जरी होते जिल्लामी द्या वरी सम होती पिताते. बोध शेमार हैं भीर साप हो वेद में उसके दिव प्रार्थना स्पों

धन बसा किस से कीने का नेत

जरनु जेश बहु गया है कि वस्तु मेरे सुधी समु मही । जब का मानु दिन महोत्र मने हुए ता कहा है। एक दा महित्र मोरा 'क्या बन्ध हैगा है। तस्त्र' बहु का प्राप्ट की प्रार्थित है केश सा कर स्वाप्ट मानु जेला त्यार भी है कि मीर क्या की तराज करती है भीर प्रार्थित करती हैं।

#### सावंदेशिक ऋार्य प्रतिनिधि सभा देहली धार्यसमाड दा स्थापना

दिवस

समी यसाठ प्रमात केरी, सार्वेशिन स्वक्षा, परी से शा मंदिर में हरमाता, पेरर वार के किस् धन संबद्ध त्या प्राथ समाओं को स्पारना व क्षास्मनीरिका, कास्ट्रि सम्पन्नी के पूर्व स्वर से निवास।

#### महपि दयानन्द संस्कृतः विश्व-विद्यालय टंकारा

#### (सौराष्ट्र)

वृधे स्थानातुसार विद्द-विद्या-ताव श्री आरत सत्त्रत्व परीद्यादिवांच २०-१-१४ वदा १-१-१५ को अस्पा-दित्त हुई। आरत वर्ष के आरा-दित हुई। आरत वर्ष के आरा-क्षाचित्रं के साम्यों ने आरा दिता। विद्याचित्रं की संग्या उत्तर्शेक्ष कार्याव्य एहाँ है। विद्य-विद्यासन्त की क्षावित्य परीद्या सिकन्यर १६६४ को होने जा रही है। अबनीय

श्रानग्द्रीमव सत्री. स. इ. सं० स्वारक ट्रस्ट, टंकारा

से पेदा होता है । विदिश्त हान

हुबा नहीं कि सारा नय माना नहीं

अब रम बात का विश्वपास हो? उत्त

है कि यह चलमा झजर है, क्षमा

इसी के बारे में देव में भाज 🕏 - प्रतेत दीचामाप्नीति वि मा से सन्दर दीका को शाप्त करता है। किली शभ कार्य के लिए व्यक्त दूरादा दश्ना वत है। यह अपवास

क्षी कर है. इस से शरीर की पाचन किया अथर अभी है। पर स्ट चारता को तन बड़ा अला है। बहुर स्था है कि - we have no PurPose in life इस धापने जीवन में कोई पन मेने ही नहीं हैं। िक्सो क्रमा को निष्ठा ही नहीं है। देशी हासन में हमारे बास पूर्व ही तो केमें हों। परके इरावे के फिला हो जीवन गरुव ही नहीं ही स्वतः । का सन्दर्भाः की पानी है Face से शरित में श्रीता सर्वे भी माथ निये जा सकते हैं। जिस श्रावित्रस सम्बाई की ततारा है. बहुतल्ब वो अङ्गमे मिलता है। सर्व तो सध्यम वर्जे की बात है। बहुतक भी जीवन ने तरुरी है। कार्य दे भाग बुरे का झान करने

es विक्रयाम के विका कोई भी व्यक्ति भागे वट नहीं सक्टाः श्रद्धवा सन्वभाष्यते-करा से प्रण्यात की, मनवान की ब्रारिन होती है । जब तक बढ़ा नही होती तब कर मानव प्रमु की वसारा में बिस्लग हो नहीं है बद्धा पहिले वैदा होतो है कार्य की सिक्कि बाद कें स्वय हो हो जानी है। बदाबान कारते बाजव -जिसके धानर अ**ता** है, वही व्यक्ति ज्ञान की, विद्या की सा सक्ता है । जो बहान

उसे विशा आगता है। दिलो पुश्च की दोगों के सोबने के रहिकाया से गई। वहता वाहिए। वेसे करने पर उम के शिये मुखी को इस शाजा न कर सकेंगे । उसे बढ़ा की रहि से पहें वो चीवनमें काम आने वासी क्वम बाते की मिल बाती हैं जिनके हारा क अप्रदान्त का काराम्य ही सकता है । 🕏 क्रिस पुलक को इस पडने लगे हैं. कदि उसके लिए इमारे मन मे पांद्रिये से दो पढ़ा नहीं है बरन क्स है। यह। इमीही विवाद से जा रहन है कि इसमें कांबर से कांबर दोयों का सन्य किया जाय, तो ऐसा कि स्वित कही से भी लाभ नहीं उठा स्टब्स कहा सभा ताल कर वर्ग है शहेगा। इसहे मेन 🎚 पात्र से 🛦 

ईश्वर विश्वास से निभयता प्रसाद

तर्क श्रोर श्रद्धा दा समन्वय (भी शिक्षिपल रसाराम भी एम ए प्रधान सभा)

<del>፟</del>፠ቑቔቜቑቔቑቔቑቔቜቜቜቑቑቑቑቔቔ दोशों के शरक त्रवहा मन मी इन काला है। मक्षा तथा सबसे इसे वेमा क्व बादशा (क्रिक्टी क गरा रुक्ते में बददा देते हैं। महा पर भी भीर उसकी दवति वन ही नही भिरकर नहीं नहीं मध होता है स्मीर अंदेनो । उपह स्थान हे परशेष उदा निरुपय है वहा भव का साम चयन का साम ही बमा जायगा तक भी नहीं होता । यह नव प्रजान

है. च अधने जिलेत या कटायित। देशक भी कोर यहने सकता है। ज्ञान करी वट प्रत्यता स्त्रीय न वा भाजवत बईसोग हैं कि इसने मरता है। यहसे बाग नशा सकती. यह प्रमुख पहली, उसकी वाले भी कृत्य हुटा करते या अग गता संस्ता मो मुत बी-∽िस्तु इमे ब्राम नही है। इस इस्तर से सीत का सब के बिया टीस्ट बरने 🗐 कसवटो है मिसा। देशी विकादत करने जारे क्लि बद्धा का स्थान क्रवा है। समाज हो जाता है। कर जीवन मोर्थ कि क्या इसमें बड़ा का यदि क्षेत्र जा कार्या के का चलना महा की भावना नहीं वी-नी जान पाहिए। यह से शावेश करे कि निजन केरे विसने न ने एका है इय तेरे भक्त हैं, पुत्र हैं, तू हसारा स्रोत न प्राप्त सरह है। परे बाद चिता माता है। फिर सब मैसा व र सनकान नहीं निज नकता । हैरिक यमें को यही विशेषना है कि समुश्राचि तथा आव-११वर्डिय हे किए **बदा या होना परम**ायन्य के है

इस ब्रधार का बनुष्य जिन जात

है। भद्राकी मावना इस दोप

दशंत की पूर्वत का पारा देशों है ।

गयों से कार की कीर केर ने

बाली है। सङ्घा के इत्या अनुस्य

यह इसे पत्सेश्वर के साथ विश पुत्र सा सम्बन्न धवावा है। पुत्र को वर्ति इस गदस्थी है से सवसी श्रदने जिला के शाम जाने से सब यन वर पाने वह सक्ते हैं। सबस केंग्रे ? शरन्तु यह दवी हो सवता है पुरेब यह गहल मर्गनाम है और अव कि हम बड़ा भरे दिल से सदस के विना यह नरक का भाग सही, उसे विशा करा किन्नेशी । बहादीन से हान दुरन्दर क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट के क्रिकेट के मेला सनाया जादेशा जिन् के ब्रतञ्जात निवारक महर्षि दयानन्दै

(नेस्रक प प्रकाश चन्द्र जी कविरन अवनेर)

महर्षि जो के पास एक आई रोटो केकर व्याव वटे ओह से स्वेश्नर ने उन के माजन से स्वयनाया देको रोटो रजो थाल वे अन्तरे कुद इक्टियानूको करने लगे देल धालेका को, धलस वे कारा फसी पित बोले । विक, विक' तम ने ये घारण अपन दिलाई को प्राक्षय हो के चरे। आहेरहे हो अस रोटी नाई थी अपि से कपर वड़े समक्ष कर आने लोल असी । देखी मे रोटो कई को है वा [रोटी गढ़ की देखी? मानव की केवल पवित्रना, करनुनो, खण्डां देखी ! सीची को क्या ! देख रहे उसके अध्यक्त माठी देखी ।

बपने को एत्र मान कर कासका को श्रवना विश समर्थे---

श्रार्थमममाज गोरे गांव बम्बई का स्थापमा दिक्स प्रतस्य के

रूप में 12 से 15 मार्च वह मनावा गया। जिसमे आर्थ प्राटेशिक सक पताब की फोर से बी ए. राजपा**स** शीय महत्रमंद्रज बीकी सदस्ती पनारारी। सङ्खे का कथाई से चन्ना प्रभाव पत्ता करता ४१-३१ से घारूर लाग बहाती रही । इस नमात को क्रोर भी ए. सहोशस जी बेदवनार अभिष्ठावा **स्ट्रहरू से** भागारी हैं । इस **भा**वसर पर प्रावेशिक सवा को बेट प्रचारा**ये** ३००) प्रवय दिए यह । जिल्ला ल्योग क्रमसे सकसे पर्व। सक्ष व्यय इसके व्यक्तिकत निया समा।

—रपुनाय बर्मास**र्था समा**ज मोहन शाश्रम श्रंग्दार में

> ऋषि-हेला मध्यित्री के शकों को क्षा

े जानकर बनी प्रसक्ता होतो कि महर्षि दशकद सरस्को औ महाराज की पासाइ-क्षत्रियों पश्चाक के नोचे सोहन आध्य हरिसार में पूर्वतन् इस वर्ष भी ता० = ६-१० च्योर १९ चार्येल सन्दर्भ को ऋषि

आर्यसमात्र के बढ़े-बड़ पान महत्या सन्याको क्रोर विद्वाब महाल्यानों के सदपरेश होंगे। कड़ी दिला से बच्चेंद के विशेष-विशेष बाल्यायों के मन्त्री द्वारा क्य विशेष का भी होगा। पर्ममें सी प्यार कर लाभ उठाए। जोट २---रोने में काने वाले महानुवादों की निवेदन हैं कि अपने काने की

सबसा पहले से ही देने 🗬 क्या करे । (म्बासी) सचिवादास-५ क्री

m/www. बाहर कामम, हरिदार तब नहीं हो सकते कि इस परम्परा

को क्षेत्रर स्थापिक द्वानस्य (बहर-

विकासय ही सन्दर्भ को पुत्र पुराने

वर्त मे पत्रने से बचा सकता है.

भारत की वर्तमान भारत्यकालों जा का साधन भी बनाया गया

#### त्राय जयत जीतन्त्रः वातस्य विञ्वविद्यालय की

स्थापना ार्यक्षत्रत के सिये एक चुनीनो

(क्या ह से भार) इयानम्य विश्वविद्यालय शी आपता का कार्यक्रिया वर्ते सह्त्व at है, वहा कडिन भी है किन्छ में पूछ विश्वास है कि साथ सब क्ष सहायशा म सहयोग से वह

**मबर**य पूर होता और इसी श्रिष्ठवय से हम तस लास की व्ह (इसी क्योस कर रहे हैं कानी क्ष्यासम्बद्ध हत्यान शिक्षयः सत्याचा की। उन में शिवा शप्त करने वाले

करी द्रपार लालः विद्याधियो तथा **इन्हें लम्मा**पड़ों के श्र्याओं में ही बहर रार्ट्स पूरी हो सकती है. इन संस्थाको से जिला रीया लेकर इसारों विद्यार्थी जीवन के सानेच क्रेजें में सफलवा और विविद्ध गांत है

**बर प्**टे हैं चीर इमें पूर्व काला है कि वे बदनी प्राप्ती मात् सरवाओं के प्रशिष इस भी। बच्चां विकास मे वाचित्र से बांचर सहावशा देने, **क्वों**कि यह कलायित द्वानन्द

किनविशासय स वेषस उनके पुराने स्त्रक्षी व काले ही की प्रपृष्टि का **बो**तक ही दीनक वस्कि देश के **दिया** चेत्र से क्षमसा दीर्थ व उप-

कोती सेवा का एक महान स्मार व श्री वनेता। इस वर्तेश देश की देशचा व सार्वजनिक क्षेत्र में कार्य करते वाले क्रमेक प्रमुख व्यक्ति इसीलिये

ত্বান্ধ্ৰ নিংহবিয়ান্ত **दी आगरमञ**्जा तथा श्राचीतित

< शी. आदि आर्यसमात क्षे **क्रियम** सस्थाओं की जो विशेष्ट व रही है, उनकी रखा वनके प्राप्त विद्वांवशास्त्रय द्वारा ही सम्मय है

इसी प्रकार जिल वर्देश्यो कीत आपरों को क्षेत्रर सदके लडकियो को इन इकारों सस्थाओं वी

स्वापना को गई यो, खाधीन

en vere à favolunce à स्तक्ष्य पाताबरण ही में सम्भव है. उदाहरवा के जिए सस्दर के अविद्य का प्रद्य हम ॥ सकते है । ऋष

के धनुका उनतो डासकर मीर

प्रविद्व प्रपशेगी बनाने का कार्य

हती हकार वर्ष तथा पश्चिम क स्थानन्त् से पूर्व सल्कृत किया और । <sub>सांस्माधित</sub> और आधीन दथा आयुनिस देश के रायुक्त समानव कार्य का वादिश्य की पात्रिक चन्पर्ववस्थान वैतिकः विश्वासन्तिकतः का गढ । कालकाक काई स्रो इसी प्रकार का सम्बद्ध बाता था बीर तिर्दो क्या . (वश्चांद्रशासन नहीं क्रांपिक सम्बद्ध

धाउत समक्ते जाने वालो क सिने ! से कर सकता है। en प्रकार क्याचन्द्र विश्व-शस्त्र पद्ना से दृर प्रुक्त रह पार व अवराप यह । कार्यसमाज की विकासन की यह मोजना शिक्षा

ईा॰ **र॰ शे॰ मुस्कुस तथा कम्बा** : <u>स्</u>थार कौर विकास की टॉट से विशासमासे मा केवल सत्कत का महत्व की होने के लियान हमारे ब्रान मनार समर्के हिये सील रिया राष्ट्र और समाव के लिये भी सक

सवा वर्तन्त्र नसको बानेक काश्तिकारोः उपयोगां सेवा होयो, । इयस्सि इस सामाधिक व प्रामित सुधार कींट ६.वे में इसे सबकी तहालता व राज्यीय अपनि स्था पेडिक लटर । शहरोग मिलेगा, चारत है ।

'ग्रार्थ जगत' तियमावली

१. साप्ताहिक काम सम्ब का बांचक फन्दा र स्पर्म है। बितने सारत के लिय शोर्ड याहरू याला है अने समय का बन्दा पर में कारम्बर में भी गाया किया जाता है। जिल्ल सरकनो का वार्तिक चन्दा जिल माम में समाप्त होता है

क्स मास के फारश्स में उन शो पत्रों इस स्थित किया जार है। यदि अन् 🎟 करा उस मान में पाल नहीं होला है तो नभी मास के करण से पत्रों डारा शे. धे. मैजे करने की सुधना सी र्श जाती है । कि कामामा साम III पहला चढ वह की वी

री, शे. करावा अला है। तब 💷 की यी थी. सा वेड़ाना उन सा भागिक वर्तस्या हो जाता है।

कृषि बोच उत्सव पर क्येर कृषि जिसीय दिशस पर उपनकोटि के विशेष कर मी प्रकारित किंदे जाते हैं। v. जी सहत्रम माईक बनाने **वे** विशेष उत्साद दिसाते हैं। मार्थ

ज्ञात राज्यी रोपा मुक्त करण है । देखक, बांच, शहरू शहरू विहास्त्रशाल, मेनेवर, वार्व काल, इतराज थरन, जालभर राहर से ही 🏢 वस्तर का का

अवदार करने की हवा वरें। पत्र व्यक्षर करते समय शहर सस्या क्रवरण क्रिये । ब्याज का के पता में विश्वय होगा।

मनी कांदर गती शदेशिक समा के नाम ही काना कांदर विश्वी स्वक्ति विशेष के नाम पर नहीं।

व्यवस्थारिक

'कार्य करात्' शासन्वर

ऋषि दयानन्द

क्या थे १ (ते » — गप्तेश्वर कमार आर्थे देवा, इनरतसार्थ, पटना विहार) (बताह से आसे) श्रुवि दयासु थे- अनुप

राहर में एक स्वर्णन से स्टाइसे औ को पान से थिप दे दिया था प्रति कारे ही सबस गर से कि बय के विवर्ड करूर संन्त्रोली किया तारक इस को समाध्य किया वन इस घटनाकाफ्याबद्वाके तहसीसदार चो क्या । जिस व्यक्ति संभागी जी को कम किसाबा का उमें कह-क्षेत्रहार एक्ट कर आता स्त्रीर लेल के दाल (त्या । उस दे कार्ये स्वामी जी को मालूम हुई तो इस तक्रमीकदार से स्थानों भी ने पश्चा-मैन सना है कि मेरे विष धान कारमें एक मनुष्य को धारबद्ध विया है करन्त्र में समुख्य की चेथ-काने नहीं काया ॥ बास्क हृत्याने काया हू वदि दुष्ट अपन्धे दुष्टवा को नहीं छोड़ता तो इस बनी सब-

ऋषितोक निर्मातः ये-रास्प्रदादर लाला सलगव भी ने बहर- प्रापंत की प्रारंगसमाज के तीक्षरे नियम म देश सब सत्क विकासी का प्रत्य रक्षा है सर्व इस में से सज रस्ट स्थित हो 'वैद सब विद्याद्यों हा पुस्तक हैं ऐसा रखें तो

अध्दक्त का परित्यात करें । ऋषि

के बढ़ते पर उसे बहुसीसदारने खेक

feet i

केहें दिय पाइट वहीं है महिंद द्यानस्य लोकसन् कंपीलं चतने वाझ नहीं ये तिना सोक । नर्भाता ਕੇ ਸਮੱਜਿ ਕਰਾ ਕਿ ਜੇਸ਼ ਵਜੀ ਸਦੀ हो सकता' हम लोड के पीछे, पखने बाते नहीं है बहित सीह की बनाने वास है। इस प्रकार हम कृषि के सिन्त र पहलाओं में अब्दे

ये जैसे टबला के पुजारी में सस्व श्वारकथे, ईवधर विस्वामी वे । वरि सभी का देवल सकेत ही किया आए तो एक वहुत यहा पुरतक बन बार। यह इमे भी क्षंत्र के गुर्धों को क्षपनाना नाक्षित्र । बार्यजनत बासन्बर ७ चे १९८४

#### प्रादेशिक सभा का वेदप्रचार कार्य

#### 

सार्वे समाज नया गोवएं का करता २० से २२ सार्व के समामेश से समाब हुना: थे ५० किलेक चन्द्र की, सी ह्वारीसास की, सी मैकाराम थी पत्तरे।

आयंत्रमान माना रा काम के ती दूर गाँच में कामोद से मान्स देश हो र दूर मार्च में ती कर कियोर पान की काम मेंद्री की परिकारण की के अपन होंगे। ताल या से डा-दुर्जीवह की, भी को बेरोरण की वार्म प्र. प्. भी के स्थापन का सह ए. एस एस. प्राप्त काम रहा मांचे के पार रहे हैं। बाबात की सीर में प्रेष्ट कामोद की की की मारिये।

आर्य तमाय शक्तुर (अध्य) वा जहोत्सव २० से २६ मार्य को प्रथम में करूत हो रहा है। २३ मार्च से यह च्या ६६ क स्टोलश्रात की डारा। मनवा से काल्याम औ, वी क्षतीराम औ। उत्तव की १८२थाम औ, भी महत्योहन जी मंदली, सुरीराम कर्मो, क्या मीर हरिल्यु भी शासी कम्मू मान है रोई है।

ही ए दी हाई स्कृत हरगाला का जावन रक के उत्ताम के के मुस्ताम के कमान हैं रहा है। जि हराजी का में पनार है है। वर्ष बनामाम पर किटो नेपूर का जावन दे हे 2 कार्ज के कमानेह से अन्य हो रहा है। इस मार्च में बब्ध मा बच्च की और की मुजीबंद का प्यार रहे हैं। कब्द पर चाद की और के में दक किलाक्ष्म की भी राज्याम की मी पहलाएन की, भी सेकटार की, की कार्यास की मी कर के दे हैं।

#### 'संसार को प्रेम सिखा देगें'

(रचयिता की विकोशी करून 'श्रेम' रंगका विता सिरमीर)(H.P.) इस बार्च शेर बहाते हैं. इन वर के बीर दिला देने । महि पर्वत काल कार्यसे, तोश्वर से बसे इटादेने । को निराकार और निविधार है. समोजादक सर्वातार है। उस पार मध्य परमेक्षर की पुत्रा, सब को सिक्सला देते । वेदों का झान है सब के जिए, यह वेद है ईरवर को दासी । मानव के लिए सजहान बड़ी, क्सार को वह समझा हैने । बनार करेंगे' नेदों का, हम दयानगढ़ के सेनाजी। इस सत्य, कार्ड्सा, सेवा का दुनिया को बाढ़ पड़ा देशे । वै वदिक वर्ष हमारा है, यह शास्त्रों से सी प्यता है। इस पर्य की रहा दरने थी, हम द्धारना सन दहा रेवे' ह पुनसोरी, पोर बाबारी का बाँह कड़ फरेब, सबसारी का । इय अपने धारे समत से इन सब को इन मना देते । इस देश अ अवस्थल कान्द्र भी, जो देश होशी चरते हैं। कत देश होती दुष्टा केंद्र नाम और किशान निटा देशे । विभवत्त्रों और अन्तर्वों की त्वाक्तंत्व हुआता है। इनकी रणा करने के हिए इस वर-मन यन स्वाह हैगे

#### दय)नन्द-वचनामत

'शी कहण वार्ष के हैं है, वांकाता से प्रयोग में वांकाव सेते, का राज्यों के तेता का इसार, अन्यांति पंतेषण, जोएक प्राचन के तांकाव सेता है, का राज्यों के तो है। का कि के तांकाव के

(स्वाभी सत्यागर वी)

बार्वेटसीय बस्ति। दार भर्वे का क्षम १० से पर मेर के को कम्पन हो दहा है। ६ कर्द के क्या की पर क्रिकेट चार की हारा सबस की दुर्योक्त की। क्षम पर की ८० कर किया की, की राज्यान वी सदस्वाहन की की कक्षमी एकर रही है।

आर्य समाज ओकेश्वनघर ना उत्सव ११ से १३ कार्यत को पुरुषान के कार्यान हो रहा है। १ वाक्से बड़, बना पर की ना अक्सा की बी कार्य सम की कार्यकार की प्रमार रहे हैं।

आर्थ समाय प्रेम नगर करनाल का शक्ष्य २४ से २६ वर्ष स भो मुनवान से कप्पन हो रहा है। २० प्रस्ति से क्या 1

सार्थ कमाथ सार्थ स रोट बम्टन्स है १५ से २२ माथ तक पून्य महामा कारण समादी भी भी क्या होती रही। भी दुर्फीगढ़ में के प्रमुख कीर माथ कमाब कोम रोट कार्यकार से = से ५२ कर्यक्र एक सर्वोगाय ग्रामी नथा पड़ेंगे।

जार्य व्यापाम शासा सोनीपत दा शस्त्र १४ से २६ चश्री ह हो सम्प्रोह से सम्बन्ध हो रहा है।

वार्यसमात्र पुरोनी मटी अस्मूदा असके १० से २० सन्ध को सम्बद्धा हो रहा है।

को पर विशेषक है। भी पर विशेषक है से सालों तथा भी दुर्गीतह की, भी अगतराब की. भी कारीराक भी सबकों प्रपाद रही है।

वार्य समाज पतवत का करूब द से १० मई को सम्पन्न हो। रहा है।

जार्य समात्र व्यक्तिक कालोगो करनास साशस्त्र २० सं ३० सर्वे को सम्बद्ध हो रहा है।

नोट-सबी सवाडों से विवेदन हैं कि अन्त २० चर्म है 🎟 उत्सड़ निवड़ हो चुके हैं। इपया आगे सी विविधा निवन करतन की हमा धरे।

#### श्रार्य समाजों से निवेदन

समी संबंधित कार्य समाजे से निवेदन हैं कि १३ करील (६६४) को कार्य समाज आएन: दिश्य का कार्याजन वडी धुमधाम करें।

—सुशोराम शर्मा, देशस्थार कविष्याना

प्राणांचा करेगांस

shookful to him." वें चलं नवाप की साका (Ashek Kumer, Arys १ वर्षका ६३ को वर्ष मी जिलाके Samel, Rv. Rd. Silver साआहिक कर्त्वन नियमञ्जलार

क्षाकर पर फारडे का शाहर

देश की पुकार

रोक्षते के क्षिप्त परित्र जिल्लाम

रकीर किरोक, भाग्यारिस्थार,

गवि संगठन, शांवित्री वक्ष तथा

विदेश संस्थानें के प्रचार के किय

हेतरास पुरोद्दिक बावसमात सीव

राम बाजार देहको से १५ स्थापन

टेहजी

में वार्षिय सामा के भवात पर

—सरेश्क्षकार संत्री श्वसाव

श्चार्यसमाज हिसार

NOTICE

'Any body, who knows

the address of the Church

र्वातान समय में अक्टाकार की

रक्षकोर सिंह मन्त्री समाव

Tourse t

देहती में सहित्त्री यह शत रश्चित को सार्व के समय होते रहे । प॰ विश्वकार राज को के थी देवराज की एए-वजाब आर्वसमान सेवाराय राजस वेहसी Screena सक्य र पर होते रहे : su sana si ariés viar le व साक्षा सावा देवी को सरका ता २६.२०सरको होना निश्चित हमा है समाज के पर्त पर भो थे. वेशराम सबी पर्व शेरियों की इस ग्राप हो परोशित ने साबिती यह सम्बन्ध

> कराधा । यहना सर सीसम्बद्ध कार्यक्रमात्र में भी पवित्र को सा सार गर्नित स्थास्थान हवा । —संगनाय रच प्रधान शासा रन्थोली (करनास) में

> > शभ विवाह

भी सम्मान को कानो प्राची सवाज रन्दीसों की संपन्नी सक्की का राम विवाह ७,८ साव रे १६३४ को कर देशक शीत से करकत हका । इस व्यवस्य कर भी र्यः जिलेंद्र चन ही जाती. साली भागानन वी. शतकात मरन-मोहन मी भी बद्दती के समय व

क्षकिय का प्रयास कर्य सकता किन २ संस्थामी को दाज विका . संगठराय साथं सेश्च आर्थ सबक प्रतिषद

> देहजी का भनाव क्षान-भी देखका ही, बर्ज

से होते रहे । की सकेतरण औ पन्ध थी, एकाराय-राज्येत औ सामाध्ये के ब्रह्मण्ड जीवन से मंत्रो-संबोगश्चात श्री।

कार्यमधात सब्दे शकों से अपन नोट-सीकामों का शकर हो बर २०००(-ही स्थिर राणि का आये स्थाप मोहब कसी बेहसी-प्र में नहरांक III तका है।

—हरिक्य ग्रंती

पत्र व्यवहार करते सम्ब चानी आहरू संख्या

प्रवश्य (विस्ता क्रे

बाय संधानक रोग से संस्थि व ब्द्र संस्था पश्चाओं को वेदास में हुनेन स्वास्थ्य के कारण आर्थ विसाधर शांव करने के छिए कार्य प्रादेशि इ प्रविकिति सका का सन्दर्भ चेत्र में द्वनः पदार पश्र हैं। त्वासा ux सम्भावते वै सन्दर्भका प्रस्ट तुर्वत होते पर भी बार रूप रूप

को है बान्तु कार्य नेता ध्रवमी दर शास-बाम सूच कर देखकचार चे से बावह कर रहे हैं कि वह महर्षि क्रिए थिया करें, इस इस बात के द्वातन्त् के बद्दान कर्य को प्राति प्रवाद बही इस्ते । सर्वा और देने दे जिए वह पर श्रीकार का सबाब के बिय आप का जीवन of the speed of the file of समुख है। यहाँ भरी मी प्रश कर्ना हा क्यांकात्रको ने खामीओ विशासकान रहक्त स्थापन सुरार

=3-3-E½ के लगा के का**पार**ण क्राधिकान में साथ तबेन्स्थीत से क्रमान कुरंड प्रमान निर्मापित स्थि गर वे । काप स्वास्थ्य हुर्बंश होने के बारक समझवंता प्रकट कर रहे ै। यह डोड है कि इस्ते अवालक रोत से मुक्त होना बावके वर की कारियद इस का ही प्रभाव है । कार्यकात का प्रदासाय है कि

qž i ्रद्रशेषराज ग्रन्थी सह चार्यसमाज प्रल वंगर

कर्णातकात्र होत जिलाहरसह भी बहारता कार्यत विश्वती वे पार à sur e maritem en en une दिन का चहुर यह कराया । ऋति-३ मार्च से a कार्च १६६४ वह नदी सबर में हवारी से प्रविद्य की थ्य पात्र से सन्दर्भ डक्का। साच पत्रमें में शोक्षत करा। स्कें हर हैं पास को करता बड़ी बड़ा से हजातें श्रुविकोच हरता व क्षानंत्र श्रास्त्रास रियम, कोर्सी प्रारंत के बनवास

को सरका में वह फेला होती सदी जी साली गोजा कर बो वर्ड जबर्रीता जी ब्रध्नण प्रमाक करणास वेद प्रचार मन्द्रत के बरनास देव तकार मन्द्रव के भाकत होते रहे । भी मेला राम मी, कु तनसम्ब से, सम्बन्ध जी, सन्वराज mies ? वी तका करते शाम औ क्राव्हि के मदर अजनों का बनता पर कथ्या

वयम् तथः यो, कश्मोरो साम श्री. प्रधान सहा । यह का बेथ कोट निवर्शकार्थे पर है। यह यह भी रायनिर्धावन शी. भो राज्य सक्ता प्रस्तात स्व इक्षांका में हुया सी, में म**बोदर** काल जी क्या है हमारी प्रकार इच्छा है कि शक्तिओं **८**व्य कातरा थी समक्ष **ग**्राच इसा रक्षर केरी वर पाराकता अब शोता रहे ।

or may relation to it, हुद्रक व प्रकाशक भी सीअपराज भी कन्नो काव प्रदेशिक प्रतिनिधि सम्भ वंकाव कावश्वर हाश कीर विकास है स. विकास रोड बाक्नपर से प्रतिव सक माध्यानत कार्यातम सक्तरता हंतराज महत निकट क्याहरी जातरूक सद्धार से अकारिक साहित-कार्य सहितिक प्रधिक्षित सदा वजान वासन्थर

को साथ देने की कथा करें। ह<sup>3</sup>

पर्व भ्रत्या है 📗 इकती मार्चन mare स्वीकार द्वीगी ।'

श्रार्य समाज करूढ़ माजरा आर्य समाब कोट से यजुनेद बहा पारावश यज्ञ की धम

को एक विश्वत पत्र लिखा है जिसमें बार्थ रहें. हावें सुकार कर से पक्षतः हो रहेवा । यहसे भी आन क्यान काछ से अवस्य करते रहे चीर बात-साथ समा दा संशास्त्र धी कावे रहे । क्यशा चाप समा के ब्रधान पर को स्वीकार कर अंश्रीशीयते के सम्बन्धित निर्योग

क्या नवा है-

में प्रथर्व वेद पारायस यह आव सवाह कक्ट सावश में **ब्रावर** केंद्र पारास**वा** यहा ३ फरवरी

से १० दावरी १६६४ तक समारोह है बाय सस्यान इस्ता। यह मैं से हड़ों स्त्रो पुद्दव प्रात साथं प्रश्वित होते के के शंक्षा को के सर्व की प र्श क्रमार जिंद तो सम्बद्ध प्रश्वाचा

क्षाच्य होते रहे कः जगत*राम* जी व भी मेक्स शाम भी के नजब होते रहें। यह का येव वैजनाय की,

देवियों को है।

**ऋार्य प्रादेशिक प्र**तिनिधि समा वंजाब

# म हा त्मा

त्र्या र्थ ज ग त का

夢やつかやいるをないとうでんしつとないなからなるからないというかやい

हं स रा ज ग्र ङ्क

### 

यदि आप विवाह के बाद अब तक निःशन्तात हैं हो इस रोग के सफत चिकत्सक भी पं० स्थायमुन्दर जी स्तातक (महोपदेशक पशाब प्रतिनिधि सभा) से मिले या पत्र व्यवहार करें। श्री स्तातक जो भारत वं अनेक परिनारों को सफलता पूर्वक विकित्सा कर चके हैं।

पूर्णकोर्स ३ मास--पूर्णब्यय २०० हपए।

पता—पं० श्याम मुन्दर स्नातक महोपदेशक पंजाब सभा

३०३ रानी बाग शकुर बस्ती देहलो विकास

# दयानन्द हिज लाइफ एएड वर्क

Daya Nand his life and work

ले० श्रीसूर्यभानुजी एम० ए० बायस चा ।लरकुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी

पृष्ठ संस्था...... कीमत वहिया सजिल्द की 150 X. P

सेलक महोदय ने बड़ी छान बीन व बुक्तिपृषंक इस प्रत्य की अप्रोजी भाषा में रचना की है। सड़िष्व देवानन्द भी के जीवन की साझानु मोन स्वापित कर ही है।

हा सहाथ देवानन्द जा के जीवन का साहान् मूल स्थापक कर दा ह इस अवसर पर मन चिकाए

अत्येक देश भें भी को इस प्रत्य का अभ्ययन करके धार्यसमाज के सस्यापक सर्वप्रथम मान्य नेता श्री स्थामी द्यानग्द जी महाराज के जीवन व उनके कार्यों से परिश्वत होने के लिए इस का पटन अवस्य कीलिए।

स्कूजों विशेषकर वालिज के नव युवकों के लिए तथा सकसीम इनामान के लिए ऋति उपयोगी है पुस्तकालयों की शोमा है। गृहस्थियों के लिए सम्मान जनक है।

50/- के व्य हर पर 12% कमीशन प्राप्त वर ।

इस सुनहरे अवसर से लाभ उठाएं। डाक खर्च पृथक

प्राप्तिस्थान—महात्मा हंपराज वैदिक साहित्य विभाग प्रादेशिक सभा निकट कोर्ट जानस्वर श्र कोश्म ।।

# त्र्यार्य जगत्

কা

# —महात्मा इंसराज श्रंक—

१६ अप्रैल १६६४ तदनुसार ७ वैशाख २०२१

वर्ष २४] १२, १९ अप्रैल १९६४, २ वैशाख, ९ वैशाख २०२१ [

[अंक १५-१६

# वेदामृत का पान

त्रभीवर्तेन मिणना येनेन्द्रो त्रभिवावृधे । तेनास्मान् ब्रह्मणुस्तेरुभिराष्ट्राय वर्षय ॥ वर्षवं १-२९-१

माथ :— मधर्षेदद के राष्ट्रिय सुरू में राज्य के रज्या का बड़ा है। उदम उपदेश सिलंता है। इस में विचा के स्वामी ममु से पार्थना की नई है कि राष्ट्र के वास्त्रियों को राज्य रज्ञा तथा समुजति के लिए वह महार ते पहारी नार्थी है। इस में विचा के राज्य रज्ञा तथा ममुजति का श्राहर साहित मार्थन है। उद्योग सहार मार्थन है। को मी अपनी राज्य विचा के श्राहर को मार्थन है। को मी अपनी राज्य विचा के प्रवास हारा देश में सब प्रकार की मणीत का ज्यान रज्जते हुए साहित साहित की प्रवास है। को मी अपनी राज्य की साहित है। मूर्य साहित है। मूर्य राज्य का श्रीक में आपना राज्य का स्वीक से अपनी का प्रवास साहित है। मूर्य राज्य का श्रीक भी विचा के साथ साहित है। मूर्य राज्य का श्रीक भी विचा के साथ साहित है। स्वीक साहित साहित साहित है। स्वीक साहित साहित साहित साहित है। स्वीक साहित सा

राष्ट्र का संवालक राजा वा राष्ट्रपति इन्द्र बन कर क्रमीवर्शनीय के डारा—राष्ट्र पक को क्वाने वाले निकम, अपन्य, विवानस्वड के डारा राष्ट्र की जलित में सदा क्षान्यान एवं सत्वके रहे। बहुं भी केंहें कमी देलें, देश होई का बता खों । है देशवाली का परिचय मिले, राक्ष्य में किसी प्रकार की मी शहद करने वी वात होने । राजा का कर्तव्य है कि पेटे म्यांक, दलवा संख्या को राष्ट्र निकस की रिकार की करवाला के कहातर उनको कहा दक्त देश में शांति स्थापित कर देवे। राक्ष्य पक में बहुं मी रिपियला का मेंगी, वहीं पर स्थाय सच्च जाएगा। इंश्वीवर राजा को सदरा सावयाल स्थान होना स्थापित कर की स्थापित कर को कहाँ मी रिपियला का मेंगी, वहीं पर स्थाय सच्च जाएगा। इंश्वीवर राजा को सदरा सावयाल स्थाप होना—स्थंत

सम्पादकीय---

# समाज के लिए

#### \*\*\*\*\*\*\*

स्याग झौर तपस्या के देवतर स्वर्गीय सहात्मा इसराज की का परविश्वस प्रति वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी भागा है। महापुरुषों के जीवन दिवस स्वयं एक प्रेरधा के स्रोत होते हैं। सारे समाज क्या राश्च के लिए प्रकाश स्तम्य होते 🕏 । इन से सवाडी सब को प्रकाश मिलता है। जीवन का पथ शप्त दिखाई देता है। निर्वत धर्मानदों में रक्त हा संचार होने लगता है। इसीखिए समाज अपने महापुरुषों के दिवस को विशेष पव मान कर समा-रोह से मनावा है। महात्मा हंसराज जी का बह हिन भी अपने रूप में बड़े अहरव का है। यदि बह **बहा** आये कि एवस सहातमा जी झपने रूप में स्वयं चलती !फरती एक संस्था थे, विशास खांदोजन थे, पक आर्थसमाज थे । उस समय के एक प्रदीप्त सर्वे थे. जिल से झाचार-विचार, निच्ठा, भक्ति, गम्भी-रवा, श्रोम्नवा, भारया सोक्सेश की अनेकों चम-कसी द्वार्थ किरणें निकली। जिनके द्वारा पता नहीं कितने जीवन बगसगा पठे। सहास्मा जी का बीवन पारस था जिस के स्परों से कई लोड अधिन सोने में बदल गये । वह तपस्या की मनोरम मूर्ति, स्वाग की सजीव प्रतिमा, गम्भीरता के प्रसीत प्रताने समानिष्ठा लोड पुरुष थे। जो पथ आपने सिय वयावस्था में चुन लिया, सारी आयु उसी पर चसते रहे । बढ़े २ प्रक्षोभन, बढ़े बढ़े चमकीले हरूव भी क्तको जेशबात सी निवस्तित म कर सके। श्राध के

साथ बदलना तथा वातावरण के प्रवाह के साथ बहुना उनके जीवन में कभी था ही नहीं। वह एक विशेष मिशन जेन्द्र साथे हे । गरीबी उन्होंने स्वर्ग चनी थी : बारमग्रीरन, देशभक्ति, संस्कृति पूजा, दंबी विशा में भी तसना उनके जीवन में स्टमाव से भरी थी। वे सचम्च महात्मा थे. सन्वासी थे. क्राच्यक प्रसंत्रवाली स्वासी हो। अनका क्राप्ते लिए इब्ह याही नहीं, दरन जो इब्ह भी उनके पास था सब समाज के जिए ही था। धन तो उनके पास था नहीं क्रौर न ही महारमा ही धन कमाने ही ह्यादे है। इहि चाहते तो सदशी सनके चरणों में कार जाती कर के इस मार्ग पर चले ही नहीं तन-जन तथा जीवन सब समाज के द्वापेश कर दिया। समाज उनका या ध्वीर वे समाज के हो गये। देसे देवता विरक्ते होते हैं। मध्रत में तथा बाहर भी जितना डी॰ ए॰ वी॰ भाग्दोलन का जो विशास रूप है. बार्व शहेशिक सभा 👣 जितना विस्तार है। इसकी समाजों का विवना सुन्वर परिवार फैला हका है. सब के निर्मात स्वर्धीय महाश्मा इसराज अर्थ ही थे। ब्राज जितने भी शिका और पर्म के चेत्र में हमारे बड़े २ मुर्धन्य नेता सहानधाव दिखलाई देते हैं। ये सारे उसी देवता के जीवन प्रभाव की पवित्र देन हैं। इसें इस पर सान है। काज महात्मा इंसराज विश्वस पर इस खन्दर-

# श्राज संकल्प करें

+++++++++++

सात्र का दिवस पर पित्र पर्वे हैं। वस महा-पुष्प का पर्वे सना रहे हैं, जिस के जीवन का अलेक कार्य करवान, साराणी की पराकाश पर्क पहुंचा दुस्ता जा। वनावर किसी कार्य में प्रावे साने ही। देशानुषा, जानवार्य, वासनिवास कथा सम्बन्धीयन के सारे कार्यों से वाहगी का वील-साता था। सरस्ता की सावान सम्बग्निय

बाज का जीवन जटिख ही नहीं जटिक्टम बनता बा रहा है। हर काम में, जीवन की हर बात में जटिकता घर कर रही है। मानव बनावटी बनता जा रहा है, बालियका नाना पदी में जिपनी जाती है। बारों कोर समस्यानों के पबैठ तनहे हो। मने हैं। बीयकन्यय अपनक हो चुका है। इन में स्य स से व वंशे जटिकता बाज के विवाद से हैं। इस समय का विवाह परिचारों को हो बैठा है। परिवार के परिवार समस्य ही अन्दर विभाग से क्रोंब्रासे की रहे हैं। यम य. ही. टी. जसकार

तिस्तीय वर्ष की ब्रायु की बरों में बेटी हैं। कारवा कारका का का का का का का का का का मोंक दर देखें कि क्या हम भी समाध के विश्व कारने के अर्थेया करते हैं या नहीं? हमारे वन, मन, भन का कितना माग समाय सेवा कारता है। विश्व समाम सेवा के विश्व हम भी कुळ मेंट करते हैं तब वो ठीक सम्मया साम तिवा करके बसाय हैया में कुछ कार्य तथी यह विन सर्वामा वर्षमा है वस्ती।

कि विवाह की अधिकता भीषण बन गई है। होताला की बेटी शोधा या प्रारुशा प्राथवा इन बैसे हो चार परिवार ही सौभारवशासी होंगे या ऐसा कहना चाहिए कि चीरा के मी मुनिसास जी भी सदीश इतार जी जैसे नक्यूक उंचे दिचारी वाले विरत्ने ही होंगे. जो सब कुछ सम्पन्नता होते हर भी विवाह को सचमच ही प्रेसा साटा बना कर हिला शकते हैं जहाँ बाज के सारे बाहरवर समाप्त दरके दिखला सकें। हमारे मन पर इसका मारी प्रमाव है। है किन ऐसे परिवार का बीद युवक वहत बिरते ही हैं। कहा तो जा सक्ता है पर अब व्याचरया का समय बाता है तो विचार दशा वदत जाती है। विवाह की जटिलता बाज सारे समाज को लोखका करती जा रही है। उक्र सारे हैं पर द्याने कोई नहीं भाता। समाज के सार्वे डंग्रें में शांग पड़ चुकी है।

बाज सहसमा है-साब दिश्य है। उनका बीवन हर बोर सरक था। बाज हुए थाइते हैं कि उनके प्रिण्न देश दिना हु की इस मारी बिटका की है न पर्यों के तीवने के लिए बीवन हैं को संकर्प करें। हम पेते नव्यवस्व वाहते हैं को संकर्प करें हि इस दिनाह की बिटका सम्बाध का इक करने के लिए साहरी की प्रतिक्षा करते हैं। साम दो हम ते की ही साहरी की प्रतिक्षा करते हैं। साम दो हरने के ही होगा। साम बनातर प्रदेश काम दो हरने से होगा। साम बनातर प्रदेश वाहते ही साम दो हरने सहसे हैं। साम दो हरने सहसे ही होगा। साम बनातर प्रदेश वाहती पर फिर टूकरे यहती । इस काम को पर फिर टूकरे यहती ।

# नैया का पतवार थामने वाला

(श्री पुज्य महारमा आनम्द स्वामी जी सरस्वतं )

एक देवट सिला था बगमगाती नेया की, नैया के सवारों ने उसे नहीं में घर ल दिया। तब कुं मला के एम्बोंने देखा. नहीं में लागर की लड़रें नैया को सा जाने के लिये वद रही हैं। आतंत्र फैल गया। चन्रराष्ट्रद प्रकलाने लगी । निराशा उधरने लगी । चिन्दित जाति सोचने लगी, 'कव क्या होगा!' तब तथासन्द की जीत से प्रकाश पा एक युवक ने EM निराशा को चीर नैया की परवार शासने का निक्रमध किया। www निक्रमय की पूर्वि में उसे अपना श्रीवन बसिदान कर देना पड़ा ।

महात्मा इंसराज चाहते वो अन्य सांसारिक स्रोगों की तरह उक्त-से उथ्य पर प्रध्य कर सास्रों की सम्पत्ति बटा लेते । लेकिन बासि की दुरावस्था में उन्हें बलिदान के इस मार्गपर बढने के लिए क्यांज के दिन प्रारम्भ करें। तब्युवक सैदान में निक्तें. बन्धनों की तोडें, परिवारी तथा सारे समाक्ष का करवाया होगा। बार्व जगन् के प्रष्ट ऐसे लोगों के लिए खुते हैं। ऐसे नवपुत्रक इस से वेशक पत्र व्यवहार करें । आज उच्चतपश्ची, सर्वमेधी महास्त्रा के पुरावदिवस पर इस सहान का वे को ध्यारम्भ करने का संबल्प करें। देखें कितने युवक निकलते हैं-जिलोकदन्त्र

प्रेरित किया। उन्होंने बहता हथा एक तुफान देशी और रुक न सके। कुद पहे। सारी आयु निधेनता, तपस्या धीर स्वाग में विताते हुए संशार के कल्याया के लिये थम, देश झीर अति की सेवा का प्रण जिया। होश सम्भालने से लेकर अपने कीयन के क्रान्तिम च ॥ तक तन्हों ने हर इवास के साथ देश से ब्रहानना भी दूर का प्रवस्त किया । हिन्दू-समाज को सचारने और दखी. मध्य, अकाल, दर्भिन्न, महामारी पीड़िलों का सेवा-सहायता करने के सिये वह सहाब्दक रहे। जीवन के ७४ वर्षों में से ४८ वर्षे उन्होंने परोपकार में ही विताये। दशानन्त कालिज को सफल बनाने के लिये उन्होंने १८८५ में क्रापना जीवन कर्पया किया और यक कौडी लिये चिना शीत-र्ज्ञस्म बीमारी, दत्य, गरोबी, कह, विरोध की तनिक भी ऋषेदा किये विना उन्होंने मृत्यु-५र्थ-त अपना प्रया निभाया । उन्ही निस्कार्थ सेवाझों और निष्काम प्रयत्नों से उन्हें हर चेत्र में पर्छ सफलता मिली। उन हे बिरुद्ध कई पहुबन्त्र रचे गये, वीसियों तेस लिखे गये, कुठे दोव आरोपित किये गये, परन्तु वह अपने निश्चय पर स्थिर रहे । 💵 शीच . वन्हें नई प्रलोधन दिये गये, देश के नेत्रस्य का स्वर्धे डाल फैलाया गया। प्रवक्त राजनतिः कांदोलन के समय उन्हें कहा गया कि वहि आप

इस में शामिल हो ज.बंगे वी सादे देश के नेवा वन जायेगे। तव महास्माजी ने देवस इतना ही **द**हा, भी तीव में पड़ने बाला परवर हूं, रचनास्थक कांब में समा है और इसी में समा रह गा है

ं बरका मारा जीवन तप क्रीर स्वता का जीवन है। धन दौतत, सक्त-सम्पदा, भोग-पेरवर्ष मन स्याग दिया। गरीकी को निमन्ना दिया। माई हारा प्राप्त केवल चालीस इपये सासिक पर गुजारा

करते रहे। स्व-प्राप्त गरीबी में दुख के दिन काटना सब से कठीर तपस्या है। यस के पूछने पर कि 'तप क्या है ?' यु'घष्टर ने कहा था, 'तपः स्वधर्मवर्तिस्तं।' % पने कत्तव्य को करते रहना ही वप है। दुल-सुन, शेर-क्रशेय, काल-अपकान, प्रसन्तता-क्रश्सन्तता की इत्येचा किये बिना जो वर्तक्य आपने क्षेत्रे ले किटा, उसे निमाते जाना सक्या तप है। महास्मा जी ने एक भाषण में वहा था, 'सन्दर जीवन का एक ध्येय होता चाहिये, एक वेन्द्र, जहाँ पह चकर षष्ट अपना जीवन कुर्वान कर सके, अपने एन दौलत क्ष्मेर साल-अच्चों को सुविधा 'से जोड़ सके। एक जाम अपने हाथ में सेटर वेद-प्रचार का स्तेत्र बहुत स्थान होना चाहिये, जहां पहुंच कर गर्व के साथ कह सके कि चाहे प्राप्त पत्ने कार्ये, चाहे सब भ्रोर नःश-बिनःश नाचने हुगे के भी वह कौटेगा नहीं, पीछे हटेगा नहीं। ऐसे स्थान पर ही

के मुल से शोमा देते हैं, जिन्होंने जीवन का एक ध्येय सानदर उसर भर तपना मञ्जर ।दया । स्थाय की काकात हुत, स्ट्रेट, ८८ सादनी का

सनुष्य का बास्तविक चरित्र और उसका असल

भोज मालुम होता है। यह राज्य महात्मा जी ही

सजीब चित्र, निरमिसानका के आदर्श हंसराज का बीवन अनुकरणीय है। रहने का एक छोटान्सा कमरा, सक्बी का एक तस्त्रपोश, दो टटी १ई क्रसियां क्रीर वस । कपड़े सेहि-मोटे शह स्वदेशी. जना होशियारपर का । सीधा साहा पाजासा. बन्द गले का कोट. उत्तर लावर सी पगडी-वह उनका वेश था। उन्तत विशास मस्तक, इवेत वर्गा सम्बे चेहरे पर अध्य दावी, ऐसे लगती थी, यानी वोई प्राचीन काल का देवता हो। गतनीत में केवल साधुर्वही नहीं, काश्विकृदा भी थी। न्पेत्रेते शब्द. एक कम्बर भी व्यर्थन बोलते । सागर की सरह सम्भीर, हिमालय की तरह निश्चल और चन्ह्रमा की तरह शांत क्रोध पर उन्हें पूर्ण विजय प्राप्त थी. पर्मानंबसी।

वे-लगाव किनने थे. इसका एक हो उदाहरसा है। १८८४ से १६११ तक दवानम्द कालित रूपी वैदि को बस बना उसके विसिपता पद को भी स्थाग डिया और वेद प्रचार तथा लोक सेवा की छोड ध्यान दिया । आयो शादेशिक प्रतिनिधि सभा का विस्तुत कर दिया | दुखी-पीड़ितों की सेवा में दिन-रात एक कर भारत के एक कोने से लेगर इसरे कोने तक दयानन्द का संदेश पहुंचा दिया और जय देखा कि समा का काम भी अब सुचार रूप से होते लगा है हो १६३७ में इसका प्रधान पद भी त्याम दिया ।

महात्मा नी कंजीवन का एक ी आहे देव या। ऋषि का सिशन रूपल हो ताकि हत्य गाँव में नया शीवन आये. वह क़रीरियो कीर बहमों से वचे. यह ईश्वर

# जाग्रति श्रीर क्रांति का सूत्रधार

(श्री प्रिंक सूर्यभानु जी वायस चांसंतर कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी कुरुक्षेत्र)

्र मातनीय शिंसपस सुर्येशतु जी बायस चांस-सर इस्ट्रेड विश्वविद्यालय तता गर्मगीर होसक, शिता विशारत तथा वच्छा हैं। महत्यमा द्वैनराज जी के जीवन को विस्त गरुमीरता से खांका है वह स्तरे अपने राज्यों में ही पहिले —सं०

बाव से माबी-मावि परिषित ये कि धर्म लोक और रहतों को एक साथ व्यवस्था करता है। हर्गांतर वह और ने पेड़ और नैदिक धर्म के समक प्रचारक तथा अवगरण कार्यकर्ती से और दूसरी और से पंडियम की मौतिक कन्तिन की भी निस्तृत न कर सके। हस रोहरी मृत्यिक परिवास स्वकृत

महारमा भी ने कपने आपको उस शांहोसन

महारमा इंसराज वर्षे सुवारक ये और वे इस

ही उपासक हो और परावीनता की कहियां काट एके। इसके निये कहोंने उपमुख्क साथन बरते। इयानम्य काशिव की मिलाम्ये एवं निष्काम सेवा, क्याये प्रादेशिक पश्चिमित क्षमा की स्थापना, महिला प्रश्नु-विचालाव की स्थापना लाहि सब इसी वार्य-कृष की किंका मीं। इसी ध्येष-प्राप्ति के निये वहाँ क्षमी भी पारतीमों पर कह साथा, करोंने वहाँ ही करों सेवक मेजे. स्थां भी बहाँ करोंने वहाँ ही

बारोबन, बक्नोडार, हर्रजर्ने की कावि आदि

के साथ बाल्य दिया जिस ने नवे पंजाब में जागूदि और कांति की भावनाओं को जल्म दिया। यह सहान कांदोलन डी० य० वी० कांदोलन था।

बाइर से देखने में यह एक महाविधावय क्या स्कूल का शिक्षांचास भी परना हुए में विवाजी की सी पक प्रवित्त थी। ची० प० बी० संस्थाकों में ऐसे नेताकों के जन्म दिवा वो क्याने बीवन में गुढ़ क्या में मामशीय में परन्तु के विदेशी विचारपारामां में भी क्यारियित न में । बड़ी कारपा है कि में बाहिय राम्य से सक्का टक्कर में कहे के ।

महात्मा इंक्टान भी हा कपना जीवन एक फकीर भीर सन्त का जीवन था। वे कपने शरीर के भोगों से कहासीन ये। परन्तु वे नेतृस्य बन्

सब का बही प्रयोजन था। सहातमा हंसराज श्री सहारमा गांधी के हरिजन सेवक संघ में सी कास करते रहे |

इस प्रयेष के वीक्षे पर विभार था, जो महास्मा बी के इस यावन में मलकात है, ''...मैं तो कंत में ब्याप से यही कहता यादता हूं कि महिंच स्वानन्त्र के बताये मार्ग पर हदना से कावम रहें मौर क्या पर चलते हुंगे वैदिक वर्म का मगर मौर हार्थ नीत हा सुमार करें, ताकि सोर्र संसार्थका क्ष्माया हो सके !'

# 

(ते - प्रिंतियल भगवानदास जी, एम. ए. बी. ए. वी. कालेज शोलापुर)

अंत्रे वी राज्य स्थापित होने से पूर्व जन-साधारया को तिर्वित करने का कार्य गतिरह हो कुछा या। चन्दस्थानों में महर्स क्रीर पाठशास्त्रार क्वांत्रमत कर से दलाई वा रही भी रास्त्र गतिरक्ष के क्रियो स्कृति पूर्वत्या समाप्त हो चुकी थी। काव्यापक (बाई कक्षी योगनता कोर विचा कृत भी हो) गरि देव का क्रथतार नहीं तो देव वुस्य कवस्य समम्प्र मःता था। शिल्यों को वस के ग्रतिकायनक्वा के क्षिये विचार किया जाता था।

विचार्षियों का करते वे जिनके हाय में काने वासे भारत का निर्माण या। उनका स्थान बीठ पठ थीठ क्यान्योतन की सम्भी और दिलवरर कहानी में नायक का है। उनकी सायसिक शक्ति से इस क्यान्योतन को रावित सिक्ती थी। उनके द्याग से क्या में कियारीशता इन्तन होंथी थी। यह अ भीर सीक होंगी की महत्या की स्वीकार करते थे। वे बातसे थे कि मश्चिक और निश्चित दोनों मार्ग एक दूतरे के सहायक है। उन में मृत्व विरोध का कथांव है। येम महान् नेना इतिहास में क्यार रहते हैं।

सुधार जा ब्यान्दीक्षन ऋषि के पहचात इन सेताओं पर निर्मर या जो दयानन्त के तपदेशों के इनुसार कानो बहना जानते थे। इन नेताओं में महासमा बंद्यशक सब से कानों थे।

वे पाठशासाएं थोडे बहत स्थानीय श्रथवा सेत्रीय दान से चसती थी इस िये स्वानीय और वर्गीय पक्षशात ने शिक्षा क्षेत्र में प्रवेश पा सिया। परन्स इन शिचा संस्थाओं के सर्वध में फिर भी तो विशेषतावें उल्लेखनीय थी-इध्यापक की छात-कर्तरुव निष्ठा भीर विशासध्यत के लिये उसके शिष्यों की जिल्लाका। सोचने वाले के आज बह विचार करके आरवर्षे होता है कि उस सुगकी सीमित सविधाओं और साधनों की तलता से कात के क्रमियत साधनों और अवसरों में बढि ये दो गुख भारण किये जावें तो इसारी मातृश्रमिका स्वरूप क्या होगा। उस समय प्रतिक्रत लोगों की संख्या धारिन्यम प्राथ: शुस्य ही थी। अरंगेज भारत में आये। कुछ समय तक संराय में रहे परन्तु फिर बन पाठशासकों कीर सदसों को संदिग्ध हाहि से देखा और फिर आरस के लाओं और सरोडों लोगों को शिक्षित करने का हाविस्व अपने अपर क्षेत्रे का निखंद किया। श्रवः उन्होंने कह स्कृत भीर कालेज कोले। परन्तु सन संस्थाओं के स्रोताने का एकमेव प्रयोजन ईसाईयत के प्रचार की सुगम बनाना था। 'दाकि भारत की स्थाबी रू.। से प्रराधीन रखना सम्भव हो जाये। वहां वह तथ्य वस्त्रेक्षनीय है कि यहमेव गेर सरकारी

हैसाई कालिय अर्थात कलाउना हिन्दु वालेव ने लहां तक हैसाईयत का संबन्ध है कच्छे परिखास दिखाये। यह हाल्स जाफ लावें और हाल्स जाफ कामनम के समझल हो गई साची के निस्न संदर्भी से सिद्ध होता है।

'कलकता छोड़ने से पूर्व मैंने मुशिक्व वर्गों में से ईसाई बनाये गये ल'मों की सूची तैवार को ! मैं ने उस समय यह ाना कि ईसाई होने वाले कमें का यह बहुमत निस का चरित्र, प्रयुक्तियां और मानसिक होता ईसाईयन के लिये सर्वाधिक सहयोग

प्रकृत करता है वह हिन्दु शालेन की देन है।'

भेरा विश्वास है कि इंचीरड के स्मि भी
पश्चित कुल से कलकता के हिन्दू शालेन में
बाईबल ना अधिक झान है। (सर फैरल हैलिडे)

करार के प्रमाणों से यह सुलाह है कि हमारे करा समय के भागत किशाबाओं (शासकी) का यक हर ही जो इंग्य था। भारत के शाबाबों लोगों को क्रिया-न व व किशा करा हो जो हमारे के भारतक के हमारे के किशा कर हमारे के किशा कर हमारे के किशा कर हमारे के किशा कर हमारे के हमारे के सात के अवश्य के सामार्थ के अवश्य के सामार्थ के अवश्य के सामार्थ के स्वत्य किशा हमार्थ के हमारे के सात के तो यह कीर भी रहे हमा । साम्यराविक दक्षवियों के तो पहले ही है हाइय के प्रमार के किश्व करेंगा हमार्थ के हमारे के सिंग कर हमार्थ के सार्थ के सार्थ के हमारे के सिंग के कर हमारे के सिंग कर हमार्थ के सार्थ के सार्थ के हमारे के सिंग के

भी परिस्थिति जय इंसराज ने दिक्क्याता से बी ब्दे

किया। बी॰ ए० पास तो कहना ही क्या उन दिनों मैटिक पास भी बिना मांगे के वी राजकीय नौकरी प्राप्त कर सकता था क्यौर इंसराजुतो फिर्फी एक विलक्षा प्रतिभागाली विद्वान था । बिस लिये उसको किसी बहै पह के लिये हाथ पसारने की कावहकता न थी। यह तो इस के सामने निवर्वन के लिये स्वयं आ जाती। परन्त ऋषि दवानंद के प्रसर राष्ट्रवाद और स्वदेशो प्रचार ने इसनाज के बरुख सन पर क्रासिट प्रभाव छोडा। दस ने गंधीरता से यह अनुभव किया कि इस से वह कर देश वासियों की कोई सेवा नहीं हो सकती कि जन साधारण को राष्ट्रीय ढंग से शिवित कर के दन में बारमविश्वास कीर बारमसम्मान की अस्य मावना जरपन्न की जावे। इस के लिये वह सब प्रकार का त्याग व साधना करने को उद्यव था। इस लिये उस ने एक पाई भी बेनन रूप में स्वीकार न करते हुवे अपने आप की उद्देश्य पूर्ति के क्रिये मेंट कर दिया। महर्षि इयानं र की पृथित्र स्पृति में लाहीर में एक स्कूत चलाने के लिये द्यानंद कालेज कमेटी की स्थापना की गई। यह स्पष्ट ही है कि इस कमेटो जैसी हड़ राश्चीय विचारों वाली समिति आर्थिक स्थिति से निश्चन्त न हो सक्ती थी। अंग्रेजी सरकार भी पहले आर्थिक अनुदान देने को बद्यत न थी। कसेटी से स्वयंग्रेय विदेशी सरकार से एक पाई भी सहायता न केने

दा संस्कृप दिवा। प्रती लोग सरकारी संतद से

भवगीत थे तो फिर जनता की जान दान कैसे दिया कायें? ला भी समस्या ! ईसराज ने यह कार्य सुगम कर दिया। श्यादर्गे महास्था है नराज जी के सप में भावनी मुख्याध्यापक पाकर स्कृत चला दिया गवा। कमेटी के सामने एक ध्येव था राष्ट्रिय गीरव को पनर्स्थापित करना सरकार से एक पाई मी अप्रतदान न होने पर कोई आइवर्ष नहीं होता तब वह तब्द हमारे ब्वान में आता है कि स्कुल की स्वीकृति के लिये प्रार्थना करना भी प्रतिष्ठा के प्रतिकाल समामा गया । लाहीर में यह रिकार्ड में था कि ही. प. बी. स्वता ने अपने प्रथम वर्ष सारे हाई स्कूल स्काखर शिप पाने पर डी. पी. आई. से बधाई प्राप्त की । सहात्मा जी ने वधाई के लिये धन्यवादकाओं पत्र लिखा सरकार ने इसे ही स्कल की स्वीकृति का इसवेदन पत्र भान कर स्कल को सरकारी सान्यता प्रदान कर दी। यह है शिचा बोत में बाराजकीय (श्वरनों) की कहानी और सध्यम वर्ग के साधारमा लोग बी० प० बी० कालेज सरकार द्वारा उसकी साम्यवा का इतिहास। बह इ.मेटी के सहयोग को झाने निकते जिससे यह पतीत सन्तेखनीय है कि ही, ए. थी. आंदोसन की शिवा

१८८६ में उत्तर में एडमेव अराजकीय और कीर ईसाई स्कृत में राष्ट्रीय भावना है प्रधार कीर क्षेत्रार में कितना कड़ोर परिधन करना पड़ा इसका

क्रकान्त्री क्रेबाओं की स्वयोगिता पर खंगेल भी

संभित और मुख्य थे। बिना आवेदन पत्र के स्कूत

को मान्यता मिलना उस महान गुरू, शिका

विशेषज्ञ और सुधारक की भीरवपूर्ण सेवाओं का

श्वभित्रस्यत् था ।

ऋसान और साप करना सहाराष्ट्र में ऋदि कठिन है। विश्वा में उस समय भी निभिन्न नेदरद के कारण देश भेभ की लहर अमद रही थी। उत्तर में तब नौकरशाही का रोब था। १८४७ के सर्वप्रदास स्थाधीसता संप्रास की विफल्लवा के कारण जनता शासित यो । क्रीर सरकार दोही होने का झारोप थोपे जाने का प्रति-चाराभव था। यह स्वाभाविक ही था कि ऋषेज सकत को, मस्याध्यापक को, छात्रों की फीर सारी प्रबन्ध समिति को सविग्य दृष्टि से देखते थे। परन्तु महात्मा हंसना ब के हद निर्भी व नेतृत्व में आर्थ समाज और स्कूल की अविरत और अविराम उन्तति के परिकास स्वरूप १८८८ में पहला भराज-कीय और गैर ईसाई कालेब लाहौर में स्थापित किया गया जिस के ब्यादरी ब्याचार्य सहसमा श्री ग्रे।

ì

कार्ड सर्वेत्र फैला । महात्मा इंसराज जी एवं उन सरीखे दृष्टिकीया के अन्य नेताओं की दूरदर्शिता का परिचय इस तदब से सिसता है कि सरकारी रोप को बेकार करते के लिये डी० ए० थी। संस्थाओं के स्नातकों के लिए नये-नये सेत्र तैयार करने के लिये कई वैंक, श्रीसा दृश्यविद्यां और उद्योग यस वे गरे। एक शिक्ष विद्यालय, टैकनिकल स्कूल, आध्वेदिक कांक्रेज, नामंत स्कल (सध्यावडी के प्रशिष्णार्थ)

परीक्षा को बाभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई और

धंदिक सिक्तरियों के निर्माण के किए एक काहेज, एक वैदिक शोध संस्थान कीर कानेक कार्टस साई व काहेज यर्थ बकुत १६३८ में महास्था जी की स्थ्य के पूर्व पुत्रतों फतते हुए इस कार्योक्त के नीव में दन कीर स्थान की भावना का

क्षाल्ला प्रसाय है रहे थे।

के देश शिक्षा के हुन में सहारता श्री के बरायर

के दश शिक्षा के हुन में सहारता श्री के बरायर

कोई बीट नेता उतता हुन कर दिखाता हो बहु

काति से भन्य स्थम प्राप्त करता परन्तु महारता श्री

ने बहुं दिसाम नहीं तिया। वह एक महान
स्थनाशिक तेता और तोक सेवक थे। आर्थक्साव

के पुनीत हुनों के प्रसार और दिलतार के ज़िये वह

कमी कहे नहीं। वन कभी और जहां वहीं भी देश

पर कोई विवर्ध आर्थी वह स्थम सहायोगी सेवकों

के सहस के साथ अविकास कमी माते पुनीक स्थाय अविकास को माते दुनीक स्थाय अविकास कमी माते पुनीक स्थाय अविकास कमी मात्र स्थाय कमी

सैक्ट्रों झौर सङ्ख्यों इन के सङ्गोरी लेही वरदहस्य सनुमन करते !

महात्या जी से सुनोप व्यक्तियों भीर पुनर्कों को आकर्षित करने का करमुत गुज मा भीर करके गाम आवीवन सर्वामों के हर सहयोगी कर्यों कर्माओं का बहुत दश दल था। व्यक्तों सम्बद्ध पुनर्क प्रेम इसि हिसे इसि हम हमें हमें हम हमें उन के तेनस्वी हरा में विशेषशा वह थी कि कर के कार्य कर्मीओं में जन के व उनके मार्रामों के मिरि स्विता भी।

तुष रूप में वर्ष अर्थपक के रूप में महरमा भी बढ़े लोकिय थे। चाहे यह यह विशासक (अनुसासन रखने चाते) ये परंतु पात्र क्षात्रों के प्रति वड़ी सहातुम्रुदि रखते थे उन के बिना स्मोकों बुबक बिन के पास रिएक शांध्य क सायन नहीं ये प्रतिश्वक भीर निरागय हरते। यह बहुधे बिग्होंने कपनों साहस स्माहृति से अध्यम सन बन तक हान बताला पह चारा।

## \* भहात्मा हंसराज जी की पुगय स्मृति में श्री यश जी के हृदयोदगार 🌋

(महात्मा जी के निधन के अवसर पर)

जो सहरों से सहर कर परवार हाथ में थाने। भो वेष पीर सारत का उस एकानी वेका में।। सब अस्में के मौके में करनाह भरा या सामार। सुद्व फाड़े तकते में जब सहरों के मूखे का नगर।। (सबके काइन्स साहत जरकर मूंब दरा न मोहा। (सब में काइनी का सामार भी स्वारत में साहत

ितस ने कपनी नीका का पत्सपर भी साथ न कोता। वस नाविक को नकती है मेरी यह आज निगाईं। की' अन्तलस से बरस निकड़ी पहली है साई।।

# 

अहारमा हैनराज एक दरमाने दर्जे के बराने में जजनात्रा भाग दिखा होरियन पुर में वेता हुए । बनके पिता की साधिक अस्त्रता एक समय नहीं बागोबोल थी। डानेने जब मींट २० तमा विचा तो लारा बारत वर्षे स्वाची दरानन के सिंहनाव्य से मुंद दहा था। शिर्णुक भारतीयों ने नहीं क्यानन्त्र के सहेता में आहा, अलाई क्या पुरस्त्यान के प्रकारत को हैना। उनकी बान में बात आहें। सम-

महरार भारतवासियों ने आस्मसन्मान की उस में

मातक देखी । सभी स्वभावतः उस युग पुरुषकी तरफ

मुक्त । भारत की काश्मा के अन्दर पह विजसी सी

रीह गई। यह डीते हो सकता था कि इंस्टाम येती पांचर कारमा इस से क्रव्यमांवर रहती। यह असर का बीर कर क्यर से क्रव्यम उदती जो किसी मार-मेरा के विश्व कर राजना के पुत्र में मूली थी, प्राप्क कर सकता था। इंस्टाम जी तो विशेष प्रतिमाशासी व्यक्ति थे। परन्तु प्रसार्थ के सुकाषित्र में साथे कर्में स्थान का । महर्षि द्यानन्त के संदेश ने कर्में क्यान्य की श्रुष्ठ हुए हो की इंस्टाम की मे महर्षि द्यानस्य की श्रुष्ठ हुए हो की इंस्टाम की मे महर्षि व्यानस्य की श्रुष्ठ हुए हो की इंस्टाम की मे महर्षाया का एक मीम्म कर लिया। श्रिक्त हुए होने के बायकुर देव झान के सर्वेश कीताने के विश्व क्षत्रविश्व का सम्मान का मत्र वारण किया।

इरब धन्तप्र प्रसाना चित्रन है। स्राज्ञ जो विशा का प्रसार देवाब हो नहीं धनितु सारे भारत में हैं क्षमका बहुत बहा केन महाध्या बूंधनाड़ को है। वह विशाचार के नाने महाब्या नहीं बहुकावे। महास्त्रा रुक्ट् की ईसराज बी की महंद्या को क्लाजा है तो महत्त्वा ईसराज आ राब्ट् को गौरवान्त्रित करते हैं।

इतते हैं।

इस हुमाना ने जुन पुरुष द्वानन्द के सिरेश

इस हुमाना ने जुन पुरुष (प्राप्त का अपने ना

सम्बद्धान नहीं। 'पनो अपनुद्वान्त के वस निर्देश

सम्बद्धान नहीं। 'पनो अपनुद्वान्त के वस निर्दिश

सम्बद्धान प्रमुख्यान के समृद्धि और परिक्षोक

स्वार्यान प्रमुख्यान के समृद्धि और परिक्षोक

स्वार्यान प्रमुख्यान के समृद्धि और प्रमुख्यान करता है।'

सम्बद्धान प्रमुख्यान समृद्धान कर, उन सिद्धानी का स्वार्य के अपने के सम्बद्धान करता है।'

इसीहित्य धर्म पर्व रेटीन क्या एक पहिल्ली सम्बद्धान करता है। के स्वार्य के सम्बद्धान करता है। स्वार्य के सम्बद्धान करता है। स्वार्य के स्वार्य

सुष से मुद्र मानव भी ओवन को एक विकासि रखना है। विश्व-करना अथना विद्रत रहिकोसा के विज्ञा मानव भीवित ही नहीं रह सकता। इस के विस्त का विश्व चाहें आध्यादिक प्रभार पर हो या मौतिक भाषान पर, यह वात और है पर का हो परिवे हैत करता है, तथा ज्याके विचार समस्य जगत पर भाषारित होते हैं। इसी करत्या वह वर्ष धर्म कहशाने का अधिकारी ही नहीं जिस में सारे दिख्य या समस्त जगत का समाचेश न हो। चुग पुरुष इतायर ने इस सम्बदाई का अबुसय करते हुए अपने हारे संतर का जगत रना इस सस्याज का हि 'तारे संतर का जगत रना इस सस्याज का आरिक्षक करनी करना।'

श्रार्यसमाज भारतवासियों की उन्नति तथा उन के तहार और पुनरत्यान के लिये प्रयतनशील तथा चिन्तित रहा है। ऐसा होना अनिकास था। औ खपने घर का स्वामी नहीं और जो धपने ही समाज का सुधार तथा उत्थान नहीं कर पाया असे संसार में कौन खादर तथा ध्यान से मुनेगा 'Physician heal thyself' वैद्यात पहले अपनी चिक्सिया करो । भारतीय समाज शताब्दियों से रुग्छ तथा होगा । द्वित था। सामाजिक रोग प्रासःध्य हो चके थे वा अक्षाच्य समने आने है। विरोधी तो इस रोगी के झर्मितम इवास गिन रहे ये और धर्म परिवर्तन द्वारा इस कायाकरूप की सम्बी चौडी योजनायें बना रहे वे ! मण बकाती भार्तन दक्षित तथा निराश होस्टर २६ पुरितका Hindus, a Dying Race सिला काली : स्थिति चिन्ताजनक तो थी ही भवानक सी इन रही थी ऐसे समय में भगवान की शेरणा से मक्तारमा द्यानन्द का प्राद्वैभीव हुका । इस परम चिकित्सक ने रोग का सड़ी निवान करके निराशा की ब्राहा में, पतन को उत्थान में, शीनता की कारम-विश्वकास

तथा निः वि निधिक्रयता को असाह तथा प्रयस्त में परिवात कर दिया । अंता की कालिमा प्रकट 🕵 तथा शीक्र सन्दर शमात का रूप धारण कर गई। विरस्कृत तथा इतोरसाह हिन्द सञ्चन, सचेव वथा गविशील शत गया । प्रभार सकतात पन गया । **वर्** दीन हीन विभारधाः। श्री दशतन्त् के आसमन क पहले सब हरवों पर काच्छा/इत होकर सब को निराश तथा शक्तिहीन बना रही थी इस वरह काष्ट्रर हो गई जैसे सूर्वीदय पर घुन्च पड़ जाती है। दैविस धर्म के इस विशास तथा विश्व-अ्वापी रूप के लिये सहात्मा इंसराज ते आपना सर्वस्व असरशः बलिदान कर दिया । महारमा ईसराज के पदिचिन्हीं पर चलते हुए इसे वैदिक धम के विशास मावकोडिक तथा सार्वजनिक रूप को देखना चाहिय वैद्विक वर्भ को सक्वित संकीएं बनाना द्वानन्द और महारमा इंसराज के साथ विहोह तथा धोका

भारत में इसके परिवास सक्तर राष्ट्रीयता वा जन्म हुम्मा । महाला गांची तैया परित सवाहर साल नेहरू जैसे नेताओं के नेताब में हवारों हतासाओं के प्रतिवानोंके प्रतासक्त मारत स्वयन्त हुम्मा । स्वयन भारत ने त्वामी हरानन्त्र के कामा-जिक प्रोमास को शास नित्तरत परना विचा है । कभी केवल सामस्त्रा औ है । परन्तरता गोंचक सामा-तिक क्रीविची हा सुधार करने में क्यांचे समान स्व सफल रहा, परन्तु साम्तरिक कमा होने सम्बु के सम्बन्ध रहा, परन्तु साम्तरिक कमा होने सम्बु के सम्बन्ध रहा, परन्तु साम्तरिक कमा होने सम्बन्ध हा कम्पूलन करने में काफी सफल रहा है, परन्यू काम्बरिक संबाद में इसे विकसता वा सम्बना सरना पक्षा । वहेज की कुरीति का आर्थ समाव सुधार नहीं कर सका। विवाह सुन्दर तया सरल ≋ग से हेरें यह तो एक स्थप्त मात्र रह गया । हम श्राम-साकष के तुफान से विर ही नहीं गये। क्रायित क्रार्थिक भावों की बाद में बड़ भी गये हैं। व'ह अपने समाज सामाजिक सुधार के चेत्र में मेस्स प्राप्त करना चाइता है तो दहेज की कृत्रवा तथा विवाह समारोही पर अत्यधिक दिखाने तथा s हराँसी का नियमिश्र रूप से विरोध एक आखीलन के रूप में बारस्म करें और प्रत्येक आर्व सामाजी

इस बात को अनुसब करे कि हुए एक मुखार सफल होने के लिए पहले यह अपने आप से आएम्स होना चाहिए। इस ब्रांडोसन से सपस्ता के जिये दोनों और 'ब्राटि' वर्जित समझनी चाहिय विवाह में कोई कानन्द मंगल न हो, कोई सामाजिक समारोह न ही या विवाह में इसनी प्रदर्शनी करी कि चारों कोर ईवाँ, बोब स्था प्रतिस्पर्धा की व्याक्षा भड़क उठे यह दोनों बातें गक्षत तथा बडी हानिपद हैं। स्वा हर २६ द्यार्य समाधी पहले स्वयं इस सधार होत्र में पशर्षण करने की वैदार है ? आर्थ समाज अव इस और ध्यान दे। यह बादेश हमें महात्मा ईसराज के जीवन से मिश्र रहा है।

(M)K)K)K)KOKOKOKOKOK• MCK(K)K)KOKOKOKOK

# महात्मा हंसराज जी का सब से प्यारा भजन

हे अगतुस्थामी ! हे अगसुपिता प्रभुबी ! मेंट घरू में क्या तेरी। मास नहीं मेरा सम्पत नहीं जिस को वह' मैं मेरी। हान अग में ऐसे बिचरे जोगी करे ब्यों फेरी । हे जगन स्थामी..... धन मन यौदन श्रपना माने मुख्य भूता भारी। हुम बिन और सहाई न मेरा देख किया में विचारी ॥ है जगत स्वामी ..... ए तन ए मन होय न अपना है सब माल सुम्हारा । त्रव चाहो प्रभु तब ही हो लो नहीं कछ जोर हमारा ॥ है जगत स्वामी... तमरेदर पर मैं बाचक खामी साज सुमे मेरी। चरख शरया तिज क्रपंदा करके दियो भ क्त बिन देशी। है जगत स्वामी...

बीट—श्री सह1» राजपांस जी जिसटा अजन सरहत्ती के सीजन्य से प्राप्त ।

# 

## वज्र संकल्पी महातमा हंगराज जी

নি প্রতি বার্নার বা 'িন্ধান্ত' সাম্পাণক ব্যান্তর কার্নার বার্নার বার্

हम से चिपका रहेगा।' इस से श्राविक त्पष्ट शस्त्र में श्राप्ते की शिक्षा का प्रवोजन व्यक्त करना व्यक्ति हैं।

सहात्मा इसराज ने अपनी श्रीवन आहति है कर सरकार की सब बाकांचायें मिड़ी में निका हीं। सहारमा के प्रस्तर राष्ट्रवादी इडिकोस सीर ब्राव समाज की लोरियों के कारण द्यानन्द संस्थाओं से एवं भावनाओं के देश मक्त निकते ही सरकार की द्वांख में कांटा दन का सरकते सने । क्सी खुशो राम के इस्त में राष्ट्र री मिलनेदी पर क्राव समाज की शिक्षा सत्याओं हे गुक्तों ने क्रपनारकत बहासारों कभी गेंदा जानाजी दीचित के कर में भां भारत को भार्य वीशों ने सिर मेंड किया। कसी सक्स सिंह के रूप में डी॰ ए० मी क कोंसी पर मन्त गये तो कभी सोहनताल पाठक वसिवेदी पर चड्ड कर ही । ए० बी० आंदोलन कौर कार्य समाज की विक्य भन्त परम्पराधों की गीरक पताका पहरावा हुआ संसार के सन्मुख आवा। क्ष्मी बसराज कारी काया तो कमी 1. N. A. (नेवा जी सुभाष की सेमा) के कतान सहगत के ह्रप में €े ए० की॰ सीत को सलकारते हत जननी हो रंघन मुन्त करते हुए भारतीय जनता के सामने आये । १६१६, १६१० छाँर १६४२के सम माने कर्मी में बहितान देने वालों में इतिहास कहता है कि पत्नका देवरान के शिष्मों का ही मारी है। विस्ताद मन से इस इसंग को में नहीं झोड़ना हूं और देश में बलाय गये एक और शिक्षा कारीलन की भी यक मांकी पाठकों के सम्मृत रख कर राष्ट्र निर्मात ईसराज की महिमा को दशीना वाहना हूं।

अक्षीगढ़ में म्सलमान बंधजों ने आर्थ-समाज से थोड़ा समय पूर्व आपना रौक्शिक काविश्वन आरम्भ किया। इसके जन्मदाता सर सध्यद आहमत थे। सर भव्यद आहमत १८६८ में शंपदायक हडिकोशा अपना चुके थे ऐसा वर्द के विक्यात द्वि हाली हारा उलकी जीवनी से स्पष्ट होता है। अब काशी के हिन्दी प्रेसियों ने प्रशासन में दिन्हीं की समका स्थान हिलाने के प्रयक्त किये को सर सन्यव डिन्दी की प्रगृति सहन न कर सांश्रदायिकता के पोषक वन रावे परन्त अपनी 'कुमायना प्रस्टन होने दी लक्ष तक कि अलीगढ कालेज के विशास सकतें का निर्माण न कर लिया। होसा करों ? बासीशत कालेज के सिये हिन्दओं ने दिल सोलक्ट धन दिया और सर सय्यह ने सिया । अब कार्य वन गया तो फिर कांस विखाई। आर्थ समाज के यशस्वी नेता हुताश्मा स्वा० ब्रह्मानम्ब जी महाराज भी अक्षीगढ़ में प्रविष्ठ हुए परन्तु वहां हिन्दुओं क्रिये विपैता एवं प्रतिकृत वातावरया पाकर उनका आलीगढ कालैज ह्रोडना । य अ और बात सर सध्यद ने कांत्रेस का पहले

य त स्रोर बात सर सध्यत् ने कोशंस का पहती तो शेषण किया। स्यों ? हिन्दुओं से भी अन लेला बंग कि मुस्तवानों को शीध से दूर रखने कं किये Muslim Educational Conference का व्यविदेशन वन्हीं तिक्विंग पर चारोधिक करना धारम्य किया अब कीस्स का व्यविदेशन होता या। Beck और Archibold स्तरीक्ष कर्म वहां चापार्थ बनाये गये कि होने मुसक्षिक क्षेत्र की नीच रखना कर मारत विमान कराया।

वह सारा वृत्तास्त देने का क्रासियाय यह है कि पाठक वस युग की चिनीती परिस्थितियों की इक्ष करपना करें जब तरुण सपस्वी इंसराज आपने क्षायन द्वीन समाज का रेनापति वन कर आवि वाती शक्तियों से जुमने निक्सा। उछके पास था क्या ? तप और स्थाग से विश्ववित वज्र संकर्णी योजा रणाचेत्र के उतरा । सभय की गतिविधियों का अवसोकन करते हुए गन्भीर मुनि ने अपने राष्ट्र झीर मध्यव समाज की केंग्रा करते हता बह सफलता पाई कि तुनिया दंग रह गई। आरम बल भवदारी से सरकार ऐसी कब्पित हुई कि उसके शिष्यों का सरकारी दफ्तरों में प्रवेश (Services) दन्द हो गया। जब भी राष्ट्र में राजनैशिक इसचल हुई दयानन्द संस्थाचें प्रकोप के व्रसाह का सेवन करने में ध्वत्रसर रही। १६५२ के आंदोलन में तो साहीर दयानम्द आसेन के ब्रास्टर और बाहर लाठी चार्ज व गोली वर्षा हुई। इसारा शीश गर्व से ऊ'चा होता है जब बाब इस यह बाद करते हैं कि इस झांदोलन में साडीर दवानन्त् कालेज के छात्राचास में भी साडी बार्ज इसा गोसी भी पलाई गई।

# कर्मयोगी महात्मा हंसराज जी

(लंo-श्री महात्मा देवीचन्द जी, एम, ए. होशियारपर)

महापरधों की जीवनियां समाज व जाति में सव-जीवन लाती हैं और देश के युवकों में नवीन रक्त का संचार करती हैं। वे हमारे लिए पथप्रदर्शक का काम करती हैं। घन्य है यह भूमि वहां महारमा इसराज जैसी पवित्र कारमा ने जन्म सिया और धन्य थी बढ़ माना जिसकी कोख से इस प्रशास का कर्मगोबी उत्पन्न हुन्ना। जीवन भी वास्तव में ऐसे डी लोगों का सफल होता है जिनके जीवन का बह हय केवल अपनी उदरपूर्ति नहीं होता, परन्तु वै मन्द्रमात्र को भड़ाई में अपना व ऋपने देश की अध्युद्य प्रव विकास समस्ते हैं।

भारतक्ष की अधीयति का मुख्य कारण इस देशवाधियां की श्रविद्या ही समस्त्रनी चाहिए। इसी

लिए कार्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि खासी स्थानल जी महाराज ने आयंसमात्र के इस निश्मों में एक नियम यह रखा था कि 'श्रविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।' उस नियम के कतुसार स्वासी जी के निर्धाण पारत करने के पश्चात उनकी अस्युक्तम स्मृति स्थापित दरते के लिए हमारे नेवाओं ने शिक्षा के प्रसार की आपने इ।थों में होने का निरुचय किया। अतः सर्वप्रथम पंडाब की राजधानी लाहीर में मिशन कालेज तथा स्कूलों के मुकाबले पर आर्थसमात ने दयानग्द देख्तों वैदिक कालेज का आंशोलन अपने डाथ में विवा और उसका प्रारम्भ लाहौर के दीव ए॰ वी० हाई स्कृत से हमः। आवश्यक्ता थी कि इस महान

आज की पीढ़ी के बार्य युवकों के लिये मी महात्मा जी का जीवन एक क्योंति स्तम्म है। आज भी देश में द्रोही शक्तियां दनदना रही हैं। गीआ के मुक्ति बांदोलन में वहां के ईसाईयों ने जो वंन दिया उसका उल्लेख न करना ही अच्छा है परन्तु आधाक गोधाको एक प्रयक्त प्रति रक्षते के लिये वे इतना शोर सचा रहे हैं कि सनकर कान फटे जा रहे हैं। पूर्वी संगाल से हिन्दुओं का रक्तपात हो रहा है पर सब मौन हैं जब इस ईसाई निक्से से सारे विश्व के ईसाई विश्ला छठे। यह सन बुझ विचारयीय है। झड़ान की काली निशा अब भी सर्वत्र है । सर्वि पत्रा, कबर पत्ना, व्यक्ति पत्रा, सम्बद्धा पूजन, पुस्तक पूजन आदि 💷 ब्रह्म चल रहा है। नूतन पंथ बन्स हो रहे हैं। येद खजाला कौन देगा ? महात्मा श्री का बाम जेने वालों की कर्त व्याकी प्रकार सननी होगी और सारे विश्व को चेद मानु से कालोकित करना होगा।

क्य की पूर्व के हिल्प कोई त्यांगी वीर काशुकि कन कर करनी सेवाएं क्रॉपेल करें। घरा: तव-तुवक हैकराल में, प्रिकृति काशी पंजाब विकाशियालय से और प. की दिवारों पारण की थी, महर्षि की प्राव क्षेत्रित आवना को प्रमुख्य स्थते हुए कपनी केवा क्षेत्रित आवना को प्रमुख्य स्थते हुए कपनी केवा क्षेत्रित कर ही धीर यह तव वारणा विचा कि वह विज्ञा किसी प्रकार का बेतन स्वीकार करने के स्थाबंसमान और दी. प. थी. कालेज कनेटी की सेवा करने । उनके इस महाज त्यांग का ही वह ग्रुम परिणाम काज देखने में का रहा है कि पंजाब में कोई भी नगर देशा दिवाई नहीं देशा सहाराता हा हो । इन संस्थाओं में प्राय-सरस्याण महाराता हुंगाद जो की साध्या काम करती हुई विकाई वेशी है।

 वह त्वाग क्षीर तपस्या तथा सादगी की सादात मूर्ति वे : इस 'ज्योति:सक्य' से सहस्रों ने प्रकाश महत्या किया।

महारामा थो ने न केवल शिवा के होन में ही हमारा एव-उर्दर्शन किया है, अपितु ससाज-सेवा के बावें में भी बहु सरेव हमारे अभयी। वने रहे। जब कभी देश के किसी भाग में दिन्दु-जाति पर विवर्षित का समाचार उनके कानो तक पहुंचना वा वह उन्दर्शन उठते थे और बाति व समाच पर आप उस संबर का निवासका वरते के सिय एकहम अपनी सहावना का हाथ बहाते थे।

सहारता जी अपने श्रीवन में हमारे पव-प्रद-शंक रहे। उनकी निर्दार हम में बनी ही रहनी चाहिए। उनका जीवन हमें को शिक्षा प्रदान करता है उसको उन्मुख रखते हुए उत्प्रापुर्वक आगे बहते बहे जाना चाहिए तह में हम यह का, देश व विकर का रन्ताया है। आशावारी कमी जिराश नहीं हमा करते।

## त्रार्यसमाजों से निवेदन

जनपरानापार ता गणपपन यसक आर्थसमाजों की सेवा में यू चनार्थ नेवहन किया जाता है कि जो समाजें अपने वहां कथा, करवर, यहा तथा श्रभार आर्थित अर्थकेकर स्वचा नाहें ने शीम ही 'आर्थ आर्थितक अर्थकेकर स्वचा नाहें ने शीम ही 'आर्थ आर्थितक अर्थने शीमस्य की विविधें निष्टियत कर लें।

> खुशीराम शर्मा वेद प्रचारक समिन्दाता

# \* सकत त्रार्य जगत करे त्रभिनन्दन 'हंस' तुम्हारा

(श्री रमुवीरसिंह वर्मा 'साहित्य रत्न' अञ्यापक डी.ए.वी. हायर सें.स्कूल करनास) दयानन्दको पुण्पवाटिका का या सीचन द्वारा।

'हंस' हंस सम घवल बड़ाई इस में जीवन घारा।। ये दिला मूर्ति सख-बयस्या और स्वाग की कानुसम ।

बात्वर द्वानन्द के शिक्षों में निहते सर्वातम। मतुष्यता के परम दिवेष का करहे रहे हरदम। महान कालम विवादानी थे वो नद क्षेत्रका

इतने महान, पर अध्यापक ही रह कर किया गुवारा ।।१॥ दीन-दीन दक्षितों की दशा लख द्रवीभूत हो जाते । वीदिन, विध्या, अभाषों की अवस्था पर भीर बहाते ।

पीड़ित, विधवा, अनार्थों की अवस्था पर नीर वहाते। गोरों ने बन्धन में डाली थी आवादी माता। था उर पीड़ित, किसी भाव वे दो आवादी चाहते।

था डर पोड़ित, किसो भाव ये वा आधारा चाहत। परस-द्यालु (वर्ष-धुरेन्द्र वसका (हिन्द्र सिठारा ॥२॥ सर्व गुप्पों से युक्त ईस्ति प्रतिसाशाक्षी सुन्दर।

युवक गर्यों का भार संभाक्षा

भटक रहे ये जो

नहीं देखने में आधा का परेश सामय मूपर। इस्त-स्थानका भारत बहुआ हुआ पड़ी है लाही। का कर फिर से हुँस ! बात की गोह करो हुरियाही। सक्स आप जपन करें अधिनस्था 'हुंस' तुम्हारा।[३]

### महातमा हंसराज जन्म-शताब्दी (रचयिता-मणेशदत बार्य वानप्रस्थी दिल्ली)

(रवायता-भाषायता लाय वानप्रत्या (त्रत्या)
श्रार्वे जार्ति की उन्तरिक हित हाहर श्रीर सांव यांव में बीचन का सबेस दे दाका स्कूल कीर कालिज खुलवाय आर्थों में शिका फैलाई बगानन्य के सिद्धांती के

विच्य देवता इंसराज थे कार्यो उनकी जन्म-राताटरी कार्य कार्य के रक्षक प्यारे काय मनाकर शान बहाको उनको राष्ट्र दिसाई तम में सास्त के कोने-कोने में

वेह झान की क्योति जगाओ

# महान्वती श्रीर दृढ्संकल्पी

(ले०-श्री स्वामी सोमानन्द जी, सरस्वती गुरदासपूर)

महास्मा इंसराज जी वह सच्चे नेता ये। हा सक चटान के समान ये। सनस्य को इ.सॉ.व **इ**क्षापत्तियों में से गुजरना पड़ता है। साधारण पुरुष 🖅 दुःसों से घदरा जाता है, किन्तु महाम् द्यारमा इन इस्कों का ईस २ कर सामना करता िहै। श्री महारमा इंसराज जी को खपते जीवन में **कडी वरीचाओं वर्व विपन्तियों में से गुजरना** पडा। ंडन के सर्पत्र भी वल राज जी को फांसी का हरू**म**, बिद में सात वर्ष कैंद्र में वयदी ती, श्री बलराज जी के मुक्टमा के अवसर पर धर्म परनी का देहाना हो गवा-फिल इस महानुत्रती और इंड संकल्पी महात्मा है इन तमाम बांपतियों को परमात्मा की छोरसे समभा कर इंस २ वर सहत किया। इत के चेहरे पर दःख की रेखा तक न झाई। इत का मारा जीवन संपर्वे का जीवन था । अरी जनानी है हरीबी का इन घारण किया तथा निर्धनता है ही भागव प्रसन्त रक्षते। यह सरका फडीर शस्ताना वार मध्यता रहता था। प्रवना सारा जीवन आर्य समाज और ही. ए. वी. कालेज के कार्यमा कर दिशा तथा हाण वस की बंबी प्रसम्बना से निजासा। यह ब्रदी लैशमात्र भी नहीं दोसा। महास्मा की महर्षि द्वातन्द के पक्के भक्त थे। बेड. प्राचीन आर्थ सम्यवा पर उन को पूर्ण शिवास या ।

**ጙጱ፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠**፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠ महारमा इंसराब श्री का न केवल मस्तिक ही वर्डवल या चापित उन के हृदय में जाति तथा देश के किए सच्चा प्रेम व दर्द था। यदि देश के किसी कीना में कोई ब्रापत्ति काती तो महात्मा हंसराज के बस्या वर्ष सहातमि भरे हिल में एक तहप वैद्या हो उस्ती थी। कांगडा का भुकरण, राज-पुताना का दक्षिक, गढवास, ब्रहीसा, ब्रतीसगढ़ तथा काइमीर के खड़ाल में, यासावार में सोपक्षी हारा किने सबे फत्याचार के व्यवसर पर अपने सेयक भेज कर उन के दु:ख निवारण किए आप इप्रमीर शरीब के वीच एक कड़ी थे। मोटे देसी कप्टे, दलवाड़ा का देसी जुना, दो जोड़ा ज़राबी में सारी सर्दियां गुजार देते। आपना दरवार सर के सिए सुसाधा।

सहात्मा जी में झारमसन्मान का मान भरा हस्रा हा। श्री क्लराज श्री के केस में हजारों रूपवी की बैलियां छाप के सक्तों तथा प्रेसियों ने पेश की परस्त होने से इल्हार कर दिया। सस्य के प्रकट करने में किसी से भी नहीं डरते थे। ही. र. वी. कालेज के जल्मों में अपने दृष्टिकीया की बडी उत्तमता तथा निर्भवता से पेश करते थे। यदि वन की रावन मानी आये तो लेशमात्र भी दुःखनहीं मानते वे । महास्मा जी वार्य समाज को हेमोक्रेटिक चर्च बहा हरते थे। वार्य समाज के हिंह में की वें कपने निकटतम सम्बान्धी व निश्चों की भी परवाड नहीं करते थे। वे वायरस के कमान कहर के साथ नहीं करते थे। निवाह में निजके की तरह बहान तो कुछ करिन नहीं। बात तो तब वें कि तफानों के मल मोड वेंदें।

महात्मा हंगराज बी के जीवन में चुन्यक के समान हंगरों के कपनी कोर शीचने की शक्ति मी। ऐशी शाक्ति से व्हें नवशुक्कों को कपनी कोर लीचने में एफत हो गये। इस में उनका तथ, श्राम भी काम करवा मा। इस व्योठि से कीर स्वीतियां असी। किन्द्रोंने कपने शुरू के प्रश्चिन्दों पर चल कर प्रभने जीवन की काहुनियां कार्यसमाज, वैदिक पमं, कालेजों, स्कृतों की हिन्द सी। मन्द्र, ताला साई श्राम, आचार्ज रामदेव, जिल्लिक बाल कप्प, कश्ती टेक्सप्, सा। गोक्तिय चन्द्र

महारमा हंसराज नया वै-महारमा हंसराज सफ्यें कर्मयोगी व वपानी थे। वे त्याग व बस्धिता की धश्रीक प्रतिमा थे। ऋषि द्यागन्त के अक्त थे आयेसमाज के सरगरमा विशानती थे, प्रशुपकत थे, आयंध्यमता के रोदाभी थे, द्यांदि दर्श हिन्दु संगठन के अवल पहणाती थे, दीन दुःखियों के हिन्देश थे, प्रकाश के सम्मा थे। उन्होंने का बार्यवाति की नत्या को भाव से निकाला। महानमा जी की मृत्यु पर आगरेती थन हिन्दुन ने गहिंदी पृष्ट पर

नारंग झादि कितने ही सहानभाव ये।

होनेक विका The Maker of Modern Punjab passes away, परमापे का निर्माण चला पंचा | कहारमा होस्साम में गम्मीरण शासि इट २ कर भरी हुई थी | गीवा २-०० का कक्क कन्यर पूर्व पटना है |

आपूर्वभाष्णस्यक्ष प्रतिष्ठं समुद्रभायः म्हाँ शन्ति बद्दत् त्ववृत्त रामा यं प्रविशन्ति सर्वे, स शान्तियाप्नीति न सामकायी। सनका श्रीवन परो-

परीपकाराव फलिक वृषाः । परीपकाराव वहन्ति नकः। परीपकाराव दुहन्ति शावः। परीपकाराव दुहन्ति शावः। परीपकाराव सिदं शरीरम् आप का जीवन सच्चे परीपकारी जहापुरुष

आको ! हम भी उन के निर्दिष्ट पर्यकी ही अपनाबीयन पर्यक्रतार्थे ।

# त्रार्य समाजों की सेवा में त्रावश्यक प्रार्थना

हवा करें :

संवीपराव मंत्री सम्रा

### 

# महात्मा इंसराज

(श्री ज्ञान सिंह जी नई दिल्ली)

पक कषि ने कहा है कि आकाश वर्षों दिन रात मुमता रहाता है तद जावर कोई मनुष्य, वास्तविक मन्द्रम उत्पन्न होता है। महात्मा ईसराज एक देसे ही सहामानव से । वन्होंने स्थाग का एक ऐसा उदाहरण कायम किया जो दसरों के लिए **ब्रा**पर्शे वन ग**वा ए**न्ड योग्य तक्य**प**क ग्रेसपट जिस के लिए करन सरकारी सौकरी के प्राय: समी क्षार सते ये और जिसके जिए सांसारिक ससी की प्राप्ति के साधन जटाना महिक्स न वा असने कन दृश्यास की भावना से प्रेरित हो एक मिशन की पूर्ति के सिवे गरीबी का बत भारण किया वह कोई क्षाधारण बात न थी। नवयवक ईसराज ने दच्य श्रेयी में बी. ए. की परीका में सफल हो कर कापने। समुचा जीवन ही. ए. वी. काहेब वा धार्यसमाञ की सेवा के खिये बिता एक कीडी जिये समर्पित बर दिया। किस सरह श्रुटोने अपनी जवानी की क्षमंगों को समस कर व भोग विसास के जीवन का सात मारकर खुशी से गरीवी और सेवा का बत शिवा और सारी भाग उसे निभाया। वह कोई साधारण त्याग नहीं, बासाय में महारमा ईसराज स्थाने स्थाइरस्य आप ही हैं। एक ही

पर किय ने कहा है कि बाकारा वर्षों दिन रात वार में हावीग खगाकर निकंकी तरह जह मरता सूनता रहनता है वस बाकर कोई महत्वम, सालविक निकारह की तरह जह मरता सूनता रहनता है, इसमों से छोड़ा होते हुए कर में सूनक करने होता है। महास्ता इंस्ताब एक मिटना प्रक बढ़ा परका है, परन्तु, बीवन पर्यन्त पेसे ही महासान वेश । इन्होंने क्या का किए कर हर रोज स्वन्य क्या करते जाना कोर करते व्याव कार्यक्र करने काल कोर करने काल के स्वन्य करने काल कोर साम के सिव्य करने वस्ता कार्यक से क्या कार्यक कारण करने एक से क्या कार्यक के स्वन्य करने स्वन्य के स्वन्य के स्वन्य करने साम से सिव्य के सिव्य करने सरकारी नौकरी के प्रायः सभी

वर्ड् लोग कुर्वानी करते हैं परन्तु व्यप्ते व वेगानों को देवड़ी क्रमणा देवली से नाराज होकर सर्वेदा शिकायत करते रहते हैं या कपने मानों से विचारिकर हो जाते हैं दिन्न सहारमा जी ने किशी मी हास्तर में कपनों व वैगानों की कमी शिकायत कर्ते जीवन में कह जी काण, दुलों व विपतियों का सामना भी करना पड़ा, परनु, दिन्ती भी क्षमत शिकायत का एक शब्द जी कभी जनने गुल से न निकसा। मारीशी की विद्यागी क्रमणनाने का उन्होंने बीर प्रयानाप नहीं किया, वा दिन क्रमणेक विपरीत परिस्थितियों में भी सदा संदुत्त रहे। जिस सकार करवा रसाग जाहान था उन्हों किया किया का स्वान रसा महान था उन्हों किया विद्यास क्ष

विपरीत परिस्थितियां कुछ भी अपने सर्ग से विवालित न कर सकी। भ्रापते त्याम का अपयोग स तो उन्होंने अपने व्यक्तिगत अधवा पारिवारिक काम के लिये किया और न संस्थाया जाति के इक-प्राधन के लिये। वेसी निक्काम सेका का तराष्ट्रस ग्रान्यत्र दंदने से बम ही मिलेगा। बर्ट पेसे बाबसर बाप अब कि वे शबनीति के बेद में भाग सेक्ट स्वाहि प्राप्त दर सकते है। परन्त तकोंने आर्थ समाज की सेवा को झपना लहर a जाये शका। एक बार पंडित सालवीय जी ने महारमा इसराज से बहुत अनरोध पर्वक रहा कि वे कक्क समय के जिये राजनीति के चेत्र में कुछ काम करें। दिन महत्त्वाजी ने उन ने बही कहा l कि उन के लिये कार्य वेत्र निश्चित हो चका है। ऐसी भी उनकी रद-निष्ठा । उन को डी.ए.की. काक्षेत्र से इतना प्रेम था कि उन्होंने अपने श्चमित्व को कालि*न* मध्यस्य में सर्वथा स्तो विया था। महात्मा में और कालिज में चाड़ीत संबंध स्थापित हो गय<sup>्</sup>था। कालेड को इसराध से चलन और इंसराज को कालेज से द्माता सम्भाग सर्वेदा इमसेमद था।

बहात्या जी ने जन-फरवात्व में ज्ञापन सेवा के तथा कीए पर बीच संस्थापी कोर हादि के किये सालों रूपने शानेगों से पर्यमित किये कीर क्या किये परमा जिस होनानारी का एपिय करानी बाजे करने है करोंने कीर जनके नेतृत्य में आपं समाज ने दिया वसकी दूर वहें बोटे ने ग्रुफ कंड से मर्रासा की। सही बात बाद है कि पर्यस्त कंड के बचोग में सन्दर्शन की बात बाद है कि पर्यस्त की बस्च समाज ने बस्च ईमानवारी की बाद जम गई। पंजाब गयमें तैन्द के सहरोग्ध मैन्बर सर जान मेनाई ने पढ़ बार क्यू बा कि बी॰ ए॰ बी॰ कांत्रेज खाहीर एक रुपये श स्वस्त कर राशि से इरना कांग्र निकाल तेना है जिनना दुसरे सोग हो रुपये से तेने हैं।

महत्या इसराव वी का व्यक्तिएत वीक्षव बहुत ही साहा था। वे सहर के बस्त क देशी जूरी पहनते थे। बहुत दिनों तक वे तीकरे दुनों में ही सफर करते रहें। एक ज़ोटा या मकात था जिसमें है रहते थे। अपूरे पर आकर तांगे में एक सवारी का किसाबा देकर से स्टेशन तक माते थे। ध्यावकर्त्रा एक साधारण समाज सेची मो ध्यनने पर पर हीं सक्तारी मंगवाता है चीर टेक्सी या धालम तांगे से कम में यात्रा नहीं करता। यब मुख धार्य समाज के बहलों पर कपहेरा हैन के लिये बाहर जाते थे तो कई बार सात आठ मीत वैदल बाश करते थे चीर कई प्रकारों पर फिलारा थी। सर्च कंपे पर चठा के आवा करते थे। 'साहा सीवन व कच्च विचार' के कमन कीने साशाल मूर्ति थे।

क कमन की में सांचाल मूंग था। आन द्वा है ने के दिलींगा में तरी हुए हैं, करोड़ों तथना समाज के करनाया के तिथे जब किय बार द्वा है। इस योजनायों के अफल स्वाने के विश् तथान, वर्षस्या,म्यरतिर रिपरिट, रहता व निक्शम सेवा की भावना, हैं मनवारी व मिनव्यवना कारि की बायद्ववकता है। नरकारी कोंचारी गया कीर समाज के क्षम काम करने वाहे वहिंग महाना। हैस्ताज का वर्ष्ट्रपुष्ठ कमने सामने रहता होई की कमनि की पुर चाह कुण कार्ये।

# त्यागी त्रोरे तपस्वी महात्मा इंसराज जी

\*\*\*\*\*\*\*

(कुं अरुए भी आर्था प्रभाकर, जीरा)

किसी भी राष्ट्र की संकृति, कार्य क्या सम्यक्ता का मूम्यांकन उस देश के बीर पुरुषों के क्याप्य स्थाग व बिल्डान को देख कर ही हो सकता है। संबार का दिखास इस बान का साची है कि समय २ पर को महासुक्त राष्ट्र, धर्म क्यों कर की हो रखा के लिए क्याप होते रहे हैं उनकी हम यक बहुत बड़ी उपाधि से सुरोमिन करते हैं जैसे कि, महास्था, सन्त, गुरु, काषार्थ एवं नेता। भीर करा चनकी महानता कर गान किया करते हैं।

धार्वसमाज रूपी घारकार के सूर्व अधिकर ; इयानन्द हैं हो तेकिन महान्मा इंस्टाज वी मी ; इस घारकारा में सिलारे के रूप में देहीरणमान हैं। कमका जीवन इसीकिए में प्त था कि उन में त्याग और उपाया कुट ? कर मरी हुई थी। उनका मारा धीवन और जादरी उनके साक्षी हैं। कहीने घरनी तपस्या के बल पर घारने जीवन को महाच बनावा और स्वार की राणित से वे दूसरों के लिए एक प्रकार सम्म बन गए। महास्या इंसाज की नियंबना की गोह में ही

महारमा हैसराज की निधनता की गाद म हा पक्षे तथा जीवन पर्यन्त जान बुमकर निर्धनता की ही अपनाप रखा।

महात्मा ती ने १८८० में १६ वर्ष की आयु में

गवनंत्रेंद्र काहिल काहीर में विधिष्ट हुए फीर थी, ए. की परीक्षा में पंताब में दूसरी में ही में रहे। जिल हिनों इन्होंने थी, ए. पास किया उस समय सारे हिन्दुस्तान में थी. ए. पास नवयुवकों की संस्था रंगिलयों पर मिसी जा सकती थी। ऐसे पुवकों को सेंक्सों रूपमां की जीकरी सकतात हो मिल जाती थी। हैरिकन महात्या जी ने D.A.V बहुत के लिए सेंक्सों ह. का त्याग कर प्रथान समस्स्र जीवन करवेच हर दिया। इस परिस्थिति में नवाराना जी का वह अपूर्व विवादन करवन्त्र इस्तरानी जी के

ह्याध्यान है।

1885 में डी. ए. सी. हाई स्कूल कायम किया
गया। महात्या हंस्यात्र कस के प्रथम हैवसास्टर
बनाय गा। वस समय के गयनीवेंट हाई स्कूल के अंग्रेज हैवसास्टर ने कहा था कि ग्राह्म पगाही बाला वेवक्ट्रक नीजवान क्या हाई स्कूल कला सकेगा ? मगार हंस्याज जो ने दो वर्ष में ही हाई स्कूल को कालिक बना दिया। क्य समय केवल हंसाइयों के या सरकारी कालिक ही थे। सी. ए. सी कालिज की देखा होली हस्लामिया सालसा कालिक मी स्थान मारम्म हो गय। मगार कर के सिसीचिल क्षेत्रेज थे। भीरे ए की. य. सी. की।

कालिंड साहीर का यक आदर्श कालिंड बन को भी भेजते। श्रुद्धि आंशोसन, अञ्चूतोद्धार, गका और महास्म इंसराज जी ता नाम द्र २ तह फैल गया । महात्मा जी ने कापनी सरगर्मियों

को यहीं तक ही सीमित नहीं स्ला वस्कि पंजाब भीर दिश्जों के भिस्त २ स्थानों पर ही. ए. वी. स्कतों. कालिकों तथा आर्व संस्वाओं की स्थापना

स्याग की साद्धात प्रतिमा, मानना एवं सारगी का सजीव चित्र, निरिधमानता के खादशे जगाना है। तभी अद्वास्था जी का जन्म दिवस देवता हंसराज का जीवन अनुकृत्स्वीय है। वास्तविक रूप में मनाने में सफल हो सकेगा। कालेज का प्रिसीपल होते हुए भी चार के सासिक किराये के मधान में रहते ये। रहते का एक छोटा

कर्सियां और बस । क्यडे मोटे और खदेशी। सीधा सावा पायजामां, बन्द गही का कोट, कवह साबद सी पगढी-अन का वेश था। उन्नत विशास कालड इवेत वर्षा, लम्ब चेहरे पर भव्य दाही, ऐसे

समस्य था, मानो कोई प्राचीन दुग का देवता हो।

सा मकान, सकड़ी का तस्त पोश, दो दृटी हुई

मातासा इंशराज प्रभ के परम विश्वासी थे। जब कहीं बाहर आते जाते वे तो जात्र विस्वानि देश सवितुर्देरितानि पराक्षतः। वर्मद्रं तन्त जासुरः। मन्त्र पद्म करते थे । यदि कोई मित्र श्रथवा सम्बन्धी हो भी विश हरते तब भी इसी मन्त्र का पाठ किया

· अहां कहीं भी भूकरप काया, ककास पढ़ा नहीं क्षा का कर भेता सरते। तथा आर्थ सेवकी

कारते थे ।

हरिजनों की उन्नति आदि सब का वही श्वीवन या।

चाहरे, हम महारमा जी के जन्म विकस की सनाते हुए इस संकट कास में अपने देश की सीमाओं की रक्षा के क्रिय अपना सकेला आर्थिश

इस्ने की प्रतिका करें। सहास्ता हंसराज जी का नाम ही इंस नहीं, बासल में वह इंस ये । उस इंस के हृदय में जो एक तहप अपने देश के प्रति थी कात उसी तहप को इसने ऋपने इतद में

### श्रावश्यक सचना

जिन प्राहकों का बार्षिक चन्या आयेल सास में समाप्त होता है। उनकी सेवा में बातरा शकरा पत्र भी सिखे गए हैं। उन से प्रायंना है कि अपना चन्दा १८ अप्रैससे पहले पहले कार्यासय में पह वा र्दे । प्रभ्यका ८ गई का झार्ये जगत सनको वी. पी. हारा ६ हपये ७२ नये पैसे में भेजा जाएगा। जिस

हा प्राप्त दशता उनका धार्मिक करेंव्य होगा । सैनेजर, आर्थ जगरा सिविल साइन, शासम्बर शहर

पत्र ज्यवहार करते समय श्रपनी प्राहक मंत्रमा श्रवश्य तिस्स को

# महात्मा जी का प्रचार कार्य

(ले०-श्री देव:नंद जी श्रार्य विद्याय सम्पति कादियां)

बंह सीभाग्य है कि आर्यसमाज के एक वेद-धनी ने जाये शिका को डी. ए. बी. संस्था से बारुष्ट किया । स्वास एवं की साक्षान व तथा सपने - **इंसराब में** छा गई थी। कार्लाइन ने लिखा है. A great man shows his greatness by the deeds he treats with little man. अर्थात महापुरुष वह है जो जन-साधारख काव करके कार उठता है। सहास्मा जी का घर बज्रवादा में बहस बदा तो नहीं था। मामली फर्नीचर था। परिधान देशकर कोई अनुमान नहीं कर सकता वा कि वे जिसीयस है। उनका सदय वैद का प्रचार था। सद कार्यों को छोड़ हर वे भाषक देने को तरपर सहते थे। मनध्य की पडचान चास से नहीं प्रत्युत काम से होती है। हमराज ही हैसी ने भी नई इस वन्नी दिए। शिक्षाका विस्तार जित्तका है, सब उस देव का प्रताप है। आओ, कांग महारसा ईसरांज के उपदेशक पहल् धर विचार करके देले कि हम उस देव का ऋण चुका

कहें देह प्रचार की लगन का ध्वान नवी भेशी में पहले हुए काया। न जाने एक ईसाई मुख्याध्यापक की बसंगत वातों को काटने में जो मिश्रीकेशा इस गुवक इसराज में बाई वह किंग दे

सकते हैं या नहीं ?

श्रम कर्मे का परिकास थी। जटा बांध कर श्रन्म रमाना मामुक्ती बात है, घर छोड़ना भी आसान है। किन्त वैद्यवार के लिए जीवन के रोम २ को दीपक की बनी के समान बलाना बंडा कठिन सा प्रवीत होता है। यदि कहा जाए कि धार्प शिचा देने के लिए उन्होंने स्कल खोले. उनका सामकरण करते हर दयानंत व व दिक शहर बीच में रखा तो भूदी बाव नहीं होगी। धात इन छात्रनियों में आसाना से आये युवक तैवार हो सकते हैं। इ'सराज ने जवानो मस्तानी को बार दिया । सुर्खी को तिलांजिल दी व आपने सिशन को सफल किया । अब भी भारत में विशा-प्रमार का कारण जाना जायगा. तव निक्वय ही महात्मा जी का नाम बाएगा। इदि इह रहा है :--

विशासी दिव्य द्वेशित तुने वहां जलाई इन्हान की निशा की तूने यहां मगाई

### श्चार्यसमाज सांबा (जम्म)

१ से २ इप्प्रैल ६४ नह सभा के भक्षतीक. कुथर जगतराम जी व वस्तीराम जी पशारे स्त्रीर बेट प्रचार किया गया, जिसका जनता पर अच्छा श्रभाव पडा ।

२१, २२ अप्रैल को सांवा कार्यसमाज का २४ क्षे प्रकार पहला वार्षिकोत्सव सम्पन्न हो रहा है सभा के प्रवारक प्रधार रहे हैं । वेद प्रकाश वर्मी सम्बी समाज्ञ।

# 

### श्रद्धांजिल गीत

र्द (श्री हरिस्चन्द्र जी 'निस्तन्द्र' शास्त्री एस०डी०ए०एस० एच-एस स्कूल जालन्वर)

तज् —नगरी-नगरी डारे-डारे .....

इंसराज के चरलों } में पहुंचे मेरी शडांजलि। जिसने अपने बीवन की असली संजिल पहचान ली। इंसराज के चरलों में.....

 श्रेष्टरान है विशा का यह, वेदों ने कतकाया है। तन-मन ट्रेक्ट इंसराज ने इसको बही सिखाया है। सारा श्रीवन डी० प० बी० की सेवा जिसने ठान सी॥

इंसराज के चरवों में.....

प्रेजुश्ट को उन्हीं दिनों में बड़ी नौकरी मिलती थी।
 पर समाज की दशा देख टसकी भ्रात्मा दहलती थी।
 सरकारी सर्विस दुकराई सुख समाज की आज स्ती।

इंसराज के चरखों में......

इ. बी. ए. बी. का शिक्षा-बागर ठाउँ हरस् सारवा। जग का हर कीना ऋषिवर की बब जबकार पुकारता। सत्ता आर्थे समाज की शिक्षाचेत्र में सब ने मान सी।

इंसराज के चरणों में.....

४. कागर हॅब के गुण गौरव की सच्ची बाद मनानी है। तो श्रीवन में त्यान भावना हम सब को क्रपनानी है। क्यों "निस्तन्द्र" कामी से यह तन्द्रा की चादर तान ती।

उस सहारमा के चरणों में नत मलक श्रद्धांबित । जिसने अपने जीवन की अससी मंजिल पहचान ली।

# डी.ए.वी संस्थाओं रूपी उद्यानके उद्यानक महात्मा हंसराज

(लेखिका- सदेश कुमारी जी रेलवे रोड करनाल)

माली बाग तगाता है। बहुद परिश्रम के साथ जी को तो परोपक:रसय जीवन पसन्द था ! ऋ।पने रस में समाप हुए पौधों दा पालन-पोषण करता हैं। बड़ी पूर में जन की गोड़ाई करता है, पार्न दे दिया। देशा है इधौर एवने कठिन परिश्रम के पश्चात उन ही, ए. वी संस्थाओं का इतिहास इस प्रकार है के मध्र फर्तों का आस्वादन भी करता है। परन्तु, यदि उद्यानक के बाद में उस उद्यान की कोई देख-भाल न करें तो जो अवस्था उस उद्यान की होती है बही घ्रवस्था आज थी.ए.वी संस्थायों की हो रही है। डी.प.वी संस्थाधीं रूपी बाग को कई बागवानों

उद्यान खर फता-फला। इस उद्यान की उर्वरा भूमि ने भी कई धार्य बीर पैदा किए किन्तु आसात्र परिश्रम के ब्रासाव में वह उर्वरा सूमि भी उत्तर वनती जा रही है।

ने मिल कर लगाया। उन्हीं की छत्र छाया में यह

सहातमा हंसराज भी उन उद्यानकों में से एक थे। बाज बन की जन्म शत.ब्दी है। इस सहाज मेता का जनम १६ अप्रैल सन् १८६४ में जिला इशियार पुर के विज्ञवाङ्ग नाम क्ष्मा में हजा। विर्धेनावस्था होते हप भी माता-पिता ने आप हो थी. ए. तक शिक्षा विसवाई। बी. ए. करने के

पदचानुकाष के पात क्रमीर बनने का एक सुन्दर **अवसर था। एश समय अ**मेजी सरकार भारतीय स्नातक को आंखों पर विहादी थी। परन्तु महातमा अपना सारा जीवन हो. ए. वी संस्थाओं को बान

कि सन १८८१ में लाहीर में डी. ए. वी विद्यालय की स्थापना हुई। सहारमा भी इस के कारैतनिक मुख्याध्यापक नियुक्त किए गए। उस समय सरकारी स्कृक्ष के अंग्रेज मुख्याध्यापक रटेन ने कहा था कि यह मूर्ले पगड़ी वाला लड़का क्या हाई ल्इल चुला सकेगा ? परन्तु महारमा जी ने अपनी कार्य दुशक्ता, योग्यता, निपुणता और प्रदन्ध-इकता से सब को चिकित का दिया। इस विद्यालय ने इतनो उन्नति की कि दो वर्ष में ही यह महाविद्यालय यन गया और सहात्मा जी उस के प्रधानाचार्य। आप ने एक आयुर्वेदिक सहाविद्यालय स्त्रीर भ्यौद्योगिक शिल्प विद्यालय की स्थापना भी की। सहाविद्यालय के बाधारण भी। प्रबन्ध इत्यादि का कार्यभार बहुन करते के साथ आप भर्मे प्रचार में भी पीछे नहीं रहे। बहां कही पीड़ित मानवीं की सहायता की आवश्यकता पड़ी आप ने बहां पर सहायता पहुंचाई। आप ने एक सहान् यज्ञ रचा, परन्तु इयानन्द्र महाविद्यालय के लिए किसी राजा का सरकार से सहायता नहीं ली। जब कि आज

ही. ए. की संस्थाओं को चहाते के क्षिप झून के कार्यकर्षा बड़े २ राजकीय प्रशिवकारियों की सूठी प्रश्लेष कार्यकर्षा पढ़ने पर ऐसे कार्यकर्षा वन के विकट्ट अपनी स्थलन आवान वहा सबसे हैं।

जिस बहोदन के लिए इन संस्थाओं की स्थापना की गई थी, आराज वह उद्देश्य पूर्णनहीं हो रहा। उस उद्देश्य पूर्ति के लिए तो महात्मा जी के समान त्यामी सवस्वी कार्यकर्ता चाहिए, तभी बह उद्यान फतेया और फलेगा। धात उनकी जरण जनावरी के खबसर पर हमें उनके उपदेशा-नशार, कि "बच तक हम अपने पावन ऋहण्डान मैं अधिचल हैं, तब तक हमें यह भय नहीं कि प्रमारे विरोधियों की शक्ति कितनी प्रवस है.' कार्य करता होसः । क्राय को विदेशी सम्यक्ता से इतनी क्रमा भी कि आप लिखते हैं, 'पश्चिमी सम्बवा श्रीर भारतीय संध्वता में आकाश पाताल दा भगतर है। कोई व्यक्ति झाक्स फोड झौर कैन्त्रिय का विदेशी सार्टिफिकेट प्राप्त करने से विदान नहीं यन जाता। बदि स्त्रार्थ केवल ऐसे प्रमाशा-पत्रों की क्योर च इ.ए रहेंगे तो वढ अपनी मृत्य को स्वयं श्राष्ट्रात करेगे । क्योंकि अपने घर की आग लगा कर इसरे के सहलों में कोई भी सखातात नहीं कर सकता । क्राये सभ्यता हमें सरखता तथा सत्व-प्रियता सिस्नानी है। विदेशी लोग डमें फेमन के प्रजारी, कटिल और पश्चपाती बनाते हैं। यह बा सतका स्थासभ्यता के प्रति क्रमराग । हमें उस के चरण चिन्हों पर चलते हुए और कार्व जाति को

मिसिंद इसी हुए अनुसार है हवा बंदीनवारी, खाणी, सम्पन्तिक, क्रमेंह, क्सेसीर, बाईबीर सद्दर्भि है सैनिंद ऐसा का सकेंग्रे

## दयानन्द-वचनामृत

पंचा चादि ताम इहा, पिक्षता, सुक्ष्मता, कुमें और कटरार्थन ची ताहितों के हैं। इनमें भ्यान करने से-क्रथ-स्स करने से उपासक के सारे उन्म दूर हो जाते हैं। उपासना-पारस्या नाहियों हारा ही करनी पढ़नी है। इहा और पिक्षता ये दोनों नाहियां जहां सिजती हैं जस संगम स्थान का नाम हानुस्ता है उस संगम में स्नान करने से योगाभ्यास करने से उपासक जन ग्राह्म होग वाले हैं। उर्गन्दर प्रस्म प्रिक रूप प्यास्त्र देन को पाहर सदा सामन्द में रहते हैं।' (स्वामी सर्यानन्द जी)

# राजिस्थान के कुलचन्द्र गांव में नई श्रार्थममाज की स्थापना

समा प्रवारत की प्रमुख्यक ती व हरिनवप्र औ के पुरुवार्थ के एक से १२ मार्थ तक बेद श्वार होता रहा और आवेशमाज की स्वापनाओं गहाहस अवस्य परस्ता को सामी ज्या समेद बेद श्वारावर्ष (००) दान मिर्जे तथा और यन मे नेने को काश्वासन दिया। जवाद का प्रमाव गाँद के निवासियों पर बहुत

# भगई में चार्यसमाज की श्रगति

(ले० श्री राजपास जी प्रचारक चिमटामंडली) पंजाद का यह से बटवारा हुआ तब से सभाओं का सेश वेषक वसे खने पंजाद में श्री नहीं अपित

यू पी सी. पी. राजस्थान विकार जीत बक्ता से भी कथीन जहाँ र भी पंजाबी कियी तथा कारीबर के सामन की सामन के सामन की सामन की

ष आयं शदेशिक सभा जालम्बर से विशेष नाता बनाए रखा और समय र यर अपने सत्त्रको सं इ.पने बशाव से इधर के प्रचारक बुला कर वहां की स्थानीय जनता में एक नई रूड फ'वते रहे सुर्भाषे हमारी भंडली भी प्रति वर्षे एंडाव से बाहर प्रांशों की वडी २ समाओं में बाती ही रहती है इसी नाते वहां अपने साथियों के बोश को देखने का अवसर मिसवारहता है। साननीय समा के क्राधिकारी वर्ग विशेष रूपेण श्री पं० खुशीरास जी अधिक्टाता इस के लिए घन्ववाद के पात्र हैं जो बाहिर वैठे हुए उन सिक्षे को सहयोग देकर उत्साह बहाते रहते हैं पिछते स्डे दर्शों में निरन्तर श्री पं विश्लोकचन्द भी शास्त्री महोपदेशक श्री पं क्षींग प्रकाश जी काथें कीर हम लोग उन्हीं सभी प्रीतों में जाते रहे इस बार भी हमारी संडली को पुनः श्री रघुनाथ जी अमृतसरी जो आर्थ समाज के

खाँ मानों में दिशते और पश्चाने हैं कनकी तथा भी क्षोंकारताथ भी शृतकारीताल को भी में रखा से बम्बई गोरेगांव के करताव में बाना पढ़ा इस बार भी रचुनाथ बी का करताह और भी वहा चढ़ा देस कररोक महादुमानों के स्वित्तरक और भी ध्वावी परंवारों कया सिंधी परिचारों की सेवा में कापने महरा प्रभाव डाला भी रचनाथ श्री व ऑकारताथ जी दंश शृजुवराहाल और बचदेव सिंधी प्रभाव सेन्यूर वर्ष की प्रमुदशाल जी गुलारी सकतों के नाम कनकेवारी व हैं।

श्री रधुनाय की का तो उस्साह देखकर इनक पराना समय अमतसर बाला स्मरण हो आता है जबकि लदमयासर के कमेवीर की पं. स्टब्स औ श्री गुल्लारीसास जी धर्मपास जी बी. ए. युवक संघ के सिपाही रूप में दाये दरते थे अन्तः ? इत दिनों भी दिवानचन्द जी साहती के ईशादास्त्रम् परिवार में ६क विशेष उत्साह देखा ५० माला सभीला धर्म पत्नी श्री दिवानचन्त्र और शिवराज देवी धर्म पत्नी श्रा क्रोंकार नाथ जी साटुंगा बालों ने तो सचस्य आवसमाज के पुराने युग को बाद करा दिया धन्य हैं इन देवताओं के परिवार जिनमें कार्यसमाज की अभिट छाप है सो इस बार जाकर वस्ततः अपने को यह नई प्रेरणा मिली कीन इहता है आर्यसमाज लक्षम हो गया जुरा आईए इन परिवारों में आपको आर्थसमाज का सही ऋप देखने को मिलेगा अन्त में से इन परिवारों के लिए परम पिका से श्रम कामना रखता हुमा इन्हें

## वेदकौर श्रार्थ क्न्या हाईस्कूल कादियां का उज्बल कार्य

ही, प. वी. कालिय मैंनीईना कमेटी की कार्य विद्या समा की कोर से जयाहित पर्मे शिक्षा परीका को कि लड़ी भेची से दसवी तक प्रतिवर्ष सारे पंताब के क्लॉ में होनी है, सफल काल जात्राकों को पारिगोधक दिय जाते हैं। इस वर्ष वेद कौर काल करना हाई खूल की दसवी भेची की लाजा शी देवी आर्यो सारे पंताब में प्रवन स्थान

हैक्ट अपने थिय रकूब का नाम उन्तरक्ष किया है। इसके कविरिक्त इसी रकूत की इसकी लेखी के झाताओं ने इस इनाम तीते हैं। इस स्टक्तता के क्षिये सुक्याच्यापिका तथा इनहां स्टाप्त बचाई का पात्र है। ——व्यवस्थापक

चनाई देता हूं भी रपुनाय जी का व वर्गास्त करा हुन अध्वता के अपवाद करता हूं जो इतनी हुन दें वेठ क्षुण गांदिशक करता हूं जो इतनी हुन रखते हैं इस बार भी हुने मार्ग क्ष्य ति के प्रतिहेस्त १०११% गोरे गांव समाज २४०) भी फ्रोंकारनाय भी मार्थ मार्थ गांव बोर्न ने रेट के भी साहनार की साथ भी देश भी साहनार के जिए भी साहनी रिवासपन्य जी ने देश वार के जिए भी मार्थ मार्थ भी साहनार के जिए भी सहनुमांची से प्राप्त हुए मार्थ कुए तर हरें वाकी भी समाज वेदन वार के जिए से साहनों से प्राप्त हुए मार्थ के स्वर नो से भी सामर्थ वेदन वार के जिए से सामर्थों वेदन वार के जिए से सामर्थी सामर्थ की सामर्थ सामर्य सामर्थ सामर्थ सामर्थ सामर्थ सामर्थ सामर्थ स

### श्रार्य समाज पुरानी मंडी जम्मू का साल्विक दान

ष्णाय समाज पुरानी संब्री जन्मू के सकतों भीर माताकों बहिनों हा हाहिक क्षयवाद है हिंगोपतः ५० हरिहचन्द्र जी शास्त्री पुरोहित क्रियोंने क्षपना क्रमुल्य समय देवर सेरी आर्थना पर बेद मजाराय संग्रह पन दिया। जन्मू के देवी देवता नवाई के पात्र हैं। वेद अवार से उनका ष्याप्य के किये ही निजन सकतां और देवियों ने वेद अपार के किये सहयोग अवान हिया।

शकुन्तला देशी भी ६०) रू० मोहनलाल जी मोत्याल १२) "

सोपाल कृष्ण जी १२),, माता चन्दन देवी जी १२),,

वेद बी १२),,

कमलाभी १२),,

बाबा दुसहरा नाथ जी १२), सोहनलाल जी नार्रग १२),,

हंसराज जी तनेजा १२) ग

**मुशो**ला **बी तु**ली १२) ,

राज जी १२) ,, मुल्कराज की सैनेजर १२) ,,

भगवती देवी जी १२),, बाट कर्म कला जी १२)..

महा॰ दर्भचन्द्र जी वशील १२) "

तेत्रराम जी ध्यवरोल १२) ,, चंचल कमारी जी १२) ,,

कविसात विष्णु गुप्त जी १२),, रामेश्वरीदेवी जी १२),,

खुशीराम शर्मा वेद प्रचार अधिष्ठाता

# श्रार्यंसमाज चेम्बूर का प्रस्ताव

चेन्द्र के झार्य तथा (इन्दुओं की यह सावे-अतिक समा वृत्री पाक्तियान के हिन्दुओं के वोजना-बद्ध सरोध और उन पर हो रहे नाना प्रकार के फारवानारों पर हार्डिक होम और रोण प्रश्ट काती हुई इस झमानवीय हान्य की घोर तिथा करती है।

पूर्वी पाकिस्तान कि हिन्दुओं की रक्षा और पुनर्वास की जो कार्यवाही भारत सरकार द्वारा हो रही है उस पर यह सभा इसस-तोष व्यक्त करती हुई उसे युद्ध स्तर पर करने की प्रेरेगा करती है।

बहुसमा भारत सरकार को विश्वास दिसानी है कि पूर्वी पाफिस्तान से आने वाले हिम्दुओं की रक्षा तथा पुनर्शस के कार्यमें अपनी सरकार की आपों किन्द्र जनता परा सहयोग वेगी।

> आसः नन्द सन्त्री धार्यसमाज चेन्द्रर

# दयानन्द श्रह्म महा विद्यालय, हिसार

हैसराव पुलाशताब का वर्षणाटन २५-६५० को सेट मोहनवाल अपनाय हिसार निवासी के बर-कमतों से सम्पन्न हुआ। उद्पाटन से पूर्व वह को मूर्णाकुरित सेट बी के बरकानतों से सम्पन्न हुई। नतार के प्रतिरिद्धा नर-नारी इस घवचर पर उपरित्य में। भाराये भी ने विचालय सम्बन्धी वह दश की थोर सम्बाध जान फाइड किया। बाल मेरे की भी ने विचालय के प्रत्य की मरांसा इस्ते हुए विचुल मांगों में बहावा देने की मत्यान प्रकट की।

निवेद्ध--

राम विकार

### श्रार्यसमाज श्रीगंगा नगर दा चुनाव

प्रधान—भी नारायण राम भी द्वायं, उपयान— भी हेमराव वी रामां, बां जुहीराम जी, मंत्री— भी हिमत विहु जी, उपमंत्री—भी गागाराम जी पड़बोंक्ट, भी रिस्तरारण भी, क्षेत्राव्यह— भी चंद्रसात वी गुण्य, बलु मंद्रारी—भी सेवाराम का कार्य, सेसा निरोक्च—भी इंट्यर बन्द्र सी गुण्या। कियन सिंह मंत्री समान

# थार्यक्षमाज असनूर का

वार्षिकोस्सव विश्व २६-२०-२१ मार्च को बड़ो सफ्सवा के साथ वरण्य हुआ ! कस्सव से पूर्व विश्व २०-२-२४ से ४. कोश्म प्रकारा जी आर्थ प्रत्य-१-४४ से ४. कोश्म प्रकारा जी कार्य सहस्कती प्रवारी हुई थे! विश्व २४-२२ मार्च को पीनी प्राम में प्रभावशाली प्रवार हुईया।

१%-१-६% से २०-१ ६४ तक पूजा रंज भी की वेह क्या होती रही। २०-१-१४ से दूबा वंज्या होती रही। २०-१०-१४ से इती के भ्रम्भ होते से तथा से दीन किया स्थाप में सामित्रीका हो कर क्यांबेक्सा के में मा परिचया सिंगा में सामित्रीका हो कर क्यांबेक्सा के में मा परिचया सिंगा में प्रमाण की को क्यां है तथा में मा परिचया सिंगा में प्रमाण की को को क्यां है जा है। वहां साम से भ्रमिक क्यांबे भी स्थाप से मा प्रमाण की सिंगा सिं

# सार्वदेशिक श्राय पतिनिधि सभा

# नई दिल्ली-१

कारा है कि कापने सावेन्द्रिक बार्च प्रति-विच सभा के निर्देशानुसार १२-६४ को अध्वतः भारतीय पूर्वी नैगात दिवस सनावा क्यीर धन संग्रह किया दोगा।

कारम्म हो गया है। करन, नाज, लाने पीने के सर्तन काहि पीहिलों में पितरित किय वा रहे हैं। मांग दुननी है कि कमकी पूर्व नहीं हो रही है करतः काष कपने चेत्र के सभी विचारों के हिन्दुकों की सहायाना इस महान कार्य में भाग्य करें और विकला धन और नक्त प्रकाशन हों जह पुरस्त सावेहरिक कार्य गतिनिक समा रामशीला सैदान नई हिल्ली

सान्द्रातिक रिलीफ का कार्य कलकत्ता में

कत्तकला में आयं समाज रिलीफ समिति को धन की पक वड़ी राशि मेज दी गई है और भी ६न शीख भेजना है। रामगोपाल सभा मल्ली

# केन्द्रीय त्रार्थ सभा, त्रमृतसर

वन ननाग पूर्वीय कहाता (पाकिस्तान) से कई मास से हिन्दु भी रर तो पारातिक करवा बार क्योर कंपावार हो रहे हैं, यह कसका कक्या तक पहुंच चुकने पर भी हम झात वह सांति पूर्वेड देखते रहे हैं, ह्यारी हिन्दु झों की क्ष्रता पूर्व हरना, लुट सार तथा देवियों के अपहरण को हरन किरास्त सुपनार्थ सुनते हुने भी सामोश केंद्र रहना एक महान पाय होगा, झाट आर्थ सार्वदेशक शिलारित समा की आजानुतार केन्द्रीय आर्थ समा अपहत्तर की और से पाकिस्तान से चलान निकाले जा रहे पीवृत्व और कसहाय हिन्दु झों, सिक्कों और ईसार्द्यों की सहारता के जिले वार्य आरस्पन कर दिया नवा है। यह महान वीवृत्व सह सह सार्वा कर्य कार कर के समिमिलत सहयोग से डी पढ़ों हो पहला है।

कतः काप से सानुरोध निषेदन हैं, कि आप रहवं तथा कपने समीपकों केद में वररोक आपार्थित एक माहैमें की राष्ट्राधवा के तिमे पेक्स से कपिक मात्रा में चन और बान कादि वर्षाक करके १६ कक्ष-नार लारम्बरोड व्याग्नसर में पहुंचाने ही कुमा करें।

# केशव यसू —प्रधान समा

# प्रस्तुत श्रंक में

हेसक व कवि महानुमाधी का हारिक धन्य-वाद है जिन्होंने प्रपने कमून्य हेलों वा कविवाओं को मेह कर सहयोग दिवा है। ---वयस्थापक

हमारा ओषघालय पूरे सतावन माल श्रर्थात् १६०७ से जारी ह श्रोर वडे परिश्रम और ईम.नदारी से जनता की सेवा कर रहा है । यहस्त्रों व्यक्ति लाभ उटाव्हर हमारे औष-धालय की उन्नति के लिये प्रार्थना कर रहे हैं। जो मनुष्य एक बार भी कोई बस्तु हम।रे यहांसे मंगवा लेता है-वह सदा के लिये ग्राहक बन जाता है और हर महीने कुछ नकुछ मंगवाता रहता है। अपने इंस्टमित्रों मिलने कलने वालों को खरीदारी के लिये बेरणा करता रहता है। इन यव वातों का निर्देश हमारी ईमानदारी, अच्छा व्यवहार और उत्तम इकार की लाभदायक अध्या काम आने वाली वस्तुर्धं कम भ्रव्य में देने दर है। जीवन से तंग अत्ये हुए निरक्षा रोक्तियों को मश्वरा मुफ्त दिया जला है। सथ ही उन के ५त्र गुप्त रदले इ.ते हैं। यदि आप या ऋष का कोई मित्र या तम्बन्धी किपी समानक हो। हे ग्रहित है ता एक दत्र उ.ल कर हम से प्रपत मशबरा लें : मशवरा की कोई फीम नहीं ली जाती / पुरा क्रोर्स तीन शीशी के डाक्स वर्ष तथा विकी यदि अ।प लिखेंगे तो आपके रोग की परीचित व्योवधि वी० पी० हारा मेज दी जावेगी।

मैनेजर चन्द्रगुप्त श्रापशालय. न० ७७ टोइना बिला डिसार ।

कायापलट

इन गोलियों के सेवन से काया पलट जती हैं। शारीरिक कमजोरी चाहे कियी कारण से हो, इन के सेवन से दुर हो जाती दै ! दर्बल शरीर में नया खन पैदा होने लगता

हैं और बीले ग्रम्ब पर लाली आने लगती हैं। हर तमय का दर्द सिर, दर्द कमर, दिल का थड़कना, अभों की सुस्ती, काहिली दर हो । जाती हैं । दघ वी हडम होने लगता है और शरीर में पर्याप्त शक्ति हा अर्था है । समा-

शय की कमजीरी को दर कर के सटा के लिये घी दुध पचाने की शक्ति देती हैं। एक बार मंगा कर अदस्य आदम्यं। मृत्य ४०

गोली की शीशी केटल तीन रुपये उत्कल्प व विकी टॅबम एक रूप्या सत्तर नये पैसे ।

र्टब्स समेत ११) चार्ज किये जायेंगे। मिलने का बना--

चन्द्रगुप्त श्रीषधालय, नं० ७७, टोडाना जिला हिसार (पंजाब)

नये साल के काम की अन्त्री मुक्त मेत्री जाती है।





हैबीफोन व० १०४० [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक सुखप ब] Regd. No. एक वर्षक का सुरक्ष १३ वर्ष देते. वर्षिक जान के इस्के

वर्ष २४ अंक १७) २४ चैत्र २०२। गविकार द्यानन्दाब्द १४०- २६ अपन १९६४

(तार 'प्रादेशिक' जार

#### वेद सृक्तयः न ज्यायो श्रस्ति वत्रहरू

हे भगवन ! आप से बड़ा कोई वहीं है। आप नुजी को पाप के भावों की आपने बाते हैं। सब से जह न हैं चाप थी मार से, अटल निवसी से कोई भी वापी, ट्रैण्डमीं बच नहीं सकता। अधियानी डा झानि-सान समाप्त हो अता है। बाप से बोर्ड में सहत्त नहीं।

स्तोतृभ्य इन्द्र मृहय

हे ब्यासी ! हम सारे तरे सीता है, जयसक, सारायक है, तरे भक्त हैं । कृता करके करने करना जुने के, ताकरी की, मफी की सुक्त की सम्बन्ध से मानामान कर हो । जीवन में सुक्त का श्रमाप्त सर हो । दुन्न हुए करके सुक्ती, बना हो । क्रमा तरे ही हैं ।

, 📆 स्पार्ह तदाभर

हे आपन ! हमें देशा बन देशपं प्रशास करें, जो लाई दिसकी सब कांभितारा करें, पर्वत्रवा से मार्ग हम एक दिस प्रशिक्ष हो ! किया है या है प्रशिक्ष हो ! किया है या हम देश किसे कोई न पाई, देशा पन नहीं पाईए! हुई संज्ञ पन नहीं पाईए! हुई संज्ञ

### वेदा मृत

श्रथोपस्थान मन्त्राः

#### श्रोम् उद्वयं तमसस्परि स्तः पश्यन्तः उत्तरम् । देवं देवत्राः सर्यं मगन्यः ज्योतिरुक्तमः ॥

यजुः अध्याय ३५ मन्त्र १४

कर्ष :--(पात्र) हुए कर को गारी का (तथा परित्र परित्र करा कार से कार नवा (तथ) मित्र करात नवा जाना को (पायक्त) तानों हुए क्यूत्र करी हुए (पायक्) को गुरू वस्त्र में पेड है करा कारवारत में की तथा हक पायक्त भी यही बात है। वही (प्रश्न) हिस्स कुल हैने कोई स्मार हक थे (प्रश्न) में रेड में दें है हुए हैं। करेगाएक को (कारक) हुए गाय करें। वही (क्योंट) वस्त्रायक है वस्त्र (प्रश्मा) वस से प्रश्न करोड़ि है। वसी की हुए। विश्व से है

भार न- है निकांक । जान तकार करवार के रियं है में कर्म है अस्तरण, जीवनें दें। लागू क्रमण्या के में क्या का प्रकार कर है। नाम क्रमण में में क्या का प्रकार के स्वार का स्वार का स्वार के स्वार का स्वार का स्वार का स्वार का स्वार का स्वार के स्वार का स्वार क

#### प्रचित्रकाः

स विध्यु रेश्स बह विच्यु देश्सर । बही परनेश्सर विध्यु व है। नर्वन्यापक होने से विच्यु बहुसाता है। बह न्यापक प्र्यु से ही बीध सारी बामनाई पूरी हूं बनी को मानो हुई।

#### मांचना संस्ते । चक्रवर्ति शुज्यस

कापका राज्य चण्डली सारे विश्व की अनता स्वराध्य वथा सुराज्य की चिन्नी रहे। केंग्रें हमें प न यना सके। मानसिक इ न'वने इस चण्डवर्टि राज्

#### वसाद शाय करें। श्वनन्त पराक्रमव बह परतेत्वर शास

पराक्रमों का मरदार है, राष्ट्रियों का वहीं फेन्हू है की हार्क्ट के सामने कील बाद ठड्ड सकता है। का क्ली क्ल महाबस्तों के हार गये, कुछ न चली क

वर्ष गराभ्यियों को दासका वहां इसारा सामाजिक कारिक प्रता दिया, यहाँ कार जें न में भी इसानी सार्व र प्रथ्य आवनाओं की नीय की अक्षावनादियाः सौधीय बनी ani शासन की हरता के सिवे के उल्लंब बुक्त भाष्य कराये। में के पर्वा की की जगली, सहा-सिक्ष किया. वेष की गढ़रिकों . देशा दरने से उन के शासन अवें कांपक गहरी होती थी। के देवा करते में कल असरीय ातों की जासकारी भी कारण भी सब भी है। ऐसे सीगों की विषयक जो धारवाएं हैं उन रोम' शब्द के अर्थ विषयक भाग करते हैं तथा बहते हैं इ-युग में यह के बावसरों पर ह पीते थे. कान्य विवाहार्थ हवे (वसर्गेष् भी इस का प्रयोग भा । अभी के जिल्लामार्थ · सुद्ध सिका जा रहा है। सम्बन वेद में प्रकृषत 'क्षेमीम-आदि शब्दों को देख कर ही हों हैं कि नहा देने वाली नो ी हो सहसी है। परमा सामा । से वे सर्वाचा कोरे होते हैं। शब्द मदि हर्षे बात से बना बेस का बार्ष है हवें देने बाला ो। नशेकी काश्स्या में हुई होता, क्योंकि क्य तो सुब कुध जाता है जब कि हवें बहता में होश दिकाने होते हैं। र्देष का काश्यवस करने पर वर्डा का वर्शन मिखका है। कहते हैं ान से दोषाँचु, तेज, बल, बुद्धि होते हैं, कावा बल्य हो है उसकी सता होती है। पण में कमशः विधि के tc कक २ पक्षा sin । जगता है तथा सम्यापदा मे ल विश्विकार कील होता है। है

### व्यर्भिक चर्चा

## सोम क्या है ?

(ते॰ श्री पं. सत्यप्रिम जी शास्त्री सिद्धांत विरोमिल धाध्यापक :-दयानन्द ब्राह्म महाविद्यासम हिसार)

संस्कार विवि सामान्य प्रकारो

फ़िल यह, हुन्द, **सिस्ट**,

संस्थार विके सर्वोत्तर समे

सोमजता विसोय की ही कहते हैं।

इसका स्वाद करीला होता है, इसे

करपीस तथा नियोश्चर पीते हैं।

बार: इससे ही सम्बद्धाः इसे सोग्र

कटते डों । क्योंकि यह इवन सामग्री

में भी पड़ती है। बात: इसे औ

प्राचीनकास में कुट झानकर गी-

ट्रग्य के साथ बज़ाड़ि के झात्रसर

या पीते होते. यह इस्लब्स नहीं

है। कालावेंद्र में दोनों के शुद्ध सग-

सरा कराकर ही बताचे राज हैं। यह

काबाकस्य भी बस्ता है। शारीरिक

र्वात्र वर्ष प्राथमिक शावित तथा

सात्विक्या प्रदान करने में गिलोव

दत प्रमाओं से सिक है कि

ने उत्तराकश्व में की है। परन्त | earl कर वो प्राप्त नहीं रई है। ब्रायक द में एक बर्रेट सोमसता का सोमसता सर्वात गहरूवादि बीवधी' वर्शन है. विसे झाल दल विसेष वेह एवं कर्जी की विश्व-विशाहर कहते हैं। शह में विश्व-प्रमादा है। 'सोमवन्सी--गुबुची, सोमस्ता' **बाक्कान्यार्थ कीलम कोश** 'शोकनत्त्री - सोमस्ता - गिस्रोय' शतन्दा क्रमतन कोश 'शोबलग-गडची, गडची-गिक्षीय, गिक्षीय-

श्राप्री हिन्दी संस्कृत कोश ते भागित है। वे सोम से शराव बत्सावनी जिल्ल रुखा गुद्धकी

र्दाप्रकाम्ता श्रीवरिक्षा सोमवस्त्री विरात्या सध्यवर्षेदि । समस्कोरा (क्लीव(धवर्ग)

इसके अविदिक्त निम्न आये-प्रसाम भी है। 'दौधे रोगनाराक-सोमसका <sub>प्रमुख दे ही । श्रीवद्नि इसके पान</sub>

इपित नहीं है।

द्मर्थीत विक्षीय आदि औषधियां से हुई वर्षात् सारियक ज्ञानन्द की *፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠* दयानन्द वचनामत

'प्राथाशास-पूर्वच त्यासना करने से, कारमा के डान को धारत्य करने वाला बक्षान निस्य प्रति नष्ट होने स्थला है और ब्राल्स-सात मा ब्रमाण चीडे-धीडे सहजा चला चाल है। ब्रापने कारमा में तो भ्रानन्द-स्थलप कन्तर्यामी परमेरकर विद्यामात है, उपने स्वारं में विभावता ताथ दाती वर्णात्य । विसास गर्नात तीर में बढ़ाने वाका अब जेसे बार बार गड़री इक्की समा कर इपर बाला और नीपे अला है, देखें ही परमेक्कर ने बारनी बात्मा को बार-बार निमस्त करना मत्याना जांचय है। स्थान चीर चानद के बोन्य, कलबॉमी, व्यापक प्रशेष्ट्रकर के प्रकाशमय व्यानन्दमय स्वरूप में सर्वयक्ष विचार और परम श्रेम-अविस से उपासक को ऐसे प्रवेश करना पाडिक जैसे सरगर में उदियां वनेश बरही हैं। ध्यानकाल में ध्याना को काव्ये क्रोफ वरकावा के क्यांतरिका इसरी किसी भी बख्य का स्मरक-किन्छन करना

(लामी सत्यानम् भी)

प्राप्ति डोती है. इसी को वेब ने सब शम से पुसारत है। देद में भौतिक सोज के जिल शकों का विस्तृत कर्मन पदने हैं. वे सारे के सारे क्रामग इसमें शाप्त है, वह शेलक कानिजी इस्तुमय है। इस्तः पूर्व-बन्धारण है 🖟 सोवरस शब से क्लिये का रस कबबा सत्व डी पीने के काम में भाग होगा। वह शहा नहीं फरवा है। वह क्यम श्रीतिक सोम के विश्व में ती जानता चाहिए । वैसे वेद मैं 'क्षोर्स' शब्द से परमेश्वर को मी सम्बोधित विशा गया है E

### त्रार्थ समाज जलालाबाद

कार्य कराज क्याबादाद गर्थी फिरोजपर की कथा व वार्षिक जल्लाता. इसे १२ अधिक वस बस धास से सम्पन हो ग**थे।** समाकी क्रोर से पं. त्रिकोध चन्द्र वी रास्त्री तया ठा. दुर्गा सिंह थी तकान कथा पर पहेंचे। बाद सें ए. चन्ट्र सेन जी तथा थे. राज पा**स** मद्वमोहन की चिसटा संदर्जी भी प**ं**पी । खुद समारोह या । शतः कीर रात को दोनों सक्त्य प्रसार श्रोना था। र्रावकार प्राप्तः = बजे से ले कर १२ बजे तह देवीं के शक्तों से भारी यहा होता रहा म. सद्वतित् वी व्यायं विशेषपुर वालों ने भी लाप शोभा बी। जलाकाबाद में समाब के पुराने सहाराची भी बेंच काशीरास की तथ। उन के सारं परिकार ने वसी समात की सेवा की | भी द्वन्त साल अर्थ प्रधान, भी भवत शास थी सन्त्री को बा. फार्म जी बक्त क्षम्य सञ्जन बड़ो सेश करते हैं । जलता समारोह से बमाध्य द्ववा ध

वसस्य वचन

भाषा वोजने समय विशेकी बाद को सःवासाय भ्वान रखना चाविषक वचन सने द्यारे की शांति स्व**व**क्ष होने पाहिए । धीर बस बचन के 

श्चम्पादकीय-

# ऋार्य जगत

"बर्थ २४] रविवार २०२०, २६ अप्रैल १९६४ विके**१**७

### एक बडी आवश्यकता

सकायार कोर्ट में बाता है कि | कमरीका से पश्चम ने ओहा बार्य कामरीका से एक प्रोफीसरों का बोडा बारत में यत कः बास से इस विशेष पात को लेक्ट आया क्ष्मा है हि बार्य समात्र के क्सिएत क्यान्दोत्तन का पूर्छ परिचय शापा शिक्ष्या जाये। **उसके सम्बन्ध** में क्रस समयग आधी रही में समाज कें दिस्तृत कार्य का प्रानुबन्धान दिया जाये। तम उन से समाव **थे** बरिन्द सन्तर्गे से उन से प्रश कि ब्रावधा का से क्षा प्रवासन **१**—तो प्रश्तीने पत्तर विवा वि वड़ी विनिसिटी में अब मारत के गत शतो का विशेष करके समय २ पर होने वाले नावा कार्यों दवं अहारहाला को पहते हैं तो उस में ब्रावंग्रज्ञ का विजेश साम बाता है। नानाविध चेत्रों में भार्यसमात्र का नेतृत्व विज्ञा है। इसोक्षिप विस विशाल भान्दोलन का इतना व्याप ६ प्रमाय हो उसका अनुस्थान बरके परिचय पाना ब्रावस्थक है। हमी भाव है लिए इस स्प्रशीका ें को चल कर भारत में प्राये हैं। कार्यं समाज को समस्ते के किए ध्वके सारे कार्वों सा विकरण हम मे हेना है।

सना है कि वे दोनों समाज की वडी २ संस्थाओं तथा समाधी के कार्यासयी एवं प्रावकातवीं में मये हैं। बड़े २ तगरों में पत वे हैं यहां क्द कि क्वाहियों की दकाओं वर भी बाकर परानी २ किताबों को स्रोतते रहते हैं। आवस्त पार्क स्टान में नवे हैं तर्शक बड़ां से भी दवासम्बद सामग्रे श्राप्त की जा

देने के लिए प्रापती खोर किसी बोरब इस कार्य के उपयोगी एक हो सक्तां को लगा दिया है या नहीं? क्यार प्रानासाहित्य समात्र का थन को मेंट किया है। बदा बन को समाब से पर्शतका परिचित कराने का क्षान्त्रेण क्षित्रेण क्षानी वर बुता कर प्रवस्त्र किया है वा नहीं? बह ब्राक्तवय है कि वे जोशा जो हमारे समात्र का परा २ इतिहास जानने, जोजने झीर बेने इस्तो दर धे वस कर समय व धन सदा कर आदाना है। उस के लिए इर प्रकार का ब्राजी अस कर असे पर्लासी रा केले का प्रकरत करें। यह विशेष क्रमिति इस कार्य के जिल्हीम ही बनादों ताने जिस का कास नह हो कि इस बोर्ड की समाद का क्षारा प्रस्तन युग का इतिहास जड़ां

से सी बिल सके दिया अपे. माहित्य

दिया जाये, प्रशने स्त्रम्भों से मिलाया

वाये ताकि दे तथ असरीका लायें

वो क्यार्च समाज के बारे में सन्दर

भावता से का सकें। हर के स्वासत.

निवास, जातिबय का विशेष प्रसन्ध

किया जाद धन के साम क्या दो

विशिष्ट व्यक्ति समाये आवें जो सब

ध्यानों पर अवें। इस बातों से बहा

क्षाम होता है। वदि हम समय पर

समात्र के इतिहास का कार्यों स्मीर

बाता प्रकार की ब्रातीत यग की

त्तिविश्वयों का प्राप्तयस्थान करने

माया है। इसे बालय नहीं कि इन

के यात्र मार्ग टेनिक सका मा पारत

किसी समा ने इस कार्य में मांत्रशा

#### ऐसे ऋवसर पर жиниемононононожим

धार्य बरल के वट बाह्र में. पूर्व ब्हाब के कस्ताचारी से पीडिन वर-नारी साम्रों की संस्था में क्रपने २ घारें को क्षोड़ क्रम सरकारी बन का मारत में काले व्या ध्वका चानमन जारी है। किस स्थानक बना में हैं स्था कितने करवाचार उन पर किवे गये । सभाचारपत्रों में पढ कर कीन वहीं से देता । सोकसमा के मान-होय सहस्वाभी हो बोलते २ शे ददे । गत १०१७ का देश विभागत का मोधल क्लिटिया देते वास ट्राव सामने स्मरण हो आया। मारत सरकार इसी समस्या की देख कर ही दनवाँस का पर सन्तालय बनाने पर वाधिन हो गर्दे। इसके जिए की महावीर श्वाकी जी की लगा इस्सी जिल्ल किया गदा। सरकार का वो जासी दरहे हर सरकार्विमें को बसाने उन वे संदर्भ बावस जार्नेरी, जैसा

बी इन को साहित्य मिलेगा वरि क्रमती समझ वर ऐसे वैसे अन-सन्यान को घरधार बना कर गरी समात पर कोई प्रश्वक निकली जिस में बार्य समाज की वास्तविक रूप में चित्रित न किया गया हो तो फिर इस बाद में फिल्लाका आरम्भ कर रेंगे। उस का स्या आस होता? क्यों न हम इस सिक्षे हुए स्वर्णावसर से साम बढाते। एक दे हैं बो श्रमधिका वैसे दर देश से चल कर इमारे पर कार्य है कि नताको कार्यसमात्र क्या है ? इस ६३ बाल करायो । एक इस हैं कि क्रमी वर्ड क्रमावयान है । यह सब से बड़ा विदेश प्रचार है। इस किर इस समय इस वल की वही ब्रावश्यकता है। विशेष कर सार्व देशिक समासे इस ने कहना है कि इस सबय से प्रार लोब सके। किदने मौरव की बाठ है कि | तो क्षेत्रे रहे विशेष स्थान व दिया | क्रांने का प्रकान करें —शित्रोकपन्त्र

हा ताबित्व भी हैं कीर स्वंब्य भी ह वर इसारा भी हो इस विषय संबट में बन भाइयों के संध विशोज स्त्रव्यक्षी जाता है। गत सक्कर्स इस दिशा में पाठकों के शामने क्तिक विकार रक्ते थे। अपनी कार्य प्रादेशिक सभा पेकाव की नेने क्रिकेच विकास समस्य पर स्वास सेवा परम्परा रही है। इसका ग्रह सारा इतिहास क्षेत्रा का श्री श्रीनदास है। कक्षात, विशास, कोइटा, कांगड़ा, माञ्चाबार, राज-स्थान कादि के कष्टमय क्रयसरों पर सेवा का विशिष्ट कार्य किया है। क्षत्र सभा राजं ही देशविभातत के वार वस स्थिति में वर्षाप नहीं तथापि बस से ऋपती सेवा पास्परा कावस रखो है। इसके हाय चाहे क्षोटे हो गये पर दिल तो वही है विष में करुया, सहातुम्वि स्त्र ववाद्व श्रवता है।

काये अगत के उसी कह में सक्ष के महामन्त्री श्री ला सन्तेषरात जी ने सभा की परादम बतीत सेवा कार्य प्राम्परा का स्परमा बराते हुए सारे श्रेमी आई बहितों का स्थान इस आवश्य€ बाद की कीर दिलावा है। सभा अपने इस दिशा में भी सेवा कार्य को प्रारम्य कर रही है। न करने से इस वदा वधार्शक कार्य करना बटत प्राच्छा है । इस जिए मन्त्रो भी ने यह बेरका दी है कि सार्य-समार्जे, परिकार, संस्थाई तथा व्यक्तिओं बकाल के उन पंडित मार्देशों के जिए जिला किसी मेव-भाव के, समा को तन-मन-भन वाली तथा उनक्षेत्रां सित्रया वर परा २ सहयोग देवें । जिन २ क्रांच्यों क्रमाओं दा संस्थाओं की क्योर से बाजान योजियों के सेवा कार्य के लिए सभा की वो भी (शेष प्रमा ६ वर)

### अमरीकृत प्रोप्रेंसर आर्य समाज की स्रोज में सभा मंत्रों जी हारा साहित्य भेंट

#### *አ*ባሪሪሪ እንደሚፈርር አለት የተጠፈፈርር <u>አ</u> द्यासीका से पस कर जो दुस्कर्षे देखते रहे । रहे।

श्वमरंत्रन ब्रोफैसर भारत में सार्थ-फं. हेशराम जी **क्षरा कि**ला समाज की पुरानी वांधविधिकों. श्रीष द्वानन्द का विशास वर्द ने विशेष बार्ष क्या उतिहास सामग्री जिला प्रथा वेसका शेकीमा अ का कनसम्भान हरने झार हर हैं। कोरोर-केटा कर**ा की** सपने सारह बह ७ व बासम्बर शहर में इसराज भ्रमशा में दक्षरे तत्वर पर देखा सकिता दालेख में आये हो यहाँ है। इस विशेष पत्त्रकी पन श्री-की गालनीया प्रिमिशक विशावनी १. देवों के मुर्फास्तर वर्ष २-व्याय aी ब्रानन्ड से इनको यहां सब UT STED THE RIGH SETTLE क्स कालेज का दिलसाया धीर विशेष विषय-अपी देर वार्ते नी समात्र 🏿 वारे में घतलाया. बडां होती रही। स्थापनी की ने यह कर्ते सार्व शहेशिक सभा पंत्राम के भी बड़ा कि समाज की सामजी के #रूपी भी साठ शस्तोषराज औ के हिल्ह काष पूज्य सङ्ख्या कारून कास समाज की विशेष सलगाय स्थानी जी बद्वाराज के शब ज़रूर श्राप्त वसमें तथा सभा का परसदा-बाईं। उन से धायको विशेष तथा तथा महत्व को सामग्री जिल स्रव देखने के लिए निवास दिया । सकेनी । दा. जॉस्टस महाअब क्या में सीचे सभा रूटी भी के इस पर **डी** भागने थनको पुरा २ क्वतिस्व का. डीवालयन्द की कीलपर वे कास भी बहर बार्डे। क्षम्यान दिवा गदा । तक तद वालें समधी यही टहरने का निसन्द्रय feer काको असीको है

कार्थे शर्वेशिक सभा के उपला में

सिवन दिया। सभा कार्यासय में

Swami

बटा कर देने का शक्त करें।

(शेष एक ३ घर)

इस काम के जिए माने कहां की

झार्यसमाज के सम्बन्ध में पर्या १ई । सभा सःती सा सलोक रज्ञका सर्वाचन सभ्यान किया । राज जी ने क्षपता सारा पसासावाय समा स्व पुलकासम दिश्वायः । यहा क्लोल बर पुरवकों को कम बार हेर पर ही तीज चार विशेषह पुरुष्टें **बनके काथे समाबर बडा** कि बज दनको भेंट की गर्ड । सभा कींपक्षके में से जिस २ कीर जितनी पुरुकों वर्षों की चापिक रिपोर्ट भी विद्यान **बी आ**पको सायश्यकतः हो. सहर्थ त्या अभ्य साहित्य भी एन की सेवा से गाउँ । बाबस दरने की चाकक में भेड विया नवा। बड़ी आर्ड क्या नहीं। भार्य समाज के विशास व्यपनी समस्त्रों का भी पन को बड़ा विकासका। बढां कार्ये ते। हर प्रकार व्यान्दोलन के बादे में मैं समयता ह कि वह सोज काल नहीं कर रहे की प्रकास क्षेत्रिया के सिंह भी दिसा दिया गया । भी श्रोप्टैसर जी क्मिप्त क्षमशीका कर रहा है. क्षाप वदे असन्य तथा प्रभावित हरा। नहीं किस रहे. अधरीका जिल्ल विसिपल सर्वमान भी बावस श्रीसवर रहा है इमें प्रस्त्रका है कि आये कुरुचेत्र यनिवसिटी की जिल्ही समाज के सम्बन्ध में वह कार तो इ'गर्जनग भाष इमारा ही चर रहे हैं। वहां अपने देश असरीका को वादस Dayanand His lifeandwork बामे पर कापको वर्दि किसी पुसाब Teachings तथा इसवी पातकें की या किसी प्रकार की सुचना की मेंट की गई। समा सन्त्री की वे कारवस्थवता पहे तो में सहा सेवा म्डाकि बड़ा १ भी बोकेसर औ के बिए काप का भाई प्रस्तुत हूं।

भी दे दिया समा।

#### महर्षि दयानन्द द्वारा लगाया महान वृद्ध श्चार्य जनाबालय फिरोजपुर छावनी महोत्सव श्री नन्दा जी का तप, त्याग

कार्यसमात के महान संस्था- रेस्टी । न्यक्तियों के विना संस्था

**२६ सहविं इयानन्त की महाशा**व उदी चलती । ন অনুব বিসান আৰু কৈ পাম ব चन दिनों पूच्य स्व. महास्मा विशोजवा में क्रमाओं के संस्थ्या इंतराजी के रामात प्राप्ततीय हीशाय के लिए ऋएते पवित्र हाथों से मान जबकरका की करता कावारीर हैं। ই আৰু মনাধানৰ দিনাল্প व्यवनी सरकारी भविंस के बद्धत वह ज्ञावती को स्थापित किया था। क वे पत से शिहायर होने अमे थे। ऋाज वह फिठनी विशास संस्था कर भी जला भी बहुद अन्यथी. र्मा है। एक्ट्रे ह्वारी शब्दों सीन्य, प्रभावशासी तथा धार्मिकः बांच्यक्षों को बावनी प्यार-मरी भाद के सकतन हैं। सन्ना ने संस्था योषी में शेवर पाधकर राष्ट्र सेवा संबाहते की दन से विशेष पार्थना हें चेंट कर दिया। इस संस्था के की थी। कात्र रिटावर हो कर ! सहोत्सव स्था ग्रहक्त्वी के विवाह भी बीन सेवा कार्य में बैठता है ? क्षारोड को देखकर दिल ग्रम्भ वैसासक को व्यापा है। पर इस हो शक्षा । असवा विशेषकर सगर देश्या ने सरका भावी शेवास त्यारा को देखियों को बितनी मदा है, दर इसे सम्मासना स्वीकार दिवा ह बह दस्य को मुझेगा नहीं। यह तक से से बर की भगा भी ने देशकी सम्बा सन १००० में वर्ष से जैसे व्यस्त, ब्राय बाने तगर बे स्थापित की भी किसे १६७० में तीका के कटम ज सम दर वाई सी वर्षकी आधेरी। सपने गत मध एकान्त शान्त स्थान पर बैठ कर बसे में बस में फिल ही भीवा की। इन धानाय वयशों की सेवा को िक के प्राचार क्यारे की सराध कापना धर्म विका सिवा। पृथ्व प्रभा दिखा इसकी विधोर्ट की प्रभा महत्स्या जी की सात्री तिन को बाग जाता है। भारत विभाजन से माता जो बहा जाता था—साव पर्व तो काम चलता रहा पर राष्ट्र बैठ कर रात दिन ओ सेवा की, विमाजन में १६४० के बाद ऐसी बह सदा यह रहेशी ! श्री तन्द्रा जी स्यिति वैदा हो गर्ज कि बढ़ांकी ने इस संस्था को ब्याबास पर पड बा स्थानीय क्सेटी ने इसे सरकार के विका । यह स्थान वश्तीय है । श्री हणले कर देने का विश्वय कर करता जी का क्षप स्वाग समुख्य है। क्रिया क्योंकि प्राप्तदकी हथा दिन राज सेवा में लगे रहते हैं। संबासन वडिन हो गया या। इस काथ में बावं समाज के सर्हार्वे की स्थापित संस्था समाज व प्याने सहारती सहता प्रशाप करत पक्षा अने किसी दास की बात जी ने भी सर्वित से रिटावर हो स्त होती श्तव कुछ सम्बन्धी ने ब्यार्थ ब्यपनी सेवार्थे संस्था को बॉट का शरेकिक सभा को जिला । सभा ने दी है। उन के साब दन की देशी लकास इसे भवने द्वाथ में से परसेश्वरी देवी भी जिल को साहे. जिला। परन्त कार्किक समस्या कुषधानी माठा जी कहते हैं, इस-वना संचासन बढिनवा वो कायम समय वर्ध सेवा कर शरी हैं। इस-कमार्वे, संस्थार' परा २ सन्मान काशी बड़ा क्षत्र व त्वान है। इन दरते हुए समाज के बारे में सामग्री स्थानों के कारण ही काय वक

वेशों के बास निर्यारण के रियन में मारतीय भीर शहनास्त्र विद्वानी 'जी बारत मंत्र भेर रहा है । व्यो-व्यो विकाओं ते इस विवय पर विचार किया त्यों-त्यों वे वेदों को प्राचीन **ही** सानने को विषश हुए । इस अवस पर कोई शक्ति नहीं को नह किन्द्रश्च कर सके कि वैद्याल सन्त्र रचना एवं हुई । स्नतः हमें वह **मा**नता ¶ी पदेमा कि वेद

कामादि हैं।

केरी के प्राप्त करा प्राप्तिक किसाओं का प्रश्न है कि शक्षण प्रन्थ भी कतादि है कौर वे अति कड़े बाते पाडियें। यद कि वास्तिवि-कता आह है कि (सहवि दयावना aux अपनी के जिलान शोदे काल को स थें) धनेक बस्तिय धानावीं भीर पाइपारय विद्वानों का विचार है कि बेरों की पार ही संहिताय है अक्षा बाहरण प्रत्यों की गयाना उत्तयें सही हैं। हो उन्हें इतिहास वादि के प्रस्थ वा वेश व्यास्था प्रत्थ श्राबा है। इसकी पृष्टि के लिये हम सर्व-त्रयम भारतीय काचार्यों के सत और पारपारय विदानों के वित्यार वदनस्थर देने !

 क.कोझ भारतीय आचार्यों के मत श्विकासराः संबन्धा स्थासन् इरवातवः इतिहासाः चस्थाः । बरेष सोम्येदयम् आसादेक्जेनाईहरी बस् ॥ हान्दोन्योयनिषद् प्रपा० ६॥

क्रार्थात्-- जो स्टब्स्स प्रन्मों से देशास साहि के लंगाम का करांज है यह इतिहास है और जिसमें अवस की स्थाति चार्यद का है बद ब्राह्मया माग पुरास्त्र है ।

बाबय विज्ञासस्य शार्थप्रह्माल म्बाय दर्शन कः शक्कारः सु६० विव्यर्थ बादानुबादबयन किनियोगान् इतिहास से० सत्त्रवेतु विद्यासंकार লাৰ হঠন সংগ্ৰহণ। महाभाष्य का कवन

कांबानी की अशक्ताची का å। eस में श्रीविक कीन वैतिक च्याहरसम्बद्ध हिये गर्थ हैं। इस क्रिक्ट ३५ ।

# क्या ब्राह्मण प्रन्थ वेद हैं ?

#### सि श्री मित्रसेन जी बार्य एम० ए० (प) साहित्यचार्य \*\*\*\*\*\*\*\*\*

आकार पर विदेशम देशें थे। क्समे 'जाक्कोडेकं।" काहि वहा**डर**स शस होते हैं किन्तु शक्कण प्रश्वी के गब्द नहीं। हो उनके उदाहरथ वीचित्र विज्ञास है से उपकार डै। बतः इस से भी बड़ मिट शेला है कि प्रमाणक प्रश्नेर्धन की

भी बाह्यत हत्य इति के बास्त ब्राप्टनिक भारतीय विद्वानों

के विचार क्षत्र विद्वानों को छोड़ कर हमसम सभी विद्वार्तें को सी विकार-

धारा उन्हें मत की सम्पृष्टि ही दसती है। स्थानामान के कारबा इस कहा विद्वानों के विचार स्टाप्त करने हैं। "सन्द्र मान की बाबात सार में परमार विकित्न एकक्षमा है।

बक्करण साग सीत्र भाग के पीड़ी पक्रता है। इसके श्रीतपातन की र्मावभाषे शिषदम भी बेट शस्त्र का श्योग मत्र भाग (का संदित भाग) के लिए ही करवा वर्षित सममते हैं।" (बान्तीय संस्कृति विकास सेंच राज संत्राहेब झाली

To 251 'दन श्रह्मया वंगों के उन धनुक्ता का विराह इस से वर्तन है जिन में वैदिक मन्त्रों को प्रवक्त किया गवा है। उन में बेद सन्तों के क्रभिक्षक, विविधोग की विधि श ही वर्तन है।"

(कारतीय संग्राति क्यीर सतका T= 10)

'बह बहवित्र सामग्री माधक. कारत्यक क्यीर वर्धनवर्धी की है वर्षकेष्ठ व्यास्ता मन्य महाभाष्य हो इंद संदिवाक्यों विभिन्त है (संस्कृत ब्य क्रीडास से० वायस्पति हों टीजा

पारचारा विदानों के विभार वैद क्रीर संख्य आधा के क्रम्य घन्यों के समस्ते और प्रचार करते ये जो परिषय विदेशी विकासी से िया है, इस के सम्पूरों विश्वारों से सहस्रत न होते ३० भी स्टब्स बशसा करनी ही घटेगी। सब विद्वानों ने भी वेद क्या शक्क्षाों की इयक्-एदक् ही माना है। है

'रालक्ष्म की गाँग से की विषयक्तु महत्व की श्रृष्टि से सक्षय यन्थीं का स्थान बेटों के बाट ही TINT ? | Translation of M. Wipternitza Indischen Lát. 184.)

बाह्मरा श्रति नहीं इस से एक प्रवस प्रमाशों के similar of all faz feat it किशास्त्रवा सन्ध कीर मति (वेश) ६थक प्रथक्**डे**। इस पर क्रासप बाते हर प्रश्न हो सकता है । 'तेंबीव में हुता के एक और। को श्रति सालना बद्दरांत झाझ्या भाग को अंति स भानना दशी तद न्याब होता है बचर में निवेदन है कि श्रक्षण प्रत्यों से देंद्र के 55 के स्थानाका

स्वास्था है इस क्षिपे रुद्धे ब्राह्मस च्हतं हैं । चयाच्याय भी के कमशार वेद मंत्रों के न्यास्थान वदस्थित दरने कं कारचा 'शक्यण' नास करचा है। यदि देशों भी ही व्यासना होती तब इ.स. भोजा भी भागा प्रश्न जन में किथि, विनियोग, हेश, अर्थवाइ, निकलिं प्राहि भी पाई जाती है। इद्धाः ये सन्तर भवि नहीं बहेता सक्ते। 'बद्द यथार्थ है कि इन में वेट के कह क्षेत्र विश्वभाग हैं पान रशने से वे वर्तन स्थी बड़े का अवते ते जैसे सत्यार्थ प्रवास के

क्रक बंशों को लेकर धन धी

व्याद्या कर दी कार्य हो भी वह

(न्दीन परदक) सरवायो प्रकाश नहीं कडी का सकती । इसी प्रकार द्यासया सम्ब हैं।

महाया और वेड इनके विवेच्य विषय में भी चानत है। वहि एक ही काल के होते तो इस में अपका क्रथवा येटानसार विशेषय विश्वय होते । इस के व्यविश्वत के में पद क्यांच इ.डे. क्यार नहत करा वरना माध्यों में गद्य ही वाधिक 🖫 । इस बचार से होतों की शैक्तियां भी सेख नहीं सारी।

बाह्यच वच अनादि नहीं क्रविश्रंश भारतीय क्रावार्थी के कालभार केट हैंडवरीय जात है भीर सांह के बादि में बंदवर ने उन्हें प्रत्य किया था। पाइबास्य बालोगड भी बसरेट को संसार वर्षाध्यक्ष ब्राचीन प्रथ सानते हैं। िश्होंने बेह कास निस्तय करने का < ब्रह्म किया है उन्हें वह मानना प्रका कि समेंश्यम वैदिक कविता सनी गई। इसे बासने के सिथे श्यावे पास कोई साधन सही। इस प्रकार से वेशों को सभी विद्वानी ने क्रवादी ही बाना परन्त माझबाँ की नहीं। बाह्यमों का रचनाकास सरामय ३००० भर्ष ई० ९० साना काता है तब वे अमादि नीसे ही सकते हैं। इस पूर्व ही यह साथे है कि जापा की रोजी रांप के भी शह मामना सम्भव नहीं। व्यति और अनादि मानने में

एक और हानि

विषय प्रतिपादन की रहीर से बाह्यमा प्राप्तस्यक स्त्रीत स्पनिषशे जें कोई विशेष काला नहीं है। वस्त्रविद्धा यह है हि बारश्यक वसी प्रकार काह्य या मंधा के अस है जिस प्रकार गावामा प्रेथ वेशों के। झाररपकों को इसी प्रकार बाल्या संभी का परिक्रिप्त कहा जो सब्बा है। जब कुछ नाम होने से क्राह्मण अध्यादि अति साने जा सक्ते हैं तो आररगढ़ और छप-

शिव ५६८ ६ वर)

### क्या ब्राह्मण श्रंथ वेद हैं? (प्रव्यक्ष को व )

निषद् क्यों नहीं? बनेकी स्पनियहीं मैं संदिता के मन्त्र 📗 क्यों 🕏 त्यों क्री हैं। जैसे ईशादि परन्य वह विचारकों की मान्य नहीं। यतः श्राध्याचे व केवल बाह्मण संघ ही हैं। ऋधि कात्यायन का कयन # प्रयासे के दर वैभिनी ऋषि

सक देशक काश्यादन ऋषि ही पेने है विन्दोंने बाह्य दो कर बेद संबा धी है। अन्य किसी भी ऋषि ने करी भी देश। जडी जिल्ला व्यप्ति होतों को प्रकरपाठ ही बाना है। इस विषय में बारवायन खर्व का यह जेल किसी भी प्रकार प्रमा-व्याक्त नहीं हो सकता।

क्या बाह्मण प्रत्य प्रमाणिक हैं ? इस विवय में तो दो मत नहीं हो 🖩 हिंदा में दिवास की रिका

व्यास्था की गई है परन्त उसके साथ-साथ विनियोग आदि का मी क्रुलेख है। की यह भी सामा है सश्चायना विश्लेगी वसे प्रति सप्राप्त कि बालेक स्थलों पर उनमें बक ही विषय के गारे में विरोध भी है। द्य प्रमें दिस का ममाना वेडी के तुस्य मान्य नहीं । यहां तक वेदा-भक्त है वे प्रयासिक कदे जा सकते है। इस लिए महर्षि हमानन्ह सर-रापती ने ज़िला 'शास्त्रका करते के बेदीकी गडाना नहीं हो। सबता । श्रीक्षण प्रस्थों का प्रसासा बेटी के हुत्य नहीं हो सदवा क्वोंकि वे ईववरोस्त नहीं है। परन्तु देशों के कानुहुद्र होने से शमाल के योग्य सो हैं। फ्रादि तो क्षित भी अतीत होता है। बात: इस विश्व में शो बलदेव की उपाच्याय के इस लेक से 'बामी जी ने ब्राह्मण बन्दों की द्रामाणिक नहीं माना खंद उचित मही है।" कोई मी विकास सनीयी कीर विचारक शहबत नहीं हो 475/01 I

उपसंहार

कारवाना सेंद्र था विचय यह है । इस समा की क्याई देते हैं कि दन

कि कार्य समाज में सहीत्य प्रकाराय कीर परिष के सन्त्रों के साध्य का काशाब है। जिस वे कारण विदेशी विद्वानों की बात अन्ते शीक्षणः मारतीय विकानों के सम्बद्ध भी इस धनना बेद सम्बन्धी रहिशेक नहीं रह पाये हैं। इसा परिस्तास स्वरूप वे यमार्थेक समस्य

दर स्त्रि के सम्बन्ध में बांचवानुः चित्रशिक्ष देते हैं। दुर्यान्य से वे क्ष्य परीकामों के पात्रबद्धारों में लोहद है झत: झात्रों में मध्यि है विकार नहीं पनप पाते । इस सिये साबंदेशिक समा । प्रतिविधि समाप धीर धार्य समाज की जन्म ब्रह्मात्र सम्बाद्धों की वेड सन्दर्भी श्चपना शक्तिको स्व सा साहित्य चौर सद्वर्षि प्रश्वी के भाष्य या व्यासवाय क्रविक से फांपड सक्याओं ने

#### प्रकारिक कराने पादिये । प्रेसे खबसर पर (प्रप्र ३ वा शेष)

भावे बगत में प्रकाशित किया गायगाः यह दः लियों भी सेवा का सदसर विकार्ड । इस काय भाने कार्यों के लिए भी व्यव करते हो है। इस प्रवन कार्य में भी पंछे न रहें। स्थक्ति की बबाव सभा के संगदन का प्रभाव बहत बहा होता है। सभा यन्त्री भी क इस विशेष क्खान्य पर पूरा २ ध्यान

देकर सहयोग हीतिये । —विद्योद्ययम्

> महर्षि दयानंद द्वारा लगाया महान दश

( बुध्द ४ का शेव ) संस्कात में शिक्कर पर बा पहुंची है। इस कार महान् शत्क हका तया चार लड़ विवों की राजी बी सम्यम्ब हुई। यगर की वहिनों मालकों की यदा भगर बी।

भोडन का काश्रीवन किया। क्षोप्र ०३ ल सभा संजी

को भी सन्दा जी बैका देवता सिक्ष गया है। तया सहयोगी क्रिके हैं किन के बारणा यह संस्था सारे मारत में बहत अंबी हो गई है। महर्षि की वह बाइयार किसे वसन्द नहीं करकी ।

### बार्य समाज जारेंस रोड (श्रमृतसर) में १२, ४. ६४ को मंदिर में

धार्थे समाज स्वापना विवस सनाया गया । इस चक्सर पर क्तीरामधीशर्भवेद श्यार ग्राधरताता. हैप्टन हेशय पण बी. यं. जीलकराम जी. दा. शंकर देव जो कर्शन विज्ञानों के सार गर्नित सपद्यक्र । श्री ह्यारी लाल अ सदरीक समा के मकर भारत हुए।

वापिक चनाव

प्रधान-देशका जी सेठी उपन्यान-सोइन साल जी धरोड़ा व इंसराज की सहावत. प्रेपी-हा. देवबत की महाजन, रुपसंत्री~ र्वे स विद्या सागर जी, कोषःव्यक्त~ बात यन्द्र जी शींची, परत्रशस्त्रच-गोकिन्द्र राष्ट्र श्री. सारव्यवनीरिचड राम ऋष्य दी स्रोमशा ह

बैठड के परवात् जसपान भी किया राजा १

#### देवस्य मंद्री समाज शार्व बेंद्रीय सभा देहली के बरवायधान में भी महात्या

देवीचन्द्र जी प्रवाद स्थानन्द साम्बे-राज मिरात के सभापितर में १३-५-६५ को छान्। धार्थनशास स्थापना दिवस गोधी ग्रींत में बडे समस्रोद्ध के साथ सम्प्रन्त हुन्या । इस करवसर वर अनेक विद्वार्ती के समंत्रशी भाषय हुए। श्रीमशार १३ कारील की देहशी के अलेक समाओं ने दीय माश्चा दवा प्रीटि-

#### त्रार्व समाज मारल टाटन यमुनानगर का वाषिक चनाव हवान-धी चसनसास जी सेठ.

**उपत्यान—वी महनकास थी, व** देश दर्गा श्रमाद को, मंत्री-सी चरनास की महाजन, चरमंत्री---वी बस, थी, जीतो, कोपाध्यक्त--यो कतरपन्द् जी बोहरा। युनाव सर्वे सम्मति से सम्बन्न इथा ।

> विश्वनसाम सेट प्रचार समाक्ष

#### श्चार्य समाज मालवीय नगर देहजी

में ६ मधील से १२ मधील तक बुरद् यह हुना झीर १३-४-६४ की पुर्शाः नि दास्रो गई। इस सम्राव के सभी सहस्य स्वाध्यावशील हैं तका पारिकारिक सालंग का प्रयास नी किया गया है इस स**ल्छंग** में

किसी विश्वास का सावस्त्र ऋत्या-बद्दकरमागवादै। श्रीसदस्त्र बी, भी रात्त्रोजी तथा को पा**लेकास** 

#### जी की सहायता सराइमीय है। निर्वाचन

विरशासन्द संस्थत परिषद विज्लो का कार्यासय २३ परकरी की साधारक समा के निरंपयान सार गुरुक्त सम्बद (रोहक्र) में स्थानास्तरित हो गता है बात: वरिवद से सम्बन्धित सभी सद्वात-भाव परिवर्तित यते पर स**हयोग** बराप रखे ।

द्यानन् व्याक्त्याकार्य

#### परीका सन्ती वै देक सांस्कृतिक विद्यालय

श्रार्य नगर करही [हिसार] पडन पाठन का श्रदीन क्योरंग १३ व्यक्तिसम्बद्धाः से क्षेत्रस्य

जिस में २० नदीन ब्रह्मचारी प्रक्रि होंगे। ब्रह्मोपकीस सका धेकारका संस्कार कार्य जगत के वसिद्ध विद्याल

क्या कर्मड कार्य कर्ता आधार्य बी ५० मुरारिजाल भी शास्त्री साथ पश्चिक धरावेंगे।

वेषानन्त शरस्वती सार्थ शंन्वाकी

### Be-----आर्यं जन मालय फिरोजपूर का असव ३ से १ कार्यं स को

। श्रमकास से सम्पन्न क्षका । सतीरात्र तमी, पं० जिल्लोकचन्द्र जी, ह्रवारीmar की, दुर्शिसिंह जी, सक्ष्यास जी, सद्व मोड्न वी वे भाग लिया ।

आर्यसमान रे**स**वेरोड वस्त्राक्षा शहर हे स्थापना विकस समा-तिकारो सम्बन्ध हमा। भी राज्यांश जी, भी यदन मोदन भी, भी बान्द्रसेन बी प्रधारे।

आर्यसमाज जोगेन्द्र नगर का बरुबर १० से १३ क्रवीस को समारोह से सम्पन्न द्वारा। श्री ५० धोमण्डारा की, श्री तरकाम जी कामीशास सी प्रधारे . ६ से समा व॰ को प्रकाश श्री की दोती रहा ।

कार्यसमाज कारेंस रोड अमृतसर हे द्वा<sup>र</sup> सकाव स्थापना दिवस समारोह से सम्पन हमा । १ से १३ टक लशीराम शर्मा की का भीर इजारीकाल की क्या भी रावपास की, जी भवन छोड़न की के अञ्चल होते रहे । गोपास नगर में भी प्रभार हमा ।

बार्यं समार पुरानी मंडी जम्मू का क्लब समारोइ है १८ से २० वर्षेत को सम्पन्न हुआ भी ए० त्रिक्षोकपन्त ती, भी हुर्गालिंह जो **बी** जातताल व कसीराम जी सना की फोर से करारे ।

महात्मा हंसराज मेला वजबादा के १६ कड़ीज को एका की क्रोर से मनावा नथा। भी प० क्रों नकारा जी तथा काशाला सरजली सुभा की स्रोर से फ्वारी।

बार्य समाज वस्ती गुजां हा कसब १० से १६ वर्षक को मामारोष्ट से सम्पन्न हथा । समा की खोर से जो वर छोंपकार जी पनारे

वार्ये व्याधामशाला सोनीपत का जसव २४ से २६ कडील को सम्पन्न हो रहा है। १६ से स्वशीधान शर्था की कवा कीर वा सवव-मोहन जी, इचारीसास का के सकत । उत्सव पर मो पं० झोंत्रशश जी, को को अपन्यस्थितार औ, भी दर्शासङ जो, भा पन्दसेन जी सभा 🖮 कोर हे वधारेंगे :

्र ्रजार्यक्षनायालय विवानीका तस्त्रव १ से ३ मई की समारोह **है सम्पन्न हो रहा है।** २७ व्यवैत से भी पं० विशोक्त्य-इ वो, ओ एकपास थी, भी सबन सोहन भी पदाद रहे हैं।

आर्थं समाज अलावलपुर का कल्सव १ से ३ मई की सम्बन्न हो आप है। २८ कार्य स से कथा के किये की पंज चन्द्र छेन जो, जो मेजारास ुष्पार रहे हैं। बरसव पर भी पं॰ क्योंत्रहाश भी, श्री हजारीस्थल ती, की दुर्गातह जी सभा की कोर से प्रधार रहे हैं।

आर्थं समझ्य पलवल का उत्सव ≂ से १० मई को समनोह से म्मान्त हो स्हादै । ४ वर्ड से भी पं॰ क्योंक्काश वी कवा कोती। भीर उपसभा विश्ली के महानुभाव प्यारेंगे।

आर्यं समाज स्यू रेलवे कासोनी जासन्बर का सखब ६ से १० मई के सम्पन्न हो रहा है। श्री पं॰ त्रिक्षोक्रमन्त्र खी, श्री पं० चल्द्रसंस पू, भी राजपात जी, भी सेतामाच जी, श्री सदतसोहन की, श्री (बारीबास भी प्रयार रहे हैं।

#### आर्थ प्रादेशिक सभा का वेद प्रचार कार्य ।++++++++++++++++++++ फ़टकर व्हित्त

(रचयित विवय सहमी बार्श BA. बदाय यू. पी.) ললীকা স্থিপ্ত

au के बातेओं तोरे शोधा दिश्लामी पर. धन्यदार इर वरे इथि सुत राज है। मैंदरों विकास को समामकी हामी किन्त. क्य शाओं में जैसे सिंह सरवात्र है। पश्चितों में राक्षदंस 'स्ट्रमी' मन सोह जेत. **बब खतुकों में सोदे जैसे प्रतुराध है।** पायों का विनाश करे मुक्ति का प्रदाश त्यों स कार्य वसे विश्व धर्मी का कांध्रस्त है।

बार्व बन जाइबे इन् ख दूर ही बांद यह क्षम माहो सभी,

देशों के बताये सङ्गुख व्यवनाइये। निशंक बंदि तम इतिया में रहना चाही, तो विर्मंद डेंडवर को नित्र प्रति म्या**डपे** । सन में क्षितोरें बाँट सरी। की बद्धाना चाही. 'लड्जो' यहे जिल मित्र सक को बनाइये।

पार सब सरपर से यदि तस होना पाडी, मोह सब श्रोह का कार्ब का मार्थ।

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* आर्यसमाज प्रेम नगर हरनात का सरस्य ४ से ७ जून की सम्बन्ध

आर्थममाज वस्तोक कासीनी करनास का सरस्य २६ से ३१

सर्वे को सम्पन्त हो रहा है।

आर्वसमाज नेज १६ से २३ कार्यंत । श्रावंशमात इन्ही २७ से भ अबीज । आरोगपात्र राजस्थन पावरा १ से ३ वर्ष । सार्थमात ब्रासाहर, इ. से ११ मई। कार्यसमात्र सम्भी १२ से १४ मई। श्रार्थ समाज अस्ताही थ्रेट के १० वर्ष । कार्य कार वैद्या करें १८ की २० कई । स्वतानका २१ से २३ मई । विनापर २४ से २७ मई । कार्यसमाज निर्मापर नह से ३१ मई | योशपुर ४ से ७ जून वे सब उत्सव भी पं. समर-

सिंह भी की कथ्यक्त में सम्पन्न हो रहे हैं। आयंसमाज (का.वि ) ताना में गई मानके बाल में क्या रूपन हो रही है । —खदीराम शर्मा

बेबप्रवाद क्रविवदाता

#### त्रार्यसमाज काली€ट

मार्च साम में ७ ईमारकों की शर्वि को शर्त । मॉन्टर में पानी का नजका तथ गया है जिस कर ६३५,३० त० पै० सर्व काया है। हिन्ही विद्यालय का नया वर्षे भारत्मा हो गया है। तत फरवरी में परीका तर्र बिस में ६० विद्यार्थी श्रीवृत्र हर जिल्हा परीक्षा परिचास १०.५.६४ को निरुष्ट चढा है। प्रचार कार्य प्रजी प्रकार कल रहा है।

वयसिंह प्रचारक समा

सार्थ समार्थे दिल सोल कर सहायता करें समा के महामन्त्री जो की क्यीस

र्च प्रावेशिक सत्या पंजाब वास्तरण्य के बाहानस्था मी सा. ्रत्र जो ते पारे संस्थाको तथा परिवासों के बाज कवने हुंच सच्चन में जिला है—

> कार का सन्दोष राज मन्त्री समा जिला। इस कारण से कोई-शेई महात्मा इस कर की प्रामाखिका

> में शंतव करते हैं । देखी राका करने

दालों को उचित 🎚 कि पदा पुराज,

बन्नि पराया और शंबर दिन्दि उप

को बढ़कर क्रापने सन्देश को इर

बरे। ...सामपेट भीर बादर्व देश

से कर गास्त्र सा काविशीय हका

है। बद्धामान क्य मन्दिर में

प्रवेश करने के जिए तन्त्र शास्त्र

पुराणीं ऋरि तंत्रीं का घनिष्ठ सम्बन्ध (में औ विशेदात वो प्रवान बार्य बाराव लोहनंद्र बमृतवर) बेट--यर देश बार वन्त्र

आर्थ समाज जीहन इ अनुत्तर )
मोट--यह देश स्थान नगर्
के २२, २६ सःच य ४ स्थान के आर्थ में कश्चार अक्रायन होता एता है तेता का संस्थान स्थान सार २६-५५ के सब में पड़की के सम्बुत तालुत है। —संव हमारे देश में सनेक सोग अप नगरता से सारिक प्रशस्ता

साग दरे-देश के कह में वाडकी के सम्मुच माहत है। — र्चं पूजारे देश में कानेक कोल कार वरन्दरा से आंत्रिक प्रशासना में निष्णि हो हम भी नवालां स्वास्त्र के स्वारात करने कहा है दिन्य की दूरा कहते हैं। ध्यासाला फीट करा का मार्ग आली होने को में सोंगा कभी रोसा न बही । विशेष करे का मार्ग आली होने को में सोंगा कभी रोसा न बही । विशेष करे से संस्त्र कार्युट्य क्ला की

शोक्र हो देवा है। ....राज्ञसार में

महानिशंख कत्र का नाम नहीं

ही अपम सोपाम है 1... स्वयं पृत्यपाद कोण्ड सहोपर थे. काला वसाद ती जिल को कोटिटा भाग-पाद हैना हूं कि जिल्होंने सारान्य पर्यन्य इस लग्न की विशित्त कारी को देखकर सुक के उन्हत किया है।

को उपहार किया है। साहीर के सीतड समायवस्थी विश्वाप् (सर्वाद) की ५० आहुउस

विश्वति (श्वर्णिय) थी ६० भातुरण विश्वति हो। श्री सन्दर्भश्ये होने कपने कान्त्रम कुनार वो र कुन्य पश्चित्र धर्मा समेमें लिखते हैं — बी शास्त्रम्

वै तो तन्त्र प्रत्यों को यो वेंद्र युक्त ही क्टूंना स्लेडि कालम सालत (कन्त्र प्रत्य) यो वेंद्र का क्षेत्र रिता गया है। बायक पंचत वेंद्र है क्षोद कीत व्यव कालम है।

चैंद्रक क्यासना चौर शन्त्रिक क्यासवा में कोई भेद न्ही।' क्या पुरुष्ठ कुछ २०

सतावनमधे संबा के शीवद वर्गरात स्वामी प्रशासना दूपरो निवासी प्रदेन 'पूर्व पूरा की अध्यक्ष' बावक वर्ग हैं हुट वे हुट ११ तथा १२ पर 'कुमारापि कर्म' मीर 'महानिक्षेत कर्म' को मूर्वि पूज की शिद्ध में प्रमास कर में चहुत वरते क्षा किता हैं— 'मानिक्षेत्र करने' मिर्ग क्षांची

क्येर दुस्तपेद (शमाधिक) प्रंथ है...यह तमाम प्रत्य पुजवद वाला (छप्युंका) वेद की सालाओं के कल्लेल हैं कीर इसक्रिय हर्नके प्रमाल साध तीर पर कासिये

श्रमात् सा गीरडेंग

हिरोड जिय चाडण कर्यू । करारिमिस्टिक क्रियर चडल्डी से यू मधी आर्थित उच्च हो गया होगा कि ठन्त्री और शुराखों वर्ष कांक्र से और शीरायिझों का सरस्य क्रिक्श चरिक्ट सम्बन्ध हैं। इस से हिल्ली से कर्म निक्क डांच यह कह दिवा जाव कि कार्यु-पेक सत्तर-क्यां ही स्थायसाम है तो हम में कीई सानस्या कर्मक सहि होगी।

शास से बागे के कांग्रे में हम कान्त्रिक शिक्षा कर दिग्द्रीन करते हुए पदकों से यह काशा रखेंगे कि देशो पुष्टित शिक्षा देने वाले प्रवी को स्वाव्य क्षमचेंगे)

श्रार्य समाज यसुना नगर स्म वार्षिकेतव १-२-२ वर्ष १४ से होता निरुष्ठ हुआ है:

६४ को होना निस्थित हुआ है बिसर्वे को स्था, सुचानन्त्र पं. शिव-कुमार जो शास्त्रो पं. शास्त्र प्रकाश की शास्त्राम् महत्त्रमा प्रचर समझाब तम्हारे प्रति

(सत्यवतसिंह जी, केसर वं बराहन यू. पी.)

चारों स्वोर दिखा के सम्बद्ध सहक हातु सन, जट राह्य मान्य क्रिश्त करते से नामधी पुरुषक क्षित दिस्त कर से देखा कोश्याः कृता शुक्रदारी करत सामी कोई कटा कहाँ कारणा के स्वारा कर्मा कहीं हुए स्वारा करें शुन्न में दीने सीवन देखा को सुन्दी सोवन के कार, स्वित्त करिया के के कार, स्वित्त करिया से के कार

व्यार्यसमाज लहमण्सर (श्रमतसर)का प्रस्ताव

१२-४-६४ 🖩 सत्सङ्ग वे निम् प्रत्याव पारित हुव्या—

ंदेश कायुक्ता की हुण के ।

किया कर वर्षाया महुत वर्गति 
वे भारत सरकार की दिश्यक 
कीमी गावकी को मात्रीम माहु।

रहिला पर देश के विद्या कालकारताव कायाओं हुए देश माहु देश पर 
के किया प्रकार कायाओं हुए देश पर 
के किया प्रकार की वही करें, हुए 
के की वहर की माहु के प्रमाण 
कायाओं के माहु की माहु के 
कायाओं के माहु की माहु के 
कायाओं का माहु की माहु की 
कायाओं का माहु की माहु की 
कायाओं का माहु की माहु की 
कायाओं का माहु का माहु की 
कायाओं का माहु का माहु

चानरवाहीन झीर श्रसंभव क्या वें कारत—श्रमान सराव

को सक्य मुसाधित तथा को ; रिश्नं जो चयः यः स्वादि सदासुधार्या के प्रधारने को स्वत्सा है।

हुर्ह न त्रवाह को संन्तराज या सन्त्रा आयं तादेशिक प्रदिन्धि समा चेताद जातन्त्र हारा चोर मिलार में स्<mark>र विकास रोड आसम्बर से मुद्रित समा</mark> साथेकता जातावय महास्मा इतराज भवत विवट कवहरा जातन्त्रर सहर से प्रकृतिक सामिक स्मार्थ प्रदेशिक प्रदेशिक समा चेताव



[आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का माप्ताहिक सुखपत्र] रैबीफोन नंग ३०४० - : Regd. No. P. 121 क्क प्रति का महक १३ मधे देशे राधिक सूचन १ ६७वे

वर्ष २४ व्यक्त १८)

२१ बैगास २०२१ रविवार\_ह्यानन्दाव्द १४०- ३ मई १९६४

# स्तोतार: इ'द्र क्रिका:

हे ऐत्रवर्ष के अपवार इन्ह ब्याप ही हमारी वर्शक्यों के लुनि के दोन्ब हो । इस काव का ही निरव सावश करते हैं । भापके ही लोगा बनहर सक्षम मिक के गीत गाते हैं। ब्रायके विका क्या किसी के भी गणक ह्यासद न दर्ने ।

#### नुष्यां तन्तृष् वेहि

हे मगदन ! जाप हुपा दरके हमारे शरीरी में खाल्य तवा वस प्रदान करें । हमें झान सवी नमर्ग-वन भी दीजिए । इस स्वस्य और शक्तशाती . वर्ने, ज्ञान की दौलत से भी डम बाकामास हो अवें। इमें हान धीर शक होती का प्रसाद प्रवस्त करें।

#### सत्राजिद उद्य पोंस्यम हे सक्राजित-सब क

विकास पाने काले अले । हमें वीसाय-बस्तपराक्रम प्रदान कीवित्र । हम क्यी निवंश न कनकर क्सवान वनें। पिता श्री ! आप बता के बाका पत्रका है, इसे शक्ति से अरपूरं कर हैं। इस समान वर्ते । \*\*\*\*\*\*

### दा मृत

श्रयोपस्थात प्रस्त्राः श्रीश्म उद्दर्भ जात बेदसं देवं बहन्ति केतवः । दशे विश्वाय सर्वम।।

बजः ब०३३ में ३१ श्चर्य :-- एम m को, जिस के झारा (प्रदश्च जात बेरसम्) ये देवीं का बान प्रकट हुआ है, प्राप्त हुआ है और जो सारे शहर्य के मत्तों मैं व्यापक है, इस (देखन) प्रकाश मय देव को (बहन्ति) बारए करेंगी है, बताती हैं ये (केटव:) वे श्रांटवां और दे विहब के पहायों की र्जंदर्श । इस नमी प्रशासक सर्वे रूपी तेवोमन प्रमेश्वर को (हरी विकाश संबाद के प्रतिभी का प्राप्त कात करने के निर्मित्त, विका के विविध बल्लसमृद्ध को अनने के भिए शास्त्र करें, उसी था ब्याग्य ४साव क्षे शर्षे । श्र्वी की श्राशक्त उपात्तत करें ।

याच :--वेरे यहान् त्रीतम ! बाप इस क्षात बहात विशास वर्ष मद्वान विद्व में छवंत्र व्यास 🗐 रहे हो । कोई मी देशा स्वान नहीं, कहां काप की परम क्ला का सीन्दर्व न प्रतित होता हो ! प्रमी ! काप बी रूप से ही तो सर्ग के फाएम्थ में फारने फसूत पत्रों को देतें क बाद किथा बरता है। संबाध का शबेद शोटा या वहा परार्थ काए सी बस दिन्द काम सत्ता की प्रशीत है : वे कारी व्यत्तिवर्ध है जिल से बारा के बारम रिकारों की प्रांकी सर्वत्र देखने को जिल्ली है।

हे मधान सर्व । इस ब्राप की अकि करते हैं । बाप की श्रामना हें बसे हैं। क्योंकि ब्राय के सिवाय कीर सचवा गुढ़ नवा सच्चा पिश की<sub>र सा</sub> है, जो इमें इस विविध विदय के नाना प्रकार के प्रशार्थ का कार क्त सकता है। बाप महान् गुरू है। सब सत्य विद्या और जो प्रतर्थ विका के आजे बाते हैं, इन सब का मादि सक है प्रमी । साथ ही हैं । हम बाद के पत्र हैं, तमस्कार करते हैं-सं ------- (तार 'प्रादेशिक' जानन्थर

# ऋषि दशंन

**न्यायकार्यसि** 

हे प्रजेश ! बाप न्दाय काने वासे हैं। झाप की न्याय नियम की तसा में कोई सोटा भ्रमती स्रोट को शिया नहीं सबका ।

#### निर्वेशीः म हे ह्यानिये ! चाप निर्देश

है। किसी से भी साप का बेर नहीं है । प्रकापति के बाते सारा विरुक्त काप की ही प्रजा है। जैसा २ कोई शुभ क्याप्टम कर्म करता है, वसी के अनुकृत वसे पक्ष देते हो । उस में भी साव की द्या का परिचय मिलता है।

#### ईश्वरात याचितकम

हे मानशे ! इपर एधर क्यों मागते फिरते हो स्था सिसता है। भटकर कर थक्नाडी होगा। को इस भी मांगनः बाहते हो तो हुनी परमेश्वर से स्रोयमा सीलो । उपके विना

क्रीर इसरा कोई की वो सन की कामना को पूर्व नहीं कर

काम का जा सहियों हैं अर

बर्जने दवा शास्त्र करने की वर्षी प्रदा पश्च पद्मी है। बानाप्रकार के तंत्र बनाये जाने समै हैं। गुरुषों का भी प्रवाह बक्रमें संगा है। इस ने नददम हो जन्म दिया है जिस का परिकास ठीक अर्थी विकल सा। एत के बाम पर जो दुव होता है, उसे कीय नहीं जानता। पुरव बहारमा जी ने उपनिश्लों है क्रांचार वर शक्ते गृह की पश्चिमान बोतर्वहै। यदि सम इस पर कारण वर्रे को वर्तमान पासरह तथा गुरुवमं का सम्ब होका बा सकता है-सं.

रात उसे बजते हैं जो परमाहमा को ग्राप्त करने का सीधा सार्ग बताये. जो सम्बाध्य का राजा दिखाये. धर्म के प्रभावर बलने की प्रशेषा है । ऐसे ही तह की सोजने क्रीर उसके पास जाने की बाजा स्पनियदों ने ही है-वद निवानार्थ स गुरुनेशभिगच्छेत समिरपासिः श्रीविक वद्यभिक्रम । काल्या चीर परमास्मा का ब्राज व्याप करने के निए-भारता और परमास्या का दर्शन दराने वासे विज्ञान की पाने के शिए वह समांत आन का स्थि-कापी शुरु के पास आहे। परना बिस प्रकार ? ज्वा सद्भ पर. व्यपनी मन सध्यति का श्रासिमान क्षेत्रर, अपने मक्ष्यन का गर्व करता हुका १ नहीं—समित्याविः—हाय में समिथा लेक्द, सिर स्त्रज्ञकर, विनम्न बन कर उसके पास आहे। परन्तु किस के पास बावे ? जैसे ग्रह के पास प्रदु\*चे । उपनिकटू कहती है 'बोर्जियम्' उसके पास जो चारों देवों की जानने बाला है। प्रत्येक प्रकार के जान और निज्ञान का स्वामी है तथा अवनिष्टम् जिस ने ब्रह्म की पा किया है, सास्मद्रांत कर किया है, परमातमा को सन्-भव से देश शिया है। देशे शुद्ध के वास साना माहिए।

PHINESIE

### सच्चा गुरु कोन ?

(यो पुरुष महात्मा बागम्य स्वामी की महाराव )

श्या बहुत क्षेत्र हो रही हैं। यह श्रीण मेरे पास मी बाते हैं—बहते है कि इस बाप को गुरु मारत बरदा बाहरे हैं। मैं ईस बर बहुता इस न्दर्बन्त में चापका गुक्त बनने ह'-बरे कका! गुढ़ तो सब स परमाना है। मुखे सुध तुक विश्व aut करा जोसे ? करन सामका गुरु बनने वाले भी बहुत हैं । उनकी यही इच्छा होती है कि कविक से श्राधिक लोग उनके चेते बन वाएं।

पतिस्ट **प**ना रसे हैं अहोने वो सोगो के पास बाकर कहते हैं कि अपन ध्यक्ति को गर बना सो । वे एजेन्ट द्मपने साथ रजिल्टर शिवे पृथने इन्दिक्को बस में बढ़ी इन सहता। हैं। चेतों के नाम वस में वर्त करते विदि चित्री स्वस्ति की कीम रहते हैं। यह तुरुवय ठीक नहीं, क्रमा बोखनी है, दिला को दावाने रेसे गुरु की ठोड नहीं। गुरु के बाली बात सहती है तो सहाद हो लिए क्रावर्यक है कि उस में तीन गय हो।

पहला गुरा वह होना चाडिय कि क्राप उसके पास बेट तो बेटने की वी बाडे । बाद नहीं कि बैठने के कह हो देर शह सब दाने खने चलो । जिस व्यक्ति के पास चेंद्रकर चेंद्रे रहने को भी व चाहे को शबक तो कि उसमें गुरु बनने का गुजा नहीं प्रत्येक स्वस्थित से एक सार्व्यक्त ग्रस्ति शातो है। संबोधी में बसे Personal magnelism 427 है। योगान्यास से. चारवर्शात से. हर्कमें से और सदाबार से इस मारुपंग में इतनी वृद्धि हो जाती है 🗎 समीप बेटा उर्ज्यान उपक्री कोर इस प्रकार सिचने असना है क्षेप्र कर देखिये कि ध्यो क्षेप वैसे लोहा नुम्बद के वास वह'व भाश देवा नहीं। वदि उसके कर इसको घोर जिंबता है। आक-कोध की स्वाता अवस उठती है हो देश की सहरें, किरगें, इस अवस्थि

के भीकर से निक्सने समक्षे हैं।

\*\*\*\*\*\*\*\* बाउध्य गुरु वार्ष इरवे की | संब काम देती है । यह पश्चिम नवा है । वर्षर का शक्ष प्राप्ते कर कें बड़ी है थे समय में कि साल सकत बाल मी के बास पढेंच गया

> श्री होन्द्रशा नहीं है। इंक्री बाद यह है कि इस न्दर्शित से धापनी विक्रा को बरा में विया है या नहीं। यह जिला करत सकित्राक्षी इन्द्रिय है। स्थार भी सेती है कीर बोजरी भी है । एक यह झानेश्विय भी है कौर करें न्द्रिय भी। जिसने इसको बग वे बड़ी किया बढ़ किसी भी इसरी

कि गा। ने अध्यनी दिशा पर श्रमि-कार नहीं किया । वह स्वक्ति यदि इर समय स्वाद ही देखना रहता है. हर समय आने का कार्यका डी बनावा रहवा है तो समसना चाडिए कि बह आफि विश्वान होने पर सो किसी व किसी दिन विदेश ब्राइड । वेमा ठवन्दि सह वतने के योध्य नहीं। जिस ने व्यक्ती इन्द्रियों को वह में नहीं किया बार चाप को क्या सिमायेगा ? ब्बीर वहि वे दोनों कार्वे शिक हों। कहि समझे पास चैंद्रे रहने को जी पाडे क्या उसने सपनी विद्वा को बन में कर किया है तो बात जिल बसके निकट रह कर देखिये, वर्षे

समय बोजिये कि तम स्वर्थक है

स्व बर्क्स की कोरकात असी है।

वे पास बैठने वाले को मानो झफ़ने वर्दि कोच नहीं काठा तो होक

मंकि है। जो तुर पंथायों परच होता में प्रमानो । देश शास पर बचाम्हे ।

साववाय े बागते रहता. वही वोकान सा बाबा ! सप्रश्ली ची की समये शहरा व करीर होगा इस. बंधार वे कोसा पहत है। अन्ता व बोदं सरो हुए हैं। शहां थोग विकास बाख है। वहां शास-रर्शंद कावा बाधा है। हुवानें : ब्बा है। इस से सावशास रहना। यह देखना कि जिसे गर बनाना सम्रहे हो अस है गद बनने के गया है या नहीं ह र्वाद सदी तो तलाग सामी சன் ப

#### श्रार्यसमाज तथा धर्मार्थ श्रीपमलय श्रलावसपुर वापदे कार्य समात तथा .

धर्मार्थे औषधासब कासाबन्नपर 'का क्तसब २७-५-६४ से ३-४-६४ तक बक्त दशों के बहचात धसवाबा से मनाने की वैवारी श्वारम्थ कर बी है। इस ग्रम अस्तर पर बते बडे विद्यान, उपदेशक, भवनोक प्रधा-रेंगे। घीषधासद के सिए अपीस डोगी। दानियों के द्याप का मों की सुनारी क्रिस्ट पेश की आवेगी। बाव से प्रार्थना है कि बदि ब्याव मसी वह नई वहवीज के मलपार Patron ricus saver eco सहाय ६ तरी दर्ने, तो साहत दर्ज कर हमारा क्साह बढावें। भीपतालय तथा कार्यसमा<del>त्र</del> के काम काप के सहारे 🛭 प्रश्न अवले है। पर्छ निश्चव है कि निराश

पहले की मांति परिकार सर्वतन इस मनसर पर पंचार कर रीतक बढावें, जिस से हमारा उत्साह क्देगा । घर्यास स्वीतभावस श्रेकी वासती है। विकेश

ममरनाथ सम्मी प्रवास गरकेशन वस्तो वार्वकारह. शसम्बद्धः (शसम्बद्धः

सम्पादकीय-

# त्र्यार्य जगत

रचिवार २०२०, ३ मई १९६४ विंक १८ वर्ष २४

### वेदों का श्रंगरेजी भाष्य

सार्थे जाति के भगत की साधार किस्सा वेदों पर निक्ति है। येद क्रमाममें हैं, प्रवित्र करने वास्त क्स देव का काश्व है। संशतन **९** इ.स. सारे श्रीवन के श्रेटवी का मूल है। परम्परा से इस का बदन-पादन चन्ना जाता है। वेटों कर कारोज बकार के भाग्य किये मने हैं। मारत के पुराने कई लोगों के भी संस्कृत में भाष्य किये इथापश्चिम के दिहानों ने भी . इस पर होलबी चढाई। विन्त क्रिक्स क्या धीर भाष्य विस तकार **का** किया—इस पर इस समय इतना ही यहना है कि कपनी **फ**रस्थ मनोर्श्य का अपने पूर्व से निहियत किये हुए एटिकोस के ब्रासुसार ही वेदों का माध्य करके किश्व की होंह से निसाने का अयत्व इरने में कोई क्सर नहीं वडा **रक्षी** । वर्डनम के शास्त्रकारों के **, दादा गुरु मेक्समृत**र और भारतीय साध्यक्तांभी के दादा महीचर का भाष्य क्या है—इस के वारे में इस समय काधिक नहीं कहना। बन्धवाद है ऋषि दवानन्द भी का. **विक्रों**नि देह भाष्य कर सारे विद्य 🖥 🥅 के विन्द्रश्रीय भाष्यों को बंगा **ब**रकेरस दिया। चरंगरेती पडे शिव्दे सोगों को देने के लिए वेदों का भाष्य सार्वधमाज के पास नही बा । समाव हैं विशास संस्थार्य मी **है.** संबंदित शिचया केन्द्र मी हैं क्या भिन्न मिन्न विद्वार्थका है केश संस्थात भी हैं। दिन्त इंगलिश **में** देहीं के शास्त्र की कोर किसी का भी अचान नहीं गया। बदि किया है। इंगलिश मामा पर

मोती के सामने को बडी भाष्य काले हैं जिल में देहें से प्रदार्पैया हो अल्डी है। इतनी भावद्यवता होने पर भी ईगाहिए माइव इराजे झा किसी वसार स भी प्रकाथ न हो सकत। यह काम सरतान था। इस में विदादी, विष्टा, गम्भीरकः, भाषता वर्षा धन की बड़ी फावस्थवता थी। सारे भागते २ कार्यों में लगे थे। द्यावे समाज के वराने वस के मशस्त्री, जीवन को झाव समाज ने सेना में मेंट कर देने वासे. जिला होश्यानपुर को अपने काय का केल बना दर विका की करस्वती पर्स प्रचार का प्रवाह बड़ा हैने बाते चार्च उगत ने सम्माननीय श्री महामनः देवीचन्द जी एक, ६, प्रमान दवाबन्द साहरे-शन मिशन ने इस मादश्यक वेटों केंद्र'गिक्श साध्य के कठिन व महान दार्घको देश दरन का बर क्षिका। समातार रात दिन के प्रवस्त तया मारी स्वरध्याय के बाह क्रजबेंत तथा सामग्रेट इस दो बेटो का जनरेती में भाष्य करके की सन्दर ब्रह्म से श्रद्धारिक बरा दिया। सरमचेड को ड'गलिश भाष्य इस समय हमारे सामने हैं। यजुर्वेद पर तो बहुषिं दवानन्त का माध्य मिलता है पर सामपेर पर उनका माध्य नहीं ! . विक्ती अदिवता हुई होती । विकास सम्मीर परिशीसन

किसी ने च्यान विकासी तो वह

देवस ध्यान श्री सीमा से सामे न

बद्र सद्धाः चंत्रदेशी पढे लिसे

# फिलास्फर की प्यारी देन

श्चामरा द!वर्वासटी सारत है प्रांतव पिकास्करों में यस काने त्य है। बार्व समाज को बड़ा गीरव है कि के करर जी कार्स प्रकार के जेवर वितवा उत्तम कांचकार है। इसने र्श्व मन्त्रों तथा स्थकों को विशेष भ्यान से दश है। साध्य में iस्टर्स योग्यता, विद्वला का परिश्रय रिस्ता है। इस करे से सदासना ने विस्ता स्थास वर दिवस्था है। बार्य समाव का ऐसा भगव करके मस्तक क्रंचा दर दिया है। बान अधनेतेष के शास में सरी इस्ट्रें। इस बदाशस्या में बेबे कंद्र'लॉक्श भाष्य जैसा गईन काम । किलना भारी परिश्रम है बांद फान्य दिसी इसरे देश में इंदना शासदान काम करने वासा वेसा कान्य स्कातर हथा आध्यकार होता तो बहुर्गकी सरकार इस की क्षिरीय कृति यर विशेष पुरस्कार सम्बाद देती। पर वहां तो सिनेशा चर्यसमेत्रियों, क्यिनेसकी, साथ काने वादियों के सिए सम्मान, पुरस्कार देशा प्रमुखे साम सह हो बर जिल्ला हो सिंचाने का सकते हैं या देसे व स्थानमें के प्रति कितनी वदासीमता है। इस सार्वदेशिक समा तथा चपती हो. ए. वी. कार्वेज बमेटी तथा झार्च बारेशिन सथा से विशेष कर कहना चाहते

हैं कि इस दिशा में कारने करेंक को

विकास र सम्बद्धाः स्थानमञ्जू

सारे देश का सम्मान है हम

महायना औ से भी नम्र

विवेदन करेंगे कि आमें बेटों का

माध्य पूर्ण करने में को रहें

इसी कार्यको श्रमुखता देवें। श्रमु

—त्रिलोक चन्द

रत को झाद व स्वास्त्व देवें।

य. कामपुर पूर्व वायस वांस्तार

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* विसिपस दोवानवस्य औ एम. है, स्ताम है। दर्द व बाद आर्थ-श्रमाण शीहर रोड देहती तथा कार्यसभाव विका अध्यक्त के महोत्क्बो पर प्रधार कर कदल मन्बीर स्था दाशीनकता से भरा मारदा देवर करता यो जीवन रक्ष विसा बाते हैं। बोसटे हें से फिसा-स्की से भरा और हिसते हैं तो भी विकासकी से परिपूर्ण । दार दिस की कांखें, यन कौर टांडकोग्र बहुब बहरा, रहस्यमच होता है साधारम् सी **बाद को क**माल के दक्ष से व्यक्त कर देता **है।** मामनीय जिंसपक वी बहुत करने सेसाह भी है। भाग की सिसित पुसार्के कहे वास तथा अद्धा से पड़ो आती है।

खमा ने स्वर्गीय सहारमा इंसरज की की सी वर्षीया शतकती समानेह मनाने भी योजना वस है। दसी कम में माननीय विस्तरस औ ने कानपुर में बेंड कर 'महारमः र्शसराज<sup>2</sup> पुस्तक विस्थी । १३-१६ इच्छा की सस्या से उन्होंने स्वय पकाशिक कराई है। उस क्यारीय देवता के जीवन को जिस सवीन रीकी से दमास के टब्ब से, नई ब वार्वो तथा मटनाओं का वस्त्रेस करके प्रकाशित किया है। जिसे फलस्पियाना इत्य देवर पुसाब किकी है। यह वो स्नाप का भाग ही है। इस जीवनमें बीसियों बाहें वेसी हैं जिन का बाब तक जनता की भी पठा नहीं था। माध्यवर विसिपल की समाव के उस प्राने यस के चमकते स्तम्ब हैं। डी.प.वी. काक्रेज, सार्चे प्रादेशिक सभा । दर धाब समाज के पुराने इतिहास का चलता फिरता सभीव भन्य ही है । anर्विय अवस्ता इंसरान जी के साग्र रहे हैं, काम किया है, क्रमेज क्रोटी. समा स्था स्थान

(शेष प्रष्ठ ६ पर)

#### क्स हो मास हवे बारत के दक चर कोटि के क्षेत्रेज़ी दैतिक समा-चार एवं में पदा कि पाष्टिलान सरकार ने लाडीर के ब्यार्थनमान माल्श्य में एक इसकामिया स्कूम **भरोज** विवा है। समाचार की पश कर लेड् हुक्श । मासव सरकार तो नहीं बाने जितना कि नवान बाग-प्रतिक धमस्यान को पश्चित दश द्यागरा के राषात्वामियों ने प्रतिश क्षे रावती है वर पार्डिस्टान सरेशार क्षेत्र (इसी के प्रप्रेशकान का विश्वत

क्षेत्र कहना हो नया क्रापित जान सम्बद्ध बर्जाबय हम ब्रायनाची है फिर मी यह शानकर थीना संतीप हुआ किल्कृत ही सोला है पहले सो प्रेसे समाचार शिलने रहे कि कि बद्द साते सावि वह धर्म-स्थानों में लात दिए तब है । जिस को करद बसों से घळाडों। ऐसी वाधिनान मरधा च्या नहीं कर सक्ती। यह सब वातें लोइ-जनक वो हैं पर कार्यसनाड क्यों कि स्थान पवित्रता में विश्वास मही रखता इसलिए यह बात सरकार वर ही क्योदना है।

ज्य मैं दिन्हीं में बा तो कुछ धार्य नेनाध्यें ने घार्य ततर बसाने की वीजना पाछ की भी। इस मित मेरे पास भी बाद तथा सहस्य बनने की बक्ता। तब प्रकाशी बक्ते क्षा के के विकास कार्य समाजी ही योजना के सदस्य धन सकेंगे। मैति हो बातों के साभार पर पोर विरोध किया कि बड़ा बार्वस्थाती इकड़ डोंगे तो लडेने (ल) प्राप्त भावेसमात्री एक स्वान पर रहते क्षम गए वो अनार्थ समाजिती को धावनमाओं क्षेत्रे बरावंते । जेले दोलें वाले विश्वों ने मान औ नवा सहो तथ मुक्त थाइ है बोजना रह गई। प्रायममात्र के लिए सारा विद्यव भारत समार है इस दूसरे सब भनानता की वरह गुढ नही हमारी विचार-नारः सावनीर्वेत्रक है । एक ही नगर फेवल बार्व समाजियों का नहीं ही सकता त

का मुन हमारे एक तकत में दो इस स्वास्थान होने से कार्टि के नेवा वया कर्मेंद्र कार्यकर्ती । बाहा ही वर्म त्वाब हो यथा वह मैं

# त्रायंसमाज तथा स्थान पवित्रता

(बिसियत मनबान दास जी एम. ए. दयानन्द कालेज जोसापर) \*\*\*\*\*\* ने निराशा व्यवस्थी है कि आर्थ ! नहीं सावशा।

and में किया है। धन्डोंने इसी बात को देखकर प्रदा के क्याब के किए कार्य समातियों की कोसा है। नेरे सत में पन: बड़ी विचार ब्याया दि क्या टेहररा ऋषि भक्तों के सनों में ही स्थान रसता है जो सस्दा सुपत माओं के शिव द्वार हो तो ऋदि विराम समाप्त, समार नहीं वो इस जीवित हैं। क्या भावंसमानी यह कर सकता कि आधि के विशासों से भी ज्ञारा समस्ते ध्यारा है। व्याज बह समारे लिए दःसको गांत है कि सावी की के विचारों से उनके सवरों के सिप राश्याट **ब**हत प्यास है। गांधी जो के विदारों का सब तीते देलका किसी कामेसी की रीक अभी के प्राथम पर मानवार के जिए कोई बोचा की क्रम प्रसट करें तो वसको प्राप्तने टीक्ट्रे हैं । यह शक्तको वीर्थरशन पडते हैं । वह पार्व समाधी को टंकारा, मधरा असका क्षत्रमेर को कार्य सक्ताविसी शीयंस्यात नहते बद्द में(बद्दी गल्ली बर रहे हैं बो गान धाट को नीई स्थान बनाने पर सम्में हवे हैं। यस कें बह अर्स्ट ने तमे बढ़ा कि नड काटा समा पर रहिंप देशासन्त से प्रभा में आपना वह नहीं बारते कि हान का सिकार दिया वा बस को फार्जनाकत सरीद हे तथा वट्टां खरि वदासन्द का पुतसा दमा दे। सैने बहा ऋदि देवानद का पहला एक अग्रह का दी काना नहीं स्त्रा का सकता अगह बगह धुमने तथा ससार वे बद्ध बिटाने के लिये वौहने नाले पुत्रले होने पाहिएं। क्यांच के दाका

समाजी टंसरा के सिय क्रमा भी

बहुरा, टंकारा, खबसेर हमारे **स्वि स्वरकीय स्थान हैं पू**रा स्थल नहीं। क्रीर इन से भी क्रथिक रमस्योग बह स्थान है जहां पर क्षीप दयानन्द्र के सिशन को सेकर परवाओं ने बहिसान दिया। मै बड़ांडो पार जैसे स्थानों पर गया यन में घटनाओं का स्मरशुक्त के असाह शान हमा । वो नेता दंशारा धादि स्थाओं पर सुन्तर कार्य गर ाडे हैं वह सबैब बाह रखें कि बह जनता का धन तेकर पर स्थानों को दबान-द के बिशन से मो अंपा नहीं कर सकते जह केवल साधन मात्र ही रहें यहां दिवत है तथा नो बनयं समाजी एन के सिथे यत न दे उस की ऋषि इशासन्त के मिराव पर भद्ध नहीं ऐसा वह कर नीचा स परे किस स्थानों pr fach ा रहे कार्यकर्ति सन्दर तथा प्रायेच ब्रायं समाधी की यह देवा पाडिये पर होते हाथका वस्त वस की प्राप्त कार्य समाधियों की धटा त्रम ऋषि शिशन के लिये तदय का यापर्वत नहीं हो सकती धारर देखा सबस् वावे नी भूत्र है इसी प्रशर से वर्ड गार्ड रवानन्त संस्थाओं क्रमदा प्रार्वे समात्रों के निवे प्रत न निलगे पर आर्थ समाजियों के देव तथा बढ़ा दो दोस्ते हैं वह

चनवा व जिल्ला सन्दर कार्य तथा

बारोपले की सराय का निर्धार होता

है अप्यो कार्य के सिये औन पन

नहीं देता इशका प्रयाण वह है कि

देश का इ.स. बड़ विपश हथा क्लेश

भिटाने के सिवे उब भी शायसवात

में कोई पर (आयोधन कार्रि)

रहाया से धन धी न्यूनता के सहस्य

हमी यादी हकी नहीं। जनता तो

कार्व क्रिया मुन्दर कर रहे हैं इसारा कार्ये ही जनता के विस्थान का मार्थ्ड है। संसार वह देखना पक्षता है कि क्या आर्थकशासी कोग कहते 🖹 है या करते भी है ।

वही बात द्यानन्द यनीवर्सिटी के बारे में पस रही है 📓 😅 तेल विद्यंत दी वार वर्षों में क्**हें** हैं हमे ते समस्भी नहीं कारही कि यह क्या है। सब लेकों के बिन्न 'शिम्स प्रधार के विश्वास रशे गरे हैं। बनर नो इस वृती-वसिटी में वेटों वर ऋषि रोसी के काधार कनुमन्याम होना है कथा संस्थत जिन्हार्य होती है तो छक . तमक में काता है बग्र**्देव∌** परीचाओं को लेने के तिये दयानंद का नाम चाहिये तो मैं पूछना है कि मेसी संस्थार्थे तो अब भी **सहक** हैं को दयानन्द के नाम पर हैं रथा पंत्रज परीचाओं का कार्या व्यति सम्दर शंति से कर रही हैं। एक भीर शास्त्रकारों हुई संस्था से किंदना लाग और हो आयेगा। सात्र साथै संस्थापं क्य रही है कि चलाने को अपने समाजी कार्यकर्ता नहीं मिल रहे भीर दशनन्त्र विशन के विशनकी वह रहे हैं कि भावें संखारें सम्बाह व्यवनाने को तैयार नहीं। कितनो रतमन पह गई है कोई दे<del>वा</del> नडकर ऐसी स्थिति को जीक क्यों न कर है :

भाषकता स्थित है पर एक सीमा तब योग्यवा इसी बात में है ि चेर पर वामसंचान की सांग को पुराकिया जावे। परीकाओं का बार्थ करने को दूसरी वनीवसिंटीया बहुत हैं और क्या इस केवल भारत को इयामन्त्र तृतीयशिक्षी बनाना चाइते हैं ध्रयमा विक्य-व्यापी नो फिर क्सके सिवे इस क्या तुंह लेकर ध्रागे बहें में अवस हम चन्छंशन हो होत दर कोई यो दक्षरी बात पर्वदेशे । श्रास देवस शारव के सिमे एकाकन्द ना नेक स्त्री है कि बार्य समाजी (शेप प्रश्च ६ वर)

21 42 H. E. E. W. 1810 - **ब्रा**साश का सहत्व पूर्ण दिन है। **प्रा**वंसमात के क्यांशर तथा कर्येड क्षेत्रानी कृष्यपाद महात्या ईसराज **भी** भी जन्म रातान्त्र भी अभी किन ही की बीट मांबर मार्थ **काथ समाज ने एक जिम की माट**चा को अधिक बदाने तथा मन्दिर को शोबा को श्राचिक विस्तार देने ह **किए** सम का नद्घाटन समारोड **बढी** धम धाम से अतः १ वजे से 10 वजे वह भी जनत विशोद नी विश्वा प्रसिद्ध दानी द्वारा सम्पन्न श्रद्भावा सारा मन्दिर दिस्ती तका हराथ स्थाओं से चाले सहानसावी. अधितर के दासियों, स्वसं तथा इस्तेओं के सहस्त्र अध्यापकी तथा काओं की फहल-पड़लें से परिएमाँ या । वर्ड स्कुतों से बेट से सुनन्तित विद्यार्थिया की दर्शदया अपने बारवायको की देख-देख हें सहारोह को पार भाट लगा रही थी। विस्त्री जैसे विशाल नगर में यह क्या किल्लामा प्रमाण का विकासी चर्चा बर सरशी की जिला पर की फ्रीर विश्ली सत्तर की शव: सभी बोरी वहां कार्य समार्थे गरी विशासमान थी. सन्दिर सर्वा क्रमनी सहचा करे चात दर्शने हैं

दश्तुतः क्रावसर थः। इस मार्ग पर

आस्त्र तक इतना समारोह पर्व क्सी

नहीं दीख पक्षा । शतः प्रजे से १७००-

यज्ञ प्रारम्भ हो कर सरीके संदीत

से १०६ने वर पत्रता रहा बडी फिर

**एक दिन के प्राप्ता** की दासकीर विश्वका

सी का त्यागत शीवत मानन स्वासी

सी सरवती, शाः गोकववी अधक

डा॰ मेहरचन्द की महादन, वी

सर्पभान की उप-सन्नयति, सी

मदायक्ताम जी तसमाह, आहि

प्रसिद्ध नेवाक्षी हारा समाज के

क्कुसच्छित द्वार पर हुआ। और एक

विशास एवं विश्वय जनस के साथ

**दिरसा** जी मन्थ पर प्रवारे । वस्ति

· अंबोच्य दामवीर विरक्षा जी सस

### श्राय समाज (श्रनारकली) मन्दिर भागे नई दिल्ली के भव्य भवन का उदघटन समारोह थो दरवरीसासकी एम•ए० उपनत्री आवं समाज बनारकली देहसी

भवत का उद्यादन हो वाथा है।

बाहरी नित्रीय रुचि से इस प्रविध

क्यांसमात्र के अस्य कार्यकर्त

क्रिज्ञां सन्धद सेवाओं से वा

कार्यक्रमात्र साहा तथा है. भी

इवाराम की शास्त्री, त्याय मांव

तथा हिन्दी संस्कृष के निदान, वेर

नारम समाज के पनि श्रेस रा॰ महरत्रव बी ने झपनी शक्ति हिन्द जाति के साथ क्रमान्य करा एवं इत्यूट अञ्चा से इतना धन एक-तथा धपने बाध्यार्गमक विचारों में तिश किया कि समाज का दह भट्टता देखने भीर मुनने को ही कदमद दांचा मात्र सका महर्षि यनकी मी । दयातगर माइल स्टब ददानन्द को पविक्रास्त्रा तथा महारमा इसराज श्री 🗎 कटट प्रेम नई विल्ली की खात्राओं ने वेद-संत्रों के बीन या रहा है। नवा मनहरी का गढ बदवारका किया भ्रतीर दल्ला भोइम की खबा से बादास इसके परवास प्रवास का जेल्स से वाने कर रहा है और न्वर्गे में चन्द्र ती ने विरसा भी का श्रम खागत करने हुए, बार्यसमाज के बेठी भी स्वामी दवानस्य श्री की सद बाल्का इसे देखका गीवलवा मन्ति के विश्वत से कता विद्यारण होरे छक्ता विश्वे हैं। २१० सहाजन विकार यह मन्दिर ध्रापना जातीर जो के कांश्रीरक्ष समारे नावस धनार€श्री ≣ एक वरावन इति-श्रीवर सर्वभास की, दार मीवधन-हास किर बाज मन्दिर जार्ग पर काम बन भी स्थापित सरावास्त्र स शोमायमान है जिस पा बतास जी परी की <del>र</del>ोवार्गनी उस अब्द भार सास्त्र तक बन शक्ति व्यव हो शक्त के निर्धात हैं कहा स्थान नहीं कुंभी है। सारी दिल्ली में यह एक हैं। भी काननशाम जी कोहकी भी पहल यका क्यां कार्डिशंक क्रांस्टर इस मन्दिर की एक जान थे। उमी है जिसका हाल खादी शरिवत बबार सारेड अशेष्ट्र किलोंने उस विसास क्ष्या ऋति सुन्दर है । इसके बोगराज में भाग विजा समारी साथ हो १४, २० कमरे हैं, जिससे सदा के पात्र है: शहर से धावे हुए यात्री, दोगी, द्याः सदासन् श्री क सन्दिर तथा भग्य थासिंह लोग प्रायः ठड्-सम्बन्धी विवस्य के पत्त्वात सम्बन्ध रने हैं. और मन्दिर की शोधा की का नदबाटन सक्र संगोत तथा वेद बढ़ाते हैं यह जानकर क्रम्यन हुई मन्त्रों की व्यक्ति से सम्यन दक्षा । होगा हि भी स्थानन्द स्थामी जी श्री विरक्षा तो इस समय । धन्छ अ सरसाती जब दिश्सी में आहे हैं इपित दील पहरहे के स्वीर साथ वो वहां ही ठडरते हैं, परन्त एक बी क्षेत्र वहानन तथा भी सुवधानु बाव को इस विशाल मामिक सबस व अन्य आयंग्यात है कार्यकर्त

को बनाने में बतानी प्रमाणक्य है

वड है. इस मैं बोबहान है हसाबे

विषद्ध नेता. भारत सेनाती, दिन्द

ध्ये के श्रवाती, तथा भी ० ए० बी०

संभाधों के दर्शाधार हा० ग्रेश्वरचंट

जी महाजन भी निस्कार्थ सेवाकी

थक बानी महोदवसे वाचना का ही

दिन ६४ सम्बाध थे. सन्त उनका

करने में स्थस्त में। इस समारोह का एक अ

महत्त्वपूर्ण प्रशंस मा. बार ॥ ज शेष वितरसा, इसी जीव में २०० दर्शकों तथा सुन्ती काश्वित्रो ध्यावे विशासियों को वर्दा क्रिकाचे प्रदि गये। बहु सिच्टान का के मात्र की भीत से बाद के की जो सदारमा बंगराज जी बन्स दिवस वधा स्थ्याटन नम रोह भी शोबा को बढावे थी। त्रवश्यात शहात्मा हासराः

भी को बद्रांतिस्यां करित के

गर्डे । सनश्यम महास्मा भानन स्वामी जी मस्त्वती ने महारम बीसे उन्हें सम्पर्क की स्था क्रोंकिया प्रशति सीत है. इसी प्रकार की जीवानवास की श**र्मा**. संसद सदाय, थां गोकप्रधन्द जी नारव, वथा जासा सर्वभाव जी टप-एकप्रिके **क**पनी खपनो अञ के एउ चटाये और सहास्ता और का अप्रतर्थक कार सदान के पति द्मगाव घडा, निधनों से इया, तका जिलाय सेवासी पर वहता उनसे हर सपने मनोहर व्यास्थान विशे । की सहरत्या कामण्ड स्वासी जी बह व्याध्यान जहा उपदेशासक था. थे लामः सूर्यभातु तो का मनोहर 5bienia रवदेशाल्यक हेते के साथ साथ शिवा प्रव भी था। ही जर्ज की ने सरकी शाहन करत सनादन सहाता बी के प्रेम की सहता को बताबा जीर वह वशाया fix fixed want are fining firest-बिंदों के महाबना देकर का जिल्ला कर प्र'ना प्रशास थाएते थे ।

शो किएसा जी से सी क्याची सम्बद्ध में गदगद हो रहे ये । इसारे न्याच्यान में हिन्दू धम वे **प**वि इक्कार वर्तके स्थापन प्राप्त पर प्राप्त करण की भ्रोप जनता का स्थान विसासा और यह चेवायमा दा कि इस क्या थे चीर कियर जा रहे परिसाम वा कि आवाइस विशास सन्त्रों के पाठी क्रापनी यह विशेष

(शेव प्रष्ठ ६ पर)

#### शर्य समाज धनारकली वंदिर वर्षा तहे दिस्ती

(पदर > वा सेप) । विरस्त भी का भाषक कालद लोकशेद है और उपवेशास्त्र दह कारेशसम्बद्ध मा।

ममारोक की कार्यकारी का स्तेत्रस धमनी से १२ पन शर्मण शह के साम समाप्त हरि मोर इराजात सोहों से स्वातस्य महत्व শলোগেম পাৰ্চকাম জিলান भी की भोज पर देखा।

हो एक प्रत्या सहरामां तथ क्लोलनीय चौत्रका जो जानकी **हा**० मेहरपान को महाक्ष्म से की **बार्** है, कि चीपुत दिशका बी ລ້ ໝາກີ ຄາລຄ້າກາ ຄ້າ ໝົວເກໂສສ ही कर ४०,००० सक स्था शाय देशकर मादक स्वश के जिए रैक्क के कार्य समाप्त के ज़िल्ल 448 2000 EO BT \$127 AUS भावें समाव के प्रशेष के (सर हैते इरिहक्त भी, यो गिरमारी बाब की, र समानेद सहस्रों के चन की ग्रुभ योषका की जिस से सारा क्रमण शक्तियों से बाज बढ़ा चाँह विकित्रत स्था सम्बादक वक्ष हमारे क्रिका भी ला सहात स्थानक के

मदान है कौर धन का मनाबाद **धा**दे के जिल शब्दों का सदैव **ट**भाव है। कर्ण समाज का जिल्हेंस अल

श्राभी समान्य नहीं हथा और अन् क्या हे और शहरा य चंद्रात **ब**मी महन का दक्क भाग देश है मिरो बनाने में सालों स्वयों की क्रमाध्यक्त है। क्रीप्रसाम हे क्षर्व को सीर झासर काना है। **बेरा**समिति, तथा अविश्ली, सामाती के प्राचीपन को भी सभी व्यक्तिक बेबे की बसरक है। भेने की बावती क्षेत्रसम्ब करना इमाग बगवा बन है । जिस की पोपवार जीव ही बी क्षेत्रे वाली है। इस के लिय

हम धव धर्य-धर्मची त्या , uprोग से ही व्यक्तानशर सदा-हानी महोदयों का बड़ां कर्षन बनते । श्रेष्ठ हो पाना है । स्य स्थारत तो औ बड सब्बो संसार में वई मोक देसे क्षेत्रे

र्भाग्य अर्थ 💷 भा सम्बोधः सत्या है. जो राज स्थ से बच्चे सहयोग इसारा कर्व करे करा बलेका है । कार राजे से वेली संस्थानी की हमाने सान्य, प्रथम काली जी वाले कुछते देख साले बाह्य-करते हैं । इसारे मानद त्यास्य औ शतके बस्तरः त्यान वी सावार सर्वि हैं. और प्रथते महशोधी महोदय, शयबहादर बा. धापनी कातनि रेक्ट 🏻 क्योंने वर्धेनकास दी दूबर, भी विक्याम धपने पर्तनार की भी कावड़ न को ने शक्तर करा, व धारे हा समाज को सेना की है esprene ar di Agrino sur रह महत्त्र हैं और रानक्षे सेवाओ से इमें सामाजित होता पादिन हमारे खंधोती मी घोषनाथ वं

चे ही बार हांबा, मी वद्यवसाय माहार, ची सन्तराज की सामा, थे प्रवासन्तर की परी, अपन एका भी पी. भी. महता, वं केताक हो। योक्सी संशोधा रहे प्रवरिशस संबदेश, बी दशा जी नो बेहरफार की क्षेत्रकों, बं रक्षकार मोत्री तथा भी साल की ामक्रेसब्बाम जो शतस्थी, ये वर शरा सम्बन्धादम इस सर्वे रक्षांत्र की, तथा चन्त्र को कार्य-श्रेष्ट्राय हो सबस समाने में दिन क्रमीको क्रिय के इस समाध्य की रश्च करण रहते हैं। हमाने गर्सक क्षेत्र के भागना प्राथमी है। तेल भी शांक शरक्य से भी कार, यम, थोपका के जिल

महात्र विश्वियों का भी इस बाजा प्रवर्तिक द्वारे हैं, म्हेर दानी महोदमों की सुनी प्रगति संव वे प्रम्पार के पता है, और उत्तरे क्षेत्रस वही है। BY BUT OF THE PERSON WIND WAS A STREET, WHICH WAS A STREET, WIND WAS A STREET, WHICH W

#### श्वराजनी मोटिस श्राबदालत बनाब सीरियर संश्राज बहादुर होशिशारपुर

क्रमेश रंक 183 शबद कर III

वृत्रिक्षत्र चोषः इप्रिका सर्वारता सेहत्या क्याव गायोगस्य गरिह रिईचरिक्त देवको । odair ...

श्रावंत राजन (1) इन्द्रशास मुक्तर प्रदेश की शक्तासन, (राजस्कान) (3) प्रकृतक-मानि वर्षण्यो से राकेशम (3) प्रस्तात-सर्नाव बकारी सरकी को राजोराज ०'० की स्टूबार की कुलार मीरिवर टोफा सम्बद्धिः M. P. H. S. रक्त वैज्ञासम्, विका कार्योर शासकात ।

अभवा अञ्चल काराज कारा के हा तान के जाम पहले की एक सक्त वर्गाल वारी हो पूर्व हैं जेकर मुद्देशन का क्रवील मासकी क्षीका से नहीं हो सबसी है हुए तान मदानूगाव सामीत समन से रीएर सांधार गुरेच बरते हैं और बचेश रहते हैं सिद्दाना इस्थार अनकार हाया बसाम उनका पर साम जाती किया जाना है कि नी बराव रैतनी क्रमेस हेवा क्रमाश्रकः वा वदासकर संबदशा ६-५-१४ क्राप्टिर क्रमास mið । वरना रुपने विस्ताप पारवर्त राज्या बन्दराया बायस में सर्व क्षारती । बैतवन मेरे इतकन क्रीह योद्या कदासन के बाज व सहीना **स**र्दे व सार नदास्त्रत भी की काल से १०० सथ-निर्मित ब्रस्तियों कर 25-4-64 को उपनी विका बचा है। कर वर्तिहर के प्राप्त के प्राप्त की प्राप्त की है। विकासिक अपने की प्राप्त की प्राप्त की प्राप्त की प्राप्त की

#### फिलाएपर की पानी डेत:

(इच्छ २ का रोप) सेवा में नेवा वन कर सेवा को है। ब्ह वर्ष के हुए देश दे केत्रों के साबने समाय के वई कुछ बावें हैं। सनेक विश्व देशे हैं। सुवी वातो का सिलाना घोर किया कर वक की बातों कर खिलाशा संशोध हो शास है। झाप की किलो प्रक्रव 'merca dema' unum aft. मन्दर सीवर्ती है। क्षत्रमें से चारो समाज का सओन हरिहास का विक्रमा भी है। वह पुस्तक की इयारों में नहीं काओं में इपनी वर्गद्रम् । अवते वह सहाय नेता का जीवन हो और जिस का बेसक भी समाद था हो अही कांपन मारत का वेला सहाब दार्गानक हो. अस की पतनक साक्षेत्र में इंस्या में प्रकारिक डोपे। कोई ऐसा व रहे किया के हायों वह पुलक न पतु है। स्क्रूडी संस्थाकों के बच्चे र के शास वह पट चा सी जावे। इस तो बह करें ने इस बोमदान में यान होने बाड़ी कि यह पुस्तक क्रमत्रों में भी सकत्रिक होनी बाहिए । इ'गब्रिश पटी क्थता तक भी बह यह ये । हा क्य बात कीर की कड़ेंगे 📓 समझी: बार कार का चित्र और अस्टि रुपर स्थीय हो अने तो प्रसिक क्रम्बादै। इक्ष वान्य विकिश्व को को इस सरकन सुन्दर पुरवह पर डार्टिक कबाई देने हैं।

> श्चार्य नमाज तथा स्थान एविश्रस

-ার্ডার সম

(१७४ मा रोप) सूरोवर्सिटी बना रहे हैं तो क्या काथ होता । पार्यकारक प्रधान वें कर रहना कहे तो स्वरी

आस है। धार्व समाग में स्वान विश्वास ो अवनान हो सीये तथा वर्डी कटे साम से आने सा करत सता काहिये। व्यक्ति सता असा लाज परिकास का बाद कार्य समात्र के जिये भातक है जेते विचारों को दर रक्षों उन्हों हैं क्ष्मा है। होता असे राज्ये मन्त्रभी के झाधार पर दोना ही क्रमान का साधन है आवेत्रमान थहाँ को भएने पर से बिच्छा शही भेद्राय भी 🎬 प्राप्तव दक्षतान

# भार्य प्रदिशिक सभा का वेद प्रचार कार्य

आर्य व्यात्यानवामा सोनीपत का कक्क १४ से २६ वर्ष स की कपस हुका। १८ से मुखीताब सम्बं की क्या चीर की बहर-भोड़न थी, इपारीकास सी के सकन। क्यान पर से वंक्सोनकास जी,

'सोहन जी, इंपारीकाश की के सकत । करका पर श्री मं॰ क्रॉनफारा जी, श्री हो॰ शामित्रार की, भी दुर्जीका बी, भी पणुरोन भी बचा की चीर श्री पणुरोन भी

आर्व अनाधालयं भिवानी का कठक र से २ वर्ष को स्थारोह से सन्तव हो रहा है। २० करों क से वी ५० त्रिकोटकन्द्र बी, वी -हारापाल की, वी बहन मोहन वी स्वार रहे हैं।

वार्ष समान बलावनपुर का क्षत्व १ से १ मई को सम्ब्रा हो यहा है। २० अपने स से कस के किये भी ५० पट सेन जो, भी नेकारम सी पनार रहे हैं। उसका वर भी ६० अपनेक्टा डी, भी हकारीकाल भी, भी वर्णाभिक्ष जी समा की कोर से पनार रहे हैं।

आयं समाज पत्तवण का श्रह्मच म से १० मई को समहोद्ध से स्थ्यपण हो रहा है १४ मई से भी १० कोशस्यत भी क्या कहेंगे। कीर करतमा रिल्ही || महानुभाव पतारेंगे|

आर्थ समाज न्यू रेलवे काणोनी जाशन्यर का क्सान = से १० सई को सन्त्रम हो रहा है। मैं एं- विश्लोकपन्य की, भी ४० चन्द्रतेन भी, भी राज्यास भी, भी नेस्वसाम भी, भी वहनसोहन भी, भी .हलारिकाल भी पचार रहे हैं।

आरंसमाव प्रेम नगर इरनाइ क बताव १ से ७ शून हो सन्दर हो रहा है।

#### >>>>>>>> इम० हंसराज साहित्य विभाग में क्रुं +‡‡ नई प्रगति ‡‡+

इस सुवर्ण अवसर से न चूकें क्लों न भार्य संस्थाओं के शान-स्थाओं को श्यान हेरे

के जिए मुख्य पुरुष क इमारे स्टोर में

सी रीसाववन्त्र प्री. M. A. शिला में व हैनराज थी का थीवन चरित्र कर कर का गया है। विश्व गरी ने शी हो हो ही १-०० वाची में से देवल १००० वाची गेर है। मुख्य पुत्र पर सहासा की का है ' प्रच कर पोटी है 98 क्षेम्स १९ है क्षीकर देवल एक करना मात्र मई को सम्बन्द हो रहा है।

बुरु हेर्नो के २०% क्नीशन। बाद खर्च महद्द का होचा। प्राण म्यान--महात्मा हंसराज साहित्य विभाग A.P.P.

सभा जासन्यर गहर 💍 🤻

## "महात्मा हंसराज"

(प्रमेता—विश्वतसावर सर्मा, स्थानन्द मठ, दीनानगर)

विकिन्त पार कृष्य---वर्व प्रेमी ईपराव हो, वर्वही **परका**र में ।

वर्ने व्यानी धर्मराज बी, दर्न के श्लीवचार वे ॥ वर्म-उज्जब, मोक-राजक वर्षे के श्लीवज्ञार मे । कर्म-दव दे, हिस्स बीचन, वेब-चव समुस्टार थे।

क्य-त्य दे हत्य बावज, क्लू-त्य मधुकार व । व्य विकुत मी, वीर-वैद्ध इंसराय । व्यक्ति जव मी, कीर-वैद्ध इंसराय ॥

काकिनी बृद्धा--वनवर कनुवादी, भी दशक्तद् औं के ।

समुचित एत-चिन्हों, वे मुक्तिश-समारी ॥ स्रोतकर सु शी०२०, धी० मुक्तिशासमाँ को । दक्षित-जन मुक्तना, सार्च शिका-प्रसारी ॥

हु त्रविक्षण्यित युक्तम्--विकट-क्रोरेम्-व्यवा भर हाथ में । विकट-चेर्नियार प्रशार ने ।।

कर विश्वत किह्बन सामना । रूप दिए गत-कालय आपने ॥

र्ष १६९ शुरुआक्षम मानम ॥ मुजक्ष ब्याव कृषद—

इक्षानम्ह का कार्य पूरा कराने। इत्री क्षात्र की भावना को अस्पाया॥ व्यानन्द-वार्था सभी को बता के।

द्यानन्द्र-वाण समा का बा। का भुना - वेद्द-वायी। सुबा को पिछावा। सार्वेस विकोत वर्तम---

(१) बाजे जीवन-राज क्षार्य क्या को, सदर्व सेंबी वर्ते।

> तेश स्त्राप विशेष प्रार्थ नस् के सर्थस्य स्वामी कर्षे ॥ हेर्वे का उपरेश हाजनाय थी, इन्हरूप होते सभी । शांतिय । वीचन-मार्ग श्रद समावे, सार्वपाद होते समी

(२) जेन के पर-निद्ध पे इस चर्ने, भी कार्य पूरा करें । वेर्वे देशकर शक्ति भारतीया को, सम्मार्गणासी वर्ने ॥

इंदर शाक भावनाया का, सम्माननामा बन ॥ स्याने हो बेह-वर्ष स्वाकेशस्य से, सरकार्व पूरा करें । साने बात विशाद ''प्रंच'' यति की कर्नक्य नामी करें ॥

सार्यनमान मुन १६ से १२ वार्रेस । वार्यसमान मुनी १० वे १६ क्रांत्री कार्यसमान रामस्तर साम्यर १३ म्हा म्हायसमान सामाइर, १ वे ११ व्हाँ मार्यनमान मुनी १२ से १ प्राप्त १ व्यार्थ समझ सामाइर १३ के १० व्हाँ मार्यसमान मेत्री भूते १० से १ व्यार्थ महं मुक्तनपुत ११ से १२ व्हाँ भित्रपुर १२ से २० व्हाँ १ व्यार्थनमान सिम्बुंद १६ से ११ वहाँ मिहिनुंद १ के ० व्हार्थ स्वयं कार्यस्त भावत् ।

वार्यसमान (का.वि.) श्राता में मई मारके मन्द्र में भवा सन्दर्भ हो रही है । —स्त्रीराम रामों

वेदप्रचार स्वधिप्रतास

# म पश्य दान



मंदरी दिमाचन के भगम ईडवरदासकी झाथे समाज के दीवाने सकत है। सहात के बाब में सदा भागे रहते हैं । बल दिनों की भगत जी ककरी सामगीबा क्षित की गागेसक की की साति में सार्थ शर्थ-शिक प्रधा की सर्वा के क्रव में वेद प्रकार है क्रिय क्रिकेप शन देखा शास्त्र व्यस्थित विका का । भगद भी की वर्डन

नागेसक थी सक्त्रक

(बीयवी नागेसर त्री)

ही अफ़ीक्स में बडी-पड़ी थीं। बसैसाब बद २ कर सरा...बीवड में सेवा तथा अवित ये दो गता तो जबके विशेष विश्वमान से । वीवर निर्दावत, सरख...ऐसी साम्बी बहिन पास्त भगत वी का बीवन श्री भाग्वशासी बना। त्रमुक्रें कि देशा पर्स्थाव विचार त्रेरसा तथा देवनिष्ठा भन्दों में भी बा सके। श्रमु नवल बी को सम्बद्ध श्री ।

## टैली ग्राम से

र्व. रुवाच की शर्मा प्रधान श्राचे समाज क्षत्रतावर अभवस्त श्चारत सरकार को भाषधान काले है कि शेल बाम्दला की रिहाई व्यक्षन्य तथा वेरिहासिक भूश है। देश के ज़िय भारी सकता सिंद हो चकी है। इस सिए उस पर दबी क्रियाची धीर जवान बंधी क्रिनिया है। श्रम्बा-नेहर मेंट केन्स केले की रशे है। मारत सरदार आवेषात हो कर काम उठाए क्या क्रमसाधी सावियों सहित निस्तकोन शीध रितप्रतारी क्रांत व्यवस्थक है। श्चार्य समाज साम्बा (जम्म)

करात कोट से कमर ठाते. इप सभी में सामा भारत है। बना शारी वर्षों का केन्द्र है. सरहो है। बर्क कोर पक्की सक्क पर वस aver your marious or war क्षण्य नगर है। असवास बढा

जववरकों के करबाट को वेसका एकन है। **बड़ों** सार्थ समाञ्ज सन्दिर विश्व वदा क्षेत्रकम्म क्षेत्रा मा वहा सम्बर बना हका है। किन्न सारे ही दबर्छ के पाय है । चल्सव २०-वर्षे से समाव का काम सर्वदः में कार्यशहेशिक सभा की चोर से बन्द्वान क्यो शक्ता और न व विक्रोक्स्प्रकारी सामित्र सम्ब क्या प्रचार होता था। राज की बस्पराज जी की फन्डाका हमें स्वयं भी पठा न था कि साम्बा

सर्वकी, ता. वर्गानिक की तथान में समाज है भी वा गड़ी। क्या क्रम्य से हो, सहवेब जी श्रक्त-बहुत २ वचाई के क्षत्र हैं। अर्थ वर्धा, की मोइनलास जी मोवियास के भी हा. रूप चन्द जी तथा दत मी मा॰ लब्जराम की एवारे थे । षा परिवार विश्वों ने समास को हीन-रार दिश सूच ही भूग आधी वरिकारों की बड़ा की देखकर पन: अभाव बाने से काली बारी प्रसम्भवा इतं । इस भी सरकम्द भी राजिय बारा कर सम्बन्धों को अरेख को विशेष बचाई देते हैं सारे दी। नगर के प्रतिष्ठित की सा समाज के हे दी छण्डम वर्षा के शब बास की सराफ, की दुर्गाहास शत हैं। सना को वेदप्र**कार** में वीर्भ धोय ऋक्षत गुजा, पं १२४)- इ. मेंट किया । भी रासकात नानक पण वी, भी बरक्त राम की कराज से कार्डमसात शास्त्र थी. मी परवानन्द जो भी बनारसी दास भी कादि रुसँड सक्क्रमों ने

सहयोग दिशा। इतने श्वों के बाद

को भी करते जान दिया । जम्म समाजीं का महोत्सव बाम कार की भावसंगाओं

दवानन्द-वचनामृत

'क्ल कीर विका के स्वापार के बिना ही, सन में विविध व्यवद्वारों का विकार और शब्दोच्यारख होता रहता है। बांली को वंधिक्यों से बन्द करके समें कि किना सक, औस, साथ ब्यादि अंग हिलाने देसे २ शम्द भीतर हो रहे हैं। जैसे प्रकश्य व्यक्तिकरद में बत्तर विका सोहा भी साल-व्यक्तिस हो जाता है, वैसे ही किस कशाबा में त्यासक कापनी देहादि के कामास को शत जाता है कौर परमात्या के ज्ञान से जगनगा चहता है और उसके श्रकाश से त्वरूप से, आतन्द से, ज्ञान से कपती बारमा को परिपूर्ण कर शेख है, वस शान्त बावस्था को सक्तांक mitte ...

CHORDOCK SECUCION OF THE CONTROL OF

(स्वामी सस्वानम्य की)

ही क्याल का हवा। स्थता के को ही समारोष्ट्र से समाका गता । समाज के चेट प्रकार से विकास इस में आर्थ शहेशिक समा की वित व सरना शेष 🎚 शह क्छ की धोर से ६० त्रिबोड वन् रास्त्री, बारी बींद से हो पता जगता था। नर ठा - दर्गसिंह शुपान, पं॰ जनसहस्र तारी बच्चे बड़े' सभा नगर ही वस्तीराज्ञ की की मंदशी, आर्थ हमद सावा । मन्त्री वी देर प्रकार प्रकिनिधि सँमा से के करमास ती वी बर्मा, प्रचान की दुर्शहास भी झालि फिल्मरी, पर यसकेरिक जी प्रधारे । क्वियासस् से प्रेंक राज शिक्ष की पान के लगा अने क्रमारच औ हवियाना से प्रो॰ सरदेव की चक्र वर्ती रस० ए० प्रधारे । सक्ता आसी समारोह था। भी शामलास जी सराफ 26 . की प्रधानका में राष्ट रका क्रमोत्रन किया गया । बी र्यन इरिस्थन्द्र की शांकी फार्यसमाह पुरानी संबी जन्म, एं॰ जोगिन्तपास जी शांस्क्री से भी विचार रखे । समाव

> हर क्यार में अपना रहा। जब की भून सुधार

श्राम् ।

क्षेत्र कर में ।

वार्व वगत के सदास्या ईक्साओ विरोशंस एप्ड ३० पर देश्डीर कार्य तसे इसेश्वास की इसवी नेकी की सात्रामों ने कार्य दिया समा की पर्स शिका के इस इनाम बीते हैं के स्थान पर पहले तीत इयाम इस स्वला में बीते हैं पाठक

समाज का पश्चिम समोताल को का क्रांक्स्राक्ति अधिक सहो।सब सुद्रह व प्रकार है या सोनपराज को मन्त्री कार्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा वेकाब कालन्यर द्वारा बीर निकाप में स, सिकाप रोह वाकन्यर से सहित तथा क्षा भारतमत कार्यात्य सहारमा इत्थान भवन निकट कपहरी जाकन्यर राष्ट्रर से मकारित बाकिन—साथे मारेशिक पश्चितिय समा पेनापन वासन्य



रेबीफीन न० ३०१० (भार्यप्रदेशिक प्रतिनिधिसमा पंजाब जालन्धर हा साप्ताहिक सुखपत्र) Regd. No. P. 121 वक प्रदि का सुरुष 11 तथे देवे राषिक सूत्रव ३ ६५वे

वर्ष २४ छोक १९)

२८ वैद्यास २०२१ रविवार,...दयानन्द्राब्द १४०-- १० मई १९६४

(तार 'ब्रादेशिक' जानस्थर

#### वंद सुक्तयः

# त्वा सर नोनुमः

हे समित के भरतार । परमात्मन् ! इस आपको नमादार दश्ते हैं. प्रजा मे बाएको ही प्रकास करते हैं। आप ही तो नसस्कार के बोरव हैं। कोई किसी को नमस्कार करे पर इस नो सन्ह आपको ही नमस्कार करते हैं।

#### त्वासिद्धि हवामहे

प्रामेश्मर ! हम ब्यापको ही ह्रमामहे-स्वरव्ह करते हैं, पुकारतं है। इस भीद के समय व्यापको हा बुकते हैं। बायके सिश्व भीर इमारा है मी बीन, जिसको हुस क्रथना पिता माता मानकर पकारते रहें। बाल ब्रमारे स्त्रीर इस बापक है।

#### त्वां वत्रेषु इन्द्र

हे इन्द्र ! इस वृत्रों में-विक्नों वापसची में भापने ही दुन रते हैं। जब २ हमारे जीवन में कप्र काता है, हम दःशी हो जले हैं, इस समय आपका ही सक्षारा ब्राधव होता है । ब्राप ही दाल नाशक संसद है। साथ में वेद

### वेदा मृत

से विस्तास वर्षेट सानते और बहते हैं।

. विशास विश्व का विश्वपति मानते हैं।

#### भोग् चित्रं देवानामुद्गादनीकं चच्च वित्रस्य वस्त्रास्याग्नेः श्राप्राद्यावापथिनी चन्त्रशिचं सर्च श्रात्मा जगतस्तम्थ्रकरः वज: ब. ७ मन्त्र ४२ स्वाहा ॥

क्रर्थ :-- वह परमेश्वर (चित्र) चहितीय है (देवा नाम) विहानी के खिए सन्दम तथा प्रकाशनय है, (१२२०१७) हमारे द्वरप मे दथा वत् प्रकाशित रहें । (बाबीकम्) मत्त्रों का मक्कारे हैं, वही (बाव:) मार्थप्रशरेक हैं, (बिक्स) दस सब के बिन्न (इनकारी (बश्यास) सद का बस्य है (श्वरमेः) तेनोमय प्रज्ञ का स्मरण करें। है वरसेडवर । (श्वाता) श्वाप ने वे सारे (याकावृधिकी) गुणोब क्रीर वृधिकी स्रोध (क्रम्तांरक्रम्) वह असरिक ओक बारण कर रखे हैं तथा वहां अमु (सुवे:) प्रकाशयय हो कर (बन्तः) इस सारे बन्तन आ तार तथा (कारणः) बेजान बद माविको सः (कारमा) दिवामक क्या हमा है । वेसा (खाहा) हम दिश

साव:-हे परबेरा ! विटले भी इस विशास सहस्ता में बद का पेतन कार्य है, रन सब में बाप ब्रद्धित्य और बनुरम है बाप जैस क्षीत कोई भी नहीं है। क्षाप सब के परम मित्र हो, वस्तीय हो--. क्रमीनुसार प्रश्न प्रशास कर के सब का दिन करने हो, सदा सम्मिनस्य, तेजोजन और प्रकाशका हो। ये बारे लोक प्रथमी सोठ, कन्त्रीय तथा प्रसोद सोकान्तर जो इमें साथ है या ब्रह्मत है, ब्राप ने ही ब्रह्मत निध्य विधान में भारता कर रहे हैं। आप इन के करों, पर्श तवा बंहर्त हैं। वह जब कीर चेठन रूपी जिल्ला भी हो प्रधार का स्थापन m जंगम बगत् है। जागहार ठवा विशा शक्य संसार है, इस होतों के ब्राप ही सर्व कीर कारमा बन रहे हो । सब के खामी प्राप ही तो हो । इस भवने कटल विश्वास से देशा अध्यत हैं । बाप को ही

#### ऋषि दर्शन

#### सर्वं परमेश्वराय

हे कोगो ! जीवन में जो सी विश्व वस्तु है, क्से प्रसेश्वर के श्रापैक व्हर दो । परोपकार में सना दो । सब कुद्ध प्रशापति का है, उसी का दिशा हवा, वसी के निमित्त समा हो। मोहों को लारधाव से ही मोग्रे।

#### वयं परमेश्वरस्य एव

क्षम सब हली परमेश्वर की मझा है, वसी प्रजापनि सी सन्तान है। वही इनारा पिता है इस श्रमके कायनपत्र हैं। इस बाते जो बुद्ध भी इसारे पास है, हमें जीवन में शक है सह रही की हुश का श्रमार है । यह सब रसी का है-कार्यात्वर पनय।

#### **प्रज्ञवद्**वतंग्रह

श्यो ! इस सारे क्रापंट 📼 ही तो हैं, झाप हमारे पिता है। इससिए इयारा बर्तेन्द्र है कि इस पुत्रों के समान ही नर्शन करें । बापके बारेश के बावसार यकते रहें । बापके काळाकारी बत कर इस सुदूत बनते आमें। भाव्यभूति क <del>\*</del>\*\*\*\*\*\* वर्गाक चर्चा---

# जीवन की दिशाएं

रेखक---श्रो एं a सत्यत्रिय वा सास्त्री सि**हांत विशेष**किः प्राच्यापक:-दपानन्द साहा महाविद्यालय हिसार 

मानव जोवन का ऐसा काई अन्तर क्षेत्र कात संबद और पुनः क्षेत्र नहीं जो देश के प्रवरत्तर्थ से क्रस्थारहा हो। च्या समृत्रि होइन शका नया वैथित व जोजन । वेद ने सारक के हर परका पर प्रकाश बाला है। वेर के अन्तरभ महर स्देश कः दिसाय हाओं है। ये विशापं केवलसात पाता भौतिरु क्रमत को भी नहीं प्रत्यन सानव का समाहे जोवन भी इन्हीं दिसाओं का संघात होता है। सदरयन दाशी विमार्त जिल्ला प्रान्तिको प्रतिक है। सानव जावन को उसनेता आद्भावयांशमंकी ही प्राची संज्ञा है, क्यों कि इस व्यवस्था में व्यवस्था से गमन होता है। शाशेरिक पत्त. विद्या एक सदरागादि के प्राप्यर्थ परम प्रवस्तरतील होना प्रवस है. इसी से इस अस्था को शाबो नाम श्चेषुकरा जला है। ऋषित नाम - सामन्द्र, ज्ञान एवं नोर्बादे का दै। एस सनस्था में वह प्रशान होते हैं। भी गण जब प्रधान हो यह उस स्थिति का सामों यानिपति होता है। 'सन्तिः कन्नातमको भवति' इस यस्ट्रान के वयन से झाने बदते की भागमञ का प्रशासती। पर प्रवास समाव होता है। उस में आगे बढ़ने पर दछरी ध्यवस्या वसिता। धानी है। 'दचनसरो' से प्रत्यन शब्द बांचवा क्स विशंत का रतह परिचय है रहा र्दे । यह रिष्टीत राज्याभस है । एक छे दी ही गये। प्रथम तो नहीं सर्ग है है। उत्तव इस इपरे साधा का भड़क करने से पूर्व नाता कातको. सन्। इ.स.चेत्र मा सम्बद्धि है। महर्षि शिवल का एक सक्त इस

ियों खेल्यह बतालक है। भी भी

पाविषया करे। आश्रम मर्वाधन-सार जोवन के भ्रम्य विमान तो श्याम वर्षे तक पर्वा है। केवन पर गृहाबको हो भोग एव ऐहवर्ड का ऋषिकारो होता है । झतः इस चा श्राधियते इत्तर आस्त्रीत आस्त्रीक से द्यपिक सीतिक देववर्ष है। परस्त के कर्व जोग तो तरह जरी. चतः इस से धाने को दिशा है प्रशीची। द्भाव इक्ष से पदि नाम चल्टी गरि कारो है। अर्थान भीत के मार्च क ह्योद्ध उस से विशरीत स्वाम वस पर डी पसना है। इस सिवे वानपन समाज से विषरीत प्रधन्त जंगत से का कर स्वान्धाय धर्व वय द्वारा पुनः श्रवणार्थं का पाताबरक सर्व्य काता है। यह वस्त्रा नाम वस्त्रीय मगवान् को प्रह्मा करता है। वस्य जो बद्ध ठड्टा, झकः ठडानित हो विश्वच मामे का वहण करण देश्वर वरवा करना हो पर्व रियानिसे ਵਜ਼ੇ ਰਿਸ਼ੀਨ ਵਲਵ ਤੋਂ ਸ਼ਵਿਕਤਾ ਹੈ। ਕਰ वसका मन बागकत शाताबरमा से भर काता है तो उसकी क्षेत्री दिशार द्याती है। अध्यातक विज्ञी स किसी रूप से समाज से सम्बन्धित था। यथ्य धव वन सबसे उत्पर

एउटा है। अर्थात अपनी बस्तुओ

हा सर्वसेय हर, वेद्यान्त्रव हो। भी

छोद देता है। यहां वह कि 'सव:

वर्नमनेम्बोऽनवमस्त् सा बदन

दे 'वसुपैव स्टुब्बबम् की मावना

से बरा धूमता है। बड़ी विक्रति ही

सोम नाम में बड़ी जाती है। बड़

स्ट्रीम्यता, शान्ति एवं समता का

व्यवतार सावत् बाता है। इस

रिथति में रहता हुआ। सम सस के

नियन्त्रकाचीक की पश्चर को सकत है से प्रस्तात सही है प्रत्यत **१६व कर्षांद्र लिक्ट हो। आवा है** । क्स समक्ष क्या इस क्रांबिरव संसार दे बक-धार से स्थापन (विका)

के बाटत नियमों को निरायक के स्था में देखता है। इसीक्षिए सम्ब-रक पौराविक सा**ई सास**न्य मृत्यू सब्बो का संबद बीर सम्बन् पदम को तीता का 10 कर पानांच सुशते हैं कि वह विषय के श्वास्त्र को जानकर रिशर वन्ति हो सके। क्वोंकि उनके सन से भी रूप्ता जी विमत् के बारतार जो हैं। परमा तका यह है कि सरस्मी अस्तिम-काल में स्विर पश्चि हो जाते हैं। मृत्यु परास्त्र मीच मिश्रीते स्थातो है इस में सोशरिक ग्रुल की ध्रापेदा कोटि गुवा स्थित सर्वोक्टिक कानम् को प्रथा होना होता है। शीव की यह स्थिति छन्। है। बर्शन धन्य सम्बद्धों की धपेता करवन्त्र उचन स्थिति को प्राप्त होना। **इ**सो वड परमिवत परसेश्वर के बासविह स्वकृत को जनम् पाहत्य पर्व मस्ति के धारक के रूप में देखता है। यब बह बसर्गत क्यांन बड़े से बड़े शोध वर्त में बड़ से बंबड प्हार्थ मन्त्रि की भारता किये परमेहदर को साफात् देलका है तो उसके संसर्ग से बहु भी मुक्त हो ब्राक्त है।

इस प्रकार वे शब्द जड़ां भी गर विशाओं दे वीयद है पड़ां मानथ के लोवन में प्राने वासी स्थितियाँ के भी बारक हैं। सहादादा केंद्र भी यहां धातीकिता है कि वह एक शब्द से संस्था को क्रानेस सनिविभिन्नों का परिचन के देश है। उसके मीतिक कार्य से यो कदगारण मार्थ के रहस्य तकट होते हैं।

लोगों का जीवन (की सरसक्त की वेट. स्वाध्यायी मंसरी) \*\*\*\*\* बावी भारत संवाद पाडेगी बा

सत्त ज्ञान कि आधीनक फैरानेवस वाव क्रोगों की भारत में सक्टि क्रम हुई देने हुई 🎹 श्लोक में ! बाब कोची को सजन किया सीरांस उत्तर शमुने इसी की देखा देखी आहा के वे लोग प्राय: किसोटे क्रवेगों के इफलरों में काम किया का काम भी कांचे जो 🎚 अध्यक्त से असे असे के बाद भी, हिन्दी के सीत माहे. पर सपनी निजी स्ववहार सक. काम काज सब. आध्य का प्रश स्यवहार तक सब आर्थ की शी के करते. संमेशें का सा कालपाल शहन सब करते गौरव समस्तो भारतीक होते भी प्रामेशों की ही नरुत करते नहीं लगते. स्थिक ऋषेत सने रहते में सीमन सनाते बडीर ऋषते बाब बच्चों हो विशेषतः वासिका**टों** को अंगेजो माध्यम बाडे स्टब्से में ज़िला दिलाने चारस भीरव दिलाने हैं । पत्री में सपते रहत सहस में नदल बरते अंधेओं को धीवो काता तक स्थाय च के. साइट कर परत मोने मरंचते तह सोने रहते वडते ही बेह ही चाहते हैं। फिर नामशं करते.चे सथ काम करते विता शीय स्वाम किए स्रवदा कोई व लेहरीन पात्रामा पहचते सुख पातेहैं दी बादनी प्रायक्षा करको विर आने हैं औ गीरांव महा रसु के अस्त बन वसे

वांग्रे हों के से ऐसे हवो परस्य के जिनकी संस्था बढ़ती ही जा रही है धीर जिल्हा तीर सरीका रहने का द्वय सारशेष नहीं रहा सन्भ्योसना का लाग तक व बांडे पर लाख चक्ता कारी वह दिन्तकों क्षेत्रा (शेष पन्ड = पर)

व्यक्ते प्रस्तव प्रमु के वर्ते थाने के ..

बाद स्वतःहता के प्रस्त अपन आह

यो दिन्दों को न कदते देते कासी

मारतीय रंग के किन्तू होग सब

-							
	🖟 सेठ व्यंत्रक्षकान वर्षा ४८९६६)	श्रार्थसमाज (श्रनार	क्ली	) मन्दिर मार्ग नई दिख	ली	१०६) की शेशन क्य	t-1)
ı,	६, सम बद्दापुर बोर्चरात ११५००)				११०. ,, हरकाड बाक्र	(\$ + 5	
•	], महाराया हरितंत्रह की १५००)	ना बादवं १५०० वस १५००)			<b>१११. ≘</b> थी डी. रूपा	200)	
	r, विश्वा क्षादर्ज १५०० सम्म १५००)				११२. भीनको पनोसमा देशी	201)	
4	🐛 श्रिकाप परिकार तथा करता नेजा					११३. चीवरी राजेज बिह	201)
	देशे भी ८००)	* DONOHOHOHOHOK	NORORONO KANANA MONONO KANONO KAN			1=1	
1	. बीमती विक्ती देवी शहा की राम	रे५. जो बगोर्वरात है	)	भरे. यो एस. एव. सर्य	२५२)	११५ ,, वनजतराय तनबार	7-7)
	शास बेटरा ५२५०)	३६. ,, शीताराम पुत्रपास १	***)	<b>६१. मोर धर्मत ध्याने</b>	940)	ers. "fannne	200)
	s. भी शत राजनान की कानीयात	१७ , बुस्तराज भन्ना १	***)	थरे. शब स्हादर संताशय	375	रेश्क. , अवदीत जुपार क्यूर	200)
	. यहता ५०००)	1	***}	bir, वो बयराक दमीती	34o)	११८. , मगोहर वाब	700}
	t. ,, हो, आर. हान्छ       १४०९)	34. बोसी विवर्तिय क्ष		४५. ,, घर राध्यस दर्शती	750)	११९. ,, वित्रोक क्य	200)
		श्रीवर बारमी है	***	०६. ,, शरीय का राज	₹₹0)	१२०° ,, दुर्शादत भन्तारी	243)
	<sub>रि.स</sub> ाहःसः पुरा २०००) १०, सहासुद्धकरी २०००)		e=t)	थक मोशनसास	240)	१२१. ,, राजेज बर्साच	3+6
	१, को वातगुरूपदाइ सहिती ५०००)		- 1				,
		11, 2, 012 0.040	cc=)	७८. <sub>अ</sub> परभातन्त् काला	240)	१२२ राम वहायुर वासंबृद्धमः साराणी	7-+)
			(**)	७९. ₌ इत्या स्टब्स	211)		1
1	त्र, मीवजे देखराजास साहती एवा सन्दर्भ १९००)	४२. ,, देवराजधारम र	140)	८०. डा॰ मुनेद्र समझर	२०२)	१२३. थी निशसकत इन्ड वादर्भ	(++)
	, ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	X1 " 58428 /	200)	८१, एव बहादुर			
	ीतिलोचनामंबी २५००)	४५ बोमति वयशदेशे कोहनी	(ee)	बा॰ रहंग्यान क्षूर	<b>२२</b> ६)	१२४ ,, हमारीसल गरह्या	200)
•	<ol> <li>राय रहादुर बोदानन कुळियाका</li> </ol>	४६. राय बहुतुर महाराज		८२ को जानस्य शह		>२०. <sub>अ</sub> देशसम	50)
	(10+)	इन्स् च्यूर	#\t)	ंश्रीस्य इस्ट	5=4)	१२६. ,, क्ल्ब दानर एन्ड क	
	<ol> <li>मैंसर्व चुरीलाज संस्थात २५००)</li> </ol>	४७, भी रामकन्त्रवावर ५२६		८३. ,, रेन्क्यात मृहाती	505)	१२७ को जननतान	i = ()
	ीपी एन. वडेहरा . २५००)	क्या '	roy)	८४ ,, शक्यान परीवी	20e)	१२८. ,, दक्षाराम गरंश	3 = ()
	प्. = इरमधनात मरवाद े २१००)	४८. बीवडी वहीवत देवे	424)	८५ ,, बरबी हुन	₹00)	१२९ ,, रविन्द्रताय बाद	5==}
	B.,, गुरुदशस २१००]		401)	८६ ,, समग्री दात	₹< ₹)	१३० ,, राम अस्तार	500)
	८ मनदानदातं पूर्व २०४०)		107)	८७ , सबेन्द्र इसक्ष १७१	) Re0)	१३१ ,, बार. एन, कुली	{**}
1	<b>६</b> ट० त्रीएम, दता उप-क्रुशति	(-; -c	4+5)	८८. , जागरगराव एक्सोडेट	850)	१३२ ,, रोजनमात महरा	408)
	5400)	(t) a transcritt	200)	८९ , एन. नी बेछे	{tee}	१३३ ₁, गरदार पन्द	
,	<ul> <li>बी बूर्वशतु जी सा-बृक्तिः</li> </ul>	(0	400)	९०. ु, नोयनाय गुडशेकेट	141	<b>व्यवस्थारम</b>	1=1)
	7a++)			९१. च एक एव समुखा	141)	१३४. थी बोजरात चोन्डा	?+?)
43	ह. बीगडी शन्दर कड ब्रमा २०००)	(-1 ()	400)	इ.स. वा समझन	(0,0)	१३४. मैनर्ज इत्थिन्द मस्तराम	180)
Ę	२. ,, प्रोम दृश्ट २०००)	l	400)	९३, <sub>ल</sub> शबसर <b>स ब</b> ुर	(34)	१३६ मैसर्ने रिन्दी न्यूतरक्	747)
4	<ol> <li>राव बहादूर सर्वतन्द</li> </ol>		100)	६४. <sub>स</sub> सार वकास बीड	(11)	१३७ वी लिगर दास सुबर	***
٠	वार्यः २०००)	ter 18 de manda anti-	(00)		08 40)	१६८ , बार एर. गुरुत	107)
3	४. हेड वास मुद्र परिवराक्त	१८. ाषु बेच साथ्व इन्प्रिया	- 1	१६ , देशनद		१३९ ,, रानकाशक्त बटवारी	
	धीक वदरा इंद०१)	ſ	100)	१७. वेंतवं २०५४ धेरासस्य	<b>१२</b> ५)	१४०. , सुवेरमञ्च	102)
	५, चीनठी कृष्णा हेळी १५४०}	१६. राज बहादुर बबरसाच पूरी प	400)	१०. गतन सरका समास्त्रहा वर्णत		१४१. ,, वतो मान देवी	202)
	्रः वी देशराज वर्मा हुस्ट    १५००)		400)	९८. घो मुगरीशांत नसक	953	रूप, ,, देववत, रावत्रप्रिंशे	20 (1)
	% माता वेला देवी	६१. ,, राव बहाबुर मोहनलाम १		९९. ,, बलक्शन क्रीत्वी	2 to)	(४३. <sub>अ</sub> जुन्तराज कपूर	700)
- 7	८-महारूपविशे (३००)	६२. ,, देवगुल क्षेत्रक व	(FF		£toj	१४४ ,; हवेबीराम स्पूर	10()
	द्रेंबा० मेहरफन्द यहांबन    ११६०}	६३. ,, अल्बस्य १	(¢0)	१०० भी ग्रहीयदान सहस १०१, रसुभीर, विश्वाद	111)	१४५ ग॰ तिन्छतद धरीस	(00)
	९, बा• महरणान्द यहावन	६४. ुन क्षमस्य श्रेष्ठ भवन । ४	(**)	१०८. <sub>१२</sub> रहाता द्वापक्रमतो देशो	(3.4)	१४६ चौएन के ओक्सा	?ee)
٠,		६५.,,पीएन सोनी ४	[ee	१०६, चाम सुनक्रस्ता दश १०३, भी वनोहरशास ग्रातिस	?={)		2-21
	र्श्वर शब्द (००१)	६६. माता दशक्ती हबरीब ३	154)		(533		P=()
	्रभी परमणोहनवास ११००)	६०. घोमती ३१० ब्राईएन दात ३		रे॰४. धीयती म्यानो देवो	\$= E)		(**)
×	रे. <sub>११</sub> विशायन्तः		[00]	१०५. यह दश्दुर देशसब	{e{}	>	3=8)
ŧ	h. श्रः शोषुत्रकाय शारंग (१०००)			t=६. बी समर्शन्द दुरी	(**)		-
¥	. <b>शीवदी</b> मेहरकव और   {०००) ,		100	रिक्षाः ,,, उत्तरमन्द विश्वय कुमार		-	?+#}
			rd,	१०८-वार. एवं, सैनाशक	40t) ]	रे९२. ,, शरकीर	{=}

क्षांगों 🖶 जीवन रें सोक्षम 🚓 गारव मनाते, सभी

(शह २ का शेंव) ही उसे हुए पर जीवन न्यवहार में सबस हा बरते रहते कारेजों की, ma और पर हुकानदारों से वाब् भी, बीबी भी बहे जाते के इनकी सर्दिया के famer के सिने का प्रशास की उच्चता की करेबा है, और इनका श्रीवा काम चलका क का में

श्रेयते मनोरंशम**ारते विश्व व्यव**ाने के सिये और 'फ्सरी राज्य इस वी कार काफी राज्य"का बहाबाद ब्रापस में बैठ देवता शतरनता भीत है समय स्थान स्थान बनाते. वर्तपत अपने बङ्ग्यन में क्रक्ट श्रीवत की वास तकों से इवे बर रहते, बन्द्य से हर रहते, करनी feature the finance runs. करों, दिस के बोझे कर दार से बरते, श्रीवरों पर करवाचार करते. बने हुए काक्स में साहब कहते. काश-वरचे इतके कावेजी रक्त से रहते साथारस सम्ला से रहते कारत-प्रस्ता कापने डी गीरव में

क्रमत साहच बढाना चाहते पर क्ष्मेप से इक्सक्शरों द्वारा वान जी सहते हैं। क्यांव वे सबने साव की साइब बडाने में रुचि रकते हैं मैं घरों में शक्तों को वेसे बहुते, बालक इनके इन्हें पापा सम्भी

**बसुष शस्त्राओं है हो अस**न रहते बाब बी बड़े बाते हैं। इस प्रकार ये क्षोग चामेज तो अभी नहीं पर भारतीय रहे नहीं, एक विश्वित दग धी बनावटी जीववचर्श करते. ऐसे जाने हैं, सुसा वाते हैं । यह शीयारी पैस रही बचा के रूप में, वस रही है जन-शामारक कर को. इस रीमारी से चवित्रकर भारतीयक्ष को. कार्यस्य को प्यु'य रही है ठेस

बालाचार में और कारे. विकास

वें बाते सोडे के उनी में नापर

चोट लाले सकी सनाते हैं। रमी

ब्यूते अन्य बनी को इन वालक दिनों-दिस | वे बाब् झोस बाहे हों 

+र्रे प्रगति रैरे+

इस सुवर्ण अवसर से न चर्क शहसों का चार्य संस्ताओं में ऋत सावार्थों की इनाव देते

· \$ (442 EPEC SEE) . . 🗢 हमारे स्टोर मैं 🖜

वी श्रीपालपन्द्र श्री M. A. शिक्षित स० ईंक्सब जी का बीवत श्वरित सप चर का गया है।

विकी नहीं देवी से हो रही है वेक्स ४०० कापी शेव है। जुक्ष 🎹 पर सहस्वा की का श'x क' का चोटी है एक संक्वा शार है पह पुरुष बजीर देवी दूसर बानपुर झावनी झारा नवारित हुई है बढ़, प्रचार की हुछि से कीमत बाढ़ बाने रखी रखें है इस पर क्कीशन और नहीं मिलेगा। दाक सर्च पाइक व्य होग्य।

शक्ति स्वान-महात्मा इंसराज साहित्य विभाग A.P.P.

सभा जालन्छर शहर

धरने स<del>्था सहस्र</del> के बन्दवटी दंग गीरका विजी शक्स, विजीतीला वै अस्य सही हुँव बनता से पासन रक्षते, प्रविद्यान वे कृत थे, शिविष्ठ

रकात की बेहन वर्तमान प्रवान वार्व समाव

किया मृहस्सा वासन्बर नेकिक धमर से क्ष्याकरना है बाह थोज रहे हैं। ऐसी दशा में सी हैं। इस का बोम इक्ता चारिक है कि बीमान होने पर भी बाजेस्सास के ज सारमों केकियमानुसार तपरिवत होते हैं। बार्व करने की साम अक्री है कि केंद्रीन संसाधि कर करान के बादे वार्थी का अब्बें प्रवाद किसी-क्य करके विकास्ता में ज़रीन निर्माक्षाधीन क्षमात मान्दर में पश्च कर बहा के कार्य सकट्टों की व्यवस्था, स्वश् के विवादे की प्रकृतास करति का कारा कार्य करके पुनः कपने निवास स्थान सामप्रेम नगर में पह की हैं ब्याप काफी यह होते हुए भी बारवें समाज की सम्ब के एक्के हैं ह कारके विरुक्तर पुरुषामें का यह का है कि सनाज का नवीन अवव कनमन तैवार हो चुका है। हमारी अमु से शार्षिक धावना है कि औ राकरसास की शीम ही स्करण होकर चार्श्य चोजवा के बाहुसार एवं होते. भवन निर्माण के कार्न को सचाह सर से सम्पर्क करा करें।

> अन्तोरराज कार्यवर्ती स्थाव \*\*\*\*\*

सत्यार्थ प्रकाश की परीचार्छ

सहिव दराजना भी के बाहर शाब 'सामागे एकाल' औ जावें बुद्द परिषद दिस्ती सारे देश में प्रशिवार प्राक्षेत्रित बरता है इस क्य ये वरीकार ६ सितम्बर १६६४ को होंगी। सभी नर नारियों को इन से समित्रजित होकर साम स्टामा पाडिय । पर्राक्षा पाठांबधि व्यानेदन पत्र, बन्द्र स्वापना प्रस्त्र वदा भन्य जानकारी के सिए परीका सन्ती के करे-

पर पत्र शिक्ष कर विना सुरूव शास्त्र करें ।

> देशका वर्गेन्द् क्राचीपरेजन क्रमा

निःसन्तान परिवार ध्यान से

र्याद कार विवाह के बाद बाब तक विशासान हैं रोग के सफल विकासक की ६० इंशासमुख्यर जी स्थायक (महोपदेशक पंजाब प्रतिनिध सथा) से मिसें वा एक अध्यक्तर **९रें। भी रनातक दी भारत के मनेश परिवारों की सफसका** वर्वेड चिक्सिस का पढ़े हैं ।

पूर्ण कोसं ३ मास-पूर्ण व्यय २०० ६पए। पेठा--प॰ स्थाम सुन्दर स्नातक महोपदेखक प्रमा समा ३०३ रानी बाग सकर शस्त्री देहसी



ीताचीम कं २०२० **(आर्थमादेशिक श**तिनिधिसमा पंजाब जासन्थर का साप्ताहिक मुख्यत्र) Bagd. No. P. 121 एक वीच का स्वय ११ वर्ष पेचे

मं २४ वंक २०)

४ म्बेस्ट २०२१ रविवार\_दवानन्दास्य १४०- १७ मई १९६४

(तार 'श्रादेखिक' जानन्थर

### विद सुक्तः

### शर उत स्थिर:

सराभव । बाप श्रूप हैं, हार झटल कीर ा स्थ हैं। हा स्थितक हैं। बाप के इसने भोई भी रहर हाने का हिंग्सान नहीं कर सकता। हारी सार्चन काप से ही जाने होते हैं। बाप व्यक्तितारी करा हैं।

### मुखायो **ग** स्पिग्यत

. ब्रिट्टियो ! स्वयं के प्रयानक में कारणे ग्राप्ति, व्याप्ता विधा केकर की मार्चित करना विधा केकर केन करने ग्राप्ति का किया कर वृद्धा सर्वभा केकर केन करने ग्राप्ति का स्वया करने वृद्धा सर्वभा केकर केन की स्वया करने वृद्धा सर्वभा केकर के मंचा है रही हैं।

### सराधसमिन्द्रमच

े हे सतुत्व ! व्यक्ते हस्य वी विवा कर, पूजने किया कर ! ही सुराधस-बाज का भीवारे ! सब पन राष्ट्रियों का क्लाब कृतकी से सांगा करों, चक्के ! सुन्नि किया करों, चक्के ! सुन्नु कुला किया करों-

# वे दामृत

यक्ष: अ∗ ३६ संत २४

श्रोम् तन्ननुदेवहितं पुरस्तान्डुकमुन्नरत् । परपेम शरदः सर्तं जीवेम शरदः सर्तः शृगुपाम शरदः सर्तं प्रत्रवाम शरदः सतम्बदीनःस्याम शरदः सर्तं भूयश्चरारदः सतावा।

कार्य - ((4)) यह का का शाहर ((5)) वह है, तुस्तानों होते हैं है । एर्ट्स्स्ताने होते के क्षेत्र के हमा (हुक्त ) श्रीक्षाने हैं था (हुक्त ) श्रीक्षाने हैं था (हुक्त ) श्रीक्षाने हैं था (हुक्स ) होते का है था (हुक्स ) होते हैं था (हुक्स ) हुक्स ) है भी क्षाने (हुक्स ) हुक्स ) है भी क्षाने (हुक्स ) हुक्स ) है भी क्षाने (हुक्स ) हुक्स ) है भी का हुक्स (हुक्स ) हुक्स ) हुक्स ) हुक्स (हुक्स ) हुक्स )

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

# ऋषि दर्शन

# ईश्वरोणसका मेथाविनः

जो हंखर के जगमक होने हैं, एयु के पास बेटते हैं, स्पृ-निन्द हो जाते हैं, दे मेथारी हो अर्थ हैं, कार्ज बन बाते हैं। म्यु की जगसना से मानव को नेपा की प्राप्त होती हैं। इस रिका ना बन जाते से अब कुड़ सिंह्य जाता है—

#### सूर्यादेशारण्य

विवने भी सूर्व आहे हैं दे का आह्य बहे र लोक हैं इन का आह्य बही पर्योश्वर ही करता हैं मनुष्य हो इन को समक हैं। नहीं स्वता ! को स्वत इस स्वत्र दे विद्या को साहत कर महती हैं। स्वी नहीं जिस्स सोम्प्राहः

रस विज्ञाने बाहे बदनेवद्द है स्थाप के ही जो अनुस्तृत्र हैं, स्वत्र पंत्रक हैं। ब्राप इसार्ग इस स्वत्र प्रोप के एक करें। इर संबद से इसारा वरिज्ञाय करें। इसारा वरिज्ञाय करें। स्वीत कर ही कीम सकत है। साम्बद्ध कि सम्बद्ध है।

है अपना महिन का रसीक्ष

## ईश्वर विश्वास निर्मयता का प्रसाद वर्क और श्रष्टा का समन्वय

(हो प्रिसीपल रताराम जी एम० ए० सना बचान) \*\*\*\*\*\*

देह में चाता है-गूरदम्य विहरे | भी पहली निशानी निर्मयता है। क्रपुतस्य पुत्रः-हम सारे क्स कियों को बाला देना इस है पर थोना वें का प्राथा महे मुखंडा है। मतवान के बामायुक हैं। क्रमने के सोकमान्य विकट ने एक बार बहा बनी शेन हीन मध समन्ते । स्व बसके पुत्र हो । यह विश्व फर्सी की बा कि राठों के साब स्टबरार शुम्मा नहीं श्रमित् इतंत्र्य का चेत्र करते समय ग्रहा सावभाव रहता है। उपस्थित में कहा है - विश्वन्तर पाडिए। धरेन के साथ सरज रही. सायत प्राप्य वसन्तिकोवत वडी-किन्त् नालाकों, सककार बोगों के थोले में बाबाना मो मकंदा है। क्रमो और उन्ते लोगों के दास रहका टेडे रेक्सफर्मों में भ्रो रेक्टाक सीधा आस सीको । यह जीवन मृत्स्य होता है वह बाट दिया जाता है। पारा--तुरे ही बाह्य के समान है टेडों में सरस होना भी पाप है सीर को जागते हैं. ब्राध्यास करते हैं. सरकों में टेबा होना भी पाप है। बड़ी पार करते हैं । शाल देख की जो जिस प्रदृति, स्वभाव का है. विक्रति गम्भीर है। दोनों चोर से उस से उसी अभार का व्यवहार इय सामने कड़ा है। जिस चीन काना शाक्रिक। जीवन की जन्म बी फिजारको वह हो कि वदि यंग तथा का यह मन्द्र है, इस से संसाध कें सा कारण जनता मह जावे तो में सुल मिसवा है। इस के विपरीय भी दिलानहीं, बाकी जो वचेनी कार्य करने में द्वानि की सम्बादना नहीं डीड़ है। जिस की बारणा ही रक्षती है। यात्र के विषय राजा-क्षंग्र इसने की हो । जो सह ऋस्तिस्व वरमा में इसकी बडी प्रावहतका श्री विचारधारा की न मानते हीं है। यह से न तो जोबद बनल है ले फिर ऐसी स्थिति का शकाविता MARKET TO THE THE PARTY STATE अला का प्रतिकार करना होगा।

िर्वातमा किया प्राप्त के नहीं ब्याधी। क्रमाओं ने प्रापने बच्चों को निर्मय भनाना है। इस दुनिका में दिर श्राबाद जोग सीने वीगों हो exploit कों तो इस से बद कर आवश्या का अपवास नहीं है। सदा सावधान होना है ताकि कोई चासक झारमी सन्दित साम की। अपने वच्चों को निर्ध्य ब्लाको ।

जो जिल्हों संख्या की सावना देश का पेरा करता है वह माता िला बापनी सन्ताम का शत्र है। जिल्लाका स्रोत क्षेत्र है का अवसीत क्षरके स्वको काल में स्थाना शीक नहीं। यह निभंदता वार्षिक श्रीवन है WHITE I WERE OF THE WAY WAS BOUNDED FOR THE WAY WAS A THE

### हवन यह का लाभ

(वे वी मास्टर दरवारी **साम वी वनेमा बम्बई-**वा 

वैदिक संस्कृत में इपन शह ! स्तन्तित, प्रष्टिकारक मिष्ट भीर रोक (होन) क का महत्व है। हरांश्व कुल बालु **को**र जब से रोग, रोग से मासियों को दुःश्व **कौ**र <u>स</u>र्वाच्या रमुक्या जल से ब्रासीन्व और रोग के बर होने से सब गरन होता है। सम्बद्धीत्र वैदिह बर्स है। इसे खासका करि भा<del>विता</del> और न ही राष्ट्र के संकट कारे जा सकते हैं । त्रिर्धक्य से 度 १९६१ की बिवनि का साम्रज्ञा किया जा सक्या है। इस के बिर उस प च्द्राट विश्वास वका ही जरूरी है। जीका में क्योर वर्ष त्या का सम न्वय बहुता है। इस देश क्षेत्र के डी वर्त रिक्रोंकत क्षाप्त इसने की शर्वन को सोते चठते सदा धरते रकारा काविक : प्रद्राव के का में तो का की विशेष बारहरकता है। निर्वय जीवन, निर्मयपम, निर्मय भाषरख अस्ती है। को ऐसे करे He is the mentally beal theous man बढ़ी खरप है।

नाराष हम्ब अब वर्णन में पत्रों है दो वह बारनी सामध्यें से समग्रे र्शान्त सनेक गुया बढ़ा देखे है भी वे बहार्य सुरम होका की बाबे हैं। तत बायुके साथ हर २ वक माकर तुर्गस्य को निवस्ति करते हैं जैसे काम में हाओ हां देवक एक बिर्दे हवा के साथ उत्तर **उत्त**य फिल्लों की की की करा केले हैं। यीता के प्रमुक्तार बड़ा से बादका दादश से क्षान और क्षण में प्राची होते हैं । बनुस्कृति के वीसरे झम्बाव के जहने इस्रोक में बाया है कि-'अस्मि में सी प्रकार प्राथी की माञ्चित सर्वे को बाज होती III सूर्य से वर्षा होती है, वर्षा से बाब भीर मन्य द्वारा प्रवा होता है। वेह सन्तों हारा हचन बहते से के रका तथा बेद प्रचार होता है। एव जारमी के सिए पर्याप्त भी व **धा**ना होम इन्यों से जालो मनव्यों का उपकार होता है । साते वीते से वो यह व्यक्ति विशेष को *सस्य विस्ता*त है। अपनी सामर्थ्यातसार वदि को प्रसायमा था। धराये तो पक्त शस्त्रवी बात है पर शबेक बार्व के बिक होस करना सरवासायक है असे ममं भी स्कर्शन के प्रात्सार क्षे

## मध-कलश

(8) विक्य 'निर्वाध' कामन्यर

ब्राह्म सब के काम रहा तिल मेरा वर्षाचार वो चलो सो सबको शैकिन वस की बार यहाँ है दक्षिता देश देश साबिको सनुत्र बाप परियम

क्योरीन क्लिक को रोश, किर बुनका, पक्षत्रश बेकिन पत्रने शका तह हो वह दिला दिसाला हे बचिता को तीय अंत ही बिर प्रकार पहताय कारते की काएँ से <sup>3</sup>मानव कारतर चोत्रश साता

विसरे मात समय का राजा योग उसा ने बारा बेस्टिम मीबर पक्ष वदा वो बादी मान्री हारा वो पित्रहों का ध्यान सील जो किसी कार तक स्माता श्च करता इं सर रख संखे भरे प्यान तमारास्त्रकार

## चाल इन्डिया दयानंद सान्त्रेशन मिशन होस्यार

इस ओक और परशोध में स्थ

शस्त्र को ।

बैठक जो कि १०-१-६४ को होसी शं शह बार १७-३-६१ को जिल्ला के कर्जावर में उसस के पार करे शारम्य होयो । सत्री सरम्ब संग सत्रव 🖽 प्रवारते 🛍 द्वार करें ।

रविवार २०२०; १७ मई १ंद६४ विंक २० वर्ष २४]

# मेश के पथ पर

सेवा धर्म भी प्रमुखंख का A क्र के बार्य समात के रस को के स्थासी हवानम्ह की त्साम ने एक जियम में समाम क्षेत्रं में संशह का अपकार भी किसा है, चन्य एक में बार की कार्ति में बापनी के समस्त्री पाडिए—देसा भी क्षेपाइन किया है। लोक सेना । सही अधित प्राधिमात्र की सेवा स्त्र ७६ सहाय सा है। झार्य stos इसे सहा से निभाश पता क्या है। सार्व शरेशिक समा larय जासम्बर तो इस दिशा में क्रोड स्तंत्व का पालन करती प्रति हैं। इसके सहान् संस्वापक स्थावि पुरुष महास्मा इसराव जी देशो प्रापना साथा शीवन डी देवाबाह में कालून कर दिया या our भारत जे सम्बद २ पर जल-बीतन पर प्राप्ते साथी विपत्तियो को तर करते के किए सभा द्वारा बोरे कार्ये किया, वह स्वश्चिम इक्षित्रस स एक गीरवपूर्ण जन्दाव स्य पुष्टा है। उन के बाद प्रव द्वारका कानन्द स्वामी की ने भी क्रों। सेवां मार्ग पर पत्र कर सना की इस वरश्वरा की कायम रखा। क्योंने कोट पश्चिमा एव और क्वों होडा--इस बात के पीले भी बंद बढ़ा रहस्य है । उनके सेवामाय बी क्रोर संदेश करता है। हमारे देशका करेगी, खारों शहरते सक्तांनों ने सेवानत में बदन इस क्रिका क्रीट देवे रहते हैं। समाज के व्यतायासन, भाषभ कादि इसी बोड सेवा के सन्दर चित्र हैं। इसे इन संस्थाओं पर काल सी वहा महिले ।

एक व्यक्तिके शरीर में किसी इसरे भी भारमा रहती है वा बाकिर से माकर भोडी देर वाल कर नधी आसी ‼ाइस को सात केने उत् वो फिर भूत-वें व महत्त्वे का सिद्धांत भिद्ध हो जाता है । वॉद विश्वी में मृंगी श्रे बात्या बाली है देवा स्वीकार करेंगे तो कल वांट कोई ऐसा दावा करे कि मेरे में दवातान, इंसराय, व्हासन्द् वा शंकर, बुद्ध, इनमान, सीवा द्यादि की द्यारा भारी है तो इन्हार नहीं विका का सदेया। साज भग-नेव का काव विश्वमा चैता हथा है ! सिर डिलान बर सेसरे वासी की जनता तहीं। दसरों का पविचार करते र कार्य समाज स्वयं इस भानित का शिक्षार होने जा रहा-है। इस बात को विवनी जल्दी रोका वाबे वतना क्लब है। यह नी निकारत का प्रस्त है इसे ओंद्र कमाने का साधन नहीं बनाने देना वाहिए था।

व्यक्ति का थीं, परन नहीं है ।

दबक शत्सादी सन्त्री भी देदभ्याश कारी आती है ... जी ने इस सम्बन्ध में साबरेशिक थाये प्रतिकिति सका नई देशवी की पत्र जिल्ला। बढ़ों से इस बारे में को उत्तर प्राया, वसकी अविकिर्ण मी वैद्यकत्ता भी ने इसे भेट कर बार्वसमानी की उस क्रोर सकेत ਵੜਤੇ ਵੇ ਵਿਚ ਵੜਦੇ ਤਰਕ ਤੋਂ ਫਿਲਤੇ को जिला है। मार्थवेशिक सदा से रण किया है कि ती शब्दारण दी को समाज भी वेदी द्वारा प्रोत्साहत मन देवें । इस शार्वदेशिक का का

श्चिमित कर वेंथे। बार्वसमाधे

बोंके से मनोर्डजक का बसला के

### प्रोत्साहन मत

क्य के की कात कात्रस्थ होते संधी है, जिस के सामन्य में चारवा सक्येर होने के साथ २ जनता में शी समाज के सिदांती के प्रति समाक्षेत्रमा सी होने समा है। देशको कें सकावारी करणावस के अवने वर्षि असर समझे दिस्स सहारम्य के सम्बाद २वं सिर क्रिजा २ कर बोजने घर घरस्य बहान सबसेद हो गया। इस की मेक्ष बह होती है कि समस्य की देवी पर शारपाई विस्तरे समेत का ब्दारका आधी है। **वस पर व**ह दक्त मी क्रम्याहरू जी, वो कपने क्षाच को सर्वका सपट बताते हैं हेट कर पासर ताम होते हैं। साम्या पंजा क्रिक्ट क्रीन तेटे रहते के किए किए से पास के उसे जोर र से बायें कार्ये सिर क्रियाने स्थाते हैं थ्या संश्रुत में ब्रह्म करण्ड क्षेत्र व से बोलते हैं फिर बढ पंटा feet किया कर उनकेश होता है। <sub>स्थापक</sub> क्रम से जनश में इसका ाक्षरर क्रिकर आसर है। देशकी के का वर्शन इस के लिए भिरोप कार काते हैं। शसिद्ध यह किया काता है कि उस में कृषि शक्ती धार्वसमान सोना तम्मू का क्षे बात्सा बारी है और दोस कर

> इस ने भी इस मुख्य को देखा है क्यीर इस सिर हिकाने के रूप में सुबा है। देहकी में इस विश्व पर काची देर से कार्यवस्ता में बोम और रोफ है 🗎 बार्य समाव की केटी से इस प्रदान के बाम नहीं होते वर्श्वरं । बार्व समाज इस बार को किस्ता कीर थम मानता है वि क्षिप्र अपनी वेदी से इस असमरे सिर विकासे का चप्रशास स कराये । -- विक्रोड प्रस

इस समय से आर्थ समाज में । इय दिशों पाकिस्तानी बंगाल से बो सासों शरगार्थी प्रपटे मदान. भवि, सम्पत्ति कादि होद कर वहां तरास कारवाचारों से पीडित होका शारत में आगमे भीर बामी कर कारहे हैं। उन पर होने वाले करवाचारों को यह कर परवर भी इबित हो जाते हैं। युनर्यास की ली समस्या कडी हो वर्त है। अस्त सरकार इस को बसाने का प्रबन्ध काती क्रीय करेगी ही । एस्स इस भाईचों के प्रति इसारा भी स क्वेंच्य है। आर्थ प्रादेशिक समा जासन्तर के बाततीय बेता (विकास रजाराम की प्रमुख्यकार स्थानक ने इस सम्बन्ध में कपता वस विशेष वक्तन देकर सारे समाज का ध्यान इस क्षांबहबंक वावित्व की क्षोत दिसाया है। वस्तव्य सामित्रः अध्य दिल पर प्रभाव शासके बाका है। कार्य प्रादेशिक समा रस *दिला* के कापना काम कर रही है। सभी व विसार के मो बक्ती रामक्रका जी व्हकोदेश से मासतीय सभा के केला विधियस की की सेवा में जिला है कि सभा की कोर से क्शकता समाच झरा चंगास सरकार को शिस दिया आवे कि एक सी पीडिए बच्चे समा बाग क्ये केच केट . इम दनको समा के अलागाधनी वें रखकर हर ध्वन्य करेंगे। साध-नीय विभिन्न की से कलकता लिख हिंदा है। सभा सेवा पथ पर फक्ष रही है। इस दिन्द समान से रहना बाइते हैं कि इस विपत्तिकाल सें बंदाल के पीड़ियों की सेवा के लिए दर, सब, धन से इस सभा को श्चिष सहयोग देवें शकि सम

> क्रमिट सेवा का कास कर सके। —विकोश धन्द

कार्य बगत पासन्पर भार्ज वाति के श्रीयन में वह per हो बहा दर्शिन था, अब कि शब्दि थी कृप्त के सात समस्त्रने पर मो भरे दरबार में 'सुपवर्धनेय शासामि विना गुन्देन केराव" वी धोषम्बा इर के कुरबगामी दुवीयन : ब्रहरमारत क्या प्रक्रमंकर समरागित की चित्रसारियों को हकती थी। बार्च अर्थि के बीचन में पस का परिवान परन हास वर्ष शक्तकडे R3 में सामने आया। व्यवस वीरव, प्रमुख समस्त नाह्यसम्ब का राष्ट्र का शीर्थ का सब को क्रेंट यह तथा । शक्ति के न रहने से कितातीक लागों से आर्थ बाति की चपलना मारम्य किया । इस मारोदिक दासता के साथ र केंद्र विका के बाता शक्यों के समाध ने राष्ट्र या धान्यातम पत्र भी मोर श्चल्यकार से पूर्व हो सवा, इस क्षाजा भारतीय जागरिकों के जीवन **ये** नामाविष दुर्जु ग, दुरुमेसन वर्ग क्करीरिकों ने परार्पेक किया । जो भावे जावि तथ, स्वाय, सवाचार,

केटविगाः, राजनीति एवं कार्निक ष्ट्रि से विदय का नेतृत्व करती यो एक दिन कावाति वही इन सब बार्ज के लिये संसार के सामने भिष्य च के राज में साहा दिसाई देशी ही। सर्व भीम अस्तर्भ राज्य किन कर के outside प्रत भे ते को समा कर शासना का वन चावा। समार से पालवर, गक्टम, करीवियं पर्व कृदिकार के मृत की अगाने नासी इस प्राति के सपते जीवन में स्तव दः योज वाका हका । संसार का सामाना भारत का शासिक **ब**क २ हाने को तरसने सन्छ। धनाओं विधिनन आन्तों के वक्कानगाधी की करना कराहें, मार्श्यक्षभाकी का उद्यक्तियों ने मिल कर वेपार किया इस्य हावड कन्दन एव वेद के 'शा। यह बोजना ठैयार कर मार्च साराध से विश्रासन भागत का विकास बाको में स्वविवद इसावन्द

बार्तनार हो सुनने को मिलता वर 1 एवं उन के गरू स्वामी विस्तानन्य

इस के साव हो भारतीयों के दुर्भान्य जी भी थे। जैसा कि एक क्रेक्स

के अलुस्यतसम् नाने वाली लिग्न ने किला है कि, "वरकानग्र ने

स्वातन्त्र्य संग्राम और महर्षि द्यानन्द से॰ भी सलियन जी सास्त्री खिरोमीं :

#### प्राप्तापक :-- स्वानन्द् गाक महाच्यास्य हिमार वकी केती काम कर कारना रहे है । किया या कि भारत की हुईसा के

वो श्यात कारस है—एक सातार्थ-

मन्य प्रधार क्या बृक्ता विदेशी

पेश्री असडाद दशा वे पंता

बारत किसी बद्धारक, किसी

संबीयन संचारक कियी करास केंद्र राध्य । ब्रह्मा तुम्ब ऐतिहासिक की प्रतीका में का, को उस के समस्त सुष्ठ क्यु से काले है कि विरक्षानन रेखों और क्षेत्रमें वह प्रश्नावदाव धवा कनके गढ़ क्या नन्द सरस्वती ने कर के उसे सर्वेदिय त्वास्थ्य साम इस संयाय का आशस्त्र बहासा वराष्ट्रके, जो उस के यथार्थ स्वस्त्य मा । इस के सिने देवों देव सरक बरते को असासके । सकेरो विपराच्यान्य है संबन १६.१४ हि. (सब १८४०) के बराजवाल में भारत के कार्य केंद्र अवस्थान संस्था है जिल राजाओं मैं ऋषिकर ज्वानन्द्रका आयमन ने बाव क्रिया था. वे श्वर के सप ब्रध्ना। एवं इस के कि महर्षि के विरवासन्त से शिन्य ये । इस समय बार्य क्षेत्र में भवतियाँ होने पर के शताओं भी जेली व्यक्ति हो किये कार्यों का क्यांत हो १६५० के रही थी, उस को ऐसते वह ६६ था श्वाधीवता सराम के सम्थम में मध्या है कि समार में जुसने की क्ल बार्वे जिलामा काश्ययक है। भाइना इन की झरती न यो. दह विदेशी शासकों विशेष -धर किसी दुसरे की प्रत्या से प्रसुत थी। स्त्रिकारकोद्वेट की पाठक जासी के स्वजाय से यह मानदा यक्ष्या है विकास-स्वरूप वहां की अवता ने कि बह किसी ऐसे की यो जिस की कत सक्रम राज्य के विरुद्ध सर्वेशक बाद टासने का उन्हें साइस न होता ओ महान विश्वीत हमा यह व्ही बा । अश्वीय संग्रहति में गस्त्री उथय-त्वाधीयता का प्रथम समस्य या । राज्ञान कर वेदा स्वक्रियों कि जिल्ली जिस में भारत के अबक से सेकर ब्राजा के राजांचन करने की करवना कटकुकु तथा करमोर से कन्दाङ्गारी यो सच्छित्व में भा हो वही सब्दो। त ६ के विकिया बहतारी निवासियों इसरा बमान वे वह व्यस्ति ६१ते Elic fram earne toxy f. एक सुत्र में समादित हो, अंग्रेजों के दास्त्व दे दर् हो कभी से फैंध्ने में दलका में किस्सातन के तुक्देव स्वा. पूर्जालय सरसकी की कारद निश्चम कर मिया गा। सकें जो को भारत से कब के पर बेबा में विशाशकि के निरिष्ठ पर पे बेक्ट्रे को यह पूर्व विश्वित एक है। प्रश्नीतम को उन्हें बाते हैं बोजना थी, फिल की 🗎 जारत है कि इस बात तुस हो पुढे हैं। इब बार का मनोरक पूक् करने में ब्रस्टबर्व है। साप मनुरा ब्रश्नवे बड़ा किरकारण सरसकी हमारे

/ शास्त्र में पर पते हैं । यह यह खेंस रे बार्ट अक्टूबर संशास का धार्याका क्षिमा का रहा मा। से क्या व्या सनमना चरित्र महोता कि का प्रकृतिन्द ने पुता वक्षिप्ठ द्वारण को पत्र कोर देश हो : अबे ही कत जोगों को यह रहे स्वक्रथ जेचे, फिल ये वेसे दर्वेश वा श्रीव की नहीं हैं कि इस को क्षेत्र की का

विरक्षामञ्ज चरित प्र० १९५०६

त्वा. वेदानन्द सरस्त्रश्ची इस्री पाष

की पुष्टि करते हुने एक और जेसक

थी किसता है--'मध्येस १५८१ से

अव कि अस का दसरा समयवस्त भारत का **देशका का**ने के **बाद** कारित बस्र के समारम्थ में दी विक होने जा रहा था, बार्च १८१% बह्न क्षावः संभा के शास २ गंगी 🞿 भीर बदरीनाम से विवासस्तर्भ गरनात. स्टेसलस्त, रोधाव भीर काशों के परेशों में प्सवारहा बाही वस कारिय स्त्री वेबारियां जनका में भोतर ही भीका जोरों से की बारती थी। १८४६ के मई याम में यह शाना के नगर कानपर क्या और आने पांच साक तक काम पुर इसाई।माद के मीच 🖟 पश्चर कारवा रहा। चित्र क्वारस, विश्वापर, क्वार हो का मार्च १८३० में अन फान्ति की तेवारिको समामय परी ही पाने से मिर्जापुर पुनार हो कर नर्मश-रक्षोतों के शिये शिक्षण को स्वीर जिल्ला करा । सापने जारम्बक कीवन का व्यक्तिय हैते के सिये तथामण के त्व शिक्षित जीवनी का वड़ी आ कर एक एक धन्य हो जाता है। बोध्य शिथ्य रहते हैं। वे काय की **इतः सामना पूर्व बरेगे** ' बस्र भागे क्षेत्र शास कान्य युद्ध के दिनों वे वह वहां और क्या करण स्वा द्वामन्द्र कलसङ्ग से सीचे सदार। इस की कोई विगय एसमें कभी नहीं शहीं कार्त । वे सक्ताश्राम की कोर (कवराः) आर्थियों को पार्टी पर्व मीमयी भी अपने अक्षा नेत्रों से सावात कर क्सा का वास्पुर क्या नर्मादर के

#### बम्पातुकीय-

# ाय जगत

रविवार २०२०, १० मई १९६४ विंक १९ वर्ष २४

भारत के विभावन के बाद केवानी का किलना विस्तार हुआ है. कितने सभ्य क्षप्तगर वस गते. कितनी पहल-पहल हो गई ग्रीर **किल्**मा श्रीचन आगमा—वह सर sa बड़ी जाने पर पता सग नाता 🖁 । इस शानदार निर्माण में काल स्वयाजी का भी किस कमाल से, **श्रद्धा से निर्माण** किया गया, **कि**तने २ सुन्दर एवं भव्य मन्दिर क्त वर्षे इसे देखकर कार्यपुरुषो **की कारया** का परिश्वम सिक्त जाता 🕽 । एक से कार्थसमात शेकिंग रोव व्यवारक्की दार्शन्दर तो व्यवनी क्वमा स्थाप ही है। सामनीय साव ब्रेहरचन्द्र ती महाजन पूर्व भीक र्मात्स्य बाफ सुर्वायकोर्ट के समाव होस तथा उनके क्रम्य सहयोगियों के अक्ष्योग, महात्या कानन्द त्यामी भी की सामना भीर भार्य गाई अक्रिनों की मदा का परियास है Re बर्ड देशसी से इसना शानवार **अवा**श्च सांबर सिमित हो गया है। अवस्थाती के बैठे क्षांचे प्राचिकारी **ब्ले** २ व्यापारी तथा हित्या न राज-बीर्ति के रोज में काम करने गावे क्कोर वर्शन इस समाज ने स्वस्थ है। वह सब उस स्वर्गीय देवडा महात्या हसराज बी का दन 🖺 विश्वके हाता इक्ष्मे वहे २ लोग ब्राज इस समाज के चारे करा है। क्रिक्स विद्यास मन्दिर है, विद्यान बरानीय इस का हाल है, वजरास · हि—बाह तो देखकर ही पता सगाचा का सकता है। सेठ विरक्षा की ने भी इस समाज सन्दिर के सत्संग शाबा को बनाने में विशेष राचि

स्त्री है। संगमरमर का शेवारी पर संगमरमर मुन्दर परवरों में यदिन देद शखे की प्राप्ता प्रपर जान परवर दा मुन्दर निर्माण अनके धर्मश्रेम एवं कुल शीसता का परिचय देता है। इसके वार्विकरेत्सव वो सोध्य से अरे होते ही हैं। ऋधिसारियों में शास्य प्रधान की तथा सीन्य मूर्ति प्रश्ती भी ६० वदाशय जी सास्त्री **दम. व., भी ए**रपारीकाल की यम प. सुर्पार, देवास्थ्य कासेळ कमेटी कार्यक्रिय वर्षकी बद्रम भी जैसे सारे करवर्नी का बत्साह प्रशंसकीय है। इससी २ सत ता० १० इससीस को महात्मा अंखराज दिवस पर मन्दिर का श्वापाटन भीवत सेट विदेशा की के इस्मी डारा हुआ। इ.स. ६६ वस्त पर भी विरताओं ने ३४ इचार वयमे बड़ा वान और विका । जिसा में सहात्मा क्राव्सर्व श्वामी भी, बार महाबन भी वया सेठ बिरता वी ने ऋपने उद्गार मी व्यक्त विये । विदना समारोह, कितना मनीभोड्क टस्व तथा उत्सासमय वातावरय था। इसका ब्रह्म विकास समाज के प्राप्त मन्त्री को दृश्यारी लाख जी दस, थ, में ब्राये जरम को भेका है जो गत संक में श्वारित हो चुका है। इवले महान समाभोड के किए सारे कांबदारी बपाई के पान हैं। इमे 1स मध्य समारोह से वंचित रहता पदा । बहा चित्त वा इस शानदार कार्यक्रम को देखने का। राज्यानी में समाव के इस प्रकार से किस श्रतीय प्रसम् हुआ । सहारमा इसराज राषान्दी का समारोड की

# दयानन्द युनिवर्सिटी

(थी वीरेन्द्र जो एब. ए. जासन्धर)

#### 

चाउक यह तो पूर्व ही सुत करे हैं कि काअमेर में दवानन्द यूनिय-किंटी स्थापित बरने का फैक्सा हो नुकाहै। सब से पूर्व क्षितस्वर(६६) मैं बाये समाज की विविध शिका संवादों के प्रशिक्षकों की एक मीटिंग देहसी में हुई, बहा इस विषय पर विचार धरने के पश्चात बह निकास दिया गथा कि स्वातन्त्र विवर्णसंटी स्वापित की वारो । इस के बाद जनवरी १६६४ में इसी बारे में बेहती में एक और पीतक हुई बिस में इस विद्या के भिन्त न ------व्यक्तिस भारतीय स्तर पर होत् पाहिए। महान देवता की शरी भी इसके कातरूप होते। कार्सी को निराश नहीं होना पाहिए समाज का कामें त्रवार चारों (देश) कों में फीत रहा है। हां एक बात का कभी सह २ कर विचार काता है समाज की शिक्षण संस्थाओं कर शानदार काम हो रहा है। उसे प्रयु स**रियां** भी समय २ पर भिल्ली रहती है तथा इन्हें सहयोत देना श्री पाईडए। यहसमा हेन राज जी भी स्थापित धार्य शर्देशक समा भी सहात कार्य कर रही है। बन्दी ऐसा करसर था कार्य बद्ध कि इसे भी बेट प्रचार के कार्य के जिस इसी प्रकार से सेट किरता किस असे र इसे एसे बार्य के श्रिष्ट साम्रामाल कर देवें । सभा के सङ्घान कांगकारी बांद इस क्योर क्षण आवे को बह काम व्यंत्रक नहीं २भु समा को भी ऐसा महानक्षकस श्राम करें । मान्य दाक्टर महावत श्री जैसे पेटा हारा सभाका भी **दह पेडा शानदार समारोह मधाना** दै कि इसे देश के यह २ संशक्ती कावे। इस इस्ते बाशा में हैं। ही हिमायत शब्द है । देखे करस्था किहोद पाइ

: (शेष इह ६ पर)

क्षाम पहलुको पर विमशं करने के ्ह्चात् यह क्रन्तिस निदाय किया शबा कि विद्विभिदासम कवर्य स्थापित किया जाये तथा इस के ब्रिक्ट्स सास्त्र स्पर्वे भी एकाँत्रत किया बादें । कद देश भर के भिन्न २ बान्तों के माननीय प्रसिद्ध व्यक्तियों के हस्तावरों से एक क्रवील प्रकाशित हुई है जिल में न देवल कार्य समाजियों कांपतु धन तमाम ओगो से जिल्हें भारत की संस्तांत की प्रवर्शिक काले में स्वीप है, स्वा निवेदन विवा गया है कि वे इस विभिन्ने जिल्लामी राज्या जना कर करते हैं. हरे । इस झारीस पर क्रिय बस्तेशनीय संवतनी के शाम तिये गरे हैं-दे वे है-मी बा मेरह चन्द्र सहायन भी वर्ध, बी. पहचान सुरका सन्त्री, श्री सीमसेन सन्दर, भी व्यवस्ताय सोसस समर्तेर समीका, क्षेत्रका बी बाक्रिक पूर्व गयमंद पंताप, बी यम. य. क्यां संस्थानस्य, महास्मा श्चाकन्य स्वासी सरस्वती. जी टेक बन्द पूर्व अब पंजाब हाई बोर्ट, सा, राम दुलन बाबस श्रीसहर विहार र्यानवसिटी, श्री ६० सरोमान, वायस पांसलर हरूकोत युन्दर्शस्टी दास्टर गोडुस चन्द्र वारंग, महा-शया द्वांगरपुर (राज्यभान) रावाधिराज शाहपुर. भाई प्रसाप की बस्लभाषास, भी द्याभाई पटेल, भी महनमोहन बर्म सीवर य. थी. बार्नेन्वजी की बकारा कीर शास्त्री, राख रक्षक्रवर्धातर जी । इनके श्रांतरिक्त श्रीर भी नई श्रीशिष्ठत न्यांक्यवी के इरताकर हैं। शिवसं यह प्रकट

### दक्षिण के भार्यों में नवीन चेतना

(ते » श्री राजेन्द्र जो भिज्ञाम् देवानन्द कानेज गोलापुर) MONOMINACIONO DE DE CONTRACTOR में वह बंधु ने यह देशी बाव का है

क्राजरी काथ हे क्रांत्रित हथाह बातर द्वार्थ नमात्र का समय जिस भागता से प्रताबा सवा दक्की क्षी बारते हैं जिन्होंने देखा। ब्'तो की वियों उत्सव पूजधान से सनाये आते हैं परन्त दह शस्त्र **प्र**पने साथ कहा विशेष सहस्य उसका है। इस अवसर वर मराठ-बाश के पांच दिलों की धार्च-सदाओं के श्रीतिर्विषयों का भी एक सप्पेतन शद्धेय ५० नरेन्द्र श्री की काशकता से सनाव( गया । क्योधन क्रवासा कानल स्वामी जी, भोगात सा० रामगापाल जा व कारतारिक विक काकात वासा जी की प्रवर्गारमांत की सोटे **बड़े** सब सरी तरह वातमन कर रहे थे। मराठवादा के ३०० के खरामग कार्थ वंश इस से सम्मिश्रित हुए। बनां परानी योडी के क्लिशनी क्रीर जनवी शहर्ष सेनापवि शेषराव और क्षाचनारे पर्व दस्य दा० दास भी इस सम्बेतन की शोधा ये वडी an विश्व के बीसियों कार्य सीर सत्साह स्त्रीर तमंत्रों का सजोब रूप क्य कर यां शारीसमा व के अस्त्राच अविका की चित्रकारी के किये वडां कारो । वै कार्यप्रत की प्रता भ्रें स. श्रानशासन व सगब को देखर मत्य रहा था। यत-धन में ध्रपने बीर नेता पं॰ नरेन्द्र जी के प्रति भद्रा है। विश्वया के लोग कव सहात्मा कान्द्र स्वामी जी पर को

सानो व्यवना चन्मसिद्ध स्वर्णयहार मानते हैं। यह सब सुद्ध हमारे संबदन की शोधा है।

सराहबाहा में बाव समाज की प्रगति के लिये सध्य विश्वता सभा **हैदराबाद की** छोर से तालूर मे **बा**र्च श्रीविधि समा की छए-का कार्यक्षत बनाने का क्रिम से प्रान्तीयता की क्या गय यो वस पिर स्या था,कार्य अन सभ प्राथम के की पर पर ने इस प्रकार की बालों को धार्य प्रधान की भावनाओं के शांतकत पोर्श्य करते इस उस का प्रतिकार किया। यह आर्थ समाज के लिये क्रमिक्षान की बात है कि राष्ट्र की व्यवभावात प्रकार के सिवे प्रमाने वेसा होस कार्च किया है कि ब्रह्मचै वन करने संच से देशी बात सनन भी एसम्ब मधी करते । पृथ्य आपन्द स्तामी भी तो सता परिवादक दक्करे स्टीर सान्य दिः अवसान दास की की दोखना न सेना ऐसी है कि वह रुवर बाव समाज क्रीर कार्य समाज पत्रर अञ्चल कें ब्लेक क्रिय हो गये। यहां तो सेरे जैसे साधारण समाब सेवी को भी बार्ज कर दे क्रापने प्यार के बोल, से आह दिया है। उत्तर मारत में तो मूं ही स्व खार्थी कर्षों ने वह श्रम फंडा रक्त है कि दक्षिण में प्रान्तियता या उत्तर रविया का भय'कर भेदमान है।

साथ इतना प्यार करते हैं कि इस शब्दों में स्वयः नदी कर सकते । व्यश्ची कार्यः समाज वार्तागरिः मेंसूर राज्य की रजत प्रदर्शन सनाई | के नाम काली सजीवी | ASIGNORIO GEOGRAPIO GEOGRAPIO GEOGRAPIO CAL

बद सब कोरो सुट है। आर्थ

समान के बाईर के जीग भी हमारे

### दयानन्द-वचनामत 'ध्यान भीर समाधि में केवन उठना हो भेर है कि ध्यान

प्वार की बस्ती से मूजने दवातन

दीकानों की नदीन बेहना सारत के

द्याच्या में तये दूर का नवनिकाय

षटी स्वर निकालें से 'क्यासन्द की

है पराका रंगीको सजी क्रीडब

श्री तो प्याता-प्यान करने वाला व्यान क्याँन विश्व सन से भ्यान किया जाता है, भौर ध्येत कवाँत विस दश्च का स्वान किया जाता है. ये ठीनों कमें रहते हैं । यरमा समाधि में तो भारमा देवन प्रशासना हो के कातन्त्-सक्ता और हात में निकरत हो जाता है। बहां ध्वाता, ध्यान स्पीर ध्वेद का मेह-माथ नहीं रहता है (वासी सत्वानन्द सी) विरुप हुया। वार्यको समेवन विभागता विराम कार्यका विराम कार्यका विरूप हुया।

# आधुनिक भारत निर्माण में महर्षि

## दयातन्द्र का योग

(ने०--श्री विजय नश्मी वार्य बी० ए०, बदायुं बारत एक बाचीन देश है । कार्वि देशों से इस पर वर्ड प्राप

इसकी विविधवादे इसकी सामा के वक्र आहियों ने साक्ष्मक किए। समान धरवन्त विस्तृत है । विससे क्ट्रोने मन्दर के गीरवरात्रा हाभारत के बुद्ध पा बाव इस देशमें रूप को विक्य कर किया । किया द्यानेक संकट काये । सभ्य कशिया किर मी इस सम्बद्ध आपनीको है र्व्है। यहां भी पृथ्य सहात्मा जीवन कौर जान सी । बाहर के बानन सामी थी. मधेब वि० माध्यक्षारी भारतीय वनकर ही भारत के निकासो हो गए । भगवान राम की क आप्तरका किन्तु इसके परकात् मुसक राखवाने भी के वर्णमें को सार्व वम ठरसते रहे। विसी स दिसी कारण इसारे ये तीनों शेख बड़ा

भानों के बाष्ट्रमया से मारत की संस्कृति, साहित्य, प्रमें तथा संपंक्ति भी माग न हें सके। मैसर राक्ष काताह को विवा । प्रकासका के कोई शिक प्रार्थ और जात करन सम्पर्क मास्त सहायान्यकार के सम्बेदन में भाग होते गयाने। द्राक्त हो यदा । समस्रमान वर्षे के बाद को मों ने खातों के पिजेशाओं ने शक्ति सहित भारत से इस्ताम का बचार किया । स्त्रीर रतसङ की चंगडर्ड को डेका भारत की जनता पर चो€ वस्याचार पुज्य एं० नेशन्द्र की के मेल्ला में धिये। इस दुरकस्था में सम्बों से यहांभी बही निरचय किया गया मस्ति के प्रवार से हिन्द और कि मैस्ट राध्य में नेव प्रकार की मुसलमान में समन्त्रय की सावना प्रगति के क्षिये एक क्षण प्रक्रिति को जागत किया । भवना कार्यातव गुलबर्गा में बना कर तरपद्रवातः चांत्रेत्री रावदः के कार्य करे बाल भेद से बाह्य हेरा

धाने से नारत की दशा सर्वका परिवर्तित हो गई । अंग्रेज अपूर वधा बुटनीतिह थे, उन्होंने सेका-निकारण से आपना वर्स प्रवास . करेंगे ऐसा ५व 'विश्वास है । जनवन किया। संदेशी शिक्षा के कारक वनता में स्ववः ही प्रपत्तो संस्क्रक्षः धर्म एवं आयोजना के प्रति क्षेत्रक भाव तरपन होने समें। हिन्द भक्षे अनेक मानों में विश्वस्थ हा **प्रक** था। द्वंब-तीचका आव, सम्रा-सूत तथा मशिया का देश में बोस वाला था । दूसरी कार विदेश्ये राष्ट्र चपने इथकडों से देश को

> ऐसे बार भग्नकार के समझ में वब कि चारों बोर से भारतीय. भारधीयता का विनाश हो रहा था, सग थवर्तक परमार्थस परिकारकार चार्व महर्वि ह्यानन्ह सरस्रद्यो का

दर्वत बनाने में क्या हुका था।

# भारत में हिन्दी की लोकप्रियत

रण को पच्चा के किए करने | लें०-श्री पं० श्रद्धाराजीर जी शास्ती M.P. नई देहली ही देश की कोई वह माचा, जो कामार्थानीय व्यवदाव का माध्यम बात सके, सब से पहले वह स्वप्त व्यक्तिन्दां आपी राज्यों के हो दृश्वर्सी विवासी ने किया था। स्वाना इयानन्द सरस्वती. श्रोकमान्त <del>विकाद</del> और सद्दारमा गांधी के श्वविश्वित स्वाहता है 'अहिटस शास्त्राचरकु मित्र ग्रीर महाल वे ब्री क्रव्या स्वामी इन में प्रमुख ये। क्षारका है प्रसिक्त भारतीय अधित के वार्षिक अधिवेशनों के साम डिन्दों के श्रविकाविक प्रचलन कर विदार करने के तिए यो कारोजनी का प्रायोजन होता रहा वाद में फिट हिन्दी साडिश्य अप्रोक्षत के संच से विशेष रूप से इन्ही नेताओं ने इस को बढ़ाया। तिक्यो साहित्य-सम्मेतन व्य यह सीमान्य था, जो मांधी जी ब्यादि को कहिन्दी मापो महानुषाय सम के अध्यक-पर की असोबित कर बड़े हैं। दक्कि बारत दिन्दी श्वार सभा की स्थापना भी उसी प्रकारिय में महात्मा गांधी को देखरेल में महास भाद से ४३ क्षे पूर्व हुई। इस समय कीर अब से भी ब्रह्म वर्ष पूर्व तक प्रकारी की राजमोशाजा-नार्य भी **छ**त के अप्रसंकों में के । शक्ति सारव िच्छा प्रकार सभा से अपनी इस बोटी-सी बाद में को सराइनोब क्षेत्र राष्ट्रीय एवश को पट करने के जिए दिल्ही के प्रचार और असार बारा की है एसे जासानी से भकावा सही जा सकेवा । दक्कि में इसके क्रिकिटका भी दिन्दी प्रचार सभा

द्वेदराबाद, राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति

के निजी संगठनों ने इस विषय में

🗶 बर्धा और मैसूर १४ देरत राज्यों

श्रण्डो सेवाएं श्री हैं। इचिता में हिन्दी का किरोध करा है. वह वे लोग जिल्हें एवं उपनां की आव-कारी है. अजी-अर्जि जानते हैं । देवस पन राजनोतियों के बह बारे हैं, बिन्हें समय-समय पर लगाहर वे च्याचा सक्त सित बरना चाइते हैं । बांध्र, बेरल झौर प्रेंसर राज्य हा। हीजो से हो का प्र िन्दी सीक्षने को होड-सी तयो हुई है। केवल मशास में बो बक विरोध रमुदाब है, सो भी मुझे बर जो श्रादोत्सन ग्रादवा क्षोसाइक करने में कथित नियम है। यह बही सारे रिवेद्य भारत का अपने को <sub>अकार</sub> के हैं, जो दिन्दी को सविकासिक श्विनिषि कावा 🎚

राष्ट्रीय महत्व को संस्था विकास सामन हिन्तो अनाय-समा

को राजीन सबस्य को कामा प्रोपित किया जाव. दस विशेषक या जब जोक्सका में चर्चा टाँ. वा स्वविद्यंश भी ने विजास के समय से हो दक्षित के ही सरादों से फिल से बेरल राज्य के अवपूर्व अस्वमन्त्री भी गोबिन्द मेनन, सेसर के श्री सक्करवस चीर बान्त्र शब्द 🎚 भी सरमद सम्भितित हे. इसका व्यागत किया । वन्हों ने इसरकार से

हिन्दी की शिथिक प्रवृत्ति के किए जिल्लाका भी की। बाले में इसोन होता है कि नजमें इसके विश विकरी क्रायमध्य की आदमा काम कर रही है। दक्षिक सारव हिन्दी प्रचार स्था के कार्य के विवरण की नेक्ट्रो को को क्क्र विशेषक से नंहों को के साथ दिया गया है. . ज हवार टेलिंग शाप्त शिवक इस सभा के पास है. स्मीर ६ इजार केन्त्रों में दिन्ती पडाने को स्थवत्या हैं। उससे भी वस्ति में दिखों के त्रीव वर्ष रहे इत्साह का परिचय क्रिक्त है। दक्ति बारत हिन्दी वचार सभा हा हेन्द्रोय कार्यासय सदास जगर में है जो हरिय प्रमेख कडाचम का मी गढ माना

वाता है । हैदराबाद में तो उस्मा-किया किम्प्रियासमध्ये प्रश्ले हेन्सीय मरकार हिन्दी साध्यक्षका विदर्शन शासक बनाना पाईकी थी परन्तु बान्त्र सरकार इस से सहसन न हो सदी । यब बड्डां हिन्दी महाविवालय शस्य महाविचात्रव तया हिन्दा इचार समा हैदाक्ट सोनों दिन्दी वकारह कोवाओं है कानिरिक्त मी बीट कई सार्वश्रीक संगठन इ मोक्रिय बनाने हैं। वन्तर्गीक हैं। हैंडराबाट राज्य की झार्च विजितिकी सना और उस के दम्स कवाँ धार

अ. प्रीवास विकास राज विद्या बहार क्रीर वर्त क्रांत व्यान जोल हिन्दी को इस देश को शामेय चौर सांक्षतिक एकता की बजो सामका विद्यालयों स्त्रीर सामहित स्त्रय प्रसी कारा खाते कटाता आ सीर सक भी उदस्य शीस हैं।

दिन्दी विश्वविद्यालय पर दक्षिण मारव जिली त्रवार समा को राजेश सारव की संस्था मोक्ति करने बात्र से डी देवस सरव-वर्ति नहीं हो कावगी. 🗯 के क्षित कर सभी राख्यों हैं. करी वोन्दो. चार-चार हिन्दी माध्यम रालेज स्ताने क्रपेरित होंगे, वहां दर्भ हिनी सान्त्रम का शिव्यक्तितासः

बी बहुद जावरवक्ष है। महर्पक रिकासओं की कोसाबी इस दिला में बराबर करतांत्र रहे । वर्तमान

- तिका-क्रेडियन राज्यों में से यवि कोई भी इस प्रकार का विश्व-विशासन बनाना पाडेगा को उसे प्राचिक से अभिक केल्द की समान वता प्राप्त हो सदेगी । र्दाचक की तेलगा, कन्तर और

यसवासम्म भाषाओं में क्षेत्रत से ज्ञान भी कही साथा में पार आले ₹ा समके विकास करा केले संस्थात .राज्दों के कोप का निर्योग भी विदे हो जाए तो उत्तर भारत का दूसके शापाओं के प्रवित्तित राजवाक के स्वरूप को ही समझ कर सके वो शनका रहेता । दविका सारक हिन्दी प्रचार समा खशका और कोई मगरत इस काम को चान्छे क्यों पर ते ने तो इससे राष्ट्र औ बहत वहां सेवा हो सकेगो । वांचया की रज आयों जायार्थांके स्वतिधेक भो कास्य सभी जागलेत आगावर् को परस्थर एक-असने के जिल्हा काने के लिए देवनागरों के बेंबलियक माध्यम को ही झावरपक मानकर इक्ष क्यांस करने प्रत्यान प्रापेशित होंने । द्वीवता सारत हिस्सी प्रधार सभाका राष्ट्रीय सक्षरव की संस्था मोचित हो जाने के भाद दावित्य क्षीत कर गया है। उसकी लाक वातावरस् उतना पवित्र नहीं है.

### का भी समस्ता से सामना कर सहते, ऐसा विश्वास है। क्ष दे दारा रुक्तर अधिकार

जिलाना कि संसंधी (बापसा के समझ

था फिर भी वसके समा के गरशीर

कंपेंडवी झपने दरदर्शी चीर सक्ष

स्वभाव से पर सब परिवेशक्ति

बोम्पता को प्राप्त करता है करीन यान्यता से रचिता को पाठ करना है और दक्किश बढ़ा की प्राप्त करता है कीर शहा (विष्ठा) से शिकासन्त्री में भी को बहु आहरासन सत्य को प्राप्त करता है।

### दयानन्द्र यनिवर्सिटी (गळ ३ का शेष)

**वै** कोई कारण नहीं 🗎 वह सिर्दे **चटे** । इमका सबसे श्राविक संतोष कारक प्रश्न यह है कि राजन्यान सरकार ने इस यूजिकसिटी को समापित करने में इर प्रकार की सहावता देने का विश्वास दिसावा 🖁 । रह' ही धन असा हो जाएगा। राप्रत्यान विभाग सना में इस के बारे में एक बिस पेशकर दिया सारगर ताकि इस विस्वविकासय को वैद्यानिकस्य शब्दा हो जादनस्य

दान्त शतस्थान भी उस समय

सद क्यान कर महेगी, बद तक

**इस** स्वय इसके किय हाय-यांद स

क्रिकाएरे । दस साख उपद की चापील की नई है। सारे देश में से इक्ष्मी रहम जमा करना भोड़ें सर्दिन नहीं वसर्वे कि क्षम कार्य समाभी भावने सिय यह वदीको समस्ते इय इसमें लग मार्द । आर्थमयात की सारे देश में क्क हशार से द्वार शिका संस्थात के बार कार्यस्थाओं की संस्था की ध हमार है । दूसरे देशों में भी म्बार्शनमाओं की शालाय है । इस्त न इस रुपवा बडांसे मी बासका है। परन्तु इसरों को इन्हर रह विशेषता स्वाने का काइने से पर्वे इसे स्पर्ध इस के सिप करा न क्या दाना क्रोका । यह एक शब सच्या है कि देश के वसाय वजे व विवाकों से इस शताब का स्वातत किया है। इस के शह अस्वेक बार्च समस्त्री का क्रंब्य हो जाता र कि कर me वस में ब्रास्कि क्राचे । इस समय २६ कार्य समाच बी. ए. वी. भीर गुरुकुत संस्थाओं के द्वारा शिक्षा के परीक्रम करता रक्षा है। यस नमें क्य वेसा श्रानक जिस रहा है कि एक वेजीय संस्था के द्वारा ऋपनी इन शिखा संस्थाओं के सरमने एक सह रीय/वक बोउना वेश करें। देश में जो मी

æधिवर्सिटी स्थापित होती है वसकी

#### भिवानी श्रनाथालय निवानी धनायास्य विकासी का वार्षिकोत्सव दा० ३ से ४ सर्व

क्य ध्रम्याम से मान्या क्या समा से १० क्रिसोक्षण शासी तमा ६० मेहतरामः को रेडियो **बिगर** ता. २० **वर्ष स** से क्या करते रहे । मनाथालय का विशास अका दर्शनीय है। असल पर भी ६० मुरारीकांक भी शास्त्री, जिस्सिक देवरात्र थी राज एस. व. हवाअन्ह कारोज हिसार, बी खामी देवातन्त भी पकारे। हिसार से बी क्वती रामकृष्य वी एडवोवेट, सेठ फतइयन की शांति con? मियानी के पंज देशकम जी मान्त्री एम. ए. बा॰ गिरधर जी क्रात्य श्री रिवक्सस्यास की, १० समनाव की, सन्त्री भी सुमीप की का सबक श्वास दे<del>स ६</del>२ यन प्रसन्न द्वारा। वष्यों का धनुसासन, संस्कृत तमा धर्मसेवासाय उत्तम है। प्रकार पे॰ राजनाय जी दा सीम्य समान तथा शास्त्री देशका ती पण.यः का परिश्रमः की free-क्रयावास जी की सगद हैंसराहजीक है हर प्रकार से कासा सफल रहा।

प्रकल दिया जाता है । दकानव वृत्तवसिटी की भएनी शान होगी। नवोष्टि बद्ध इस विचारश्रास की एक क्यारिसक रूप देने की कोविका वरेशी, जो ऋषि इवालस्ट ने सतार के साम्रजे रत्थी थी<sub>ं</sub> 🗯 एक ब<sub>रे</sub>त बबा काम है भौर इस समय कर सवाद रूप से नहीं हो सकता जब तह कार्व अनवा इस में पूर्व रूप से ज़ट म जाने इस लिए मैं पैनाप सर के व्याने भाईकों से क्लि निवेशन बस्तांगा कि वह इस मोर भ्यान देवें भ्रीर दयातन्द यू नवस्ति के जिप विश्वता भी पन जमा कर सबने हैं. बरने भी कोतिया कों ।

(दैनिक मवाब से)

सब को वचाई।

### . जनता से प्रावस्थक निवेदत

क्षीं पांचनताथ में जो सका संबद बड़ां के हिन्दकों वर क्राया है वह श्रम्थनीय है। हवारों पुरूष हों। तथा बच्चे औत के पार समारे गरी। साला। नेपर कर विधे गये। ओ रंत्रवों पर चारवाधार **ह**ए वह थीर क्लोजा संह को जाता है। जाको वर्षी पार्वशतानी दिख पूर्वी बंबास से वंदस दर दिन्द्रसान में भेड विषे समे हैं। इसके पनार्थत दी शयस्या तथा वनके संकट मोधन हा यात वह बस्त नहीं बहता है। बह ठीव है कि सर्वश्यम यह दिव माधार की जिल्लोहारी है की गवर्त्नेट इस को नियाने का आसक स्थल कर रही है। चरन्त दह संबर इतना सवका तथा नहर है वि इसारी स्थनमेंट पूर्वतया IIII से निपर नहीं सहती दृष्टि प्रीक्षद इस विभय में पुखंसहयोग न है। इस के कार्विरस्त इस भी इस सारी हार्थट्टना तथा विपत्ति के लिएक तथा मात्र नहीं हो। सकते । हमारा मी क्लेंब्य है कि इस भी इस पश्चित्र तथा साकायक काम में सर-

दशरेय को निवार्थे । चार्व समात्र विशेष्तवा स्नाम प्रादेशिक श्रीतिर्दाध सभा पंजाब दस बक्ट जिसारम के काम में सरेद क्षपसर रही है। हमारी आप क्रकाओं ने स्वतिकाल का में सकत. वता कार्य किया है। परस्य यह अधिक स्टब्स्य समा है कि कार्ड हाटेशिक सभा विशेष वैद्याने वर साम को एक्ट्री ईगात हैं भारत्म करे ाक्कः कार्य शादे-शिक सबा की चंतरंग समा से विकास दिया है कि हिंदबात से नहीं कब भारबोबों से प्रार्थना की बादे कि वे इस्थिय से इस्थिय सन

इस कार्य के लिये सभा के कार्ता-

#### की के प्रेम के के बार की केंद्र वह सहाक्या कार्ब क्षूत्रक कार्यक व्य दिवा अपरे।

रक्षासम्बद्धान व्यर्भ पादेशिह समा वा<del>द्यपद</del> सभा 💵 कियात्मिक प्रश

हिसार के वी बसरी रामकृत्य वी एडवोकेट के लिखे कतसात सद वा पहरूर रीवटे कड़ेही काते हैं, कार्य शहेराक श्रांत्रनीय सम् पंजाब जम्हत्यस की कोर से कार्ज समाज कार्नवाशित स्टीट क्लबका की मार्पन बंगास सरकार को सिका जा रहा है कि पूर्वी बंधाल से कार्न बाडे बस्याचार पीडित रारवाधियो के जसहाय एक की बातक हिसार चित्रका होतें ( उसकी मुखा के करता-बालको मिकानी तथा फिरोजपर कादि स्वानों में रख कर वनका पूरा वालन योषस करके उनको शिक्स भी विया सास्ता। सारा प्रक्रम विना जाएसा । सारा भागमी सेका परम्परा पर चन्न रही है।

# श्राय समाज रहीजी

(जिला करनाल) के गांव कशरपुर में १३-१४-१%

शार्च को धमधाम से अनुसा सम्बद्ध कात का हाथ नटायें क्या 'क्यरे हुद्या शिक्ष में पूज्य रामेश्वराकेष् की हरसाल की की विकटा **संस्कृ**ति व नत्यासिंह जी के मनोहर माणा य अञ्चल होते रहें। बनवा से पर्याद साथ श्वासा । केन वसारकी धन सी श**च्छा रहा**त

# दान मिळा

(মুদ্ধ ৬ কা বাব) ३३% व्यक्तिसम्ब श्रेरतासदास १३५. भी रामकाल बसानी १५६. ., विसमदास समेवा tot

bay.

११७. .. विस्तृतित्र

बात के बग में साहित्य की क्ला दिनहीं मी स्वर्णक से कियो र्क नहीं है, साहित्व वहां झान का स्तापन है वहां शबेक व्यक्ति के Ber प्रमेष केंग्र में लागि क बहाम् सहारा है। विका साहित्व के कोई भी शकाब, वर्गत कौर राष्ट्र विचा का विकास वहीं कर बस्ता और विका विका के विकास के किसों को भी उपनी सम्बद अपरी है। साहित्य जहां किसी को क्याति का साधन है, वहां साहित्य ऋषेड समात्र, जाति चीर राष्ट् कार्यं सहै। जिस प्रकार वर्षस (सीमा) में शर्वेड सामने की वस्तु दबा तस्य ४५ में विकाई देती हैं. श्चीक हमी प्रकार प्रत्येक समाज सावि चौर राष्ट्र के स्व स्व साहित्व में असका सम्भूषां क्य दृष्टि गोचर क्को जाना है। विना साहित्य वे किसी के बातीय के सम्बन्ध में

विकालों ने 'शास्त्रं मर्थस्य कोक्समा साहित्य की नेत्रों थे स्प्रमादो है। सरोर मैं जो नेत्रों का त्यान है, वही साहित्व का स्वक्ति, समाज और राष्ट्र के जीवन में स्वान है। नेत्रों के विना शरीर ना संसार ज्यर्थ सा प्रतीत होता है । क्या प्रत्येक प्रकृतिक स्वता हुव्या समाई देता है-वाका वासे बड़ी निकाशन है। श्रेक वही साहित्व बी स्थिति है। परतुतः साहित्य की महिमा के विषय में चाज के ·कुष में शिलना था बहुवा सूर्व<sup>°</sup> को · दीष क दिशाने के समान हो उपannunge & i

पूर्व झानकारी जात करने का एक

कार बाधन साहित्य ही है ।

अधिका सक्त इन दो सन्ती को भ्यान में रखते हर कार्य नेताओं और धार्य जनता को स्रोवा में निवेदन है कि आर्य बना के विशास साहित्व मनदार से कव किरते हो आवं जन पूर्व परिचित

# ब्रायं नेताओं श्रीर जनता की सेवा में

(से॰ भी नदसेन भी दर्खनाकार्य वि॰वै॰ सोय संस्थान होश्यारपुर) होने वाले आर्व बर्शहरव से । सिए इसकी उपबोरिता को समसने

के जिब (एवं प्रस्तुत विश्व की

स्पष्टका के सिय) तथा सामेंदेशिक

कार्य तक कार्य समाद का किन-

क्सि शाचा में, क्सि-क्सि सेसक

इप्रा क्या क्या साहित्य किस-किस भवं प्रान्तीय क्यार्यं प्रतिबिधि समा . हे स्वधिकारियों के ध्यान की साक-विचय पर प्रकाशित हमा है, इस र्षित इस्ते के क्षिए वो स्वाहरया सम्बन्ध में सबस देने वासी होई मी परत्रद हरि गोचर नहीं होती है। देश पाइका है। यह दो दर्वदी बाठ है कि पंजाब विश्वविद्यासय से धात के प्रति सीच दग में क्य एक विद्यार्थी आर्थ समाज के देशो पुनद को बहुत ही अधिक नार्वत्व पर शोध संध शिक्ष रहा भावद्वदशाहै जिस के द्वारा यह अगल शान हो सके कि किस किस था, उसने श्री क्षीम कमार जी. विषय पर क्रिस किस भावा में किस राजेन्द्र जिल्लास श्री एवं रासम्बाध क्षित्र केलक ने क्या उस सिमा है। बी बारि बार्च वरहों से कार्य सन्मवदः सामारक दृष्टि से सोचने साहित्व के सम्बन्ध में पृक्षा उन्होंने पर वह बोजना बहत विचित्र ही वया ज्ञान उत्तर देते हर रहा कि धानुसव हो, परन्तु जिन संदर्नों को माप आर्थ साहित्य का परा परिचय तेता. प्रत्य सादि विसने का सार-शन्त करने के जिए विश्वक्रियासय सर प्रश्न होता रहता है तथा जिन गरस्य स्थानी पत्र साईटेनिक को किसी विषय पर कर बेलते या समा रेशनी ब्रादि के उत्तकासरों शोध (Research) ६२ने का ऋव-का निरीक्षा को किये। पराण वे सर बाता है. वे इसकी उपवोशिया ऐसी किसो मो पुरुष का परिचय की बढत सरसदा से सकत सकते नहीं दे सके जिस में धार्थ साहित्य है। यह साबारण दिलाई देने केसन्दरसें पर्कणान कारी दी क्षमा दावं भी बहुत धादिक उप-नर्र हो। क्टॉबि आर्थडरात में जोनी है। व्यापारिक रहि से वह ब्राज कह रेजी कोई पक्क वकारिक कार्य ब्रावका एक प्रकार से टोटे का नहीं हुई है। सोबित उत्तर के सीवा है, कि इस परिश्रम साध्य कारका मेरे ध्वान में उन्हें क्रम्ब को सरीवने बाग्ने क्रियने इड क्यी क्युथव हुई होनी। सध्यत होंगे. परन्त साहित्व सेपा कसरा **मक्ष**त्र पूर्वा वदाहरवा भीर विद्या की रहि से यह अंश विद्वते दिनों का है, भी बोरेन्द्र बारका स्थयोगी है। यदि बार्स ती ने 'भीर क्लाव' में ब्यार्य सनता बन्त की शबेक सार्थसमाज सीर के जान एक सम्पादधीय सेक विरुक्तम् संस्था आह पुस्तकः की पश क्षिमा था, कि एक अमेरिकन दम्पती थक प्रति जे से तो इस का व्यथ यास्य के इतिहास में कार्य समाज सरकार से पर्ग हो सकता है। द्य) इरद्यान्ति हो समयने 📰 चार्य

सर्व अगत के साहित्य की सबात के प्रशीत के सम्बन्ध में प्रभ्य सूची की सङ्ग्रा बड़ी सेखक. बक्का बीर शोधको तलः बाको ब्रान कारी शास करने के शिव .होने, बवा बाले दिन त्रवाशित ही 🖺 वहां साधारण कार्यकरों के क्रमेरिका से का कर! मारत के

विभिन्त त्वजी का भ्रमक कर से है. वे एकर वे पाकिस्तान सी वार्वेस वे सावेवेशिक समा वेडली भ्यी। विश्वविद्यालय गुरुष्ट्या कांगवी इत्कादि विभिन्न स्थेओं पर गये. में बद मही क्यात करें दब करते हैं किटले भपनाता शक्त हुई। इस बटना के सम्बन्ध में बतार्व अवस की पत्र पत्रिकाची में भी सम्पादकीर क्षेत्र का रहे हैं। वर्ष्ट कार्य साहित्व की कथ सभी को कोई पुस्तक होती तो बाह उस को इस कार्य में बहत महायक्षा रेखे । वे रुस के द्वारा कार्य समान के करी। दे इविशास सम्बन्धी प्रश्नों का एक द्य चयन कर 🔝 बधा इन छ। कार्य बहुत कुछ सरस्र हो जाता। इस प्रकार ≣ झाने क तदाहरण इस कार्य की उपयोगिता सम्बन्धी विशे आ सब्दे हैं।

वस्तवः इस स्वयं को मार्ववेति समा को सपने हाकों में होतार्थ शोज लेना चाहिये। सार्वदेशिक समाका जहां राजकाओं के कार्जक त्रवेख मध्य महत्र है, बहां ४४ मध्य मक्त में एक ऐसा पुस्तकालय होना चाडिये, जिस में आर्थ जयत क त्रत्येक मांचा का **मार्थ** शाहित्व उदस्थित हो । सचित्रेशिक सन्ता के तिए mr उपग्रेमी कार्य कीर्य कीर्य नहीं है। मैं स्त्रीपारक ज्ञान वे अनुसार इस कार्य की रूप रेख क्यांत जेस में शीक आर्थ बता दे समञ्ज रसने का प्रवास कर्तता : में ब्याय जनम् को अन्देक पत्रिका है सम्पादक सहोरक से सानगेर शर्थना करता हूं, वे व्यपने सम्पादकी बेलों द्वारा व्याय जनका स्वीर क्यान नेसको का इस जोर ध्यान भाकीप बाने का संगि ।

### व्यक्तिक भारत निर्माण में उद्दर्षि द्यासन्द का योग च्चै॰---मित्रव अस्मी औ साव<sup>े</sup>

B.A. 44153 (गतांश्र से खागे) उन्होंने प्रवर्ग सर्वनेषुत्री

तेबा, वृद्धि धीर विद्वता से मारव ध्यक्ष जनमा की बागाने तथा स्था पुनस्कार करने या शीरा प्रयाः स्वासी सी ने भवने **हो**शों से भारत की कार्य जनवा n. क्यों तका अस्तीयका के प्रति **शिन वरसाह** सर दिया। एकोने वने जिल क्यों सत्यार्थ-कारा, प्रमेशारि भाष्य प्रसिद्धाः व्यवहार ान. एकवेंन भाष्य, गोषसामानिष स्कारांनभि, ऋथेर भाष्य, बार्या-रमिनव, वेडांग्यकाश कादि से हरत में पुन: क्रथने जब्दीन गीवय प्रति जागति एरपस की।

वनको रहि में साथ सभावा

क्षित्रको सकत कर समझि है। हैर वह तथी सम्बद्ध है अब देश स्तरत हो। बड़ी बारका है कि कोंने सबने प्रसिद्ध साथ सामानं काश में सब से प्रथम खराज्य क्रद का क्यथेग किया । अक्राबात था जाति मेद रूपकी राष्ट्र में भा हेव है वे बास विश्वास स्थादमरी रीतियों के प्रति भी उन्होंने शिव क्षेत्रा की। वात्राव हे सरकातं, बारा के जिसको का ऋषि का हमात्र वर हम संद को एकाजिल रमा ही पा. इतना ही जही देतिक वनीति पर मी आपने प्रदाश छत । राष्ट्रमाधा हिन्दी को गज-वी होते हर भी खपनामा तथा **प** श्वानों पर चथित स्थान विज्ञाने श्रापने डी प्रवत्न व्हिया । यही प्रकार कि बाएने चपने सक

त्यों की माधा दिनी ही रक्षी।

तपने ही सर्वत्रमस एक राष्ट्र-

ज्ञाना का विषय है कि बाज

प्रत सरकार ने वसे राष्ट्र नावा

# माधवाचार्य जी का शास्त्रार्थ से निर्लउजता प्रवंक पलायन

(भी नेदप्रकाश जी जाग हापुर) \*\*\*\*\*\*\*\*\*

२३-२४-३१-२३ अधेस को यन में बह पूछा गया कि सरकार्य इत्तर की सनतान वर्ष सभा का प्रकार में उथान महायों क रक्षत्र वा । प्रसिक्ष पौराणिक एकहर : कारक से इस प्रश्न सर्व किस्त है। गाधराशार्थं भी ही उस उत्सव में वद साथ क्ला है। क्रुफ़े अकाव accordings access के धनसार चलोंने झार्वनमाड भागाता है किसे हैं वह बाबंध हुए

जकान व मुद्रे हुए। ऋक्षा भी की भीर आंध हराज्ञल जी के विकास आंध्र से बतार जलक हुए जो नहा नहरू सनर्रक बार्ट की जाल्याचे जी से ही मेदन बाने हीते, वह हेसरी पं॰ क्रमानिह नी कार्य सामक में विका है पतांची वह पविक ने भार्न समाज हापड़ हारा बालक के, बधान के या धुरे प्रसान मानवामार्थ ही को सक्तः केलेंब हर ये साम्बदी ने व उत्तर दिशा विसाया चार शत किसदर थ**९**-. न शास्त्रार्थको वैदार अर। यर वाने और सहस्रों की संस्था में शंद धन्गेत शर्ने बहुत प्रती । त्यो । अध्यक्ष की ने सतत कार्ती में

वह भी बहा था कि-साबाद प्रकाश में साहि नगरि। के सम्रद बवान मतस्यों का उत्पत्न ट्रोक्ट बाकारा से इद पतना Forms & 1

कार समाज की बोल से विजा के पद पर कारूड कर दिवा है। इस प्रकार से ज्यनहार के सभी लेकों है प्रकृषि उधानक के µ=डों ने बहरत कांत वपस्थित की। चौर ने क्रमुनिक भारत के

क्रियोग में महत की श्रेय की ईंट के अधान सार्थ का रहे हैं।

साथकायां जी के साथ शी पै बमरतिइ धार्य र्यापक जीका दयानन्द्र-वचनामत 'ट्री-पर्लों को सदा राष्ट्रि के इस की सीना भाविर। वे

मदेरे पार बते. अधा वहर्त में बढ़ बैठें। अब से पहिसे ईश्वर का रेकाता कर के किए वर्ज और क्वर्य का विन्तम करें। उस दिन तो कार्य करने हों, जन का समय-विभागांह क्यांने। क्ये कीर कार्व के कार्यों की करते मा - वर्ष्ट कोई कह-कोश भी हो. तो भी वेदी भारता वर्ते कि उन का परिचाय क्वारि न होने

शी रं∘ **क्षमरशिंह जी** ने स्त

हारा भी चेद्रेत्व विश्वकावे क्रीर

टसरा विद्वापन भी सूपकामा कर

बा गोवंड था साध्यापार्व की

सम्रा पेतेन्ड : इस को भी सहव्यो

की समझ में इन के सामने बंटवाया

योनों विशापन साधवजीकि हाथों में दे

क्ति रहे । उन के एइते इप की सारह

श्रीकर से धारे नगर में योचवा

करा दी कि २० अपने स की राजि

को धाय समाजवे (क्लास मेरान में

पाने । व्यवशारिक सीर पारकार्षिक क्षांत्र-कर्य की निर्देश के शिए ईस्वर की लईव, शबैवा कीर पदासवा मी विवा करें। का स्थरा समावा था। 🗓 परसेक्वर भी इस र्राष्ट्र और सहस्वतः से सहाकतिन कार्य सी बड़ी सुरामता से फिद्ध हो बाते हैं।"

शास्त्रभ्यं द्रोधा वदि संख्यं जी बस को से भी पंत्र करास्त्रित सी समझ ओ के ब्रांसनेश माध्यमें दा यदिन पर्वेक सरहान करेंगे।

'२६ अमें स के दिन ना मोध्या की गां और शति को उन भी सक्स में विकास वाटे गये। किर सी २७ के प्राप्त :---निकोश्याता की जातन घोड कर माग वर्षे **श्चिर** राजि की सरी थीड़ में भी ए॰ समर्शिक औ ने सिंह कवेंना के साथ साधव औ के मापयों की पश्चिम तमाई' स्टीत कपने पद्ध में जनावतें की सनी क्या ही :

क्षवीपदेशक किसालव हापून के विद्याचियों ने भी माश्रद भी की बई शत पूछे और तम की मठी बातों के विश्वत प्रमाश प्रम के शामने वा पर दिसावे । पर प्राप्तक भी ने इसता तक एक ही सत्त्र को इपना भ्रेप बनाये रला कि--

aresi offense व सोक्य विश्वती सहैन ।'

### ऋार्य समाज पलवल (जिला गुरुगावां)

का उत्सव द से १० गई सक व्यवास से सायन्त हुआ। गाहे-शिक समा की कोर से भी पं य-दूसेन भी, पे॰ बेसार.स श्री का पादेशिक कासभा देहसी का स्टाफ पहुंचा। उत्सव के सम्बन्ध है की पं० चलुक्षेत की की श मई से निरम्धर चेड कथा होती रही । छताक के विश्वा में बावने बाहर आहेत रिए। किनका जनशा पर क्राप्ता प्रभाव पदा । वदा के दिलों हें 📾 इतिकारी के स्माने समय क्षेत्र रहे । अञ्चल सर्वात कर के जनक सहर ।

> श्रार्य जगत में विज्ञापन देखर साम ततार्थ

# हिन्दी के शेमियों से

#### 

धार्च समाय के श्वित हेता | निकारे के श्वेत काल काला उत्का तरायश् बडी श्री शीरेषु को देखे-का कार्य अवेशिक सभा (अ) **अध्यादा के पूर्व सार्वस्तर्क स्थान** शोन पर स्था कि शबसेर प्रजाब 🖈 का. इत्यमेन जी धार्य समाजियों वे साथ हुएँ पात पील हे बारे में क्रिकी में की सारे दिन्दु समान का रह प्रावस्थित विदास करता है । कात इस साथक्ष्य बात की चीर गितक दक्षा कि स्टे. वीरेग जो की **बिकारो हर बाले यह उक्कर वे** बोदी पर शाम को इक बढ़रे कों। कार है :--सन् १६६१ को अनगहना विक्रमे पर निर्श्वय किया कका कि के प्रश्नी कालि इस हो परा है क्षात्र है पार्च समाजी- सामाज fle cistal में दिन्हों महामा की पर्ने गौर तैने देशकों का वस **शाक्षा है।** यहि कल्पलना में इन ममोत्रम अक्षपर में जनगळ्या से दो सम्बद्ध वर्ष बसाया असे ब्रीट भोक्राक के जिल्हा लेता समय पा इस में लेखें से मान्यक दिया कारवाई न वरहे तो ने कांच्ये उस निकास के किए वहां अबे । le क्रिशीय होते । प्रशासक से बरकार ने इस सम्बोधन के दिव क्याका का सास पदिले अंजान ने र्श्वेद से धनकियां गाँ (हमाने यक्त्रं की गरहरित सर्वेटर है वं शावने पर होक समीकन से सक्त का उद्यादन करने सामना रक रात्री पूर्व कारा १९४ करा हो क्यारे के मैं उन से मिला की साधा समस्य। या इस श्वाने वे व्हें। सन्द्र क्षीय हवें चर्मकों क Bec जोध से गोध भाषा समेरो दुगावश हे बावद्या सम्बेशन वरी ची बोटिंग वसाने की प्राचेना की **व्यक्ता से सम्बद्ध हमा । विश्व ह इस** पर क्योंने नतावा कि बहुत वरियास लक्ष्म शास क्ष्म नाराया माने भ मधरी हो स्मेरं से हों मी शेरेन्द्र औ, मासाब एक अवैदिश क्या रहे हैं। परन्त ककोंने देव हो, जीवती दिशका क्षेत्रको शाय हो बड़ा कि पविषय ज्यातन क्षानदर स्वीति की तका सुधे प्राट क्रमा तरहर ने घटने पायी है बापये काल ही पक्ष जिला थसा । इस हैं पंकारों की एजान की सहयत ने जनान: देने से इन्डार बर दिया श्राच करा है । यह तसमान काले पानी है। यह में देखा इस भ इबें जेत भेत विका सका

प्रशास पहा । क्यांप हमा शिरकता क्षका श्रीक है या नहीं। हो पढ़े थे. सन्द क्लोकर की के के बार्ग अवस्था कोच किया कि इस कोए से करबार अवस्थान चालक तया हमारी विकासको व्यव द्वार कर उर्ज दो । विस् के बांडरों के प्राचार पर वर रह के बिर सम्बेटन नुसादा वा पंजाब की बहुमन की माना का व्य पूर्व हुमा। प्रशास के होगों ते विश्वंब बरने राखे हैं और उसर क्रोर प्रशास के किन्द्र और दिन् बहु सब से करश्रद्धना में प्रयान मात्रभाषा विन्दी जिल्लाई तथा बोबरने इस बाव से सर्वता करे fam It i su fint mir b ure-a सर् में कथान सरकार से प्रचल है एवं को नेतायते देती कावायत नकर्त को सर्वकार इसते हुए सनके .है : इसके बातशार में में नक्तर सी े किस्त केंद्र भी बारक के किया ह

आकारता की पश्चिम भी का बह

इस बात का हिन्तुकों पर अस्त्रहा

# महात्मा श्रानन्द स्वामी मेरी दृष्टि में

वो विनयक्षाय थी, स्वारकी कहा, नृतुष्ट, घि. यो सम्बानदास धी अस्टिक्ट अस्ट्राम अस्टिक्ट अस्ट्राम अस्ट्राम अस्ट्राम स्वातुक्तों को बाह्यक का वह े जोसपुर में रक्तों कहारे का में

वरीमा वह है कि वे बनशें के शाव वेसा त्यवहार करते हैं। यान्त्र न्यपुरुषें की बनेबा महात्याको को बचने अभिक आहे होते हैं। व्यक्ति इनेनिने सहत्रमाध्ये में से रक है तथा अहात्या आर्थर स्थासी र्ज सरस्वत्र । अस्त में तो क्या हे विदेशों में भी फॉबर है। जिल भारमी ने कर के दुर्शर नहीं फिरे दें सम्बद्धा है कि यह का के लिये **पठ गत को दुर्बाय को श**त होंचे । उस वे वेसा इंस्ट्राफ गाविन इस बंबार में शायह ही हो। जो वह दार रह है उसके बर जेम है बंद्रे केन के नागताब जिल्लाने धा करता रहता है। धोर मर-कर उन के बर्गन करने का इच्छा हो

कारत है। 'बहान्या मान्य सामी' सह नाम पन के किस्तम स्थास है। हे

क्या से होता उन दे पता पहल है जब से के कों द की होती व हैका होता । यह जा 'कर्क दिवार्क काला दहर हो का यह पहला 'के ना पहला के संदान । की ना पहला के हैं संदान । की ना पहला के हैं संदान के दे सहस्य करने हैं। पता उनक करा बात है बहु की हमें है दे हिस्स कार्यल एहंगे हैं कों होने विकास करने किए होती हैं। होने का करने किए होती हैं।

भाग का श्रुवार है (स्क बार क्ष्) स्वक्टर की बहु द्वारा भी गर्सक किंद्र हुमा कि र आसी में तरह के स्वत्रत को मान है। टं—de

ध्य के हाथ का फंग्रुश स्वातकार हे इरकाले में लगे बाह भा कवा तका बहुत रक्षा चक्को सहा धा इन्होंने पांच इस सकते दक्के स्वयं योवे तथा परवाह न की। काने पर बंदे विशा की में देशा ले एक इस डाक्टर साहित के पास क्षे रावे। शाक्टर साहिक देश कर हैराब हो वडे वर स्वामी जी ने **ब**ड़ क्षि किसी का अंगुटर सराव होना हमें वो कोई दह नहीं । यहां भावे स्थात दें भाषस्य हे रहे थे। भाषक का विषय गंगीर था। वातावस्थ को हास्य कर कशाते के किये सक सगकत ने भी हनका **व्रा** दिया कि सारक्रपीक्ट सराव हो समा। सर सोय विकित हो सबै विश्वती थाला उसे क्याने क्या है स्वाकी जी बोख कड़े 'कनाजे **क** कोई करतंत्र नहीं मैं सद ही सक स्वीक्ट हु । कारी की कारी मन्स

जा के कि कांकुक स्थाप ( ) है । वर्षकी ( कि कांग्र करायों के वा जाता है ) जा कराया नहीं होता है के व्याप्त होता है है । वर्षकी होता करें करा सुकत है । क्यांकित होता कर करा सुकत है । क्यांकित होता कर सुकत सुकत है । क्यांकित होता कर सुकत होता है । क्यांकित होता होता है । क्यांकित होता है ।

धार्यमा करशा हो।

बारवनत् वासम्बर		,
कार्य बारेशिक भौतात्री	. y	तमा वरेत या व
सभा की सूचना	- उन्हें का भी पूर्वन्त सी	क्रिके के क्रिके एवं स्थवशास करें । प्राथति
. प्रदिशिकसमा की 5 5 64	अस्कारी मुख्यास्थापक अवसास है	ग्राम् क्रमा हुड अनुनेर महा-
की अंतरण सभा के प्रसाद रें र के सभुनार समा के कर समिदारियों	मध्यमा जी के साधारण जीवन	विश्वत्वत्, कारेश्री बाय कारमा व
का चुकार (4, 8 64 की होना	श त्यारा क्या बराइन्सार के उन्कर मा कारणका कि बायते कहें ही प्रवास	शार्यसमाज रेलवे
जिस्पत हुका है। संवाजों के प्रोप- किंक्ष बोट बरने की कुगा करें।	से ही. व बी. को अपनी जिल्ली	क्रलोनी
श्राव की सूचना फिट-ही गाणी	ध्रपेताकर राज्यंत्व धाव किया और स्वामि दशकद ती के विश्व	वार्वसमात्र म् रेसवे कासीचे
सतीवराण मन्त्रो सका	क्रीर स्वास देवानद वा पृत्र विचय	कासम्बद का पार्थिक करका व्यक्तिक से १० वर्ष वह स्रमारोह से द्वारा
श्रार्थसमाज मंगवाल	विवेदकरे बृरान	इस में सामी जुवानन थी, थी,
जि॰ कांमदा में म॰	#	बीरेन्द्र की काशिक क्रेंबर, वि० कीय क्रमत वी कार्य, वं० विशोध कन्
इंसराज दिवस	ग्मर्थ इत्या गुद्ध ऋयुर्वेद	संस्था वा भाष, ४०।वदाक पन् संस्था, ०० राजपास बदन मोधून
कात्र 19 4, 64को बहात्का	मद्यविद्यालय	वी विकटा बंदकी, प० इशारी
≰सराअ में से जवती मां <b>से</b>	क्षरेशी वाग वहीता वे श्रीव	सास जो थी, सेवाराव रेडियो सिंगर हो॰ सत्वदेव की विश्वसम्बद्ध यस,
स्थानोह के साथ यनाई गई पन व से पुत्र दिन पूर्व मुख्याच्यानक जी.प	कथाये हिली यान्यम शाही इवेश भी जावेंगी	व. व्यादि स्थारे । परित्र निर्माय
हाई ल्ड्ड सनशास सहस्त्रा नी	शुक्रात सरकार के बान	सन्येक्षय तका वास संवोरत्रय समा का कर्लकम भी शास्त्रहरू गां।
के श्रीवस के शिम्त लिप्त पर्श्वसी का रोशनी वास्तो रहे। श्रीर व्यास	शास्त्रद स्वाय क नाम पा	वहा थी. ज्यारे साम भी केश्रहरी, भी ची, देवची नदन थी. भी जय
वन श्रा के बाद एक प्रसार सम्बेक	[\$2] \$10 to receive white artist	देव भी तक वी देरी भी फाहि
केका गया किस में महात्मा जो के विश्वन पर कवितान पर्यों । इस के	क्षेत्र कथाओं की जून से प्रदेश	बोड़ें से ही सन्द्रम हैं पर सम्बद्ध परिश्रशी, बरकाही हैं। उस्ता हर
स्वाद कर का विशेष स्थाप के प्र		व्यार से बचन रहा— जिल्ला प्रम्याला ग्राय <sup>6</sup> वीर
्ष्ट कोश्रमार्थ गर्ल हाई स	<sub>कूल</sub> द्मदियां जि॰ गुरदासपुर	्रिला अन्याला आय पार सम्मेलन

केश प्रवारेंगे । विकास सम्माका मे क्टेस रा mès बार्ड सकती तथा **बार्स** के किये पत्र व्यवदार वर्षे । क्षेत्र का कर्तका है कि इस सम्बेशक बाइले बो शहर प्रधाने में पूर्व सहयोग प्रार्थ केना हड क्यूनेंट् बहा-हें कीर जलम में सांस्थित हो क्षाता. कारेजी बाद धारमा कर अपनी समझ्म शक्ति **ग** परिषय हैं। राज पत्र बडीवा निवेदक शार्यसमाज रेखे

रानेश्वर दास व्यवस् नगरनायक साथ और दक्ष ख्यलोनी कारासकारद (sureren) बार्वसमात म्यू रेस्स्वे कासीचे जान्यर का वार्षिक अलाह ताई

श्रीदेव इत जी घर्मेन्ट भाग दालों समाज दे दर्शत कार्रिक आवॉपदेशक है आप वर्श सम्बं क्यारी के भर परम जिला सरोहका हिरेन्द्र की बाजिय क्रोट, पं॰ प्रीय दी दश से बद एवं लाम डोदा पत्र कार्य क्षणा की रोजा में अक वर्षे बर गर है।

वर्षे नहें (बल्झी के बी॰ ए॰ बी हाबर सै॰ स्कूल में चन्मीरदेशक बास जो भी, सेवाराय रेडियो सिंगर का कार कार्न के बाद कारीओ वर्षेत्र १६६४ को काए स संसम्बास विटायर हर 🖫 🕏

भाप स्कृत के समय रिका अपने क्ये समय में से धार्य बगत को सेवा करहे ये जब कार समूचे समझ वे खनगता पूर्वक काव करण औ सेवा करते रहेंने देसा मेरा विश्वसा

वना बरोबा है।

बहा सम्बेखन नारायन यह में

प्रकाश बीर की शास्त्रों भी राम

गोपास भी शांत पत्ने सन्त्रे

सारंदेग्रिक सबा, को वीरेन्द्र की

सम्बद्ध देविक श्राप, पूज स्थानी

बेबानम्ब की, विशिष्ण अथवार

हास जी, वो राजेश की विकास

क्षेत्र काम कार जी शहर, बीव

व्यव्याक्षा विश्वा आर<sup>े</sup> वीर

देश की राजधानी विकास राज्य वे सनभग १३० घरार्थ समार्थे हैं जिला प्रम्वाला प्रार्थ वीर चौर इवारों बार्च परिवार भी हैं ह क्या उपदेशको से सर्वेश बजी सहस्र है । ऐसी प्रकाश में भी परिद्या की जैसे समस्त्री, स्वाच्चार शांस तथा धार्व समाज में प्रचार की सन्त में श्र १७ वर्ष १६६४ को सहाहै।

रहवे वाले आर्थ क्या की खेलाओं सम्बोधन, के बधान ई वर नशरात के बार्च कार के बाब वहारी 🗿 जिंद भी वर्शन बोद बना की गोरव व सीमान्व ही समस्य अस्य नगरपीर्थन १६ वर्षे को वर्शको । निक्से ा इस क झतिरिक्त भी

क्षत्र जिस समाज संस्कर परिवार वा व्यक्ति विशेष की औ परिवाद जी के स्वाप्तांक साम्यक क सेवामों से जाम उठावा हो**वे** वे विका को पर निसंतर वर पत्र विकास माम दरा सक्ते हैं।

सी व • देशाव जी पर्केश. मार्गेविकेल राम प्रकार भी, भी पं॰ इरिक्स मी १६३४ कृपा एतियो राप, क्रिस या शिकी--

हि व रिश्राय गल हार प बाब दिया समा (की ए. हो काहित मैनेबिंग क्येटी)

की अपाक्षित अन्तरिक्षा की पशिका की उच्चक्र पशिकाय 12) 73/100 ञ्चन्द्रीन w 76/100 282 प्रचा सरेश पाया 16/-74/100 विक्य काला 45 19/-72/100 सम प्यारी 13/-413 IX 71/100 1546 PLSE Teh 6/-48/169 18 निर्मेश क्षारी 24/let. x 27/100 दीरेशी 2nd 90/-त्ररेश 76/100 26/-75/100 3ed <del>Guin</del> x इमारी भी देवी वे ग्री में श्रवम रह कर १४/- का प्रस्कार जान के इस्पते शुरू का बास प्रशास किया है। यह सारा धेय दूसका

=अतोप्टेशक प्रादेशिक स्था कार्य पिका द्वा कर की सहयोगी कामार्थपत्तामी के जिर पर है। s व महरराष्ट्र भी सीवचरात्र जी मन्त्री बाव जोईशक जीर्वाचीय सच्चा फंडाम वासम्बर हारा पीर विकास जै स, विसास रोज कासम्बर से हुद्दित तथा .काल कार्याक्य सद्दारमा (पराक्ष मध्य विकट कथादी बाहान्यर शहर से प्रकारिक वर्षक्य-कार्य व्यविष्ट प्रतिनिध सवा वेशस्त्र सामन्य



हेशीयोज २० २०१० **(आर्थआ**र्देशिक प्रतिनिधिसमा पंजाब जालन्धर का सप्ताहिक मुखपत्र) Bookd. No. P. 1 २६ मॉन वा सुन्त १३ करे जें।

वर्ष २४ संक २१) ११ ज्येष्ठ २०२१ रविवार—दवानन्तान्द १४०- २४ मई १९६४

(तार 'प्रादेशिक' जावन्वा

### वेद सृक्त्यः यसां धवन्तुते दियः

हे प्रभो ! आप के काशी-बांव हमको सदा बचाते । हैं । आपका दिवा झान तथा सुद बिचारेयक हमें इसामांहरे बचा बद सुपथ पर चक्कार रहे । हमें प्रशेष झायचिकाल में यथाना

#### सचाविश्वे पिवन्सु सारेशमुके श्रेमी, प्राप्त

सारे समु के प्रसी, 'सर्गल स्रातन्द्र स का पात करने की इच्छा करते कांद्रे अक्टबन इस समुद्र सोम्परस को, आवित के समुद्र प्याने को पीते रहें । III मेर्गिक स्थों के स्रावित्स्य कम स्वादात का सन्तर भी सदा पीतें । यह रस कहर ही लाख श्रीर सनुषम है।

#### ्रमा चिद्रन्यद्}विशंसत् हे क्षेत्रो । साववाय होकर

सुनोधि भाष होय उस परनेश्वर के शिकाय भीर किसी नस्तु पक्षांय की या अंतुष्य की, देवी देवता की ईदवर के त्यान स्वृति प्रवासना, पूजा ने करी : अपूब्स का पूजन जाप्त ही, है । अर्थ में में द

# वेदा मृत

श्रम गुरु म-त्रः श्री३ए भूर्यु वः स्वः तत्सिवतुर्वरेषयं भर्गो देवस्य धीर्माद । थियो योनः प्रचोद्रयात ॥ स्वः अ० १६ मं.३

क्यें — स्वाप ने (र का (ह)) क्या क्यों है, (हा) हु की क्या है जैया (ह) जुल रहे पर तुमारत है। है कार्या है। दुस्तामत की हुएता की । क्या (खेंचु) को बहु की कुत का है जो (हे देवर) को बहु कर की के की है, (की) दुस्त का है, तेने का ती हैं है। की कारण का के की हुस का है, तेने का ती है। की कारण का ती वहां की हुए का है, तेने की कारण का ती है। किए) क्या तुम्ली है। है। जो कारण कात ती हैंगी (क्लीपटर) हुए का कम की है सीहर की, तुम की है। हैं कर हुए क्यों की हुए कम किए हों।

मार्च :-वड गावत्री मन्द्र सचमच शावन काने वासों सा परिप्राधा

क्या है, परे हुए ब बार्ग कारे वे व्यापक करता है। यह जुत मान भी है। वह में क्यूनि कार्य करें। त्यापन मत तेती हुएते वह वार्याण है। देश सुन कर कहा हुए में देश किया कर गए में बहु कर हुए में देश है। भी जारों है। कार ने संस्था में कार्य करता क्यूनि की स्वाप्त कर है। में स्वाप्त है। कार ने संस्था मान हुआ में स्वाप्त कर है। मार्ग है कीरत है – एक स्वाप्त स्वाप्त के स्वाप्त कर है। मेरे हुआ के पूर्व की स्वाप्त कर है। तेते हैं, क्या है, क्या है है। इस कार्य कर स्वाप्त की मोर्ग कर है। मारा कार्य की स्वाप्त की स्वाप्त कर स्वाप्त की मोरा है। हुए कार्य

# ऋषि दशर्न

स एक्टीऽडितीयः नइ अनेहचर एक है स्त्रीर वस जैसा दूसरा स्त्रीर कोई नहीं है । वह स्त्रीर चेतन रूर से देवता स्त्रीर कोक है, एर महान देव वह अस्वान् वक है। स्त्रीर न कोई होगा ही।

# सर्वत्र व्याप्तः

वह महान् भगवाद सर्वेत्र त्वान्त है, सर्वेच्यायत है, तीहें भी खान, दिशा या ओंच ऐस्त नहीं हैं, कहां उस परमस्का की स्था वा परिचय न मिसला हो। मानव उससे बचकर दिस्सी स्थान पर भी अबद कोई स्वयं नहीं कर सकता।

#### ज्ञान स्वरूपस्य स्था वह जगदीसर शाँग

स्करूप है। खारे बार्ज का केन्द्र और सरकार है। सब सल विद्या कीर जो पहांचे विद्या के जाने ताते हैं, ब्ला स्वरूक कार्यस्कृत परमेश्वर हैं। उसीरे सबके जान की ग्राप्त होती है ब्लाक्स है।

 धार्मिक बर्चा-

# परमात्मा की सिद्धि और स्वरूप कर्ष के बार्क के के

[बाहित्याथार्य को पिक्तेन को बार्य बास्त्रो, एन.ए. (पू.)]

पृथियों से ही क्यों आवर्षित होता | शण कर के बार्व और उसके पार देश्य प्रोप किसी की प्राप्तकेल

दसीयें सीन हो बाता है । वसीर रास्ति से मार्डाईत स्वो अति ने भी बद्धाः --होता १ इब सब शब्दों के प्रत्यों के किए इमें विका हो कर परमात्वा भी यदा विसाय ।

की शक्ति मानशी हो पहती है। कार्यंत्र जैसे काले से बसे जम वेद ने मी बड़ा :---वाता है भीर वह बर्चे पुनः विपत रकरमें नेने विष्टामते हांदव मृश्विदय बळ पानी बन जाता है। इसी मार्ति

विष्यतः । संसार की सर्वाहर मो दिलाई वेदी रकम्य ६४ सर्वमात्यः बहुबस्याग है। वर्त यो इसकी पृष्टि करती है-न्तिमिथयत यस् ॥ काले दोरेतिसुर्वः काले विश्विताते कार्यात् भारत्यावर्ता हेस्वर ने वदः । वर्षस्य । १३ वर्षाः हे

चारुवर और प्रविद्यो अजय, प्रवटन यमे हर सने हैं। इसो पर्छ हें शया सेने प्रश्नेत स्वांक स्वाध्यक्षेत्र काले बारबाधान चगत् है : इस्यांत बाता है।

इसका (वह चेदन बगत की sature finat et 3 :

जगत का वर्ता न्दां ईदरर संसार का कर्त है. यत्री है यहां हताँ आते है। अध्यक्त

बज वर्षे का यत है कि संसार कार्व से हो पैश होता है। बनक का शरीक पहायों सब से परिकास कान है कि जैसे कह सामक सैम \*

प्रार्थना मत्रों के हिन्दो कविता में अर्थ 🤻 (प्रत्येक प्रकाशन में पदिए) भोरेप डिरस्यमर्थ: समर्थकां प्रश्नम कातः परिटेड भासीत ।

स दाधार प्रमित्री सामुदेशां कली देवाय इतिया विकेश । शाउँ स विकीदेव रता—

बारे विश्व-पदार्थं गर्मत्वक में, क्रफण वो हैं किये। वनादित्य-रहार्थवर्ग रखंड राजार वे हो किने ह थवों के पहिसे असिख अब स्वामी ही सरा से रहे। श्वात्मावर-ईश को इस वर्रे, भी महित भादि करें ॥

ह् चर्ववर्त्यन्वतः <del>वच्छाः --</del> गरम देव ! सुदिब्ध स्तरूप हो।

> निव विश्वद्ध - सुपा - पदश्रविस्त्री ॥ चनित सकित विवा तब प्राप्ति की ) विक**ंग सन से मध्या किए** ।

> > विद्या सागर शर्मा

दशसन्द्रपट दीवा कका बावा है बहुद बावा सा श देव अस्त्रिक्त का का का विकास है।

भ्रम्य रौत सा बादी है इसी प्रचार मिसकर संसार की सानि करते हैं। अन्त वहां क्यां भीर हतां होती में परस्कर विशेष है । इबका सर्वेशा पूर्वक क्रीर कावालुआर कार्य में

प्रमुख होना ज*न्* प्रकृति से सासम्बद्ध है। क्वेंकि प्रकृति से वा को सम्बन्धि पानी ही ते हिम यस हिम ही होयो क्षयवा प्रस्तव ही प्रस्तव है मदः इसकी सिर्देश के किये हुने पृष्टक शक्ति बाननी हो पहले है. ओ चेतन होती **चाहिये और दसका** प्रभाव विश्ववद्यारी होना चाहिये ह

समा है....

अन्यास्य यकः । १११०। धर्मात अब वह है जिससे दक्ष ब्राजीय संस्थानको परमात्मा

(संसार) का बन्म भारत और से सफ़िडाल में सबें डरपन डोवा विनाश होता है। अंग्रेबी में इसे है चौर इसचकाल में वसी में समा Cosmological Agument काते हैं।

इसको नेहरूत दर्शन में मी कारा

वेद्रातिक सर्व एक विरोध और उत्तका विज्ञान शास है शिवसी कर । वरिद्यार

शस्येक विज्ञान बनाना है धीर देखते मी हैं कि सारा संसार निवर्षे पर हो भावारित है। यहि विक्रमा-नुपार कार्य न हो थे। संस्टर प्रस ही नहीं सकता। बैसे एक सुरक्ष स्थि में बोड दोवा है क्वोंद्रि क्वे विश्वास है कि यह अंहरेत होगा। परन्त वतके संस्थित होने में समे यह सरेह हो तो बह बीज हो नहीं बोयेगा। इस स्दर हाई छै देखें वो प्रत्येक चैक को रचना भइमय है। वसल को होती के होटी दस्त को सब समझ निरम की प्यति है संगठन । यह विन्छ ईच्यर के हो नहीं सकता। देखिते

मेद भी सहस्र है :--यो दिशान सर्व विका

वस्मित्रोद्धाः श्रदा श्रदाः । सप्र सुप्रस्य से विकास सो विकास कडाई महता ह

थाव वह है कि सी उस शका-बातन बंक में बैंदी हुने समझी वानता है और फिर उस स्टा के सुत्र को सावता है वह परश्राद्ध

स्रोतार में परसात्ता के विषय में अनेको विश्वार चाराई प्रश्वतिल द्विपत में से बड़ा इस ईस्वर की समार्थे विद्यास रसलेडि वडी वस वर्ष क्षा करने हैं कि ईड़बर करा है ? भीर बळ वो भायबता में साबर यह भी बड़ 📗 हैं कि बह बड़ी

क्षो प्रशी है। इनका विकास करनेव में भी शत होता है :--बस्मा इच्छान्त कुरु सेति घोरमने-माहर्नेयो बार्श्ययेवय ॥६० २।१२)४

फबाला की सिद्धि के लिये स्रानेशं वर्ष्ड्यां रा गई है और श्रव भी दी जातो हैं। इस यदि गम्भी-बता से सनत करें हो उनका बीज मेर में ही शाधा हो बाबा है। । सन्दें से कर यहां प्रस्तव हैं ?

बयत का कर्ता बब इस इस संसार पर दक्षि बाजरे हैं तो देवते हैं 🗎 इसके विकास में जिस्स है. निक्य है। इसको रचना विश्वषंत्र की नहीं है। बार किसकी रचना है ? बक्रांत की तो हो नहीं सरकी और न बारमा की। तर हमें इन से प्रवक्त सन्य कोई शरित प्रकार की जातनी पक्षेती और वही समित ईरवर है। क्षत्रपुर में बसके विषय में कहा शया है :--

षावोऽस्वेद्वर भवत्पुनः ।

**व्हो विध्यक्ष्यक्राम**त्सान शनेऽद्यभि ॥

भागीत यस चतुरसद पुरुष (परमारमा) का एड कामा इस क्षेत्रार में प्रस्ट हक्सा कड़ी से वह श्चंत्रसंबद्ध संबद्ध स्टब्स्य हुन्या । . वैसे भी परमारमा बनक का निमित्त : कारण है ही।

जात का वर्ती

संभार में इस देखते हैं कि समी वस्पूर्ण एक दूसरे को काहपेया शकित से स्थिर हैं। यथा सूर्व और . प्रियो । यह सार्व्यंत्र रावित का कार्यं को तो बदि पर्यक्र हो रहा है। इस वस्तओं में यह यमें बहा से सम्पाक्कीय-

# त्र्यार्य जगत

बर्ष २४] रविवार २०२ , २४ मई १६६४ [बंक २१

# यह कैसी पगति

इक्रारा देश बारत वह बाठी 🖁 क्की स्थान प्रगवि कर रहा है । कार के दिवसना संचेपकार में जान-विद्यान की फनति के विना आगी बहते में कठिनका ही होती। अन्य बेशों की स्टैलिक सन्तरि में हमें भी साथ पक्षम ही होगा । इसीसिय शास्त्र बोजनाओं दा बारम्य होता है शांक en यांच वर्षों में राह के बीवन को फिस स्वान पर पश्चाना है। दिन्त कात दिना काम सिपटी बसे यह बाद बडे ही लेव के साथ व्यक्ती का सकती है कि सहस्का **संबं** का बाल ३ वर आज होते बाब्दी भारतीय सरकार देश में क्रमाच भी बन्द की क्या, शोडा दम भीनदी कर स्की । अभी एक भारत हराज हे बादने सारक है enon fa pur il un an il क्क कर्व द६ बरोड स्पर की शराव , बी 4ई । कल्य वादों का जाने Qiaq शास पीने में सपसच स्था से बरुत ही इसांत की है। इस मार्थ पर देश चला है इतना तेल कता है किदली हंक शायद पर्श्ता भी क्यमी धरी पर नहीं पश्चके श्रीची । विवना दुःस दोवा दे इस कार पर विवार करते हम कि बारचे स्वरत्वक में शराब पीले भी धरानी कार्यात र सहारका गांधी का जास की धाम केमझ नेताकों के आक्रमों के सिक्ट का सुरिकों ने सूच झमना 'सम्बाट की समाचि पर एक-बाकार्य मेंट दरने के रूप में ही रह कता । हैसे बहुदे कालमं वर कोई 'पश्चमें को हैपार मही। पनकी कि की वाली को कोई मानक वही है। या गई है कि इस की कांपकता,

कास हो शहाय सोस्टब्स दर्ज सक्त समाय में रैंटनेसा एक सासावद शंग वस स्था है। को करण नहीं पीता क्से मान दिख्य मधी वडा जाता । वरियम के शक्त कर कर उन को परित्र का पाठ पहाने के त्यान हम ही तनके वर्णहरी विद्रों पर मोडिय हो वैठे। आप दुव की मध्या है पर शराय करने है। इस भी भी नहियां तो क्या पर हा शराय के तुष्क्रन सारे देश में वमको है । स्ताब की दक्षानी पर भागी मीज सभी देश कर सर में विकार काता है कि इस देश वा क्या क्रिया है सेखाओं की लेख **भना**स्ता की को चिन्हा है पर देश का शराब से जीवन बना कर रूप है. इंपकी श्रीसक भी विकास सभी र शर्म में बाव जाने डॉडिडे अपरे आप को बारतीय संस्कृत धा बाबेदार बताने का बोर व से दीस पारने बासा समसप हो काज कर उसके बारे में वह इक्ट भी नहीं बोखा। बोदों में सहस्र-कृद कौर विसाधा बटन है पर बन्दर पोख है। व्यार्थसभाव भी वे गण दिसा से पार्थ अब देश है स्वतः क्रांदोतन नहीं वर सदा श्रो इसे करना पाईदर । फन्य संस्थाको साकाम को दें ही पड़ों के ईक्री भागना। वाद्विर शहकत्वो स्त से खेवा हो ही नहीं सहती। पंत्रात में तो अगब की बाद धा माँ हैं। शिवनी भोठतें तो स्था सारा, कुछां भरवा ग्रेमें । शशक की क्सी नहीं । व्यवस्था बढां वक

### श्रमतसर के श्रार्थ भाई 3/3/01/3/3/G/GWGWGWGWGWGWGWGWGW

बात है। बार्वसमाधी स्वाका हो अते हैं। कार्यक्तराज में कार्त संस्ता में वहां से प्रविदित कार् शता नर-नारी चपने श्रीवन में कारे विश्व की सेना का का डोक्ट काम वरका है। ब्रार्थतकात्र संसार के जिए को स्थापित द्वा । इसके महान संस्थापक यहर्षि दशानन् की सरस्वती वे अपना धीवन, वीवन, हारीर वर्षा तक साम सी सेवा ये सेंट दर ही । उनका सब क्स सबकी खेश के दिया की था। माज पश्चितानी बंगाधर्मे (हस्टको क्री ईसाईको के साथ क्या २ बसारशर वर्ष कमार्त्तांपक कास्या-कार किये गये | धन समाचारों को पद सन्धर मानवता वंद रोधी ही है पर पायर भी डांचत हो जाते है। अभी भी संस्था है काते. क्रक्ते घर छोड़कर क्काथ वता है ही बड़ां से श्रीक्षशोंसे इस बनास क्लाकता में कार हैं। मार्थ साव-देशिक सबा नई देवशी के प्रशा मन्त्री संयत सर. शसकोपास सी शास दालों ने बड़ी आदर प्रशंको रेला वर्षनाक शहर देखका स दिस दिसा देने पासा समारदार सिवा क्या प्रस्त्रों हे हातला है इंसाइराय मामनीय भी ६. प्रदाश भीर भी शुप्रजी ने को बग्रहरू सलवता तथा शतीपन को देख कर व चीने बाले भी चीने 🛍 🕏 त्तर्वादयों, रिजयों तक भी आ यह ची है। सारा श्रंत 📗 शराबी बरका बारहा है। इस प्राचि को कीन रोकेगा ? इस कार्यसमाज से बहेंगे और है भी और १ स्थान र धर, बगर र में, वड़े र सम्मेजन द. दे इस स्थान दे सने प्रवाह थी रोका साथै। आर्थी (क्रम दिशस में किस्सो—विसोधवय

देश में जब कभी कोई संबट | दिवा-यह विसे नहीं नका देश है कारों या गये तथा इआरों औ

> कार्य समाय हो सेवा कार्य के क्रिय वैदा हुका है । सार्थदेशिक श्रमा ने कास कारम्भ कर क्या है । बार्च शहेशिक स्था ने भी सेवा क्य पर पक्षते हुए वहां से अनाव बच्चों को संश्वाने को सिल दिया है s वर्ष्ट्र इस समय पूच्य सहात्मा चातन्ह स्वामी वी सहाराज समा से विशेष्ट सम्बन्धित होते हो सहाय कार्य कारम्म हो शता ( साम्बदर विस्तिपन पं॰ रक्षाराम भी एस॰ प० एस॰ स्त्र- ए० ने सभा की अंग्रेस से अनवा से बड़ी मार्जिक कारीस कर समा को इस कार्य के लिए हर प्रशास का सहबोग देने के लिए व्यवसाय वयनस्य विवाही । हस इस कारकर पर कामुक्तर के ब्रार्थ भाई बांह में को विशेष सभाई देना चाहते है। उन्होंने इस विशा में आहे SHIN SI BING X'SI SE समाल कर किया है। बारे कार्र सभा कार्यक्रम पर काले पर हत-आया गया कि सभी २ यहां वे लीव दाईस्साव की कीर से गोब माग में बंदाराज पीड़ियों की मेवर के दिवा बहा भारी जलसा किया गया। विस में भी सा० रामगोपास जी सन्त्री सार्वदेशिक सभा ने कांबों देका वहाँ का हाल उनता के शरफने वर्षाम्बर्धास्थ्या । जनवा सन वर शेष्त्री। पांच हवार हपसे की ध्यम विस्तु संशास पीहितों की सहा-कता के लिए ग्रेंट की गई। ये प्राई दशाई के पात्र क्यों त हो। शहां भर भार्य समाज स्थायासर के व्यक्तिसम्बर्ग र्वेट स्टब्स भी प्रधान के

> > (शेष वष्ठ ४ पर)

यह बहुता तो चिंद्रण है कि मानि दुर्द्धता तो चिंद्रण है कि मानि दुर्द्धता ता करें के लिए के स्वार्धित के तो कि मानि के स्वार्धित के तो के स्वार्धित के स्वार्धित के तो के स्वार्धित के

श्रास्तिष्ट का युवक उसके प्रधान से

बुद्ध की स्थालता विश्वस्थला की सन यह कोई प्रतिक्रियों न वर्ष हो।

चार: उसकी 🚃 तीन वर्षों 📕 वादे

। कल्ला पना रहा हो और उस

में बहु पूरी चुच्चे जो क्या क्यां मरी नहीं भतेता होती? ह्यापा राजस्थान १० २१७-५२ हेन इच्चोलिंह मेह्ना विचालंडार । "स्वातन्त्र को विरक्षानन्त्र के वास एकने की बेरखा विरक्षा-

क पास पहुन की गरणा (क्या-ग्रन्य के ग्रुष पूर्वावन्य ने (पार्ट्स के दी ही मी। धरनु क्षाँण कांट्राक्ट के मांग्र जिल्ले कार्य के कारण करें। के कारण करेंग की ग्रा दें समयी मार, विचित्र कम गर्वीर प्राम्यक्त ही वरफ न मी, किन्तु उठकों विकास ने रंग्य- में बहु मस-मिर्याव देवर कर हाँ।" हमारा राज-स्थाव हुठ ५००

कारोक बहुत्यों से तुने स स्मार ने कहें धार हो भई किए हैं की राज और दर हैं किए हैंदे पैकेटर्सिक हो में दक कार्य करना करते हैं। यह पर कार दे की भारत है का ब्राय आक्रम वीवाय के बासोकन वर्ष नेकार से प्रक्रीमा, विद्यालय वर्ष स्थाल रहा। यादे यह समस्य करिक कीत में हैंदर सेना बात करिक कीत में हैर सेना बात मान

## स्वातन्त्र्य सप्राम और महर्षि दयानन्द

(से॰-श्री पं॰ सत्यित्रय की खास्त्री किं॰ जिरोनशि: प्राध्यायक-दरावन्द बाह्य महाविकासय हिखार)

#### \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* इस प्रकार भारत की ही इन्हों हो। 'रेट्य' से रेट्टर' तथा स्थानय

उक्त भारत के झनेक नगरों में

रूप में वहीं चार वे। व्यावहारिक

इत्य में बनस प्रयोग तो बंगविष्योत

के परकार ही हु**सा**<sup>5</sup> स्तापीनदा

संवास का इतिहास एक २४ ।

वर्जर्ष इदावन के दिन प्रसापारश

विवासों से मारत के राजनीतिक

गतावरम् वे ध्रम्यं हत्वच्या १५२

र्ध्य प्रमुक्ते स्थातिक से स्थाती प्रसाद

होशीको बाविको हारा बडेडो का

का बात्रव से बर राष्ट्र की स्वाधी-

तता की क्वोति को स्थालिक रसने

में चपना सर्वेश्व होमस्त मी

क्रमञ्जूष रहा, हब इसरे ने वसके

ल्बर्जियों को बच्च प्रकार उसे कि

से असमें की निधि विश्वसमें के

किया ।' इसारा राजस्थान प० २६६

दूरता और घरने विश्वारों का क्षाय देने पर जब यह शावन्त्र यह विकास हो गया और इस कांति यह क्षार करना रहा क्रिक्टे क्यान के बार्योजन को वर्ष भरवोगियों को मारक्शासियों में सबने प्राचीन इतिहास कीर भग का गीरव फिर निरंदता से इनसद्ध्य खेव बपना से जाराने सर्वा । १६४३ से भारत प्रमुख तबाने क्षेत्रे जबकि मारद राष्ट्रवेदिक पुत्रजायस्य क अवस क्ष जिल्लान बन्ना एउ सीरोसी की मी शबः सबंध प्रस्ट होते ससे कागाया की चक्की हैं पिसरी इमारा रावस्थान कु० २४०, 'सन र्श्व प्रपत्ने गौरव को विरम्तका ko की कॉर्त के पहचात के सब रीन द्वीन हो रही थी, वर दयात्म्य भी गढ की पाठशाका से देवार यहापुरुषों हो सभी में बिहरें हम उस स्थान्द के सामसिक, सामाजिक होदर दार्थ केत में का शका या चौर शास्त्रतिक वशराविकारी ,कह तव उस**रे ११९**नी बोट सेलवी द्वार सक्ते हैं, पहला ताम महिष सारव की प्रमुख भारता को अधारे द्रशनम्ह सस्त्रही का 🕏 अंतर्वाव का कार्यक्रम कपनाथा । दशकी स्वाधीनक संशास 🗊 इतिहास 🕫 च्चोज्ञानी नासी एवं वशिष्ठ शेखनी २२ सें० पंच इन्ह जो प्रस देश हैं मर्दों की प्रश्नियों में भी मदबराते व्यंपेती शक्ष के कारम होने के रस्टकासंबार धर देती वी। बाद वे पहले स्ववित हैं जिल्होंने भारत के भ्रत्यर शह में जो कल रेसवर्गमधी के हरता में स्वाधियान गाजनीतिक चेटका बाउँ यह ऋषि क्रीप्र स्वदेशाभियान के दीवक ही ट्याजन्द की केसती का ही प्रकार बुक्ते २ बचावा राष्ट्रशक्षी द्वातंत् था। वैशा कि एक हेसक ने स्विमा पु० २३ से॰ सरवदेव विद्यासंस्थार । है कि 'दवातन्द का बन्स विवासत 'रावनीति में स्वासो दयासस्य की के टकरानामच गांव में सबद ब्राह्मल गृहण्ये करसन जो के बड़ां नवीन राजितता का बाबदत करें के सन १८९४ में हमाया । वों कलकि न होगी । इन्होंने अपने श्राप्त के माधीनता के जिए कर-समय क्षेत्र सालाखे - प्रकारः से बिटने भीर इसमें फिर से राहि-सराज्य, स्वदेशो, साक्षाणां श्रीत उता बगाने कते से दोनों सहा-सरोग के एक में जो अब विशास परंत समसायविष्ठ स्त्रीर समयवस्य पकट किए थे, यह भारत की भी से। इनमें में जब एक शास्त्र राजनीति में १६०१ में परक्षे स्थवन

्यानेन वे स्वय वर्गास्त्र विश्व वार्थे हैं। 'पोर्ट्स कित्रमां हैं। दे स्वर् योः स्वर्देसी रुक्त होता है स्वर् वर्गापर कथन होता है। इसका प्रवसनान्तर के सावद रहित, बचने प्रोर दराये का प्रकृत क्रमान पर सावा किया के सावद क्रमान स्वा प्रति रहा के साव विदेशियों का रास्त्र और स्वा के साव स्वर्भना क्रमान स्वा के स्वर्भना क्रमान

सत्वाचे १६३१:- घटम सहारकाशः इसी क्यार मारव की दैसंबद को देख दु:बित हुत्य से श्रविवर जिसके हैं कि विदेशियों के बार्की वर्त में राज होते के कारण आपन की पूट, मतभेदं, ब्रह्म क्यें का सेवन न करता, क्षिता न पढ़ना पढ़ाना, वास्थानस्य में ब्यस्थवन्तर विकास विश्वासकित, सिस्या साधवाति बाजवारा, वेशविशा का कार्यास्त्रीत काम हेजब धापस में साई व सकते हैं अभी शीमरा किटेकी व्यादर पंच वन बेटता है' सत्वार्थ प्रवास-हमी प्रकार १८५० के स्थाओलता संप्राप्त का क्रांस्ती देखे टु:सद प्रतंश का वर्शन काले विसते हैं---(\$92)

# अमृतसर के आर्थ भाई

(चयर ३ का शेव) साथी हो, व्यार्थसमात्र सार्रेसरोड हे. प्रचास भी सेत्री जी. सन्त्री atta वेदावत और सक्षाधन वेदा पं॰ विकास सागर की प'+ धर्मपास जी बी० क व्यक्ति सोहमह के झानी पिक्रीवास औ, प्रो**८ वेदप्रत** भी रूम**ः स्थ०सी.** अञ्चलक बाजार के जी विद्यानाय जो, भी शास्त्री जो, नतां कांट्रे 🕏 सा॰ मञ्जरादास की तथा केन्द्रीय सकाब के कार्यत नेता केटन केशक चन्द्रसेन जो एवं इनके साथी औ ताः गुर**वरबार्त जी हीं—धी स्व** नगर पीते क्यों रहे। बहक स्था श्रसाह है। वहा काम यहां हो रहा हे। हो एक बात है ∭ इस के क्रमात केवा साम की परिस्तारी वही है। इस से भी इसरों को अरेग्या सिस्तरी है। इस **एकाई देते** है। बार्व समाह इस काय से बहुत क्र'वा हो यस है-

—जिसीस वन्त्र

के हमें स्थाना शामतिक श्रीवन

प्रतित सील बनाना होया।

शिकासम्बद्धाः से बद वह हम ऋत

भेटीर साथ की विवेक द्वारा पहचान

कर वर्तमान भीवन में भागस के

-क्षत्रहार में नड़ी साएंगे इस में

श्रीविषया ब्लंबहार में न गहेगी।

क्षेत्रम पापनीय में कती नई नेवि-

क्का रिवर नहीं रहर करती । हमारा

आपस का क्याबहार सहाबार पर

ही व्यवसंदित होना वाहिया

कारदीय भावं संस्कृति में भारितक

साव और साब हो परम्परा की मी

रेक्षा दीनी पाहिए केवस स्टियों

! **को ग्रामका से** संस्कृति की रक्षान

हो महेगी । वरम्परा, वह परम्परा

को केर से बारमा करके हमारी

स्वयन्त्र जीवन को इड रलवो डर्ड

सहस्रों वर्ष वह पक्षी, वसका सस्य

इस शासना बायदयक है. किंत

साथ ही यह जानना भी निर्दाद

कावडयह है कि वरम्परा में प्रवाह

में पत्नती हुई संस्कृति समय के

· क्रमात्र से सन्दरी नहीं रही।

. समा में जो संत्रात समय-समय

पर मिले पनका बमाच मी है।

दम क्रिए विसे हम भारतीय

( street करते हैं वह राज वैदिक

. है. रीति रिवास में, समबादश्रुक

• सावि को रक्षा के विमित्त 💷 वैसे

वरिवर्तन करते रहे । इस परिवर्टन

ब्रोटो चायु में विवाद ब्रीट जिन्हों

का पर्श कार्तर मुख्यिम राज्य में

कीर बाद परिवर्तन अन्य देशों है

. बोलों है हेलतोस होने से 🔳 जैसे

्यार्थ संस्कृति ही है।

श्रक्तकी की रही और नहीं व्ह

हमारे प्रवंत अपने रहत-सहन

# सामाजिक जीवन

(संसक-धी सालबन्द वो. गेरठ) \*\*\*\*\*

में का रखा और जो डेजवासियों | शक्ति पर्व देश में प्रवस्तित वी के स्थान के निर्मात प्रतिकास है। बीर व बार्शनकता की ही दावता करती है क्योंकि सन्य देश वैशा इसी प्रकार बचायान भारत में सदा से ही प्रवेषा क्वों, अर्त्यांग की करते हैं हमें वह शहरत और भावनासे ही देसा गवा और विकास के स्थान कार्यात अंकारि मंचप दश शराब का व्योपारी का बिर्द्याण करता है किसे क्राप्त दोनों हो संस्कृति के रहिक्रोया से डीन सबके गर पर चंद्रेशी प्रभाव से इस का स्थवहार भी दक्ति ब रहा। इसी प्रकार बांक भ्रमण मी वर्षमान काल में चैता रहा है यदापि यह विविद्यात सिट है कि nž i सीम भारतीओं के विश्व शांतिकर है। यहां का जलवाय मांठ सहिरा के व्यक्तिक है। व्यक्तित की

बात है कि इस प्रकार के न्वधन चर्य दों की मांति क्रमो वह इसारी संभक्ति के चीन नहीं हर हानि भी हुई । श्राप्त बारबीववा की भीर हमारे किए इत वरी कावतें की वरस्त्रमा इतना चठित नहीं। सिमेट पीचा एक गुन्हा जामन है धीर यह क्राजब्स दिवाड करश्यों वरू में तोई वेग से पस रहा है।

रेजगादियों वसों प्रार्ट में वर्षाप पश्चमान सियेट मीडी इनका साहि पीना प्रभा है पर सोग पीने ही रहते हैं की इस अक्षा करन सावियों के द्वाल का कारण बजते हैं। इमें क्यते बयात में सार हए देन हानिहारच लखीं को जो इस देख रहे हैं कि सामाजिक जीवन को मिशा रहे हैं अवस्य ही इटाने का घोर श्वरूप करना चाहिये हमें एक सुद्रह धीर भरात्रत समाज भारित जिस में स्वास्त्य को छक्त कर से बसाने बीट विकस्तित करने की चम्रता हो इसके किए समाप्त के रहत सहस में बसी हुई चलिएत वैश में विकम की सोसहवी शंताब्द | सूरी और हाविक्ट प्रमानों को से

इसारे विचार, काचार, विस्कार किंगक्साए, मारा, धतरूव इसारे

िकांत आस्त्रीय प्रान्ता को सिक हर और बायुनिस्ता से मी जन-काते हुए होने **साहिये । हमें** श्रीदर्शी की शासता को सोहको ही होन्छ र प्रमें बार है जिल में औषन का प्रवाह कथा की कोर चक्रण रहे क्रिय में जीवन में ही मन्त्राय हो कीर निकेषस भी हो । इस जिल सिकांनी की कीवन में निकाने क्य केरदंशाओं विश्वकारिक होते वर्तक शील हो भीर अपने उत्तंत्यों की विभीवदा से वत्यरता से क्वीर पूरी सन्म और संबि से करते रहें वे औ तम के वे ही कर्तवर में में विकास ती क्यें कावने सर्वेक्स कर जो व्यक्तिक क्षेत्र क्षाप्त होत्रों का विकास है. से शारी में समर्थ होती। इम लोगों में संदीलेता और खड़ ब्राय रीकंड्य केला कारावा है कि साहस ब्योर स्थात तथा सा श्रीक रहा है। ऐसी जीवनवर्श ऐसा जीवन व्यवहार जिस में क्साब

दयानन्द कालेज़ शोजापर का जोजस्वो परोक्षा परिचान

बन्द पड़ जाम और मतस्य ओब

साहो बाद कभी धर्मावरक नहीं

स्थला सङ्गे। पर्छ वर्षे अप्रक

करता है और इस पर्माक्रक करते

📰 बन्दर हो सकी है।

शोसाचा-इस वर्षे उपानन्य कालेज शोसापुर के विद्यार्थी 🐗 नंदक्रमार इत्यते शासे वृत्तिवसिती हे इन्टर परिचा में ७४-२४ प्रतिश्रम नवट लेक्ट सवप्रथम रहे। वही नहीं दीन विद्यार्थियों ने 🕫 प्र**दिश्व** के स्वकित्र काह वाटन विशेष स्थानी स्रांतवसिंटो में इयानच कालेज धो २६ फार्ट बद्धास सब कावियों थे मधिक है। इस महान सक्कार वक्कर दोक्ने ही होंथे। इस विषय

का लेव प्राप्तारक वर्ग वन्त विकार्यियों को है।

क्षत्रक का वीजा, जो कमी हमारे ें एक नहीं दिया गया, या पान

जोका साहि का रिवाज जो शंकेची के सन्ध प्रतकरता से ही भारतीयों इससिय सपनाना है कि वह उस

ताते 📖 हम मारतीय श्रपनो विस-चया स्थिति को रक्ष सकें साथ ही विद्वत वर के सम्पन्नों से सिक्ष अनुका समन्द्रय से एक्झे सभी बातां को इ.स. सहिवसित करने की भी समन इतिहास से पना सगता है हमारे पुर्वजों ने स्थिति को बांच वांच बढ़ प्रयक्त रहत सहत्र कीर वर्तात्र बदवा या सही वे शफत m वर्धी के असकत III कीर अर्थत को

पुष्ट करने के लिए इसे कुर संहक बदी होता। विरोधियों के छोटे चलकरों में क्रक्ते आवश्च कर नहीं करना माथ ही इसने फिसो का धन हास ऐसा नहीं काना कि इस कापश बाप ही सो बैठें। हमें इस सांस्क्र-विक्र मेलबोज में कुछ जेना भी है कुछ देशा भी है। वे बिगाइरिवे वो सन्तर्यों को कावकत बध्दे हर है और जिन में चंसे रहते ने करण सनम्बों की सनोवांच संकीर्य

क्रीर संक्षत्रित हो वर्त है उस पर खबाई से बीर बद्दराई से विचार करता है और चंबिहम यह सरस्त धीर विकास की चनता क्रिए और परस्था को स्रो निवाते इव स्वामे बहुना है उस में बिरावरी का स्थान गुण बसे की समानक को ही हेना होगा और वे बोटे-होटे

वर करना ही होगा। क सम्बद्धेरका से एवड वृश्वियों श्रमें न तो प्राचीनता को केतास दशा बीट करों को सोचना चाहिये

वेश बह स्वमाद बन यना है कि बड़ां में माता ह' बड़! तब से बाहरं बार्षे समाज मन्दिर का क्या पहला हं कीर र्शनकार स्ववादिक सरसङ्घ में क्रवस्य सम्मि-, क्रित दोशाह'। प्रशी नियम वे सतुरशार जन मैं सपने शानदर पुत्र श्रेष्टित अपने के किए कहा तो हान हुआ 🎚 प्रधान भी तक क्या बनवा से क्रमा भावतर पुत्र वस्त के हो १६-६ को मांबी बयर, नई दिश्की-१४ वें झवरिवित हैं। करा ! भाषवा के करा। श्री बार्थे समाज के साराजिक वार्विक्रेशन में व्यक्तिया हुआ। **8**(कोनियम बनाने गाउँ की कारणस्यकता पहले पर सर्गिमारिक क्रवन के साथ द्वारमोर्जियस नवाया स्त्रीप्र पिर सजन वोसने की काणा क्द ईल्टर स्ट्रिड, पार्यनोपासना का es asa वाषा। दोष्ठक वजाने बासे 🚃 झार्व माद्दे सा बादमान सराइनीय है जिस ने न केवज़ कस सरसङ्घ के परचात् क्रांपतु कन्य समाजे द्वारा आयोजित महावली, क्षेत्र दशाओं, दरसकों, नगर शीर्छनो बीर कारोमांने के प्राथमा पर को कार्याञ्चल सर्वाची । इत्यने स्व-स्ववदार हारा एक व्यक्ति दुसरे की अपने समाज की चोर बाहर

बायं सबाज के श्रामिकारियों की सेवा में बेरा क्रक तथा तिवेदन है भीर यह वह कि करें सामादिव समार्थे में भाग ग्रेने वाले तब वास्त्रको सा पश्चित इ.क.व शह स्ता पाहिए। तथे काटे वाक्षे भी समा कांग्रस नहीं होती को क्ष्मका श्रम् व पर्योग स्थल होता । इस से वे भाई शर्नैः २ भार्षतमात्र की कोट बार-दिन होने। उन कार्य सर्वे पारा बदाते में इपक ब्रीवे आ रहे हैं। आर्थ समाज के ton की रही से हतें समय या क्रीम देश होगा। हमे व्य बक्षा कनुभव हुका है। यक सकात के फिकी वॉचकारी ने इस

बार सम्बद्ध है।

# दिल्ली में वेदामृत रस प्रवाह

सिखक-धी मन्तराम वी धर्मा (अफीका वाले) \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* भीर लिए बुक्तरे साङ्घों ने नाम प्रस**्द** ६० थी भ्रम्यकंत में 'देर

जागर्ति सम्मेवन तो बहुत समारोह

प्रदेव हवा। स्वामी नेवार्थी की

भी कै। जरेन्द्र सम्बद्ध 'शक्तप' व

भीर कर्जन' का० महाबीर जी क्षतात क्षती ने, सी क्षित्रक से चात्रे थे. स्थानमान दाश का परिचय यम» ए० (आई शरमाश्य श्री के ग्रापको भी विभाग पन स्पाम देश दराना । व अध्यते वर योक्क को पाराडे बाज्यब दिव गंदा सभा दस्ता सा शाम पुत्रते में इच्छा भीर सक प्रकाशभन्द जी श्र<u>ब</u>स कत्यव वर्धे कानी पाहिए। वक्ता है। दीइड राजनीति पर धार्यसमात्र वया शंव का **ध्रा वो वाविकोत्सव २६ सार्च से** टाक्ट वराकत सिंह की २म॰ १० र्६ मार्थ तक वेह समझ शे॰ साय संसद सदस्य का शाक्यां कृति प्रमुख सबस की बोची चेतासंकार *पता*ः विद्या सद्या । तेक्ष्मवी व्यक्तिय वे ए० सम्बद्ध देर विश्वास जिल्ला बतारा ही उनका छोजली न्वास्य हातेजं (राजी (स्ट॰ ग्रापार्थे रास था। समय २ पर ५० काशानन्द देव जी कं सुपन्न) द्वारा अपनिषद भी के प्रश्न सोते था साली क स्तम दे रहे थे। प्रशिषांत देशका की कवा हुई। २३ साचे से २६ मार्च तक महात्या भानवांभेड औ क्दभव हुमा 🖟 मानेसराध है क्षे प्रस्तकृत में नन्य महारह व्यक्तिवार के विकार सुनने के शिव सम्बन्द हुआ। १६ बाष'से एड उत्तर दिवनी उत्तर है। अनेद श्याह को मिन-प्रिम स्थानों का कारकाश धीर मोख यह वहते देश र्थावद्ध बढवा इ'बर समाजात श्रदाद सनेवाये कि 'बीवक सिद्धांत वी 'मार्च मुसर्गप्त' के प्रमानशाकी तो पश्चित्र है परन्तु उसके श्रवारक अध्य होते रहे । सूच पूमभाव बार्यासकार्वत्रवा का कावस्य व्यक्त रही । राजस्थान एक नक्युवक कारका अही ।' करवन्त्रो किवसा र्सन्वासी ला॰ प्रकाशकार औ देस ' स्टा अय घोषशिश्यंक है जन (स॰ सम्रामी कियानम्ह की के ला हम साई 'प्राव' नहीं चरते । चनुश्रमी) दा स्वास्थान विशेषाया वरुद्रेसनीय है। शारीने वह को कर भी बार का है। समापतिस मारुप की बाद बड़ते वि में 'मार्थ समाज स्थापना दिवस वो चार्थ (हिंद्र) चाश्य मर्गता श्रवशास से इस्तावा गया । संग्रहरा का पातर रही काने कर्षे करते देवीक्ट जी का बाल्यबीय भाषय पत्रों से बेबा न बरने की साकावत तो **ना ही प्रश्नासकाओं औ**र यॉफ-करने वा कोई मधिकार नहीं और ३०८ वरम्त भी **क्यारेव शि**ष्ट जी न ही क्योंको सेवा धरवी शाहिए । किरातेशी, बी दे अभवत्य को बी -क्रोंकि बाता किता क्रास्त्र क्रां ०० इ.स्स्यासम्बर्धः, विसिध्य मदी नियाते। व्यक्तिमत जीवन इस्ट्रियम् जी और स्वामी योगेस्थ-की पश्चिम की कोर प्रवे व्यान शक्य की (मध्यपारी व्यास देव) हेना पाविद्य । हाकों 'क्रम परिवेद भी का महत्त्वमा ब्राचे प्रदिशिति समा र्थाप

होता' हारा पोपना की। अब 🔚 के एका प्रवाद हो। राजांबंह की विकार होनी की की कविवाद से

बाडी थी। स्टॉल्या हो है सस्या, बार्यसमाजी को संस्था की रित्या संस्थाओं की गराना है कार्युत क्षति का वर्षेत क्या भीर साक्षिण प्रयास व आसं प्रणास के होती की कोर कांचक क्<del>यात</del> हेने की अंश्वार की। दंश सम्बद्धा वी ने ब्युने प्रदेश में सार्वदेशिक समा क्रीर कार्थ प्रदिक्षि सम्बद्धी की काशोपना की 📓 sa है के दिसी ने चौ( दी: ए: दी: काहोसें व स्कट्टों की कोर से भी किसी ने भारत बरकार की चौर से बावोजिव वेट सम्पेतन क्रिय हैं विदेशों से समजय तीन की वैद के विश्वान समिवकित हुए, में प्राप्ता प्रतिनिधि न सेजा और यह कि बह जित्र रूप में सन्मिलित हुए। बह **मी समकाबान के कारय पूरी वैवार** न करके हो भी कार्यसमात को खाड स्म सी। विद्वान लोग सहा ल्यान का भीर परिवार की ने १३ मियट के साथका के सक राक्षिको धी गुंब से प्रापता स्थान स्थित । वेद २ प्रकारने से बो बर प्रचार हाने से रहा। 33 क्रमें स को कार्यसमाध .

बीबान हास की कोर से काया में तेकारत जी शास्त्री के प्रचानका के भार्यक्षमान स्थापना हिंगसं १९-४ रांबवार महात्मा देवी-सन्दर्भ हमा । माणायं वो स क्रस्तकीयमायस् और श्री सम्बंध-राध्य 'संबेग' का स्थासमान सराहे गर। जातेश की वे क्या-'शानेकसात्र के जिन कार्य **केट** विश्वत है पर वे परश्रार स्वामे सिक्षि के लिए सगद रहे हैं। लकार के सम्बाद को सब्दय कर रहे हैं। बहुव ब्यार्थ नेहा सरकार के द्वाम विक मर । बनका की भावेतमात्र जैसी करूट संस्था है की कठनाएं भी प्रशासीत्वाहरू वी । अही ब्राह्माई है । विद्वारकों की क्षेत्रका मी वचनपद मी 'शारा' कर थी को क्या करना है।

# दु:खी क्यों ? सुखी कैसे ?

(सेव---स्टेशकुमारी भी रेखवे रोड करनास) \*\*\*\*\*\*\*

'तो कोई दःश को सकाना ·ब्रीट शक को प्राप्त बोना जाते **व**ड क्कान में को छोड़ वर्मे व्यवस्य करे। क्यों कि दःश का पापाचरवा कीर · mms. वर्माचरता मस कारण है।'

वयव्यवस्थात सत्यार्थ वकारा कोई सं प्राची देख नहीं शाहना । क्सादी बनल इच्छा बनी रहतो है कि बह येन केन प्रकारेया सुली हो, क्रवापि सभी सली हाँहगोपर नहीं होते नह निदंशक है कि बीव कीर बड़ा क्याइवर्यजनक यात तो यह है, कि । आहात विकास के यन में अवस्थि । संस प्राप्ति के क्रानेकों साथन क्षित्रकात हैं. हो भी मानव दान-स्तार में श्रवगाहित होता जा रहादे mill र प्रकार कारण कवा है ? कारण के विनावो कोई कार्य होनहीं सच्चा देव क्रम कारया को बवतावा है कि :---

'ন ও বিভাগ ব হুদা কলানা-न्यग्रहासमध्यरं बमुब १ मोहारेण प्रावता जनम्ब चारुष वक्षशासस्वर्गन

114 St. 1-913711 है जीवी ! जो परमातमा इन धर्म है। महामन्त्री पाश्चक्य ने सं सम मध्यों हा यनाने बाता विख-विता है 'सुसस्य मूर्व पर्मः' । सब **क्रेमां दे**, उत्तको तुम लोग नहीं मानते हो । इसे हेतु से तुम " **'अस्तोता' करवा**त सविद्या से श्चावत, मिथ्यावाद, नास्तिकश्च, इध्याद करने हो,इसले दुःख तुमको मिलेगा, सख नहीं । दुमं कोय **ब**हार १९. १ के बल स्वार्थ साथ क प्राथ पीपम मात्र में ही प्रवृत्त हो रहे हो। · राजवाशासद्यासि<sup>2</sup> केवस विकास भीत के लिए ही सबैदिक कर्म करने में बब्ध हो रहे हो, भौर जिसते ये सब महन रूपे हैं, उस • डवैराश्चिमान न्यायकारी परक्का से बस्टे पहले हो । सकरत पतको • हिम नहीं जानते। यह सन्ध ६६

भौर शरत का समाधान भी अस्तत

करवा है, क्रिससे 🎟 महान् सन्देश

का निवारका होता है । कि क्या

इस नीवत्मा और आधा वक है। 1 महर्षि मन्त्रार्थ करते हुए इस पदन बा वक्तर 📓 है 'क्व्यमस्मन्ता **प्रमुब**', ब्रह्म स्वीर जीवडी एस्ता वेद और बुक्ति से सिद्ध कभी नहीं हो सकती, क्वोंकि औष साह का पूर्व से ही भेद हैं । बीव ऋषिया भादि रोपयस्य है. सब सहिदाहि

होपनुस्त कमी नहीं होता, इससे एक सथे, न होंगे और व हो है हिंब स्थाप्त स्वायक, स्थापाराधेव (सेन्य सेवकार्व) जन्यजनकारि सम्बद्ध तो श्रीवादि के साथ बद्रकाडी।इससे जीव व्यक्त थी पृथ्वी मानना किसी मतस्य यो योग्य नहीं । श्वार्काजिकिकाल' धर्म की परिभाषा करते हुन महर्षि क्याद ने किया है 'यनोड-भवावनिःश्रेषसद्धिः स वर्षः । विश **के बापरय**ं दरने से उत्तम सुख और नि:शेवस सर्थान मोत सम थी प्राध्व होलो है. इसी बर नाम

का मृत पर्स है। जब धर्मीवरण से मुखोपसंबिय होती है तो निर्वय ही सबसे में प्रवृत्त होने पर हः। मिलेगा। वहातमा सन् ६६ठे हैं कि 'वेदोऽसिसो धर्मजनप' केन सम्पूर्ण वर्म का मूल है। सलाका मुख्यमंहै, शेटुआर का सुख भवमं ही होगा। यक हमें इ.स मिस्र रहा है भार: यह हमें क्रांपकी. वरम के करमा ही पाना हो रहा है। क्योंकि देर सम्पूर्ण पर्य का मस दे और हम सुपर्यापरश कर रहे हैं तो शरवण बिहित है कि हम वेद विरुद्ध चल कर खर्वेदिक वर्स कर रहे हैं। बड़ी कारक है कि इबें दुःस के भागी बनना पढ़वा है।

#### पैसे की महत्ता

थी भारतर नावक चन्द्र जी, साम्बा जिल्लों भी है छाना शीक्त शहरों और वाकारों में पैसा ही देसा है जिला जल का कतिज क्योचारों है वैसे की बावडरास्टा है सब ही कारो वारों में देसा पैसा हर जा सगका रोजी संव व्यवसारों में वैसे पर है आसे सहसर बहो-बड़ी सरकारों से पेसा सट सट सटड रहा घर-घर विश्वली को शरीमें देसे की बादर है होती क्यूओं की वसकारों में वैसे की इब्यत है देवल सेटों और साहकारों में पैसे की शादी है जीवन विन पैसे पटकारों में चरित्र वचने सब वैसे के बात हो रिडनेटारों है वेसे का संवर्ष है जारी चगरा और सरवारों में वैमा क्यों है। स्थापन होता ज्वानों छोर तथानों में सटा जाग एक असी कन दनिया के व्यवहारों में दान एन्य अन्दे कारी अध्यत हर वह त्योहारों में चाप जनत और साज-पान में होते करण हवारी में क्या कुछ कमी नहीं हो। सप्ती है। रसमों केशरों वे नोबस्त करें बाग हम भिलक्त सपते-सपने परिकारी हैं क्की रहेंकी बहिआवें बन्द शोरात सवारों हें

गायद्वाराजि केल्स विद्य सोग के तित ही सर्वति व वर्ग करने में प्रश्त हो रहे हों कीर शिसने यह सब स्थान रचे हैं, तम महेश्वित-पार जावहारी पास्य से सरहे प्रसने हों । प्रमण्ड रामको तस नहीं जावते । इसी हेत से तम 'नीहारेख' बल्बन्त कविदा से बाद्ध मिटना-दाद, नारितस्त्व, बद्धवाद करते हीं, इस से दाल ही वब को बिलेगा, सका नहीं। जहां वेद वह बताबा है कितुम दासी क्यों हो, यहां उपनिषदः यह

भी बतावा है कि यस द:श का दान कैंग्रे शेमा १ बटा पसवदासमां बेटरियान्त नानवाः। तदा देवमधिकामः दःस-

खाको वरिष्यवि ॥ क्वेक्टबेक्ट क्विटिक्ट E,२० व्यर्थ वर सोग समरे सी तरह बाहात हो अपेट स**ह**ते. तह

रेव को आने दिना द्वास का क्षम वसूर्वेद भी कहता है 🏿 'क्रम्य- होगा । इसका स्त्विधाय है कि

विस प्रकार ध्याचारा (धीस) की चमहे को करह लपेटना कठिन ही नहीं वरिष्ठ व्यसम्बद्ध है उसी वदार 'ईश' को जाने विना द:स्रों का द्मना दोना भी असम्बद है। बस्तुतः मतमतान्तरं संदी चोर अन्य-कार में रहते हुए छोई भी मादव हसको बान हां नहीं सकता। क्यों कि कोई भी ऐसा यव नहीं 🛙 विश्व ने 'ईशस्त्रका' को पूर्ण क्या वैदिक टप्टिकांस से प्रस्तुत किया हो।

विसी का हेडबर को आवर्षे प्राप्तकात पर विवास ब्रह्म है, दिशी का वीते पर, किसी का गोलोक में, किसी की विच्छा लोड में हो किसी का भारतस्थित झाळ पर्यंत पर । वेद्र'हसै' एक देशीय नहीं मानदा । वेदाल-सार हो 'द्योश्स सम्बद्धा' 'स वर्क यात्' ॥ 'वसे' वस्तेररीय सामने

पर ही जयमें का क्षेत्र विस्तृत होता है। वही कारण है कि साथमं का बाबार गर्म है। हुकी वो करी हमात्रा संदेशा वदकि हैता लो

(रोप प्रष्ठ = यर)

#### श्रार्यसमाज श्रादशनगर बानन्यर स्थापना महोत्सव वार्वसमाव काइरोनगर वाल-

अबर का स्थापना सहोरसय १७ मई रिवास सार्थ ५ वजे से जा बजे **८**६ वडी भूमधान से मनाया गया बी पे- रोशनसाल की वधा नवन अवस्था केंद्र मन्तिर भागव केंद्र . के अपनी के समन्तर भी पंत केरबरेश की विद्यार्शकार बीच से a. बी. कारोत जासन्बर का . श्रमावराक्षी प्रचरन हुआ । इस **श्रद्धोलस्य में** जालस्थर शय**र** की ब्रद्धस्य बाय श्रेमार्जी के सदस्य तथा चारम् स्पर को जनता दायी संदर में सम्मिष्टिय हुई । महोरतक के स्वयं का सारा भार कादर्शनगर वे व्यविष्टित भनी मानी भी पूत्रसम भी भगवास ने दहाता । इस श्वमान की स्थापता का श्रेण उन्हीं 41

टेडचना प्रभाष्ट वासम्बर िसराज श्रलावत्रपुर

श्रीविक्तम भीमहराजन बर्जार्थ काय्र्वेहिक ब्रीव्यासय का बार्षिक रुव्सव द, ६, १० को पूम-वाम से सन्तर हुआ। चीचपः **ब्रथ** के तत्सव की प्रयानका की सेठ कियाधन्द्र राज और में संशोभित की । इस धारमर वर स्त्रीपनालय के लिए **१३**०००/- की धरगेल की गई जिस **कें** से १००/- भी जाल**क** राम जी च्छानास. ३००/- सेट शिवनस रावशी, ≵००/- श्री महंत वस्त्र द्वास भी गदी सबदा सर्वेदव श्रमार्थनपुर २०००/- ता ० इतिकृष्या श्री भजाज द्वारा शेष धन द्वान्ड बार्तिकों से प्राप्त स्था कर शक्ति **७**००+/- हेई । नतार पर साहरा

# आर्थ प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

#### श्रावस्यक सचना

आर्थ प्रदेशिक समा की प्रश्निक की कार्य में भी जा रही हैं 2.2.50 की संसर्ग मना के साराज ≾०२ वे बनुसार सभा केतर अभिकारियों का बुताब १४.६.६४ को साई राम झावर सैकन्सरी साल वालंबर के विशास भवन में होना निरिवक हमा है। सभा में बोर

होपहर पशारते की क्या करें। भोवन और निवास का प्रथमा कई राम सहस्र में होया। प्रति-निधि वारीस सोड कर सें। सभी संबंधित कार्यं सकार्यों को संतोषरात्र मंत्री सजा

विकास से से राजी, क्या माला लड़की हेवी जी के प्रशासकाची ज्यासकाती के मतिरिक्त भी दक्षतत जी, बार दुर्गावण जी सेवन M.A..P.H.D.

मे॰ वेदी राम जी शर्मा. M. A. भी विं रखारामनी M.A., M.L.

सभी प्रतिकृषि क्रयते । इसास व्यो सहित १४.६.६४ को .डीब एक क्ले के २० को ठेठे **अवदो**ध

A, तथा ध्रम्य महानुसायों से प्रवार कर छत्तवधी शोमा बढ़ाई। इन स स्वत्र महोदशें का समात की स्रोर से क्षति प्रस्कार ।

> युरेप्रसार मन्त्री सहाज

IN MANAGEMENT REPORTED TO THE PROPERTY OF THE महात्मा हंमराज साहित्य विभाग का

दढ निश्चय

५० पतिशत कमीशन पाप्त करें नीचे किसी हाँ कुछ पुस्तकों पर विभागने श्व्यविश्व क्रांग्सन देना स्वीकार है असोच कीवध है।

इस सुन्हरे बवसर से ः सभी रक्त, कार्त्स्व, कार्य समाजें चौर उन की सावाद साम बढाबर सारा का हात बटाउँ

ममृत्वाको समिन्द ॥) क्रांधरह । ... ) मन्द्रंतराज जो को स्टिच्च जोवन वरित्र (भावन्य स्वामी में) महाराज विशिव्ध डीयूट हैं) इवार्वन्द शब्द (पि॰ दीवान चन्द्र सी हुत) धीयत १) श्रम् दृष्टांश (काळमा आसी जी विस्तित) कीमत २०) महर्षि दशेन (६० दावानचन्द्र जी क्रत) कीमत २) वंदिक बार्स सके क्यों प्लारा है (दिसीवस राज्यकर कर) कीज. १०० वैदिक घमें की महत्ता (पंकितो कवन्द्र जी सामग्री फिलिक) की सब १२) यः सैरेडा, करणाय दकारा हिन्दो आध्य i, में समस्तान (व) बाचरपाठ जी एम॰ ए॰ इति) कीमत प्रत्येक समस्त्रास की १)।

नीचे की पुरुकों पर 25/% कंकीसन-

'सत्याचं प्रधाश वर्' २०) समा का प्रशासन, इकानन्दविक सर्वण दान वर्क (२० सर्व मान भी कायस पांतकर) बीवत शहे श्रीवर व्योति कीर तील तिरश्तेत श्रीयत कारणः ॥= ), ॥) बाबे रिपे+ दीवानवन्त जी कत. श्वाध्याय संतह (दिं० दीवाय चन्द्र श्री हुत) कीवत ॥) चाने ।

प्राप्तिस्थान---महारमा इंग्रराज साहित्य विश्वस APP. समा जालन्धर शहर

बोट-- शक क्षम प्राहर्के को देना होगा ।

#### प्रस्तक परिचय सच्ची शिक्षा-लेखिका चनक

बहिन मरिकसाल कारक —ग्रहाशिका-- " " " #

प्रष्ट संख्या ११६ क्षेत्रक

उपरोक्त पुस्तक को ब्यामोपाल पटन से झान होता है कि लेकिकी शीमती चंदल कहिन ने कारविक शिवा देशी होती शाहिए ! तथा वेतमान सिंवा प्रशासी में धार उसके बाज्यापत में कथा अटियां है इसका विदेवत सहा प्रकार है क्या है। इसके साथ उद्योश औ शिका तया समाज को शिका का वारीक हहितीया से विवेचन विका तवा है। सावय जिन निवसों का सम्पूर्ण बाज् में पातन करता है उससे वह बोड धीर पत्सोड हो में में मुख की उपलब्धी प्राप्त होता है उसे ही सच्यो शिक्षा का स्थाट

इमारे विकार में उपरीर्श पुस्तक स्वजी भीर काशिकों में विद्यावियों की पुरस्कार रूप में देने के लिए कारिक्सम सामग्री है। विशेषकर गृहस्थियों के क्षिप की चाररा संतान बनाने के जिए

মাও है।

कार्य जनत इस पुस्तक की वेशिका को हार्दिक वभाई देखा है। इसने इन प्रशाद की विकास बायं साहित्व में चावरों का सम किया है।

पुस्तव शिवज होने पर वेदिक स्व बावमें। से बंधारित ब है इससे सन्दरता में चार चौच क्रम गर हैं।

प्रार्थित स्थान--स्थाप मासिक साश प्रधाना क्र

### स्त्रो समाज र्देशसः ( गुजरात ) द्रःसी क्यों ? सुसी कैसे है

(प्रष्ट ७ का रोब) वानक्षर वैदिक धर्म का स्नापरस्क होता । क्सी को सामने से सुन्न की शर्पित हो सकता है यतः वह महान् है.सहान ही सब होता है। सुरुदी-

व्योपनिषर् में मी किसा है :---यो वै भगा कसला नाम्पे सब सकि भरेंच सबमें। 

मुद्रक व प्रकाराक भी सन्त्रीकराज जी मन्त्री काव मादेशिक प्रविनिध समा पंजाब जासन्तर द्वारा बीट मिलाव में स. मिलाव रोड जालम्बर से महित तथा भाग्यामा कार्याक्षय सङ्ख्या इंधराज जनन निकट कवाहरी आक्रम्बर राष्ट्र से जकारित जातिक-कार्य लाहेशिक जीतिकिय सका पतावध काहर की



टेब्राफोम न० ३०१७ (भार्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसमा पंजाब जाजन्थर का साप्ताहिक सुखपत्र) Regd. No. P. III एक प्रति का सस्य १३ तथे वैशे वार्षिक मूलव ६ इपरे

वय २४ वंक २२) १८ ज्येष्ठ २०२१ रदिवार दशानन्यान्य १४०- ३१ मई १९६४

(तार 'प्रादेशिक' जासन्बर

### वेद सक्तयः

## इन्द्रमित् स्तोता

वसी इन्द्र भगवान की ही शर्मंद्र किया करो क्योंकि करी परमात्रमा सारे पेरवर्षी का भरषार है, सबं सुकों, भाग-शक्यों का प्रशास है। उसे क्षी अपनो, उसे ही मानो, कर्ल का ही लयम, भन्नन चौर एतन वरो ।

### महरुक्या च शंसत मह—शररवेद की खुवाओ साम के संगीतों. स्वित के मध्यों

तथा अक्तिरत मरे मार्वी में तसी के मीत गाओ, पक्षी के श्रीता का कर क्षेप्रस्थ के करोड़े भारं र कर बार २ जीवन में पान करो । सर्वेर अस्ति रस चित्रो, शास को पित्रो, कार प पिको ।

यरचकार सदावृषम् को नरनारी तन कर प्रेजी इस प्रीपन में सक शान्ति, सस्य-जाता कादि ही वृद्धि पदान हरते ब्रेडन अगवान को शास्त्र क्यता साथी. नेता बना तेता है, एसका कामय गण वर होता है-- करने भवना केवा है। सम द वेंदरी

## वेदामृत

### भोडम नमः सम्भराय च मयोभवाय च नमः शंदराय च । मयस्कराय च नम: शिदाय च शिक्तराय च ॥

यजः स. १६ मन्त्र ४१

बर्म :--हे प्रमो ! हम सारे (नमः) श्वास करते हैं. नमस्मा हो काप (गम्भावन न) राम्नु के तिय, आप राम्यु-ससस्य है इस भाव के इस सम्पूरण की नमत्कार करते हैं। झाप (मयोगवार पा) संसक्ष के बत्तम मुलों के दाला है, कटा बाद के इस सदीन सद की नमसीर हो। (सम: संबरायन) बाल शंबर है सब का करवाता करने वाते हैं. इस कार के इस शंकारत को प्रकाद करने हैं : बाप (मयांक्राय प) सरस्वर १० हैं-वर्ष के कार्यों में उक्त बरने वाले है। भाष की असरकार हो। (तस: शिक्सद) कार के शिक्सप की क्या (शिवदराथ प) कालाज ही संग्रह शक्तम की नमस्त्रार हो । सब का संश्रह करते हैं।

मान :-हे अगरीहन(। काप के बाजन शास क्षीर करून गुरू हैं। कीन ब्राप की बहिमा का पार पा सकता है ? देशभिदेव ! काप 🛮 शम्भ है, सब का महा करते हैं। स्वयं प्रश्नमयं है, बल्याया स्वरूप हैं। ब्राप ही संदोन हैं बाद का ही प्यारा नाम शंकर है। सारे विस्व के शक्तियों का करवाया करते हैं। आए का दिवा क्मंप्रस दवड मी तो क्राव्यक्तों को सकी करने का सब से बढ़ा सावद है। ब्याप ही ते शिष भीर शिवदर हैं। भाग के सिवाद भीर कीन शिव-मंगक्षमय थन को इसारा मेनत कर सकता है। इस झार के पुत्र-पूत्रियों है। भाग के असाद के दिना हमारा बन्वास्कारी इसरा कीन हो सकत है। हे महान शिव ! हमारा करवाय करो, हे शम्बी! हराथा प्रस्ता करो, हे संबर ! हमें सता स्थव पर बताने रही—सं \*

### ऋषि दशन

तदाङ्गानुष्ठातारः

को स्रोग भगवान के अवस क्ष परमेश्वर की बाखा का **ब**न्तुष्टान करते हैं, स्नाहेश पर यसते हैं, व्यू के परम निस्थासी वतका उप विदा की निर्धारित भवाराक्तें पर चलते हैं । उक्षी के बन जाते हैं।

स्थिरा मवन्ति वेद्यम्त पुत्र श्रमुके गेथी अपने जीवन के शरपेड़ काम में स्थित हो। जाते हैं। इस का बचन कटल, सन स्थिर तथा कर्म जरास्त हो जाता है। उनकी

कापने जीवन पथ से संकार की कोई भी शक्ति विवस्तित अरी का सबतो हैं। वे धव होते हैं।

विद्रांसः कान्तदर्शना को भागत हैं. किन्होंने सात का श्रकाश या सिया है । सत्व विद्याका स्थार क्रिनको जिल तथा है, वे कांतदर्शी बन आते हैं। बनकी दृष्टि बड़ी बुर वैशी बन आधी है । धरवर्शी हो

शाप्यशृक्षिक

\*\*\*\*\*\* -संतोषगञ्ज समा पंची

सम्पादक---त्रिलोक चन्द्र शास्त्र

क्रिमेश्वस का दाता

क्षीया क्षास्तर का जन क्षाप्त्य प्राप्त क्षीता है । वदि अवका का प्राण व हो के कर्ज कर्ज स्राते में प्रमुख्यों न हो । सनः केद ने श्वराः --

### सकिता सत्य समी क्रमीर वेशक प्रश्न का कर्म अटक

है। इसी से सस्य को धर्म कनाया 🕯 । मीका ने इस विषय में बद्दाः — तेशाविकपनाशोऽलि क्रयवायो स विकास ॥

द्धार्थाल् वहां किया हवा कर्म जल नहीं होता। परिपाद का प्रवि-#शब्द धोर्ट निवय या कार**ल नह**ें। पुर्वसत

कांट ने इस विषय में प्रवित श्री यो कि सहतां सहान का भाव सन्दर्भ में है और इसका निरा-करका नहीं हो सहना. व्यतः क्रमारमा विवासन् है । इसका भाष बहुदै कि अपूर्ण बीच पूर्णका की भावता रखता है। यह भावना काल्यनिक अयारमञ्ज्ञ नाजना से फिल है। इसके सरिविका सबने च्या ता को कभी नहीं देखा किर भी इसका अर्थ यह हमा कि ऐसी कोई

न कोई शक्ति है काराय जो सता क्कान, साफत्य बादि समी दक्षियों को वर्ग है। वेद ने इसका चयर

देते हव शहा :--न इतारपरनोनः । भवरे १०(माइट वह कियो बाव में

क्रम नहीं। दरे पर्श्व नियमन्ति दर कने न हैं बीवते । यनदः tomata ॥

वार्थात् परमात्मा परिपक्त है जीव से उत्कल है। क्यीर क्षापरि-पक्क साक्ष्में जानता द्वी नहीं। **प्र**शः इस से भी परमात्मा की विक्रि होती है।

अन्तः साध्य saret सायम की टॉट से बेद ली

स्त कथन है .-वेस्तरपदयन्त्रिद्दं सुद्दायम् ॥ बामप्रेन्सराधा क्यांत बोली इदव fei ni of feit g ag gun Mundungungungungungungungungungung fi gage afti

चार्चिक सर्वा---

# परमातमा की सिद्धि और स्वरूप

(सक्तिकानां की मिनदेश पार्व पार्वी, क्व॰ ए० (५०) (नर्जय के बारो)

. जिलाबि ॥

संबद्धाता वस्य निवित्रो

सर्व :-- प्रविशी और व्याकास

में जो कत होता है इसे वस्त

(परमाराग) आपना है। वही गरी

उस के तो शाकी प्रास्त्री के निमित्र

वासर शक्य

# NOCOCKRIGHE WORK WORKSTONDINGEN

है। क्रमेर ने क्या :--क्रवरिवासि सर्वा रिफेस्स :ed stem mid feffe र्व क्रे**त कर क्रोमक्षण** । सम्मन्ति वरका रोदधी सक्स्फ्राई।

विश्वासम्बद्धाः अध्यक्षाः इस प्रदार थे करत: सारव की श्री में भी क्रमास्याः भी विद्धि होती है ।

परवात्वा का स्वरूप परमात्मा का वैदिक स्वरूप जिस्स पदार है। यस के स्वतः में भिन्द कारों 🛣 :---

वात

तक निने अवे हैं। च्यारन इत्यारे परमात्मा का सच्या त्यस्य स्त्र विक्रिकों को जर का दान बार्व समाज के दिशीय शिवम है। बनाते हैं । पत के कर से प्रस्त है सपित्रवासी सन् बहुनि मो है. सन् चिन् कारमः भी है और सत चित्र खारूद केवज

विका को अन्य सक्यो की वें कार्य है। पूर्व केवस परमात्या परवास्मा है। परवास्त्रा और काल्या के बाल में भेर बर है कि है। ब्राया होने के बारद अन्य परमालमा बान एका है अबंब है। सबी ची झें में दुख है और पूर्व

प्रतीकी मोर जाने का पान करता है, अस्मिनिक स्थान करता है, प्रार्थना मंत्रों के हिन्दी कविता में अर्थ

प्रणेता--विद्यासागर कर्मा दवानन्द मठ, दोनानगर ( दर्शक से कारी )

योदम् विक्यानिदेव सर्विवर्षु रिवानि परासुव । बढ भट्ट कन्द्र चार्सवे ॥

द् वर्वदर्शाम्बन बूलम--(१) बदससंस्टे के बनिसा पिता! तुरिव दूर करो इत है फिता

मध्य स्थ्य-प्रशा विव-माविश्वी । रमनकी गर्द वे रखना बना।

(२) करण दिवस सुप्रेटक है सभी ! सहद समस तुत-मुद्दियां।

का क्या इस से इर को पिका! (३) समुख पुन्त्र विश्वद वदानं की.

सबद अर्-स्वभाव-सुदर्भ को ॥ करश्-इसा बड़ा कर दे विशा ! क्टब प्रत्य करा हम के रिवा !!

इसद-दुर्श्य-वर्ध-स्थान को ।

ल है। वेट के सर्वी में बे ः—सर्वेत कं क्षेत्र क्षी

पर्यः होते के कामा-धार

क्रमद, नित्य, पवित्र, क्राह साथ क्र अवादेत है. देर में इस प्रवर्त श्रीक विवसान है। स्वानाभाष में बतस इन प्राहे बहां नही असतास्वाभिकाशकवीः विक्रियोः ई रहे।

क मात्र तवास्य चार्व समाज के दिशीय निवस वें वह कहा गया है कि क्सी. (परमध्या) की प्रशासका करती

योग्य है। यह भी वेट से प्रसा-कित है :-विज्यो गन्मची मुख्यस्य वश्य-

पविरेक्टश्यको विद्यायः । समयं शक्ष व्यर्थाप्-प्रकाश स्थरः, क्रान श्री क्षेत्र का वर्श संबार का ला

साच । वासी हो अस्त्रकार के सीवड है, बयी की लु के प्रवाशों में करा । ईरवर की एकता क्षत्र वह हो सच्या है कि

रक प्रमाणों से हैं। इर को क्रिटीट धीर बसधा सकर को जिसिका की वक परता उसके झतेओं कार्स होते के साम क्या नगरी परकराइक शिक्षियां नहीं है बूसरे शक्दों में शका, विप्<u>य</u>ु, महेश आहि क्**या** क्षत्रेक ईश्वर नहीं ? उत्तर में सिवेक है कि पर्णवा जो कि बेडबर में होना काहिए बर सब में नहीं है। हो इसके बानेक कार्य या शक्ति होने के कारण जाम धानेश है। केंग्रे वस बालाक विलाग, साला का वसा. वाई, बहिय का गाई, बामा 📾 भाजा, तरु का शिष्य क्षीर शिष्य का गढ़ होता है. असके व्यक्त औ वारी क्यार के बारेच होने हैं वाल बह होता एक हो है। वैसे ही ईस्वर मी एक ही है। चेद के सी

**व्हा**--य**६ स्तीवतः श्रामाः स्तरितः** । **उपसंहा** र

इस क्रमार इस से क्यां दिख करते का प्रकार दिया कि पा पालका की करा विश्वदान है, चीर अवस वंशिक त्यारत क्या है तथा कर एक

सम्पादकीय-

# त्र्यार्य जगत

बर्षं २४ | रविवार २०२१, ३१ मई १९६४ विक २२

# श्रायं समाज की शृद्धि

बी बर्ब हो जायें ते बेहापार्थ-

एक कडवा सत्य **हा**दि जीवन का एक भावरयक

क्रम है। इस की दोनों अीवनों को शभी भावस्थकता है। व्यक्ति और **= 16. धरक तथा समाज, मन का** विशास सरीर सन के किए इसका बक्षा महत्व भारता गवा है। कारक क्यीर क्षाचे का परम्परा से गार अस्त्राच्य पत्नाचा रहा है तथा सवा सम्बन्ध बना रहेग्स। कारण पांचन कीर शुद्ध हो को निविधन ma है कि एस से सम्पर्धत होने बालाकायं भी वसी के अनुस्प अञ्च-पवित्र होना। कारण दुष्पित, जैला, प्रशास तथा विकार वाला को को अग्रहर दाव<sup>8</sup> भी विकास कौर वर्षित ही द्वोगा । योग वेसे चान्त्री क्य पर क्सने के लिए भी शर्वि की परमावश्यकता लीवार की गई है। योगदरअवार ने इस १२ ad वर्ण श्रदाश दासते हर चपने क्षम्बीर सूत्रो में मनी प्रकार श्रीका दिया है। सरीर और सन क्षेत्रों की शृद्धि के साथनों की पर्या शिवाली है। सहात्था ननुजैसे काचार्थों ने भी सद्धिर्गजाणि **#23वर्गन्त-- वह कर चारी तत्वीं** की शांद्र के प्रकार बता दिये हैं। शहीर कत से, मन सत्व से, बाहमा ब्राच तप से क्या वृद्धि ज्ञानादि से व्यक्षिण बना करती है। जोट सोने चारी में बार करेंद्र, मेंस पाद और बल में भर वारे, असूदि उक्ष बचा दूसरे देव रहाथों में 🖽 जावे को इन श्रेष को शुद्ध परित्र करना काश है-इसके किया निर्वाह कीर 🞟रावरावदी। सम्बद्धाः थीऽप्रियाः

वाच ते शन्धांम-इड कर उनके पवित्र बनाने व्य बैक्टि सन्देश दिया धरते थे। तांश शास्त्रों हैं र्रादशास्त्र भी कपने स्थान पर **पहा महत्व रसका है**। ज्यांका गुद्ध है तो समा समाज पांपत्र है। यदि व्यक्ति का भाषाद, विचार भीर व्यवदार घाँटवा है। यस में श्रत्मच स्रोटायन तथा क्षोडायन है दो साथा सम्सन वेसा वन काता है। इसी किए समय २ पर समाव के भीवनमें सृद्धि का व्यात रहता है। भाव समाज के संस्थापक सद्वीं द्वास्थः सदस्यती न देद के आदश भीर क्ष्मन शब्द भार्य को से स बार के संपठन का ताम कार्य इमाज श्ला जिस का कर्वे है वि कार्यों का जीवन के सर्वेक्सक में क ने क्षोगों का समादा। संसार को मो कार्य बनाने का कार्य यही वा कि ऐसे छट, पवित्र सुद्ध अंगों से उत्तम सन्तनों से मारा विश्व वन्नः बन ताये। मातवता श्रा मान होत रहे । वशान विकार, पाह परिव तथा विशास संशोधांव का शासन सारे जवत को फिर से एक बार निष्याप बना है। ऐकी अध्य अन्यन पर्व अ क्यारण यन में विशान रही थी ! **ब्राय**ेसकात्र में संस्ता दवान न थी वरन जीवन प्रधान का। वहां पर धनवंत, रारीर, बाह्यान, मधिकार, मौर्विकता, समाधि आदि का बक्ष गीय बा-चरित्र छी। बरिवय बक्त की ही प्रधानता थी। उन बीवन देने राजों को पीक्षा

का। य<del>र्क</del> पन भौर धनी का रास नहीं या। पराचक्रीवन महात्मा हैंबराज की, चाबर शहीब पंजेश्वराज ी, तपोमर्लि स्वा. सर्वेदारन्दशी सर्वे-में की प. सेवट पनदवी असिपस,सीन्य- वींदे कीर वास यत्र तत्र तमहर माब सा. बेहर चन्द्र भी, साधभाव सा. साई दास जी का प्रसाव पत बा सचा से न बा फांपत कीवन के प्रस्कासे था। धन्न तो सन के धन था। घल ठो बस के शस शा की नहीं। क्राचे विचार उत की सब से पारी सम्बंच भी । दीदित से

थरी उस को व्यक्ति थी। चसकते हुद होपक बे—बकारासयी ज्यासा थी-उभी हो उन के सम्पद्धे में का कर किस्ते जीवत वस छो। उसरी का खोटावन, क्षोटाएन निका गवा। उन के संसर्ग की प्रिय सारित का स्थाने था कर क्लिने जीवनों की मैस दर कर छन्दन बना रथे। बुन्दे दीवक जनमगाये। विचार र्शासधा रमक वडी। औषन की व्यक्तियां बन गई' शारा समाज

क्रिन्तु युव बद्साः अगर

aana à टबरे क्रवेड पहाँ **भी**र

शब्द क्षी गया।

बालोकरों के साथ एक शक्ति हा श्री कान्दोस्य प्रशासाः दसरो हो भी सुद्ध (ear, क्र**प्नों** की ो शक्ति कर के समाज का शंग करा दिशा। शुद्धि का सभे हैं कि किसी के संद्रांचल, विकृत कियारों भीर मेरे भीवन को पवित्र क्या देगा। बर में कह समय बाद कल से भौर वाटिका में भी समय के **शेक्षो पर नाना शकारका पेसा वैस** शहर, होसी वैसी यदिकां स्वयं उप कर फला वाले वच्चे के साथ न वा प्रत्य पीरों के साथ बहते शैरों, नहीं की चेरकर उन का रस तेकर खर्च बदती जाती है तथा

थन भर्म के सामने नडमस्टक होता / क्वाकी भागी हैं । वही ध्यनमा समात्र भीर राष्ट्र के समृद्धि जीवन में बा जाती है। बार्यममात्र से **दुव बी**ठने वर **ऐ**भी कुछ दशा श्रामे क्रमी है । साथे संगठन के विशास वयक्त में इस दक्षा के कर्तराव समाब के विशास जीवन की 50 दुर्वत करने संगे हैं। धान्धारामेख बनकर इस झान्देश्वर के महान् ज्या को चारों कोर से डांग्ने संगी है। परिकास सामने व्याने श्रमा है ।

ब्याचेंडाल के बाहरों विद्वार

कवि के महान सपत्र श्री ए. हरि-रांब्द जी शर्मों ने गत दिनों एक संक्ल किन्तु मामिक लेख लिलका सारे झार्बसमाञ्ज का भ्वान इसी धादम्बद बात की छोर श्रीचा था । चन्होंने जिस्ता था कि आये-ससाज व्यव तक इसरों की ग्रांख **दरता भाषा—ंदन्तु श्रव द्सरो** कंसाय २ उसे अपनी भा शुक्ति करनी पाहिए ! देखना चाहिए । कि इसकी वाटिका में कितना सीत देश २ व्यसंग्रह वासपात पैदा हो गया है। कैसी र आधारतेलों से इसके रस को जुसकर इसे पीका बनाना कारम्भ किया तथा है। इस मिसाबट चीर मिलावटी भाग की बार्डिको दसके किया स्थान पूर्व रूप से पनपेगा नहीं । मिला-बटी थी. हह. सारा परार्थ जैसे स्वास्थ्य की हानि करते हैं--उसी इकार समाज में वह मिलावटी भाग भी सारे समाज को कियान देश है ।

#### ऋति श्रावश्यकृता "देवानन्द साम्र महादिलासम

हिसार को श्रविसम्य एक शान्यापक की धावस्थकता है। व्यावस्था का बाच्छा झाता हो, उर्पातक्ट एवं दरोन भी पड़ा सकता हो, साम ही वैदिक सिद्धांशों पर प्रवर्णन कर सकता हो कथा संस्थार कराने का चनसम् भी स्वतः हो। शेवन बोम्बरानसार सन्तोपप्रद दिवा व्यवेगाः। इच्छ्र्ड सहस्तुभाव शीम **हैं। फायार्थ के नाम एवं व्यवहार** mž la ह्या वस्ते

ववानस्य बाह्यसङाविकास्य

हिसम

वायवंता बाववंत १ ११ मा (१६४ (१११६ हे ४०१) / स्वातन्त्र्य संग्राम और महींष् द्यानन्तः । वी वक्षेत्राय राष्ट्रन

( एवांड से आयें ) सार सं. १६१४ के वर्ष के क्षेत्रों के मारे मांचर सर्वित्रों क्षित्रों ने ज्या ही भी जा मूर्ति क्यां वर्ड की १ प्रस्ता माध्येत सोगों ने क्रिक्ना बोहता की कीर सबे गुत्रकों को थारा परम्य सूर्ति एक मक्तों की दांग मो न तोड़ सकी। को के क्या के महत कोई होना को इबके भूरें कहा देख कीर ने अन्ते फिले' सवार्व क्यार भागम विस्तान हे बहारावर्धन क्रम पास्त्र ? झसरह पडानी राष्ट्र के लिये सीत. केंग्, जोकि-क्षित्रय प्रशस्त्र कीर बसादि उत्तव मुख्युल हवा के इस कोनों को क्षावत प्रदेश । सन्य देशकाती राजा हमारे देश में अभी न ही श्रदा हुए होता सालीन क्यी य क्षे बजुर रेफरेड । धर्म प्रचार लाति, पाचेना,

ब्राह्मक के पुरात कार्योक्षित्र के के प्रात्त कार्योक्ष्मित्र के क्षेत्र कर विशेष कराये के की दार्थिक व्यक्ति कर व्यक्ति कर व्यक्ति कर विशेष कर वि

सप्ति एवानय सरकारी प्रभार स्वारे के कोच्या से १६ विकास १८२० को करवाता गरी। बही कैनाता कोतीन्द्र मोहन देवीर के सबी/एवाना में बहर कर मार्थ १९८३ कर न्यार करते हो। वाली सप्ति में सारत के कावकारीन सरकाराम सर्वेत्वार्थनुक वह निवा सक्ताराम सर्वेत्वार्थनुक वह निवा सक्ताराम सर्वेत्वार्थनुक वह निवा सक्ताराम सर्वेत्वार्थनुक वह निवा (२) ते॰ थी पं॰ सत्त्वधिर वो सारती वि॰ विरोमस्डि प्राप्याण्ड-रदारान्द ब्रह्म महाविद्यासन व्हिश्चर

RECONSTRUCTOR SECURIOR MACHINE विसो हमारे तक्त में समानवेश तेक्षर मक्तरी से बैसे तैसे जिसी a area है यह यह स्थारे शका कते हैं उन के उसर भी बड़ औन कारणाञ्चलक स्वतः है। के कोर्ज के विको स्थार के प्राचीत बर **रो**क्ति क्षा समय स्थापिते इक्से परिशे को स्तेत पर'पत ओ शक्त दिया यह शब के विश्वत रे...क्टर का सरकारिकों के प्रधा वर्ष सीमाधीत राष्ट्रिय स्वेह के न पादिये । पीन रोटी से सी करीब कर राज रि-ज्योंके सा भोगों का करत स्तेश होता है। 'राजन ! मैं से प्रतिकि शत स्टेर्निंद गरीय स्रोत करि से ध्या

प्रदान करने पर विकास करने हैं कि माने के करनी का करने कर है जो कि बात करना हूँ कि जा करने करने मिंदिरी करने प्रितार की कार्य करने कि पार में करने करने करने मिंदिरी करने पर आप की मीता देश करने किया है हमार की मीता देश का प्रितार है कहा कि पार का प्राप्त करने की मीता देश का द्वार माने की हमार के दिल्ला द्वार माने की हमार के दिल्ला प्रदान माने की माने किया मा

चीर रहत III शक्यों दर अन र्शरहरू राष्ट्रिय को पेकेपने यहा दिवा है। इसमे गरीन सोचे रुपानेजी के बच है जिला कि प्रम विटोरी कहोर पर कही स्था चे शहर क्लेश या शह*े।* सो बह राज राजा को कार्ज गरंक रक्षां प्राते देशिये—बीर फर्जन नहीं. क्वोंति इसके होने से पहत रेशको ८-४-६१ के बांच में दीवान यरीय सोग दुःसपा के बेरे रहते हैं। ध्रमाणकारी की कार्बेशन, उन् समय क्यादरी में किया वहा से सब्द कार उद्धर्ष ने क्षेत्री सम्म का सक्रमेन होती नहीं इससे धायकों के उत्तर रेते का भी का विशा गाः शर्वा भे कुछ यस जनाता है सो हम हे निर्दरित ३८ निर्दर्श हे पर के प्रकार शहर नहीं देश ( विकार कि बार्ट कर हो और स्वाब to Scal ik fash sargari wentur ter इस स्थार इस देवते हैं कि स्रकात न बरमरास्रो । बद्दसमा गांची से विस तहा

प्रशास व वायान्यान्याः या व्याप विदेशी वाराताः ती विदेशी व्याप्ताः विदेशी व्याप्ताः विदेशी व्याप्ताः विदेशी व्याप्ताः विदेशी व्याप्ताः विद्याः व्याप्ताः व्यापताः वयापताः वयापत्यः वय

ते व्यक्ति करोहे किया एवं हो व्यक्ति महिला को तो हि महिला वार्य है कि की वार्य होने हो व्यक्ति को वार्य है कि की वार्य होने है के वार्य है के वार्य है के वार्य के वार्य है के वार्य के वार्य कर के वार्य के वार के वार्य के वार के वार्य के वार के

वी क्यों सिह्द राष्ट्रव श्यास के पुनः वाकुत काने का कानुक प्रदात किया। क्यों के परिकास स्वास्त तर से ज्यार में राष्ट्रिका का सांक कर ने ज्यार करते प्रस्ता कि

हें ह्वारा भी (कर्म र का में तत्त्व के के समितिक का कर के के कार दे रावादित का में कांक्र कार दे रावादित का में कांक्र हा हा के देवार भी कों के स्वाप्तक हा कांक्र का में कांक्र का कांक्र कांक्र का में का मिल्ला कांक्र का में का मिल्ला कांक्र का में दिवार होका कांक्र का में हिस्स होका कांक्र का में हिस्स होका कांक्र का में हिस्स होका हो होने का कांक्र की कांक्र का हो होने का कांक्र की कांक्र का हो निर्माण कांक्र की कांक्र का हो हो निर्माण कांक्र की कांक्र हो निर्माण कांक्र के कांक्र के कांक्र हो निर्माण कांक्र हो निर्म हो निर्म हो निर्म हो निर्म हो निरम्म हो निरम्म हो निरम ह

दे नह कार्यसमाधी को सम्बद्ध ध्रते देखाः वय स्पानि enam समाध्य की थी भी औहरी से दस क्षे नेपरकार करणा हो केवली है रामोधी सी सुतु के सम्बन्ध **से** कारणांत सारस्य की । जीवरी औ के प्रस्त का कहा होते से परके बंद संदर्भाव ने पन हो प्रच काल े ले कि समका साम प्रका<del>रिक</del> नहीं किया जादेशा। वह समय बेध्य को ध्वानी यह सहाराष्ट्र से बीहरी भी को सुनर्द उसका शक्केर यह है कि जिस दियों सहिं उपाधन कोपपर से में करती शरका की क्षेत्र से प्रवासत के एक काल्या मान्यदेश कार्यन विकास पर विकी श्रव हरें । विश्वस एक्ट कीक श्रीमा गया था। रिमासत की वीतिस काबी सह वर विकार **के** का रही जो कि बहाराजा ने स्था िही की पर्श बहुषि से इस्की। गर्हाद से को सकाद ही सहाराख्य

ने रुतके क्युकार ही वक्क भेजा। तत्र देसा चनुरवापूर्व का कि तक से इंडिएना कार्पकर अधिक ही त्रदार चार्च में रेजीवेटर को सिक्ता पारा कि सिक्त हरकार से दूख बड पर जन्में ह्या क्यानी करते से से बार र कि सिक्त से पता कर सके कि सह क्या कि वह से रिसाम की

थी राजेन्द्र को "बिजाम" ्ष्य. ए. कार्यक्रमत के प्रति-च्छित यूवक लेखक है। आप बावंजनत को आयंसमाज की स्रजीव तथा बाधनिक गुग को रोचक कहानियां प्रस्तृत सेल में मेंट कर रहे हैं। अस्तरम पर्दे तथा परिवार को सुनाएं ठाकि भावो सन्तिति

के मोतर नवीन वागति तथा -व्यवस्य पिक **विकार** विद्वासी महात्मा :--क्षमा के भवन्त्रं भन्त्रों भी देश

चरशाल पैदा हो ।

-शांड की सूरी से एक बार नताया कि • असन्त ब्रह्मसमा द्वेसराज जी सात्रा क्यांट पर नाते सभय पहले कोरेस विक्रवादि देश-सन्त्र का पाट किया करते थे । एक बार एक क्रमक पर गए। कटा माथी साव है। सार्वमें कभी विशव गई।

क्तरनापदा। एक मार्था ने उप-

द्वाम में कहा 'देशें अन आपका

भ्योत्रस विद्यानि देव क्या करता है ?' सटात्मा बोले प्रकार कड करेगा । उतल बजना ही या कि क्रम कर प्रशास भी के विकर आस्तर रूप गई। चार में सहात्मा बी दा एक अबत ठेडेवार वैठा मा। सहस्मा नी को नससी दर कर पहां सहने का कारणा पुत्रा । . बहात्मा श्री ने वाद स्वाई । सट-चट समझी कार से चित्रकर जात बदाराय निर्दिष्ट स्थान पर महात्मा की को से गए सारे साथो सहारकाओ के प्रात्म हैरवर किस्सान का प्रत्यक्ष

एक आर्थवीर शास्त्रज्ञा.-विकास सरमागह से वर्ष वह बार नगर में फैला । राव साहित हो १००० हसिम गुरवों ने देहाबार | अपने वित्र के वर सवता शिली स्टि बारकी पार्च तेथा पं. विज्ञासक नाम भी के पर गा भावनका का प्रिया। यर में राज साहित की बाहर होड़ कर लाने कर होकर

फस देलकर चन्त्रित रह गए।

### श्रायंसमाज की कहानियां \*\*\*\*\*\*\*\*\*

पत्नी, बनका एक रिक्क-मुक्कुल घट- क्रिक्सक गुरुत। पुक्रिस भी बाटक den de mente. Gene & पाने वालिकारी झार्वकंट वी करोक्डमर भी एवं १६ विश सेव ६ शेरमिंह थे । राज साहित पर वें न में। मकान के हार को कश्यक्त शिवा वका । पर तकाव **दे**से हो ? दव तद इस सङ्ख बाह्यबद्धारियों का सामना विदा बासका या। सीत प्र २ वर

करने चर्छ । पुस्तिन में एक राजपूत ैंजिक ने राष साक्षिय को घषावा ( मध्यम की इस्त से एक कीर धार किया गया। उस दिन शक साहित्र के पर कहा मराठों का मोहन था। महारक में चर्यनको व माजियां नई प्रकार की होती हैं। परवारें पर योशी-योडी पटनियां सता का सत से बाहर पेंडी गई । प्रसस्त्रधाने देव रही थी। शेरविंड ने मोचा ने समना पर से बराठशाहा के की कि बचाव नहीं हो सक्या हरर के नश्डे भाषं वीर साव बसा है वह पास बड सोच कर बेड गया कि बर बर कीर गीहें इटे इस फावर सके कोई बना बहेगा में कोई बाज क्षित्रे तथे रस ब्रह्मा बाई बीर समाठी ओहा हां। राव साक्षित्र वे

· तें रह केवहाता में कावंबदात के विद्यालाओं के सकान्य जीवन की स्फर्तिशव ६ घटनाई पाठकों की सेवा में वयस्थित करांगः। मेरी बाह है कि सार्यतन इन घटनाओं का इन बटबाओं का प्रचार व प्रशास करके चार्यसमात के मीरच व प्रतिखा की पढ़ाएं यदि पाठ हों ने इस लेखमाला की क्यार किया तो मैं दल क्षेत्रमाना को जारो रस गा । मैं बह कोय सदाना चाहता र स्ट्रने शहे चाहिए --**医电影电影电影电影电影电影电影电影电影电影电影** 

पर कोई शस्त्र मी व वा । सीनाम्य क्रमोक्ष भी तम राज साहित की से राष माहिब के मान्य विश पत्नी कार्य बीर कांगना के साइस प्रदेश कार्य गीरक मानसणि केसा वर्जाद कीराज से सक्कों हराहे रार भी का पिलील पटा इसा वा पराधित हो गये । यह बहानो हमारे भलमारी से यह विकास नवा। इविद्रास का सन्दर्श प्रम हैं। राय साहित के नन्हें पुत्र को अवार क्षे बोरियों की क्ष्रोट में सामान में विश्वदान की सबन प्रेरागा-ब्रियाया गवा । ब्रुट वर चट स्ट पद स्थामो स्वक्षन्त्रानस्य वी भी चरोड हुबार भी ने बदान है विभिन्न कोनों से कुछ स्वयर किये।

महाराज एक बार देश्राधार प्रधारे । पंत्रदेश्य जी से बाद काते 🎟 पाकाकशरी नमसे पर वें दर्र द्याप ने द्या. 'जरेन्ट आप चार्च समाजी हैं। क्ला तरे कीर इतानी ने विभावत पीछे हरे। इतने में यह समाचार ਬਟਲੇ ਗਾਈ ਦਵ ਇਹ ਹਿਟਾਜ की बरकार पशक्रित ही क रहेको । संघर्ष बरते हर ठोड है कि बह मित्र राव साहित को कार में नीसियों सार्व चेर क्टेंगे. बरेंगे विडाकर बाया और बकान के चीर चौतिकों की इक्तियां दुटेंगी,

बेंडबों केत में शांगे और उपंचे यतन जाकों पीकितों के बंधन उस विद्यान से इटेंगे और कन्यामी क्रासन समान्त हो जानेगा। सुचीर साथु की समर पासी के इसाइ से झार्च दोरी ने बद वद का बक्तिहान दिवे परिश्वाम स्वरूप हैदराशह को अनवा की मैं। की क्वें की शस्त्रा मिर मई (

अभी कितनो बार **पब**री उतरे**नी** दिवंगत पं॰ बुढ देश को मीरपुरी ने एक बार वह ब्रह्मनी सुनाई कि १९व सहस्या ईशराज की संजीता किला अमनसर पशारे । वहां उन दे वह सदान इयजीनियर(सम्**धर** वह अब भी 📳 उन को एक मनी पुरुष के पास समाज सेवा के नास्ते क्रिया के क्रिये हैं। समे । एस अर्ज पुरुष को क्रोच क्रमवा कस ने क्रम क्राप्ताबद यह विये । श्रह्माल समर्थ धीर बनी कुरूप वरस्वर इस कारण क्ल-६ पड़े । महारमा औ बीच में पर का शाल काने सरो तो पतको रपही उधर गई। महाल शक्क के इत्य को और भो टोस स्वरी। जन सादियों से कार रहे थे तो एस ने महाराज को कहा कि पगड़ी पहल

दबाल करार द्वरव शिध्य हैसराज कोसान काने भागी यह पगरी विवन्ते कार कवारी जायेगो **इस** विदेवाय तो एक ही बार पहलांक जिला २ ने किए की सेवा करना ही कर हो । चाह<sup>ा</sup> समात्र संशा **करते** हर धारमान का विषयान करने धो बहु शब्द भावना चात छही

लं । कमा के साम्य त्यानन का

भारत के समाज सेवी श्रीग कक श्रीलंडस घटना से 1 श्री राजेन्द्र जो जिज्ञास एम. ए.

संदर्भ

वई। यद सोलुउसा के रोग से सम्ब

प्राच्याक दशनाय कालिब श्रोतापुर

(वर्शकसे कामे) अर वन्हें कियातमध्य रूप नहीं **दि**का आता। सन्त सः ह साप

सबरे पर को भी शन्दा कर देवाहै। कार्यसमाज की कीर्ल तगर के सर्वानिमित विशास भवन में १० **म**भील से २६ अभील उक देव शिव दशन्तु जी महोपदेशय सध्यव बातश्रमाभय काशापुर की कन्त क्षुता में बझाहकाः। रात्रिकेस स्व र्वo शिव दवालु जी की कथा हाले **श**ही । दीन दिन प्रात:कास विस्पित बाब वाद भी एम॰ ए॰ द्वारा । विसिध्य महोद्द की शक्त शीर्व ब्रह्मत है। सपस्थित हो। पुरुष गद-सद हो एवं : मैंने अहें व्यवना **बरियय देते ३ए श्यरश कराया** 🗎 सब मैं हो। दः वी। सिक्स स्कूत चेता-कसमाद्या का प्रवास/काएक का को मेरे अध्योगमान व स्तब के संस्था वार्षिकोत्सन पर काम-Con az aznesia aznat ett. क्यों भी बाद है।

भार्य समाव पटेल तबर मीर

**बरोल** बाग के वार्षिकीतस्य एक डी आस्त्र १६ अभित से २६ कमी क्य है। सरक्षी के उपस्पत में **बृष्ट** वल वस्त्र भीर समाणे भी हुई। बोनी स्वानों पर प्रसिद्ध २ व्यास्थात कक्षारं से । यका मानाव क्रम्या औ परिशाजकरणाये, पन विद्यारी साल बी सार्थ्य कान्यतीये साटार्थ महा-**रकी**, स्वामी सुधानेन्द्र की, ६० इन्हाराधीर भी शास्त्री, एं० सरदयाल भी हास्त्री नेद बाचन्पति, ८० शिव-ब्रह्मात की शास्त्री, काचार्य वाप-स्पति औ, ठाड्डर बशपाल सिंह जी दशः एः संसद् सदस्य, ५० शिव-इयाल थी, थो॰ रामसिंह जी एम॰ wo. थी रक्षकीर सिद्ध की शास्त्री, ८० असम्ब की विशासास्त्रस 200 त. क्षेत्रामध्य भी विद्यान्तामधार. ब दिल्लाक देव की ब्रोम विभिन्न श्चातपन्द की स्थ० ए०। स्ना० स०

क्योग बाग की धोर से फार्ट- व

दिल्ली में वेदामत रंग प्रवाह

सि॰-की प्रकाराम की धर्मा अक्रीका वासे)

कुमार सम्मेलन,' चरित्र निर्माण बहा कि बेहार्य करने के जिए समोजन, र्याच समोजन वालो-न्यास्त्रका की क्षत्रकात्रका अधी । जिल हर कौर का**ः स**॰ पटेश कोई बहुता बाहि बेट सन्त के भर ने 'शकाहारी—सम्बेख<sup>्</sup> चार प्रकार के कार्य हो सबसे हैं। फॉयर्डिसान से विश्वापित पार्नी इस के बत में स≢षि तक्षानना की (हिंदुयों) से सम्बन्धित समोकत, वेटायंत्रीयी ठीव है : एव क पोर-मधोधन' नेहिक बन-सन विकार या कि बिसी शब्द का सम्बेद्धन की व्यवस्था थी । ठोक ईरेसर परक बार्च करते इस सिंग

बाद कारे से बातानका है ।

का 'तेत सम्बेखन' देशा जिसमें

के बार्कसमात्र पटेल जात

परकों की झारहरएता है। वं. धगदानाजे बीद दे कासमात मैंने दोनों सक्यों के जगर कर्गे. प्रत्यानं वेत जाय जी मान्द्री (पं. भगवदन जी के जायाता), धीर्तन देखे। 100० हरू स्त्रीस बास श्रोध संवरसंबन की दोगी दवन पर के बाग क्रीएंन में सबसे पोड़ी शीच (स्व० कामार्थ रामदेव जी वे uxशेकों की गाडी की पर एक सुपुत्र), दाव रामस्वपह औ, दाव सक्रम भी नहीं ह्या। ६ वेक्सें रेक्प्रकाश पादकत्रत भौर व'. स्टर्श के दोस भगके में । हां.

वैरहों की विश्वपि सुत्र हुई । वे बह दुर्भाग्य की बात है कि सब के जन्म व्यंच बहाते अते और विचार क्षित्रन व वे । किसी विद्वान ने बैस्द के नाम के कार्ट क्लिस्स \*\*\*\*\*\*\*\*

मध क्लेश

(k) मान्य वरोसे वैठे रहना मानव यन का भ्रम है बरना इस दुनिया के कानर कीन किसी में कर्य है ात रह का कहता है कोई बान्तर यन में मैठा नहीं नहीं तुस बढ़ते जाको सब तह दूस में इस है

कोच सहस्र इस चसला साथी जीवन के इस प्रवासे **६६म-६६म वर विदे** हुए कोटे मुखें न पग में सय ब्हुला हुँ बहुत साल है बोरे भाषय देख को 📰 को कर दिसासाना महत्र करिन है सम में

पत्ने बडांसे वहीं सन्देश्या नहीं वह पत्ने क्षेत्रे सदने गड़े राव दिन स्टब नहीं वह पाने पढ़े किसे होने का हाचा करने बालो बोलो हिन्दा के किन्ने कोचों को नही-सही पद गाँ

> 16.00 किएक निर्मात

करते काते ये । फानों की सैक कराति जिस्स गारी । का स्टब्स् क्रीक क्या के बार की वेंबकी शोधा बावत वे भा भवन सर्व्यक्षको का शक्य या परन्य कर का भी सह पर्योक नहीं हुआ। चाचार्थ कृत्या जी के

क्रों में दरोज बाग से एक अविकासी ने क्षर्य में सन्तें प्रशा करा किया। कोश क्योश भी भन्ना होता है पर इसमें काने हवारा भी कर्त-क है। पौरशिकों का की सं जो पर कीह कार्य थाइमें का बाज रुत याही पर जोर है। पाठप महादशों में देव वह (धरिन होत्र) भी सहन्य वह है यह ह बाराविक क्यों की क्येक्स हो रही है। बो स्त्रो पुरुष न यह मीर क्यम के पनडे में उड़ी में और न ही कथा में दशेन देते हैं मक्त नदी पाड़िए । वेह के पूर्वाहीं बासे दन सारियस 🕸 थ हात हेने अवस्य पह क अले हैं। ध्यसम्भात के जिल्ला सकते के माने से भागे वर कर शिक्षे प्राष्ट्रीय असना पुरव समन्त्री है। समें यह है कि वीराश्विती भी मान्ति सार्य समाजी सी व**श शब्द** को व समस्ते हुए केवल आसाई। टाखने और न बासने में श्री पुरुष य पाप व कानमे लग पर्टे । प्रस्था बता बद रही है।

'सार सहर' की करेब माद में कोर पटेख नगर में जब शेक को व्यवस्था घष्टी नहीं भी व पटेल नगर में नेपारी लियों की वच्चों सहित कहकती थून में पहि बंड बेट दी चरटे दी ए प्रश्वी क बिए प्रशिक्त करनी पूर्वा । थैटवे पूर्वक बेटे स्त्री पुरुषों में से यहक बोडों को सब की व मिकी होती। क्योल बाग में को पर्दक्षी पांक है वंदे स्त्री पुरुषों में से भी क्रम असे उठे। दूसरी पर्ति तो इस योगक कि 'एक परटा मोजन कको से सरोगा' के पत्थात भी त आहें ही है तक्कर के प्रयास का प्रशिवक्क **कार्यों** वो सिकरबों से लेगा चाहिए। है इस काम में निषय हैं।

२७ ४ से क्षात्रं सकास क्रोति बसर के संस्थाबदान में स्वासी दोशानन्दु की, पं० राम जाब की सात्री कीर डाकुर शमशेर शिद्द की बस्त वर्ष कर रहे हैं। जनक का क्या प्रभाव यह रहा है। उसका प्रथक २ तिमियों पर होते चाहिए मार्थेंड विद्या के प्राप्तम कार्य कार्या वे ब्रह्मत एहं ही स्थान पर एक्तिक हो सब्दें सन्य या बट घर शीलक स्म हो वाती है। प्रसारमा को कि सहिषे द्वासम् की सेवी 

श्रम वैजनाय नामरीयाज स्थ

शेवापुर, बक्क्यमारी हेरवरीय क्रम विकासन सामरीयत्र (शैनापर) ती प्रच २० वर्षीय सक्के और १६ क्सीता काची के प्रस्त प्रशंस के क्रीकाम बोनों की बस्त में हुई, वह -<del>विकोर्ड</del> कारत हुई है ।

रिपोर्ट के बनुसार इस शोकपूर्व **भट**ना हा सगभग साहे ती बजे 4प्रातः) पता समा अथिक झालस सी सध्यक्त दमारी बो॰ दे**ः पन क**रणा (४४) ने यह सहस्रो वर्तिसा को केटोरो की प्रवस्ता में देता ! कहा जाता है कि उस ने आश्रम के बार्ज भ नाम ह एक जनवर ह को ब्रसाबर बढ़ा कि (सथ-सहके) औं बनाय से अगब्द कही कि बढ़ अधिका भी विकित्ता के किये सावदर की है। सावे । उन प्राराज वैक्रमाध्य की क्लोज के जिले कार्यने क्यारे से बाधर जिस्तार को रियार के भनसार बेजनाय जो पास ही

की बह बाब बडाई। सामस है चिल्लाइट सच गई भीर तस्त श्रीकरों स्थवित बढ़ां बसा हो सबे । सडके और सबकी की समाके ao मिटन वाद पर स्थानीय बावटर बक्षां पहुँचा ताक्टर को किसी वरिश्य क्रम्य का समेत

हो जाने पर चस ने सरकाता पश्चिम ~ न्यो सपना ने वी व

पत्रों की प्राप्ति हुई पश्चिम ने तरन्त घटता-शक धर **पतंत्र कर तहती** शत ग्रास कर दो ! शिश के दौरान में बैजनाय की जेव से कह पत्र मिते। यत पत्रों से को चर्चिका के द्राय से किसे तथ बताय श्राते हैं कात हथा कि दोनों के मध्य भे म प्रधंस प्रथा हुए। या कीर शास्त्र की भव्यका ससं पर कार्याल काली ची। पत्र से इस बात का औ भागम मिन ब्राया वाला है कि चेंबिया का रह शार्थ के बमैत्येप्ट

कें साथ बातचित सम्बन्ध था जो नि

# बह्मकमारी मत का ऋध्ययन करें श्वजीबोगरीत धरना ब्रह्मकमारी विद्यालय में कथित प्रणाय

### मम्बन्धी कांट ज्याश्रम के दो प्रामी मरे पाछ ग्रह

बाधम का दतिबास

ं कंत्ररचार रोट बटाव स्थित

सर्वेतव इ.कोजिवरिंग बहेराव के

जो ब्यार० जो+ व्यर्ड**ः रा**व स्रोर

पटना के सांदिशे सरहते में रहते

वाले वो संबराजकार हेडेबार के

प्रवास की मा विजयप्रवासी के

स्रवसर पर इस विद्वानिकायव

एई स्थापन को स्वापना हाँ थो ।

में रह रहाे है। मृत वर्शिया पटना

विवस से कालत में आहा करून हो गया है। स्थल स्था

बाध्य के पत्रों के अनुसार पहले तो वैजनाथ की मृत्यु कारण सर्पद्श कतावा सवा या । यस्तु बन पत्रों से कारण इन्ह कीर ही क्रत हक्सा । बाबटर के मनानसार ये दोनों सींचें किसी तेश विकेशी दर्श के का जेते से यह साथ तरं है।

प्रमानका के विकास संगठक भी संस्थातमात को पत्नी आवस विचित्र बंग का है इस स्थान के इस नावुषको स्रीर नश्यक्षियो जिले के द्वियाना (विक्रम) को भराहका प्राः पाना समा। को अभी द्वाल में अपनी चोर निवासिनी और पटना के जिनर्दि प्रेस क्रमंत्र ने शक्तम नगरी गाना

ग्रास्क्र किया, था । वर्षाप इस । में काम करने वामे की नवाधितह संस्था के विषय में वह कहा जाता , क्षेर एको थी । हमारो चन्द्रराज्या है कि यह शामित केन्द्र है तथारि । का मत श्रीमंत्रा के परिवार के साय असभी प्रविद्यों से इस स्वान के पश्चिष्ट सम्बन्ध था क्वीर रोनापर क्रोगों के इरवी में उसके प्रति संदेह | जाने से पृत्र वह दांतवाना मे

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* (बे०--हर क्रमालास बार्च ग्रहशंकर (होशियारपुर)

विस्तं पर्वे में निर्धा है, को या सदान दाये. बाधना क्या बता है, इसे वे निशान वाले ।

फिरते हैं देशों श्रुव में दृर बहान करते. काते हैं तेरी इच्छा, प्रमान निशान बाते । राज्य प्रता करा है. त किस जगह सिलेपा, वे आधि है हो आस्त्र हे आश्चान वाले ह

अभि के 🖬 देखा बालों में जैंगे जंदा. केटर यज ज काता. इटाओं निसात करते। क्क तो बता हो दे तं. प्रपना परा फोलासिक.

किस बाडी तेरा राज्य सारे बाराव सावे।

'शार्ड' ग्राप्त है क्शक्तित देशों का बाट का सं. बबको है त'र जेने हैं वेहीं के बाज नाते। \*\*\*\*\*\* निषासो या। यह सन्दर १३०३७ का क्रीर पिछले कल समय से ब्रावस को देख-रेख का रहा । यो इक्स विश्व इस मध्यत्र के मास्क्रिक

~ंद्रस परिवार के

का जिल्ह है जिल्हें काशह स्थापित है। शहकीकात के फल स्वस्त्य इस प्रचार की संस्था के स्वयंत्र और प्रक-ਕਿਵੀ ਦੇ ਜ਼ਾਵਕਾ ਜੋ ਸ਼ਵਿਚ ਜੋ क्षानेक तब्दों के उत्तर होते 🐗

(धार्नीहर से स्टूड)

सम्बादम है।

नोट--गो० सत्वदेश श्री स्था ए० प्रधान हिन्दो विशास त्रो० ए**०** गी० कालाह अध्यक्त का का क्यारी सव कर करदन्त लोजपर्ध सेला ७-६-६५ के संघ में भवाशिक को उसा है। ब्राह्मत रुक्तियान असे । वाशा है कि लेलां को क्रमण श्रवाधिक विकास जाएगा ।

श्रार्थ कन्या महाविद्यालय

कन्याकों का नया प्रकेश

वार्ख क्या सराविकासक. का नवीन शत सा॰ १६ अन से सामंत्र होता है। बन्याध्यें को प्रविद्व

कराते के लिये. ज्यानार्या चाल इन्द्रा संद्राविकाःसयः कारको क्याः वडीदा को सिलकर, वर्षश-पत्र मनदासर हा० १०ज । से परं सादा नेत्र वें । तत्रीय दन्ताओं का तान १६ से ३० जर तह प्रदेश किया अस्त्रवा ।

संस्था का बोक्स ने विकास सासार भाग्य है। यसः यसः स्रोः तथा 'स्ताविका' दोनों का सम्यास-कर रका गया है। प्रवेश शहर ६०/- ६० है। साविक फोस ४०/-E 0 # 1 (alive

> बागोदा परसाध वाषायं

सभीवा

### ऋषि संदेश down :--- भी 'सवरिम' सी

**रहरा** । इकाराक—बार्व समाज क्षाता । एवड संस्था—देरे प्रशब्द के नाम करना से हो **बाल होता है कि श्रम्पर्स पुनाह में** क्षि श्वासन्द भी के संदेश होंगे । पर वडमोक्ट 📰 प्रत्याम पर का वर्त है कि किस र विश्वों की क्रेक्ट रुप्टें प्रवेशा वा नोक्रा ब्बाह्म शास है। पर उस विकास के इब इन्हारी नहीं है कि समी मानों में काव विद्वति को क्षक्ष्म स्तानमा है। सभी कांबराकों के उत्तर मजम के बीतगर भाने राते अस्य को बीक्र देकर सर्वाध्यव क्या-स्थाप ने प्रस्तव की रहेगा के मध् सभा विष हैं। क्रिकी : के स

क्रमी मह क्रिसी सपनाथा गया है रिक्स बीक्रज्य का समा कर प्रसाद की कार्यक बारोबर गया है। बारा कार्थ समाजों के सन्दर्भों व केर्तनों के जिल व्यक्ति व्यक्तिमी है। खुक्ती नीचे किसी हुई बुझ पुरुक्तियर विभागने हे व्यक्तिस्य विभाग हैना स्त्री वार विभाग के कालों के समीरक्षशार्थ प्रतम सामग्री है। स्प्रतिम श्री का यह अवास परासनीय है।

व्यक्तिस्थान---चार्यसमाज दसहा (होशियारपुर)

#### श्वाल इन्हिया दयानन्द सारवेशन मिशन होशिया-यर का निर्वाचन

प्रमान-भी राजदास जी मुख्यूने क्स. पी., रुपप्रधान—भी ५. रक्षा-शास औ एस. ए.. एक. एक. ए. व भीषरी हरिराज भी पवत्रोकेट, मली--भी कावा शावीसास जी शाबोकेट. वयसम्ब्री—स्टाराम **बी.** व रं. ठाफ्ररशस्त्री वस्त्रोवेट ।

MOCHENIE FIRE THE STREET THE STREET THE STREET

अक्षय प्रादाशके प्रतिनि

श्वाबरएक संधना रवन्द्रा की कारी मेजी वा रही हैं

प्रार्थ शर्वेशक समा सै १.१.६५ की कंतरंप समा के प्रसाद करी प्रकिर्कित स्थाने प्रशास पर्धे de र के **अनुसार** समाके नर श्रविद्यारियों का कुबाब १४.६.६४ को छाई'राज हाका वैकक्ती तुन्त वार्तवर के विशास अवय में होना

र्सात १५.६.६४ को .ठीक एक वर्ते शेळार पशरने की क्या करें। क्षेत्रक प्रीत विकास का उपन्य वाई रास सुत्र में होना। प्रति-विकि सरीस बोट कर हैं। वित्रिषद हुवा है। सक्ष की ओर से भवदीय हंत्रोबराव यंशी समा

or other on mail o मद्यविद्यालय गुस्कुल हि॰ साम्बो-स्वामी प्रशंसन्य यळवर रोहतस**क** का निर्वाचन

कार्यसमाम संस्था सम्बद्ध धा वादिक निर्वाचन १० मई के अवे सम्मति से निश्च गणा वस्यान हुन्। :--

हो हर सब्दे असी—क रपानप हो व्याद्धशासार्थ उपस्थी---प बोध्यदाम की दोषाम्बय-बन्धाय क्यार जी बार्चे, पुरस्काच्यक्-कः होतेन जी ध्यादमकार्य । -१डाकर 'मनी' **धार्यसमा**व

प्रशास-यः प्रशासिक श्री

ाक्ष्मस म्हजर (रोहरू)

### महात्मा हंमराज साहित्य विभाग का

वड विक्ला

uo रतिंशत दमीशन पाप्त करें

इस स्वहरे बवसर हे

सभी रहत, कांत्रव, कार्य समावें भीर रन की संस्वार्य क्षाम प्रदासन संभा का द्वास बटाई

क्रमालाको समिन्द ।) प्रांतस्य । -) मध्यक्राम वी या स्थित प्रोपय वरित्र (साक्ष्य स्वारी भी नकुराय विक्रम सेवर से हवार र सरक (So दीवात चन्द्र की इत) क्षेत्रक १) प्रमृ दर्शन (कारूप सामी जी क्रिकेश) कीसद २॥) महर्षि रशेन (वि॰ क्रांशनकट जी क्षत) कीसत २) वैरिक वर्म ममे क्वों प्यारा है (विसीयत रामचन्द्र क्वा) कीमत (॥) वैदिन बसे की सक्छा (पं तियोधनानु जी शास्त्री विशित) कीमन १२) ह. सेंदरा, शायाच प्रकाश किन्हों बाच्य i, ii सन्तरकात (को शायापांत

भी रजाः एः हत्। बीमत प्रत्येष समुख्यास भी री। तांचे की पानकों पर 25/% क्सीशच--

सरवार्ष क्लाहा वर्ष ३॥) समा चा वकात्रज, दमानव दिव साईफ. पन्न वर्षे (पि॰ वर्षे आन की बायस पांचलर) सीवत था। जीवन ब्होति कीर तीवा दिन्दर्शन कीमत काश: (!= ), ii) वाने (वि॰ दीवामचन्द्र वी का, शाम्बाय संपद्व (वि० दीवान चन्द्र की द्वत) कीमद (१) व्यक्ते । नोट--डाफ साथ माइकों को देना डोगंत

भारिकस्थात--- महारक्षा, इंस्ट्राज साहित्य विमास APP. संधा जानन्बर शहर

शक्टेशिक पार्व प्रतिनिमि सभा देवजी वंतिरेशिक क्या के वर्षिक

प्राविदेशात है। सम्बर्ध पर पने साहि श्विधिविचों की बाहर स्टेशन पर क्राज्य कारिये । प्रशासे की क्षीरिय की स्थापना आवे मनाय प्राचित सोहण में की वर्ष कि रदेशर पर सब सेंबर विसेविश धार्थ तवाव बांद्रमा पा टेक्सपेल

de maren () सोसवण विद्यालं 🗯 अंधे मान्य समिति

टंकारा ट्रस्ट को भी के प्रश बोध्याज जो की लेवाप

रेक्ट्रों के भी केवार वीकरात वी ने टंबारा के काम के बिक् south लेकार सा<del>जार</del> सप हैं त्रराम की हैं विसका हर्तिक स्थायत किया गया मीर मही

printers of major 电视电极电极电极电极电极电极电阻 स्य में दल्हींने दि॰ १-४-१४ से इसी जरहज की बतुमित से वह सा सन का कार्य भार सम्बाद विद्या । जान सेश के शैदादर्व क्षत्रपदी, क्षत्रिभस्य वानं सहायु बाद है और टेक्सा के २६ वरों-वद बानसभी की झारशकता में हो झारके बड़ी आने से परिपूर्व

> हो वर्ष । विशेषक with the Will शहर्षि त्याकर स्थारक हुन्ट टेकारा

खमस्य धनन

हे संस्कृत देन ! की होरे सताह-सद क्रीर सस्यायकारी स्वस्य हैं। त्रित त्वस्तों से हु जो सक्र अपन है यह तत्व स्वक्तों के साथ स हरते सब कप से अवस हो पनेर भी पापी बुद्धियों वा शंकरवाँ स्वकी

का से जुना काके कु कर हैं। मश-भाषा, बाल सम्बद्ध, की नम्भूति, वे ठीव देखियो करवाम् करने वाकी हैं। इसक्रिय, वे दीनों देशता बोलक्ष्य में निर्माप होगद

मुद्रक व प्रकारक की सन्त्रोपराज की सन्त्री कार्य प्राप्त है हो हो होता के स्वाप का सन्तर की है के स्वाप की सम् कार वारत वानावन महात्मा (क्षाम प्रत्म विवह क्ष्महरी बाक्यर रहत थे स्वाहित वानाव-माने प्रतिहत वीर्वार्थ क्षम क्याना मान-म



हैशोषीन न० ३८% (ঝার্থমার্থিক সাঁশনি। ২৮%। ऐजार्च जालन्धर । सार्थाहिक गुल्लपन्न) । ৮৯৫ %, ৪ ছে। তহু এপ বা মুন্দ १६ নই ইন

वर्ष २४ अंक २२) २१ ज्वेष्ठ २०२१ गीववार\_हवातव्हात्त १४०- छ तुन १९०५ (तार 'प्रादेशिक' जालस्थर

#### श्रायुनिक निमोता 🖟 💳 भारत के संबंधिय श्यान 🐍 मान

भारत के सर्वेश्विय श्रवात मारत के सर्वेश्वय श्रवात सभी थी परित्र जवाहर-साल जी नेहरू के दिल क्वियारक देहावशान पर क्वियत से बढ़े २ नेताओं ने अपनो २ श्रद्धात्रनिया मेट की है--

लाई एउली

श्री नेहरू बट्वा मे पुरू श्री । प्रतिदम बरकार वे गृहैं वर्षी जैस में रखा । गृहैं वर्षी जैस में रखा । गृहैं वर्षी जैस में रखा । गृहैं वर्षा जैसे कि उन्होंने ग्रामा के बीच मंत्री स्था-हुंबा के बीच मंत्री स्था-हुंबा कि बीच । में उन्हों में स्थान के बाच मंत्री मेरे मेर्ग बहुमूल्य थी । भार बहुमूल्य थी । श्री स्वापित जी कैरों

ं हमारी जिन्देशों की रोषनी बती गई। उनके रिक्त स्थान की पूर्ति कभी महीं हो सकती। मानव जाति का महान उन्नायक

### परिचन जवाहर लाल नेहरू

सन्दर्भति का गण्ड के नाम गोक मन्द्रेय

यवान मन्त्री भीव परिचार प्रश्नेष्ठ स्थापन नेहरू के उत्पर्धन पूर्ण पर विद्वारक्षात कर राष्ट्रपति हा, राजाहरणात की ने उत्पुत्त से नार्त्र पूर्व करोहर वेरे हुए शहर है— हुक्सीर नेहरू के इस्तिहस में एक कुत का बल्पमा ने स्टान्स

कार्य मान होता मानव मानि सं पत्र मानव राजार , त्यान्य के विशेष सामि विद्या मेरे प्राण्डिक कर से वित्या मेरे प्राण्डिक कर से वित्या मेरे प्राण्डिक कर से वित्या मेरे प्राण्डिक कर से दिवा मेरे प्राण्डिक कर मेरे प्राण्डिक कर मेरे प्राण्डिक कर मानविक कर मानविक मानव

श्री तेहरू वो के निषम में देन का आबार, वृद्ध, युवा नभी बोकातुर है, प्रमु उन्हें सद्बति जवान करे तथा उनके सबीधयों को भैमें वें । वरमारामा उन्हें सदैव मारतवर्ष में जन्म हे । महाराना एत्तिजेवेथ धा नेहरू के निधन के नगर्याः को. जिस पर समुचा राष्ट्रमण्डल और

नम्बा राष्ट्रमण्यक और महावा राष्ट्रमण्यक और मानि थिय विश्व सोक मनावेगा मृत कर मुक्ते बेहद दुक्त हुआ में अपना, अपने पनि और परिवार को ओर में श्रीय की और मारन की जनता को अस अपने जीने सालों द्वति पर गरनों और नम्बो महानु-भी रीप करनी है।

कार्ड मार्ड ट्वेटन में हिंदा के उनिहास में इस समानाम प्राविधी में में के। यह स्थापन उत्तर दे। वर्ष की द्वारा क्यों तेन में रंग जाने पर मो मां कड़ा प्रविधा नहीं की। मारत के राष्ट्रीय स्थान में से हा प्रविधा नहीं प्रवाद में मारत के स्वाद में प्रवाद में मारत के कार्य के प्रवाद में के साथ के

#### हा । जबाहर ।

शहानवार, बसवार, देवगुर्छो के पासक शान्तिहर, अदिस्त राजनीति के संवक्तक जेबनमर धारव सेवा का ही निवस निभावा. राष्ट्रवित सञ्जा कायने कीन नहीं दुःस पाया । धीर, बीर, गण्योर व्यति, देश महिमानान थे।

परमपुष्य सन्माननीय भी तवाहरजाल थे। हे बारत के रचक ! सुकर्म समें के हासी, मारत मां के बरद पूत्र विश्व में नामी, सक्ट में मां की क्रोहकर तुम स्थलं सियारे, कीन नाव को लेखकता है विना तुम्हारे ।

किरबोपदन में कीर्ति की फैली गंध सलाम है। होद्दास्त्र सार्व का कुन्हें बद्धापुरत प्रयाम है। —श्री शित्रसेन आर्थ, एमं० ए० (उ०)

समात की स्थापना करना चाहते बे. वो बोक्तन्बलसङ भी हो सीर सम्बद्ध भी। इसी रहिशोश से कन्होंने क्रांबच राशका चीर सामाधिक न्याद का अनुरोध किया !

भी नेहरू ने देश की प्रतिस्था के लिए कनवढ़ डार्थ क्लिय और क्षक्ते साविकों से स्ट्रैंब एक रहना

क्याकर्पात हा॰ वास्त्रिसीय के बार ta na लेस दिनी में शावड ही कोई कांच हो जिसने कांस न बहाद हो तथा शावद ही बोर्ड हरन हो विसने इस सहान द्वाल को

अपनी निजी कृति के रूप में अनु-सदान किया हो । भी नेहरू को এইবিদ মঠোনাত তনত মাৰ্চী को सब्दे इस्य से जिला स्टाडी दी बासक्ती है। शरकार सरकाती ने यहा कि

क्षेत्रेक्ट के बाद पर नथीं क कमार्क फिल्म की तरह उनधी शांकी वे सावते था रहा है। राजनीतिक सहसेहों के बाध्यय स्वधी मीनेहरू के मान आविकाल जैसी क्रम्पण उसी। कंडा की अधान मन्त्री भी

मानो तरहारतायके से कहा कि क्टों तेहरू हीन भारत में बा बड़ क्रद्रमत क्रमध्य तका है। alex के लोग इस महान शोफ की धर्मा

लायान के बिनेश मन्त्री भी साहिता ते काशा वकट को कि भारतकासी वे तेहरू के झाश्शी तथा जीतियों पर चलते रहेंगे : बुगोस्टाबिया के प्रधानकश्री

बी बीटर स्टैबोबिक ने कहा कि वयनिवेशवाद के विरुद्ध क्रयमे सप्तर्व के सिए पं० नेहरू संसार की सदा बाद रहेंगे। सारीस टीटी

पं नेहरू की व्यक्तिगत में भी भी एका कर करते हैं। प्रमरीकी विवेशमन्त्री की डीन

स्मा ने कहा संसार भर के लोग यह मक्सते हैं कि शांति के लिए. सारकीय सन्मान तका भारतमान के लिए संपर्ध करने वासा वह मानव उद्ध सवा है। भी नेहरू संसार के क्रम से बरे प्रधानक के जिस्सा के सोर्थियत संग के प्रथम वर्ष प्रधान सन्त्री थी कोसीजिन ने पड़ा

कि वयनिवेशवाय् के विरुद्ध विश्नकश संबर्ध करते के बारल की मेहरू सोवियत कतना को बहत पिया है। इनोंने संकार की अनेक सक्रमणे को शांविपर्वक सनगाने में करश्र हिमा दिखाई।

कांमें स-प्रमान भी कामशाज ने क्या कि भी नेहरू ने देशकाबियों को सहनशीयता सिसाई। उन्हें पारत्यविक मतभेदों को मुखाकर शांति, प्रवृति सभा राष्ट्रीय एकता के वस वर क्षत्रसर होता पाडिए।



# शांति, मुक्ति तथा मैत्री के लिए सबसे बड़ा संघर्षकर्त्ता उठ गया

(दिल्लीकी गोकसभा में विदेशी तथा देशी नैताओकी ऋडाजितना) नेहरू हा निधन भारत की ही नहीं, विश्व की चित क्षत्र राज बड़ां रामसीला मार्फड़ 🏿 जिनेगत नेता के स्वयनों को

में इई वड रिशास शोक सभा से , सन्ताई में बदल हैं। संसद कर के मनेक प्रमुख राद-बी तन्दाने कहा कि अविक मीलिको तथा नेताकों ने लगीय। इडन इ.स से अरपर है, बोधना **ब**श्च पठित है । होस्ति ऐसे समय

प्रमानसन्त्री भी नेहरू को उदय-रपर्धी शब्दी में अद्वाकतियां करित au is इम स्वयंत्र सर्वीय नेता की। उपस्थिति वो सामा से व्यक्तिक ர் ம் கே प्रधानसन्त्री श्री गलनारीनाण

रान्दा ने बहा कि भारत स्वदेश और विदेश में स्व॰ प्रवासम्त्री की मीविथों **सा ब**नुसरक नारी रखेगा। भी नन्दाने होगों से व्यपील

की कि वे मुला, अमनदता और बीमारी से भारत को एक लगाल-शदी स्रोदनन्त्र में वरिवर्तित करते

को बढांजांज स्थित करते के सिद पर्धातन हर हैं, हम यह राज्य से कि हम उस कार्य की खाने बटाईनी विस के लिए बड़ और क्योर अस्टेंडे दावं किया । ल्डोंने पढ़ा कि भी नेडफ का

हरव भागान्य व्यक्ति के किए सद्दानभित से पर्यावा। वड ऋपने जीवनकाश में भारत में एक वेसे

में भारतवासियों के साथ है।

तम्यादकीय-

# त्र्यार्य जगत

वर्ष २४] रविवार २०२१, ७ जुन १९६४ विंक २३

# ज्योति चली गई मारश के ब्रवान मन्त्री भी से वहें र सरकारी नेता इस सोक

**परिश्वत** जवाहर साल जी नेहरू ब्यान के सारे जिल्ल के राष्ट्रों के जिल कद बद्धान्य स्त्रोति भी ता. २७ ं अर्थ अधवार दोपहर के दा वर्ते अभ्यार्ड । स्वयं यहं दुःसन् समाचार सबते को सिका हो पहले किसी हो ्र और विकास नहीं होता या अभी य सीम विन देहराहन में विभास का के भी परिदर्श की वापस देहती क्रौटे से । पर्कक्रय से स्थल्य प्रसन्त करन तथा डीक थे। संयक्ष कार शातको यथा पूर्वभोजन किया। काराम की नीन्द भी की। प्राय काल ६ बज कर २० विनट पर **री**ठ मे पीडा हुई । डाक्टर आवे : देख्या । विश्व पित बेहरेश होरे राजे । क्षास्टरों ने साप को होश में बाने क्या रक्त बाव डीक इसने के लिए . बबा ही स्यरन किया । शास्त्राय दी ा **ध**र्छ । किन्तु उसी अचेत क्षत्राच्या जे .. ही विरय की सम से मही कर salfe 'नाम गई । सारा विदय इस करवन्त विसर्वदारक समाभार को सुन कर . <del>पुट</del> २ वर रो पक्षा शोक की सबर · पै के दूव भवा । इतका आरी पवका **स्त्र**मा जिल्लो सङ्ग करना व्यक्तिन है। समस्त राष्ट्री के लेखा हो उन्हें मारव की तथा राजधावी देहती **की-दशा का तो क्या कड़ना ? श**ारे बनर की एक २ दीवार स्वीत कछ-. इच्चामी रो शहावा। सारे राष्ट्र के माजार बन्द हो। गये । खानों तोन . श्रेमको स्वारे नेका के काश्विम दशेन कामें स्वेशक गाहियों तथा सन्य खाममों झारा बेहसी पहुँ में भिदेशों | की गम्बीर व्यक्ति सें, सब की सहवी

में शामिस होने वाये। श्रीन सा वेका का जो कर ३ **स** नहीं शेका। जार इसार में पत्नी भी परिवाद की की इक्जीदी लगानी श्रीयती इतिहरा शांधी एवं वनके होजों कारे बेटे विश्वीय शबीय व संजीव जिल्ला रोमे उसका को किसी से भी बर्गान नहीं हो संदश। लाको होग मान्य श्यान मन्त्री वी ६१ झार्निकम दशीन बरने रागे । साथा

देश ही उसद भागा था।

ता • २६ वर्त बीरकार को उनकी शब बात्रा में कितनी भीड़ थी, कितने सन पुष्प तथा मझाई उनके शव पर शक्षा से क्रविंत की गर्ती। यह बात हो वर्शन से परे हैं। बार अशा है कि बीम सार्वना नारी उस दिन होनें। फ्रोर मार्थी विष्ठा पर कावम रहका है। पर कवे होकर बापने सर्वीपन द्रशान सन्त्री को स्वरती हार्दिक अञ्चलका भेंट काते इक्टेडी रुपे थे। पश्चित बबाहर लाल वी तेद्रक भारतीयों तथा इसरे देशों की जनता के सनंदर्भर चारना पर अवस अपने थे। इस का एक्स टकेंट शम दिन श्रांसों से कर दिया। इस समय भारत की भारकी किन्हों बावरयशता थी, स्तिती समस्यादं सामने थी—पर सब को रोता

विसम्रता स्रोकका समती महा-

प्रस्थान की वाजा पर चले वर्ते।

बसी न ट्टने वाली जोद में हो

गवे । राजधाट पर दस मन बन्दन

की तकदियों तथा ३४ छेर छह

पब्लिय पत के द्वारा केंद्र सन्ती औ

# कर्मयोगी पंडित नेहरू

#### MARKER KAKAMAKAK

बोग को बकार का है स्था उस पैदा हुए। इस्सीता जिनका सहका वोग कार्य पर चक्रमे थाले बोगी मी ब्रानेक प्रकार के हैं । श्राण योग ब ब्रात तीत के यब पर चलते बाज़े भक्ति दोगी, ज्ञान दोगी होते हैं। कर्मबोग के मानी बर्मबोगी कासने हैं। योग प्राप्ते २ स्थान पर सारे डीक हैं परशु कर्स थोग कास्थान बहुत अंका माना गका है। रुमेदोग की शास्त्रों में विशेषता बिसी गई है। स्मार में रह कर बीकन में शोकसेवा, रक्षमण्डि का विश्व में शांति के लिए समासर काम करते रहना कर्मधोनी का

मन से बढ़ा दलेख है। इसंदोशी पदेत की कल्दरा से नहीं जा वेंडता, सर्वया (बरक वही होता. रुंसार की सेवा से उदासीन होकर एकांड से बास्टर काराम नही ब्सता, केवल ब्यपनी मास्त्र के तिय ही साधमा वड़ी बरका। बसेवोसी तो आहे विदय की सेवा से सहा समारहता हा स्तेम काहे हुए बहते रहें पत्स करेंग्रोगी **क**पत्री

हसारा व्यारा पंत्रत अवाहर-ज्ञाल नेहरू भी कर्मकोगी वे जीवन में एक कर्मयोगका प्रश्न ही क्रय-नाया। कारम्भ से डी जीवन देशभांक से भेंट सर दिया। पर पर किस बात की कसी की । पश्चित मोधेकाल वी जेला सारे देश में प्रसिद्ध नेता जिन के पिता हो। वीदी का चमका मुख में लिये कांसां व सामने इस विस्य क महान नेवा था वृद्ध मिता में २स कर क्रांप्त के सुपूर्व कर दिवा गया। बीवन की प्रदीप स्त्रोति श्री जो क्रमी किरवों से हरोगें के अकारा देकर नखी गई । सरीर हो चला गया पर परिवत नेश्रम समार हो गया-- Light is out । —ছিন্নাছ বৃদ্ধ

(शेष प्रष्ठ ३ पर)

है। ब्रामञ्ज अवन जैवा ब्रानन शायक निकास हो । धन के मरकार अरे हों। इंगलैंट में हेरो तथा केलिका में जिनकी शिक्षा दीवा ल्देको ≓जनदो जीवन में क्या व्यवस्था । परम्श भारत की पराधीनता की प्राथमध्या को देखकर स्वरास्य के काशोलकों कर पट । सवानी दे दी। विकासी बार जेओं में गय. यातनाएं कसीं, जीवन में क्छ **53 वे । सारे देश के सक्तीयया नेता** बन गण। अध्यक्षी कारे राष्ट्री में जवाहरकालर्ज को नीति वीरः वा धवा महत्ता का प्रमान केंद्र गया । शास्त्र को नेक सिल रुवा ।

जब से मारव के शासन का कास सम्बासा । राज दित उसको सेवा में वट गए। बारारह-बारारह धरटे एपतर में बैठबर काम करते से 1. आरत क क्षांत २ से कोई मी समारोह होता सहा पहचते । विदेश में क्या नहीं किवनी कर यात्रा पर, सम्मेक्ष्मों में तते । कार्योग की संशीत विकास ते । कार्यकी कवित्रकाण क्यों २ वनकी काम बहारी गई. शरीर पर बोन्द्र बहुआ नवा वह बार रूपा भी हो गए। पर देश सेवा के कास में निरम्धा समे रहे । सम ने वर्ड बार अपने पूज्य नेता से आराम विशास करने की प्रायंत्रा की जिल्हा ही परिश्व की नहीं मानतं वे । दे देश सेवा के त्रथ से नहीं हटे। वर्षेत्र की बन्दरा में बैठ जाना हतके स्वय्न में भी नहीं कारा था। हमारा यह नेवा रोग में भी दर्भ-बोग को ही जपता समें मानते ये। कसेबोग ही जीवन का सब द्वार था। श्रीमारी ने व्यावस्था फिना। क्राक्टरों ने पर्या विधास करने की कड़ा । पर कोदे दिनों के बाद डी

### शोक प्रस्ताव दयानन्द मोडल स्कूल वासस्वर

केस्टाफन झात्र लात्राकों ने शोष सभा झरा की एं० जनाइर-**सा**ल जो प्रयान मंत्री भारत सरकार के निधन पर गहरा होक प्रस्ट क्तिया । स्कूल के मुख्याध्यापक जी मे **१० नेइस जी के गुर्जो पर प्रकाश** अपने 📺 सद्वा कि मारत देश की कारे कातान है जो सति पर'वी है वह असी पर्या नहीं हो सकते। बर्फास्तवंश प्रथ से कर २: सहर्य से प्रार्थना है कि लगे श्वित हवारे वेता की कारमा को सरगति प्रदान कों दिन से यह जिसाबित भारत देश को बापने मुखों पर पताला इच्छा तथा रूप्पति के सार्ग पर

## क्रमस होवा हुआ देलकर राजि : ऋर्यसमाज किला महल्ला जाद्रन्थर

बाज हो।

हे क्व दिवस एक शोफ मताब में नी पं॰ बवाहरतास भी बेहरू की भारतक मध्य पर समनेदना aucr बरते हरा बनकी कारता की सहगति व परिवार को पैये व्यक्त **अप्रदे की तथा मारतीय तथा को** इस दास्या दुःश्व सहन करने की

क्षा से करबद्ध वाचना की। क्ष्मारा देश, संसार का सहा **स्त्रितिहा, संभीर तथा शांति के प्रा**व-बार महान नेता को सर्वदा के लिए को बैदा है। इस साजक समय में क्रवने धे परम जिला श्रमु ही इस केरा के स्थापक हो यही बार र सक्तें वा है। #सी

श्रापंत्रमात क्या श्रार्थ प्रचारक मंदल प्रदे-शिक सभा जालन्बर

### प्रधान मंत्री श्री एं॰ नेहरू जी के निधन से देश तडप रहा है इसका प्रत्यन्न प्रमाण नीचे पदिए त्रार्चसमाज की संस्थाओं के कुछ शोक बस्ताब

डादिक शोक और देशमा प्रकट कि की पवित्र बारमा की सहस्रवि करता है मानगीय थे. जी धारत के किये वस से वर्गना करता है। के नहीं क्रांपत विश्व सर के क्रिय मानि कीर कारण के अन्ते क्षेत्रक ये उनकी द्वर्श पर कीन न रोवा द्वोगः सच्मुच वद्द त्यान स्त्री कोई करा नहीं कर सकता **ह**तें वनके परिवार से सदानुभूति है परम पिता परमध्या ध्या दिख्य शास्त्रां को सहयांत हैं और उनके पीक्के राष्ट्र के बर्गायारों में साध्य हैं शक्ति का

कार्यन कर शकें। राजपाल सन्त्री क्षत्रं क्यान्ड समा बार

## श्रार्थ समाज कालिज विभाग श्रीरांगात्त्राव

**ਬੀ ਬੇਦਰੇ ਲ**ਧ ਸ਼ੇ ਫੇਸ ਵਾਦਬ

बी पे. बबाहर बात की नेहरू प्रधान सन्त्री भारत की इस क्रकान मृत्यु पर धापार शोब प्रकट करता 8:

पश्म कित परमात्मा से बायेजा है कि लगीव की बारमा को सहगति से प्रथमा है कि वह कर की बारसा प्रदान करें, तथा मारत शक्तिओं को सहत शक्ति हेवें, एवं बारववासी दक्ता की चोर रुक्ति को बदावें। fades

इन्तरीबाद चेडी मंत्री 63 F sit rignam

# पंजाब चार्च कीर दल

सारव माला के प्यारे पुत्र रायनीति के बहान नेका, राष्ट्र भारत के स्थान मन्त्री दर्श नावक, संसार के मित्र की वें. जवाहर क्राधिवेदान में श्रवास अन्त्री भी पं-बनवा के प्यारे भी पं. जवाहरसास | बाख की नेहरू के बाबस्मान निवन | बनतरसास नेहरू के बाबायविक

36361636369696969696969696

व्यसपन्य शास्त्री मंद्राबह कार्य बीर इस वंशास पंजाब प्रांतीय श्रार्थ कमार

## परिषट किय के सहाज्ञान राजवीरिक्स.

मामक्षा के प्यारी भारत गौरव गी वं, अवाहर सामग्री की दुःसद सुख पर द्वादिक शोक प्रचट करती है तथा वस्य विवा वस्यास्मा से प्राचेना करती है कि वह सतय परिवार तबा शोखतर राष्ट्र की शोति अदान

> वैकासन सम्बद्धी श्रार्य समाज सन्ना

# ं. जबबारतासको नेहरू प्रधान मन्त्री की ब्राचानक क्या ब्रासासिक

जवाहरतासधी नेहरू एथान मंत्रोदी सन्त पर प्रतीव शोक २६८ वरता है। इन की लाग से वो शानि भारत कौर दनिया को हुई है उसे पूरा इरना झरवन बहिन है। परबारमा को शांति त्रदान वर्षे क्षीर इसे दर्शक वें कि शक दत के पर विकर्ते का पश्च कर मारव और वाली की येवा बर सकें।

ह'शीराक प्रधान धार्क समाद सम्ना श्चार्य समाज सरमणसर

#### वक्तसर में धास ३१-१-५६ रविकार साथ समात्र सम्बद्धाः के सामाहित

वहरा श्रीब तकर करते हर समस्य देश तका कमने परिवार से बेके संस्वद से वंचित होने पर हासिक सहानुसूचि दरसाई गवी। बीट रदद्व रामाँ तथा मास्टर मेहरचन्द को ने जीवन की सहस्वपूर्ण घटनाओं का बर्शन करते 🗊 उनके प्रति चढांप्रक्षि मेंट की स्त्रीर शसाब हारा कांत्रेश हाई स्थावह वसा पारखीमैक्टरी बोर्ड के विशिक्त नेताकों की खेका के जर्मन की गर्थी कि इस सामुद्ध समय हैं: प्रदे-बन्दी प्राम्तवाद कीर स्वार्थ से प्रपर चत्रका देशकी बाराबीत सबे.. सम्बर्ति से किसी सर्थोत्तम-<del>शिक</del>्ष न्याय क्रीर स्याग की मूर्ति 🚃 वरि

सर्थ-तिय क्यीर क्यादर्श उपक्रित के ) शास के कीएँ जो अपने कर्मों के मारत और भारतीयता की शब बर सक्ता हो। कासा क्षड की शां कि राष्ट

पति भीवत राबाक्यसम् की जैसे बोग्यवम नेता की श्वशंचित में कह हरन बबर्व भी सुन्दरता से गीति वर्षेड संशम् संदेगा ।

—निवेदक स्टब्स शर्मा व्यास व्यार्थ समाज पुरानी मंडी

# शास्त्राहिक सरसत के बात दें

क्रज पर शोक सथा हाँ जिस में कविराम विष्णु गुप्त जनरस**ः** सैक्टी ने पंकित जी की ज बत पर क्री केहर की की दल सामाना भीर शर्मायतम करवर्गनयों का जो क्योंने भारत को स्वतंत्र कराने से वया स्वतंत्रता की रह रखने वया विश्व सर में भारत के मान की अंचा करते में को इन्द्र उन्होंते किया क्स का साथ मात्र जिल्ला करते हवे व्यवनी श्रद्धांश्रस्ति सेट की बीर शोड असाव रसाओ सर्व सम्पति से सब से हो किएक गीन शबना कर के स्वीकार किया मीर ईश्वर से वन को भारता की सद्यवि के किये शर्थना की गई।

चक्तोत कीर दश तथा सद्द्रमुक्ट की बार्रे राष्ट्रपति हा.. राश फुप्यन भीमधे इन्हा गांधी वया भी गुसन्त्रारी 'सावा नन्ताः को सी सहैं।

मचरीर मी नेडरू की अधानक मृत्यु वर वर तहान् होक तकट करता है तथा और कालक डुन्कराई नियन वर किराज विषय गुरु प्रयाग अके

### प्यारे जवाहर !

(विक्रम लक्ष्मी आय वो. ए., इस्लाम नगर बदाव)

#### **未见见未未未未来** 张 张 张 张 张 张 张 张 张 张 张 张 张 张

भारत के सूनपूर्व-क्यान संत्री प. श्ववाहर साथ नेडक ने इस दिप वर्षे ही वहे थे. वे शब्द बार्स आ काश में कावनी व्यक्ति गंदा डी बोरे थे. असपार फ्लॉ से इनकी स्थाडी समा भी न पाई भी कि स्थार करास कर्मा ने निश्च ता सुपन राजनीतिक, शान्ति के वर्तिमान देवता, मारत के कमास नुद्ध का स्तेष्क पात्र, २वक हृत्य ससाट क्षप्रकार के नाम को देवम इतिहास की बदानी भी बना विवा।

अल्ब तो सबयो खपने बन्धन है बांधने है परन्तु उसे हम मौत नहीं का सकते जिसके देशाना शीने पर उसके रख और विरोधी भी श्रांस वडाने तर्ने । वे. अवाहरताल नेडर की नोति से विदेशों में द्वी नड व्यक्ति भारत में भी करनेकों विरोधी विकासार में, पश्न्व जैसे ही मनडस समाचार रुद्रीने सुना,ध्रवये द्वय पर क्क वस्टें की बाधास का क्रमाव विका अकरतम विशेषी भी दे भी की कृत्युको सुनद्द अपने व्यक्ति व रोकसके। रं. की ने एक कवि की इस र्जाश्य को चरिवार्थ कर ही दिया-

स्व इस काए अगत में, जग हासा हम रोषा देशी करनी कर चली, इस हासे क्यारीक ।

यथ का नायक

नेवल यी के कार्य-क्षेत्र में चंदरने ६ इस समय परचात ही देश के वाताबरका में परिवर्शन होना शरम्य हो गया था, स्वीरंड बेहरू एक साधारमा इस्ती नहीं बी। वे स्कृतिं, की साम्राण मृति तथा श्रायक्ता अववार के क्ट्रोटे ब्रामित में बह्य शीम की स्थापि कवित की

#### 'बारी में जवान है', वबन रहता और थोड़े हिनों के परवात ही विश्व में प्रसिद्ध हो गए । अपने-

# शरेक प्रस्ताव

जिला केर प्रचारिकी सम्ब होशियरपर देश और बानबजाती के सर्वोच्च तथा मर्वविय मेता मारव के श्रवम नार्यास्क एवं द्रथम श्रवान , मन्त्री भारत-रःन मी बदाहर स्क्रस मेहरू की श्ववस्थात गत्य का हार्विक शोफ, दल तथा संघेदका प्रकट करती है ।

दन के निधन से न केवल भारत व्यक्ति समयी मानव बाडी को देशा थण्या समा है सिस ने सारे संसार को दिला दिया है की। क्रिये संसार धर के लांबी और सक्दारों से विजेपतयः सारव दे प्रसीद तर सभी बाल यह से धावती निर्मी प्रति माना है। भारत हो

रेका उपतकत रत्न भीर जगहर संकार में प्रस्तुत करने का बबा वर्षे भीत मान दे।' महारका गांधी के बाद देवब दोड़ी एक मात्र समन्त मारत वासिनों के हत्य सक्षाट थे। श्राव संसार दन के बिना सना हो गया। वह संसार के इतिहास में भपना धर्मिट त्यान 🎟 गद 🕏 भीर भारत में तो जिस्सदेश पन का

शब और व्यान सदा के जिए क्षयर हो गया है। बह समा ग्रार्थका बरके है 🗎

क्षे ग्रांकमान पम उस की पतित चात्मा को संस्थाति स्वाम को चीर रस सब देश सामियों विशेषातः **९न की** सपूत्री श्रीमती इन्द्रा गांधी क्या परिवार से सभी अवस्ते को इस रासंध दस के सहत करने की रास्ति हैं।

ब्हाराम संबी **डोशियार** पर

# देश भर में श्री नेहरू की स्मृति में शोक सभाएं

ने बस यहां बाबोजित एक शोक-क्ष्रों से वस में बहुत बहुत

परिवर्तन वर्णाव्यत विश्वा क्रीरे स्ग सायक कडाआई। प्रतिभाषानी सेतक

भी नेहरू में बढ़ां इत्य गुव (बहासन वे बहां यह सबसे बडी विशेषशाची कि वे एक प्रतिभाशासी तेसक भी है । सन्दर्श राह की बाठबोर काथ में होते हर भी क्रमेकों, चिनारं, विश्वशांत मे प्रवरन शीस होते हुए अपनी सेवा

की बर्टट के बारक कर जनकिय नेता ने ध्योकों प्रस्त सिसे प्रिस्में बिहर 'प्रतिवास की सम्रक, दिशा के पत्र पद्मे के बास, दिसद्वरी काप-इथ्विक चादि प्रमुख वे ।

सकल राजनीतिश

समभग सम्बद्ध वर्षी वर्क भारत जैसे विशास राष्ट्र के प्रधान सन्त्री उद्यहर क्रांपने क्रपने को एक सफत राजनीतंत्र सिंह कर दिया । THE STATE OF THE BUTT क्रकान देशों में अनेस्ट्ये, वनसी नीनिकों में परिवर्शन भी हुए उन देशों वेद्यारार्थन्त भी डई पर ग्यमारत इन स बारायों से कहता ही रहा जो इस तान का इसका इकारत है कि दें. लेहक की नीर्व सफल रही।

> टप-संद्रार र. बकाहर साझ नेहरू में

क्का गयों के क्षांतरिक क्या man't independ all femps धी । बढके तब कीर स्थाम, सेवावी इदि. दिस्त भेग, देश मॉस्ट क्रीर काये करने की झट्ट सना क्षी सीन प्रशंसा न करेगा । ऐसे जेत के हसारे सभ्य में से टट बाबा सारत का दुर्साग्य ही है। वांद यह बहा अब हो इतर्शनत न होती पेसे समय में क्वांट देश मण्डर

वरिनिविवारें में से शकर रहा है. संबेटचा वच्ट की गई। र्व, जो के स्वर्गवास से यह झशाब हो सवां।

यन्बई के प्रमुख मुस्लिम नेशकों । सभा में श्वासमर्था भी तेहता की मारवीय लोगों विशेषतथा भ्रास्प-संस्वकों के प्रति उनकी क्षेत्राओं को शादिक भटांकवि भेंट की।

> बैठक में पास किय समापक प्रस्ताव में कहा यवा/कि भी नेहरू के निधन से समस्त देश, विशेषतम मारत को काश्यन्त दास हमा है। कायकी पर्मनिरपेसवादिसा और बदारता के लिए करपर एकको को वक सर्वे व सक्तरकीय रहेंगे ।

श्रेस श्रम काफ डॉरस्या ने क्ताभी नेहरू की सूत्युपर एक होक सराव पास किया।

प्रसाव में श्री नेहरू को एक चच्च पत्रकार के रूप में एरिआविश किया गया और वहा शया कि वह व्यवने देश के पत्रकारों के दिशों में निजी दिस्त्यमी शाले से ।

मीनगर में इस चीत्री दिल भी भी नेहर के नियम पर शाब प्रकट करने के दिए जनसभार हुई । र्वरची में कार्श एक शोक

सन्देश में सांस्कृतिक सम्बन्धी के के लिए सारकीर पांत्रक के कम्बद्ध श्री एमः सी० झावका से कहा कि यह भी सेक्टरी डी बेरला थी कि परिपद कारितान में काई।

बोक्समा सचिवालय में कह एक अस्ताय से बढ़ा कि भी अकारर-काश नेहरू देश के व्यवश्री से झीर हार चेत्र में शेरगा-स्रोध से। स्कारकाता के बाद कारवरन क्षेत्रे समय में ६:सरीय संस्थाओं के इस विकास का क्षेत्र उन्हीं की মাজ है।

ब्रम्बाव में वधानमन्त्री क्रीर परिवार के बारत सकते से भी

#### <del>ፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙ</del>

#### दयानन्दे-वेचन। १११

प्रकार सर्वत्रावितसान क्वीर संबद्ध्यापक है। स्रोतर-काहर त्याप्त होते से, वेदावदेश के लिए उसे मुलाहि अववर्श का (क्रम भी यह भी क्रावादश्या नहीं । सब्दोप बारक की किया नो भ्रापने में प्रयह स्वक्ति के लिए की जाता है। अपने मोलर ने अवर्ति से किया के विद्या है। धानेक विचार और हक्दी-न वारण होते बहने हैं। कानी की दंगलियों से बन्द करके सबी बीर महारो कि प्रसादि बारवर्षों की चेता के विका ही कीने इटर ट्रेटरहे हैं। अबे ने शहर बाहर को बैस्सार के बिना होते है. जन हा इत्यवीसान्या में अवशेष्ट्य में आहें। की साईश

#### DeNT Z I pands season an

#### ान्ति क प्रशेदन श्री नेहरू प्रार्थन में हा समा दा: पिना का निर्मित सक्षों महस्र कानह जी का सर्वावाम ' सबब भी देश भीर जानि के निश्चित

. ३७ मई सा देश भारत स्थीत संसार श्रदेश सर दिया। श्रापादी सिन्तरे 8 लिए मनहम भिद्र तथा कि उस पर चाप स्ततेत्र मास्त के त्रथम शतः क्षयान्य भी नेहरू पर स्थरन । प्रधान सन्ने बने कीर सरते इस तह का ब्राक्समा द्रभा त्री उन की इस पद दो समात रहे। चन हैं. रुव दा कारण दशः । क्षीत के प्रति के अवह गढ़। इस

तो बजे बाट दोप्टर प्रसंह । क्रमन और शानि के देवता की । जेक्कार गणा । यह बन कर चालीस ं प्रभी कराने दनियां 🗎 नार्ग चावदशक्ता थो पना न**ही** कि उन मेंट पर रेडियो में उन की चिता की मृत्यु से भारत देश और संसार ' स्त॰ बीमारी की स्वशा दी गई। भी गति विधियों के संबंध में डेश्वर , प्रीर बंद सिंह बाद हो उन की नो क्या मीकार या । म्दर्गे स्थित इस रून की सबर विज्ञाली को नेज

वि के समान सार समार में . की कारमर तीज राँछ में भारत की <del>: कै कै कै के कै के कै के कै के कै कै कै कै कै कै कै कै कै क</del> EN RES खबतना को देख रही है प्रधान के कार कियानी साम जी नेहल ! वर्तमान कर्य धारों वा वरम क्लेक्य

इसिर सक्टिक्स दाउ बाट में वल : हो जाता है कि वे बेहरू झरा विसाई और देश अधिकाशीला के युद्ध हुई श्वलंक्श की लिवर स्वाले हुए ह बाद पूर्व है जीर एक निभय नेता ' सारत देश की कराबरा बनाव शक् हि साह अधियों में उनकर होते । यस देशकर नेहम ती की धारमा की

है। जुनावस्था में ही उन की शांति प्राप्त हो भके। प्रतिबंदेश वासी १८,४,६५ की कंत्ररंग सभा के अध्यव श्मीयस्त्री कमला नेहरू की ने मी। उनकी सद्गति के जिर शबु से प्रति- सं » के कनुसार सभा के वर रत का भाध होड़ दिया। साप | तुश्युम कासनाए करते तथा उनके | स्विकारियों का बुनाव १४.६.६४ प्रस्थ के बन्धनों संस्थांत्र हो गया। हानी परिवार से क्याच नहात- को मार्डवास हायर सेक्नकरी करता शीर आपने सार्था शक्ति स्वतवता ; भूति स्वते हैं।

### \*\*\*\*\* ज्योति बुक्त गई एक फ्रन कर गया

('की विवय' निर्माप, मीप्रश्नटौन जानत्मर)

वह क्वोति वह कि जिससे अवस्था रहा **या** छ/ विषय गरी थी पांडनी सभी-शती असर-असर एक ब्योनि वह कि जिसमें प्रेरशा भी प्राप्त की एक जोति वह कि जिसमें गर्वथा जनान को यक व्योति वह कि जिसकी श्रद यही मिसाम बी विसकी पूरव गोद मैं वस-मारा विद्वाल थी

> लुटी-लुटी-मी है निस्त, मीन हैं वहुँ मोर शुन्य में पृटव-सी है, व्यापकार साथ क्रीर एक ब्दोर्त युक्त गई, एक पृक्त सह गवा

एक पूज वह कि जिसमें प्यार का मूलक आ क्रांत से क्रांत्र की कर्तन प्रेरा साथ सा एक दुन वह कि जिसकी रश्यका अनन की पोधरी बन्तर: 2022.02 यांगर्व की बाद का, बात की बहार था एक प्रज्ञ वर्ड कि जिसमें स्वा समाम विसार आ

शोव है नसी गलो, रो उठने कलां-कश्री कात वस्यू वसाहर सुमन सिहर गया यक ब्यंति जुक गई, यक फून सह गया पद सार वह कि जिसके शीत प्राक्षकात के म्बस्य, सारवास थे, उत्राठिसय, अबास थे एक साला केई कि जिसके राग में था अध्यक्त

देरही भी चैतना हिन्दगी को जब चरम एक नाज वट कि जिसपे कारमी को नाज धा बादसी के दिलकी पटक्यों का जिसमें राज था दब्दवः रहेन्यन, सिस नहीं रहे मसन कंट चान रह है. सात वह विकास स्था **एक स्थोरि बुक्त गई, एक फुल म्हर शवा** 

# आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि समा

सभी प्रविविधि अपने प्रशास प्रश्ने सहित १४.६.६४ को .ठीक एक यसे रोपहर पंचारने की अवा करें भोजन चीर निवास का प्रबन्ध साई दास श्रुल में होगा। पवि-अधिक के विशास अवन में होना निवि वारीस नोट धर हैं। निविश्वत तथा है। सभा की भीर से भवदीय

सतोषराज मंत्री समा

ग्रार्थ जगत में विज्ञापन देवर लाभ उठाएँ स्वी सर्थान्य वार्य स्वारो से

त्त्रक व प्रकाशक की सन्तीपरास की सन्ती कार्य प्रदेशिक प्रतिनिध सभा प्रेमाय जानन्यर द्वारा भीर विस्ताप में स, मिलाप रीट अक्ष्मयर से सहित तथा भारतिक कार्यास्य महातमा हंकराज भवन निवद कनहरी जाकरूम शहर से प्रकाशित मातिक-कार्य प्रादेशिक प्रतिनिधि समा पंजाब आध-मर



[बार्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसमा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] रेबीफोन नः ६०३५ Regd. No P. 121 **१%** प्रति का सुरुष १२ करे वैसे वापिक मुख्य ६ इएवं

वर्ष २४ वंद २४)

१ श्रापार २०२१ रविदार\_देवानन्यान्त १४०- १४ जन १९६४

बद्द झारमा झमूत है, यमर मेर क्रविनाशी है : पोच कथों पूथियो, जल, ग्रानिन, बान् ग्रीर बाक्षण का एक्स कड शरार जो बसा बाएमा पर ऋतमा का अब बडा क्षमर बना रहेगा। वसे सीत क्यी नहीं साथी। द्यमुशस्य है।

भस्यान्तं शरीरम हे मानव । यह तेरा शरीर

बस्म हो जाने बासा है। इसकः श्रम्त सस्य हो जाना है। यहा मही शहेगा । यह को वाका करने को गाडी मिली है. स्थ मिला है। किन्तु सदा नहीं साथ देगा। **२६ (दम टट आ**श्या । सन्दर शरीर की बस्की ही दन आयमी। राख की नहीं हो जावनी ।

#### चो३ म कतोस्पर इसक्तिर मनुष्य ! सदा उस

रक्षक जारे कोश्य का स्वरश का । क्यों का काश्वर है. उसे प्रपन्ना परम सभा बना अत्येक क्षार्थ है असे बाद रखा वन बीवन, पन परिजन, झान शान के,श्रवियान में भावर मगवान को, वश् भूकता । कोश्म् को नार य अ वें द



खार ने फरती बनीक में बिका कि सेरी सम्बद्ध को लेटों में किर। देश वर्षि प्रावसिष की गाँव में चाल्यसान हो अध \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

### महाउ ६र्मयोगी स्वर्गीय नहरू जो

(तार 'प्रादेशिक' जानन्धर महान श्रात्मा थे **भारत के राष्ट्राति द्वा**०

रत्याकृत्यान की ने स्वर्गीय प्रधान

यन्त्री पश्चित नेहरू जी हे महान व्यक्तिस के बारे से रोस्ते 🏢 ब्हा-स्वर्गीय प्रधान मन्त्री एक महान काला थे। यह न केबळ

स्माने देश के बहुत बड़े सच्चि-हाना ये स्थापन इसके कड़े २ निमांताओं में से भी एक थे। र्णाइन लेहरू के कारे में सात से वहीं कात सह सही जा सकती है कि वह अपने देशकासियों के वियों में बसने थे। प्रतिका ओ ने जोगों के जोवन को सरधान व्यावे का पूरा प्रवस्त्र व्हिया। हम को क्यायन के क**ि**त्य BERR ER mir at var neb Efe otest at a fem ir देशकास्तिको के दिवा दिवसा है व मरा था। हमें उनके श्रीवन से शिक्षा केनी होगी। उस की बढ़ानवा इस सत से पर्छ कासी दें 🏻 उनहां श्रीवत प्राप्ते लिए नहीं कार्यतु क्रयमे पहोसियो भीर देशवासियों के सिए था। उम्होंने चपने देशवासियों हो न केवल रामनीविक स्ववन्त्रता रिसाई श्रीवत उत्तर सिंद सामा-क्रिक तथा क्राविक न्याव भी

and Leas—

# पार्थिव शरीर की भस्मी खेताँ में बिख मुने भारत की संस्कृति एवं विरासत पर गर्व

### स्वर्गीय परिद्रत नेहरूजी की मर्मस्पर्शीवसीयत

सारे विश्व कि ग्डारे | नेका सारत के स्वर्गीय प्रधान सन्त्री जी क्षेत्रिका अभारत जाता को नेशक ने २१ जन १९३४ को बाक्ती बसीका क्रिको थी। व्यास्थ्यकाची से ष्टिका हो हो माननोयापद्वित श्रीमक्षे क्रीक्ष विद्यसम्बद्धी की ने पढ़ी। इस में श्वर्गीय प्रधान बन्तों ने बढ़ा -

'तेरे पार्विव शरीर की वास्त्रियां 🖮 क्षरमी का एक भाग इक्षाडाकट में गंगा, वसना और बादवब सर-**अ**ली के संगम पर प्रवाहित कर बिया आने । त्रेकित बना साम १% कियात में त्य कर काकारा से कोरों में कियेर दिशा साथे। यहाँ फिलान लेटी करते हैं ताकि वे (प्रश्चिमां भीर भसी) मारुशमि की । व में मिल कर दस वे

कार नशात हो नाये।

में **इ**.एवं देशवासरों के पात क्योर सामिनों १वें सहयोशिकों वे सहयोग का ऋजी हैं। वैं कियी पार्मिक मापना के कारण अपनी भस्मी का सद्ध माश नंगा में प्रवाहित **करने** के नहीं कह रहा। यह शे चैक्स इस जिये कि इस पवित्र नहीं से मने पढ़ लास लगान है।

में नहीं चाइता कि मेरी सन्त के बार मेरे लिए कोई पार्थिक राखें की अर्थे । मेराइन राजों से विद्यास नहीं स्त्री फिर उन्हें रिकात मात्र के सिए स्वना पंत्रपट के भाष र अपने आप हो और इस्से को मोला देना है। लेकिन बेरी बह कमिलाया है कि जेरे शिक्ष को जलाया जाये, पाई मेरी नृत्व

मारव साई बाये।

बच्चिप मैं चाइता हुं 🗏 मारत के लोग शीवानिशोध धन्य विश्वासी चौर पलरहीं से, वो इनके शिकास में पत्था हैं, बुटकारा पाएं लेकिन मेरी कभी का उचका नहीं तर्ज कि र्जे प्राप्ते प्रशास क्रमीन से निस्तान क्रमा धवन हो उन्हें। सके बच्ने भारत की विरास्त पर नवें दव

रस्रते के पत्र में हैं।

मारत से पाकिर हो और मस्बी है। यह विशंतात की विशासकारित कोटियों कीर नहरी वाटियों के विन से सके सरीव जार रहा है स्वरम् बराती है। यह म्मूस शबेस शकः सूर्व के पंकार में नुस्कराती और गयती है भीर जैसे २ संच्या की परवार्ड उसने सरसी है, यह भी कासी पाएंग धारक कर होती है। यह गड़ा सके सारत के प्रशंब का स्वरम् करावो है। वर्तमान में क्रमिमान हे और मैं इसे बनावे | बढ़ने जा सही है तथा सहिद्य के विशास सागर की कोर जा रही है।

इतिहास भी प्रसाद कर पर्टेक्स है ने धरिकां कवी योगना नहीं चाहता क्वोंकि वह क्ष्मतन सत्रावा है की नमें 🎟 से प्रोटका जिस्की है। ध्यमी इस शक्तिशाचा दी सांची दे रूप में एवं भारत की शंस्त्रप्री नी बारी के निक्रिक अपनी करां**ज**ि दे और पर **बड प्रार्थ**ना कर तका है कि येरी भस्य इसंब्राबार में स्था में ठाल दी आ वे जो उसे बटाबा जब बिसास सागर में से आए सी मारव के चरकों को खुना है। बेरे सरने के बाद. मेरा शाद्ध न किया 316

#### मर्भस्पर्शी वनीयत

मेरे कवित हरीर की श्रास्थियां दन मन्त्री का क्ष बाव इताहाबार में बंगा, करना कीर कटान सरस्वते के sing or प्रपादित कर दिया काए । सेवित थता भाग एक विशास से रस पर भाषात से खेठों में विकोर दिया असे जाने कियान सेवी करते हैं। वाकि वे ऋधियां और वस्त्री मातुस्त्री की पूर में किया कर कर में बाह्यमात हो जार्च-

भारत के सोवों से मुखे किन्ता मैं बहर-सी प्रतानी रामें क्षीर पार मिला है उसके क्लेंसे ने फाई | रिकाज होड़ चुका हूँ बीर में काहत वें कितनी भी मेबा कर किन्तु मे हं कि मारत वे उसाम बेडियों बतार २५६१ एक भाग भी भीटा नही र्थेंद्रे तो क्से जरूदे 📰 ै । त्या सकता : विस्तव 🔰 आर हेरी इमकी गाँउ में स्कारत बनती है क्ष्माल कहा है जो किसी भी गर वो इस की जनता में कुट देश में बोटाई नहीं जा सकती। क्ती हैं तम इसकी बहुत दक्षी संग और यसना सहियों से संस्थाको दशये हर है। ईक्की

गंगा विशेष रूप से आरत की कड बाधा पनी क्षेत्री। स्वर्तन के बार पवित्र नवी है। मारत के सोगों की सद वह पाइवा है, किन मैं क्याने प्रिय है जिस से शरबीयों की प्रश्ने प्रतीत में सर्वश <del>प्रसम का</del>ग रही न्यूनियां, कारान्यं, आरंबानं, गीन्, होना शक्का । विजय, प्राजय सम्बन्ध है। राग मारत के बोर्गों की वर्गों की पुरानी सम्बन्धा दवं शंस्त्रति हो श्तीक है। यह सन् सन्तती रंडी है, यहची रही है। ब्रेकिन इस

वेश बनवन से समाव रहा है।

समें इब शत का वर्ष है कि. इय एड वरी क्वरणि के मासिक हैं और हुस्सें के बयान सुने सी इस बाव की मनशति है कि मैं एक वंबीर की कही हैं जिस का पिछका भर भी गह नहीं पुरानी गला रही । आन मानद के मजीत कुन के बस्तई।

गोविन्द नगर कानपुर

भावंसमात्र गोविन्दरका समझ क शक्तिसन भूमपास से ता० २३ वर्त से २६ वर्ड तक मनाका नवा जिस में मानार्थ कुम्ब की. पं- त्रियोच्यन्त्र शास्त्री व de राजपास जी मदनमोहन तो विसद प्रकार कार्य प्रावेशिक समा आसंध्य थे एं० बाधारपति श्री उद्यानी, स्टाइरी शिवाचन्त् औ, पे॰ बस्त्वीरसिंह औ शास्त्री क्या पं अरक्षसिंह स्री १कारे । राष्ट्ररका सम्मेक्ट, परित निर्माय सम्पेसन, शिक्षा सम्पेसन भी 📰 । कार्य करना पाठरताना सी प्रीयों वा शर्वक्रम का ही आक दार था। अस्ता इर प्रशार से रातीरिक एवं कारियक क्रांचे में राश्चार था। बहां के बंबीर जन्म सेपों भी देवीदास जी आयं का अभाव तो सन २ पर हैं। समाज के श्चान सौन्य स्थमाच श्री **रामस्त्रम** वी मन्त्री की मोहनसास औ, वी ्यार वी, भी देखराज्ञ सी सपूर, थी बहस जी, शास्त्री कृष्यकी सम

वहिनों का सरक्षा है स. वर्शसनीय

है। बलाव की होतेगा को विका

प्रसार हुमा । सभा क्षेट मार्थ *स*भा

क कार्यात्मक १०४) ६० देवलकार

ने बिसा। स**म** का सन्तकात् स

बस्पादकीय-

# ऋार्य जगत

वर्ष २४] रविवार २०२१, १४ जून १९६४ विक २४

### सभा के हित चिन्तकों मे

कार्यं वानेजिक प्रतिविधि सरा पंताल आसम्बर के तत वाविक सक्षर तथा विशेषन के कार्यसमाज क्रोचराज कारावश में एक शानदार ' अधिवेशन में समाओं के सारे बान्य श्रीतिधियों ने मिलकर पूज्य बहारमा जानन्द स्वामी श्री बहा-सान को समा का प्रधान चुना या। किन्तु पक्ष नहीं क्वों पूर्व सहस्य भी ने त्रधान बनना स्वीकार नही किया। अर्थः सम्ब पुनः १४ जुन \$4.50 rfeme at muner i सभा के इस बाधिरेशन में सभा के क्राविकारियों दा निर्वाचन होता । समा से भन्तरियत कार्यसमाओं के **मा**न्य प्रतिनिधि m ६८ काप मार्ड वंडिनें प्रथर रहे हैं। जाए सभा के दिश्वित्वक हैं. इस विशास परिवार के बांग हैं. बेना के सटक हैं. शरीर के स्थरत मान हैं कीर िकाल भागा की पवित्र पाराये हैं। ब्याप ही सभा है तथा यह सभा ब्बाय का ही इसरा रूप है।

क्सात्र का समय कितना विश्व है। बारों कोर क्या स्थित तथा कारायरका है। धर्म प्रधान की स्था अर्थित है, क्षीयान दशा कर स्थार सामा 🖁 🎖 विशेष का भारत के मान्यवर क्यानसनी मी ६० जवाधर जास ब्री नेश्चल के ब्रायम्ब - ए:सस् नेष्टा-अवस्था पर राजिया संस्था क्रिकेट की विवस सथला पर कराडे कथे-कारों ते. प्रधान भी बामराज ने विकासी शोग्यता. बातमक पविकास क्या भेम से इस निर्वाचन वि विकासी बुरवृशिका से कान किया है। मोशियों के विकरने की कार्यका समाध्य हो। यह है। बार्य

कामराज विश्वतेगा । काल से धीलद वस में इस समय सभा के छारे विसरे मोधियों की एक ही श्रेम के सन में पिरोने के सिप समा ≅ काडे केंग्री **क्ष**पता न टावित्क चिश्रवेती ? दश समा का**स**बीत बचा जातबार था पत्र बडाल्वा इंतराज जैला वर्ष केवी देवता इस का कार्रभार था। उन के बाब कश्रात्मा कारतन्त्र स्वाची की हे. जी इसे अनव बरते में बोई स्थनव नहीं रक्षी। इस के पान वहीं प संस्थार्थ कके न जेवर हैं। समी

कोई नहीं। यदी २ कार्वसमार्जे

है। विन्तुतस्यायत है कि भाज

उस को आक्रिय बनाने की ब्रावश्यक्रक

है। आईसी वाने वत्ना है। यह

बब किनारे सिर बोड कर समा

बादैशिक सथा के सिर क्या कोई

को सीर्थ के जिल्हा पर से पर्से काज इस्तं उदासीनदासी है। इस हो बार देसे भक्षात विकले वो समा के किए विशेष शांक्स है कर समय देवें । समाजी में भ्रमका वर्रे, बन्त में क्रमाझ बदारें, बेद शकार की दशा को समुन्तव करें। वब को प्रगांत में विशेष सक्षवोगी बचें : वदि केन्द्र तिर्वेख हो गया वो संगी का क्या ब्रोगा ? प्रचारक तो कर्नव निसा रहे हैं। यह सभव है उस कि समा के सारे श्रेषी, सम्बाधित जोब कर सिला कर यक परिकार

के नारो इसे टड बनायें

-Bilese

जवाहर और लाल सारत का सर्वदिय नेता प्रधान-सन्त्री पीरत जवाहर लास नेहरू मीटिक शरीर स्थाग कर पत्ने गये । कार प्रश्ने बाह इस टाविल पर माभन पर भी हाल ब्हादर शास्त्री बैठ नवे हैं। यह भी वह संबोध है कि पंडल अवाहर साम की के बाद भारत को बास मिले हैं। बारत के यह वये श्वासमन्त्री किसने कीवा. सम्बोर. साइनी की मर्ति, स्थयक कार्यकर्ण तथा दर विकार के हैं-वह शो इत के कार्री से साफ हो तथा है। सारी कांग्रेस ने बन को अधना नेता चन का इनके सम्बीर व्यक्तिय दा सक्ते क्यों में सम्मान किया है। कहा बाता है कि भी शास्त्री बी

हैं। देशमण्डि की भावना जीवन में कुट २ व्हर सबी हुई है। भारत के झाकाश में जान चारों और विषय समस्याओं थी काकी पटापे खाई हाई हैं। गरभीर बाबसे सामने हैं । जारों स्रोर सय दर्भ प्रकारित कर प्रावेशकात साथ रहा है। देशी स्थित में क्या से शयेश है कि इमारे राष्ट्र के यह त्वे प्रशासकत्वे 📰 सारी सक स्वाकों को क्रवनी कोन्कता, नेताको के शहयोग, अनहा के प्यार के सःव २ सुसम्प्रते में संद्रम हो। राष्ट्र का प्रान्साहनोग किले। त्वर्गीय असहर के बाद यह सास विश्व में सास सिट हो सहें—#०

इ-दारइ २ परदे तक काम काते

### ये हमारे स्कब

धाव समाव II पाम विकरी वडी संस्थार्थ हैं । पूज्य स्वर्शीय बहात्मा इंग्रस्य भी के त्याग, बक्तिबाज से सारे सारत में श्री.ए.वी कर विकास सागर वह रहा है। சிரசி <u>சின்றி செய</u>ர்கி ग्राम है। इस में सक्त भी विकासी शिया के साथ र जीवन की शिया बदाई काती है। 💵 संस्थाओं से

तेल को बड़े २ देशमन्त, नेवा, शिशा विशास्त्र, वश्ता व लेक्स विशे हैं। इन का परीचा परिवास तो समाज का ही होता है। समी २ हायर सेवंदरी परीकाओं के अक्षीदे निकले हैं। इन में दस्त्री में सका रहारहर्वी में भी दी.प.वी. हाकर सैकडशे स्टूल चंडीगड के ही क्षात्र सारे पन्ताम में श्रमन काये हैं। इस मध्य के मान्य कानवक विश्विपत की द्वरियाम औ रम. य. को बहत २ डादिक यवाई वेते हैं। सार्थ समाध्य का मातक कंपा है।

#### श्री प्रिमिपल बहल जी

शी. ७. वी. कांग्रेज जानसा ंबाद के सारे काग्रेओं में बहुत बदा कारोत है। इस के शाला विसियस को भीमकेत और सकता व्यवसीका सरकार के निमन्त्रसा पर चमरीका गये हर है। जिस्तार थम महीने वहां समरीका वक्ष इंतेंड के कालेगों तथा विश्व-विद्यासर्थों को भी देखते रहे। वडां क्रमेक भाषक भी विदे । क्रम वापस बार सास के प्रांतकात के कार प्रवादे हैं । इस कारत भिक्षिक बहुल जो का स्वाप्त करते तथा वदाई येते हैं। क्रांत क्रमान को इस पर बड़ा मान है---ध

### गांधी मेंगोरयन क्रांडन सक्ल गोवलगढा

में सात्रों व स्टाफ के अध्यक्त शोक समा में शांत क देवता यं. नेक्क की के जिसस पर ओक अस्तान पारित वर के प्रीच सिर्मिट वह बीन रह का समयेता शब्द की क्यालन से तत के *शिव* वयस कासता की शकता हा। इस आपात के समझ कर रिज स्वत बंद कर दिया गका

## भारत के नये प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री जी

#### \*\*\*\*

भी लाम बहुद्द शांकी का क्यम एक समावत्व पराने में हुआ। मुन्हे लिता जी एक स्वास्त्र करी होता कोर भी तत्व कानुस्त्र करी होता हाया में दी करका देहांत हो गया। भी साली जी ने फपने जीवन में भी नेहरू, काम में नेट्ट्रेक्ट कोर ने में देहरू, काम में नेट्ट्रेक्ट कोर ने में देहरा, काम में नेट्ट्रेक्ट कोर ने में देहरा काम में नेट्ट्रेक्ट कोर ने में देहरा काम में नेट्ट्रेक्ट कोर ने

शर्जाव पुरुषोत्तसदास टंडन के शक्तों में साल बहादूर जी संतक्षित विचारों वाडे हैं और इन के कांद्रन से कांद्रन स्थिति से सफलता पर्वेड निपटाने की चमता है। भी ५० तेहरू भी भी शास्त्री मी को ब्रोका एक ईसानवार परिवर्ती क्षा करनी कारमा वी कावान कर चलाने शाला ६४१ ने थे। ला माधी भी की कांग्रेस के बरिय नेताओं में समाना १६४१-४२ में शह उर्वे अप करोने प्रथम कास दताब का संचासन किया। तसी अप की नेक्कर ती के जिक्स काचे। की तेहरू जी के फलिय दिनों में ची शास्त्री की धतके करवान विकासन व्यक्ति थे सौर दक के जेक तथा कांग्रेस संग रत के सम्ब य**क ≦लक का** काम स्थाने थे । विश्वासकी सम्बी सन्त्री के बाद उन्होंने पूर्णक्या को नेहरू

भी शास्त्री भी भाषी जो की अस्मार्तिय दो कावतुर को १६०४ में पैश पुरा : होकिन कावती जारी-रिक गठन से बढ़ कांग्रेक से कांग्रिक पार्तास वर्ष के अगते हैं। उन्होंने अपनी रिक्ष वारावाली में पढ़ समूख में की लेकिन १६२१ के बाला-मार में कुद पन्ने के कारण पहाड़े

श्री का कार्मभार सरभावा ।

एक गई। उन्होंने मांधी वो का बहु मारक मुत्रा कि क्यांची को करकारी गूजों का वर्षक् पर स्वारण व्यदिए की स्थानमार्थ में ग्रामिक हो गय। बाती विध्याचीड से अन्होंने सातकी मी करता पर्दे का सम्मूर्णानन के क्षारक में स्थार १ के कार्य ने एक करनाय के। तिक्रमणान में स्थारण में स्थार पर कर ता में कार्य के स्थारण कर सात में स्थारण कर स्थारण कर सात में स्थारण ने सात मार्थ कर ता सात में स्थारण कर सात मार्थ कर ता स्थारण कर सात मार्थ कर ता स्थारण कर सात मार्थ कर सात मार्थ कर ता सात मार्थ कर सात मार्य कर सात मार्थ कर सात मार्य कर सात मार्

विशाया देने के पैसे न होते वब

बहु बेर बर गैया पार करके घर

भी शास्त्री भी रेस मन्त्री के रूप में १३४२ में देन्दीय महिसंदत में ब्याप । १३४१ तक बड बसर क्षेत्र प्रक्षिप्रकार में से 1 १६५२ थे ही बार लगभग सारा समय देल मस्त्रिमंडल में रहे। १६४६ में एक रेस दुर्घटना के बाद करहोंने संत्री पव से त्वागपत्र दिशा था और १६६३ में बड कामराज योजना के अधीन मन्त्री पत से हटे फिला थोदे समय बाद ही पुतः क्यागर। १६६१ में छव्चोंने गुक्कानाय सम्बासा । १६६२ में बढ़ भी नेहरू हे साथ इस्राहादाद चेव में खोड़ समा के सिर् पुने कर । भी शासी बी में ब्रापने राजनीतिक जीवन में क्रेन सहस्ताओं के सहाराज जे

### जनसनीय योगसन दिया। त्रार्यसमाज, रेलवे शोड

त्रम्बासा शहर बार्वसमाव क्या स्त्री बार्व

धानसमान नवा स्त्री कार्य समान धानाला राहर ने १ जून को एक विरोप नेटक में श्रूबकी देश विह्यनेता भी पं-नेहरू जो के प्रति तोक स्त्राच पार्श्व क्या क्या मही-अविन स्त्राच पार्श्व क्या क्या मही-अविनों क्यिंत ही ।

### श्री नेहरू के जीवन का दिग्दर्शन मात्र संज्ञिप्त इतिहास तिथियों में

#### MARKER MARKARA A-1 Suidit illiaal

१४ नवश्वर, श्यास--इसाहश्वाद में जनम कुछा । १६०४--इ'धर्लंड में स्वाना ।

१६१२ — भारत में बापिस १६१६ — महारमा तोशी में मेंट को ।

१६२०-२२ – हो बार क्षेत्र राष

१६२३-धंत्रेत के बहाद्यप्तित रहे

१८२६ — यूरोप कीर रूप की याता की। १८२० — जलवऊ में कवाशान के जिलाफ शखन का लेवृत्य

१६२६ - कांग्रेस के लाहीम कांश्विशन के साध्यक्ष बने । १४ फरवरी १६३१ - महमीड़ा जैले में साहम कथा पूरी की ।

३१ चन्त्र, १६४० —सःवासह में गिरकार हुए ७ चनात, १६४२ —कोच स के बन्दई आवेदेशन 'शरत होड़ी' प्रस्ताव सन्ता ।

ाव स्तातः। ≡ व्यानस्त १६४२ –ियरकतारी । अहम्द नगर किसेनें रखा सवा ।

मार्च, १६४६—द० पू० पश्चिम का दीन किया ३ जुलाई, १६४६—बीबी बार अभित के क्रम्बक जुले गए । २ क्लिम्बर, १६४६—गवर्वर जनरज की कार्यकरी परिवत के

च्याच्यक्ष निर्वाचित्र हुए । ११ ऋगळ, १६४७—मारकके स्थापीन होने पर प्रधान सन्त्रो बते ; २ फरवरी, १८५५—सम्द्र संघ महासता में आक्ष्या । (१६४६ सीस

१६६१ में भी भाषक किए। १८४४—चाऊ के साथ पंचरीत के सिद्धानों पर इस्तावहर ।

३१ करुपुर, १६४६ — संपुरत राष्ट्रमंत्र के तस्य विशेष संदेश । सिख पर हम ते के मनकन में कार्यकाई की सीता। करुपुर, १६४८ — राष्ट्यति है सन का निर्माण करुपोक्त-सामा क

(१६५६ और १६६१ में पुनः कमरोका शर। १६५२—संदन में एकिजनेथ की शतगद्दी में शामिल हुए।

विसम्बर, १६४४--मस्ब इस्डोनेशिया, बाई देश और वर्मा बी बाडा । १६४१--अस बाडा (किर १६६१ में सस बाजा)

 ज्यार्ड, १६४१—भारत राज की हवापि से सम्यानिक किए गर १६४६—थीन वाजा की ।
 जून-मुखार्ड, १६४६—भाषार्खेंब, पं. जर्मनो, आंस, क्योरालाविया

क्षांदि देशों की यात्रा की । जून, १६१७—सीरिया, केन्सार्थ, फिनकॅब, नावें आदि की

वात्रा की । स्रक्तूबर, १६२०—जापान वात्रा की ।

१६.र--नेशाल को दूसरी बाधा की । ११ रिवण्य, १६१६--माहक के साथ संकुष्त वस्त्रक्य । क्षिक्यर-मास्त्रूपर, १६१६--राष्ट्रीय दश्का के किर सम्मेलन बस्ताल गया।

सितन्तर, १८६० --राष्ट्रसम् में नारतीय प्रतिनिधि मंत्रस् का नेतृत्व किया।

करन्तर, १६६२--चीत के आकारण से आवात सर्वा। कतवरी, १६६४--पुरनेस्टर कांग्रेस अधिवेशन के समस् वीवार इप।

२७ मई, १९६४ —को नहकर शरीर का स्थाय ।

# प्रिंसिपलबी एस बहलजीकी सफलग्रमरीकायात्र

# तथा 'शित्ता सम्बन्धी नए अनुभव'

क्री० ए० वी० कारोज जातावर के सबोरस व सबस जिल्लास भी वो० एत॰ चट्टत को असरीका **बर**कार द्वारा भारत में स्थापित चैत्रदेशाच छाइन्हेसन के नियन्त्रवा स्रोर बाबा प्रस्त्य पर १४ फरवारी भी ३१ वर्ड नद स्वयतेश सीर बिटेन महादीपी की विकास शिवा संस्थाओं में शिका समयन्त्रो श्रास्थव पर्ण वान सरो प्राप्त करने के हैं मु पर्यटन कर मारत सीटे हैं। की बहन बड़े उसतो और सवीत्व शिवा विशेषन हैं। पंताब ही नहीं क्रिक भारत के इस सदान कालेब में जिस भाषायें एट् पर भाप श्चासीत है वस्तवः भागरोको शक्य साफार के का यह चुनाव वशा हो -शिका विभाग २०वस्त सिक्ष समा । इस क्यायं बाग को बार से बड़ां में पिक्षित्र वह सर्वा का क्रिक्य व पूर्व स्वातन करते हैं वहां समसीकी सरकार के इस शिका फाउन्डेशन को भी वसाई देते हैं और काशा रसते हैं 🏗 अधिया में जो इसी

में बहुत वाहित के जायकता में बहुत वाहित के जायकता कर हम बसी को उपपान है। ते कर से मित्र वह पार्ट दिहोतों में मित्र वा प्रमान वाहित हमा। में सिंदित्या महोदय के ताम सम्ब व्यक्ति पार्ट महोदी में स्थान है कि प्रमान की महित्र कर कि है कि मुझे बहुत की के हहत से महत्त्व सम्बा और सहित्त की मार्ट करना के भी में सहस्त मार्ट हमार भागत सम्बा की मार्ट करना मार्ट समा और सहित्त की मार्ट करना मार्ट समा और सहित्त की मार्ट करना स्थान समा की मार्ट हमार स्थान समार्ट सहस्त मार्ट है करा मार्ट करना समार्ट समार्ट सहस्त मार्ट है करना मार्ट करना

अकार ६ पर्यटनां का प्रकल्य किया

बाखा रहेगा ।

रहिक्षेत्र थे थे भन्न १६ शास्त्र विरुद्धिः बद्धसभी जन साम्राप्त्र के क्षिर मस्वान्त्र प्रशास है इसी बेतु बहु कुदु १९३१ घर रहा हूं।

भी बहुझ साहित कराने वाधिन के साथ रूप सहसी १६६५ ई० की पन्नेतराबाक्य' दुर्हेच भीर 'कुर्वे कर महोत' में बारास्त क्या दिश्शा इन के बाला जिस्सा ने स्वत्येक्ष क्षात्रासाल्कांत सभी कार्यकर निर्वारत दिशा श्यांच शालाकों पुत्रकालती, भारतकृष्ट्यों न क्षाय वर्षा महित साहित सी इन में सर्ग्यक्रिये भी ।

बडां बड सोग १० दिन ठडरे ।

हार्वे मट बाबेज में रहते हर रिसिपक्ष महोद्य ने सन्भव हिया कि कालेजों का परस्पर समदायिक माधीन बहत सी ब्राज्यक बातो में चक्कत राज्योगी सिद्ध हो शकता है। फारासर चिकिसा, समा मधन प्राप्त केन्द्र सादि प्राप्त बोम्स्सा और मिनव्यवता के साथ कार्थ ६१ सस्ते हैं। प्रायेख कार्तेत कर शोदे से वार्षिक सहयोग से बद्धेत वा सम्मितित वे व बडा **हा सन्दर और भाष्ट्रेंड बरा** सदय है। हाथें यह कालेव के चापार्व की योग्वता और पुद्धिमचा साबद्व परिचायक है। भी बहस साहिब का चहना है कि यदि भारत के क्ट्रेन नवरों में इसे प्रधार का थ**द**ति को साग कर विवा बाद वो क्रिक्रम संस्थात साम वर्गसदी साम शहर सबते हैं।

२४ वार्च को सान फ्रान्थिकको के जिद अधान विद्या। मार्ग में केपोर्किनिया गुनिक्तिटी देखी तथा सेन अधिकको में रहते हुए ही कर्केने गए स्था स्टेनकोट मुख्यिकीटी

देखी। वर्षेते यूंजबॉक्टी की उन्होबरीय कात यह है कि क्या में २,७०००कात्र निवास करतेष्ट्र तका साथ

श्री शिकास्तर भी तकता रखा गया है। किया कियों की यह पार्टी So बार्च में २ बार्ड स तह स्त्रीस्वर्त काले उमें रही। यह काले व सी अपने बोटश का ब्रामरा कानेत है। भारतवर्ष के विशाधिकों को इस के जिलाबियों से ज्यानस्तिसंह बीवन से काफो शिक्षा सिल सक्तो है। यहाँ के विद्यार्थी चयने ब्याप ही सबन निर्माण पतने हैं। जोषन बनाना वोध्याका के ओरन इक्ष हैं सभी साधिकों की शोजन प्रोवश चाल्डक है। सर्व ही ने कापरे वर्तन साफ करते हैं। ६पते स्वरं ग्रोते 🖹 । प्रश्नकासय. प्रयोगकासाओं और कर्माबरों के कारों में द्वाय मी बटाते हैं। बड सभी कार्य वही ही छरासता व्यंक नियोखित विथा गया है। इस कार्यक्रम से शहो शिका ज्यब तें इसी प्रानश्व की वाती है साय

ये बार्ड कर्नुवर की जाती है साथ ही जाती की नामा की है बातन होंचाना के हो बातन पूर्व में कारता है ! बातन पूर्व में कारता है ! बातन कोच्छ के साथ की है ! बात की कार्य के हैं थे होंचे कार्य पूर्व का हिला कार पार्ट में हैं हिला कार पार्ट में हैं ! हातन में बोटे ही कार पार्ट में की हमार्ट कर्यों के हिला कार पार्ट में की हात कार्य पार्ट में हात हमार्ट कर्यों करेंचा कार्य कर हैं ! कारता में बोटे ही कार पार्ट में की हमार्ट कर्यों के हमार्ट कर हो मारता में

२ कार्य ज को बानजोग शिमण्डा, बहुक हैंद्रावट के बीनटाय काहेत में पहुंचे इस काहेत में शिक्षा बक्कियर कुछ भाषण हुए जिल से

सकेंगे ।

पूर्वपता पता कि कामेरेक ः शिवापर्कात किया जन्म की है। बर्धे वह बहुने में दिलो प्रकार का #क्रोच नहीं ≣ क्रमेरिका द€ उद्योग वाती देश है। प्रत्येच कार्य रहे डी वैका दिक देश पर किये जाते हैं। शिका का बक्त मी वैद्यानिक ही कहें तो क्रवर्गतः नहीं। यीनटोष फानेश्र दसरे कातेओं से हर सप में प्रवस है। यहां कालेश को क्लासकान कोई एक सौबियर मदस्य किसी एक बदा की आपग करता है क्ट्रपरांव बढ़ी खड़ा दस-दस था १४-१४ लाजों के सम वर्गा में विभक्त हो नाती है। इन वर्गों वे हात्र परस्पर वार्तालाप क्षीर बात-चीत में प्रका सापता के विषय को इटर्यस्य कार्ते हैं। शिक्षक वही केवल एक बोसोटर का कार्य करते हैं और विवाधियों को प्रवर्ध कर्या में सहायता देते हैं। भारतवर्ष से काओं की संस्था बहुत क्षित होती है और इमें चेवल भाषक शैली कर ही जिसे रहता पहला है।

क्रमेरिका में साचार क्ष तिक्का के नो विषय संस्थान है। शासक में इस पहालि में बहुं पर मानव के मानव बनाने में बच्छी स्टक्तवा महान की है। मारत में भी हम इस कोर इस क्षमय हा है रेड मान्यों केवल हान्य सेक्टक्टी प्रति तक खुड़ चित्र में सम्बन्धी गई है। क्षम खुड़ मित्र केवल हान्य सेक्टक्टी प्रति तक खुड़ मित्र में इस कोर शुद्ध उत्साह-तानक कार्य में में इस कोर शुद्ध उत्साह-तानक कार्य में में हम

क्रमेरिका के रिएका ऐत में क्रुनिकर करिकारों ने भी भी महस्त साहित को काफी क्यांशिव किया। वह स्कृति उस रिकार्थियों के सिष् ओ कि उस्तरम सिकार्यामा नाम करता काहते हैं नहीं सामारामक सिक्त हुई है। व्यवस्थानक, (क्रमका

### धिलम्ब उपदेशक भारूर (महाराष्ट्र) के दुराने

**बार्य** बजनोपरेशक साम्य दं. बाब आन भी ने एक दिन वक्षावा 🍱 क्वरि की जन्म शताब्दी पर संघरा में स्वत्यामी इसराज का ध्वणन हो रक्षा वा । सोकाओं ने बीय-बीय वे पत-सम कारम्य कर दी कि क्षोर्काव प्रातीषिक ज्यानमाता ≭ार सम्बद्धाल की शार्थ प्रविक्**का** बोबाम श्रीक्ष कारका किया जावे । महात्मा इंसराज वी समय धी समी भाग गए कौर शीक्ष वायते विकासें को निराम दिवा । अब कार्र कार्य विवाद क्षेत्र की बी mit i

कम जी ने झार्य सन की यह क्वांना की कि भूस ने सके । काप में फल्बन विसस् भाव से बाबते बीवन की हवंसता क्वं पस्य सवातमा भी की राष्ट्र एवं समाज হিত ই আনুধি কা নামিক বিল बनता के सामने सीवते 📰 भीताओं को परित्र की एवं त्यास की पत्र। का धारेश तिया। आक्री क्सी समय स्थापकान देते-देते छह सीव रंप डासा चीर इस गीव शारा बार्थों की करियन्त्व की रवदा भीत थायस प्राथा:---

स्वस्यत बनानी हो गई चार्वसमाध के मंच से बोलने बासे सभी वस्ताओं के ज़िए संतर की ने एक कार्श प्रभूत किया विशे इस सम को कपनाता माहित । वर्द बार वदे-वदे सद्दात्म धर्म प्रकारणा भीत्रती के होते हुन वर्ष वनश इमारे सकते वर्ष परवीने कामग्री जावने की सांव ६२ 🖩 (स इसमें धापना बर्व सममते हैं। भाइए इस बीसियों बिनस सुसक्षास वैदा करें को कीति के शिसर पर पश्चम ग्री पूर्णवया किनीव रहे । मेरा क्यार्य सर्वकी काञ्च कार्युत की **वर्ष-**रत नसस्थ्रत ।

### ऋार्यसमाज की कहानियां-

#### DOMONOMORPHOLOGICAL MONOMORPHOLOGIC

इस में आर्यसमाज की हानि है :-

भी खामामी खोमानन जी महाराज शेहकर ने सम्बेबनका कि ९६ वार शीनातगर में राष्ट्रिय संपद्धे वह प्रविध्या भागे मान्यकर स्वाभी स्तरमानन जी महाराज के पास कावे बीर वयन तुरु रहिस्सा वीने से टोका। यह समाज के संबंध की बाज्यवात करने की सेवस की दल का जिल्हा पर क्रोडिश शर्थमा की । राष्ट्रिय संध काले आई इक्स दिस ने एक था । आदित को इस सरस्य पर सपने कार्ट की पता भी टोकने से संकोच व क्या हम करते वर्ष उसे यन मेंट करते हैं। सब में देता और सम है प करदे को संघ तुरू मानवा है। लामी की ने बद पूजा के इस

फालीकार कर जिला । बार कार कार बार शाईकों ने प्रार्थना की का कार्य साथ ने स्वीकृति न दी। उत्र धन भाइंबों ने पुदा कि बाली हरि का कारण क्या ? तो स्वासी जी ने कर 'मैं इस में बार्व समाज की हानि समञ्जा र १

रतसर की प्रधानक को ये मा एकेंक

क्या इष कार्य समाजी सिट्टांट हेम में संन्यासी का सनुकरका करेंगे र

वह आयं संस्पा है

दिवगद चीवशे बेद त्रध बी (बो बह सुब बर महात्मा दे बहुत फट-खानी संस्थानम् वन ६८ संस्थर कारा भीर धिककारा । महारमा से गये) ते एक बार हुन्के बताबा कि साई' रास श्वल बालपर में Divisional Impactor of School का चागमन हुमा। सम्भक्तः उस का नाम की क्लाई था। क्येंब की दाया से ही दन मारतीय थयमीत वे । उस ने साम में सिप्रेट सुलनवा । सबोय बार्च मीहरू ई० मेहर क्या भी ने तरना सदा वि 'क्ट भार्य संस्वा है यहां अस पान वर्षित है । अभिन्न सर्वस्थात पंकित रह गना कीर प्राविक्यक बियट बन्ध का बाग यांगी सात ही दी० द० वी० क्रनशासन सी

इस स्ट्रांता की क्रासन्त प्रशंसा थी । कार्यों की स्वष्टकार्दका, साहस वर्ष सिकाल का भीता संश्रेत की नीति का यह एक ब्राज्य संस्कारक है। इसी प्रसार सब वर्ष वर्ष क्रियार कार्ष समात्र के शेवक ही शिरवारी साम में पंताब के एक प्रतिरंहत कांग्रेमी जेता को समाज में फिटेन

बस्य संबद्धी स्थानसङ्ग्रहातंत्र जी महाराज लामी धर्वदाश्य वी यहा-राम विरक्त डोकर पर से निकार । एक महात्मा के पास पर'ये इस परने की उच्छा प्रकट की परन्यु उसी समन्द एक डिबी से क्षत

निकास कर सामे संगे। सद्राप्ता ने प्रका कि यह क्या ? बोले महा-शब इस चचीम का नहा है। वद काम अपर वही बैठते को सें. (सेव-गजेन्द्र 'निष्ठाम' प्राध्या-भी नीचे केंद्रंगा। सुके हारकर पकदयानन्द काले अधीक्षापुर कर्धि पर बैठना पड़ा । मैं तो इस

बोब्रे तेरे जैसा स्तमश्री क्या fee: पायेगा। वस फिर क्या आ स्थान श्री ने कर किसी बारी बेटे दर चैंड दी भीर संकरण दिया कि बाद तो इसे बना ही नहीं। जैन दिन साथ के पास ही रहे और व्यसन के शार गर बाक्यक पर विवस्तित स स्व फ़िर सामु को चिश्यास हो गया कि वह यह बन्न संख्यों है इस ने स्यसम् पर विश्व पर्छ है।

क्षेत्रन (दक्षेत्र) की कहा का बड़ी रक्षर है। स्वा इस इस वस के शाही बन कर सब व्यक्तनों को त्वापने वा निज्यव करेंगे १

**शिष्टाचार वका है?** मार्ग बगत के किसी धर बांस में शोकापर के दिन पार्ज बीट दिनात. प्रकाश जो का मान्य महास्मा अपना नामी भी पर पर के पदास्तित स्था है । सापने सहस्था क्षी के जीवन पर हुछ बस्तरा साहा है। महापुरुषों का देशोकत काफ-रया डी सदाचार है। सहात्स्य **धानन्द स्थाभी जी प्रापने** शिष्टाचार के विने प्रसिद्ध हैं। राजके शिक्षाचार की एक कहानी सुसकी नहीं। रेडेंट्ट की बोटस च्या में.. महारका जी सार्वसमाध के कमट वानवीर भी सुबलास जी सुष्ट की मार्चक पर टोडाचा प्रधारे । वैं भी वर्शन इतने चला गया । भी प्रजलात जी की बैठक में बद्धानु श्री पुरुष देंडे ■ वे। सहस्या जी चारपाई पर बैते वे । सैने जाकर चरका स्पर्ध कर नमले की क्यीर वृश्चे पर नैठ क्ष्या । बहारमा जी ने मतबह पूर्वक सस रक्षी इसी पर बैठने की साझा दी। मैंने कहा नडी नरी पर ही डीच है। हैंने चारेश वर न मान्छ वो महस्त्रमा श्री शारपाई से उतर कर नीचे चेंद्र रुपे और बहा कि

#### डी.ए.बी. म/ड स्कूल तथा धार्व समाज कमाही देवी ३१-३-६५ को क्रिय समाठ अभी-

रह गया चार उपस्थित होगा पर

थी महात्या जी की बहाबबा का

गहरा प्रभाव पड़ा । ऐसे आसंबर्ताः

सीचे वाते हैं।

वकार साथ जी के ब्रावर्शनक विभन पर शोक शकर किया उत्तर समझी बारमा की शहराति व परिवर्तों को पैर्न प्रदान करने की प्रमु से धर्मना की। आठ जून तक र्शातदिन शकः इतम सह वर वार्यकाः का कार्यक्रम बनाबा गया ।

### प्रधान मंत्री श्री नेहरू जी के निधन से देश ग्रमध्य हो ग्रम कार्य संस्थाओं के लोड बानाओं की प्राप्ता

ही o ए० वी o तावर सैकथ्तरो स्कृत काविवां काळ का 'विधार्वियों की यह संकृतत शोक सबा साम्ति के बासर देवता प्रधान ं सनी ५० अवाहर बास नेहरू के चसमय निधन पर दर्शर्टक शोक वकट बाली है और बंदित जी के सम्बन्धियों बया देशशासियों के साथ हम कारण रूप में हार्विक सहात्रवृति पकट करते हर परावात से संदर्श जास गति के जिए शर्योग करती है।

खार्च समाज पलवस के स्म-कार्य समाज पश्चवत केन्द्र की कोड से विनि २७ मई १६६४ को नी अवस्थात नेहरू ती के स्वकासात क्रिथम के स्मारण में यह शोक सभा दुई जिस में नेहरू जी को - बद्धां प्रक्रियों सी गई ।

बाख इंग्डिया द.मं. सामवेशन मिशान हृष्टियारपुर~यास्त बाल के सपत्र तथा अवतः के हर्य भी तवान मन्त्री नेहरू जी के जिदन का भारतन्त क्षेद्र १७८ वरका है तथा शीमनी इन्हिंश गांची से हार्दिक सहातु-स्रति प्रकट करता है। यो नेइक्स की सब्दाति के जिल बस् से शुस कामना बरधा है।

जावं समाज इसकतराय (वोन पार्क) नई दिल्लो-१६ श्चरवें सवाथ यूनफ्लेशाव (त्रीव वार्ड) के सहस्वों की वह संगा सारण के क्षोफ त्रिय जननायक क्या प्रचान सभी विश्वन नेता परिवन जवाहर सात नेडम के आदिसम्ब निधम पर डार्रिक रोक प्रथट करते हैं।

हा। सब Aार्वी है कि इस उनको चाल्या को शांति, इस सब को वैर्व दव वनके पर विश्वों पर चलकर बनीव पालव की बसका ena až i शासियाज गील्य अञ्च

आर्य केन्द्रीय सभा, विल्ली**-प्रार्थ** केन्द्रोय सना विल्ली शब्द वर्ष दिन्ही के इस्तामान में एक सार्वजनिक शोक सथा १९७२३ साहत के क्रमान मन्त्री लोक सावक एं. जनावरसाल जी नेऽन्ह के टेहाकसान पर ३१-४-५४ को साम ६ बसे शोड सभा हुई जिसमें बानेट महासुधानी ने व्ययनी २ वदान्जीनशे भवित की। तका स्वर्गीव कारमा के बिर सङ्कटि क्षी शक्तें वा पर की । रामनाथ सन्त्री

श्री चन्द्रजाल ऍग्सो वैदिक हायर सेकैप्तरी स्क्रूज हिसार के सात्री, बाज्यापनी, रक्ज्य-मस्त्रिति के सदस्यों तथा वरिष्ट नागरिकों भी यह शोक सभा मादवता के शाक्ष्यत दिवेशी, क्युवेस क्टुम्बस्टर की साकार प्रतिसा भारत माता के सम्बे कपूर, मारत रत्न वी स्थापरकाल वी नेहरू के ब्राफरियक एवं बसामयिक निध्य पर क्रवार शरेक अकर ब्धानी है तका परमक्ति। भरमारमा से प्रत्येता करती है कि कह विसंगत सञ्चान चात्मा को स्वाची शांति प्रदान करें।

आवसमाज प्रेमनवर की वह सथा भारत के नहान स्पूर्त, **सक**न्द्रशा संपाय के बीर सेनानी, पृथ्य परिवत क्वाइर ताल भी नेट्रक क्ष चसवाविक प्रत्य पर हार्दिक शोक प्रकट करती है । परवानिता कर-अपना से करकी भारता की सदर्शन के जिस्त प्रार्थना करती है ,

सेरमञ्ज भार्यसमाज वे समग्र कर्याञ

### दयानन्द-वचनामत

देवारी-सान ना कादेश सब महर्प-महत्त्व के सत में होता है। पार्थिक, रोगी, यहविं तन जिस समय जिस सम्ब के वर्ष जानने की विज्ञासा से, व्याना रस्पित हो, प्रयासक स्वक्त समाधियत हुए, वसी २ प्रस्तेत्वर ने उन पर व्यक्तीत मन्त्रों के बच्चों का प्रकाश किया। इसी वेरावें को स्वर्थ मिनतें हे शॉकास के साथ मिला कर खबियों ने स**ाइस करते ह**ै सुन्ति की । अध्यक्ष अन्य केर का क्वाब्दान हैं । जैसे चारतें का क्ष्मन वसावा जाना दाश है, वैशे सब बंग्रह, परम आव परमेशका का कपदेशा भी शमाया है।

#### श्चार्य समाज पलबल केय संरचत--दा॰ सबोदरहा।

मी. ला० उपशयन को. ची-ताबक्रवन्द् औ प्रपात--वी यतका रात जी उपभाव-- रिकस्तवासंगी माः शोकाम ती सन्त्रो—नी हेय-राज की उद्गबन्ती-सा॰ अक्टबास प्रमान्त कोचारवद्य- भी आग-यत कास जो ब्याओटर--शास राम वी. भी गुहरूत जी पुलकाभ्यक्-सार बाजपान जी।

—अथहराज समापर

श्रार्य समाज पुरानीमंहीजम्म प्रशास-भी ह'सरावधी वसेवा दब-द्रशान —, पोपी उर शम्यू-नाथ | तथा स्थातिका' शेवों का साउतक त्री. तक्ष्मान-्, सा≎ रामस्का-ंकस रक्षा गवा है। प्रदेश शहरू वेंबाती, प्रचार कार्या →, कविशात : ६०/- ६० है साक्षिक प्रशेस ±०/-िष्टा राज, उपमणी—,, योगास i ६० है। **ब्रम्म की,** उपबन्तो~,, भगत स्टब राज जो, बोशान्त्रस—ही

रुप्यसासकी मृध्य, प्रकारवाच-बी वयहबाद जो. मैनेकर आर्थ धन्या सङ्ग्रीवयासय-श्री प्रशस-राज जी गण, सहावय-जैतेशर-वनीसास थी, बोडरंग सदस्य थी मोहनगर वी मोरशस धीमती मुखोला देवी हल्लो, भो राजधन महाबर, वं नी क्या चलाहो. हो सम्बन्ध हो हे हे हार ।

### आर्य कन्या महाविद्यालय

कावाओं का नदा प्रदेश

कार्थ कथा सद्यानिकासक वहींका का संबोध सत्र ता० १६ जन से ब्यारम्भ होता है। कावाकों को पविष्ट कराजे के लिये आवार्या. व्यायंक्रमा सङ्गविद्यालय, कारेखी बाग, बढ़ीहा को जिसकर, प्रवेश m संबद्धास्त ता० १० जून से पूर्व मरकर भेज है। नशीत कन्याओ का था० १६ से ३० जून तक प्रवेश

### े किया जायगा।

संस्था का सेकस्टरी विभाग सरकार बान्त है । यस+ यस+ सी+

### गुरुकुल भाग"नगर क्रही

में लोकिश्च प्रवास सन्त्री परित वक्षाहरताल नेहर की बाक्षिक मुख् पर गुरुकुत आयं नगर करही क अभिकारी वर्ग ने डाहिंच संवेदना क्ष्टर को । दिवंगत झाल्सा की सदगति के ज़िए प्रार्थना की नहीं । त्या मुख्यूल में एक दिन का पर्स मनकाश रहा ।

#### **बाई** दास A.S. स.ड स्कलके भ.६ स्ताम का उज्जब परीचा परिगाम **ब्यानंकाम वास्त्र १३३२ स्टेक**

के दर पंताद में Had, रहा ! HS क्सास में १८८ कात्र प्रक्रि क्षा जिस में से ३१८ छात्र उसीया इत् । क्रीका वरिकास ८२% सहर अव कि वृश्विक्सी का ४६,० था। मैरिट सिस्ट पर २३ इस्त्र काए। १६ लाज बृश्चियो इस स्कृत में प्राप्त की जो कि छारे पंताब में सब सुक्षों से क्राधिक हैं। पहनी १० को आरेश∽ में से ४ इस स्कूल ने सी क्रीर सकते दस में पित २ पोजीसन शहस्य ने भी। इस प्रकार प्रकृति २०

ते से १० इस स्कूत ने प्रप्त भी। बासम्बर् के सारे सहसों में २५ क्षेत्र वृश्यमं काने की बासा है ६वे स्मृत : दुश धी हैं। इसस्यत म्सीयत प्यारेशासकी, वेरी के कपशीश सहयोगी प्रकार को है। इस के किए कार्य जन्म प्रभाव पढ़ी । सरक्ष की मीर से कोटिशः भनववाद ।

ही ए बी, H/S स्क्रस चराडी-गढ की श्रप्रवं सफलता

दसवी को परीका में नरेशकृषात क्या ७२० सह देश सीर समायwar unt tem best team; unter श्रीर दिसीय स्थान पंदाय भर वे क्रफिक किया। १६ साथ जेतिह क्रिस्ट में ब्राप्। लुख का प्रतिशास ६६% रहा वयकि विश्वसिद्धी का 41 t

हावर संबंधिती की ११वीं एवा में व्यक्तिस हुमार शास्त्र ४१४ सह ब्रेक्ट (कार भर में प्रवस शहा। श्रीसरा, पांचवां क्रीर इक्षवां त्यान मी इसी साल ने क्रिका। २४ वाड मैरिट ब्रिस्ट में ब्राय । वरियाम १७% रहा यह कि व्यक्तिकी W 80% \$1

इस २०वस परिकास का श्रेष वि+ इरिराम की वैद्दल तथा उनके सुबोग्य स्टाप्ट को हैं।

22 जातमाथ समा व्यवस्थक संचना

धार्षे प्रावेशिक सभा की » ५.६५ की संस्था में अलाव de र के सलकार सभा के तर क्षपिकारियों का क्याब १५,६.६४ को साई राभ झकर सैक्स्करी तत्त्व बाबोंचर के लिएसा अवन में होता

रमन्द्राक्षी काली मेत्री का नहीं हैं सभी प्रतिनिधि क्षाप्ते प्रधान वर्धी र्साहत १४.६.६४ को .ठीक एक क्ये रोपहर क्सरने की इस करें। भोवन चौर विकास का तकन सर्वेदास सुख में होनाः प्रति-निष वारीस मोट कर सें। निरिध्त इस्र है। सबा की स्रोर से भवतीय

सभी नंगीयां बार्च समाप्ते की - सेवोपरार्थ नंत्री समा श्रार्व' प्रादेशिक उप सभा होतों समय संधीत व प्रवचन होते गोंचे । बी स्थामी जी क्या नगर के दिल्ली का प्रचार काय साम्य सध्यन भी नवारेन लिइ बी (क) इस बास में कार्व सवात सहारी पद्भवेषेट. वी सल्लराव रेक्की क्यर, बेक्क्सम कार दिस्सी भी देशप्रास्टर बीच यन बान स्वस्त शी सक्ष्रोचा जी, समाक्ष के माई व

क्षा इज्रत पुर, न्यूडासोनी पक्ष्यस के बार्वकीत्कर क्षेत्र समस्त्रेष्ट के साथ श्रष्टताता १व के समाध्य हम । झीर प्रचार का जनका पर संतोप (a) १२ माँ से २६ माँ वद श्रद्योग देवें : कार्य समाज स्थल और वें की

कालम जी हारा देशों की क्या होती रही । भीर भी ५ व्हेररच भी के मनोहर मक्ष्मों इसा वनार होता रक्षा अवसा आवन्त असन्त भ्ये । दक्षात **कालक्ष रहा** ।

(ग) मान सौंध की० सहनायां में २७ से ३१ वर्ड **छद छदन** नहे वसारीहर्ष तांव प्रथमा नांच काश नेहरू हे शास्त्रीयक नियम क्षीर विश्वाम है कि इस का द्धारूकम प्रमान करता पर प्लेगा ।

साधनाश्रम मुखासपुर के जानी सोमानव वी

प्रदूरश्च की काम्बद्धता में हंगा-सित वैविक साधनाकम गुरदासपुर कर वार्षिक केंद्र पारावया महाना तवा धर्ममेखा इस बार जुन १४-१६ से बडी ही धमधान से सामन में सनाथा जा रहा है : ऋग्वेट के मंत्रो से प्रायः सार्थमहान यक्त होगा।

वीं सकेन्द्र की किहास में २० ६० **व्यवस्थात शोसापुर एवं अ** कार पूर्व बेमार्क स्थित पंत्र हैं राज किए ।

(स) की विद्यार्थी की ने प्रद ह क्यरः वार्वसमाज स्थाना मोहरूसा, पूर्वी बंगास वीदित करूर, महार्थ वारक दूस टकारा हरियम धर्म सामा रोहक, ३ हरिका दिन्द्र शिकों के नाम शेर वामिक को का प्रमुद् बार्षकीर रह, बार्थ श्री समा. भी द्यालक गरं, वेदिक महिल भाषम को राज का

विद्या इस ब्याह मेस्रे को शानदान aंग से मनाने के प्रमुख **में** सनी व्य हैं। प्रश्नोर्क्ष पर क्**रा** भाग 'बार्य जगत शेहतक हे

समाचार प्रवादा में|इस्का में दैशिक सार्वात गतः ६ से ≣ा वजे तक विश्वतिष लप से होता है। कार्ययात रोइक्ट की धोर से मामिर इसक वनी रं. क्रमाट-

पर शब्द्रविदे वर्ष भीमधी इन्विरा गांभी को हिनी में संबेदना गा केले कर र १८ शेड कर्नुबार ३१ वर्ड र्राष्ट्रपार को प्राचलसाय के साफा-दिक समांत के प्राथम भी विद्यार्थी ा के कर सम्बद्ध दो**र्कियों का** नाम-धात संस्थार हमा । भीर वच्ची को <del>ब्राफ</del>्रीशह विद्या । वस्की ने बाता को विद्यार्थों भी पर्श पिता क्र शकेल की किवास में निपन-

अमृतसर में चादर्स विवाह वत दिनों बार्य समाज करसक क्त क्रमुक्तक के कार्य सरकत औ पं. बह्दास की रामानन्द्र **रा**म निवासी की विदुषी सुपुत्री अनूर क्रमारी तथा कोटे आस की के शर काने का सीमान्य मिसा।

शुम विवाही पर सभा के कार्यक्रमात ेबार्व समात्र सा**स्था** सर **का**श्वस**् के** वर्मशील प्रचान भी एं. स्टब्स जी नरकता काता है। अधन को रामी क्या सारे स्थानों का के ही तो वहां से दया। अन्यवा शही विकाह संस्थार के क्याने वाले वतम से वतम सरहव है थ मध्यास शर्मा की के यर पर आर्थ समात्र के सीम्बर्झार्ड भी व', बीजव वार्वसमाज श्रीक्षत्र कियागः जी रामती इसी सम्बन्ध में यह परा रहे थे। समाज के que-का सर्वय वहीं सगता था। वसकाय से प्रमाहित हो। यर पर सरसंग

का प्रकाह बहुवा या । दीनों विकाह संस्थार वर्ते ही समारोध से सम्बन्ध हर । में पं. रोक्करत्व की शास्त्र के पण प्रदर्शन में कार्य होशा रक्षा । पं, ब्लाइस की का सकाज देश तो दर्शनीय है। आवे समाज के लिए बका ही श्रेस है। ये. सहरत जी शर्मा हवाब, मी क. हमसास्र बी, बा. मंगाराम जी. भी अलदील जी सारे ही समझ्य के भाई बश्चिम पंचार कर मंबळमण कोने की आसीनोंद देते रहे । बढा मनोरम द्वाव मा । श्रमा के बेब प्रवार के वैकातीय काले परिवद की वे दान विकास का कार्ये, समाक्ष के सरकती का वेस तका वं. सहस्तात की था थां.

वाच प्रशंसनीय या । वधाई

ग्रहक व प्रकारक 🏻 सालोकराज की काली कार्य प्रदेशिक प्रतिनिधि समा प्रकार कारान्यर हमा बीट विकार में है, विकार रोट साम्रावर से प्रक्रित कार कार जनत सावासन नेक्शमा इंतराव जवन जिन्द वन्द्री बाहरूपर शहर से प्रकारिक मासिक-ध्यार होरेपिक प्रतिनित्त सामा विकास



रंतीकोव १० २०१० (आर्थप्रादेशिक प्रतिनिधितम् एंजान जालस्थर का साप्ताहिक मुस्रपत्र) स्व गाँव का सका ११ को रेवे

Regd. No P. 12

वर्ष २४ अंक २६) = श्रीवाङ् २०२१ प्रविवार—दयानन्दास्य १४० - २१ जून १९६४

(तार 'प्रादेशिक' जालन्बर

### वेद सृक्तयः

इंन्स्ने धनस्य साराये इस उत्तर इन्द्र को धन को पर्याप्त के जिस पुरुषते हैं। परेश्वर धनवित हैं, बहु सन्दर पेश्वर उसी का टी है। इस कसी धन के धनका अवकार सहान अवकार से ही पन कर।

वसी थन के धन्नत सरहार महान् भगवान् से हो थन वरः बरने के सिव अर्थना बरते हैं वह क्ति हम पुत्रों को बनपति बना है। इन्द्रसिद देवतात्त्रये

बसी इन्द्र को इस देवतावरे दिव्यतुष्की, दिश्य शक्तियों दर्श दिश्य विचारों की प्राप्त बस्ते के हिक्के पुतारते हैं। अंसार में तो देव हैं, कहते समुजान के विच भी मुनु का स्वाद बाहते हैं। महत्ती बद्धार्जित

हे महतः — विद्वार होतो ! भाग प्रकार की विद्याकों को सामने वालो ! करा का की सर्वना करें। करा का ही सर्वना करें। करा के हैं, वह में सहाज है। इस के सिनाव चीर किसी कह रेवण की पूता सक सरें। का सर्वन बनो जह सरेंग महा सर्वन

### वे दा मृत

श्चान्यन-यन्त्राः श्चो३म् श्रकृतोपस्तरगणिम स्वाहा । श्चोम् श्चमृतापि शानमति स्वाहा श्चोम सत्वं पगः श्रीमंपि श्री श्रयतां

**साहा ।** वैत्तिरीय वा. प्र. १० वनु. ३२-३५

ं करों — हैं (काइन) हुआ शावकाश ! यू जर वाधियों का (पंत्रकारात्र) आपन हैने तात्र वह आव्याहर अने काठा (वरि) हैं ! काइनार का ! तु (वरिकारात) ने पेक्ट है वह (अपने) वर्ष्याहर (क्टा) नेर्विट बात (हैं) अपनी होता (वरित हुन में (क्या)) सिंध हो— हैं कांच का काटा, पास्त्री चारे पत्याहर कर वार्ड । यह नात्र हो— हैं कांच का काटा, पास्त्री चारे पत्याहर कर वार्ड । यह नात्र होता है। साथ होता हो । इस से कार्य नीत्र साथ कार्य होता है। कारण होता हो साथ पत्र हो । इस से कार्य नात्र होता है।

बार --बार के मामस्य हैं विकाद प्रदेश कर हुआ है। इस विदेशका है। उस विदेशका है। इस विदेशका है के मुझ्ले के हिए तथा पत्र पर है। है के मामस्य है को है। इस विदेशका है कि मामस्य है को है। इस विदेशका है कि मामस्य है। है को स्वाप कर मामस्य है। है को स्वाप कर मामस्य है। है को स्वाप विदेशका है। विवाप विदेशका है। विद्याप है। विद्याप विदेशका है। विद्याप विद्याप

### ऋषि दर्शन

उपासनायुक्ता योगवृत्तयः म्मु प्रयोगवर की वपासना में जो बोग की ठक्की व्यंत्व आप से वृतिवर्ग काती हैं। अप येथी उरासक के जीवन में क्यासना योग के सामनों के क्यासना योग के सामनों के क्यासना योग के सामनों का

#### सर्व बलेशहन्त्र्यः

पेकी पुनिकां, एक्कियं, सारिकक जीवन की पाराएं धारे बकेटों की भार देती हैं, बारे दुःबों को साम देती हैं। नवी पूछ का रजीशुरा के जो बाव-मार्च करती हैं। इन से बह बकेटी कारते हैं पर मुख्य क्षासना करें वा सहा दिवारा हो जाता है।

#### शन्त्यादिगुज् पुष्टाः स्वॉक्टिवेश्य स्वास्तास

वो इतिकां श्रस्त हैं दूरत में साथक भारायक व्यासक को सिमली हैं, वे रागील भारि पांत्र शान्ताओं से पूर्ण होती तथा श्रमु क्यासन भी शान्ति भारित सुबंधे में तृष्य होते हैं। भारत हुन्स बहां ?

भाष्य भूमिका

स्रोह है। इसरे दा संब है-

(लेवस-पं) बंदनराम वा (जहांका वाले) वासन्धर)

निष्ठात दिया और सायक में बोडे

सबद में बहुर बहर कर हो । इस

तिए **प्रोक्षल घरको होनो**,चाडिए

वड हमें किराबा के मकान से चटा

कर लग के मधान में किया

वेगी । अपनो बहिनों के विकास

भो हमारी धरेबा सबास सर

पर निभेर हैं। क्वा इसने प्रांत के

प्रधान को बहु ब्यूते नहीं सुना सा

वि इसरे विश्व पुत्र में वन का देश

इस विव दो सफाइ में समाप्त

ही बबा क्वोंकि इस के निवासी

हार प्रकार के प्रजारी हो गये थे

भौर भाग रोग में व्यस्त ये । इसारी

गावियों की शक्ति मी सन्तान

से करेगो ।

### वीन लोडों में एक मन्दर किवलि ने क्रव दिनों में हा दोगहता

पित तारु जीर देव जोड़ । बड़ो पित लोक पर यज्ञ से क्यीर देव ब्रोड पर विकासे विजय पाई बातो है वहां सनुश्व स्रोत सन्तान ब्रारा जोता आवा है । माता-पिता .बोधित हैं बन तक दनको सन्तान बोबिन है। यदि हमाने समाज बावतिक प्रार्थे में संवान हो तो यह हमें कामर रता सकती है। नेष्ठ मन्त्रत बारने मावा-विवा कत, जाति और देश को साड रसवी है भीर युरो उन सब के मान को मित्रों में दिला देती है । साम स्वरं देते काम काते हैं जिन से हमारा नाम उपत्रका हो भ्दौर न हो सन्शन को इस बोम्ब उलाव बच्छा होसे तो हम विभावन बनाने हैं कि वह हमारे गीरव को से पन्दान् वहां बात कर न बाते। महाए। भोवन सर येन केन प्रका-रेख धन पश्चित कर सन्धान के किए होड़ जाने को चिन्ता में रहारे हैं। प्रमु के सम्ब्रु व प्रदाने के सिर भेंट त्यार करने को किसी को

भावसमात्र के प्रसिद्ध संस्थारी महर्षि त्यानन्त के पश्च अकत कौर सवर भाषो धर्मीवदेशक क्वर्तीय स्थामो सःदानन्त् जी महाराज ने मोहत्ता महंदरूमां में रेंद्र को कवा काने 📰 बता बा— 'भाई हज़-स्पट चीर मुद्र से **प्रा**पनी सम्तान के खिब प्राप्ते क्षिर पाप की सठही क्वों बर रहे हो ! परलोक में तुन्दारी सन्तान सहा-सव नहीं होगी । सन्तास योश्व होगी हो साम कमा लेगी क्यौर श्चवोग्य होगी तो बेईबानी से **इब्द्**डा किया हुचा तुम्हारा सारा पैसादस दिन में लष्ट कर देशी। से उदाहरण हैं कि 'नासाबड

फिज्ञानरी।

### पं. नेहरू जी के निधन पर रोड सभसं व श्रद्धांजितियाँ यानसेन लक्का रहा क्रिक

क्षांत के अवदृत वं, जनाहरकाल वी नेहरू के **बा**वस्थित शिहन प्रा बार्य संसार विद्वस हो क्या है। वारों कोर से शोक प्रशानों का तांक समा हुसा है शोक समाबो द्वारा स्वर्णीय नेशा के प्रति श्रदा-व्यक्तिको व्यक्ति को गई वस्ता उनकी. मात्या को सदयवि के लिए प्रमु से पार्वश्च, को गई' । आवतसाउ हुशिकारपुर, **का**र्यसभाव प्रधाना पुरस्ता शोहकड, झार्वसमाञ सँवटर < शंडोगड्, व्यावेशसम्बद्ध साट'ता (बम्बई), कार्ब प्रचार समिति

बरक्ई ते. ४, कार्यसमात्र कोहरी चीट बटाला, बावंसमात्र पेरवर नन्दर्द, बावें बुश्क परिषद देहसी. वार्वसमात्र दशका. आर्यसमात्र रंघीवी (घरमाव) ।

तका पुष्टिकों की हुई । सहके, बहाँ ही रहना पूर्वक प्रवासाओं परिनवां लेकर नहीं गये और का बट कर सामना करते । आर्थ व्यक्तियों दो धनके पनि हो सबै। कुछ ने व्यवने किये हो इन्हरून नेश और प्रसिद वैक्षाजिह विक्रिक होबान चन्द्र को एस. थ. ते धार्थ क्याया।' यही श्रवस्था इस सव समान किला के कार्विकोत्सद त्री है। चपने वास-वध्नों के सिर सन १६४६ के मक्सर पर चयने इर तकित व अनुदित ध्याद हारा वक परना बोगवाद को सामग्रे प्राप्त करा हैंगे सुनायों में कि सरहीर है स कारत मनुष्य करत संदन्त क्षे उनके एक जिल्ला क्रिके को बाल-बरने के लिए इस नहीं ओहा दाश शक्त थे। विसिश्त सहोदक वाता । इमारी रहा इस सिकाफे ने वनसे पूत्रा—'बाप दे स्वा की सो है जो कादर से भी सालो

दे और जिस के यह ेस की फोर

भी कोरी है। क्वा वह बोदन है

विस के बान्त होने पर पश्चेशी कीर

व्यक्तिय यह कहे कि यदि अनुक

'क्रियोगात ।' व्यक्ति व होशां तो क्या सम्हरू विंसपस ने आहा कि—'वे तो प्राता ? यह तो यांचन का सहे हर तम ने किरावेदारों के जिए बनवाई नहीं। हमें सर्व प्रत्यक्ष बन्धें हर हैं। अपने सिए वस बसदा ? क्तान को तेस सतका पार्टिए बह नोता कि दस ने बीच कदकों जिस से सत्रवा सोक को जीवा चीर दो सबकियाँ, के विवास किये जान सके चीर काकोच उत्सार है। विशिष्त बोले कि 'ने तो पुत्रों जा सके।

वनाया है ?" वह मित्र शेले —

'बेन कोडिवां बनाबी हैं ।' विश्विपत

बीने फिर प्राप्त किया कि उस है

चीन रहता है ? बडले सरो—

### गिंपदेशक महाविनाज्य हापुढ

ए० वर्क में विकासिकों au जर्पर जुन बाख के बहुत तब होगा। राजाने केरारी भी 🗱 प्रमार्थिक थी कार्य प्रविक इस विकासन के कांचार्य है उनका सारी बुलकासय भौर १३ वर्ष वह इच्छा किया हता त्रमाम् सस्कार विचासनः के काम में का रक्षा है।

रास्त्रार्थे नहस्थी सर्विक विरोयकि जी ६० रा**यकर** जी वेहलको धारीवनिक स्थ से पहाते हैं भीर भएने अनुपम सनुमन से नावी क्यहेराकों को असम्ब साध पह वाने हैं।

एक धीर विशास की निवृत्तिक शीध हो होने वाली है विद्यासन की कोर से विकार्वियों को भोजन दुस्य, कुल, पुस्तक सम कुल सुपव दिवा जाता है । स्वास्त्राओं शंका-समाधानी वया शास्त्रायं को विशेष वैवारी कराई अली || सामानेस भीर परिषमी उपदेशक बनने के रुष्प्रध विष्यर्थी शोध ही शामैन्स पत्र भी ब्राधाय ती के नाम भेजें। भवानी दशाह विकास सन्त्रो

व्यायीवदेशक महाविकास्य हापड १.२.

### शोक समाचार

मी नेजाराम की सक्रमीक र पौ. यो. सभाकी कहे **क**हिन गोशाहेको का १०६-६४ को साक-स्मित्र देशांत हो समा । काफी ध्यवार करने पर भी स्वस्थ न हो सदी । कार्यसमात्र वर्त्व सुवा (बालंबर) की कोर के सबके परिवार को धेर्द व शांति जनका करने की बस से प्रार्थना की उर्व त्या योमाटेको की कारका की सहगांत के बिए ईस्कर से शार्विक लबंता की गईं।

> नीवृरिवाराम कंग्री सनाब

सम्यावकीय-

## त्र्यार्य जगत

वर्ष २४] रविवार २०२१, २१ जून १९६४ अंक २१

आर्थ प्रादेशिक सभा का नवीन निर्वाचन

ma mचिंद प्रधिवेशन पहलती १४ वे कार्य समाज लोडयद काम्तासर में हका जोकि स्रति बचव दंग से सम्पन्त हमा । चार्च उगत वे होत्रहार वपस्मी समा के प्रधान क्षं रवा राम वी M.A. M.L.A जे असामी वर्ष के त्रपान पर के श्चिद पृथ्य महारमा धार्नद त्यामी श्री सद्वाराज का नाम पेरा किया **बो कि वने हुएँ, प्रस्कास मी**र अधियों की गरावाहर में वर्ष सम्पति से लीइन हुआ और रोप सना के व्यविकारी वर्ग तथा

विगत हो बार माल पूर्व समा

वक सप्ताह के भीतर करनी सारीरिक आसायता के कारण क्योंने यह बार केने से क्रानीकर करते हुए समा कांगी इस पर सार्थ बन्तुओं दो कल्पन्त निसन्ना र्ख । इस पर स्वामी जी ने पूर्व बत समा को स्थायोग देने का बच्च दिया।

क्रांबरच स्थानते का निर्धायन दन

को भौदा गया।

समा के व समाजों के प्रतिसिध चौं को नव सिरे से चुनाव करना चाविष्य वा नहीं। इस विवय वर समा की स्रोतरंग सभा १.४.६५ हो सम्पन्न हुई भीर स्त के निर्धायान सार १४.६.६४ को रविवाद १ वर्त दोषदर साई ग्रहमा Sepale विशास भवन में समा सम्पन्न दई जिस से **१०० के शगसग प्रतिनिधियों** ने भाग विना सर्वेद्यस राजनी अंडोण्यारक किया गना अनु ध्यक्षक स्वयीय पं० वक्षक्षर-

स्राक्ष नेत्रक जी का हो जिंद सीन

रह कर शोक प्रशांव पास किया सबर क्षीर रखकी काकी सारत गक्तेर्वेट के प्रधान व संजित्तों के तथा धनकी सुपुत्री भीमती इन्त्रि गांधी की को मेजने का जिल्लान किया गका।

क्रम्य कई विक्यों पर क्रां प्रतिनिधियों में प्रथने सुधाव तथा विचार रखे जो कि सभा के विचारा

थीन हैं। इसके बाद सब श्रीत-निधियों ने इच्छा शक्ट की कि सब चुनाव इसी अधियेशन में ही किया जार इस पर कर्र प्रतिविधिको ने **चा**र्यत स्थाई करन क्यान जी भी बाजानसार जिल्हा स्वा है। सन जुनाव काधियेशन में ही किया

\*\*\*\*\*\*\*

विना शिवैदा की नैना को सिवता नहीं किनारा दिस्रसाका है विशा राज में नामिक को श्रृथशारा वगर मुख्या किसी सुरूप पर इस परित्र की कर सें स्वयं प्रतिकृत रक्ष सकता है ख़ुह की सुवश हमारा

स्कारे ही क्यों हक में भी तो साथ तिशाता होगा साथ समय के शुक्तों को भी गई। जगाना होया इपर कामा बाह रहे हो सुरू हो इसिया वास्त्रों सब से पहले हम को सब को प्रथम ब्रामा होता

देख मंत्रर में पड़ी नाकको किना बसाइ क्यों रोता है दिग्मत करके सीधा पस त धीरक क्यों सीता है बाल गा है इस दर सहते दल दो उस्त पायेगा निशंगें जिसर के बाद इमेरा करमोदय होता है

\*\*\*\*\*\*

বিৱৰ নিৰ্মাণ

को बह कार्य सींपा कि सबन्ती बहां. बाद : इस पर श्री शतकात ती इंडी बरम्बा देश्वी से मान्य कि रक्षक्रम की का नाम वेश किया भीर इसका मनुमोदन सगभग सभी प्रविनिधिकों ने दिशा । तथी ब्द्रवत से प्रधान निर्माणित हर। रप्रकास के किए, भी स्टरंच की काली भी कि जीवसैंट भी बहत. भी कि प्रसिक्त भी चरवीगर टाः टड-३ चम जी शस्त्रा वे शम पेश किए यह जो सर्वसम्मार्ट से पास दूर। संत्री पर के लिए

वी ज्ञानकार भी भाटिका तथा ouzi'सी एक के क्रिए जा॰ देवजलवी महाजन क्रमतसर, केंद्रन शिवशम कोर से धन्तवाद । र्थ के नाम बहसम्मति से स्वीकृत १. की रताराम जी वस. ए. प्रधान

कोपाम्यय भी छा० संहोक्सव जी पुस्तकायक भी भी। वेदीसम की रामां निर्वाचित 📰 किन भी नको साथ के कालम से ही न्हें है । तरपश्थान सहारमा इसराज अवस्ती का प्रश्न का गया जो कि श्राधियेक्स से शंतरंग सभा

क्य, और दिस प्रकार मनानी वाहिए। रातिन पाठ के शास सभा विस्थित हो। इस काला करते हैं कि सभा क व्यक्तिकारी क्यों तथा व्यवस्य सरस्य व शाहर से प्राप्त **३५ श्रीतांगिय समा की वर्तका**ज दशा को देखते हुए उसे ड'वा उठाने वें कोई कसर ;नहीं रखेंगे। शकि वकानंदती भी यह देद प्रभार काटिका सदा पुक्रती पर्स्ती रहे । बाहर, से कार हर प्रतिर्भिषयों का तथा क्रांत-बेशन को शान्ति पुषक सफल बनाने वाडे सम्बने का बार्च अस्त के

२. मी धे.मीमसेन जो बहुस उपप्रधान ३, भी हा, हुदमचन्द्र जी अस्ता .. ४. थी ब्रि. इतिराम जो भी र्प० स्टब्स्स जी

६. भी ज्ञानचन्द्र सी सारिका सन्त्री ७, भी शिवरास बी चपसंख्ये। ८. भी हो। देवकत जी

श्री सन्तोपरात की कोशास्त्रम्

०.मीत्रो.बेदीरामजी शर्मा पुस्तकाव्यक् श्रातरंग सदस्य २४

समाज

किसी व्यक्ति विशेष देश वा वाविका नाम नहीं है। व्यक्तियों के समृह का नाम ही समात है। समाज हैं दिया धाचार विचार के व्यक्ति होंगे तरसस्य ही देश व वार्रिक का डांचा तवार होगा। वर्षमान वृत्र में हमारी समात्र का दांचा क्या है और दिस तीवगाँत से परिवर्धित हो रहा है वह सहमे की बावहदस्ता नहीं है सच, मांस, सहिरा, मैथन, मासर्व पहार्थी की क्रक्रिक्स सी कात के समाज को ब्राकोशीत की कोर है। जा रही हैं। क्रम- क्रथेक स्वर्तित को स्वयस संबंध करना होता। तब समाप्र लबंडी प्रश्नी करेगा। मनभेव बेटवायी के अनुसार पहले हमें ही मनुष्य बनना है । वही हमार) कार्य

च्यता का परीच्या होगा ।

—व्य सरमाधी

#### (गर्वाड से ब्रामे ) चस चित्र से भी जब इस्डिया

काष्टिम क्षे तिकासा सान्त न हाँ वो महाराजा से मीपा पुत्रा गया। महाराजा ने सरसदा में खामी जी का नाम किस भेडा। वय विसा-बत से गवर्ब जनस्य को यह बर्त्सना थी गई कि स्वामी इयानंद क्षेत्रे शाबदोवो को क्ष्मार करने के लिये सामानयों छोडा गया।

बह वृतान्त्र सुवस्य १८ मही-शय ने कहा कि इस पटना की रोशनी में यह समसना कठिन नहीं है कि स्वामी भी की विव विकास बाजे धीन ये झीर सरकारी वाक्टरों में प्रत्या तीय इसाम क्यों उसी Final I

कार्यसमात का इतिहास (वश्रम भाग) वर ३९१-२२ तेव वंद इन्द्र सी महर्षि को विष देने के श्वयन्त्र चें क्रीय र सी शक्तियां स्वक्रियक्तिक यो इस प्रदन का उत्तर देने में भी

बहत इक करपना से काम जेना पहेला। दोनों हो चार्ने साथ है। जमीं बान बैझ्या स्टामी जी से उन हो गवी थी इस में कोई सन्देह सरी चौर यह भी असन्तिय है कि कंग्रेजी सरकार राज स्थान में लामी बी के बढ़ते हुवे प्रशाद से बहुत ब्बसंतुष्ट थी । यह सर्वधा सम्मव है कि वस समय दोनों ही विरोधी शक्तिवं मिल गर्था हों। सहकारी दापटरी द्वारा महर्षि के रोग की ववेदा देवत तन्ही जान की शेरगा। से नहीं हो सबती.....वह सन्देह निम् स नहीं श्वीत होता कि महर्षि की मृत्य के बीड्रे देवल यह देवना का हाम नहीं था, कोई जबरदात हाथ था को पर्टे के वीसे से इशाना देशहा था'—कार्य समाज क

इस स्टब्स्यों पर गम्भीर विकेचन बरने के परचान् इस परिश्वास पर पट थने हैं कि बावने समय का क्यातनामा संवारक जिस से कि

afaater q. 353....⊃u

स्वातन्त्र्य संग्राम और महिष दयानन्दर्जी-ः व विकास स व न १ क ने॰ बी पं, सत्पत्रिय बी-खास्त्री सि॰ विरोमशि :

प्राच्यापन-दराभन्य बाह्य महादिकासय हिसार

XCICKCROBIDIOICHCHCHCHCHCHC+)CHCHCHCHCHCHCHCHC विवेशी भी परिचैत हों. वह सब के | वह राजा जो सहविं का विव शिव्य वेकते २ एक बेरवा हारा विश्वविद्या या. जिसके नियम्बन का सहिक वा कर सारा जाने और वह कि वह बोधपर पथारे के. इस कावर्षकारी वस राजा का राजकीय चार्तिक हो. सन्दिश्व प्रसंत की झाड़ोचना वह जिस की मागरिक। यह नेत्या धी करने में एक शब्द मुख से विकासने क्ष्मा वह राजा शासनय से सहवि को दिम्मव नहीं कर पाता । इससे को प्रचाने में कल शील हो ? यह स्तर है कि समे बात या कि ध्व सम्भः नहीं झाता । जब तह सहवि वारा कारब सरकार को क्रोर या दमबार शाहरेट काक्टरों द्वारा में ही किया जा रहा है. उस्की-कार होता रहा नभी तक वन की दशा को केवल मात्र एक बद्दाना है। भव वांद तसने कोई बदम चठाया मुम्रको गयी । परन्तु वद सरकारी राक्टर चलीमदीनवां का उलाज हो विर्यात से क्या न पायेगा । इस वारम्भ हुव्या तथी से महर्षि ही सारे विवेधन का शब्द शरी है कि दरा। विगइने संगीईकीर वहां वह वि विदेश शस्य ने ही किसी को प्रथमी कठपुरसी बनाबर विपदान मृष्युका भास हो यहे। स्टॉक् बास्टर के पीछे सरकातीन सरकार द्वारा महर्षि के प्राणों का हरण कर

का हाब, इस के साथ २ आकटर भवना मध्ये सद्ध क्रिया। मदोदर लग मुख्यमान होते के उतिहास के सन्तर्रोक्तिय स्थाति कारक मन हो सन महर्षि से शीने शब्द विदान भी ५० समझ्ला औ हवे थे। वर्वोक्ति सहर्षि ते ही सब बो॰ २० ने इस सम्बन्ध में बो से बहते इरान पर बडोर समा-सोड दी, वह छड़ोंने सेसड दो वर्गाई को कि इस प्रधार है—

सोचना क कुठाराचात विदा था। चतः उस ने सहर्षि को ६० होता के १. ५० भागराम जी श्रवमेर विशास परिमाया में बहु शील विश जिल्ह्मारे औं कि संबंधी की सरकार को विया जिस का कि वक्षिण्ड सनुष्य क्षोर से महर्षि के उत्तर विशेष की पाय के लिये १० में न परिसास गुष्कपर छोड़े नवे थे, उन्होंने बनाया पर्याप्त होता है। माल वटि कोई कि सन्दन के इविद्या क्साफिस वैका प्रधावशास्त्रो स्वक्ति वैसी में तरकाणीय राजनेतें के एक स्थवन विद्य्य परिस्तिविद्यों में मृत्यु का हारों के जो रिकार्ट हैं की दे रिकार हो जाने वो सरकार क्रम सोक्षर पढ़े आर्थे हो महर्षि की सम्बन्ध में सबहरानेव जानधीन क्ता संस्थायी प्रत्या को यहार्थता करने का प्रकास करेगी । क्शन्त सामने का सहती है।

क्ष'व बवायन्त सैसे जगदिस्यान २. श्री फिरोचन्द्र एस० ए० जो व्यक्तिको विकास से सत्य हो दरबर की मोर से खक्ताना जावी है. बियदाता का भी पक्ष खग समाय का इतिहास किया रहे हैं. वाता है परम्त संबंधी सरक्रम उन्होंने ब्लाबा कि महातेब हरायो-की कोर से इस दक्षत कांब्र के भवा शंपाम के सम्बन्ध में महर्षि वर्जायों की सोज सदना दंड प्रवान स्वानन्द् का तथक्क २ जिल्हा सम्बन्धी नाम मात्र मी श्वरन भ्राका है। नहीं किया बाटा । बता क्या कि

इस सारे वर्क कियाई -से इस आवश मी हम ।

नहति ने जनवन वें जो अपूर्व भागृति करमन की क्या में राज जीविक क्षेत्र का बाहुरूव गाः । विरन्तर बढ़की इस फेटना के अब से का समय के बंगेजी राज्य ने एक मयका वहनन्त्र स्थान सार्व के शाबों का हरबा कर जसवी करिन को उसाने का कार्य किया ह विका के अंत्र में वार्य समाज की सराहकीय सेवाएं हैं।

### शिचा सम्मेलन में भाषक

कार्य समाज गोविन्त तथा के वार्षिकोत्सम के बावसर वर शिक्षा सम्मेन का बारवोजन किया सवा क्रिस की चन्यकता सगर प्रसस (मेबर) वी रवन सास शर्मा ने की। सम्मेखन में रं० शासरपति शास्त्री ने वर्तमान शिका पद्धति में बामूस परिवर्तन करने की मांग की। और वहा शिका सादगी व सच्याई सिखा ने वाली हो। इंग्ह्रीय कार्य समा कानपुर के मन्त्री बी शस कार्य (समासर) ने अपने भाषता में कह कि देश भर में सरकार वे बाद व्यार्थ समाज की शिक्षण संस्थाएं हैं। शिक्षा के से ब में कार्व समात्र की सेवावें सराहबीर है। स्त्रो शिक्षा के जिस यहर्षि इयानन्द् सरस्रतो के व्यादेशानुसार सर्व से प्रयस कार्य समाज ने पग बढावा छोर सहिन्दों के लिए अस्ट में प्रथम विकासन असम्बर में स्रोता। श्रो कार्यने महर्षि स्थानः ह के कहर प्रेथ की वक प्रति वयर व्युत्त को स्वाध्याय के जिर पेश को । नगर प्रमुख की शर्मा ने बार्च क्रमा विद्यालय गोरिन्द नगर की साताओं व कथ्यापिकाओं में पार्रतोषक विकास किए। विद्यालय के कार्बी पर वसन्तवा स्वस्त की स्त्रीर सार्व समान को सेवाओं की प्रशन्ता की। सम्बेलन में बाशकों ने मन्दिर क्षी क्योति नाम हुःसर पेश किया । सम्मेकत में की ६० त्रिश्लोक कर्न शाबों व मी राज मक्त विसटा

नरुको व द्याकार्थ स्टाम के

तुश्राम रा नई रोपार का सकत है पूर तेय की स्थान के स्थान कर स्थान कर स्थान के स्थान के स्थान कर स्थान स्थ

कार बंधों है रेक्ट में देखां बार कर में मीड़ियें है तार में है है ता बादा में मीड़ी मीड़ियों के मीड़ियों है तार में मीड़ियां मीड़ियां में मीडियां म

साब श्रोग पता हो दाने का

बेला के अलिय रहीते विविध

कारा है बहें हो। वैन्ने क्षी रावधुन गारी हुई एक क्की दशही के सम्पूत मुक्ती. क्षोग विश्वसित हो उते । शोक मन्ब स्थान्द्र हो यह वह से सहस्रीय का परन्तु अव स्वर्गेश नेहरू स शब रन के समीर से गुआ वी क्षेत्र अपने को सम्बास न सके. 📹 एक ने तेल 📰 विष् शिक्ष क्रिक्टने तम गईं। वे बोम जे aucec प्रत्ने सम्बन्धे धे सा सर भी न रोए वे वे अव रोप और **क्ष** रोप विकास-विकास कर रोप सामी उनका कपना ही कोई इसल्पर कासे निवड़ थना हो। भीतक शाया ! नेहरू वाचा !... बाबा ! बद बोल्टे क्यों नहीं बाबरे की करा 'यक भीर भारतक कार्र प्रस्ती भा में सो रहे हैं,

### जनता पिय-स्व. पं. नेहरू जी यांसे देशा राष (१-में वोर. पर. गंद वर्ग रिजी)

ये mi कि शराब-दृष्ट भी एनते | श्रीक हो क्षणा था। कात निकर | ते क्षणा थीनते भी गुनु के काराव्य | नाम के तिल पहुंच त्याप गर्म | अस्त के तिल पहुंच त्याप गर्म |

त्त्रस चौतिक गरीर ब्राप्ट कार्रो

सो दिश कीर करनो था तो पाता पाचा पड़ा का रहा है कात निज समिया बात का है। कात निज समिया बात में। इसी भीच पानी कर्षी कोनों की कात नहीं का की की नोंगे की कात नहीं कार्यों के कारणोहरूव

ती राष्ट्र भी वार्षी अवतर्गस्य से तारे प्रत्ये स्था की तर्ग प्रत्ये स्था निवास को से किया मार्थ स्था निवास को से किया मार्थ स्था निवास को से किया मार्थ से देश से त्या से देश से त्या साथ से किया से

महोत्रकों में रहपति आकार बह शब परता का उदान करत थि बढ़ांश्ति वह विशेष स्थान तमा का**वों** जोग झांलें विशास हा रसाओं है वह बढ़ते हैं भी, जेता मीस सम्बे मार्च दे ब्रास्ट्र दे : देश : इस शोह की वेसा में शास क्रिक प्रसार केर काम दिनक के साथ नक्ते हरवर्गे प्रकट को शाकस निर्मित कांध्रें टीड रं. बाबा है थी नेहरू की वेश में इस नेवस की निर्वाप कांकों के सामने वे वही बढ़ांजींस और एस हो थीं सोय पक से रह कर पालों कर सकती है कि हम विश्व में शांति इसरे में मृष्ट बाको क्षारा बाकेकार बराद १ में बहु जत में 🗗 सब से हो रक्त हो । बोड समा पर को पहले तेना हुं मेरे देश के हारा (सर्व) राज बाक्ष का वह विकास- विवस में शांत प्रंग नहीं होतरे हैं तक करूप राजवाट के संबंधि वह बाहका हूं कि होत राष्ट्र से व्हुंपा । भाषा नेहरू क्षवर को इत का क्रमुसास कों।

में व्यवस्था हूँ कि यह स्वक्रल में विक्रमण कीर क्रमूलूर्स स्था है। इस से नेहरू की भी दिश्या का स्वद्य में ही स्वावध्य क्रिया का स्वच्या है। जोगों के हिस में क्रम के सीठ कहुट जार था। होते हैं। में में कहार का व्यवस्था । कहीं के ही हम था। वाहन्या। कहीं के ही हम थीं में वीड़ा :--

काउ विके भी गाणीर के सामें तो कब भी गुराना हूं, व्यवंका बर-जादियों की भीड़ का दूरन ने जो के कार्य हा: बकात है; बातों हैं करा राजों भी बार २ दुनिहींदे होंगे हैं बीलन पर राज होंगेर पर जाती हैं जिल को जाता बज्जी के च्या करा को जिल कहाना को भी कर सामेंग्रेस कर बहुता को की कर सामेंग्रेस कर दूर आजा होंगे

आर्थसमाज श्रीहरी चीक, बटाला (सुरदासपुर ह.ए.) वार्षित पुत्रकर में इताई कर इर वो कावस्थात कोवर के हो इस है। वब वैश्वर बचना कोवर बचना २० जुन १०० बमा बचा देखें वार्षि पुत्रव में आप है कर्षे।

महादेवसिंह हपान झार्च समान

### श्रावरएक मुचना

जागर पा छूपा।
जिन शहरों के चंदी
नक्षेत्र माश में समाप्त हो
चुके हैं उन्हें गण द्वारा समा
की ओर से सुचना दो चुको
है कुरना करना अर्थना अर्थन मास का मेनकर इनाई करने

व्यवस्थानु

#### श्रीचन्द्र सेनजी श्रार्यहितेषीः विस्तियल बी०वन० वहल म्हार्थआ वासे बाहर का जीकी सफल धनरीका

# कार्यक्रम

कार्व पादेशिक सभा जासम्बर तथा उनके झारासी सार्ग की भी बीतकार शसिद्ध क्वता प्राने कान-काफी समय बना देती है। बडक mal कार्यकर्माकी दं पण्डसेन साहित का कहना है कि भारत में कार्ट (रुनेंद्र) वर्णकेल्य सभा सोनी-हम क्याने कालियों में बाओं की का जिल्ला के बाहर के बाहर के कार पारते में साम प्रदेश. रहतलान, वस्तई मादी में प्रचारार्थ को काल बाजी सा गरे हैं । सभी कार्यों की वर्तनिविध समार्थ प व्यक्तिकारी-असा दक्षा वार्च समाजें क्रमें वेकी वॉक्स जी के आपताों से आध रुटाएँ । इस समा की कार्यिक क्रकथा वही शोचनीय है ईसाउँ **'बादवियों के हथ-वन्हों** से सावधान करने क्या शुद्धि मादि वेद प्रचार कार्य में सभा सम से बाये रही है वनता में इमेशा इस समा का अवेगी और साथ ही साथ वर्धार्य क्रम्ब दिशा है काम भी जाते २ पंचित

क्रमेट्स दा पास्त्र क्रमेंगे क्रम सन्। **बच**ा विशेष कर पन से सहबोग देखर पुरुष के बागी वर्ने । उद्व समा सकर वर्ष से उपर कार्यann की सेवा कर रही है (वित भी प्रश्न समा के पुराने उपदेशक हैं मञ्चत के हर शांत में शुद्धि भारि कार्ध बाजे इन्हें प्रचारार्थ मेवती है एस सहात्मा इंसराज की ने इस समा भी त्यापना वी. वर्षे इस के प्रशास रहे । वर्शमान कार्य वेता सद्दासमा जानन्य लागी वी सालक्दी भी क्रानेकों वर्ष इस दे

भी जाएंगे सभी साथ बन्यु सपने

क्यात रहें क्रम भी सभा को इनका का शहबोग मिसता है यदि इस and को कावित समाना तीय सदी हो और क्रांपड सेवा का क्रकेश अंगे को विश्वास है वि हेरी प्राथंता व अपीस पर आव

माना प्रताद हेती । विक्रीय-स्थानि सका

### यात्रा ( गर्नांक से कारी १

मरसार कर देते हैं। चाहे वह बामे पदना पाउँ सरका नहीं। इसका परिकास बढ़ां साटा पिता भीर साम के जिल महिलकर है वड़ो शिष्टब संस्थान को भी क्य ताक नहीं होता । इसका काना हंग वही हो सकता है कि दशम मेजी के प्राचान विवासी को राज्य क्रकिसों में प्रविष्ट क्या दिया वाय बड़ों रुखें पता पक्ष सकता है कि बहु आये पट सर्वेगे अवस नहीं। इस से वित्री राजेजों में तात्रों की बरमार थी कम हो

संसवा में भी बाँड डोमी। अमेरिका के पश्चात् विश्विपस बद्धत १३ वर्ड को सन्दन पते गए

फीर नहां की प्रसिद्ध २ शिक्स संस्थाकों के शिक्षा शास्त्रिकों से मिने। त्यदन में वैद्ध मिनिस्टर फने.

टावर साफ शरूबर, तेशका रीवरी बाद बारेस लंडन व्, बादि र्वाक्रम विकासिक क्यूंबीय भ्यानों का भूमतः किया । सरदन की विकत विकास कावसमी है विविधिती भी नेवी ।

इस दशार समयम नीम महीने की क्रिक्स प्रवास सामा करें मान्य विभिन्न साहित पनः ध्रपने पावन केल में मीन बाएं। ती जिनियम बहस ने शिक्षा

नेन हैं बरीर विशेषता बावते विद्यार्थियों में सो उस सफ किया है वह पंजाब के जिसाओं बाससी प्रकार वानते हैं। आप विस स्थान पर भी रहे हैं सभी बस्तीय को राष्ट्र नायक पं॰ जवाहरलाल नेहरू के विधन पर सादर श्रद्धांजिल समर्पित

त्रणेता— क'वर जयराम सिंह 'स्थाभी' दयानन्द बाह्य महाविद्यालय, हिशह

विश्व सान्ति के सन् उपदेशक कारका गीरक लागा

कीर्त सापनी समर महीगः॥ .काम:यतन देखा

त्याम विद्या परिवाद अचाहर.

मेले कर सहे

आज राष्ट्र रोवा है सुन कर,

समास्त्रिक यह विश्वन शहरता मारत यां रोदन करती है. क्रवां यक फिर पत्र इसारा।।

> क्षोबन mer · AA नेडक. गार्थेगी । स्य कोरि वाश्विकी. पैकार्वेमी ।

ध्वांनति क्राफिंग करता कथि। . इसमय सहा प्रदाल साम्बद्धाः

चसके बाद बांध्या अन्न वर नेष्टर जीवन काव्य काल्याः।

कर से शिक्षा के केन में विदेशों शिक्षा शास्त्री को विशा काय. सम से नर कन्मर चीर ता स्थलि सेंकर कार हैं। पूर्याता है कि उहां इनके इन अनुवर्षों से बीव्यन्तीव कांसेन जासन्थर के बात साम

मण बरेंगे, नहीं पंचान के मन्त्र आर्थ जमत में विज्ञा-कतेज भी कासे साथ ध्यापेंगे । मन्दे वरिवय को प्रवक दिया है। हम से बार्चना है कि सेने जेला पन देकर लहम तटाएँ

कौर वक्ष से भरपुर करें जिसमें नव-विश्वारत की कीर यह रहा देश शिसा में भी फर्स कनत हो सकें। -अवस्थापक (धार्यवगत)

### हो सिद्ध नाम मोती और जबाहर

कं सन्तमेन की आर्थ दितीयी उपदेशक समा सोनोपन निवासी , WWW. SERVICE WELL WELL WELL SERVICE SERVICE

हमारे पाहे राजनीविक विचार न

मिसले हों पर वे सवाई दे वे

हमारे ही नहीं बॉल्ड विदय के

धादर्श विवाह

भजनोपदेशक बाार्य प्रावेशिक

समान्त्रे संपुत्रो सरोज रानी का

पश्चिमद्रव भी ठा० शंहरतास वी

मध्दर बाबोगड निवासी के संदर्भ

भी महेन्द्र ऋषपसिंह वी के साथ

२३ मई को वैदिष रीति से सम्पन्त

हका । विवाह कार्य भो पं, हानक व

को रासकी तथा थी पै, शिक्षवरस

बो शास्त्री ने करावर । धई अञ्चन-

सश्क्रियों ने अपने हिरीते सबनी

से विवाद धी शोभा की बढ़ादा ।

ब्देव का क्रमाब ही इस विकाह

की सक्तें कही किरोपता की । यदि

पेशा ही अनुस्त्या द्वित वार्षि करे

नो विवास की समस्या जीव ही

सुजभ हो सकते हैं। इ

भी ठा० दुर्वाहिंह भी धार्य

. ब-पाली वर्तमान क्या में भी निर्मापन रोपे प्यारे अवाहर पर केव दवानन्य जी के बाद अनेकी सहायुक्त इस भारत भूमि में 🛐 कोई प्रार्मिक विचारों का समा ब्यारितक्ता के पुत्रारी हुए, कोई केला राजगीतिक शेत्र में चमक -शस्त्री सभी में बदासन्द की जोत प्रकार। पर सही थी। मोती और बशाहर दोनों ही यह जान समसे। मोही से अवाहर मनते हैं वालय है बाज से पनास वर्ष पहले मी ए॰ बोरीकास वी नेइस ने भी इस

भारत में प्रपक्त सम शाम पाया। बढासव में भी राष्ट्र को खेला करने में भी। इन्हीं के भीरक्शकी आज स्वर्गीय पं० जशहरताल नेहरू धनोले रत्य हुए देसे व्यव्दे बवाहर कापने पिता के अला में काफी श्रमके हैं, ५० मोतीशाव भी प्राप्ते म्यारे को उन्मति की राद्व पर देख फ्लो न समाते ये में शनजते कि मेरा ये बेटा संसार में सवाब नाम पाएका भी कांची के सम्पर्क में ब्राजे से धोने पर सहागा बढ़ा। र्यः खबाइरसाल प्रापने कहर विरोधियों

में भी भावना विशेष स्थान

न्में कभी विसी से पोछे नहीं । हैं।

सानेकी बार रोग गये सहास कर

∡ स्काने अने, स्ववन्त्रता संधाम

" सर्वे, भी गांची, जी इन पर बदा **द्धि** विश्वास रखते थे । पार शंच बार अस्तित भारतीय कांग्रेस ब्रोटी के प्रधान बनने का गीरब भी प्राप्त है। सब १६४७ वस्त्रा क्राप्तन में भारत स्वतन्त्र द्वारा सन् १६६४ कार्यात २४ मई जीवन की क्रान्टिय चक्रियों तह भारम से प्रधान सन्धी नते रहे सत्य के हमने से कोई नहीं है

र्षं बचा, बिस सन्मान के साथ इन की धार्मी का बलाव या व संस्कार है क्षेत्रे राज भारा को नई देख विदेश

**新疆** 5 100回位 血过 空门车, 英米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米

जिला वेद प्रवारिगीसभा, होशिवारपर गर्षिक पताब जिल्ल एकार से

इक्स (१) क्यान स. देवी करद वी (२) वय अथान विः राम दास वी त्या जी, इसि सम भी (४) मधी के बुदाराम जो (१) एक बरबी का, देव राज जी ।

हितेशी ये वे विश्व में हो नेहरू बानदान को विशेष कर कापने Members, Antrang Sabba प्यारे महान् श्रावंश देश अकट 6. Pt. Rala Rem 1i. M.A. M.J. A पिका पं॰ मोठीसाल नेहरू के नास 7. Bawa Shadi Lal Ji, Advocate को चयका गर्ने दोनों ही भिद्र नाम 2. L. Japan Nath, H. Soodhi, वन गये, इस सिवे मैंने क्रिका दो 9. P. Thaker Das Ji, Pleader. सिव शहर मोतो और जवाबर-10. L. Milkhi Rum Jr. Advocate. 11. L Som Ray Jr, B.A, L.L.B.

> 12. L. Jagdish Ram Jt, Troe Merchant. 13. P. Water Chand Tu, Protopol 1004

14. P. Jagan Nath Jr. Shorda, Propopal, Declarpor 15. P. Arjan Dave Ji, Joshi, Kathgarla Principal षटा रस्य संन्ती होशकारप

त्रार्यसमाज पुरुक्तिय दिल्ली साधारमा क्रमिवेशन ३१-४-६४ तुरुक्षत्र इन्द्रपत्थ के वन्द्र होने पर रोष प्रकट बरवा ह आवें विविधि समा पंथाय शीव इसे वास् करे कार्य अनुश इस बन्दाय को कशी | वज्राह के कारण मामकर भी नगर सहय नहीं करेगी।

दयानन्द-क्वनामत

'परमेदवर तीनों कालों के व्यवहारों की संशावत जानव है। वही सक्का सारख, ब्राजन्दमय और सक्क व्यस्प है। सर्व रावितमान् परमध्य भी है वही है। 'ब्रॉर्ड्स', 'क्रम' ब्रादि उसके नाम है। उद्यों में सब देशों का वाराव है। उसो की पार्टिंग कराने में स.रे वेद शक्त हो रहे हैं। उस हो प्राप्त के सम्पूल किसों भी करते को वर्तित शतक शही है । क्यीर जो अवह का वर्शन, राष्ट्रक और वश्तवों का उनकाय खादि शहरोन किया गया है, हे सब जो परव्य हो को प्रकाशित करते हैं।"

(साकी सावानय जो)

भाई भाई में अनवन यक डी सांके तो बेटे इक प्राय देश समाधन है

शेजों का कला को सेवा यस सरव है का मन बायेन है है केवल भेद भाव इतना भववान 🎚 इक निशेव है बन से माता थे सन स्थता

निर्मन के बारते प्रश्नकत है दनिका की हाहि में होता धनवान ही बच्छा सकत है निर्यंत का सरा दली रहना

निर्धेनमा के समक्ष ग्रन है साव सम क्रीत से भी निर्धेत के वे स में कामध्ये हैं उसीतिये दोनी माहवीं में

बंदली जाती क्रम्बंबन है विवाधार साकार का सुनशा गहन- वट और चेतन हैं थेक प्रसुक्त का कासरा कासरा

दोनों बांखों को बरशन है दोनों में हो विराजमान पन्द्र वह सबे शकि। सन है

से॰ नामक वन्द्र शर्मा

श्रांत्र प्रदेश की कल्या कांग्र वरेश के बास KHANA MARNAR fix, speed off the कथा गुमहियी आयु १८ वर्षे विश्व वा सवाराको क्या समय से गा

पहुंची। बड़ांको पुक्रिस ने कार्य-

पहुंचा दी। समाज के व्यथिकारियों ने इसारकार एक उसकी देख देश की क्षारकात् समाध के सेव । सरदार कामानिह जी के साथ **उसे पटानकोट** समाज में स्वासा कर विथा । उन्होंने रम क्रमा को आसम्बर बादेशिक समा के थास सेव पिदा । प्रतः १३ ताः को मन्त्रों को की काक्षानुसार को हैह बद्ध सना ने सार्व सनत्वासय कितो क्रप्रदर्भे पढेचा थी। अस यह

सम्बद्धं से दुर्दिश है।

# श्चार्य वीर दल पत्नवल

संरक्तः:--का, मतप्तरःव बी क्सानकः :--हशीय भिवानीदास **बी, अक्ट:—बी** पृथ्वीराज जी बावं, मा॰ हातचन्य् ती, इरिश्चन्द् बी, बौद्धिक मध्यक:-धी वीरमान् श्री श्रायः यस्त्री :-वग्हीसचन् कर्ण कोशासम् :--वाः. शासास श्री सन्तरंग सक्तव :-- मा० सत्त्वपास बी, बा॰ कामन्य, बस्य ही,

भी हेमराथ थी. भी वेशम्यास्त्री । श्रार्थ समाज भाग्वा हा रार्षिक प्रनाव av-t-१६६४ को रात के शीव १० वर्ष भी बोहन साम भी सीरवास की स्थानश से हुखा।

को इक स्थार है।

धार को वह बाद दर ध्वन्यत होसी कि वाफिक संबीद सम्बेक्स कार्य दक्षेत्र दक्षण व कार्य संबीत काकिय का २१ जुन, १६६४ को KRIME INCOME STANDS धवाबर बाबेगा बर्तरर के शंक्य वावक 19 शहर है साम देशे।

की व क्षां- परवासम्ब कां, --

ले शक्द पन्त की सुन्ते।

धी देशकाम वर्गा, उद-मन्दी ':--

ही क्षेत्रक्षात गया, वोपान्वय--

वाधिक दीवीतं सम्बोद्धत

जी मुरवाम सिं**ड् पी**० सी० १**स**० ए० डी॰ ६२० शांक्षण इस वी कम्बक्त करेंगे।

सोर—को (वक्कको इस स्था में प्रकार तेवा पताते हैं वह सापने

4444444444444444444 श्री , प्र , वी , कालेख बासम्बर की औ , मैडीकल कथा

#### शानदार परिणास

कुमार बोरी ५८६ बंद केवर वर्षप्रकम रहे।

(२) भी गुरमीलविष् वासीवास ४८३ बांक हेकर वेच दितीय स्हे इस परिका परिकास में ही। का बीन बड़बेस सहस्रका है किया बस्त

feite well em dit :-- --(१) सारे वंशव श्रोक में स्वॉफिड १२ क्षाप मेरिट क्रिस्ट (विशेष बीरबक्त सुपी) में रवसे गया उतनी व्यक्ति संस्ता काव

किसी मी एक कालेज को शास नहीं हुई । (२) ३० सात्र प्रथम में भी में क्लीर्ल हर । यह संस्था भी संसाध के क्रशी काद कारियों में सब से वांचक है।

(3) इस कालेज के इस कीया से 120 जला शंबर क्या से जिल्ली बस्र १७ इत्वर्तीको १० कोर इस प्रधार वरीचा पारसाचा ६६.० शक्तत रमा क्य कि विश्वविधासय का ४५.० प्रतिस्त है।

पार्वकरण की घोर से इस इस सम्रोज के जान्य जिल्हिक वी भीमधेन भी बहुत के परिश्रम की प्रशंता करते हैं हवा करते सहयोगी प्राप्तापक शक्त साहित अने इस शानकार परिकास के किए क्यां के हैं।

इसस वेक्टी र्वे की हैन्द्र से**ंब्सम**्बरमा वश्रदोषे ट मी सरक्षास जोतर सेक्टी

परीक्षा परिजास हकारे स्वाचाम ब्रह्मांश्राम ter et à CPPD à on बे १६ कमार्थे हैं ही थी, २२ ही

इनो अवरों से प्रमु हो र्ख है ता रुक्तांत दि प्रकारोत (1 ≥ RT) series about (left) \$ क्ष्मारे संस्थार मान्य शब

बावरेंद महाविशासन में प्र हो गई हैं। छह में भी की श्रवितान

THE P IN SAID A श्री दिश है ६ वाल हाई है क्या के क पर कात में की की बेच्यद ब्लास में क्लीवं 👪 🖫 । र्धा स्टाम ६४ मोध्यत स्था ।

विशास के की का परिवास श्चर्य वस्था महाविक्षः ह्रव भी सुद्दर है २० वेगों में से संख्यान १० रफीव्हें 🎼 हैं।

> त्र को अध्या है **व्यक्ति** में संबद्ध हमा सी • वी० **एट. धोर्य** if aux neus minn erd ift. undie d' l'avent ett-विकासम का कोर्स केवल एक ही को का है और प्रकार अधिक र्फको का करकार जाना कोर्स परेस वर्षे कर है।

क्यार देश को के के कार आर्य जगत में विज्ञा -रन टेकर लाभ तठार्च

#### WASHINGTON BOTH THE REPORT OF THE PROPERTY OF महात्मा इंसराज साहित्य विभाग का

বত বিহম্মন

५० पतिकात स्थीमन पाप्त करें वीचेतिकती वर्ड क्या पालकोंबर कियाओ अन्यक्रियल करीशन हेना स्वीकार कियाही

इ∰फ़ेनहरे अवसर से समी तहत, कार्जिंक, बार्च कवार्व कीर कर की संस्थान

काथ स्टाब्ट बारा वा प्राप बटावे जन्मका के कुर्विन्द (६) व्यक्तिस् (२०) व ० द्वांक्रास्य की का श्रवित्र जीवन वरित्र (इसकेन्द्र स्तुती जी बद्दारात विश्वित) कीवृत के श्वासन् १९६६० (मिन केरदर प्रत्य में क्रिं) भेगर हा मु पूर्व (फायप नार्ती के विकित्र) क्रवान २०) वहर्षि दरीन (से॰ दीवानवन्द्र वी हुत) क्रीस्थ रो देविक वर्ष सके करों जाता है (सितीयन रामजब्द क्रव) क्रेसव १॥) देतिक वसं की महत्ता (व जिलोकचन्द्र जी शास्त्री विश्वस्त्र) कीसत १२) इ॰ धेंड्स, बलार्व रकास दिन्दी जायर I, H समृत्यास (बी वाचलांट

बी स्व० ए० इट) बीयर प्रापेड सवस्त्राध की १)। लेचे की पलकों पर 25/% क्सीशय-

स्टबार्च ब्रकास स्ट्<sup>र</sup> ३॥) सभा का श्रकासन, स्वासन्द **हिय आ**विक क्ट दर्व (वि॰ सूर्व मानु की वादस चांसहर) कीवर १६) बीवन क्योरि बीर गीता दिन्दर्शन कीयश कमश: ॥ = ), ॥) काले (शं + शीवासक्य जी कर, स्वाप्नाव संबद्ध (दि॰ वीवान चन्द्र की क्रत) सीवद १८) करी ।

नोट—सन्द सर्च प्रश्रकों को हेना होगा। ×. प्राप्तिस्थान--यहात्मा हंसराज साहित्य श्रिकाच A.P.P. साह

वातनार बहर

हुत्य व १९४१७६ भी स्रवोपराध को सन्त्री कार्य धारेश्यक प्रांतरांच सका दक्काच वाक्रन्यर हारा चीर विकास प्रेस, प्रकार रोड बाक्रन्यर से **सुवित सन्**र Die ber finten berat feten nen fant entel mitret bet fi bereite miles-mit eiffen aften mit ber mit bei ber



रेबांचोब २० १०.४० (ब्रार्यप्रोदेशिक प्रतिनिधिसमा पंजाब जावन्थर को सापाहिक मुखपः) स्थानिक प्राप्त १८ वर्ष वेवे

Ergd No P 128

वर्ष २४ व्यंत्र २६) १२ वर्षात्र

१२ लावाड २०२१ मेविशार\_देवानन्द्राब्द १४०- २८ जून १९६४

(तार 'प्रादेशिक' आमम्बर

### वेद सृक्तयः

ने किस्टें कमबा नेशन् न कि: वस्-अन मरानारी को, नेशे प्रमु के ध्वारे को शंका में कोई मो बच्चे बच्च वा शांक बच्चा बनाई सामनें के इत्ता बारा नहीं कर सकता । उनका केई भी बाब्य क्षेत्र ज़ी कर

तं बृत्राया हॅसि समदेव ! मान इह रूप मी हो। साथ ही तो मपनी इकि से खरे बृत्रों को, पार्चमें को, दुखों को बार हेते हो। समय के निस्त्र से सानी बच मी बही सम्बद्धा !

शृत्रं हनति वृत्रहा यह प्रवेत्तर वृत्रहा है— यह को, इस को सबी को,

क्रियक्तर फैसाने शक्ते के नव्य कर देशा है, मार देशा है। इसकी मार वे कोई भी पाणी बच नहीं सकता वृत काली बच अहीं पार्थ।

संघर्ष हे

### वेदामृत इंगस्पर्शमन्त्राः

शोष बारू म श्वास्त्रेस्तु । श्रॉं नतोमें प्रायोभ्यः श्रॉं श्रद्योभें नषुस्तु । श्रॉं कर्य्यं शेमें श्रोत्रसत्तु । श्रॉं ब्रह्मोमें बत्तसत्तु । श्रॉं श्रिस्टानि मेन्क्सिन तब्स्तन्या मे सह सन्तु ॥

पर-पुरा ह किया है जो है नहीं है है है स्थान करने हैं हम स्थान करने हैं का स्थान है स्थान करने हैं के स्थान है स्थान करने हैं स्थान करने स्थान है स्थान करने हैं स्थान करने स्थान करन

\*\*\*\*\*\*\*

### ऋषि दर्शन सर्वेभ्यो महत्त्वस्य

मह मह सबसे महान है। संसार में सुध चाहि सोशान्तर मी बहुउ वहें हैं, दिनका झान प्राप्त करते सावश दिसान चढ़ता बाता है। पर-मु चह इन सबसे महान हैं, कृष्णता है। हसी की पूजा करती है।

#### प्रकाश स्वरूपम् वर्षः सर्वेकाश्वः स्थान

भगवान् प्रकाशः स्वस्य है। व्योक्तियं है। जिनने भी जवारा देने बात पदायं दिश्य में हैं, ये बारे उसी की भारता से भारता प्रकाशित हो रहे हैं। उसी की इनमें ज्योगि है। उसी महान् सर्वे से समकों हैं।

### सर्व**त**ं करु**यागयम्**

षद् मा स्वत् है, सबकी सब कियाओं को आसने द्वारा है। स्थाने किसी भी क्ष्मु, आब को गुजा नहीं रखा का सद्धा । बहु परसामग्रा स्टब्साम्य है, इस्तु, एवा के सामर हैं। सब पर दवा करते सहते हैं।

খাৰহ য় মি ভা

\*\*\*\*\*\*\*\*\*

-को सदा एक सा रहता है औ कावर तत्व है को अञ्चय है कविनाओं है जिस से दरिवर्गन नहीं है. होता. वह सत्य है। सत्य ही पर्य है कीर वर्ष ही सत्व है।

'ओ वह निक्रमय प्रस्त है, ना विकास सत्त है इस जिए सत्त बोकतं दूध को दहते हैं, मर्म बोलवा है और प्रस कोसत हुए को बह काते हैं पत्य बोसता है। निश्पय ही सरव कीर वर्न एक ही है (शुक्तपथनाह्मक) सनुष्य यह शर्थना

करेत

भो क्रिया । समे जिल्लाय सम्ब दे और बद्धा दे। हे सर्वे नियम्मा । बराचार से मेरी रशा दर सीर असे महाचार में समा' (ते॰ संदिता) **श**रपेन सभ्य स्वपता श्रोप काश्मा क्रम्बद्धानेन स्वापर्वेश नित्यस काल सरीरे क्योंशर्मधो हि सभी. श्चरप्रयान्य वत्तव चीवा होचा मु बकोप निषद् अशक्ता

क्यौर ऋष्यं से डी बदा शाय क्रीला है। शरीर के प्रश्नार कर **श्र**क्तामव ग्रुद्ध स्वस्प है जिसे निर्दोष मर्तिकोग देखते हैं।

सर्थम् ज्ञानम् प्रानत्थाः ऋषः ॥ बै॰ वपः **व्या**वस्त्री—१ वरमास्त्रा सत्यस्थस्य जामस्थरम् स्रोट श्चराचा है।

**सहस्ये** शास सत्यमः। तान्दीमा 44 -3 tox क्रमारमा का नास सत्य है

सत्वक्रम वेका सत्य सेवापासत । **बह्या**(दवस 83 3151F सस्य परमान्य। है देवजन सस्य

स्वरूप परमात्या को ही करावते हैं सम वक स्रोप्त एक मेका दिक्षेत्रप **छा**० दप० ३—१३ सत एक है कोम्य इतकप मध

क्क ही स्वित्वीय है।

कलातास परागासा का है क्रीर सत्त्वनाम कारका का भी है दोनों कविनारी है क्षमर तन है काश्मार्थन है परमास्था भी चित है बार्याय कारमानेतन है परवारमा क्रांनस्वरूप है। सन् और चित होती सीन्दर्व चनक्या है।

धर्मिक चर्चा

### सत्यं शिवम सन्दरम ति • भी बाल चन्द्र श्री <del>क्रें</del>गरी) =

5

\*\*\*\*\*\*

समान है। बास्मा क्रवते बाबी परम सहर सवा वह ही हरव में रास करन काढ़े परमात्मा को वय पद्मभागता है तो ज्ञानबान हो बाता है झीर ध्य से सब स्शव देंट बात है। स्टब्स्स कात्मा अपने साथी सर्वत्वस्य **१रमात्वा को मस्रो प्रकार पहुंचान** कर सतकाथ हो जाना है। कास्या की शांकत कभी तक सक्त है। यह **२७ उपने अपना सदम्य सम्बा**स से अनुभव नहीं विद्या । सगरान m विश्-तर का सम्बन्ध आधान कर धाल्या समस्य हो बाला है और जिक्केन हो आशा है क्योंक चरन बह बात्मा सत्यवर, सत्यवस्य भारता ने भवन परम चैतन्त्र नहा इस् सं सम्बन्ध बान किया कीर चय बह्र जिर-वर क्रपने परम मित्र

के साथ विश्वव और विश्वव होस्ट द्मपना वर्तभ्य पूर्व द्यारम विश्वास से बर रहा है। भगवान निःवानन्द है सात्मा भगवान क सामीन्य में बावन कनुपर करता है।

द्यातल के धर्मिनाची सती मन्द्रि इस्रांतप परम परुष परमात्मा को वक्षाप्रदा वस्ते हैं और भारतकीय क्रोर वित्यानन्द और विश्वत की प्रसन्तवा प्राप्त करते हैं । भागानी संस रित्रम् ई यही तुक् भगवान में हैं। अनवान

सन्दरम भी है कीर पुरा है। भारता में धीरण सरकान के शाय बोग करने से जिससा है क्योंस बौर एकतरा भी भगवान के साव बिक्षत का परिसास है। सरकार सस्यम् शिषम् सुन्दरम् है । सम्बान की क्यासना से बी सारसर केंग

त्य प्रात्मा और प्रमात्मा में परवाश्मा ध्रम्यपादन है। पर-केंग्या रिफ है. पाय करवासकती सम के दिनकारी हवत किहारी है। प्राचीतिया करा अन्य का कार्याक करशा है। असामा परम प्रांता है भीर परश्चात्या की श्वासका से

मतुम्ब परित्र होशा है। परवास्म का श्यासक कभी यान के नंक में अही पंत्रता। परमारमा सत्व त्वरूप और सगस्रवारी है परवारवा का भनत कहा सरद शोधता और सत्य सद्यय दरता तथा सत्हम ही ब्यका है। प्रसारका का अस्त कारने प्रमु के कालका कभी किसी का क्रमणत नहीं सोचता क्रीर अ ही क्रमगत करता है। परशासा श्रम मनक्ष्यारी, स्वस्थाता क्रीर

शोक शप मध्डारी है। परवात्मा क्षेत्रशस्त्रः से मनुष्य में पुस्य जीवन का उदय होता है और विकास होता है। परशास्त्रा सवसंगत्तप ब्रोट परमसलकारी है। परमारमा नित्य सबका प्रश्नाम् वस्ते 🖁 । वरसात्मा वरम अधार है परसात्मा से ब्राडीस होस है। परमात्मा का

श्रेस ही सबस सृष्टि का शेषया वर रहा है। दरमात्मा की सगलमंगी दया ही खारे श्राणिकों को चामव देती है । परमात्मा परम सुसाराता क्री क्रमात्रक के देने बाजा है । वस्कारका का स्थापक वर्ग समान शाब 🔡 पारत वरना भीर शंगस

माय ही पड़ट करता है कौर पंतरे मंत्री कार्य क्रमक्कार 🚎 हैं। असामा के ज्यांसक का न्यादर्श **इसका मध्यान ही है । यह क्या**नी क्षेत्रल पर्या से सम्बाग अब ही बनुकरन करता है और संबार में

क सम्बन्धा द्वारा सांग्रिक की श्री क्षेत्रता करता है। रित्य का संबक्षण क्ला है अंग्रेस बार्ध में दी मुख है।

सर्जन/

क्षेत्रवं कीर पूर्वर्तः एक ही है। सरीर का सीन्दर्व सारुवंद्र है। किन्द्र सम सी सुन्दर हो बदव सुन्दर हो थादन सुन्दर हो कामना सुन्दर हो, विकार सुन्दर हों को ऐसा व्यक्ति सभी को सर्वर्ध कोल चारुवित वरशा है । ऐसे सनुष्य का व्यक्तिय प्रश्लाको होता क स्थान र्स से से स्थापक र प्रै वाहता होती है।

धृदर श्रीयन जिन साधनों से बनवा है समयें महत्त्वर्थ प्रश्न है । करावर्व वह धामरण है जिससे मनुष्य में मामध्ये बहुता है । र्पावत्र विकार क्वीर प्रविद्य काचरक से ही महत्त्वर्थ पूर्व होता है। ब्रह्मचारी की सर्वतः सराक्षतः वदीर स्वक्षमें में ही स्वय होती है। ब्रह्म-पारी हमारी संस्कृति और राष्ट्र परम्परा का प्रशिक्ष है। उसमें देश परम्परायत सम्बद्धा सर्वाचन है स्क्राचारी बीर्ववान को होशा ही | वि **इसका क्षेत्रम जान क्षित्रम में** समका है : ब्रह्म पर्रथमधा का मृद्धि-माम स्वस्त्य होता है । देश का भान देशकी सर्वादाय उसमें सर्वाचत रहती हैं। बहायारी का जीवन सन्दर है उसमें बातुरम सीन्दर्व है वसमें द्यारय-सन्त्रान है कांग्रसन नहीं, उसमें शक्ति है इध्तक नहीं, मध्यारी बच्च निर्वेश की रक्षा के विप है क्सकी धावा शक्त राष्ट्र वें लानि क्यीर परामाओं के प्रकार के सिए है। स्थानारी देश का गीरव है, राष्ट्र का मंत्रिया उससे सुरक्ति " है, देश कावित समझ है । बाहि सनुष्य सुन्त्र है जिस के झाणार विचार शुक्त हो तो विश्वास विसे TEE

stent'gå vil et de fit. (ibe #4m \$1 44) .

### दयानंद माल्वेशन मिशन होशिया

(वे०-वी रामदास की प्रवान भिक्रन)

91.65 के बारस में वर्तना और स्वयनसर वार्य सामन के स्मातीत श्वासन्द सास्त्रेशन मिसन होसिवारपुर, का विशेष भ्यान 🥅 कोर बार्क्यत किया गवा को दिन्द पुरुष कीर स्त्रियाँ se रोग से पोड़ित हो जाते हैं वन की सेला कीर प्रसास करते के लिये banto funcit al einer is mit कोई संस्था नहीं है दिन्द सह रोमिनों को सम्बद्ध हिल्हें धर्म स्वीकार करना परता है कौर क्षपने क्क्जों, तरके सर्वाक्कों को सता के क्रिये प्रशासी के सपूर्व कर देशा होता है क्यीर देसे बच्चों को पेसे बा शदरका में रका काला है कि वे ईसाई क्य आते हैं।

१६६३ में ही एक ईसाई पाइरी ते summ के शहर में पररंच रचा कि कोई किसी सहार का बीमार हो तो वह भीमार पर द्वास फेर कर और दबा पढ़ कर कम रोगी का रोग निर्मु कर कर देता है परस्तु अवादी बाजडीके किए व प्रमाने के लिए शते वह कि ऐसा रोगी पहले ईसा समाध्यार है निम्न सिस्तित सन्दर्भो बसीई पर धपना इमान साप भी वह सब कोटी यह समय से श्रीबेदी विनों से उस का उतन काराय पता कि तम पातरी के पास इसाय कराने के सिथे संबंधों की संक्वा में स्त्री, पुरुष कीर बच्चे इतले असे। बाद कोई देखने की कोरिय सभी करता वा कि किसी क्षे बाराब भी हुना है या नहीं। सैकेटरी। बह यह भेड पास सी पत गई। इन इम्हात में काल होहबा हवासन्य सावधेशन सिशन,होशिका क्य ते क्रमश एक प्रसिद्ध प्रचारक कानी राम सिंह को इस बात के

, किमे नियत किया 🗎 जोगों को

इस आर्थित से वदाय कीर सले

बामांड के,प्रवार का विरोध करे।

प्रस से धनकतर की बादं समाप्त

प्रधान भी सद दल को ने परान सहयोग दिवा जिस के कहा स्वरूप पासंब का प्रचार ब्रम्बनस से हट बर बड़ी कौर पढ़ा गया। रत शासक में मिरान ने

चिक्रियालय (विसर्वेसरी) स्रोसा सदा क्रिमोर्डे सी बीठ पेट दास जी काम करते हैं, भीर भी चरकदास श्री को सब कह रोगों हैं. सह लेकिन वे कार्यकात का उपार sun हैं और उनकी देस बाह अपने हैं। बार कार्य के जिल इस यह काम मदाश ई छोर इस क किये दाक्षि के कार्राव भी सहान समय जिल्ला स्वाहरों की क्षेत्रत को मिसाकर २०० रू० माहबार कर्च बता शहा है। इस काम को

अब कारि कार्यात्रक संग्रह्म

कि रोतियों की सेवा की

कार । इसके जिए मार्च, १६६३ में

तरततारत में द्वड रोबियों की एक

कालोजी स्वाधित की गर्ट और उसकी

चिक्तिस के किर वह सोटा-सा

बनाई गई है। (१) बानी विंदीयास भी प्रेजीवरद्य ।

(२) बी स्ट्रस्त जी, बाईस ਸ਼ੌਕੀਤੇਅਟ। (३) भी राप्रजीराम १८२०५३

(४) स॰ मरापसिंह जी सह । (४) मिशन के प्रीवार्टेंट भी। (६) विशव का सैक्टरी ।

इन सक्त्रमों का विशान प्रत्य बाबी है इन्होंने इस क्षेत्र को क्यांसा श्रव सीकार कर शिवा है बीर परे करन से बाज बार उन्ने है। सन्दा बद्धा करते का काम वया संस्था को चलाने के क्रिय इन्होंने शरने विष्ये हे शिवा है । क्रोडकर के प्रधान कानी पिंडी शासकी यह बढ़ा सती की वात है।

स्वतरन के बह शेरिकों में | श्रार्ट्स, प्रदिशिक संभा का . इस ऐसे रोधा थी है जो शिका के निवे राबोकी से बाहर वही के बारे में श्रंतिय निगा य वा सकते करों के उनके प्राय जंब श्रीर दसरी इन्द्रियों स्वर्थिक शेव व्यार्थ प्रादेशिक समा थी .

यन है उनके किए लंगर कोशा २१-६-६४ की संतरण सभा के तया है। विस्तती राज्य जन्मी के के शसद पर इसका क्ष्मणाटम जागी पिरीदास की ने विदा था। उस समय मिशन की कीर से वो वोशी **बाटा कौ**र एक दोशी बाटा विको और राजी सर्वत ने विका या । क्रीम शक्कतको के स्थापन ले संगर का बाध भी राष्ट्रवंतर उसा नवा । मैं सब दानवीशें को बिशात की कोर से प्राचीना सकता कि वे इस काम के लिए ब्यादा से व्यवसा वन देश सिशन और ऋसआर की सब बमेटी को इस बोध्य बनाय कि वे भारतवर्ष के हमाम बद्ध रीवियों को ईसाई मत से क्या दर

होशी पार्किये । सत्यं, शिवम् सुन्दरम्

(बन २ का होप) सभ्य लगानः वह है जिस से सब की कीर्ति सरवित है, जो किसी का क्रपमान नहीं दरता, विशे की निन्दा नहीं दरता, बुधा दिसी दी चर्चा नहीं करता सहता वो ब्राह्म-तिरीक्या करके अपनी प्रटिये दर दरने दा इच्छद है वह औरये दी सामना में करपर है जो इस्पनी बर्जात के साथ इसरों की भी स्प्रति

ब्दरा है उसका श्रीवन सन्दर है ? सींटर्य की भावना समस्य को पश्चित्र बनावी है एसे मापना व्यक्तित क्षेत्र करते की प्रेरका काती है शौद्यें की कामना दस स्वीच्या है किन्तु वह केमस शरीर के बनाब र्युगार में 🕅 सीमित नहीं होनी शाहिये। स्तरीर सुगठिय, सुदीस, स्थाय हो और साथ ही

ब्रह्मस्या हंगराज जयन्ती

निर्श्वाचानुसार वर्षेची १०-१०-१६ कार्ये स १६६४ को अस्तरधर नगर में मनानेका (नरचव दिया गराहै एतदर्थ अवर्णा को स्थार रूप से मधाने के क्रिए भिन्न २ वप-सम्मतिको धनाई र्याद्वे । को ा प्राप्ता २ धार्म तीस कार्रथ का रही है। स्वयस्थापक के स्थवहार से मेझ वर्षे और

सब दः दिश हो तो बह फरहरू एक सुन्दर सामब है। यिना सन्दर बाध्यस के विना पवित्र व्यवहार के, यह सब का प्रेमशत कर ही नहीं सबसा । औरथे, सानव श्रीवस भा देश विकास है।

श्रमदं दिख् धर्म की स्थित स्थे। संश्वात पूर्व है जिल्हामद है इसकिए परम सन्दर है, विश्वतम है। यगवान परक्ष शिव परस जनसङ्ग्री है। प्राप्तात्र हुनी विकी का करिष्ट नहीं करता। भगवार के न्याय है भी हता की प्रस्ती क्या न्याय यक्त है। अगवान उसीशिए सत्य शिवम् सुन्दरम् है । अगवान के जिल्ल सन्दर्भ से इस मानन्त श्राप्त बरते हैं। परम सूल क्षाम धरते हैं। सम्बाद का उदासक भगवान से समुख्य दक्षीय छत पाटा है ऐसा सुन्न और कही भी भारमा को प्राप्त नहीं होता है। भगवत हो मां कीर ब्यासन्त कारणा की बनुभृति का विषय है। प्रश्वतन

सब का परमाधित काते हैं। शरकान के प्राप्तका में पार्व केवतना शान की पृद्धि और वर्तन्यशीस्था है। भगवान का सबत सवा करे-योगो होता है। इन्द्रिय सुलों से तो मनम्म रूसे लागी झाँप्र दर्शस्य भए हो बाते हैं। भगवान का कानद कत्रक है। संग्रान के व्यासम्ब की पासर सन्ध्य बर्शन्त्रशीक्ष द्भव मी पवित्र हो कीर मनुष्ट दब भीर सन्दर हो बाता है।

### NOCIONALE NO DE NOCIONALE NA CONTRACTOR NA C

# महात्मा **इस्**राज **साहित्य विभाग की**

नवीन शाचीन समाजवाद—

स्व० नारायण स्वामी जो यहाराज शिक्षितः। कीमतः १/- नात्र प्रभव देश के महीन कीर वर्षाय वस्तवादः में बना कावतः है इस विषय वर वारीक टिट से क्षतुकारात किया नामतः है। वारत देश की कात्राव के वर्षों की की कात्राव है हम हम वर्षा के जिल कारोक स्वाम के कार्यों की

ष्ट दर्शन समन्वय---

स्य : बृद्धदेव जी मीत्युरी निसित । १/२३ न.प.मात्र इ: इरोनों में करनम कहा र क्रोर केक संक्रक है इक्क विदेशक

है: रराना न करत्य कही र आर क्या स्वस्थ है इसके स्वया नहीं स्वाधीन क्षेत्र किया गया है। जाराती सहिद कर्यों न सहा ही स्वस्थित है जिसक अपेक 'स्वर्ष क्षेत्र के के हिस्स आप के स्वीचित्र का स्वस्थ है जिसक अपेक 'स्वर्ष क्षेत्र के के हिस्स अपि कर्या के स्वीचित्र कर है है। आपनी कर जुलाद प्रतिवादिक विकास के जिस अपि हर करिय जारिक है।

(३) सहन्यासी—सीमत वार्षिका क्यापं की सुन्यर पढ़िका, वित्तर हों।। क्राजित्द वोच कामें पुन्तसीय के हम वर वित्तरी पुन्तय क्रमचें हिन्दु परिवार के हित वान पड़ नेय है। श्राच्याय के शिद् क्रमच्य कि है। यन को बक्ता करता साम्बर्ध

स्कृते बाहाओं कीर वार्ष ध्यवाची क हात बाहा हो वह की की साधारक हिन्दु बाहा के किए कररोक्त पुरुष्ठ व्यक्ति करवाणी है। २४/- के उपर के व्यक्ति पर हो २०% वर्षात्रत विक्रेण । बाह ब्यक्त पुष्ठ । प्राप्तिस्थान—बहारणा हताराज साहित्य विद्याग APP. सम्बद्ध

वावन्तर शहर अक्टब्रामा अक्टब्रामा अक्टब्रामा अक्टब्रामा

#### मोह प्रस्ताव

काय बाहेरित क्रिनियि क्या पंजाब, जावन्यर का वह क्ष्मकरम क्रिनेश्चर राष्ट्रमावक, तात्र वन रिन, विश्व सामित के क्षात्रहुत बहुत्यना को जवाहर तात्र की नेहरू के क्षाव्यनक व क्षात्रामिक निनव पर तिमन हुएव से सोक कान्यब क्या है।

वारतेश स्थानन प्रश्नित के बार क्षेत्रकों कोर स्थान वारते विश्ववें का कोर निर्माण में कहार कार्य प्रह्म के एवं में एक हैं गाउत, का कि हमारी की कार्य में एक कार्य इर की एवं में माना पहारे की नक कि कुछ के प्रश्नाक कि कि कि कि कार्य कार्याक है कि कार्य के कि कि विकेचना जीए माना कार्य के किए कार्याव्यक्त कोर कि हमें कि कार्य कार्य कार्य के किए कार्याव्यक्त कुछ के कार्य के कार्य के किए प्रशास के किए कार्य कुछ के कार्य के कार्य के कीर कार्य कार्य कार्य कुछ के कार्य के कार्य के कार्य कार्य कार्य

हम सकी सदस्य पार्ट्स प्राप्ता के पार्ट्स में मा मात्रा हो कर सम्बंध घटते हैं कि दे वह महम्म मात्रा को कर्तु गाँव एका करें, च्या हे हुती करतु सम्बंध का, परिवर्ग तथा मात्रा हमा कर है हुती करतु सम्बंध का सहस्य हो का मात्रा करें, क्या हुन का मात्रा हा कर के पार्ट्स प्रिय हा मात्रा हो। च्या हमा तो मा सेगावा को साहर स्वार है ही। व्यवस्थ में हम जो मा सेगावा को साहर्य

#### 

#### द्यानन्द-वचनामृत

हो। ए० बी० कालेज जासन्बर के दो विद्यार्थियों ने

भी । इंजोनियरिंग परीचा का पुन: रिकार्ड तोड़ा नत वय इली क्लेब के बाद विग्रेट कराविंद ने २१० वंक डेकर

शत वस इसा कासन क सान गण्य करणाया । रिकार्स स्वापित किया था ।

पा कि कार्य के अवाहरताल अववाह और मुबाव कुवार के अपने प्रदेश शक तेकर विदेश विचालक में अर्थ अपने रहे

### ्रिश्चनः रिकार्ड स्थापित कर दिया

(१) डी॰प०नी॰ कालेज जाकन्यर ने निरस्विकासन के अपना १८ स्वर्गों में से बाद शल किंद ) (१) इस कालेज ने कुल २० में से ७ बादानकियाँ ताल की र नियां

(२) इस करतेज ने कुत्र २० में से ७ स्वात्त्वक्ति नाट को । किया करूप करतेज ने इनसे खालक्तियां तक नहीं की । (२) इस कालेज के ७५ विकार्यों जबस के द्वारे में उताय हा। ।

(१) मृत ३०६ विवार्थी इस परोक्ता में मेंडे वे दिन में से ४६ चलुपीर्थ १६। इस प्रकार परिशास ८१४ प्रतिशत रहा जब कि विहर-विवासय सा ४०६ प्रतिशत है।

रत घर्मु वीर भनुन्त्व परिवास का लेव चालेश के वधारी विश्वभारतीय की बहुत को है। हम कहें तथा उनके सबद वास्त्रायक मन्त्रों को क्काक्टिवेडे हैं। ——स्वरूतावक

#### 

होय ये महत्र चिकिन्म को यह ग्रावस्तुन्तर वी उनक्क (ब्रह्वे-प्रमेशह प्रशास वर्षणिय सथा) से सिस्स या वत्र अवस्तुतर करें। सी स्तास्त्र मी कारण के अनेक परिवारों की शक्ताका पूर्वेक विकासा सर पुत्रे हैं।

३०३ रानो बाग शहर बस्ती देहनी

सुद्ध व दक्षात्र को छन्।कराज को मन्यो चार्च ताहेरीहर प्रतिनीय कता वैज्ञाद जाहान्यर हारा बीर सिकाप वेंग्र, विवाप रोट बासन्यर से सुरीप क्या प्राचित्रन कालापय महत्या हेयुसब वरन किटर करहतो बाहान्य साहर से बहतीत। व्यक्तिक न्यादे व्यक्तिक वरिनिय क्या वेताय वासन्वर

1



रेबीफोन न० ३०।। (आर्वप्रादेशिक प्रतिनिधिसमा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र) Beed No P 1

वर्ष २४ विक २७)

वस प्रांत का सक्य १३ मके वेसे

(नार 'प्रादेशिक स्थित १९ आयोग २०२१ गविवार-हयानग्दान्त १४०- ५ जुलाई १९६४

राषिक अस्य ६ व्यवे

### वेद सक्तयः

### इन्द्राय गायत मस्तः

हे बिहान सोगो ! उस इत्य धा, सतन्त्रवास्त्रे वाले आवाल का गील गावा दरो । दसी की यस्ति चौर स्त्रीत विद्या वरो । संसार के सोयों 🕮 भी वसी प्रमुक्त सक्त बना हो । एकांत्र प्रवा हरणाती ।

इन्द्र करा न भाभर हे मेरे इन्द्रवेव । हमें कर्ण शीस बना हो, इसारा श्रीवन ब्रह्मय-यञ्चमय बन्न आरो.परोप-बारसब कार्यों की काते उदें सुविचार हमें सहा शण होते रहें। इस बड़ भावना से देखक को शते रहें ।

### ज्योतिरशीमहि

इस सपने अधिन में स्पोति धीर प्रकास को पाने उसे । बजी क्रम्बकार से बरे एवं ५र न 👖 शहकें । प्रकार, विका भीत ताल के हे भी क्षकर सीवन को भी क्राज्यस्य क्रावे ।

#### म न ने दे र

### दामृत

#### श्वरूपाधान मन्त्र

त्रीम मुर्म वः स्वः। गोनि ग्र० १० १ स० ११ त्रों भूभ व: स्वद्यों रिव भूमना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते श्रीववी देवयज्ञानि प्रष्टेशीनमन्नादमञ्जाणा-यदिषे ॥ হল ল০ঃম০ খ

वर्ष-(मृ ) इविद्योतोड (मुच ) बन्तरिक्षतोड बीर (ल ) ग्रीजोड (की इब अस्ता) सकतें के साथ यथा चलकात शोना देता है येसे (क्षियेची इच) पूर्वती के समाज (वरिन्या) विद्यासका से हैं। (कमा) क्षेत्र (ते) तेरी (प्रविद्यों) है प्रवर्श (देवराजनि) देवताओं की शह को मू म (क्टे) वीड पर मैं (क्रम्बिम) व्यक्तिके की (क्रम्महम् ) क्रन्त की अवग करने बातें को (कान्तादाय) उत्तव कान्य कार्य के जिल (कार्य) स्वापित करवा है ।

मान---वह प्रविधी देवचनमी है, देवताओं की यह की स्थासी है। बेबना इस पर बक्क करने हैं। दिय्य गुरु पासे किहान भी इसी मुचि पर ऋपने परोपकसमय कार्यों का विशास करते । हत है। जिस past तक्कों से बादस्य की सोमा होती है उसी प्रकार अ म. मा बन्ना विकासका वर्ष काना पदानों से शोस। देती है। हे प्रविनी ! पश्च की बांबत्र देही । मैं इसम सम्म झादि सी उत्पत्ति, बृद्धि क सिए, धनवाना की सम्पन्नदा के सिए तेरी फीठ पर इस वह की पवित्र क्रांग्न को स्थापित करता है। इस समित के द्वारा मैं यह का गोपकार का काम करने क्सा ह । इसी क्या से दक्स २ कम की शर्शक होती है । यह से नाना विश्व ब्राम्न होते हैं। कांच्य को स्वाचित करता ह --सं-

### ऋषि दर्शन शोर्व बाह्याभ्यन्तरह

शीय-स्टाई शक्षता पश्चिता वो प्रकार की है। बाह्मय-काहित की क्रीर साध्यनतर क्रवन सन्दर की + केवता शहर की या करतर की पाँकाका एकाईशी कहरतारी है । होतों ही प्रकार की पश्चिक्त पूरी शुद्धवा होती है।

#### बाह्यं जलादिना

इनमें जो बाहरकी एवियस सफ्ते हैं. यह यस आहि से की जानी है। सरीर की सेव को दर इतने था योने के लिए पानी की भावदयकता है । निमः बार से बाहर की सेंब शर है जानी है । स्वानादि बाहर फ र्ज्युद्ध है।

#### रागद्वे पामत्यर्गादत्यागेन हमरी सपाई धन्दर की है जहां पानी साम नहीं आशा

बद्ध राग, डेप, ब्रामस्य आर्र के त्यागम सभा श्रेम सह क्रार्थिको भारका स्थाने से हो। है। यन की सफाई अ से न होकर सत्वादि होती है।

নাঅ সুমি কা <del>\*</del> समादद-- त्रिलोक वन्द्र ।

इस सबन जाने जाकि में ब्रिका और प्रदिश के शक्तक में गा। ब्रील्य सरान्य हो रहा है। बहें देशहिसला शास्त्रों में बढ़ी ती धारिया वर मायरब वर्रे, वो विद्या श्रीका ने संवदान तथा 🗰 सहय न्यास पहला है, स्था विक्रमो हुनैति होती 📗 वस से सक्त अपने । वह बार दो अपनी

हरूचि, सन्तान चौर जीवन से मी काम थोने पहले हैं। सर्व व्यक्तिस को स्रोत बर दिसा में स्वति बरते के हो बसे के विकत होने से मन के तत्त्व संस्थान होता है। सन कोई ऐसा सार्ग भारतार्थे जिला से ھ औरन टुलमन न हो स्था प्राथमें भो न हो । स्वेडिक चतुर्वेड् के प्रार्टिमा का प्रविपादन करते ह**य.** 

**१९६ वहा शुर्वियद्व यन्त्र काता दे** R--क्षोत्रम इन्हों विश्वस्य राजति । **श**्मो धात दिएने से चतुराये ॥ (वज्नेंद-सञ्जाब मीर)

सर्वात है ! देखबंगाओं पर-मानामा है किया को धारता. वाक्रत वर्ष शासित करने वाते पनी सर मन्दर्भे 🗐 शुप्रों श सम ma: म क्षेत्रिये । इस के व्यक्तिरेकन क्षी द बुर्वेद ने इमें श्रविंसा का पाठ बाराते क्ष्य कितना मुन्दर बरखाया

बोरम सी दर्भ ह गा विकास ब्रा प्रयास सर्वाची भूतानि समी-चनाम् । भित्रत्याई वर्णना वर्णाया भ्रतानि समी**ऐ । मित्रस्य पद्मश** 

9:--

अजीसामहे । रपास्या जीवन में सच्छत नहीं हो क्रमीत है ! ज्ञान बद्दाशा विस बक्दी। इस करियर देवाओं से ध्यालन मैं त**र प्रश्चिमों** को मित्र हम किंद्र कर चन्ने हैं कि वेद शांत ची श्रृंह से देखें। यहाँ इस देख एर पर्य करते में मक्त्वों के श्रंत्र में देर त्याग कर सम प्रान्तियों नवपाश्चर्य ऋदिका का सहा जारी के लाग येग काने और तनते महत्व गताका है। इसी प्रकार साथ प्रीति एवं स्थ्याम् की भावन बानव-समाव की रक्षा हो सहस्रे रसाने का यो निकार विवा है वही है। धरि इस महिन्द्र सभी पवित्र क्राअविक स्मारिया है तथा इसी से माबना को निकास दिना जाने जो संशार एवं मानव-प्रवास का यानव-मात्र कोर संबद श्रीर राज्य

লানিত স্বৰ্গ---

#### हिंगा और अहिंसा का वैविक स्वस्थ रेखर---वं॰ रविवक्त वी बावे 'विधायानस्पति' (हवानन्द शहा

प्रवाकिसासय, हिसार)

\*\*\*\*\*\*\*\* मन बद्दाराव वे भी दुवे विका विद्या प्रकृत बीवन के करनावार

देते हुए बचावा है कि-धरिया को प्रसारकेर प्रपत्नवें। प्रतिसामेन मधानं सर्व हेवो-शन्द इसका वर्षे सा नहीं है। उतुरासक्य । बाद चैव प्रदूश-हम क्षाँमा वर्ष ही संबंधित रह

हत्रसम्बद्धाः, प्रयोध्याः धर्मियण्याता ॥ कर वरिष्ठ क्रीका रचार्थ रहे रहे रह भहिता बाबांत बेर बढि को क्ष्म देश व जाति की रचा के तिए त्याग ६२ सन बनुष्टी ६२ दल्याय हमें हिंसा का क्षत्रसम्बन भी केश का मार्ग **कावावें भी**र. सक् इस होचा बल' दिया के किये भी बेंद हरें चार्यानक संसार में सपर वार्थ वक्साव है दि :--हा उद्योग घरे, करशाती क्यी भी 'बोद्द्य शतुर्द्ध' रच प्रत्युत्र बरक्तवः'

न क्षेत्रो : इतन्त्र ही नहीं प्रदायास्य धर्मात् रक्ष स्थमार बाह्रे में भी करिया का प्रांधवदन करते बीर ब्रुटेरे मनुष्यों को बसा दी ? हर करावा है फि-बधुर्वेद में हो यहां तक स्थासा है वर्डिसः स्टेशे धर्मेसपा, पर्दिस

कि:---'कोश्रह क्रये तो क्रम प्रमायोः परमी इयः। समस्या देशरोवयः' व्यक्तिस परयं सन्ते, व्यक्तिसा परवं क्षर्यात इ.स. परंचने वासे. #2. H विश्वानों की हिंख करने गाते, क्रमीत् महागारव में वो

वैसा कि इस देशते हैं कि :--

क्षस्य मनुष्यों को यहां से बगा महिंसा को ≣ परा पर्ने और तो । देशों में वो बहां वह माना है वस्यदान देवा वस्य वर माना हि शर्वा मगुष्यों को हो करभात्मा गवा है। स्वीकि इस्तेमें मानव-मी कियाँ सकत नहीं जे**क**व समाज की कम्मर्ति है। इसी प्रकार क्रमांत प्रास्त्रयोग रहिस्त स्टब्स बोग के कर्ता 'स्वस्य हुनि' ने भी है ! यन नहाराज वी अपनी प्रदिसा को ही तबया स्वान दिना

स्वति वे सिक्ते हैं कि :-'भागा विज्ञानां हुन्ता देवा 'ब्रहिंसामानासोनाम्ब्रक्वेशरेषदा विपास्तर' क्रवीत काल सराले काहे,

सर्थात् इत पांच क्यों में छे विश्व हेक्ट बाहने कते, मृत्रि पर **श**हिंसा श्वम वस है। दरि am एकंड बस्का परने वाले. रिक्से काईस बोदन में नहीं होती हो को पदाबन से बाने शहे, इन कः ब्रह्मर ∦ अर्थको को संब बरुकाची है दिना क्षेत्रे हो सार है। इसरे बार्व क्रांत में की राव कीर भी रूपक शी सक्तराज से स्मरतं प्रत्य हर हैं। वे होनों भी

क्रांब्रिय की शह के पुक्रमी वे. सन्त वानध-समात्र की रकार्य दहों के दयन करने के ब्रिय क्ट्रॉरी बी दिशास झाल्यं क्रिया ।

के बड़ी कर्मक है कि वे कार्य भीवन में फेबब हिंसा अवदा चेवत व्यक्ति च वरसम्बर र है। कावाद्य है। व्यक्ति म के विकार में कावार में द्वार प्रातेशा । कार परमा क्या की ने के वहां कर विका (केश्चयय ग्रा)

feet fu :-

इसाः सक्ति शतः शर्म इस्ता एरचकिरकी : सहयः सनेषु भागति

सम्बद्ध वर्ष विदुष्याः॥ बहि दोक्ष को इसक न दिका वाने से वह व्यक्तिया शांप-सरक होती। संसार में द्वार का, भारत कोगी। इस किए दह को सारने में नोई रोप नहीं । बारमीकी शसावना में काता है कि वे एवास, बोब-रहित, विक्रमों के प्रभारी, होबी पर दया करने बाहे, बर्ज के बर्ज को भागने बाजे. संध्यी एवं परिच चरित्र वाहे वर्षाता प्रकोतम

संज्ञान शक्त के वी. बड़ काड़ी इष्ट कि :---नो आहम हिवासीय

देशस य हिराव थे। रारेकानीम विद्याल

प्यात २ समार प छ भशंत मो क्रमण और देश-हिरार्थ में 🐖 किन्तीर वृत्ति वासी तारका वर्त हम्द राजस विरोध स्था क्षियों को कष्ट देने बाते हुन्छ

राशक का यस करता है । इसी प्रकार गोगिताल करना में लोक्य में यो बरका है कि उन्होंने भी देशविशार्वे—इन्द्र निशासस शर, पंचाय, निसन्त हचारीय. भीतासर, शहर क्वीर क्षेत्र प्रस्करि हानों को सारा और वरासम्ब

वर्त भीर दर्जीकर की सरकार। ह

परना जिल महा-मुख्यों ने केवल दिशा भीर केवब अज़िंगा को भएनाया, वे तो इसारे आर्थ जन्म I dem gi ef niere gan pr & विन्होंने "बहिसा परको सर्वः" क करका बमाधा । वे वे स्थातमा बुद्ध कीर वर्धेशान सद्वाचीर । उक्का क्ष्यंत्र शा कि सपनी बानार बातका से बुद करो कहा: बुद्धों **से क्षेत्र** साम नहीं। चला में ह सनुष्यों का

### त्र्यायं जगत

रविवार २०२१, १ जनाई १९६४ अंक २७

## संयक सदाचार समिति

बार बंगाज हो या देश. क्रीकार की बा बीमा तक के विक बाराध है। आरम्ब में यह बोडी आरक्ष है होता है. फिला रोग. क्रासिन एथा सुत्र के समान वह ब्रह्मा २ वर्ष्ट राज को ब्रायसी क्रफेट.में सेकर प्रकड़ो क्याद देता है। वरि इसे प्रास्था से की शेका ल कारी कारण रहा के लोग की **ब्रो** डाथों से मन्द्र स कर दिवा बाचे से श्रष्टाचार की सायग्री सी मारा चागे चक्ष दर अशावद बाह बन कर राष्ट्र के जीवन को इसो देवी है। उसका सब अल हा **श्री**वत बन्ध देखी एवं उस की निर्मेश कारर को कर्ताकर करने में वोई कारा वारी सोचले । जा अक पानक शिथ है, भोषदा पाप है, नहीं की सोसका करने वाला विवेश और है. भीषत प्रस्तर का शब है. वो भारतर की सान्दर वेतका समाप्त बन्या बी ने एक गेरकरकारी संस्था के विशास शरीर की निर्देश बना

कर क्यी थे .मीव के किस्त् पर काम देश है। प्रशंकार भाग अंशराथ है, प्रष्टापाट करने शक देश का बेहा राग है। यह एक क्रिकेश है। सांस्तीन सम्बद्धा में सम्बद्धारी समुद्ध के शत औ कोई नहीं बैडता का पूर्व देश कर रोडी मान कर वरिषद 'बर दिवा साता मा । असके किए नरम व्यवसार

धान नव वर्गे से इवादे देश के अप्राचार की संबद्ध कांची पक्ष वही है। यह देश से क्याह THE REE DE THE ART ARE DE मंत्री फैक्स का रही है : चुक्सी सम्बाहै। याक्ष का है कि बाव के क्ये में जीवन का बानदस्य त्था प्रतिका का सम धन को बिसंग का रहा है। बिसं के पास पार रैसे हैं, क्सी का बाज बाल है। अवेक बार्य और सेत्र में का को महरक विया अक्षा है। स्थ वाय का कोई विकार नहीं किया जाता कि धन किस प्रकार से **इमारा गवा है** ≀ सब्बन की कोर विश्वी का भी भ्यान नहीं देवार पर होना पाडिए पाते केसे निक शतुषिकं साथन की बावें। प्रापार एवं बाल्यर बालों का कोई विचार नदी होता । अक्षाचार को वसीव विसरा है। इसी का परिवास भान कारे देश को मुख्यका पढ स्वा देशे हर शत वा तुर्थित है। व्यवस्था क्रिक्ट थी जारी सिवते। रोम बर्द रहा है।

यकत सरकार के ग्रूमन्त्री की

र्वयस्य सराचार सर्ववर्ति तरिव कराई है किस के किए सारी संस्थाको का सङ्कोग साँगा है इस बी सारे देश में शासारं दन रही है। इसका काम अलावार की समाध्यं दश्या होगा। इस इस रोंभ सा रहाने के किए की नन्दा त्री की क्याई देशे हैं। यह बात अवस्य बहुश पाहते हैं कि वार पड संस्वा केमल समाचारपर्थे, रक्तरबंद १४के विस्तु साम स्टाने बाव भें या अन्त्रेवनों वह ही वर कारे देवे टाब्ड देश में व्यापक वीमिन रही दन वो कार्य न चन्नेगा यह महारोग कम हो तके। वह वहि क्रिवारियक पर पटावा मका. शेम इत्या देश गया है कि इसे वैदा कि हमारे बात्क सहयाती हर करने में समय संगेशा। फिर वी ने विश्वास दिसास है उसा मी दरना है, प्रायंसमात्र प्रक्षाचार अपने चैतिक दरकारे बास से दूर करने में सांकश होकर नेहत के मुस्ता इक्टा की त्याद प्यारा अर्थन होता है कि दोस प्य क्टाने

### मभा को उन्नत करें WHEN THE PROPERTY WAS A STATE OF THE PROPERTY WAS A STATE

कार्य वार्विक्रिक स्था रक्ता व जारापर दा विश्वंचन सम्बन्ध हो यया । साना प्रक्रिकारी तथा प्रन्त-रंग सहरवों की प्रोप्या हो। चर्चा । 58 वार सारा शियांत्रक श्र**विदेश**न में बीकर किया गया: अध्यक्ते २ स्तात्रों के कार्यों पर प्रतिविधियों हे क्लदर्शावन्त कासा है सब को समा के साथ परा २ कित है। सब को व्यपनी सभा पर मान है। यह सन बर बड़ी अकानता है कि साथा के सन्त्री विस्तित झालपन्त्रशी आहिता माबस ट उन आबन्धर देशिक कप से बीज चार धरडे समा के कार्केवर में प्राप्त कर करने राज से जिसते स्था काम काते है। इस अकार समय देते से सभा क आदेंगे-तो इस से सारे देश को बहा सब होता : बार्वसमाज तो अक्षाचार के विकास कारते आहरता काक से ही काम कर रहा है। हम आयं समाशें के भारे सदवर्गों से ध्हेंबा पाइते हैं कि इस स्टापार समिति से कपना पुरा २ सम्पर्क व्यापित करें वाकि इस के बारा देश वें केते हुए स्वापक प्रशासार के इस सहान रोग को शक्षण वरते ढाश्यस्य किया का सके। जिला कार्य में धार्यसमात्र जैसी सक्तिय निष्काभ तथा पश्चपाद रहित संस्थाक सहबोग शामिल हो जाता है—स्म संस्था से निश्चित काम होता है। मार्थमध्य स्थापित स्थापन में भी भ्रष्टाचार का रूप देशों हते इस समिति के समुद्दे कर देनें।

काम प्रचित्र करता रहेता । असामी वया अपनी संस्थाओं के साथ समा बा पुरा २ सम्पद्धं यहा रहेगा। क्रिकिशियों वधा क्रम्वरंग सदस्यों वे सभा सेवा के जिए आपने करवें पर यह कार्य संमासा है तो अब विशेष परिवास करना होना । सभा के कास को व्याने से बाने की नहीं धावस्यव्या है। श्वार यांच साम्ब सम्बन्धे का यह ऐसा सथा क रिष्ट भरवा दन जाने जो (भन्द र विकार के सभा के विश्वादश्याची. बहारका होसाब की के प्रत्य अवर्ती मार्थ क्षताक के जातें का सकतेत ते बर बड़ां र समाठी बकार क्रम तमा संगठन की वर्तिवर्धिय को तेस करने के जिल्द दौरा करे समाजी की प्राक्षेत्र कात कम की आहों के सामने का जाती पाहिए। सान्य सम्बन्ते के इस प्रकार के शिक्ष्मरक्ष के समा की शास बहुत होकी हो वायमी। समाजी का मानव ड'वा होगा । हमारा ६गठन घौर भी दद होता आश्या । वेदश्याद के किए भी ब्राधिक जाम होगा । समात्रों का भी उत्साह बहुता वाएगा । समा के सारे मःस्व कविकारी क्या सदस्य शुक्तमे हुव क्या समा के कार्यकर्त कम्मूसकी है। इनका बाधी समय समाध सेवः में धीका व बीत रहा है। III बार सामा के काम की विशेष क्रगांध एक पर चलाने की बोशना क्तानी काईहर । सभा का प्रशासक वर्गे सभा की हुन्दर सेना है। कथ वो सहसमा इंसराज रातान्ती के विशास कायोखन समारोह की थी व्याक्रीक्रमा करमी होथी इसने खासी महान् श्रीवन दानी सङ्गपुरूप की शबाब्दी का काम इस समा ने क्रमने हाथ में किया है। ससद क्रा

गया है सम्बद्ध सारे सम्बन समाने

(शेष वक्र ५ वर)

—शिक्षोक्षन्त

धार्य समाज की विभिन्त शी थे. देश शकाश की पूर्व ब्राचार्य रकातस्य संस्कृत अस्पी विकासन अनुस्तर स**न**म् ही कार्य समाज के दिवस रतन

बारवन्त वपायी स्वामी, साथक तक कालयक दावेंडती है। समाभ में इस मेसे मीन रह कर सेवा में 'सरी शहते वाले कम हैं। जिल को व तन अधान्यान न पन की थिन्ता क्या क्र मातवान संख् प्राप्ति का विचार है। ७६ दर्प की काय की वह समाज की विभावि विस्तता साम करवी है. इस का परिचय उन्हीं को है जो दन के सम्पर्कते हैं था। कर दन के क्रिक्सर फाम को जानते व देखते 🖫 । ब्राप कवीं संस्कृत के विद्यान, **ब**क्रत उत्तम जेलक हैं। इस्ताम व ईसावत के बहुत वहे झाला है।

आपानों पर भी जो को ईसर्श जो के धेंते से सकत कराते के लिए कास क्रम रहे हैं। बालों जीओं को वापम छुद्ध कर के हिन्दु समाज में वाये हैं। एस इलाके में छंजी को वक्ता सामा धाला है।

क्रताता ३० दुधेँ से निरन्त€

साध्यपदेश के जनमों में नवा धन

श्रार्थे बमाज हा शानदार. वर्ण इविद्वास सिमने का कार्य भी 4. जी ने संसाला है। ब्राफ सी प्रवर्ते का यह सर्थांगीया विशास होगा। इस के लिए द्वाप कर पैजाब कामृतसर में आवे हर है। इस सारे समाजों से प्रार्थना बरेंचे कि इस दिव्य विभूति को पूरा २ सहयोग देवें-बारी काम पर समे हैं-मं.

श्चार्यसमाज ततारपर

भी स्थामी मुनीरक्शनम्द्र को वेदतीर्थं समात्र के संस्वासिया में करन्द्री कोटि में मिने वाने दाते विदान सन्यती है । वहा मोता सन्दर बोसते हैं। चलम लेखक हैं. सामु लगाव के हैं। सावके पद्मवार्थ जांदे वहें बड़ो बढ़ा से यह में

वें व जनाइ से **इ**।कुइ के समोप | शामिल दोते रहे । बुवक समःत तितारपुर वास में एक सप्ताह के जिए प्रचार क्या का बड़ा सुन्दर भावोजन किया स्वा। स्वामी वी के प्रेम से हा। कार कार्य प्रादेशिक सभा जालस्थर से प्रसिव विद्यारा-मंदशी पं. राखपास शक्तमोहनै जी तथा पॅ. त्रिक्षेक चन्द्र शास्त्री नतारपुर काए। दैनिक सप में सूप hपार होता शहा जो कि रात को १२ वजे वह चसता । इसमें स्वामी जी सहाराज के पं. तिकोक पत्र ग्रास्त्री के प्रवचन होते तथा क्रिमटा-मरदलो हे रसोते प्रधानशासी भावन होते थे। भी सन्दर्भित संस्थी

समाज के रंग में रशा सकर है। लाने पिताने, निवास के श्वन्य में वदा प्रेम विकाशाः सन्ती की व सत्रों जोश भी अजह वा लाई अनोश्वरायन्त्र शी का सारा प्रमाय है ग्रान्तिय दिन यहोपनीत भी इए। सभा को बेदप्रकार व सार्य न्वय मो मिसा, सबको बयाई ।

भी लुक् रीनद बरती रही । सारे

माम की जनका भाग तेती रही ।

याम में भी महाराज रचकीरसिंह

जी तथा दनका सारा परिकार हो

कादियां में यज श्री बाव्जान प्रकार की घोपड़ा

इंबनोबर आर्वसमात्र के बढ़े थे मी हैं। भारका बडोशा में सिल इय-नोयर है। इस बार सेखराम नगर वादियां में अपने परिवार की ओर में सम्बेद का महान यह किया : आधा ऋनेद भरायक गत वर्ष गाजियाबाद परिवार में किया गया दा । बारकी प्रातः साथं दोनों समय वडे मखे 📰 बंदप में वह महावह होश रहा। सभा की कोर से पं॰ विसोबदन शासी भाषे थे। सर सद्य वर-शरियों तथा पुरकों से भर जाना था। पूर्याद्वति का दश्य भी नेक्ट्रे कासा था। इत का सारा वरिवार बार्यसमात्र के रंग में रंगा द्रवा है। परिवार के सारे

के दक्कों का सरसाह हवा समाप वेश यह में हो सा बहाने का सह-कोगी बनता रहा । देवियों का यह है स भी इहांसबीय था। इस प्रणा-इति पर भी देसराज जी, शे॰ रावाकच्या की फावि सम्बन्धें हे वधाई दी इस झबसर पर भी झान-त्रकाश जी ने सभा के वेद शकार में ३%) ग्राप्ये मेंट बिसे । तसर की संस्थाची हो भी दान दिया। इस १०१) ६० दान विवा सवा । सब का सङ्घों से सरकार किया है 🎹 दक्ष के शिए गा॰ झान प्रकाश जी पोपका समसी देवी समके माता पिता तदा माई श्री रोशनशास वी मन्त्री को सारे परिश्वार को क्याई ।

हेटिक साधनाश्रम यह श्री श्वामी सोमानन्द्र श्री सरकती की कारवचता में संपर्देशत वैविक साचनाथम मुख्यासपुर में इस बार श्रामवेड प्राप्तक महायश्र बड़े समारोह से ता- १४ जून से श्राप्तम्ब हो २१ जन रविकार पर्या-

इति तह सम्पन्न हुछा । इस २इ में तीजाजगर से भी पं० विशासामर मी जर्मा की एं० बोरबंद मी. संसा से वं शिक्षोकपण्ड शास्त्रा, पं अगत-शक्त जी कलीशक जी पदारे थे। बार-बाई रोडों सबय यह तथ प्रकार पक्षता था। तगर से बड़े सम्बोद परिवारों के संवान तथा क्रालार्ड वर्डिन येजा के आग लेती त्वीं । धता का कोई तिकास या । बी. य. बी. स्वत्र के मान्य विभिन्न को सात सन्तराज को तथा सार्थ स्टाफ, फार्क सहासे बोनों शहराता राष्ट्रराज स्टब गुरुवन कमान तथा स्टेशन व संक्षेत्रे मान्य सरवन वटी सदा दा परिचर देतं रहे । पं. दिशासागर जी, प

पर वो कमाल ही या। अकटाई सूच क्ला। वारी मीड़ ने क्ल प्रसाद देवा भोजन किया। भी बसदेव सिंह की अस्कारी, को सलामा जी दिन शामित की काहि का शक्क बढ़ा सुन्दर था। इस वक्क से सारा सजाह नगर में कास्त्र का वराह रुस्ता था । की श्दाबी शोबा कर की के करबाद से तथा त्यांकी प्रकारतनाथ जी क्रशालक की कोशिश से बढ़ी ही रीनव को । प्राम की बनता ने भी सब भवा का परिचार दिया। असर्चे ॥

सभा को उन्नत करें (प्राप्त ३ का होक) प्रत्येव दार्थ में पूर्णका से हाव चराहें।

कार्च प्रावेशिक समा पंजाब तया हा, प. वी. काले व श्वासों से देश में इर जेत में बहा भारी कास क्यि तथा स्वरं भी कर रहे हैं । जब भारत के स्वराज्य का इतिहास तिला जापना वी इस दोनों के सेवा कार्यों का स्वर्तासरों से विशेष अलेख किया जागा । धारी संस्थाची तथा सराजी का वर्जन्य दै कि जीवत सभा को ब्राइका शहयोग देते रहें अभैर भी अधिक देवें । एक ब्रावश्यक बात हम सपनी सभा तथा हवातन्त्र फाडेश कमेटी के मान्य अधिकारियों से विशेष रूप से निवेदन करना पाइते हैं वह है समा के तथा हो. ए. वो कालेव कोटी के विशास कार्यों की कपना इतिहास लिलाना । वव से दा. ए. थी. कालेश शिक्षित ह्या तथा अब से झावंबदितिक समा की स्वापना हुई है तब से सेक्ट इब दोनों ने फितने सद्दान काव किए हैं। परन्त इतिहास दोनों का नहीं किया गया । इसक पराने चीर विशेषकों से इक्स बीरमञ्जी के मीडे श्वापन संव कासन २ इतिहास क्लिया आए । याठ चळते रहे। ये. जगत्राम इस कोर भी ध्वान देश है । प्रश जी के गोध व करती राम श्री की समा को कतत करने की सब शक्ति -तिबोध चार दोतको सत्र चसडी थी। पर्शापति ह्यान करे ।

किमी से शब बहा है कि महा-क्रमचे के विभागों की लकासीन **अस्तः श**मनी चहरदशिया के क्षारका कर्णत्वा क्षमक नहीं पाती क्रीप प्रज्ञतः स्तका प्रथम विरोध होता है. किल कासांबर में उनके चित्रार सत्य सिद्ध होते हैं और **बा**रने वासी पीडियो करें छिए

कांनों पर रज वर अपनाती हैं । वही सिर्जात स्थासी दशनन औ के विकास के सावस्तिरात करिलाई होता है. कहींने देश की दुर्वरा। से प्रभावित होकर राज-नीविक, सामाधिक अधना अमिक ब्रेप्र में भी विचार शब्द किये, वन्हें ही कार्यक्रप में परिवास करने के सिये ब्राज देश के वहे वहे नेवा

प्रयास कर रहे हैं।

देश का शतिनिधिश करने आक्षी सब से बड़ी संख्या श्रोबंद है. जिस ने स्ट्राप्य अधित के लिये क्रसन्त्र बाजिशान क्रिये। सहर्षि ने भी सत्वार्ध प्रकाश में सिल्हा है कि स्वराज्य के विला कोई राष्ट्र उन्नित नहीं कर सकता। भी जवाहरताज सेहरू का नाम मारत को स्वतन्त्र कराने बाले सुरुप कर्मधारों की क्रमा वस्ति में झाता है, सन् १६२६ है जब बाद को कांत्रेस का अध्यक ∡तुना गवा वो काप ने पूर्व स्वराज्य की स्रोग का श्रस्ताव गारिश कराया । क्रिय के बिस में देश का दर्द होना है. वे स्वामी दयानस्य की सांति अस्तरम्यचि के जीवन को साव क्रमण कर कोशे का बात सिर पर रस हेते हैं। नेडरू जी दासारा षरिवार इसका शःवन्न वहाहरया है । कालेक वर्षी के संपर्वी तथा व्यांशेलनों के पश्चात् हमें लक्त्रता शिक्से और इस ने व्यपना क्रक्रियात पतासा । उस में शी बेहर सादि नेसाओं ने बिस इक्टिकोसा थी सपनाया उस में स्थामी ददानन्द की **मा**रमा ्री बोस्ती है। 'हिन्ही हो राष्ट्रभावा

होते को व्यमिकारियां है। अस्य-

### श्री नेहरू और श्रार्थ सिद्धांत

(श्री प्वारे साल जी बेरी जिसिएल साई दास ए. एस. हायर सकन्त्ररी स्कल, जासन्धर)

### MONOMEN MONOMEN MAN

इसकः राष्ट्र की जहाँ की यावक है । | से ब्रुटकारा पार्वे........

स्त्री शिका तथा तियों को समान मेरी क्रांस्पवां क्रीर शतम का व्यविद्यार दिवे विभा देश अगवि नहीं कर सकता । देश का शरीक माग-रिक बोग्यता व कर्म के अनुसार १७४ में क्यू कर प्राप्त कर सकत है इस में लिंग, आले. धर्म झारि विसाम सीती करते हैं। किसी तकार की काबा उपन्तित में दिसी पार्मित मानदा के नहीं घर सबते फातः सात हमारे कारक चरनो सस्य का कुछ भाग

देश में विभिन्न धर्मी, विभिन्न वर्गे तथा विभिन्न जातियों व पुरुष एवं विजयां, राष्ट्रपाद्य, राज-इत, स्वास्थ्य मस्त्री खाडि क निव्दन हैं। ये वातें ऋषि दवासन के सिडाओं को सर्वतोपकी विकय

का प्रश्वन प्रमास है। रेश हे दर्भाग्य हे शस्या धात परिद्रव नेहरू हमारे नव्य से मौतिष शरीर के विचार से सटा वे लिये वसे गर्ने हैं किया उनकी

भारमा सदा हमारे साथ रहेगी। लगेबासी होते से इस वर्ष पटके २१ जन १६४५ को छन्तीने स्वयन वसीयत जिस्स राजी यो । उस वसी-यत को पढ़ने से भी यता चलना है कि उनके इरव में आर्थ सिद्धाओं के प्रति दिननी बद्धा तथा सम्मान या। वे उस में क्रिक्ते हैं---र्थे नहीं बाहता कि मेरी मन्द

के बाद बेरे लिये कोई माद्ध प्रादि थार्मिक रुपें की जाये। मेरा इन रस्मों में विश्वास ही नहीं की फिर इन्हें रिवास साथ के जिये स्त्रज्ञा प्रावट के साथ साथ प्राप्त धापको और इक्षरों को घोला देना है। मेरी वह अभिज्ञामा है कि **≅ शरीर को जसाबा बाव औ**र वदि मेरी मृत्यु भारत से कहिर हो

वो मेरी भाग मारव नाई जाय ।" में बाइता हूं कि भारत है स्रोत सीवारिसीय घटन विश्वासी

माग व्याग संगम में प्रवाहित किया जाम, क्षेत्रिल बढ़ा भाग विवास में रहा कर कारता से सेठों में गिरा दिसा वाद, उड़ां

गंगा में प्रवाहित करने के लिये नहीं बह रहा। यह सेवल इस लिये कि तथा के साथ सके बदयन से लगाव है। गंगा के साथ भारत की पुरावन स्वृतियां, खारांद्वार, त्रोत. विक्रय, पराज्य सम कह सम्बद्ध है। गया हमारी सन्दर्श स्त्रीर संस्कृति की प्रकोड है, वह मेरी

मस्य को भारत के थरण भोते

सागर वक पहुंचा हेगी।'

इन परिनवों में उट्टो भी नेहरू भी देश के धनि पानीस तथा कराय मद्रा मंदित टपवरों है, वहां कार्य सिकांतों के प्रति सामग्रा से समय मो रहत दिखाई देवी है। बमारा तो किरशस है कि बाब भारत तो क्या विश्व का प्रत्येक क्षाप्रक अधि के मिठांनों से प्रशासित है और उद्गब्ध ख्वा है। किसी

द्वति ने सत्य दक्षाः — दबाबन्त तेरे गुद्य सभी गा रहे हैं कोई श्रंह से माने न माने वह जाने। सवर शिक्षा तेरी संशो पार हे 🕏 ॥

किसी व्यक्ति को हानि पट्ट'-दावा स्वयं हानि उठाने की अपेका बुरा है।

माय वह बाहवा है कि किसी को हानि न परंचाको जाये ।

### केन्द्रीय प्रार्थ स्त्री सभा च्यादीगढ़ का खुनाव श्चामा-शैमवि स्वप्नेवर की

शर्मी, रुप्यकाता—श्रीकृति संग्रह-वती भी शर्मा, मांन्त्रकी—शोमवि विकासती जी चोपता. स्वयत्त्रिक्षी---शीमांव रश्तराशी की बाहबा, क्रेश-भ्यक-शियवि राजसनी **व**धि बास, निरीविका-जेमवि प्राप्त वटी की चीवनका ।

विद्यावधी जोपदा

#### श्रावस्यक सचना १. कार्य क्यार परिषद के

प्रधार पच्च स्थामी वेशानना सी स्थानको के तेतना है की सक्ष्मणी राम स्वरूप की व शे॰ रघ गैर सिंह बी के सहयोग से भार्य कुमारों का शिक्या शिविद ३ से ७ बीसाई लक कटा लेक्ट (दिवस संसक्त) हैं जगरहा है। यह स्थान पानीका जीव्य रेखवे साहैय पर एक रेखवे क्षेत्रच है। सभी वैवारियां पर्श हो मुद्दी हैं। यह तक द० सैनिकों के नास का पुरे हैं। की शुवर साय लेना पाडें वे श्रीत ही अपने नाम सेत्र है।

२. सपनी मार्थ कमार समाभाँ का विकास भी केंद्रने की कवा कर्ते । राम प्रकाश राम.पम. सी. (ब्रानर्ज) चन्द्रीगर

#### गरुकल वेर्ग्टक श्राक्षम् वेदन्यास

पानपोस. जि० सन्दरशद बारवर्धिनी समा स्त्र शनाव प्रयान-की देशपाल जो श्रीकित, मन्त्री-श्री सुस्रदेश जी सात्र. कोपाध्यच-भी देव**म**त की हात्र. परतकाश्य**य**—मी में **मरस्य** की कात्र ।

सन्त्री—सन्तरेव

आर्यं जगत में विजा-पन देकर लाम उठार्ये वार्ववसाल का स्टांत प्राव्ह राखिल्क का प्रीवा पर भी कहाला हिलाव भी भी भीवन का में महाला भी भी भीवन कम में महाला भी भी भीवन कम में महाला भी भी भीवन कम में महाला में एक प्रीव्ह महिला है कि कार्य प्रकार कहाल भीर भीन के कार्य रहें से खुंचा। कार्यों के संभित्त हुए से महिला है कि स्टार्ट महाला भी में भी में भी स्टार्ट कि Nearer the charch for Nearer the charch

विश्वन सम्बद्ध के निवृद्ध हो करता ही प्रशासमा से दूर होता जाता है। स्वरुख रहे 🏻 ता० शीकानवन्त्र की का नता सकार कार्यक्रमात्र समिद्ध के कांधिक निकट हा। क्या हमने कार्यन कर्तान्त्र के

सिंव इंटन में में उपन मोर्ट पार-देश हूं देश वह इस नहीं की संस्थान संस्था है अपन इसारे करों में रिट्टों के अन्दें (प्रतिमा नीवा सम्प्राप्तिक होन्द हुने ताते हैं ! महाहाय में में इस्ता संस्थान संस्थान है महाहाय है आ दूर कर स्थान प्रताम संस्थान संस्थान स्थान में महाहाय में में प्रताम संस्थान स्थान है । देश अधिकात कर में मूड आजा हूं हो समने साथ इस्ता है । में महाल की स्थानक की मानुस्थ

#### वैदिव शिष्टाचार

नाक रेक में बाज माहाना माहाना माहाना का माहाना का माहाना के महिला का महिला के महिला करना महिला के महिला करना महिला किए महिला के महिला के महिला महिला के महि

रिश्वों में द्वी समान महस्त्रा | हा के बती लेकक पर पत

### श्रार्यसमाज की कहानियां (३)

(ते --श्री एकेन्द्र 'विवास' इकानन कातेज कोसापर) \*\*\*\*\*\* जी का स्थान है। मेरे पाठ (इवे। मैं क्षम गया कि सक्तम की ते बेरे शताल वर संवेश । धवा फिल्म नहीं या। इस गांत में है। मैं नह संस्था के बाद कीर देश रमको दिस्सी में बादानस्था क्षात्रेस से वनं हम्हे बारस वट इन भी क्या । की पं॰ सामान्द भी ने सके कहा कि सकती पर परी यत दिया। बह संस्था पढे भीर विकास के किये से हो। मैं ने उस क्षेत्रे कि इक से तो आप विकारों का शतकार किया और व्या वि से ही सना है कि शान्त पाट मे **ब्**र्व त शहता पाहिए पर मान हडे शास्त्रवयता नहीं। रात्रि को देर से ब्रह्माता भी प्रधारे। मैंने भी है तो इस बर्शर को बाई को से १८ दर स्थाते की सीर बार्शनार का बावें। वें हे प्रत्यकार पुरेत

पठ पर नाथ की की पार्यवार कर आहे। जी के जायबार पूर्वक तिया। बाहाजा जी ने कुछाने प जी ते वर मोजबर कर का इस सूचा। यह बाहा के अभी बादाई पार्य का जाते हैं। का ती राव्य हों हमें की हमें हमा के प्रवास र पार्ट का जाते हैं। का ती राव्य हों हमें की हमें हमा के प्रवास र पार्ट का जाते हैं। का तो कपने के का हमा प्रवास कर का जायबार का जा

श्वतं पर माँ दरी चारर से बीर जिले तथा वहीं हुई । विशव हो कर लेकिया बताने से जिले भी यह लिए बड़ी सहा कि क्यांसा सर्वास के सह होंगा। इस क्याने अस सम्ब से बीर

भी पटना को रह बार लोगें हिं बार पर सामें साजिय हो शें हैं बार पर सामें साजिय हो शें हैं बार सामाज भीतिय हैं स्वापन एकंड कर प्रोप्ता है हैं। सामाज है स्वापन्ति भी त्याल को जें हैं कित हता है हुए हा जो 'प्रसाद हिंगार कर से हैं हैं |

पूर्व तबार थी राव है कि वन तात हैं काल के पानवा तात हैं काल के पानवा कर पाना के देनिक कार्य में हैशा है बार्य का देन पूर्व की व्याप एवं तक्त कार पूर्व कुतारा (वह तबार जार पूर्व किस कार्य कार्य के पानवा

भी सहाराम के बीलक का तक क्षादान की निर्मा 'भी स्थानी' के स्थानी के स्थान मा अपने अंकल के स्थान में स्थानी के स्थान में स्थानी के स्थान में स्थान मा स्थान में स्थान म

जानुकारी में सामा मानिए के स्वावकारी में सामा मानिए के स्वीवकार स्वावकार स

कारवा वड वा कि बाबा ग्राम बरुटा क्रोल चर्च चित्र क्षी कर देते के बिये वस शक्त तक त झा रायंक्तों लोग सोच रहे ये कि इसे प्या होता कि साथु इस्ता निश्लीही क्रीन कविस है तो इस किसी साधारक क्ला से 🛍 ऋषीय बरपा क्षेत्रे इन्हें तो माता। अप कार्यक्रम । यह है जन महा-दश वर्रे। तस्य का कान्यव शतपत भी टों खड़ी बा। बना कशका रोग विराह ग**रा** । की की पर जिल्ला की कीव परे। सन्त्री को बाब विकासने तमी। यस क्लोन क्लाबीकी । वर भाषक सकाल होने सता हो

जब भाषक समाल होने साता हो साथ बोला होयों वह है नेहिक भा अप्रेर वह है जार्च स्थाय का गरेहा कहि हम के महस्यर आहाँ के सार्व सर हम के महस्यर आहाँ के सार्व सर हम के महस्यर स्थाव के के स्थित हम के महिस्स स्थाव के

है। हात का नमाज सहाजुरणे की के जिये हम को मानिहर निर्माण के वित्त हम को मानिहर निर्माण के वित्त को एक हम है। हम हमने भार देना हम्माण के कि की की कि को कि को कार्य कार्य नहीं करते की

राय ओति पुत्र स्थामी चर्चराश्य । यह सब हो ।

#### प्रसार पत्र भी पं० सस्यदेश की विशासकार हो। दी। ए० बी॰ कासिय आक्षंत्र हारा सिता हुझा हुने जान हुना है। वह पत्र कार्थ समाज के मिद्धांतों को सब्द करके विका गया है जाये समाथ ही क्रांचें होजने बाता है। नेश्वर के संक्रीत विचारी से सम्पादक का सहस्रत होना फालरू क नहीं है।

### 

सान्य संपादक की.

बस विश हुए आस-पर में पुरुष जेल. मार्थिय जेल्क, वर्त के फारिक कतम का प्रश्नम निकता। सोगों ने, ·ब**रों की**र कोटों ने प्रश्नीकृति

क्रार्कित की । समाचार पत्रों से यता कि अस्थियों का पत्नों का ससम्बान प्रवाह त्रिवेकी-संग्रह इक्स्बामार्थ में श्रोपा । अस्मी देश की विसन्त वृतियों में प्रवादित की

कायनी तथा कृद मस्यी विकालों बारा विका २ त्यांनों पर विकास **दी** शायगी । बहां बनका दख संस्कार हुआ। यहाँ एक शुन्दर समाधि-सन्दिर दा निर्माया होगा, बार स्थान का शाम भी शान्ति वन

- रण दिवा गवा है ।

पूज्य नेहरू जो सहान वे. देश के प्राया ये तथा पिछले २०-३३ क्कों से देश की लीका के क्यांपार √वे। देश-देशाश्वर में इनके विचारों और व्यक्तिस्य का प्रयास था। इनका जिल्ला भी सम्मान किया साय, बोदा है। उनके प्रति जन बाल की जो बद्धा है यह झानेक रूपों में प्रगट हुई है चौर चनेक रूपों में क्यभी समेक वर्षे तक प्रगट डोकी रहेती । बतके ताम से महर्ग बनेंगे. इस्थिए वर्नेशी, पुरुकासय वनेशे क्रीप धारमकनः चनके सौर गांडी औं के विकारों के प्राध्यक्त के जिल

को सम्बद्ध एक सहान हैता भीर विवय विभृति को प्राप्त होना माहिए वह रुद्धे प्रकार माध्य होता . इस में कोई सदेश नहीं।

विका विधासय भी बनेये :

इस क्षण्यके प्रतिन को दो पाउँ सकता है ?

District मन से बाती है वो विवासमं प्रस्तुव करता है। बाहता है वि कौर होत सी इस पर प्रपत पहली बात की यह है कि पृथ्य

गांबी तो की मृत्यु के बाव् छन दे

राष्ट्र-दम के स्थान पर राजपाट

नाम से समाधि-मन्दिर का निर्माण हुया। शिवसित रूप से तीर्थ स्थान बी वरह पुजा देखेन ब्राप्ति का भी प्रबन्ध किया गका । मात्र पृथ्य नेहरू वी के दाइ-स्वाम पर सी रेखा **हो** होने जा रहा है। यह बात किस वर्म, शास्त्र वा विदार के **ब**जुसार है। हिन्द भम के लाव

सम्तों से सबाधियां वनते हैं । वहां

**बनका हारीर** साहा हुआ होता है।

ईसाई भीर नुसल्यान जो इसी क्कार स**स्वरे वा** समाधि स्थान मधुर है ? त्यायमय है ? मनाते हैं। पर देवल शह दर्भ दे स्वाम को बहां ब्रश्नेय शेव य भरम रोप कुछ भी नहीं पश्चित्र स्थात कर पूता करना, पुरुवहार चढाने. समाधि संदिर बनाने तथा कार्विक समारोह इसने की वह एक श्रं पारटी बबाई ना रही है जिस क

वार्मिक का सामाजिक को

भाषार नहीं । इसारे कार्य-तेवा क्षेत्रहर्में या बहहर इस बात का विरोध क्वों नहीं इन्हें। क्वों कार्त में तेल हालें ने इस सम्बन्धितान की नई परम्परा को देख रहे हैं। एक और बाव भी विचारशीय है। बोई भी बार्ष समाजी सडें. बोटा या बढा भागी पर बा दाह

स्वान पर फ्रांबासा देसे करा सकत है ? समस्तार केंग्रे क

रसरी बात में बात नक्ता से यह बहता पाइता है कि इस की भीर हमारे जैसे सास्त्रों, करोड़ों व्यक्तिं से नेहर की से व्यक्तिगर रूप में परिचर शाल दरने वा पन सर नहीं शध्त हुआ । वे स्रोग पन्न हैं जिल्हें यह सध्यक्तर प्राप्त हमा । वनडे किसे संस्थरक पढ़का मन

. में नाबों का साचेश वठता है । वर हमारे लिए कौर हमारे वैसे बनिनद सरवीकों के बिद विकासे १० वर्षी से लेक्स जी ताली. मैंट ये। इसे चनके वर्शन, चनका परिचय, उनके श्रीतिनिध, जिप्ही वर्षित्रकर द्वारा, पोलोझ ऋपना द्वारा, देश्तां के खदातरी दारा. थीवेश्ट. सोडा. होवजा. स्रांत झार्व का प्रकार करने काले अफारते के हारा होता था चीर हो रहा है।

क्षत बहुत कड़को है यर सध्य है। इस के सिर कीय उत्तरहाती है. ये ब्राफसर या कौर कोई जिसने नेडरू जो के दिव्य स्मीर सभर रूप-ल्या को इस दफ, जनदा दफ नहीं पहचने दिया। जो छक्त जनता तथ गर्शमेश्ट का, नेहरू जी की संदर्श मेस्ट का रूप पहुंचा कह नया

ये बाद शब्द में विश्वार के सिन चार्य-दिन्द जनवा के सामने घट-स्थित करना चाहरू ह'। स्नामा है मन्य माई मी विचार शिक्ष सेक्री। अंदरीय

सत्यरेव विधासंकार

प्रादेशिक सभा की आव-

श्यक सचना

सवा की समिद्ध निमटा मंडली थी राजपात बी व सदन बोइन जो रेहबी शहगाया, राजि-त्यान ब्राहि समात्रों में 9शर रहे हैं। समार्थे अहाँ इनके समयुर प्रचार से लाम उठानें. बतां नेत त्रपार के किय एर्ट सहयोग हैं।

नि:शस्क प्रकासन की क्रपार्थ नए नालकों का प्रवेश

बुस्फुल कांपड़ी विश्वविद्यास**य** के विकासय विमाश में नय वालकों का प्रवेश क्रम हो रह*में* है । पक्षाई १६ जसर्च से फारम्थ हो जापती । विशासिकारो उत्तीर्ज वन क्षेत्रे के प्रकार सामक किसी मी काले व में श्वेश पासकते हैं। प्रवेशामें प्रार्थवा पत्र हवा निवमा-वती भाषार्थ गुस्कत संगही चित्रदक्षियासय जिला सहारतपर से मंगाए वा सक्ते हैं।

पर्मेपास विचालकार (स॰ मुख्यापिष्ठावा) शम विवाह

बार्व समाज टोहाबा के क्लाने समास्य महाराव पानतराम जी को अपनी विजय का शभ विचाह रामां बनी निवासी चौत्रशे दिला-राम जो के सुरूत कायू जगहोश-चन्द्र को बी. ए. एत. एस. थी. बबील के साथ टोहाना में १४ जून को पूर्व वैशिक रीति से सम्बद्ध हका । पंडिन मुरारीहाक की सास्त्री ने संस्कार ब्लाया श्रीर की कुशसास गल श्यान कार्यसमाज टोकाना के बर-कड़ को ब्याशीर्वार वी 1

सचना

ध्यमुतसर चार्यसमात नातार षद्धावन्त्र प्रतिदिन रात्रि 🎚 😅 **पर्**ते से १० बाते तक श्री पंत्रसम्बदावा जी सबनोपदेशक के सजनों के परयात जी पं॰ रासकिसीर जी जी पैदा शिकायद बेटों की सनोहर क्या कर रहे हैं पतार कर साथ

ध्यारें।

वस्त्रेव कृष्य परोजित

बहां सोग वहां रोग, श्रद्धां पाप बहुई स्रोय ३

ADMISSION NOTICE MEHR CHAND TECHNICAL INSTITUTE IULLUNDUR CITY

Applications are invoted for draining to the undermettened convey on the prescribed form

obtainable from the office on as ment of 0-25 nP. 1. Arts & Crafts Tes ing Course. (Drawing Masters for High,

Higher Secondary Schools & Artista).

Matric or Higher Secondary with 2. Post Matrie Cler Commercial Class

(Stemographera & Accounts Minimum Qualifications :-Matric or Higher Secondary with good English. 3. Electrical

Matric or Higher Secondary with Science. Age: -19 years 4 A.M.LE. Evenius Close (Section 4 & R

(Equivalent to Degree in Engineering. Being run under the Missistry of Defence). Beineum Ouslificat F. Sc., or B. Sc. or Duploma

**bolder** in any branch of Engineering, additionally rugaged in an Ragineering profession. Seats limited, stipends and bostel facilities available.

For detailed information, obtain PROSPECTUS along with the prescribed form on payment of Rs. 1. 25 nP in cash or Rs.21for Manny-Order for the 'phospectes to be sent under Regutered cover.

### इयानन्द कालेज शोक्षपुर की श्रभृतपूर्व सफलता

इस वर्ष शिवाधी विश्वविद्यासन कोरदापुर की शी-विभी (पदकीपूर्व) फ्रीचा में द्यानन्द कालेब शोलापुर के आत भी कार्रावन्द शिवराम बुरटे | पी. सेठी ज्या तबके योग्य स्टाफ है द्वार कंक प्राप्त करके सई. श्रम स्थान पावा है। कारोज के 💵 विद्यार्थिको ने ७० मक्तिक से

9 970(4) 04 & 1 St mayore सकसता से इंदिक में इवाजन संस्थाकों को कहितीच यत लप्त हका है। थी. यश. सी. (क्रोक्से) वे स्थारत विकार्थी श्रंथम के जी के है। स्वरण रहे कि इन्टर में भी रशी स्थोत का विकासी जनम

श्या है। वस. व. जिली में दक्तकन

बद्वाविवालय की क्षत्रारी मुकदा route and forestern it father स्वान प्राप्त किया है। इस सहान वयस्ता वा वंत्र शासावस्त्रकर्ण, विकासियों वर्ध कारणे प्रकल करने वाकी दी. ए. वी. कांब्रेड कमेटी को है।

### दयानन्दबाद्य महाविद्याक्षय हिसक

पदारी जवाई को सकारका है। वह विद्यासय एक उपदेशक विचालय है जिनमें बालों को अब प्रकार की सुविधा नहीं की बाकी है, ध्रान्त्रयभग्यक्त्या वहत सन्दर होची प्रवेश ३१ जुलाई हक होगा।

प्रवेशायों जुसके के करूर तक काने का श्वरत करें । शिक्षा प्राच्य के परचात बार्डापिकार्थ मी स्व**ल**क को प्रथार कार्य के (तक कैश्रीनक सप से नियक्त किया जाता है।

—तिवेद्६ झारपन शाचार्य दी. ए. वी. हाई स्कूल

कमाही देवी(होशियारपुर) का मानदार परिवास

# मिदस में ६६ आल मेरे. ६४

पास ∭ा थ, ६५-२%, मैडिक से ४८ में से ३० पास हए । **६**.८६.२% | इस शाबदार समझता का सेहरा त्तृत्र के मुख्याध्यापक की सार, के ज़िर पर III है । early है प्रसन्तवा थी कार दीव गई है।

सन् शोक्षता सन् प्रकार आस्था है पर दोव सवाते में क्रा है। स्तीर की कारण से कोई -पनीराम बंबर मही व्यक्ति वसस्मावस वही बहा बा बोक्य क्लेटी सक्स

परिस्थितियों वे

दिया गया है प्राव किया समय से

नीमान साला देशराज जी मारिया

ने इस विकासय का सुनयाध्यापक

वह सम्भावा है 📖 की श्रामिक्तिको

में बंदशोदन हा दिखाई देने लगा

त्रवलों का ही यह सुध परिकास है

काम कारके इस प्यारे विद्यास्य

वह विश्वों का वरिश्वाम हो 90-

95 राज प्रतिरात कावा है। इस

है। बाला है अधिक में आप स

से भी साधिक स्थाति करने रहें।

\*\*\*\*\*\* टयानन्द-वचनामत

'माल-फिल येशा अवश्य- लटा चटते रहें जिससे हराफी सन्तान जिलेन्दिय बजे विका हो भी हो चट्टी सरका में रुक्ति रक्तो । उनमें रोजे स्थिको का स्वभाव न क्रकन होने हैं. सहने मतहते की झारत न हातें। धनको सायनाची झीर तिर्धार कोर बक्रवें । वैर्धे रसना, सहा स्वरसन्त क्वन रहता वर्शक क्षत्र त्राओं

का विदाद क्षत्रवें जैसे भी हो, करावें ।

(स्वामी साधानतः औ) \*\*\*\*\*\*\*

शर्यहाईस्कल नाभा उम्रति नवीन छात्रों का प्रवेश के प्रवास ---में नवीन महत्त्वादियों का प्रदेश बह विदासय ही. ए. वी. कारन्य है। पुरसुका में जापुरिय कालेक बैतेकिंग क्मेटी देवकी के विश्व ईगाँक्स, विश्वान, गरिस्त क्षत्रायमान में मुख रहा है। सा० सगीत, इतिहास ब्राप्टि के साथ-रामदिश्वन जी सोससा के सर्ग

बार प्रापीन प्रवेशाला.. संस्था साहित्य, बर्मन, बेटारि के पठन की सिकारने के कारक इस की गरिक समुचित स्वयस्या है। अपने सांती विभिन्नों में का शिविसन दिस्ता के प्रवेश दशने के इच्छू व मुख्या देते सभी बी। परन्त श्री साका खा कार्याक्य से हुआ अध्यक्ति Grander of M. L. C. (2) करें। योग्य कत्त्रों कि कि अविका दी जा सकेवी । विश्वनता के कारक सीम सुबार €व अवदीय~-स्ट्य

गुरुक्त व्याकापुर \*\*\*\*\*\*\*\* हिंसा और चहिंसा का वेदिक स्वरूप

(१९७ २ का शेष) अभिय योगों को साथ-साथ जीवन

है। देवसास्टर साहित के मठक ने स्थान दें त: हमारे वर्तमान देश के क्सकों को भी चाहिए कि बरुमान कि उक्त वर्ष मेरिक वर्शका का गरि-सकट काल में केवल कांद्रेसा का वरित्याम पर क्रिया के राज्य से का 86% में भी प्रभा तथा है। दुरांत चीनियों का मंह तोह कर देश की रशमीनता की सुरक्षित करें ठ्या सा से श्रीतिष्यं इ मर्मानुसार सारी रुक्तवाके के व सकत के मुख्या- दक्षाबोध्य बरते । इसी में अपनव-ध्वापक सामा डेवमाळ जी मारिया मात्र का करवाया है स्मीर तमी हम देश-माति-राष्ट्र को कात करने में क्ष उनके सङ्गवोगी वोग्य स्टाइट को समर्थे हो सकते हैं। इस्त: मानव बात को नाहिय कि बह सामें हरूव में देश-मानि वर्ष राष्ट्र की रक्षा का अठ शहरा बरके कारने जीवन में हिंसा और कहिला को साथ-साथ स्थान देखर अपने जोदन को कुलकुछ करें। इसी में देश भी रका को स्वाचीनन सरकित है

कीर गानव समात का कावाब है।

ह्यहरू व प्रकारक की छनोपराज भी सन्त्री जाने प्रवेशिक अकिनीय समा पंताब शासन्तर हारा बीर विकास में हा, किसार रोड सामन्तर से हुनिय एवं। भाग्नाक काश्राहण महत्त्वा (क्यांस वेदन निकट क्यांग्री सम्बन्धर सहर हे अवस्थित क्रिकेट-सार्व विदेशिक स्थि



रेशाचीय वर १०४० **[आर्थआदेशिक प्रतिनिधिसमा पंजाय जालन्यर का साप्ताहिक मुख्यत्र**] १८४८ No. P. 121

वय योत का सुरूष १६ वर्ष देशे व्यवस्थात । व्यवस्थात । व्यवस्थात । वर्षण्य सुरूष ६ वर्षण्य । वर्षण्य १४ वर्षण्य २८३ - १६ अन्यात २०२० वर्षण्यात - व्यवस्थात । १४०-- १२ अन्यात १९६४ । (तार 'आदेशिक' जानन्यर

### वेदामृत

### श्रोम् उद्बुष्पस्तान्ने पतिज्ञागृहित्विष्टापृत्तं सं सृजेया मयं न । श्रास्थन्तस्यस्ये श्रयुत्तरस्यिन् विरवेदेवा यज-भानस्य सीवत । यन् ० व० १४ गं० १४

क्यं-है क्रांग्वित् ! तू (व्यक्तवान) जनत हो गरीज हो कीत (जीतकपृष्टि) जान जर (लग) वू (दश्युप्पे) कह नाम करीद हट कीट प्रांतिक अध्याद कार्य कर कार्य पूर्व (व्यक्तिया) कराय कार्या हिस्स वृक्ष (व्यक्ति) वह ज्याद में (क्षिप्प उत्तर्गतिय) कराय न्याद में दिन्दें केक्का आहे के क्षेत्रक (जनसम्बन्ध में व्यक्तियान) कराय नाम केरियं है

<del>\*</del>

# ऋषि दर्शन

### ं सर्वोत्तस्य वर्धस्य

वहीं सम्बेदस्य सब को सुक कामान्द के देने बाजा है। इस संसार के चम्मधील पदार्थी में कामार्थी सुक है, जो काज सुक है बड़ी दल दुःस पम जाता है, पर क्षा को महिन का सुक कामान्द तो पूरा को मीठि स्वास के समाग्र बढ़ीने से परे हैं। सर्वितिन्दया दिन्हें जिलाम

स्वीमिन्द्रया दिक जिसम् ऐसी स्थित में सारी इन्ह्यां जीवी काठी हैं तब ये जीवन को स्टब्स्ते, सरसावे की शक्ति नहीं स्वती दस वक्त में सहस्य इन्द्र्य हित क्या सनोदिक बना कर अनित वस पर चहने काता

है। सन्तोष: धर्मानुष्ठानेन

सन्त्रीय स्वा है ? जीवन में धर्मेश, विद्रोप सामहायक विश्वमी, सर्वादाओं का कन्तुष्ठान वाहात करता सन्त्रीय केंद्रजाता है ! लोध कार्ति में प्रचल न होना परिचाम के बार्ग मिली पत्तु पर प्रसाण होना ही सप्त्रा परन्तीय

भ्यक्षाश है। बाष्य भूमिका

### ल न उती

क्तय:

स्व न जिती हे श्रमेश्वर | आव हवारे सब के ही उती-रवक हैं। नाना प्रधार के वडी अंकरों में, विव-विकों की काली पडाओं में आव ही हमारे श्रक हैं। नस सबस बाप के किशाब और हमारी रक्षा बर भी कीत ककता है—

#### त्वमित व **चाप्य**म् भीर भाग श स्वारे, हे

श्रीवम धव सभी ! कारतम् मात्र क्रांध करते ने योग्य है ! जिस के काप वन ताते हैं, वसे वंतार में दूसरी भीर किया भी वस्तु वी भाववद-कर्ता वही रहेकी ! जिस के बाप वसे क्या वाप ? मा न इन्द्र प्रावृद्धाक

हे एन्हें ! इसे क्रमने से पूरे न इशको ! प्राप्के हैं वा जैसे हैं. हैं से प्राप्त के क्रमून पुत्त ! इस सिए क्राप से दूर रहकर हमें श्रुव सार्गत कहाँ पित्त सकती हैं । प्राप्ती सबूत वर्षों इस पर करते रहें !

# श्रवतारवाद का सिद्धांत

(के०-श्री क्यारेन की शार्व अ. ... वेशरका (बंनकर) (१तोक से भारों)

क्रम ईसर्वनों के अधिकान ने जनवस्त्राह का सिदांत कामस्त्रीय कोई ऐसा संजय नहीं ब्यावा जयकि प्रमं का बादि सीव देव है। क्रमोति विद्यो शरकापारी है क्षेत्र है केवर का श्रम (सराव न इत्यापारी को इस सिर कुरबार होते काळा), धावर, झावर, रग प्रार्ट हो कि ईता अर्थ धनकी रक्ष रेले व शाबों के बन्दर से पुत-बदेशाः नवदि योगः की कवि के हुब, चरित्र, सरीद रहित, त्रच भारत पोर्टर यादि वन पहे ठवा गोक प्राप्ति से रहित स्टवारा भावत्य परमू वे ईसाइयत से इथक् गबा है। बज्देंद के संव पूर्व में नहीं हुए। न ही उनका कोई हैंसा बल्ड संस्ता ब्राट इस १९३२ है :--के बहिरिक धर्म हरू बना सीर स पति अपान श्रुष्ट संबद्ध म ही बार्बिस से दुनरा कोई धर्म-बक्रातं बात्नाविरं शहः बपार्थवदं । सम्भ । स्यथन वही श्रवत्वः ववन्ते धनिः सरोपो परिभूः स्वीपन्यू भी रही : अहींने पुराब के फायेर बाबालका: बार्बल व्यक्तिन क्षे भावदर सदा ही समात विस्त शादवधीयमः समान्यः ॥ क्षे प्रशास के विस्तार के विक वर्त देशका को बाबा क्या परं सिरवोड प्रशन किया चौर मानवन। त्सद ब्रादि से रहित बरसाया के प्रतिहास में रोमांचवासे बाजा-गवा है और (परि चलान) सन बार दाव । इन के परिवास सक्त श्रोर व्ह'या द्वारा भी बहा वया क्स देखते हैं कि विश्व में हिन्दुओं किर बक्त ३२/३ में ब्लूत है :~ को बारेवा ईसाई तथा बदनों की न अब शिक्षा धारि वस साम क्षेत्रवा वह गुरा बड़ी है चीर शह क्रष्टांत रम परमेश्वर की बोर्ड के पर प्राप्त हुं हुं हुं क्या स्थान रविषा (व्यम, सूर्वि, समानवा सरा व मामने वाते हैं। इत्तरे **बा**दि) नहीं है। शिक्पुराया चौर दिपरीत हिन्दुकों के सोमधान तीने भीई प्रश्न में सारक्षां प्रसिद्ध मन्दिर बोड़ डाले यन और क्षेत्र ने बावने तथा चीरभर शहर हिन्दु पुतारो राज्युत्रों को बड़ी धारतारों में लेच्ड एतिहासवार क्षाप्त्रता देते गहे कि हमुबान, की बाल उक जिल्ला हो। इस शिव वा भैरव स्नादि देवता कासरे ने रिव के राचि विन्तु की सरेक क्षमों की मार कालेंगे बात उन्हें वहीं बाधिक सिद्ध होती है। चौसीनों करते को धारश्याच्या नहीं। व्यवतार विशव के इस हैं कतः वे वरियास स्वरूप उनकी भवंदर सब शिव से निर्वेश सिद्ध द्विया बराबर हो भीर भारत का सन्मान बार प्राची का बनगर पारव बिटी में जिस गया। जिस सकता ब्दने शासा विध्या देश के क्षम बाद के विद्वांत के मातने का प्रवारिक्ष दीचर से सर्ववा इयह है रतना व्ययक क्साब पहा हो क्रिप्र के श्रमों का कर्जन **व**परिनिक्तिक क्सरी रासविकता के बिचन में नतः प्राप्तेक प्रभ्य सन्त्री तरा देर क्षिमार करना हमारा क्येन्स है। में द्राव्य है। त्याना भाग से इस इतः त्रोग प्रस्तारकार के सिद्धीय विश्व पर प्रापित मन्त्र स्थानिका व

# A45444444446446

चौ३व व चालदा बलेश वस्य विरंत्र वेपासी यस्य प्रशिषं देवाः वस्त्रेण्यावान्स्त इस्में देशक हविषा विषेद्र।

रात व विकेशित कुमा-

हाता आर पूर्वत इस्त-२१ को स्टिस्थि सनिव के ( विद्वार जोग बिराद स्वार करते एकांच में प्रवित हैं। देशकेश-बारम शासन अयो ! सत्तव है मान्त्री। देशाहा-इत्यन्त सामन धरे हामान से मुस्ति हैं ॥

इ.संबर्धाम्बर इस्प्-विशय-शासन को अपरेखना । भर**य-अन्य** दुस्तर्व-देश है थ त्व हरासन सा रहिष भारतः। विसास भवित तथा समानेत है प सकत हान अदाशक है विजा। वद स्थादित सदा प्रमु हे ! करें।। विश्व केंग्र-क का सन्त कार्यकी ।

#### बद्ध से तथ ही स्तति को करें छ विकासावर गर्मा, दशानन्द मठ दीनानपर \*\*\*\*\*\*\*\*

र. सल के बान्दर दुनियों बर ने मेरा ही ग्राक्षणाया वृं हो ब्यादर दिया इमेरा यूं ही शीरा कुब्धया क्षित्रों का आमारी हूं में तो यन ते तेकिन बेस अवती रूप इन्हों ने हुके नहा दिससाया मतो बाद को फिर दे कर सी सामी पूरा करना हर दिय सीत छहा आसी दे एक रोज है सरवा इ'बा है ब्हेरव कनत्वे वह वो दीव नहीं है er के अग्रय गंबाना वने क्ये से बरना बाह्य देश बट रखे हमेरा, भिने हात बट शारी राय हेव से दूर रहे वो कोते सक्ती काची माज्यात होते का राश सब करते हैं बेकिन जिस हा बन से शुद्ध मा परय वस को समभी हरती

ERS: -विक्रय क्रिकॉफ

वार्यसमाज गोरे गांव(बंबर्ड (बुनार) भी दोशब रूद की सहसी त्रवान, भी नरशिवदेशकी बस्तिका-ल्दरधान, श्री रष्ट्रवाद वर्षी—मन्त्री मी देवविषयी—बरमानी, वी म्स

किरीबार, की रिप्त प्रशास रका

हो नेश्नापुरु सध्यत समापते हैं

**ब**तः वर्**त्रेष**सी,शास्त्रज्ञ को जोव

दा के दाने किएत दाना स्वतंत्र

(事等初:)

समस्ते हैं।

सम्पावकीय-

# ऋार्य जगत

वर्ष २४ | रविवार २०२१, १२ जनाई १९६४ विंक २८

क्ष्मा है। इस से सक्षय २ पर सारे देश का नाना वय सुधार के कार्यों के रूपक नेमल किया और अप कार भी स्थान कर रहा है। जम क्रमी किसी व्यार्थ को पत्रपता डेजवा है, दिसी मर्थादा का जन्म-चन होता हका सीमा से क्राधिक ऋत्मव करता है, या सामाजिक, शांध्यय जीवन को स्रोतका करने बार्स किसी व्यापक बीमारी का . विषय होता हका देखता है. करकाल सामने बाहर यत हो क्रचेत करता है। उसे रोडले वे क्रिए बदा से क्या वर्तिकान करने में बागे रहता है। मार्थशमात क सररा इक्ति।य == इत का साची है। वह शत इसके जीवन की परम्परा में सामिक्ष रही है। बराई के साथ कभी समसीता नहीं किया। काविता. प्रत्याव. स्थान को समान नम्बनों में इस ने बीबा सी वह है।

सारत के विश्वासन के बाव मैंकिक रूप से राष्ट्र का जीवन उ'चा मदी बड सका। शेचे की कोर डी बिरा है रई ऐसी गाउँ हुई किन को केलकर सब्दा से सब का सिर तीचे **अ**हर जाता है । शास्त्र नेस के समान बै नुराईयां बढ़ती गर्द हैं। जनता **की** कीवज्ञास किस्ती कर उसी है। इस बरर्शवों में, जिल के प्रारा कित्र। साधन विशासन के सार्थ पर समा बा रहा है. शराब का स्थान पहिला है। शराय का पीला किशी औ सम्प्रदाय के वर्गप्रमा है करका अरी माना सवा किसी धर्मेन्यात बर शराव महीं पी बा सब्दी।

पक्थ ने भी नहीं सरका ( शब-गार्ग के स्थिताय शराब की चड़ी भी पक्षा नहीं होती। विश्व किनना क्रमधा है कि जिस सराव के क्सी बरा सम्मते हैं. उसी का इतना स्थापक प्रशास होता है। द्वात समावसपत्रों हे जिला मिनना है कि इसके अपने से विसे में शराब की सवत काने से सी प्रतिशत, हो सी प्रतिशत एक शहें हैं। इस की राजनी सांग है कि पर्राक्रय से सथाई तारी की बा सफ्री । जब से धंजाब में शराव सम्बद्धि हुई है अप रही है, उस सं सीमी भी क्रयस्था वहां से वहां तक पत'च गई है। ऐसा प्रतीय होता है कि सारा समाज जराकी काशा बारहा है। सरकार को से देखे चाहिये. चाडे यन की शह काले के बिए दैसे मी देश की शिशाने काते साध्य क्वों न कपनांत वहें । हेरा को चाहे शराबी बनाना पडे पर पैसे मिसने पर्शाहर। वह बनोवृत्ति है। बनता को रोकने के स्थान वर शराब संश्ती करके डनको शराबी अनाया का रहा है। सक्तरों के साम २ चन तो प्रत्कियां क्रिकां की गराव पीने सपी है। दा ब्यायोजन हरे। देश स्त्र सत वड है इमारे देश के बीबन का

बह सथंबर बीमारी है. बरोदों क्ष्में व्यव किये था रहे हैं, परिवार के परिचार स्टोक्स्ते हो रहे हैं। रखे अहि अस्ती न रोख्य गता से समाज का सारा दोचा विगड रोक्ट्रे वा बार्च और चारम्य बर जापना । धार्व समाज के सिवाय | हिवा आये ।

# समाज की त्रिमित

\*\*\*\*\*\* ं राष्ट्र की सब से बड़ी राजनीति , ज्ञानसम्बद्ध अंचा करते रहें । प्रस् संस्था क्षत्रेश को वर्तमान समय **.... को दीर्घाय एवं स्वास्थ्य देवें** । भारत के सारे समादी में भार्य

में दीन विशेष नेता मिले हैं जिन्हें क्का की कोर से तिसूर्ति के नाम समाजकास्थान बहुत अचाहै। से द्वसरा बाने तथा है। 📺 में बह सारे जिल्ला का सुवार करने कांग्रेस् के प्रधान भी काम राज जी. के सिए स्थापित फिथा गमा न्त्री भी शास्त्री जी शया है। कन्नलो विद्यसार्थम-सार्थ रहमें भी राजकारी शास सन्दा बी हैं। व्ये प्रधान सन्ती सार्थिय र्पाश्चेत अनाहर काल की सहस्र के कार इस त्रिमृति ने शक विशिष्ट कार्षे इन दिनों देशे कर दिये है जिन की फोर क्रवने सारे देश का :बाल कार्ल्ड 🗐 गया । सोगों के क्षेत्र में बात सामानार की mer वैद्यं होने सबी है। भारत के भाषी जीवर की जाति क्या करने समस्याओं को मुलकाने की दिशा में जनता की कांसें इन बीतों के सांके प्रश्लों की कोर दिसी हाँ हैं। मगरान् ६रे कि शह के ये बीनों प्यारे नेता भारत को कामे २ ही द्यागे ते प**से** तथा सन्दर्भम अ चौर फिसे कहा जावे। एक मात यही एक संस्था है जो इस प्रकार **ही ज्याप**ट बराई के साथ टक्का से सकता है। इस के विरुद र्मालदानी हुए हैं जिन का जीवन व्यक्तिय का सकता है। कान्य क्रीर कार्य एक श्रवासास्त्र के सारे बहते श्वाह में बहुना आसी हैं पर बनार्व समाज ऐसे श्वाह की शेक्या जावता है। ब्हार्थ समास इस बदरी हुई दुराई को रोकने के सिए शीव कोई शक्ति परा वठाने

वत, स्वास्ट्य तथा चरित्र इस शता

के मारी छयं में अवशा जा रहा है.

इसे जली बचाने की कावडकारा

है। विशेष सम्बोधन जना का क्रम

के लिए एक बावराक समिति

बबा कर कांद्रोजन के दारा शराब

—तिसोद पन

क्षमत् को व्यार्थ, शेरठ, व्यास्तिक कीर परित्र अधिक का बनाना इस का कर्तन्य साता धवा है। इसने थो है यस व में जिल्ला सहान कास द्यार्थ समाज से विधा स्त्रीर कीन बर सबला है 9 जाता कहता के चोत्रों में इस के विशास काम को 'देख दरसय का बढा से यसक संक बाता है। इस के महान विभिन्न चेत्री चासिक शहिय सामाजिक वर्ष शिका सम्बन्धी सर्वेडमीन सामों हो सन का क्रमेरिका से गए दिनों यह बोपैन्स पति स्क्रीप परनी मारत में आये समाज की परी न वानकारी सेने के लिए वाने **श** ते। कार्चसमात्र काले स्व में स्वयं ही एक कारदोलन है. महान् स्गारन तथा सार्वेद्रीश**ः** चान्हेक्स

समान है। इस समय भी जिस्ते मझान मेला, तपस्त्री, शिकाविद्यादव विद्वान, कत्यनी शवदसान्य र

समात हैं क्षे २ वसकी, त्यागी

क्रार्टसमात्र हे किसी के ज

अब समा विकास व प्रकट र fer

क्रेबर, भार्यशादेशिक समा हित-

चित्रकर पूर्व महामहोपदेशक शी

हाः समरसिंह जी सार्वपविक के

द्वापड समाज में दर्शन किये। साव

इस वहां के बपदेशक विकासन के

शाय आवार्ष हैं। मैंने कमेर

क्रभा के किए अक्रम हैने की शर्यना

अधि। बोले कि मैं हो **र**ंडी समा

काः एवा गहारमा हेसराज जी

🛊 में सभाका है : जब भी सभा

शके बाद बरेगो सेता के सिव

इसला n'। मैंने लेली के लिए

वर्षां से । वस्त्रज्ञा से सीराव

स्तरे पारस्य का देख जिला भी

विदा । सार्थ जगत में सापक्षे सन

क्रेक्सकावर अस से कारम्ब हो

अवायगी। मान्य ठाउन जी समाज

🕏 राम हैं। कार समाज में 🥅 है

भ्रमान फेनल समाज के बारे में

चिभान व कार्च करने वाले हैं भी

फिलाने । मैं तो यह दिन देखना

चारशा तंत्रचटाकर जी सपनी

कार्थ शरेशिक सभा में साहित्य के

धार्य समाज और वेद का

श्रवि वनिष्ट सम्बन्द है। झार्थ-

धमात्र का साभारया से साधारण

इवदेशक भीर भड़नोपदेशक वी

व्ययने प्रपार में अनेक वालों क

अध्यक्षतंत्र चनको वेग विरुद्ध वाता कर

<sup>1</sup> तनको देव के धानुकृत

वी बाजता

कार्थ पर वैठे होंगे--बंद

## आर्थ समाज में मीता क्या कभी वेढ ब्ध स्थान ले लेगी !

(मे०-स्रो पं. अवर्रीतहजो आवं पविक आचार्य उपदेशक. विद्यालय हापुर)

#### 444444444444 किनारे तक हो नहीं भूव देश में जन्तर यह है कि वीराखिक परिवत

बड़ां कोई मी बार्च सवाजी है वह विद्वान हो वा चविद्वान घोडा पढा बाइड भी पड़ा हो पर सन्द्रा वदि करता है तो केंद्र सन्त्रों दारा का मैं सनन्द भक्त ह'। सभा मेरी

हीं घरता है। इक्त-मध्य बार्व समावियो के यहां अस्तिहोत्र रेट मन्त्रों द्वारा

होता है। यहां तक कि जिन को देवनामरी किन्नची नहीं माती है इन्होंने वाशित्र, टेक्स, कन्दर, मखबालस, गुक्ताली, वह भीर सिन्धी दक्ष में सन्ध्या क्योर स्टब के सन्द्र गयका सिचे हैं हानपढ़ों ने सनकर बाद कर क्रिने हैं। सुवि शर्वनोपास्ता स्वस्ति

वाचन कालि प्रकरण सभी वेद सन्त्रों द्वारा होते हैं । गर्बाचन से से बर बल्वेदि

पर्यंत्त सारे संस्कार देव सन्त्रों से ब्यार्थामध्य है परों में होते हैं। वेटों से यह बाने की प्रशा की

भार्य समाज में पर्वाद सक्त प रही है। सन्पूर्ण वजर्वेद से वो प्रायः यज्ञ होते ही है सामवेद. भवववेद और ऋग्वेद गरायस बक्र भी बहुत होते हैं और शारों देद से अस्ति है।

े बरता है और जिन का जरहन चतुर्वेद प्रसावतः वह भी कार्यसमार्थे कीर कार्यसमाधियों के परों से

बार्यसमात्री सोते से बढता

कि इस हक्सा वह मन्त्र बोक्सा है सोते " विरुद ममय नेद मन्त्र बोलकर सोवा है। सभी धान बाता हवा हेर सस्य श्रीता में 9 भीर सोजन से पश्चिम वेड मन्त्र

क्षेत्रका है।

हाति के झाने गोले के कार्य कार्य बमाजिनों में डोने जले हैं पर वस से परिक विचेश मीर दसने

तब फायों को किस्स रहाकी से कराने हैं व्यार्थ समाजी दन हो भी वेद सन्त्रां इत्तरा ही कराते हैं । सांचे शन्तों में वह चढ़ा जा

संस्ता है कि बेदिक बर्म 🔢 भाव समाव है और आर्यसमान हो वेदिक वर्ष है। ब्राथ समाज स्रोर बैरिक धर्म ऐसे ही हैं जैसे साठ श्रीप्रतोज बोसी। आयंगदाज से वेडों को एक अरों किया जा बदश चौर देते से बार्य समाज की

रही भी कोई बाय सवाजी सम्बा, इबन, सर्वि , बार्यनोपासना स्वविदायन शांतिसाठ द्यादि गीता के इलोकों से नहीं कराता।

गर्भाषात से जन्म तह और बन्म में बरण तह कोई संस्कार किल के उपोचों से नहीं होता है। कोई भी यह बड़ांतक कि थी कता अस्तानसी का यह भी गोवा

के स्तोकों में नहीं होश है । कोई भी धार्यसमात्रो अपने : ब्रापको वैदिकपर्सी गताने के श्यान

में मोशपर्यों नहीं स्वया है। व्यार्थ समाओं में बडी मो चितिक प्रम की बर्ध के स्थान में 'शीक्षा मर्स की खब' नहीं बोक्षी

**२६ सो आर्यसमाबी देसा** वर्धों है वो देव को भीड़बरीय ज्ञान यानने के स्थान में नीवा को ईहर-रीब ज्ञान' नानता और चड्डवा हो। श्रावंसमात्र में स्थित नही

कुछ दा बीन सब्बन ऐसे हैं जिनकी बाज कात्र तो कहा है नहीं सीर दिन्दी इन्दरी क्रिकारी झानीहै जाती प्रैशासिकों के भी बहत दिवा- बैंटे विडाये दिना इस किये बराये क्रयने बाप को 'बार्यसमान के

क्रांडकीय गुर्भाचम्थक तथा सब से व्यक्तिक विकास सील शकट काले के सिने व्यार्थ सामाजिक पत्रों से इस प्रकार के अब क्यातक क्रेक क्लिये सहते हैं कि - हाय ं वार्थ-समाज में नीहा बेद का स्थान ते रही है। एक सम्बन ने ते कह सी ज़िल्ला है कि उपनिषय भी भीरे ते वेद का स्वान केशी वा रही हैं।

वता नहीं वे सोश किस संसार में रहते हैं।

स्था कभी र कोई उपदेशक भवने व्याख्यान में अन्य बहुत से वेद बन्त्रों स्वृतिबी राशावस स्मीर महासारत काहि के इत्रोधों के साथ गोला का भी स्त्रोक बोलता देख है इतने साम से हो गोख ने वेद का स्थान ले क्रिया १ कायका कहीं २ कोई चपवेताक

ब्रावें सिदांचों की पृष्टि में भीता का रक्षोक कोलें या कसकी रूका कह वें वो गीता वेद के स्वान में क्षा क्षते ।

बार्वे सवाज के साप्ताहिक और दैनिक सरसङ्गों में भो सरमार्थ-प्रकास की कमा होती है तो सल्यार्थ बकाश से बेहीं का स्थान से विकास \$ sar 9

(SERVI:)

### हार्दिक क्वाई

कार्य आदेशिक समा के की कार्व कर्ना प्रधान थी शासा इन्त्रसेक जी के सुपुत्र भी विधित बाव् के पर पत्र रत्न में जन्म किया है। इस द्यार्व जगत की कोर से भी बा. इन्होत जी को इस के पोते के शब जन्म पर धाम्बरिक वर्षा देते हुए दिय शिश के स्वात्म्य एवं दीर्घाय राजे की असदान से संगत कायता बाते हैं। सारे परिवार को हार्सिक

# तन्त्रों की घृषित शिचा

(से॰ भी पिंडी दास जो ज्ञानी अमृतसर)

#### \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

'पुराचों तथ तारों वर परित सम्बन्ध' गोर्थन होम के घन्य में वी दिव बारों जाता के बार जोने में बुद्ध है, इस ने वर्तिका की यो कि 'इस से बारों के बारों में दूर वादित तिहास का प्रिएशंत बारों हुए पहाडों से सिनेश्यर करेंगे कि सेनी पृथ्वित रिप्ता देने बाड़े ज्यां की स्वास्थ्य समस्तें। पांची प्रविद्या पूर्वित विच्या विश्वित परिताम प्रविद्या प्रविद्या प्रविद्या प्रविद्या प्रविद्या

शक्ताः रूपो धो पृथित रित्ता ने सार्वे वर्गात को कर्जाता करें में तर के अधिक सात जिया है रही रित्ता के काराय जार, टीमें, नोधे और सांगों के सात्रार हुया, हामें भी हवा से पूर, ते के रिताय न सारिकों, गांविकों, रितायों सांगींची भी अब मुख्य करणावा स्थापन हुं, रही को हता ने पत्रा, गांत, गपु-वीतं, या-पित सार्वा कुम्मों का नवरार हुआ भी: हता ने पत्रा, गांत, गपु-वीतं, या-पित सार्वा हमार्थीं का नवरार हुआ भी: हता ने पत्रा का पत्रा मात्रा का सामार, विचार ही साह्य दिवा गिर्वा कर हो तम पत्रा गम्य। साह्य। नीचे गांतिक दिखा के नामें सप्तृत किसे जाते हैं—

देद से क्ष्मिस करने की नीति निर्वाटकी: जीत बातीया विवहीनोस्सा हर ।

सरवारी सप्तक्षा जासन स्क्षी वे स्व इत्।। सन्तर्भवीया वना स्वतास २ मोड १४

क्रमीत्—िश्चित क्रश्नर विष्य होन सीच प्रभाव होन हो जल्दा है क्रांत्र क्रार नेदिक सन्त्र नीचं रहित हो गये हैं। सन्त्रुग, जेश स्था क्रापर सुनों में ने सफड़ ये, परंतु क्षय क्रीसमुग में सुकक समान हैं।

> देर शास्त्र पुराणानि सामास्य गणिका इर। इयनु शास्त्रवी विद्या गुष्टा इस वपूरिय ॥ इस्रार्थय स्त्र कस्तास ११ प्रसोट प्र

क्ष्मवंत्—केत्, सारम ध्वा प्रस्ता शासक विश्व की ठरह (हीट) है और वह मों उन्हें विद्या है वह नव-विवहित वयू के समान गोपनीय है। साम मार्ग की मेराज्या

है। एंडाव में ब्रापनी समा के मान्य समाज की त्रिमति (इस्ड १ का शेष) महानुशायों (से वस निवेदन है समाज को भी तिमूर्ति की जावश्यक्त । कि जार्ग पारेशिक सवा को है. जिन का पान: सारा समय सेवा उसी प्रध्यस्तर पर पट'वा रेवें जो इस की परम्परावनी हां में अपंत्रा हो। समाज औं वहें वहें है। समय देने वाले सध्यन मिले सदापहर है जिन पर सबसे बढ़ा है। हैं, प्रसन्तवा है ऐसी विमूर्ति वन स्ववि ऐसे शीन सम्बान धनिक स्थास बावे जो इसे समुख्य धरे। देवें वो महान जपकर हो सकता —प्रिमोक चन्त भौतिकी सह संसर्ग दस्ति इत संपुर्। कृषेनि कीस सेवां ये त हि सम्पानते कसिः॥

. सहानिर्वाद्य तन्त्र चल्कास ४ श्लोग ६२

क्षपांत—मो बोग कीतको (शबसामी पानामों) के साथ रहते हैं, उनके निकट क्या है, उनकी सेश कार्त हैं, वनके प्रति कसिक्षप कोई साथा नहीं कार सकता !

> करनं स्टब्टं पुन: स्टब्टं स्टब्टं स्टब्टं मदोज्यते । विनाद्यानम् मार्गेस् कर्तौ नास्ति गरिः त्रिते ॥ सङ्गानसंख्याकन्य सन्त्रास्त्र दस्त्रोकः

स्मर्थत—है विते ! (पार्वती) की यह सत्त कहा है, सत्य कहा है और दुव्यपि साव कहा है, साव कहा है साव कहा है कि झावस सार्ग (बाब बार्ग) के बिना कल्लिया वे कोई गति हो नहीं है ।

> जबाँहादित्य स्ट्रादि देवता मुनि शक्साः। इक-धर्म-दरा देवि मालवेषे उ.का कवा।।

सहाविशीय वन्त्र वल्लास २ हलोक २४

क्षयांत्—हे देवि ! (वार्वती) बाह, इन्द्र, सूर्व शिशादिक देखा, दुनि एक रायस सन के सब बात आने का क्षणुष्ठान करते हैं तो फिट सनुष्यों का तो कहना ही क्या ?

क्षासु दक्षियः बेच्डो बाम बेच्डक्तो मतः !

वन्तु बामं विज्ञानाति स एव परमो गुरुः।।

मेह तन्त्र प्रकाश २० शतीक ७४ व्यर्थात—इत्त्रिया रूप्य केन्द्र है, पटन्तु याम मार्ग **व्यव के सी** केन्द्र है। जो बास मार्ग को बाबता है यहां गुरु है।

वी इच्छो बाम मार्फलु फाल्युनाय क्पव्हरान् ।

मेर राज शकारा २० इक्षोध ८२ कर्म्यान् — वी क्रम्या ने फालपुन (अर्जुन) को राज्य सामी का

क्ष्पेश दिया । बाम मार्गे इ.त सिद्धिः

> नेद क्य प्रकार २२ वडोड ८४ क्रमीय्—वास मार्ग डारा शोध सिद्धि भी मान्ति होतो है ६

> > को प्राप्ताद कराक्षणको जिल्लाको यस्य किन्द्रविष्ठा कस्य दर्शन सालेख इत्तरनोऽनि त्रिमुच्यते ॥ सन्तार्सन सन्त्र ३-२६

ष्पर्यक्\_रुव (कृतार्यव) तस्त्र में वर्षिण 'पावार्यरा मध्य' सिक्की सिद्धा पर हो, चय साथक के दशन नाम से पांतान भी मुख हो नाता है।

> वी शासाइ परामन्त्रं शत्वष्टोत्तरं तनेष्। जुरुवते अध्यक्षरवादि हुमहावादेश [पंचितः॥

ङुलाखेव रूप २-२०-८ सम्बोन्—वो सायक बातावस्य सन्त्र वा यक वी झाठ शर वक करे, वह सहहत्वादि पांच बहुत्तापंचे से सूठ आता है। (क्यकः)

# सभा के अन्तरंग तथा प्रतिष्ठित

### सदस्य

सार्थ प्रदेशिक सभा पत्राय जासम्बर के मान्य अधिकारियों के जास प्रकारित हो एके हैं। अन्तरंग सभा के निर्वापित तेमा प्रतिन्दित सन्तरतों के नाम १६६४ के लिए नीचे श्रकाशित किये जाते हैं :---

ब्रह्मतमा शासन्द स्वासी जी।

**ब्रह्मलक्षा देवी ५०८ औं होड्या**स्पर ।

केदन देशवयन जी अनुस्ता ।

भी जानी पिरसी दास की धन्तसर ।

बी पि॰ देशराज जी महातन बाह्मन्यर ।

**बी विकास प्रधानकाल जी त्यालांत कारोज प्रशास ।** प्रिं० थनकराम वी स्वयूतसर ।

किं कारेमाथ की बेरी वासन्धर

ति - प्रस्थवात ती क्रम्याता

ano आतपन्य भी में इन मासस्थर

ago शंकरदाश श्री दे हन वासन्तर

की वसदेवराज्ञ भी एस. सी. बाह्यन्वर

**उं**स विशासासा वी सारतसर

भी कार भी अभी प्रधानक बाबाने स्रो काग्रसम् वी परदीगद

बी सन्तराम जी लज्याना

.. शरबंस जास की मजरिस वसका

.. हों. हेर प्रकाश शी जासन्पर

,, क्यों प्रकाश जी बग्गा होस्वारकर

,, राज इमार वी देवशी

,, एं. हुओं दास जी आहे गतर जातन्तर .. हरबंस काञ जी वसीकतां होल्यार पर

, सन्त राम, श्री धन्वांता , **श्र**म्द सिंह जी ग्रम्पासः

.. **रा. रि**स्स्ती राम जी भ्रम्याता जावनी -

.. बजरेव सिंह जी भंदारी एडोकेट दुरदास पुर

.. सह जी पर्दे (शका मन्त्री विकाय

.. क्रम्ब सास वी ५रानी मसदी जन्म

.. दूरवारी साम जी नई देडधी

श्चिसंपस सूर्वभात् जो चपकुत्तपति क्षमचे व सनिवसिटी .. पं. ब्वाराम जी शासी देहसी

.. बन्नवास भी गुप्ता टोझना

., सा. परमेश्वरी दास बहुत चंडी गढ

... यशेशदास जी करनात शहर

ब्रि. बाल चन्द्र दी ब्रिसर

#### शार्यसमाज परासी सरही उपम

बार्यं कत्या महाविश्वासय के सानदार परिशाम

बन्ध-बार्व क्रमा बहविद्यास्य तमा के परीक्षापण धत वर्षी बी अंडि 📰 वर्ष भी बहुत शासदार रहे। सिवित्र का नतीश शय विरुद्ध रहा । बेट्रिक में ११ में १० सहकियां शस हो गई । एक सक्की ने ६०४ सम्बर होकर बानिवर्सिटी की १४वी पोर्थाशन प्राप्त की । ५० वें. में ३ फाट दरीक्षण कीर २६ ते. वैश्वेष्ट वहीक्षण प्राप्त की । शासकार नशीजा के सिने महाविकासय के कोव्य प्रवास्त्रकार्थ भी सशस्त्रवास सी. गुजा क्या निशीयल व सटाफ क्याई के पात्र हैं।

### श्रार्थसमाज के प्रराने महार भक्त श्री ला. शंकादाम जी चेले बसे

बार्यसमात के बीवन पर्यन्त कनक कार्यकर्ता, गम्मीर व स्पेन रुपमी, कवि टकानन के ब्राजन प्रकर, बेब प्रोप्ती भी सा॰ संबरतास की जेइन वासन्बर का ठा॰ ॥ वजाई सश्वार प्राचः चार बने जनकी आपनी कोडी सामस्य अगर कासोनी बासन्घर में दश वर्ष की कायु में स्वतंवास हो गया। मारप्रसे सारा जीवन बार्य समाज की सेवा में विका दिया। जानार्थेर किसा समाज के इस समय प्रधान है। इस क्यान के जानावा के कापने रकुत, काहेज तथा कार्य प्रावेशिक सभा के कार्य में ब्याप ने नहीं भारी सेंबा की। ब्याप एक तरस्वी और। बड़े ही सीन्य तथा गर्म्भार में । इस कशासमा में विज्ञा सदाज के रिशास मन्दिर के निर्माश में रात दिन एक किये हुए ये। समाज के पुराने श्वम्मों में थे। आशके बाते जाने से आव समान, सभा क्षमा संस्थाकों को नहीं स्ति पहुंची है। सारे नगर में बाएके जीवन को बचाव या । सरकारी सविस में रहते औं ससाज का वहा कार्य करते थे। सहस्त्रमा इंसराव औ के बढ़े भक्त थे। धीरे २ इमारी समाज के पराजे सहस्रधी जा नहे हैं। बाबी क्स बहारची प्रभावशासी स्वर्गीय मास्टर जन्दलाल जी के जिसस वे करू समाने व पाये थे कि सा० शंकरदास की चसे गये। क्रभी का अञ्चल लाजका जगा में चनके जिलास स्थात हो

बारम्य होकर जी. टी. रोड से होता हुआ। नगर के श्वराज-चाट पर पहुंचा । अर्थी के साथ मोडल टाइन कास्त्यर, साई-टाम द्वाकर शेवंदी सकत के काल्यावर, तथा नामधर नगर के प्रविच्छित नागरिक थे । दाह संस्कार बिहर संस्त्री ने पूर्ण वैदिक रीति के बतावा । उक्ताता माट पर ही शोक सभा की सर्व जिस में उनकी कारमा की सदयति के बिए प्रार्थना की गई। तथा सारे परिवार के माथ तहरी समनेत्रा प्रस्ट की तहें।

बार्य व्यक्त के शाहकों से निवेदन है कि जिन शाहकों का मह साम का चन्दा नहीं आधा वे भी छ ही वपना ३ चन्दा एम० बो० से सेथ कर इतार्थ करें।

### दयानन्द विश्वविद्यालय की स्थापना

#### 

भारतवर्ष तथा भाइर की समयन वक हमार हो। या वी। काहि बार्वसमात की शिवण सरवाओं को एक सुर में मांचने के उद्देश्य से men के समेरिय न्यामासन के वर्ष तकत न्यादायीश का॰ मेटरचन्द जी बहाबन के प्रधानत्व में दो वर्ष पूर्व 'सार्व भीम बार्य समाज शिवस संस्था परिषद' का संगठन किया गया था। देवली में अन ६२ में उसके पहले सम्प्रेक्षन का सब से महत्वपूर्व जिल्बा एक दवानन्त्रे विश्वविदाशय की क्यापता या । श्रवि की बन्ममृत्रि टेकारों तथा शिवा स्पत्ती नंतुरा की जन्मत में, पाले को निर्वास प्रक्रि तथा केशीय स्थान होने के प्रतिरिक्त कारम देवती में वारीक २२ सिवन्बर' ६३ को इदानन्ट विश्वविकासय स्थापना समिति तथा परिषद की कार्यकारिको की सम्बक्षित बैटह हैं सर्वे सम्बन्धि से निरूपय किया थना कि यह विस्वविद्यालय आडसेर से अधावित किया आय ! पंत्राय, उत्तर प्रदेश, विद्यार, सहाराष्ट्र, राज्यसान तथा देहसी शादि के उपस्थित प्रतिनिधियों ने इस विश्वय का असाहपूर्वक भागत करते हव जमे पूरा करने में सदायता देने का बाइशासक दिया : <del>जारी</del>ळ १३ अलबरी, १६६४ को डो॰ ९० थी॰ कालेश, कानवर में परिचर के इसरे सत्तेतन द्वारा सर्व सम्मति से इस निश्चन का समर्थन हो अपने के बाद बाब बसे कार्याभाव करना इस सब का पवित्र बसे जा हो aner है ।

बहु सन्दर्श है कि केषण समास्य मेरि. निर्माण साम से हुए कर पहुंग मार दूस तरी है के बहु स्वतंत्र स्वतंत्र स्वतंत्र से के स्वतंत्र से से से से प्रधान स्वतंत्र तो है। इने निरमण है कि हो अपने कार्य त्या मार्थ स्वतंत्र स्वतं

प्रज नंबा सा बान निर्माण कर हो है सकी हैन रही। हैन है में के किए रहें है है किए रहें हैं किए रहें है किए रहें है किए रहें है किए रहें हैं किए रहें हैं किए रहें है किए रहें हैं किए रह

रिकालर योग (Dayanand University Fousi) इस रोवेश के प्राय देशका में, दिन्दी रोट, हुंखा तथा तटेंट केंद्र मार्गेट में दे मार्ग देशका में, दिन्दी रोट, हुंखा तथा तटेंट केंद्र मार्गेट में दे पर्य तुत्र चौर प्रामेट में राजस्थान दिवान राजा के मार्ग्य की राज्य विकास भी राज्ये का लिखिका कालों के नाम से में हिस्स हैं, क्या सारा स्वतिक पना दें में हिस्स हैं, क्या सारा स्वतिक पना दें में सीचा वा उस में से विकास का होने से किया है कर है सारा मार्ग स्वतिक पता है स्वति हैं कर है कर सारा स्वतिक पता है से से से से से से सामा मार्ग है।

स्राज्य रिक्वरेयालय के जायारा का यांचे बाई में पूर्वण है । हा त्यां पढ़े तो में हिन्दु में सूत्र हिस्सात है कि आप पत्र की स्वारणा व क्ट्रोंग के द्वा स्वार हुए होण की रहता कि कि स्वार्थ के दूब एक जाता के अप पहुंची करीत कर रहे हैं। कोवार कामाण्यों का स्वार्थ हिमार्टियों के प्रांतिन के रह रहे हैं। कोवार कामाण्यों के निवार किए रहती हिमार्टी बीधन के कोक हुने से के स्वार्थ को रिवार्टी कोई कर पुत्र है हमें पूर्व काला है कि से समस्त्रों प्राणि की स्वार्थ के के कोड़ कर है है हमें पूर्व काला है कि से समस्त्र प्राणि की स्वार्थ के का के पुत्राने सुक्षों के स्वार्थ के सार्थ अपनि की स्वार्थ का के पुत्राने सुक्षों के अनेती की सार्थी का सोवार हो होगा मॉफ्ट देश के हिमार्थ के से अपनी हो वे करवीनों की सार्थ का सहस्त्र स्वार्थ

ह्य और देश के शिक्षा व आर्थनीयक क्षेत्र में कार्य करने याने आरोक साम कर्मान यह स्थानक वरते होते हैं कि दिना हरों को बीद सारारों को क्षेत्र तह के शारीनांची थी रह हमारी धीवाओं को शारावक को देश कराये कार्य के बीद कर साम कर कर के हम कर की देश हम कर के हाम कर बीद आर्थक वन्नवीत नाम के कार्य हम कर हम कि साम कर बीद आर्थक वन्नवीत कराये के स्थान कर हम के कि स्थानक के स्थान का मान हम के को है है आर्थ कि क्या कि स्थान की स्थान के सामुक्त कर साम कर हम के को हम क्या कि स्थान की कार होंगे सामें कर साम कर हम के को हम कार कि हम की कार होंगे सामें कर हम की स्थानक हम के बीद के बार के हम की साम की साम की हम कार हम के की हम कार की साम की साम की साम की हम की साम की

इस प्रकार देवानम्ह विश्वविद्यालय की यह बोजना शिका कुवार कौर विकास शिक्ष से महत्व की होने के सिकाव हमारे राष्ट्र और समाध्य के लिय भी एवं उपयोगी सेवा होगी, इसक्षित इस कार्य में हमें सब की सहत्वया व सहबोग मिलेगा, पेसी चाशा है।

मेहर चन्द्र महानन, भारत के पू० मुख्य न्यायाचीच तथा अध्यक्ष, सार्वभीम आर्यसमान स्थितरा संस्था परिचय

था**ः सङ्घावीर असल् अन्त कार** 

a: काव साहित्य की प्रकार्थ

सबबा पत्र-पत्रिकारों न हो।

कार्य हाईस्कूल नागः	
ही, थ, बी, माहेज बनेटी नई	cita
हेहसी से सम्बन्धित इकाश चार्य	मान
<b>हर्व</b> स्कृत नामा बना सुन्दर तथा	
असिंह है। बाज इस वस स्टूज के	গান্ত
हैंनेवर वी सा॰ प्रस्तवास वी	* 9
mi un. 48. 82. Et em 46	દ્ય
बराने अनुसरी हैं, साई शस पंछी	44
बैदिय न्यून वासन्धर वैसे विशास	E.
स्कुल के जिस्तिकत नहें हैं। सारा	1
क्षीवन सकाय की सेवा में बीता है	বা
मामा लुख के विशेषक की सा०	1
देखराज जी मार्टिया चल. ६. है।	1.
बाद ते ही. य. थी. शहर केंब्ड्री	1
क्ष्म्य कार्यमान में जिल्ला २२ वर्ष	M
क्षत्याका क्षात्रके विकास वेग्य.	वी
क्यापारी क्लेप्स, क्लेप्स में गूर्व	ক
841 Manual 1978	100
041 <b>2011</b>	1
वरिवार अध्यातिक व्यापान व	
(बरोब शक्त व बायबर्श है। दिसा	4 4
मैं से भाग कवात है। वाते	r i
क्रोटी ने जाब को कादियाँ	
साथा सूचा का विशिवक बना व	
बेला है। भाव के नाथा सूक	۱,
काने पर स्कूल की पहार्त व परी।	
वरिसास में क्या भारी सर्वात हुइ	
इस वर्षे देशिक दा परिकास व	20
प्रतिशव स्था काप का हिस	4 8
वरिकास ६४ प्रतिकार रहा । दे	
शानदार परिवास यत वर्ष ।	
है सहि जिल्हा। समाध के क	
वै भी भर्ग वर्ष नेते हैं। त	भा
<b>स्कूल इ</b> र्चचा हो गया ।	- 1
	<u> —</u> ì

दयानन्द कालेज शोलापुर विस्त्री की की, प. वी, पालेक हार स्रोत प्रकल क्ली समा नारव की सब से बड़ी झीर शबीजनम शिक्स संस्थाकों में से एक दें। इस बस्बा की क्षोर से शोखापुर में कार्टम कीर साथम कालेप, बायसं बाहेश, एव्यूकेरन कालेक, बारे को हाई स्त्रज पकाने या शहे

साला हे ही हैं। यह सा काले व : तबा साव दोनों समय (शक से क्र-१० तमा **सार्व** ≉-०० से ) क्रमा ६रेगा । इस सास प्रथम on. एव. वी भी क्या व्यारंग ٠, शेर. राजेन्द्र **विवा**म्स हकारण कारेज रोजान बंबमाव (का. बि. फिछेनप् 7119 श्री बेश्वर पन्द सी सम्राम्य LA.B.T. (क्वाम) भी देस राव अमीन Ardocute शेसन्यय-क्षकी कारका(क्षत्रशान)मी व्यक्त हर्मा (सन्त्री) भी घोश्य प्रकारा की क्षम (१५ मन्त्री) वी हर्स देव की

(क्शाबक मन्त्री) भी मेहर चन्द्र की **इटारिका (क्षेत्राध्यक्ष) जी मोह**न शक्ष वी शुक्राटी (पुलकाध्यक्) भी **को**, कर्जन इस्त की सक्त स्रम्पंग स्थानी ६ त्युनीर श्री गारकी शहरू धन्तरंग समा महर्थ राजी बाद बगाव का वि. फिरोजपर ही, ए.वी. कालिज जालेक के प्री-वानवर्सिटी परीचा क्याई !

का परिसाय

वरेन्द्र इस. करवानी ४०० वस्वर तेक्ट वृत्तिविदी के कन्देकर पूप वे कर्र स्वास वे स्वय स्थान बढ शर्तिकत नार्यात्व सर्व गरव-पास्त कार्य-की को**ः सहा**कीर प्राप्त विका। इच्छा शेषक श्रीवरी वैविका १६ में अ४ वह तेका वृत्तिवर्सिटी में श्रवम रहा । इसी

त्सात बाबसवास व्य देशस्थान सगमा ६० वर्ष की चानु में दिवां ६ जन को की शका । ध्याप मान के प्रकार बोडिक्स बुद वे सेपरे, चीवे, दांचवें स्थान भी इसी फालिक एवं आने-बाने नामरिकों में से हे : हे इत्तों ने प्रश्न दिन्ह । तान वैदि-काप ने आवश्य वर्ष वर्ष समाव क्छ मूद में किनोद कुमार सिवल ते वासम्बर विवीचन में सन से s'ना त्यान प्रसानिया । ६९४ सक् व्यक्ति शुरू शीरका, वर्षे वराव- चात्रा को सेंड निव ।

লল কিবা। १३ श्रद्ध वृश्विती, सृषि कीर स्वाध्यायशीय ये तथा विक्रमी व सम्बे वर्षेत्रिक्ट व्यक्तिको स क्षे व कोएन गवर्नींट स्वासर शिव क्रांबर करते थे । समाध्या ४० वर्षी को प्राप्त भी।

वें बार्च एक्क्कीर की मासिक. वो कि वेशन के दूसरे कालियों व्योधकें को सामानिक विशेष से आहे से में कांपक हैं। fresidier di aită es alturi २७ हात क्विक्छिरी भी वैरित sur fitet deften 4 fort हें स्थान से गर हैं। असर्वे कहर से बंधावर प्रचारार्थ ा हात पर विश्वीसन में am विशेष दिया करते में । ब्राए हैं जो कि स्टेट के सभी क्रमता बोतों को मेंट स्वरूप असान fungen fin gefen fit fem व्यक्तिओं से प्रापिक है। कोई साम्बाद एवं कार्य असे हे बी इस कांक्रिक के नाम मेरिक्स व्यक्ति न होगा जिसके पास सर्गीय धी अन् प्रतिकास अक्षकि क्**निक्**रिटी

की प्रकार कीर बींडक्कपूप की

ut.१ बर्किसा जबकि वृत्तिवर्सिती

महाराष्ट्र बांत के लम्नरीम

चार्च तपस्वी चल बसे

नोविया-(सहारतः) के वयो-

की प्रदार हा मिनीरीय व्या की २९,३ ब्राप गोर्दिया ब्राम समाद के क्यकि वांत्रशर्वेश की ३९.४ है। बहान हितेशे तथा रह आर्ने चीका शास की । राषाची से। जिल्लीने सामन्त्र इसी काश्चित्र के द्वाप वय-बार सिवांतों को माना व उन्हीं के क्रमुकार का परश् किया। आप शोपास ने एक. ए. शोस्त्रटीकत का सन्त्येष्टि संस्थार सायधी इच्छा सर्खें इसरें दूसर में इयद स्वास सकार प्रमा बेहिड शियानुसार शक्त किया है वो कि कायन विका गका। सामके कल्पेष्टि संस्था से भार के मैंस्टो ग्या-सराक्षतीय है। मत्त्व स्रोगों ने साथ विया। इस पदार वह काश्रिक समी महान पर ही **ए**क शोक सारा कियातों में इतको सहा है इस हुई जिस में दिवगत ब्रात्मा की बार्य बलकत दा प्रेन वि० वी. एस तांति वका उनके दुक्तित परिकार को इस सहात चंत्र व द्वारा वे बहेत हथा इनके बोग्त प्राध्यापकी सहर करने की शक्ति ब्रांज करने को है। बार्व जनत की क्रोर से की परमात्वा से प्रतिश की गई।

> वे क्रम और सम्बंधि चनकी स्थ स्रोति के ज़िल शोध सम्बाद पीर्थ fam i प्रादेशिक समा का वेद प्रचार कार्य

इस क्रक्सर पर बार्य बमात गीर्वरक

वंs प्रशासकार की प्रकारन तथा ं हरिस्पन्द की ने अपकाना किया विकार कहा अल्डोपर शिका शंक्रार वे वर्द चिन तक वेद प्रधार एक बारकात प्रशिद्धत, प्राप्ते संब िया जिल्ला बनवा ने की परा-हुवा की श्रुष्ठ के क्लाइक में संग-साना निकाधिकों में १४८/- वका सेवा तथा परोपकार के बार्च किये । सारीपुर ने १३०/- वेबक्याराय

स्तरू व उपकार से क्लोपराज की बन्ती कार्य मारेक्ट जीतीबिक क्या पंचाय कारूकर हारा पीर मिखान में है, मिझार रीव बारक्यर से सुद्दित का मार्थनाम सम्बाद महत्त्वा (क्रांत क्वा निवट क्वहरी मान्यन सहर से स्वतिम मान्य-मान् महेरील स्विति सर्ग नेमान सम्बन्ध



रेबोच्होन २० १०४० **पर्वित्यादेशिक प्रतिनिधिसमा एंजाम जासन्धर का साप्ताहिक मुस्यपत्र**] Bayd. Ho. P. 1

वर्ष २४ व्यंक २९) ४ सामसः २०२१ गविवार—इकालन्दास्य १४०- १९ वृताई १९६४ (तार 'प्रादेशिक' जासन्यर

### वंदा मृत

#### समिदाधान के मन्त्राः

श्रोश्च श्रवन्त इस श्रात्मा जातवेदस्ते नेप्यस्व वर्षस्य चेड वर्षाय चास्याच् प्रजया पर्ग्यार्थं नहस्तव से नन्नाहोन समेषय स्वाहा इदमन्त्रये जातवेदसे इदं न मय ॥

सायवस्त्रण १० व्हिका स- १ तुत्र १२ स्वेन-हैं स्वे ! (अप) १ (१) तेश (स्था-) स्विम्स्ये
(स्वारा) स्वारा है (१) है (१) है (१) है (१) हमा अंत्रम्यरे
(स्वारा) स्वारा है (१) हमें १ (येव) इस ते (१४२०)
(स्वित्रित है तहा (स्वेत्र) स्वी स्वीत्र हमें १ (वेव) इस (१)
(स्वित्रित ) सुत्रों ते (स्वस्येत्र) स्व सत्त तेश तेश हमें १ (स्वार्य) स्वार्य
(स्वार्य ) सुत्रों ते (स्वस्येत्र) स्व सत्त तेश ता (स्वारात्र) स्वार्य
स्वार्य प्रतास स्वार्य हमें हमें १ (इस्त) इस स्वार्य कर स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य हमें १ (१) (इस्त) इस्त स्वार्य कर स्वार्य स्वा

श्चरित के सिवे हैं (न मम) मेरे जिद नहीं हैं । सब श्रम के व्यर्थ हैं ।

मांच-मांच थी आहेन को प्रीप्त होते हैं कर गान में कर गान में कर गान में कर गान में कर गान से से कर गान से

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

### 🗜 ऋषि दर्शन

वार्षेष मृत्यस्थि दश्ये

यदा चित्तं जतिस थव इस मानव से विक जिला काठा है इसकी य

समाण हो बाती है, वा के विषयों के क्रावी से विरक्त हो आता विक का दास न क्राप्ते दश में कर महत्त्व विकित बाता है।

सदुष्य विश्वित जाता है। त्रिदिन्द्रियायां उस समय स्वत ही विषयों

यस समय स्वय ही विषयों जाती हैं। ? सारी कांग्स, इत्त्रियों का का स्वयं र्ग उसकी र रुक डा हो अ

#### **बंद सुक्तय:** इद्र अंग्टेन प्राप्तर के महत्व १५ । इन

रक र्रात का सूच्य १३ तमे वेसे

हे महान्द ६ ह ! हुमारें जिए नहां यन प्रश्न करें, कहा झान रिजिय। ऐसा यन कींट्र झान को हमें भी बढ़ा बना हैं। हमारें कामी की झुक्ष कता रेकें। वह हमें छोटा बकते बाला न हो, हजारी दिन्या का कीरण ज की।

### भोजिष्ठं पुपुरिश्रवः

इमें ऐसा बद:—हान प्रदान करें जो कोत वाला, कर शक्ति देने बाला हो जिले कर इस पत्रवान न र शक्तिश्वा करें द्या पढ़ झान पुत्रकित्व करें द्या पढ़ झान पुत्रकित्व कर्म का प्रदान हों। हमारे बे क्रमों को पूरा करने बलता हो।

### इन्हो राजा जनतः

हे लोगों ! देखों बहु इन्हें ध्रावाम इस सारे बतार का राधा दें। बहु इस सारे विश्व में प्रकारित हो रहा है । ध्रम्भ ब्यापक हो रहा है । दस की अहिया उसका प्रकार सरीज़ अभि होता है बही सोधा है । बसे म नुसा। सर स के द से

( तलांक से बाये ) का लोगों का कामा है कि me ein eine Eife be de freie के लाहा का पेता वर्तनं समा है। देशा वर्लन हमसीदाय भी ने 'मेर

Sear R-का किन पत्तत सुनक मित्र काना । बार बिन कर्न करब विधि नाना ॥ क्षात्र रहित समझ रख सोमी। विता वानी वक्ता का जोगी। परन्त साथ ही धनत्या विशेष

में किया के समतार भारक करने का सिर्द्धांत भी माना गया है। इसके क्याचा में वे बळ मन्त्रों की श्वस्थित का अनके कार्थ देखानकार परक सरते हैं। धन अर्थी के टोक व गक्रव बिद्ध वरने में हमारा परस्पर स्रवभेद हो सकता है। चनः इत द्रवीं की समीचा द करके इस **एक धा**न्य पठित से शतका जिलेक पर सकते हैं। प्रथम बात तो यह कि इन अवदारों के कार्यों का एक प्रान्तों में हो प्रशतका हे और पूर्व दिए गर पुराख

प्रविषयक वर्शन का स्वा होता || स्वोदि क्रिक प्या के समाव है क्राफित भेगा जिल्लामी भी है। रेट के बताए समझार r, न **म**स्त्र, न कस्त्राविश क्षोर स्वापक प्रथव बरने शबा) और

क्रवीत सर्थि से र इस उत्तवों का वर्शन ंक्वारों का समान-

स को শৌ

#### सिद्धान्त अवतारवाद का से॰ थी अबदेव वो बार्व एम॰ ए॰ वेसरका संवरूर

\*\*\*\*\*\*\*\*\* एकेंड मानवे 'बाबे सम्ब व्यक्ति विकास की देशसम्बद नहीं मान का बर्च कृट बाबा है। बहि देशे सक्ता। चिर एवं 🏙 वर्षे की भारोप 'विसे कि सुपत के सम्मूस बात वह है कि वो मार्चरायां शिक्षपाचने मी क्षत्र पर नहीं वेटे रीतियह स्टिप् में साह समाप में पर फिर भी को क्रमा ने शर्व व स्रोत कृप्य क्या राम उत्पत्ती वंसका सिर काट सिवा गा कोई से बुक्त कित सन्त्रों को भागत निर्मण्ड न्यक्ति किसी सम्ब व्यक्ति के समर्थन में संगादा उनमें क्यूंगों के पूर्वज पर सगाय वो निश्चन ही कर बास्ड श्रांच जेंद्रे सर्वताम्य 🌃 उनका मिर क्य से एक्य बर वेरमान्यकारों का जान शरकान हासे। पर शोद है कि साउ तथा है जिनमें छन्तोंने बारधारकार श्री बर्यित भक्तारों के साथ बन्ह दर करपना भी वहीं हो है । शतक ने बर्खवों को, यूबा को हर रही, त्यद्र ही पराह का कार्य सेव कम्या मद्रामधिपूर्वत पढ़ते हैं और वयने वया चर्चन का कासर तकः ब्रेटेन बाप को इस्क मक्त बढ़ते 💷 भौर राय हा ऋषे 'रात्रि व्य दाशा बत्तवर क्षम्पेरा' किया है । प्रश्तेत का करते ! शोक ! महाशोक !! ब्रस्त-१०/३/मन्य रूप्टवा है :---दूसरी बात यह है कि लड़ां सम्केवै: चनिः चनिः विकास डस पौराखिक विद्वान् **श**केतरबाद वर्षाद्रः वर्तैः यभि रावं स्नावात ॥ क्षे निदिमें क्य नेर-मन्त्र उक्षीयत पौरासिक के यस प्राथमील करते हैं वहां बेरेकर समस्य वैदिव विद्वार सामग्र में इस द साहित्य प्राचीन बासका ना क्षवं दिया है कि व्यक्ति क्षयो सारत्यक प्रम्य वपवेत, वपनिष्ठ

वसकते हर तेवों से (सार्व होत वया समास वर्शन-शास्त्रों से वस्त के समय) राम क्रमांत राति सम्बार के मिजाना की करपत के बाबे मन्यवार को (क्या गार्थ किसी भी पौरहरप दवा पारचारप वसः) क्रमिश्रय करके विराज्ञमान विधान से नहीं की। इस मन्त्रों से होता है। वहीं क्रवस्था एक उसरे ध्यवतार के सिद्धान्त की युख्य भी नहीं है भीर सम्बन सन्द है । वे नन्त्र की है वहां सायक ने वरक्ष राज्ञभा प्रत्य केत को पश्या प्रशास का कर्ष होम किया है और देशे माबस्य पक्षते हैं चीर कोई मी भी सन्त्र का बेकल लोक है। हिल्ले व्यक्ति शक्ते के विवद काने

का सक्ताच भी नहीं चर सकता । एक ब्रीर कात है कि प्रावशार के इसमें स्वप्ट है कि इस संस्थों वे विद्यान्त तथा मृष्टिंपूजा का परस्पर रपविशासी को ईत्वरावदार क नडब सम्बन्ध है और स्वासी विदे-शिक्षण्यात तो लाग बामा का कालप ने सी (जो स्वर्ग सृर्तिपृत्रक क्रीर व ही रहे हेट सम्बंध समस्त थे। बार्ट वेद में अवतारवात वे वे) मूर्तिपृता को बेद में अविकासन

सम्बन्ध में उन महान ऋषियों भीर गैराकिक विज्ञानों में बतनेव है राद को सिक्क करने का प्रयास जिल्ला ही कोई भी जीतमान भित इन तम्ब तोगों को ऋषियों हो सहत ।

बाह्य पन्थों के हान्तिम मान श्राधियात देखा प्रवटार के

und & g williage unter nie feren S. SECTION FRAME IN COLUMN क्षा वर्षमा के पात हुए हैं। प्राक्त वर्षी रोलंबिक परिवार प्रांधी वर्ष-मान्यं मन्ये गीतां को स्पर्मापन् सकी नी को दुग्ध सामते हैं। आतः ईश्वर E erer & fern if polities. वनांख हरू समी दे किय प्रति जान्य है। बनवें से मनवन क्यान्यत शृंक में हैस्तर की बर्ड्स, बाराह, व्यक्तिक नेव श्रीत्र से रहित, हाय पाँच से रहित, तिस्य, विस्तु, शर्वध्वा-प**क सुस्**रम तथा सञ्जव (परिवर्तन रहित) व्यवसाया यका है । उनमें जदस्य तथा जन्त्वय शुक्तों से शिक्ष

हुमा कि वह सब्दरन दे तथा उसमें वरिवर्तन होकर एह क्सी भी शहर नहीं हो सब्बा । जो जनकार वे हर्न्डे कितने हो सोगों ने स्वयंत्री ब्बांसों से देखा बात: इरनिवरों की रहिट में वे बाबो भी ईदशर वहीं हो स**क्टे, बन्द पाहे कु**ल मी स्वॉन हों। बड़ी नहीं रवेदावस्तर स्थ० में वो स्त्रीम भी अपन बहा है :--

द चक्रुश परयशि का्चन एनं। हरा हरिस्ते सनमा य वर्त श्वं विदुः बागुक्ताः से अवस्ति ॥ बढ़े रूप का दर्शन नहीं हो सकता। कोई सी उसे बांक्स है

न संदेशे किन्द्रवि स्त्यसम्ब

नहीं देख सकता। द्वारत में स्थित दशको मन समा प्रदय से ही वेशकी च० १/१०/० तया **सवर**० १२/१/३८) हैं। इसके साथ ही कहा :--जन्मविरोच प्रकारिक स्था.

ज्ञानाविनो वि प्रवर्शन्त विश्वस बर्गत ब्रह्मचारी तित्व 🛭 प्रस्के जन्म का विवेश पहले हैं इन प्रशासी की क्वारियांकि में सन्तेष्ठ को कोई माना है । करा नेर-सन्तों से करवार स्वान हो शेष नहीं रह बाता कीर वा प्रत स्पर सिंह हो अभी है वि व्यक्तिपर्दों की अन्ततरवाद वा निद्धांच क्रामि मान्य नहीं है।

(क्सराः)

अवसी, लंबार जे कि से यहा-कुछ होते हैं किन्हें झएसका नहीं सूख्या परहित की बाबे खोचने हैं। को नरहित नहीं खोधते है वास्त्रह के दस्त्र्म में क्स अले है अपने **प्रमुद्ध सम्बद्धाद व गत् पद्धा वाते** है जोते और दम सक्त वाले ही बाहर श्रेतने हैं सनी हास्ति श्री काल के नमाश्चम क्या क्या तुल क्रिसारे हैं। इसी क्राधार के सैंक्ट्रों बर्वकी किर रहे हैं बचने हो बहान कीर मुक्तिश्रा समयते हैं बद के रंग होंग मी इस खनी के वीदार्थकों के क्रांशरिक्त राक्ष मायने हैं। उत्रशह की पूर आसी गर. गिरंकारी गर. कार बदती या सुधि है अपने को आर्थ **इ**' इ दरने वाले । पराई शिवों भी काने बाहे भी बहुत में इस रंग में कास हाटने बानो, चनचे स्वयने (मे वा रहे हैं रोना किस-बिस क शस श्रीमा रचाने वाले. इत्यते को रोपे और वहां हव रोवे । सात्र बामा क्ष्रणे वाले दादा शैसराज रोशनी के जमाने हैं चौर सकत स्ताज साम् पर्वत पर सपना भारत में ने रंग संख्यां को फैसे श्वनोत्रह सिनेबाधर सोखे बैठे 🖁 प्रतका दर्द कियो भी संख्या न जन किस ने सावदेशी नाम की क्षात्र को नहीं केरस जारे दशनन्त्र में **हो** तटा वस इस सांसदिक भानप भार्यसमझ के हैं और होन को लहते के किये हुआरों के धर कादिर पर बार्ची । बाप सर बरशह किये। मास्त से व्यक्ति नोचें हमंत्री बहा जा थे है शहाना पुषित का द्वार बाना इसरों को स्परेश करता कि एक्स विकार क्षेत्र है और धावने नवीजे आर्थ भी सारी करना वें दो रंगी कार्जे केंग्री १ वे रंग डॉग डमारी समय से बाहर हैं। बगर नहीं किसासाद प्रस्ता रहा से नारी पुरुष दोनों समाध्य हो सबसे हैं. मत्त्र का १९७६ १ असन सर-कार्त रत सब क्षणाओं से प्रशास क्षीय दर में वे मूर्तित द्वाबकर्ती वे करने में बामते वे स्मीर बाव मी शोलाइ काने ठीव है केवस गुढ़ का करा का हैना गंध स् हेना विश्वी को बोली में बिठा हेवा मुख्य का सार्ग वही माना। प्राप्त वैदिक क्रमानी किरानी सुन्दर थी विश के को बच्चा से जैसनी ऋषि सही पार वालाका चल् ने भी बढ़ी बार्गकाश

प्यारे दयानन्द की ऋार्यसमाज

(ते०पं०चन्द्रवैन जी बार्च हितेषी उपवेशक समा सोनोपत निवासी सबाव से वे बतवा रखते हैं कि में न कही हात क्यों करो किया आरे हवारन्य की बार्वसमाज 🛭 क्षेत्रा मार्ग है। सगवन रेगी इर हाइस्टेंड से संसार का कावाय विचारशीक्ष सन्त्रको ने इस वार्य द शहार पर शक्ता है पर आये को क्रांत सुन्दर माना है इमें पेका समाज सम्में बड़ी भरताय है ब्दता शामि नामः पत्रा विदारे सोनने भी तो वे कात है । सार्व सदनाय इस मार्ग के शिक्षाण स्वीत समाज की शंभेत कीर पर्क प्राय-कोई कर्ज नहीं। बक्त कार्रि हा पता तो व्यापंतवाड भीर भी इंसर्डमत भीर इनकार्य

के मुनहरे इस निवयों को पढ़ते. व ध्यान हेने से पता बसता है से स्था हो स्रोर से सनः भारत दे सभी शानों में क्लारार्थ आता है भीर देश की दिनहीं हासन देखन हुं को मैं समस्ता हूं कि कोई लार्बी नेक वा संस्था इन प्रश्रिके को रोई दूर वही सरको । बाय श्रदात्र में झात्र नव्यवस्थी रही है वरावर है, वहे देवना ग्रन्ति से काम अधी कर शकते इसे 🎹 सब वालो

वर विकार करना है, प्रामेश्वर

को काने काने नहीं हेते और हो नाम ओदि हो मार्थेशशाय छ बद नहीं रहा जेवे यहते होता था भीर काम करने नाते पर तुस्या-श्चाम तो भीवह भी शेर चलने को क्षीयी काडे हैं गोशा के वस की विद्राला है। व्यक्तिकार अक्षमार टांब सीच उसे पूर प्रकेशने हैं बादि नह दिराधों में पेस रहा फिर बताओं देश का क्या बनेगा है। देश क्षेत्री देश हो रहे हैं। अध्यक्षकारो किर क्यों न रहाएं ! बाज राज्य मारत को सीमा पर धारे स्वास्ट केतर की हैली है हर ब्रास है ब्रागे करने से पय-हमारे विशे किने कीर हमारे जिये

विश्वो देवा है वे जोरल धन्या है। कहर के प्याने के संसार से चल त्रिसोका नेता मी विश्वी को तिये त्यारे वकातन के तब III देश ६५६र की तरह मांसें करो देशर मर जाने दो बॉन्स फॉब हे हेंदे हैं देश होती हमारे पर वे कार्यं को दूसरों ने किया । श्वारभ हीरह दर हमारा शत बरने पर में बार्य समाय ने भी विरोधियें तुमा है मानो मानका स्टब्स के सुरके हुआ किये । संसार को यक्षी गरेहैं। हो बार्व कपुत्रों, समार्थ रिकास कान इमारे इस हो धोर्रेंद्र शहाबिक और राजनीविक वीके तरह से निर्दे प्राक्षम हे फिर पार कुछर्म पीतने क्या 🛮 💷 विशे प्यारे ब्यारे धा रहे हैं बिटे को रहे हैं आय

आर्थ बहुकाने बाते थी आर्थने वस्त्रको सबय को पहुचारिय प्रस्थ

मालिक कवरों से प्रश्च वहीं

सहराक्षी धन्मे निवि रशस्त्री प वीक्त शिल करे बाद में रक्ष कर क्ये से क्या विश्वा कर वेदिय दक्त की बहाओ समायों की बनादि से पूरा सङ्ग्रीम हो सन्दि अपूरि विश्वम पूरा हो संके अपूरा त रहे बाज को होंटे ओटे पालका बाहम्बर फंब रहे हैं इन्हें विटाने वी प्रतिक्षा वर्षे सोग ऋषते हैं बार गुरुने वाते को इस किने की क्षिता वारे एगावन की बार्व

#### श्रार्थसमाज, मालवीच एय <del>थग</del>्रतसर

समाज ।

किस्ते ३ स्टब्स् हे बार्ड समात सामको एक में कार्य हानेशिक इतिहिधि समा के शेक-नोपबेश्वद हो मेसारास जी निस्द वर्ति हैतिक संसंग में शब्दे सनी-हर बहतों हारा प्रचार कार्य करते रहे । बनवा में बदनके मुस्कि गाँ थ्या सम्राव्यक्तमस्य सत्तर्नो **वर वर्षा** प्रभाव शहा ।

गरकल कांगड़ी में प्रवेश द्रावती सहिद्यां नहीं हो हुते नश्युवके नुसकृत बांगही के क्यासब विशान में सोटे वासर्वे का प्रदेश कार्ता मान में हो रहा है। सब कत का शक्त कर शताबर**य** सुन्दर श्रीर त्यास्थ्य पद है। पासकों की तिका और देश साथ था प्रश्नम १वन्य है । मु**ब्लुक को** चपानियाँ क्षात्रा क्रीर इसरे विश्वविद्यालय इसा स्वीकृत है। सरकार ने गुस्क्ल को विश्वविधासम भी योधित कर दिवा है । प्रदेशार्म श्रष्टमा एव काचार्य, गुरहक्ष सांग्रीक्ष

#### विश्वा सहभवपुर की संबं प्रावश्यक ती

शहेशिक एवं सभा देहती की वसके विकटाय क्षेत्रों में, वैदिक हुई का प्रसाद कहाने के लिये एक दोश्य कत्यदी, प्रमायशासी प्रचाr a की शास्त्रवास्त्रा है। जो जनका पर वेदिक पर्य के विद्यांती का प्रभाव दाल सहे क्यीर जनश के भूरतंत्रक क्षाशं जारे इकावन जीवर को पर्छ है अभी पर डोवा है। पाते हश्यांक शास्त्रीय श्रीय 'कार्स की कार्य त्यात्र के मतदे की प्र'वा | जा तके । राजकुमार सचा मन्द्री

## इसर कार्य

(मच्च प्रदेश में कार्य जनेतिक सात की की। बी बाधा के दोरण बनता ब्यार्थ विश्वनहीं एं० चन्द्रसेत जी मार्च द्वितेशी सोनीयद निकासी चान का क्रमा प्रदेश में प्रमे क्रमा का ाहे हैं एक सामा ज**मा**च्या गोरवाप कार्वसमान में के परिवारों ने भीर वर्ष के बावकर हाबरी कीवीं होवी रही । समा को भी व्यक्तिक सायोग विश्व रहा है। भी मन डेमराव नी धार्च पूरा शहकोग दे से हैं। भी क्षेत्रर औ, श्री क्यार

सम्बदात् के पता है इस के बाद सामर मी ५ विन रात्री को प्रचार होता सा। में रं- विव्यवस्थ वी इसके ल्यान हैं क्वी गोलवा से क्यांच का कार्य पत्ता है अक्सपुर सामर भारति स्थानो ११ बाव्यं सरतं भी पास कराया ।

की, के पापता की, उसा मी भारत

शक्या औ, आर्थि सन्त्रम विशेष

विविद्या (मेशवा) ऐतिहासिक मन्द है वहां हो तीन दित करत ब्रभावसम्बद्धी प्रयास हुआ भी बाब्द्धा सी मानन्द भी सेथाबी औ. बार देखनम् वी मादि इस समाप्त के जाब २ जोन बपने देश तथा देश work it was an elem at कराईक तीत के प्रति कसूब स्थाप altete dell' Welle ift felt fo हर है जहां २ औं पीता सी बार्य सनी वार्व समार्थे व वन्त्र प्रा २ स्थाप पदार्थ तथा सभा को पर्ज सामोग है।

की बा॰ क्षमस्था भी गाउन बार्वे समाज माध्य नगर (श्रयोत) के प्रकास है अविद्युताओं है समाज का कार्व वही सपन वा प्रत्याह थे परते हैं।

मपान जनक मजाक राज्यभिकारी जान दें ell uner ger t. fe

यमुक्तर के विजेबाकों में क्षेत्र बमाफ होने पर राज्ञीय और वर्षन विश्वतः। वर्षात् 'दनसङ् सत्र' सः कीर्य विरामा वाक्स बावा है, वो आगा-नीय है पर जु ब्लॉ ही राईक वीत प्यापन होता है रही ही वारित विश्वकों के इस्त करेब किए करे & fresh steere days with शबीर की मारान कारण कर

हेर्र है जिल्लीह हक्ये परकर गर गुरुकुत करियों का प्रकाश रह व ततीय गीत श अपनान कही हो प्रका। स**ि क्**मा के हश्यों है लदेश के प्रति है में कीर बात के मान निधायान हैं तो करने राहीय गीत के किए भी सावास साल होनी पाक्रिय

विनेबाकों के जाकिकों स्था

क्रविकारियों को इस कोर विशेष न्यान देना पादिए और क्षेत्र राई गीव के सबय हार क्षेत्र केने की श्याप बोबा समय होतो हो १६६४ के दिन स्वतिकार्य और शामित इसके राजीय साथ है र्खान्यवित होने का श्रदशर देना पाहिए, ताली सिनेशाओं से काम व्यं रकार वे सत्त्व विवेश चौर भाषार बीसरा के विचार केले के

द्यानंधवार जनवचन चन्छार दयानन्द ब्राह्म बहाविद्यास्त्रय **डिमार** 

के हरेल भी को केल में वचारकार्य के क्षिप निवक्त काले दे प्यात् घर १० रेशमण वी हो

क्र किया गंधा है। बद्वारक की कोर प्रस्तात है किए उन्हें रविकार १-०-६४ को विकार के र्यो । समर है अधिक सम्बन्ते हे क्रांबद्धर पर क्यार कर कर को कारीक्ष देते हुए कादा करताह

निरेश्य--

रामविषार क्रवार्ट मानकान सर्हे ज्ञान से **भी न्यति**न का केवद पत्ती प्रतिहैं। राबी सन्त्रम वन शह कार्र

रसीद बुब व हो शुन इस्तिव २ न दें और देखें दोकादान स्वक्रिय को तुरंत पुसिस के हवाझे कर रें। सार्वदेशिक विद्यार्थ समा

की फीच्यां इस रचे मनकी भा होते कर्त नावेदेरीक विकासी समाधी परी-षाचे दिनांच या **क्री**क २३ क्राया

रविवार को होंगी । सभी अतिका-विंशों भीर केन्द्रों हो सुचित किया वाबा है कि वे सीम ही परीका धार्म इस कामोलय से संगाधन. भर कर करीका हास्क सहितः क्षणा १६६४ तक इस कार्योक्ट

तुन्तको के क्षेत्रका भी साथ स वेलावें हन शरीकांची के केन देते वार्र ॥ —शहरत सर्वा इका सोवन पारें दीत ही वार्शका है पत्र-स्वरहार वर्ते । धारे वकाः मीर धार्व संसावें इस परिवासी में ब्रांबर से कवित परिवार्त

A der fil retrest is

नेवेची देशी हमें वर्श बाता है। वेक्सर ठाउँ 200

वार्यक्रमाक विकास क्रांसमार

नगर के समझ क्योंका सकती के वह रेडके आर्थ समाज के प्रशास. व्यवस्थे कार्यस्थे स्था वीन विकास में बा. शंकरकांक भी मेहक के सां<del>वरि</del>यक देहांत स हार्रिक क्षेत्र अध्य करते हैं।

मी बाजा की कारते आकार के कार स सर्वतिक तथा अर्थत क्षाता है। वर्षे सहितांत ह का नहीं कथा थीं। वेदे समें हार्छ-क्या व्यक्ति है स्थाप की पर्ति की

भारा क्यं ही हुआ करती है । बह बैठक इस से प्रार्थना क्तके है कि यह विसंग्य सामग्र को सरपति प्रशास को उता स्टब्स समस परिवार, बन्धु-बोधवी इष्ट विक्रों क्या इस सब को इस समार वियोग के शहर काने की शक्ति हैं।

श्रानन शक मर्फा आव दशाय

कार्य समाज लक्ष्यक्रमर भाग तर: धार्थ वका

सरमञ्जल के देशिक प्रश्लोग से भी हा. संबरहाय की जे हनके सिका का समामार नहें दुक्त के साथ सुक तवा घीर एक जलर हारा, से अरको सुरेड संख्य स्थ्याच क्रेब वानिक प्रतिवेत्तिको सहानुवाद के विकार पर कार्य सकार को भी graft is find wert fermi auf नी साबा की में भीचार के बाब इस्ट्रेंच व्यक्तिशृति स्टिट की गर्दी ।

ह्यानम् शास्त्रकत किलत होसिनारपुर वे में रामसाम सी und bem und genn fer

बाहर है दशर सबे के किए क्ष हारा और जिस्तान है के, विश्वान रोस व स्टब्स व प्रवासक की सम्बोधनात की सामोद्रावित प्रतिनित्ति कथा प्रकार का कार कात करनाव बहरमा हंकराव काम जिन्द क्यूबरी बाहरूप सहर में इंड्राईक वाकिक कार क्रिकेट विकास कार क



हैबीचीन नर १०४० (आर्यप्रादेशिक श्रीतीनीधसभा पेजाब जालन्थर का साप्ताहिक मुख्यत्र) 80g2. No. P. 1 वर्षक वर्षक का कुछ १३ वर्ष केवे

वर्ष २४ अक ३०) - १ स्थावसा २०२१ रविवार -द्यानन्दाब्द १४०- २६ जुलाई १९६४ (सार 'पादेशिक' जालन्यर

# वेद सृक्तियः

स्रिमिया विश्वक्षं यत् इस स्राविक्वा—स्रती पर वित्रते भी विश्वक्षम् —स्रमेक रुक्षर के नामास्त्री वाले अन्-को भी रश्ये करत हैं, वस्तु वे हैं। सूमि, सम्प्रीत्व व स्त्रोक में जोडुक भी हमें इस्त वा स्वारा जनता है, वह सकका सामार्थ

ददाति देशिषे वसूनि ध्युह्म इसी को देता है, वसूनि-धक से फोरियां भर देता है, उसे माक्षा मास ब्य

निया है, वसे माक्षा मान कर देवा है, वसे माक्षा मान कर देवा है, जो मनुष्य दानी होता है। दाशुष्टे-देने वसने के, वरो-पक्षा के काम में कर्षम करने के मर देवा है। कन्नून को गर्म

इन्द्रस्य रन्त्यम् बृहत् वह इन्द्र का धन रश्यम्— वहा ही रमाशीव है, शुन्द है, क्रोप वहन्-वका है। माशान् का अरकार तो सहा अरा रहता है।कभी कम वही होता। पूर्व

है।इभी स्वाबदी होता। पूर्व इन्द्रास स्वत्वस्थीलदापूर्व है। हुन्दर कीर मराहै। साम वेद से

## वेदामृत

### श्रोम् सम्भागिन दुवास्यतः श्रुतेश्रीषयदातियम् । श्रास्मिन हत्या ब्रुडोतन स्वाहाः । इदमम्बर्वे इदं न ममा।

বলু৹ল৹ ३ দৰে १

कां— है राहारित पुरुषे !! बान तोत (व्यविधा) वर्षिया से (व्यविश) ब्रांच को (हुएका) तांगण करे क्या हो (एंटे) पूरों के (हैपेका) जाता हैं (व्यविधा) वर्षिष के बोर ! ब्याविवः) इंग्र बोर में (हुएसा) हुपत्रीय पुरुषे (बुदोला) क्यांच करें। प्राध्मांकों देरे जातो। (स्थार) वह पत्रीय पुरुषे (बुदोला) क्यांच करें। प्राध्मांकों देरे जातो। (स्थार) वह पत्रीय तांच कर हो। यह क्यांच्यां के बहु क्यांच

### ऋषि दर्शन परमेखरस्योपासना विविधा

परमेण परमेलर की जनसमा है परमेलर की जनसमा है। क्यों प्रमोत्तर में जनन गुरा है हा जिए क्य की साम्बन, क्यारावन के मी विशेष करते हो रक्ता के बी विशेष करते हो रक्ता के बी विशेष करते हैं। अकार हैं को वावती हैं। आपक हो शकार हैं को वावती हैं।

वसं व्यास्ते हैं।

सर्ग्या निर्मुणा चैति

यक उपासना सर्ग्यक्ता है। व्यास्त्रा है।

निर्द्धा सर में शेमकार मान और बहते चले क्लारे हैं। शुक्रशुद्ध मिति

#### सगुणोपासनम् मयसन् यक है. यस परि

है, छर्वह व सबे शक्ति मा-है—इस प्रकार पत से कारण गुरा है। इस गुरागे के होने वे कारसा सक्रका सोगुण कहा गव है—गुर्यो सब करते हिन स्तुर सक्र—गुर्यो से स्थाप है। सा व्याप्ती स्व

धन् ! हवें मृखु से खुना कर कार्यश्ता को क्योर से वसा ।' इस शास्य में इमारे ओवन का स्डास क्रिया पहा है। मृत्यु क्या है ? क्रोपां क्याने क्रम पुतर्न मूरक्' बड़ो मरा है क्रिसे किर न मरना क्षे । वार-बार श्रम्य होना, नरना, पुनः वस्य होना किय प्रस्ता । यह भी कोई बीचन है। वेच ने इमारे सिवे एक सम्ब क्रिकॉरित किया है बसे मोच करते

🖁 । मनुष्य का नाम पुक्र है पुरुषाय कान वाला । सपने पुरुवार्थ से वह स्थान में बने डॉ बिन में इस गयी क्रम मरण के बंधन को बाट दे हो और एसे जल से सीव कर पत समी सतुष्य बन्म सार्थंत्र होता है कता भी है—सजावो येन बातेन पुत बताए हो । जिन से पर में आति वंशः समुन्धितम् । परिवर्षिनि starरे मृदः को पा]न बायते । वसी का तन्म जेता सार्यक है तिस के स्तेल्वों से वावि तथा वंश का इत्यान हो। महान पुरुष धापने कर्मी से उस कीर्च के मानी होते है और मरकर भी ग्रमर हो जाते 🖢 : प्राप्त दवानंद, गांधी जवाहर बामर हैं। जाको इस भी देखें हम **प्र**पते इसी जीवन में सम्बरता को देशे पाल करें। देश में इस के स्रात उपाय वतार हैं। १ स्रात्विक स्मातार-दय वडी को फल फल स्टीर **इविम्बा**ञ्ज सारिवड बाहार हैं। मध्य स्रोत सद्यको तामसिक । सहरिवक ब्राह्मस सम सीति को देने वाले mails को संचिक्त और सम जीव बाज के दिने दिशाबर होते हैं 🎹 के विकरीत मदा मांस कावि शरीर है विकार कपन्त कर के तथा कान्य श्रीवों के पालक होने से दःश वर्ष होते हैं। इक्तियान्त्र का अर्थ है प्रकारीय ३ वर्षी है केंद्र सर्व नार्थ । <sup>1</sup>

सद या भवा करने भी माबना। म्बरशे का ल्हारा । इस के सिवी समी कार्ज अपने धों में अस्तिकीय करते हैं भाग्न के मुख में दाखा हुआ। होती है जो सनस्व को सर्वन प्रसान हस्य सरप हो कर तुरदूर बातु में रस्रती है। अक्रवरें स्व र्देज जाता है जिस से पास पढ़ीस हेका सूत्यु सुपाध्यत् । ऋक्ष्यं से

### धार्मिक चर्चा

श्रीमती सदीरा देती जो शर्धा कासन्वर

क्लाक्या में अवेशा तम में शेह

होद्व'नः। शस-बद्धपानी श्रीप

इथालड निमेच अपार क्रमीय

क्रमताका क्षिरोध सहते हए भी

मनकराते रहते हैं और असे सदये

स्रोगों को देह का समय-मार्ग बताते

मरापार— स्वापारेग

पुरुषः शत वर्षाया जीवति' सदादार

द्वारा समध्य सी वर्ष गढ सस

रावि से बोबित रहता है। अद्या-

चार से चपनी धारमां भी शब्

बन जाती है 'बाहसेंड मारसनो

कप्, झारबैच निपुरात्मनः। सरा-

भार जीवन है दशनार सरह !

रक्षतिये अपनी में संबंध, बद

किस बा है ? सक्ते केले के लीके

अपने परित्र की पेक देने ताका

व्यक्ति जीवित हो मर दासा है।

म्बरीव इरवा। सदा इत्तों की

र्थात प्रसन्त रहना चाहिये।

शचीन कायं सदा बोई त कोई

वैदिश्चनश्च शतुष्टाव शाहि से

व्यक्त रहते थे । शस्त्रर संबोधनारता

वेद्यंत द्वारा गायत, निरंपकर,

संस्कारों कादि में सिन्नों सम्बन्धियों

कादि सहित सम्बेसन करना तथा

६. संगीत-क्षेत्रते सात्रे अध्यत

रवते हैं।

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

क्षक्ता रहेवा है परस्तर प्रीति वहती | जिया । श्रीवह विकासह शरशस्त्रा है और बिना धर किया हमा गीने पर कों है बन्द जिस्हाने सही है। मोजन क्रामाजिक सक्ष दानि वडामे आहा होती है-देवी ! सबी नहीं वासा होता है। बीट हा: बास ठाइरो। वद सूर्य

२. घर-घर जंगशों से वा सुबे

का समीता हो । क्वांगन में बार्टिक

शास सन्दी का निर्दाह हो सके। गृह्ववि, गृह्यी, सनान समी धापने गृहको सुन्दर स्वच्छ बनार रखें भीर उस में (वंच महावज्ञ) संध्या. हरू बाता विता सी रोवा, खतिथि-अध्यार नशा यो-पाञ्चन कृदि की व्यवस्था हो 'जिस दर में घेत सकी. हट पट बतवान, देर गान और यक्त हो सो पर स्वर्ग समान र 3 फिला की निवालि-चिरला क्वीर चिता दोनों शब्द एक जैसे प्रदीद होते हैं पर पिता तो सर्वे को तबाठी है, बिमा शीक्त सन्त्य को बजा-जला कर राख कर देवी है। चिना से मनध्य शोधातर हो काश है और गोड-सन प्रज्य का लाल्य कर हो बाता है। दुर्वलता बा बात्री है जिस से नह स्थितिहोस नहीं वय स**स्**ता । सत

४ मध्ययं – भ्राप्यः यं प्रक्रिकारा वीर्यसाम:'। ब्रह्मचर्य से दिव्य का शयक होता है 'कीचें चाहुबख्य' क्षेत्रं में पर सास बकार की मन्त्रो के रहने वालों का भी स्वास्थ्य | देश्ताकों ने सुन्तु को सी बीट | सरा स्वाहों में कराव कर्याद में

विन्ता को रूपी भी इदय में स्वान

नहीं देना बाहिए। भैर्यशान सन्ध

थिया नहीं दरते।

विकानों, संगीतकों, क्लासरों से क्षूत्रे मनोहर श्रव्यं**र्थ क्ष्य बर**ना योदि का कार्य कम बनता हो रहता शा । इस से निधारों में पवित्रता ब्राती है और दीवांव प्राप्त होती 🕅

थ. शकाबाय—जैसे शस्ति है

स्वर्ग क्याने से इन्दन बन आशा है वैसे ही प्रायाकाम से प्राव ब्रायान करा में होकर मुख्य सुदय हो वाधे है भीर प्रकाशम की बबाते-बदाते थोसी अत्याहार, वारवा ञ्चान और चन्तिम सोदी समाजि तक की करस्या को पहु<sup>\*</sup>द जाते **क** इस कारून का बर्गन वासी नहीं कर सक्ती इसे तो अपना अपन रात्या में ही अन्तुश्वर किया का सक्ता है।

धंचेए से-इन अ क्लाबों से ... मानव बीवन परमानन्द को शास्त्र कर सकता है। वह है—

**ब्**त्योर्माऽसर्व गसस

विद्यालय हरिद्वार में **अवेशार्थ प्रार्थना** एक

सुरक्त वेर तथा झाटचे काहेड इन्द्रिय विषद् लोस मादि पर में प्रवेश के लिये प्रार्थना एक ग्रास् बिज्ञव शाप्त करने के बिए सनव्य त्रित हैं। प्रयम वर्ष में प्रदेशाओं को झादेश दिवा है कठ क्यानियह बोम्बवा--(१) विचाधिकारी (गुरुव्ध) करातो है चमकीने इसने से सरद वा (२) मेट्रिय्बेसन संस्कृत सहित्र वा (३) पूर्व मध्यमा संग्रेती सहित का पात्र बंद हक्या पड़ा है सनस्य ! (पनारस) वा (४) विशास्त (date इस इस्ते को लोल है। क्यी यू०} चंबे को में मीट्रेड सहित। लासकत स्वरा संसार में दर

त्तीय वर्ष में प्रवेशार्य योरवक्ष (१) विद्यावितोइ (गुरुवृत्त) या (२) इन्टरमीटियेट संस्कृत सहित का (३) क्सर मध्यमा धंमे वी सहित (बनारस) वर (४) विशास्त्र (पंजाब यः) संबेधी में इन्टर सहित । शिला कास ४ वर्ग का है भीर प्रशीस ळात्रों को वेदासंकार, विद्यालकार (बी॰ ए०) की दराधि ही आक्षी है वो कि सरकार तथा विश्वविकासकों द्वारा स्वोद्धत है । शिक्षा निजानक के तथा वेद कालेज में प्रकृष्ट आक्रि कारी कात्रों को कुछ छात्रवृत्ति श्री रो वा सकते हैं। जाबार प्रियम ग्रुक्तंत्र कांगदी विकासिकारण

**EREN** 

गुरुकुल कांगड़ी विश्व

सम्बद्धीय-

# त्र्याये जगत

वर्ष २४] रविवार २०२१, २६ चुनाई १९६४ [अंक ३०

## हाईकोर्ट श्रीर सुधीमकोर्ट

के विदार यह उस्ते हैं। वर्ड बार

इनका कुछ दूसरा रूप भी शामने

मनको त्या संभावो है

क्षोते स्वस्थाविक है । क्रावेसका

के कार्वी में भी अर्ड कान स्वाकेत

**के साम्य** र सनोभेर भी हो जाता

स्थाय २ पर होने वाते कापधी स्वभेदों, सगहों हो विश्टाने वे भागास है। धन के देवे किय बोटे मान केटों के दम मेरे स्थिति सामने का रही है कर श्रंब के यह आहे होते हैं तथा उस कि हमारे पापनी जाते ब्हाडे भी प्रपर सारे देश में दड ससमयना समाचार पत्रों में काने स्क्रीय न्यायास्त्र है। इन सारे सगरे हैं। इन्हर्मशें वह वी खें व्यानकरों में दाये दाने वाने स्थानों पर परशर अध्यक्ते चलने **सा**य के गीरकाश उपनासन गर समें है। वहें वहें के किया औ बैठे हर कियों भी न्याय वाधकारी बाबाबो बिसी पर दो होती है वहां होते हे—स्त्रका किसी भी दल से हाबुद इस समय सारे समाज भी सम्बद्ध नहीं होता । वे सारे पण-शको वास्त्री है। इस 🖽 स्थ बाद रहित उथा निर्वेदीय योग्य कारण है। इस पर तो फिल्क कर्य setfox होते हैं। उसके सामने श्लाम् दासा जानगा । ऋता तो केवलबाब प्राप्ते शासने वेश होने मेर्ड दिनी की बड़ी मामला । जीवा काले कालियोग की करि बाजनीन वे हेशमाद के लाग सार्वप्राप पहला बाला है। की रिपार्टन कियी हाके विधान के बनुसार केंसका हेना दोश है। दक्को न केंद्रे समय कथत की दी कि प्रथम : शिकासर्वे कमी थीं। एक की इसरे **छ**रीट सकता है और न ही के चिकानटी क्षेत्र असे प्रकार aurine कर ककता है । मारव में थाज द्वाबन्द हे सम रह ब्रह्म सक्षद्र २ वर होते वाते इन न्याय-स्टेंट का रही है। सा वे बादन श्राची को देखकर सदा संसद र सोत वैते प्रक्षते को सी जल क्षंत्रा हो जाता है। इन के विश रहे हैं। गर्द बड़ां भी बोहें दान क्या नहीं देश की वया अवस्थ दमीशन पैंडे से पत सरी कि रहा हो। ये स्वास्थाम राष्ट्र के बीवन क्या है। पर देसे जोग हैं बड़ां ? क्या नैतिकता का महान लग्म है। रेले रत में फार्च समाज को कार्य समाज यह अनुस्त्र पर स्मात २ पर इन क्षणते को तेना भावारिक संस्था व कार्यकान है। राने के क्षिप क्या किया अना सम्बद्धाः से प्रत्येत को कापनी वाक्रिए। भाने दिन के समापारी सम्बर्ग रेने रह मधिशार होता है को पद कर काश से हिए बीचे क्यां यक्ष-विषयं रोजों वसने हैं। हो बाता है । बनता समाज के क्रमंब दर सारे स्तित क्रोते है। बारे में क्या सोचर्ता व कहती है. ब्रमण्य में संश्मेर तथा मन्त्रे सुना वहीं बाला। यही जानते हैं

जिन को दलता से सम्पर्क रक्ष का

्है। व्हें शर्वों पर आवर लोगों नह है कि इन नवभेगों, मानों को किएको नामग्रे - दिलोब कर

### श्चार्यसमाज के \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

" प्राप: यह शिकायत की जाती R. die man en einen ft. 40 है कि कार्य समात में रवतुरक यम माते हैं। किसी सीवा वह वह कत टीह है। स्ट्या इस का कारम् क्या है ? इस घर तो जिलार् ब्दरना प्रदेशह । रोट तो लक्का से हो दर ही सकेगा। भाष इस लब्बों में इस इस विशेष पात के यारे के झारश्यक रिवेटन समाध ६ बयरे मध्य मेशकों से बाते है। इसारा क्रमुनव इस के विष-शेत है। सालव में तो यह देशने में माता है कि पुरस्त हो। बड़े बाते है पर उनको परसने बजे, अनको असाह हेने वदा समाप्त व संबद्धानी भी रक्योंनी बसाने साहे उत्तर के क्षेचें भी मारी क्वी है। **ऐसे** र योग्य सुबद मिलते हैं, दिश है पास संबी से संबी बोरवल होती विवासि के फिर हर सभा है विशेष कर प्रकार में कार्यस्थात के शर्मकोरे की जानी से अस्टी म्यादिक विकार कारों वस है। लीवन निरंतीय, पश्चात्राहित, विद्य धार्यसमात्र हे थिने भूने वस ર્સાવલ કરે, એ સ્થયે મેં ન દાવે हमान्ति न हों । समय २ पर सारे भगवों हा विशंद किया की लाहि वे सुम्हे न समाचार पत्रें) है बार्च भीर न क्याद्वरियों में मार्ने। सा ते उत्तर कार्य सक्षात्र का पर सुरीम कोर्ट बनावा जाने जिस्र वे चोटी के परान्तु सर्वमा **स**र्वमध विधान क्या मादे हुए स्वक्ति एके वारें । इस का निर्दय सबेबान हो । साम के समय कार्ट समाह

शास्त्री, कोई हैं व मेल्याट होता तका कोई दिलों काम में का हुवारं वे समाज में भाते हैं. उन का जीवन समाज के रंग में रंग होता है। बच्चे सबसे तेत्र है बांब्याओं है बार्च बरते की प्रथा डमंग भी होश्री है। किन्तु क्षेत्र है दि वसदा हाथ पहरते शक्ता क्री नहीं होता । इनके स्थान पर ऐसे अवको को दोलसाहन एवं विशेषत हो असी है जिस को काफेशमान के निका भी शेष नहीं होता। चार्व समाज हा उपरास करते हैं। वे प्राप्ते हैं सारा बातावरदा देश कर स्वयम होक्स मेले हर आहे हैं। उनकी शांस्त्र, जलाह पर्या रोजों में स्वय होती है। वे दिस के सक्षोस घर रह काते हैं। कास बाज के सब में इस वशायन की पा काने ब्यार काने तथा देशनाहरू परी वासः हेर्ज्यास्या सहभ्रमा हं स्टाब जैस, सा, काई हास तथा दे, मेहर चन्द्र हो जैसा होता के इस सम्पत्ति हे बावें समाज माहामान होता। पर्लेक केंद्री बात नहीं। इस्त मी क्या देशे. वेशा है किन के दिश मे ऐसे उक्ती के दिए तहब है, वे वीतसाहन देते हैं, पुरुकों की छाते है कर स्रोधित दशा में । उत्तर क विशास खेब वन के पास नहीं है। इस किय श्रमारा करा समाव कर्को की अधिक के शहित होता काश है। इस इस क्ष्मवा व मानत हेरना से भाव समाप्र तया दिशास संस्थाओं ने मान्य नेताओ ने सरवों को समाध्य करने का में अवस्थ परका भारते हैं कि हेसे संगडन को सम्रक्त करने तम लाई ही वैदार होने वाले इन दवड़ यनोमेद को दूर करने 💷 था के बंगायन की फोर काल पंजिल्ली मानस्थ स्टम है। सर इस पर शारे संस्थानों में बाद इस वास पट क्षम स्थ्या प्रता है हमारा विकेदन विकार सरके कियारियक रूप देवे विकार करें कि कीम न एका इंड है कि बार सब से बड़ी बालस्थरता तथी यहा है । बन्दवा हरा तक पर आने बाला है। अवंत

(शेष 📰 ६ पर)

सप्तपि प्रधानन्य के शिष्य बलका विश्वासी एं. सीमसेन शर्मा को आजना से बार्च सदाव त्यान acr स्टालनपूर्ण लेमे है पने स्पे के. बार्य मिठाल नामक मासिक वत प्रदाय। से शक्तरिक करते ये । इस के मुख पुष्ठ पर संशास का किळक्षेत्र हिसारहण था।

क्रतारुवं रेवपथं समय स्पूर्णस्वनं छन् प लख्यत्। बिद्धे पिको दस्तुव्यक्ति वर्गकरसङ्ख्या पश्चित प्रगर्वेयत् ॥

उन्होंने धारने इस यह को िकार विजीपना वे रखे थे । सनावन कार्कसन् सरहत् सबीन पासवड-🕶 मात्रम, मनियान प्रवर्षेत्र, च्यानिकताल जित्रकेड, प्राचीन शस्त क्षीचावह, वार्षे समाज महावह । क्रम प्रथ्य पर हो 'बामतान ब्रह्मखो?' बह वेद कर राष्ट्रधीय भी खपना था सभा में समेन औदल पत्र में पूर्व

क्रमध्य काने थे। इस पत्र में सबबतवा थे. भीम सेन को कंडी सैडालिक द्वील प्रसारित हुआ। करते से । दन संच्या भी क्रमिक ही होती की स्मीर के कानिकांश में भारत्वाक्रिक

धी बांवि बापने को स्वासी दवानन्द

था शिष्य जिस्त्रों में सीरव का

≖प से काँ अज़ें में ऋसराः खापते रक्षते वे । दशहरका के सिये मंत्र भेद विचार' यह निकंब अन्द्रवर 'स्टब्र्ड के बंद में प्रशासित होता बारम्भ हुमा है भीर इसी खंब के समाप्त हो गवा है। परन्तु 'सार्व समाय का मात्री कर्तन्त' वह सेवा मार्च १६६० के चंड में समान्त ±का है। सक्ट्रवर १८६६ के अंक .... में भी सरवार्थ विवेध का ततर झापना कारम्य हुवा है। भीससेन

भी के इस लेकों को पढ़न से आह

होता है कि वन के महावि कीत

**ंबार्य समात्र स**न्दर को विवाद सन

दिनों दर्ख तथा ए इ वे । वदाहरकार्य

बान सराव हा नागे सर्वेम्ब

श्चार्य समाज के प्राचीन एव

## पं. भीमसेन शर्मा का आर्य सिद्धान्त

(ते. तो. भवानीलाल भारतीय एम, ए. लघ्यक्ष हिन्दी विभाग, ववर्तमें इक्तिज, पासी)

र्शापक विकास में वे जिसते हैं— | का शिलां हुआ 'सत्वाधक्रकाश' पर 'इम स्वामी को सहाराज के सर्वतन्त्रायन्त्रावादि नामक मूस सिदांत को हो उचान प्रंतरस समझे है। अससे नियद्ध हमारा कोई सेस का विवार अच्छा है भी नहीं है. वहिं ही वो उसकी हम प्रापनी अब यानेंगे।" (बार्व विद्वांत चनवरी रेप्स्थ प्रयु ४३() ।

ऐसा बात होता है कि वर्ण-व्यवस्था को गुख कर्म स्थमानाः नमार सार्ट जाने की जो तिविच उत्तर सामी किटी **कार** कों से व्यास्थार्वे बाद में बार्यसमान है विद्वारों ने की और जिसके फल-शक्य पत्तर-प्रदेश के व्यावी वे भवभेद का सुत्रपात हवा उसकी नीव मीमसेन जी के विकारों ने द्दी बमार्शनी। इसी तेल में

'श्वश्रःव' की स्वाक्ता करते हुये वे जिनने हैं--"स्प्याच वसका शम है जो पूर्व जन्म के कर्मालसार गर्मा चान समय में उसके द्वारित में वदेश (वर्तमान श्वरप्रदेश), बिहार बनवा है, बोच में स्वताय नहीं बंगात. सध्यप्रदेश और सम्बर्ध स्त यनता।" शास्त्र 'स्वमान' की इस शन्तों में प्रतिनिधि समाप्रों ही विचित्र त्यास्या की प्रावदतहरू इस किये पड़ी कि इस से दर्श-व्यवस्था में 'जनम' का मो विकास मझल लोकार किया दासके। भार्यस्थात के इतिहास के समीहों से यह बात भारतर नहीं है कि वर्ग-व्यवस्थ। सम्बन्धी इसी दहार

हे विचारों के कारक कविरस्य

चालिसानन्य शर्मा को बाय समाज

स्वागनो पहर को । इसके मुख में प० सामसेन ही जात होते हैं। विस सत्थार्थ विकेट के एका भी करर **वर्णा** संबापुत्री है वड रक्त पहले पं तुलसोराम स्थामी है। झार्यसमाज के उतिहास के क्षिमा करते ये । 'सरवायं विवेह' किन्दी कानुनिह नायक व्यक्ति सार्वक्षतात के बारम्बिक कास में कर सके।

सरहनात्मह प्रत्य वा । ऐसा **क्तमान होशा है कि ए' तुससीराय** स्वामी भीर व शीमसेन शर्मा है भीच किन्ही कारकों से शतभेद हो यकाबा। तथी ती ६ वनवरी १वद६ के बार्चासेक्टान में दिसके हैं <sup>1</sup>इबारे पाइकों को स्वस्या होया कि झार्च सिटाल में इस कास से मत्यार्थं विदेक का उत्तर प' तुहसी राम स्थामी सिला करते थे । कर

वेरे समीप नहीं रहे इससे है (-ीयमेन शर्बा) फिर से विस्तवा ब्यारम्भ करवा हो। (य. ६५) मार्च १६६० के छोड़ से क्रमशः शरहन शिला । वह चला 'झार्यतमात का भाषी क्रतेव्द' प्रथम कर से प्रधाशित भी हो चन्न रेख समाज हवा है : इसमें सार्व-है तथा ब्याच समात्र, कृष्यारोक्ष देशिक सथा ध्याने का प्रशाब लेखक बाजार अबपुर 📗 पुलाबाक्षम में की बोर से बाश हैं : इस समय चयसस्य है। तक पंजाब, राजस्थान, पहित्रमोत्तर

स्यापना हो जुडी को । क्वापि विभिन्ति सार्वदेशिक सारा को स्थापना १६०८ में हुई परम्ह ं भीनसेन ने इसकी बारहरू कता पर बता देते हुए जिला है वद तह कार्यसमाओं में कोई नावक सबा सार्वदेशिक व होशी दाकत सर्वया इक्स्पस (बारस्परिक

विशेष हैं। सिटनो दुर्नम है। ए॰ पर इसी **जंब में बक्को**य संस्थार दद संबिद्ध क्षेत्र है। अधा प्रांत मोजन विचार साम ३' का उत्तर शतकों को समस्य ही होगा कि

बहुआया सर प्रवापसिंह के संरक्ष वें पं॰ क्षासचन्द्र शर्मा विद्यासास्तर ने शांस भोडत के सक्तर्वत है 2-3 पुल्कार्वे शकाशित की भी (काकिक समीका क्या मांस भोशन क्यार) पं॰ मीमसेन को इस क्दन कर भपनी सम्बन्धि हैने के किये का प्रताप द्वारा ओचपुर चार्सोवर फिया गवा या चौर कोई संाश्च्यं नहीं होता कि महाराजा सर प्रवाय द्वारा धन का प्रसोधन पाकर शीमसेव मांस मोक्स के समर्वत में क्रफ्जी सम्मति दे सी देते, परणू सुग्री समय पं॰ हेलशम ने सन्हें बद्ध कह कर सावधान कर दिया कि यदि वे प्रक्षोसन में फंसे क्षे हमके सामाजिक जीवन का संब हो वाएगा । वरनन्तर पं० भीमसेन जे इव मांस समयंत्र परिश्वाओं का

वजाई १⊏८७ के चंद्र से श्रीम-सेन जी 'त्रवी विद्या' शीर्षड एक नवीन सेखगाना बाएमा करते हैं। इस में उन्होंने 'क्षेप्र' वद औ' व्यास्थाकी है। इस्ते संद से 'आवत्तव प्रकार' आग चार का कता भी सपता चारम्स हका है। १००० में ईसाइयों की स्रोत से यह 'सार्य तत्त्व श्रद्धात' सामक पुस्तक पैरिक धर्म के सारक्षक में स्ववस्था अक्षा भाग (कनशः)

विद सप्ताह मनाने का स**म्ब**य

100 T TOTAL 2 ST BUILD सन्दर्भ वक वेद स्ताब्द समार्थ। स्त्रीर शता के आध पत-लगरम क्षें कवि दक्ष

# स्कार अक्षेत्र पर विकासियां

चरिवर्लित होती रहती है। दशी केश की राजांच होती है ता करी कावनति जय देश कावश्री की कोर आप्रसर होता है क्य दव नये नवे अधारक सन्म जेते हैं।

सष्टिके कादि से काम वह सक्त किय में अनेको सुधारक क्लम्स हमें हैं जिन्होंने अपने बन बी परिस्थितियों के प्रातकत अपने विचारों के बानसार समार कार्य किये। वे सहासंचानित रहें इस क्षित्रे प्रामेको संस्थापे स्वापित हुई । यन संस्थाओं में से प्रदेशी संस्थानी व्यपने बहु रखें को मुल, कर सद्धा पत हो महं चौर चलेकां काल क्वलित क्को नई :

अपने सा की अवंतर परिहि-अवियों पर रष्टियात करके व्या-**प्र**वर्षक, परमहात, परिवासका **पा**र्य महर्षि इदालक सरस्यतो ने ऋरीतियों के सुपार के सिये बार्य समाज की स्थापना 'की । उन्होंने इसका व्योक्त पताया 'सीसार का क्ष्यबार काता' वह उस युग की सर्वपम्य संस्था यो जिसने नसपैव **ब्र**टुम्बस्य को नामका हो । सान्यता **दी** नहीं ही सपितु स्थनात्सक रूप में भी उसने संसार का बहुत उपकार

विश्व प्रकार काकाश से करेजे करागण् विधायान हैं, किवना हो वयत्न किया बाए तनको गक्षना नाहीं हो सकती, तीक इसी मधार कारिक्स किश्व के लिये महर्षि द्वा-सम्ब के बातेकों प्रथमत हैं जिल की नक्षा नहीं की बा सकती ! किसी **श्रिक** से यह समक्ति पंकित्यां क्रिजी

.विकारी

में वहां वह प्रायको । कार्य ही सारे हरेंगे. विद्वत के सम्बाद को ॥ पद शर महर्षि हवानन्ह ते विकार क्याट करते हवे धहा या

चनकार कियां। हैं गिलाज'.

त्रायं समाज श्रीर उसके उपकार

#### (क्षी सित्रसेत, जी बार्म एम० ए०, साहित्यावार्य व्यालापुर) WINDOWS REPRESENTATION OF THE PROPERTY OF THE

तिये ह्या।

बाज रन को काफी भी सन्ब ही सिद्ध हुई : ब्यार्थ समाज्ञ द्वारा किये 🕽 की स्थापना १० कार्य स १८०५ई० में गये सनेकों कार्य वेसे हैं जो संसार वें मान वी व्यक्ति है किन्तु वराके वर्णके के सर में सार्वतसास को कोई नहीं जातगा, जैसे तीव की ईंट को कोई नहीं देल पता वैसे श्री सार्वेसमात्र तीव की हैं ट सिक हका है। हमें वही देख कर प्रसन्नक होती है कि उसके द्वारा पारम्ब किये गये वार्य संकार में विद्यमान € :

जैसा कि इस पर्न ही निवेदन कर संकेष्टें कि सार्व समाध के भागीनत कार्व है एएकार है स्य की प्रमुख बरना इन पट्टा में कांठन है। फिर की इस उसके इस कार्यों का संबोध में बयोन धाराधाविक रूप में कोंगे। आशा है इससे पाठकों को निरोप साथ प्राप्त होना ।

जानति को भावना बालीसची शनान्ति स्रीट उस से वर्वे का कहा समय शासीय इतिहास में निराह्मा कात कावा अध्य

है। बद्द काल ऐसा वा शिस में भारत का सर्वतोधाव से पडार हो रहा था। बार्व व्यपने धर्म प्रश्व वेदों के नाम से ही परिचित्त है. किन् राजें बना शिका है, जीवन में रनक क्या महस्य है आदि हो विदय में ने कल भी अ अपन्ये है। बड़ां की भाषा संख्या और किसी क्टोप्पम हो रही जी जात विकास भावि दश्याओं के दश्या आर्थ वाति विनोदिन निर्वेश होती जा रही थी, अवंदरता चवता तांद्रव . नृश्य कर रही की देशी परिस्थिति में मारत में एक महान मुखारक, बोगो, राष्ट्र विर्माश सहर्षि द्वावन ें तिक काम रहे कहे जान न रहे। का उप्त हुआ।

प्रतिक्रोस उत्पन्त कर देना चार्च सबाब का दा काम है। वर्षी सद क्रोप सन्दिरों की बुते बक्ता देश कर खेगां क बोजकेश का समया दरह मार्च

क्षत्रच आरत्वर का श्रद्योध चौर

करचे बरते हे सब में उस के

समाव ने वारत को बनता वे बामति देश कर दी, जिस के परि-याम सकर ही मारत में स्वरान्त बान्दोबन पता और शपका भी हमा। ह्रशासूत का शूत हर हमा, बन्धा के हत्य से दुर्वश्व भागवाओं दर हुई भीर इन के स्थान भर का का संबार हुआ।

मार्थ समाज के पूर्वकर्ती पह

समात्र ने सी सुधार धरने का प्रवस्त किया । परन्तु शस ने हिन्दू वर्मे के विकास में बाधक माद समाहों के वहां साफ किया वहां धने के माथ ज**न को भी का**ट बारत । वेड. शिका और व्योपनीय का कोई सहरव न समग्रा । परना काय समात्र से तस के विपरीय वेदों के ब्राधार पर ही हिन्द समाब का संगठन किया और उन की पहना पढ़ानः प्रस्म पर्स वसया । इस कः प्रतिकास यह हुआ कि **आरह** का ५१वेक विद्यासी जाग **पहा स्तीर** बाव समात्र के बकावें हवे मार्थ पर प्रस्न पता। ससे ही बाज कोई समात का लाग चारती के भव हैं शूल जावे, परन्तू वह सम को मानवा ही पहेना कि स्रात भारत में को अभूति दिलाई पढ़तो है हस का भेय धार्य समाज का हो है। हम यह पूर्व ही भिनेदन बद

युके हैं कि इस का उद्देश संसार का उपकार काना या परन्त स्वारं इम स्थान भाष के कारण भारक में हदे हार्यों का डी दिग्दर्शन करा रहे हैं। बार्वसमाय ने बाई जावति का काम प्रारम्भ विमा बहां वसे सभी अपने कवि में स्मीत श्रविक नोजना दिखानी है। क्यों कि धारी उसे संगठन शक्तिका श्वार, वैटिक धर्म के श्री निष्ठा. विचर्मी हवे भाइयों को लीटाना. बर्कात्रमधांदा को स्वाधित जावि स्रोह कार्ज से सभी उनक बता-वत में जारानि साने के लिये कात जार समात्र की क्रातीय ब्रावहरूका है। हाई इससा वह क्लंब हा जाता है कि इस व्य प्र की बर्ति के लिये क्या शक्ति उन्हें

(5 tt:)

सहावश दें ।

महर्षि दमाअन्द ने शार्वश्रमात्र वर्ग्स मुपारवाद की मावनासे की दस प्रकार इस को श्यापित हुवे सगमग दः वर्ष में हो हो है। इतना समक वादियों कीर वसी के इतिहास में विजेष सहस्य अही रखना परना आर्यसमात्र ने इक्ते काल में ही क्लं बार्ये उति को बागा क दिवा। इसका अन्म मत विशेष के रूप में नहीं मध्य क्रव के शहय धरते और खसल के त्याग ये

व्यक्तमात्र के ब्रोहोकन का

(दान १८ में सही है, क्राहिसनी है विशिष्ट स्थान है। यह कोदीसन काल अक्षा व के कारीकार की सांति चक्र नहीं या चौर न मौतिक विद्रोतें का परिस्थान करने वाला था और न बड रुदि तथा इट पर ही आधारित था. वैद्या धर्म के सार रहत वेट. ईडवर क्रीर कर्य चारि को सरकित रसते हमे चौर समात में प्रचलित काथाओं को इर करके मारवीय जनता को बनाने का इस आंशोपन का वरम जला सैंबरों क्यों से न्यर्थ क्षे सर्दियों भीर नामसिक गुलामी को सहा के लिये टर कर देवा तका स्वतंत्रत का करपोश करना सार्य समात्र का हो काम का । राष्ट्रीय बद्धासमाद्य अन्त्रंभीत हक्का था, स्वर्तज्ञता शब्द का नास यो कोई नहीं बादता का, उस

बस् वयामास् मात्रेख रावक्तः कर्मा स्थेतः।

मध सर्थन मात्रेता

देखि गराजवः साधः-

सरा भेगा सरा सिलाः

इस योदावरी रेजा

वीर्थ कोटि पस लमेता।

स्थमेन्द्रकि चतुर्वेदाया।

हरा देनी सरस्वती।

#### ( गर्वांक से कारो ) तन्त्रों की घृणित शिचा सर्व पार्दः शत्रकाते।

(ले - व्यी पिढीदास जी शानी वयतसर)

44444444444 में जिन्नीसरित योच राष्ट्रियों, क्यों भी ! इस्तिये कि घर को

स्वती है ? राज केवा नामरीच

ग्रह्म देखा तमेन पा देव देश्या 🚌 देखान शक्तकः ६व व्यक्तिकः

सरेव परमम्बद्ध ॥ मैंक रूत्र प्रकास १ स्थो० ३८,३६५० धर्मात्-सब के दर्शन साव १० गतिब १३

के सब पापों से विमुक्ति हो आवी है। उसकी गम्ब को सुध सेने से रक्सी नहीं का एक ग्राप्त हो शमानलों में मुद्र होते हैं ! अवस है । ३ ≈ ।

द्वरा के स्वर्त कर तेने से एक मांधं तुतिविध शोक्तंल **म**रोड़ तीर्थंका एक मिलता है। l देवि ! एसके पान बर सेने से साधात् वार प्रश्नार की-सायन्त्रः सामीय्य, साहस्य क्योर सास्त्यः—

≝षित शाम होती है। ३६। · झुरा ही यंगा है, सुरा ही सिंघ **ि** सुरा ही देवी बरस्वती है, सुरा श्री कोदावरी है, पुरा ही रेवा है।

देश्चिद ! तीर्थ, तप, दान, समें, वर्स, नियम, त्रत, पूता-पाट, होय-**प**क्ष, बाद-वर्षस, पुत्रन-द्रापत, बद्धां तक कि परम पद मी शदाय 🖷 बोताल में देश्वे एवर्जित का

- विकास है। स्वस्त्रचित्रत्र विदेशाला

- **द्वरा ही परम** पद है। ४०।

गीरोद्धिष्ठ'तु चर्वथाम । बेद रूप प्रकाश १० रतीक ३६३ क्रमान्-राक्ति (वामी जिस स्त्री को नंगी करके भेरकी पक्र में पूअते हैं) का जुड़ा सरा चीर वोर (बिस वामी पुरुष की नेया करके मैरबी एक में पूजा जाता है) जुड़ा 'सावा' (शराव धीने के साव जो **उन्ह** साया अधा है)साना चाहिये ह नोट-- वर्शमयों की परिवाधा

सदयासक राज ं सश्चित्रांना ये सुदासो सुदा बन्म बन्मनि । नेक्टन्त्र शकारा

धवर्थ-को मुखं बनुष्य गुरा की भिनदा बरते हैं वह जनम द्वितीय सकार-मांस

सुबलवरं त्रिये। यथा सम्मवसय्वेद वर्ग्यार्थ

प्रसम्प**येत** ।। मांख दर्शन मात्रेया सुर।

रर्शनवत प्रथमः कुमार्थं व कम रहना ३ (ओ० ४४ सर्थात - हे विवे (पार्वडी) । मांस वीन अफार का शक्का है- ?. गाव किहारी पविचे का २. स्वल पर बीक्षों का कीर ३, बल पर

जनको हा। इस में से यथा सम्भव कीर्त एक नवंश के जिये नवस्त्र किया वा सरवा है। सीम के दर्शन मात्र में भी सुरा दर्शन बत् फत

ब्राप्त बोता है। **ध्याद्यक्ष**े नरायान्त्र सांत सर्वेटमं शत्य ।

भगावास्त्र तथा श्रेक्त विचिरादिक पश्चिम् ॥ बेर तन्त्र प्रकाश २० इस्रोक १५३ सर्पात—शावता के अतिरिक्त बन्य मनुष्यों हा शंख सर्वेतिय

यवदश क्षेत्र कर क्छ में मध मोर्छार **ब्हा** गवा है। फिर मुनों कीर विक्शिदेक पश्चिमें का भी। रिप्प**यी—शहाय** का मांच हराय

पण बलिदान खबासमार्थ सामान्त्र मरहर्ष संवरेश्वर्याः

स्वावयेत्तव सामिकानं स्वान्तिस्य। सर्वोदमारै: सम्बद

वर्ति दयात् समञ्जूतः। सान्यसम्बद्धः प्रेयस्य लकायः अफरसायाः। ं रान्सकी रामको क्षेत्र

कुर्यः सङ्घो दश स्थताः ॥ क्ष्मवानारि प्रमुख्यात्

सायकेच्छानसारतः अ सक्तक्षा पर्या देश्याचे संबाध्य सर्काकत ।

व्यर्थींद के व सम्बोच्य चेतमदःसती क्टब ।

व्यः सङ्ग समादाव कृतको **भी**जेद प्रज्ञकेत ॥ इत्य विवेशाच वशु मृश्रि संस्थ

त सारवेत । देवीभाष परो भूत्वा हत्याचीज शहारतः ॥

तः स्वोपत् श्रीपर गटरम्यो विश्व हरेत : वर्ग वांस विधिः शोताः कीतिकासां

क्यार्च ने स भन्यमा देवता ग्रीतिर्जाक्ष्ते व ध्वाक्त ॥

स्टानिशीतस्य अस्यायाः क्कोब: \$18,908,902,906,700,

???,??2,??E,??u,??=

क्षर्यात्—हात्री पुरुष क्षपने वास माग में एक शाधारश भीकोत

वडित कान स्थापम करे ॥३४॥ इस शकार बाचादिक स्थेनिकारों में देशी की पूजा समाप्त कर साक्शान हो. एति करे १९५०। धूग, साग. मेप, मेंसा, **ब**रहा तास यत पद्ध । शुक्रर, शरसाची (सेत्री).

शराक, गोड, श्रद्धका—वे रस प्रकार के ही पहु वक्षियान के लिये संबद्ध हैं ।।१०४।

इसके सिवाद साधक की इच्छा-नसार कौर स्थाओं दानी क्ली विका 🔠 सन्दर्भ है ॥१०६॥

सन्त्र जानने पाक्षा साधक, मुक्तक्या पशु को देवी के बार्ग रसकर कार्य का जक विकृत कर थेड सुद्रा करे *॥*१००॥

पिर राजवार सावर कुरुपेश बीत (हैं) से पुत्रत करे ॥१११॥ इस प्रकार निचेदन करके प्रश् को

मुँभि पर सिटा हे ॥११२ (क्यशः)-

'शर्यसमाज के नेताओं से

(प्राप्ट २ कर शेष) विवारों के रंग में रगा है, बोब्ब तथा कर्म है, तो बहा मुन्दर सोम्य ल्याओं का महत्रश तैशार हो सकता है। बहुत बड़ी कभी पूरी हो वायगी। इस से बार्से कर नहीं की जा सकती कि आयं समाज

नुषकों से सालो होता वा रहा है। संस्थाकों के वाताकरण में कैसी स्थिति नहीं जैसी होनी शाहिए। योग्य तथा सामधा काले स्वयंते

पुनक स्थान २ घर भटकते फिरते है। उपर से एक ऐसी विशेष सन्दर्भों को समिति वसनी वाहिय वो इस कार्य को सापने हाथ में के तथा देशे बोध्य युवकों की सकी

र्टेकार करे जिन से म**क्किय में नवा**-काम किया जा सक्ता है। धारी समात्र का इतन स्वापक साम्दोसन t. etent E, u'n E ur en

हो रहा है—बह समक नहीं झाला —त्रिक्षोक चन्ह्र

### वेद बचार कोण में भाग व्यव के मितिरस्त पांच सी स्थण की बेली मेंट

## राजीरी में धर्म प्रचार

क्रानेड स्थारों पर क्रानेसमात्र के परपाल । इस अकार साध मन्दिर हैं १९ना मैचिन और संस्व असाबी में राजेंत्री और कतन्त का ताम विशेष अलोसनीय है। ऋमानूर समाज शतिवये वरनाइ से बापिकोसम दिवा करता है इसके श्वविरिक्त बड़ो निवमित रूप से सांवाहिक साराज में। होते हैं वर्ष में बढ़ हो बार विशेष प्रचार की भीवना भी स्वादे जाती है इस वर्षे सार्वे शेर रक्ष 🖩 साम्य भी स्वापित हो गर्ज है। समान के अयोक्सीको का शतात पराइ-

राजीरी सार्श्वमात्र ने सपने क्रम ६३ के वार्षिकोत्सव पर पन्छ दिन के भिरत्यह प्रचार बहाने या सभा से चयन सिया बा। छक्ता ने समाज के इत्यह पर अपनी मुद्रीमा मदनमंदती ही अगवताय, वसी-

शिव है।

राम श्री सञ्चित अपने प्रसिद्ध दराज्य **स्वत् स्वादयाता, श्री एं० म्बोस्त्रकारा** बी को २२ जून से तबर मेज किया । इस्तित प्रचारक संस्तान ने तिस अपूर्व दलाह चीर सम से क्यां प्रमान किया तसका वयेष्ट **ब्रमाब शहोरी निकासी अन्ता पर** एका । प्रतिकृत दोती समय सन्तद

प्रक्षे १-४४ तक देवियों में कीर ands a से ११ वक सार्वजनिक क्या में वैदिक वर्ष का प्रवार क्रीक रहा। देवियों और दुस्यो में बंद दूसरे से बढ़ दर प्रवाद में **ब**यंगे ह्या विकास समास ह अंकरत को सहद बनावा ।

प्रति रविचार तीन गर सत्त्रज्ञ क्षेत्रे रहे । इन सारे आयोजन को क्टल बनाने में परम पिटा · कालप्रसा की भागीन करा हमाने आहथ रही एक बार भी उसका के - ब्रायस पर वर्ष सहि को वर्ण स

सम्बद्धे पुल्ला वक बर्लमें ते पहते ही प्रशी वी या संबद्ध

प्रदार रहा निविध्य स्वयंत्र हुमा । समात्र के प्रश्न भीताने विसवा वर्षित, स्थापन वः स्रपंद सी इंडवोर्डट तथा प्राप-शीक-महाबान धूनि संबंद सन्त्री री महता कोश्यक्तर वी त्या त्रको महत्वोती सभी करती के ०० है जिसकी समहा और करो क्लक्ष्मा से पर्यक्षमार इस सुदृर कीर विश्ववे हवे मदेश में होता

समा को दिशेष पार्थिक सहबोग देते इसे इस शह देवशनार में बांच की का महा से केंट क्रिये क्षत्र । मार्ग न्यव के सदाबट रही बबा बाद जगत है १२)

बारह समये इस राशि के व्यक्तिफ रेक्ट समा को सम्मानित किया मध्यात राजीतो समाज की क्षद्ध सर्वेद बार्व कपूरों में कराह क्या बटा सरक की तर्व के पर्ने की दुर्श्विय जाने-करिया

क्ष ताश और विश का प्रकाश हो। -बोम्प्रकास आर्थोपदेवन वार्यसमाज तामा में वैदिक

धर्म प्रचार शिवले समाह बार्च वारेशिक धभा के सर्वावद अवदोपदेशक भी ६० हजारी साम औं शस्त्रा में प्रधारे क्याप की जनात सचार शीवी से बार्च हाई सुद्ध रामा द विद्यापियों तथा सारे स्टाप ने

सद बाजन साथ उठांचा । विक किन पुढ़ानों में राष्ट्र के समय धार या प्रत्येश स्थापशाक्षी अवत डोन्ड १९४ । इस ध्यमस या स्था को १० देव प्रचारानं मित्रै : —बरमान्य मन्त्री कार्यसमाय थी बरवास, मेधव रामजी यव

#### उपकार ऋषि दे सलना नई

(रभियता:-पिसोरीसाध श्रेम' रैक्डर,जिला सिरमौर हि.प्र.) चरि स्थानक बता तारे वय झल्र,

नई क्षेत्र सी अस्ता कीर होशा। बका रंग के कमड़े फिरदे में, पर वर्षे को बया कोई फ़बोर **होया** ॥

> %तो आपन दो कोत क्षमा **स्म** वै बाह्रात अन्यस्तर मिटा दिया । **त'न बोच हे मेद त' दर कर**के. बूत-दार 🔳 मारा मिरा विवा 🏾

सन्द बोलया न्याय दा वस दरखा. रेंबा किसी भी भी र मुंहुआत नहीं। क्षेत्र होस हे सक हा अन्न करणी.

इस में बद के वे भोड़ें अर्थ शाही । श्रीचे मही मधोहा ते करते है, बोबां मुस्हवां ही पूत्रा हटा हिन्ते ।

मेरे बरसे राज्ये देशका हो। सारे का नुंद्याकिसाहितो ॥ सोक्षेत्रां भांभां नां नई पहुंच शब्दो,

इन्ना शहरा दे सांदेश सीर पुरी । के कक्षण्ड चैताका चार्लान्डवो से, बारने सांख हे वाले और पूरी U

सम्बो ग्राटी उसरी महांवदे थी..

महर्षि ने है उपरेश भीवा. बड़ाबाल सेशा को सा को दी। बाडे एवं स्थाना नहीं यस क्षात्रों ते भट़ील भी लगे. म्बरि ह्या को ही ॥ निराधार बाउनमा समृत्य है भी जो को अस्तर ते व को सरश वे।

सको जब न जेसा बसादशा में अ इल ओ के के के बे बे दे इसके करहा है रुप्तार महर्षि हे मुख्यों गई । सहति हे अपने बानुवादी धनते, बाको केर बचार न् भूसको नई ।

#### 

मानिक दान क्षेत्रियारपुर ६०० - स्रो राजेण्युनाथ धी वस्त रस्त्रराण जो स**म.** २. श्री श्रुप कायरन मर्स्नेट होशिशास्त्र प्रयान प्रदेशिक सका को नेए-प्रशास किन सम्बंधी ने राज तथा की क्षेत्र में इस टारीक्त क्या है २००/- औ झा**ल**पन्द यो बहानुवाली का कार्यराव पत्य-बाद काते हैं। बारङ्ग प्रश्नम व्यक्तिसङ्ग क्रमेरी **बहेरियो, १००/-** यो करदीशराम

शामपन्य पारिया सदा गर्मी

राम यापात गीलाका कामार

#### रमा का वेद श्चार भी व चन्द्र तीत ३ किलेके समेशक समा है **अ**धीय संगर में मात्र कथ देश इन्द्रार कर रहे हैं प्रजीन के सहर्गत

बोली अवस नेश्रह तरश में शायत समाज के प्रशास का क्रमा अध्य भी राष्ट्रचा के निवास स्वास चर यक स्ताह कर वेद प्रधार हुआ इसी नगर में की भी, पल, दश मार्गेस परिवार विकास वृद्धिकारी मी सामप्त राज की लेकेवार प्राचि क्ष्मा से मूछ आहोग दिना त्रवार का प्रयाच भारत शरफ रहा। सामा को वर्शयक संप्रापता किल अध्यत से प्राप्त हुई। हा जी, व

रचा ४१/- धेठ देश्वरशास जी ±र्/ सा. साम्ययत राग औ ±प्र/-चार्च समाज सारह ३१/- दन क का सभा की क्रोर से कारकार ।

#### ऋायेसमाजें ध्यान द २४ अवस्त से ३१ तक

वेद सप्ताह समी समाजे प्रति æर्ष की मान्ति उत्साह हे भनाए इस अवसर पर सदस्यो में वितरण करने के लिए वदिक वन दा महत्व सर्मा ने सपयाया शका है भो कि ४०/-पदा में मिसता है अधिक म कें अगवाकर क्षस्यों में

समय पर सार्वर शेलें। –प्राप्ति स्वान मैनेकर मठ इंसराज साहित्य विभाग A. P.P. सभा जालन्छे र्था मस्टर श्रात्माराम जी

की जोबनी मचित्र

महत्त्व 1.65 N क्षत्राच स्वय स्राहित जयदेव बादर्ज आत्मा राम प्य बडोवा-१ से मरावात ।

जल्मा का बोई त्वस्त अपका का कर है हा नहीं है मैं कारण का सका समासुक्ष मान्त्री ह को शास्त्राचा कोई सक्य की यह सांष्ट्र में करेड विव शास्त्रकों

बीर इसमें सबी-दक्षी वैसे ! प्रकॉम्स किए का, मोच किस ना ? अन्तर पूरा संबं कीन करत

है ? क्यांनुसार श्रम्बा हुरा संस्थार (mar ur uges 2 1 विरोधी काते हैं कि जीवारका का बाकर हो तो दीसधा क्यों नहीं स्तम दर्शक इसे स्वॉ वही देख

पाते । मैं **बहुती** हु कि मश्त परचात काश्या वयता कर्मानुकार दूसरा जन्म पारम् करने के किए रहा से सहा प्रका शाता है। इसको प्रकान बाबा चीन समर्थ है। कि इसके पश्चमन सक्त इसेंट के पास ते

शाय। यह मारतथ समक्ष कार है। परी दिला से समाज से नहीं भाषी । क्षारमा के स्वस्त्य के वस्त्र-य में

विदानों व देव का प्रमासा देवा समाधान देते की क्या वरें।

प्रार्थ सामाजिक कार कर्ताको है किला वं रूप से रोपा करने वास्त्रों में बावगुरू से उसके क्रिया ए कादसमाज लोहगढ़ क्रमुक्तर ने शोष मताव दात किया ।

मेसे ही कताब हिन्द्रम**ह**स्रका सम्बद्धाः द्वास इतिहरा दारत गाला ने सक्ते साव क्रांतरेसमें हैं एक किसे र हसराज महिका महा विद्यालय

इस इंसराच सहिला सहा-विद्यालय अख्यन्यर के प्राप्तापक त्रात विभिन्न विकासन की स्वातीत परामर्श दात्री सबा के क्योक्स क्षेत्र कार कार्य प्रशासी सरस्य ही अंदरशास भी जेतन के नियम प शारिक शोध शब्द करते हैं कीर वस्य किल स्वयान्या से वस्त्रा क्तते हैं कि वह विकास बात्सा की

वासन्बर

मानिक क्या करतांत हे और उनश र्धांबार बालों को तथा इस सब प्रावंश्वमात्री माई भौर पहिलों को इस क्रमार कर को मैंग मुर्वेड क्रम दरने की चदन ने

त्रवारिसी समा, होशियास्तर विका वेद प्रधारिकी सना. वारपुर **भव**ने माननीय स**रस्य** भी शंकर दास की जेहन, काक्षण्यर निवसी, की मृत्यु पर हारिक शोक स्था है किए प्रश्न सह राह प्यु से प्राथमा करवी है कि सामा

वी की एवंदन क्रमासः। को स्थूनवि

मदान करें।

वार्यसमान वसावसप्र वासम्बर की कोर से बात हिलांक १२-७-६४ रविकार को सन्। अध्या-दास श्यान विका साथ समाम जानकार की मृत्यु वर शोक प्र<del>व</del>ास यस किया गया, जिस में इक महालगाव के श्रमांच से धार्म समाज के ब्यान्डर अभूतपूर्व स्थाद दिनत हो जाने का प्रमुखन किया गया । मन से शर्थना की उर्ज कि रनकी भारमा हो शांति वर्ष सह-

श्री श्रोम प्रकाश जी महोपदेशक सभा का वेद

वरि प्रदान करे. तथा वनके परिवार

के उपर जो दूस ब्या पता है, उसे

सहय पत्रने का शांकत है।

प्रचार कार्य ब्याप २० जन से कमा है पहाची इक्सकों से स्पार कर रहे है। होते, कशन्ते श्रांश क्यांड क्रांडिक

त्यानों में पूज वाम से प्रचार कार्य हो रहा है। यह तह सभा की बेट वचारार्वे निम्त बन की राशि प्राप्त हाँ है। २१/- धामतर हो, ६/-श्रकतुर वार्थ जयत के १२/-च्चार्व सगत के राजीती के ०१/- ऋ।वें समाज बीजेहरा, १००/-बार्वसमान राजीरी। इन सम संश्वाची व गानी कावजे का प्रका ची कोर से पन्वसत्त ।

#### 20 A. \*\*\*\*\*\* a:मन्तरत परिवार प्यान स **प**र्दे

वहि ब्राप क्रिकेट, के बाद क्रम एक वि सन्तान हैं तो उस रोग के सपस पिकिश्का भी ६० स्थानसम्बर की स्वातक (नद्यो योजक पराव प्रदितिष सभा) से असे वा पत्र न्ववदार करें ही मातक जी भारत के कालेक परिचारों की शक्ताता पूर्वक

पिकिता कर शुक्ते हैं।

पुर्ण कीसं : मास-पूर्ण व्यव २०० पता--स्थाम सुन्दर स्नादक महोपदेशक पनाब सभा

६०३ रानी बाग सकर **इस्ती दे**हवी



[बार्यत्रादेशिक प्रतिनिष्धिमा पंजाब जासन्धर का साप्ताहिक सुखपत्र] रेशीयोग तब १०१व Reed. No. P. 12 4-8-64 यक प्रति का सक्क १३ वर्ष वेसे वाषिक मूच्य ६ दश्वे

९ बाबल २०२१ गंबबार...बयामन्दान्य १४०- २ मगस्त १९६४ (तार 'प्रादेशिक' जानन्वर वयं २४ व्यंक ३१)

वेद सक्तयः वर्ष तवश्रनागमः

हे बधन पिता ! ते हमारी

पारी मातः वर्धनव-इन्ह स्व

होरे हैं, तेरे बाजक है। हेरे

शिवाय क्यीर विसी के भी नहीं।

भनामसः -- दिना पाप के हो

वार्षे । हवा की कि हजारा

त्वया वर्ष प्रवसानेन

ही रहे । क्वोंकि बाप प्रमान

हो, विश्व काने वाले हो । तेरे

ताब इस भी पश्चित्र हो। अवंगे,

इसारे। बीक्न, हमारे रुपे सद

र्जावत हो जायेंगे । चाप प्रांतत

एना विश्वान्यर्थं रा म्नानि

विस्तानि-सारे हर प्रकार वे

धन भएडार प्रश्व बरावें । ऐक्षा

बन देवें तो स्वयं भी पमका

देवे। खब्छ साचनी से वस

हे सर्व ! वस्वेदवर ! हमें

तथा परित्रकारी हो ।

हे देव । इस ब्राप के साय

जीवन परप पच पर न पने :

## वे दामृत

### चोम सर्मामदाय शोचिषे वृतं तीम्रं जुहोतन। धानवे जाववेदसे स्वाहा । इदमन्वये इदं न नाम ।

यक् । चाः ३ सन्त्र २

क्यं-दे यह करने कालो ! इस (हुम्सिद्धाय) क्लम रीवि से प्रहिस्त होत्रं शासी तथा (शोर्थिय) काक्य हुद्ध एवं शोधों की दूर कार्र काले (अन्तरेदसे) पराधों में स्टबं काले इस कांग्न के लिए (पूर्व) पी (शिक्स) न अ (स्ट्रोटन) ब्याइनि के रूप में तालो । यह मध्य सीर कवन टीक है । वर्गील मार्गन में बाहाने देते रहो : इसे मन्द मत होने दो

माय:—यह यह की फॉम्म तक अलीवर्णन प्रतील हो जातीहै, तथी इस हे द्वारा यह में दी जाने वाली बार्ड्डकरों से साम होता है। युकी हुई अर्थन में दासी बार्ड्य सर्ववा वेकार होती है। स्रांग्य शब्बिक हो बाने पर उसे धीर प्रवर्शका बरने के किय कुत की बाहरियां दी जानी चाहिए । देसा बाल्यरेव ही बाह्यनियों को तेकर एनको सुरस वशावर हूं २ तह वहुं ना देता है। राष्ट्र के दह की व्यक्ति की वी पही दशा होती है। देश में अब राष्ट्रिय क्याका जानती है तत में औरत का वृत्तिराम दिया जाता है। इस के बाद एकरा कक्रियान दिया जाने कपता है गर्नी क्त से पूर्व क्षान होता है। जब देश के लोग कर, प्रन, प्रन की भेट करतः बाजते हैं । देश प्रेम की कांत्र्य को सह बांब्राओं से प्रदीज कर हेते हैं वह राष्ट्र में बीचन वैश होकर तन बन का करमाय कर हेता है। र 🗷 की क्रांत्र की फूट से क्या समाध की क्रांन्य को इस क्रक्सर्ग, त्याम से सु : तेज बर देवें —सं: \*

## ऋषि दशंन

वर्षं भदा सन्विनः हे प्रभो ! इस सदा सुधी हों 1 हे परमेरवर ! इस बाय से ही यह प्रार्थना करते हैं कि इस सब बाद के पामभक्त, एरम-अञ्चल कार को हपा से अपने कीवन में सर्वा मुखी रहें। क्यी दुःस का दर्शन न करें !

## श्राग्रामयमञ्जमयं वर्त्तं व

असालान ! इमें कुपा करने प्राण्यक्षकि क्षत्र के भश्हार वथा इर प्रकार की शक्ति क्यान कंजिये। हम प्रायों की शक्ति बाते हों. बतायान बनें तथा लाने वीते के प्रार्थी से सवा माश्रा-माल होतें। तीवी बसाद हमें श्रप्त क्षीचें।

#### वर्ममार्गे ददात श्चाप क्या काते हुए हवारे

खिए बसे बा मार्गे बहान करें। क्षीयन में इस धर्म के पथ पर ही क्याने बहुते आर्थे कथी पाप माती ब क्रमें। धर्मनार्थे ही इसारे ओवन का पवित्रसारी होंचे---

भारतभू मिकासे

क्याने शासा यम हमें प्रवास क्षा स देव से

कींक

ष्प्रिप्टाता—श्री संतोपराज जी

सम्पादक--ांत्रलोक वन्द्र शार

क्रांत्र की कवात से जेहर सीह सहाभारत पर्वन्त संसार में बेल्डिक करें की स्वज्ञ क्लोम में बहरा शही थी। परन्तु महाभारत का शिक्रमणारी यह ने वैदिक वर्षे की तेका बन्दा वर्त्वाका कि काम es जी इसकी दशा सन्धवस्थित क्षप से व डो पस्ती। स्रांबद सास्त हें एक सूत्र बाता है 'अपनेक्योप-**देश**लान् वरिसक्ति इतरबस्थपर-करा' बार्यात जब संसार <sup>के</sup> बन्दर wesh > वरदेशक और विद्यान

क्षेत्रे हैं, ता पम, सर्थ, खम स्वीर श्रीत को सिद्धि होती है और इनके श्वमान में कश्वदरण्यश फेन नाकी है। तो ६ वही दशा हमारे भारव **भ**र्षे को हुई । तब इस विनासकारी सकाभारत के थड़ में बड़े २ तत्त्व-वेचा श्री ने अपने परमों का आज-तियां दे हाओं. तब अमध्यम विकासी वनं उपदेशकों से सातो हो गयी। इतका परिणाम यह हवा कि मारातवर्षे के ब्रास्टर बाज्यवस्ता फैल तही। उसी आजावरकपर के प्रवाह के समय यक वहरपति नामक पुरुष ने चारवाक मुख की स्थापना को। अब में नारकारु मत की स्थापना करके बनका बेविक सर्जा-भूसार समाधान करता है ।

(१) हंश्वर-शंक्षर के विषय में चारवाकों का सत ।

जैसे -- सृष्टि का क्यों ईर कर सर्वी। सृष्टि स्वयं धनकी बरीह

. विगरती है ।

समा-संसार के बन्दर इब नित्य पति वेशने हैं कि विना कर्या के कोई सां काये सिक नहीं होता । बैसे हम पड़ी को देखते हैं और देखकर कारुयान करते हैं कि इस का यनाने भाना कोई अवस्य होगा। तिन्य से निम्न वस्त भी विसा कर्ता के नहीं वन सकती तो इतना नदा सहारह जिला कर्ता के बैसे बन सफ्ता है। इस से सिख हमा 🗏 इस संसार का बताने

## वारवाक मत श्रीर उसकी समीचा

से विद्वादेश विद्वादा रस्पति, शास्त्री सिन्नोध्वरानन्दे अदिक शोध संस्थान हरिश्ववारपर

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* करकारका है। से विस्कृत मिला है। इन्हियों वे (२) वंदि ईस्वर स्त्री इस्की, को

वेकार हो जाने पर भी सर्रीर स्वरूने व माना बाक चीर यह बाना अय ज़बने से बसा थहता है। वैसा कि कि यह संबार कहा से इसी वकार समाधि धन्दस्या में देखा जावा है। बा भारता है भौर इसीवभार जसत श्रोता. दो इस में यह दोष आता में होता है कीर तमाम डान्डरां दै कि प्रकृति में रखवं किसी क्ला और मन क्रपेत रहता है। परन्त के दमने बिनडने. ब्रातकोट चौर आश्रदे पर सीने बाबा यह बानमय नियमानसार विकाने का बान नहीं करता है कि वहद आराम से है। क्योंकि यह अब क्यार्थ है। सोवा वह सन्भव करने करा व्यवः बनाने बिगाधने ध्वीर शान-इन्टियों से १४% है और वहां पर्वं विकास वासी कोई चरन व्योक्तस्य है। चीताव शक्ति है। जैसे प्रशंद वस को से सिनिय-सिद्रो

विसा कम्बार के घडा नहीं वत सकता। स्वीदि वह जह पहार्थ है। वह पदाओं स्वयं झाएस में नही थिस सक्ते। उस तस कि कोई ध्यन्य वैतन्त्र शक्ति वस हो स भिकार। इस से चित्र हमा कि सष्टिका बनाने वाला कोई सम्य चैत्यध्य असाधारक अधिः है धीर वह परमात्मा है। 📖 से सिद

है गानी और चरक भी है घर-त

हमा कि जो बारवाओं का वह ਜਿਕੀਰ ਕੀਵ ਕਈ।

(२) जोय<del>-का</del>च के क्रिक्र ≱ चारबाझें का यत । वैसे--

वीबात्या श्राम का कोई घडर. बासर शाइका रुख अही है । शहीर के साथ कपान होता है हवीर शरीर के साथ विजय हो जाता है। समा--(१) जब बाहरी क्रीट

मंखरी तमास इन्द्रिको बस्रोरोप्डार्स द्वारा क्ष्मका समार्थन की कालावा में बेकार हो जाती है तब भी ओब बारी श्रीचित स्टब्स है। इस से वत चलता है कि शरीर के ब्रायर बाला कोई प्रथम है यह कोई देवी शांका सबस्त है क्षेत्रनियों शीबाला किन्य है। इस किर

र्यास्थाओं का बार-रिशंक्साल है। (३) श्रवादि को ज्ञानले हैं—

वास्त्र काम विकारत में सब नेट है। जैसे ४ प्रत्य प्रमास की ही साबते हैं । बहुन को नहीं । भागा - वंदि चेयक अस्पत्त प्रशास

को ही साल जाव वो और सही। संबार के काचर चारी बनावों के विशा श्रम मेलन के ज्यवस्थी क नहीं क्या सकते । जेसे भारवाफ (२) जब संस्थे बाडी निहा यसक्तेंबी मार्ड के बर में एक पुत्र सर्पस्य हुझा । परस्तु स्त्र वास को यह पता नहीं कि येही हमारे माता पिना है। तो दनके मतानुसार उसके बाताधिक नहीं हो सकते। क्वोंकि वह तो केवस प्रत्यक्ष प्रधास्त्र को ही मानते हैं। परन्तु इस रियवि में उन्हें अन्य प्रशासों का सहारा कबश्य द्वीना प्रदेगा । क्रामीत शब्द (३) व्ह आरंबाप के हो नेटी प्रमाण का । न्याय दशेत के कन्दर का एक जैसा पालन पोधवा हका चार प्रशासा निम्नक्षिकित 'प्रस्तवका-चौर क्योंने एक ही जैसी शिक्ष

दशरा चढाइरया जैसे −इस पम को देखध्य अभित का अनुमान पिछले बन्मों के कारण होता है। करने हैं कि चाद सत्र श्रमः तक सत संस्थार जीवारमा के साथ शरीर ग्रें विक्रः त्रथीत जहाँ २ यम होता है आता है। चरः इन सब बातों से वहां २ व्यक्ति होती है। सिद्ध हुम्म कि जीवारमा ,शरीर से यदि इस केयस प्रत्यक्ष प्रमास्त को डी बाने तो ठीक मही । क्योंकि इस विषय में देद का भी प्रमाय हम देखते हैं कि अहा २ श्रम होख दिया आदा है। जैसे काब्रशिस्य-है बहुरे ३ करिन होती है । कार: कृतं. बद्ध चेच का मंत्र है। इस मत्र प्रस्थान प्रमाणी के प्रधाना भी सम लोगों एवं चारवाकी की सामाना के कन्दर बाब की बीबात्मा क्षत्रामा है क्योंकि बाठि सक्त्रशीति

नुसारोपसारहाइ: श्रमासानि'।

पाई परन्तु इस में से एक बोग्य हो

जाता है कीर इसरा क्षयोग्य । वेस

बाब, चर्यात की काटा जाता है

किस है :

ही पहेगा। (४) चारवालों का सत है कि स्वमे भरक भड़ी है।

उसे कानु कहते हैं। यह जीवारमा समा.—पहले हमें बाजना चाहिए भी एक शरीर में धाता जाता है। कि स्वर्ग नरश्र किसे इहते हैं। सुख इस किर इसका नाम भी वाय विशेष का नाम स्थरी दिला विशेष है। बालो कहा वह समर्थ वह समृत का नाम नरक है। सक्त भीर द:स हे बाबीत कमी सरशा नदी है। इस दोनों की क्रमद्या इस संसार है विषय में बहुत से श्रमाण विये आ देखते हैं। इस पहले ही सिक्षकर लबते हैं परना सेस वंश हो आये हैं कि जीवात्था सबर स्टीर व्यवेगा । इसलिए इतना ही विस्तन्त्र अवसर रातीर से थिनन है। इस प्रकारक करता है'। क्यरिविसिय दोनों प्रकार के ब्रायमी संसार वे हमाओं ने चहित्र हो चुझ की देखते हैं। एक बहुत ही हाओं ही

(शेष प्रष्ठ म वर्)

सम्पादकीय-

# त्र्यायं जगत

वर्ष २४] रविवार २०२१, २ जगस्त १९६४ जिंक ३१

## देवासर संग्राम

संसार में देवासूर संगाम पक्काडी स्डला है। दोनों की व्यापस में समय २ पर टनकर होती है। दैकीशनिकयों के प्रचार से सम शान्ति तथा कासरी शक्तियों षी प्रवसता से द:अ विवत्ति शापा होती है। आयंधन देवों के डी स्ता से महशोती रहे हैं। देने तो बह विश्व एक निरम्बर होने वाले श्चीपर्य का स्वान है। देवता ना कार्वमही है को स्वयः २ संवर्ष के किये तैयार रहता है। विजय की बीट में किस ने भी नाइन का दरसन सोडा वही पराजित हो शया। देव भीर कार्यवन विवय के बिक्स पैटा होते हैं पराजय के fact औ। अधासरी विकासी का प्रांतकार करता ही देशों का काम होवा है।

आराध का सा सा तो बड़ा विवस है। इस में वासरी बाबनाओं का मारी प्रधार हो रहा है। नाना रूप बारण बाके ये जासरी विचार बीपन में स्थान बनावर इसे विक्रत बनाते जारदे हैं। जिस का परि-वाम आज सामने का रहा दे। शराय का पीता भी इसी का एक क्य है। भारत विभावन से दुवं कराब के बारे में कारणों भी जैती बारमा थी। अंग्रेस के राज्य में सला भराव को क्या कराने के ब्रिए फितता संधर्ष करती थी, बडे से बढ़ा वसियान देने की भी तैयात रहती थी। इसे रोवने में देश क्या के सब में कथा हुआ था। करन्त्र आज नवा सवस्था है।

या एक सम्बद्धा का कांग बनता जा रहा है। न पीत वाओं को भी शीव वैदा हो गया है। जबाने इसे पीकर विश्वने मोटर टक्टों के चलाने वासे चालक सार्ग है कितने सीगों भी इत्या मोटर दुर्परवाद्यों से कर देते हैं। बाब शराव बढ़ां पर नहीं पहुंचा। वासकार्यं की बहु सुरा जीवन का मझ वनती सारही है। देश का वरोड़ों रपवा उस की बेंट हो उसा है। जीवन विगढ़ रहा है। हर वर्ष बोर्ट भारहों के रूप में दह कारब मह वशीड रूपये इस पर व्यव किये जाते हैं। यह है देश का

रशेंब । शराब के वय में बासरी

इस देवासर संयाम में कार्य-

जीला बड़ी फैस रही है।

वहन अरी थी, ब्याज बढ स्रोसायटी

हमात्र ने भाषना वर्तमा निभाने हें र्वेबार होना है। संघर्ष करके समके विस्ता टक्कर होनी है। स्रोग तो क्साबी सरिवा में तत्वय हो कर -लान करने अमे हैं। बनको तो तम बदय में मसी का रही है। पर कार्थसभाज के खिए यह एक चुकीकी है, चैसेंस है। चीसी माकासक के समान **बह** भी**क्य** श#. भी सामने लाश हो दर देश को लोसका करता बारडाई। समाचारपत्री में सावंदेशिक सार्व प्रतिनिधि सभा देहती के सहा-मनी भी ला**ः राजगोपाल जी** शासवाची ने इस करे में जो समयोजिन वक्तन्य दिया नवा समा के वस्त्रई अभिवेशन के बाद सारे भाषना ही बदस गई है। जो वलु देश में एक संगठित कांदोखन

वदाने का विचार रखा है, उक्से नहीं प्रशासना हुई है । ब्रार्थ कमाय के क्षिणाय चिन्ता है सी किसे ? समय है कि कारा कार्य समाव इस राराव के बहते प्रवस प्रकार को रोक्ते के किए डोस, स्नॉबर, श्मायराती पर उठाये, कांश्रवान बारम्भ धरे, देवसर संशास में इने । तभी सारे देश का भशा है । धार्थी : वैदार रही—विक्रीयपन

## माननीय सभाप्रधान

स्माओं के काल वर्तितिशकों से समा कार्य का दाकित्वसार राजा है। उस का बड़ कर्यस्ती कि कव मारे बाकी बावार क्रम को बन वैठ जार्वे । सारा काम सान्त प्रधान की स्क्री स्थासन्त्री जी ही कों। सारे स्वत्रम स्वीर समाजें ही लो सभा के प्रतिष्टित चांग है। सब ने मिस कर ही इस विरोट शरीर का साथा बद्धा बदला है। बास भी अभी दान सकता है। इसे प्रसन्तना टैकि साम्य प्रचान बी सभा की वेद प्रचार राशि के लिए प्रयस्त्र में अने हैं । सकेरियां तथा होहयारपरके स्वयनों से समा देश सकार पंत्र से क्रप्रते प्रभाव से राशि भिश्रवार्ष है। बह पन की कथा है कि सबा

मनाने की योजना बनाएं। उस मेवा दार्थ है किए समय देते हैं। सः वह वेद प्रचार के विशिष बहुत सब शहरों में समा के हिनेशी अब सभा को वेद प्रचार प्रसार के तथा प्रेकी बैठे हैं इस बार की बिए ऐसें। नेय का सन्देश ≈भा क्रान्तरंग में समा के **का**फी सनामं - स्ट क्ष्मान चार्वे हैं। धारने २ स्थान में बैट कर देसभा शेमी भएता बें सपरिचय देवें तो किस बात की क्यी है। इस अलोक शहर में होरे सवा के हितेशी. सहारमा हंग गण की के समतों से शायंता करते हैं कि सना की इस सेवा में भी

धन से शहयोग देवें—सं,

#### वेद सप्ताह श्रागया वेद आवाँका कीवन तथा परमधर्म है। वेद श्वार की आह

समाज ने दोवा सी है। साज के मोगवाद के विवेश युग में तो वेद ज्ञार की मही ही काथहशकता है। धार्थ समाज 🖹 इस दाम में सगा है।इस में भी थोड़े से व्यक्ति इक्ट वस रहे हैं। संगालको पर गिने बामे वाले मान्य संन्यासी सहात्मा, वास्त्रस्य तथा धपदेशक मक्तीस प्रचारक है। बाहर निकल विक्रिक परिस्थ असाराज्य की **इ**र निश्न्तर दिन रात श्रम्मा **हम** क्स. ए. स्ट्रा. १४४. १८ के कालों पर ही पसन्द विका अने समा है। फिर भी समाज जो कार्य कर रक्षा ■ व्हका सुकाविका कीन कर सन्दर्भ है । त्रकारको की क्की भावन स्वस्ता है पर सन्धनों 🖩 ऋगाय में कार्य कहां से वा जैसे आवे बार्य, यह स्वयं एक समस्या है। मार्थ समाय के एभी में चेत सप्ताह, भावनी लगास्त्रों पर्व पक महत्वपूर्ण पर्वे है। इस दिस से वेदस्थाभ्याय की दीका सी आवी वी। परिवासी कालको, वर्गी संखाओं में बेद हा ध्रम्यवन बहता था। सारे राष्ट्र में वेद समाध बनाते थे इस बार प्रसास ता० २३ वारीतः से वह प्रारम्भ होगाः सारे ब्यार्थ समाज इसे धमधाम से

## श्राय समाज हरियारपुर

वी स्वर्गीय **का॰ संबरदास** जी बेहन, जो 🖟 सामाजिक क्षेत्र में निःखार्थ सेवी ये के निपत पर हादिक शोक प्रकट करता है तथा दिवशत बातमा को समर्गात व जट बार्षे इद्भपने 🗊 भी सभा अधान तिए वनके दुःसी परिवार को वी सभा कन्त्री जी को साहर वैसे पदान करने के किये असू से निमन्त्रख देसर समा का वन सन शर्थना स्रता है। स्टन्सम सन्त्री समाध

(शतांड से कारो)

दस देवीन जागों बा क्या 4. हेस्र राम ने दिया था। पट्टर्य माय का उत्तर भीस सेन ने दिया है। कार्व सिदांत के अध्वय करते पर भीमसेन रिवत पसादों के विकापन सी लापते में। इस संट के विज्ञापन से झाल होता है कि थीमसेन ने मनुस्कृति का याध्य, गीवा 🖩 माध्य तका सर्वहरि के

शतकाय पर भी भाग्य लिखा

बाः उस के व्यक्तिरिकत सन्धीने

'पुनर्जन्म' ध्या 'पुत्रकासेष्टि' शोर्वक

पुस्कार्वे भी स्थिती भी । काराश १६६७ के बांब से खामी शास्तानग्द नामक किन्हों सन्यासी का लिखा हुआ 'ईशोपनिकड' के प्रथम सप्त की स्वानवा के स्टब में दोड़ाबद्ध 'शान्तिशतक' नामक एक काव्य रचना प्रकाशित हुई है। इस श्रंक के कंडिम एवं पर वो मह्यानन्द विद्य विद्यालय पाठशाला इटाका के आध उपय का विकरण क्ष्मा है। सन्भवतः यद् वादशाका स्वार्था दवानन्द् ने अपने जीवन काल से ही स्वापित की वी तथा यह बनतः के चंदे से चनतो वी प्रस्तको के विज्ञायन में 'स्थावर में बीव विचार' तथा 'यमनमी सन्त' इन हो नवीन प्रतन्तें की शुचना है ।

मक्टूबर १०६७ के बांच के मी यह विज्वास दिजाबा है कि 'भागं समाध का भावी कर्वक्य' उह बार्यसमात से उसका कुछ मो विषक पुनः नताया है। इस में सेश्वक अधिष्ट होने की सन्मावना नहीं है। की राष्ट्रीय माधनावें इस वाक्स हारा शह रूप से व्यवत हुई है जब वे सिलते हैं—'इस ग्रुद्ध इदय और मक्टरुट से वर्तमान संग्रेजी समनेमेंट को सम्मति देते हैं कि वह धनावर्षक को प्रभान उद्देश्य स माने । सर्पं भी जिल्ला बढ़ा है क्स को शोच समक्त के भीरे २ कस दरे मीर पामीयापत्राजो मार्वदुसी है वस की शकार सुने । सर्वे कम

## श्रार्थ समाज के शाचीन १३

पं. भीमसेन शर्मा का आर्थ सिद्धान्त (ते. प्रो. मवानीमाल भारतीय एम. ए. अध्यक्ष हिन्दी विभाग, ववर्नमेंट कालिब, पासी)

ह. ६५६ वह सत्तरावर्श दे का भी होलाक कांग्रेजी राध्य के भारत में घटल, बिच्डस्टड क्या बिरस्थाने हो जाने भ्री सम्भावना प्रकट स्थात है तया यह भी सह बर देवा है कि न्यपि आर्थे सिद्धांत पत्र धर्म विशवह है परन्तु जिस उपाय से राजा व श्वा सह को मुख शास्त्रता थ्या शान्ति मिसे वह धर्म से चलन चर्चाप नहीं हो सहता । पाठक देखेंगे, कि बार्व समाज भी प्रामी पोदी के लोगों के किशा धर्म दया राजनीति के विषय में कितने लाष्ट्र तथा काम्बिकारी थे। ये राजनीति को धर्म कसिन्त सममने थे। उस समय हे सोव त्रत्यवृत्तवा व्यंत्रेजी शासन का विरोध करने में कापने काप को जनम पत्रे ये। इसी लेल में सेलक ने आर्व समाधियों का भवे भी राज्य का शुन विवह बनते की प्रेरवा नी है तथा सरकार की

नवस्तर १८६० के संब है 'मध्यपर्य का लडकबाक्यान' शोर्थक एक वरीन होस प्रारम्भ किया गया दे। इस बांड के बार्व व्याप्त क्रतरीक्षी विका काळीगढ़ के एक वपदेशक वं. वही प्रसाद शी के इटाबा नगर में ८. सीमसेन वया जेलक के ब्यनुसार वरि से बेस्कारविधि के ब्रस्तुसार सन्यास सरकार भारतकासिकों की अप्रे को के तुल्य राज्यसेकारि में व्यक्तिसर लेने की सुचया प्रकाशित हुई है। परन्तु वह सबम्द में नहीं कावा कि म्हान नहीं इसकी है तो बहु प्रतित करने की वर्शों. में मानीका प्रजा के प्रहरूव एं० सीसक्तेन ने किसी स्वर्ति ही है क्वीडि अभी का इस प्रश्नो

शिर से बड़े हुने कर का महाभार | को सन्वास संस्कार की दीवा किस इस्का करना ऋति सुध्य होगा। प्रकार ही १ क्या मृहस्वात्रमी व्यक्ति किसी सन्यासी की दोशा वेकर उसका वीका गुरू वन सकता है १

दिसम्बर १०३७ के समू बे

टाइटिल के इसरे प्रष्ठ पर सनावन-धमं के असिक उपनेशह पं० सहा-राम फिल्होरों को प पुस्तकों की समानोधना पश्चरित दुई है। वह समात्रोपना केवल सुपना या विद्यापन मात्र ही है। इन पुश्वकों में फिल्लोरी को को 'सन्दर्शत' नामक पुरुष छ। यो उस्तेल है निसे वर्ड साहित्य समीवडों ने डिन्हों का प्र**बंध क्यानास मा**ना है। वस्तुतः यहस्यो शिक्षा विकयक रह वपदेश प्रधान प्रकट हो । वर्ष वर्षे के परवान कव वह पुनः पाडिट जुड के रूप में हिन्दी प्रचारव प्रतकात्व कार्री से हायी है। इस बाहु में 'राजभस्ति' रीप्रैंड वक नवीन जेल प्रकाशित हुआ है। इस में अप्रेशो राज्य को प्रशक्ति गाने में शैक्षक ने क्यात कर दिया है। मन्दादि शास्त्रकारों को बहुभूत इन्ते हवे राज्यकित को प्रशासा परमध्ये बताबा यवा है। भीनसेन को के कानुसार अधियो राज्य भारतीओं के बिचे डेंडवरीय बरडान है। इस होता में प्रस्तुद किये गरे वई विकारों से ब्यान हमारा सहसदहोना विश्वांत साक्ष्य है।

योग्य कहां हुये हैं। यह स्तकाकीय कांत्रेस की सांग का अवाव है जिस में बहुत जाता वा कि शिविक्स सर्वित में भारतवासियों का मी व्यविकार होता थाहिये। श्रीमसेव भी का एक विकित्र तको यह भी है कि वर्षि भारतवासिकों से क्राफिक कांत्रे व जोय रण्य पदों वर शतिविक हैं तो यह दक्ति ही है क्योंकि जिस काति का राज्य है इनके सवातियाँ का धर्मानसार मी वी इस से इस समित हुई। परस्थ वह धर्मानुसार न होसर बढर बांट ही व्हसायशा । पं॰ सोमसेन से वसपूर्व हस

लेस में यह सिद्ध करने की पेष्टा को है कि स्वामों द्यानन्द् अधे को राज्य के विरोधी नहीं ये। इसके जिये उन्होंने पूर्वपक्ष में स्वामी जी का आर्शिशिवनव में क्षिता वह वारव ब्रह्म दिया है कि "श्रम्ब देशवासी राजा हमारे देश में न हो क्या हम लोग परायोज कथी व हों।" इसके समाधान में वे लिखते हैं कि स्वामी बी ने बद्द वास्य एक जिस्तानामधित सत्य के रूप में शिक्षा है। यहाँ व्यमेती संस्य का विरोध करना उनका वह का नहीं है। प॰सीससेन वे सह से स्वामों जो को क्रोमें की राज्य से द्वेष नहीं था। दे सार्या-मिथितव के उस्त शास्य की यस ब्य्य ही स्वक्रपोल**र**स्पित स्वास्**श** काते हैं भीर सिखते हैं कि इस बाव्य था क्रमिशाय इतना ही है कि संग वों को भारत से करता हो समका होनो चाहिये जिल्ली अधन-शक्तियों को कश्ने देश से है। यदि वे क्षेत्रेष्ठ भारत को भी अपना यर ही समस्त्री तो उनके सामन द्य काँचित्व शिक्ष हो सब्बा है। मीयसेय की की इस टीका से इस सङ्ख्य बदारि नहीं हो सब्से :

(Maria)

### जिला में कान्ति का विग्ल

(गर्ताक से भागे)

देश में क्रान्ति उत्पन्न करके ही कार्वसमात्र शास्त्र न रह सकत। काते देखा कि भारतीयता उत्पन्न ब्द्रमे के क्षिये वह ब्यादरवन है कि क्रमने के सन पर ही संस्कार साते आर्थे। सार्थमें शिले का स्थन वा We must do our best to form a dass which may be interpreters between us and the millions when we govern, a class of persons Indians in blood and colour but English to taste, in opinion in

बाधेओं ने यहां करने व, लक्त स्रोते विनयं प्रध्वापक, कर्मचारी स्त्रा स्त्रकारक हैसाई ही में अतः उन श्चा प्रवत्त्व (इता था कि बच्चों पर **ई**मारे धर्म का प्रमान काल कर ईसाई वशवा बाये । सताईसाइयों हो *द* केट इस कार्थी की कार्यसमात कैसे सार सर्वत था।

morals and miellect.

३० धनर्वर सत १८८३ को महर्षि द्वासन्द् का विक्या हमा समके बाद ही साडीर में आये समानियों की एक बैटक हुई। जिस में यह निश्चय किया गया कि ऋषि स्मृति को स्कृत और कालेओं अधास्याची स्का जाव । यांच ब्रमानन्द भी शिका कार्य को बनत करने के लिये वार्य समाज ने अक्टब्यमं समनते थे. उससिये श्रम्भीते सत्यार्थ-प्रकाश का उसरा ब्रीट तीसरा समस्कास इसी शकरका वर क्रिसा। अपने ब्रापने बीवन ब्राज में भी सनेक पाठशासानें `ब्रोजी । हां उनका शिक्षा का उद्देश और प्रमानी के सम्बन्ध में प्रयोधन विचारों से समस्य मनभेर वा । भाषा व में हम वन्हें में बढ़ सबते 3:-

१--शिया क्यांनशय होती

# त्रार्य समाज श्रीर उसके उपकार <sup>महत्वो ऽस</sup> इन मन्दिः नह

चाहिये कि पांचने वा काठमें वये असात द्वारा स्कापित देविकविद्यासक से बागे दोई अपने जटकों सीर सर्वाचनी को धर केंत्र राज्य करें। पाड शालाकों में कवाब क्रेड हैं। वो न मेजे वह दस्ट लोग हो ।

२--रिचा का शहेका है मानव का शरीरिक तथा **क**ारियक विकास ।

समय श्वाद वये से २४ वर्षतक का होना चाहिये। ४-- शिक्षा काल में द्वात शरीर से रतस्य क्रीत स्वयात से उपसी

≱—ज्ञान प्राणि के साथ साथ सनमें उदन संश्लब हो। ६--आस्मिक प्रश्नति के दिये सनमें देशका के शीत कहा अध्यास

ve—किसा किसाब हो । u-दच्चों को धार्मिक शिक्षा

द्मयस्य वो स्टब्स ६--शिया का माध्यम मात भाषा हो।

१०-शिवा में संस्तृत कार्य के मार्थ विज्ञान उद्योग, इसा फीरास की शिवा हो । - जिल्हा के इस सदयों के पूर्व

भारत में सबे प्रथम शिवा देने का कार्य शास्त्रध किया । कसने इसके मार्ग धीर २. कासेश्र मार्ग । बह बक्रमा धारिमायोजिन न होसी कि काज भारत में विकरी संस्था दी॰ द० वी॰ लाख कीर कानेजी की है उठनी घन्नों की नहीं कानेजों की स्थापना करने में महात्मा इंसराव वी. वा. मर्व दास बी, सा.साजका राथ दादि

(यी मित्रसेन जी आर्थ एम० ए०, साहित्याचार्य ज्यासाप्र)

श्रीस दिगरी कालिड 300 की ए.सी. स्क्रम, २०० मिजिस स्क्रम, २१० शहमरी स्टब १३० (त्रि **पाउरा**स्तारें ८० ग्रहण, ४०० संस्कृत पाठामालें, ९० दश्या <u>सुदश</u>्च, १ **द**न्या कारेश, ३०० बन्या शहरासर्थे, 30 कमाशास्त्र ४० विश्व**रात्रश**.

३-सामान्यतः शिका देने का ua दिशाल पत्तकासय **धी**र सैक्टों क्रमाना कर रहे हैं। भार समाज द्वारा संचातित शिसा कार्ये को बेलाने तसे १८ मार्च १६२० को गुरुकृत कोगती विद्यविद्यासय के बार्षि दोश्मव पर मद्दारमा यांची ने कहा था 'सदनेश्ट के बाद ब्हावे

समाज के शिवा विश्वार के कार्यी की में प्रशंसा करता हूं। शिका, कथ्यास्त्रकता के त्रेत्र में ऋर्य स्यात ने देश वी ला से व्यक्ति सेवा की है।

भी रंगा भारतार ने Father India के इन्ह के वह किया The Arva Samai Schools aim at fostering nationallism even their critics recognise that they are gennine educational

institutions, very differen

from political mush noms which Non-copper विवे हो मार्ग करनाये । १. गुलकुत ation called into existence. इस प्रकार इस देखने हैं कि बार्च समाज ने महर्षि रवानन्द है वादेशों के बनुसार बदशों का भन्नसरण कर के शिका चेत्र में ब्रापर्वे धानित की है ।

#### च्छतोद्वार

श्चानीय के मरदास १० के म वें भाष्ट्रमे । मौर वह रहमनियम होना | ने बहुत श्वरन किया : ब्राम बार्ग | शुक्त में स्ट सन्त ब्राह्म है :--

<del>चर वदस्य बदवैश्यः पदम्यां शहोऽ</del> GREEKS I

इस मंत्र के साधार पर पूर काल में बार कहां माने जाते थे. उन्हीं बर्जी के भेड़ अभेड़ करके मात्र क्रानेकों जातिको सता क्री वाजो । तब भी कोई विशेष इतनि स होती परन्तु इस है कि इन बावियों ने व्यापस में रोटी बेटी का व्यवहार समाप्त कर दिया । शहें सार्वक्रांत्रफ स्थानों जैसे कुंबा मन्दिर परवड़ने नहीं दिया शाबा का। बनके क्रिये शिया शाय करते का कोर्स अधिकार न या। उनके लिये 'स्त्री शहोना बोयवा' बडकर पहने नहीं हिया साता था । भी अभिनासाओ वो का देश विश्वय से विवास था ।

### यत्यन्त शोक्षत्रसक

वते लेश से यह दे:सह समा-चार मना वायवा कि भी जीवति हरिटन जी बर्मा स्वयस्थापक कार्ल जगन व साहित्य विसाय कार्य प्रदेशिक समा आसम्बर का भीव-बान सपत्र थी सरेन्ट कसार ता० ्र पात: सिवित हस्पका**त से** लगं गस हो गया । धन्येष्टि संस्थार में सभा के मन्त्री को शिक्षिपता ज्ञानकण्य थी भाटिसा, श्री आ**०** सन्तोषस्त्र थी, शं मा० प्रकाशदेव बी, भी कुन्दनकाल भाटिया, वं वसवाहास बी. पं॰ त्रिलोक्स्वन्द शास्त्री, पं॰ राजपान, ठा॰ दुर्गाविद्य बी. थी चरशनास जी तहा *महत्त्वे*र

के मण्डन एवं देखियां राजिसक

ड्डें। चौबरी की के परिकार पर

बह बजवात है। प्रश्न बनको क्षेत्र

तथा विवंगत काश्मा को शांकि

प्रदान करे।

#### (मलांड से ब्रागे) तन्त्रों की घृष्णित शिक्ता नं०३ हेवी की र्थावन में परावस हो -कीरफ शहार से पंदाका वध

करे ।।र १६। वब गर्म गर्म (कोसा) शक्त की द्भीत को बस्ति है ॥११८॥

बह वामियों के बिये क्या पूछा के रूप पांच की विशेष करते हैं क्टों के क्यीर विक्री शकार से वेमता की प्रसन्त्रता नहीं होती ।।११८८।

तदीय मकार-मत्स्य रुरमालिविभा मल्याः

कास पाढीन शेक्तिः। मध्यमाः ध्यरवैशीना अथमा बहुदस्टकाः॥ केडपि देखी क्रावस्था

बबि सुन्द्र विभूतिताः ॥ महानिर्वाय रूप रुखास ६ रखो.७,प क्रमर्थात—तीन श्रकार की मक्ष-

कौर शेक्षित । कावटों के बगैर जो सरुसियां है हे सध्यस प्रकार की भौर बढ़त कांटों बाक्षी निकार बहार की ।

वे भी (दांटी बाबी) केवी को बैनी चाहिये वहि ऋषती तरह से सनी हुई हो।

चतुर्व मकार-मुद्रा सदापि त्रिविधा शोवश वसमादि विभोदतः।

धन्द्रविम्बन्सिं शक्ष राज्ञि १९दुत सम्मवम् ॥ बनगोधमर्ज वर्णप

धतपुरुवं सनोहसम् ॥६॥ हुद्देश हुक्ता मध्या मृष्ट धान्यादि सम्भवा ।

मुशिवाश्वान्त्र बीजानि मधमा परिकीतिता ॥ **बहा**निर्भाषा वन्त्र रस्तासस्स्तो०६.१०

वर्थात-कालो पावली, जो कौर गेहुं ही साफ कौर शुद्ध दती हाई कौर भी में करते हुई मुद्रा उक्तम होती है। मह (भने हर) बान्डों से रेशार की हुई मध्यम और क्रान्य

सुने हुए बीज काति क्षत्रस बला क्षा है हिल्ल

(ते॰-श्री रिडीदास जी जानी अमृतसर)

\*\*\*\*\*\*

पचम मकार-मैबन कक्सापम न सेवेव

वतेन अक्षवोविश्रीयः। वक्र मध्ये स्वयं प्रका वा स्वतः प्राचिनीम् रिप्रचं ॥

बेर क्य बदारा १० क्यो - 21.5 शर्थात-क्यदोशिती हो शचा-नक बज्र से नहीं बॉन्ड ग्रीरवी चक में खेच्या पूर्वंक रति की प्रार्थना

क्शरी हुई त्वी दा सेदन करे। इति भाषनका वासी रति अवेन्ति मुख्यते। मेर क्य प्रदाश २० रतोषः १३४

मर्थात्— इस भावता से क्रियां क्शम कही है—शास, पाठीन | (कि मैं शिव हु° और यह स्त्री पार्वेठी है) स्त्री के साथ सेयुक बनता हुआ वस्मी बाट जाता है।

बारम कावा दया नाट्यों श्रांद्रशी श्रम्काः परः वामिना तारप भोक्तवा

**ए**व धस्यें सनावनः ॥१६ क्यांत-कावती स्त्री या व्यक्तिशी मादि दूसरी लियां वाबिकों हो मोगनी पाहियें वह सनावन वर्ष

शास्त्राजीनामपि स्त्रीयां स्वर्शे दोषं न मानवैत १६२ धर्यात-मेरवी चन्न में पारवाओ

कियों के पात्र भी रूपों (सैयन क्रिका में) दोप न माने। मेस कन्त्र प्रकाश २० स्त्रो० १६२

वक्रमध्य गशः सर्वे पृत्रशः रिल**र्क्स**प्य लिसामार्योज्य पार्यस्कालसाळे कंत्र

कारकेर मेंड कन प्रकाश २० इस्रोड ४६१

प्रवात-भैरवी पत्र में राष हर बनाम पुरुष शिव रूप हैं और वद स्त्रिको पार्वेची स्त्रिक्षी, इस विष् भेद नहीं करना चाहिये :

वद प्रम्थ सहस्रोत्त सांस भार श्बेरपि । ৰ বুমেৰি সহাদাৰা হয়

विगार्त (रक्त ॥ ४३ व्यर्थन-सराव के इजारों वर्त हों और बांस के केंक्रों भार, नगर मन भीर सिंग के समूत के विश महामाना प्रसम्ब नहीं होती॥ येखन तन्त्र शकाश २० मिन्दी वा सत्तां भारती

यो रचात कक्षयोगिको मतुबचाय हेरेशि

अस्य पुरुषं न बारक्ते ॥ मर्भात्-हे देवेशि (पार्वश) वदोन्मत कुश्रोगी (क्रम्यार्गी) को जो पुरुष ऋपनी बहिन, पुन्नी वा ल्बी देख हैं, उसके पुरद की शक्तवा

नहीं हो सम्भी। शोद ! बहाशोद ! हमारी पायन जाति के उच्छ असिन्दर हैं कैसा विकार सराज हो राजा कि इस प्रकार की पृथ्वित शिक्षा देने वासी एककों के भी मान्य प्रत्य बानने सग गई। प्रभ दवा करे।

शरा सन्त्र ताए की विधि रक्षमञ्जा भगे रच्यक

पटेबेकाम मातमः। समये परम स्थानं देवी जोके बसाजरे ॥

सर्वात-हे पापेशी ! रक्षावका त्त्री क्षेत्रग को देख कर एकाप्र चित्र से इस (दारा) सन्त्र का क्रो सठ करे यह देशी सोश में परश स्वान को प्राप्त होता है। फिर---**बेह्या सवाग्रहे यस्था** 

अधारण्यम् अपरः । स्था बोरी गुलन्दश्वा क्षत्रं विविद्यन वरेत्। । अनुर पुरा ।

सर्वात-वेरवा के सतागृह से बास्त वसके चुम्बन में तरवर हो, उसकी कोनि में सुद्द समा **कर** उपकी योजि केरस को **पातका** हमा अप करे।

कोई है जो सपरिजिक्ति वकरवा के गृह काववारिक्य कर्य व्यक्ताने की कथा करे ! शोब क्षे इस बात का है कि लावीं लोगों ने तंत्रार को काम परस्परा में **परे**श रला है। उन्हें यह बब्धावा 🏚 मही वाश कि तस्त्रों में जिला क्वा है भीर प्रायों के सन्तर क्वा थरा है। सोग केवारे अपनी अपन सिक्क्षा के कारण जो भी किसी योप शासकती से सन निका औ 'बाबा वास्य बनादेन:' समस्र कर वयास्तु नव् दिका। परमारमा स्टे क्रसम्ब क्य हैकलास ६ हतो. १९६ कि हमारी आर्थि के सोय **का**ने किये त्वय पहला, किसाना स्वीत विचार पूर्वक भागा सार्ग प्रशास करना सीसें ताकि त्यादियों के पंत्री से निकल सकें क्रोर काकानपरा जिस कान्धकृत में लई निरं हुए हैं और देश तथा जाति के अव:पटन का कारस बने हुए हैं, दस से निक्क कर संखार यर की प्राचीनवस व्यपनी चार्थ कार्ति के पुनक्तगान के साधक बान करें।

श्चावश्यकता

गांची मैसोरियत सिटिस सुक्र गोक्सगढ़ जिसा चीबासा के बिष वृक्त B.A.B.T रिटायबं टीचर धी कारश्यकता है। तक तुबक क्षेत्रह की धापस्थकता है। तम सुमध-टोचर के सिर योग्य अनुसवी शोना अवि भाषस्यक है। देतन के सारे रें सरर्पच गोकसगढ़ P.O. सहाना जिला जंबाला से पत्र उसक्दार क्रें यालवंका कर सितें b गीठम देव पुरोहित कार्व समाव

# मनष्य जनम का महत्व (२)

सि॰-पं॰ भक्त राम भी शर्मा (बक्षीका वाले) जासन्वर] \*\*\*\*\*\*\*\* नगर का द्वार विश्ववा कठिन हो कालन जन्म ही वेसा करम है

शिक्ष के ग्रांस का दार सबता है। इसी में मनोरबी के प्रदान करते र 🕏 । यतस्य अन्य ही एक जन्य है .किस में कात्मा काला के एक से तिबस सबता है। बाल की चंचल चींच हमें न शने क्य पन का चन जाए। कातः 💵 हीरे बैसे **ब**न्स का सुम कमों झरा लाम बढाना दाहिए। यह समस कर कि इसी चया काल के गास का बास हो जाना है पर्मोपानेन में मिलाल सही करता पाक्रिय। क्वकोषसर्वीतवा वाचा है। समरा क्रमा एक सार भी नहीं *सीन*ता। पश्चासाय ही पत्ती पड़वा है। मनस्य अस्य की माँग ऐसी दर्शम

च्छते हैं कि बड़ नगर गरह क्षेत्र सन्त्रा वा । उस के वह' धोर

चीट (किसा) का जिल का यह ही हार हा। इकटा विकासी जारी वा रहते काला एक क्रम्पा, अस ात सताया हुआ, राज यह को इस सागा से पत्न पड़ा कि बड़ी दीनों को एउस ध्वस्त श्राप्त हो। साथा है। वर यह अस्तर: असता हका कोट की शाबार के पास पर व नवा तो उद्ध को एक पश्चिक्र ने क्ताबा कि वह कोट की दीवार को हाथ लगा कर असता चला जाये। जब द्वार क्या आवे तम बत्ती मीतर मदेश है जैसे प्रश्न चर्म्य को राजगढ़ दोवार के सक्तरे चलता चाराम

सन्देह का निराक्त्रण

प्रक्रिय जीवर हो तो ही बीहर.

साता सावा सीत. लोब की.

चन्दा चडोर को तहीं जिला.

को ! दनिया के मोले पायी.

शीयक पे पर्वता निश्व करे ।

पर, तम-ब्रोम पन्थ पांधी की.

प्रात्यान भी सबको अस्तिविधे ।

सीया सच्या सम्पार्ग मिले ।३।

पाप के सदह है अलाह हैं।

ईरवर को सर्वरव समवंश्वर.

अब मार्गर कीच संस्टार रही।

ईश्वर-श्रेमी नाविड अम से.

तुकात से बीका पार हुई।१

#### दो-ग्रीन

मिलन का संदेह कीएन की क्या भंगूर जीका, भवसावर पार वरी न वरी। तकां में भवरें, मांश्री की, ना असे शह जिमी न मिनी छ। भारतिय पेर्जनन सागर में. है क्षोम पाप के मन्द्र बड़े। माया की घोडक बीजों से. जाने खदकारा मिले न विजे 12

आना बदिवों को सिन्तु मिला, - शहरों को पनका करा मिला। माध्य नहीं स्था पंचित हो. धवना एवं **वहीं मि**क्षा न सिवा<sup>9</sup> **को** कर्जधार ! इस दुनिया के. पार दशे सम नौदर आदे: में महानी, मेरी विनती, प्रमु ! तुमको अन्त पढे स पढे । ki

दश-च्या में है वह श्या हवा. सब हुद आने स्वीकार करे 🖄 —विजय सरबी काथ बी.ए. —नित्रसेन झावे *२२.५ (*८.) भावंतगर जि. बहाय बानप्रस्य आप्रम स्वालापुर (हरिद्वार 

मन्त्री समा

#### \*\*\*\*\*\*\* दयानन्द-वचनामन

'भारा बासक को सदा क्रम-क्षम बादें शिखाने जिससे क्सकी सन्धान सम्य बन आर, श्रीर **क्सी प्रकार की क्रचे**क्स (कामवदार) न कर सके। जब बच्चा बोसने अये. सभी से दमकी झाल हेमें प्रशास करें जिसके कालक की और कोसस होस्र (वधका) राज्यों का त्यष्ट उच्चारण स्थाने हरा अले । बा बाल ६ इस कार्यिक बोलने समे, तब उसे सन्दर, समार क्षीर स्थात बाक्य बीजने विकार । कोटे बड़ों से. बाता विका से प्रतिन्द्रत जनों से. राजा और बिडातों से कैंग्रे क्रिसतर. यस ता. सम्माच्या करना इसको रोकि-नोति की तिया है । बैठने उडने का माजाकार सबसावे । (स्वामी संस्थानन्त्र ती)

बर दिया। चशते-चस्त्री अस् द्वार समीप भाषा तो भाषाबह उस के सिर वें श्रवलो होने सन गयो। पर्वक सम्पन्न उस के एक इत्तव में सादी भी जिस बार्वसमाज सान्या की बाग-थी टेस्को बल से बहुबल साथा और दूसरा द्वाथ दीकार को जगा वर रावता था कि बड़ी द्वार न निचल कर बावे | उस में 'तबाल' कह कर बावे | उसमें कर समय दोवार से सना आर्थ है समात में नवशावन का

इन्द्रा हाथ बठा कर सिर सबसाना भारत्म कर दिया । ऐसे ही जिस सबबाता हमा उब वह द्वार से सी पांव कामी निरुष्त राया हो जसने चित्र दीवार को बाध समा सिया । इस ब्रह्मा प्रकृते हुए वह द्वार से बोलों वर निकत गया । सक ध्यास क्रीर अब से शह शह दर कल ही निराश होकर गिर पहा । जैसे उस इक्कों को बस सबक

हार का पाना करित हत्तेम था । ऐसे हो सनुष्य अन्य को स्रोक्त प्राची को फिर इस जन्म का शंक करन पं**रत समान विचेत्रे बाद्य में** 17 महा दुसंब 🕻

#### प्राधील

कार्येजगत की इस समय बाहर संस्था द्वारि न्यून है प्रत्येक आर्थ समाज क्यों कार्ड सरजों से प्रार्थना है कि इसकी पाइक संस्था में बर्दि करना करना क्वंब्य समस् स्रीर स्मविङ से स्मिथित प्राहत बताबर समा की सदायता करें। क्रावचन्द्र भारत्या

#### \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* श्रार्यसमाज साम्बा में बेद श्चार सप्ताह समारोह

क्षेत्र जब से भी रूपचना जी. भर वेड प्रधाश जो तथा साम्टर जानक चन्द्र जो कार्य्द्र सन्दर्भे के हाथ में संचार हो यहा है। मना के कार्षिक क्राधिवेशन पर समात्र के कर्तठ मनो भी केट प्रसास जी समा कोबास्यक हो उरवस्त्रक्त औ जासन्बर क्यारे तो विशेष श्रामह कर गए कि साम्बा में प्रवार की बोजना शीकारिशीय बनाई जाए। समाज का उत्सव छात्रील ६४ में हो चका था परम्तु प्रचार के लिये सनका ध्याप्रह बराधर क्या रहातिह प्रचानकी इस लम्ब को र्राष्ट्र में रखते हुये समा ने वहां चेत प्रचार सप्ताह के क्य में प्यार कराना स्वीकार का जिला व्यक्ति १६-७-६४ से २२-७-६४ तक ओ एं. इयोग प्रकाश जी, श्री एं. जनवराम को तथा श्री पं. वस्ती

सम्ब और उत्साह से समात्र वासी ने बचार करावा एड कस्माद वद्यक्र था। नगर निवासी क्युवाँ का असाह भी दर्शनीय था। सम्म को वेद प्रकार कोय में मार्गस्वत के व्यविरियत एक सी एक की **येसी** कारर प्रदेश बेट की गई। व्यार्थ लाया के सभी खाँधकारी बचाई क पात्र है परमारशा करे इन बन्धसों में प्रम प्रेम की क्योंति असती रहे सीर देद वर्गका सारे खेत्र में क्ताह से प्रपार होता रहे :

राम बीको कहाँ केंद्र दिया। जिस

श्रोसश्काश कार्येपिक्शक

### चरवाक मत और उसकी समीचा

(बच्छ २ का शेव ) और दसरा सुली दिससावी देना है और उस दुश सुक्त का चतुमा अधिकारमा धरशा है। इससिय जो बाद नारवाकों का मध है 📠 त्वर्ग सरक नहीं। इसमें यह पार भी शो बाइसी है कि लगें और अन्य की ' वरिभाषा को इन्होंने नहीं बाना। सर्व कीर गरक कही वर्गकाश है

नहीं है न इसका दिलेक कोई ज्यान

बाद है।

(६) भारवाच मानते हैं कि सन्दर सिथी के साथ आर्थितन काना ही पुष्पार्थ का कहा है। समा०-वर्षि तस बोल समार रित्रवी के बाय धार्मिणन करना डी काशार्थका एका गामते हो तो का से करका जो दुःस है की क्षिप्तथा पता मानोगे ।

बद्ध भारमा केवत विश्व वास-'Meों को वर्षप्त करने के किये हैं। । से से व्यक्तिपार क्यादि के प्रचार हें बकावा और कुछ नहीं। सभी . वेसे-वेसे बहुत से सिक्कांत हैं। ब्दल्त केल संबद्ध दश न हो बार। इस सिर वहीं पर समाप्त करता है ।

कार देख प्रमान करता हुआ कार्य सम्बनों से शर्यना करता ह कि केर के प्रकार के जिए कार्यते मार्थों की काहती देनी पहेती। सब वह केंद्र का प्रचार संसार के कोने-कोने में नहीं दोगा तब तक धार्य प्राची का कामान होना कर्समय है।

## भारोसमाजों से विजेष निवेदन

वेर वार्व जाति का परमधर्म है। इस बार भी बेट खब्बाड पन धास से मनाकर वैदिक धर्म का शायन सन्देश सब वक पहुँशने से तिय समाजों से विशेष निवेदन हैं कि ता॰ १६ द्वागल १६६४ से रेकर ६ सितम्बर तक बनाने के सिए योजना बनावें। श्रीन सप्ताह वसन-ससन स्थ में समाजें नताने स मन्त्र को वादि देश का सन्देश रर-रर 📾 की । भारतमार्चे स्था है। संसार में ही सारी है और को रहिम ही सुचित करें ताकि क्यमी से ही समाजों के प्रवार का श्रक्तव किया जा सके । देर से सुचना मितने पर बस्तविधा होती है। यक समाजें जिस स्वाह प्रवार करामा शाहती है से, क्रमा

रीम #1 सचित करें । —आनचम् भाटिया स्था सन्त्री वेदसार' पर समा का

प्रस्ताव

भार्य शहेरिक प्रांतनिधि समा पञ्जाब बासम्बर का यह साधारण व्यविदेशन भी किस्त बन्ध जी द्वारा सम्पादित पुस्तक 'बेदसार' में वेद-बन्तों हे रूप तवा पाठ में परिवर्तन को पोर पुखा तथा जिल्हा की दृष्टि से देलता है। इस मधियेतन वी बहु पुरु भारका है कि केंद्र पटक

पायन ईंप्यरीय बासी है। इस में विसी त्रवार का संशोधन, व्यक्तिंत भीर परिवर्धन करने का किसी को क्रिकार नहीं। यही कारक है कि सगीरम्भ में साज कर वह अक्रय वते भा रहे हैं : सी बडी करेंसे ।

भी पं० विश्व बन्धु जी का बह दुस्साइम बमल चार्च वाति ई ुनीव शाचीन संस्कृति का सक्कोच्छेडन है। सहः यह स्वधिवेदातः...

सामक सामरोच व्य स्थल इस पलह से निकास दे-

२—बरकार से बहु मांग करता है कि इस पुलाह की समस्त प्रतिकां बड़ों की प्राप्त हो सकें, तुरन्त कन की बाबें. स्वोदि इस प्रतक से सम-क कार्यज्ञानि की भावताकों यो वेस पश्चता है। (रे) यह प्रतिकेशन सबस धार्वसम्बनी से सामह निवेदन

करता है कि विस्तेत्वरा नव वैदिक धनुशन्त्रात्र संस्थात जो कि सिरियत स्प से बी वं॰ विश्वकायु वी की काञ्चलना में बार्च समाज के सिवान्तों स्वं भावताची के विदय संबंधित रूप से कार्य कर रहा है. के साम ध्यक्तार में परिवर्शन धर के इसे कार्य सिक्काशा नुकुत न

NA APP au

वकार्य ।

गांची मैमोरियल मिडिल क्ल ठकरपुराः (र्थवाला) काब ता० १२-७-६५ को शत बाद वले गांधी मेमोरियल बिद्यल न्द्रस में सब द्वात की स्थापापको

वे मिस कर लगीं**व** मी वंo बबाहरकाल की एवित्र स्पति वें रापन ही जि हुई अब अबड़े नेहा वपाहरसाम भी पवित्र साति है तम से सन में क्या कॉफ देश की रबा करेंगे और विना किसी आहि-पॉर्च के भेदभाषको मृक्षकर मिक्र-जन रहेंगे। बौर जो कुछ भी देश के निवे इमारे नेता को प्रिय वा इस

नीतम देव साथे प्ररोहित सार्थ-वयात शक्तकता ।

चार्य समाज मन्दिर बाह्य (परता)

की यह समा शास्त्रर धर्मेन्द्र मक्रमारी शास्त्री के आवस्तिक निथन पर रोग प्रचट करते हैं । कार भारत के सहाद शिका सामसे कार्य नेता. श्यांत विद्वान भीर क्रम विचारश्च दे । बार्च देश 🍕 यह एवि निकट शक्तिय से पृति होते की संमाचना नहीं है हरकर वनमी बाल्या को रागीत हैं और वनकी परिचार बाखों को क्लिका **ब्रह्म**न की शक्ति प्रशास करें । —रामककर चार्य प्रता चार्च सकाम

शोक समाचार

प्रादेशिक समा की २**१-७** ६४ की क्रांतर समा के प्रस्तान के बातुसार नी सा० देशमत जो मन्त्रो सार्व व्यात वार्रेस सेट समतक्त है पिका भी स**ः रासदित्ता की तमा** मी रांक्रशस्त्र की वेहन प्रवास बार्यसमात किया अखन्यर के निथन पर दो बिनिट भीभ रहका बद्धश शोक घटन किया गया छया व्यवद्यी क्यात्मा की सङ्ग्रीत का श्रमेक परिवार की इसे दावस इट के सहत करने के क्रिए परवा-पिता से मार्थना की गई । तथा इस नशाय की एक मापी भी देखा। **बी** तथा श्री झानचन्त्र जी तेहन की भेगो नारे। —सानपरह थाविका

मन्द्री संद्रा हार्दिक वेदना

सावा के प्रक्रिय प. मेसाराम की रेडिबोक्सियर समनोपदेशक की नानबीया भरवाई तवा बाहिन वोमा देवी के बावरिमक निवन का चरवन्त दु:सद संशाकार सम क्र कावन दुःस हुवा। बार्व जगत तथा सभा के सारे प्रधारकों की घोर से हार्दिक संवेदना है। प्रमु धरिबार को सहन रावित तका दिवंशत झारमाओं को खान्ति प्रवास करें —सं.

gg र ४ प्रकारक मी अनोपराज जी भागे प्रोदेशिक प्रतिर्धाय समा पंजार बाहरूकर क्रारा कीर विकास में छ. सिशास रोड बाहरूकर से सुद्धित क्या कासकात करमीतथ महात्मा ईक्टाक नगन जिन्हर क्ष्यहरी जालन्थर छहर से अकारिक मानिक-कार्य कारेटिन प्रतिनिधि सभी पेनाव वासम्बद



हेर्बाफोर पर उद्धार (भार्यप्रदिशक प्रतिनिधमभा पंजाब जानन्त्रर का सानाहिक मुखपत्र) Ragd. No. P. 1; ार्थक सहय ६ छवसे

२६ प्रावेश २०२ : संबंधार\_देवानन्टाब्द १८०- " अपन्त १९६४ वध २४ अक ३१। (तार 'प्राटेशिक' जानमार

#### वंद सक्तय: न्वमेनद्रशास्य: हमो । कार्यन ही कल-५१

# वे दामुत

पक्ष श्रीत का सहका 10 लगे वैसे

सारा पराचर तरात्र धारक किया हमा है ; बाप के ही निवन (अवसी में हर वह वहार्थ क्रवने **:** कासमें नहा हवा है। बाद ही इस मारे विश्व के सारक हो। नियासक हो।

#### इन्हो बन्नी हिरसपय: कोर्गा विकासना अस्थान

वजी-उस काला. यही आर्री जाहिल भाषा है स्वीर वह लेजस्वी है। अस की शक्ति से बक्तरर≤ में बोई भी के बय कर जा नही सकता : उस की नियन्तर जलने अपनी कहती तथ की र्राप्तनी है :

# इन्द्र वाजेष नोञ्च

è orinar | mm gride-आत के नवा इस के वासी मे हमारी रहा करें ! इस बात में स्मि से कम न हो वा बोई हवें श्यान सके, पराजित न कर मके । आभ में व वस में बदन वाषे ।

सास वे द से

यो ३ व तं त्या समिद्रभिने गिरो वतन वर्षसामित्। बहरहांचा यविष्टय स्वाहा ॥ इदम्पनेवेर्निरमे इदस्त HH III एक । संग्राहे

क्कार्य- के कार्य १ (स्था ) तम (स्था) तुम वी हम मद (समित्रवित्र) क्षांच्याच्यां हो। (कार्यार ) जब के रहते जन्म काले (१९वेग) यी से (कारामान्ति) हम बहाने हैं प्रशासिन स्टर्न हैं , 1 नहन । यह हाँ (शाम) क्षर्वासन हो की , व्यक्टिया) कान सांसन बस बान हो हो है वह क्रमें " केरे के बड़ी हार्चक है पक्षा बरे : बागों का गरे द्वारा सन्दाहन देखा भाग है।

भूग -- वक्ष को अर्थन की नविभाकों में बढ़ाया राख है। नर्गन-बहुद क्षाबंदे में ब्रार्टिश हुद बहुता है, पमस्ता तथा दहारित द्वाता है । इस में की कर्राट का काहांत पहले से प्रदील होता है । क्रांपा क्राचेत्रत हेक्ट्रे में क्ला हेव है। यह वर्ष : काम ब्यक्त है। इस के हारा जिल्लाका परा प्रका रंजा है। इसमेर जीवन में भी करिन हा बंदा प्रकार है। कारिस के उत्तर ही नो क्रमाता जीवन असना है। यदि कारिस य हो के प्राप्त ही सभा जीवन रूप हो आये १ इस यह की करिन की ते प्रम बदा समियाची से, यन कार्य में बदाने रहें, बनान करने उदे तथा देश की काँग्य की बीवनदान की कार्यांगय। बान कर प्रकाशित करते रहे । देश की यह क्रांग्न भी करन नहां है । यह बहा काम करनी है। इस को भाषना जीवन मेट देखा महा बदाने उही। इस खामा की कभी सन्द अ होने देना । इसे सर्वेष पदाने ग्रहो-नाः

## ऋषि दशेन

विद्यादि श्रेष्ट्यनम् वे दिन । इस कार के एव शासना करते हैं कि होते हात विकार बर्जान का उन्ताम धन वसक को । एक विश्व विद्वार न याने करत यह विकाह में भन्ने का वर ते स्त्रे । यह भी प्रथा दर्भों है स्ताने काना हो, मेर हो ।

#### ब्रह्मनिष्ठात्वम हमें क्या में लिए हो, जहा हो, विश्वास हो - हम पेट के भी परमान्यक वर्षे तथा त्रान के बाजन बनने साते हों। कासी HA HE STOTE IN STATES को दर करने वाले ही । ईप्ला

#### विश्वामी बेदने की नका क्रान-भदान समे मोत्तमगरीरेन्द्रियाः

ब्रमाण करीर प्रसम् ही कार प्राप्ति वर्तवार प्राप्ति व उनस काम की करते वाली हों अशिक कार्याच्या पर सामें प्रवस रस के दिनों संग में भी विकार न होते । स्थल्य कींग प्रमाननाः से जीवन भरा हो।

याध्य भू क्षि ६० से

.मात्र इस कामान कुल में बो 🌃 विकास का यस बढा साला है। वेसे विकास के युग में इमारे इस माई देश को साकार निराकार लेकों प्रकार थे मानते हैं। बिक भादनों को ऐसी आंव कारणा देश्वर के विषय में है. उनकी यह कल्पना नेवादि शास्त्रों के विकत बका श्रवि के विशव होते से सर्वया क्रासन्य है : क्योंकि साकारत्य म िक्राकारण से बोलों शक परस्था बिरोधी होने से एक इन्च में सभी भी नहीं रह सकी। वो एक उच्च अंदोओं को साजने हैं इस से इस वसने हैं कि रंपहर साजार व जिसा-क्य पढ समय में रहता है प्रथवा काल नार में ? यदि वे वहें कि यक अस्त्रय में रहता है तो यह करता जे एक समय में परस्पर विरोक्ते हो गव क्शपि नहीं रह सकते वह स्योतन्त्र सिद्धांत है। यथा ओडे को लोहकार अब करवां शकार गर्म दर बेंबा है, तब बा बोबा वयका नहीं है भीर जब तरका है त्व गर्म नहीं या । क्वोंकि ये दोनों गुज परस्पर विशेषी हैं। वैसे को हैरेक्र जब सासार होगा तब निरा-कार नहीं व अब निराकार श्रीना वय साकार नहीं। चतः वे द्वेश्वर में नहीं वट सकता। यदि ईउटर की साधारका मातने हो तो जो साधार हो वह स्वायक जहीं हो सरुता. यो स्वापड नहीं वो सर्व-शादि एया भी ईश्वर में नहीं घट सकते । क्योंकि (परमित वस्त से गुवा. वर्म, स्वभाव भो परिभित रहते हैं भीर सर्वी, नवीं, नवीं, क्या, रीम, दोष, क्षेत्रन, मेरब इसदि से रहित नहीं हो सकता। क्वोंकि साधार होते से वसके नाक, ene, আলি আতি অব্যব্ধ তা बनाने हारा सबोज्ञ इसरा सब्दव होना चाहिए और जो संबोध से सरकार होने वाता है क्सको संवक्त करने बाशा निराचार, पेकन, जय- क्रीर बिनासा से रहित (क्रमान्यः)

মামিক কৰা....

# साकार निराकार-निर्धाय

सि॰--श्री विद्यासागर सर्मा, दयानन्द नठ, दीनानसर) +++++++++++

श्यमेत होना चाडिए। को कोई यहाँ ऐसा क्षेत्र कि हिस्स में लेपका से बाप हो बाप शरीर बनर सिवः वों से बड़ी सिद्ध होता है कि शरीर

बनवे से पूर्व निराह्मर था। इहनः इस से वही निविचत है कि देवबर में निराद्वारण की घट सकत है

सामारता नहीं। सेंपडा सरोर की क्रामंद्रा का निराहरख । बजर्वेड में एक सन्त्र

धावा है दि— स रवेगाच्छकप्रशासम्बद्धाः मस्ताविरश्रंशस्त्रमनाय शिक्रमः। कविर्मेनोची परिमु: स्वयम्मूर्श-बात्यवरोऽर्शन्यवर राजकाश्यक्षेत्रकः

सनाभवः ॥ यस । ४०।८।

को सब (शक्य ) शोवकारी सर्वमन्तिमान (श्रद्धावस ) स्वत्र सरम कारण सरोर से रहित (ब्रह्मणा ) जिल्लाहित कीर चानर (बारनाविरम) नाधी प्राप्ति के सम्बन्ध कर बन्धल से उक्तित (सदय) प्रविचारि होनों से शक्त होते से सदा वर्षित्र (स्वयापनिद्वय) को पाप पंकर पाप कारी की। गए में वीवि बरने शक्षा बसी नहीं

हो सक्ता (परि+स्थात) सब क्रोर से व्याप है, जो वृद्धि सर्वत्र कांन्य दशीं (सबोची) सब जीवों की बनोवरियों को जान ने वाला (परिमः) दृष्ट पापियों का तिरस्कार करने बाजा (स्वयनमु:) अनावि लक्ष्य, जिस की संबोध से क्रवांक. विदोध से विनाश, साता दिश वर्भकत, दश्य, इदि और मरक नहीं दोते यह परमास्या (रावक्केप्यः) (सनातन धनावि प्रशासों के लिए (बाबाइटवरः) बकाय भाव से (झर्थांन) बेद हारा सव पराचीं को (वि+सहवात)

are 5 : पौराधिकों के सान्य स्वासी राइराधार्य वस्तोकत सन्द्र में आये हर कहादम्, काशाब्दिम इस स्ट्रॉ का अर्थ ईशोपनिषद-आस्त में जिया है कि—'सदाबह मारेरो विकासरीर पर्जितः इत्यर्थः । स्वत्रवास

वान् । भागानिरं स्तावाः शिरा बरिबन्द विद्यन्त इत्यस्ताबिरम् । मक्रक्तमस्यादिर मिल्लास्यां स्यस सरीर प्रतिषेकः । राह्यं निर्मस मविधासस शहित-विशेष कारक रारीर प्रतिषेत:॥ ब्राग्रारी भर्मात विके शरीर से रहित। अवश वर्षात् चक्रव है। ग्रस्ताविर, जिस में स्तानु अर्थात् शिरापं न हों उसे धारनाविर कहते हैं। भाषण भीर ग्रास्त्राविस इन हो । विशेषको *से* ल्यून शरीर का प्रक्रियों न किया

यवा है।

भीर इन्ही व्यव् क सन्हों क उक्टाचर्व ने 'शुक्तवक्रुरेंद् सक्ति।' के भाष्य में शिक्षा कि 'ककार्यन विकते कावः रातीर' सत्तवाः । सत्तवा काव रहितत्वा देव। अस्ताविरं स्वाह रहितयकाथ त्वाहेर । शुक्रमतुरहतं सत्वरत बलसोक्षिः । क्षकांपर=दिस का सरीर आहे दे वह बाहाव' बालबाव ∞शरीर रविष । श्रास्ताबिरम् -- दावियों से रहित सकाव । ग्रुद्धम=सत्त्व, रश्च, थ्य 🎹 तीनों गुधों से जो सर्वेश स्वस्य व्यवने २ लक्ष्य से इत्यांच हर रहता है।

ओं वपस्थित हरमा कावहबन्ध सम्बद्धों हैं वा 🕼 वीरास्थित परिवर्ती को आन्त भारक को प्रथम न सिक्की महीवर भाषा ग्रुक्सरकु०--'क्रमाचोऽरारीरः । क्षित्रः **रागैर** वर्षित इत्त्वमं, कामधोऽस्तः।

व्यस्तादिशं शिरारक्षितः । व्यवसाऽस्ताविश इविविशेषया इपेन स्पृक्ष शरीम विमेश: । राहोनिमेश: । राष्ट्रराचार्व विशेषकर बनाता है। वहाँ परमेकर हे बालकृत 📗 सहोबर वे बार्य सब सोयां को उरासना करने किया है।' अपया व अस्ताविर इन दो विशेषयों से स्यूष्ट शरीर कर नियेश है इतने विस्पष्ट सम्बर्गे में वेर मना का भाग्य रहने 💵 मी पौराखित विद्यान शंका करते हैं कि वेद ने ईस्वर की बाकाय कहा, इस के कहने से ही शरोर कानियेव हो जाता है, पुनः समग्र व अस्ताविद कहते की क्या आवश्यकता थी ? क्वोंकि बाहाय बहुने से ही शहीर कान होता श्तीत होता है। अवः अक्षय व अस्ताविर वहना अना-वस्त्व हुआ अतः इस से प्रवीत होता है कि ईश्वर का सबा दुःवा रूप कम बन्धन में बांधने नावा शरीर नहीं किन्तु 'खेच्छा शरीर' है । (उत्तर) यह कश्यना मुक्ति संगठ नहीं है, क्योंकि देद जब ईश्वर की क्रकार (शरीर रहित) फहता है।

वदि वे इस पर कहे रहें कि ईस्वर स्वेच्छा शरीर धारख करवा है वो हम पहले बह बावे हैं ईस्वर ने खेच्छा से ही चाप ही चाप शरीर बना सिवा तो मी वडी सिक्ष स्था कि शरीर बनने से पूर्व निराधारका षाय शब्द केवस शरीरार्थ-

धायी हो नहीं है अस्ति अस्तार्थ वाषी भी है । ऐसी श्रष्टाध्याची जे विवि रारीरोपसमाचानेक्सादेश्यकः स्म ह । याव हे । सूव प्रदेश सम्म शब्द निवास, विधि, रारीर और बनामान कर्य में 'चय' से 'क्या' वडां हम यहीवर का बाव्य और 'व' को 'क' हो । (स्वतः) सम्मावकीय-

बर्षे २४] रविवार २०२१, १९ जुनाई १९६४ (अंत २९

## महात्मा हंसराज जयन्ती

स्वर्गीन महात्वा इंसराज हाताको , से पुरा प्रवास विया है कि कविक भी पूरे क्यारोह से बनाने वा कान्तिक निर्देश कार्य प्रदेशिक समा के इस क्रिकांचळ कारियोक्त के बाद पश्चिमी झम्मरक में प्रो विचार विनिवस के परपात कर विका गता है। यह राजाबदी समा-रोड जासन्धर में ही दिना जायगा । इस के सिए कार्रीस १६६२ की विधियां निश्चित की नई है। मदात्मा जी का अध्य दिन समा-रोड् धीन (इसे का बारी बायोजन होगा । इस महान क्षार्थ के खिए पूरी तैकारी स्था समय चाडिया इस के निश्चित्र सामाधिक काव इवक क्यमिनिकों का भी गटन हो थवा है। सभा में सपनी क्रोप्ट

से वाधिक तथा सम स्थानों. हत्याओं तथा समाजों के साथ स्वयनों का सहयोग शह हमने दा वेदश्य कर सिया है। अस देवता की बयकी मामूबी बन्धा तो नहीं है. शानदार रूप में छन के बन

लय ही सनावी द्वीगी। इस के विष सारी सुद रेका समा की को। से जनता के सामने क्या जायेगी। इस काल में सब ने ही फलर करना है। महात्या की जैस त्यागी, तपत्वी मेटा किसी एक स नहीं परन्सव के थे। इसका कारी थे समाबो इस पतिक दान से तन सब पन से जट जाना चाडिए -- 25-

€डवी पर सच्ची बात भी धनियत सरवदेव भी विद्या-संबार एम. ए., डी. प. बी. कारेज **बल**न्दर चार्यसमात्र के सम्बीद सनीवियों में यिने वाते हैं । प्रचयन भीर तेसन होती में अलात सम्भीरता बिते रहते हैं। वो कहते बा क्रिकटे कम्भारमा से क्यूते हैं । बहते दक्ष के साथ कर कम्ब को ३६३ ने में श्वाह के प्रतिकृत भी विनि। भी । मडी वनके विकासी की रक्षेत्रे हे हैं। भार्यक्रमत के गर्वाक समाज के मान्यूव की ने एक विरोध करके तबके स्वर्तसम्बद्ध सार्व आर्थ परिषय भी प्राप्य एक क्रांचरत - श्रव्यक्ता है ।

श्रीमें बाली हैं। सार्वदेशि नक्षेत्रे हे इस वार्थ हुन।

कर आदिग सहकर 🏢 वबाह का साममा इरना इसरी वात है संबद्धा ध्याम आकृषित दिया है धभी-कभी सारत के बद्दान प्रमान नन्त्री श्री पं. बणहरशात श्री नेहरू दा सर्वेत्रस हो तथा । इस पा सारा विद्देव रोया । अनकी ऋवने हातों सिसी **व**सीवत के कनुसार वनका राष्ट्र संस्कार तथा भागी को भारत की मूर्जि में विश्वेता गया परेन्द्र राजधी कारिएकों, ग्राविस को तेष्टर को भारी म्हर्सन किया गया. ब्बारों पर न अपने विजनी नाव वर्षा, क्रिक्सी सामाएं क्रिक्स पृत्रम, विशेष गडी वे हे अस्टर सारे मारा में क्या प्रयोग के संयम पर जो बो भारी वाबोजन किया गया । तथा क्रस्थियों को क्रेडर सारे थी। अपने नेता के नित सका का वह कानसिक प्रदर्शन था थी FEST MET

विन्तु माग्य विसासंदार भी से बार्यसमाबके सामने एक प्रश्त रहा है कि क्या वह करिश पूजन सनका बस्स निवास कर देशा ध्वरोन ठीक है ? क्या देश में इस प्रकार से एक व्हें शहरह स्थाती हो उन्म नही र्व्या जा रहा । इस को तो स्व∙ीय परिचत नेहरू की भी शब करी मागते थे। ऐसी बाधों पर स्व की कपनी क्याचा नहीं भी। यह तो कीर बाद है। तरन वह है कि इस वकार की काल्य पुत्रम की ऐसी परिवारी क्या रुपित है ? स्था यह भी सर्वेवा बढ़ पुत्रा की पंत्रभार नहीं कारम्ब हो रहें। शक्षणट पर वर बानी जा कर गाल्धी से थी समाप्ति की महिक्साकर हे उस के सामने सत्या टेवते हैं।

क्षत्र हार्गित पाट पर शा कर भी परिस्ता भी की समाधि पर प्राथा टेक्ने का कार कारम्भ द्वीया । यह नई परिपारी पत्न पदी है। क्या बहु । गृ के सिए हिसका है। मानुकता का प्रवाह और है पर सिद्धांत की कर्यांका का व्यक्त सरक्षत्रे है। कार्य समाद भी स्थापना प्रयक्त में बहुने के सिए वहीं हुई बरन जनग को सरुपथ पर चलाने के विश्व हुई है। 🎹 मान्य पहिन्त विदार्शवार भी के विभागों से पूर्व क्षेत्रा स**ह** कत है । शह बर प्र चभ्दी हैं∤ भार्वसमात्र को इस

पर बम्भीरक से विकार कर प्रवाह में न बहुना चाहिए : --श्रिमोश वस्त्र एक चोर नेता चले गध

भी ताला संकरशास की जात-न्वर प्रधान कार्यसमास किया औ कृतिबन्द दर पते गए। समाज शन्तों में प्रमास से सभावर की मारी कवि हो न्हें। कार्यसमात कोर कार्ताव कर रहा हं— विंगों की बार्षिक प्रशिक्त किंद्राम्य किराया गया । इसके मनि में पुरानी पीड़ी के महापुत्राय हूं

वडा स्वामासिक ही किउने । बितने मी हारा सारे आर्थभगाव १ त्रंचा है। उस शीक्ष के शब्द इन वड महार्श्विचों को देख का समस्य हो काते हैं--हम तुपान से साथे हैं किश्वी निवास के, मेरे वच्ची रक्षना सम्भावा के। धार्य समाब की नीक्ष भी बड़े २ तकानों से गुजरी है। पेसे २ वद सहास्था ही क्षा कर साथे हैं। प्रश्तु अंदि द वे पुराने सब्धन भी कार्स सन्द करते या रहे हैं। सा० शकारास बी की सकता उन गाविकों में है। स्वर्गीय सरका को ने काफी अध्यतकास में समाज का वहा ही काम किया। यस कमाज के तल्से पर मैंने विवेदत (बका कि 164) समाज का सल्दर अस्तित स्थास का कावे हाथ में किया है। नहीं वसन्त्रता है। बोशे ! जीवज से सब इस देखों, खेवा की। शब कोई मी रच्छा बोसी नहां : 🎟 इच्छा दै कि करनी करेंगों के सःसने क्लि समाज सन्दिर बनकी विद्या जाने। व्यक्ती से रात किस करते से । क्षम चल यमे । इन से प्रस्का जिस्स बनके इस काबे को पूर्ण कर 素は白の

\*\*\*\* व्यार्थसमाज, प्रास्ती महही

साप्ताहिक सत्संगों में बढ़ती हुई रीचक

अम से कार्यसमात का बता जुनाव हुमा है, (कविनारियों से सःप्राहिक सरसङ्गों को व्यथित से श्राधिक शेषक बनानेचा यस्त्र किया है--रश्री प्रदर्श के व्यक्तिरेक्ट नीवसन लाके और सहदियां दापी संस्था में सन्मकित हो रही हैं-उपस्थिति २०० के साधान तक वह च रही है-- पं० हरिइवस्त्र श राभ्यी पुरोहित काले समाज व

न्यास्तान क्रीर संस्थारों को करावे का बहु जनका की कार्यसमाज के

—क्षंपराज विष्कुरुक्ष रचामसन्त्री ।

बोट-मन महाराज ने पांच सहा पाप मुं सन्तमे हैं। 'बाहरण सरामने स्तेयो गुरवाङ्गवानसः ।

महान्ति पातकान्ता ह संसर्गत्रवाधि से सह ॥ क्रवीत १. महदस्या २, शराव बीमा रे. चोती बरता ४ गुद्ध परिव से समायम ४, इन के साथ संदर्भ

शर्वेश्वरपोत्तमाः रेडाः नेवेश्यो वैज्यावं परम । वैद्याका दलसं सीच शैवार्डाच्यामचस्य ।। इविकादकमं वार्च कामातः

सिद्धांत्रसम्ब । **बि**ट्रांतादत्तम कीस की साम् परतरं व हि॥

**इक्**रार्धेश सम्ब २-११-७. ट सर्थात्—सव से उत्तम देद, केटी से कत्तम विष्युव, विष्याध से उत्तम सेंब, रोड की दांचया. द्रविया से काम, श्राम से fazia. विज्ञांत में उत्तम डील का र कील से

बह कर्य कोई भी नहीं। फॅल्प्य यह के वामिनों के क्षेत्रेट **ब**रे सब सम्प्रदाय नेद से उत्तब **र्थ**ा वेद का सब से निक2 हैं। 'को का कलाधिक पर्य

मझानाव भद्रति त्रिये। बाधारकादिक पाप स प्राच्योति त संकार-॥ सभारतेष तन्त्र ३-१२-४ श्चर्यात-ने प्रिये (पार्वेटी) । बो पुनव श्रशन वरा हो कर किसी भ्रान्य नमें की इस नर्म(बाममार्ग) है

**ए**त्स्ट मानवा है, वह निस्संदेड

ब्रह्मदश्या भादि महापापी को प्राप्त क्षेत्रा है। तान्त्रिकों के पोच सकत बर्ध मास च मस्वादच मुद्रा-मेजन मेव च ।

क्रम मागं प्रविष्टेन सश सेन्यं सुदर्शिया ॥ मेड दन्य प्रकाश १ मतोब ४६ भगीत-पर्या, मांस, सत्त्य, जा देश विश्लेदन-

# तन्त्रों भी घृणित शिचा

(ले०--- श्रो पिंडीदास वी ज्ञानी बमत्द<) (वर्ताक से व्यागे)

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* सदा बीर मैथून वे शंव मधार ('म' से बारम्भ होने वाहे) हैं। क्षत्रभमं में प्रविष्ट होते. वाओं की सहर्षे इनदा सेवन करता वाहिए । क्षा विकास सलग्रन

महा मैथन मेवप । बकार पञ्चल देवि

देवडा गीति कारकम् ॥ स्था*तोर्थ क*न्न संस्थाप १० श्रावेक प्र क्रव<del>्य</del>ि—हे देवि ! सच मांत्र,

सकी, मुद्रा, क्यीर सैंदुश—वे पांच सकार हैं जिस के शेवन से देवता इसन्त होते हैं। मर्च मार्स समा सत्त्वं मुशस्त्रेयुव

मेवचा । शक्ति पुत्रा विभागसे पंचयत्वं प्रधीनितम् ॥

महानिर्वाक वन्त्र उत्तास १ श्लोक २२ वर्धत्--शराय, मांस महती, सदा लया सेवर शनित पूत्राकी विक्रिके क्राहि में सेवन योग्य

पांच कव कहे गये हैं। वितयी साह स्वोक्तरोकित है बास सार्ग को पश्चित शिका की, परन्तु कुछ दुरावही स्रोग संमार

को बोधा देने के लिये बदने सम नाते हैं कि वस्तुत: इन सन्दों के गृह द्याध्यारिम्ड सर्वे अशेष्टित मनुष्यो दी समय से नहीं का सकते। देसे बोगां की सन्तरते के जिले इस अन्तर अन्तों में से प्रतिपत्त देवरण वे बर बह शर्रावेंगे कि सर्व स्त्र क्ष्य इव सब्दों का स्था सर्व

नातावे हैं। व्यय सहस्य-प्रच गौर्स रेहो तथा बाज्बी जिविया भोचना प्रतासा वै साना विका भोक्ता शिक्ष सञ्जूर सम्मन्धा नाना कृष्य विवेदकः।

बहुचेवं समास्काण प्रमुखा देववाचेते। महाविशीय क्य करशास ६ हहाँ ०२ ध्यर्थेषु-भी महादेव ने वहा-गौरी, पेट्टी क्या साम्बी ये तीन क्यार की उत्तम सुरा है। यह शत सबा कीर कन्य वर्ड पशयों से वैदा होती है कीर अनेक स्कार की होती हैं। देश भेर धौर एवा नाम भेद से यह गरा अनेक प्रकार की

पूजा में में घ्ठ हैं। (शिक्षा मुरादाबाद निवासी सुलानन्दारमञ्ज ५० वत-देव प्रसाद मिल)।

बावन्त चालवेद हरि शक्त पास्रवेग्सतः। ব্যবস্থার নকর্মীর काराज्यस्थः . परम् ॥

महानिशेय क्षेत्र स्टलास ६ वस्त्रोः १६४ अर्थान-जब वह १७ व एमने हये. जब एक सन चक्रायमान न हो जाब, सब सह पीता वाथ। इस से श्राधिक क्यापान है।

शासम्बेन्द्रिय नेकस्य बादस्तो मुल विद्या। ताबद्धः स्विते सर्घ स मुक्तो नात्र संहायः। पीरवा पीरवा प्रतः पीरवा बावस्पव वि स्के । तत्वाय च एतः पीत्वा पुनर्जनम न विद्याते। बातन्दाक्तको देवी मर्च्या भैरदः स्वयः।

वयनासावे देवाइब तस्मात् त्रिविधशाचरेत् हतायेष राज प्रस्तास ४ SRIN EL. 840, 808 सर्भात-वद तक इन्दियों में विश्वस्ता व कार्ये, वदश्येक प्रश्ने पर

विकार प्रश्लेत न हो. सम तक की यथ पीता है, यह निस्पेरेड मुख्य हो जाता है। यस पीचर फिर पिये, समझे बाद फिर विवे वहारे तक कि प्रविधी पर गिर पदे। बळ बर किर भी जो भीवा है क्यो पुनर्जन्म नहीं होल ह

कानद से इतोब ६६ में पर्याप विधि से को वीता है एक से देखी की शांज होती है की बेटोसी से.... दसोष १०० वे बड़ी विधि से-स्वरम् भैरव प्रसन्त होते हैं, झीर कै कर देने से कमाम देवता खुश होते हैं, कर: कीनों प्रकार से अब का सेचन करे । (क्यों जी इनका प्रतस्का-रिवक गृहाय बया है ?) (क्षमहरू)

### स्ही वर्ष है। वर एवं क्षण हैव उपदेशक विद्यालय त्योवन (देहरादन)

वी घरतमा चालनः स्वासी की के तालक्ष्मान में संचारिक "वेदिक साहिरच विद्यालय" में बने वयं के जिल्हा प्रवेश २० जुलाई से ध्रमल तक होगा। मैटिक के संस्कृत श्लिवे हुए का प्राप्त, विशासक सप्तासा की बोस्थल वासे जन्द

प्रविष्ट हो सकते हैं। बोग्व विधा-विंदो के क्षान-पान, **रहन-सहद** चीर पउनाहि का सारा आर विद्यालय की फोर से निःगुरूक होगा। विद्यवियों की प्राप्त रेप से ३० वर्ष की होती नाहिए। विकासर के बाचार्थ प्रसिद्ध विद्वात् सालार्थं सङ्ग्रस्थं वी 🕏 वगदीस चन्द्र वी शास्त्री वर्शना-याने हैं। विद्यार्थियों के चरित्र सम्बन्धी परिचय पत्र किसी धाय-

समाज के अन्त्री का पदाकिए द्वारा प्रवासिक होना स वस्यक है। बार्चका पत्र शीक्ष

· 6 क्रमितास १

अंकी रे

व्यवस्था से योजि तांत प्रकार की

है। १--वर्ष योनि २--व्यक्षीय

बोर्कि ३--वधव शोवि । इस सीची

अपे को 'कर्म योगि' वे प्राचित्रें को

सुष्टि के चादि में यूक्ति से हीट का

आराते हैं। एग्डें 'क्यं बोनि' इस

क्षिय कारते हैं 🗏 वे पर्व जन्म के

परव और पाप के अमान में द:स

क्रक असी योगले किल कर्मही

बाले हैं। बसम कमें से बसम

कीर बरे कभी के बनुसार बुरा

फल उन्हें इस शब्म से बागते

क्रमों में मिलता है और उत्तरा

बाद अन्य पुतरपि शत झान के

द्वारा मुक्ति कप्त होने के प्रदोबन

के देवर की दवा से होता है परना

इसरी योजि 'खनभोग बोजि'

है। यह इंड्यर के न्यावानुसार

केंबल ट:स सुद्ध ओगने के वर्ष

ही होती है। पाप पुनव अपने के

जिए नहीं। जैसे पहा पढ़ी बादि।

श्रीमती 'दमय योगि' दान सेन

भोगने और वर्ष करने के

किए भी होती है। जैसे मनुष्य।

मञुष्य दोनि सब बोनियों में उत्तम

मानी गयी है । मानव जन्म ही

मारे विश्व में अनम है । इसकी

सदानता पशुक्षों और पविषों की

भागि मोगी बीद दव जाना नहीं

है और न ही तितकियों के समान

ं ज्यास्त्र कर रहना ही है । कीट-

ब्राडि वोनियों में निरम्बर

ल क्षीर सर जाना ही होता

वोति है जिसमें मुख

ने भा सकते है।

<sup>7</sup> को सारती

ਜ਼ ਤੋਂ ਈ

के बच्चे में स्ववत्त्र ही रहते हैं ।

दम समय उस में साम्लों सरध्य ।

निधास करते थे । स्ट्रां एक

# मनष्य जनम का महत्व

निसक-प० मक्तराम वी (अफीका शले) बालन्दर \*\*\*\*\*\*\*\*\*

दर नांगा । महाराजा ने भागा

वे तो-'शाब से हेरे बेश के सबी

रेसाभी प्रवास रहता वा छो। अति समध्य बारी से इस ब्रह्मण की दिन निया सङ्घ कर अपना भीर योजन कराया की ।' प्रक्रिके दिन क्यानो पत्नी का पेट पाक्षा दरता महाराजा ने उसकी चयने तह था. बा । एक बार किसी कारबा जिसेव भटरभ कात स्वादक्षम सस्म से अयोध्या नरेश ने प्रसम्ब होस्ट भोकन क्रिकास । राका की रसोई वस बक्क को बहा-किया है के बने हर. साना व्यवहान शक्त कुके वरहाक देखा हूं। तु सुमः से वसचे काक्षर यस दिन को अक्षप्रक जितना पाँदे बन-बान्य सांग हो । राह्यतो ने व्यवने बहोधान्य समने. में तुसे लॉड सांगा पन प्रदान कर शक्ते की स्वर्गीय साथ सम्बन्ध गा ।" यश सन कर शकाया बोशा---याना, परन्तु जब दिशों किन करिएं 'राजन। सम्बद्ध दिव का अध्यक्षत व्हलने पर उनको साधारण जनों दीजिय । ये अपनी सार्या से हा क्रमानामा जीवन करन क्रिको सभ्यति से ल'।' राजा ने उसे लग तो वे असे र⊲ग की स्मोर्ड एक दिन का स्वत्तर दे दिया । का इति रज्ञादीका सरस भोडर अब पर पर जावर उसरे चपती स्मरता करने परन्त राजा को जारी पत्नी से पत्ना कि क्या सौगा स दोशरा काम दर्तन नानकर प्रश्रीने बहुत हो परनावाप किया । ज्ञाप तो वसन सहा—'पति देश । जेंसे आओं वरों को पारी हम हो मिक हैं। इमें घर सम्पत्ति . स्याय कर बनके खिर राता के मर से क्या प्रयोजन है । १ इस दोनों नी बारो का जाना दुसंस था ऐसे को अधिदिन पका-प्रकार। मोजन हो एक बार मनुष्य जन्म ओकर मिल जाना करे तो बहुत उत्तम दिर इसको पाना अयोग दुर्शन है। सो क्रवोध्या नरेश से त है। ब्रद्धारे व्यय वंदाना नहीं बहुँ साँग कि सारे कोस देश के

\*\*\*\*\*\*\* दयानन्द-वचनामत

सन्दर, बारी,शरी, इस दोनों को

भोजन क्या दिया करें 🌣 उसने

असने दिन जाचर राजा से बजो

पांडिर अपित क्रोनिक्सिक संपन्न

हराया चाहिए।

'त्रस प्रकार परवेश्वर को शार्थका खोर उशासना करनी शाहर : लक्षाचात शीय हो, इतदन दर, मंह हाय यो स्नान करना हबित है। 💵 वा देह कोस हर एकान अगब में जाकर

बोमाध्यास की रीवि से उनावना करें। यहां आया दिन जबे **१६ वर में का बाबे और कन्नांशावश बा**दि जिन्ह कर्म वना वसी अ विधि करे । 'सन्योपासक' में दश से दम होन ब्रॉर अभिद से श्रविक इस्डीस राम्हाश्रम विधि पूर्वक करने आहिए। 'तो मनुष्य वर्षांचरण से ईववर चौर असके द्वारेश में सति हो स करते हैं कीर हदय-रूप विसंख यन में राख दिन रहने हैं. वे पामेश्वर के

र्माप राज बारे हैं। (श्वामी सत्वान-इति) \*\*\*\*\* श्रार्यसमाज, पुराखी मसडी

बार्य संस्कारों में अधि कार्यसमात्र के दिन प्रक्रिदिन

बद रहे प्रचार के कारण हैतिक रीति से संस्कारों को कराने के जिसे क्षोगों में काफी दिसपस्पी पाई अवी है—बतः इस बताह झाये समात्र प्रानी संही के प्रवाद बंजी की कविराज विष्णु सुत्र को के पीत्र का मरदन संस्कार वर्ग बैटिय रीति से स्था और ७ बान्य अध्यक्त भी वर्ण वैक्षिक शिक्ष से हुए। सस्कारी से कहां काये समाज का श्चार द्वा वहां काफो बन सी

दान के रूप में प्राप्त हुआ। सिरकी वाजार भटिसहा कार्यसमात्र शिक्षी सामान

रोडवाली गर्नी भटिएमा की वार्षिष क्या व सरतव ता० २७ जुन से अ ब्रबर्द तक बढ़े ही शुक्रधाय से सम्पन्न हथा । वार्वसमध्य के धन-यह कार्यकर्भ प्रधान थी ५०व उत्सास वी शया. बंदर्श सी स्थ० सोब्राह्म जी. भी स**्रियमारी आस जी** ववा समाज कं सारे सध्वनों का असाह बड़ा ही प्रशसकीय थी। इतनो सर्भी में भी परा सप्ताह और समाज के विशास भीवान में ला क्या प्रचार होता रहा । समा को फोर से पं॰ तिलोधपन्द शार्खा तथा ठा॰ दर्शसिक्त की राधान सन्मिक्ति इए । कोषिज करठ पं• **बरश्रक्रमा तो भी प्रभारे । शरि**दिव होतो रही । देविक मा तरताई भी

बहा समझ था। टर २ हं व्याने से । इतिकार किया र

समारोह था। म० वि भी की प्रधानमा हैं सीह सम्बेखन हक्या । जिस में क्षे बेच, काशीराम दर्वासिंह भी, प्र० वेदतर क्रिलोकवन्त्र जी. ५० जी ने विवार स्थे । प्रश हसा ( के बालकण्ड दवासिंह को ने सब द सभा को संस्य श्वस, स

12:7 ft (33) %1 G

के बरध न बरा सान

**कार्य** समाज में मीता क्या कभी बेट का स्थान ले लेगी। ( गर्तक से कामे ) बर्ड भाई हो कपने कापको कि क्यालान श्री से भी कविन -तहार और दियारवात क्रिक बरना जाइते हैं को बाध अबि

स्विदयानन्त्र सी तो गीता के शक भागों को प्रशिप्त मानते थे पर ये साकातकत धर्मा क्षेत्र सारी गीता को ही प्रविध्य सिद्ध करने के जिए सामें सम्बे खेला कीत प्रसार्थे सिवा रहे हैं।

में सहामारत की क्या नहीं होती और इतिहास अपने-अपने स्थान वाजिय । वेसे महानभाषों को पर ही रहेंगे। मार्थसमाज में बेट इयानर जी को भी कभी नहीं चर्शहरू कि-सर्वारायुक्योत्तम का स्थान यक साल गीठा भी सुम्ही वी वह उनको सुम्ही है क्षर्योत । भी शम, महाराजा दशस्य मस्त मिसक्टर कही नहीं हो सकेंगी।

तक्ष्य सीवा, वी कृष्ण्, मीव्य, जोबा का बहा किया जा सकता है बुधिन्दर मीम करून भारि के भीर दर्गा सकाली तथा तससीवन राम भी अपने स्थापकाओं में न रामाका के ही पात किराते काले लिकाकरें। है वेद के नहीं कभी चौराविक रख बार्स्सवस्या यह है कि-चेद की कोर से कासी शक्तका के का स्थान क्रापना है स्वति क्रीर वक करोड़ शादों का आदोजन हो

कोई कहते हैं कि—कार्यसमाछ। इटिहास का स्थान विन्त है, स्म ति रकाहै। कार्ये समाप्त में देव का स्वास कभी भी कोई मन्य नहीं के संबंधा

शीता बेचारी बबा क्रेसी र वैशासिकों का पाका भारम जिसाला है वहां भी बेबारी गीता वैद का त्यान नहीं से रही वहां दर्शासणसही के इलोकों कौर तससीइत रामाच्छ

चाम समाज में किसी को. देसा मिच्या अस क्यी भी क फैलाना चाहिये न समी विमी कार्थ समाजी को ऐसे बाते के की भीवादयों के साथ स्वाहा शक्त कलनः चाहिये। \*\*\*\*\*\*\*\*\*

# राष्ट्र नायक जवाहर

(प्रणेता-विकासमार सर्मा, दक्षानन्द्र सर, दीतातमाः) हे विक्यसाणि के विव्य प्रजारी ! तक परख-वरक में अदार्थित है। हे पंच शीख के नव-विक्रीता ! वद परश-कास में शदार्थित है।। निवन तन्धारा द्वाच । जबाहर। जन-इरवें को शोका कल कर। ब्रोड विश्वलवा राष्ट्र-शिद्य को। यस दिवा अकारद में हाया वराहर। डे सारत-मा के बाक नवाहर। वर दान सात का से कर के त'। कदिन वरों में चन्द्र हास से। निकस पक् समराक्षय में हु।

'स्वावन्त्र' शिशु की रचा करने। क्षता समा में योजा यन का सब बात दिशा की स्त्रीचन कराई। इस्ट्रेग्य-छाइस पुला रिश्वा**क**र ॥ **ब्राथ विकल**यी मातृसाख केता शिरचय पाने<sub>ग</sub>- इति. ह्रदव से। मात्रा के हे दिश्य विनायक। क्षेट्रे किन जन शत्थी इत्तव से।। चरवाँ में राज्य प्रवि का। इस-स्रोत दन वड २ जाये। सभी वर्ते की ब्रह्म-बेदना काश्य वर्षि के वें बद अपने ॥

> व काठवसंख कीचन जेगा। तदर्श वर्ने उनवा ∎टें दर्रात का स्तता का । का देने

## महात्मा हंसराज साहित्य विभाग का

दह निश्चय

५.० प्रतिशत कमीशन प्राप्त करें नो चे किस्सी हुई इक्क पुस्तकों पर विकासने४०प्रतिशत क्रमीशम देश स्वीकार विकास

> इस सनदरे अवसर से सभी खुल, कांकुत्र, भाव समातें भीर वन की बेकार्स

नाथ प्रदेशका सभा वा बाब कारणे धमतवायी क्वित्यशं) क्रकित्र ।-) म० इसराज की का सचित्र अीवन चरित्र (कालद स्वाभी भी महाराज विकास) कीवस २) इयासस्य अक्षर is क्षेत्रात चन्द्र की कृत) कीयत १) प्रभ दर्शन (आकन स्थामी बी जिल्हा की मत आ) महर्षि दशेन (दि० दीशनयन्द्र जी क्या की मत २) हेरिक प्रमें माने क्यों प्यारा है (निर्दारण रामचन्द्र अत? बीमत शा) हैंडिक बर्स के ज्यारा (०० विश्लोबक्त जी शास्त्री लिखित) कीयत १२) मेंबडा, कवार्थ प्रका द्विती भाष्य i. ii समस्तास (श्री कावस्पवि all बळ व+ का) श्रीवत शेष्ट सश्त्वास की १)।

बीचे की पुस्तकों पर 25%, कमीशन-

सत्याचे प्रकास वर्ष २०) सभा का प्रकारम, स्यानपदिच रू कृष्ट वरू (दिं० सुने भातु की वायक्ष वांसकर) कीमंच P खोरित क्रीर वीटा दिसरोन कीम**ा है**स: !!=), !!) काने बस्द्र की कृत, स्वाध्वाय संग्रह के दीवान बन्द के काने ।

भोट-बार समं महर्को को देगारीया प्राप्तिस्थात-महात्मा हंसराज स

जालश्वर" \*\*\*\*\*\*\*

## श्रार्य साहित्य की ग्रन्थ सची

चा. अहसेन जो दर्शनावार्थ दि. वे. क्रोध संवान होसवारपुर 

श्राहित्व की प्रन्य सूचो के सन्वरम जो कब विचार कार्य बनश और आर्थ नेतामों को सेश में इसने का क्यास क्रिया या । अपन्ना हो सार्थ-देशिक समा के अभिकारी इस चपवोगी कार्य को अपने डायों में श्रें। सार्वदेशिक समा भारतवर्षे की क्या विदेश की भार्य समाजों को सबता भेत दर दन के पुस्तकालयों के ब्रार्च साहित्य की सूची मंगना सकतो है। बायं समार्जे वायवीर इलाई या स्नाय पुर्वक समात के आयार्थ सुधकों के द्वारा यह कार्य सरक्षता से बरवा भक्ते हैं, कि वे · स्वयने संयमे प्रश्तकासय के साहित्य की पत्तों संथ सनी बना कर साबे-देशिक समाको सेन दें। आपने

बक्षां भी यदि उस प्रन्य सुवी को प्रकाशित करवा कर रस से वो चार्य सरानों की ज्ञानकारी क्रीर .आस्त्रायगाओं को सङ्गावतर का वक प्रतरा पग होगा। आर्थ आपटित्य के प्रश्तक विकेशकों के अली वर्ते और आयंत्रमम् की पत्र चित्रदाकों के पराने कड़ों से भी इस कार्य में शहयोग प्राप्त किया विका अवस्थाते । प्रथम साम **ब**स के सार्व शाहित्व ने तेल हों के - अपनों का संक्षत करना चाहिय, श्चित्रहा परिचय शालीय आर्थ-क्रिकिटिंग सभाओं के बार्विक विध-इक्सें से प्राप्त किया वा सकता है। इस समय विश्वमान बार्ज अक्रांक के सान्य बेलकों से प्रार्थना .. बारके चनके स्वर्शिय मन्मी का पश्चित भी अध्य दिया जा - अवस्ता है । प्राप्तकम कालिओं के विचा-

विंडों की वार्षिड परी बार्ष सम्राप्त होने पानी हैं। सार्वदेशिय समा -क्ष्ममें से इस बार्य प्रश्ने को

तें 🛮 ध्रापने महत्तेल में कार्य। सहावका से इस दाव को पूछ दरशासच्यी है । ऋषशा सार्य प्रतिनिधि सभा वेशन के अधि-वारियम इस कार्य के जिल्ल क्यानंत उपवेश ह सहाविकाश्चय में एक मास का क्षेत्रम क्षत्रकाश होता है, खाब बोध्य बाबकारा के दिनों में इस करने की पर्य करते के किए विभिन्न-विभिन्न स्थली पर जाबर यन्य सुधी का निर्माण कर सबसे है, स्वयंत्रा विकास प्राप्त सहस्रो या वात-वरिवयों द्वारा इस कार्य

हो परहे किया जा सहता है।

इस बोधना की पूर्त के शिक्ष काये-सर्वाद्याचे समाजों के तथ व्यार्थ बगत की शिवशा संस्थाकों के पुस्तकासयों में तार्थ, पस्तकासयो के रिकेटरों से हवा पुस्तकों से वन्य नाम-प्रदाश नाम विषय माधा **को**र समय का संकेत कर विदर कार्य । गुरुका कार्या व्यासा पुर-मध्यर, सार्व देशिक सभा क्या विद्वेष्वरामध्य वैतिष शोध संस्थान होइयार पर के प्रान-कासव धार्थिक उपश्रोगी हो सक्ते हैं. विश्व विशालयों के पुराकालयों से भी इस कार्य में महायदा श्री मा सब्सी है। विदेशों के परन-कालवे! Libraires को प्रस्थ सभी बसाह हुए में होतो है। जिला का लाभ भारतवर्ष के बिनव विशा-बाबों के पुस्तकाक्षयों से बाज दिया या सहवा है । यदि अधेक सार्व-समाज सौर जिल के धारते उज्जीत गम प्रसादासम है : व्यक्ति वे सम्बन मार्थय सबी वर्णा देशिह सभा सो भेड़ हें और गार्च. रेशिक समा इस सामी संस्थित

सामग्री को यह बोरव विद्यान को वर्गालकम बारि की रूपि से एक क्षम्य का सम्भादन करा हो । इस प्रकार का उपवानी मन्य कार्च तका आर्थ जनत से बाहिर की पत- प्रति छकेत हों।

#### 'श्रंघ कृप'

(से - थी राम मृद्धि कालिया, एम. ए. देहली) क'श का कोचा है सम्≡

चानित्व समारा है. वाग विस्तान वंश है तेन थ्यों सलागशी जला भारा.है<sup>९</sup>

> क्या मूल गवे, तेरे पुरका दमते <u>स</u>त्त्वी **धके हारों** थी. शब्द बना, त बना सहायक,

देता है सक बटमारी की। ्यामी ने **फिस रे**हु यनाया स्रोत विश्ववस मत पदा है. सर्थे, विशद्ध आप हुन्छ में बसते क्षीबर सापन हेव बाना है।

त्याग सरस्था, विकास स्टब्स को नोरमता का शरका किया है, प्रदर्शन क्यीर धरम्बरा का त ते तो चप्तरश किया है।

इसी तरह को बीता जीवन कटा चरकट साथा तस से

बतवाकी फिर थग में रह कर 🛋 बाबल पाता तस ने।

प्रेरित हो कर विगत काल से सह क्षोगे हुम क्षोद काद जव, निरमय है, जलधार शहेगी, चन्नांद्रशर तेरा अविद्य नजा

तेसडों, बकाबां और शोध कर्यांकों के किए बहुत उपयोगी सिद्ध हो क्रमा है। बार्च बगड़ के जलाही gu-र्शत्रहाको के सम्पादक कौर क्रमक विकेश को इस उपयोगी वार्च को खपने हाय में ने सकते हैं यसाहः सार्वदेशिक समा धीर

बालीय समाधी को देग्दिय और शासीय स**प्र** पर इस प्रकार के संबद्धालयों और पुलकानयों का तिर्माण करना पादिये, जिन मे सुन्पूर्त आर्थ साहित्य के साथ आर्थ व्यक्तविकाको क्रोर चाच समाश के रतिहास सम्बन्धी सामग्री, धार्य विद्याओं को प्राप्त नेशाओं के वित्र

\*\*\*\* समाज के इतिहास के लिए तथा | पत्रिकाओं, क्रीर एतकों की चार्य समाज सम्बन्धी सध्यक्षी का संस्थान किया जावे। यह कार्द झार्य समाज के इतिहास में तथा यस के इतिहास को जानने के लिए कारवन्त उप-योगो हो सबता है आये नेदाओं और अलग से में सान्तीय पार्यना करता हूं कि वे धार्य साहित्य की मन्य सदी की बोर करना प्रकास क्रमस्य वें । क्रान्यथा मनिष्य **में** काने बाओ पीटियां हमारी इस उपेका पर क्षमें ध्यवस्य स्मारण किया करेगो. और तथ वह आर्य समास का बहुत कुछ साहित्य भूग के शर्म में समा चझ होता. तब इस संद मरिव की बनाना छतीय क्रिज होता

मैं पन: सार्थ जगत का स्थान दक्क

ब्रोट ब्राडर्पित करना चाहवा हूं

बह सन्य रहते हर इस वर्तन्त के

### ऋर्य जरात के में जिवेदन

कार बाहर का दमें से समझा wine scale 15. - Sy an als श्रह कर २३. स. १४ का चांक केंद्र क्रमाह क्षेत्र के नाम से वदारिक हो रहा है (जस में बेद संस्क्यी केला के प्रतिरंश्व पामुनिक की कविवायं भी प्रकारित होंगी । समी विकास dense un nie ma b mius से वर्षण से आवंट है का III से ३१ बनक रह नेद श**ा**त के प्रमान पर विकास कर के मेर प्रचार कार्य को संस गांव हैं।

नेषा नगर मध्य प्रदेश में वेढ श्रवार बार्व प्रदेशिक समा के वपदेशक

ने 📾 समाय में तो दिन प्रवाह किया तथा २०००६४ को कार्य कालकाञ्चय का स्थापादन विवा इस क्रक्सर कर फोटो का भी शक्स माः। प्रधान-का गम्बदस्य बोबी, **ब**न्द्री—शी भगवान किंड थी. पुरुषाध्यक्ष-शे R. H. समानी, श्री रिकार्शकर की राजों इस समाज के प्राप्त रूप है रात दिन अनुष्ठ बरिश्रम से काम कर रहे हैं दावी 🕏 पुरुषार्थ से समाज दिन प्रतिदिन शमित की फोर का शां है ।

षार्थसमाज संदवा (य.१.) में वेदप्रचार

भी पं॰ पायसेनको सार्व (स्वेस) क्यरेशक प्रादेशिक सभा ने इस समाक्ष में २३ से २६ जड़के बद्ध देन प्रयास विथा । जिसका जनता धर क्षत्रका श्रमात्र पता । श्रमके साथ a. भी ससराम जी बार्य के सकीत-अब भननों का प्रवाह बहुवा रहा। २४/- वेदप्रकारार्थं श्राप्त हुए ।

बनाव -भी शमचन्दवी विवादी। सेन्द्रश्च तथा वेस्ट्रेंस रेसचे के बावर

बी गिरपारीकाल को शमा, 🖦 देशामस्तर भी पाधीसाम क्यार. सन्त्री-भी रहेताबन्द शर्मा, कोबा-त्वध—मेट पत्ता को द्वार्थ. क्रमध्यभव-भी रखेश रसाद श्री ह्यक्स, विशेषक-मी क्रमंदराव वी CORRECT.

**श्रंकक् व वर्**वनिवि--रवृत्वय-खिद्द की, रामपन्द्र की रिवारी. श**बच**न्द्र की धार्य, र**पलप्रकार की** बार्गे, रासक्ष्या की पालीकास, की, क्या. संद्रानी, रावेन्द्र स्नाह जी

गुक्स, वसंस्थात भी गुरू । रामकल झार्व शंकी क्याव ऋर्थ समाज पलवंगरा बी do पन्द्रवेन जी भार्च दिलंबी देहस्ती का बेद प्रचार कार्य

(क) समाज की कोर वे ४०१/- की बैसी पूर्वी पाकिस्थान के तारवर्षियों के सिव सार्वदेशिक

स्था देशको सो री गर्छ । इस समास का वाचि कोरबन १३, १४, १४ नवंबर सन ६४ को

(य) प्रदेशिक की हारा १०१/ संस्कोरा से हका यह यही समाव के किय प्राप्त हुई । इस गलेश हास की बानशसी

के व्यक्ति व्यक्ष ही है। स्रोध इमार वंकी समाज . बार्यसमाज गदंगा विकासका

(बम्बई--१६) य सीम ६ कामला १६६४ को बन्बई में होने वाले सामंद्रेशिय লাস্থিবিনিথি মখা ও বাভিত क्रियेशन में समित्रतित होते के क्षिप काहर से काले बाबे श्रीत-विभिन्नों का शवर में सारकार्थ

सुवित किया अशा है कि ब्राये श्रदेशिक प्रविनिधि वपन्तमा रिक्सी

। स्थवं खेक्क बहुत रहेंगे । क्रीम ा मंद्रा केश्य क्षेत्र कार्य पर लावं सेषक छपरियत रहेंगे कीत विषय देने का वे अधिनिश्ची तथा कांश्रीकरों की शतके तहरने बाते स्थान पर सुविधा पूर्वेद

क्ष भी कार्यमसाम के क्षत्र थेयद वर्णाचन श्रेरी ८ तका इ चरमत को अव्यक्ति बार्वदराज है वह बाद पर मापित रहेगा को कि झाँवसियों वर्शनिविधारी की व्यक्तिया के जिल

वह बाले की व्यवस्था रहेंगे ।

वस्वई सेंटव स्था बी र टी० स्टेशनी

होतों दिन भौभीस घटे समिया क्वस्थ करेगा । प्रतिर्मिषी । ठक्रूरने के सिए सार्<u>य</u> का वीसव र्मा**बर (समास्त्रम) तथा** . उसके रिकार हो स्थापका की गई है।

६ प्रयत संबद्ध को जार्थ-बाह्र धा से दा सबे इंड बार्ड शांस कर है विद्यान क्रांसिकों के के प्रकारक की स्थानका की

वार्वित -- झोंकार राय मंत्री ष्टार्च महाज मांबा

में एक स्प्लाइ तक पेर श्वार की स्त्रोग प्रकाश की स्थानशब्द इस्स हमा। जिस का जनता घर बहर की व्यवसा प्रयास पदा । गई सरक्रीय यां भी श्रीकारण की क्यीर सी क्रकीरी बाबा भी ने अपने करें स कराचे जिल्हा कर शिवकों धर स्तर क्षणा sare car : 2a1 स्तवा हेद प्रकारार्थ समा की जेंद्र

वेद बकाश सन्त्रो क्षमाज ञ्चार्य<sup>°</sup> प्रादेशिक प्रतिनिधि

तव-सभा दिल्ली वार्योक्षय:—सन्तिर सर्शः वर्ष किन्द्री मान्वर को सम्प्रते । प्राप को

क करिक सामान्य प्रक्रिकेक विश्लेष ६ कथात र्वकार की ह यापात मा क्षेत्र कार्य सकता र्वान्दर (धभारक्की) योन्दर ग्रामे वर्ष दिल्ली में होना निल्यत स्वार है । कारसे व्यवसा के बाल्ड स्थला है, कर पार शर्चना है कि साम पर कराव ही प्रमारने की क्रम

विचारशीय विवय :--(१) का सावारण बैठक की

धारेषकी के सम्बद्ध (२) वारिक कार्य-दिश्या अस बाध-स्थव हा ल्हीरा

**(र)** महानामी वर्ष का बार सानिक क्ये दे (१) क्लेक ह्र विचार

किंकितिकारिको का बुवाव (६) असा विषय प्रधान औ को भाषा से

नियेद्द राजकमार संगी चार्यसमाज राम्यी तालाव

फिरोजपुर शहर "आर्थ समाश फिरोबप्र शहर या वह विशेष क्यांश्रेतेशन संबी संस्थाओं के शक्तकरों से तथ निषेत्र करता है कि वह अपनी-क्रपनी संस्थाकों में कार्यकाल के वदोक्तिकम्ब सर्हाप स्थानन्त् धरावधी कुल महर्षि विश्वासन्य की, लामी प्रवानन्त थी, महारसा इंसराय की क्षा पै॰ हेक्सम आदि महान परुषों के थिया बाधश्य टेमना हैं कारि साने वाडे सकार्वी तथा साथ काराकों के अध्य में क्रपने वर्षे

रत्यम हो। इन विश्वों के साथ सम्बन्धित महानुभावी के बीवन की चिर्त्यस्थीय होगामी का क्लोस मी कर विथा आहे। सद्बन्धित् द्यायेगीओ

कौर सदापरयों के अति अक्ष

फिलोक्टर सम्बद्ध

बहुर व प्रकार की क्लोक्सन जी मान प्राकृतिक प्रतिनिधि समा बनाव बातान्वर द्वारा धीर निकार में स. निकार शेष काक्यर से सनिव क्या कांधवरात वर्ताक्ष्य महात्मा ईसराव मनम निकट क्यहरी वाक्ष्यर बाहर से प्रकारित वर्ताकि-कार्य माहेशिक इतिविध सवा सेवाब काक्ष्यह



रेजीफारन नव ३०३४ [आर्यपादेशिक प्रतिनिधिसमा पंजाब जालन्धर का माप्ताहिक मुखपत्र] . Rogd. No. P. एक प्रति सा मञ्च २४ असे वैसे वर्शिक साथ ॥ क्यूबे

#### 17/9164 वेद सप्ताह विशेषांक

वय २४ अंग ३२-३३। ८ में देवद २०२४ र वयार ,... ह्वासरहास्त १४०- २३ क्यास्त १९६४ (तार कारेतिक) जातस्य र

# वेद सक्तयः

संश्रमन गमेमहि हम पेंद्र के समुखार धने। हमारा शिवन वेड के कनवल हो, इससा पथ बेंद्र पथ नथा हमारे कार्य वेद से अनमीदित हों। को एक मुने उस पर काय-रण करते गर्ते ।

गाः श्रतेन विराधिषि हम कभी भी बेट के प्रति-कुल न पर्ले। ६४२, मनम विस्तान नथा शीवन का साच-स्था बेद के किथरीत न हो। ता મી શુર્તે કરો મુમલ કે **દે**વે, કહ का विरोध न करे नका वक्ष से श्राशियन तक्रें

देवदत्तं बद्धा गायत यह वेद का हाम देव का भगवान का निया हका है ! उस प्रयोजवर की शाशी है। सब के क्षित्र क्य विशाका विश्व वर सीआ प्रसाय है । यस बेट का मान करो । वेद का गीत संगीत

माने रही। साम देव से





महर्षि दयानंद सरस्वती \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

ेंबर हरवर पहिला सर्व-विधारित, राजगृह कम स्व स्था, स्वादकारी, द्रशास व्यक्ति गरी गता है, बैसे जिन पत्तक से देख्यर के सट क्रम, साधाव के अनुप्रश कारन हो, वह ईम्बरक्षत अन्य वेदी और दिस में संस्टान प्रस्थाशादि प्रमास आहें के चीन पवित्रारम् के त्यवर व से विश्व कथन न ही उद हंहबोल्ड । बेमा हेम्बर क निजंग जान वेमा जिल धम्बद्ध से आदि पहित्र ज्ञास क्षेत्र प्रतिपाद न हो। यह हैस्त-शेक्ट । जेवा प्रश्लेखा हे क्षीर नेपा सरिएत्रम स्मा हें बेमा ही हेन्द्रण, माध्य कार्य कारण कीम ओर का चरित्रास्त्र जिस् में रोधे वर क्षक्रवराम प्रश्व राजा है क्ष्म के प्रस्कारिक प्रमाण विषयो से यशिष्ट राजानमा के व्यक्तात्र में विकास ने हो. इस प्रकार के बेट हैं।

सन्यापेष काश ने \*\*\*\*\* सम्पादक--- जिलोक मन्द्र गाः

\*\*\*\*\*\* पश्चिता--श्री संतोषराज जी

वैशे तो इस समस्त विश्व में धारेक राष्ट्र है परम्तु सारव वर्षे का प्रापना ही यक विशेष स्थान है ब्रह स्थाह धार्यस्य है परमा |समें का कपना की सहस्य **||** नदियाँ क्रबंस्वी है परना पीयपतीया गग की करनी हो माध्यता है, कोनियां अस्तिक है अल्ड अलुव्य बोर्नि ची महता अपनी ही है, मतुव्य यी धनेद हैं पत्रमा साधार की में फारत सपनी है. बाबार बानेक हैं परन्त संन्यासी कलय ही शोधा प्राप्त बरता है, संधा सी भी बहत हर परन्तु ऋषि दवासन्द की महला व्यक्तमही है इस्ते प्रकार धर्म सी व्यतेष है गरना सरपग्रनावन वेदिक धर्म ही समानता होई

बेह धरि पादित सर्व को लेदिक वर्षे ब्द्रा जाता है। वेष को मान्यता है बड़ी है जो सष्टि निवस के बान्य त है। वैदिह पर्म सी शब से प्रमुख विरोपता यह है कि वो इस सुटि में श्रेमालिक सत्य है नहीं इस का सत है। बेद के उपदेश ने सकी के सादि से प्राशियात का स्थ्याय किया है, साब भी करवाला करते की एनता है कौर मंदिया भी रामे सरवता पर आभारित है।

सदी रखता ।

वैदिक धर्म साथं मील यनं है. बह् समस्य विस्त के सनुष्य सात्र को सम्बोभित करता हुआ कहता ी:--भूग्यन्त विश्वे अवतस्य पुताः।' वेद का यह बाहात किसी विशेष देश, जाति, स्थान काशकारंग के सिए नहीं कड़ वो समल किय की क्रमनी सम्पत्ति है। विका की एक बाज सस्या क्रार्थ समाज को पर्न प्रापान वैदिक धर्म है, दूसरे सन्तों में वैविक क्षमें ही आयें समाज है क्रीर बार्व समाज ही वैदिक वसे है। इसी जिए इस के संस्थातक कार्य दशमन्द ने का देश दिशा सैदान्तिक वर्षा--

# वैदिक धर्म

++++++++++++++++++ 'बेड सब सत्य विकाशों का पुरतक है वेदका पढ़ना पढ़ाना वीर स्पना समाना सब बार्चे का परन धर्म है। आयंत्र प्राप्त बार में के फिए कायाकार है वेर है बारेमों हो अपने जीवन हैं

भारता करता। भर्मे शल्दा संबद्ध, स्ट. पम्य बादि सन्धानुसारी संक्षित धर्षे नहीं है पसं प्रपने न्यापक मर्थ को से कर पत्रवा है। संसार में जो २ पुरुष हैं बड़ी धर्म है छौर

NO RECORD REPORT OF THE PROPERTY OF THE PROPER वेदिक वर्ष क्वा है ? बमको जुलना सांसारिक बन्य अमी के साय विवेच-रापुर्ध को है बैदिक धर्म का महत्व सरमाखीं से सिद्ध करते हुए प्रसन्धी विशेषताओं पर भी सिद्धावसीकन किया 🖩 कार में बैरिक करें हो हो सरकारात पर बाराहर किया है। \_\_\_\_\_\_

Samuel and a section of the section

'वेदोदिवानो धर्म मुजन' प्राचीन झार्बी प्रत्योंको सम्प्रति चौर वर्वन झनसार वेट ईउ०रीय हान है। ईश्वरर फिट संसार की सब क्ष्मचं बादने चाप में पर्स है तन हो

इसासित करते के किए किसी प्रमाण की कामस्यकता नहीं। श्रेरवाचे श्रेम से झापने इत के वैसे सर्व को देखने के जिए किसी प्रकार की कारणपडता जाते होती । वेद भी इसी प्रकार निर्धान्त स्वतः प्रयास है जमें किसी प्रार्थ प्रशासको बारक्षक्या नहीं । वेद एक वसीटो है क्रम कर हो जरा सतरता है स्था बीर जो सोटा--वद सोटा।

ससर की भाषाओं और जान का ब्राप्ति स्रोत यह वेद हैं । प्राचीन श्रवियों के मधानुसार दी देह की सर्व प्राचीन ज्ञान माना दी जाता देशाय ही बोक्स अपन साहि राज्यास्य विद्वालों ने भो यह अत । संख्याओं का समायाम नेव में नित- अक्साओं का विद्या

से बड़ी स्थेकार किया है कि संसार के फलकावरों में बच से प्राचीत सन्य ऋमोर है। इस के पश्चात बिक्ती मानाएं, ज्ञाम यह विज्ञान त्रवक्षित 📂 दलका वस्त्राष्ट्र धाधार बेब ब्री हैं। देखिए खन्देद १०,७१,११। बहस्पते प्रथमं वाची अप्रं. वस्त्रैरतः नामधेयं दघाना ।

बदेवां खेळं वदरित्रमासीत जेशा तदेशां निहितं गृहावि:।। बर्गान-दे युरस्ते, बर्गात बद्धान झार से युक्त वेद कासी के धन सब का ब्याधार केइ है— स्वामी प्रभी । सृष्टि के कारश्य में

कारिम ऋषियों ने जो सर्वश्यम विभिन्न पराशों के आओं को भारत करते वाली. देले वाली चेत की वासियों को हैरिन किया प्रका-रित किया बढ़ वेट ज्ञान क्योंकि रत अविनों का शेष्ट्राय का क्यों हि इनका निष्यक्षय वा इससिए सारनी

> शि॰ विवासारिधि विवासान 'शास्त्री' यमुना स्वर)

इस समाज के चनश्रक कार्यकर्ती इदय और बढ़ि में रख दिया बड़ी क्रम्य बनुष्यों के क्षिए तकट हमा। दमी द्रवार नीविका विमानिता-रावित्यादेमहोपमहमन्त्रिशादि विज्ञान ज्ञान भी मूल कर से बेद में प्रकि वर्ताटव है, बस्तव: संसार के समस्त

शान का नरदार पेद है। जीवन के स्वाप्त प्राप्ते का प्रकर कीर

मान है। धाव्यवस्त्र है जन्मेक की लोक करने की। "लवं वेदे प्रतिन्छितम्" सम इस नेर में है। अब तक इस मेर में देती हों श्चनने जीवन का कायांक करने के जिए एक मात्र वेदिक प्रजे की रतवा में कार्य और सपने प्रदेश ऋषि, गुवि, महास्थाओं के प्रयान ध्यमे जीवन को क्रम्य क्षीर तकारी के किए बार्स बनाय । करी सन्-स्वति का यह कारोश सकत है क्रीर इसारी भारतीयका गीरव-शानिनी है :---

"राष्ट्रेश परावस्त्र. **स्ट**ासाइप्रक्रकतः । खंखं चरित्रं सिक्सन् प्रभिन्यां सर्वे मानवाः॥

मह छावनी और इन्द्रीर (M.P.) में वर्ष प्रचार

षार्थ शदेशिक सभा के वपटे-राक को पं॰ चम्द्रसेन जी सार्च हिवेदी पौते हो सास से सफ्त मारव में बेर प्रचार कर रहे हैं। प्रस्था बार्व समाजों में वैदिय शाह के हारा जागति पैता कर रहे हैं। प्रत्येक समाध उनके स्वादवानी का पर्य लाम रहा रही हैं। भीर चन द्वारा बेद ध्यार कार्च में समा की सहायता हे रही हैं। चार दिन सह सावनो में श्रमार होता रहा ११३/-देद प्रकार के ज़िए प्राप्त हुए। इस समाय के स० जीवन शास औ. जा+ सेकाराम जी. भी राज गुरू जी शर्मा, बीमजी कहत्वा देशो, बश्चिम

कार्य जुलाद रूप से पक्ष रहा है। इसी प्रकार इन्दौर में भी छन दिन वह प्रचार कार्न होता रहा। मेंड सोधराज जी शिक्षे, दा० सहस मान् जी इस समाव के शाबा है। दयानन्त शंत्र समाज में भो पंडित जी के भाषया होते रहे । इस समाज के ब्याबीय से इन्हीर समाज ने क्य

Bराोखा देवी. मंत्राखि द्रीपदी देवी

है जिन के पुरुषाओं से समाज का

हो के सगवग क्या को देव

# भखें को भोजन दो

#### \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* आधेसमाध के कर्ता भी आवी विदी देद प्रचार आवेसमाज का दरम।

क्यों है, दली दक व्हेश्व कावंसमाब का मुख्य है, शेष सारी बावें गीया 🖢--प्रश्तु झात्र कात वस्टी हो गई है। देश प्रचार फार मुखा कर रहा है और इसकी चोर फिसी की ह्या रहि बढ़ी जाती । मैं आजकत सीनगर में ह**ै।** आयंशवेशिक **र्वाकिविध सभा गार्बधर से** सदना किसी कि बेड प्रचार पहरू साजी 🖁 । 🔚 सार्थसमाज वजीर वाय श्रीसगर के सबोरय प्रधान भी साठ क्रमोसक्रास भी से तथा पुरुषार्थी **अ**नी भी पं<sub>ठ</sub> संख्रु की से शायंना की कि आर्यश्रमात्र वचीर बागके पास ६०-९२ हजार रुपना अमा है इसमें क्षे दो इक्षार देव प्रभार क लिए

डास थी ने बक्ते लिखा कि मैं वडां वेद क्या करं-मैंगे उत्तर दिया कि क्या वो हो ही जावनी परन्त् देह प्रकार के लिए कम से कम दो हन्दार रुपया सभा के पास पर्श बना पार्टिक कीर जानी शी ने वही १८ छता से इसे स्थीकार किया और सरप तो यह है कि अञ्चलत में वेद प्रचार के ऐसे प्रेभी सहातुनाव है ओ दो-दो साल स्वया ग्रामका से वेद प्रचारके लिए दे सकते है-वह असतसर को पवित्र नगरी है जहां के रहते वाले बादा गरुसविद्ध जी 1975 क्रम अस्त अन्य में के तर्बर <del>दे</del> के जैसे की माना डाजकर वह वा, बह भन देर प्रचार के जिप है। केल ताक्षिण, क्लार विका कि भेजेंगे यह मुक्कद घटना केले पटी वा

CKA 36006060606060606060606060606060 शार्यसमान के प्रसिद्ध तपस्त्री प्रमु के दरमनिश्वासी पुल्क मद्रारमः भानन्द् स्वामी जी भद्दारात ग्राज्यकल बीनगर हो जनक को अपना पपरेशास्य विला रहे हैं। 'बाव अगन' पर चाप की सहर क्रमा रहती है । इमारे नमनिवेदन की खीकार करके इस भिरोपोक के लिए बापना विशेष अस्त मरा सन्देश दिवा है-· WWW. WINDOWS OF THE PARTY WAS A SECOND

बो अवदय परन्तु कत्सव के प्रमान् । हैंने वहां कि मूल तो जब सता रही के कीर आंथ रोटी तीन सप्ताह समान् मेर्जेंगे। मुले की चनस्थ क्या होती १ तत्र वही छूपा करने बह सान गए और वन्होंने दो हवार no समा को भिजना दिया। इसी क्रकार विकास ही ब्रायेसमाजी के बास धन असा वड़ा होगर, यह **बै**कों में पहा-पहा रथा वेद संबों की व्यस्माकर सकेगा? चित्र समाचों के पास धन जेगा है वह रूपया शीझ नेद प्रचार . निषिके लिए मेज दें वर्षि समा केर प्रचार के कार्य की जसाह से कारी बदा की--वक्तर बोदगढ

६था भी सब लीविय—मै तब बार्व प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा प्रभावनिध दवोविसान साईंग्र का प्रवान था सभा की स्वार्ग बक्की प्रकार क विचार बढ़ा वभी सभा ने निश्चय क्षिया 🖟 जवली पर वेश प्रचार वे उसी दिन मैं एक काल कावा भीर तिर एक काल स्पदा तमा किया धारके घरेश कर हुँगा-शाये, में कार्यसमाज मन्दिर क्रमार बेरी प्रसन्धा का स्रोध समय प्रश (तपोमुर्ति कुम्य महात्या आनन्त और १३ ही दिनों में सारे समाजो स्थामा जो महाराज) टेक्सर्वनर-भारियों ने धन की क्सी लाड़ीर में बुद्ध बदास महा से वर्ष ग्रुष्ट कर दी कीर वर वैदाविवास्त्रस्ताया किया वाचा गुरुश्त्व सिंह जी ने नाय एक साल बमा दैसे होगा तो त्रगुमन सिंह ट्रस्ट की फोर से के बन्स्मल भी वावा गुरुपुद्धसिंह वी श्चार के क्रिने एक ला**ल** करवा **मन्द**क्त से धपनी मोटर पर ह्रदान हर दिया। एक के स्थान में रवारे कीर हुने सोक्ते 📠 समाज शे ताल रूपा वेह प्रधार फरद

सन्दिर में का आईंचे और तुन्हें को प्राप्त हो गया। बरि इस दानी

#### मानस-यह

|आचार्य भी मित्रसेन भी एम० ए० (उ०) ज्वासापुर बरा प्राप्त ब्रवस्ति प्रय होता हम अन्तर के माने से सन मोद प्रमोद सनाता किरे अस्त-रस के पा जाने से प्रमुप्तेर पटा पिरती तम में जल गरत-गरंड बरसर जारी र्थवत चरका बसकी स्था में स्थानंगुर बग है 🥅 शांती। पत्र-पुरम् पावन प्रश्न पाकर तह पूजी नहीं समाते हैं, कालड. फड़ोर, विक भी डांबर, तथ सस्य मस्य दिखाते हैं, सथर सनोहर शय बेका में हम एवं मानस-यह वरें। त्याहा का अंजुल साम, गाम धूरि सम्बों का सब ध्यान धरें। हर्व हमारा वह अब्दे और सत्व शुद्ध समिश्यायें हों. स्थन कार्यन सरापित करदें पूरों सभी इपकार्य हों. वित स्वी वत साथ साथ हो शाकल्य विचारों का डोबर. फिर लाहा संक्षा सक्यं बनेगी सहस नरा की पायन कर। मानस यह बह ब्रासिस विश्व को खर्ग समान कार्याता चही बड़ इस थरा थाम से बड़ात बनाब मिटावेगा, विज्ञान क्या को उप्तरि देख्य शास्त्रि आप पीतावेगा। से पार डवारे पाषन पत्थ बनायेवा . \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

हदास-सा देखकर कहने सगे- यह बाबा परिवार में मताहा न हो ब्राज ब्रापटे स्वभाव के विरुद्ध जाता तो बेद प्रचार भूला व रहता व्यथ भी क्षकुतसर में पेरो दानियों बादको बहास क्यों देख रहा ह'-प्रज मध्यक की यह प्रसम्बद्ध क्यों की रूमी नहीं, वो वेद प्रचार कात न्दं ?" रैंने रुद्धा दात्राबी दार को मर सकते हैं परमान्ता उसके मन में प्रेरणा अस्पन्न करें ताकि विकास्त्रास में अब सर्व है, मेरे प्रवट वेट बचार के शिव यक सास भावेसमाज्ञ का यह गरुव उन्नेडब रुगए बद्रा करने का बोस्स काल वेद शचार पूरा करने के लिए दिया गया है—बह् सुशस्य मामा सभा पूरे उत्साह से कार्य करे और ती ने कहा, यह एक सासारी समाज की दिविशता दुर हो। इत्रदश्य जमा हो जारता और . जिस दिन वह एक्सम जमा होगा-

## मादेशिक सभा की बेट श्चारार्थ भन जो इस सपाइ प्राप्त हुआ

बी थे. चन्द्रसैन ती हारा १४३ .. राजपाल मंडली शारा १४०/ विज्ञोक्चन्द्र वी शास्त्रो इतर

XXX/-\$2007

Mar-थेद विरक्षा की बारा (प्रवाद सह सम्पादकीय-

# श्रार्य जगत

वर्ष २४] रविवार २०२१, २२ अवस्त १९६४ | बंक ३३

## राखी और जनमाष्ट्रमी

हारील तेईस प्रमान से ब्रेस्टर वीस धारान नह को देवह सरवाह तीन वर्वो का समन्वव है । वह तीन पवित्र धाराध्यों का संसम्र है. विदेशों का तीर्थ है। प्राप्तनित नीशे हो जल का दीर्थ है किन्तु यह तीय काश्यारिवक है। यहा वसना माराहरों के समास बस वर्ष में सी तीत पारापरी का असावेज है। देवसप्ताह या भावयति उपात्रमं को भारा में रास्त्री तथा अन्याहरी के सन्दर प्रवाह भी शामिल हो गय हैं। रथा कथन से समस्य होका करमाष्ट्रमी एक वह पर्वे पालता रहता है । बिन्न २ स्थानों पर जनसङ्ख् की क्षीर से कावते व द्वंग से सनाया जाता है। इन वर्षी से जीवन में बड़ी शिवा भिजती है। सार्थ-। गाजों में प्रतिक्षं श्रमकाम से सम्बन्ध होता है। वेद आयेजाति के जीवन के लिए प्राया का काम काले हैं। बेट परमध्य है, परस प्रकारत है। वेद प्रवार ही सार्थ-समाज बा यह से वत्त्व कार्य है। इसी के लिए अपार्वसमात की स्थापना हुई । इस के वेयवा महर्षि ददानन्द ने अपना सारा बीवन वैद प्रसार के लिए मेंट कर दिया था । तसी बेदप्रचार की पवित्र परम्पत की लेकर समाध वापने साम में अगा क्ष्मा है। सारी जनदा को वही सन्वेश देवा है।

शसी कथन कर पर्व आई पहिन के सच्चे प्यार की बादव क्यों का परिचय देश है। यह भी बहा जासका है कि मझल इस श्चासत को लेकर क्यानी बनता के नाहर पूर्वें, परिशार होकें, भारी जो धन किहा जावा है सुप्तर व

है कि अपने ओपन में वेदसर्थ प्रकार को सदा सामने रखना । यह रखा-सत्र इसी क्षित्र सांगा जावा के है गाहि वेद के वरमधर्म के रखक के लिए अपना सर्वश्त भी समर्थित कर देना । वेह के पठन पाठन में पुरार सङ्बोग हैना। वेद के सिद इर वकार का शरहरी करते सम्रय द्यागे रहना : उस दिन्य महारका

क्याकाल मादिव भो दसी बात

की कोर संकेन बरता है कि अध

महापुरुष के बीवनस्तरम से ब्लिकों

हाथों पर बांच्या है, प्रतिक्रा सरकार

का प्रकास निकलता है। देव होस की व्योति सर्व राजनोति की सुराध्य बिदलती है। यस से भी बशा कर क्षा के किस्ता है। इस वका से तीनी पत्रे हमारे श्रीवन में बहुत क्रह देते हैं । चेवना के प्रतीक हैं। सार्वसमाज से अस पर विशेष **४हना है।** क्वोंकि श्रम से आरी दावित्य सम्बास्य है । यस के कार्यो पर विश्वनिर्माण का बक्षा महर है। समाओं में इन पायेत वर्गे को भवाते 🏢 संकाम वर्रे । धारने कार्यों को पहलाल करें, बोजनाकों की देल शाल करें। सोचें कि केंद्र क्ष्यार के ज़िए वे क्या कर रहे हैं। व्ययने क्षिप को बहुत कुछ करते हैं. बहुद बढ़ा काम भी काते हैं. बिज्ज वेद के लिए कितना करते, दितना देते तथा कितना ज्वान देते हैं 1 श्लेक वही साहत और बहुता है कि देव का काम करने के जिया. वेद प्रकार के सिक इस्टरे परिवासी

के व्यक्ति निकते, बाहर निकते,

रु∧ग करें. दक्कियाओं देवें । **हार्वे अ**क्ष न बनना पढ़े । तो केसे काम पश्चेया धार्यसमाज विद्यात बोस्य तथा परित्र बाग्ने बेड अचार को से स्वार्ता हो रहा है। संन्यासी विश्ते हैं नहीं तो वर्ड तो गड़िक्यों से भी बदे गहरची यन ६६ धनार्थन है सरो रहते हैं। दिशिक्त व्यक्ति मी तो बेट प्रचार के साम के जिल नहीं निक्तते । कास कंसे वनेगा । **रे**दश्यार का कोच साली है पर विनेवा के वैशे और हर हैं। चलव पट्य बन रहे हैं । इस एवं वर सथा के बेट बयार के क्षोप की आने तदा समय देने का का जेवे

#### प्रव में मोचें

-- त्रिसोक पन्द

इस वेद मनाम् के स्थिप क्रिया बनिशान देते हैं ? वेद हवारे सिय परस प्रशास का परस सही का त्यान रहते हैं। सामीय केत अस्तों ने इस के प्रसार के क्षिप प्रस धन के साथ २ करना जीवन सर्वत्र भी भेंट कर विचा। इस दश के दिव्य देवता दशासन्द में आपना भरा दीवन, जाक्त दान कर क द्मवनो अस्मी तह भी सञ्चर्णत*द्धा* दी । इस वेट् के स्वाध्यास, पठ न पाठन के लिए किवना समय देने हैं. किराने देने देने तथा दिवार सहयोग देते हैं ? इस का उक्त क्रपने दिस से पूर्वे । इमारे क्रितने परिवार ऐसे हैं बड़ा वेद की प्राटक हैं ? यदि है वो दन को पढ़ने करे किवने सोग हैं ! इसारा धम्य शास बीचन परिवार का काम चलता है। इस सह गाई में भी पवा शाबी चल दी रही है। सालगान परिचार तेना देवा, विवाह कार्य छश मनोरंजन के सारे कार्य ही स्ती हकार से भाराध गति से उक्षत्रे हैं। वरों में विश्वती के सुन्दर वंतों. कीवती रेडियो सेट तथा साम क्षमा की विपुत्त सामारी के शिए

मकान भी निर्मित किये वाते हैं। चात्र के हिन्द समाज में आहे ठाट बाट का त्रम यथा पूर्व आसी है। दिन्त लेश बह है कि बेह के सिंद तथा इस के प्रवार के स्थित क्षत्र नहीं है। यन व्यक्ति हो जात है। सरीर को खुत्र भोजन (ससाबा वाता है परकारमा सिए के इन्हें नहीं है। एचों को दिल साला कर पानी दिवा जा शहर है पर मूल का स्थान ही नहीं। काम कंसे क्लेबा। गाझी पटरी से कार नई है। यह मायको का एवं इसी ज़िए साता है कि सारा समाज इस पर विचार करे। अपने जीवन में संदाय हरे, होशा भीर का सामस्या **करे। ऋषि** द्वानन्द के दुश में मारतीशों के पास सब कदा था पर बेद सबेबा भूत गर थे। देई को अनुस्ता हेने के लिए जीवन मेंट किया । कार्य समाय को स्थापना की। वेद शकार स्प्रपविश्वकानं असे सींगाः शास सिनेसा के जिए तो जाकों के अवन नगर २ में हैं पर वेद प्रवार के जिर धांसें बन्द हैं। क्या बनेगा 1 सब कुछ, है कमी किसी बात की स्वे नदी है पर सल का बाद स्थाप्त होता जा रहा है। इस एवं पर बोब के लाम्याय का इस्त क्षेत्रें। योज

ें 🖈 विस की भएनी बुद्धि नहीं सरं का शास्त्र क्या कर सकते हैं। नेत्र हीन को शीसा क्या अपन पर चापेगा 🕈 🖈 हमें आंध्य वतनी साथायका

-विजोक पन

त्रकार में समय देवें तथा सका

रूपी केन्द्र को टड बनाने के शिव

इस पर्य पर बच्चम २ प्रस्तकें उसरी

वह परंचारों। समा का वेश एकार

कोष भरने में इसर न रखें। इस

मन में सोवें कि दें द के किए क्या

ਵਜਰੇ ਵੈਂ ।

मडी है। नैविक परिष की धानरसन्त्र है।

बेह किया की ब्रागांव से स्वा क्रोमा ? येखा अस्य प्रक्षा जाता है । किस समाज वेड विका इस मारत a वें के जावद थी. दस समय **व**व बारत कुछ शिलर पर विशासकान इता। बार समय की उन्नॉव के विषय में मन सहारात ने फा है-**१**श्वर श प्रसुक्तन संकारतद्ववन्त्रन्तः। n' 🖩 परिश्र' शिक्षेत्रन प्रथिव्यां

कर्ने बानकः ॥

इस भारतवर्षे में सर्पन्न हर श्रक्षकन्मः विहास से प्रधिकी पर के सम मानव अपने २ व्यवहार कैसे करें इस विषय की ज़िला डाया करें। बह यन बहाराज का स्थल 📰 इतिशास की साम्री दे रहा है। कि क्स समय मारतवर्ष सद ग्राना वेशों सोनों से व्यवसर या जॉर सम क्रम्य देशों के वस्ता ग्रहां काते में कीर उत्तम चारित्रत के सम्बन्ध की रुपम शिवा यहां प्राप्त करते बे। कात भारतवर्ष के वहता क्रान्य देशों में जाते हैं और वड़ां शिवा पाते हैं। यह रहती बाद हो गई है । ऐसा क्यों हका इस था क्यान करना चान सम्बोदों दा कर्तव्य है।

मारतक्षे अस समय बेट विका में उत्तम श्वीया था कीर बाद कर बैद विया हो मुला हुका है। देद विधा के बारे में मन महाराज Faces #\_

सेनापत्य व रास्त च इष्ट नेतःशमेव पा **बर्र लोका**विकास च

बेबसास्त्र' विवर्जति ॥

बेनायरि का कार्य, राज्य-प्रसाने का न्याय।पीरा का गुन्द्रगार को बोस्व बरत हेने का कार्य क्वीर सक कोती के क्याधिपत्य के कार्य कर्मात शोटे मोटे रासन स्थापना है अर्ज डेरहरी शास कानने वाका क्लब. ्र रीवि से दर शदता है।

इस इस्रोक में मतुबद्धाराज ने राज्य शास्त्र के सभी कार्य वेद-

## वेद की जाग्रति से क्या होगा?

शस्य केरे नज

दल्द बेचलाहे हं स सहत हेवला

के काओं के बाध्यक्षेत्र की मीता

शय हो सबता है।

ने •वेदमति श्री पं •सातवनेकर भी स्वाध्यायमंडन पारडी [सुरत] MACHINE MORNEY SERVICE NO SERVICE NA SERVICE रूपी शास्त्र को यथायत जानने विकास होता है शता दर सदता है ऐसा कहा है । 🖟 विस समय दरत रक्षोड़ किसा इस मतु के विवास की व्यक्ति विशास समय वेद के ज्ञान से किवनी है विकिय---में, पर्वात के कार्य, शहर शहर के

सेनापत्यम्— हेनापति की को देश स्वायधीश के कार्य वेद सेना न्यवस्था, सेना संचातन सेना के बनी कर सकते हैं। साथ भी में साथ रात्र पर इससा धरना. हम वे न करें के हमें झात हो रञ्जरोनाने इमला दिवा हो २८ सदता कि सब दावे क्रकृत राज़ का पराभव करना बर्गाट सब मेल हुई कर राज आहर की सेनार्पात के कार्य वेशकारी गानत न्धावदात । । ह साई वेट हा आनने बाबा धर सकता है देश में द्यानी करने ं सर्थ होता. सर्व मश्त देवना के सुक्तों में सेना की वेट का क्रम्परे र डीक रॉल से हो **उत्तम व्यवस्था बनाने वाले सुक**ों सकेगा ।

में सेना की स्वयस्था का उदय बर्धन है।

राज्यम्--राध्यशासन दरने के सब कार्य, होटे-होटे गाल. शासन के कार्य क्रायांत प्रायतना से शेकर हुस्य मन्त्री टह के सब हार्थ वेक्सास्त्र उत्तमशीति से जानने

वासा कर सकता है। दण्ड नेत्रीत्वम्--साया-शीश के ऋपाधी की शहर केने के सब कार्य वेदशासको जानने वाका कर महता है।

होनों क्योर एक-एक सर्वसोकः विपत्यम्—राक्की प्रामाधिकारियों से सेवर राष्ट्र वे मरूरमन्त्री तद जितने भी शासता-मिकारी है दन सब के दायें। वेदशास्त्रवित अर्हति--वेद्यापी हारत कानने बाजा उत्तम रीति से

बर बस्ता है। देह के तत्त्व ज्ञान की यह योग्यक्ष है । स्नाज इस देखते हैं कि देह वास्त्रे वाला वे गार्थ क्याबोग्य रीति से बर नहीं सक्ता। इसका का कारण यह है कि बेद की मुतोस्य पढ़ाई का करवे थात्र वहीं मो नहीं हो रहा है। III कारण पेट में मनेक विदार्य हैं. अवको कोई जान नहीं सकता।

कार का भी कारेश रेते हैं। इन्द्र के मन्त्रों में यद्यविश्वक बर्सन फिस तरह बाते हैं देखिये-मनुस्मृति में दब्त इक्षोक से वर्ष ग्ररेभिरल्डिभिरिन्द्र स्वया व्या

वयम । साक्ष्मान प्रवन्धतः । 90 1-D-9

हे इन्ह ! स्थवा यजनवर्य-तेरे साय रह कर इस शरेशिः व्यक्तशिः-शूरवीरों के साथ रह कर प्रतच्छा सासक्षाय-सेश से इय पर इसका बरने वाते राष्ट्र को पराविश करें । शरकीरों की क्षेत्रा के शास रह कर इस सेना से इस्ला दरने थाले शब का परामव करें। शब के पराभव करने वा जबदेश है। शब्द धेना के साथ इसका परशा है। सह तार प्राप्त इकार कारा भी कैसी डी सेना चाडिए विस से छत्र पराभव हो सके।

पुरक्षित्र युंबा कविर-किसी जा समाजन । धारो विश्वास इसेसी

वर्त क्या प्रश्न्यक्ष ॥ ₩0 १-?१-ы

पुरां भिष्टु:--शत्र, की अधरियों संचालन, युद्ध चादि द्या श्राम 🗗 को वोवने वासा धर्मितीयाः-ध्यरिसित शिक्ष शता युपा कवि:---मस्त देवता--<sub>सरस्रो</sub> का लक्ष्मा आपनी सब कर्नों का काले नाम सपो है स्योकि प्रायेक पांका कार्या क्वीनामधारी सहत वर्गीतित वें जरत शात-सन्त रक्षते वे । यह इन्ड है । बड़ां पुरांशिन्द्र-समर्थे सेटा की रचना का हान है। प्रत्येक को वोक्रमे बाला बीर वर्षित है। देखित कें बात-देसी धीवतवाँ करती अंड के जारों की तोक्स क्वीर की सात पश्चिकों में ध्राप्तक क्रपना दशका देशनी यह आसानी होते थे । तथा शरोक पॉक्तके से होते कासा कार्य नहीं है। वह ರಾವ स्क्रमी बर्लन देखिये। शह के श्चक बोका था कि उस तगर रोडने हैं तो व्यन्ते वैदारी की निर्दाल सेना में जर्दाकी गई हैती दिस्ती दाती चादिए, 🞹 ध है वस बाद से शह का इसला हो क्रियार श्रीक्रिकः शय का सेन्य तो उससे बपदी पॉन्ड का संरक्ता क्तिना है, जगर संरचय की देवारी **६रे**--श्रषेड ऑफ की दो बाजर राह ने की है का नहीं। राह के होती हैं और प्रत्येक बाज में एक-वास गोला कारूव तथा अन्य एक पाइबेरकुक होता का । सेना शतात्व केसे हैं। शतु के सैनिव थी ऐसी तत्तम स्वयस्था केंद्र के किस प्रकार की शहाई करते हैं. : सन्तों के हारा बनाई वर्ष है। अधी राइ का स्थान कैशा दै-इत्यादि देशी तैवार सेना होशी सही शह बातों का विचार करके सपनी किस तरह आक्षमया कर सहता है ? तैयारी करनी चाहिए छएनी वैदारी सारतों के राज बाज सैन्स अवस्था शब से अपड़ी रही तभी अपने

विजय की सम्भावता हो सकती है (बीच वस ११ पर)

कल्पमा पराजय ।

बार्स समाव की मन्य विमृति सी र्यः गंगाशसाय को उपाध्याय दल. ए. सचमुन ही समात के बीधव के जिए महायन हैं। धनेष भाषाओं के प्रशंह पश्चित हैं। साहित्व निर्माण में वदा भारी कार्य किया व कर रहे हैं। शिक्षणे में बमाज प्राप्त है। जाबके साहित्य से सेंब्रों नही हजारों कुरु धार्य क्षमाज में काये। यह २ पुलक **प**दो कीमतो निधि है । इस कवस्मा में भी निरम्बर किमते हैं। बसु

. सदा खस्य रखें---सं०

प्रजन-नेव नपा हैं ! रक्त-वेद बार बस्यन प्राचीन धर्से प्रयों के नाम हैं। पहला ऋग्वेद, इसरा कजर्बेर, वीसरा सामवेद भीर वीचा करववेवेद । इन से परान्त कोई कान्य धर्म शास्त्र नहीं है। तो ग्रन्य अर्थ प्रत्य बने हैं वे सब वेटों से पोक्षे हैं।

प्राप- वेदों को किसने बनावा है ?

ont-वेडों को किसी मनस्य ने नहीं बनाया ! स्ट्रंट के ब्राइन्स में तक ईश्वर सुद्धि बनावा है तो मनुष्य मात्र की भक्षाई के लिए प्रापियों के इसवों में येवों का प्रकार ध्रता है। सृष्टि के कारम्म में पार ऋषि हुण । एक का नाम व्यक्ति मा। उस ऋषि के इदय में असबेत का प्रकाश दुवा। दूसरे ऋषि का नाम बायु था, उसके हृश्य में वज्-वेंद् का प्रकाश हुवा । श्रीसरे ऋषि का नाम बादित्य था, उसके हुन्य में सामवेद का प्रकाश हुआ। चीथे ऋषि का नाम समिशा या, वसंसे **हर्**य में क्रयर्थ नेट् का बकारा हुआ इन पारी श्रमियों ने परस्वर सह-बीम से ससार के अन्य मनव्यों में इन वेदों का प्रश्र किया । फिर शांचि होते यस जिन्होंने चेदमन्त्रों

को ठबास्वार्थ की क्षीर इसरे ग्रन्थ

क्लिं। इत सबको वैदिक शास्त्र

करते हैं।

## वेद क्या हैं ?

थ्वी पं॰ गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम॰ ए॰ प्रयान। \*\*\*\*\*\*\*\* श्चन—इसके ज़िल् प्रमाण सन्द है। तोनों दे<del>तों में एक</del> की

रीजिए १ क्लर-देखिए-वज्. म. ३१ मस्य व

समान् व्यान् प्रवेष्ट्र श्वः सामानि व्यक्तिरे । बनांश्रि बक्रिरे तस्त्राद पक्त-स्माद शायत है।

दम सह के पत्रनीय ध्रमसमा से वाबेद, सामबेद, क्षूब्द कार्याद श्चर्यवेद श्रीर वर्जुरेंद् उत्पन्न हुए। धान-बार देश बातग-मारा क्यों है ! धमप्रन्थ तो एक होना

चाद्रिष् शा । **एक्ट-मूख देव तो एक ही** है। बहु चार शासाय है, वेसे

वस तो एक हो होता है परन्तु उस की शास्त्रार्थ, पसं, पूज भीर फन क्षतरा-स्रता होते हैं। उन सर ने पुच का हो छ। काम करता है । इसी प्रकार मुख बेद तो ऋग्वेद हो है। शेष वेद उसी का रूपान्तर है।

वर्ष सोसांशा में सहर्षि बेमिनि ने सिका है-गीतिय सामास्या- पर्वः

मी. २-१-३६ ब्रव्यंत जुल्बेर के सन्त्र सब धान विद्या के निवसी के चनुसार शाय जाते हैं तो तकको 'साम' बढ़ते हैं। केवल मध्यों को साम नहीं कारते । विषयानुसार नार हर सन्त्र 'हास हहलाते हैं । क्रारिता सर्वापिनेश्वरचेरके मन्त्रीको गान किया के बातमार भवर कास क्यांव से डोड वर विया । वही सायक्षेत्र इदातावा । जीते सामक्षेत् का पहुंचा मन्त्र है-चन्त्र आवर्षि बीवने तृबानो इध्य-

शास्त्रो । निक्रोशा सारित वर्किय । साम० ५० १-६-१ बहु मुखाः ऋषेत् कें हरवें बंदत के छोक्त्वें सुरू का दूसवा

राज्य है एक ही ऋषि कार्यान मरहाश | बाईरक्त, एक ही देवता 'क्रस्ति,' एक ही हत्य गायत्री। बदाय बनदाच ब्रीर खरित खर भी एड ही हैं। इस्त्रीत् जो अहस्देश में अनुराच है वह सामवेद में सी बनुदास है। वो खावेद वे स्वरित दैवह सत्तव वे भी स्वरित हैं। रंबब जेसन रोसी में मेर है। ऋमेद में त्वर बादी. और किसी तकीरों डारा वहावे सबे हैं। साम-वेट में १,२,३ बादि औक दिये है। सत्त्र एक ही है। यस्यु साम-

देद में गाने का इह असम है। <sub>प्रके</sub> अस है रहन्तर श्रम, दृश् क्षाम, वेक्य साथ, वेतात्र साम, शक्टर साम, रंकसाम—देखो व**प्रवेद काव्याव १० अस्त्र १०-१**४ इब सामगाओं के इस्सम २ वास भी है। जैसे बासदेग्य रागः

amafma मान—देखो बर्जुर्वे। 15-8 बाबे की रोज़ी का नाम शाम है। जिस ऋम्बेद को ऋबा पर बह

साबगान किया जाता है वह श्रना वस साम की 'दोनि' कड्कारी है। इस सिव वह नहीं समस्ता कहिए कि ऋगोद कता दे बीर साम ब्रावत । को क्षोग केवस पार्यर को पटते से गाते नहीं से रे ऋग्वेदीय श्वकातं ये । को याना जानते थे ने सामचेरीय व्हासाने वे । इसी **9817 जन्देर के ही मन्त्रीके बाधार** पर वास ऋषि ने यञ्च, किया धीरात तथा स्थलाम के कान्य करवी स्त्र क्यार किया संस्था साम वजवें हमा। विश्वा स्ववि ले अन्देद के काधारसक कक सन्तों

या फिला**र से वर्ज**न किया । क्य**र्ज** 

चिकित्या, क्रिंप, राष्ट्र, विकाह

किया गया है। वह अववेवेद हो यका । ये चारों ऋषि समकास्त्रीत वे कर्यात् छष्टि के बरारम्थ में हव । इसीक्षिय पारों वेशों में कारां का नास बाता है। देखो---ञ्चरमाध्यामभिक्षिती भाषी।

W. 20-53-22 ऋष् और सामके समान दो गामें। विश्वेदेवा बस्तु कन् ते बजुर्गुः।

**₹.** ₹0 ₹₹-₽ सब देव पंछि से तेरे कर का गान करते हैं।

कानिकारी कार्यक्ता विश्वविश्वासि काव्या । ब. १०-२१-४ व्यथर्व से अवज्ञहर्द विका ने

समस्त काम्बोक्त झान प्राप्त किया। वहां ऋग्वेदमें साम, वज और भवर्षे का वर्शन है अन वज्येद देखिये...

क्टरशामयोः शिक्ये स्थः । वजः ४-४ बर्बोर सम हो शिल है। द्यवर्षम्यो सक्तोदान्-यञ् २०-१४ कव व्यवदेवेद देशिए--

स्य प्रश्वः प्रवस्थाः प्रश्नः साम क्वमंदी । पकर्षिकेरियसार्पितः १६३म्बं सं **स**.हि क्वसः

स्विदेव सः । व्यवर्ष १०-७-१४ अर्वात्सम् से पहले सृष्टि से क्षत्रम् 📰 ऋषियों ने ऋष्, सञ्जू

सास का झान प्राप्त किया। सामवेद में हो शाव: बहुनेव के ही ऋषाई हैं।

इस प्रकार ऋग्येद, सामवेद, वजुर्वेद स्वीर अवर्थेद समझासीन हैं क्रीर एक ही वेद क्षी चार शासाएं हैं। इन को करफार की साथा सें वेदलको सभवा बेर् चतुहर बहुा वाक है। वही कारख है, कि क्रिक्र-भिन्न प्रकरकों में बही सन्त्र शार-बार चारों देहों में मिक्सते हैं। इस को पुनर्राष्ठ होष न सह कर कहा-बार बक्ते हैं ।

± संसार को बट्ट ही **स**ब्दर्श क्या वह है मी मानव से सहयोग कारि क्यों का कितार से क्योंन के किए वर्षी करे।

## Scholars' opinions on the Vedas

#### (Shri, L. Devi Chand ji M. A. President হ্যানেশ্ নাল্যান নিয়াল ট্রানিয়ান্ত্র) সমামের সমামান

The persian Schulzz Scharge switers in his book philosophy of meaner rimsion and companitive study of Religious' The Verhi is a back of Bacwiedge and Windom Comprising the book of matters, the book of religion, the book of prayers. the book of Merals and most. The word Verka means with, widows, harmfedge and truly the Verka in confinced vit; without not lance-indept and truly the Verka in confinced vit; without not lance-indept.

Standard the Volta, who do not know the modeful descretarisk thatter the Volta Interfacing the pipelinal as well as the spiritual by manua of the self same words, are spit to the maint by the third looks that the Volta Books spon fire, and, the draws, the sam and the solar against loose, by physicians are objected existing a boretist beings, to whom the Volta Etakin, propose of entires to Devicte beings, to whom the Volta Etakin, propose to enterpts, bankly, words. In all the control, bankly, would, be sufficient for the solar beautiful proof to depth and the control of the control of

Jain Acharya immediende wates thus in has been 'Shaovadey' clib. 'The Rig Yofa siene ze eternal and the Word of God in the beginning. Various inguages have been derived from it. The meanings of God is one and the micro for the appaires of all lacurages.

#### Dr. RUSSEL WALLACE

Dr. Alfred Russel wallace writes in Social Earnestment

and Moral progress.

'In the earliest records which have come down to us from
the part, we find ample indications that accepted standard of
morality and the conduct prophing from these wore in no decree-

The wonderful collection of hyenge known as the Vedas in a vest portion of religious teachings some and latter...

Inferior to these which prevail today.

#### Re. MORRIS PHILLIP

Rev. Morris phillip writes in his book 'The Teachings of the

( 'After the intest researches into the history and chemology of book of old Testament we may safely call the Rig Veda so the

## पूज्य महात्मा त्रानन्द स्वामी जी को त्रार्यसमाज वज़ीरबाग श्रीनगर की श्रोर से

सभा वेद श्रचार में २०००) हू. मेंट

oldest back, not only of the Azyan humanity, but of the whole world..."

We are Justified' therefore ill cancluding that the higher and purer conceptions of the Vedec Aryans were the results of a primitive Drvine Revelation.

#### PROFESSOR HEEREN

In his 'Historical Researches' writter. They (the Vedea) are we have done the object works compress in assistint. The Vedea stand alone in their splendour, standing as beacon of Devine Liebt for the answerd march of humanuty.

#### FRENCH SCHOLAR

#### Mone Dees Delhos Savs-

The Rig Veda is the most sublame conception of the great high ways of humanity, Mr. JACCOLIAT

#### 10. 10.000

"Automishing fact. The Hindu Revolution (Voda) is of all wholems the only one whose bless are un perfect harmony with Modern Science, as it proclaums the allow and gradual formation of the world.

#### iMrs. WHEELER

The American lady Mes. Wheeler Willax wreter-

We have all heard and read about the ancient religion of finitis. It is the land of the great Veolus, the most creastable works contabilities not only religious libers for a perfect life, but also facts which ill the science has since proved true. Electricity, Radiom, Airships, all seem to be leasest to the sonts who found the Veolus.

(Fram Sama Veda Bhashya)

च्हरपेर, बतबेंद, सामनेद तथा श्चर्यवेद-इन पारी वेदी में से अपनेदेव अन्यतम तथा विकिट है। ऋग्वेद कादि दीनों वेद तो **ब्रा**म्ब्स्स, (पार**लेडिक**) तया शाध्वारमध एस के देने वाते हैं परना ध्रयवंधेद ऐडिक सता का देने शसा है। अधर्ववेद का महत्व इस बात में है 🖟 वह सोब-निय

विश्वासों, सल्बाबीन प्रश्वसित प्रथाओं के ज्ञान पान्त करने का मुल्यवान स्रोत है। आदि दा विज्ञान धर्मका इतिहास क्लाहि के कथ्य-वन के सिये वह नेत्र ऋत्वजिक सङ्द्रपूर्व है। जीवन को मुसबद, भारापूर्व तथा दुःस रहित बनाने के लिये जिन २ सामनी नया स्थासी भी कानश्य ध्या होती है, उनकी सिद्धि के सिवे नाना प्रकार के विधि विश्वनों, यज्ञ वाग क्या चनुष्ठानों का विधान भी इस वेद में किया गवा है।

सम्पूर्ण नेद विभिन्न शकार के श्रात्मनेऽत्रमित्रां राचीपविः। सा नो सकतें में विभक्त हैं। वीष्टिकान मुमिक्सुबर्धा शांता पुत्राय से पयः। स्वानि, सीवर्मायी, मैपस्वानि, साम्यनस्थानि राजकर्माया सक्तानि भादिका विदेवन हस्य क्रय से मिसना है। परन्त बावर्षकेट जें 'भृबिस्पत' एक भूपती विशिष्टना से संबन्धित (युक्त) है। तूं तो व्यविकांशतः इन समक्ष सूक्तों में बिसने वासी[माना गुरुड और नीरस धी है वरन्तु भूजिस्बत भाषा रोसी क्या भाषा की इहि से निवान्त क्तम, बराच, सरस तथा संश्र है। इस सुरू में ६३ नन्त्रों में बात-कपियां भूमि की समय पार्थिक पदार्थों की जननी तथा पासन पोषया करने वासी के रूप में सदिमा **उत्**योचित की गयो है तथा इस से प्रजा को समस्त दुराईवी, अप्रवा विचारों क्रोरशों तथा विवासकारी धने वें से बनाने तथा सब-रूपति

की सुमध्र वृद्धि के सिये प्रार्थना है। इस सुक्त में मात्रभूमि ही बड़ी ही मनोहारी तथा रमकीय करपना | दीका, वयस्या, मह वे शत से | वह सब की अपादिका मुखि वस्ति | रहोये |

# माता भूमिः पुत्रे ऽहं पृथिव्या

करे।

क्षमारी सन्तोव आर्व एम० ए० एम० बी० एन० चंडीगढ \* Interestation les parties de la company

की गई है। सात्रभूषि का यह स्थिर वर्णन देशभांस्य की उन्हेंन-नारमञ्जूरेखा हा मधुर विशास है। याद्रमुखि शास्त्रस्य की सांशात् प्रतिका, समतामधी मां के सरश, एक सडीब कर में डबारे सामने प्रस्तुत होती है।

'बाढा सूमिः पुत्रोऽहे पृथ्विक्वाः (१२।१:१२) सव की अवावक होने के कारण शूमि मेरी माता है कौर में बसी मादम्बिका पुत्र हुं विह वसुक बड़ा ही स्वयंत्रम भावना हा स्तेष्टपर्या तथा हे रह सन्त्र है : इस श्रांस क विमीच तथा संरक्त इत्यादि में देवताका का सङ्गोध

समा जागळक रहा है। थामदिक्ताविममातः विष्णु-र्वस्था विकासी। इन्हों वी प्रश

रशिहार • क्रिमे प्रशिवनी वेवठाओं ने क्षिणुने अपने दोन पाइप्रचेपों को रसा, अथवा स्थापक पर माध्या ने जिस में नाना वस्त्र की सृष्टि क्षित्रे सीमान्य तथा तेत्र बद्दान करे। परकन की, इन्द्र ने निसे शहुकों से रहित बनाया वह मूबि मुक्ते वशी पकार दर्घ दे जिस प्रकार साठा मपने पुत्र को लातः अनुराय से दूव देती हैं। 'सा को मुमिबिंसु अतां माता पुत्राव में पद' देशक सात्र इस्रो वाक्य में ही समता का किशना

वहरा समावेश है। इस पृथिवी की काधारम्ब वस्तुमें भीतिक न होकर आध्या-रिमक हैं।

'सर्व वृद्दस्क्षुप दीवा तयो ब्रह्म यहः पृथिशी बारपन्ति । छा नी भूतस्य पश्चस्य इसका क्षोकं प्रमिनी मः इन्योत् । रंशशर महान् स्टब, वन सरवम्बबस्या,

परिपूर्ण बेद का क्षान और यह-वे समस्त पृथिको को धारण करते हैं। यह पूर्विको हवारे अधित करे बान और भविष्यक्ष के सम्पूर्ण कार्यों की स्वामिनी है। वह पृथियी इसते विवे विकास स्थान प्रदान

बह प्रविको माला पराधीं. पश्चिमों, बनुष्टों इस्कादि का झालव है, निवासस्थान है। समस्य भीव-धन्तको तथा प्रक्रियो का कायार है १ शांदि, साहस तथा बार्स्स द्रपाह के समय कार्य वहीं सन्या-दित किये आते हैं।

बला पूर्वे पूर्वज्ञनाः विविधिरे कार्या देवा बाह्यसम्बद्धिमन्। शक्तमस्त्राती बदसस्य विच्छा भग बचं: प्रविधी सो द्वालु ॥१२।६।४

बिस मूमि पर पूर्व-काक्ष के बेच्ड पुरुष नाना प्रकार के सार्थ करते हे, जिस पर देवता कसूरों था संदार हवा दवन इनते हैं और बो पूर्विकी गीमों, धोकों इत्वादि पश-पश्चिं का विशेष रूप से जिल्लास स्वास है वह समि इसरे

इस विश्वी के बार में बहुत श्रद्ध द्विपा है। III प्रकार की धन-सम्पत्ति, देशवर्षे इस वहां से सेने क्षेत्रकर्ते हैं। जैसा कि एक मन्त्र वर्धित है-विश्वन्तरा ब्रह्मवानी प्रक्रिका

विरक्षका अवही विवेशकी। वैद्यानरं विश्वतं समिरगिनमिन्द्र-ऋषमा उविके को दखान ।१२/१।६ सबस्य विक्त की मन्नी तथा

वीचिका यह वर्षिकी सम पेरवर्षी की निर्मि है। सब की शरिक्ट्रा, तुश्तं धादि धनुष्टों से मपरी कोल में बारक करने काळी समस

को पारक करती हुई हमें प्रवेशक में स्थापित करे ।

इसी प्रकार प्रविश्वी के उत्पन प्रमा के सामने कृतने इत्यांक् का वहा लभाविक शक्तेन कपक्कम होता है। वस्तुतः 'मूर्गम<del>-सूर</del>म' **से** कृषियी का कर्वांगील इस प्रस्तव विया नया है। पृथिबी के अपर स्थित नविदां, परंत, गुण, सवास चारि सदा सामदाबद होने। मनोहारी थड्-फ्लुफ्रों स्व द्यागम्ब

व्यवस्थानारी हो । पृथ्यनीया, बरह-नीया, कादा भूमि भारत से बाबाँका को गई है कि प्रजा को हानि पहुं-पाने वाले बहार्य हम से दूर भाग बार्वे नवा हमें बस्थाश के टर्जन की क्ष्य दो यह है कि अभिस्तर,

माथा रोजी तवा सावों की शक्त से यक उत्कृष्ट सुरत है जोर साथ ही वाष वह अवर्षरेर कासीन राष्ट्री-बता, महानता तथा बास्त्रविद्य क्षत्रों का प्रतोक है। भाव भी यह सब-बानस में बस्साइ, प्रस्तास तथा उच्च भावनाओं का वस्मदावा है।

स्तुवा सया वरदा वेदमाता-सन्दरश श्राप के सवारविष्ट से निक्ते वह वदसार विकी पविष क्रीर बच्चे हैं। जिसने कर देने वालो बेद-माधा का स्तवन कर जिया उपने मानो बरा. कीर्ल. सन्ताश-सुक्त, पेत्रवर्ष-सभी कुळा पा विका: समस्य विदियों का मुख वेद का स्थाप्याय, चिन्तन, सन्त्र से निद्धियासन दया गवचन है। वह निःसंदेश एक श्रद्धर साम है।

<sup>🛨</sup> जो ध्वकि गृद सीर माथा कित की सेवा नहीं कृत्या वह वह करवान इत्राप्त है।

<sup>🛦</sup> प्राक्षीयात्र की मेवा करने बाजो सबसर शब्द हो क्ये हस्य से स अपने हो।

<sup>🗸</sup> बन्द्र को यो वचन हो संकार को क्रपने क्रपर बसाजी है। इसे पूरा करो क्रम्बका वहीं के न

## श्चार्यसमाजी का परम धर्म

पं० भक्तराम जो (अफ़्रीका दाले) आसल्बर ]

WORKSHOPPOWERFORCHOWN WORKSHOPPOWERFORCH

कासेज वेदम्यार के 🛭 साधन 🖁 पहिले को जिसम क्रीर तीसरे दा वर्ष बीत जानेयर भी 'देर-वेर'की निवम का एक बढ़ा आग विश्वास दुहाई के ऋतुसार वेदश्यार का ब्रॉर सन्तब्द के चोत्रक है ब्रीर शेष सारे नियम नदेश हवा कार्यसम्बोध श्रानहीं बहा बा सब्दा। दवा स्थास्त्राय, सजनी क्रमें त्य के प्रकाश । तीमरा निवन क्रीर प्रज्ञाचारवत्रों में धेर का तो क्रार्य समाज की स्थापना का शंसनाद इनके ही इस वार्नी के सक्रावार है । वह है—चेद सब चलन्य की इति भी हो जायेगी? सर्व विवासों का पुराव है । वेद स्थ्य झार्य नेता बतावें कि :---

का श्वना-पदाना और सुनवा (1) क्या आयेसमात्र की सराना सब ब्यायों का परवा धर्म संस्थारं इत्यने सार्थ से प्यात नहीं है। इस में वेट के झांदोलन के हो रही हैं ?

लिए ही हमें ऋदेश है।

वर्ष बर्मरीय प्रमें होते हैं और त्रव कहां तक देद्यवार में सहायक प्रेथमं बायह सक बहताने हैं हें ? क्या वे महर्षि दरानश्च का परता वर्षे का प्रचान कक्ष एक ही अक्टेब्स यहां कर रहे हैं ? हुमा करवर है। इस एछि से दोसिन (३) गुरुष्ट्रस स्वीम पर्रात का

ब्रास्य स्यों से रहे हैं ? —बहाना धीर सकत-संशना' हे (x) बार्य समाज पास्त्राख है। इसंके दूसरे अक्र आर्थी— शिक्षा पर संस्थात शिक्षा के बदार ब्यवहरों में समान हैं परन्त बाबे की ब्रमेशा नवीं ब्राधिक व्यव का क्षा करम समें केवल मात्र 'देश' रहा है ?

(२) **बा**र्वस्थात । शिक्या-

(a) शिचा संस्थाओं के सपनो पर करोड़ों रुक्ते सर्च हुए और हो रहे हैं। देवालुसन्धान पर किदना कार विकास सारहा है ? अनुसन्धान के लिए सालों रूपये के प्रम्य पाडिएं। बहां है वह स्थयस्था ?

त्रायश्वकता को वही सिद्ध कर**ा** (E) क्या क्राप को जात नहीं है। झार्य समाज की जीवन यह iii কলিকৰ কলিবিডি মাধামাঁ কী भीर इसकी खादना के महत्व का वेद्यक्षार निषियों में २६ मी पैसा नहीं भीर वे उसरी निधियों के बन वेद प्रचारार्थ, जार्यसमाज, से वेदप्रचार की गाड़ी चला रही है। सम्पत्ति वेथी जा रही है। (a) क्या कार आतते हैं कि बारंसमात के बानेक व्यथिकारी एक २ देव को प्रन्य साहित ध्रयस भागकत पुरास्त्र के बराबर भारी सबको हैं ! उन्होंने देर के दर्शन तंद नहीं किये। उसका स्थाप्याय

(८) स्वा धार्यसभाव के सकि- " कारियों के घरों में बेव पुस्तक हैं ? होते को चाहिएं असेड खार्च चरि-वार में। अब बर में समाबट बी कोर वलकों पर क्रायस्थ्य किया जाता है हो सराती धर्म पुस्तक पर विकास है क्रांस्थ्य क्यों है करी बसे पटने वाला भी कल्लेगा क (१) शहर्षि दयानन्द का केंद्र

साध्य वद्दां ही साहा है जहां कह स्रोड गरे दे : स्शामी जी की **रीसी** के बालुसार शेष बेदों के आध्य के जिए स्वर प्रवत्त्र हुआ है 🕈 स्क्लमा वेद भारम वो हुए हैं वर बासाणिक स्की ।

(१०) स्वा वेद श्वार व्य वेदी यर राजनीतिक व्यास्त्राताको कौर कारकारी क्षेत्रस्यारी की संस्था दिशेरिय वट वहीं रही ? प्राव्ट काम श्रमाचार का एड जेना ही वेद का स्थापनाय समाना नहीं का रका र

है तो कोटा नंड और मबी बात किन्तुं बह कहनां ही बहता है कि ब्याज बार्वसमात की देवी चु-चुका मुस्मा वनी द्वई है। कोई इस भी मोस शर्म पर स्वास्थान कराये किना उत्सर वा सत्यङ्ग की कार्यकाडी धार्में रहवी है। क्या चार्यसमाओ वक्त के अभाव में स्वामी भी के श्रीवन चरित्र या काल वर्ष धन्य का पाठ पर्वाप्त नहीं १ व्यास्थ्यान वैवार काना सगम नहीं। पुष्प पं<sub>र</sub> शांति प्रधारा की शान्त्राचे बहारथी के राज्यों में साकारण व्यास्टान की त्यारी के लिए बी ब्याट इस अपस चाहिए। शहा तो संस्था से सर्वमा धार्मामा चार्च सिद्धांतों से विल्कुत कोरे कौर वेदपाठी का दांग काले बाले वर बोसने के सीचीन की दो कार बिनट पहिले प्रार्थना **व्य समस** पूरा करने के लिय त्यार कर **सिया** बावा है कीर वह बी कपना पार्व (रोष प्रष्ठ १० पर)

क्रेरोड सभो यह स्मांत शाहे प

तदिदासः। साधुनाम धर्म नरू-**आ**वारहचे व हरेब प ॥

**सनुसा**ति क० २। स्त्रो**६** ६ । समप्र देश पर्य का नक सोट है। व्याधनवान् संदुक्त स्वन 🚼 । शतु महत्राज ने ही कहा है कि 'समे—श्रिष्ठासमानावो श्रमाश् परमं व ति:' झर्यात् पर्म के विका-सुझों के किए बढ़ा प्रमाना ग्रांत

(वेश) है । चार्वसमात्र का वर्ष चैदिश है। सार्व कवि के जिल्ल मिस्तित परा चित्रने सन्दर हैं :--**'धा**र्वे हमारा नाम है.

'सत्व' हमारा कर्मे । **'स्रो**श्य' हमारा देव है, खेद' हमारा पर्मे ध केत विदित सबै का पालन

करने बाला वैविक वर्मी है । वेद के बहुबा से अपूर्व पदा हरित पदे बावों का बुरुव धमें देव का परना विश्वभनाः' ग्यायानुसार पन सब कर्मीका स्तरः बहुत हो जाता है क्रिनके करने का उसमें विधान है क्यों कर्म देदानुकृत है और जो संस्थार नेदिक हैं। इसी सिय मनु है। इस पर्भाधमें का पालन न वी में 'मालि हो देर निन्दक' 💐 इतने राक्षा 'बार्य समाधी' नाम का 'आसिक' का सचय वेद की का भी क्रियकारी नहीं हैं। पेट निहा इसने वाला ही किया है। ही हम आयं समातिशों को अन्य क्रिकर को न मानने **बाला नहीं** । पर्माधनम्बर्धे से इवक करता है। वैद का भावेश हो मही है जिससे कार्य समाज की क्रिकेश कीर आध्युरय-तोड भीत विलेवस-क्रमोठ की सिवि होती है। जो इस्तें इतीर परमार्थ की प्राप्ति

सराबा है वह वैदिक भर्म है।

विस्तार के क्षिप ही महर्षि हमानन्य ने बार्य सेवड-सेना-संप संगठित किया था। उस आर्थ सेश्क-सेना के सैतिकों को एस निवयों को बीका हो की बाकि क्या पर चलते 📷 अम, मृत, भव और भेद-माव काडे मार्ग में बाबड़ न हो, सहस क्षांच निवृत्त हो जाने और वे सासक्ता की दिशा में पर बढ़ाएं ।

मुख द्यही परम समें 'वेव्' है । वेदिक मर्ज के प्रचार तथा नगर-नगर और जास २ में स्वापित कियो गए और वेद के विकार के

तिए हो भार्य प्रतिनिधि संशाओं की स्थापना हुई भी भीर फाव बारेक लाओं पर बार्व रेजीव समाओं धीर नेद प्रवास मरहतों का मी निर्माण हो यहा है इसी **छ**ोरव से । कनामासप, विश्ववाकम शार्व समाय के इस निक्यों से स्टब्स्टिव्हरू, ग्युक्त, स्टूब और लेक कोर रहा।

हो वया है।

कारि के आप विशेष उज्लेखकीत

हैं। भार्यसमात्र के कारवा ही वेदों

क्षा क्षत्राच समार के प्रान्ता से

श्चार्यसमाजी बा परम धर्म

(प्रष्ठ ६ का शेष)

परा करने क लिए अपदेश गमना

सदाकों से प्रधान की कलाव

के दारया कार्य शाम्यापकों झीर

विद्यानों की नरकी नहीं हो रही।

बालू ! वेविक सिद्धांत सोना है पर

वनके अनुसार क्ष्मारा आवरवा

श्रहाने का काम देगा । आर्थी के

बसह, दिवार, विशेश क्षांत्रा,

शतेत्र व स्टब्स दमेटियों धीर

स्वीदार का लेशा है।

वेटों का यथार्थ भाष्य (प्रष्ठ १४ का होप) बबानन की शेकी से वशिष्ठ, जन-

बॉन्न, श्रवि ऋर्त्रत रास्त्र देविकासिक क्रमें व बतादर काइतारिकड कर्ने बकते हैं कीर इस प्रकार से बलको सिर्प शक्तिक घटनाचे बाजबर बेटों को सर्वेदाविक और वर्वप्रतीय क्रिय किया। विकासकार भी वेडी का चेर्तकासिक कथे नहीं मानता । वेजानिक सविकास

स्थानी देशांकण का यह रह विकार वा कि के में विज्ञान है। श्रीप करोंने अपने भाष्य में वधा स्थान इस का कहा परिषय मी विकारी। परना दशा है 🕮 ने वाधिक दिन जीवित न रहे विस के बारण वयोगासम्ब विश्वान का क्रमहिष्कार न हो सका, परन्त उत के बाद के माध्यकारों ने बनक इस बार्ध की पर्श विवा ।

#### वेतिक तेत्रमा

कामार वेटिक देशसाओं के वास्त-कि समय का पटा चलता है। सामक सादि के चनशर क्रांग्न, बाजर, बाहित्व देवता चेतन है जो क्षाने प्राप्ते सरदश के श्रीधन्द्राता 🕏 । बैदानी सी इसी विचल की प्राप्ट करते हैं, बरन्यू स्वामी जी ने वीकिसीत से इन के वर्ध वनके राश समार की श्रांत से किये हैं। व्यवसाने प्रशास्त्रा के बाजी है। सामि के शक्ष में नेतीस वेचनाओं की सार्थि केंद्र में नहीं है।

बिनियोग मान्य नहीं

वर्षकाळ के आपनाकारी ने नेत बनों के जबत और अनुबंध विभिन्नोश माने और वन्हें ही स्वान वे रकते दूर भाग्य किये। कालः सो शस्य देव मन्त्रों में हैं भी नहीं क्टें सीपावानी करके बाला गया। किय ने अर्थ डा धनर्थ हुना। बर्ख कवि को मंत्रों का नियोग का आस्प्रतारों की शांदि सान्य केंक

नहीं किस से मन्त्रों का बार्लावक । विद्यासंबार, होसोहर सावब्सेकर सथे प्रदाश में सादा।

आधनिक वेद आध्यकार बार्य समाज ने आवि शास्त्र का बहुत समाम किया । बास्तव

में यह सम्मातनीय है ही । उसे पहते के बाद देतों पर श्रद्धा सपन्न हो बाती है इसस्टि बार्वसमात ने

इनका बहुत प्रकार किया, जिससे रेशें हा प्रचलन कपिक हमा । कार्यसमाज ने व्यय के प्रयात

कानेक के भाष्यकार भी विकास इ.इ. इ.स्य यतारक्षणी धारश्हारों

ने इनसे प्रेरवा शप्त की चौट माध्य क्षिते । इनमें बोगी करकिन योष, उस क्षानन्दकुमार स्वामी

चेनकाखदास, ठूलसीरास, जबदेव ी \*\*\*\*\*\*\*\*\*

#### महात्मा हंसराज साहित्य विभाग का दद निश्चय

u a प्रतिज्ञत स्मीशत प्राप्त सर्हे

इस सनहरे बबसर से

क्षमी स्टूब, कालिक, बाद समावें बीर उन की संस्थाद साम स्टाबर समी की हाम क्टावें क्रमानाओं क्रिक्टाओं क्रिक्ट (-) या त्रंतरात की सा संविध जीवन

वरित्र (भागन्य सामी वी महाराज सिस्तित) कीमत २) इंदानम्ब शक्क (पि+ रीवाच चन्द्र वी हत) कीमत १) 🕅 दर्शन (भाषन्द स्वासी वी [संकत] क्रीयत २६) ब्रहाँचे उसेन (डि॰ सीमनचन्द्र सी वट) बीयत २१ वेदिक धर्म मुक्ते क्यों प्यारा है (विशेष्ठ रामपण्ड इत) धीमव शा) वैदिक धर्म की महत्ता (वं० त्रिक्षोकषम्ब की शास्त्री जिल्लित) कीसन १२) रू सेंक्का, सरपार्थ तकाश दिन्दी बाप्य ई, ii समुत्त्वास (श्री **रा**धस्पति जी दम**ः २० ६**४) धीसत् श्रुपेड समुस्लाम की १) ।

नीचे की प्रश्वकों पर 25% कमीरान-

संसार्व प्रधारा हर्व आहे समा का प्रधारान, स्वाक्यदिक साईच वन्द्र वर्ष (कि सर्व मान औ वावस वांससर) कीमत १६६) जीवन ब्बोर्त और गीता दिनर्शन क्षेत्रत क्ष्मरा: ॥= ), ॥) काने (वि० दीकान चन्द्र भी इत, लाध्यात संबद्द (फ्रॅ॰ दीकान चन्द्र बी इत) बीमत H)

बोट-सर्व सर्व मक्षत्रों को देना होया ।

क्राने ।

प्राप्तिस्वान-महात्मा हंसराब साहित्य विभाग ▲.Р.Р. समा वासन्बर शहर \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

MENENENENENE MENENENENE केर - विक्रित स्रोक - कर्म. शरम कम वर्ग, असे

वेट कक विश करन. वेद मुक्ति अन्य-सरका । षिसद् - सःव-सिन्यु-सार, चारम ज्ञान मकाबार... बेद निश्चिम दिश्य स्थोति. है अपन ईश - पार ! वेष प्रायः, स्थासः, तातः. वेर ही श्रमात - साधः सहावस्त का च वेद सनुध - पानी - पात ! शक्त की तसक वेद.

योग की क्षत्र केत.

न्यदि

भन<del>तः</del> ज्ञान - द्वीन - वेद !

वशोंक हिन्दुस्तानी DECEMBER OF SHARP MORE MORE DECEMBER. जवर्ष माहा और सीच-कन शोगा नहीं देवी । समाक्ष्मी में ताता में मैं आपके भाष्य को पहने के शिचे किसी हाँ हुक मुलकों रर विधाननेश-अधिका क्योरान देना स्टीकार किसारी न होओ वाहिए। जोक-मींक का नाम न हो । पुट-पिशाचिनी की खामना चात्रिए। यनगटाच होबेः न पाठे। के तक शेष वेतप्रकारक माना बार्यसमात्र की उनकी हैं। तारे सम्बद्ध हैं।

> क्यात 'सावको उपाहर्य' के पावनपर्व पर और ने**र**सप्रम**ः** के बारस्य में इस बार्व समाजिकों को खपने वरी में चारों रेंद (मूल)। रक्षने धीर वेद का श्वाच्याय ब्हाने का श्रम् करना चाहिए। ठाकि हक-वेर से रूप प्रमात लेक्ट स्क्री संबंध में दीवाने योगा को सब्दें ।

> > भगस्य वचन

🖈 व्यत्यापार बरना, विराक्तर पक्षद्र मोस होता. रसरों के क्या को इच्छा करता और खनके क्षानिकों से ईफाँ करना है अब. द्वा बोमों के सकत है। इस के

क्य-बार खो ।

#### वेद का स्वाध्याय वत

ते :- भी दवानन्द आर्थ एम. ए. (Final) साध आश्रम होजियारपुर

\*\*\*\*\*\*\* देहीं का स्थानमाय करून है. श्रीका है। संसार के मत-मनल्कों का प्रारंक्षन इसी कारना है कि ने चेत्र को क्रांशिक सरवता को जेकर व्यक्ते हैं, वहि पूरी सत्वता सपना **कें को वे केरोबन पर्म से साम नडा** सक्ते 🛚 । देवता ह्यामन्द्र मे स्रोगी की जगास्त वेदी का बेदरव बताया । प्रामेद भाष्यम्भिका में वेह शब्द **की** प्रत्यति बरते जिसते हैं-

बिद्यन्ति जानस्ति विद्यन्ते सवन्ति विन्दन्ति व्यवना विन्दन्ते समन्ते, विन्दन्ति विदारयणि, सर्वे ग्रमुखाः श्रवी: सत्वविता वैर्वेष वा तथा : विद्योसस्य भवन्ति ते वेदाः। भागाँत देह सो सल्य विद्यार्थे

🖫 बो ईस्वर श्रम है। स्थ्यं प्रस्थ-साईड्व में शिक्ता है कासंस्य धन्य मुख देह पाठ, हावा **ब्लो फ**्रम्बेरा वरद ।

वेद-ब्रान सविपापी मनुस्मृति ने हो संसार को एक प्रमाख पत्र है विया वि 'नासिको चेतनिन्दकः ।

क्षवर्शत वेद की निन्दा करने -बाला नासिक है। भाव जो जैन-मधावसम्बो स्वयं को ब्रास्तिक सिद्ध **क**र रहे हैं, कहें देव-मत को भारत करमा चाहिए, अन्यवा दे नास्तिक ही स्ट्रेंगे। इंश्वर के सच्चे स्वरूप का भी किया वेद पढ़े नहीं अपना बासकाः। जो व्यक्ति प्रतिहिन वेदं पदता है, उसने अलुसार कर्म बरता है वह जोवन के बनुत वैभव का स्वासी बंद जाना है। जब से बारितियों ने मनूत्व क्रुव वंशों का बाठ गुरू दिया, तब से नानाविव शीमां ने धर्वे दुवाया । वेद् भोजनी au बोजन, तर का तर, ज्ञान का क्रास, पॉद्शिव की मराकाच्छा, जीवन

का, तेत साबन्द को स्रोत है। थेर हैं वो कार्वसमानहैं, बेर नहीं तो कार्य-बमाज नहीं भाषों हा जोरान परवारा है हो तो पीतस वा ओडेका विरूप कार्य नहीं देगा, देखा, उसके शिव वेद का लाज्याय है। साथे होकर भी जो क्रेंच नहीं पटता वह कार्य नहीं वीसा देता है। वेट की श्वा मान-वता की रक्त है । केशस भोगवाद

में मुख बड़ां! बीबन का स्था नाम को स्थाता है, पीता भी है परन्तु इस संकारी जीवन में जो इस सिंट बैंडकर नेदाध्ययन नहीं करता । उस देशवर्ष से दरिद हरिया सती है जहां वेदावारी क्षोगसते हैं। प्रार्थे ! व्य शिविज्ञता बनावटी स्वों ?

'इतं में इचिले इसे जबों में सस्य प्राहित: 'बह्मिन्द्रों न पराजिस्मे' का पाठ भूख गद १ मूजना ती हुदा हो, बव थेर छोड़ दिया। वेदकी

चे इक्षिति वे वर्ग सर्वत दिपर्वेबः । (श्रीमङ् भागस्त)

महिया गाते हैं—

ते सोह मृत्यवः सर्वे तथा येद विभिन्तकाः (बाबेरसेय पुराश १०१८) वेदमम्च्याचार्वेऽस्ते वाधिन मनशास्ति । (वैचिरीयोपनियद् जहर) Veda is the fountain head of knowledge. (पन्यभूराय गीइ)

ब्राहर, वेद-सप्ताइ निरय शाने, शत्नेक दिन इसारे जिल देव सम्बद्ध हो । वभी इस बाद होंने नहीं तो बैसे वय शब्द होंने तिकालेंद्र पाछ वर्तत है पर पता 🖈 श्रीवा वाध्य-वान का करने, 🕸 💐 व्यक्ति वस्ते ।

# श्चार्य वीर

(से०-राममूर्ति कातिया एम०ए», ९०/अप, मासवीनगर नई दिल्ली (3)

बारत की खोस्कृतिक जाता फहराने क्या में, या सगड गुद जो, पुन: धात्र नेतृस्य **वरेसा**, जस-तथ में ऋकियों का विश्वमें रस्त मरा है शान्ति हेतु वह आर्थ और कर गृत्व करेगा । (3)

शंतपाहरवों का चीरकार यह सुन ही रहा है, इक्ति जो बीनों का दुला तो काव उसका दुला है, पाड करेना, दुइरावेगा, जग न्से **करेगा**, ऋषियों की बाया में जारो सच्या सुत है।

चन्न इसक इस मीतिकता की टिक न सड़ेगी, उद चुके हैं, बटक मुक्ते उस जग के शाबी. दया करो, हे क्राप्य बीर, हुम वन बीनों पर, यह दा दो उन कानी सक ऋषिकों की साकी।

(8) विद्वत माववंश पुत्री का मन बहुदायी, स्तेष्ठ सने राज्दी से उसको व्यव दुकालो, हे बस्द बीर, दे आर्थ बीर, यह अर्थ कमाची, ऋषिकों की दायी की घर घर तक पहुंचानी।

#### To a construction de la construc वेद की जामतिसे क्या होगा<sup>अदअदअदअदअदअदअ</sup>

(पृष्ठ ४ का रोध) नेद का जपदेश इर यक गार वें मिकता है। यहां इस ने पुर तिश्वीका हो. ए. वी. वर्गसम क्षेत्र का ही विचार विवा है। परमु क्षमतसर के इरव में सना के लिए राज्य विश्वक जिल्लाने प्रस्त हैं उन विशेष शेस है। सभा की मार्थिक सब के उत्तर इसी प्रकार सन्त्रों से स्थिति को भ्यान में रसते 📰 उसे शाल होते हैं। देर का बालावन काप ने १०००/- की राशि मेंट इसो दृष्टि से करना चाहिए। नेद की है जिस के ब्रिप्ट समा उक्की का प्रस्त करने से ही केवल वह ब्राय नहीं हो सध्या। बेद का व्यर्थ देह सम्ब्रों के वहाँ के बार्च की संगति देशने से डीक काइ मासूस ही सकता है। वेद विचा को ऐसी अल्डिस्अल्डिस**अल्डिस्अल्डिस्अल्डि** बायति सारव में हो और देव के

ज्ञान से को सम्बदि सम्मावित है

बहु आरत की उन्मति हो बही हम

सामले हैं।

ब्राल्यन्त काता है । ज्ञानचन्द्र भारतिका सन्त्री समा 🖈 चतुर मञ्जूष्य विश्वास के

घन्यवाद

१००० रु० का पवित्र दान

हो विश्वनतात थी श्रारोहा

पात्र होते हैं। 🖈 जो सब से भेग करे असे देवता करते में देर वहीं समर्था ।

#### श्रार्थसमाज चौक फिरोजपुर का समारोह वेदप्रचार सभा में ५५१) हु की जैंट

\*\*\*\*\*\*\* भार्यसमात चौद काविज के मल बाते बाते संगीद भी होते विभाग प्रितेत्रपुर शहर कार्ये श-देशक सभा प्रशास से सम्बन्धित **असी** प्रसिद्ध समाओं में शिबी वादी है । इसका चढा ही सन्दर वर्ग विशास अवन वरांतीय है। इस के दिलोग क्योंनि साठ काशीरास क्षी से १८६३ में डी इसका एक इस्ट भी बना दिया था। विस दे भौतेशर स्वर्धीय आ० काल्लराम की के सुपन्न की जान वरायन्तराय सी हैं। ४० समध्यके श्वान द्यात क्स महात्मा हंसराज भी के क्रास्त्र बक, समाय के बादीय शहाह श्री सार सेहर वस्त्र सी अध्यक्षण वस य, रिटायबं डैकमास्टर तथा मण्डी **ब**त्यन्त सीम्पन्तमा**व वं**० अ**ब**द्य बी शर्मा है । समावदे सारे सददन क्दे में भी तका धर्मनिष्ठ हैं । वहां सन्दर प्रशासा मे दैतिक वज्र पर्व करधंग सगरा है। भ्रापने इस सम-बाद मैमारियस स्कूस के मान्य विभिन्न भी बातरा जी लगा मारे स्टाक का भी सहयोग है। तथा स्त्री ब्यावसमाज श्री माताको बहियो का भी प्रान्त्ररा बलगह मिलगा है इसाला मानवा सामा सीवारेपी भी का कमार तथा होती की सकाओं को वेस भी वर्शनतीय है। समा के क्यार कार्यक्रम वर में रम समाज में ता० २६ जसाई को बड़ां वह चा। मेरे साथ सता के असिट अजनोप-देशक की ठाकर दर्गासिंह जी साव अपरास काय थे। अतः काल तथा तका है । राक्ष के समय एवं दोनों स्त्री समाज . अर्थे भी जिस्लार कथा प्रचार होता बार । विक्रोजवर देशवा का भारी केल है। प्रावःकाश वेद की · स्मक्तियों के श्वचन बार भी ठाकर

की के अअन होने में तथा रात को

कत्र व को तस्वी संबंध भी होते

से । संशीताचार्य हो÷ देशबंध सी

थे। अनुसाका समाज के शति प्रेस देल कर सन इसल हक्या। समाव के साध्य शब्दानों का प्रमान तथा क्याद स्वात था। तो सरावों व्या शब्दी नाला करू घेम भी त्सम था। बोखने का ब्रानन क्यावा था। जनता समाज की वाबार वही बहा से सुवर्ती है। ठाः हर्पासिंह की के धोवस्की भवनों में बरुब थी। देश्यों का लमक भी शनदार था। मान-त्रीत प्रधान भी मेहरचन्ट जी बाद-दाता तथा सन्त्री श्री सम्बंधी की के रपुरीर की शास्त्री इस. ए. तथा वर्ष होता विकासके मानकारा-सन्त्रभी के छनाइ से सभा के शिव हमारी प्रार्थना पर वेद-प्रवार के जिए ४३१) स्० की राशि इस्त्री चरके मेंट की रहें। जिस में श्ले समात, समाव प्य सरक्तों धरा श्रमध्यको स्रवित बाहे सारे रोग वह बोते हैं । यह विया हुमा पनहै। साननीय श्थान सकाय ने कहा घटा से सभा का प्रत्यवाद करके वह राशि चेवपचार में केंट की मारे समाजका कारणल भारतबाद भी सा० इस्टिय तो ने इस ऋबसर पर वेद स्राचनां अपना कर प्रमाद सूथ में वांटी । पूर्वाहाँत पर वो श्रव समारोज या । वहत प्रस्कात । स**म**ाडें समा **र** प्रति वडी बेस दिससावी रहें। इस बीमार भी हो गये । उस राशि का विकास अस्तर भी दिवा बा হিল্লাভ বন্দু

आर्थ सङ्जन आर्य-जगत के ग्राहक क्रे औरों को बनायें

# वेढार्थं जीवनं देयम

पुरुषं सावविधानां

नेप इंडिस्स पठने पाठने तस्य अवस् आवस् वया ( वेद सब सत्य विशास्त्रों का

पुलक है। बेर का पहला, प्रकास स्वता समाता-भार्यासः परमोधसः अपस्यापि बहुत्स्वम् ।

स पन नावों सवति वो हि देदozraza: N

कार्थे अप्रसम्बर्ध है। बह मारी रूप भी है। वड़ी ब्यार्थ होश है जो देश में लगा रखा है।

ससंश्वम । कारका मानधालोके राजना वेदधस्त्रशाम । देत के धारका से सलकों के शरीर, बन क्या राष्ट्र में पैदा होने

निविष्क है। वेदोविश विव तुन समृत्य ज्ञान स्रांचवम् । निर्धेनो धनवसीर्थि देशहीनो नरो

सवः ॥

वेद जात से भरा धर्मन्य श्रीर प्यारा चन है। वेद से हीश धनवान बनव्य मो क्याब सागा राधा है। बद्ग्द्रंग बद्द यत्र केट्गान न र्यायके । कमारो स मारो वत्र बेटपाको स चीवते ॥

वह मर-घर नहीं, जड़ां पर वेद का साम नहीं होता। वह सन सन वर्ती, करा चेत्रके लिए स्टार असी है। बहुक्यो त क्यो पत्र बेह्लारी न

नीयते । ळि कोचंन **चलोचं वेदपा**यंन पीक्ते ॥ धंद्र गायो वाची नहीं वहां

वेह की चर्चा नहीं क्रीर वह कान कात समी को बेशस्य समी पीते।

अर्थनं न चन यत्र वेद संपन्न चीवते . वर्ष दान सदाने हि बेददान व बीबधे यह धन धन नहीं जहां वेद की संपत्ति का स्वय नहीं। बहां वेब का दान नहीं वह दान भी दाव

सर्गारमने मनुष्याकां दत्तं पश्च-स्तनातनम् ।

पहचलु बतुबा ऐहे वेटा साथ-सवा सतोः॥ खटि के बारम्थ में मनुष्यों को बेए का नेज दिया शाकि सारे

वेद वस् से देखें। देद हान के भरकार है। रामः कृष्णस्य व्यासस्य गोरकः

कविकासकः । व्यक्तिरुक्षोके दमानन्तः सर्वे वेड प्रकारकाः ॥

वीराम, भी शुध्या, सुनिव्यास योक्स कांच्यादि, ऋषि हवातम्ब सारे बेड के इसम्बद्ध है।

शास्त्र सहिता कर सर्वता अधित क्या ।

वेदः प्रकारितसोन् ह्यानम्बेन श्रीमता आवि दयानक वेट प्रवार के ब्रिप प्रापन। जीवन सर्वस्य समिधा

दना कर क्षाहर कर दिवा। आवस्याः समस्यत्र नेदेषु समर्गोऽश्वताः गः नेद्रिका हि कुच्छान्त की नेदास-

> इतियात १ बारों क्रोर से बेबो पर क्रोते श्राच्याच्य को देशका के श्री इसते हैं कि नेद रक्त कीन करेगा है क्रायोः ! बद्ध परिकरा भवन्तः

सम्बद्धना हि । रेब सत्रे पुरीते च पा**ळशी**र्थ STREET IL

कार्यो ! बाप कमर कस होने' और इस पवित्र देव संशोध के बाह पर कापने श्रम को पार्ने ।

-विहोद चनु शासी

बार के तो कीन सी ऐसी सबस्वा

# वदे का दिव्य सन्देश

(ले॰ बी॰ पुरुषोत्तम जाल भी M.A. वेद प्रकाश) 

**ई क्रिस का समाजान मान**ा समाज को प्राप्त नहीं दोगा । सारे विकट सावि के सक्ते विकार्श के जिए | पुन्तक Superiority of Vedic **वरी**क्ष अटिस्टाम प्रस्त पसी प्रशास से विज्ञीन हो बायेंगे जिस प्रकार के सर्वोदय से बान्यकार दूर हो काता है । जितनी सम्भीरता से शिकार करने का इस प्रयस्त करेंगे क्तना हो यह कार्रियम हो जादेगा कि देव का सन्देश आज भी खतना ही झावस्य ६ है जियना आवस्य ह बाइ दस समय का अब वह सर प्रथम दिया गदा दा । इसी हिए वेद का सन्देश दुगलकुल है। केमाध्यसन से मानव वाति को amu ही लाभ होने वाका है।

क्रिस समय ईस्ट इंडिया कश्यनी सामत में देर तमा जुकी भी उस समय इसने वेदों को संगरेजी में कतवार कराने के तिए नी वास **रा**प्ये का प्रबन्ध किया या कीर अर्थनी के विश्वान मैक्समतार ने क्कपने जीवन के चालीस दव देहों को संगरेती कत्वाद के काने में

होस विये थे। सेक्समुखर ने ही कारनी पुताक India what it can Teach Da (मार्थ हमें क्या विका सक्या है) में क्लें की सङ्चा का नान करते av fam ≷—I maintain the to everybody who cares for himself, for his his tory, for his ancestors for his intellectual development a study of Vedic Literature is indispensable ... Rigveds is full of lessons for the true student of mankind क्षार्थात मेरी वह बारवा है कि जो क्रवने बारे में सोचते हैं, अपने 'अनुबंधों तथा इतिहास के बारे में सोचते हैं, और वेडिड कमति के में प्रवादित क्षाविता नहीं रह सकता कि जिए वर्ष कोई बहुमून्य करा है ते

वस्वोधनाओं से अरपूर है। मैक्स में वैदिक विकास बाद पर सकारा मुक्त प्रत्येक स्थाबित के सिंदा वेडा-ध्य 🔳 परमानस्यक बनाते हैं और वह कारवासन देते हैं 🖫 देता थ्या से हमें सत शिकाओं **श**ी प्रापि होनी और जीवजोत्धान वे तिएं १मार्थं हरबोधन शक श्रांगा बिरे वौद्रिक क्वित हो चिना है एत के जिए तो यह एक कारिकार क्षत्रक की कोटि में जाता है। इसी भकार कायरलैंड है शहान

द्यांव तथा प्रसिद्ध दार्शनिक डा. वेम्स एक. कविन्तः चरपनी प्रश्नक The path to peace सानि का सार्गे—में देदिक का**ए**टों पर (संस्कृत हैं।

On Vedic ideals alor

it is possible to rear a new earth in the image and likeness of eternal heavens :—सर्थान वेतिक बारसों पर ही सत्य सनावन त्वर्गिक संसार का नवनर्शिया। सन्साव है । हा. जेम्स घारशों को खोब करते ह्य बेरिक झावरों तक पर म गये क्रीर उन की यह परन मात्वा इन गई 🏿 बदि संशार में स्वर्ग की की स्थापना करती है तो वैदिष बादरों हा प्रचार III प्रसार करना होगा और वैदिक कादरों को डी समाज, राष्ट्र ध्या विश्व में प्रतिप्तित बरना होगा। यह बात स्टहरूप वीर्वात्य हो क्रदश पश्चात्य,

वैदिक भावशे का नस्मीरता मे श्रद्भयन हरेया ता वेदिक बादसी

ऋषेर सन शिक्षाकों से तका क्यार्थ | Religion केंद्रिक धर्म की सहचा याक्षते हर बहते हैं--It (The Vedic Religion) is thereu shly scientific religion where science and religion go hand in hand. वर्धन देदित यमें वैद्यानित

पर्म है कौर इसी धर्म में विज्ञान वया वर्म में क्यायं संतति रहि-मोबर होती है। यह वैदिक धर्म भी बड़ी विशेषकाओं में से स्व विशेश्वा है। धर्म कीर विकास की परस्- विरोधी समन्त्र बाका है परन्तुः दिकथमे तथा विकास स्थ दूसरे के एक हैं। संशार में बोलो श्री माबस्य जा बनो रहने वार्त है।...संसार वे विकार धान

वैक्षानिकों ने भग तक विकास में कांगरोप माना है और संकार के बनवास्त्र के लिए एक करा विज्ञान परस्पर पुरकता को क्वतिकामें माना है इसो धर्मतवा तिज्ञास का समित्यव तथा सामें अन्त क सन्देश वेद बानादि काल से क्षमे प्रदान कर रहा है । वह हमारे **कि**ए शीरण की बात है : जब पर्वोद की पनि प्रांत के

वसिंव कोर्ज-कारी विकास वस्टेकर को मेंट की खई तो हवाविरेड में वन्होंने बहा--

For this valuable gift में स्वीकार कर होनी चाहिए कि बात the West will remain थी बॉब कोई व्यक्ति निदान पादे वह grateful to the East. सर्योग इस बहसान्य सेंट से पश्चिम पर्वे था सदैव ऋषी रहेगा। हां ! हां। सारक्षेतां के पास संसार को देने भी W. D. Brown अवनी बह केर है। यह वास्टेकर हमें बाद

दिशा रहा है। धारतीय जक्बी सम्पत्ति को मुझावे बैठे हैं। फ्राहें इस बात का ज्ञान भी नहीं रहा है कि त्रज्ञ के शास भी दुनि**वा की** देने के क्षिप बहुमून्य बस्तु वड़ी है व वेड् को दुनिया को दे कर इस संसाद का करवन्त उपकार करें में । संसार देव को था दर निहास हो उठेमा । परन्त हमें इस वेद सपी बहुमूल्य चेंत्र को चारतत ज्ञात पद्य**य सं**वार को प्रस्तुत करना है। हमारे पास वेद क्यों सन्वति है वसे सक की देशे का प्रकास करें।

इस में ओब वरशोफ सुमार के हिए लारे विधि विधान मौक्द है। देह केवल परलोक का ही विश्वाद बही बन्धा । इस लोक में जो सम की प्राप्त कैमें होती 📖 का विचार अस्वतः वेद अस्तुत करता है। वेद सोड परलोक दोनों में **सम्बन्ध**य स्थर्मपत्र ब्रह्मा है।

#### गरकल वे दिक आध्रम

रुढि तथा विवाह

गुरुकृत वैदिह साध्य केरव्यक्त यो॰ राटर केसा ४ (पानवो) क्रिक सुन्दर यह उदीसा में २/७/६४ की युक्त अस्य जात ईसाई वनवासी परिवार की जिस में साव व्यक्ति से सकि की गई।

सन्दर गढ़ निवासी भी इसका सुरह ईसाई की पुत्रों व्योगकी सुबरदानी सुढे २४ वर्षी या श्राह सी पास को शुद्ध कर भी निद्धवा विद्वारी शास के स्वव विवाह संस्कार्क भी स्वामी शिवानन्द तोर्थ से **करावा** इस समारोड में सुन्हर गढ के गरयमान्य क्षील सम्बक्ति 📭 आध्य को २१ सम्बेद्धिया से विके र

> श्चरपारी कृष्णीर मादवी संग

काल या जिसमें देदों का सम्मान बाराः बार होता सवा । पदन. भारत की प्रणासी के वटसे हाने हा प्रभाव इन दर भी पढ़ा, भने ही इन्हें बारव में हिन्दू-बमें का पसे अंध बढ़ा जाता वा परन्तु वेदों वे बाला विश्लों के घर पर ही प्राप्त होते थे। कल व्यक्तिया की कंट भागरक को परन्तु उनका कार्य हाम नहीं था । कुछ विदेशी विद्वानों ने वेशों को खनता के सन्मूख रखने का १४रम दिया परभ्तु बन्होंने धनके क्रमें में प्रथमात से काम खिया. क्ष्महोंने यह सिद्ध सत्ते का प्रवास

कि देव गर्बारचों कंगीत हैं। वो **बाद** ने उन पर कनुरोध किया— १. बेविक काल में आप सोगों **बो क्वोतिपाना शान** व्यक्तल न या त न साथिल बादि का हो

सस समय काविष्कार हका था। ३. उन्हें अतुत्रों के पाकतिक चयत्था व उनके निक्स भी जात

स वे ।

४. क्रान्ति, वाय, इन्द्र, वरुवा श्चादि की अवस्कारोंके देवता सवक का शार्ट प्रमाण काले के जिस है का प्रादि करते वे ।

 उस सबद सोमनाय बहुत बी मादक देव होता था वसे पीचर बै दर्श के गुरा माने समते वे । ६. जहां प्यंपरिवस दिशा में

सामा था, वहां के श्रीय ओग कहते है कि पानी से सर्वे निकतवा है क्रीट फिर पाली में ही तक जाता है। इस्यादि इस का परिवास यह हका

कि निश्चित व्यक्तियों को संप्रे में शासकत के विद्वार्थों के बनावे निकर्भ, पुस्तक-संघड बादि भी शारों श्रमाख । श्रीर पुराने नेद, नेदान्छ, क्रम्रस्थम बाह्यस्य, स्पृति क्रादि प्रश्वी की प्राप्त भी भी बना।

**वेधे अधार में** बस्तीकर्ती जनाउत्ते के सामा में एक श्रापि ने सिंह तर्देश

ज्योजपी माध्य श काल ऐसा । खार्डसमान के जपनार

स्मक ही वने रहे ।

मिल ने देशों से ही सभी खराशलों

से सिद्ध काने का प्रवतन किया :

# वेदों का यथाथे भाष्य

( श्री भित्रसेन जी आये एर० ए०, साहित्याचार्य, ज्वालापुर ) \*\*\*\*\*\*\* the matter of vedic inter की 'मेर सब सत्य विद्याद्यों का pretation, I am con-पसक है। ' तारकाकिक असला से vinced that whatever वेवों पर वपरितिसित स्नाचे। दह-राये । श्रीर प्रभागा त्वरूप सावग्रा may be the final cominterpretation. महीधर, राक्ट कार्रि के भाज्य मी रुपरिषत किये । उस समक्ष ऋषि Devenand will be honeured as the first dis-ने उत्तर दिया कि 'सत्य विद्याओं के आनते के हेत् कावश्यकत इस coverer of the right बात की है कि सन्त्रों के स्थार्थ clean. वर्षसममे अवें वसन यह चर्चात—केत साध्य के सम्बन्ध

बठिन बार्ध है। क्योंकि वेद मन्त्रों कें. मेरा बह पूर्व विस्वास है कि के झनेक कार्य है। किसी भाष्य-क्रानिम निर्खय के सर्थक्र पूर्व क्राप्त बाहे कोई भी हो, परन्तु क्तों ने कोई वर्ष करनावा ते द्वानन्द्र साध्य सब से प्रथम किसी ने कोई और इस एकार से क्रमिन्द के शब्दी में बेस स्वस्था-क्षेटि में प्रविधित होया..."

टिकंग्स ए० नरदेव शास्त्री. शाचील भाष्यकार्धे हे बेट प्रदर्भ "वेद और वार्व समाव" माण्य करने का प्रवत्य किया। शीर्वक क्षेत्र में क्षित्रते हैं:--किस इन सथ के बेट शायद पटने के "श्वामी दवानम्ब बी ने बेदमाप्त परचाम वेदों पर शक्का नाहि सह भी किये हैं। ध्रीर थपने वेदिक मक्ती। इत सहस्रकारों के बात बाजों में पूर्ण प्रवत्न किया है कि सार देशे से चीर्गाकट दशकों. बेडों में से इतिहास की गण्य न शोबांस बच्चा अब के बॉब ब्या बाने पर्व. उनके भाष्मों को देख तया प्रतिरव इतिहास का दर्शन बर लाह प्रचीत होता है कि सबकी विद्यासान है। महीधर भौर प्रवेद कास्त्रक बड़ो चिन्हा लगी रही के प्राचानवादां भी स्थाना प्रसार कि 'केट सद सत्य मियाकों का

पस्तक है। "और इसी बाद की सिद्धि के सिए छनका परम पुरुषार्थ वेसे समय में द्वार्य समाज है रहा है।" संस्थापक ने गुजराती होते हुवे भी कवि हे हेर सामा हरते समय अपनी शैक्षी इस प्रकार की झपनाई- इन्हीं क्याँ से वयुक्त होता है। देशों का संस्था सभा किसी में भाष्य कर हे केंब्रह जगत में कॉनि वैदिक सब्द योगिक है

उपस्थित ही। शतके प्रकाम के बन्दोंने देवों से बाबे समस्त परियास स्वस्प वंदीं के प्रवि राज्यों को वीरीक साना है। घरने जनता की लडा, विस्वास, प्रेम परम्पासन क्यों को नहीं बाप-पुतः रूपण हमा । कश्चीते यञ्जीह ताया. यही श्रमाखी बास्ह, शास्त्र-सन्पूर्ण और ऋमेंद्र के समझ संदर्भ टायन कर्शद ने भी क्रमनाई है। के ६१ स्ट ३६ का मान्य क्या। निरुक्त में भी बढ़ी पर्श जाती है। विविधाल की प्रशंसा में होती उव कि सावक काहि से परस्था. करविन्द पोष किसते हैं। "Eo या सर्वों को 🗓 अपनाया है।

तथा पुराख, इतिहास, स्वृति बार्बि से बहबी पृष्टि की है।

वनेकार्यकी शंका ैदिक शब्दों के वौरिषक साजने पर बह रांका उपस्थित होती है 🌬

अत्येक शब्द कानेक वातकों से बन सकता है कीर अनेकार्थाईह धाव: के बाधार पर अनके अनेकार्य होंगे धतः वीर्गतः अर्थे सार्ने तो एवद शास्त्र के सिद्धान्त से वनकाश्रमकात नहीं हो सकता। उत्तर में निवेदन है कि शब्द समानार्थक वा नामार्थक होते हैं और ने चिरदास के प्रदोस से जिल द्वारों में सीतिह इहि से स्थिर और रूद हो शते हैं वन्हें ही प्रदेश किया जाता है। इसके प्रति-रिक अझरण और विशेषक की भ्यान में रख दर बीतिक क्षमं इरवा:-ही विचित प्रतीत होता है। बड़ी कारमा है कि ऋषि से पूर्ववर्ती सुद्ध माप्यकारों के शत 🛮 अनेक सर्वो जें यह भीर वह सामग्री, पात्र ब्रादि का वर्तन है परन्तु महर्षि की रीको में बक्क की यक-एक वरन के बादर प्रकाश क्रीर उत्तर क्रां प्रवीत होने लगवा है।

त्रिविध परिका

वंदी का कार्य शास्त्र ने तीन प्र'कवाचीसे माना है प्राव्यारिसक. व्याधिर्गाएक, और आधिनीतिक, सक्षषि ने भी इन्हीं त्रिविध अर्थिना के अनुसार कार्यकिया है। परन्य वन्हें भीर भयों के साथ-साथ बाज्यातिक धर्मवितेष सव से र्शापधारक उनके सन से बह्न शब्द

ऐतिहासिक सैसी मान्य नहीं महर्षि स्थायन्त्र के मत् से केट में एक भी ऐसा स्**यस नहीं है। बडा** इक्तिस्य हो । क्षत्रि प्राक्षती साधाः कारों के सब में बानेक क्रान्तिक इतिहास, वैवस्तिक इतिहास है. जिस से देर सर्व जातिक स**ो**र सर्ववरीय नहीं हो सक्ते । धरशाई

(सेप इस्ट १० पा)

maj & Rigved is the old-

nat book in the library

# वेढों की महत्ता

(सि॰-श्री एं० धर्मवीर श्री देदालंकार देहती)

#### \*\*\*\*\*\*\*\*

of mankind इत्यांत गावयो अधा स्पष्टरूप से ६ मोद की सान-संपर्धी गरस्थात् । एक सद्विश क्षेत्र पुराकतस्य में सब से खांचर वहपा क्रस्यमिन यसं मार्वारहपान

क्षवीतता को स्वीदार क्या है। Teachings of the Vedus अक्ट प्रम के ईसाई तेलट पाररी . किशिया केर की ऐकेश्वर पुणावि विवरत उप शियाओं से नहां श्रद बर्धायत हुए हैं कि उन्होंने वैदिक शिचाओं को एक प्रशस्मित शिवतीय झाल का परिस्ताम स्वीकार किसा है। सनके बापने शब्द में हैं करता है। केबल बेद ही है जिस We are Justified, there में करवल मात्सर्व शब्दों में fore, in concluding that the higher and finer con experien of the Vedic

प्राठ सैक्समूल्य ब्राव्हि विद्वार्गी बोड कर बौर कोई पर्य-०-४ ने कापनी भरफ से पूरी कोशिश की है कि किसी तरह देवों से एकेरवर-बाद न सिद्ध होने पाये, पर **व**्यतिस्था से भी सर्दे यह खीकार केरना पड़ा है कि वेहों के बानहर किसी २ जगड पेसे लक्ष्तीर **प**र सकेवर की पूजा का विधान किया है कि इस से इन्कार किया 🛭 नहीं सा संस्ता । ऋग्वेष् के ब्रिश्स्ययमं सक्ष का लिवेंश करते 💷 वे बडते ≩ :—I add only one more tremm (Rig 1-121) in which the idea of one God is expressed with such power and decision that it will make us hes tate before we deny to the Arvan Nation an instincation (Veda) is of all the monotheism (History revelation the only one whose ideas are in per of Sanskrit literature) [7]

Aryans were the result

of primitive Divine Re-

weistion

4781: 11 4E. 9-556-95 ation of the world, झर्योग वो देखाओं कामचा वस वस... वहें बादवर्षे की बात है कि बिठने स एप बरेक एव देशों के निध्यक्षपात भी इस समय ईस्वीय झान के शास **ज**न्शीसन से हमें पता सगता है से प्रसिद्ध प्रन्य सिसने हैं। तस से कि केवस के हो है जो मत्त्वमात केवज वेद ही ऐसा है जिस ॥ की सर्वतोप्तसी चन्त्रति प्रयोग **Has**-विदार बामुनिक विद्वान के सबंधा monious development भागकत है । वैद्युष्ट, व्योतिय, हं शाधनों का साह रीति से उन्होता

वर्तिक रामा कमीनमार पार वर्ती में मनुष्यज्ञाति का विभाग संसार की समस्त्र कांठाईयों व कांत्रन समस्ताकों को बाब बर के किसी भी प्राति के सामुद्रिक जीवन को रकारा काला है। मुख्यस्य-मना सम्बा है। वेद की

केल जरी है जिस में बटा चौह तदे, ज्ञान और दर्य मोग धीर श्वरता का क्रम्बन्त सन्दर मेल बर के मनुष्यमात के लिए एएयोगी क्रियात्मक सध्यसार्गे का सहस्रव से प्रतिपादन किया गया हो । केर के शिवाय कोई ऐसा मर्न्स पन्त नही जिस से केवल न वर्ग क्रीर भाषा का क्रवित शिक्षान को भो सूत्र कहा बासके और बिस में विकास व अक्टूर्व नियम विनद्ध वालों का सर्वेषा क्रमान हो : वहां तक कि एस में **श्रीं**त नृष्टिकन को देस कर देश-वियट सरीसे प्रांतीबी विद्वार विसर्व हैं—Astonish-

science as it proclaims slow and gradual form-Physics, Chemistry, afage विज्ञान कार्वि थनेक विद्याबों स सल देवों में त्यह तौर धर पासा वाता है। शक्षिद्ध वार्व विद्वान krit was the one language बा॰ धर्म देव सहता ने क्रम्सी Positive Sciences in the Vedas में इस विश्वय पर वहुत क्राधिक

अब इस सावा किसान के इस

सिदांत को इहि में स्वते हैं कि

विचारों और सावा का जिल

मी मूल ईप्लरीय मानबा पहला है भीर उस के भाने विना इसारा गञारा चल ही नहीं सकता। देवर नामक यात्रादिश का कथन है-Withowt language man could never have come to his resson and शेलिय ने बहा है - Without वेदबाबी होती है।

ing fact, the Hindu Rever language it is impossible to conceive philosophical, may ever say human

किन क्रम्यानिकालको दिन्त: स feet harmony with modern होगस का स्थल है – We think

egr ≹--Words make ties pattern of thought. after विद्वान सैक्स सुसर ने इस सिक्रीय को प्रदास व्यक्तियों से सिद्ध करते av इसे 🖷 सारे भाषा विकास बीर दर्मन शास का सामार का सरकातिक विसादिया कि-We think in words must become the charter of all exact philosophy in future, बाधाओं के तसशालक बन्धीतम से वेदिक भाषा भारतीय ही आधित तुसरे देशों में प्रचलित सब आवाची की भी बननी है स्था किसी समय वहीं सब देशों में क्षेत्रेली जाती थी। 'बाप' इंडिफर इत्याचि प्रसिद्ध भाषा विकानियों ⇒ m At one time sens-

spoken all over the world. काहि मास्य शिल कर इसी का समयंत्र दिया है। ऋग्वेद में बड़ा है—यस्मिन् विस्वानि कारता चले नाभिक्ति निताः स्था **प्रमारमा में सब वेद रूपी श्राव्य** वेसे रहते हैं जिस प्रकार चक्र में नामि रहतो है। देवरर पश्च करन्त्र सम्बन्ध है जेसा कि निम्मतिकित व क्रकार व बीर्वनि प्रसार**मा प**र विश्ववीं के होतारें से मालूम होता बह बेडम्बरी काठ्य देखो, बह समी देवच इवें स्वष्ट कर के साथा 📰 मरवा नहीं न रूमो जीखे होता है। वह सदा बद सा ही रहता है।

कान का बीज साष्टि के बार्बि कें दिया शाता है। ऐसे ऋषि जो क्यं काय के दार्गें से भावने आराप को इत्सा पवित्र बना युके हैं कि उत्तका झन्तः चच् स्त्र गवा है का ध्यसानका की कारणा से इस पश्चित ±ात को कारने विसस **इदसीं** इसा पीते हैं। उन्हीं की वासी

त्रार्य सज्जन ऋार्य जगत के ग्राहक वर्ते श्रीरों बतायें

बाव दिवा है।

भी देकपन्द जी रीदर

ती बेहर फंच की प्रकास

.. श्रीरेश प्रकार की बहुत

... समाराय स्वतंत्रित जी

्र वर्ग रेक्सल और

भी बार्व न दास औ

भी इसे देव को

,, सक्दल श्री

शहर में

25 श्चर्यसमाज चौक फिरोपर शोलापर समाचार (१) साथ समाज शोसाचा के सभा के वेद प्रवाद के लिय जसाही क्यार मन्त्री की संतीकात जिम्बिशित सब्बर्धों ने की बका जी एवं भी दानसिंह की कार्य के प्रचार व प्रभाव से हो शवसकरों ने. क्की समाज फिरोजपर शहर १००/-विसार प्रयासन्त तथा सक्राविका-200/ ताव में प्रवित्त शोवर वैतित प्रमे ₹8/-की सेवा करने का शिक्क किया 2/-है। दोनो यक्त्रों को हिसार मेश 2/-विका गया है। इससे पूर्व भी ¥[-**२६ महत्वा**री हिसार भेजा गवा ... बसरावाची बन्मा रहवीचेट १०/-है। ३ मध्यर व तीन दीनातात से 2/-पश्चित्र धराय गर है। uf-R/-(२) कार्व वुवक समाज के

ू सुरव कास वी ू राज कमार श्री 3/ सत्संग में कालेज के संस्था अवन .. असाहर काथ जी 21 में महाराष्ट्र के ध्यान वेश, जान्त्रो ... जिका की 11/2 के यम्बीर विद्वान एवं साय-वेंडिक .. देसराय बी मसीन 3/ कारोज के कि भी बागेबाडीकर ूराम नाम भी अप चेंका 3/ भी का कारकन विद्वशालकों तथा <sub>स</sub> देवराम श्री 3/-तसावशाली माच्य इचा ।

... मेहरपन्द वी करारीया 3/-—राजेन्द्र 'विक्रमु' प्रधान **€..** महवा शी w/-.. ... साइनसास मो३सू मध्यीर/ मार्व यक्क समाप्त ्र वरका सम जी<sup>-व</sup> ₹/-9/.

बचाहे ... देश बन्ध जी 1/-... कोगेन्द्रपाछ वी 8/-प्रादेशिक समा के हैव क्सके ,, स्टबन्द बी 8/-भी पं॰ जमनादास भी **के** सपद्र सी ... केर श्रष्टाश जी t/-सिन्दर:म भी शर्मा रम. य. एवर

... सरेन्द्र कमार शी 1/-क्सान में दसीलें होकर राजग्रदिका जिला कांग्रिकारी क्रियानने स्टब्रंडकीय ... बढा शम भी ų. काकित्र फरवाड़ा में शोकंतर पर ... विद्वारी काल वी 97-पर नियुक्त हुए है इसके शिय .. सम काल भी मांगी 7/-कार्यकात की क्षेत्र से की है. 200 कार ५-वम खुक

बस्थाताथ जी सका कालीता इंचार्ज के डार्किड कराई। क्रालेकात कार्जित विशास फिरीकपुर 383/-बी वे निकोफ कर की राजनी 225/-**हो. ए. महोपदेशक शदेशिक स**था **प्रका**ण रामा मंत्री

के सरक भी दवानन्त्र भी संस्कृत श्री मास्टर ऋत्माराम जी की एस. व. की वरीका में २४१ असर डोकर फाट विश्वीतक धारा की मचित्र जीवनी तक बात यह है कि क्यमंदतीय क्षे है । कार्वअग्र की कोर से शासी

सल्य 1.65 N. pक्टाक व्यव सहित जयदेव बदर्ज आत्मारास एव

बदोदा-१ से मंगवाए।

efective Engineer वी को प्रतिकतः क्यार्ड । Sapgrur के कार्यक्रम के कर्म-चारी कहा में ट बाहते हैं यह भेट

श्रति में गान करों हे श्री सरर एम०ए०

नक्षत्रों से बासोबित वह तथ का शंकार. हरा समाबह तरेह फ़ला, काकी का क

प्रमा का साना सक्तव स्मित् प्राध्य संबद पर.

करत वार्थी का शुक्रात भट्ट विश्व विकासका। र्राव मानि की बज कांश विश्वीनो रेव दिना की **चेन्द्री-डी** सरिटा का बस का-का इसकात

बीरम परिव वस क्षेत्री के स्राच्छ ब्रांक प्रदेशकों ज्ञान्त परिष को बीट क्ल

व व्यक्तिको है यह काम जनीरज शास्त्र के बाबानंदित में शरीर को प्रमांत्रा । कारम देश कवि को बाबो, कवि जान सको रे

वसके दिव्य गीवी को एटि में मान करो दे।

वंज्ञाव सरकार के ध्यान योज्य

बार्य समात्र शासक का सन सर २,००० ही हजार उपका किराये की बावत शिक्षा किसान के किस्से बास्त्रे से स्टीट उनका विभाग वह रक्षम देने को तैदार है परन्तु इस के किये इसे P.W.D. St NAC of Reseasable rest सर्टिंग्सकेट व्रकार है क्षिप क्षत्र से समासन कर हैंसे आयी के की शरासम पीते हो हुई से किसा पदी हो रही है धान्त से जिला griverit. P.W.D. over all

पार पत्र GIV 64787/18.9.66 GTV 6278/18, 1, 64 CEV 45164/9.4.64 wh GIV 51888/6, 5, 64 feite at ur किसे सर्टिफिक्षेट तो बना विकास वा बाद दिसाने के बादजर वध शाबकर कह नहीं मिला में स्वयं भी जारोकत कार्यालय में तथा ग्रस्त केंद्रे की टरफा दिया गया

हे कील? शिका विश्वास के पास की प्रोक्षिक नहीं और अपने समान येसे आह्यार के विकास है विका सेह के बकावर पत्र नहीं सिक्का और विना प्रमाण एवं के सार्व समाज का किराया नहीं सिक्तवा (ज भी मन तेल होगा न रामा नाचेशी बार्व समाद को इस रक्ता <del>वी</del> वस्त्री दा समाध बक्तारा जाते। वदि सरकार के प्यान भ्रष्टाधार की

> रान्य नहीं तो इसारे उपरोक्त वर्तिकरेड बिजने में देश क्यों । मोइन सास गुधा

#### त्यांद कार्य समा**य राज्यां** श्चर्यसमाज हिसस हा

#### नुनाव

ये सा.ध्यापन डो---अस वराजाय की--- उपप्रधान ची. शरबन साम्र जी—उपश्चान अन्त**काल कार्य-मन्त्री, श्री श**र्थ-होत्र जी-नवग्रम्थे। वंश्वकारम्थ शमा जो-पुलकाम्यक, समस्य वरजीवान शी-कोषाध्यक्ष. ची शंबरवास जी भाषे-धारीसर -- नम्हाद मणी

बारक व प्रकार की अनोकरात जी कार्य प्रारंशिक प्रविभिन्न सवा पंताय कारण्यर वंश्य कीर विकास प्रेस, विकास रीस कार्यकर के हुन्निय का कामधारत कार्यास्य महारमा हंगराय मन्त्र निकट क्यहरी जातन्त्र रहार हे ज्यारित माहिक-काय माहितिक प्रतिनिध क्या वेताह वासन्तर



ইনাজান নত ২০০০ (স্বাৰ্থনাইহিছক মনিনিম্বিদ্ধমা ওঁনাৰ বাল্লন্ম্য কা মানাহিক মুন্তব্য Regd. No. P. 17

पত চাৰ হা মুক্ত হৈ এই প্ৰতি হৈ প্ৰতি হাৰ বৃহত্ত

वयं २४ अकि ३४)

१५ भाउपर २.२७ विकार\_द्यानन्दाव्द १४०- ३० सगस्त १९६४

(तार 'प्रादेशिक' आलग्धर

## वेद सूक्तय: मिववर्गे त्रयो यशः

है परमहेता ! ऐसी क्या करों कि सुक्त में बचं :—शांक, तेत सर वें कीर यहां :—सुके यहा वाजा वह दें में पळवान कीति वाळा बहां। तिवंश कि तिन्हा कर पात्र न कभी बहां। यह

#### का पत्र व केशी वर्'। य प्रशाद तुमे दे देवे । प्रथी सत्तस्य सत्ययः

सीर भी शसाद कर दान देवें। जो भी यहां का परोधकार कर, हुत्व- कर्म तथा अध्यक्षात की सेवा का पथः क्षात्वन्द हैं, सुक्ष तथा समन्द है, वह भी हे भूमी। हुक्के श्राप्त कर में स्रोक सेवा में स्नारहों।

#### द्यामिव ह'इतु

वह सगवान मुक्ते पास इब-कृतीक के समाल टड़ करा दे। प्रसक्त है कुछी के लेते प्रसल्धा है, सूर्ण का क्वता है कही क्वार ही वह प्रभु सुक्ते जीवन सं, झान में क्या कार्जे से प्रसक्त हैंसें। तेतनकी करे।

सामचेदसे केंक्कककेके केक्कक्रियासा प्रथिप्यता—श्रीसंतोषगढाजी

# वेदा मृत

जल अमेचन मन्त्राः श्रोम श्रुटिनेऽनुमन्यस्य । खोम खनुमनेऽनुमन्यस्य ।

श्रीम् मरस्वत्यनुमन्यस्य । गोजि. प्र. १ सं. ३ म्. १-३

कर्थ — हैं क्योंएंस —कारकटेंस पनेत्रार । पूरा करते हुए मुझे (महुत्रारक) गुढ़ कहुंहुंस मार्थ करत कर हे गो। पान मुझे (महुत्राने, मेर्कारक हुआ के स्वाच्छा (महुन्यान्य) प्रकास की का समाद ही तिये मार्थ है (हुए समाची) मार्थ किया के क्योंस्ट्रार मार्ग्य । प्राथ पूरा कर के हुक मार्थ है (महुन्यान्य) मुझन करो हुए स्ट्रार स्था मार्थ करते हैं (हुए मार्थ है) हुमार्थ के कामार्थ के समझ हो, मार्थ कर हुमें करते होता हो।

भार——मूच श्रीवस थे विदेशन वह ताब विदे हात्री है । विदे साल देश है । विदे हैं । विद हैं । विदे हैं । वि

## ऋषि दर्शन बिविधं ज्ञानं भवति

क्कान को क्कान का होता है इसे कापने जीवन में सिवामा भी हास प्राप्त होता है, जिटने भी पहार्थों का इस परिचय मिलता है, उन का जंसा केसा भी हाम मिलता है। उस के हो एकाट

#### माने गर्मे हैं—क्रॉर वे प्रत्यचमानुमानिक च

शश्क धीर कञ्जान नाम से कहा जाता है । जो आन कांस्ता से देख कर पता स्थान है, उसे प्रत्यस कहा काणा है तथा जिस के प्रतिकाशुक्रमा किया जाता है, जैसे पुश्की देखा अस् कारत की च्याच क्रांत्रसात है।

#### सब डःसंच

बहु श्रीवन में सिसने बाल सुस कीर दुन्छ भी उभी ज्<sup>री</sup> का है सुस को देख क्<sup>री</sup>म के कारण की सुरे <sup>र</sup> का सब्द ही क्षानुका की सकता है भी का से

-- [30] a (62 mm

(क्लांड से कामें)

बार: तेर हे विशेषकादय से किस्पन् हो तहा कि 'बाकाव' राज्य का क्यर्थ शरीर रहित हो है। 'मीमतेऽ

स्थातिमिः विका-शिक-पहाप-काय --वेश्रे--वृद्धि **धवा**--वेश+श्व श्च⊹इति श्रवि वेचे--नक्कव---क्रात-तिसकारः । सदः स्वेध्य-शरीर की कल्पना वेस्टिकड तथा क्रमकाण में से फिला नहीं है। सब ४८ सदा को सर्कतापक, सर्व-शक्ति मान, निराचार, क्षत्रपट, प्रस्ता, सर्वान्तर्वासी इत्शवि खतेब आसों से कटने हैं, बड़ां बातवा व इप्रशाबिर चहने में जो कोई दोण जरी हैं और पासवत्त्वक में नहीं है

रारीर का सच्छ महर्षि गीतम ते प्याय दशंद में किया है कि 'वेप्टे-न्द्रियार्थंत्रयः शरीरम्' म. १। आ० र। स०११॥ सर्वात जिसमें चेव्दा-इथ, इन्डियों का भावत और अवीं का भावय अर्थात विषयों का श्राध्य विवा जाता है उसे 'शरोर' धक्रते हैं क्या न्वाय बगत के बाय्य से वालवावन अधि ने सी सहा कि 'सोगावतत ज्ञतीरस 'सर्वात बिश में ओमी को सादाव कार्ने मोगाजान वसे शरीर रुदने हैं। सास्य में कपिताचाय नेक्श--

'पानव मीति को वेड : 'बशास २७ व्यर्थेत (देहः) मौसादिसे वदित देह स्थल शरीर (पान्च मौतिकः) ਥਾਂਚ ਮਨੀਂ ਜੋ ਜਿਹ ਤੀਤੇ ਰਾਸ਼ਾ at सम्यन्त होने बाता है। इस पौरा-चित्रकों से पृक्षते हैं कि अवाप स्रोग को २५ प्रकार सामने हैं वका---सनद, वराइ, वास्ट्र, नस्बरावण, रचात्रेय, ऋषभदेव, वच, मतन क्न्यूप, मोहिनी, नासिंह, बामन, प्ताम, रामधन्द्र, वसराय, जी

बुद्ध इत्यादि अववारी क सही ये 1 क के निराकार सामार होते हुव कीतही में १ उन्हें या ने बाते होतांश विवि होता वी नदी शमिक चर्चा---

#### साकार निराकार-निर्शाय

(से०-श्री विद्यासागर यर्मा, दयानन्द गठ. दीनानगर)

रेकर मान्ते हैं तो वे छव कार्य ईप्रवर में नहीं घट सकते अध्वत सभुष्य में पटते हैं। इतः दे मनुष्य ये डेंस्वर नहीं । न ही परबेरकर की क्राकृति होती है। स्वीकि स्वाय वर्शन में यौतम सनि चटते हैं - 'आकृति-जाति विद्वादयां वर्षात् जो जाति को बनक जानि के समझे चिन्ही को बक्ट करने वालो है, वसे क्राकृति बढ़ते हैं। और जिस सी प्राकृति होतो है उसकी जाति मी होती है। फिर एवं बढता है कि वाति किसे बढते हैं ? तो न्याय में **पडा कि 'समान प्रस्वारियका** जाकिः' क्रायांत क्राप्ते समान वरां शाने को जी बन्दस्य बसने बासी हो, उसे बादि करते हैं। यसा-की से भी इरवादि समान आधार के ब्रान को प्रकट धरने वाली क्रवदा कारते समान वंश को रायस्य करने काको जो है. यसे वादि बहते हैं।

सही से अधित सतस्य से। ददि

उस की जाति होनी व जाति होने से वह भारते समान भारते हो देश्वर स्थान करेगा। अभेड होने से अबार्ड स्टाहे भी होते चीर तक ंस्वर भी *न रहा*, इस के मानने से ध्यवस्था भन्न हो जातो है। बातः ईस्कर को बाकति न होतो अध्यत

ईखर की चाकति सानने वर

ईश्वर भाइति रहित ही है। ईश्वर के सन्बन्ध में यह शहा त्राव कि---

'काविमध्य'च भरेप विश्वाल-मिवनस्थितम्' वह दक्षतं वरमेश्वर पर जन्मबा बाय हो बादा प्रस्केतर बाक्ता । नहीं हो वह बदाना श्रदिस

\*\*\*\*\*\* भाग निराकार है कौर कितना साकार । इन दोनों बावों से ईश्वर शिव्यत्त सीवाद्य हो शयसा।

> सीमिय हो बार्वेगे, बच 🕅 भोजकोन्द्र स्ट्रिस्ट में प्रश रावर कि—'परास्य शस्त्रिविविवेश वे उने लाकार्य की बाल अवस्थित व ।' चतः डपक्छ हर्षात के लगाने से ईंडबर के दोनों कर नाशवान होंने चर्यात साधार होने पर विराह्यर रूप का वाश और विराकार होने पर साकार रूप दा राग हो बारणा। कीतहस की बात यह है कि चौरा-विक्रियत में रेडबर के ब्राइस निराध्या वे हो ही सप है क्यी होतों ही : नागवान । विश् परनेश्वर के सन का नाशकान हमा। इस प्रकार पौराखिक विद्वान ईश्वर के साकार को सिद्ध करते?हस

के क्रांशिल को ही क्रिटा वैते । योग में भी कृप्य किसते हैं कि---सर्वतः रामियारं तत्समर्वतोऽधि सिरो**मुसम्** १

सर्वतः व वि साल्लोके वर्षमान्त्र विष्यवि ।। १३।१३ ।।

बह सब झोर से हाथ पैर काला वर्ष सब कोर से नेत्र शिर ब्रीम मुख वासा तथा सब झोर से धीत (कान) वासा है। क्वोंकि वह संसार में सबसे स्वाप बाहे स्थित है ।

गोल्बामी दूससी बास ने मी द्रोद ही दहा दि-

विनु पर पत्तह मुना बिनु काता, कर बिन करम कर्स विधि नावा । भागन श्वित सदब रस भोगी. 'सर | हो अस्त्या कि बरनेश्वर का बिकता | किनु वानी क्वका बढ़ कोगी । सुंधा जा सके।

वस विशु काथ, क्षय विज वेसा. बहुद्र प्राथ दिन सम्ब असेचा । अन्त सब सांदि असीचि करनी, महिमा क्या आई नहीं करनी।! जबकि की सुक्ता और से स्था

कुसरीदास की ने परसेश्वर का वासाविक स्वकार सो विशावस है उसको सन्मुख रका है फिर की वे पौरामाङ विदान <del>देशक या क्रांक्र</del> श्रीका कड तथा सीमित होने से बिटाने के पीछे हाथ बोक्ट परे हैं। उस के राज. कर्यं, स्थापाण भी को बोग ईक्कर के जिसकार

होने में सन्देह बाते हैं, लग्नें पाडिए कि वे ईस्वर के वास्तविक स्वरूप को सामने का प्रवरन करें। जैसे कि यजुर्वेद में कहा —'य क्यादि-वेश मुक्ताबि विश्वाः । मा३६।

सर्थात् जो परबेश्वर श्रमश्डम्ब खोडों में स्वाध्य हो रहा है।

'स क्षोरः शोतस्य विमृ: शत्रासा यक देशका सर्वात वह प्रसारमा विविध प्रकार से व्याप्य हुना प्रवाकों में क्योब-मोत हो रहा है। इसी प्रधार देशों में तथा उपनिष्यों में परनेश्वर के निराकार स्वस्तव का प्रतिकारन तथा निकारण किया हमा है। यहा इनेवाइवेकरोप-निषद में कहा कि-

सर्वेन्डिय राखामासं सर्वेदिय विवर्जितम् । सर्वस्य प्रसुवीहालं सर्वस्य शरप

बाब ॥ शस्य ॥ सम्पर्क इक्तियों के विषयों को

जाबने वासा है, परम्तु बास्तव में सब इभ्रियों से रहित है तथा सब का वहां शरख है।

भौर कडोपतिषद में सी---क्षणस्य प्रत्याने प्रत्यक्षणस्य क्षणस्य व तपाऽरस जिल्हम सम्बद्धत च वत् । श्रमाचनलं महतः परे प्रश् विषाया ग्लम्बाह्य सच्यते ॥ १३:१४ ॥

बढ़ मण राज्य नहीं, जो काल से बाना जावें, स्पर्ध वर्ता, जो त्वचा से घट्ट किया जाने, सव नहीं, सर नहीं, को व्यक्ति से देखा वा सके, बया इसी वकार रस नहीं बो प्रिकासे पसामा क्यें की वन्त्रवासा नहीं, वो अधिका से

हम भी सभाद भीर पाप का

सम्पदकीय-

# त्र्याये जगत

**वर्ष** २४ रिवे**वार** २०२१, ३० अगस्त १९६४ (अंब: ३४

#### धर्मसंस्थापनाथोग

बद्दात्वा कृष्यापन्द्र श्री सहा-शक के कई भाग और वर्ड सप हैं। ब्राह्मभारत के पड़ने से दनके पश्चित्र ब बांदरी जीवन का चार (चट का के बामने बार जाता है । उसी क्रमा कर कोराम की **पती प्रार्**श स्त्रका क्रिकी स्थान पर परमयोगी ती बड़ी कमेंथोमी, बड़ी पर ईंड्वर कार वेशे के परमध्यत कीर वही **पर** त्याग की <u>श</u>्चन्दर संजीन शिवमा। द्यम प्रकार सम्बद्धा सारा जीवन परि-बाद तथा साथे राष्ट्र के किए करण चरित्र वर्ष स्वारा है। प्रदि वर्ष काई क्की समाष्टकी का पुरुष पर्ध समाते हुए सारा समाज वस दिव्य विश्वति के अरेक्स राख्यों का गान करता रहता है। सहापरण समाज के बेदता, प्रेरका व मवजीवन देते क्टे हैं। क्रम भी जनके लीवन क्य इस्रामलम्ब से नामाविध वक्स (काले । मध्यमा है। काजा प्र अस्त्राष्ट्रभी आकर उसी सहात्या का भाग का बातो है। उनके बन्च क्रमी के एक क्या मसंस्थापक का सी निसता है। यम की स्थापना करते तथा अधर्म को समन किटाई के क्षिप दक्का समय तथा है। इस दंग से सनको उस वन का धर्मा वार्वभी कहा वासकता है। विचित्र हाक्य थी उस समय। श्रीध्य जैसा वीर परुष, डोगाकार्न बैजा शासमास्य का जारा. कपा-चावं जैसा गुरु, कर्ल जैसा एवं सारी परिस्थित को सम्राक्तने बाला त्ववं पतराष्ट्र भी समें के पथ से विचलित हो गरे े से । यन का स्वार्थ प्रधान वन शुद्धा भा। दीपती का भरी सथा से लेल काप मान, कापर्स का सबंज को ज

' याला देख ६२ भी क्रांक्षें कल किर थे। धर्म को स्वयमें ने सर्वन देवासियाया । भन्ने का स्थान थन में ते तिया था। यमें के कन-कूस यन न या यसन् धन के इशारे पर काछ क्स के समाय वर्म कीर ! जाता है। आर्थ समाज पैदा ही वाजिक श्रोग नापडे थे । धन ने विश्व देश की सिर है। सभा का पर्स रहे धर्मकाकों की सरीव कर । लो अर्थ हो वही है कि देव प्रचार पन को कन्या, बॉहरा तथा सुमा के शरा बन जल तक पर्स को यना दिवा या ! सारा कार्थ पनमय 'सन्देश वह वादा आद । इसके दन पुरुष था घन की सहतो में <sub>लिय</sub> प्रचार**को के** सरदक्त की सद कासन कुछ निक सुरा था। क्षाव्यक्तका है । कनको भी पतन की पराकारता की।

धर्में की स्वापना के लिए मैदान में त्रतरे । कन का यह अवयोध था---वैसावनी की रहा करने इस्टों. प्रत्याईवी का माध्य करते. एव ध्में का स्थापन करने के खिब सर्वक्षेत्र में छक∗ता हूं। क्रिम का भी द्यापने व ऋषभी से सहयोग क्षेत्रा इस से मैं टक्कर संसा। थाडे बद्द कोई क्यीर विजना दक्ता ही अपना भी बनो न होवे । ऐसा ही किया भी । एक २ को पुत्र कर दक्षित विचा। धर्माशास वत का शब्द को प्रक्रिया कर उस का शासन भी पर्यपत्र को दिया । भारत को धर्म क्षेत्र बना दिसाधा । चन का धर्मसरमापड के <sub>नाले</sub> बद्द धर्मीचार्य हा रूप इसे यहा ही प्वारा करता है। तुनी भी काम भर्मातार्थ भी हैं। काब फिर देखी

शमाज अपने विशेष दमान है

हाता फिर वर्स को ब्यपना वही

सभा के शभ-चिक्तिक के विकास की 

कार्य प्रदेशिक समा से है कि इसे यहे क्सी शक्ति कारमा से ही एक विशेषता रही है कि विकारों में समय २ पर भेद तकट होने पर मी परस्प**र भनों** मे क्यों र की होता है। सारे सिलका सभा की वन्तरि में समे रहते हैं । वह वन भाग प्रधान है, भोगों में ৯৭৯ৰ লয়ায় জী মছিল ৰ স্থি र्र । यही है अस्ता सभी शामी है । पर्मं की कोर कम भ्यान हिया ं विशिष्ट-तः **ब**रने के सिए सापन ती रेसी कशस्या में महारमा क्या 'वाहिट'। बास्टव में यह काम सन्धाfauir miaefesit un faisure क्षोत्रों का है। पत्न सन्त विरहे के बाववाज धार्मक्यो पर ही (कारते बच्चे हैं। को विशिवस्त भी ं कें प्रतदों को इसरों से भी अधिक fure: है । प्रकार व बने तो कीत f च्चरते परिधार से फिसी को भी कोई प्रचारक चेत्र में नहीं बासना पाइटा : सब पाइट है, इसरों के उदह प्रचारक बनकर धर्म प्रचार चरें। फिर भी समाज का काम वभावराक्षी है इसका गीरक है। पाचीन स्थान विकाने के सिव भाग्दोसन कास वाथे। यन भी

बडा जरूरी है। इस के विना भी गड़ी नहीं चक्कवी, परन्तु इस पर पर्संकी बेक समाजी है। प्रश्नं थताका निमन्ते न देना। आग्राहस रसाराम जी पन, ए. समा के किए मनस्या हो रही है। धर्म और 'पने पर अस दिश्य धर्माधार्य से बीडे फिरते हैं। यह सब देश दर थर्सी टडेर को विकरते हैं स्वांब्याल समाख छसी असीनस्टा के पर पर्य का कंद्रश नहीं है। कार्य | किय शब्दों की बाओ समादे— सन १६२० होता है। सारे कालेज. लाक. समाजें व सदमा भी वृद्धि धर्माचार्य की कृष्य कतर रहें। ऐसी क्या करें तो क्यी क्या है।

विश्वक स्था है, । बदारता से सभा अपने कर शसन करने में सुधम हो उसे कार्य जगत के तक्ती बहारमा द्यासम्ब स्वाभी भी भद्राराज के आने क्सिका मस्तक श्टासे का नहीं होता ? समा को सवा सहयोग वेते हैं। यादे वर्ष विषयसम्बद्ध में अपनी डाथ रसते हैं। अभी र आये क्ष्माक बकीरबास शिक्सर से हो हजार not wer it funet feit fi कार बान के क्लांग्र तक का विस को श्रद्धपा देने काला क्रेस 'भूसे की भीवन वी' विसे प्रभावित नहीं करता। इसी प्रकार थी, ए, वी, कालेज जालबर के मान्य विश्वपक्ष र्शाइन भी भरेताली बहुत ने बापने कालिय से बाहर सी सपये कथा आपना कोर से यह सी जास कर तरह की की शांश दी है। बी. ए. की. कालेक क्रमृतसर के मान्य विस्तिपत भीवत सी. प्ल. करोडा ने भी एक हमार ही राशि समा को भेजी हैं। टोशना देसभा प्रेसी भी नवलाम जी राधा से इ.पका की क्षणका नका जल के भागा की किस्स साम औं जे देद की अपया, इस प्रकार दर्श भी की साहित विश्वकाई है। 196रेज पर चौकसमाज के मान्य प्रधास की हा. सेहर करा भी बावराम ने श्रपने समाज के संबंधना तथा माता भीता देशों की स्त्री समाज के सहयोग से पांच की इस्तावन रुपये में ट (करे है। राष्ट्रीरी समान के बाहर आहे बाइको ने भी पांच की रहते केले है। स्थेबा से भी की इ॰ मिल है। सभा का बचारक सकत करोर स पराच्या है। समा के सदासाओ भी यह आन चन्द्र जी आर्टिया रैकिक रूपसे सक्त कार्यास में कार्या समय दे कर समा को हर प्रकार से जन्मत करते में बहे हुए हैं। माननीय प्रधान शिक्षणक व

—त्रिसोक चार

—विश्लोक चरर

हो गवा 🗎 'बक्सकुन्ने स सिद्धि भर्व शरीर रहित हो जेस से सोत म्बादिनिः विकाशः वा सुवार हो) —देहे—वर्न स्वाभाविक मुखों का **स**∔क्रिंशसका होना ही वस्तु की 📶 हो त्विर रखना है, बया तेन श्रीर चप्ताता समित का पत्रं है बहां यह होती बहां गर्भी कीर तेल द्वानाय होता । इसी प्रकार मनुष्य जीवन के क्षिप्र शुरोर के श्रम और नावा है परन्तु वरि होई श्रंग कर आये तो सनुस्य कोयन

का नहीं डाया हो शयाओं के न रहते

पर मन्त्य कहाचि जोविन व रहेगा।

प्रात — जीवारमा क्या है है

तमा --जीव प्रात्मा एक मार्नेत सना है जिल का प्रश्ने बाज और इवस्त है जबा कि शस्त्रों में जिला है। (इन्द्रा द्वेग प्रदान ज्ञान स्रज इ.स. घःसना जिलांक) च कि तीय करपत है चत: अपने द:स्ते को इर करने के खिए झानन्द की प्राप्ति हे : वह क्या करता है और आयायस्यकता का होना तथा उसकी पुर्ति के सावन का न होना हो दःल है ।

ावन—श्रीय **प्रात्पक्ष क्यों** है ? प्रसा-एक बेजी प्राचीत परि-िश्चन होने से (२६ हाझत में त रहते वासा) । प्रदन-जीव दःखों से किस

प्रकार जुद सकता है ? वसा-परमेजवर के बाजने भौर उसकी बाहानुकुत बनने से । पहल-ईरवर एक है वा क्रमेक! प्रचर---ईडवर यह है जैसा कि

कायवें पेट में जिला है (स: २% यदेक एक) और सारे संसार का एक मात्र वह पति है कीर सब क बन्ध प्रवास्त्र-वेद है स्वा 🖩 दल करत का निर्माता है। क्षत--ईरवर के होने में स्था

अभाग है ? उत्तर →(६) संसार में जो की निर्माता होती हो ति:सन्तेष्ट स्ट

कार भी बनी हुई है उसके बनाने अब श्रांग्डें के प्रति जान रक्षती कर-

## सच्चा धर्ध

(ले॰ श्री मदनजित जी आयं किरोजपुर शहर)

**美观览电影电影发展的变形的影响电影系统** गक्त क्षवरन होता है जाहे वह वस्तु हमारे सामने न मी बनो हो. वंसे रोटी, स्वतीने, मेन इसीं, सदी ब्रादि इस्ते आंति पन्दर्के को इस शव: पदने हैं दसके वेकांत्रों की यशिक्षम ने नहीं देशा इस पर भी यह स्वीकार करना पडेता कि किसी ने इनकी खबाउउ ही विका है। संबार में दो पदार की वहतुएं

ट्सरो पशु झादि की चनाई हाई परम्नु कई ऐसी वस्तु भी बनी र्खान्तर्वाई पत्रती हैं जिस को त दो किसी मनुष्य ने स्वा भौर न दी पत्त पत्ती ते. बड़ है सूर्य तथा पन्द्र, पृथ्वी पहाड चारि । को हमारे पूर्वजों से भी पूर्व विस्तान थे। यदापि इस ने ताल सहल को नहीं देला किन्तु हमारे दुवंजों के बहने, जिलने यात्र से हम सीबार

इटि गोचर होती हैं। एक सम्दर्भ

दै परश्तु वे यह नहीं सोपते कि बर लेते हैं कि वह शाम महल भी किसी बहुम्य ने द्यवह्य वतावा होगा। इसी बकार इस सूर्व चन्द्र को मी कोई न कोई अवस्य बनाने वास है कादे हम ने या हमादे पूर्वजों ने उनकी सा चवा से न देवा हो। र्वे काप को एक हहात से

समभावा हुं। उचिकस्य छरीर पर द्विपात करें झाप के समीम वे क्षंत्र किस ने बनाये ? क्या आपने इस संक्षम में कोई ऐवा कारशाना देसा है बड़ी यस्था के संगड़स प्रसार बनते हों आप यह तो कह देंगे कि मेरी साला के गर्म में बने वासा कीन है ? यावा को तो स्वत पना दी नहीं होता कि सेरे सभी से तक्का है वा शक्की, काला है वा गोरा ? वदि शावा इन धार्मो

वा दूसरी वस्तु बनाने की शक्ति पूछं कर में नहीं है। कर्री सत्ता है अर्थात केल्प्स विज्ञास

सिद्ध हमा कि इन सम खंगों को विर्माण करने वाली कोई चौर शक्ति है जिस को इस दिनर बहते हैं। कर माई वह देते हैं कि वे

भीवें स्वयमेव ही बन जाती है उनिक इस पर ध्वान से विश्वास करें। सिट्टी से करतन बड़ा ब्यादि वनता है तो पहली कायरवा छिट्टी से कदा अपने आप भड़ी दन जावेया ? बदावि नहीं दाँ कुम्हार के झान में पड़े की दोनों सक्तर में व्यर्थात सिही कौर महा विद्यासन थी। इसी प्रकार इसवाई की दुसान या घी, लांड, मेदा इत्यादि सद सामध्य पहा रहता है। क्या भ्रापने धाप कमी मिठाई वन जाती है ?

की माई बढ़ देते हैं कि जैसे एड

बीव से वध नवस्मेव बन बाता

बदि उस बीब दी शक्ति विशय युक्त भी तो एक हद (सोसा) पर यह पतकर मारी क्यों दल्द हो बाती है ? सर्थात यदि भाग को गुडली में तने, वह फल फल आहे बनाने की शक्ति है तो पुन: बहु उसते में ब इसीं क्यों न बन गरे। इसी दबार विजीते से करास तक वनने में सन महत्यायें तो सद व्सक्षी जो कठिन वी भीर क्यास से जो करता स्थला द्वाराज कास था बहु दीव व दता सद्भा । वहां **उसका विकास क्यों इक तथा** !

र्थ्य मर्थ पड़ मो बड़ नेते हैं कि इंसार को बनाने बासी एक

धतः यह सित दश्मा कि किसी जो

वह बस्तु में अपने झाम गति हरते

काने के फ़िए बनाही गई है। वस्तुनः संसार का कोई रवियता नहीं। सा इस इस्त या नेकर से ६ गई: त्रिक वे माई स्थास चरें कि यह कुदरत या नेपर विशेष है वा रिशेष्स, मिर्माण है स निर्मित ? वहि ने दर उस सत्ता का नाम है जो संसार हो सर वस्तकों

को बनावी है तो पुनः ईएवर सम्बद्ध नेपर के नाम सात्र में ही शेष रह वाबेमा भीर यदि नेत्रर शक्ति नहीं वो बड़ किस बजा का नाम है ? क्या सुर्वे का नियम पूर्वेश ब्द्य ब्रस्त होना, गुझाय के पुश्य में डांटों का होना, सरीन स्त्र लंबना, बादु का चलना पानो वरसना इत्यानि तो भी कार्य ही रहे हैं वेबर शहर के मोतर शिव

गर नो वह निमित्त (कार्य सा) सब हो भर पुनः इन का निमाता कीन है ? वह विधारना पहेंगा। स्नाव **बल के बैक्कानिक जो सर्वदा प्रश्लेक** यल भी स्रोज में इसी रहते हैं टन्हों ने भी ब्यपनी श्रीवृद्ध पुरुष 'साईन्स पेंड रिलोबन' में पुछ ४५ पर यह शिक्षा है--

To sum up this part of our

argument we can say that scientake study most certainly shows us the presence in this physical universe of an order stability, Directing power and meeting ibility and Capability of being understood by us. These qualities are not spontaneously produced. They do not come by chance. They are not the result of more accident and intelligence. This Universe is not merely a thing it is a thought and thought

implies and reconsitutes a thinker. Rence there is in this Universe a supreme Thinker or Intelligence. of which our intelligence is but the faint copy and image

स्टब्स्य महस्त्रों हुए दिला है कि

जीरा शरीर भाग के दुल पर जिनना

पता है अससे वही प्राधिक मेरा

**प्रत्य व** प्रश्चितीशा माता करव

से हमें हैं। इसो परवह के विश्व

हो किएता गवा है कि जितने ठर्यान-

कर है वह मानो सीड हैं। भी

क्रम्याः स्थाभं इत्य निकासने वाला

म्बाला है। युद्धिमान व्यक्त

बक्त है। गीता धमत स्त्री उप

है। सितक ग्रहरशान ने इस पुलाङ

के बारे में सिला है कि वालों के

समात कामयोग पन्धमें पाल नहीं,

इस प्रस्थ में शोबारमा की निस्तना

**पर जिल** १कार प्रसाश डोली गया

है किसे धारव प्रश्व में मिलना

क्षतित है । जानयोग, क्सवोध, व

महित योग के रहस्य को संगतकर

दर्शाया गवा है। कमेबोग किलासी

भी अनक्षती को बाल सम्ब्री प्रकार

से इस विवा गया है। यह जीवन

पिक्सास्प्रीकी बाहितीय न्यास्पा है।

भी करत बहते हैं कि समय्य कर्म

वर्स में समे रही-नीवा में

### गीता और देश का निर्माग

(श्री जार्मास्त्र जी, नई दिस्ती)

देश का पतन हो गवा। देश वयो-गिक कवि, बार्विक, स्वापारिक व राजनीविङ और पर बल्होन हो गता धीर किर दासना की वहिक्षों में बंधा रहा। इसरे देशों ने ओ मान्य वर नहीं बहित सकते वातकत व वित वर जिल्लाम रक्तते वे परिश्रम किया और इसके पता-शक्तप उन्होंने पहाड़ों को चीरा नरियों पर पन कांचे. समर्दी की लातो पर तहाल चनाये. विजयी को सेवड वजाहर इससे गाव प्रधार की सेवाएं भी, विज्ञान की सारी उन्निंत परिषय व प्रशास का फल है। वहीं जावियाँ अर्थात के फिला का बहांचती हैं तो परि-वस करती हैं । सहाबटों द विपरीत रास्त्रतारों हा सीतः रात्रात मदावता बरतो हैं भीर बाएफतटा से हतोहास नहीं होती । विसी कांव ने टीक बड़ा है-

को बरते हैं दनियां में मेहनत प्यादा। करने हे दिया रह ही नहीं सहता। इस्से दरश रहा स्वास स्वास है है देश का जबनिर्माग हो रहा है-बाद कात अवद्य दे कि मंदि राम-Parism प्रार्टिक के उपरान्त हमाने कार्य नहीं करेगा तो इस चाद की इस परिश्रम र परपार्थ के स्थल क्रमावना है कि वह करान कारो को समस्य और देश के निर्माण का संकार किया। इस उद्देश की की कोर बाक्य होना । आने वह र्शत के सिर बोजनायें बनाबी गर्बा कारते हैं 📓 मतका का वर्म है कि साम करे. परिश्रम करो । इतियां हैं. वो पंचवर्णीय योजनाएं एर्ग हो में परिवय कर के अपना राला गबी है जिन पर समधन साव हजार करोड़ सबवे स्वय हो सबे **मिन्डा**लो । श्राजल्य व समाद का स्यागदो। सीनेडरू की का भी हैं। शंसरी वोजना चाल है जिस यही नारा था कि 'काराव पर इस इजार हो 🕅 बतोड अस्बे के स्वय होने का सनमान संगाक

यता है। भाक्षदा बैसे बांध चर्चि

क्षे हैं। सहरों का आब विकास

बारहा है। उस के ध्रमात से

रेनिस्तान को 🖭 इकाके हरे भरे

हो यथे हैं। धान्त की उरल बदाने

बाचे वा रहे हैं। संदेश वैधार करने पन का वितरण समातवा से हो।

मान्य नहीं प्रवार्थ हरूव है---बनुष्य धारने भारव का निर्माल है। बैसा कम यह दश्या है वैशा · ही फत मांगने का वह अधिकारी बन काता है। वही उसका मान्य बन जाता है। जब से इपारे देश के किए नवें नये साधन नव्योध से बोर्गो ने परिथम करना होत विवा.

हराम है ?

के बनाने की फेस्ट्रीयों कर गई हैं। तेत साफ दरने, रेज नादिश इसन, मोटरों, इसई सहास क क्रव सहीतों के बताने से कार-काने काफिन किए गरे हैं। प्रश्नवा किने बारदे हैं। विज्ञती का ख्याहर समाने के विमा *प*ि प्रचन्ध किया गया है। सहे-बड़े बता उद्योगों के क्रांतरिक्त घरेन व होती लोटी टरनकारियों को भी बटाया विवास रहा है। सागंग बर है হি⊀ব শীলত আৰু তিতা লা বহুব ों कि देश प्राथमी आक्ष्यक्रवाकों पग इसने के लिए तकी देती का मुद्द न देखता गहै। ऋगर हो सके तो पूसरे देश इस से बन्द्रणं स्थीत । देश में देवस काछित धन वैदा करने की योजनाये ही उसी बजाई वन्ति कालाव्या व शोशर्पायो को मी दर करने का श्रवन्य किया गया बही लोग पाने हैं प्रध्वन जहां में. है, स्थान २ पर अस्पतास स्थापित चित्रे जा रहे हैं। स्टब्सेंब कांग्रेजी में की संख्या में भी श्रतिदिन यदि गांबों की बरोर बिरोध प्रवास-रेश भेदा थीं सही सक्ते शब काल जनता यानों में रहती है। वन के बीवन कहार हो सन्तर ब्दने वर विशेष प्रयाद विका जा रक्षा है। श्रांत के जिल्लाहिलों के कारमधिकवास

देराचार की समाज्य रेटा की गंजी कामनारियों के बार में पर्जी को विक्रसमित विद्या । क्याँ कीर्यन भक्ते नाम पर पासरह **धीर** वाद का द्भवाजार गर्स किया हो कहीं *सर्व*न क सिए बड़े-बड़े कारणान अधारी सन्ताम पर घोटामात हर् थये हैं। कीसवाई लाइ व श्वाहवीं इस समय हमारे देश को वर्ड सम-स्वाद्यों में यह प्रस्कृतन अकृत्यार ज्यासन की है जिस की छोर से कालें नहीं बंद करनी चाहिए। वर्ति इस सदी मानी में देश का निर्मात करना चाहते हैं तो आव-शास है कि इस समय संशतार वद तही भ्रष्टाचार, चोर शाक्षारी व काद पहार्थी की बिकासर पर कवाई के माय रोक समायी जाए। प्रतंत्रच की करोबा प्रश्निकार पर वस न दिया बादा केवल भीति छ जन्मी से राज नहीं सब सहता। परित्र निर्माण के जिला हमारी ब्राजारी में सबरे में यह सक्ती है। इसी प्रकार आधा साम्प्रदायि-बता, जात पात, सवा पश्सी व स्वार्थे इत्यादि की बढ़ोतरी बहुत दानिकारक है। योग विकास की will from easily if wife forest. अन्य है। नेविष प्रसास शीस हो रहे हैं। कोई देश फेलस मडे-मबे अवनीं, वान्यों, महत्रीं व कारमानी में सहात नहीं हो सहता। यह सब बढ़ धानक्ष्य है परना यह थनत बाहरी निर्मास है । प्रान्त-रिक निर्माण अर्गात चरित्र निर्माख सब से प्रवस जन्मी है। यह प्राक्त-हीन पर मन्दर व विशास शरीर की कोई कीयत नहीं। ठोक यही हालत उस राष्ट्र की है जिसके लोगों का पारित्र विशा हुआ है । युनानी स्वावसंक्रम की भावना पेटा की डार्शनिक क्लेटों ने भी बढ़ी व्या है, राष्ट्र पक्षाड़ों व वृत्तों से नहीं जा रही है। जहाँ यह करने हो रह है कि देश में कारजानों की ।यतकी। वनते । बल्डि ध्यमे नागरिकों के वदे सन्त की उपत वर्श कर थे चरित्रों से बनते हैं। इस चरित्र दान किया था रहा है कि बतना क्रिक्रोटा के कार्च में भी करना मगवान हमा पन बोने से लोगों के पान ही काश्यदेश हमारी सहाहवा करवा है। इस्टा न होने शर्थ । ऋसीर हराका गीता में भगवान बहते हैं जिस अभीर व नरीब न डोडे आएं। बर्मणार्थन सप्ते क्षत्रं दा दशी

(शेष प्रष्क E. ?)

#### (गर्वक से मार्गे)

क्कार वेड् के विशेषकार्यको हु । हो गया कि 'सम्बद्धां स विजि वार्थ शहर रहित हो इस से लोब म्बादिनिः विका र का सुकार हो। १४०%(४८%(४८%)%(४८%)% —देहे—बंध स्वामाधिक मुखोँ का वं

बहसाने वालां का सकता स्थान चभ श्ररच र लगभग होगी. पर प्रातकर करोदों में होगी, वहीं ब्रोहार में ऋषा स्थान पाते हैं बरकीं की बाद में मेले अवले हैं। सम्ब दिवस व सरसिका भनाई क्राकी है। वे ब्रह्मत मिस्र ऐसी है

विसम्री समय २ पर सच्चे मानव चैदा हए, जनमें पराक्रमी उद्घारणरिव **शान**ध सम्पन गुरा योगेदशर कृष्य मात्र जिल्हे ४१४६ वय सगमग क्षेत्रे हैं। इसके काम इतने आवरी #रे हैं (अस्ता इस यह में महाराज कप्या का खेषा स्थान है जनग बारड किसी को उतना गीर ५ प्राप्त हो किसी भी महा-पूदव की सबना दश्या दीच नहीं पर यह सचाई है सहाराज की इत्या देशा. मर्यामा परपोत्तम कहलाले बाले थी राम चन्द्र जी को सी

का कर्ष ये हैं जो एक बादर्श मानव में बच्च गुण हो वही महाराज इच्या में हैं। इस कतवन कहलाने बाबी समय में कितने मन ऐसे हैं चित्र के स'स्थापक कृष्ण काले का वावा करते हैं । राम करते क हाका नहीं काले क्योंकि की काम

**बा** स्थान मोदी का है पराश्रमी इबाह्य, न्याय प्रिय क्रीर चरित्रवान बोगीरात इतने उन्हें ग्रया किसी बिरते ही नहायुरुप में होंगे.

महाभारत दाल में दादा भीचा बैसे भी महाराज कृत्या का ही कादर अने में जान हर व्यक्ति व्यवसानाम कृष्य तो रखता है परन्तु दुर्वीयन रहने से लख्डा र्गरावट की मोर बाखा है इन ब्दरा है महाराज की गीता सर्व बढती कृष्यों से दुनिया नही व्यक्ति में भी श्रीयन सा अल देती क्रहोगी ज**द श**8शी स्**ट** ही कृत्या

है, परग्त बाज प्रत्य अवश्व सक

योगेञ्चर कष्ण 4 हितंथी (उपदेशक) सभा)

सद्दारात्र कृष्या के नाम संवाद्यों ने इन के नाम को क्यकित कर विश्वा

है वेच सागर आदि एक के प्रक्रो भे पता चलता है 📰 तोगों ने कितना क्रमा को बदसम किया करी फिली से सेर के बहाने करता को रगहते बराया सक्तियों के साथ रंग रक्षियां बरने दिलाया होशीयों में रंग शासने दिकाया १६००० से जनर बाजियां स्वान्त ये महा मुख्या की बात है। कोई होगा वस समाना तेता और कमा पर **हम** क्रिस क्रम्या की चर्चा कर रहे हैं वे है बानवता के स्वाकी दोगेंदवर हुट्य किन्द्रीने वेषश्र दश्र ही विश्वह किया वे भी कन्यसी से, १२ वर्ष ब्रह्मपूर्व रह कर क्रमने बीधन को क्रदन बबाबा किन के तेज से पार्प क्षेत्र स्त्रीर जरासन्थ, शिक्षपास जैसे बिर्वयो राजा लोग भी मनवराते स्थाति प्राप्त नहीं, क्रम्य जी को थे । परिवादीन व्यक्ति में कभी तेत स्रोक्षत कला सन्दूरी कहते हैं इस जरी हो सबता । यतंत्रास यूप के विकास हवासक सरस्वती ने क्रमर

वस्य सस्वार्थ प्रकाश में महाराज प्रया को बो-ीरान भीर स्राप्त प्रस्त जिला है वानी जिस प्रशास बीवन में कोई पाप न किया हो उसे भार पुरुष **६८ते हैं। सहत्रात कृत्या क्रमा** पुग में एक कार्डा कृत्या ये सारे संसार में सन्मान वा भार थे। भी उठता है सम्ब यनवा है हर बार्ध प्रतिवर्ष महाराज की अञ्चाहसी इर गांध करने चौर वड़े २ नगरों में बाबादी के मुताबिक कृत्य पैता क्ये जाते हैं तथा इनकी सांक्रियां दिसाई जाने हैं। नतना ही ने देश

अन्य सेना वब इस बिगने हुए देश । बहेंगे ।

को शुक्ररता देखना १७% जाम की | शीता श्रीर देश द्धा निर्मास

टकार्ने असाने बालों को भागते देशना मेरा देश महाभारत बनेता । जैस्त वे प्रश बहाबारद बनानः चाहते ये । वे तो बाटे २ राज्यकों की समाप्त कर इस होटे भारत की महामारत

कताला सब का सरेक था, पर दलतोस इच्छ के बनुवादी ग्रहाबारत से २६ ठरफ रहा देश के टक्जे २ करते का रहे है और सहदे ये हैं इस महाराज क्या के बनुवादी है वे सर।सर मां क्या से बोसादै बांग चपने को रूथ्या के मस्त, कहते हो बो सही अर्थी ये क्या की बीत अपनाओ पाकितान, देशा चौर स्थास की पानी उन मान को भिक्केकी कारकीर की सक्ष्मका स्था के कर्मकारही उपदेश से इस होथी, क्या हम थे सोचने का प्रवास करेंगे कि सहगात

रोहतक प्रार्थजगत वे

कृष्ण क्या वे और इस क्या है

और वे वहां ये और वे बहां है

oव मैं स**म**मा **इस** ने सात्रकता

के त्यामी वीगेश्वर मृध्य की

समया ।

तका सा ।

समाचार

बेद सःताह—दिश्रांक १० ख्याला को २३ धनाला (२ आहे) से = भाड़ों) e**ड** की द्वासन्द सठ में वही पुरुषाम से मनावा गवा। किस में भोटी के बिहन प्रधारे वे। कार्यक्रम शतः सम्मानः परचार तथा राष्ट्री का रोधक बनाया

देद सप्ताह-कृष्ण्यन-शाष्ट्रमा an: एवं धार्यसमाज कासिट विभाग प्रधाना मोहरूला में दिश्वीक २४ ब्यास से ३० ब्यास स्व मनाका जलेशा किस में पं॰ वनसेन वो स्वदेश है है। हमा (प्रमाध का शेष)

त्यास न हरो क्रथांत श्रपता क्रांन्स पालन एक देशी कोपांव है औ वडी काहितीय है और इस के ब्रास सब समस्याकों को इस किया जा सकता है। यदि त्यापाने, कारकाशा-टार. कारसानों में काम करने वाले खोग, सरकारी क्रफसर व कमें **वारी**, वंशेक्त लोग, इदर्शत शाक्टर, क्यीस बाद धरना कराव्य ईमानसरी. मेहमत से परा करें कीर सक वत्तरदावित्व को को अन्होंने स्वयते उपर ले लिया है ईमानशारी व नैवनीयश्री से पूरा वर्रे को श्रीर बाजारी व साथ वसकों से शिकाषट कडी रहेगी । तक प्रवक्तीर की भी बरावस्थवशा न स्ट्रोजी स अदर्शन होंगी, रिश्वत चाहि नाम को भी न रहें । हमारी देश निर्माख की दोजन में आधिक सरस **होगी** ह इमारा घन न्वर्थ नहीं आएम। यवन की कोई संसायता अही रहेगी । चीमारों हांलयों ४ निपनों की सेवा व्याहा क्राचर्डः तरह हायी ।

त्थात पर ब्राजा की सहरें पर्सेशी s देश क्लिसिश होगा : बोटर धीर क्रमीटवार व्यवने क्रवने कावीं दा वर्तिक च्या वरह पासन करें से **श्राहल्य की जुनिशाद काविक** हम हो जाएगी।

हेर्फ के आम नहीं रहेंगे। कस्त्यंत

के स्थान पर सन्तोष, निराशा में

सवसे व्यापसे राष्ट्रीयता-वदि प्रत्येष नावरिक अपने अपने क्रतंत्व को निमाने हो दे आवे दिन <u>र्टाहवोचर होने वासी फुट दस्रवश्बी..</u> व मनने दिसाई नहीं दें में।

इस झपने क्लंब्ब का वासन कों बड़ी सीताका संदेश है क्यीर बारी देश निर्माय का साधन है। त सम्बरे श्रवाचे दशकत (हैं-कदापि गदी मर सबता)।

में बसमा हं, शरीर नहीं ।

# ंश्री कृष्ण श्रीर नारे

(ले०-स्शीमा आर्था एम. ए. कन्या युस्कल, नरेला)

बन गया था। उस्कालीन सार्वत्य ेकी बीती गामधी मांकी इस्तत बाबचे बच्चा स्वक्रिक औ **छन्य के बाराविक स्थय परिच** से वितास वक बायान विजीती प्राप्ता व्ल<sup>के</sup> विश्व में बताने को बाहित हो बाता है। फिन्त तरह रहा है। के इस र्राष्ट्र के श्रनतार इम समागे रमका नंतरी के प्रति प्राप्तनिक द्धित होसा वह स्थापहार होता. उत्तर यह विकार का विश्वय है। रह व्यक्ति कितना ही खरिक

धी द्वीन रहिकोख् होता है इसके विपरीत बड़ा चर्च के प्रति बारिशका भिक समान तथा बाहवा रखने वाशा बारी को सदैव सम्यान की रवि से देखता है। ऋषि वे सम्बन्ध में भी बढ़ परीचित सत्य है और बड़ी बोमीराज कथा के दिवस से विवरीत वर्ष्ट इसी का तो शाम है। प्रकट हरन से स्वस्त है। हमें मजना सीभाग्य बहिए कि सहवि न डोगा कि देगक्रमा डोने इर भी ब्रह्मचर्च के अति प्रमाद निवदा उसते वे । तभी को क्लॉने विवाहों पराना भी पत्नी सिद्दित गरह वर्गतक

> ब्सापि वहीं १ को होता भी समझ पर इस्पान क्रम गोदी सबम आदि निराधत ब्रारोप स्रते हैं उन्हें चाद रजाना पार्ट्डप कि किद्योराचरवासे इस प्रकार या जीवल साक्षेत्र करने पाने किसी भी व्यक्ति के ज़िर परनीवरी अवस् वानी रक्षता कठित नहीं धापित ब्रासम्बद्ध है। उन्हा परवर्ती संबद

ዿ፠፠*ቘዾዄቔቜቘቔቔፙቘቘቘቘ*ቚቚቚ **इ**रशा है । सच वो वक्र है कि संसार में कोर्र भी मानासीत स्वक्रि बनी कज़ित के ज़िसर पर बास्ट नहीं हो सबला ! नशके क्यांनोक्स महानता धनकी सरवरित्रक्ष का सम्बद्ध प्रमास है। इस ओग तो । में विष स्रोस शिक्षा । सन्धेरेने ती बत्द के परबात हो एजे क्षाते हैं . सरीव तारी जाति की सर्वादा रक्षा किमा वे प्रपत्ने श्रीवन काल हैं हो ! के लिए संपर्य का यह किया किसा शिक्षों द्वारा केंस्रे सम्मानित एवं प्रवाहं हैंग क्**ं**ंगों ने प्रवक्त साम सिद्री वे वह बहाभारत पुरार कर कहा में मिला दिया। यह एक कस्त्र्या-रबाई:

वास्त्व में भी क्रमा तारी का है उसका गारी बाति के प्रति दक्ता मान करते थे। वे गच अच्छे पत्र वे । उन्हाने व्यवना अनना को सह काराबाम से मुक्ति दिलाई । वे यद ग्रन्थे भाई ये । अपनी बहिन समदा के विवाह के असह के वे घोषे बानःपनान की सावता को भी निलांकित देखर वीर वर कार्नेन को उक्सा द्वाय एकदाना श्राहते हे और यही हो कर रहा। वे एक निष्ठाबान परि थे । देवी रुक्तियाँ ्धी भा**रताधों** को सबक्ष अर उन्होंने उनका ब्यावर किया, उसे उद्या जन्म-दिक्स सनाने की सर्वोत्तम दंग और महत्व पुर्व कडोर महत्त्वर्षे व्या का पालन किया ट्रस्तवा वहीं । पुनः नारी समागम लक्ष्य हमारे जिल हो सकता है । का प्रश्य सक्य स्थीकारका अञ्चलग्रीका थन्य घोगीरात । स्वा रेझे उत्त्व चन्यथा हम जहां हैं वहां भी न निर्श्तंद्र करने के उपरान्त प्रकृत रहेंगे । इ.सारा उत्तरीचार पक्तीश्वरक परित्र का महापत्रव नारी को कमी नेस इसकी शरपक सामी जैसे बीर पत्र को जन्म विका। बोग की बस्तु मान सकता है? रहा है। नारी का व्यवसान उन्हें कटापि लक्ष न या । सब वो स्था भीरों के द्वारा भी वे रेवियों को प्रशादित

> होते य देख समारे है । सेह कि स्वयं नारी जाति है उन्हें समयने में मारी मुख की है। वपने डिवेचे को हमने शावक हमा क्रिया साथ । १६३३ रह रहक प्रश वहीं किर इसने धनके नाम धा

नहीं देवदाखियों के रूप में देश में

अक्रकमारियों के रूप में परों की कियावित विका । वारी श्रीकेर के जाम का वास्त्रज भ्रीर वाप का धाकार गर्म किया तो बड़ी अबिन के जास पर धोशकात का जंका पीटा । निरूपय ही यदि नारी जानि ज़सी कांतों से सनके परित्र का क्राञ्चन को हो सबके सरह दितियी हा हे न पायसी । किल शब्दें रमिया कह कर हमने जीवन के रस जनक क्या है। कथावरित्र की . प्रतन की क्योर ने बाजे में जाती से गर्दिन साम सिया है जो इसके साथे पर एक बना बड़क है। क्लब्ब से इससी माशकों का यह वा कि कृत्य जंसे पुत्रों को काम देती 'वे वो कारे उनके सस पर कासिका योवने को उताक हो **गई' धीर** सन्दर्भाने की । धनका है सारवीष नारी काब भी होता करे सवह का **अस** असे बदासका । बार्क सामाह के लही कर की समयना कौर अपनी मनाव को प्रतंक पत्र विकरों कर धावने के बिन्न वे दिन करून जाती

१५ चरासा सन् १६६४ को वन-सार सकता में जो भरद रामां औ बहाइय ने मंत्रा थी सम कारा करने के बाद सहस्र के बच्चों की इनामास दिये कीर मिठाई वांटी सनसार नियासियों ने बड़े एरव से स्थ्र दा दिवस मनाया

वलुरास सद्दाजन सार समाज म<sup>41</sup>

बह द्वाराज्य सेव तथा दर्भाव **दी शत है** कि बोगोराज जी हच्या : · क्रिक्टे क्षमाचार के घनो ये उत्तना दी इस ने तन्त्रें पतन कारों से ब्रहेसा। हिन्दी के तथा क्यांचर **क्रांक्रमस** तया रीति काल पे क्षाहित्य में भी कृष्णा विषयक क्रमेव क्योज करियत विकासों हारा कर कर जो कीचड सदाखा नया है उस

सो इन के दुव्य धमस वसावी परित्र

का वो क्या विगदना या परन्तु

·'काम्य वर खंडों तो संज्ञ पर फिरता

साबह्य धन की क्र'चाई को बने से

व्यक्ति रह राजा भी कथा जी के इत्य गय विभाषाम ने रावशः गालियों में भी जिस वाचार विज्ञासी पर्व इन्ट्रिकों का दास होटा श्रीमता का दोध आप वर समाने का इ.साइस न किया वही कुंग्सत स्रोर श्रीभ्रस्य सम्रक दन के दशमङ शया अच्छ डोने का इस भरने वासे इस ने सहज ही उन पर बोए पन त्तव्या से सिर मुकाने के स्थान पर भपने को गीरव शाली समस्य। देंसी विकासना है। विजात कार्ने

ह्यासम्ब द्वारा सचेत किए जाने पर इस ने प्रस्य जनों के शाय-साथ इसे मी सबस्ता । सत्यार्थ बद्धारा मे मद्रविं ने किसादै। 'वो कृष्य क परित्र महामारत में चरपुषम है। स्वासी श्री सहाराज से योगेडवर करता को सारत परुपी की कोटि हैं रश कर हमारी क्रोसें सोत दी क्या क्षा के वहवित्रों वर सम्बंध हुए हरनति करने का पत्र भारतीयों के श्रीप प्रशास कर दिया।

प्रताकाल के साहित्य में ही क्षमा पर समार सभी दोवों के सूच में एनकी नारी कावि के प्रवि रहिः कोंग की अवसमस्ता है। इस पर श्रातेक गोवियों के सहवास असंस्व विकर्ता के पवि होने का मिथ्यारोप अध्या होगों का वस्य विद्व श्रमिकार और मदाद जीवन पूर्ववर्त जीवन चार्च समाज सन्होगदा

#### त्रार्थ शदेशिक उपसदा देहली का चनाव

इवात-सी प्रांशकत सी बस • द० विसीपत दी • द० वी० ME/S स्क्रम विकास रोड नई देवसो, स्वप्रधान-धी शर्ति नारा-मध्य भी तिसीयस इंसराज कार्किज देशमा—६. भी समापेतराय तपायाय. की शामनाय की स्रोत्समा वि० बी०-ता क्षेत्र H/S स्टब्स दरिया यंत्र रेरते. तके-के पंपतान की काता सेव्हाध्यापक दी+ र० वी+ ⊞/ॐ लड़क वित्रशुख रोइ वह देशकी, क्यमंत्री—मी रामनाथ जी कारता प्रशास नेशास्त्र सेन्द्र पदार्थ क्षेत्र वर्ष केंद्रकी की शक्की केंद्र स्थ की रसः ए० अभी थर, भी जैसनी सी एस**० ए०, कोवाञ्यक्**—वी राव क्रमार की देहसी, हेला-निर्शेष ६--सी नेवरपाल की परी

पंतानी वाग देवती।

भी भारतम जी पार्च का

सुपन्नी संतोष कुमारी एम.ए. क्रामंत्रका है पाउसों को बार बद्दद आहमा होना कि मी भागुराभ पुरोब्रिक क्षेत्रकर य वंदीयद की सुरुषी संवोक्तवानी वे १६ इवें की चान में शाली पास सरके १० को की बाग में अस्कर of the second designation of the second desi प्रवय भेदी में श्लीचें छंटे। auf tag qu'al agu & M. A. M.O.L. की वरीका क्लीओं का जी I ye state & for unlass

की ब्रोप के क्यार हो। र्क बल सेन जी सब प्रदेश के संप्रता में वापिम कार बतनत हो साम की

प्रमय करके मध्य क्षेत्र के शक्त में तमरों है देद प्रचार का कार्य करते हुए पंजाब में बारिस पहुंच यद है। es अवना में भाग ने सता के किए तका भार्च जनत के किए वन संत-बावं काची परिवन किया है। कीर ररवारी काळ ४५मंत्री एवं सफाला भी शाय हुई है।

#### श्चवरप्रका

मार्च शहेशिय सभा को बक्र बोरच स्वरोतकों सीट अस्त्रीओं की कावस्थकता है । बेतन योग्यशनसार दिया सापता । सबी शार्की करने बचने प्रसम्बद्धों स्ट्रीडर प्रार्थनापत्र संब्री प्रादेशिक सता क्टिट क्यारी के को वर शेवें। ब्रह्माय क्यों में काय, बनुसन, रित्या विकरण किरार समित है शामणा प्रम १० किरोबर कर बा आरे शक्ति। MAD BOOK

#### जो क्रप्शचन्द्र स्था वे ?

( लेकिका--- बक्तीसा आर्था एम० ए० ) वत्तारं कारको हम मी सम्बद्ध सम है भगवार वे अही वे, सम्यान मी नहीं दे

> वर किन्तु देवता थे। हाते के काम शक्त केते हता के बाध

कर हीन कीर प्रसी के देवर्ग की तथर थे। मारत की बाम वे दे तीओं के शाबा वे दे विश्वेष्ठ विद्यालियों का क्या चान, कासरा थे।

रे धर्म के पत्री से, पर्यास्था शक्ती के वे केम वर्ति वी वे, स्वकार सीव्यता थे। वे कारक की में सेटी, डोडो बिक्ट के बीडी.

क्षत्र प्रथ्य हो किसे जन, ऐसी समर कथा थे। ते अन्य से मत्स कर, दोई दिया न पासक, काते क्षर्य दवानन्त 'वे कान्ध ये आता से त'

इहाँ का कास ये दे. शास्त का आसा ने दे. अवसाल की जिल्ला में जब वहोर्ज़ की बचर ते : नीति निपक्ष व्यति थे. दे स्वस्थ थे अवित थे.

होती जिल्ला करी पर 'से चैठकर करा है।" यति बोर इक्का इक्को, स्थमा न इयमै रनको, परिवास सामने है इस डोवरें है साते। की कर कर बाज पर में, गत बनडे महत्व पर में. क्यामार्थी सकता हो प्रति वर्ष जो सनले।

#### ...... वि:सम्लान परिवार प्यान से पर्टे

वरि प्राप दिवार के बाद कर तर वितालाय है तो एक रोग के सपन्न चिकित्तक ही एं० स्वासम्बद जी स्वातक (महो-व्हेजक वंज्ञान प्र**िनिय समा) से जिसे का एक स्ववदार करें** । ती स्टान्ड की भारत के झानेड परिचारों की सच्छाता प्रकेट चिकित्या सर चने हैं।

वर्ष कोसे ३ मास-वर्ष व्यय २००%

बता---स्वाम सुन्दर स्तातक महोपरोशक पंजाब सभा ३०३ रामी बाग शकर बस्ती देशसी \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

चक्र-सदर्शन भा जाएं

(रचिता--पिकोरीमध्य प्रेय, रेण्का (हि॰प्र॰) ऐ **कम्ब**ी त' फिर २६ बार दवां, भारत में जन्म हेफर कार्र ! मारत की हालत देख तेरी, कांकों में कांस् का वार्चे !! धर-धर में राजवें पक्षती थी. और दभ को सवियां बहुतों भी ! मध्या के बकाय क्षत्र मर में, हुत्ते, तुर्वे पाते वार्वे 🥬 का हम, सक्षाई, सक्तान, भी श्रीर फल-सांवतवां साले वे । **बाद थान, बरफीम, कुल्फे, गांजे,** विगरेट के नते में को कार्य !। वन मान-महिरा का सेवन, करते वे केवल दानवं ही ! क्षव को मानव मी शांस-मादिरा, भश्दे तक बट बर बार्र हा क्ष सह बोसना प्रविकत था, प्राय शरू बोसना स्टेब्स्स है । को कुठ बनाना जानते हैं, धनको सन सर पर विश्वकार्ये 🖰 तब संब, दुश्शासन, दुर्वोधन की, समका बाला, मा बाब देसे आरापारी तथ हैं, क्षण्ये लेखा बहाबार्ज हैं सब बोरी बरने वालों के, हाओं को काटा जाया का ! भव की ब्रोडिये थीरों को पूजों की माता पहनारे !! तपढेश तथारी गीवा था; सुनने शास कोई नहीं ! चाव बिरोबरा-थिवेटर के गीलों को, गाबी-शको फिरते याएं 🛚 बन प्रेस की कंत्री से कृष्णा, कम अक्ष**कार नहीं हो**ला : व अक्टापार मिटाशा हो, ते पत्र-सार्यन का जार्र 🗈

प्रकार के अभोषराज जी कार प्रोहेरिक प्रतिनिध समा देवार वासन्तर हारा बीर विकाद है स. सिसाद शेष बाहरूपर से गाउँए क्या काराक्षय महारमा ६६राड भरन जिल्हे क्षणहरी जासाव्य सद्धर से अकारित प्रातिक—स्माय प्रोहेरिक प्रतिनिधि समा विवास वासन्बर



हेर्नाप्रोम न० ६०३७ [बार्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपूर] 11-9-64 शांचंड सूच्य ६ इपर्येड पष प्रति का सक्य १५ तमे वैसे

Regd. Mc, P 121

वयं २४ अंक ३७)

२२ भाइपद २०२० मनिवार\_दयानन्द्रास्ट १४०- ६ सितस्बर १९६४

লৰ আল্ডা

# वेद सक्तयः

#### यशो मा द्यावा पृथिवी सके राजोक और श्रीवरी स्रोक का यहा प्रत्या होते । मैं जो भी मीटे २ डावें डाव झावबा

झान से भरे इमें दर्क समया साधान्य जनता में स्टुंबा क्रानियों भी समाज में रोजां शोकों में मेरा वश कीर्ति होती रही !

#### यशो मेन्द्र बहस्पति कीर सबे इन्द्र तथा पृद-न्यति का थरा बिसे । धनवान

स्रोगों में क्या क्ड्रामों की सभा में मेरा वश होता ग्हे । मेरी कीर्त सूर्व के समान चमकरी रहे और क्षय के समान हो. इर २ वह फेसबी कावे। निना त हो ।

#### यशो भगम्य विन्दत

माहे उस परमदेव प्रम के समित प्रसाह का भी यहा बाज होता रहे। जिन्नता भी भन्न समाज हो, प्रमु के प्यारे हैं, सम में भी नेरी कीति होने । मैं ग्रवित रश भी सदा पीता रह । झ का भक्त भी कर्ं। मास देव से

\*\*\*\*\* ष्ट्रिप्यता—श्री संदोषराज जी

### दामृत

#### श्चोम देव सवितः प्रस्तव यज्ञ' ष्रस्तव यज्ञपति भगाय। दिच्यो गन्धर्वः के तपः बेतं नः प्रनातः वाचस्पतिर्वाचं न खदत ॥

য়ল ০ ল০ ২০ ন০ १

क्रमं--हे (हेक) दिखानमी से भरदार (स्तित:) देखर्य यक्त परमेक्क ! कुरा बरके बारा (यसर) ग्रुपम कीजिए (यज्ञम ) ग्रुम कर्मे मप बार को क्या (श्रव) उत्पन करें (यहपतिस) इस प्रकार के यहपति को (समान) सुक्ष केहबर्च के ज़िल खाप ('दन c') सब के एकागक हैं, (गन्धर्वः) गी असि के ग्रमण कारे काले हैं तथा बाप ही (केतरः) जान विज्ञान को पश्चित करने बाते हैं। हदानिय देव ! (केश्य) जान हो (म:) हमारे (पनात) पवित्र करे (बाक्श्यविः) वासी 🗯 स्वामी प्रथ (बाचं २ः)

हमारी धर्मा की (न्वरन्त) मोटी बनाए।

सावः – सनकात ! काप की हवा से शुक्त कर्स क्यों सर का कल्याख करने आहे. यह तथा उत्तम २ प्रोपकारी यहपति उत्तम्म होते रहें। हाम बच्चों की बद्धि होती रहे : चेत्रश्यं न्यीन सुख की बर्या दरशरी रहे । श्रमी ! काप सारे दिल्म नुव्यों के भवतार है. ॥॥ असि कार्य के शान्य हैं आज के पवित्र करने वाले हैं। हम आप के एन है। प्राथमा करते हैं कि इसारे ज्ञान को पवित्र बना हो : इसारा ज्ञान. विकास किसी को समने वाला, यह परंचाने काल तथा किसी को क्षत्रित करते दाका न हो क्रिन्ट्र सब का बस्वाख मंगल करता रहे । हे बाब्री के लामिन्। इमारी वाद्यों में मिठास भर देवें। रसरों को बीदी तमने वाली बाबी वोसें। इसारी बासी में बहुगापन न हो। मधुर व स्थादु बचनी बन जायें।

# स्त्रिया एक एव पतिः

स्त्री का एक क्षेत्र पति होता है। वेदिक मर्याता में एक स्त्री का एक ही पति होता है। एक के भनेद पति होता वेह सी मबाँदा के विद्यारित, निवास्त क्रसंबत है, जीवन की बीसा भी इस से ट्रांत है।

#### परुपायेकेत मनी च इसी प्रकार यह प्रतय के

सिए स्टों भी शह ही होते। यही थेइ का विद्यान है। बहुनारी स्वाका होना सर्वाटा के विषयीत, कसह का कारण है। घर के बाश का देत है। प्रति पत्नी का विधान वेश्स्यक है। धकवचनस्यैव निदंशास

देर मन्त्रों में जड़ांभी स्त्री

परुष के विकास की या राष्ट्रस्थ की चर्चा आर्थ है, वहां पर एक वचने का ही प्रकंश मिलता है। इस किए पुरुष के किए एक ली तथा स्त्री के लिए एक पुत्र का হ্ৰী বিষদ্ধ है—

भाष्य मुसिका \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

सम्पादक--- त्रिलोक चल्न जा

पुर्णे के बारवा करता है हम है

क्रश्रींकर शासको का जाता है।

**बा**रमीय है। मरानाम की प्रारंत

हे प्रवसन से सक्य अन्यत

मनकाब के ताते हम सब

ब्रान्ड पासव है ही सर्वेदित

### परमातमा के मेल से शक्ति तथा ऐंश्वर्य की वृद्धि

MUNICIPAL PROPERTY OF HEMSELF SECTION AND ASSESSMENT OF HEMSELF SECTION ASSESSMENT OF HEMSELF SE इस तथा परम कर को जो | शक्ति भी बहुत है परनेतु सरकान बारो तमती का कायार है सब का से मिक्ने बिना धात्मरावित का पूर्व ब्रास्थ है प्रथ में ब्रोक्वेश है सर्व-विकास नहीं होता। सन्यानसे जिल्ल क्रम्बर्गमी है सीट सारी करती में नित्व सकती शक्तिका विकास स्टान बनायक है किना सब से न्यामा है मानव के बिए शरिवार्थ है। बनुष्ट 🎉 स्कीर सपने समुख्या में शर्तापत की मेरिकता भी भगवान की है. एरमात्मा नवी बहते हैं ? निरक्त है अनुभव कामे से स्त वह भारता हा भारता, जीवन भव अनु से नैती करने से हुनम का जीवन है। वही शयों का शक होती है, वो भगकार का सामीप बहराज्योति है और साथ ही विस्त **ध्यास्य व**स्ता है स्त्रीर अनवान के

ब्बोरिं है भीर है (बयकारा ) सब में है और सब को निरंत्तर सीवन देश द्वै और कमें यका नहीं होत स्टर सरव रहता है, इसस्टिट वर्ड क्समाना है। इम सब की वित्त है। इस

परने से झारत से कारत रह सरव और शिव हैं। इस जान प्राप्त हो वाले है। भगवान के स्थापक करते हैं भगवान जानस्वरूप हैं हो मिल्नटा में धारित्यता बनारव क्रानवर है। इस वी बन्त है कर वे महान कार्च करते में समस्यां है अवद शक्ति है और समर्थ इर है। प्रयक्तत्र के अने वैक्य श्रांका भी हैं हम में आज मानस का संगळ सुराय है और शक्त करने की धनता है। मगबान ति**त्रम है ।** मारतान कापस जे जेन वो गुड्रस्ट वस्त स्वयान मानश्यम कराने वालो एरम गाँउन है। पूर्व एरमस्टर है। सगवान भानंद. धारितक वन भाषम में बेह रतमा कर के सशाज को कृषित शासी स्थाप काञ्चलक है। कारण क्रीर बना देते हैं, अनन्तरा में, देश्य हैं सीलवं मक्तान में वर्त है इस बहायत है। इक्टबरा के से स्टेस करा है भगवान किन है हम केवस मीर दल हो है। भन्तक वे सन्देश अपने शरीर में ही व्यापक हैं मार-न्द्रे श्रीद है और धापन ना हास बास सारे बधांड में अवेड बता है बद्धन अरवेड पर-द्रापर से हैं। है। सनवान के सब में होने का समयान धनना है सतीय है। इस नामा एक घट्टर संश्रम है स्वापन कार था है हमें थे कावनी आत्म-वे सेक बदाने की सुनम विकि काबित तक का पदा नहीं । इसे जब साकान को सब मैं पहचानना है **इ**यमें सायको जन्म अले है का इसारी क्यम बदले हे प्रजात के किन सम्बन्ध की अवस से साहस भीर लगाई बदया है। सन-क्रिज स्त कार्व करना । यही जिला

बाम वी सर्व क्षेत्राचलप नेजस्वलय

🕏 । भगवान से दमारा नेस होना

ब्यस्थाध्यक है जिला भगवान वे

मेर के ला में जारून कांत्र कीर

सीपर्व नहीं भारता आरहा से

#### NEXE X STORESTONE DE CONTROL DE C दयानन्द-वचनामत

"उथ पुत-पूरी पाँच वर्ष के हो, तक स्व को देवनागर्र क्रका विकास क्रांटम करो हेना चाहिए। क्रान्य देखीर बाकाओं के कावरों का काश्वास कराना भी स्थित है। वस्त्रक मेसे बन्द, रेबे इलोब, रेसे सुधारि भग-पद्य करात्रमा कराते जिय से स्टब्से बनेकारेक वक्तोशम शिक्षाएं कियें, उस की विशा बड़े कीर वर्ने हवा परवेदनर में श्रीष्ट करण हो । हे सात. निता. कावावींद को सन्तान हैं, हाती और शक्ति वर्ने झ बारर कारिय्य करें। राजा से, प्रजा से, कुटुम्ब से कीर कर वर्ग से इश्वि प्रशीव करना शील वार्थ, नीक्स-पाइटी के साथ यसकोर व्यवदार कर एकें।"

(म्बाबी सःयासन्व जी)

रो डीक वानों बीर घपना अपना वह रिवरि झावस का हित करते श्तंत्र प्राप्तन करो । विश्वकर यनस से निरिषद है । भारों में दब दूबरे से प्रम होता स्वथाविक है। को जिल्ला शिवय को । वन में मनमुदाव क्वों हो १ पारलरिक उपहार को वर्तक तानकर क्यो । सर्वद्वित के संकार बन्ना को हर बर्द धाएस वरों क्रीर सर्वीहर के ही जिसका

में क्रमणवा का व्यवहान करें हो धार्य दरी । सबके इतक एक हो रेश्वयं थ्या अमृद्धि सप्तरम ही फल्पर की सहावश संब की भाषा बारे समाज भीर राष्ट्र में बहुँ ही क्यांव हो, यही नेद का सार है जो भौर सारा राष्ट्र राकिसाओ द्वेगा। अप्योद के शक्ति तुस्त में कहा क्रीजिक मनुष्य का जीवन स्वा यवा है। एवं इसरे का सहयोग नेतिक दोता है। में ब की मिथि है शप्त होनेसे सभी सम्बन्ध हो। स्वतं ही बैविकस छीर आरब ब है। परिवार की सह मध्यना और प्रवित्र व्यवदार । हमें ब्यापस की बापन का किशास ही सहस्रवहार विषयका कर सरकी है और केवल हे का में सब को अन्तव करता है । तथा मेल के हारा शक्ति बदानी है लोग सभी बढ़ हरिट से क्या वयी सभी सभी हो सदेंसे की पृथंक हैं पर यह सत्य है कि शासप भोजन वस तथा स्थाय की सर्व वें सब में सवातना है। विश्वमता ट्र होगी। यो काम सकेबा समुख ही देव का फारण है। वक्षी हम वहीं बर सब्बा वही काम व्य बिल्ल मिल हैं पर इस सब में सम्बद्धित समाज सुगवशा से स्त व्यक्तिम्हता हे कौर वह है सह है तेश है। इमें समान में ऐक्स व्य सर्वेमन्त्रवेती हर्स्स**श**्चे तियर क्योर हर करना है था कार भगवान के कारण । आर्थ तो है मार्थ समाज ही का संकेता. व्यक्ति डी देश्वर पुत्र सम्बद्धा कावरता हो milita 9 .

भेप्टलम होता ही चाहिये । एक अन्ता में समिटित की माना ं बाय में ब्यूपने स्टब्सिस के दिस्क के साने कर लगब क्याब है वि क्रमेर के मंत्रिम स्था में शे वह है । तथा शेलारे ही पाड़ियें क्योंक सभी बार्च भाने-अपने स्थान वे मनवान में देशपर्व मांना गना है । बार्व श्रवा एवं है । बार्व क तथ में तपने हात्य से न्यांब को किन्तु अनवान ने बादेश दिया है जिमेदारी बहुत है। अगशन न को हो है सल में काल और दल कि परस्य किय कर सकते. आर्थ को समूह क्येर ऐत्सर्वेशासी में सदावह हो तथा क्याबना है। विकार शास्त्रीय करें। एक इसरे रहाने का कारेश दिशा है और

(सेष प्रश्न द पर)

सम्पादकीय-

# त्र्यार्य जगत

वर्ष २४] रविवार २०२१, ६ सितम्बर १९६४ विंक ३४

# महात्मा जी की अन्तर्वेदना

हपोपूर्ति पृथ्व सहारमा ब्यानम सामी की महाराज कार्यसमाज की एक दिव्य-विभूति हैं। उनका बीधन कारम्थ से ही वब के हरेका देता रहा है : 📰 प्रसम **बंबावन्द्रवे रह द**र दलरों के धानन्द्र पथ प€ साना ही उन के बीवन का स्वेष है। महत्या बी के दर्शन में एक बादपत है. क्ष्मान में बांद है क्या श्ववाद में सीम्बता, सरक्षा है, बन में दहवा का थागर समदत्ता है । धार्यसमाज 🕰 क्षेत्रा में जीवन सगा दिवा है। जीवज में सब रहा वेसव देखा व बादा है। शादी बातावरक में विकास किया है। पान्तु समय कामे परस्थागने में भी देर नहीं क्रमार्थः। आर्थसमात्र में उनके समान पर परिवार स्वाय कर विकास कर सामुध्यतं वाले कीर mallr अब कर क्यों प्रचार के लिए स्थाव २ फिरने शते कितने हैं ? fabran बोध परिवास को है पर बर क्रोडना सरत नहीं। पार्च सकाक को असीसिए स्वास्त्रवों की कारी है। पर पर हो भारत व्हता क्योप करी पर हो ग्रांशें दन्द कर प्रकारिते हैं। ब्याधम का सिर्वात किसाबों व श्रीवर्धों में ही बसता है। आर्थ प्रादेशिक समा के थणाने कें दिल्य देवता स्वर्गीय त्यागमूर्ति पुष्प सङ्गलमा इंडराज जी के बांध विक्रमा काम सहारमा भारत स्वासी औं में किया है। स्वता कोई .ब ब्रह्म सका कौर न ही कोई बन सर्वेशा। कर्नाचे ही यही में प्र mus act की केर प्रभार के

विष रुपमें की माता राखी शई थी। एक शास स्वीर भी समाजे देखन की मोली में कला था। पेसा गीरक शायव ही किसी की किल मुकेगा। समा के साम महातमा जी हा सवा से ग्रहम्बन्ध हैं । समाज के श्राव २ समा के मी क्रिक्रोता है : बाहर पन कर क्वा २ अप्रकृत्या होती है। राज दिन प्रचार में क्या २ व्यक्तियांकों का शासना करना परता है—इन सारी वातों का एश र कार्यन है। यह कारण है कि भारत के बनारक वर्ग के साम धन का ओड है.

सदानुभृति क्या ज्यार रहता है।

सब को पर का भाशीशंत

मिलन है।

इक भी कार्य प्रादेशिय सभा समाचारपत्रों में वो सीश्या समा-के चेद प्रचार के लिए उस का दित है। काज कर में भीनगर समाज में कथा का अन्तर पिता रहे हैं। इन्हों से सभा को दी इकार रूपये बिजवाते इर ब्यायं बगन् के गड विशेष बंद में अपनी क-र्वेदना का तो लेख के का में किया कर श्वताहर किया है। समाजों प लेखाओं के पास इकारों नहीं सालो बचने असा प्रते हर हैं। फिल समा 🖾 केट प्रसाद दिश्व का पर्श्व सामा है। वह अला है, इस के गल साने के फिल्लड़ी हैं। दिन्दु क्रॉस

भाजों से साक्षों -स्वयं भरा पता

है। महातमा जी-के किवने माबिक

लक है सिबदों समा पटा पैसा

बता देश करते की व्यवस्था कर

रदा है रिजिस समा ने प्रान्त व

है: उस में जो इस है नहीं कीर्र इस्य स्थानों में क्यी नहीं कार कैसे पत्तेथा। भूता वेद प्रधार कतेश सेसे ? आर्थ समात वशीर बाग बीजगर के बेट चे कियों मे अक्टबा की बोर को क्यार अपने सभा बेद प्रचार में चेंट कर विवे स्वाभ्या जी से वे अल्हास ही सभा को धितपा का लेखा में सारे सवाओं के आहते प्रापती हिन्ह की तहप्रश्री प्रस्टकर सी । प्रतस वडी तपसी समा के बेदप्रचार के मिर धवता से इतने सानिय शस्टों में शिले कार्यसमाओं का दर्तव्य है कि इस त्योजूति के कादेश का पासन ६८ के सभा के बेदशकार अवदार भारते में दिश स्त्रीत कर लग तार्थे । पेटदबार का काम

—शिसोक पन्त बाद पीदितों की मेवा इस बाद वर्षों से अपना बहा

चार विश्वयने हैं सहा दन खेनेकर ल्लानों, बसरों शामों के दिन्न प्रकाणित को गड़े हैं। उन से विका का दिल कड़ी पसीड काला। बहंगाई ने तो पटते ही सनता की कासर लोड ही है। जीवन में प्रति-टिस काम में काले काली कालकी वं भाव साकात को खने तथे हैं। परिवारों श्री क्या समस्या है, सब के अपने हैं। इस का बाजों ने साओं की फालें बर कर री है। बड़ी भारी चाँत हो रही है। इसाके ही अस यथा हो नने हैं। हमारे शहर के तेना तथा सभी करका क्रेंग्स पारन करते हुए भ्रमण काके सरकारो **श्रक्त** करने सै तमे इर हैं। इस कापति के समद राक्षवीति का भेद होका चलते देश हैं केंद्र प्रचार का हायिला जिल्ली चाली संस्था अनवा का किए नहीं

बाहती। हेरी शहर भी खरना बसरात लार्थ किन्न काचा पाइरी है पेसा बहता पाहिए।

बाद कत उत्ताकों में सेवाकार्य बरना सन था परमा वर्तन्य है। कार्वसमाज नो तेसे २ सार्थी से रुदा क्राये रहा है। सेवामत से जसकी सिक्टर करी रही हैं । इस विषय प्राकृतिक संकृत के समय हम वस र स्वानों, दते नगरों तथा सम्बद्ध सद्धाओं से बहुता पाइते है। इस्ती सम्बद्धी स्वांस पीर्वत दर्ग कां. परत जनत की सेना का सीमान्य शह होता है। वड़ो र की तथा अस्य भी समार्थेष संस्थापं इस संस्टरशस से दिश स्रोश दर अपने उन होगों की सेशा करने में तम आयें : सेशा के जिवना उच्च होगः रहता समा वर्द रूप हो सकते हैं। सगर स्रोक दिये जाये. व-र्ताची या वस्त्री के श्याने करती ताक्यी। हम इस ्राज सङ्कारमा के अपनों पर परा दारा भी सेवा का कावे हो सकत है। श्रायसमात्र श्रापकी पान्परा के बानसार इस समाग भी स्थात न

पर किसी स्थान को सेवा केट बना कर सेवा कार्य प्रारम्भ कर उप रूप दिशामा है। सामे दिन देवे । तो जैशी क्षेत्र का काला है, मानश्ता के नाते वसने में हम वादे । समार्थ भी इस संस्ट (बच्च में भागने २ क्साओं को उस क्योग बेस्का देवें। ताकि इस समझ ओ बांसी विपत्ति चाई है, इस में सेवा करके दर करने का प्रवास किया —त्रियोक पन्द आ सह।

#### ध्यमस्य वचन

के कीम का शास्त्र पातकक है और इस का परिवास सवता-पन है।

🛨 सब से प्राथका गार्जिक बाइ है जो सन्तर है। 🛨 कंई कार्य बदला लेने वी

नियम से न करो। 🛨 कोई ऐसा कार्व न करो जिसे इसरों को करता देश वर तम

कायं शदशिक प्रतिनाथ समा वजान जानन्थर के सार्वाहरू मला पत्र कार्य जगत् के देश सप्ताह स्टब्से कार्यसमाज के तपामृति पून्य सङ्ख्या आसन्द स्वामी श्री सहरात्र का सभा के पेब प्रचार के कीय के बारे में बढ़ा महत्वपूर्ण तया इक्सलब से किस्ते प्रदेशों से मरा वार्मिक होना प्रकाशित दका है। इस में समाजों, संस्थाओं तथा वेद वे मिथीं को सन्योधित कर के

प्रभावशाली सब्दों में बढ़ा गवा है

कि सभाकी वेच प्रचार निधि तो आरबी पड़ी है जिल्ला समाजों व #स्थाक्रों के भरतार अर्दे पड़े हैं। नेइ प्रचार भूका है, इसे भोजन दो सद्धारका भी की वेद से प्यार है। चन का सारा श्रीवट ही इसी पवित्र द्धास के जिए बोवा है। संन्यासी बार कर तो रात दिन उमी देव प्रचार में सबे हर हैं। में भी कार्व सवाजों के कारतें

से क़ब्द साफ शब्दों में विना समी सिपटी बात चहना चाहता वा अपना गुरुकुत पुरुष्ता गुरु m । ऋार्य समाजे अपार करवाती हैं, भन भी इस्द्रा किया जाता है। परन्तु बड़े हो खेर से कहना पढ़ा है कि समाओं का धन इसर उबर के कामों सीत इधर इवर के लोगों में लपं दर दिया जाता है। अपनी सभा को देश प्रचार के लिए देने से बहत ही कम बचता है। इस के का कारण हैं, जिस से हजारा सवा क्षपी केन्द्र कमजोर हो गया है। कार्धमञ्जूषे में प्रचार के लिए बाहिर के कई साथ संन्यासी, क्षिताल भी समय २ पर काले रहते 🖁 । दिश्त एक बात बड़ी ही विचित्र व्यक्ति होती है महात्मा कानग्द ज्याची भी सहाराज जेसे निश्वह संख्याकी विद्यों हैं जिल की केन्द्र का ही स्वात रहता है । कार्य समाह के प्रवरोध सञ्जूषि द्यानस्य सरस्यती ने जिल मठों का बापने क्षत्वों कौन सपरेशों में शोरदार शब्दों हूं विप्ता है। यन क्याने का मोह वश्नावे में पूरा २ सहबोग हेवें।

# भूखे को भोजन दे कौन ?

(ले, श्री पं. विद्यसागर भी वैद्य मन्त्री अर्थ समाज लारेंस रोड अमतसर)

#### +++++++++++++++++++

**६**५ने २ **धक्**य २ स्ट, काश्म वा विद्यासय बता कर एन के लिए यन प्रवश करने निकल परवा है। बेद प्रचार के कर में धन प्रचट्टा दोई लड़को के लिए. क्षेत्र हैं हो के विष्वधा कोई स्रोहा सरंदने के बिए रैसे मांगवा विहरता है । कोई भवना श्रद्धन शांभव वा देश पना करणम के लिए हर प्रकार का सामान एक्ट्रिज काने के बता प्रमाद्वै। यदि ग्लस्थियों परिवार वालों के भकानों, कोटियों के स्थान भी काल समाज के उन सामझों ने यो कारने शानदार प्रकार बोरियां दस का केवल जाब के जिए इन को चानस. मठ

कर दिया तो कोई भेद नहीं। इन क्रमी का देशों के किए जगह २ अ कर सद्गृहस्यों, खार्यसमात्रों मे दितारात देसा सौग २ वर इन में प्रताना है का प्रत्ये नाम से अमा काल है जो किए संस्थासी बनने दास्या सरहत्र मा। दक्ष स त्यात ६८ अस से भो वहा अपना थ्य बताले वाक्षी यात है। ब्हाबेसकाओं का वैसा प्राय, ऐसे कार्यों में बाद जाता है।

इसरी बात यह है कि वह श्चरता शब्दान सी धूर २ वर समाओं में प्रथमत, ध्याएं धर ह बक्ष शक्ति से बाते हैं। अवस्था कड़ है कि देसे सोग भी सपने क्रिप के ताते हैं को सन्वासी बने हर है या पेसे सरजन से जाते है जिन का परिवार कोई नहीं किंतु परि-वार वास्त्रों से भी बनको ऋषिक

संबंधन किया या । सात हरेड | है। सही साबस हैं. मठ है, सपतेर खापु सन्द द्धाय श्रमात में भी वह अभों से हरे हैं. वहीं ग्रहत है कीर कही बासग २ वेद प्रचा-रिको सनाई शको हैं को बाहन र

> करती रहती हैं। वे संस्थानं तथा लोग हैं जो समाओं से पुण्डल पन हे वाते हैं । ब्रार्थसमार्वे एवं परि-बार को मन 🗷 हान करने में कमी नहीं इसने किन्तु सारा धन वादि। चबा बाता है। समा रूपी फेट निषंत्र हो गया है। सहसमा जी के हरदों में मुख्य है। भोधन इसरे शा जाते हैं, इसे कम विश्वचा है। इस कारका यह जी इपनि चठानी पत्नती है कि साधारों के प्राथाय में

समा व्यवने योग्य प्रचारकों धी संस्था बदाने में बठियाई कार्यमङ करती है।

बोरय भ्वन्ति सी आशह पुन कर प्रचार करना प्रसन्द करते हैं। क्योंकि उनको इस प्रकार बहुए श्रव मिल जाठा है। यहां कारया है जिस से समा का वेश अन्तर मधा है। इसे मोक्स पर्याप्त साला से नहीं मिलला। यह समि परी करह से सिवित नहीं हो रही, वर्गेहि समाओं की हान बाहाएं

दसरी समियों की सि'धन

ब्दने से प्रयो हुई है। बहु है बास्त्रक में गम्भीर परिस्थिति जिस की बोर से जल्हा तका ब्रावश्यक न्यास दिवा आहे । पूज्य सहारमा तो या धन्तवेदना से भरा वह होस हरका कर सवाजों में विश्वतित क्रिक बाता पाहिए। समाजें का विशेष बतन्य है कि में आपने केन्द्र समा के वेट प्रचार को शक्ति शाओ

समा का स्थान सबंध्यम हैं, श्रमक क्ष्य सब कुछ गीय है। मेरे दिश में मर्म का श्वार करने वालों के लिए मता है। पर समा की क्वंसाय स्थिति को देसाते हुए मेला करका कायायस्थक है। यांत्र हमारर केन्य्र क्याजोर हो गया हो वही व्यक्ति होगी। बाशा है कि सारी सक्कों ध्या सम्बन इस पर स्थान दें स्त्रीर समा के मूले के प्रशास की मरने को शस्त्व करें । स्वक्षश्त्र वृश्चि वाओं तवा ऐसे २ मताधीओं को त्रोस्ताहत न देवें। द्यान्यया आर्थ समात्र की भी बहुरे कसग २ सह*म*ते. नठाभोशों हे समान दशा हो भारती. वैसी स्वामी द्यासन्द के पचारने से पहिले देश में थी। जिसे दूर काने हे जिए नार्गिते प्रपन्त सर्वत्व 🖣

सर्पेश कर दिया । \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\***\*** श्रार्थसमाज भरवाई

(चितपुरशा) जिला हिशवारपुर

का प्रज्यां वार्थिकोत्सव २ से u सिक्टबर १६६४ तक वही **सम**-बाम से सम्बन्द हो रहा है। शिश्वा वया सांस्कृतिक सहासम्बेशन शी-सहस्य लालदास जो उत्तराक्ष धास की सध्यक्ता से होगा । भी सरमी-पर जी धर्मशासा कालों की व्यक्त वर्ष होती। इस के सर्विश्वत रोनों पंजाब की प्रसिट स*मा*डों के उपवेशक व मतलोक तम कारका वर पचार कर अनुद्धा को पूर्व जाता

> इरिएचन्द्र सिद्धांत शास्त्री त्रवान कार्य समाज

वह चार्यो ।

त्रार्य सज्जन आर्थः ज्यात के ग्राहक बर्ने ऋोगें को बनायें

#### क्रमाद ईएका का अवदि क्रम वेब सारे मानवी के सिये है। अपनवीं का वह दीना हदा। द्वांच-कार दिखाने के लिये ऋष विज-किला जले । जीवन आसूरेत दक दे थी। श्रांव के बाद भी अनेव दीरों के बस्तिहान दिशा । वशा, भाग में वेद्यतकार दोना पाहिते। अपने देश में इस ने अपने ध्येव दा कोर च्चान व दिशा तो राज <u>स</u>म्ब

गीतम, क्यान, इयानन् शिव

. इताव कार्रव विभूतियों का इतिहास

में चर्चा भी न रहेगी। कार्क समाज के प्रति बरेगों का विश्वास है कावददश्य इस सात को है कि श्रीकृता में ४ केन्द्र बना कर तीत्र गति से कार्य किया आये। महत्या कानव सामी त्री, कृष्य स्वा० प्रवासन्द जी का बहारमा धानम्द भित्त ती के प्रमाथ से बसे ३ साध निवासे वा सकते हैं जो इस १ वेन्ट्रों को शरू करते से सारा समय दें। ये शीनों सहातमा लाब वारी वाशी वय में भार बार शास शंक्य में कार्य **श्र**चासन व मागदर्शन के सिये हैं। मार्थनेतिक सभा को नेद के लिये का भिका ये महास्मा दे देंगे ऐसी कारा। करनी थाहिये। पृत्य पं० नरेन्द्र जी जैसा स्वाबीनता संप्राम वा बल्लिदानी कीर दक्तिया में आर्थ-श्रमाजकी विभृति है । वनके स्रांत्रव

है। इचिया को योजीय भाषाओं के इंदरेशक भी निर्माण विवे का सकते हैं । शोलापुर समाज ने इस वर्ष तो कासक व युक्ट जिल्ल भिन्न विद्याक्षवों में इस देख भेजे है। देशस में दयानन्द ऋग महा-किशासय दिसार के संयोग्ध स्टावन do तरेल्ड की ने इस वर्षे कार्य ब्राह्मक कर दिया है। यह हिन्दी, मजायम, नेक्यू, वासिट, कन्बर व संबेदी कादि माधार्थे सुप स्रामते हैं। वीसियों नये व पुराने -कार्य कर्ता मिस सबते हैं। कांबर,

# दिस्या की दर्द भरी पुकार

#### (ले०श्री रावेन्द्र निश्चान्, प्राध्यापक, दयानन्द कालेव, खोसापुर) #5#5959696969696969696

दर्भेटक व सराठवाडा में खारे समात का प्रमाल हदा है हमारे प्रमाद से मने ही बाव शिवितन इस पर प्रदार करने का प्रयास दर रही हो । यौना मुंह किये परिस (rafes) से जन्दने में इस सफल हो सक्ते हैं परमु समार्थे और नेवा क्षोग भोड़ा फाईओं प्रस्तावों स्व भावनाओं से इस आमे वो

इंधर परिस्थितियां क्या विकट ल प्रारम कर रही है इस पर क्यातिल्'; इस दर्गक्रभेत में श्ची स्था॰ सरेन्यानन्य की नहाराज शी इबर का निसम्बर्ग दिवा । यह हारे र्राच्या में भ्रम्या करने निवत पहें उनका एक एव मान्य वि० क्रमबान दास भी श्री श्राप्त दुष्मा है।

भा**र** जब योहा क्लेज धास बर वह कौर फिर मोचे कि वह इरना है या केवल जब धार ही सगाने हैं। त्यामी जी ने फिला सम्बेजन करें। मैं यहां से ११ की 'त्रविक्त सारत में बढ़ों तह नेतरको हम आसे बढ़ें में बह निरंदचन देख व भोटर गई वहां तह में आ

सका हूं । शोकापुर के बाद बनकीर बैसर, उटो, उटी में रामकृष्य मत, सिगाश्व मठ, कृष्यानृतिमठ, नारायक गुस्तक, पीराणिको के बानेक मन्दिर हैं, पर सब भिनिय स्रवस्था में हैं। बार्य तमात्र शून्य है जैन बन्दिरमी हैं, हां । एक मास कें मेंने बल किया है यदि यन हो क्रीर शार्यकर्त हैं तो बावं समाज हा कार्य हो सकता है। यहां पा

अप्र शहर है. रामेश्वरम, कन्वा-

इमारी, त्रिवेन्द्रम, ऐश्वेंड्जम,सामी

शहरायात के अन्य स्थान कालबी. कोचीन, संबद्धर वहां पर नावों का **धोरसनाय मठ है। बालों की** 

समर्शन है। उड़पी वहां साधवाचार्य का लग्ध स्थान है, बाठ मठ है. वही सहस्त के हैं, करोड़ों की सम्बन्धि है। समस्य क्षेत्र में र्रमार्थ साथ हमें हैं। बैंदे बासूशव विवा है कि वहां हिन्दुर्दिसाई होने से a से हैं। जिस का सम्बन्ध **म**ठी से, काशमों से. महिरों से रहा है अविदिश्त सब ईसाई हो चुके हैं। इंदर शीसकों झार्च समाद है बाईडर्ज मिसे पर सब निगम दंगी है, कि जहां भी दो कार्य समाजी है तो बन में भी परस्पर में व मेर 🕏 । बनता स्मार्थ समात कप्रति क्रास्या रसती है। दक्किए चेत्र पर fizo साहित के नाम उनका पत्र कार्य समात को ध्वाल देश चाहिये। श्रम्बद्धा द्विया चेत्र भारत से च्ट दक्षिया की दर्द नती पुकार है। जावेगा। नुमे भ्राप पर विद्वास है. बाप तद की, युक्कों की वीस्त वरें। मेरा विचार है कि १६ क्षकटबर विजादशमी पर र्राचय कं बुक्कों का शोलापुर में एक

> चत कर क्याल को देशकाद पहुंच रहा हूं ।" काद क्या करता देशम के निषम में एक सुन्धाद मैंने उत्पर विदा है। शिरोमांस सार्वदेशिय ने भी कारते वार्षिक भभिवेशन में कोध, में तुर, महास व केरल प्रम बार शन्तों स्त्रे एक सभा बना स्त्र कार्य करने की योजना बनाई है सार्वदेशिक का वह विचार प्रशंध-

नीय है। मेरा ४ केन्द्रों का विचार बारवाडियों के १ सी पर हैं हिसका इस का पूरक दें शिरोधी नहीं।। इसी एक केन्द्र के साथ बड १ केन्द्र सम्बन्धित हों । 🖽 के शाद साथ

बगरान रास जी के काव पत्री में इस्रांहत रह केस की चोर दिसाना चारत हं वो कार्यसमात प भारत के शोर्वक से यथ वर्ष जुल का किस से यह सकाय दिशा गया या कि १० झाव नेवाओं, विदानी एवं शाक्षकों का एक शिक्ष संश्रदक्त वैदिक पर्य व कार्य समाज का सन्देश देने दक्षिण की निक्ते। वाबित्वका कह जिल्लांट्स सार्व-देशिक की फोर से हो । तिस वे वेस व अफ़िल्द को पर बढ़ा प्रसाव पढ़ेशा । इसी प्रकार इबर से कार्यमधान के सेक्ट्रों का रक सरहाद बनार भारत जावें । दगास क्रमाम, बढीसा की ब्रोर मी एक जाने। इस से व्यवसमात देश की भाषातमक एकता को वह बख हेता जो सरकार वर्ग बारी उनक जीतिक परिवर्ष फिलक्स भी स वर्षा संद। क्योंकि सभी राध-तितिक पार्टिको प्रत्यन या परो*न्ह*रूप में चेत्रीय उस से सोचता है भीर द्रहाई एक्ताकी देती है। क्षमा की बिए वर्दि किसी औ बूरा भी लगे तो भी में वह गा⊞ कोई औ राजनैतिक रस सारत की पक्ता शारतीय संस्कृति 🚟 स्वाभीनता को नहीं बना संबंधा केयस सहर्षि ट्यानन्द का भाव समाज ही यह कार्ये थर सवता है। इस का सव कारमा है। काराष्ट्रीय जासरी प्रवस्तिनोनो, विदेशी पंचमंत्री शांकायों से बिना कार्य समार्थ कं कीय जम सकता है इस पापिकों को चर्महये बोट

> तक देश का मता चाहने थी मानवीं का सहवीय हमें आ (शेप प्रथा ६ पर)

बोशों ब्रीप नोटों के पस्कर

उत्तर हो कर सोचने वाला आ

क्रमान संख्य वन कारो **स**रवे

भ्रमुक्तर से ते कर सहास त

बाम्बे से ले का बलकता योद्य

भारतवथ में लाजों ऐत बसाने स्थान है जो एक जेंग्रे सहस्तर रोग मे प्रत हैं। किसी के हाथों श्री प्रकृतियां मह वातो है किसी के देतें ही। हहशें के चेहरे इसके **धारण अति सयहर और** शीभस्य मधीत होने लगते हैं। प्रयों में से बीव बहुदा रहता है जिस के कारण महिलायो भिनियताची रहती हैं. क्रमान की र्राष्ट्र के बात के**चा**ओं का इस्से बिल्क्स मिर जाता है। कोई कर्दे संबदीक फटक्से नहीं देवा दे **ब्रा**पती डीविका के लिये कोई उसीन ब्राजा नहीं कर पाते बतः दर-तर ब्रांगला और डोधरें साना ही उनका क्य बाद सहारा रह जाता है. ईसाई स्रोग उनकी सेवा-गुज्जा कारे के समाने बाहकों विश्वहाय जीवों के वर्म पर दाका डाक्ते क्रांप्र उन्हें इंसाई बनाते रहते हैं। बह देलकर श्री महवानन्द साल्वेशन ब्रिशन होश्यारपुर तरनतारन शासा की कोर से ईसाइयों के जाश्रम के विकट राम मन्दिर कालोनी में (बद्धांका कि की सवासी इन्ह होनी सपरिवाद रहते हैं) विस्पैसरी क्रीज कर बनकी सेवा चारम्य दर दी है : क्य मास पूर्व उक्तकासोनी में वंशाब के वह स्थानों से रोग-**बा**त सर्वश्रेषे का सन्देशन १**व**ाः **इस प्र**क्षम पर सुन्हें भी सर्क्रमांजव होने का सीभाग्य प्राप्त हुआ। सिकाहै--प्रक्रोपैधिक पद्धति से उन लोगों का इस्ताब को होका ही है। वे इस टोड में मा कि महर्षि दवानस्ट डारा निर्मित आर्थ समाज के रीसरे निवम के कनुसार देव सकसाय विमाधीकी एलक है। इस वे प्रिष्ठ रोग इट को इर बारने का उपाय क्रवक्रव व्यक्ति होना नाहिये । स्वाञ्याय करते **इ**स्ते नेरी असन्वता का कोई विकानान रहा वद में ते समझ बेड पत्चम कारश के पतुर्थ सुकत बै एक के बाद दूसरा सराशार

# स्वाध्याय एवं ऋत्रसंघान प्रिय श्रार्थ विद्वानों की श्री सेवा में विचारार्थ

(ले॰-श्री पिंडीदास वी ज्ञानी, अमतसर)

英语英英语英英英英格式统统

रस मन्त्र पासिवे । वन्त्रें इस्त्रे गरतों के सरम्म कामे वाझे सहित पाठकों की सेवा से सेंट बान्यच्य शिरि शिक्तर पर मी (श्रुत्वा) हा। का नाम सुनकर करण हैं। यदि आर्थ किद्रानों ने इयर व्यान देने की क्या की कीर (धनः श्रमिर्यातक) वन सपे ६८ बनुसन्धान विव अनेपकों ने समय के भी पक्ष चते हैं करीर बखोग से देने की कपा की तो हो सबता है इसे शथ करते हैं। कि इस रोग की अब काटने वें मध्यत्यो देशसङ्जलसीदस्यास्त्रो सदायक हो सकें।

सता वे हैं---

वो निरिष्यक्षयमा धीकवी वंशवच्चमः। कुन्देहि तरमनाशन क्षमार्थं नाशयन्तिः ॥१-४-१॥ मर्थात—हे (स्ट्र) कट नाम के वचात्त (यः) जो /निविध

द्मवावधाः) प्रवृत्तां में प्रत्यन होता

(क्ष्मानक क्षमान) क्षमानक है, इस कारण (बीकशं बसक्तमः) बारतांबर परिवरान होता है (देवा:) इस्रीलये स्वाच्यों में से सब से क्रिक करवान है सब दवों से व्यविक रतसान है। है (स्वयवकान) हुन्द नामक कीर्याप को पुष्ट करती है **38 बादि रोयों हो नष्ट करने नासे** त् (इत: तक्सान वाशवन) इस देह में से इट आदि हु:सहायक रोग को नागः स्तरा इत्या (धाः इति) इमें प्राप्त हो। स्मरत रहे कि राज

निषरट में सह के सामन्य में य' 'ক্তমানে ব্ৰব্যান বিহাৰ

विष करवूरच युट रोवदिच नाग्रदेव थर्थात कट नाम को भौकति रक्त पित्र बात अपी ज़िशोश का शयन करके सबकी और कह रोग्रे को नामा बरती है।

सपर्यं सबने गिरी जातं विश यतस्परि । धनेरियश्रत्वा दन्ति विद्रष्टि क्यमनासभम । १६-४-२

वस हि विदुः) हुट रोग नासक इस को जिल्पन पूर्वक जान जेले हैं के उत्पर (श्रुपक्ष सकते नियों) ज्योतिसंद (कासन) हैं स्पीर

के क्षिये जारे चप्पक्रों के समान सर्व में तकी किएएँ भी (हिरएक्स) त्वतः च्योतिसंब है कौर सन क्योतिमें व व्यवहों के आसम धर

ਹੁਝ ਬੜਕੇ ਵੈ ।

दिवि ।

**रूप्टमधन्त्र**ः । १-४-३

**अर्थात्—**र्द्य्य सद्भः प्रस्वत्य

दिव्य गर्को हा साध्य सर्व. (१वः)

वल्देवनकाम दिवि) जो बड़ां से तीसरे

हिरव्यक्षी औरपरद्विरस्य क्यान

वत्रासकस्य चच्छा देवाः

विसाने वाली (नावः) सर्वेशक नीकाएं भी (दिश्यवयी:) दशेतिसंह है (यामिः) किन से (कुप्ट) कूट नामक झीवच को (वि:झावडन) सब

र्दाक्षण की दर्द भरी प्रकार (१९८८ १ का शेष)

होगा। संस्थानात यहं देसाई बी वेद के सकत बन सकते हैं थोशा जम्म यत आणि पाति की डीकारों को होतो । ऋस्ति की सावसा से विक्रीस करने के किसे करण हा यजिदान हो।

ची लोक में है (तत्र) यहां ही दिन्द क्रिस्तों (कुप्टम् ब्रावस्था)

वज्रामञ्जल १९५ देवा : क्राउमवन्द्रता। १-४-४ बार्यात्-(हिरस्ववी) तेशोसव (बी:) नाव के समान यह ब्राहित्य (ब्रिस्स्य बन्धना) तेजो--ब्रस्य से वंधी छई (श्रवरत) विवरती है। (तत क्रमुशस्य पुश्ये) बडां क्रमुत रस क्रीचिवरों के लुखकारी रख का

हिर्देश ।

अर्थात-जो पुरुष (तस्यनारा- वादी हिरस्तवीरासन वाजि: इस्टं विरायहर्ग ॥ ४-४-४

साधकों, नेवाओं व विद्वानों के बाद बार्य समाज के उनकी का एक दलक्षणकार्जे कार्जेओं के सरकार के समय निकते । सीतर शईप के दशंनीय पुत्रक नहीं चाहिये। क्षानकील विद्वान काय कीर जात्रिके। क्षकेला पश्रम हो यह सांग परी का सब्सा है। भी हो, त्वम पन्द शी

'शतर' हो. राम प्रकाश भी रिसचे स्क्रमबर, भी यो. रचवीर सिंह भी, नी हो. नेशका जी. भी घो. रमेस चन्त्र औं 'जीवन' भी अवदेव बी. देशधार्व यस. ये. व श्री र सह सेन्द्रिश दर्शनाकाथों, की बोधेन्द्र सिंह पम. एस. सी., जैसे वर्ड मदोरव पुरु--वोच्छ सामध्य है। (देश:) | त्यक है। वर्द इस सह साथ दिव्य किरवों (स्ट्टम् अवन्यत) उसे वीरी के साथ नेद के पूसनीय युवक कुट कोर्चाप को पुष्ट करती हैं। विद्यान थी, भवानी बास की भारतीय हिरश्वमाः पन्मानं भातन्त्ररिजारशी इ.स. ए. (राजस्थान) ही ठो सहुत सन्दर है । एकर अदेश से देशे

ब्दकों का दक्ष वंशास, विश्वार उतीसा, धासाय जावे फिर दक्षिय क्रवीन्—इस सूर्व के (कशवः) Ⅲ युवक उत्तर को आयें। त्या नेवा ने वे इस को (हिमकतः परि) हिमासच किरकों के जाने मार्ग (हिरश्वयाः) व सार्ववेतिसक इस पर विचारेगी ?

# मनुष्य जन्म कि महत्व (४)

तिसक पं. मनत राम जो (जक्रीका वासे) जालन्यर **未来来来来**来来来来来来来来来来。

बार राये---केत चेत रेवावरे.

विश्व में हो स्वेत। चित्रसम्मणि वस क्रमा को. चैंक न चित्रियां देश स

बार तरायत को पाना बच्चों का शेस नहीं । न काने मानद पीते भी वर्गाक के जिए हमें किननो बार अस्य क्षेत्रा भीर द:ल मोगना पहा पर इस इस की सहचाको समन कर बराइयों द्वारा इसे विशाद रहे है। इस बा मृत्य बढ़ी क्षांच सकते : हैं जो इस को जनविजयन में जान-ध्वान में सेवा-उपचार में कौर दान-यरय में विदाते हैं।

बदावा कास वा। एक दिन

इल चलाते हम उस के क्षेत्र में से क्य गागर निकल भाषी। उस ने सम का शक्तत द्वा कर देखा वो इस को उस मानर में गोल २ ≼क्ट सरे हुए दील पत्रे। उस ने समन्त कि पंजी बहाने के लिए अब कंकर नहीं हुंदने पहेंगे। इन्हीं से कोप की रखबाकी का काम बस जावेगा। बहु प्रति दिव बाजरे के लेख की रखा मंध पर बैठ अल और पुमानी में गायर के कंकड़ भर कर फैंक्टा और पड़ी सकाता रहता । वे कंक्ट्र लेख पर से हो कर पास की बहुची नदी में ता गिरते इस प्रकार एक २ वरके श्रम में सब संसर केंद्र कुछा, केवस बक्त ही अंबर क्या हुआ। या भीर

<del>वस की पुगानों में</del> रक्षकर फेंकने ही समाथा कि रेव बोम से समानक होशियार पुर में स्थान २ वर समाज क्रद्र सभा उसके सामने का लडा हुवा । संत ने क्ले ब्राइपर्व थकित हो कर उस को ब्लाप्यीयरी ! तु तो

कोर कार्य कार्य कार्य है। इस

एक वर्षि क्या ही अल्डा को प्रत केंद्र । यह तो वहत मृत्य हीरा है। इस का मृत्य क**म** से कम दत इतार स्पर्वे होगा।' हीरे का नाम सुन कर जाट मूर्वित क्षेत्रम् पर गिर गया । शंद ने पंता करके जब तस को समेत

किया तंत **इत** रोकर बोसा—'चुनि की ! में को बना मन्दर्गत, सूख भौर भारत द्वान मनुष्य हुं। से में ऐसे हीरे तो वई सी, सब्द सम्बद्ध कर केंड़ दिये। यदि में जन के सहस्य को जानता होता तो कात एउ सहा वनात्व बनुष्य भानः जाता ।' मुनि ने च्हा--'सीव्य ! 'शबो सो गई शब राग रहा हो। जो होरा तेरे हाय में है अप इसी की रचा कर, बस्रों का लाम ब्ह्या। स्रोवें इय अव तुने विसने

दर्शन है।'

बनाय सम्म की पहिलां भागमीत होरे हैं। बी बन इन हो विषय वासना के मोग, तातना के, मद-भान के निन्दा पुगलों के वर विरोध के तथा वार्शवदाद के पह उड़ाने के निकित्त, कालकरी बदो के चीड़ देते हैं ने सहासूद्यांत सतस्य है। वे पहिना काल नदां के for का किर नहीं सीटवें। घट-क्षेत्र विकार वर काने की सब तेते हर बचे (शेष) जीवन को

देखें ही समयना चाहित वि

सरस बनाना पाडिए। वेड प्रचारिया समा

होशिया पर का वेद प्रचार इस सभी के उपदेशक जिला खापित वर रहे हैं तथा दबाई व पुस्तकी बादि से क्षार कार्य कर रहे हैं। यह शंकर व सेता के आस-पास प्रकार कार्य में हकीय मुख्यी

बास शरात से साम वर रहे हैं।

चर्चि की बाशी से जिल्लो से जो बचन सहात मने बता ऐ जयत. यहां दे समधी स्थान १ विस संगोर ने पनस्थान था किया हमारा. उस संगीत की कहां दिही भी **पहले** वान ? बिस पुण की सुगन्थ से इस पुनः नठे थे, बस पुष्प का बताबी कहा है बन्धस्थान ? मैं भी चत्रहराह' कि बा-बाकर बैं— कर्कस्था उठ देशाहत से मधुर लान ।

वेद गीत (रचमित।--अरुण सरीन हथियारपुर)

> सुनो, सुनाक्षः तुन्हें बधनोश्चर तुन्हारे, सुन स्रो, वेट सहात है का सहात वचनों की साम, वेदों में के ही ख़िहा था **कह** संगीत— जीवित हर वे भारतीय कर जिसका पान, इस मुग्रान्थित पूर्ण का बेट ही अभ्यस्वान है, विसरी सगाय से विश्वासन वह सारत उदान, यती नहीं, हयारी सध्यता यही इस में हिस्सी है वर्ता इन्हीं के बलवने पाएं जग में इस मान ।

वेद! सत्य हो तुम पृथ्व हो, चतुस हो— तुन्हें में नतमस्त्रक काना ह राज-राह श्रवाम ! नम से ही तो शिक्षा पायह अस्थादिका, वर्जभारत संग जस्त करता है तेस साम । बाब इमें बत दे कि इस गामें तके-ताबि हमारी चयुद्ध जिहा करे मधुरामुव पान, में, बेरा देश पर घर नुके सरवमार्गी हो, क्षी, तुम्ह संग करें जगत में चापना नाम ।"

#### \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* मध्यलश

इर दिस के कान्द्र है शेला हर पग में हैं खाड़े दुबियां भर का दर्दे बांट ल ढडली कें ऋपना है भने पड़ीशों को सुर्जी दे इस को इस दिलाई बगर इडीक्त वह है पर पर कुछ है मेरियाले

सहा को द से बचने फिरते और श्रेयको अपनाते हैं उस पर भी चंड देखिये सार को झानी बनलाते हैं बड़ा क्षत्रवर्ड हाल वहां का किन्तुल नहीं सम्भूषे साता वीड़ा इस्ते हैं परबेश्वर फीस दालतर से जाते हैं

निर्वंड, निर्वंत. दुली, को जो भी गत्ने सगाधा क्स के धामे भक्त ज्ञाता है भा कर स्वयंत्रियाला बहा तस्त्र श्राता है सुन को इस दुनिकां में उस पर इश्लामों से नफरत कर के यो इन्छान सहाता कसराः

-विजय निर्वाध

#### आवश्यक्ता

ब्रार्व प्रदेशिक समा की कह क्रीक्ट स्थानेशकों ग्रांप प्रश्नतीकों की आवश्यकता है। वेतन योग्यता-बस्रार दिवा आएमा । सभी तार्वी क्रवते-रूपते प्रमासा पत्री सहित श्राचना पत्र मंत्री शहेशिक सभी ब्रिक्ट क्यारी के पते वर भेजें। ब्रमाश पत्रों में ब्रास, चनुसद, किया विकरसा विस्तार सहित हो । आर्थन पत्र ११ सिवम्बर तक बा काने वारी वं ।

#### -- मंत्रो सम्ह दयानन्द कालिज गोलापुर

धानं बनात को यह जान **प**र **क्र**वि वसकता होगी कि भेर. राजेन्द्र की जिलाद के परिचय में तीन द्यात्र दीनाकार श्राथम ठीन मान्तर मुख्युक्ष तथा हो दवातन्त् मास्र श्रद्धावियासय दियार भेने जा चुडे हैं। और भी निकट सविष्य के ब्रोक्टे का प्रकार कर रहे हैं। श्लीन्द्र वी के बाने से वो बसी बेरे क्रस्तरक होने में वैदा हो नई भी कर दर ही नहीं हई मधित कार्स जगत प्रमुख रहा है।

संगंबानदास

चित्रती प्रश्न

#### :**सोनीप**त में अयानक बाढ

३१. ३३-६-६५ की रात को And an acres of make क्षेत्रियों कीय के सन्दर पाना ही fund दिलार्थ देश का। साजवर विषय, देवनगर, सिंह काळोती, शिक्षी केम्प कादि सब अकादियां क्रिया संस्त हो गई हमारी सभा वे श्रापदेशक भी चन्द्रभैन जी सार्थ क्रिकेची सोनीका निवासी वेपर हो करके हैं। १७ वर्ष के बाद एक बार शिक्षर शरकार्थी बन तव हैं। दिन्द केवनदा इस कोर विशेष ज्वान दें।

#### श्रावत्ती उपाक्रम एवं रचावन्यन

शार्वसमात्र संत्रश पूर्व निवार में कि २३-८-६४ को भावशी पर्व समारोह पूर्वक मताया गया । बहर यह प्रार्थना असन महि हर । बाद में भी बा॰ रघुवाब सिंह बी वक्षो प्रधान कि॰ क्षा॰ स॰ द्वारा ावारोडल कार्वे सम्पन्न हुका । हेदराबाद सत्याग्रह के झमर राहीशी को अञ्चानित कार्षित की गर्छ । कान्त वैभी वे अभावत्य जी निवासी प्रकार कार्य क्षात्र ने पर्ने से

क्रिकेश्वर का वर्ष प्रदर्शि के बद- क्रि कारों पर प्रकाश कासले 🔰 स्व का धामार अव्होन किया। इसी श्रमावसर पर सिवनी साक्षा

के भी देवी दयाल जी वादव का विकाद संस्थार बीमतो रहमको देशी के साथ सम्पन्न हथा। उपस्थित मनवनी ने वर बच बो ब्रामीकी दिया, प्रसाद वितरस वर्ष स्तरित पाठ के बाद विवाह

# को परीचार्य सितम्बर में

सार्वरेशिक विद्यार्थ समा की परोचार्य २२.२३ समाना ६४ को **ब** 

डा बर बाब १६.२० फ़िलम्बर १२६४ को होंगी। इस निधि को नीट कर लें। जो समाक्रें व संस्था**एं** तम बेम्द्र कोकश वाहें ग्रीत इसरे विद्यार्थी इस हा साम छठा हर भीषायं देश बाहें शीव ही बादते श्री मास्टर श्रात्माराम ज

अस्तसरी' की सचित्र कीवर्त स्त्य 1.65 N.pers व्यव स्त्रित जबदेव बदर्श आत्माराम पर्य बढोदा~१ से मंगवाएं।

. तय सा निहरूी ा वेदप्रकाश की एम.ए. सन्ता)

क्रमस्याका सूर्य सा बह आक्ष प्यादा, क्सि दिशा में बा क्रिया हा, हा, हमारा, होक से क्रश्चित जग भर हो गया है, शांति का अरहार वैशे सी नया है। इ'इते हैं कोर तारे वह कहां वेसहारे साग्य मारे वह सक्षां है। इक्ते संस्थार सारे यह कहा है, आंक्ताओ हाव हारे यह कहा है।

क्रिय की सेका किसे बाजार प्यारा, निज सहन में ज्यों सुश्री श्री बीच फारा मोज का कह पर दिशालय का सहारा,

अभि तथ हर किन्तु किस ने साथ गारा। बहु कहां जिस ने हुने पत्त्वार ही जी,

un it uftelt fen moret. बो <del>अंकु</del>ठित हो नहीं तक्कार दी की. कट बड़ी विभाग को विकास दी वी श है कियर यह बाइना क्रिस ने समा दी,

हर हरद में सुख बाता ब्रिन्क्या वें सचित्र संभीति सी लगा दी,

विकला की नध्द, निश्न दीक्षक द्रमा वी। (क्रमशः)

#### 

शक्तंत्र दव चारि ब्रावेटर पत्र धर कर शुरुष के साथ इस कार्शनय को ग्रेम देवें :

हैकारण राजनी विकासे सभा देशती।

परमात्मा के मेल से शक्ति तथा ऐश्चर्य की वृद्धि

(थळ २ वर होच) वयी मिल कर भगवान से सायन के देन कीर सीक्षत की वी कासना क्तें। इस कोलों को क्षेत्र की कारण कामी चाहिते और वह प्रेसक्य सम्बद्ध के जिकित अब के साथ जीवन के व्यवदार में सब के साथ निष्कारत करोड़ करके ही हो सकेगी।

वह संसार भगवान ने प्रशिक्तों कं सुस्र के क्रिए रथा है। इसे यसम्ब ने दुसस्य बनाया है 👔 बार्यत के व्यवहार से इसे पुत सभी बनामा है यह कास अवेद वार्य का है जो क्से करना है।

—গ্রারখন

केन्द्रीय प्रतर्यसभा कारपुर (U.P.)

र्दसाई यवती हिन्द बनी कान्पर-कार्यध्यात्र गोर्गण्य नगर में एक २४ वर्षीत ईसर्फ दवछ go हैसर्न टीमस को उनको इप्या-नुसार वो देवीदास सन्त्रं केन्द्रोम कार्य समा कानपुर ने वैदिङ धर्म वें ब्रवेश कराया । इस अवसर पर श्री आस्य ने गायक सन्त्र थ सन्द देर मन्त्रें का क्यशस्त्र करा के रेतिक वर्ग सी विशेषकाई वर्गा भीर प्रमुख्य स्था साम कः प्रीति रस्याः भी धार्यने इस रूप्य शिक्त दुवने की सहर्षि इकानन्द सरमारी हारा राजित प्राप्तर प्रेव

तत्वद्भात हम यथवी का विकास उसकी इच्छानुसार यह सुबीत परिवार के बेज्यूट मुक्क की प्रवाप सिंह गरहा के काथ करावा गया। व्यक्तित सँख्डों भर सतरेवों से इस ओहे को प्राणीबीट ही।

कार के कारण और सारकार के

जिल मेंट फिया ।

क व प्रकासक की क्वोपराज की कार प्रोहीहरू प्रतिनिध सभा पंजाब बासन्बर हारा वीर बिसाव है स. विसाव रोड बाक्यार से सदित तथा कारकार कामान्य सहात्मा इंगराय मनन विकट कपहरी भाजन्यर हाहर से प्रकारित सामिक—कार प्रावेशिक प्रविनिध समा विवास सामिन्यर



देवीफोस सर ३०३० [भार्यप्रदेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक सुख्यत्र] Read, No. P. 121 **एक** प्रति का सक्त १३ नवे ैसे वार्षिक संस्थ ६ क्ष्मये

वर्षे २४ वंक ३६)

२९ भाइपद २०२१ रविवार-द्यानम्दास्य १४०- १३ सितम्बर १९६४

(तार 'बादेशिक' मानस्पर

# वेद सक्तयः

यशो मा प्रतिमुख्यताम हे परमातमन ! ऐसी क्या वर्रे कि मुन्दे वश कभी भी न होड़े । संसार में बान्य थाडे असे त्यारा हैं, मेरे से दर हो आयें पर बीर्क मध्ये कभी न त्यारो । सिन्दः बेडी कमी बडोने। मैं की विवास वना रह' (

#### यशस्त्री ऋस्याः संमदः

में इस संख्य का समाव समा का बहारकी सभासद वन के रह'। इर समाज में वा दिसी भी लेत्र की सभा हो सदवा राष्ट्र की सरेशदू हो बड़ी पर भी मेरा बश वीलका रहे । मेरे कामों की सकेन कीर्त हो ।

# ऋहं शर्वादता स्याम

में सबा कान की, दिश की यात बोक्तने वासा मनः । अव मैं समाज में वा संसव में धापनी बात बहु तब सारे क्षेप मेरे प्रभावशासी दया द्वितहर बचनी का भावर मान करने वाले हों। वंबता वन् ।

सास देव है

# /2/9/6/वे दा मृत

श्रो३म् श्रम्नवे स्वाहा इदमम्नवे ३दंन मम । श्रोम सोसःय स्वाहा । इदं सोमाय इदं न मन । श्रोम प्रजा-एतवे स्वाहा । इटं प्रजायतये हर्द न सप्त । श्रीम इन्हाय गो० ए० प्र०१ स्वाहा । इदम् इन्द्राय इदं न मम् ॥

क्कं---(क्रम्बरे) करित के लिए में यह काक्ष्रीत (स्वाहा) मेंट करता हुं। यह भवित के लिए है सेरे लिय नहीं (शोमाय) शांति दाता वस् के विक अर्थेक हैं । (१३ प्रसंद से स्वादा) कर इडावर्ति स्वरेशकर के किए हैं : (इन्हाय) इस बेरवर्ग के स्वाभी अनु के समर्थेश है। यह बेरे लिए नई है। वे मारी बाहरियां उसी के लिए वर्ष है। उस में मेरा इक नहीं है।

भार-परसारमा को सनेक नाओं से पुचार। जाता है। वह सांस्त है। सब को प्रकार देश है। यहां सोम ई-सीतसवा सांवि का सोद है. हरी प्रक्रेश्वर प्रजापित है. वह सारी उसी की बजा है, वह हमारा स्थाकी है तथा वही इन्हें हैं, सारे कहचेत्रन देशों का राजा है। सारा देशबर्क अले बर भी है। इस अवन के देशबर्क का बढ़ी मालिक है, इन्द है। है देव ! मैं इस यह में सी बाह्यरियां दे रहा हूं। व्यारे वहायीं की मेंट कर रहा हूं। यह सब मुख कार का ही दिया हुआ। है कीर सार के ही कारित किया जा रहा है। मेश तो कुछ भी नहीं। सब तेश दी केरा है। तेरी दो हुई वस्तु तेरे अपेल करता हूं। हैं मेरा वह इस नहीं को हुद्ध है तीर । तरा तुम्स को सींचते स्था खायक है सीर । काप का विदा साप के सर्वत हो--सं०

# एका राजाःर्थ सभा

राज्य के कार्यों को ठीक दय में चलाने के विश् नक्ष पता को सभी बनाने के निक्रिक पहिसी राजाचे सभा बनानी चाडिय। जिस कर काम सारे राज्य शहरूप को चलामा है।

#### राजनीति ठीक पते । हितीया शार्व विद्या सभा

इसरी सभा कार्य विद्या सभा धनानी चाहिए उसके द्वारा सारे राज्य में विद्या तथा शिक्षा का काये किया काये। कोई भी धारि। कित न रहे, इस की देख भाज तमा शिक्षा का प्रकार कार्य विद्यासमाकी और से होना पाहिए।

ततीया श्रार्य धर्मे मभा वीसरी सभा का नाम कार्य थमें सभा है उसका काम क्षत्र है कि सारे राज्य में प्रम की क्यांति का प्रवर्ध होता रहे । सारी जनता होक तथा सदाचार आर्थ पर पक्षवी रहे, बुराई पनपने स वावे । श्राचार-विचार का प्रकति का प्रवन्ध श्रायं वर्षे सक्ता करवी

रहे। साध्य भू सिकासे .......... महर्षि क्षिप्त सांस्य इरांन के प्रकार प्रध्याप श्रम सूत्र में क्षिपते हुं। जब निविधयु:सारयन्त निक् सिरत्यन्त पश्यायः— सर्वात

शीओं प्रचार के दाओं की करवन्त्र बिश्चित हो परमपुरुवार्य कार्त 🐧 १ इसस्पि हमें हेय-दुःश धीर हेव का हेल-दःस का कारण हात-द्वःस जियक्ति तथा जानोपाय-निमृति का mora nu ur strifen (scientiffic) शह से विकार करना चात्रिक और फिर उनका अपने क्रीका में काबीस काला पाडिय जैसे बहारका गांची गीवा खटा **बा**ध्याव इंग्सिस् टीका पुष्ठ ७० पर fastd है—This vos must show it self in life पहिसे इ.स के बासाबिक स्थम्य पर 5 इ विवार कर आवे हैं। योगि-शास प्रतंत्रति सङ्गाशास समय के विवार से इसों को तीन प्रकार का बर्शन करते हैं। क्रकीय मूत, वर्ष-मान प्राताल । वे बहते हैं कि केवस अवारत दुःस की निवृत्ति के क्षिये ही पुरुषार्थं करना पाहिए।

सुत्र २-१६ होगं प्रशास नगावतम्-स्मार्थक मृत्र वो न्यतीय होने के सरदान गरा हो ही गया है भीर करियान गरा के खब में भूक हो साता है। इस किय के होनों स्वय नारा हो जाते हैं। केवल साते वस्त्रे सनामा हुन्स के सात्र की विश्वा अस्त्री माहिए। वस्त्री की विश्वाि स्मानक हुन्स के सात्र की विश्वा

यहां यह रांडा जनका होती है चित्रों तुःज सभी जनका ही नहीं हुआ, वतका नात वैते हो तकता है। इस का बत्तर वेशोंकक दरीन में महर्षि करवाद ने चीचे बरवाब प्रथम आदिवक के सूत्र में हिवा है— कारशामावात् कार्य मात्रः

कारमा के अन्य की कार्य का भी भाग होता है कीर करता के भारा होने से कार्य वा नाशा होता है। दर्शनों का स्वाध्याप

# दु:ख का वास्तविक कारण

है पहिल्ला के प्रश्ने हुपये कम्याप का रुक्ते हुपये कम्याप का रुक्ते हुए हुप्त का वाद्य हुप्त का वाद्य हुप्त का वाद्य हुप्त का वाद्य हुप्त का हुप्त का हुप्त हुप्त

प्रश्न क्षेत्र के ब्राह्म है - अर्थन प्रस्तव वित्तवी मोश-मार्थीह प्रकार प्रवेष के प्रस्तव में देशेल वृत्ति तिस्त्रे वित्तवी देशी मोश है अर्थ क्षेत्र में तिस्त्रे की कृष्य महात्रक ने तीता स्त्री प्रसाद मार्थे तिस्त्र स्त्राव क्षेत्र प्रवेश स्त्री स्त्राव स्त्रावने तिस्त्र

सम्मानिक कारण के मानिक स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र सम्मानिक कारण के स्वास्त्र के स्वास्

वं विचाल दःस संबोग विवोग बोग | दुःस दा दारशा नहीं है । सांस्त संगतम । वह जो संबोग है यही प्रथम कव्हाद ३३ सत्र हे हेसा इ.स दे और इस का विशेग ही क्वेन हैं। शहबोशोऽपि ऋतिहेसाम बोग कर्वात प्रसादन से विकास त समानवम् । श्रद्धति के जिस है। महात्मा गांधी उस के कर्य संयोग से परुष का समाज काल हें क्रिकटे हैं-Distation from है, यह बीब की कालपहला है all union with pain and कारया व्यक्तिकसे होता है। पटाबी nion with the Supreme. के साथ समाग सक्तों गांड से बन्धन नहीं होता। क्रथांत सांस्व known as yog. सिवान में अविवेष से होने साने The man's spirit is so sunk स्वाभिश्राव पदार्थ सम्बन्ध, संदोग in God in divinuation को पुरुष के बन्धन का हेतु शाना है। संसर्वसात्र को नहीं। येथ

है। जो वृद्धि में केश मात्र तम है. म्बन्धर है और इस बांड में के क्वेमार है। श्वास ऋषि सपनी टीका में बिस्तते हैं 🌬 विस्त प्रकार जर्बात बुद्धि में प्रश्य हर सब धर्मे, लोक में इ.ल देने नामे कारण भी विषय, शरीर, इंग्डियां व्यक्ति हस्य निवान-विकार का क्याथ देखा है। इस प्राथ भीर शक्ति का ओ जाता है. दशी प्रदार दे:**लंदे कारण** सामन्ति सहित प्रविधा पां। सो संयोग और संबोध की विविध **१९-२व**िमानयो जोम्ब-भोक्तासाव को उपाय भी जान सेना पाहिए । का सम्बन्ध है। इसके किए उत्पा जेसे पैर में कांटा चमने पर पैर के संबोध शब्द भाषा है। वही दालों तल में वाँड़ा, कोट्रे का पुमना **और** कटि पर पैर कान स्थानाया उसका दासहर पैर रक्षता—ओ 🥅 तीनों वो संमार में जानता है वह कराब काता हुआ वाटे के पुथने के दुःसा को पाप्त नहीं होता। देसे ही जो वाप्य, शायक क्यीर प्रांतकार इस वीनों पराधों को बानक है । बार श्रमी दुःल को याणा नहीं हता। धर्मात सुद्धि ध्याधि के सम्बन्ध से पुरुष वाध्य-पुरुषी है। इन बोनी का सम्बन्ध वा संयोग तायक है, दास देने वाला है और अधिकेड स्वाति

> नहीं पर एक बात और वासके बोम्ब है कि ताप रूप मो किया है, बह कमें चित्रपृति में रहती है, कमें में परिवास स्तती है और क्यों करक बुढ़ि वा चित्र में होशी है। (नैक सी ट क संकरदास की

उसका प्रतिकार है।

लारेंस रोड अमृतसर) इसीसिय पिचवृति निरोध का कोम रार्गन में विधान है। क्योंकि दुव्य जब का कारता सेन की वृद्धिकों के कर में पिक या शुद्धिक का विश्वास्त्र है। कर्धार मुद्धिकत का विश्व विधानों दें है तक होता है। (क्यक्त)

आर्य सज्जन आर्थ-जगत के शहक बने औरों को बनारी सम्बादकीय-

# ऋार्य जगत

**सर्थ** २४] रविवार २०२१, १३ सितम्बर १९६४ विंक ३६

# श्चार्यसमाज को बेचो नहीं

कार्य समाज का विद्याल

क्यांदीलन उस सर्वमेधी देव दया-बाद सरस्वती का प्रारम्भ किया हका है जिसने कपता सर्वत्य ही समर्पेश कर दिया था। लेसार की कोई भी बड़ी से बड़ी शक्ति उनकी **अ**श्वने पथ से विचलित न कर **बाकी, भारी प्रतोशन कारक**वित न कर सका। स्त्रीर तो स्त्रीप भो स्थयने पितासे भी सत्य का परिस्थान इस्में का समगीतान पर सका। बेसा देवता और वहां कुछ सबस श्रा । दलवारें, विष के प्याहे सत्व का सम सम्भीत न कर सहा। बारवपर के एक विशासन्दिर की विपुत रागि, कोसलीवट की ऊर्ची मानी तथा कर्य समेख चरवील सार कथन में न दाला अर्फा येसे विव्य सस्यापक का स्थापित चार्थे समाज भी अपने औरन में इसी प्राचीन परम्परा की मनामे चना कारहा है। भारत के शक्तराय बार्ट कैसकोर्ट ने पन की सहा-बता का सरकार की ओर से कार्य समाजको बदा प्रक्षोमन दिया। सरकार द्वाकविह मजीठिया ने aरी. ए. भी. इस्तेज के नाम के साम द्यावन्त् कं साम को इटा देने के सिप धायवा उसके आगी **=**चना नाम ओड़ देने ⊞ सिप बाली रुपया वार्यसमात हो देने को वह दिवा। परन्तु धार्यसमात के बह मान दुवरा दी कार्यसमान को कार्य, बेट प्यारे हैं। बेक्टवानन की प्राप्ता है। पैसे के खिल इन की क्रिये केच देवे । वहा से बहा प्रजो-**इय दुवरा ६१ व्यप्**नी परस्पश

शरिश्वा, सङ्क्षा का रहस्य भी इसी में है । बात हमारे डी.ए.बी कांसेय, मुख, पाठशासार, तथा एक्क्स वसी नाम, मान तया मान से पान १ हे हैं : दिन्त अधिवाना के कार्य-

समावियों की क्षेत्र से शक्तियों के चन्द दर्जी के प्रशोधन में कपने चंद में भार्यसमात सारेंस रोड वार में क्रिक्स त्यस को क्रांसेट सवस्यः के प्रचार मन्त्री श्री कैत वराने की पर में उनके आग से विद्यासःगर और ने भ्रमशः स्ट कार्य शस्त्र को हटा देने के सम्म-चार से सारा कार्ण क्यान एउन हो बढा है। यदि सके ब्राव्या कार्य न्यम खोड वर टर्ट मिसते हैं चौत मैं इन दश्री पर सपने परावत ताथ को येख देता है थे! इस से उट बर कोर पतन पता हो सकत है। न ही ऐसे होगों को देश के क्रिय कार्य शहर को बेबने की द्वारत दी शासकती है। सम्बंध द्वार है बह संस्था प्रदान करने के जिल री गई है न कि उनके नामों की नीसामी दरने का उस दो छ। छ-कार है। सार्वतमात को देवा कालेश नहीं काहिए जिस में कार्य शब्द की आपरमा की ही जेव दिया हो । वैसी के लिए केन्द्री बालों की क्योवति का प्रतिचय मिला गया है : वह केवल यह नगर वा संस्था पर करत तहीं, समन्ते समाज की तित को पैसेंस है। हमें रोमा कार्यत्र नहीं चाहिए जिस में प्रार्थ प्रस्त को ही सोईना पढ़े। प्रसन्ता है कि इस समाचन पर सारा बार्व उगन जान रहा है। सार्व सार्वदेशिक समा देशती के स्वा-मली यो सा० रामगोपास वी www रक्ती । कार्य समाज की राज वाले माने २ जल्बाना गरे

सारी स्थिति देशी । सुभाश के | समाज विद इस कोर प्रवान ऐंदे वो चढा साम द्वोगा।

#### पुज्य महातमा जी

ं काय जगन के त्योम्त महास्मा बातन्द खामी जी महाराज कार्ये समाज यदीर बाग शीनगर में कथा करते के वाद अस्य प्रधारे बह्नां पर कार्थं समाज पुराक्षी मरबी अम्बर के बार किय जनशा थी। तक-देशासूत बराने के बाद पटानकोट कार्ड सकात संबर्ध विकास समित कंदरते सार्यको देवने बाले है कार्यक्रम पर प्रधारे वहां थी जनवा को प्रोच दिश वह शिश्यार खपने प्रभाग धरे आव्यातिम्ह प्रवदनी कार्यटमत के यह सफाड़ के से बातसविशोर करते गरे। वीसी नवरों के नरनारियों ने जीवन में विसना रह विदा, जानना से देंसा कानम्ब पावा-वह हो वहां दी वनका जानती है। सहात्मा औ की रसना में, जीवन में सबसूब बाद है।

नी तक कारणों से तरित क्या ही बाई है। वैसे कोई समस्यः व शी वदि हिन्दी को उसका समृचित ह्यात दिया साता १ डीजी जाए।की वै सरकारी पत्र सवनाय इटावि क्रमाधित होने तो शंत को तो रिजनों के बनावरी मार्गी में बांटने की प्रावश्यक्ता न होती। न करता बरती । धन कामरेख रामकप्याचीकी सरकार ने बा श्चादेश जारी किया है कि जिस भाषा में भी चाहे प्रायंता एक विवे बासको हैं उसी माशा में क्षी वत्तर सिक्षेता । उत्तम वात है। अनुहा को चाहिए कि इससे परा २ लाभ उठायें। जो ऋपने डाथ में है इस से तो, ताभ उठाना फर्नेन्थ है। केवल कोसना पर्शाय नहीं चरम कर्तेष्ठ भी पासता वाहिए।

जिस भाषा में चाही

वयात्र है आचा ससस्या राज-

--- जिलोह चल

कार्वसादेशी तथा ब्रह्मतस्य व ऋण्य समाओं के सहज्ञम भी रोप से मर गये हैं। प्रस्ताव भी वारित होने समे हैं। प्रावंतमाव क्षरमेगाहर क्षमतवर के व्याप्त वी र्पंत स्थापन जी सभी से तबा प्रस्त माईयों ने लेख भी लिखे हैं पार्व प्रकितिथि समा भी समिय है। व्यर्थे ! साक्यान हो जाको क्ट कार्वे सर्वथा न होने देशा। देशी

#### एक उत्तम सुम्राव

—विजोद्दन

कीन है !

विशेष केल किया है, जिस है द्यारे असन के तरीमूर्ति सुधेन्य संन्यासी मद्दारका जातस्य स्थामी र्जा सहस्राज के लिकित बेरकाओ शेस 'सम्बे को सोजन दो' का उर्क ही सुन्दर शन्दों में समर्थन दहके नमात्रे, सत्याश्चों वर्ष परिवासी का ध्यान रक कावहदक बात की स्रोर हिसादा है। कि कार्य सकार्थ क्ष्यना वैसा समा के बेट प्रधार वंश्व में देने की बजाब इवर जबर के गीवा कामों तथा बामेक स्थलना वर्ति से प्रमने वाले अपना सालगर बठ, सन्दिर, देश, ब्याधम तथा ग्रस्तुल बनावर उसके थिए रात दिन सम २ कर पैसा जमा करने बाने बोबों व सामग्रें को दे देशी हैं। इन के देश गृहश्यिकों से भी शास्त्रस, इन का वैंक बेलेंस बल होता है । समापं इसलिए काम्योर हैं। देव प्रचार पात्र साक्षी क्ष्मा बचारकों की कमी है। स्रोग जब द्माराद युग २ वर काफी पैसा अमा कर तेते हैं तब देर प्रचार में कीत हे। इस स्थिति को परसना है। केन्द्र का स्थान करें। श्री वैद्य जीका बना सन्दर सम्बर्ग है। देशिक्तक जीवन के पत्ती का सका से स्थान रहा है। भरा पर समी-प्राप्तक कारियां किसी ■ किसी क्तार का वर्ष सताबी ही हैं। पर्ने शब्द का कर्ब पुरक्ष भी दे और प्रस्थि भी है। यह जहां **व्यान**न्द से वरित दरता है, वह बन्धि डोले से भारक भी है। ईस के रख की ईस **की** प्रस्थि सुर्रात्त रखनी है स्पीर बांस कादि की पृहता की वन की जांत्रें स्थिर स्ताती हैं। इसी असर मारीर की स्थिति स्थापकता सहीर

ब्री प्रन्थियों हारा सरचित है।

शास्त्राती खार्चों के शमित वर्षों में

से एक सहाज पर्व है । यह पर्व वैदिय चर्त है। इस का सीचा सम्बन्ध के**द** है क्रभ्यापन श्रीर सभ्ययन करने **वासी** से हैं। एक्सूजों के अनुसार इस पर्य का भीता सम्बन्ध देत और बलकः वे दोशों ही समझ्मी हैं... वैदिकों से दिलकाया गया है। वह पूर्व लड़ो पर्व वे बहां यह ग्रह्म श्र्म भी हैं। स्थानकों के बातसार शास्त्र कम भी उसी प्रावसर वर होता है क्रीर अवस्त्र में बेटलवयन का शहरन क्रीला है। पार साम वर्ष के क्रोते है। इस में नेपाध्ययन चलता शहरा शा और पीप में बाक्त करवर्ग िक्या जाना है। इसी **आ**धार की के वर धार्य समाज ने नेत्सप्ताड का इस अवसर पर बावोधन क्तिरा। वेट के बाध्ययन केमार्ग को महर्षि सरस्यती ने प्रशास किया करतः का के इस्स स्वापित नेश प्रकारक क्याय समाज का यह क्लंब्य 🗐 है कि वह मेड के प्रधार की बढाने। शास्त्रकी भाम इस पर्वका करों है ? इस का बत्तर यह है कि बनल नवात से युक्त परिद्या को यह वर्ष होता है मतः यह अन्यत्तो है। इसी कायबी पर्तिमा के माधार पर ही इस शास का नाम भी जावया माछ है। इस भवदी की मी निधि है और बह सम्मानों भीर हमाभी पर्वपक्षांत्र | ११-३०-७-१० में बहा सवा है कि

# जीवन का श्रंग-स्वाध्याय

वह क्षमा फावेर में वेटगढ़ी मध्य

क्स में विश्ववर्धी बादा अला है...

(ते वी, पं वैद्यनाय जो आर्य शास्त्री देहती)

क्ष्माण हो क्ष्मती पार्वित । हो बाता है कर: शर्ताटन स्वाप्याय करना पाक्रिए और ,श्रम वह वह सब होने पर मी इपयाओं बौर शुभ्याओं के बीच में चसने साम, समये बाहि को पडना पार्टिप किस से बत का संगन वाजे कार्थे में भी मावशों के बास्त-होते। साह्यमा श्रम्भ स्टाण्याय को दिस्त शहर के विकास में स्थीत sprammi की जान्ति यह इस वहरू। पर धार्नामकता ही दिसलाई पत्रवी रहा है। शहरव में ११-३-६-२ इस है। हमारे पत्र पत्रिशकों में भी साध्याद को सद्धारक कहा थया है। देशी कार्ते कमी २ निकल जाती हैं। इस की असी कर है सन उपमन दीपानमी के विषय में राम की है, चयु ख़दा है क्यौर नेपा स्व लंदा क्रियद के बाद की डीशवसी है. सहय इस का कवमध है। कारया बढाई जाती है और हें ती प्रावेड में स्वयं इस का सन्१र कर्रात के विषय में ब्रह्मात का सम्बन्ध है। वर्षाशस में सेंबक बोजते हैं। बोड़ा अशा है। ये रोसें ई एक की बोबी है। इसना दोहरसर है बजाजारी पाल की शतत है।

देशध्यक हा इस वर्ष में सोगा को दी सई है । क्यूनः वेश क सम्बन्ध है । शक्ती सनाने का एक जनबर्क समय क्री**म** शह स्थान वतम तरीका यह है कि वेदादि निदर्शन का महत्व किए है। इस **उपलाश्त्रों का स्वाप्ताय इस पर्व से** मे सका मामिसका वेदवानी, धवडय पास हिया ठावे । स्वाध्याय कालक की जाती स्कीर मीनसन मेचस्थ बाजी का चौर स्थ हो श्रीवत का कांग होता पाडिए पराल हेले वर्षों के क्रमभरों से सदवा है। प्रेरक से कर ही वदि हम इस प्रवृत्ति को बदावें तो बरचता हो।

शावशी के साथ क्वे वजीपरीत के बारया भीर पुशाने के छोड़ने कार्ज के जीवन का स्वाध्याय एक की भी प्रधा जुडी हुई है।...यह बंग है। लाप्याय से प्रवाद का भी २६ सक्तमंत्री के लाधार पर हमारे शाओं में निषेत्र है। परिवादी है कि प्रत्येक प्रवास क्लम स्थाध्याय (Sell Study) का क्षांत के वक्रकारा क्राव्टिकमों के समय जना परिवर्धन में बहुत दहा सहस्य है। वज्ञोपशीत धारम् विथा आवे । शतपथ माझवा ११-४-१ में स्वाच्याय क्की सामार की रोक्किंग अब की प्रशंसा करते हुए सिसा गवा है मारको पर सम्रोपनीत बहस्रते की कि लाप्पात करते वाला सन्त की त्याभी है यक्नोपयीत का ब्राजी भीर सोश है, युस्तमना होवा है. के संस्कार भीर कर्मकारड में बहा स्रपना परमर्चिकस्यक होता है. डी बहल है। इस के श्रीय धारो उस में इन्द्रियों का संयम और रात्रे में पहले ही यह पिरुनाय, देव पक्षरामक बादी है और प्रशा की प्रशा कार्रद वर्तव्यों से क्याने की कृद्धि होती है। यहाँ पर बाह्यक प्रथ्य बन्द कार्र पर इस सम्बन्ध है का प्रत्येत राज्य सहस्य से अरा

तका है । पनः क्सी शक्ता है

विकार्श क्षम से अस्तिकार स्वीक कार्यकत होता है छत: यह बातो-पर्यात है। इस से बतशासन चौर हें किसी है—और अमेद कार्ये। स्थापनाथ म पाने काला अलाहरी हरों के पासन की प्रतिका में सन

श्राय समाज प्रसनी मंडी

जम्म में वेद सप्ताह की ब्रम কাম থাওঁ নামস কামী জঁচী करमा में प्रति क्या की तरह इस कर्य भी केत अफाइ क्यातार रक्तात्रका **हो** 

से कर भी बस्ता अन्यक्रमधी क्रक

होता है कत: यह अवस्था है।

वडी अन बास तथा भद्रा से सताबा र्यार्थादन मातः ६ से ६ शास ४ से धारतीत्र जासे १० वजे की पं. हर्ति इक्टर की हा हवी को क्रस्त्रणका में बड़ा सप्रश्रव। पुत्रक हुआ । कार्य बाइशिह समा वेजाव के वेद शवाद के इप्रक्रिकाता हो एं. कशीराय औ अगासर चाठ दिन पेर चीर यज्ञ की #शान्ता पर श्रमा**र** शासी व्यक्ति शर्मा क्रीर को एं. ग्रेका राम की ध्रमतीफ के इस अवनों से **बा**र सभा **राये** रता कि कोई दउने का शस न लेता। इस बहुकी एक विशेषता यह बो कि इसार क्यम से कपर र्लाचा होते पर भी विना किसी से मांगे हाती सध्यतों ने स्वयं दान दिया यज्ञ की पूर्व ब्राहति के पत्रचात स्तरि संगर में वेंचरों

### यमस्य बचन

श्रीमधी ने श्रेम पूर्वक ओक्सन

क्रिया । - स्विराक्ष विचल ग्रम

प्रधान संबी

मैं कमर हं। 🖈 झात्मा को ह्विवार कर नहीं सकते इस दिए मैं मधीब वर्तो विशेष महस्य के है । सामार्थ

के अब से त्यवनाड । 🛨 शरीर यस के कहता है। इस अमेपूर्वक सतः शह शरपदत **बाल्या क्से स**ेव **बरसवा शाला है** 

🛨 भारता समर है इस सिव

क्षावंसमाज के प्राचीन पत्र-

# do भोममेन शर्मा का आर्थ सिर्दात

(केo-प्रो, भवानोक्षालजी भारतीय एम.ए. गवर्नमैंट कासिब पाली)

(सर्वांक से बार्ग)

शोक का विश्वती वह है कि बाह में पशुद्धिश का विभाग न मानने वाते पं० भोजसेन हो हुए बर्गे परवात् चूह निवासी सेट मापन प्रमाद संग्रहा के वहां कराने के सिकांकित में कापने पूर्व निर्धाय सर्व के विपरीय सम्मति बना बैठे स्त्रीर कार्यक्षमात्र से सहा के सिये विमुख हो गवे । ऐसे चास्थर मनि और सार्थाण मनुष्यों के विषय में क्या बहा जार है

विश्वास १८६८ के चार में बद ही सेश 'शंगापि गीयंस्व विदेशन' ह्यापा है। यह प्रथक् पुत्तव के बन में भी मुद्रित दुवा है। इस से गमादि मदिवों में स्नान करने से वाय-तिवृति होते हैं, इस पद का आरङ्ग किया गवा है। इस लेख की 'हस में लंगे बम्ले सरस्वति शस्त्रिं (भा० १०-४४-४) जैसे वेद सन्ती का कार्य जिलते हुए सिक किया गवा है कि घेदों में बंबा, बुमुना आस्त्रिको नही बाचक साम साथे हैं उनका यौगिक सर्व क्की अपनीत हैं। इन नाओं से मारतक्षे में प्रवाहित होने वाली सवियों से मंत्रकर्क ईरवर का

व्यप्ति विवेचन से गठकी 🖒 पंa भीमसेन सर्भातवातनके जारा सम्पादित सार्व सिक्रांत आसिक पत्र का यक सामान्य परिचय भिल जायगा। वाक-वय -सहित इस पत्र का वार्षिक सूरव केक्स सना स्थवा या । वह सरलाती ·अंशासक इटावा में सपता था, .समा इसके टाइटिस के दूसरे दूस पर प्राइकों की नामावली मी वड़ा-**न्यदा प्रकाशित होनी रहती** भी।

अविभाग नहीं है।

\*\*\*\*\*\*\* व्य पं० श्रीससेन शर्मा ने वार्य-समाज को स्वाम दिया तो अन्होंने द्मार्थे सिद्धांत का प्रकाशन बन्द वर दिया धीर उसके स्वान पर 'शक्षय सर्वेत्व' नामक पीराजिक विचारों का योषक एव प्रकाशित करने खगे। 'ब्राव सिदांत' की फाइलें श्राये-समात्र विषयक परानी जानकारी वेने की र्राष्ट्र से सहस्वदर्श हैं इसमें हो सब नहीं हो सकते।

#### हिन्दी संस्कृत परीचार्थे

ख॰ खासी पेडालड की पर्व स्व श्वामी भारमानन्त जी हारा संस्थापित 'विस्तानम् संस्कृत पविषद्" मुस्कृत भावत (रोहतक) की दिल्ही क्वं सन्तत मापा के क्रमाजक बारा वर्धकेट दरीचार्चे इस वर्ष तक्सार मान के कारण में क्षेत्री विदियत तिथि भी सूचना काव में की जायेगी । जानेरन ९३ मेवने की अन्तिम विशि ११ दिश्वन्बर कर दी गई है। शीमना करें ।

इस विषय में शहदिति, निय-साबादी वर्ष परीचार्यी आवेहन पत्र निम्म को से मुक्त संवधाय-ह**ः वदान्य्य देशाचार्य** परीकृः संत्री विरमानम् संसहय परिषद् गुरुक्त सद्भर (शेह्नच्छ)

#### शुभ समाचार

सबसेव मारचं बरोरा के माजिक की शांति-पिय की के इंटबें बन्ध दिवस पर ६६ व्यक्तियों को **'वैदिक बसे का महरू' नामक** प्रश्वक बावकी पर्व पर विद्यानक **स्टब्स्नीय था इस क्रय**सर पर सभा बांटी सर्वे १ को केद अचाराये ३६/- दान मिसे ८

#### प्रादेशिक सभा का वेद प्रचार कार्य

आयं समाज पालमपुर-६ से १० सिक्म्बर श्रद ५० स्रोम १**५०स** बी बडोबडेशक की कथा । ११ से १३ मिलन्यर तक तक्षव सन्पन्त 🚻 श्हा है । थं॰ क्रोसश्चारा की उपदेशक सभा तथा मेलाराम जी, बस्तीराम भी व जगतराम हो सकतीर एतार को हैं।

रामनगर (करनाल)-जे २ से १० सिक्षम्बर एक ठा० वर्गालिह सी तकात का अवनों द्वारा प्र**का**र ।

माङ्खटौन पानीपत~६ से १० सिग्रम्बर ७६ वं० खुरीराम औ की कथा व बजानी सास जी के मजन, ११ से १३ सिटम्बर एक करनव वर पं० विक्रोडचन्द्र जी शास्त्री सहोपदेशक सभा तथा राजपास किसटा संक्रती व शी र्यं स्थानास भी प्रधान मा**देशिक स**था पशाह रहे हैं ।

वार्यसमाज सक्कड बाबार बिमला-१४ से १० वह ४० लसीराम की रामाँ वेट प्रधार क्षथिष्ठाता की रूपा तथा इवारी लाख ... श्री के सबस होंगे । १० से २० सिशम्बर तक प्रत्सव सम्पन्न हो रहा s इस इक्ष्मर पर ही ५० राशराम जो ब्रबान सरा तथा राजपास लिमटा सबनी प्रवाद रहते हैं।

कडामाट-का उसम २१ से २३ सिताबर वक सम्पन्न हो रहा है शिक्षका का स्टाफ इस जबसे पर पदार रहा है।

सलोगडा-२४ से २६ सिकबर वह सम्पन हो रहा है। बसाधाट का समझ एकार रहा है।

3 हो ६ तक सदीनावांगी, ६ से ६२ तह स्रोजरा, १३ से १७ तक करकता, १८ से २२ तक बाइस, २३ से २० तक चुड़ाहो, बंदगढ़ के बक्करें की बूराराब की, पंज पनुस्ताल की व हरिस्वन्त्र को को देख -- ज्ञानभन्त्र भाटिका सभा मधी रेस में सम्पन्न हो रहे हैं। 

#### मांव फरमागा जिला रोहतक श्चार्य समाज रन्धौली

२० से ३१ द्वागल तह वेद सप्ताह बी प्रभुद्धास जी जार्ग व इरिश्चन्द्र जी मजवीय के निरी-चया में सनामा गवा । स्वास्थानी व अवनों की मही लगी रही । पाठः क्क्र की व्यक्ति से सारा गांव गूंब **च्डा** । ब्रह्मोनबीत भी भारम् कराष सदा ची० देशराह की प्रधान. सरपंच सा० बासधराम जी, पं रामकिरुन थी, ची. उसवीर दिह ही व थी. नेकीराम की का तस्ताह

में वेद प्रचार

#### (करनाख) की तरण से सी पं-तिलोक

चन्द्र शी सास्त्री के सपत्र श्री इयावन्द् को संस्कृत को एस.ए. वें श्यम स्थान पाने पर तथा भी काशुराम जी की सुदुत्री संतीष क्रमस्री के एक, ए. एम.को. एल. की बरीज़ा में अब्देह अंब होने पर बहुत २ यशाई हो। 💷 व्यवस्तर था चेट प्रचाराओं श्री- सप्ता को भेते हैं।

> मेगवराय वर्भान सार्वसमान

वीनों ऋषियों की क्षीवा परमारवा

की क्योर से कोई प्रकाश नासि

मिला. इन्होंने भारदेद पर को उनके

सन्मुल प्रस्तुत या, हुआ काम किया ।

मुने वह विचार स्वासी

द्यानन्द्र और धार्य समाज के

त्वीकृत विश्वाद से बहुत जि**ल्** 

एड में सामारश का समावी है.

मैंने मारंग में चड़ा है कि की

रॉग्स प्रसाद जी ने तथर को भीड

(डमेश की हैं। उन के होश को पह क

पाटक पर यह प्रशास वहता है कि

वैद जनभग सारे ऋगवेत के 1000-

इसरे में पहिनमी झालोब हो है

यक्षां उत्तेची १

वे प्रचारक मात्र हो ।

२३ प्राप्ता, ११,६४, के 'कार्य' ब्रम्फ' में भी एंगायसार जी का देश चेद क्या है ?" के शीर्थक के पीछे स्या है। मैं सी इस विवय षर रुख रहवा चाइला ह'। मैं भी गमावसाद जी के हिर्मिक्त को व्यवताने में बासमर्थ हुं। महामेद तो एक गीख बात है, मुक्ते वह भी स्तीव होता है कि वी शंकाशमात जी

में तथ्य की उपेक्ता भी की है।

व्यवने लेख के पहले जान में भी गंगाप्रसाद क्षिकते हैं---'स्तृष्टि के ब्रारम्य में बब देखर सकि बनाता है तो मसुष्यकात्र की मसाई के किये ऋषियों के हरेयों में वेटों का प्रकाश वरता है सुन्ति के ब्रास्म्य में पार अवि हम । अस्ति के ब्रद्य में श्रम्बेद का श्रकाश हुआ, बाय के हृदय में बजुर्वेद का प्रकाश हुआ, क्राहित्य के बहुब में सामनेट का ककाश हका। क्रीर असिश के क्रवत में प्राथमित का प्रकाश हका। बह विवरण वही है, जिस से इसे खाओ बवासन्द ने परि-चित्र दर दिना है। साधारण आवं म्ब्याओ का भरी मस्त≂द है। इस विवरण में निम्म दी पार्वे सहस्य की वाते हैं--

(२) अस्ति, वाय, आहिता और श्रीवारा-वाडों कवि भी वह सार **यर है।** यन में से बर प्रको वस्कारमा ने सीधा कपना श्रदाश विवा ।

कल मेंग एक से काधिक देतें में मिलते हैं। इस का वर्ध वही है कि अस्मारमा ने इस के निवय का प्रकाश एक से खाँछड जाधियो के ब्दय में फिया।

मधने हेस के चितार आग में भी संसा प्रसाद की ने इन दोनों सान्यताची को खाग दिवा है. और चारों वेदों धीर चारी व्यक्ति ही विश्वति से भेद विदाई। शंत्यकी विज्ञान तो देसा भेद करते ही हैं. करन्तु साधारम् कार्यं समाजी उसे

# वेद क्या हैं ?

(ले०-श्री दौदानचन्द जी एम. ए. ६३ कानपूर छावनी)

#### 

त्वीकार नहीं करते । भी रंग्ध प्रसाद । शका । सिनते है---

इस अकार आवेट, मामवेद, 'बाहित्य महर्षि ते खनवेह के क्वूवेंर और सथवेरेड समहातीन सन्तों को गानविशा के धानसार हैं और एक भी वेड की बार स्वर ताल कादि से ठीक कर दिया शासाओं हैं। वडी सामदेश कहसाया । वड नहीं, लेख के इस भाग का कार्य यह

वीसता है। भी गक्षा प्रसाद के केस समस्ता चाहिये कि खुनोद बास्ता ' है कि मौतिक वेद एक ही है। एक में दी विरोधी दृष्टिकीम शस्त्र है और सामवेद कशम । इसी स्थाद पर भी रागाशसाद प्राप्तेत से त्रकार अन्वेत के ही मन्त्रों के काशार 'भी उसरे वेट्रों की तरह इस सक विये गये है... पर वायु ऋषि ने यह किया कीरास े देद का भारा बहते हैं, दूसरे स्थान तया व्यवहार के अन्य बत्यों का वर शन्येद को सूल केंद्र सकते हैं. सह हैं। बाद को देही बा प्रश्नीक प्रचार किया, उसका नाम दल्लेंस और कन्द्र शेन देशों को संगतन श्या। अभिगाक्षि ने ऋग्वेद के का यह देशे हैं। जो सन्त मान मनुष्यों की श्यना है, को काधारभूत हुझ मन्त्रों का विश्वार इस तीनों बेदों में सावेद से कार्य समाज की मीर्रितक शारका से वज् न किया । वह कावर्षदेव हो नहीं सिवे गये, वे केवल आहित्य, कि वेट हैक्थर का दिया अकाश है.

### जगमगाता सर्ग सा (नेहरू)

थी वेद प्रकाश वी M. A. खन्ना

देश के परदेश के प्यात सक गाउं हैं. जिस नियम पर नाख जग के एक गये हैं।

मल रवि भी वों दिना देख रहेगा, पांद तारे कर्पान क्रम्बर बगस्ये था।

सिमिट कर जिस में बनुकता का सई थी, र्शित की किस में मधुरका का रुई थी। किस जगह स्वाधीनता सा अञ्चल सवल ? क्या सुराजा है वहां भी शान्ति परिमक्ष ? द्विकं भर वर इर स्थल में बालसात.

गीवि खागर रूप घर क्षेत्र धर पद्मारा । जिस जरत दित कर यथा इस्त्यास क्रार्थेक. ज्योति हो देगा विभा इर काल इर **क्या** छ

भूत पार या नहीं वह पंचशीत, वह सपेश किस ने अवगार्थाल कीसी। मौरम शंस्र शिव इसक्षम योख योखी.

रहता, रय-विश्व प्रसा मीच बोकी। ह्य न म्या के सुबन तक मर सकेंगे. हें व हश तब प्रेम र्शाद न बर एकोने।

स्टत हेवा में नहीं बॉद सर स्केंगे, राणि वह को प्रेम का ना वर सकेंगे।

र्गत विद्यासान है, उनकी स्वतन्त्र स्थिति हुछ नहीं । यह विचार तथ्य से बहुब दूर है। यक्केंट को सें। इसमें १२०४ मन्त्र हैं : बो मन्त्र प्रशबेद में भी मित्रते हैं. हमकी सस्या शायव ३०० भी न होगी । यह बहरा बहा तब सक्त-वृश्वित है कि वस्त्रेंद प्रमुखेन का संबद्धन मात्र है १

उसे काशा है भी शंगापसार हस विषय पर अधिक विकास वरेंगे : उनको वर्तशान स्थिति है तो समे व्यनिश्चता स्ट्रीर सालारिक विरोध होसते हैं। ----

\* वृद्धिता वस्त्र (शरीर)-बतार दिया जाने नी श्रष्ट हानि न्द्री वरोंकि इस के बतते में किन्त बदा दस्य विस्त आता है। ★ क्यारमा कमर है ॥**म क्रिक** 

में करर है ।

# स्वाध्याय पर्व

(से विजीवार WORDERSHORD CONTROL WORD WORD WITH

( मतंद्र से आये ) इसे ने बह पूर्व तका बह वं शिक्षारः। तमु मे क्रागरं कृषि ॥ ¥-8-€

श्रवांत्-हे दुष्ट ! कोच्चे (मे) मेरे (इस) इस (१६वं) पुरुष को (का बह) चारोग्ववा को प्राप्त करो. (त निष्पुत) शतको शेण से सकत सर कीर (तंद में कागरे क(ध) मेरे इस पुरुष को रोग-मुक्त क्रमधे स्था।

वेकेरको श्रामि जातोऽसि शोम-अधानि सभा त्रितः। स अधान -अशताय चत्रपे में बरमें सृष्ट ।। y-12-10

प्रकांत--हे सह कीववे ! तुं श्वधेक्षयः) देवसवा किरवा समृद्दों से /mfa.aua sufit) रस पाण्ड करके परः **१**त्यस्य ह्या है। और (सोमध्य) स्रोसलतादा (सला) मित्र के समान वसी देश में अवन्त होने से अववा (सोमस्य समा) स्रोत भोवधि के समान शोकर उस का सका (दित:) धीर गुख में क्सी के समान प्रिक्शारी है। (स:) वह क्ष (प्रामाय) शरीर के प्राप्त और (कारतक) शरीर में व्यापक व्यान बाय चीर (मे करमें) मेरे इस (बस्बे) बच् दोव की भी हर बरके (प्रश्) सुसी कर ।

सहक जातो हिमचतः स बाज्यां अवसे अनम । १५ अहस्य मामान्य-**च्याति वि शेविरे ॥ १-४-४**-६

सर्थात-तु (क्षक्) क्षत विशा में (बावः) धनान क्षीता है क्षीर दे कुछ ! तु (दिवयतः) श्रिमाञ्चन से (प्राच्यां) प्राची दिशा क्रे रहने बाते (तन) कल्पनों में ∡सीवसे) सावा जाता है (तत) वहां क्ष्म पर्व देश में (कुफस्ब) कुठ के AMMERICAL HOLDING STATES AND STAT

ल्लों को (क्रिकेशिक्रे) हरक हथक् विशक्त कर देते हैं आयोग सब कर की नाठियों में से श्वास-प्रचास बावियों हो बार होते हैं।

वसमो नाम क्रुग्डास्क्रमो ≈स्म ते पिता। वक्सं प क्कं ' जाता

स्मान वास्त्रं क्रीब ४-४-३

क्रवीत-हे (स्ट) कर (ते नाम वत्—तमः) तेरा शाम उत्तम है। (ते पिता उत-तभोकाम) तेरा पासक भी क्लास सर्वे वर वर्षत सब से क्रमर विशक्तमान है, वा ऋ'वा हैं, तू (सर्वे यक्ष्म नास्त्व) समस्त बदम शेयों को नाट कर झौर (तक्सानं क) तक्मा, कोंद्र रोग को (कारनी) निर्मेश, विक-रहित (क्रांक)

शीर्वेमय प्रपट्टत्था सक्योरकची उरदः **प्रम्यो**सन सर्वे निष्करद

देवं समहय बरमम् । ४-४-१० क्षर्शत—में (शीपे कानदम) किर के रोग को कीर (अपनो क्षम्य: (य:) क्षांस्त्री कीर शरीर के पढ़कर किसी रीसर्व स्कीतर के होच को (उच-इत्थाम) विभाग कर । हर्रव में प्रेरख। हो फीर नह प्यत्य कुछः) इट धीमन (देवं कृष्ट्य) करके कोई ऐसा चसरकार पूर्ण विथ्य भौवधि के समान प्रशास- माविष्कार करने में सफल हो गाजी पहिस्टम होने के कारक विस से सहसी पर रोगियों को इस

(तत् सर्व) बद्द सब कुद्ध (बिरकरत्) । छक्टे ।

#### # 30 TO SECURE AND ADDRESS OF MICHIGAN AND ADDRESS OF A SECURE ASSESSMENT AS A SECURE AS A SECURIT AS A SECUR दयानन्द बचनामत

भाषा. पिता स्था फाव्याएक जब साजक को थोरी बारी से पथरे है की किया है। करें देवी शिक्षा दें जिस से बाहस्य (बीर) प्रशाद का के जिस्हा स **बाते गारे । इन में** मिटश-भाषण का शेष करायि ब ब्राजे पारे : वन से हिंसा, क्रक्त, ईंग्जों, हे व और शोह बादि

त्तां या दर हो बावें और वे बनावारी बते' माधी संशासन श्री

#### मतुष्य जन्म का महत्व बिसक--एं० यस्तराम जी (अफ़रीका वाले) शासन्पर

\*\*\*\*\*\*\*\*\*

कारी भी से उपरेश वेते समय । क्क पॅडित ने मनुस्क बन्य की ने सह बाना कि 🥅 के हाथ में मधुना विश्वक वह दर्शन दिवा विस्थामधि है और उसकी मार्ग थाः एक पश्चिषया, पास कीः देंपड़ा हुआ। बहां सिका है बहां पोटबी किर पर नकते जन्म की क्रोर क्काकारका थः। शमके मध्ये 🏿 एक चिन्तासक्ति रस्य पदा हुआर असक रहाबा। वह शक्ति-याना सब चलता हुआ उस रहत के बहा कि यदि मैं आंखें पन्द स समीर काया वो वसको यह बात । करता तो वह रस्त सुने, शिज्ञ प्राता सम्बे कि बांदों की भारत जल कर के देखना चाहिए 🛅 वे कैसे चक्रा इतते हैं ? वह झपनी शोनों झालें पासीकीर न रहता । दन्द किने चलता हक्षा उस महाज

से बारो निवस गया उड्डा वह रत्न थक्त हम्मा था। उस रहत च्याते स्थानी का समको योखे से प्राप्ता

कारेता है।

मोह—क्रमार्थ की एं. बरहेब शर्मा विकासकार जी के कायवें देश भाष्य से सिये गये हैं।

प्रसारमा करे इत विसर्धों को (सम मह) वदी उदाम शींव से मृश्वित रोग से हुटकरा शल हो

मास सितम्बर १०६० कार्यसमात्र उक्काना जि. दिसार 29/- Te

> वडेसरः .. २६/- .. .. समाना जि. অৰালা Dol .. म डाक्ट पुरा .. २०/- ..

,, भाइतटीन ,, २००/-,, यमना नगर , ਰਿਟੀਆਂ ਜਿ.

रोडवड ६३/०० .. , फरमाया , ४४/- ।

,, क्रूनग्रस बायुगसर 2524 ... .. बा॰ वशक्त सिंह पौटा

(क्रिमाचल प्रदेश) १००/- ... —हाशकन्य सादिका

पळने पर सम उच्च भारतारे से मैं कांसे बन्द करके बाये निकल ज्ञाबाद तो यह भ्रदने कर्मपर बहुत हो पह्नकाया। उसने स्थाने कावडी विक्शाने हव हते दास से इसकी प्राप्ति से बेरा धारा वारिहेंक इर हो जाता और मेरे देश्वयं का

जैसे इसके उस समय के क्रवावाय से बसका 🚜 धार्व सिद्ध नहीं हो सका, ऐसे हो बी बन प्रमादवहा झान से, मधित से, ृष्ण एक भीर परिष आ जिला | ईस्पर भजन से भीर सुक्त कर्म विसके इत्थ में रात चसच्या ; करते वांसे सुद तेते हैं पतको फिल मानव वन प्राप्त करना सदा कठिन हो जाता है।

## वेद प्रचारार्थ दान

# 'शार्यकात की गैस्त

को चैलेडज ल्पियाना मैक्टिक्स स्टूब्स के कालक में परिवर्तन होने के ग्राम बसाचार से मार्थवरत में इर्थ की आर दीत गई परन्त इसके नाम के साथ से 'सार्व' शव्य क्या देने की दः शर सचना से इध्य की व्यवस कोट समी । इर धोर से इसके निस्त्र रोथ और विरोध वक्ट किया जा रहा है । किसी क्षयर-दर्शी क्षातान्यं व्यक्ति को 'क्षावं' कार से फिला हो कर समय में श्रा सकता है परन्तु हमारे जिस्सय की कीमान गरी जब इने जात इश कि इस के लिए कार्यसमात्र स्राचियाना के कार्यकर्श जिल्लाकार है जो इस संस्था की क्लांत वे शिए 'झारों' शब्द को क्यांत काले के किए तैवार हो ध्य हैं । संखा-पार ने जार्थसमात्र को किवनी हानि परेंपाई है यह इसका मांह बोसता चित्र है। संसार को कार्य बनाने के स्वयन देखते. बाग्ने बाग्ने मर्छ इतनी सी बात के शिय, वर्षों से इस संस्था के श्राथ पत्ने जा रहे 'बार्व' शब्द वर इच्छाल फेरने को देवार हो जाएं. वह कार्यक्रमाज की प्रथ-प्रसम्बंधा जी पराकाहा है।

ध्यात से सगभग चातीत वर्ष वृर्व समृतसर के बार्य सम्बनों ने वयान्य की इंट्लांस के जान से **१**% ऐसोपैचिक सरपताल जारी विशा को बाद तद की क्रक्ता के साथ पर रहा है । इसके प्रकल में बहुत-भी तबदीकियां द्याः वदी है। इसके कथिकांस सार्व समाजी कार्लंक्स् इस संस्था से पथक हो नवे सीर उनके त्थान क सिम्स - किन विचारों नाबे सम्बद्धन सम्बद्धतित हो तए हैं. - जिसका कक्ष प्रभाव संस्था श्री जीति मी वीरेन्द्र श्री सम्पादक "काप" पर भन्ने ही थवा हो, वरन्तु बचे सार्व हासात का कान्यका करने प्रबन्धकों ने इस संस्था के नाम के दे सिवे सध्याना एत'<del>वे धी</del>न स्मथ चले का रहे त्यानन्द राज्य इस में दूरी विश्वचरनी से रहे हैं।

को स्थाने का विचार तक तही

किया स्रपित पुरानी क्या के जन्म-सार वर्राचवों के पीक्के कार्य समान के जिसक बरावर अपने बसे क ारे हैं। इस सहाबता के परिवास लक्य प्रयुक्तस्य का बहु हुन्तकः। वित्र दगरी और राज चीगर्य

क्यति का रहा है । सब्दाना है चार्व नैविकत शक्तत के द्रापि धारियों को इससे शिका हैनी शाहिये । 'हार्व' रास्ट एक सह इंदा कीर विसाद सकत है, सबी क्रिया स्थाप सारत वाकी १ सन्ति भा गाने के महिर्देश जरोधिकन देशों के कविकांग कोगी के सिये गर्ने का कारवा है फिर न अते. कानामा की इस संस्था के बाधिकारियों की साश्रदाक्याद से बहुत ऊ'ने 'बार्य' शब्द में क्वा बार्याच दिलाई ही है निसेषतः उबकि वहीं क्याना में करियकन मैक्सिस कासन तथा गुढ नावड ऐश्वितिवरि**ङ्क कास्त्र वा**पने साम्ब-

राविक नामों के साम बख रहे हैं

कीर अर्डे सरकार की कोर से

श्रविक से कविक सहायता और

संवयांवं मिल रही हैं । निसंदेह

भाव करी के विरुद्ध यह निर्माण

देशे गारी की सर्व<del>कारीक विक</del> क परिवास वरीत होता है, किस पर पन: विकास करके क्रिकिशीको को इसे शिजाविसीम रह करने दी रोहंबा करेंग्रे अधिके 🛶 -बसाध देश विशेषतः पंताब की मार्थ वजन के किये बह विश्व मत्यन्त विन्ता सीर रोध का बारक वन रहा है। अनेको बार्च अर्थ इसके किये मुख्युक्ताल करने स्टीर प्रायोंकी वरकी समाजे की नैकारियां कर रहे हैं। बार्वदेशिक प्रार्थ प्रविनिधि समा के सन्द्री भी सामा रामगोपात वी साढ बाडे क्या

लक के क्राप्ति

देश भर की ब्यार्क करता पर करते बमावों को सफ्ते नेताको की बाक्षा पर पूज पुराने बाहे हर सम्बद्ध क्लोंनी करने के विशे रेवार शहना चंदिये । इमें फिल्हामा है ईंड ब्राप्टे

वैतिकत त्या के कविकारी हर र्राप्त और प्रभूतमा है दल तेते इर शीम यह योगवा वर देंगे कि 'का स्टब्स का का वास्ता है या नहीं, इसके साथ से "मार्च" शब्द किसी क्षताया में बी क्लोवा नहीं वादेगां" सन्वया हक्के िरह इक्स्प्रदेश तोपूज वर्षणा. Burt fa fe mel mus

. देशचे समाज

इंसाई व मुस्लिम दो युवतिय की शक्ति व विवाह . चार्च सवाक गोविन्द शतर

कालकर में एवं ईसाई सबती कर कोरः व एक संस्थान पुक्त बोजना वी वलकी इक्कान्स्यार भी देवीराम वी प्रापं समास्य स्थापाविश्व व जनो के टीव बार्च समा पानक के ताह भारते केंग्रिक बात में उसेश ब्सावा । चीर इस के स्थे नाम सराक्षत २००० आधीवनी की इपस्थिति में भी भाष ने काकी ार-कड प्रति सरदाये शकास सेंट बरते हर दैदिक धर्म भी विशेष्तार क्लाई । इस का विवाह भी दो स्वकों के साथ इनकी इच्छानसार

शी सार्वत क्यार मी कालव **व** 

बी होस दास के साम करावा देवीकास पार्ग . "कर्जी

प्रावश्यकत कर्न क्रोडिय करा के बा । क्षेत्रकों और सम्मीकों श्री उनका है । वेक बोमक

नुसार विशा कांग्सा । सभी शर्मी क्रपने-क्याने प्रकास पूर्वी समित शर्थना पर मन्त्री शर्मक्रिक स्था विकट क्यारी के को का केसें। क्ष्मल पत्री में कानु, श्रमुबार, रिया विवरम विस्तार सहित हो । शार्थका एव १∄ विकासर तक का

समे पार्वाई

चार्यवर्ष समाज ही छ ह

कालिज चसरीगढ की चनाव

विसीपस की विकोतीनाथ बी-संरक्षक, ,, जोगोनांसह बाहब-वध्यत , अध्यस्य मीर्थ (शी-इंग्रीं•)—सन्त्री, ही केन शिवह चीपरी ं (भीवांती) - व्यक्तांत्री मी प्रानुपर्विद्ध (पी०सेसी+)-ष्मिष्टाश वी वाद्राम *ग्र*वा-

कोपान्दम्, ,, इन्दर्शद्दः सद-त्रमारक, ,, वो केमस सम्बद्ध-श्रीवरंग सदस्य, की श्रूपार्टिक श्रांत वरूर, भी पेक्सम वादव-चंत्ररंश **बदस्य, वी शूपस्थि,**-सदस्य, विशार्थी समा—प्राह्मेव को केशास शाय-साम्य विकासी तथा-

क्योग ! . . :-- प्रकारायं सीर्व नन्त्रे कार्यवस्य समाप्त

शोक समाचार

बादेशिक सभा के बपदेशक भी चन्द्रधेन सी झार्च वितेशी सी पूजा माद्या का क्या ४-६-६४ की राश के या। वजे स्वर्गशास हो। सवा: है। बार्वजन मार्गद शासा से वहतानि के किए तथा समोद्रे परि-

बार को 🔤 व शाबित के ब्रिय प्रस से प्रार्थना करता है।



वर्ष २४ वर्ष २४) १२ आस्त्रित २०२१ रविवार...स्यानग्दान्द १४०- २७ मिनस्वर १९६४

(नार 'ब्रादेखिक' जालर भर

#### वेद सुक्तयः सम्बद्धाः

है लोगों 'ब्रीबन में उसी उद्देश्व न होना। शाना श्रवार की ब्रस्थाणे प्राणी रही हैं। देशों 'श्रव वसना चतु भी हमें व्यारा है, वहा सुश्दर हैं। रस-त्रीय मानुस होता है। नाता-विच रंगीवरी कुक, जिल्ली हैं।

#### श्रीष्म इन्नु रत्सः

यह गर्मों के बहु भी हुये जाती है तथाने बोर फुनकाने बाशी गर्मों के भी दरना न बाहिए। इस में मागना नहीं बाहिए। यह भी प्यारी समस्त्रो। बीधन में देगी दशा भाने पर बहुत्स निस्ता कभी मन हो जाता।

वर्षासम्बर्ग सहदो हमन्त वर्ष की मीसम हो का मर्ती हो वा मरफ विराज्ञ मर्ती हो वा मरफ विराज्ञ हम बार्ग देने वासी तेमल की मीसन का जाये—जीवन में सारी स्वाचीय है, सुक्र व पारी हैं। त्य के पहिले कमान मीबन का भी पूनवा रहता है बभी बक्ता कार्य हमक का किया है। साम में ह से

## वे दा मृत

चोरम् बराय कर्मबाध्यस्यितिचं बद्धाः न्यूनिमहाकरम् चिन्छित्त्वर्यकदिवात्यन्ति स्विष्टं मुहुतं करोत्रेष। चन्यने स्विष्टक्वे सुहुतहुते भवं प्राथमित्राहृतीनो कामानां समर्दीयित्रे सर्वीमः कर्मानसर्दयं सराहा।। दश्कास्ये विक्वको स्वतं स्वासा । व्यवस्य वर्षः १९९८-४-४

कर्में— के छो (शुप के) (क्या) वह (क्यां) को में वाहां है, क्यां के पार के से कि दिल्लीरंग्य क्षींकर के राश्ची (व्यव्ध) क्यां त्यां के से कि दिल्लीरंग्य क्षींकर के स्थार है। क्यां (व्यव्ध) क्यां मुख्य का ना नहीं (क्यां) कियां है। (व्यव्ध) के स्थार क्यां के स्थार के स्थार के स्थार क्यां के क्यां का स्थार म्यु केरे (क्यां) 15 को से (शुप्या) क्यां (ब्यं) को रहे। के से इस्ता क्यां (क्यां) मांच के सिंह (श्यां कुं) 10 का बारों का स्थार (क्यां) के स्थार के स्थार के स्थार क्यां के स्थार क्यां के स्थार (क्यां) क्यां क्यां के स्थार क्यां के स्थार क्यां के स्थार (क्यां) क्यां के स्थार क्यां के स्थार क्यां के स्थार क्यां के स्थार (क्यां) क्यां के स्थार के स्थार क्यां के स्थार क्यां के स्थार क्यां के स्थार (क्यां) करें (क्यां) क्यां के स्थार के स्थार के स्थार क्यां के स्थार (क्यां) करें

सार--है बाँगे। जैसे इस प्रान पहार्शिय पार में माँ कुछ नाहारी सर ही है पायण मोई बाँगे हो गई है मध्ये पार मार्ग-मार्गित जानते हो मेरे 50 बाजों के बाल ही ने एक हो, ने सारे बाहुत हों। है सांत्रपाय है व श्री सार्थ पार्थ के सार ही ने एक है के सार्थ के निर्माण के सार्थ के सार्य के सार्थ के सार्य के सार्थ के सार्थ के सार्य के सार्थ के सार्थ के सार्य के सार्य

# ऋषि दर्शन

सत्यं न्यायं विद्यातवान् किन सन्द्रण का जीवन सत्य से घरा है, ज्याव च्चीर ज्याव करने वासा है और हान से मुक्त है। क्यी दिखी काम में कारण नहीं करता हम हान से परे नहीं करता हमा हान से परे नहीं करता हमा हान से परे

#### म राजमभामहीति

ऐसा स्ट्रचर्डमी, सत्यवर्डी, -वार्यावय श्वामी विद्वास ही राज्यक्रमा का जरूर, क्षिथ्वरी वया शासन के योग्य हो जड़का है। ऐसे शुख को अर्थिक ही राज्यसम्बंध समामद होने या मान्त्रमारक से बाने का क्षिथ्यरी है।

#### बिदित मुर्व व्यवहारान् विन क्षोगों को राज्य वे

विन्न-किन विश्वाम के कार्यों का झान है, पहुर हैं व दोस्य हैं, को राज्य के प्रस्म में कुश बार्यों में कुशम हैं—पेटे निपुधा होगों, जबम कपिकारियों को ही राज्य के कार्यों में शहा अमाना चाहिए। मा प्य भूमि का से

<del>१ के १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १</del> १ सम्बादक — जिलोक चन्द्र शार

र्षापट्यता--श्री संतोपराज जी

(लांच से समें)

कार पान कालिका होगा है कि मानव जीवन की दिनवर्ग में सब से बड़ा बार्च कीन सा है ? विसको **बा**र बारवं में स्वान देवा भाकिए। इस तमि से सब इस बांधारिक वसाओं कर विचार करते हैं. वर विश्वार के कानावार इस इस किन्छवं पर पढ़ बते हैं कि संसार की धन्त कराओं की अनेवा ब्रास्मा-क्रकापन महान है। सांस्व दर्शन डी बर्पिक सनि की ने जीवारमा की सिक्षि के लिए अनेक पश्चित्रां बी हैं, क्य में से यह सकित है 'परामें लात ' संसार की कितनो प्राथ्यतिक चलाएं हैं ने सब परार्च किसी इसरे के लिए हैं व्यवने पन के शिय नहीं हैं जैसे काट. महान. बस्त चारि, वस्त्र का अपन्य स्वतः के क्षिप कोई प्रयोजन नहीं है, उस का क्राचीम इसने के जिए होता है। इस वृष्ति के ब्रामार पर मस्तत प्रस्तवा में इस यह सकते हैं वि धारमा संवार वी कव बस्तुकों की सर्वेदा लेख है, क्वोंकि इन का बदयोग काल्या के किए है, ब्रात्या का इन के लिए नहीं। सांसारिक सब वल्र्ड सायव है, शरीर भी सापत है झीर जात्मा साध्य है. साधन की धारेणा साच्य शहा बेच्ठ होता है. ब्वेडि सायन सदा शी साध्य की सिद्धि के किए होता दे। प्रतिदिन इस व्यवहार में रेक्टरे हैं कि प्रत्येक बढिजान श्रवस्थ ब्राने पर धन्य वलको की अवेदा ब्रात्मा की प्रथम सुरचा ब्लका है, ध्वपित बारमा की रचा के जिए क्रम्य वरत्यों सा अक्षिकान करने के किय भी सर्वेश प्रसुप रहता है. बिरोय कप से कापत्ति काल में. बतो रहाद को बोल पाल की आया के 'अपन वची जाको पार्च' राज्यों प्रारा स्थवत किया जाता है। क्रापित यन की तो शत ही क्या सरकारिक वर्षा

# ब्रह्म मुहर्त्त श्रीर ब्रह्म यज

(प्रा॰ अक्रमेन की दर्शनाचार्य वि॰ वै॰ कोच संस्थान होस्पारपुर) MANAGEMENTAL PROPERTY AND PROPE कर के 'बाय वची बालों रामे' को । करने को प्रदने नीचे रक्ष कर स्वयं वस के इत्तर देउ जाती है। परिवार्ष विका जाना है । सन्दर्शनः विद्यो सीविक्स के इसी भार की बन्द बस्तुओं को ऋदेव सरसता 'बारबार्वे प्रविवी स्वजेन' के द्वारा से सबसे बासकी है। कारत विकास है। संसार में कारी ब्रापने बड़बों से सब से द्राविक महदारण्यक क्वनिषद् में काला है, बाह्यसम्ब महर्षि जद मंत्रास प्यार करती है, वडांतक कि वदि हुर्यात्कार क्या वर मी जाने बालब में प्रवेश करने तमे हो

वसायि क्षम को अपने से अपना नहीं करती चाडे उस में से दर्गन भो द्वी व चडते सम जाये। वस के सम्बन्ध में भी सनने में बाता है कि वहि देशिकान में दोपहर के समय वयतो हैत पर करतो को होड दिवा बाचे. वही बन्वरी जो बारमें सन बच्चे को चारने से कारत करने को वैकार नहीं होती वी. बचने क्यों की रचार्य भीर

इस स्टब्स्य से बारमा की महत्त्वता उन्होंने आपनी पत्नी मैंने वी से कहा

क्षित्रे ! तब होतों बायन भें घर की करनां बांट जो. कहीं मेरे वस कभी विकास स हो। मैंद्रे यो ने पूछा-वरि घन बान्य से पूर्व सारो पृथिशे केले को आये तो क्या सके बढ़ बलु बिल तादगो, विसे प्राप्त करने के किए बाब उद्या है ? सहर्थि ने **ब्हा** असे यव वालों दा सावन्द बीवन होता है बैसे हो तेरा जोवन

कोई पारा न देश कर जीवित ×\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

#### बेट मन्त्र

क्रोडिय कः सन्त्रतो विभिन्नतो सहित्वै इ हहाता जनतो समृष । व 🛅 ऋस्त विप्रवृहत्त्वरूपदः कस्मै देवाब हविका विधेस ह বৰিৰ গ্ৰু-

अह -सामा- तारक ! बारक हे ! बर्गती बद - भेवन - संदत थे. सव से पविते वर शत सदी। इक ही बनुद्धासन राज्य है।। शस - अत्रस्य - सही. समिर्वान्त्रत है सहिया लग्ह से इस का सक-सागर तारक है! बस र इक सप विराद्य है।

वोदक क्य-बर भौ हुरभी-शत को रचते। समानेशव जीवन में भरते॥ इस कीव कियाद को क्रिक्सों। भ्रष-वर्षभरें शब-म<del>वि</del>त्र कों॥

गर समी दगानन्द सठ, दीनानगर (गुरदासपर)

क्षेत्र काचैना परन्तु 'सन्तरपास स शराजि क्लिन' वर्ष से समस्त प्राप्त की काशा नहीं की वा शक्तो। महर्षि शक्तवारक्ष्य के इन्तरको सुन कर सेशे बी ने की लर्शिय राज्य बडी वे बस्तुवा हो मारतांव संस्कृति के क्रिए गौरव का विषय है। मैत्रेजी ने बहा--'बेनाई नास्ता स्वां क्रि**म**ह तेन कुर्योग्, बदेव सराशम् बेट तहेक में व दि' जिस को शान्त कर के मैं समस्त हो बाकं, बसंको शास्त क्क'-मुक्ते तो क्षयरत्य के पद का हो उपदेश कोजिये। सहर्षि जे व्यातम कर का उपवेश करते हुए धनकामा कि संसार में व्यक्ति पवि, पत्नो, पुत्र, बन आहि से 'श्रात्मनस्तु कासाव' व्यपे यस के सिए प्वार करता है, न ईकि सम के प्रवोजन के लिए। चतः कात्म तस्य का ध्यसा-समान स्टीप

निविध्यासन करना चाहिये। वहां बहरारस्य को प्रतिकर से इस वकरण से बाल्य शस्त्र की महिमा को समस्त्र शा शक्का है. वहां दसदे प्रकार से भी काल्य बच्च की महानता को प्रदर्शनम् कर अवले हैं ) च्याय संसार का प्रत्येह स्थातिक सुन पसीना एक करके दिन शास यत कमाने में खगा हका है। बहि हम पदले हैं, क्वों आहे । ब्राप अ वो मसकासर वर्ष की धरबाद चने हैं. और न ही बाप को सही सदी की चिन्ता है, 💵 अकार की वस्त्रोप उठाकर वथा क्या जो धाप धन बमाने में जटे 🗊 है. बद्र सब किस जिए है तह राज- हाल का पक ही उसर है, कि बिसा से क्रमने कौर बचने परिवार के शारीत की पासना, पोपवा कर सकें । उन्ह वहां थर वे सोचने का शय अस्ते हैं कि इस इतने स्टर चठाते हैं 📟 क्याने के किए, धन क्याते हैं साबे पीने-पहने के लिए, कीर सा**डे-83** 

(शेष पर्छ = पर)

सम्यादकीय-

# ऋार्य जगत

वर्ष २४] रविवार २०२१, २७ सितम्बर १९६४ अंक ३०

क्ला सामशी हुई संगीतत सत्थ। है। इसे बापने बर्वेभ्य प्रश्न पर निरम्स श्चामी बद्दने का सदा क्यान रहता है। समय कीर स्तिता के श्वाह के शकान व्यवने कार्य में प्रगति हुए इसे दिसी की श क्कांचा नहीं दोता कि कोई इस व स्त्रव पसला देवा नहीं। सभाव हे अपना निरियत किया वर्तेन्य famen तथा विभावा जा रहा है। आरम २ स**ड** न्थाय पर साधास्ति क्रिकारों के जिस भी पूर्व शांका क्षेत्रसर्वे करता स्टूबा है। दोनों दार्ट इस के जीवन से शाय र वस्ती है। समाज स्वय हाँ शान-बार विशास कांदोलन है। विना **दिसी** की पद्मपात के कानकी वाली 🖒 अहासा दवा <u>स</u>री वालो का क्रितीच करने स कार्ग वहना है। बहु दिशोपका इस की पतन्त्रता रही 🛊 । इस के लिए मीरव 💷 विश्व है। अभिन सातीय कांग्रेस वे प्रधान श्रीवत कामराज तो वाशी २ **्याम के होरे पर** आये ये। अन कर प्रधान के नाते इस प्रांत में अवस बार ही धाना था। जनत ने बड़े भाग तस्साह से दिस स्रोत का बनका सम्मान स्वागत किया। श्रद्धां २ गये बड़ी यगर सुध संजाये सवे। सम्मान इस्ट बनाये गए। आपातों की शंकियां मी भेंट की को । हमारे शंत की अपने खतिय # का किस कोच कर स्वामध करना प्रसमो परम्परा रही है। इस से श्वारा मारव करनी परम्परा को िमास का रहा है। आसी की

कार्शक्रमात एक सदानीन | सीह ने श्रम्मान किया । एक्स-माकार्य मेंट की। अध्यवसर में क्लं दिल इस्वती आदियों से सारा दश्कदेला। श्री कामराव कंब्रिक सोगों की यही पदा है कार्यसमास से भी कपना वर्तव्य शानदार दंग से निमाना । कमकार से अगर व जिला की वरी बाबेशकाओं की वंशरित संस्वा भनोता क्षाच सम्राहि । उस में अपान की वेशवयन्त्र औं हैं । दन समा में आयंत्रमान कार्रेस-रोड, आर्थसमात्र सम्बद्धसर, बार्वसमा**क** अद्यानम्ब वासार, कार्यसमाञ्च होतगद, प्रत्वीपर, माहकटाइन, नशकोट धार्वि सारे सन्त्रम है। वहा सन्दर कार्य-कम या उस दिन । भी माञ्चका कामराज भी ता स्वायत करने. सातपत्र सेंट बरने तथा भारती वातं बताने एवं महर्षि दय लग के अपन् प्रश्व सट बरते का बढ़ा बत्तम साथेडन विमासया था। समद के पूर्व ही श्यन्यकी से स्वीकृति से स्वी थी। क्षाप्रसमाज बढानन्द्र वाजार क क्षर के बाहर बड़ी सुन्दर बेदों तका स्ताबत कर बनावा स्याधाः नगर के सारे समाओं के माई र्वाद्वन भारी संवता है उद्यक्तित के र वह की कामराज की की मीटर द्यांकर स्की वी भारत माठा की वर, श्रांच वयातन्त्र की अब के साथ भी कामराज जी का स्वासव करते हर प्रधान भी कंटान केतात बन्द जो ने पुत्रमालयं समा की कीर से उनके गति में बासी। मनकी भी गुरवरख देख औं ने भी

# कमी केवल भावना की

\*\*\*\*\*\*\* बार की रूमों है ? देव जैसा ईश्वरीय भी कमी नहीं । ब्राज बस के पास है। सहर्षि दबातन्त् जैसा देवधा इस का सरवापक है। विशास संगठन है। बबे-बडे स्वासी तपत्वी जेता उसके पास है। वहीं भारी देशी है संस्थाकों का जाल विद्या कथा है । शावनीति, धर्म, हिला, समाव सबार बादि सब चेत्रों में इसके वहें प्रसिद्ध विद्वान कार्य करते हैं । संस्थाओं में पढ़ने वाले छात्र-सताको क्षेत्र भागी संस्था है । वे हमारी शानकार कार्यानयां है । क्रांत सारे देश में क्रावेसमात के कार्य के लिए सबके दिश में बहा ही भाग है। जिसमें भीवन तिमीत ६ कार्य के हेका बादे पार्यसमाब के सहारची करने ही कारो चनते तथा समस का मेताव करते दिलाई देते हैं। को काम आयेशमाब कात झारम्य बरता है, कव संस्थातं उनी को बार में आयानम बरकं समाज की दर दशिक के सामने मालक सका देवी हैं। कारतेशकात के जिल वह बदे भासः क्षामा । कन्य सरक्षते ने भी र्वाद्वय भागस्यकी से विस्तव समाधा बी एंट स्टब्स की शर्भा ने मानवत्र वदा । भी बोठ बेदबर जी स्मठ स्व ने बी कामराज जी को समर मन्य बत्वाथे प्रकार वहा तथा श्रम**बे**दादि माध्यभृश्चिका घेंट दी । क्यमिस्ट्रेन पुत्र भी भेट दिया रामा। मारी भीट थी : बहुव ही प्रभावकाली हरव मा । कार्यसमात के संगठन, क्रतरासन कार्य तथा प्रमान को हेल**क्ट** भी कामराम जो तथा इंजा के प्रस्य सन्ती भी रामकस्थ क्षी वज्ने प्रधानित हर । व्यक्तगर के कारंसमात्र के सारे मान्य मार्ट बहिनों का विशेष वन्त्रवार किया (इन्द्र देसी भावना जाले कथ है। . यहा । साबरत में समाद की अदत्रक⊨दक्ष में त्रद्वान हो तो 四河青日 —विवोधनम

कार्यं समाव के पास किस । धीवव की बात है। किसी बात की विन्त-का ज्याता हतीत होते स्थी है जिसके कारश समाजके काओं में पुराने बुग भी प्रगति दिसकाई नहीं देती। सम इस होते टए भी गासी तेडी के साथ कामें नहीं व्यक्षी । बार है भावना की कमी । जिनमे भी पराने य**ग के का**र्य सब्दर हैं । उनके श्रीका में इस कदाबस्था से भी कितना परसाह, समाज शेस ६--बहु हनके पास बैठने से बात्य होता है। ऋषुतसर इयानन्द नगर कार्रेस रोड ६ इड छा० जगध्याम वां के कारार समाज के लिए किस्मी समय, सरकाष्ट्र है, सनस्य देख र कर चकित हो जाता है। हहा रचन में उन्होंने कितना काम किया। क्रम शरीर से तो आहे बढ़ है कर 🎟 डायत में भी यन व ।वदारो में बह समाप्त प्रेम किया ठाउँ मात्वा है यह देख कर थया उनके विचार सन कर मने गद्दवद प्रसक्ष होता है। यह यह विकार है कि अब महारमा हैकराज २वश बनाई जाये वो पंताब के इस प्रकार के पुराने समाज के दीवाने कहा के सम्मान करने तथा जनक विश्वारों से भेरका शप्त करने का भी वह सम्बोधन कार्यक्रम रत्ना आवे पेसे करमंद्रों से बितनी स्तरि म्यलके है। शाक्ष्मा कम हातः वातो है। हमारे पास बिवने सूच है, बासेड इ. गुरुहुत तथा अन्य अंत्यारं हैं पर वन में भावना वास (क्त्रस स्वदन हैं। यात् समाब प्रेम वधा धर्मभाव हो से समाज क समा-द्विक सरस्क्ष्मी में इतनी भीड़ हो कि वैदन का स्थान मो न मिले।

(शेष इच्छ ६ पर)

सम पदार्थ अपनी रचना हारण

बार्थ समाज के प्रवर्णक महर्षि देवानन्द सरस्वती यञ्चादि सहसी में बरी अद्वारशते से । इस का प्रचार करने में वड अवा करवर रहते ये। 'यक्क' राज्य के तीन कार्य है-देव पत्रा. सर्वात बरण क्रीट रान 'देव' राज्य के कार्य प्रकाश-लरूप, योवस—प्रसक्त के हैं। वेद-मन्त्रों को भी देव दक्षते हैं. क्योंकि इस से विकाशों का प्रकार दोता है। 'देव' शस्त्र का अर्थ परमेशवर भी है। परमास्था औ से सर्वाव प्रकारक प्रकाश प्रकार हुए हैं। झानी जन भी ऋते क गाओ और विशास्त्रों के प्रकाशक होते हैं इस लिए 'देव' शब्द विद्यानों के शिष्मी प्रयस्त होता है। यह में भरमेरबर झौर बन्तों हो कंटबेन माना है। वैसे तो समय देव पर इंडबर ही है। ऋषि के सल में 'देव' शब्द के अर्थ माता विवादि भी है। उन वा बादर-सकार, यक्त अर्चेन देव-पत्रा है। सावा, वितर प्राचार्थ क्षीप क्रतिया है अपविदिक्त पांचवा देश पत्नी के क्षिय पति है क्यीर पति के बिक् क्ली मो देवता है। क्रांग्न, प्रथिवी. बाद, चन्तरिव, ब्रादित्य, चीः पन्त्रमा और नशत वे काठ 🛤 🖁 । प्राप्त, व्ययान, व्यान, समान, सदान, नाग, कुनं, कुकत, देवदस, सन्दर्भव और स्वारको जीवास्मा बे स्वारद्व दह है, बारद्द मादिश्व (मास), इन्द्र क्रवीत् वियुद् कौर मजापति क्रमांत यक्र—ये ३३

देवता है। 'बब' शब्द का दक्षरा असे सगढी दरम है जिसका तालके है सक्तो सद्यती सीर गुसी-झानी असे का सत्संग करता. वनके क्याओं और विद्यारों से साम पताता, भीर दान-दक्षिया से उन भी मेवा-प्रक्रित करना । 'दश्ल' का शीसरा ६ य दान है। सब वानों से ज्ञान का शाम कांपनासी और काम को मी क्षण जिल्ला है चौर प्लंड चौर कारपंत कादि अपने | श्रा (जांद) को लाल करना है s

# जीवन को यज्ञमय बनाश्रो

(सेक्षक श्री मध्य राम जी अफ्रीका वाले बासन्वर) MORTEN NEW TOTAL BETTER THE MORE REPORTED FOR THE MORE REPORTED FO

प्रधान है। भ्राम्य, नरप्र कादि के दान, विशादान की बराबरी तो नही प्रमुख के सल के लिए युक्त किया आबादे और फल में यह क्ली दर ६६ते. परन्तु इस के सहावद (क्रबंधार) को भी क्रास्त्र शाय भवश्य है। देशो सब बडे जाते हैं। उत्थम दान बहु है जो देश, बाज और राख को देख कर दिया बला है। दुर्भिच में, दुस में दक्षित की पीता में, कावनकास क्यीर व्याधि-विवत्तियों में. सभी तर चक्र-थतः चीर करादि के स्राधिकानों डीते हैं। ऐसे संबट वे ब्रह्मय में पाल-कशक का विचार र्जाचन नहीं है। की लिंकीर स्वाय सिंद के सिय किया गया राज प्रध्यक्ष कोटि का और निकट राज वह दोता दें जो कन्या-कृत्य देश, काल और पात्र का विकार करके रचना और दीन हःविशे को क्या जावा है, ऋवभाग और सहाबता करना यज्ञ है। किरम्बार से दिया जाता है ब्राग्रेट बहुदारस्यक क्यांचपद् में यते वर्श को स्थवनों के लिए दिया बनुष्य सोद, रिएलोक सीर देव अच्छे। स्पन्न कर्ने लंबी क्रीप

मिसे। दान, पुरुष, सेवा, उपहार, समात्र संधार, कीन क्रीन सन रवा भीर वालन चारि समी क्यें 'यम' बदे गये हैं। परोपकार बद क्से है जिससे सद मनजों में से दुराचार भीर दुःस दुर हों. दनमें ातान परस्यर सप्तार के कावन में क्दाधार और समा वडे । जिस दर्ज में सब हा दिन हो उसी दर्ज को जीव-सन्तु एस की न्योति से श्रीवर परोपश्चर स्टते हैं और परोपश्चर | लाम बरते हैं | चन्द्रमा, वाशनपा, ही यह है। तपकार कर्म से कवने : तुक्ति, मेच, वर्दियां, खोत, बायु,

धसमये व्यक्तियों को विश गय

दान ही सफल होता है । छपात्र

हो देने से जाम के स्थान में दुर्शन

होती है। पारतविक दान बहु है

बो विद्याकी बड़ि के कालों से

बगाया वाये. बढा बीतल में जार

हो, चीन क्यपाहक, रोगी, कोटी

भौर भगायों को किससे सहायवा

पश्यवा का अपदेश है ।हे हैं। स्वायं उनके निकट सक नहीं फट-यह कमें सनुष्य कलमा शाहि। च्या। सरीर के सब्बेड क्षक्त के परोपकार भाग का 🎟 से स्था वटाहरवा क्वा हो सक्वा है कि दश लाश वस्तु कञ्च-प्रश्न के स्वास

क्ये डारा रक्तर में नारे सक्ते के जिए दोच्य पदार्थ सम आती है। हरव-रेश में रक बनवा है और हरद का वर्ती रक्ष से वोषक्ष होसा है पर बह स्थार्थ स्थाग कर पसे अपनी वाति में वितरश कर देख है। ध्वर्य वसी से सन्तृष्ट होवा है वो उत्त को सपने भागका रखीत प्रभ होता है। उस उड़ पशुर्थे वह मनुष्यों को परोप कर के **स्था सन्त** का उपदेश दे रहे हैं को बसा हुआ मत्रकों का वह परम कर्वव्य नहीं कि हम कपने जीवनों को परोप-सारी--वहसय बनावे जिससे हाँ

> चिन्तपरगी में बैटिक धर्म की घम

लगे-सक्ष की वर्शन हो।

१ ६-६४ से ७-६-६४ तक वर्षा प्रवासको वार्थिकोत्सक समाका जना : जिसके क्यादन से की वृद्धित रामनायज्ञी बाग्ने की मंत्रको कार्य प्रतिनिधि सभा की रामाक्य दी कवा हुआ प्रभावशास्त्री हुई । क्रीर ता० थ को वेशिक संस्कृति महासन्मेशन हक्या । जिसके श्रम्बक में भी सहस्त संस्त की दास बसरास वाते ये इस श्रम कवास पर श्री दात्री के प्रभावराज सजब भीर माध्य हर ।

-- इरिशयम्य शास्त्री BRIS HATE

🛨 इस परिवचनशोस संसार -में कीर नहीं अध्यक्ता सरका परसू उत्ता होना स्थी था सफस है जो

होता है । अक्षा के क्रियाम स्टा. तवाय कीर वावडो समागर, धर्म strend की सरावं बनवाना. स्तानाम आलाची, विश्वा सहावद समायो, विवयासमी, कौषवाकर्यो सङ्ग्रहाँ-कशस्त्रों कीर क्रनायस्त्रये की मारावा कावा, क्षत्रक अवी-क्रमात व बाट ग्रीटिनों में स्थान-क्षम्य बांटना, निचवाक्यों क्रीर ब्रसङ्ख् गृहस्यों को गुण सङ्घावता देता, म्हानागार बनाता, पाटों की

ਸ਼ੀਫ਼ ਨੀੜ ਲੀਵੀਂ ਵਾਰਗੰਤ ਦੇ ਚੀ। वन बोर्डो पर शिवर शांश करने के क्यान भी बताये गये हैं। 'बाह्र' रपाय है पिएलोड बीडने का। यह सबस्या कि मैं सब के लिए हैं यह बहसाक्ष है। जो महायहप क्रमर हो गये व्य का वीवन शहसक था। पुरपश्चित्रार्थ, कृष, राज सार्गे, पार्क, ध्यानी शाग, समा तट क्रीर कार्य सार्वप्रतिक स्थान होते की बनाये हर नहीं पर मैं उन से आस बताबाद'ं हो स्था मेरा सब नैतिक कर्णस्य नहीं कि मैं भी कत्त्राता प्रकाशित करने के लिए का दसरों को भी उपहुत करंं वह बन्याद्वका है। सूर्य से कार्यस्व

# श्चार्यममाज लक्बड बाजार शिमला द्या समारोह

क्या तार शैर्तन तथा तस्यव की ध्रमध्या विक्रियम रसाराम जा सभा प्रधान को ४०१) ओर 

हो । प्रवी । स्टूस सार्वसमात्र की विशास सामन्तिनां है तथा कायसमाज के पराने वज्र मान्य -शब्दारों में भारी वर्म केस है। कापने सरकों में भावसमाय क आपने रंग में रंगे हए वैदे हुए विक्रिक्स वापने शीवन के दारा क्यपने द्वाओं, कव्यापको तथा नगर धी बन्दा पर कियनी जाप सगा सकते हैं। वह बावंसमात्र लक्ष्म ਕਾਰੇ ਹੈ। बाजार शिमला तथा शानदार ही। **ए**० बी० स्ट्ल का कार्य देश कर अपनी आण्डि अनुमान सराया वा <sup>:</sup> श्वार क्रक्टियाता त्रो पं. सशी-सक्या है। स्कन्न के गीरकशासी क्रिकियस सत्य दकारा जो एम**० २०** ने शिमका में इस संस्था को किउना इंदा प्रमावशासी बना दिया है इस का परिचय तो यह शिक्षा की सामनी देश कर ही निक जाता है। पार इवार कं लगवन छात्र 🖫 । लगर बीलेंन में 🥅 सेना को ·बाबारों में भवन बोतते, जबपोप करते देश कर मलक प्रचा हो स्राता है। इसी बकार यहाँ समाज के द्वान मान्य एं॰ क्ष्मीनाथ जी असोत बडे ही धर्मनिस्त, स्थाही क्या बेर अक्त हैं। नम दमा मीठी मुर्ति हैं। मन्त्री ५० मुःनकास जी ज्ञास्त्री स्था स्त्रके सङ्घोगी एँ० **मध्यस्था जी गाश्री वर्ष सारा स्टाफ** की प्रस्ताही है। बड़े गौरव की ज्ञात है।

en वर्षे यहां श्रावेसमात सन्दर aus भ शिससा का वार्विक धर्मकेका चवती शान का अपनाधी था। व्यार्थ प्रादेशिक सभा के वयस्त्री, सीम्बता की विनय मृति, विद्या वे उत्तरकीर स्कासन एवा स्रोजस्वी -बाब्स बी. जिसियस ६, रसाराम

जी प्रस. ए. एस. एस. ए. स्वयं भी कतरे हर है । समाजी है अरसरें में क्लंब प्रधारने से बढ़ा ही क्रमाह सिक्स है। बढ़ा ही समय देते हैं। राज हो दिन हो कर बठा-कर पड चर्न हैं। पानीपन जानी पर भी नये नहां पदारे, चव अंदादार भीर बाद करनास गुडगांव प्रधारेरो । समाजों के सरजन स्वाप के वर्शन कर के सताकित की

तरसब से एदं सभा के बेत-राम वी शर्मा की बनी ही जनर कथा ट्रड क्या में बार है। पं. हजारीसाल की के सबन होते वे । जन्मे में मार्थनमात के राज्जार्थ महारथी नी मान्य ठा० समाजिक जी सार्वप्रकृत हाएट से सक्रवारी वीरपाल जी के साथ भी पदारे । सभा से ८, विजोब-प्राप्त शार्थः, वस्ति प्रमुख मंहली पं. शावपास मरतयोदन जी भी पदारे । क्या, जगर बीटन ब करते हैं कहात हो हो तल नगर में धर सचार्या । संबोध्ये मैं सी त्वार हवा । सार्वत्थात की कोर से विशिषक रकाराम जी सभा व्यानकी की सेवा से नेजन्या के विष्युप्तरोग्राक्षी बैंबी मेंड बी जर्न इस क्लाइ, स्थन श्रुता को देखकर प्रधास भी सनोत थी, विसीचन

सःवक्ष्मशा थी, सारा समाव द स्कूल बधाई का पात्र हैं। सहस्र के का में ने शरान में, काफि लंका को सेवा में कमाल कर दिवा । वडियो देवियों की बढ़ा का तो बड़ता हो स्वा !

श्रार्थ डागर सभा सत्संग—

# बाल वेदामृत

वत पासक बनो

#### **并未未未来是张某类米米米未未来**

ब्रोडेम क्रम्बे त्रश्यके वर्त परिष्यःमि नवाकेस करते शहरताहरू इरमञ्ज्ञ नतासःवयुर्धेतः ॥ (# = # 0 9 1 25 3 ) शम्बार्थः --हे (ब्रवपते) शस्त्र भाषकादि धर्मों के वासन करने कीर (काते) सरव उपदेश काने बाले परमेरवर मैं। (बाबवात) जो मुद्ध से कारुग । (सत्थम) येह विद्या प्रश्व कादि प्रमाख, स्टिन्स्स, विद्वानों का सम बोच्ट्र विचार तथा कारम की शक्षि कार्रित करती के जी विश्वेष, किसी सी प्रकार के सम से रहित, सर्वाहत सब की अलाई লাক আনহাত্তি নিহোগ হৈ গ্ৰহাত बराने हारों से सिद्ध हसा, ऋच्छी वद्यार परीचा किया गया। (अतं) सन्य बोतवा, सर्वज्ञातवा और सत्त काना है उसका (हर्पेक्रि) बनुष्टान **ब**र्थात निरम से कारा खरने वा जानने **क्रो**र उसकी शारित की इच्छा करता हा। (से) सेरे (बन्) उस सत्य तन को प्राप (राष्यताम) ६ पक्षी प्रकार सिध क्षीत्रिये जिस से कि (६३४) में उस्त ख्या तर के दिवस करने को , आगासी सप्ताहों में किया जानेगा। (शरे व) समर्थ होऊ'। और मैं (इट) इसी प्रत्या मध्य क्षत के काचरया का निषम (वरिएक्सि) क्स'सा । (र्श्वपदयान-इ माध्य) भाषार्थ-इस मन्त्र में एक . पक्काशांतरन स्रुविया आवे।

ज़बर भक्त मानव अस उद्यास स्वरूप, सःव का उपदेश करने वाले पत्म विश वरमात्रमा से सत्त्र अन के पासन बरने का सामार्थ्य मांग रहा है क्यीर मन्य को बहुश करने तवा स्टड को सक्या, सक्ता (वात दरने के बिये शारीरिक, मानसिक क्षं क्रारितक वस की प्राथेश कर লাম 'মল' है। उदा है ।

स्वास्ता-वह वह सन्त्र है जिसका सरकारक वक सक्रपारी विदार्थी से तब बहुते पहुन्न करावा भाग है जब बहु अपने गुरू के दास शिष्य बन बर विका प्राप्ति के हिए <u>गुरु</u>कुत (शामी**न शिका भनात्रती** के प्रानुसार ज्ञाजाबास सक्षित रंशनयासय, स्कूत) में बाता है। इस सन्द्र के तत्त्वारक्ष कराने से त्यह है कि क्याचारों आर्थीन विद्या वर्शव के फिल सक्तर में प्राप्तन करने दा बन बेने नाहे विद्यार्थी से मय-०४० सन्त्र प्राप्तते सन्त्र शेक्के क्रीर सन्य कडने का अत कराया जाशा है कीर कराया जाना भी कातिये क्यों कि उस तक विदार्थी सत्य को बहुता करने भीत क्रायस के ओक्ट्रेक का यह नहीं से जेना त्व तक वह गुरु से विद्यापद्या कर सकते में भयत नहीं हो सहता। विराह्मी श्रीवन को सफल बनाने के किने तर स्त्रीर सम्बन्धे हो प्रवास साधव हैं इन दोनों साधनों स्मे सहिमा वेडों में क्षतेक स्वामी पर समस्य दे गई है। उसका वर्शक ेपरस्तु एक महिमा क्या इवार . महिमायं सनहं अपें उनका कोई दिकारः परिस्थास न निक्क्षेया जब तक कि उसके अनुसार कारस ∈ाने का पत प**र पाने का** 

इस्ते परके इरादे का नाम नेदिक

भाषा में 'ब्रुत' है। शायद आर्थ

इतार असी वह यही समके बैठे

हों कि एक आह रात-रोटी न सार

क्र इसरी खाक फल, दंब, दही-

वंदे, इटा की पडीदी साने का

(कमराः)

की नहीं लगाया जाता और इडी

क्षक यह अभी बढ़ेशी वह कहने

क्की जिलाने से बाहिर हैं। बालाव

में देखा जाब तो स्वाधीनता क

बाद किसी क्रीर भीज ने ता अनती

बर्म्नाव नहीं की जितकी मंहणाई से

की है। फिर हैरानगी वास्ते तो

बात यह है कि मारत के नेवा

श्रार से डी इसको रोकने का

भरसङ प्रकात कर रहें। पर फिर

भी सब श्वरन कसफत ही रहा रहे

है। इसका कारण क्या है, यह

कमी फिर लिक्स मा समय मिला

बो। स्था वो इसने देवल देखन

है कि महराई बॉट उसी प्रकार

वैसी कि वर्तमान समय में है

बहुतो गई तो एक समय येसा औ

बस्दी से जनदी पह वने वाला है

(पह'चेगा) अब इस अवनी

स्थाधीनता से हाब यो बैठेरी ।

कारय यह कि सीमों ने कुछ न

🖛 🛎 साना होता हो है । आप

ही सोचें कि एक परिवार वाला

भारम्। श्रपनी, ध्रपने परिवार की

स्वर-पूर्वि के क्षिए क्या नहीं करता ।

भीर वांद्र इस माजर की कार्ट

के सिए, पद्मने के लिये उक्र न

मिसा वो वह क्या करेगा। कांस.

इंगर्लेंड सादि महान् देशों ची

क्योंतियां इसका सदी इस वता

क्याडकामाकांस में, अव

कोंगों को बस भी साने के किए

विकास था, पहने के तिथा

कुछ नदी सिसता गा। कांस ने

क्सेय इनक्साम का सहा क्या वा

जिस को राजी, राजा मी तर न

कर सम्बंधे। और वालिश में इस

राभी राजा की क्या हासत हाई वो

चेता है।

eft fr

# महंगाई क्या रंग लायेगी

(ने०--करनैलसिंह 'विद्यार्थी' विद्या बाचस्पति कादियां)

परिवार की असरतों को परा करने । के क्षिये पूरी पांचे क मिल पावें तो बड क्या करेगा परिवार तो वासिक प्रस्ता है. बच्चों दा सी योग्य पासन पोषण करना है वर्दि तेत' ही प्रशीम क्रथता तील हा यन मिलेगा को इस बेचारे मणदर की काशी से स्थान तसवा देशस गेड', नामल, दाक्ष कार्य में ही

क्षम बानेशी और दक्षरे सब कार्यों के लिये या तो वह दाके सारेगा, था कोई और मायत प्रदर्शनेगा । में यह दाने से क्ट्रांस हैं कि वर्त दो बाठों पर इसारी सरकार चलता भपना प्रस्व दशस्य समस

के तो भारत में कोई भी भक्काणार, संहराई, बेकारी कादि अपना स्थान त्थापित तथी ६२ सकती। वो वो वार्ते यह है कि दह तो भरकार बावने दरद विमान थे क्दोर रखे। बहत ही शान्ति के पुजारी न पते। चौर उसरे सब को कर के लिये असरत करतकों की स्पनाई शोम्य करे. भेले । वे टोसी वालों पर यांव स्थान विया जाये को बड़ां प्रतिदेश वो चोरियों.

वाओ, मंद्रमाई, नेदारी, अद्याचार कादि की बढ़ानियाँ मनी अपनी है वेसदपर क्याक्ट बढ अवंगी : पर समस्य रहे भागात सभी से सले दायों पर विस्ताना काहिये विस से एक होदे से क्षांटा सद-दूर भी भवतो उध्यन्ति कर पाने। बोर द्वड भी ऐवा होना वाहिये बिस वर लिहाब स्वा होता है देसा तो होना ही नहीं चाहिये कौर धारराधियों को कड़ोर से कड़ोर वरद देकर इसरों को बह विका

देना वाहिये कि किसी धपराच की

विक्रेशी सवा है। यदि सोई साफि-

वह इतिहास के परने बाले जानते एक सम्बद्ध को अब सारा -बिन कार्य करने के बाद भी करने | सर कोई बजती दिशक चार्य लेवा

पश्दा आये (जेसा कि पंजाब के बरव बन्दी की काबरेट से विससे (देनो पह को पहता अत) तो बसे भीत यह की भी सजा देशा कोई बढ़ा सना नहीं क्वोंकि इसरों को सो इस से कर का कारी है।

मेरा क्रपता विकार ( कि बाब विवन भी दाने पोरिन्हां बाहि वरों की समसा सारों की हो उही हैं वन सर ६ पीसे इसी महातारी वेदाबारो, दरह की व्यूनता ने ही mear tim serfen au ftem हमा है।

पर सरकार शावद इसलिये इस महराई, वेदारी को अधी दर नहीं कर रही कि जनसंख्या तो बढ गई है, बढ़ रही है और बंद बीधां ही कीमते ही बद्दा बावें तो हुइ व्यसस्या को कम **(ो**यी, मुख-सरी से । द्मत: विस्तार से न श्रद्धता क्ष्मा

में कन्त में यह कहना चाहता हूं कि बहा महमाई है वहां ही बोरीया शाके, रिहरत, प्रष्टाचार है। कर उन को दूर करने क सिथे पक्षते न्हंगई को दूर करें। वही जन्म की सरकार से बेनती है।

श्राय समाज गोरखपर

(जयलपर) रजन-जबन्ती समारीह

१६६४ वह वह वह समाइ से सवाबा जाना निश्चित हका है।

इस पुनीत अवस्तर, यर प्रकार-नीय भी स्वामी प्रशासनक जी महारज. भी रामगोपास जी रास वाहे तथा पंताब की होनों प्रति-निधि समाझों के १९८शक अत-रीकों की क्यारने की साशा है।

इस व्यवसर पर महा कीराक्ष चेत्र की बार्यक्रमाओं के शांत्रहों प्रधानों का बेहबचार सम्बेक्ट हा भी आयोजन हिंदा जा रहा रहा है। इतके सिवाय प्रान्त वर्ड **उन्येसरों का प्रावीयन किया जा** रहा है। इस कदसर पर शकाब के मन्त्री श्री मारवमुक्त नागपाञ्च सबल बार्वज्ञक से उन-मन-धन से सहयोग देने की श्रमीत की है। -- श्रकाश दश्य शागगाञ्च

## द्धारों केवल भावना की

(पच्ट ३ व्हा जोक) कैसे काम हो । इस कोर विश्लेष

व्यान दिवा आने तो कितने हमारे वश्यों की समात्र का प्रोस पैता हो आये। इस में हमधा दोष है। भावना सरनी होगी-(त्रक्षोकचन्द्र चार्य प्रेमी का शतक

अवमेर के वेदमक, बाहरी भी तथा वर्गानष्ट हुई। य श्री वीहतक वी सचमुच हो एक बाइरोबीयस के कार्र हैं। पनके सुपुत्र भी सोहज सास की कार्यक्षेत्री व सारा वरिकार ही यह का प्रमान्य प्रेमी है। सबके बसं श्रेम की देख कर वो पुराने युग का समस्या हो जाता है। चार्च हें भी सासिक विश्वास कर पता नहीं हजारों की संख्या से बितरक करते हैं। वेर भेम को वन में कूट २ कर भरा रहता है। वार्षिक सहाय वज्ञ को क्य का दश्तीय होता है कार वे मी का इस बार अथबदेर शत बड़ा ही सन्दर प्रकाशित किया है। स वेद समाह पर काप से यह साप कर वेदप्रचार में वहा सहयोग विया है। प्रमु उनकी इस बेद निक्षा को बनावे रसें। इसके बिय दनकी व देश जी सोहनसाल जी को वसर्थ-- स

गुरुक्ल विद्यापीठ हरियागाः १२ कव्युवर से २४ वक्तूवर मेंसवाचा कलां (जि.शोहतक)

बाद की सपेट मे विज्ञा यांच वर्ष से सम्बद्ध

र्वेतवाल विश्वत बाह का **शिकार** हा रहा है। यहां सकानों की इस अरसे में जो चलि हुई है, उस का चनुमान कोई शरपए दशों हो खना बक्टा है। यी शासा को धीव विना पारे सह टापना सक्तमा से हैं। क्वोंक गुरुक्त का सारा कारा बाद की क्षेट में भा गया है। गुरुस्त के झालब पाया की मार से व्यक्त प्राव हो यथे हैं । गुरुश्स को काफो हानि पहुंची है। हमारी वंत्राव सरकार से तथा दानी बहानमाधी से शर्थना है कि के विद्यापीठ की इस सकट काश्व के स्मवस्य सेन शहासता करें।

<u>इ</u>स्वाधिकाक

### 'श्रात्म-सधा' ---अश्रोक 'हिन्दुस्तानी' वशतसर नर-पृत्र€ वात्म-सूचा भी विजय-मनि ब्यास्त-विज्ञृति तुन्छ ती#-हवाशन चेत-सर्वत का अला जी है प ব্যৱ सरध स्लेश-सेंद की कर्तात को बवा चैत-मानि का अस जो वात करे सक-पक्षचित में एक है 1

विससे 203 उसता पससे बन इस ही है।

### क्या भारम समा की सब मी है। विश्व-युद्ध को एक मांकी वैठते ही वन्होंने एक एव का

(से॰—सा॰ भी बसराज की) विक्ते-मिक्ते साटे पांच सास -बीव वने पर विचारे शरवार्थी -काश भी करती में सबसे हवे 'शिवड सिसड दर शांस के रहे हैं. भी नंही रहे

मी पर्विश्व का किस तर सावा। . "मरे पर संश्रद्धा। इस संस्कृत ने रमकार्थियों को नौनहाल कर विवा कीर कर दिनों में ही फिर से बसा दिया। पर्विस की धाओं से झान रएक । रपदते ही मोनी बार गये और सरशार्थियों के परयों में आ गिरे-अपने रेशमी समास मैं नहीं। सो वावि में स्वेप्त होते है उनको क्षेत्र कार्य करने का बाबसर बाधिक होता है। मी पर्यक्त पद कर बहुत सुटपटाये । सनक

बिसा 🎚 रेश की रश का मार वाति पर है। यदि दश्मन की द्यारा वा बन्द से कल स्रोतों की सन्तर्गत नष्ट हो जाती है तो तह प्राप देवाव दन खबाओं के बन्दों पर ही अही गिरना पातिने को देवतोग से दुरमन का निमाना कन गये, वर्रक इन लाखियों की हानि हैए की हानि समस्ती चाहिये छीर वह भार देश की सारी जनता को क्रुन रूप में शहन स्मना शरित है। काम ही क्वोंने वह समाद सी रसा कि जिन होगों की इर्जन हो नई है जबको पूरा इवकाना एक दम मिल जानः चाहिये। स्वश्न-विकास सर्वमन्त्री इस सुम्हर हो ने वधी समय निवयन कर किया। विचार वा कि इसकी बड़ी विम्ये-. बार औरते के किये रेक्स्याड़ी में | दारी होनी बंक्स नहीं । परन्तु की | से शिका शह्य करेंगे ?

सन्त्री के नाम शिक्षवाद्या । यस जे

### -मध कलश-

करुतसंद तो लदे सुखते गृह चर्रे सिहासब इंसों को सुनने पहते हैं कब कीवों के शायब रोजा है तो सिर्फ सद्वी अव इनिका के आस्वर पटा इका है ६५८ सरक का वैसेका है शासन

बद्धा सी सासार २६ तक शेन सोद से न्थारी चावता नहीं परम बनवाती चनका थी प्रकारी होती नहीं करण दिवित बजी क्ही को लेकिन सन्दर क्वता नहीं जानती इनियां की हर नारी

वह चरती सोना क्यमेगी इसको विका वसीजा दुनियांगर को सदा बाट पर कासकट सब पीता चायरता के साथ किया तो जीते जी भर केंद्रा सबते सहते यर जाना है सही कथ में अधा 388

–ਤਿਕਰ ਜਿਵਦਿ

### न्त्रार्यसमाज पालमपुर तथा नगरोटा **बगवां**

जि. कांगडा के महोत्सव सम्पन्न वार्वस्त्रात्र पासमयर में सता | चोद सगा दिए । उत्सव हर प्रकार से के सकोगत सहोपटेशक भी ८० सप्पत रहा । इसे सफल बनाने में कोमप्रकास जी की ६-३-६४ से नेद कवा होती रही साथ हो भी सेवृत सहाराव दिवानपन्य जी वण्तराम, यस्तीराम भी की हंगमाते—भी स्वराज कमार वाली. चिमटा सरमधी के सरीते आहित भी गणनस तो, भी रामकाथ की मान पश्च बीर रस पूर्ण मधन गाडो, मॉलक इरबंस काल औ जनका को क्रवनी कोर जाकरिय करते. अहाराय ठाकुरशस जी तथा महिसा रहे । इस वर्ष पारिवारिक सन्सग का कायोडन मी किया गया थो

**米茨米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米** 

🌃 प्रामानीत बस्ता रहा । महिना सकाक का संघटन एवं समाव वेस विशेष प्रमादीखादक या र क्रमंत्र में भी भी भागी मोमानन की बहारराज तथा सभा के सन्दर यावक को ६० मेलताम जो रेडिको । प्रार्थभमाज नगरीया बगवाँ

वर्षित ध्रम्भो दात पर उटे रहे परियाम स्वस्य पन्द्र दिन वे क्रमर "यह बीमे" की योजना वैवार हो दर यह मास के भारत श्रीम हो वर्षे । क्या हमारी जाति वें श्वेष्ट की नेहरू सादे पांच वात के बाद भी इक्सिमा के 🚃 पने

सिगर ने समितिक होका चार

कार्य समात के पुराने महारथी समाज की बाशाएं वा देवियां समी एक सन हो बर काम करते रहे। बनवाने भी श्वार में भाग होने में लाद रुचि दिलाई। समा को

साम स्वय सहित ३००) वीन सी हएके भेंट किये समै !

ब्रावंसमाज वासमपुर के वर्शान् १५-५-६५ से १८-६-६४ वर्क कार्य-समात नगरोटा बगवर में भी do क्रोमश्रक्षण जी तथा श्री जगवराम. दम्ताराम जो की मरहसी ने प्रवाद किया। वर्षा कार्दि के होते पर औ त्रकार पूर्व क्लेख संप्रता शहा, संक

(भेद इह = दर)

# महा गहर्त्त और अब यह

(क्टर २ का शेव)

हैं शरीर की श्वा के शिव, परना ्रक्त क्ष्मी इसने यह सी सोचने े बाक्षट किया है कि इस शरीर ्धी स्था क्वों करते हैं १ इस अक से सार्वशंत रह और शांत्र की मिता भी शरीर की देख थाल के क्रिय करते हैं, पुनर्राप इन सब कार्यों को करते हुए कदाप्तित ही द्यारे बन

हरिक्स जी बैतेकर केर्चनगर में विकार प्राप्ता होता. कि इस तका थी पं. चन्द्रसैन जी आर्थ शारि की बेस मास क्यें करते हैं ? बस का प्रयोजन संगा है ? यह महीत विशेष के अ विरुद्ध III करें पर शोक प्रसाद-के एड मडान वा सवारी के समान है. वो 🗏 जलमा वो ल कर्मानसार पारित किया गया जिला में परम-देव प्रमु से प्राथना की तह कि 📰 संसारदास वा वात्रा के लिए प्राप विवंशत बारमाओं की सहगति इसा है, यही ती बढोपनिकर के ऋषि ने समस्तते ३५ वटा है-ब्राज हो तथा इनके विद्योग से दलके परिचार को मैदें सहस्य करने **'आरमात्र राधितं विद्या सरीर रथ-**बी प्रार्थना की गई र -- हानचन्द मैक्ट्र वह सचिव ही है, हमें वह ब्रीसार बाका की सफलता के लिए क्ररीर की देल माल अवश्व करनी केर्प्रदे, बड़ी इस बनारी में बाता सितंबर गत साप्ताह से कार बाजे सवार का भी ज्यान रखन बार्कि । वर्ष हमने सवार की मीर

स्वर्ध हो अधेगी। बदः इस वस नहले की सहिता क्षी व्यास में स्थते हुए इस व्यंका क्षमय का समस्पित लाग उडाने पं िक का का - कारन विकास के कास वस का विचार और कानस्तान काम वाहिये, जिल्ला से सामव श्रीपन के प्रयोजन की सार्थक किया

विश्वस्त ही भ्यान न दिया हो

. बेंद्रकरी की सारी सरवा तो विल्का

ar ait i श्री मास्टर चात्माराम जी 'बमतसरी' की सचित्र जीवनी अपन 1.65 N.pबार न्यय महिताी स्वयदेव सटर्ज आत्माराम पत्र श्री परसेरकरी सब्दा फिरोक्सर बहोदा-१ से संगवाएं :

दयानन्द-वधनाम . .. नगाव की शंहरंग समा का कार्थ-

वेशन श्रीरकाराम जी यस. ए.,

वस. यस. व. सभा प्रवास की

बाध्यक्ता में शनिवार १६-६-६४

को सन्नाक्ष्मक्ष्मक में द्वमा ।

विसमें सर्व प्रवास निम्न शस्त्राच

भी सरेन्द्र कमार की संस्त्र भी

तन्त्री सभा

toi-**BIE # 7**4

22/-

200/-

toti-

tokj-

\$2/-

120/-

800/-

20/-

वेद प्रचारार्थ दान गास

कार्य समाज करकेंद्र मालता ३०/-

रसुजुक्र 129

क्षो भार्य समाज सा. टी. पामीपक

बार्व समात्र पक्षमपुर

ू लरका

.. मोलरा

., राष्ट्रस बस्ती

\_ कानकोट

\_ सहीचा होगी

ु कालीटा वगुर्धा

शबदर शबी २५/-

,, बा, दी, पानीपत १०१/-

.. का.चि. शंत्रातामध्य १३०/-

, पुरानी संबी कम्बू ४०६/-

.. बार्रेंस रोज क्रमक्षारः ०१/-

पास हमा ।

वासकों को वाहिए कि प्रशास पासन वरें। मनवा करी न करें। स्वा सान्त रहें। मुख्यमों से पूक्ते बोन्य दश्न हाथ बोइ कर पूर्वे। पश्चकी पन न दिशावें। कहा स्वय्ह रहें। रक्षम वर्गों को सम्बान हैं। काने में कान्त्री धी¥शाकार-यमार् ब्हार्य न काने दें। बारियक, बानश्विक चौर शारीरिय थक बढावें । साका, पिका तथा खादार्थ चापनी सन्तान भीत शिष्यों की बदा सहक्षेत्र हें और यह सी कहें कि जो हजारे धर्म क्ल करें है, रुद्धी को साप महस्त की बिए। वो शह रूम हो राहें क्रोड़ कीजवे। जो जो सन्द असमित्रे, रशी का मेंद्रारा और प्रचार फीकिये। विश्वासन में छह विश्वविद्यों के बसान लान पान, स्टा कौर कावन हिए बाने चाहिए चाहे वे राव कुमार, शब कुमारी हो सीर काहे दरिव जन की सन्तान ।

> (स्थामी संस्थातन जी) महात्मा हैसराज जयन्त

> > सम्बन्धी सूचना

है कि सहात्मा हंसराज अवसी

उपसमिति की एक आवस्यक

बैंडक ४ व्यक्तूबर १९६४ रविवार

को ११ करे दिन के प्रार्थ बसाव

**सनारक**ती मन्दिर याग नर्ड

देखभी में हो रशी है परय

त्रापको सुचित किया **प्राक्त** 

# सवी को उपली बरुवा सकित है। दयानंद सालवेशनामिकन

होशियारपुर

कारीस ६४ से कामात ६४ तह ३०१ किवार्थी शद्ध किय गय । यह गांब कार्य पंजाब विकास स्थापित सञ्च प्रदेश में असा।

**व्यक्तियारों को क्रिक्रियव**न होते से बचावा तथा हो सन्तामों को ईसाइयों के पंजों से ह्यापन क्षित्र क्ये में शक्ति किया गया।

राषीतास मंत्री विराव

(इप्र ७ का शेष)

है। धगवान इक्क सा वय बाव

एवन सेकामाच सभी को प्रहाब

क्रवाडीक समय पर प्रधान कर काकि हैं। क्रानचंद्र संती सम

क्षक में 'बीबन का अंग अ रिशानकार को के सुरूप की कालेर-केल बकारिय हमा हैं। यह तेस चन में हो इस सवाम के बनान सार्वदेशिक मानिक पत्रते क्या है। 🛲 को कोई व्यदेशक-वचारक क्या नवा है । इसके शेवाब वहां बाख है स्थास हर वदार से मान्यवरमाचार्यवैद्यालक्ष्यो लक्ष्यो है सेवा बरते 🕻 । सेवाबाव इस परिवार में सुद-सुद्ध कर भरा हुआ

ऋर्यसमाज दिल्ली हावनी सुनाव

नी रानकास जो सम्होधा. त्रवाम, मी देव अध्यत जी एपत्रवास, वी वर्मचन्द वो शास्त्रा सन्त्री.

चार्यमणाज नासीरा

भंत सधार ant ana & 15.L.ty

करें। प्रचार के परवात् १०१) वेद ने बसन्दाय वी सुर दश्यान्त्रो pert में सभा की भेंड किए गए। ने निरंबन सास गुप्त कोवान्वय ।

बहरू व प्रकारात में क्योचान ही बाव प्रदेशिक प्रतिनिध क्या देशव बाबन्यर हारा की मिकार में से विकार रेस बाबन्यर से प्रतिन तथा कार करते का कार के प्रतिकार के कार किन्द्र के कार के कार के कार का कार का का



[बार्यत्रादेशिक शतिनिधसभा पंजाब जाउन्धर का साप्ताहिक सखएत्र] टेबीफोब वंद १०३७ Begd. No. P. 121 बब प्रति का मुख्य १३ वर्ष देने वार्षिक संस्थ ६ इपरे

वर्ष २४ वंक ३९) १९ आस्त्रिन २०२१ रविवार\_द्यानन्दास्य १४०- ४ अक्टूबर १९६४ (तार 'प्रादेशिक' आसम्बद

## वेद सक्तयः

शिशिर इन्द्र रन्त्यः बह शिशिर-पतमत की कत भी प्यानी है। बीवन में गेमी क्रवस्था मी काजाती है जैसी वतम्बद में होती है । बनुष्य सम्प तिहीन सा दन जाता है। परन्त इस दशा में भी निराश न होता पाहिए । साहम न श्वारो ।

ता स्तवन्ति कवयः हे परमेश्वर । कार की सारे र्शव मेपानी, जातीयन सरा सावि बनते हैं. जि.ने भी **ब**ते र विहास ज्ञानी भर हैं, वे सारे हेरा वशोयान गाते हैं। तेरा ही स्तवन करते हैं, श्रुवि के गीव गावे रहते हैं-तेरे स्तीता है

श्चम्न श्वायं वि पदस हे व्यक्तासन इसी सम्बदेश माप क्या कर के इसे बाद स्वास्थ्य रीपंश्रीवन बदाम बरें। धाप की कृपा से इस दीर्थवीवी. वकाश्वी कीर्लिकाले क्या अधीर क्षते कर दर दार्व दर्श रहें--

# वे दा मृत

चो३म प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये इदन्नभय कर्य-वह (प्रजापतरे) प्रजाकों के पासक क्रीर स्वासी अरमेस्वर ( ब्राप के लिए (स्वाहा) कानूत है, स्ववर्षित है। (इत्म) वह ब्राहृति वस (प्रजापक्षमे) प्रजानिक परमात्मा के लिए है, (प्रदं न मम) यह मेरे क्रिय नहीं है । उसी के बार्पवा करता ह'।

शार :-- इमंद्रारह के बन्धों में गा। ब्राइटि मीन हो दर देनी विकी है। इस का फिल्मा वहा रक्षाय है मानव जीवन का गरभीर स्मीर इ'प। इत इस वें किया इका है। जब इसी मनुष्य के पास पर तथा क्रम्य विशेष पदार्थ क्या जाते हैं या कोई धनशान फारि क्रमदे सन में से दसरों के किय इच्छा ग्रावना श्वादिनका से दान के अप में देने संगता है। क्यादि बोड ड्रिक्सरी कार्सों में संगाता है, तो बादा अपने २ प्यामों में, बरमों में, ब्याइतियां देते समय चय के मन में बढ़ विचार वैदा होता है कि बह काम मैं कर रहा ह', यह बान में वे रहा ह' काववा यह बाइनि मैं ही दे रहा हूं। असे कथियान सा होने अगशा है। देशी क्रास्त्या में देशी मीन हो कर हो जाने पासी काहरि का वसे बन्देश मिलता है कि है भारत ! प्रमितान नदीं बरश है। यह हेरे ons कर भी है. अब उसी क्रोकियर का विया है। बडी असामित है। क्सी की दी दरत त देश है। भीन हो दर बोस-पिदा की। यह समी क्षत्र काय का है। बार की यी वरते बाप के निश्चित्र केता है। तेरी चीव हेरे झपैश-सं.

## ऋषि दशेन

सत्य न्याय प्रकाशकान जिन के जीवन में सस्य है.

जिम को बदा सत्य से प्यार है. जो अपने बीदन के आन्ध्र विकार के प्रकाश से प्रकाशित हो कर इसरों को पश्चक्रते कहें। हैं। सत्य वे भी, स्वाय त्रिय होते

है। प्रत्येक काम में अध्य सर्वहितं चिक्रीर्ष न

बो सन्दर्भ हैं. सारे शस्त्र की सका का सहा दित करने वाले हैं। चपना ही आई बिज करने वाले नहीं वरन सारी प्रवा के हितेथी का कर सब का अक्षा क्ते हैं। विश्वविताह बन बर पासेवा में बारे रहते हैं-

धर्मात्मनः सभासदः

सवामों के इस प्रकार शाथि-कारी बतावें, राज्य के ऐसे र हाविकारी बनाने चाहिए श्रो थर्मात्मा हों। जिन के जीवन वें सत्य पर्म या प्रेम हो। जिन के प्रत्येक काम में अमें प्रमुख होता है : किसी भी प्रजीसन से बाने गले न हों। धर्मी होने वे

सहस्य वर्ते । नाम्ब समिकासे

प्रथम क्राविवेट से फिल क बद्धि के कांक्षर का क्या भारत **ब्**दने वासा होते से पतः पतित होता है। इस क्षिप पुत्रूप में उपादक वाप का संबोध है । वास्तव में पुरुष वसेश क्यांनि वाय नहीं है। चित्र में रहने कतो को स पहर में क्राविवेक से कारोपित कर किये

जाते हैं। तैसे सकते वार्कों में थीतहार, सताई पाप भार्ति होते 🖥 पर यह जीतहार लाओं को होती है। क्वोंकि राजा व सेना का परागर स्थालाचित्रात सामध्य है कीर उस सब बराजन के पान का मोक्ता है। इसी प्रकार कदि स्रोह पुरुष का भी परस्पर स्वस्थानि आव सल्बन्ध होने से चित्त या सदि में वर्तमाम दुःल बसेश बाहि का प्रस् का व्यवदार श्रोता है । श्योकि वह इस के फल का भोनता है जैसे सांद्यव सुत्र १-३८ में दहा है---

बादशक्षांत त तर्तिक शिवत वतेश रूप दल आला में केवल रूपनमात्र हैं । वालव में उस

की चित्र या बृद्धि में दिवति है देसे ही कठोपांकवद में २-३ में बड़ा है-भारमेन्द्रियमनोयकां संस्तर्शी-

इनवीपियास जाबी बोग इन्डिय भीर मन से यक्त बाहसर की मोक्ता करते हैं। श्रांत्रओं से बो सुक नहीं है वह मोस्ता नहीं है। मेरे जारो । इस अस वे वा खों कि पाप शास्त्र से होते है। पाप होते हैं तुम्द्वारा आसच्छि से, डेर सन्दर्भ से, जिन का पास क्षुम्हें मोगना पडेगा । यस बात भीर स्मरता रखी कि एसा बातसा का रहन १९४ में साथ झाल ३६५ संयोग द:ल का कारवा नहीं है कार्वित सम्ब धःल माह चात्रबद रूप माला बहिर है उन्ना सामा पुरुष का अभिवद्ग संबोध है। यह इ:स कर देत है। बिस से क्यार≖ा

भीर बदि में विवेक न होने से 🗓

दर्शनों की क्वां

होशी है।

# दशेन का स्वध्याय

(ते वा. संभारदास जी सार स रोड अनवसर) 

रपश्चिम होता है, यह ग्रीम

फिर बस को बंध का सर्वत सही

मैं नहीं हाल सबती। स्वॉक्टिटस

ब्यात्मा ने उस भी बदस्याया देख

संबोग वियोग का कारण बहा

फिर धन्त संयोग की कोई

बाक्कबस्ता व रहने थे स्थ का

क्रमाव हो वाग है। यही परन धी

दैवत्य कस्तवा है। वहां दःसों दी

कारवस्त विवर्ति कौर शास्त्रत

गानि (Spiritual solace) से

बाधा है।

दो सब दाल कोड सबी वर्तियों । का पुरुष में काव्यारोप--व्याकारता है । एवं तक पुरुष इस बहुति के नाता

राय अयों को देलवा रहता है. छह-सांस्वकारिका २० में बद्धा है। तक भीवते को भीवता रहता है कि इसी कारबा क्षप्त राज्य के संबोध वस 📺 हे दर्शन से बिरफ हो कर द्वारा असम्बद्धप स्थित सरीर, चेठवा-क्रवने लम्ब रहान की क्रीर मांठत वासा सा भासवा है। वैसे बाग है, वह स्वक्त दर्शन हो जाता है। के सम्बंद से लक्ष्मी और इसी बद्द ही इप्टालाभी के स्वरूप की प्रकार शकति के राजों दारा सथ प्रसम्बद्धि है। यही केवस्य आर्थात क्सें होते तह भी च्याकीन साथी पस्य बर्ता वर प्रवीत होवा है। संशेष का क्षीर लक्ष देखी। बोध २-२३ क्षक्त प्रकृति क्षीर उस की विकृति

त्वशामिशक्तवाः स्वरूपो

पर्शाप्य हेत् संबोगः धर्मात सर्वाच्छ स्रोत स्वामि-शक्ति बुद्धि पुत्रव के स्वरूप की अपर्काम साओं कारण है. वह संबोग है। झर्यात वह संबोग ही বিদ্ধীয় कारमा है। इस संबोध के रहते

हम ही इसी संबोग को हटाने वे विदस्यः सेयक ग्रीर स्थानी चात्मा के अक्टाकी प्राप्ति IV जाती है। इस सुत्र पर स्थास महाराज टोका करते हैं। पुरुष स्वाबी 'स्व' विज्ञ बशु सर दाव त्य-से दर्शनार्य तंदोग इस्टा है। उस सबीय रहय की ओ जे क्य

MACHINE AND BUT BUT THE THE PROPERTY OF THE PARTY OF THE

आर्थ जगत की उन्नति की चाह

ने॰ श्री मा, नानक्षन्द जी सांबा शायं जानि चमद बढ़ेगी, दार्च वयत बढाने से। इस १२ को 📰 आये के पान 🎟 घर पहुंचाने थे । प्रति सकाव सक्षांग पति है, कार्विक प्राहक बहाने सेर त्वामी जी की मक्ति पर स्था के प्रश्न पदाने से । हरियाओं से और लेकों से, जनता की शंच विकाने से किस्टी अला भी पैसेवी, पार्वप्रवत पैसाने से अ सक्ष १-३४ में दर्शना है।

पुरुष्धर्य गुन्धाना गुव्हाना श्रीह क्षमः चैवान्यं स्थाप्तव शक्तिरा स चिक्तिमित्रशितः।

कर्शन पुरुष के किए स्वयंक्षि-प्रकास से संस्था हर कार्य कारण रूप तुर्वों का को अपने **कारण वें** बीय हो बाला है तह कैशन है। इस दशा में भारता को परशास्त्रा का बाजुधन बानाव होता है।

(海耳和:)

शोजापर में वेदिक्धर्म

प्रचरि

कार्य समाज शोला पर से मोद्ध है। यही वदार्थ झान विज्ञान २३ क्रमान से ले कर E सिताशक है। संयोग की इस खद:बा में सह तरु भाषयी पर्व के श्रमाण्य में दो करने वाप्यशेषन नहीं रहता*।* रुपाड के लिये वेड लपार का कार्यक्रम आयोजित क्या परमा जनता की सांग पर यह कार्यक्रम बर संबर्धा। उस्ता प्रशासे कह वोन सम्बद्ध वक करना प्रशाह शोला पुर में वेल्ला बापा मापी मध्यांभी आही रूपता में रहते की तमा जान भी है। इसी लिए है। देवन प्राची सर्व होती वस्त्री all æin पर तन की बल्तियों में भी तेलग आधा से बेरिक धर्म के प्रकार कं लिये भी 🐫 केशक वाल आ

> हैराबार को विमन्त्रत दिया क्या । वं, के जी स्वास्थान बिन्न-बिन्न प्रतिहरों में बरावे तहे । सत्यायह बॉलवान दिवस प्रके क्या अन्याहरी के वर्ष बोस्ताह संसाये गरे ।

हो सरवार तक भी पे. सहस-वरमाञ्चर की शन्ति होती है। बोहन जी विचातकर का क्या इसी बाद को बोगररोन के मन्त्रव होने रही।

वैदिय धर्म सम्बन्धी हिस्सी. सरही, तेसगुद समेत्री साहित्य डी संहारी परवंडें होतों ने मार्च-समाज के विकी विभाग से सरीही। (क्यापियों को ने कार्य समाज शोकापर आसे सत्य पर वैदिक साहित्य देता है। आवसी 🕏 बातका है सब को भाषे मध्य पर साहित्य होने को सुविधा दी गयी। इस अवसर पर क्षेत्रेक शक्ते के विशिद्धता संस्थान प्रधारे ।

कार्यको राकेन्द्र फिकार्स बाईभग्रव शोबाध

सर्वोच्य स्थायालय के प्रथम उच्च

न्यायाबीश (सुरीम कोटं के अथम

क्षाचार पर सबे उन्हर्स २ सम्बाद है

देख कोच में समय २ धर जो

न्यानकार कर वाती है. वस को टर काने में परा र प्रवास करते रहेरी।

वड़ी वर इन निर्वाचित सामग्रें से

रक कारकहरक विनेटन भी शर

सम्पादकीय-

# त्र्यायं जगत

वर्ष २४] रविवार २०२१, ४ ऋक्तूबर १९६४ [अंक ३९

# श्रीर निवेदन

क्रमी २ पंताव में प्रेज़पट तथा , ध्यशेशी वस सकेंगे। शिका के जेत कम्बावको की सीटों पर बुनिवसिटी। में काका समार हो सकता है। के सिए इद्ध निर्मादन हम है। इन म्हालों के दिए चयरी भी संस्थाओं के कर्द मान्य धोरव साउत्रस कार्र है। उन में ती, ए. वी. कालेज असोटर के तपस्ती प्रितिपल श्री नारायश दास जी बोबर मार्च दास एंग ने हायर सैकडरी स्कल जालन्यर के योग्य श्रिसियल श्री प्यारेलाल वो केरी ही ए. बी. हायर लैकं-हरी स्कूल अमृतसर के विद्वान विभियत को मनतराम जी तथा विकटर बायं हायर सेक-ब्बरी स्वल के वर्मनिक्ट प्रिसि-पल श्री रामधन्द जी जाबेदभी निर्वाचन के क्षेत्र में उत्तरे थे। सक्षाताधीनं कपते इन सक्टनी 🛳 बोस्स्यातवा कार्यक्रालन के कामने रखते हर अपना मत देवर mm को कामयान बना दिना है। ga पारी भाग्य धपने योग्य स्वत्रकों की शास्त्रका समझता पर हाते और सारे आर्थ समाज को भारी हुये हैं। हुन ब्राय जगत की क्रीर से चयन सम्माननीय क्षाओं को शाविक बनाई देते हैं। इस **प्रकार के** वोस्य नहानुवालों के किश्वविकायय समिति के सरस विश्वीचित हो असे पर बता आसी साम होगा: ये वडां हर वैद्यक्त कारचे महर्गायरो तथा प्रधान से शिया-सम्बन्धी कार्यों में बढ़े 🗊

६.पते विशास सन्धव वर्ष चीक डांस्ट**स** टा॰ सेटरचन्व भी महाशत ने इस के कारे में यक सारगमित मेल में गए। शब्दां में बरदार के नेताकों का ध्यात तार क्योर क्राकर्षित क्या है। ज्ञान्त की परम्परा छौर छपने बांकर के जाने क्रायम के काभार वर इस टाइक को बढ़े ही सन्दर शक्तों के प्रकट कर दिया है कि दस । विश्वेष किल्ला स्थाप किल्ला स्वोदि सावस्त्रम मात भी क्रोर श्यान करी विका सारक्षाः जन साराव कर विकास ही कोई नहीं स्तरहा। यो आज सहस्रह जी ने तिस्था **है कि जब का ब**रात सर दार के देश देश की शिवता संस्थाओं में बच्चों के लिए समें शिक्षा देने का बक्तक सभी कोंगे। सकतों में बार्गाय एरम्परा के दन पानिक क दशों की शिका नहीं दी अवर्ती। काहे जीवा और विद्यारे क कारण के स्था का रस प्रशंते हैं fon प्राणिक (अथा देने का दिनाव धरक उसे कियाएमक सब उदी विका काश्मा तक तथ कहा भी सभार नहीं होगा ।

गान्ववर दा० महायन वी

दा सम्बद्ध तम्य-वर व्यापारित है।

अनुसव से नरा है क्या बीसाई

का बार्लावड इसाव है। ब्राट

हमारे देश के बच्चे वर्त सरव

वे सी. बाषारवाल, राष्ट्रविष्ठ, दर्ब-

शेकी बन बाएं. तो इन से बना

# श्राचार निर्माण का मलसूत्र

बाह भारत में पेतते हर श्वनः-चार के रोग को टर करने के लिए मधन सरकार के बड़े २ डेलाओं का स्रोत से प्रत्यक्ष क्षय से बाहा करान विद्या जा रहा है। सम्मेळन जारी है. जावर्गों का ओर है एक ब्रुट्रोड est ಕೆ ಸಗಳು ಸರ್ಜ ಸe. विधों का निर्माण हो का जनता में बल्त कार किया जा रहा है । सही वेना पारते हैं। सर्वेट्स मधात आर सेन्द्र स्थान हैं, नहीं भारत साम समाज का संग3त है को स्क्री सहापार सक्रिक

तत दिली काबाद भारत के

कत को भारत स्वयं संधर जावना ।

#पन सरकार के नेशकों का

कांडब है कि हे इस सहाय नेत

के समाव को क्रमना कर इस सुर

का प्रारम्भ करें, छटनी जल्दी

सफाता होनी। वही यन करवा है

—त्रितोर पद

जिस सतदाताओं के कारा निर्वाचन हमा है साबित के सहयोग से ब्याप श्रांतवसिंही के का शहर किया गया है। यहा अही इस अभि स्थान पर पर्व ने हैं। वधी और दिस संस्थान द्या धावी-तन के झविकारी, कहीं एवं उज्जित वन होगा। ये सब इसी शिए बन सांती का भी आप को पुरा २ या शका या बनाशा का रहा है तर्हक व्यास स्थान क्षेता । कार पर के राष्ट्र के श्रीयन का श्रार के बा हो ही तो प्रतिनिधि बने हैं। खाद ही सर्छ। भ्रष्टाचार की बीबारी सम्राप्त उन के सुला हैं। उन को लावाय हो नामे । वे सारे प्रवास स्वयंत्रे हैं : भी क्राप ही है। विश्वविद्यालय इन के साथ सब को पूरा २ सहयोग की समिति में चैद कर वर्डि वेना पाक्रिए। किला शक्त यह है निर्वाचित व्यक्ति केवल मात्र आपने वि हरती संस्थाओं के बरते चन्नते स्वार्थ की ही सामने शर कर अपने कं बात क्यीर इस पर सार्कों करोड़ों निय सोचना करना सर अपने त्वदे व्यव करते पर भी देश है काम का बी प्यान रक्षण है, थे वीवन में किसी प्रकार का मी इस से बर कर मतराकाओं के पनि परिचलन नहीं हो रहा । स्तिक औ और योखा क्या हो सदक्षा है। क्योंकि काम का एग तथा वाताकाय भ्रष्ट चार में कभी नहीं हो रही। तक बात होते पर को यह संवासक ही बुद्ध देसा वन नवा है कि लोग नाता स्थानों से जान के शब् जनवा रोज की आर्थित क्षत्रिक क्षेत्र उद्य का मक्ष जाते हैं। लोगों का न ित्यांक का जो के यह कार है वका कर धवन। 🗷 बनाने में सम बाओ प्रयास विया आ इहा है. अधे हैं। किन्तु हुई इस बाव पर प्रस से क्षों सन्द है। संख की स्थीर शास है कि वे चारों सदबस श्रीहरू sar दिश्वित एको पर पानी में कहत इत्वे तथा समाजनियद बाबने से स्वा होगा ?

> बरेंगे : प्रमः दिख से मभाई दे कर **१** कंक का स्वान दिक्कते हैं 1 —ांत्रओस काड

हैं, मने हर हैं। 📰 से तो बड़ी र

ब्रामार्थ हैं। यहां प्रवाह से सकत

क्ते एक शास्त्रार चदाक्रया प्रस्तुत

संस्कृतिह-सावद्यम ही साथ हे

सिनेमा-क्रथिक प्राने समय की काल में जरी स्वयंत्र तीय को पूर्व वर्षाक सिनेमा ने इटनी कार्यंड नहीं की यो ( एस समय के पुनक भीर बाज के युक्क में मारी **भा**न्तर है। तीस वर्ष पहले का स्वक प्रातः सार्व स्नान करते हुए, क्रथना रात की सोते समय, दिन में या राजि में किसी न किसी समय अन्यव सगवान् का नाम से नेता वर । परम्तु खाब का बुक्क तो सगवान की हतती से ही सून क्र है। दिल-शात के भौतीस घटों में इसके मन क्रीर युद्धि पर केवल व्यक्तिताओं और क्रसिनेत्रियों का

ही व्याधियाम रहता है । हर समय फिल्मा मानों को ही गुनगुनाता रहता है। यदि उससे सबसे सबसे पुरुषी के जीवन-चरित्र के विश्वय में पछो तो बह कड भी नहीं बता सदता । परन्त यांत किसी अभिनेता दा अभिनेत्री के विषय में पक्ष संस स्रोयह उनके विषय से शीक्ष ही विश्वसार से बन्त काट बना देगा। मारत के ये श्रीनद्वार यक्क गिरावट क्यांकोर मारो आ रहे हैं। सकतो और कालियों के वई विद्यार्थी 🖠 फील व दिनावों के बराजे पर से सिनेमा के जिल् पैसे से सेते हैं। जिल वनको और वनवियों की क्रिलेमा के किए पैसे नहीं बिल मध्ये वे चौरी करने से भी संबोध नहीं करते । बहुत से निर्धन सन्दर को क्रिनता से दो या तीन सप्ये हैतिह अपने होंगे लाय को के भी सिनेमा-हाल में पुस्त वाते हैं। वह भनो होग में! भपने सारे कटन्त्र की

यह कितना बरा प्रवाच पक्षता है यह कहते की प्रावडवकता नहीं। 'बार' है । सके भी उसके उन्हार किथा देता है । ताकि प्राप्त क मही। जाकू पर बड़े राम की चीज वजह और दर्शवदां हरक और

साम लेक्ट सिरोमा चले जले हैं।

इसका स्त्री-प्रतय कीर वाल-प्रचय

## चरित्र-निर्मागा में भारी रूकावरें वा मा वाल का का का ##FERST#FERST#SERVESS#S

शकों में दे तो तो शह दसके कोई कराजा कास तेने के त्यान पर श्रवती अंगुब्री ही काट होगा । इस शकार फिन्भों का यह अध्या 'आर्ट' मी परिवादीन स्ववित्रतों के बालों से ब्याइन देश को प्रश्न की क्रोर से ल सहाई। बिम फिल्मों को सामाजिक और धार्मिक क्या काटा है, इस्थ चीर मोइल्ड की चाराने को इसमें भी क्रक्ट्य होता है। क्षमी कोई देगर उदाहरका नही मिला कि योई तह. 19श्वायामी और अपनी व्यक्ति देशक मात्र भामाजिक और पासिक दिल्पे देखकर बवाचारी और वर्गात्मा बन तथा हो । सालविदला यह है कि जिसा प्रकार अमें के नक्ता पर इसरे पासंड पस रहे हैं इसी दरता क्या ये नवदवसों के दिव \*\*\*\*\*

भी पिशोरो जान जी श्रेय टढ फार्य समाओ है इस स प्रमाण रज ६ रम केल से पाउँकों को विसेशा । परित्र निर्माश में धापनिक शत में वो मारी शतकरें धा रही है तर का दिलाई न जारोक्स केल में दिका गया है। यह जेल माला दक्ता प्रकाशित होगी । व्य श्रमा एक

कार्या इस्ट्रें की क्रीसित वर स्था

क्वार्थ नहीं, दर्शाय नहीं।

सांस्कृतिक-कायकमः :- प्राप्तस्य

धीर चाहित रक दिया काता है। है। त्या इत बानारा श्रीहराशों से श्रांद्रमान श्रोग यह अस्त्री प्रधार देश और आणि के सभार और रवा से जानते हैं कि बर्तशान क्लियों को इन्हें भी ब्याशा हो। सब्ती है ! वतंकात सिनेसा क्या है, इस्ट और के द्वारा सामाजिक और पार्मिक बोडवका की टेनिंग देने के स्कूस प्रवार बहापि नहीं हो सब्दाः क्रवाशी, बराई, पाप, ठमी, चोरी, हैं। इन स्कूज़ों में ट्रोतिंग सेने वाले श्रमकारी, पासाकी, सप्टापार, विकासी करा समय्ये सन का शहर हेरक मोडव्यत, फेशन-१स्ती ब्यादि **इट स**र्देने ? क्या इनका क्राचार का प्रचार तो इस फिल्मों के हारा विकार शब रह सहता है ? क्या क्षो सकता है। क्षो सकता क्या पर वे (जालवड प(डारेष) पराई स्त्री हो एका । को अपना साता के नवान सकतो. प्रत्येक सुधारक दुशकों स्त्रीत इस उपहेश को सुब करते हैं।

बहते हैं कि सिनेमा' एक धम्ला व्यक्तियों को सिनेमा न देसने की है परन्त इसे किसी नादान बच्चे के बोबज्यत के तकान से बचकर देश

के जिल्ला पिछाने की भी सामाजिक

फिर बढ रहा है। बदले से बंजन व व्यक्ति का इस भक्ता कर सके। युवह ही माटह बस्ते के परना प्रशा परन्तु मारत के युक्कों को सिनेमा वृत्रीयां सो यहकी के साम ही ने इतना सक्डोस का विवाद कि नाटक-समाझों (बृह्म टिस-स्मनी) उन्हें कोई भी खपती वात कपदी नहीं करता। इ.स. तो में काम काती है। इन मुक्त सरीर पूर्वावयों के मत के अन्वर हुपी हा इस क्यारी कहा सिनेश के कारण षटत से यह अशारी और फैरान माबनार्थे क्या है, क्या के नाजक Sienita-ereinen annifen-प्रत्यी में शेरप के नौडवानों से भी सबार के बिक बिलो अले ≹ प कारो बढ़ रन्ये हैं । स्तियां सो स्त्रियां हैं ही, परुष भी स्थिती कमने का ्टावि हरी । शायदा का है कि न टर्शे में काम रूपने से तक का यान बहा नहें हैं। इसको असीर को क्रम्यास हो आप उप दिसी फिर व व्यायाम कार्य से कटोर जनाने है कारती में बसे आई। सारक-समाधे स्थान कर होताल चौर निर्धाल बनान feest. v. cfani is fine wfother में बने में हर हैं। त्याओं की करह क्या क्रमनेत्रिया तबार करते की संबोत अवसीते स्वते प्रस्ताः, दिन वित्र से कई की वार-शंकारना पाइटर क्षेत्र, सभी चार्थ का व्योक्त

पाठ शाजाय है। विक्रमें। में बा किर भी छन्न सुद्धिमान कानुमकी ऋष्टमी काम काते हैं। घरन्य शाटकों में तो कम कायु के भोड़ी-दाले संदर्भ स्वर्तीयों ही सारास्वारय काम करते हैं। इन का किसी <del>अस्टे माग पर पढ़ जानः बहुत ही</del> सरख है। नाटओं के करने कीर देखने के कारक बहुत से विद्यार्थी द्रापने सकल व कालिब का काम क्रव्यती प्रकार से नहीं कर सकते। प्रभाग असे सामियों को प्रधाने । शोधा को कात है ? हर सीधान

> श्चपते स्वास्थ्य को विवाह सेने हैं । שלפי שומחה בילולווו עלים श्री विद्योरीताल जी प्रेम रेणका जिला सिरमीर, विद्याश्वल प्रदेश लंबों हैं परा भाग नहीं ने सबते

धार्थी-काधी रात तक जाग कर

जिन से कि स्वास्थ्य पनवा है। **१६ वार ग्रैंग्ड नगर में महारमा** जो के शास से पकाये हर गांपी-राजेज में एक सांस्कृतिक-कार्यक्रम हेलांत के लिए इस विचार से पता तथा कि शायद इस कार्यक्रम क ोई बुरा प्रसाद नहीं क्वोंकि यह गांकी-हामेश्र' में हो रहा है । सहां जा कर देला कि संच पर सुरक श्रीर पुश्तिमा इसक्षे काम कर में फिल्मों के चबते से बाओं हि हैं।

(फदरः)

# महर्षे दयानन्द श्रीर श्रःथेनेता

कि स्त्री सीताराम जो जार्य वस्त्र मण्डार हिसार ) \*\*\*\*\*\*

को प्राचीन वैदिक एष्टिकोश से मलका कर मार्ग प्रशत्न करने वासी वे महर्षि दक्षानन्त् ही प्रमुख मनुष्य से। वे नहीं अध्यास्य सुधारक वे बहां एक महत्त्व शिचारास्त्री भी चे। शिक्यासास्य के जिल मौजिक क्षापारी का वर्शन बहुवि क्षपने बाक्षर श्रंथ सरवार्थश्रवाश में वर गये, कारा कि आज के शिका-विद्वारी जनहीं भ्रापना वह मारत की सम्बंद प्रभाग्य (प्रधाता बन पर्त । श्रद्धश पत स्रोड भी दें, वरन्द्र apan को महर्षिका अन्यायी कारते में भीरब अनुमन करने वाले कार्य अगत के शिका विशेषत्री तया स्रोत्सा शासकों ने उनकी को गहरी स्वेदाकी वह स्था कम सोध-नीव है। आर्थभगत के प्रसिख बेदिस विद्वान भी एं० वृद्धदेवविद्या-संकार अपने माचयों में ब्हा करते हैं कि सम्प्रदायिक लोगों ने अपने वर्माचार्यों को वासविकता की क्ष्मेबाकर उन पर नया रंग नडा विया है। ठीक इसी प्रकार इसारे शिकासंस्थानों के प्रध्यकों ने भी आपने भाषार्थ महर्षि दशानण्ड की ब्राज्ञाओं की विश्वान कर मन-

वर्ष को कन्या भी न आने पाये। परन्तु कात्र हमारे द्वानन्द् कालेज अं अवर्षे को छोबिये यहां हो १६ **१**६ साल की स्थ्वाचें नदे ठाठ वाट क्रे अव-बड कर इन्द्रजोक की परी क्या कर कराने के साथ आही ही तारी बहिक हाओं के साथ एक ही सेंच पर पेठ प्रस्ववन करती है। इस के साथ 📕 प्रविश्वरी जोग सांभद्रते ६ प्रोबामां के नाम पर क्ट्रेश्नवाधर कात्रों को विसाधनिक

**ब**ाती कारस्य कर दी है। सहर्षि

सबसे की पाउसाताओं में श

ने सत्याक्षत्रकारा में लिखा है।

सद्यासारत काल के पहलाने यनने का ध्र4सर पर्व ध्रीतसन्द्रन मानवज्ञाति की विधिनन गुलिकों देते हैं। क्या वह ही दयाबन्द की शिषा है ? न हाने इयानक शन्द को भी इन संस्थाओं के जाने क्यों जोब रखा है। पाटकार्ग अस में से रहे में

शोई लो शिवा के विस्तृ नहीं हैं। हाँ महरिका का पोर विरोधी हैं। क्ष्याको से असी पडशाबा में लुवशिचादो शिक्ष से वे शाहीय परंद्यों का पासन कर सके। सच्ची मातावें दन राष्ट्रीय बना त का निर्माता कर सकें। एउटी विशे चसाएं जिस में सब दर्मपारी महि-लाएं ही हों। महविं ने शिक्षा को शीपन मधार कर आशार आका है। इसियो शिका में कान्य विकर्ते के साय-साथ अर्मे शिक्षा को क्रानिदाय माना है। भाव द्यानक काते हो है वहां-

रिया का विदोर। तो बहुत बीटर भाशा है पर होता एक नहीं कड़ी नाम मात्र की इर-इर कर पताते हैं। कि दशी सरकार अनुहास क्षत्र स कर इ। शेप नहीं सद्दी कसर वे क्षस्यापक लोग परी कर हेते हैं जो धार्जीविका तो समाते हैं हमारे रस्त और कालियों हैं. हेरिक हमदर्श रखते हैं कनमय, मोशस्तित वा क्यानिस्टों से । ऐसे विशेत्स्त्रव कार्य समाज के गातक हैं।

क्शः हमारे शिश्यध्यक्षाको ने ब्राप्यच तथा श्राधिकारी प्रधान है तमा 🥅 विनासकारी सहसिचा ने क्लंड को इर कर अपने अस्ताती धार्यत्व का परिचय वेचें। चन्त्र या धरकार थीं: वडी माल दैवार **दर रही है कौ**र काप सी । फिर भाष ने सकूत के साथ इंदानन्त् नाम ओड दिया तो क्या डमा काम हो आभो । यही मेरी इर्दिड तो वही होता है अहेटि यहचे अधिनताचा है। वही मेरे दिल की .

गुलामी के दिनों में होता झावा | सरकी दहर है।

### गेग और उसकी औषध (पंच सक्षीराक्षत्री त्रमा वेद प्रचार अधिष्ठाता सार्य प्रादेशिकसमा) \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

वर्तमान कुर विकाशिका, सार- रस्त की वृह में और स्रोत का हा त्वर III विशा में अभी सर्के नकर । मध्यें वदाकर, स्थासनी और काते हैं। वही येसी सपना जाम "सहस्राण ने इस की सर्जीसक नहीं होती जिस में किसी भागित ं की रचि स्रोधी स्वीर उस के अवीय गोप्डी का बसंग हो। बहुत कम से ससार ने बाराम भी पाया। टकार्ने ऐसी विसेंगो जिनकी शोका व्याप्त वह परेहन वीकार पित वास्थिक सहायुक्ष्यों के चित्रों से बोसारी का ग्रास कारता है। बनी हो। आधिकतर सङ्ग्यट इमारे कविकारी एवड सक्त कालिक नावक और नाविभकों ने सम्भाल हुई है। इस बहार क वालावरवा से स्बद्ध श्लीत होता है कि सामध समात का क्लेकर भवानक महा-मारियों का शिकार हो। चका है। मन क्रीर बल्लिक पर इनका गहर। प्रभाव है। कहीं भी चार सरहत रंबत कर प्रारंभक अर्थत की कार क्षोचनं हों ऐसा बहुत कम देखने में आध्या है। इर स्थान पर यह विशासक रुटा सह विरासा वह हडास की चर्च का बादार गर्म

> ाचे कथा था दें इस ब्रक्तार विष देशारे है। वर्षि दयानन्द के झनशांबद्धा के किये नहीं सार्गशोचारायह है। करता है कि किस से शास्त्र से क देल की जाएका कहे कीर नवे। परस्तु उस बेहासून की मात्रा निष्यव भाषना से समान का वस्तरोत्तर प्रश्वास होता जला जाए। ब्रुग्नो कम होती जा दशी है *जिसे*

> कारों सम्बद्धा । इस से वर्ष लगर प्राप्त के रहते वाले प्राप्त र तर नारी भाषात्र बह के क्रिये प्राप्त कि बानी सिर से ऊपर गुजरे धाप करमा इसेंथ हो रहा है। यह यहा भवने पर की सुध लो तथा स्वण्ड तहा रही तो धीरे रसमूचा समाज ही हो यर कार्य मिडांटों का प्रानगरण बर के कार्य जगत में देतीप्वसात .

(शेव क्षड ६ पर) श्रार्यसमाज बरेटा मंडी का वस्तव १७-१:-१६ कास्तुवर को समारोह से सन्त्र हो रहा है।

दर्शक बार्शस्ता क्वं शंत क्वां में लिक्ह हो चुका है। सब सस्तिक का मूर्य है। इन्हीं 🖩 प्रचार एवं इस विवेदों सकत से सभी हो पाने क्यार के साधन भी प्राय: उपलब्ध है। यानव ग्रहप रहा है इस बोस्ड हैं । सभी समाचार पत्र वर्श सर्थ समझाय | के मारे । परान्त को बतारे और 9 भौपवि की साथा कम कीर जाउर क्यविक होने से विसाध तह से नहीं गई। रोग कं परमारम् नालक समात के सरोर में आधित रहे। क्रीर अनुकृत वातावरम् को प्राप्त का पड़ होते जा रहे हैं। सर्हाप के तरके का प्रयोग महत कम हो सा गया स्थीर हो रहा है। -इसी कारवा वपरोक्त रोग मानव को देखेंन कर रहे हैं। वहे प्रयस्त से धीर संशासक वातनायें सह कर नहर्षि ने इस संतीयनो को बाज किया था। जिला के स्वाकों के वाक रहता है। लागपान झाराम सर में समार भर के विषको वी कर ध्मश्री सेट हो चहा है। मीतन ह भीर सीनव को बैट समत के छ'त िला कर स्वयं महर्षि सदा के लिये तो गये से । अरीर की सक दो भी किसान के सेत में दशका कर मानव तेरे जिमे सब पर्श स्वाहा" का सामहां प्रवर्शित का

शार्यवस्थान से बाने सत्यान्त्रे-प्रशा प्रशं रहता प्रशार के प्रति करा-चर वायसक वहे हैं। देश की व्यक्तिकात वरिश्चितवर्गे में भी बारवर्ष विद्यानों ने इस भावना का परि-ल्याग नहीं किया। यही यह येला क्राचितिसम्बद्धानार बना रहा है क्रिय पर भारतीय संस्कृति इसं स्थाना पर्श रूपेशा द्वाधारित उत्ती है। कादि सहि के नेट जान काल-

भार बाल में समके प्रचार प्रसाद तवा कालान्तर में डाल वसं असेक क्रमा के लगान पतन की सप-स्थाचों से भी इस बैटिक विचार-श्वारा का करिवत्व निरम्तर क्रज्यक्ष क्तारहा है। वीताशास काल है इस पावन प्रकाली के सन्द पक्षते से डमारे राष्ट्र भें ही नहीं क्रायित सम्पूर्ण विश्व में भवंतर कविद्या क्रान्यकार सा गया था। महिष स्मित्र के 'सपदेश्योपदेश्वान वस्मिति: इतरथाऽन्य परस्परा' शहर चरिताथ हो उठे थे। अर्थात उप-देश्य उपदेशक परम्परा से ही काल स्र प्रभार हो सकता है। सनवे रपरेशकों के समाज में लोक से कल्बपरापरा प्रथमित हो उसी है। जिस से सावत समाज को चारि कह रूप धोर तरक के इसीन करने पडते हैं। इस सम्बी बजान राजी के

पदचान सहिप दवावन्द जी प्रहाराज ने वैदिक सत्य धर्म की प्रता प्रकाली की पुनः स्थापित विचा वैदिक भाजुके उदय होते ही भी बादे <sup>?</sup>राष्ट्र में श्रीकत दासने दियांची में भगदब सच गई। बाले किस्ताओं ही हारोबा तब रक मप्टरिंग की दिल्य अवस्थार को समग्रह हास हो ? हम सब निशास सन्तर शोगों की निद्रा सुक्षी, जासस्य दर के समान क वजे हुए से इस सारे मागा, बीर सभी केत्रों में कांति हो द्याद को देखते रहे और हरन में बर भारत में नई चेतना ग्रा गई। इस दिव्य वैदिक ज्ञान की आज कर भाव इसारा ब्रास्टर हो परव क्षीवन प्राप्त होने वाले उर्जालको ने कायना परस्पर मिल कर संगजन क्शाचा। शहरि ने इसका नाम व्यार्थ समाज रसा । वार्थ सन्दाव के बेटाओं ने क्याने काचार्य सहित

द्दमारा त्रचार दार्थ-

## शिथिल क्यों ?

से॰ ४० इन्द्रदेव वी 'भेषाबी' युरुकत सन्जर (रोहतक) NACASA KARAMA KA

स्वस्त्य को नहीं वातने किन्तु सम्बर्ध रबाबन्द के तेजस्ती गर्कों की देर के अब गड़ी सकत में एक चन्याय ल्यापना अपने इत्य में को थी। चतः क्लोंने दिस भी चेत्र से कारी महायक्षकान शाका को एक क्यारेंग किया स्टब्स्ट में सबसे वीपा काल काला काल्ये रह हासी धरात संदे । सभी एकार के बालान रुपी दिक्याला हाना किस प्रकार पर सम्पर्श राष्ट्र से सद्भा को इस अप्रकासका है, इस का बहत श्रमेजों के दंशों से प्राप्त को रोक्ट बर्णन किया है । कापने स्वश्य किया। भीर इमें इर प्रकार अवसीय देशक के करीस्त्रण गांवा के विकास का ग्रावसर प्राप्त रखा । ms equal हाइएग की बाकी की धार्व समाज का (बहु प्रचार कार्य व्यक्तिकासम्बद्धाः स्टब्स की ब्लोका कर देखा है। उस के हितोपदेशों की नतने हुवे भी कार्यक कारकों से इमारा सरव हुछ धूमित सा होने वहीं सबता । वह व्यवनी व्यवहरी शक्तियों द्वारा उस शक्तया की यौ समा । भीर ऋतज हम सभी भागने को २० वन देश चाहता है। रस पास पासन करते में जिल्लिक किन्द्र वडी बाग्री विष स्वश्न सर्वियो दा भवनव कर रहे हैं। के समान संग्रहर क्य भारता हर हमारे प्रानार भागते चापार्थ लेवी है। जिस से सारे राज्य में दवाभन्द स्था दन के परसाता होते विरोध की काम्त्र महत्र उठती है। वाले नेनाकों के सम्राज अरच तर धीर भाग में इस बेचारे उपाधी पटचते की बहसरता लगिरहा। ब्राह्मश की चनायास विजय हो जार्य वालाव में इस तोग कतर का है। इस प्रकरण में शाही को १ वज़प सरका करते २ घारक निरीक्ता है। केळवर्से बिलात क्या है। चौर इद्याद में स्वयं भी इद्यावत्या से सनत के बोधक ही बन गते है। सकत के बाठवें मन्त्र में अनुब की वो क्या इमें इस पास्त कार्य में बीज विशेषकों उसरे गई। सो वि सफलता न सिते ? राष्ट्र में कन्याय बार्व समात्र के प्रचार कार्य के ग्रनाचार बन्होत्तर बहाता हहै। क्ष्मण इसने के लिये हमारे सिर्द हमारी अन्य प्रमित्ते ही वेदिक विशेष भ्यान देते बारव है। मार्चात संस्था के मात्र जिल्हा १. हटय वल- नागी को

बोडी बेदना भो क चठे ? वस्तदः

इयार बाधा बन कर उपस्थित है ।

द्वाबी हम इस ब्राज्य की जीव नाडीका इन्तान्तरसामिर्दश्या। कर बेद का प्रस्त सामन कारनी तेभिक्रं इस विश्वति देवपीयन शयी को संस्कृत करें। इटक्से संगति र्देवसर्वः॥ स्टब्सन्य स्रोग शर्था है दिना सथर्व० ५-१० वाः

समीध दशाने के किये हत्य नह

सर्व प्रथम बलाहि। सन्त में इस्व

दल को अञ्चय खड़ा है। जिस

⇒रचे दिल से बोसका है ? बा

१-किहा स्वा भवति कुल्मल यास

रुप्त पड़डे कलशब से निष्टों हैं" त्व दन वाक्नों का महस्य वास्त वड काठा है। सन्तव्य के इरव में अत्याचरमा से यस संग्रहीत होता है। यो स्रोम सदा सत्य कोशते हैं टनकी बाक्षी में जन्द सा प्रधाव होता है। किरोबी क्रोग भी जनकी

(कसशः)

## बायो का विद्यास बाने हैं। रोग और उसकी चौषध

(प्रस्त ३ का होव) कही वस्तित न हो आये १ तक उत्तर न्या होगी। इस का अनुमान स्टब्स् के शहर्मा व से पूर्व सवो की क्योर र्राज्यात करने वाले सक्तर धार्म का सकते हैं। वेट का प्रवित्र एकार ही मानवता का झाथार है जानवता लिने वही समोब सहा दन संदल है। बाकी सभी साधार एकेंद्र 🕏 । ब्रमनचन के सभी दावे हार वर किस ब्रझात कोने में पुट कर स्मिट कर लोप होते जा शहे हैं। प्रकाश भीर तिशा निराशा की मोद की खोज का रहा सामद चढं छोर से समहात हो। स्टाइस तथा भय श्रीब हो रहा है।

शानव जीवन के पत्तों को सल चेत्र में बदलाने के लिये के पस **प**ष्ट प्रचार की मात्रा को प्रचुर मात्रा में ज्यस्य दरशामा भे वस्टर होगा । रत है. जिसे धारोब खारीलम के . स्त्रिये गम्बीरता से विचार करना ब्राब्ट्स्ट है। विदने विदार हम प्रक्रियास सामने साहार व्य**वहार** पर करते है यस से अधिक वहीं को शतम प्रकरन तो करना हो पाष्ट्रिये । बाको के पीक्षे हत्य बन्न होता है. इस के विदा कोई ठिकाना नहीं ह बद्द सक प्रभावोत्पातक हो। जाती भारत इच्छा है वसे शपुर मात्रा है। जब इस वह करते हैं कि 'वह वे बेटाक्ट रिकाने का श्रयत समी को । सक्ष कराकरना वाहिये । क्रीर इस दिशा में प्रत्येक साधन को जुटाने का सभी को पूर्व प्रवास करणा पादिवे ।

### व्यार्थ कमार सभा सत्संग----

### will be all the in त्रार्थ कमार सभा <sup>1</sup>

## यान वेदासूत-ब्रत पालक वर्ना

।( प्रो॰ किशोरी लाल नुष्त सम्ब ए० इत बाल वेदामृत से ) (गर्शक से बारो)

\*\*\*\*\*\*\* जी कर प्रार्थों में का है क्वोर्ट्स प्रम ब्रान् कर केते हैं कि बात देवछ बढ़ बार भोतन हरेंगे फल बावि के सिवाय अभ्य अन्त न शार्थे है। किल यह तो 'वत' की थ, वी, भी, सी. है. सब से ओटे वर्जे का बन है। प्रासकी 'पर्र' यह है-इरादा काशी कि काशा से सिवेट न पियंगे, मुद्र न बोलेंगे, व्हिमी की चीत्र न नराएंगे, किसी की गाली म देगे, सिमेमा नहीं जायेंगे. कसं-वानि में च पंतीते. श्रापने वहीं की सता हाथ बोड़ कर नमले धरेंगे, सबका आजीवाद लेंगे. यसकी क्षत्रहर्ष हुई शिक्षाओं वर पर्लेगे. बाता विक और गुरुवानी (क्रथ्या-पर्का) की बाह्म पासन करेंगे, किया व्याचाम असेते. सन्द्रशा करेंने स्थापनाय करेंगे. जिल्दा स्थान करेंगे. शीत भाषा रखेंगे, सापा वस्त्र शहनेंगे समय पर जोजन करेंगे, कियं अगरे भीर समानों से **क्यों**गे. बढ़ा महर्त में प्रात: ४ क्ले सह सर काम सेवन (सैंद) करने बानी से बाहर जाया करेंगे. पार्टि कार्य जिवनी अध्यक्षी कार्वे हैं वन के प्रेम करेंगे, और जितनी बरो भीर अनुषिद वार्ते हैं उनसे बचेंगे वे सव वास्त्रविक (शस्त्रही) 'वत' है। यदि इनशर कार्य कबार चन्न सकें तो वे सच्चे 'मधपाल' बात अवर्षेने ।

व्यारे प्रार्थ कुमारो ! अब हुक्डें सभेरे जल्दी च्युक्त पाठ बाद करना क्षीता है, हो, रात की माता जरे से बह बह बर सोवे हो 'बल्दी इस देमा' साला बड़ी करती है जो तस र्वेदस से पाइते हो । इस साता से व्यक्ती अभिन्द ध्वान हमारा 'विस्व-

पात्री म? रखती है। इसे चोड़ी से हेक्ट क फर (दाबी) तक की जिल है। संसारी यां केनक दो आंखें रकती है, 'ब्रिय मारे' के सहाय नेव (इवारों फांसें हैं) करना रेच हैं डीर (वे सो साधारमा लेख कडी. विस्त्र नेवाडी। उसी घट घट की स्वर है। हमारी सच्ची स्थम हो. शुभ इच्छाओं को, वह देशी मां सह तात जाती हैं। यदि तस अल्लेट कर पासन कर सकते की शक्ति उस दवावती, चपा गीला 'सां' से योगोगे, यह यही प्रसम्बद्ध से शबे अपने कर को पास सकते की पारिमक शांकर, मःनश्चिक वस व्यवस्थाने प्रशास करेगे । यह वेट मन्त्र इसी प्रकार की शार्थमा करने की विकास के सकत है।

इस बात के बारमा बद्दा वर्डिन है कि चीन मा काम जॉबन है क्रीर कीन सा धर्मावत । २६ ही कार धात एषित सम्मा ए। सम्बी है. ब्रौर चल को बर्जापत । देश काल भीर पात्र का जान शोना साम्यक क्स है। इसका दीक ब्रान दशे गर्वित की हो सकता है, को करेंब है। इसारी भारता ऋपना प्रकार. एबित बर्जुनित, राम पुरद, बुराई प्रकार्ट का झान रसी नेज. अध्यय क्रीर क्रान के अंबार 'क्रांटन देख' कुमार समा की वक्रमान उपस्थिति

III भना में 'सर्मन' गब्द का

त्रमोग बलाही उपकर्त उचा है।

(परम विका परमात्याः) से प्राप्त सन्मास्य ६० है। करती है। यहीं शांकत हम को अधत्य मार्गसे इटा वर सरक्षम : ही नहीं व्यक्ति व्यक्तिस व्यवद (सवाई के राज्ते) पर चलातो है। बायं समाव का गढ़ रहा है और क्क वर्क वसका प्रकाश हमें व वर्तमान समय में भी है, परन्तु होगा हम (सन्+का) अक्रम दःश के साथ सिश्रमा 🗯 रहा है सतों की तरफ मुख्दे रहेंगे :

(श्री श्वाम लाल वार्य दय,नन्द दाह्य महाविद्यालय हिसार)

कारण इच का विषय है कि

विसार नगर में २४ मई सब १९६४ को भाग बगत क सर्वागढ कार्य वर्षाकी राजेन्द्र जो जिल्लास स्व० REGIN SERIES DOIGNED OF शोसापर के द्वारा कार्य कमार समा की स्थापना हुई, ब्राप्ट व सार सभा दिन प्रविदिन क्लांति के पथ पर कल्बसर हो रही है। इस सभा को अधी-शांति वकाने में कार्य क्यत के बदीयमान देव-वेसा भी Co सरवर्षिक और आस्त्री प्राप्तापन व्यासन्द शक्ष **सहा**पिदालय नवा मोजस्वी वस्ता थी ५० रामविनार **बी एम**ः रः उत्तरपाय दशस्यः बाब्र महाविकासय संस्थानकोत है।

इस इ साथ ही साथ आये समाज्ञ श्री भाषी श्राप्ता त्री के थर जक्राम सिंह वी त्यायी कार्य कमार समामें जावर करते स्रोजसी भाषना से कार्य कमारों के हराती में देर ६४ इशर्य समाज दे बहेदवों के संज कुंककर हिसार नगर में प्रशासनीय कार्य कर रहे

भी र जेन्द्र मो**इ**न जी बी० एस० सी॰ तमा सन्तरेष भी काय होतें बडानभाव कसार समा से सहात कार्य रहे हैं इस होजों सरवनों से कारत ही नहीं कांपर पर्य विश्वास है कि स्विध्या में आई बरात का यय अहर्रान करेंगे । इन्हीं सब बदान विमृतियों के प्रकारकप

बन्धको यह ठीक है कि हिसार **ंबाय अध्यो पंछाय अही रहा है**  वास्तवप्रे पंजाबने का बाजपनगरकर्त वया बहारवार इंसराज जैसे महान रखों को अन्य हिया या तब पंजाब हं अवेक बरुचे का हुन्य वेदिक भावताओं से फोत-बोत वा।

लेक्टि सात Sanday नमा-जियों ने कायंसमात का अरा विदा दिवा दे तो देवल Sunday sit माश्र समाब धरे उपस्थित बढा देते हैं कौर Sunday समाजी वतकर बास्तविक ब्यार्थसम्बद्धी बनतेर ब्रह्माचनथा समोप आग तकी उन्होंत शिर के बाला मां सफेर हो गर्छ। परन्त आर्थ समाज की साबी भारापं अपने बच्चों के प्रति कोई प्यास नहीं देने हैं बात: सै दलसे प्रायंत्रः क्यं गा कि वे सापना वर्णस्य सम्मते हर्व सपते क्यां धावते निकट काय क्ष्मार सभा में प्राथम मेर वे फिर किया को ।

भारतवय के अत्येश पांत के प्राचेक जिले के आर्थ समाज के प्रशास क्षा परस कर्तव्य है कि समाज सत्यंग के साथ हो साथ कार्च कार मधा भी दवास्त कार्य कमारों को यथोजित शिक्षा देकर उन्हें काम से हटाकर वेत-परिषय बनाने का सफल प्रसास को क्यों धार्यसमात्र व राह क्या है होटे २ क्यों की बेदिक माय-ज्ञांने ही राष्ट्र कार्यसमाज э.

व्यतः में द्विसार नगर निवासियों विशेषका से यह देना चाहना है कि बदि छ।प डिसार नगर में येद ब्रीम मार्थि प्रवासन्द के सिद्धांती को न'जानः चाहते हो तो अपने क्टबों को अवस्त्रमेव कमार सता में हो किया करें।

श्रीयो	सीअसम	

असन गुरु भीशंकराचार्व के अस रक्षके प्रयोजनसे वो जैनी वनके शिव्य बने चीर वेसेशी भारतको सभय करने के जिले चार पर अर्थ है वहाँ का यह हिन्दी चीनी बाई आई के नारे स्थायाचे तो ठीक इस प्रधार शिकारी क्यतरों क्रीर चिदियों के मारने के हेत प्रथम दाने ससते हैं भीर बरचात सन को पढ़तरें हैं।

क्राचीं। जिल भी किसी को कार्य समाज का सहस्य कराई प्रवस वह देखना चाहिये कि एक का थार्थ समाज के श्रीत कितना श्रेश है और एसओ माचना किस क्रमा की है कीर कार्य समाज के खरसंगी में किवनी वपस्थिति है। क्या वस पर इस्ट प्रसाप प्रशा है का नहीं। परिधाप विना परीचा

के किसी व्यक्ति को सदस्य बनामोने तो श्रीक सभी प्रकार को आप की कार होती जिल्ला कार से र की दशा क्षेत्र की :

लुधिवाने या व्याहरा के सामने हैं. यांच लिया है कार्यसमात्र के व्यक्तिकारी सच्चे बाट होती :

शहरी वद कर आगी।

श्राप से तमियाने के व्यक्तियों के असे हर साथ शाम की पार्विक िक्ट समस्त कारवं समाजी की शोज करो कि कोई इस बकार का न्यक्ति तो नहीं है जी कार्य समात की बहनाम कर रहा हो ।

सीकरान भाष बार्चे वस्त्र अञ्चार द्विसार

तद् की दिनाह २०-६-१४ की वह र्जावशनिक समा वंजाब क्या केन्द्रीय सरकार से प्रार्थना बरती है कि

र्वजाय के क्षत्रहर काल के बढ़ते संबद तथा दय भीर भी के उत्तरीया ¥दते हवे धानाव के सम्प्रकारम देते बाई वी काई पत सन का रिकाम क्या गांच से क्या गरा बंद होश चाहिये। विश्व के सिमे सारा

वंकाय हुन्हें हैं.1.

बह्र सभा भारत सरकार चीर विशेष कर पंजाब सरकार से विक्रम पर्वेच आयेगा चरती है वि पनबारद में नी स्वाते की स्वरूपक क्ष्में सामन्य की डोनी माहिने। तौ रक्षने के प्रक्रिय को पेशन सरकार सीप्रतथा वाचित्र होकर

मजारबा क्या उपरेक्षक पकार रहे जिल्ला मारत की वर्षण समिव

होतेतो पार्य नामको देननारो नडव अध्यति के शिवड है। सीमास बर है यन के सामने इस श्रदार से शारीरिक व्यात्मक, सामाजिक क्याने को किसी की डिक्सर नहीं : कीर ब्राविंट रनति की जन्म शर्स होने के कारबा किया जाकों वर्षी

हे बार्चों । राष्ट्र के सबसे सत्त्र के इतिहास महान्यस्मानों, काचार्चों, शासको, बादशाको, मुख्यो सीर तीर वैकावते की शंह के क्या प्रत्य

nat प्रवित्र सानी **वह है। क्रयः** ब्यवा इस प्रविषय को इटावर शक्ति और सफाई के तबित पशिक्य द्वारा शाब भानी के सभी भरों दे शीशको की मुक्किया रेकर इध बदाने के जनाह को बगाया ताथे। वाकी ही परासाओं की व्यवस्था

सी विशास होनी चादिने ।

न्नाग्रराम प्रोहित समाब

सलोगहा (ध.ए.) १ विक्निको वह ठाका त्यान भवनोपदेशक हों हारा वैदिक अर्थ

स्र प्रदार इक्स निकट के गार्कों से भी अनता धर्म चर्चा सतने के किए काली गरी । अञ्चलविकों पर धानमा अभी चार मसाह श्चार्य समाज सेक्टर =

# चगदीगढ

इसे य सम्बद्ध तक आपता एक. ए. एस. एक. ए. के तक्षेत्रे राष्ट्रिक क्रमूच बड़ी मुख्यान सेमना दस २ दमयों की साम्रा विदे का तात है 1-11-12 को स्त्री समाव उपमान क्रीड मधान क्रीक का करवा होता। १-११-६५ से समाय के बरूसे पर पश्चिमाई गई। भी क्षीमप्रकास जी महोपर्श्तक कार्ड प्रादेशिक प्रतिनिधि समा क बनोहर क्या क्षेत्री तथा साथ र साम वेद शराब्य वह होगा। ६-११-६४ को जनर चौर्यन होगा। इस ब्रावसर पर झमेब संभासी

बाह्यसम् प्रसेक्षित बार्य समाज पुलवंगश देहली का सामाना जनमा १३-१४-१३ नवर बर को संस्थान हो नहा है।

ता दास है दे स्वेशाच वी शाजकारी ने १६ संस्थार बराय तथ किरंतील साक्ष**ेश** के दासीत बाक्ट क्य बीच आहे, प्रयाग न दर्गने की शरीक्षा कराते और उनके क्क बोस्टर इंक्सेंड बावर मांटरे

à fac fec : मुक्ते व्यार येथे सवा कर्म काउने धरे चेमाउपर

में वेद श्रवार बार्व समाव में भी वासक्य श्री शर्मा है रामक्त के क्या की के सक्य २ आशों में रामाच्छ द्वारा त्यार होता सहा क्रिस का जनता पर क्रम्ब्या सम्बंद प्रसाद में

श्राय समाज कंटाचार की ृंधोर से

सभा अधान प्रिसिपस राजाराज जो एम० ए० के गते में रुपयों की माला शाली गई कार्य समाय संदाधार (शिमाता) के प्रवास था. जयतास्त्री स्ट्रमोदेश में सभा के देव प्रकार के किए करो।

र्मात विभिन्न प्रत्यत रक्षराम जी

## नेहरू । तथन

(भी वेदपदास जी एम.ए. संस्ती षर गया निर्धन हमें, बेहर निषय. कह रहा है विदर साथा शोक घन. वह तबस तकान था.जब चल दिया. क्य यदा प्रथमा प्रस्ते , संशोध वन ।

### श्रार्थसमाज साबा(जमा) १. ने अपनी वैठक्में पं॰ चन्द्र

मेन जी क्योराध की प्रथ माक्षक जिल्ला के मध्यक्षण में जोड़ काला यमित क्या ।

२.स्वामी परशास्त्रा नंत्र बी ने = से ६ तवन्त्रर तक प्रपार किया वेद हुनि जी १ से ६ कावस्वर टर बार्व समाज स्रोक के जेब कमा करेंगे सभी धम शेमो डाव

तक्रव चेर प्रकार साथ पहाचे । be once out my obje

ster 1.65 N.pets are afric बढ़ोदा-१ से संगवाएं।

कार्यक्रमात्र ।

ब्रद्रक व प्रकारक थी क्लोपराज थी कार्य प्रदेशिकार्यानीय समा वेशव जाक्रकर इत्ता बीर विस्ताप में स, विसाप रोक. वार्लप्यर से प्रीव्य क्ष काम बता करवावन महात्मा १ कराज बरम निकट कपहरो बावनभर शहर से प्रकृतिक मास्त्रिम—काथे आहेरिक बर्किर्माय समा वैवास बावनक



रैसीफोन वर्व ३०४४ [भार्यप्रदेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Ragd. No. P. 1 9-10- 64, erfes mez 6 eqt क्स प्रति का सत्य १३ नवे वैसे

वर्षे २४ अंक ४० ो

२६ आश्विन २०२१ रविवार...वयानन्दास्य १४० - ११ अस्तुवर १९६४

(तार 'प्रादेशिक' जानस्पर

### वंद सक्तयः श्रासुबोर्ज मिषं च नः

धरमदेव । हमें धार कर्त बल शिक्ति तथा इपम-कम्ब श्रादि धनपदार्थं साराव-प्रदान कीविष । इस भागके भक्त सदा वशवान बर्ने तथा धन शते 🎟 बर बीचन बाझा में सदा सफ-

भता प्राप्त दर सर्वे । श्वारे वाघस्व दच्छनाम्

जो लोग बरे हैं, इस के समान सन्दो जीभ वाले हैं, हर काम में लोज की मात्रा जिनकी वड़ी हुई है ऐसे सोगों की हम से परे कर दो । भगवन ! पेंसे कोश हमें सदा न सकें । वास स कार्वे ।

### श्रहशन्तस्य केतवः

है वे उस परनेश्वर की महिमा की अधिकां सदा देखते हैं। इस क्षो सर्वत्र प्रसेशका के दर्शन होते हैं। सब्चे बार्सनक एवं श्मभका हैं। क्से क्मी नहीं मुख्ये ।

### को स्रोग भ्रानी है, एरदर्शी

# वे दामृत

## चौ३म स भर्वः खः। अग्न श्वायं वि पवम श्वासवीर्जियवं च न:। यारे वाषस्य दच्छन! स्वाहा॥ इदमम्नेषे

पवमानाय इदन्त मम ।। % क्षणक ९ सक्त ६६ मी. १९०

क्ये-दे (सू:) शर्वों से धारे (स्व:) दुःमों हे वाशक (स्व:) सुलक्ष परमेश्वर ! (क्षमे) हे प्रकाशमय देव ! काप छपा करते हुए (भार्यु प) जीवन कालु हो (२४॥) शुद्ध पवित्र कर दो इमें होपाँचु बनाफो । स्रीर हमें (सासन) प्रदास करें (इ.ई.) बस सकित तथा (इस्सर) ध्यन क्यारि क्शम परार्थों को (तः) हमारे लिए देवें। तथा (कारे) इर (बाधस्त) धर देवें (दुष्युवाय) दुष्टी कुनों के स्वयन्त्र वाले राष्ट्रओं की---(स्वाहा) यह मेरा बचन साथ होते । (इत्रम) वह ब्याहर्ति सम्बद्धे। स्रांपनदेश के जिल हो। (परमाश्रय) परित्र क(ते। बांडों के लिए (इन्सून सस) यह मेरा नहीं है बाप का ही है-

भाव :- है फिल्प्ट्रेव ! अकाश हाता उसी ! काप सारे, विक्रव के स्माधार हो, सब दुःओं को दूर कर कल्लो कशदाता हो। इस्प करा कि हम सम्बी माय पासे वर्ने। मीत इसें अपने धंने में अपनी न अक्ष सह । इसारा श्रीवन सब शकार से प्रांवत बन ताये । ब्याप की ज्ञान से प्रोते उत्तम बना व्यौर धनार्ट मिक्से रहें को दह है, जिन का स्थमन क्लों जैसा है, देसे काटने वाते कर चोल में फिरने वाते, हानि पह वाले शक्ते राक्सों को इस से दर मना देवें। प्रमो ! यह धाप की दो वस् ब्राय के ब्राईश है। मेरा दो इस में बहा भी नहीं है-सं.

# ऋषि दर्शन

यस्मिन देशे विद्वांमः जिस देश में, जिस राख में शानव के फाम में विद्राप. पर्मी क्या न्याच के सारे लोग होते हैं। राज्य के साथ की भवी-भांति समभते हैं । ज्ञान के प्रकाश में जिल्हा मार्ग प्रशास होता है। स्थानो स्वीर

### करनी समान है। ब्ह्रानुष्ठानेन व

चीर जहां पर, जिस राष्ट्र में यहां का शभ कभों का परोपदार क्य शुम ऋथीं आ प्रतरदान बरने बाले सरवन होते हैं। जहां पर परीपकार बा काम काने काले उनम प्रकृति के स्रोध हैं जहां जिल्हार्थी कोग हैं।

### तत्रैव प्रजाः सुर्ख्य यः उस देश में, इस राज्य मे

मार्थ तथा, सारे सोग अन्यन सभी होते हैं। यह स्थानातिक हो है। जहां पर उदम साजन होने हैं, वहां पर जनशाका -हर बदार का जीवनमें सब होता ' है। इर विभाग में लग क'न। होता है।

बाप्य भूमि का से **\*** 

इस यग में नेद् का काल्यक्रिक इसका भी परोक्तर से सर्व से मन्त्रार्थ में सहायक सम्बन्ध होता है। इस में इसना स्मादय प्रपतितन करने का स**र्वेदय**स च्ह्रजा है कि ब्रगत ब्रह्मारे यहाँ (से०-भो पं. सत्यश्रिय जा जास्त्रो सिद्धान्त श्रिरोमिंस) सन्त्रोक्षारवा में बन्दगास्त्र वी -बाध्याएक:-दवानन्द बाह्य महाविद्यालय हिसार-₹िसे शिक्षका ध्वाल दिया जाता HORSENDERSKERRIKTERERERERERERER शाहिते था. बतना नहीं हिंदा गरा है देवता । प्राथमांत्रप्रमधिका में देवता है सब के मधायतान वया बकाद्मार भी नहीं दिया तारहा जिला है 'बावेजा (मन्त्रेयो) चयने वर्दुशार बाधरण से दिए है। जम अर्थ इलो€ जिल में कि संधाद होता है, शिव संदश्य बाखिनो, इ.तबिखम्बद, शिखरिखी, सा देवता ॥ अर्थान वन्त्र में जिस में ही यन डोक होता है। शार शिवकीकित आदि सन्दो भेद दिश्यका बर्लन हो. वह उस का इसी बशार सम्बेद के एक मुक्त का हाते से बनके माने के प्रकार में देवता चडाता है। मध्य के शर्त ऋषि ''सिक्' है और देवता घनास सर्वया भेद होता है को फिर पाराविषय Subject Matter का विभिन्न इन्दी वाले बन्द रह सब বাৰ জলগা<sup>৯</sup> অফালু মিল-যাৰছ इसरा नाम देवता है। सन्तार्थ में ही बदायें रूप से धनक्षवान की से हो स्थी नाथे जाये। क्या दम की उपेसा किसमी प्रातिका त्शंसा वर सक्ता है इत्यादि सर्वेत्र कलोधेर से प्रतके गाने में शन्तर होगी, यह शायस सिट है। रस से त होना चाहिये। सात्र इस कोर समभ तेवा। साम वह स्पष्ट करना क्राव्डव हुई। ने साथ शीवेड सन्तों पर सन्त किलेप ध्यान विका जाना भाषिये। कि मन्त्रों के ऋषि एवं देवताओं का पाशा है देश का डिंडोस पंडचे होतः है। खुप्रशास्त्र के ब्यमुभार परम्पर बड़ा धनिष्ट साम'तम्ब है। काले आर्थ विशास, मीम्याचे तथा बिस दान में जिलने इस्तर, इस सभ वं इस छोर विशेष ध्यान स्पोकि वैसा काचरता कर के दीर्घाद कम से होते हैं, बह उसका वेगो । चतुर्वे शीर्षक स्थर का नः(नुरूपधंज्ञा वाला ऋषि होता है जन्द होता है। यथा गायत्री, होता है। के में तो शकत वधा शिवसकत्य ऋषि वया सन त्रिन्द्यु, अगशे उच्छिक् काहि। के स्वर होते हैं। एक तो उदाशा-नदानस्थित भेद से व्याक्रस्या खे <u>፞ዾ፠ፙፙፙኯፙኯፙፙፙፙፙፙፙፙፙፙ፠፠ኯዺ</u>ጙ सम्बन्धित वर्ष दक्षे वाले के कास वेट मन्त्र में शहरत बढ़ता, ख़ारस, गान्या-शांत भेट से सात से डोनों अध्यो चोरम येन वीत्रका प्रविधी व रहा वेत स्व: स्वधित येन मानः। में सहायक है। देखिये यजर्वेद में aो झालाविके राजायो विकास: बस्ती देवाय हविशा विवेस ।।४।। man é samananan a' amar शहर के दो कार्थ मतीया तथा यञ् का ३२। व्यं ६ है। शपू होते हैं, जहां स्थन प्रत्यथ हो 3\_तदिसम्बन वृत्तम---बहाँ स्वरित होने से अतीया अर्थ षतसनीय पशर्य सरीप्टबान. होशो । परन्त इसे वैयाकस्या आन कमसिनी-इस-कल्सभ से स्था। संदेशा. यह मीधा प्राथ से सहक थित है। इसके अभी विना कार्य परंभ टीच्या-स्वमाध मंत्रकत जो करन वाला तो 'सवाग्वका वक-स्वति पारख की रच के तथा ।। मानं हिनस्ति यथेन्द्रशतः स्वरकोत्रा-हल-हवेभव भी रुचि मोस हो. राधान' के कामसार वेद का दिसक सत्त भारम है तुमने फिटा। है। इसने स्वर भी आर्थ के प्रति-विसल धन्त्रर में सव खोच को. चावक हैं। उनमें उत्तरीत्तर स्वर की कठोरका होती है। स्वर कठी-सुदद-बन्धन में श्व है किया। रता पर्व को सलता सार्वो की श्रक्ति-विश्वम सम्बद में उडते दथा. व्यक्ति में सहायक है। असे कोई सबस क्रेफ तथा १५६ शहर से । राजनोति, विषय पर बोलवा है लो अवयशीत दिया रच के उसे. वह शांतरस में नहीं होता, वेसे ही सब नियालिया है जिल्ला आहित हो ॥ शास:कान के सरसंग में काप्याहन प्रकथन करने बाला भी वीर.रस सदय मानद के ६भरीय है। वा रीशम में वहीं बोलेगा । इसी द्वम प्रमो ! सुलदायक हो सदा : द्धि से स्वर मन्त्रोक्त विषय वर परम श्रक्ष ! पिता ! वह प्राप्ति की प्रकाश दालते हैं । इस अकार

इन विशेष सर्वादन करें सहा।

क्लेवा--विद्यासागर शर्मा दवान-द मठ, दीनानगर 🦉

प्रत्येष्ट वेद सन्त्रों के पारी शोर्षक

व्यर्थन होकर इसके असे दी

ग्रामिक्वप्रित में परन सहाबद

स्रोब सद्दान महर्षि दवासन्द को को है। उनसे पूर्व वेद सन्त्र केवल मात्र वर्में शंड पर्णन पर्क सात्र ही समके बाते थे। ऋषिवर द्यातन्द में ही प्रयत्ने प्रासंदिक्त भाष्य दारा बैश के विकिताओं को प्रक्रिया का साप्रपात किया । बेद सब सत्य विद्याकों का पुस्तक के सिद्धान्त की क्रोर धर्मे थिय जनता का ध्वनि स्वाक्षप्र किया । क्ष्मोंने अंग्रेरे शंब स्थाध्या पर्व विशेषन तथा साह्यस प्रश्यों के मीलिक श्राध्ययन के काधार पर देवार्थं िया । उन्होंने द्यान्त्रों के ऋषि, देवता, खण्ड एवं श्वरों को उपेता नहीं की, व्यवने भाष्य में उन्हें स्थान दिया । क्रमेग्राम यहा के क्रम बेट विद्रासाम क्रानों के अभि, देवना, सन्द स्वं श्वरों को बादास के ज़िल्के बढ़कर तुश्ल, एवं धनुस्योगी वताते हैं। इसी विषय में सब विचार किया बाता है। अधि शब्द के निर्धायन वि बरते हर किया है 'साशास्त्रका-मांगा ऋषियो वक्षतः' ऋषि दर्श-बान' स्तोभान उत्तरी दश्यीयसम्बनः' इद्यर्थन मन्त्रों के क्यों की क्यार्थतः का चानरस्य द्वारा शरपच करने शाने होने से श्रांप यहाते हैं। क्रकेस केट सन्द्र बा हो। ऋषि व्यक्तित है बद्ध तस का तहा है म कि निर्माल । क्योंकि निर्मात हो तो कई मन्त्रों के रू तृषा २६ ऋषि हैं, तो क्या इतने प्रापि सिल कर पठ हो सन्त रचनासे समर्थ है। सह जय कि इसरी कोर पक सुरत का एक ही ऋषि है। इयबाही नहीं पह सुक्त के तो 'रातवेजनसा' ऋषि है। सार्थात् सो दलानता है। ये श्रूषि भी अ बोबिक है. सदि नहीं है। अब व अध कं प्रत्यचदर्शी होने से उस २

सीला के क्राविकारी हुवे, बात: व्हरि

भी मन्त्र के अर्थज्ञात में सहादक

सस्पादकीय---

# ग्रार्य जगत

वर्ष २४] रविवार २०२१, ११ अक्तूबर १९६४ अंक ४०

# राष्ट्रपिता के तीन सन्देश

मारे भारत की अपना ने रार्श्वास सक्रारमा गाम्बी की वश्मववन्ती स्माही। समारोह सम्पन्न ऋष क्षेत्रों से बावने व स्थाने वर बाल से अपे विकारों का बचार किया। राज्यात देवली पर तो विशेष भारक प्रदेश भी । शर्थनार तथा मीदों की वर्ने भी दक्त है वहें। सरकार क्रीह अनता दोनों ने निस कर बाबू के बांच ब्रास्था से पूर्व सद्धाविश्यो प्रसुट की , सारे देश में उस दिन ऋषकारा रहा । महारमा सालको सब के थे। शष्ट के लेता. क्रमंत्रार पर्व नायक थे । क्रिस बाव को बढते थे उसे सब से पूर्व श्रव **ब**ाते हें । अश्ताको जिस पथ पर व्यक्ताका वरहते थे उस पर स्व सं क्ट्रके स्थय बजते थे । जिस वासदान के झार्य पर सारे राष्ट्र की ले. जाना कारते हे तम प्रान्तिकरह में सब्वयम **19** प्रोचे काय की दाल दिया करते । **४३ की दम**ती दरती भी खौर दरश अध्यत्नी वती द्वां भी । यहं नातों में समापेत होते हुए भी वनके स्थाय, बक्तिकाल एवं लिएडा के सामने सब के क्षांत्रक अवदा किया । प्रांतवर्षे दव की जबली कारे देश में चेलना वर देवी है।

बद्धारका गाम्भी का जीवन चमस्ता तथा व्योधिःस्तम्म है। द्याते ह प्रकार की विशेषतार्थ जीवन में कोतबोठ हैं। जब २ उन की अध्यक्ती धाली है तो उत्तेष भारत नासी क्योर विदेशियों के सामने दन के बीन विशेष गया हो ≡ाईी

मत दो अस्ट कर शुक्रवार को जाते हैं। दहो सब के सिय जीवन ⇔देश का साम सम अले है। राष्ट्रीय व साल्यों जी के साने वीवन दाल में आज : पर वे की में बार्जे मिशाईं है है वद्द संस्थानिष्ठ थे, सरक्षता सादगी दे साचान पत्रते से ब्राप्टि सेका है लगी थे। इनको जैसे भी कहा जा मबसा है कि स्वयंत्रिका, सरक्षा पर्व सेशा उनके ओवन के विशेशन भाइ थे। सत्य दो ऋथों में ऋiता है। यह तो लाइ के बार्य में बाला है। मर्द्ध हाजबनन्तं ऋहः। सन्वान के नामा में स्टब की गणना भी की जाती है। इसरा सत्य श्रीवन का साक्ष्य हुन् है जिसे भारत कर हेरे चा लारे बाद दिल हो जाते है। जलान्द्राओं के श्रीवन हैं सार ∉ ता है। श्रुभ्य ब्रक्त की शह या रूप और के लिए थे संस्ट स्वर वाय का भी क्या भी अतनी डार्नि ब्या था। उसका प्रतिकिन उस नहीं पर पा सबवा, जिनकी डार्सि शक्षात से भारत्य होता हथ वह बड़ापार कर के रख देवा है। थल बी प्रयम क साथ ही इ.स वर्तकः कश्च संबद्ध भ्रष्टाचार of Truth is God and वारात्र वका सबस्य होता है। God is Truth - 1874 SS वह सन्दर ही भन्दर शरपाठ सका भौत कर सत्य है। परश्रास्त्रा व कर देश को विगाल देश है। बांट परम्थल है। राजनीतिक नेता शोक्त मां के पराव क्यांकिक हो। प्रभागवा के कटन विकासी है। सत्य के जारे हे । इक्साव उनको मारी प्रशा थी। उनके जीवत में स्वयं जिल्हा

बनकी मध्य की घटनाय कांग्रे

सेवा का का कानते शीवन में

### नैतिकता के तीन उपाय

(थी प्रिसिपल रत्नाराम जी एम, ए, सभा प्रचान)

कार्य प्राहेशिक स्था पंजाब शक्षकर के मान्य वयोमर्ति, सरस्रवा

क्षेत्रस्थीत प्रतिका विकास रक्षा ास शीपस. एस. यस. यस. यस. काव समाज देशपाट (शिक्रमा) के बार्विक स्वारोधान पर ब्राज के नैतिस्पारत के प्रवाह को जोक्ये का भाषपुर्छ भाषम् देते हुए स्ट्रः--sorn as fasacordi Alies नवन सब के सामने है इस ने बन परिषत को सब क्रोर से खो-संस्था करना शक्त किया हक्या है। किसी भी द्वेत में देखा जार स्त्री पर पान का प्रकाश विकास है वेता है। सब इसे रोकन का प्रवास करने से लगे हर है : जब तक यह रहता नहीं दब तक्षत्र व्यक्तिकासला हो सकता है और जा शी विक्रम से राजि स्थापक की जर सकती है। मैतिसम्बद्ध एक अस्पद्ध रोग है िस से भाग समाज बीमार रूस्ता

समय वर इसे रोका न गया हो काते um uz afrette aet aviez et पारक करके देशमेवा. समाज सेवा, प्राश्चिमात्र की सेवा में झपने को कर्नित कर दिया। प्रश्नेक प्रम वीन सन्देशों को बाँद उनवे क्षोज देतां हैं। सहकी के प्रतंत कन्त्रायी कवने जीवन में पारण सारा जीवन बदल जाता है । इसी ये । धनका क्षात्रपान सादा, बेरामचा कर सेवे--मध्य-सरसता कीर सेव जिय वर्ष भी सही चारक्रकार है : तो भावती की पराकारता तथ । को भावती मध्य लेवें तो राष्ट्र कहा वह साथन सारे छप।यां से सक्से

पर्वेची हो । हार्काहरण सहा । से दर्श पर च वाप । -विकोधनन्द्र सिए वहा अस्ती है।

आहा है। इस किए इस का रोबार प्रत्येक भाई बहिन का कर्तेव्य है। इसे रोकने के ज़िए विशेष रूप से तीन प्रकार के साधन प्रयोग में ळाबे बाते हैं: श्रयण ऐसा भी कहा ता सकता है कि तीन रुपार्थी के जैतकता के वर्तमान समय के क्षत्र को शेक्ष का सदशा है।

१, राजक्ष्य २, समाज दण्ड ३. घासिक जीवन या वर्मभावना किथी धहार की बराई को रोकने के लिए राजवस्य भी या विभाग भी वह कालशह साधन होता है। दिन्तु राजदरह से सारी नुराईयां जरी रोधी का सकती हैं विधान का कावना महत्वपणे स्थान है, इस का भी अन्या प्रभाव होता है। किन्त विधान से शहर की दगई नीचे इव डावी हैं, श्रन्दर चली असे है। रोग के राम का माश वहीं होता। इस बकार समाजवयव से भी काफी कार्य होता है। खबात की दृष्टि से निश हमा व्यक्ति हो भ्रमने बराईयों हा बालुमक करने खगता है । व्यवि समाज वरह प्रवश है तो वरे लोग गुज्य हर से काई का सकते है । समाज वरद बितना-क्षितना शसाब पूर्व होवा जाता है, बुराई को ওটনাজগৰা গঋষ মিয়াৰা কৰ होने सराता है ! बिम्त तीसरा उपाय धर्ममंद्र साथना का ऐसा है, जिल से दुराई मूल सहित इसद जाती है। धममाम मनुष्य के सन के विचार बदत देता है । कन्दर से बीवन से पारवर्तन कर देता है । सन के कड़ता जाने से खड़े ही

प्रमायपूर्ण है। बर्मे प्रचार इसी

स्यात सन १६१६ की बात है । कि—मी fqहडीचेद जिला कटक (बतमान किशा व-बस्तपुर पाविama) के जलव पर गया था। शास्त्रज के उनने दिन हो साथी कंत्रज्ञतों की साथ लेकर शतःकास श्री एक पौराखिक **पांचलतम्म**न्म क्ष्मबन्दान में आवे और वहने शरी कि ब्यान मध्यान्होत्तर वा कत सक हो शास्त्रायं करने व जिये समय दे ती किसे में शन्कार्थ कर्णता । कार्य समाज की कोर में पता गवा 6ि ज्याय किस नियम पर शासार्थ करना चाडते हैं ? वी प्रस्तिते दशा कि शास्त्रयों का विषव सै पहले नहीं बताडांगा, तय शास्त्र वें करने को सड़ा हा जाड़ गर | तैने यह खोटे मुंह बड़ी बाट कर हती बाप को शक्षाओं के विषय का पक्ष संगेला। कार्यसमात्र की श्रीर से बार २ कहा गया हि विषय प्रमी पता दातिये शासस्य चाहे कात दोपहर वाद करना ख श्रामी बताइये। पर नद्र नियम स्वाले को तेवार स हुन्छा । स्पीर भी कहा नवा कि—शासार्थका यही वर्ष है कि—शासाध के नियम बोनों और से पक्षे निश्चय हो फिर दोनी 💷 के निदान तैयानी समय पर शासायं हिवा करते हैं। बढ़ किसी निवस की नहीं मानते भे अपनी बात पर कड़े 🊃 के, प्रश्ने इस मनुद्धित **बठ** को देल कर इमारी कोर से सन्धायह बहु दिवा गवा वि पुरा विषय नहीं बतायेंगे थी मास्त्राचीं था समय ग्रापको नहीं विया जावगा । यह शीवों उठका अपने असे तो सफ हो ऐसा लगा कि हमारा शिकार हमारे बस में काया तथा भी वश से निवन ज्ञाता है उस समय मुक्त में जोश बरत या होश उतना नहीं का, मैंने कापने सोगों की अभित बात की बाटबर सह दिया कि शालायें का समय इवकी बावस्य है दिवा जाए.

विशेष सेम्ब-

## मतक श्राद्ध और मेरा सब से पहला शास्त्रार्थ

\*\*\*\*\*\*\* विषय बतारंशाहेन क्टाए बिन विषयों तहाइस औ। हास्की दनका नाम परशास्त्राथ होते हैं छन्दी में से सेई या। क्योंने क्सरेंट अध्याय १६ के हो प्रश्न बोरो---

विषय होता. उससे इथक कोई विषय वे बढ़ा से हे सार्थी ? चयरताः विकाः मोत्रकामी विकासेय गानार्थं की नैकारी न की बावेसी निधिय (धरेष ।

थे भी शासार्व कर किया त कायमन्त्र त इह एतन्त्र झाथ-**ह धन तेऽश्मसमान्** । accent (

मेरी यह तोस मरी बात मेरे ! वजुः १६ । ३० प्रमर्थ १८-१:४४ सामो अस्तव में आद हर विद्वारत ! आयन्तु त: वितर: संस्थासोऽ धन-

को ब्राव्ही नहीं शयों और बनको ' ध्वाताः वधिभिद्रवस्तीः ।। यह क्षेत्र ही अलुधा हुआ कि— अस्मिन्यहे स्वयंत्र सद् शेर्डवम् व न्तनेऽवन्दवस्थाद् ॥ यस० १६ ३५

दी है। मेरी बाद पर क्रज कड़ परितत ती ने इन मन्धों में होते हर मेरे साथी सक से को अपदेशकों ने कहा कि काद में सुव विकरों के बुक्ताने कीर उनके इतना लोग है जे ब्याप ही शास्त्रायं ब्याने तया उनके श्राद्ध का चोष्टन

कर हैना ! मैंने मुस्कराते हुए चीर : लावर मृत्य होने आहि का वरान क्स पर विश्वत तो स्थान ही श्रीर अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्य अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्य अञ्चलक्षम अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्षम अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्षम अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्षम अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्ष्म अञ्म अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्षम अञ्चलक्षम अञ्चलक्षम अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्षम अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्ष्म अञ्चलक्षम अञ्चलक्षम अञ्चलक्षम अञ्चलक्षम अञ्चलक्षम अञ्चलक्षम अञ्चलक्षम अञ्चलक्षम अञ्चल श्चाचार्व असर सिंड जी झार्व प्रयित माथेसमाज की । इत्य

विमृति है। विवर्भियों के साथ शास्त्राये में बमाल बर देते हैं। वर्क शक्ति। धीर प्रमाख के तो भश्कार हैं । कार्यवरात के महान विद्वानी में धापणी गरुस होती है। सिद्धांतवाद के मानवीय महारबी हैं। आपका यह विशेष लेख कार्य जगत के शेमी

पाइकी के जिए सन्दर प्रमाद है -संव 

**इ**.चने साथी याननीय विदानों कशना। क्रीर कहा इन सन्तों में का सम्मान चरते हुद नज़क्षा से , करे हद पित्रों के शाह का सरह कह दिवा कि सन्धान में कर विभान है पर चार्च समामी

लोग सुरु शद को नहीं प्राप्ते और उसका करहर दूसरे समय वह क्षेत्रों विरहत बात्य क्षत्व हे परक्षत में कारा शास्त्राच महारबी ठा० जनर-

से बहुत कपि र भीड़ हो गई ; तोनी सित जो आर्वपविक हापूड् पीर्श्वसङ परिस्तों को एक मेज सेट होन इसियां जो उनके बिय दरते हैं इस लिये काय समाबी

रसी गर्द की उथको है भी गर्द । , फ स्वस्ट हो वेद विरोधी कौर शास्त्रायं अरम्भ करने क ज़िल नास्त्रक है। सुन्द बाद सर्वेश उनको इन्हें दिया गरव वेदातुकुत है सुध को बाज धरी दम तानों में से रास्थ्रक के लिये लभा में बहा प्रकाश कि इन वो एक ब्रह्मक वे उन्होंने शास्त्राय चारम्भ दर दिया जाम उनदा श्रीक कर्यों की कार्य समाय मानता **है** 

स नहीं १

क्रीक्ष बाव नहीं पर शायद पं°े

सोलन ह री में प्रचार

कार्व समाज बरहापाट के अन्ते के काद मान्यवर विश्लीकक्ष रताराम जी सभा प्रधान भी भी वाक्रामुसार सोखन ग्री कोसन में धम प्रकार के ज़िए संद्रामात बाजा सारा स्टाफ कागवा । सवा के वेह प्रचार काविष्ठाला भी पंत क्रोराम सी शर्मा, ८० क्लोक-चन्द शास्त्री, पं+राजधास जी सदन-गोइन भी विसटा संदक्षी, पं० हमारी साक्ष की वहाँ पर पश्च के सोलन इ.शे.चे सालिक साव्या शी पन. **पम. सोइ**न की स**प्रमुख** धारमञ्ज भागिक, प्रमुखेशी तथा व्यप्ति द्वानस्य के एर्सभक्त है। क्रमपंके विचार यहें हो अने करत श्रीवन बदा हो उरंगा है। *शाक्ती* बरोडों में सेलट दय भी शंबल में धर्म के सिए आरी ऋषि ब्रेशे 🕏 वेदों के यक्ष भी सराते हैं। जीवब में प्रध्यास्य भावना इदार सर भरी हुई है । या ते वर साथा समझ-बन्दी जी बी नम्रवा, सेशवांक्या, यनधर यस प्रधार की उरुत्र देख **ब्द** शो पुगने भर्मवृत का स्मर**स** हो भाषा। श्री मुलारी बी का सारा परिवार भी धर्म के रंग में रमा हुआ है। मोद्दन क्या में हो र्दन वसंप्रयास होता रहा। औ पं॰ लशीराम को को सघर कथा. पं० राजधास सदन की व **रा**ठ इवारी खास जी 🖩 बोडे गीत, रं० त्रिजो हवन्द् सास्थी का उपहेश इच्याः वरी के सर्वे बहिनों का

हिया गया । विशेष धन्तवार ! 🛨 सिष्ट बर्चाय मध्या भी 🛍 को भी बद से यह तथा कोश वाले बच्ची को पढ़ां र है स है । नेशक्तिकों का यह स्वभाव ही है, अवस्था का क्क सम्बन्ध की रहता :

समें भा**व,** सम्मीरता तथा **सहयोग** 

देखकर यन यहा प्रशन्ते हका।

प्राप्ततीय ताराधन्ती वी क्षेत्र जावत

व जीवन के सामने तो सस्तक सद्ध

बाटा है। समा के सिय नेर प्रकार

क्षी प प वी व काल स सासम्पर क **बा**त्र का 'महारमा मानन्द स्वामी अती ब्रामो हैं।'

बार्टन वासे ने जाने किसे कहा चा पर पास से गुकरते समय नह 1985 मेरे भी कार्नों ने सने 1 जन केल्लों का काच पूरा हो गया तो स्था मन (विमे वेगिस्वर कृप्स सह में 'चंबल' विशेषस से विभूवित किया है) हैसे शान्त रहता। स्थामी की के बागमन की सचना पाते हैं। सन में एक श्रीवद्या हुई—ांसस क्ष'। श्रीसम्बद्ध ने हामी मरी कीर

पांच बाजावास ही समावदराय

क्राधादास की कोर बद चले।

कोत नं० इंदन्त न पहा स्थी कि तारेशिक समा-भवन को पाय की योज करना पत्रवा था, कर क्येन ने॰ मैंने पास हो दिवार फ रैक्सिक से जिल्ला लोका था । स्मीर इस प्रकार रत सब खड्डां में, जो कि सनवलों से विकिश्न चिनेमागड़ों बोहजो ब्रीर फोटोशफरों के फोन में अंड्रिय कर स्वयो थे, एक की वृद्धि और हो गई थी।

'नमने भी' मैंने वहा । 'भावी जी हैं ?' 'बारर राथे हैं --काने वाले ही

₹P

'दन'ड सावारण लोगों से विक्षते का समय क्या है भना। 'क्वा सङ्गा—पत्ता घरना, धन

असे पहुंचा 🎚 समग्री ।

देखियोज के वास रखे अपने में १४ दैसे हासे, रबिस्टर की साना वरी की और तक हो जिल्हों मे क्रेरी विद्याचे की साइव्हिस स्रोप ट्रह शक पर सीद रही थी।

सार्थक्य सदी की और हरिवास भी ने मधे लामी वी के कमरे श्रद्ध पर'का विका।

बैटे ये प्रसास अस वह कोले स कि वस है।

अत्र मिसादर पोत्र-सङ्ख जिल्लास

# एक संस्मरण—हम क्या करे ?'

लिं० प्रो० योगेन्द्र सिंह जो यादव बध्यक्ष खार्य यवक समाव बी. ए. बी. कालिज वंडीगढ)

वी कार्यकीर वासे स्वामी को से दूसरी कोर गी-पासन का परित्यविष्टें कसल नहीं हुया करती। श्रीव विचार-विमर्श कर रहे है । स्वामी के सिर महते का चेध्वा अन्ते हैं थी ने द्वावेश से कहर, 'तन द्वोग बात मेरे फन्जर को तकी पर वर्डियन विस मृद्द से गो-स्था की बात होने थ कोई कारण न का क्योंकि बनते हो, फिलने बाबंसमाजियों वे मेरे जंसे देहानों के बर को वह बी परों में भी हैं ? जनह हो हो नीय हैं। मैं हो बादना क्राशके पर है ? स्ट्रांने सेहर पत्रहा इसरों की क्रमा नहीं कका बन्द भी से पुद्धाः। मसन्द्र का (मानव सन क) सहाव

० मेहरदान जो डिन्ही स्का चित्र है बहो। सरवादा के दिनों फिरोज पर जेस में पड़ी काठियों की मार बहपात धरते क्षर **प**्रजी तत सब्दे हरो। हाथों की शक्ति सो बैंदे हैं सो पांच-इस मिनट में ही दूसरे अफ उन के द्वाथ दिसते ही रहते हैं. ळळ भी एड २ कर के खिल के गयें में अपने क्षी विचारों में कल्हाम बा इसरे स्वामी भी चुद्र मावेश मे

विचार शृंसजा हुटी जेसे सीवा 'शोच में जब तकरहे पर में गौ बी पर अब से बालंबर काये अब यहा होयां। मैंने जान किया, हैं कहा परिस्थितियं देशों हो गई है ंत्रामी जो. कार्यसमात का फि......' पं∘ भी ने सारा टोव मांकाब चैता है ह पर्विस्थितिकों के दिल मद दिवा 'क्रारंडम्या उ'रचवताः' सह कर

ये कतः वह स्रोपने से क्षरे ।

बारंत में बातव दिवती सहयो है। देख्य दवे भीर मेरे दुद दोस इर्ब मी के विषय को लेक्ट सहने वाते से वबंही फिर कहते सगे," महीने की हो साचा करते हैं। यू.स चिसी सो महाह का संविध्य उस वर्र में भी स्थले का विचार शास्त्र ह निवसों कीर उर्देश्यों पर कापारित सबने में भी न काला हो। यह कोट दोता है। कवि द्वारा बनावे गये भागें समाब के दहा निवस भीर इस भण्यो २ नस्त के इसे त'त बहोरव सार्वभौभित्र हैं। हमारी कर, संसदा कर पाछले हैं जनत

\*\*\*\*\*\*\* दयानन्द-वचनामन 'इस प्रकार पामेश्वर की ब्रायमा और उपासना करती

चाहिए। अध्यस्त्रात शीव हो, इत्वत्तकर, मुंह श्रम दो स्त्रान दरना अपन है। एक या देद कोश दर प्रशन्त अवत में जाकर योगाभ्यास की रीति से क्यासना करें । यही आधी यनी हिन **पदं घर आगार क्ष्मैर** सम्प्योगासना क्षांदि शिरव धर्म दथाविनि करे । सन्दर्शपासना में ६.मसे कम तीन क्षीर क्षांवर से श्रांवर

इनकीस प्राकासमा विभि-पूर्वत करने चाहिए। क्षी सनुष्य से ईहरर धर्मादरया और इसके बादेश में ऋति होस सहते हैं भौर इरव रूप विकास मा में शत दिन रहते हैं. से परमेडकर के

समीप वास करते हैं। (स्वामी सत्वावन्ध) 

नीप सुरद है पबराने का कोई करक नहीं ? 'पर हो क्या रहा है इस से अी तो अले नहीं मृ'दो आधी,' मैं

'कर प्रकार के कर उसी औ करत का की इंग सब गया है, ओ फल सद नवे हैं दल का खबा जाता दो अयस्कर है। बगोचे को पतः इरा थरा देखता है तो वह पीप को कोरों से बनाश होया। अपना काय किये चलो, परमाधिश झाववस

सफलता बदान करेंगे।' मेरे Geneticsकी Heredity ।वर्ष को सपराची सा सनुबन के बात ने स्टामी भी की बात की प्रशंकी। यह बीज जिला में पेटे

नक्षण सर स्टार

के अहम सम्बाददेका गुख निहित है, साद आदि न मिश्चर से हो महत्रा हे यह गड़ो में पैता वश्रुक स्वः सोच रहे हो ?' बेर्ट प्तना सम्बान यह सके **परन्छ**. क्रमको पोडो में वर्ष फिर इस अमीह स्थाद कादि देवें तो वीहा पूरी सम्बाई वर्त बढ़ेगा ।

मस्तिक में मोचा, 'हमारा स्रतीत कितना सीरमय है। इस बनवास का रिक्रोबा करें. अविद्रश हो जिन्हा इमें क्यों जनाये ? बर्तमान में हो तो अधियह विक्रिय है, हर माने वाला चता. जा सविष्य प्रात्तो वतसान में बड़स सायेगा को ककी न हम बढ़ेनान की इब्बब्स पना कर हर सूत में बदल जाने शक्की बाहे बया को अपने अधीत की असी गीरव अ'सप्ता में विशे देवें।"

🛨 विया अनुष्य की शोश क्यौर श्रमाहका भन है। विका गुरुकों का गुरु है। पर देश में विका भाई वन्त्र होती है । विका **एरध देवता है। विद्या ही राज्यकों** में पत्री जाता है न कि यन । विका

. ( यक्षंद से धाने ) विद्वान होत स्टब में ही अप देख्यान-विध्य-मार्ग का विस्तार करते हैं। बोन शासा के प्रवर्तक सहिषे प्रतिशिव ने सत्त्र का विशेष सदस्य वस्तेन किया है। सस्य बोलने **से** वायो समोप<sup>2</sup> हो जाओ है। सब कार्य संघटपालसार सिख होते है। बोगमान्वकार महदि ज्यास करते हैं। वे इस सत्र का भाषा करते हुये सिलाते हैं। बहि कोई

सत्त्वादी समध्य किंदी को को 🗏 'व्" पानिक बन, वने सम मिले. वो क्यमिंड वन काता है 🗱 उसे हुस किसता है। सामान्य सनुष्य इस सरव के दिश्य स्वरूप चर विश्वास नहीं दरते । शकी की संस्थता से प्राप्त

शक्ति का नवाहरका महर्षि देवासन्ह ची के जीवन में भी प्रथक्षक्य है। **एक प्रजीवन्द्र नामक नहसीसना**र सरा शांस वैश्वासमन झादि नीच कार्यों में फोसा हुआ। था। व्हिन्त उस कास्वर काति सध्र द्या। यङ दिन चन्त्रकाओं में स्थानता होती है ? | बर देते है । इस विधिन्नताड़ी का महर्षि के परशों हें उस के ताने सथवा व्यापनान प्रकार से साम-की प्रशंसा करते हमें दहन्तरिश्रता का विक प्रतार चवान अरी होता ! कावर्यान किया। महर्षिका स्वर्भाव इस्तादि चेशः सभी दक्ष ब्यावेश प्रा बर श्रमी चस्त्र से धार्त वो प्रभावीत्पादक होते हैं। फिर मधर स्वर में मक्ति रक्ष का बजन भी प्रभाव न प्रदेते में भोताओं की बारों सभा से सनावा । अधन हो बोम्बना के स्थापन के शख्य वह सी सुन कर महिषे काति प्रसन्त हुवे । कारण देवना महानवार की सभा समाध्य पर अध व्यमायन वास्त्र देवज्ञा नहीं डोश । यह **५५ल्**टा(दभ्य मार्गास श्रांटन स मद्रपि की समस्वार कर जाने समे हो बर स्टार्थ सिद्धि के ज़िये किया दय महाराज ने कावले कालीक दक्षात्र मात्र होता है। जब वक्ता श्रवित का प्रश्लेग अपने दुवे कहा सम किया किन्य विचार से प्रशासिक बन्द स ई के हीरा पर की पहाँचे पड़ा हो कर बोसता है तब इन शन्हों में है।' वदि सवा पान क्यांत को क्रोड चोत पैदा हो जाता है वह बादी है से देश बन्याया हो सकता है। रेबबन होने के कारण ओवाओं

१--- छत्येन पन्था विकते देव बान: । २ — सत्य प्रतिद्धावां किता **प**क्षा अवसम्ब ३—थामिको स्वा इति बवति, स्वर्ग प्राप्तश्चीव प्राप्तोति क्रमोच्च काल मध्यक्ति ।

के द्वाय में सीभी श्रम जाती है।

की दृष्टि से बक्त लराब बोधते थे।

किन्त उन का प्रभाव करविक

परताथा नैपोसिन ग्रास्त्रक वे

हमारा प्रचार कार्य-

# शिथिल क्यों ?

ते -- ब, इन्द्रदेव जी 'मेधार्थी' वरकृत मज्बर (रोहतक)

इन शब्दों से समीचन्द्र का जीवन । समय व्यवने क्यमें के समय जुल पविश्र बन स्वरः। इततः बासीः की "इने रिपने इ.स्ट ही बोकते थे। कीर सफलता में इत्रय बसा झीर इत्य वडी राज देवकों में शाबा फूक भी इस विक्य में यांत उत्तम वर्ण ने कत के क्षिये सत्य पारण कावस्थक है। होते थे। बीर सर समाण के 'पुम

न**, देवज्**त—शाकी का दूसरा तुमें सूत हो में तुम्हें व्याभारी विशोधम् मध्य में देवज्ञ है। ह सा' शब्द सुन कर युवकों के समस अर्थात बाबी दिख्य आवीं से प्रेरित 'क्रो या मरो का सिद्धान्त नाम होजी जाहिये । जो होत खार्च को बळता या। इटली के ओन इड़ते हैं सिक बरने मात्र के शिए वीको हैं मेतिनी की कसन में बाद था।<sup>2</sup> फिर सहर्षि वयातन्त्र श्री से वे वाकी का दुरुपयोग करते हैं। को बाद समी परिचित 🗗 🛣 इसीसिये व्याद्भवा नद्वानाध्यकार सहिषे प्रतेष्ठति सित से निःशार्थ इन्हें उस समय 'माइयर बाना'

भाष से विशा प्रदेश का विधान थडते वे। सहेर ऐंद्र परिव**ट** गर्य किया है। चाउक्स प्रचारक प्रथम बें भर का यस शहारात के पास नेताको के स्थानवाली का प्रमाय शास्त्रार्थ के सिवे जाते हो। इन की क्यों नहीं पहला। भोता वह काम दिवाल वाकोको सन वर उसकी बोक्स को ब्रोहक्त उसरे कान से देशे बन्द हो बार्क थी। तदाशु वह का निकास देते हैं ? क्या पनका प्रतियों को गंगा शहरा में प्रवाहित

बारया देवजन वासी ही है। े. तर—वाकी को श्रद्धोपता या बोसरा सायन तर है। ब्रिस इक्षर क्या को तीरवा बनाने के ब्रिवे दत के अवसाय की कारन में तथा कर विविध विषों में समाचा पडता है, वसे शबर हमारी वासी क्ये सनुष भा तप क्यी कार्यन में तपाया जाता है। योग-वरांत के क्रमुवार क्रच्छे कार्चीके करने के लिये विस्त स्वस्त सुलदुःसादि इन्हों का सहज ब्हरना स्व है। क्रीर सक्त्या<sup>2</sup> हारा शरीर इन्द्रियों के सब दोव दर हो जाते हैं। जो समुख ... अपने विचारों के सिम्मे विजना र्थाय इंट विस्ता है, उस লীৰমান্ত বিয়ন্ত গলগৰ মন্ত্ৰা के लार में पड़ना ही शक्ति **या** 

> जाती है। स्वामा बदान-इ. श्री के १—ब्रह्मशेन निष्कारको धर्म पश्चक्ते बेरोऽध्ये झंयस्य ।

सन्दों में 'जो मनुष्य भपने विद्वारों के किये पविशास हो सकते हैं क्टी के सिकांत संसार में फेक्टे है।' जिन्होंने राह की स्थलनात के जिने कारावास की शतनाय स्त्री हैं. प्रजेड स्थास्तान का प्रजान औ उक्ता पर प्राविक परता है । स्टीर-क्षोग समके समग्रह वन जाते हैं।

महर्षि दयानन्द जी से ग्रह्मह धी आफ्री विश्वासभ्य से वि**श्वा** शास्त्र कर कम्भ मेले पर इरिहार में पासक्द-सरहर्ना प्रताका सहराई. भीर जिरामर माध्याची व्याच्याची एवं विकास्त्रों से प्रचार किया । किल बेलें की समाप्ति वर अधी हो। मेरे ही भन्दर स्वास तप की कमी है-कर का सब्भा का राम का तक्त्वा में अवृत्त हो क्ये। सीर पुनः ऋणनी तपः पूत बाग्गी से दिन्दित्व करने में सफल हर :

### महातमा हंसराज जयन्त्री

की अपसमिति की एक कैंद्रक चार ध्यक्तूबर रविवार को ११ वजे कार्य समाज समारकाने जीवर बार्स में भी र्यंत हलाशम भी स्थान कार्त पारेशिक समा को करणसन में सम्पन्न हुई 4िस में निवार सकाओं के ७० के लगाया यहां स्वित्र है । जिस हैं भी बाहरत बेहरचन्द्र जी बहाजन, ५० द्यारास को शहरी, ब्रिन्सायल हरिक्चन्ट औ धादि सहात्थावों के नाम उल्लेख-शेव हैं। सतेष विचार विस्ता के बाद विश्वव हुछ। कि अवस्त्री के बिर ४ जास रुपर की व्यक्ति की जाव कीर इस सर्गरा से महारमा इंसराब साहित्व विवास की स्रोत के केने के संबंध में अर्थातन प्रशासित विज्ञा आयः । सभा के प्रक चाव जनत को क्रमिक रुपशोगी बनावा कार इस सारी से कह योग्य व्यवेशक भीर अञ्चलीक रखे बार्धको सम्पर्कदेश में प्रमुख ब्राके विश्वमित्रों की **बदशी सदर** को रोक कर वैदिक पर्म का प्रचाह बर करें।

भी उसा किए प्रार्थ के काल काल

त्थामी नित्धातच बी के

कार्थी के वह अवर्तक बन कर उद्देश

वड महाराजा बहीदा और महाराजा

कोत्हापुर के शुरू के रूप में के

वन की घेरणा से ही महाराजा

कोल्डापुर ने व्यक्ती काशिय प्रव

शिक्य संस्थामें उत्तर प्रदेश आर्थ

प्रतिन व सथा हो सीवी भी। कडीहा

# · चरित्र-निर्माण में भारी रूकः वहें शार्यजगत् शास्त्रार्थं महारथी प्रगल्म वस्ता

(लेखक-श्री पिश्रीरोसाल जी प्रेम, रेणका, जिसर सिरमीर) 

(मत्त्र(क से कारो) एक युवती तक व्यवना 'पार्ट' -(PART) कर सदी थीः तस पर क्ष भौजवान ने व्यपने क्रस्तित विचारों को प्रदर्शित करने के जिए प्रचेश्वर में कह बता (बावाबा-

साहद को घरत कोन कावा। क्षत्रोंने कहा यह सिनेबा-हाल महिप दुरदर्शी थे। व जानने जे -बड़ी है. वड़ों इस प्रकार की भावातें कि तिस देश के होत अध्यवये का

क्सा)। इस पर राजेज के जिंसपन

क्याबाडा विश्लेच कहा १, नदी शे के कार बाजबी को टांन से पहल कर बाहिर पसीट से जाता और सरकी खुर मुरम्मत करता।

में व्यांत नवता से प्रक्रम चाहत ह कि उस बीडवान को अपनी कुरिसद साथनाओं का प्रद्शित करने का कावसर किसने दिया। ·स्था विसिश्त सन्दर्ध ने जुबक भीर समितियों को संख पर जाकर स्वयं ही दम सौप्रधान को बादनी कलिस भावनाओं के बनर्शन करने का व्यवसर नहीं दिया ? बना दमरे कई बीधवानों के मन में भी इस **बकार की बुधी करस**मार्थ न सरपन्न हुई होंगी ? यदि स्नात सहात्सा जो अधिक होते वो वे अपने नाम से पसार इस इस इस्सेंड में क्लान्ति हो संचाधानामें की मञ्जूषि देवे ह

संप्रधिक्षा

:**बर्क्स** स्थामी त्यात्मह सरस्वति जी सत्यार्थेऽशा के क्षेत्ररे सन् स्कास में दिलते हैं 'लड़कों श्रीर क्षकियों की पाठशास्त्रा यक इसरे को हो को स दर होती चाईदर। स्वय में तो कानावर वा कानावि- होओ-गांधी नासन संचान को का

६.पंडों कथया मत्य *कादि हो* कम्पाभों थी पाठशाशा में स्व खियां हो और सक्कों की पाटसाका में सब पुरुष हों। शिक्कों की पाट-राज्य में बांच वर्ष का सहका और पुरुषों की सहसाला में पांच पर्व

की लक्ष्मी मी न जाने।

कसना वहें शर्म की बाव है। पालन करते हैं वह शक्तिशासी इ.परतोस यह है कि मुक्ते यह | कीर देतलभी होते हैं कीर जे -माश्रम नहीं हो सहा कि यह व्यक्तपर्य का पासन नहीं बरते हे निर्वत भीर निस्तेत होते हैं। क रहे हैं। स्कृतिका के होते हर महत्वयं प्रत

> किथ्द्र क्रसम्बद भी है। बरेड विद्वान धीर वयस्त्री जबकि काम यासका में पंच जाते हैं के साधा-रया क्वर्षित का क्या ५७ मा । श्रीर वर्ष बारों कोर से कामवास्ता के. मक्कोंने बाला बातावरक हो ह्यीर

क्षा किमाग्। इस्ते के शिए इस

पृक्ति बोडना का घण्डाकृष बल्

करवा कर रहे हैं। सहतिया काले

त्क्यों का काले हों हैं सपने बपने

को पदाना जान एम कर करानी

पराक्ष पत्रने से वालकीत हो। ्वं में सरवार्थ प्रदास का मेल-सिकाप का ऋगसर भी सरस्रत बजुबाद भी किया का बढ़ शास्त्रार्थ से बिस सरवा हो, शीरन की नहारयी वे भौर भीतवी सनाक्षत मसी हो, क्वेच व्हि दस हो के साथ बन के शास्त्रार्थ जा देशी कावस्या में क्या नीजशान र्जासद थे। उत्तर प्रदेश में नगीन क्या प्रति क्यांत्रको प्रत्ये बावसे का शास्त्रायं आर्थे समाज वै सम्बद्ध सकती है ? भी को माग व इविद्वास में एक यहत्वपुरा शास्त्राधे वास स्थ कर यह स्वाश रक्षना वि धीत पिछ्ले. शह अध्यस्यक है। बा। उत्तर धरदेश में भी उन्होंने वीरोप बासे तो इसका हप्परियान स्वतंत्र प्रचारक के तर, सहारमा टेल क्षेत्र स्टीर स्टब इसके विशेशी इर्शनावस्य जो, पं. ग'या पाँव समा क्षो रहे हैं परस्त भारतवासी देश जनवी हुई फाय में अनेसवा है।

# वार्यसमाज के मर्थ-य नेता पं. श्रात्माराम जी यमतमरी को कैसे मूल रहा है।

(वे०-यकोवाकुमारोः कावावा सार्व कन्या महाविश्वासय वडीदा) AND A RESIDENCE MANAGEMENTS

कार्योदय के इस बाड़ों में ! **ंडाक के कार्यसमात के इतिहास** पर <u>स</u>प्दर र्हाष्ट्रपात होता रहा है. उनको पढ़ने से कतेक पुराने विश्व परामश सें१६०८ में वह बक्नीरा सबी टांट के शासने उत्तरका होते हैं . काये वहां क्रानेश कार्य समाधी महर्षिने ऐसा दयों सिमदा? ब्रोर गौरवपूर्व स्व तथा स्वतिषट पर

व्यक्ति होतो है।

पर इ.स के साथ इसने कात-भव किया कि लेखक महोदय रावसन राजीमध संस्टर काल्या-राम की समयक्तरी को विस्परक

वडि भारत में सद्धशिक्षा को शीव

इन्द्र न किहा नवा को इस के

दर्भाश्याम से देश की सम्बन

वर्व संस्कृति यह होने से यच नहीं

सदेशी : श्रद भी समय है सम्भलने

(হ্নম্ম:)

बास्टर जी एं. लेकराम, एं. राष्य के प्रशतिशीक्ष शब 🖥 फास्य पासन करना कडिन ही नहीं गुरुश्त नी विद्यार्थी सहस्था मुंशो वनवाने में उन का बड़ा हाथ या ह ाम जी, सहाप्ता हमराह जी गुक्तत के काय समाज के तथा लाखा जातपत राज औ के कार्य की नीव उन्होंने हो सालो थी समहामीत थे । उन्होंने प्रजाव हेमे प्रतिभागाओं जेता की उन्ह कार्वेविविधि समा में मन्त्री ऋष जवित काश्रदी काला पत्ने एकस जै में काम किया था। पं. हेतराम पदती है। वो को सहर्षि की श्रीवती उन्होंने कार्य समात ऐसे महाबसेलक, ूरी की थीं, तथा मुख्यूकी कीर

शास्त्रार्थे महारथी, अवस्म बन्द्रा जिन का सारा क्ट्र'व आर्थ समाक्ष की सेवा में भवित किया सुसने सुने यह परिस्थिति दुःसङ् है।

### शभ विवाह

भागंजनव **के असिद्ध** शे**सक** वधा इद कार्यसमात्री भी पिशोरी लाम तो 'घेस' देशका (H.P.) निवासी की संपूर्व हमारी बीर बासा का पारित्रहरण संस्कार बी कारः राव देइसी के मुक्त विर तीन सम्बद्धेव भी के साथ ३१ व्यक्त बर सम ६५ रहियार दिल के १-३० वसी क्याला सावनी में पर्श देविक शींचे से सम्पन्त हो रहा है। आये जगत बीफोर से वर वथ कोसने बस्ट बधाई ।

### श्चार्यभवाज हांसी(हिमार

### में वेद प्रचार

होती में २४-६-३४ से ४-१०-इंग कड पार्वेणिक सभा के प्रतिज्ञ भवनी व दा व दुर्गामिक्क की शुक्रान का उपनेशों व अजनों हारा वेद-क्रमार हक्षा । समाज के प्रचान की ने १५१/नोह प्रचारार्थे दाव दिया । एकार का श्रमाथ स्रति 384 7K I

### ही. ए. वी हाई स्कल बहराम पुर का शानदार नर्गीका

इस स्टब्स के बार झात्रों ने संगरी काल महात्र सरेग्द्र क्रमभ सहाक्षत्र वसदेव राज बद्धावन, तवा मोपास सिक्स राजपत ने दर्श स्थात बरावकृषि हो कर इस श्रृज की शान अभी की है इस रन्तरि का स्रेन भी देखमास्टर किसक राज की महाक्षत व वत के परिश्रमी

रीपकाता के क्षत्रमार नर पत्नका-स्टाक पर है। कर में प्रकारित में हो रहा है इस सम्बद्धाता की सहर उस क्ट ग्रंड पाट हों को शेवाबी से इक्षा है में विश्वती के समान कैत श्रीम-बार दिन वर्ष पश्च वारया मां है। तथा वहां की अनता हत सफाता से फार्त प्रश्नित दर्द है।

की टीजा नाथ की मैनेकर ब्रह्म के क्लम प्रयोध को परिशास है। नव आस सेनो बद्धरामपुर

# चार्य प्रादेशिक सभा को

वेद प्रचारार्ध दान भी मा**० वकारावेग औ** १०/-**चा**० स० शासनगर (करनाल) ११/-प्रेसनगर (बरनाक्ष) १०१/-

संशोगः (H.P.)४१-२४N.P नांदस (रोडवर) 50/-चकाहर (करनाव) 20%

शांसी (हिंसर)

मोडकटीन सहचावां १५१/-का बादरां देवता सन्त्रन हो पता तवा : इनके बारे में वो भी विख 808/-

191/-

त्र**वस्ट स**जार(शिवज्रा)४०१/-मामता कि वह बादर्श परिवार १२०/- बावे बोदा है। बावे कीम ? इस

कार्य जयत् का दीपकासः

के सबस्य पर अभि निर्वासांक हैं

स्य कार विशेष विशेषांक के

रूप में सबक्ता से दीपसम्ब

के सबसर पर विश्वकेता । उसमें

ब्रार्थ समाज के बोटी के

महारवा संन्यासियों, प्रसिद

विद्वाली, कवियों के विशेष केत

कविवार्थ होंगी । पदने काश

शेया । समार्थे व संस्थार्थे सर्थ

से हुए दर्ड प्रविद से प्रविद

جائب تنزخي عائما

राता विज्ञापन शिक्शारे । मान्य

क्रेलक माई बहिन, हरि वापनी

श्वाच जगत के पाठकों

से निवेदन

बावंडरत स कपि निर्वास सन

बरस्य सीम्बर्जूत, समाव

होवाने भारते जीवन को सा.

देवदश वी श्वान कार्यसवात

दीनानगर का इ.सह देहाकशात

का गोकबनक समाचार सक्कर

दिल एकद्थ बैठ गया । मन बही

शासकों से निवेदन है कि

इतिबों से शीत इतार्व करें ।

~~~

A SE SE देखना ही ही वनश पा वा सकता या । दीना-

उद्यक्त काल वर्षकार भी बीस पंत्री दे जिए एड सका धारिति शरकार का पर है सम्राष्ट्र की सारे शरवास-पर किले को उकके जाने से भारी बरुडा समा है हुने हो सम्र दनही सीवम्बर्ति मीठो काश्री, अवता बावति क्यो नहीं कुछ दक्ते । दशका दुसं कहा दुस्**व**राक्षा ही स्तामाः इत सार्वेशका की क्षोर से दम के इस शोब्यवद विस्त पर बारे चरेवार से अल्डि सम्बेदना प्रचट करके आरी वृद्धि सहज ब्राने के ज़िय ब्रमु से दैने प्रशास करते क्या विश्वेषण कारण को शान्ति प्रशास करने की शर्थना करते हैं। यन के चिरंशीय मुख्य

प्रकट करते हैं। ---#i Mehr Chand Polytechnic Jullundur City. The Arva Yuwak

in the Mehr Chand Poly technie, Juliundur City. | wa ge The enrolement of the members has been started. The Openius Ceremoney will be t prmed on 11th of October

1 1964 at 6 P.M. in the Mehr of. York Sain 378 formed by Shri Cl

Duss Ji, Director, Vehr Chand Polytechnic श्री मास्टर श्रात्माराम जी वसतसरो' को समित्र जीवनी पुरुष 1.65 N.pare व्यव सर्वित जयदेव बढ्वं आत्माराम प्रव

बड़ोदा-१ से मंगवाएं।

द्धा वार्षि होत्सव नगर समाज के शक्तुन पास है । ता. २५ से २० सितम्बर ६४ तक समारोह पूर्वक सन्परन

wie mus grunt-करनास के उत्सद्धी आवं बीर त्री वीक्राम की तथा दनके **सभी** महबोगी खरती समात्र सेवा---बैरिक प्रधीनसम् तथा वर्गेठवा के किए प्रसिद्ध है। इस नार के शासक भर किसा साथ भीर महा से इस समाज के बीरों-बढ़ां और देखियों रुद्धा कार्य कारते हैं पास व्या वह प्रजुदरकीय था। उत्सव ते प्रशं कथा के अक्षेत्रकेशक श्री र्पः क्रीमांबाश भी थी सन्दर वैद कथा होती रही साथ हो भी कंदर क्रमतराम की, बस्तीराम की धी अन्द्रको के बीररस पर्य भवन होते et : mus ur ufen alte विशान को स्वामी क्षमपेमानम् वी श्लामी केंद्र मुर्जन जो, भी पंत धी क्षत्रपथ जो से सहात्रमति क्रितर कुबार की बेदासंकर, स के बच्चा दश्व की शहर सता थे सवोध्य गायस थो वे॰ सेसप्रास जी bileral fame of the name of की विसटासंस्टब्सी कीर देहसी अपन्या के शब्दा शावक मां पं asi ban been organised हर प्रधार से सफन बनाया ।

इरिशन की से प्रधार का सरकार की बया को बेदश्यार मध्ये १०१)

### हिन्दी रचा समिति का एक सन्ना ऋजोकिक

वक वसी क्राबंजनव में यह सबर वर्षे शोब से सुनी आएगी कि सा० and Polysochuic Housel, hope at wiger nem mit Marin alternat. Or \$11022-4-45 शक्तार रात के रहा। को अवानक इटब-गर्व बन्द होने से हो गया। क्य के समय उनके दीनों लडके वयक्त की कीर प्रमी पर कीर बा॰इरिदास जी मीजूर ये। कहाँजे व्यवने लक्ष्मी को इवडा रहते का ल्पहेश देवता। और बहुत कि इस जार्ज जारते हैं हो है ही बार्ज मिळांतों के विषय बावन्तर व

> वनमो की रक्षम ७-१०-५५ की बुभवार ४ - वे शाम को धार्य समात्र दोनातकः में चना की जास्त्री । वसरेश्रात सन्त्री

कार्यसमाज रोमानगर

हुइंड व जकाराक भी करोपराज भी भार्च जादेशिक(श्रीतिनिव सभा पंजाब कासम्बर डारा सेर विकाप में छ, विसाप रोड बाक्स्यर से हुईएव तथ माध्यमा क्यांस्य पहाला हंसराज मनन मिक्ट क्यारो सम्बन्ध रहर से प्रकारत मानिक-कामे प्रविधिक प्रीर्वार्वक समा विकास



श्चार्वप्रादेशिक प्रतिनिधिसम्। पंजाब जालन्थर NI मान्ताहिक मस्तपत्र) रेबीफोन नंब १०३५ **एक प्रांत का सक्य १५ जुरे वैशे** वाषिक प्रस्त ६ करने

Regd No P. 123

वर्ष २४ बंद ४४)

२३ आदिवन २०२१ रविवार\_द्यानन्दास्ट १४०- ८ तबस्वर १९६४

(तार 'प्रादेशिक' जास्स्य र

# वेढ सक्तयः

ब्योतिषद्मि सर्य वे सङ्गम् सूर्व प्रसेश ! काप ही तो सब स्थाओं पर क्योशि बाने कार्डे हो। स्वाप का ही प्रकाश सबेज फैसा है। फाप ही सब पहार्थी की पमकाते हैं। वदाश के स्वामी हो सब को

स्थीति देते हो । त्व वरुण पश्यसि

होत काला होती । प्रमुख सर्वेश व्यापक क्षेत्र कर कर इस देशते हो। सनना नेत्र हो। इस कोई बाव कीर कोई काम किसी गुप्त त्थाय पर बादर भी दरें, चाप वसे बानते हो बीर देखते हो। काप से क्या गुरु है।

तस्या विश्वद र्शतः देव ! धाप तरीश :--बीका हो। इस मचमानर से पार काने के लिए झाप ही आप की भारत, क्यासनाव नाम जाप नौका का काम करका है । प्रैय के दरांगीय हो। सम से परम सन्दर हा।

जीवन माभार हो ।

वेदामृत

त्रोहम सु भुवः स्वः। त्रांस्न ऋषिः पवमानः पांच जन्यः परोहितः। तमोमहे पशागयं स्वाहा । इदमरनवे पवशानाय इदन्त मन् ।। ऋक् मंडल ९ तस्त ६६ मं, २०

. कर्य-ने अध्य के काशार, द:तनाशक तका मुकरूप दिवर ! मार्क् प्राप्तिः हैं - पृथ्वीव है (स्पिः) तर बुद्ध देखने वाले हैं तथा (पक्कान:) पवित्र करने वासे हो (पीचलवः) सब के नेता हो। इस किए हम (तम्) एस झाप को (ईमहे) प्राप्त हो (यहारायद) सब के व्यापन हो । यह बाहरि पांचत काने शते बारिनदेश के बावेश हो । इस में मेरा इन्ह थी नहीं है। सब इन्ह बाप का ही है।

भाष :--वरवात्य देव ! काच ऋषित हैं । सब के पुत्रत योग्य हैं, प्राप्त प्रक्रि हैं. सब के रूप काशों को आपने तथा देताने पाते हैं। प्रवास है. सब की शढ़ पाँचा करने बाते हैं तथा पांचान्य है, सब के दिकाशी हैं, प्रोदित भी बाद ही हैं ! बाद ही सब के नेता, नीवन वथ के ब्रमंद हैं । आप के सिवाद और हमारा कीन सम्दर्भ 'हरूर ही क्षत्रका है। हे देव ! धाप महायय डॉ., यह जिल्ला भी सारा कंगार है. इस के साकार, ब्रायन काप हो है। झान को ही इस शप्त करन क्लाक्टे हैं। ब्राथ का ब्याबय पा कर इमें फिर श्रीवन में कॉर क्का विच्या हो सकको है ? प्रमों ! यह वो नई बाहरि मेरी नहीं सम इस बान का ही है, बाद का ही दिया है, बाद के बरेब है।

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

ऋषि दर्शन 🛉 मनुष्यः सोम्यग्रग सम्पन्तः

जो सतस्य सीन्द्र है, शास्त्रि स्वसाय का है, कारकरण गरमीर है, जिस के जीवन में, वासी में, सन है तथा स्ववहार स्रोत कार्यों में जिल्ला मीरपाव प्राप्त सम्बोरता के गुगा भरे हर हैं। किवा गया से भर पर है।

कीर सभी विदासों, ब्रान से सराहका है। राज धर्म की बसाम पश्चिम को जानने बाला है। जाना प्रचार की कावस्था है क्वा करता है इस सारे मेर हो भारता है।

ममाध्ययव्यक्तेन स्वीकतः

सक्त विद्या सकतः

वेसे व्यक्ति को हो सभा का राज्ञ। नेता सानना तथा वनाना चाबित शासन के के बे बाजन पर इस बकार के ही शासक की विद्वाना चाहिए । तथा सारे राष्ट्र का मता होता है।

शाप्य सुनिका सं 4444444

षाविष्याता---श्री संतोकाज

सम्बादक —ंत्रलोक्ट चन्द्र शास्त्रं

अहर्षि रवानन्द के खासकत से वर्ष मानों में बढ़ का अर्थात भारत पारवार्थ सम्बद्धित थी । सन्द विषयों की अधि प्रमु-मण्डि के सम्बन्ध में भी कोई क्रिवजित षळवि संचालित न सी। सब सोन भागते-मागते संबद्धात के जेवाओं सी पाशानुसार विविध प्रकार के दींग रचने भीर खांग महते विकाई देतं ये। कोई सम्बन्धाना का नाम रोक्ट एक बार कक्ष संस्कृत इसोकी अवना मन्त्रों का तक्यारक कर सेना पर्यात सममता बा. होई दो बार चौर कोई क्षेत्र बार । कोई बेठकर ईरश्रोपालना करने को फ्डका या: तो कोई सबे होबा श्रमीष्ट सिद्धि का यस्त्र करता वाः कोई तालो पीट कर चित्र को वसक **९**४ जेल था तो कोई दावें से वार्थे और दायें से दायें सम कर कापने ब्याप को हुएहरूव सम्म लेवा या। अश्रीय यसा-चौकरी सची बद्दांतक कि कई ज्यक्ति वो देवकरोपासका को प्रसन्ध-वसाय क्रथता मुर्खीको कासने का सावन मात्र उद्योगित इसते है । विजयस मसमंत्रस में भावें जाति शस्त्र की lli समदान एवानन्द ने फाक्स विकास विकास का सामान कर के, बेवादि सन्हास्त्रों का गम्बीर रवाध्वात किया क्षीर वर्षे की सातमातुम् व के पश्चान् बद्धोरिक विका कि परम क्लि परमात्का के साचातकार का सीधा, सम्बर, **-छरत** साध्य सन्दर्श है। ब्याप ने वेद बजों का ऐसा सुन्दर संगठन **ब**र के हमारे समक टपरिवत बिया कि गाँद हम विभि पूर्वेच हन मन्त्रों द्वारा ईशोपासचा कर सकें सो बाज्यानिक, श्रापि है किछ धीर धार्थ जीविक विविध-द्राकों का कालन्तामान हो सकता

81

# वार्मिक वर्जा

### स्था करत के सम्बन्ध में बनेक अस्यात्री(संदया)प्रसारक महर्षि देखानान्द्रकीज सिक-मी बिन्टी दास जी, सामी कार्य क्याज नोड का अवस्तर)

सर्वाच के हो कार करना का विचान काते इस वन सामास्य के इच्य प्रत्य पर सह गांव पर्मप्रत बरते या सन्दर्भ प्रकार विकास है वि हमारे इवं बस्था-श्रवि-सदि, ग्रह-

वापाने, राजा-महाराजा---वन प्रतिदित होनी संविदेखाओं नै सांसारिक वारो-स्मापी का परित्यान कर के ब्रह्म परणों में तक-सक्तक होता धपना नैतिक चलंदन क्यान्त्रे ये। दो धान क्षम्या दा विधान-त्र ति. स्वति, सदोपार-सब स्थानों पर उपसन्य द्वीवा है। बोगवाह की मृत मारीविका वे पीक्षे सरपट भागने वाला स्मापनिक

अन सम्बाग सन्मार्ग से भटड थ्या है। भीर बद्धा विद्वीन त्रो जाने के कारण बात न के लिए समित भीर प्रशास द देश है। येसे महानामायों की सन्तरि के जिए इस नीचे सकारतों के ६विवय प्रमास स्टब्स दरने जा रहे

है ताफि पता पत्त सके कि 'कश्वा

दरो, एञ्चा ब्रो का ब्रो उपरेश महर्षि दवाबन्द ने हमें दिया, वह क्सि प्रकार शाबीब आर्च संस्कृत सा प्रतीक है और इसारे सहा-प्रस्य सर्वादा पुरुषोत्तम सनकात राम भौर वोशीलक सावात करन द्या सन्द पेरिकासिक परण क्रिय

प्रकार इस बेदिक बिधि का परि-पालन किया काने हे---१. मष्ट्रियं स्थातन्त्र सन्ध्वा दा

धर्ये इस्ते इस एंक् महाबक्त विधि में जिसते हैं—'सम्ध्याचनित' सही वदार प्यान दाते हैं का प्राप्त किया जान परकेश्वर का जिस हैं. बह संभवा । सो राव स्त्रीर दिस के सब बनुष्णों को परबेशनर की शहरि

शबेना और एंकाका करनी चाहिये ।'

 संब्यानकारों वे त सकते शंकित क्याः । क्षिपन प्रापानो सर्वे

कानित संद स्वतःश्रद्धाः ॥ बाह्यसम्बद्ध स्त्रति चर्चात-ओ व्यक्ति निरम्तर

विका र्थंड सन्तर्भ डा अन्यस्त इरते हैं, ये सर्वेश पाप मुक्त होस्ट सनलन बहारोड को प्राप्त होते हैं। ३. सम्प्यासपासितो येन तेन विष्णा रवासित:। डीफॅमाय: स विन्देत स किन्नेत सर्वपारै: प्रशप्यते ॥

चोनि वाज्ञवल्स्य **சம்**க\_செல் கலா கி उसने सदंस्थापक परवारशा की उपासना कर की। इसके समाल वाय कर वये और उसे शीर्थ आन

की प्राप्ति हो गई । थ. सन्धायेट व विश्वासा

सरस्या वेकामपासिता । जीवन्तेष-सवेच्छडो स्थानवासिश्रायते । रेकी भागमा ११-१६-६

बार्धाः —तिसे छ-ध्या द्वा ज्ञान वही है और वो सन्द्योपसना नहीं सता, ऐसा प्राक्तश जीवन में हो बट हो बावा है भीर बर कर उसे की बोर्जि पर्या है।

». सन्दर्भ होनो आविर्शियम-जोपासठे वहव पश्चिमस्य । न्द्रोः सर्वे वर्मस् । महत्त्वन् इन्ह्रो स शह वह वहिण्डाचे: सर्वेत्साव क्ष्में न उस्य एक साम्मदेत् ध हित्र कर्सका ॥ **発売0 マーミャ油** 

१०. नोपशिष्यति तु वः पूर्वा वार्थात- संस्था डीन बनस्य नोपासे शसु पश्चिमाम । धार क्राचित्र हुए रहता है किसी य शह यह पति: कार्य: सर्व-राज कर्त के कोम्ब नहीं सहस्र, को रसाद द्वित्र कमेक्: || सह वैश्व

भी कन्द दर्भ दरहा ई शाशा पत प्राय अध्यक्ष क 35.88 व्यवात-त्रो द्वित वातः श्रीत मी वसे नहीं (मकका । सार्थ-कोंगें समय-सम्बद्धिमान ६ सम्बद्ध क्षेत्रस लाक्स नहीं दरता, उसे समस्त विश्वीविध मार शेक्कर र स्था ने सेपा कर्मी से संदू की तरह विश्वकृत संदोग समय रोली संन्याओं में | मोपस्टर्वस्थ, श्रास्त्रक्तिकोशाः।। 'कर देश पाहिये-**REPRESENTE** 22-26

(केंब केंद्र ५ वह)

पर्याठ-नीरे भाष्याते राथ गाँ wie alle feire eine aust t. होंगे (क्षण क्षण्यांथ चाहि) चर्चा , सह का के विकट गई। आते: जेने गरेड के पात सांव दी काम अंगास की को सबसी है।

शार्थ माध्यय थः स्थानवास्थानो ग्रह मानसः अपने ही पाधनी देवी यावधी बेह साहत्म ॥ तथा सम्मा-विद्यो देश्या शक्तमो पूर विश्वितः व सीकेव प्रतिमृद्धानो स्थापि प्रस्ती संसायस्य ।) धरिवयस

वर्षात—जो माझ्य शह विक हो दर घलः सक्-योगी समय —सन्दर्भेगसमा सम्बा है क्री<del>र</del> देव मादा पश्चित्र कारिक्षी व्योतिसंकी गायत्री के जाप द्वारा जिल के पाय क्यासित हो रूपे हैं वह यदि सागर स्टिव समस्त प्रसिद्ध का मो बास दे दे, वो जो उसे कोई कट नहीं

होता । द. वर्षेनोपीश पापानि त्वी ञ्चार्काल पार्वान इसे सन्त्ये स तेपांडिविकते देवियातकम याक्षत्रपास यर वास्ति दिविषेष्ठ न पायनम्

व्यक्तिपराग में ब्रह्मा ने शासकी से 681-क्रमाँन-हे शक्त करने वासी देवि गावत्री ! पाप कमें करने वासे

समप्त भी होतो समय - सार्व प्रात: — वॉड सन्दवा बस्ते बीर तुन्हारा जाप दश्ते हैं. उन्हें पाप-वाप नहीं समता, स्थोंके हेरे समान पवित्र करने बाक्स कोई भी साधन न इस कोच में है म पर लोक में। ६. व किन्द्रवि त यः पूर्व

**भवें** २४ रिविशार २०२१, *च नवस्वर* १९६४ विके ४४

### श्रार्थो । सावधान ॥

हुकी क्ये के प्रमध्य करन में | छर्वसायात्म देन्द्र बसवा की एन कोमई में कारे अंकर के ईक्सी है नहीं क्या रूमें भी तो एत कर के में जूभी अही रेग्डी। ब्लो क्यमे क्षा कर अपनी विशेष सम्बोधक होते. विशे कामों से ही कामर वही भाषाहै। क्राज कि सुरु में उन मिश्रम । सार्ये समाय को कांसे को क्षाच्या अलोकन करने है जिए और में किसी इंकर के देश में कावने तक कोर सभी रहे हैं। चयनी am में बाने की लीपूर्व नहीं हो ! शीकर शॉक्त से वनसे त्यान १ वर किया सारव की सरकार ने देशी टक्का केना है। इस के वस वी विकासकोड ६ देव प्रकाह ओ के है। आने विश्व ने हैमाई वन दिनी इसक श्रीवांगांधवों के क्य में हजारो बसान करली देव हैं जो गीसियों बी संख्या में बड़ा पर इक्ट्रे होंगे। वर्षों से भीकों के बंदस से वैद कर विश्वना काम वर रहे हैं। बाको हरोडो रूपे गती वी दरह काले का वस्त किया वाक्या। क्षित्र इस काम के जिस वैद्या भी हो नहीं देख । निशंदकों से सम्ब प्रधा नहीं भारतीय सवता को का संबंध कर देवे पर बार्टि की करों का प्रशोध व देने के जिस क्या त्था है कि कीरी भी गति। दन्याई र होगा । काल के भारत में देशते à क्या प्रकार का संशोधन दे कर क्षाट करते हैं। श्या र हमध्यते क्लोश में बाले तथा छोड़ों की लिकी। बार्चे का के हर बरम पर विध्याणी **थ सरशता से देश कर्ज़** करा रक्षी काये कभी में समाब क कारती हैं । यह से नियोगी सिपोव feite prima en feur u को बढ़ पर कही मान्य पता निरुद्ध के विक्रशीय ब्रह्मचा शर्मे । क्षताया सा सम्भा है। मेद यह है वि **ब्राह्म का हिल्द समाद मध्**ने २ देवासुर संद्राम क्रोरे बच्चे हें ब्हा श्वार है ! वर्ष बराये विश्वा है, पर ये विश्वा है क्रमरे क्रमी तहें । इतिवर्ष ही सार बद बसे वेश के दिन्य वसात के देश यह पांचा पर्व वहें समारोह व श्रीकर की तींद्रक मी किया नहीं। काशक से मनात है। र्राप्त है **वैद्या**या था श्वास कियारी तेवी से शत क्या के महान सम वे स्था क्रोर्जे क्ये अर वर के नाने क्दरी भारत में राज्य के चिरहत शक्त के वालंबों, सुबाँ, इरलावों क्रमा सन्य ग्रन्थ स्थानों से अपन के अंक्स में मलबी है । महत्त्व के केटर कोर्ने को विश्वमी बना कर माक्रिय की इसे कियी न निर्धा सावतों के व्यंपन कार्यका की कोई

देशकी में तो इसका समारोप और नी राजन से होका है। विदेशों के रक्षांकों के कहे व्यक्ति की हुईं। वेक्सने देखते बाते हैं । एक ईंदन यामा शब्द ही एक विचित्र वार्टा गरक में बापने की बातुनक करता है। हिन्द इतक परित्रम स्थ व्यव दशने के बाद कोनों के बीवन में परिवर्टन विश्वता कोता है षिको समागी देखे होते हैं को 🖩

and of any start \$45 A SH WART OF SHE THAT SHE यन में संबाद मारस दर्श है । क्ष्म शे वर ६व अक्षा वा लेक ववाका वा क्त दवा है। योहे समय के किए अवता सन की दक्षण वर दिया वस्ती है । केंद्रे चीर दवारों के कमान वह भी दक्षी सव में बदव राजा है। वास्त्रक्ष में स्था भी एक देशा-सर संगम है। वो शक्तिकों की

मारी रक्कर है, हो क्यारों बा संघरे हैं. हो राष्ट्रों के जिल्ल-फिल्ब विद्याओं की भीका जंग-की है । रो वसार के Ideals कारत समझे सामने काते हैं। उसमें पानवर कर में अवसी देवी नाहिता है को कंप ने वार्जे हैवाईयों के इस व्या मारी बढ है । इसकी देशों है कर इसमों को क्रम के का संबा योख्यापर सम्बंदिक की सामें सामास का (बस्ते हैं। योगवार से बती हुई कोरी जीतिक प्रवृत्तिको एक कोर हैं जो कि हास्त्रज्ञीकर को केवस सामें रीते. भीव प्रथाने के किए संसाम में बाजे वा शरोध्य कामकर पसेती हैं र्भातवर्षे इस काली वये देशा सर संवास करती कराती रहती है। वह ब्रॅज़र बेडब मोर्स को भोगने परन्द बना जीवन भी बदसता है it fer ft, un mitr mi und वा भरी ! मान का भारत व किन यारी शर्मश्यां विषयः बास्काची को क्सि कोर वा सहा है। इस क्राफी बोधने के बिया ही माना हुई है। से पूर्वे कि इस कारते विकारी के क्षेत्रं क्ष्मर स्थी, बोर्ड वर्षे स्थी साबी है वा शेलकादी राजका के कोर्स-क्योग रहीं क्या रही है कोर्स

हर उस ईसर्दनों में वरि **–ডিজীর গর** (स्वयस्थ्यो और शेवाही वब में हैं ! सब से पूछो । वरिवार भी करबोड या कर्जे का चार तो-के. बाजारी के. लगरों के आधावरक रते के किए इसरा वाम । इस बीपत में किस्के जोग श्रीम सकते से पत्नो 🌃 रायभक्त है या रावस क्का र बाहरी निवार बाज मी हो, होन हो, हींब मेख सवा को

सब में प्रकार ही मारत है। बालों दिवस नहीं है। नह दिवसना बरवा होगा। -हिलोप पग

वस्ते महत्र किर काते हैं । राक्षवानी | कासरी है । इसे बायने वासे फ्रास सहस्रे हैं। इसे उस में संबंध where he follow at some केल वा । वरिता, प्रति, त्रीवस का बहाससा प्रवास था। बीवन के वे चांव दल कहे थे। इन्हार्थ पांच शबद इस का नेता या। शारे देश का शास्त्रकार होता अन्य स्था भाग इसी किए हांदा को सम का के SACION SET SINT STI

> अधीजाको देवों का शब्द वृक्षा क्षांचा । इनका विद्यांक देवी विकास था। बार्स, दिवर, पासीक लोक्स सर्वोद्या, मालवका है। इनकी प्यार मा। में देशका थे। इर काश में गुरु थे। सारे देशी तुला थे। वेकन राज्य दस देश के दसीय से । m दोनो (क्यारों का श्रद्ध था। राक्य के पास आही व सर्वता सन्त-काड समस्ती क्षेत्रा हेका सरदार, रिकास के केन्स, राजाक बोध्य व्याची की भावार की । किन्तु समें के प्रशिक्ष सीराज्ञ it ar er pertan fem rugi की पांच पर विश्वय और अध्यारों की देशों ने बराख कर दिया भागपाद र्मात्त्वास के सामने सिंह न क्या । अन से से बन आस्तीय जशक

वयस है। मभी देश गुरशंशात्र

समय प्राप्ते वर सबने बाप के

समात की सेवा कौर सामंत्रनिय

कार्जी के बिद्य केरार कर है। बार्च

समात ने दक्षितें और पोनियों के

। सप बहुत कुछ किया। कारवा यह

बा कि उस के नेताओं में स्वाय की

एक प्रतिवद संस्था होते के साथ-साथ समाज

# श्रायं समाज श्रीर खाद्य संबट

सेक्ष संस्था भी है। प्रायः पार्थिक (वी सुरेश कन्न वेदानकार एम,ए,एक.टो.डी,बो, कामेख, गोर**क**प्र) संस्थार्थे अपने धर्म के रिवि रियाओं क्षीर क्षांडोरों की रका तथा उन वैश्री समात्र सेवी सत्या है में पाया दावने वालों के प्रति स्थित् हे लिए होती है। यस हे से प्रश्न स्थला पाईका हूं कि यहा क्या पर वनो हाँ मुस्क्रिम चीन, काशप इस सास संबद यह आपने क्रमाते इत्सामी स्मादि सत्वायें वे भागकी प्रविनिधि सरवाओं ने थमें के नाम पर अधिकार जानती सार्वदेशिक समा ने इस सोवा मी, **हैं** परन्तु समान सेची संस्थाओं का कोचा तो ब्रावंतवास ६ व्यविका क्टब्स इंडना ही नहीं होता। इन िनों ने क्या करने एकाया **वाय-**का क्ष्रीव्य यह भी होता है 🎚

वेशिक समा ने शराब-बन्धी करने का निरुप्त किया। काम वहा ब्रम्पक्ता था परन्त सता धनका ने श्रापडे इस झान्तोसन क प्रति वन्ति विवार्ड, स्था सार्वदशिक के बादेश क्षेड्रे चित्र क्या सकत है ? कात कर किसी सी क्लाबेसमाथ ने इस इस बोगों का और सरकार के कामरोबार के प्रति सम्बन्धा का शाबना अप और परार्थ की मावना प्रदर्शन किया ? तही किया । क्यों कविकारिकों का सकता से है कि

**१**0किस्ती।इस्त,वे सोग बनका पर पड़ने कि चार्यसमाञ्च के नेता पर्व प्रति-क्सपी पन्तेष्ठ विश्वर्ति हे स्वत्य हेते निधि-सरवाची ने इस साथ सक्ट बे। पर चाज कार्य समाध में क देनो ही सबस्वाचों से चयने नेताको का कथाव है। ऐसे नेताको को दर कर किया है स्थ धवने को देशन सानी भी का जो समाह के बार्च बर महें. द्यमण की सेवा कर मर्बे । वडी को शाब रहते वाली साथा है। सप वें बावने को शास्त्र कर दिशा है कारव दे वि स्थाय सार्थ समाज चन तकता की क्षत्र भी हमारे **की** प्राथि मन्द हो रही है।

नहा है। मैं बार्व प्रसास है क्यूका बाका के केवल करे-

र्शात कम हो गई। काव देश के सामने साम संबद सोध्य स्थ में उपस्थित है। काथ सक्ट है वा नहीं यह वो क्यादार जाते। परन्तु देश वें वानवा क सामने वह सस्या क्रम्थर है कि यह क्रमना मोजन **वै**से प्राप्त करें। उत्तर स्वेश के पूर्वीय किसी जिस को प्रपेक्त कारत धरकार भीर उत्तर अदेश धरकार शेलों ने रा कर रखा है बाब (शवी में स्रोग तहर तहर कर सीख होते का रहे है। वर्षि रोगार्थ से जनव है । बाबी हमने एक क्श्लब्द भी प्रत्य हो जाती हो शायद इयना पदाया स्थापे विकास का कि (जनना वेह मारव में देश होता क्षत्र नहीं होता जितका क्यान हो

रिका के बारत की दिया है और बार्स्ट जिया,स्वादा क्या दूसरे देशी से जो बेह' का रहा है वह इससे बाइस है। देशी उसारें गेड की बमो की बाद साधारण बनों के क्रम से बैटती सदी। **पर ह**में बाजने शर्वप्रका की विका होती है जो देश भोजन के सामने में इस क्टार इसरे राष्ट्रों पर निर्मर 🛚 स्दा वह बदनी लक्ष्मा की रक्ष इर सक्ता है और जिस देश की जनता सूख से तहन रही है क्या उस के साम ने भारत के विषय का

> साख बदावों हा हमारे आशारियों ने बाद सबद कर किया है। इस का मश्सव है कि साथ की दरवी इक्को वर्शी जिस्सी को सभी कर्ना गई है और इस प्रकार धार्वसमाज बा कार्य शरू हो कामा है कि वह बनता के परित्र निर्माख की बोर चनसर हो। रह सपने मारसंत्रीयन

देश में साद की कमी नहीं परत

ड़ारा मुस्ती अनक्ष में बात्मवित्वास धाप वहेंगे कि मार्थसमात्र पैश करे और बाब सच्च की साध संस्ट के प्रति क्या कर सकत प्रवृत्ति से रोके तथा बड़े अलग्र रव गा क्थ रक बात है भी सक से कारियों से जिये गतने को निकर-पक्षा बा शब्दा है। मैं इसका यह वाने का प्रवस्त हरे । वदि वह इन रकर ट'वा कि साथ संबद्ध का इस कार्वों को नहीं करता है से साथ-बर्द वार्वसमात्र हो नहीं सुव समाय क्य-सेवा के कार्य से दर रहा है को बहु सीखा अपने अविध्य होगा। वर्षि वह अनवा की सम-दे विका में निर्विषठ नहीं हो खाओं पर शोचका की नहीं वो मक्ती। बाक संबद का सम्बद इसकी प्रयोगिक सन्देव क ताच दी दमी से हैं। परन्त बना विचय क्य शायेखे । इस परित्र सपाय रेश में साथ की क्यी दियांच भीर अञ्चलम के दूर बर दे

क्षे काशा सरकार के व्यक्तिकारियाँ

वे वही ध्र दाते और यात

लेक्ड बनाव क्या कर्यु क्या

### सभा प्रधान विसिपल रसाराम जी एम.ए. को वेद क्वाराय धैलिया भेंटें

काले प्रदेशिक बाह्यस्था के प्रधान वयोग्रित वं, रक्तशम भी वय<sub>ा</sub>रवाय, का केल के बार्च बहार रहास्त्रम करना कार्य समाज गहराहे। मध्यस टाइनको फोर से पारसी क्ष्में की बेरिया मेंट की सर्वे

वैसी सरकार निर्मित संस्थाको है बती बर सब्बे । इसकी बासा से रस पाउँगमात्र कीर्र देवस कार्य सप्राह से कर प्रथमें हैं। अकर स्वामी द्यानस् के पश्चित्रान के दिन धन सेवा की भावना से इमें भी साथ सच्ट चाहि सब-काओं का प्रमुखने का प्रश्त जेवा चाहिए। वहि इसने इस विशा से कहम बहावा तो हमारो छप्ती-भिता कर हो जाएगी वह सन की यांग है । शेशक्ती पर कर विचयना झालावड है।

## आर्य मज्जन आर्य-जगत के ग्राहक बने श्रोगें को बनारों

## शोक समावार

कार्य समाज माजवीय स्थार के प्रधान को बसराम को न्यासक वो कियो यास से असराध्य में बोसार वे ४-१०-३४ को क्रमानक स्कारीय हो गया परवास्था से प्रार्थका है कि बनकी परित्र बारका हो सरपति शहन करें राहे सम्बन्धी और परिवार के कोंद्र को इस महान विशेष में ट्राफी ... है इन को सहन शीवका देवें ।

कार्यसमाज मात्रपांच नगर. स, बार; हरेश 200

प्रस्व संशासन कीर व्यक्ति

## आर्थ संस्कृति के रजक

### (मे॰-श्री टा॰ वर्षदेव जी वर्मसाला (कांगडा) 3/2000/01/2010/01/2010/01/2010/01/2010/01/2010/01/2010/01/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/2010/201

ufte all cigfe bil serig ५ है। वहिचस में दुशन से रोम कीर रोख से बोहन बीर अमेरिका अंक्ष्मींड की बारा जरन के मार्च के वर वेशन्त की सहर चनाई। इस नर्ताः। कुमान स्त्रीर होना कित अवः। साम २ जनभी संस्कृति सी बिट सर्हे। बोरप बृतानी संस्कृति धी चुली सप से नकत ब्याज तक न क्य सहा। वर्षांप महिन्ह समर्थि श्रद क्षी, परन्तु कालमा को मूल श्या । इस ब्रिप ब्राप्त संसार में क्रशांति है । परन्तु आस्त की चैदिक संस्कृति काल भी रिवर है वर्ष छन्। स्थित रहेग्छै। इमारी स्थ्यता के शासाद की ब्रॉनकार क्षमर वेद इतन पर है। इस में वर्षानवर, रशंन सारत, सूत्र प्रत्य, · स्तुब्दि सीर काव्य क्ष्य है। शासक्या, बहामसद, स्था सरित-क्षार, इविस्साट आंत्रदास, चाचनरः, भवमृति, शार्तन खावि । सहा वे मन्थ इसे वार्मिक पेरवा देते हैं, वहां भीतिकवान से मी स्रोधा क्रमूता नही रखते। इस क्रिय इसकी सहानता है। इस क्रित्य सम्बन्धा, व्या, स्वाच्याय, दाव पूरक बरते हुए ब्रार्स्मावद् पनने के बार्स की बोर वाते हैं। बारव . अस्ति की सहस्रधाराये हैं। बसे। देन का शाद नहीं करना । बाक्षवक्ष में क्लि कर अपनी

कांत्र स्ट्रेशको ने इसारी सुन्दर अवस्था को महिलामेट कर दिया । कार से अपन इमारे क्यों के इसाय में मौक दिया। फिर मी क्से ब्रोप न कर सके। क्से १ आरत में समय २ पर विश्वतिया करण औं विन्होंने सपने क्ष त्यान से अस्ति श्याम किया । वह स्टेम Month & stem gl at gein वस से विमुख हो कर नियु करते न्ते स्व। क्षेत्र स्वाव र पर मुख कार्यों के श्रीम पहाई शर्मा की। की ही शंबराशन को समयन का । अन्त्रेत्रे प्रस्ताव को करेंद्र शास्त्र करका दमकी पूजा है । बावी है। इसका व्यावस्त्र बना

के बाद सन्त राशमुक्त शमानन्त. सी हार चन्द्र रा करी झाल का रीका स त सबहें जिर बढ़ रहा है। शासमायां, क्वीर नांबद थी ते को प्रशब है गहहान सोव में स्थान श्रेम व सरित का श्रव विकास । ब्स्यः है । इसमे पुरुषों के शिए श्रो निवर्को को वस दिया। तब परिवर **शान सदस्ता लोज दिये पर** स्त्रो से भारतीय संस्कृति पर प्राच्यात बार्ति के ब्रिय बना करके पाप इमा तो महर्षि स्वाभन प्यारे। क्या है । सब परमात्या की मन्दर व शहिर होती ब्रह्मार क्रमर सन्तान हैं। मक्ष हो त्वासी वे बाजमहाँ से संस्थि ही स्था बी बा, जिनबी रुपा से रिज़नों के की। फिला प्रकार से ! इसा ने बिरमी विद्याद्य दल्ह हार सुक राषान्य र मान श्री शर्तिकों को सबता शवा । स्वामी श्री दाश्च विवाह वे इंड देव बना बर सब ध्रह धन वे बोर विरोधी वे । सारक्कांसकों से वर्ध्यक्र दिख । मधुरा व सोमशब बहा बरते ये 🏗 चाप शासन कैने शान करोगे । क्योंकि व्याप के विशास मन्दिर ग्रेंटकर विव । स्वार्थः गृह्वे-मृत्त्रियों की शादी कर व निवेश वा न सन्दारो दिख्यसारा । यद उस सन्तान देश करने के कारण बने क्ष अस्तावना विकासके। गाँउकार हो । सन्द्रम धीर एह रोजों समान मूर्ति से बड़ा है। मूर्ति को नहीं रेंडा करते हैं। परश्त क्यकेशस *स*न्तान व्यक्ति मुर्विकार को क्रपनामो । ेदा इसते हैं पर सन्ताव सन्तवि विश्व में य इसम्बे बरन् विश्वपति देश सरके उसे बनाते हैं । उसे व्हम शिक्षा, व्हम संस्थार तथा वे बनो। क्षम पंतर्गीतक देह 📲 होहैत्या वो कारे गुर्खों को पनित्र मानवारं देवर इंबा करते हैं। स्मरक को । इसरे पूर्वत पश

तत के गुक्रों को क्रफनाना क्या जन है। बेद से बढ़ाइर क्षीर कोई प्रन्य नहीं। वेर 🎚 भनदि सर्व का से शिक्षा बहुबा करना ही सचना कोत है । इससिय येथ पदी-सात है। यसपा की बड़ी शारीरिक रहाको । वेदा<u>तक</u>ुस पन्थों का सम्बंधि होती है वहाँ बावसिक पुत्र शाम्बाव हमो । देशें को पढने के की होते हैं। स्पीर के वह हो बिर काउसह श्रवार की विकास बाधा है परन्तु सन की विपार सीस्रो । बेद से स्वार्त शक्त बरो । चारा इस्यु के बाद भी निमस हो इसदे प्रदाश से दिशा को आसी-क्ट जवादिव दोवी रहती है। इम क्रियक्रो । बद्द लागी वीकी क्षंत्रस, कमार, गीतम सावि परवरिष्या 💷 मुवियों के शरीर नहीं देख सकते बरकी बाच ही प्यारी है, वेष्ड फिन्दु बत के तालों इस्स कर वे है प्रवित्र है। दूसरों को बाका पड़ी रकेर कर बक्ते हैं। खानी व अस्त पर ६८६ दास न वर्गे। ने श्वकाषा कि सुठा वर्षक गांद ब्रार्व माथा क्रमात्मा की पवित्र बर क्रो । रिस्तों की स्वर्गी विद्या

वेद परमारना का सच्चा शान

है है अपने कोईसों के प्रधान गमा है। एक जनका रोहो त कारी बाका की इंट 'क्ट्री । 'यह क्षकर निकास हो, तो सारा व्यक्त क्षे बादमा । ऐसा ग्रुरवा हुमह श्री रस्य है । इनके पहन-पादन व्यास्त्य दिनी वी वाषा का नहीं है। ध्यपनी नाका के विना स्वराध्य या नग कर्य है । अपनी देखें . क्सीको इंकास्तो । स्वतंत्री सी ने गुक्सवी होते हर, भी हिन्दी की व्यस्तवा । स्वोकि इस**र्वे** शक् शाका होने के गुज हैं। इसका करा मेच सामी जी ध्रे है। साम इमें इन सब बाओं का संदर्भ देखा होगा । भारत की कनेक सुन्ते अस्तर्व के रक्षण प्रस महर्षि के प्रश धर चसने पकाने से ही झात्र का ब्रह्मान्त्र (वस्त्र सान्त्रिक्षान् वस् वर सकेगा। यह काम **का**र्जे की करना है। संसार मार्च संसात की कोर देख रहा है।

### सभा को वेद प्रवासर्थ धन कार्यसमाम समयवर करमास११/-

- संसोधका (H.P.) ४१/-श्रेषनगर बरनास १०१/-
  - बांदल (रोहतक) ८०/-व्यवाहर (का. वि.)
  - क्रवास १०८ सक्त वाबार शियस 20214
    - मानक टीन ग्रहशाली 222/
  - ., · क्वासाट (H.P.)१०१/-... इसेसी (डिसार) 188/-
  - , eine 120/-व्यापाससासा सोनीक 29k/-काः सः शस्तुः 3084 ... भोडस टीन शतीपत १६०/- .
  - .. मिचंपर (हिसार) 42/-, समकाना (संगरूर) 820/-,, गारमीर (हिसार) 44/-मेकी सुरवन (रो(वध) **cm/-**30/-,, वरेटा बंडी (इसार) .. बबाबदरा दरनाव 2201-

**श्रावंशमांत्र द्वा**लपुरा **क्रांता**त भा मास्किरस्य वहे ही सनारोड **से** समावा गवा । नशं पर शी. ए. थी. बालेज फार वोमेन, बार्च सार्ध स्क्रस टी.१.थी. लूक, बनायाक्षक बीधी वही २ शानदार संस्थार्थ है। कासे का बसस तो कमात का अ इकारों आजी सामाओं के सब बोपों भीर वीरवा यरे तीवों से सारा नगर ध्वतित हो दता था । **रा**.मधेशवास जी प्रधान, हो, बा. सामधन की मन्दी, तो, वा, रामधन वी क्यली, प्रिसियल औ. मि. वेजारामधी वर्ड ची. हुस्यचन्द बी. भागीरक क्रमार जी, एं. विश्वम्बरद्ध भी बादि समाज के काराही संस्थानी के विशेष उत्सास क्ष राथ देसने काता था। वान्ते में ति. स्क्राराम की यम. यू. समा क्यान हु'बर सुकसास जी कार्य हुसांकर, ठा. समरक्षिद् जी आर्थ **र्व**यद, रं. तिओस्थन्द्र शास्त्री, शे क्लमचन्द् जी शरर, मान्त स्वामी **बैद**र्शन थी. **रं. राज**राख सदन मोइन की चिसटासंबदी कार्य वमारे । अस्ता इर प्रकार से क्यम बद्दा । सभा करे नेव शकार के लिए निसिधक स्थाराम की यस. ए. वी

वक विन स्त्री समाज का सहर के व्यपने सुन्द सीव्द में जनस **ह्या** । पहित्र सत्यावती जी मध्यासी के प्रसाह से वहां की महिनों में वही जामति है। भारी करवाद है। श्रीसमानों को प्रदेशा Ameri & c

**से**वा से २४०) ह. मेंट किए

कर ।

कार्वसमाज नवा वाजार विकास को अस्ते का तो स्वा **ब्रह**मा । वपस्थिति डेसक्ट तो सन **ब्यास प**क्षाः तपत्थी श्री० शिव करण भी प्रधान, नेत्र विशेषक्र भी. **ब्य**ः गिरबारी बी, भी पं+ देशवा<u>श्</u>

## बरनाल. ग्रहमांव, भिवानी के उत्सव पि॰ रहेरराम जी सभा प्रधान को वैक्रियां **भें**ट

दलाहे तथा उस्सास का उमस्ता कथ

MARKET STREET

कानशक महार्शकों के शतक कार्य को देखकर सारे कवाई देशे ये.। संकीर्टन निराक्षा था । सम्बद्ध ने नगर को अध्यन दे दिशा। अस्था का सागर ही समझ्वा वर । इसमें **ला० भीषम जी. विशिषता देवराज** भी गुष्या द्वानव हालेख हिसार, पं० बरारी सास थी शास्त्री ब्राये-मुसापित हिसार, वं० त्रिकोकसन्द साम्बी त्या. वेबहद थी, पं० राज-पास सदन भी विवटा सरहती पं॰ प्रसुरकास इरीश की संस्की रोडक आदि पदारे चनाथासय

के श्वाचों ने तथा क्लमीवाई' सार्च-कर्मा पाठमाळा श्री करिएको से भी कमाल वर दिया, देकियों का . इरसाइ ग्रारी वा । बाँइन लार्देश जी मुख्याम्बापिका एक्बीवर्स कृत्य स्टब ने स्टब इस्स प्रसन्त्रा बह-योग दिवा । मार्ग स्वय के फांत-रियत सभा को १-१) रू० वेदमदार रथा १४) र० ब्यार बदल् का पनदा में से स्कूल का कावाकश्य हो तथा है। १६६० तक मिशाः। यह पहला समाज है दिसने दो वर्षों हा काराभी परदा मी दिया कर्याल ११६७ सक् मा । भी शिवदाता औ . १ आस्त्र का सारा पाँच वार ही समाज के कार्य में समा बा । मान्य शास्त्री देशकाद की दम. ए. तो समाद के साभ है। सक्डो बयाई । बार्थ-समात्र मादल टाउन गुडगांव का बारता भी बना ही शानदार बा ( भी महाराय मुलपन्द जी तो संयाज की स्थानी में श्री हुए हैं। मन्त्री जो व सारे श्रेमी हैं। समा हे मान्कार दशन प्रितीयस रक्षाराम बी एस. व. यस. यस. व. वहां यकारे ।

सुमीब की मन्त्री कोने से किए। भी पक्षरे। अनवा ने धर्म सरिवा यें शब स्थान दिया । बमतपान मी किया। समाज की कोर से सभा के वेदाश्वार में माञ्चवर ६० रसाराम

थी प्रवास की सेश में वैश्वी ऑल्बर सम्बातित किसा गया । वस्ताः हर र्दशा में सफत रहा। समात्र का स्तरा पश्चिम क्<sub>वा</sub> श्रेत्री क्सामी है।

चार्य हाई स्कूल नाभा में

मिशानी व डिसार से 'डोर्ट इप मैं तथा पं. शब पास सदनसोहर विवटा संदक्षी क्यार के किए चार्व समाब साथा कार्य हाई स्टब में कारे । तारः तो सुद्ध के अवा-वियों में वदा रात को बार्य समाप्र कातिज विभाग की कोर से सक्त के विशास होता में प्रकार होता था। वटां लाख में प्रय से दोग्ता, क्रम्भव.

सादनी को सकीव मूर्वि थी ला. देख राज भी आदिका एक, ए. हुस्थाच्यापक बन धर आये हैं तब कावियां में होते द्वय इन्होंने वहां **श्ट्रेस व समाय की जो शागदार** सेवादी जिल्ही स्थंता की बाये योडी है । बारा परिशार ही समाज व वर्म के रंग में रंग है। मामा या स्रोत व सवाक ठ दे हो गरे है। समाज भी सूप पराने लगा है। समात्र के बन्दी ही शरहाताव जी सच्छुच समाज के दीवाने हैं। बहा प्रेम है। भी दं पर्स देव बी शास्त्री व्यवसी समा की प्रसिद्ध नंदली एं. राजपाक जी के क्षे भागा है। समाज के सम्भ ही है। दोनों समझ सुव प्रकार होवा रहा। यंडसी के प्रसाप शाखी सहज होते वेरप्रपास काविष्ठाता प**ं**० **सुबी**राम वे । एकस व समाज का काश देख भी रांची एम. र., वी रामनाथ वी रामनी पं॰ इवास्थित जी कर प्रमुखा है। में देखान जी

म स्वाध्यायायक तथा दंत के सहयोगी क्शाह से कान करते हैं। की देवनास्टर कॉटवा जो, ए. घस के वो शाली, मन्त्रो परमानन्द औ की निमूर्ति कार्य को मागे से वह वही है। यानबीया मादा की के यहाँ बहा कार्य किया है। सनवक काम करने वासी हैं। समात के त्रवान भी बचा की को मगवान पर्सी स्वास्थ्य देवें । वेह प्रकार व- मार्ग ज्यव में १६) इ. विक्रे

## वर्म-शिक्षा पुरस्कार प्रति-योगिता परीचा १६६८

''वार्य विशासभा, सी.य.की. काद्वेत प्रकृत कर्गसभा विक शाम मार्ग, नई दिस्सी के समावधान में हम वर्ष धर्मेशका पुरस्कार प्रति-बोर्गाता वर्शमा कार विकास १६६४ को होनी निश्चित हुई है. क्षक स्था से सम्बन्धिक सभी शिककासय ६टी से ११वी कहा अद सर्वश्रम चाट-माट सात्र इस परीका में भेजने के अधिकारी हैं। प्रदेश एवं निकसानकृत संस्थाओं के प्रधानाध्यापकों हारा १४ नमन्त्रह १६६४ तक रक सवा के कार्याक्रक में पहेंच जाने चर्राहरें। प्रत्येक भैं सी में प्रथम काने वासे काठ २ वरी एवंदियों को सभा की चीर की नकर पुरस्कार व सफल अहने वाले दाओं को असारायत प्रदान किले वाते हैं ।

समा से सम्बन्धित सभी स्नाता-क्वों में परिश्व विस्तृत्व व वर्मीशिका देत ही. ए. वी. कालेज प्रवृत्वका समा द्वारा कायोजित पाउविधि के जनसार दर्ग-शिका पुरवकों को पदाने का प्रकृत्व किया बाता है... वर्वाभिक्षाची सध्यक इस नैतिक व वर्माशका से साम उठाने के fash करनी स्मर्शानी को इन संस्थाको में प्रदेश करा अपने कराव का पासम काने की क्षण करें।"

निवेदच--वेदराज सदासक व्यक्तितम् स्ववर्धमा

## महर्षि दयानन्द का जाड़ सिर पर चढ़कर बोलने लगा

(ले॰-श्रो विशेदास, श्री हानी जमृतसर)

\*\*\*\*

-(दीवाली संस एवड ४३ से कारी) तत्त पक्ष्यं सम्बद्धाय निष्ठणं **ब्रिल्स शोकितम् । ब्रवसकः पुरु**प

ंखाभमा : रायवसवीत ! क्राकोध्वा स्रोत सर्व ४६ १लोच २७ **अ**र्थात-- श्रुत विकार नाग करने वाले उस सजकन्द की भक्षी

- **११,**जिलं पढा हक्या जानकर सर्वस्थ . जे प्रकृतिक भी स्थलाण की से 9811

१०. द्वाय सर्वः समस्ताङ्गः गृदः . कृष्णा सूची समा। देवता देव संकाम च तस्य क्याओकस्य ।। क्रमाधा कास्ट समे १६ इसोच २०

श्चर्थात्—यह काही जिल्ले बासा गत्रकृष् को विगडे हर सभी वांगों दे ठीक बरने वाला है. मेरे 🗷 र । सम्पूत्तः एका दिवा गया है । कान काप बास्तु देववाओं का वजन कीकिये, आप इस कार्थ में 5शल हैं ।

११. किउन्त संबंदासाश्य गर्गा - अपन्याभिता नदीय् । वस युक्ता नदी . रहा सीत मुख फतारानाः ॥

अयोज्या कांड समें दश दसोक ज क्रवीत्-एमी मन्साइ वदी की रचा करते हुए गंगा के बट पर ही सदे रहें और नाथ पर रखे हर फल मूल आदि का ही ब्याहार क्रके बाज की रात विवाप । s. ब्रिन्न शोग्रितम' क्री व्यवपार

इस प्रकार है—'दिस्य शोखित रकत विद्धार सर्व शेल जात देन सः तम । -गबक्त रोग विकार नाशक है। न्यह चेविक में प्रसिद्ध है । सदनपास विषरत के 'बट दोवादि कुन्त इन्ता' क्षावि वचन से भी यह जर्ज टाच -स्या वह व्यादि रचत विद्वार का mas t :

.१०. 'समसाङ्गः'की स्पृत्वतियो श्चवक्ती चाडिये—'सम्बग सर्वाचे कासानि अनुसनि वेज सः ।

१२. इत्युवरवीयावनं एक मत्तव-मासे वर्णन का श्रांधकश्रम सर्व नियावाधियांत स्थाः ॥

सर्थात-वी ६३ ६४ तिवार राज गढ 'मलदरही' (मिन्नी) पत के मुद्दे क्यीर २.यू क्यादि मेंट की सामने जेस्र भारत के पास शवा।

१३. सर्व सरावाः विकत वादसं थ बुमुद्धिताः । मांगानि च मेघ्वानि भवयन्तां को विद्याद्वि ॥

समोध्या कारह सर्व ६१ रक्षोड ३२ व्यर्थत्-(वे बरत के सीनकों को पुकार-पुकार कर कहती भी)---'सब हा पान दरने ब के सोगी । तो वह मञ्-पान कर सरे । तम वे से जिन्हें मूख जारी हो वे सब

सोग वह स्वीर साझो । धीर वरण

पक्षित्र पुर्शों के गुरे प्रकार है, इसका व्यक्तिम्ब हुने । जिन्नदी जो इच्छा हों यही मोजन करो। १४. कप्यो सेरेस पुर्सास्य सह मीपनर्यशेषाः। प्रतयः । पटरेश्यापि

सार्ग मावर श्रीक्षार्टः ॥ **अ**योज्या करण सर्ग ६२ व्होस ३०

ज्ञर्थात — भरत की सेना में कार हर निवाद साहि जिस्त वर्ग के लोगों की लॉट के किए कहां मध से भरी हुई पावहियां १९८ हो नई थी, बया दलके दहाँ पर वर्षे **ा** विदर (इत्दर) में पदान यह बुग, बोर और सुगों के स्वच्छ मोख भी डेर के देर रख दिए पाठक वृत्यु **; देखा धा**पने कि

देव दवानन्द का जाद केंसे काम कर गक्ष है यह दशी का चमरकार है कि-

'जरस्वरडी' खर्यात् मित्री का शायक है। 'बलवरवी' इस शन्द का ६६ कांग 'प्राप्त रे हैं, क्रम: ताम के वक श्रीत के बहुबा से समार्थ नाथ का महत्त्व किया गया है।

१२. वर्डा मूल में 'मलव' रुख ध्रेशीय -पाठ: साम सम्भाग सर

वांस सम्र—कतो का गुग्न और सम मतक्षमांस मध्यि—शिक्षो प्रश्न ह मुद्दे कौर वशु गांसानि सुमेध्वावि---परम पवित्र फतों के गृहे कन राये हें और श्लाख सदया १४ में जहां

वृंशा 'स्त्री'—यत्रक्रमञ्जूष्या सूरी—

कारी श्वितक वासा राजकन्य सिन्न

स्तेव्यक-१स्त विकार दर स्थाने काक्षा

परिवर्णन नहीं किया बालका, वहां 'यरव की सेवा में कार्व हुए विवादादि निम्त वर्ग के होगी की वर्णि के कियें' के शबद क्या कर सूग मोर चौर इस्कट के मांस तथा शराव से नरी हुई बावड़ियों से झुटकारा

प्राप्त करने का कान किया गया है। बोलो बेरोद्धारक, वह प्रसारक, श्रममून निवारक, जरान् विस्तारक धगवान द्वानन्द ही जब ।

ब्रह्मयज्ञ संध्या प्रसारक ग्रहर्षि दयानन्द की जय

बास्हरा कॉनच्या कारकीपेवा सार्व (इस्ट २ का रोब)

११. ६७१करमेतां क जगन व्याद्वति पूर्वस्य । सम्प्योर्वेद विद वियो वेद प्रस्वेत दुस्वते-वर्षात्—स्वाहति (मृ:, स्व:,

लः) के साथ इस कक्षर गावती का शतः साथं—दोशें समय—सम्बदा काल में बर करने वाले माछन की सक्रम देव पाउ का फात बास्त हाबा है।

१२. पूर्व सन्तवा वर्शकाचेत भाविज्ञेम बंदरोनात । पविषमा त समासीनः सम्बग्ध विमादनारः वस २--१८१

के सूर्वीदय पंतरत और शार्व कास सम्प्रता कर के तारे दिकाई देते त्र गावत्रो का जप बर्मा पाहिये।

सार्व प्रांत्रक को मन्द्रकः

श्रव्यक्तिस्य वयासते नाथं वेदमधी 'करायट सबसे ग'-सडसों देश क्षतंत्र वदार्थ, 'शांस अधीवन' --करका करनो तारयन्ति च अ १४. बाह्या जास प्राचेश रेऽपि राक्कीय बाग से रहित पूर्णा वस्त्र धीर सम्ब देशेय मांच सबस्य दा

पुरुवा विषय्द्रशः 🎼 पुनर्षस्य संग्ले हे निस्पर्धेबोधनिष्ठते () १४. सन्ध्यामुपासते ये बे

निःवमेर क्रिमोचनाः ते चाठि वर शार्व स अध्य जोके न संग्रह : ॥ महाभारत बाज्यसेषिक वर्षे

व विद्या के प्रति भी कम्मो क्या ध्यर्थात्—यो त्रतिदिन शकः-क्षत होनों सक्क-विविधन सन्ध्वोपासम्। अस्ते है, वेशमक्

नीक का सदारा सेकर इस संसार समा से स्वयं भी तर जाते हैं और उमरों को भी कर देते हैं। हे वॉर्थाव्डर ! नाम साथ वे

माराया भी फाय हैं, फिर कम विमों दा दशना हो क्या जो होतें समध मिल सन्ध्दीयासना करते हैं, वे विस्स-देह बड़ा लोक को प्राप्त 曹餘重

सम्बद्धा के मीच क्राप्त १६. वलको नार को पैका मध्यमालय सारदा दनिष्ट। सुद सहितात्रातः सन्ध्या क्रिया स्मर्था **इत्यास्यं सहितः गन्दया बु**ख

सन्धा त्रिधा स्टबः ॥ देवी भागवत ११-१६-४, ४० क्रवांग-वारों की हाया में की जाने वासी सन्धा उत्तम, वारों 🕏 लुक्त होने पर सध्यक्ष और सुरवेरिय पर विकास शहर सम्बा के वे तीय

gest 🕏 :

श्चर्य समाज शोलापर

. भी अभ्यादास जी माईगोसी . १९वन्त्री वार्व समात्र शोसापुर की साता भी के निधन पर भी परदेशी जी के पिता भी भी सत्य पर व सुवसिद्ध मराठी साहित्यकार माबा वारेरकर जी के जियन पर आर्थ समाज से ओह प्रसाव पारिस किया ।

श्री क्रोडेनकार बाय जी कम्बे ने बार्वसमात शोलापुर को दो पंखे दान हिये, भी रमेश जी शोकापुर ने एक पेका दिया। इन दानी सहा-तवादों दा धन्वपार दिया गरा । राकेल विशास स्पयन्त्री समास

# आशा की तीसरी करण

(से॰पं. राम विचार वो उपाचार्व इ. बाह्य महाविकासर, क्रियार WYCHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGICHOLOGI

यमें के त्रवार कार्य को बावा

का भी भरतत श्रवता कोंने। हा

बादद निरुपय है कि रेडिक का

के प्रकार कीय में मैं शब्दो समात

विराई में उन्ह के प्रतिबंदत

भेड बापार्थ ज्ञान परदक्षी व्यां राष् । रहां था वा विकास के सपार्थत में महाविद्यास्थ परर्गत में वे प्रविष्ट हुए । विश्वास्त्रव सर्वागीन कमार्थ कर रहा है। सन वें हो बचंतक दिखा शक्त करते के तप. त्याम कौर प्रक्रमार्थ वे रहें। शिका-दश्या में क्योंके रिनेक्साहिता, धनसायन प्रजयन परिवास की प्रतेष्य की को बेरक है और मित्रम बहुता का वरिषय है प्रकारार्थ मेला सका र वे. जोज कर करने ब्राप को दुश गुक्कों है की वेरस में सुकास सप से वैदिक वर्ष के इच्छा दा वें बंदात है। पर्श्वकृत विदा। सपनी र्यक्त हो भीर विकासित काते हे. किए.से क्टोने महत्त्वकर में हो हूँ को क परिवाका वें शासी कीवा की ओ प्रधानक करावा है । Arman वैकारी में संस्था रहे। wouth League के जान ने

एक संबद्धन की भी स्वापना की है। विषाद्य के इसरे लातक ही ८ देश बना भी को भी बदार⊯ में क्यानकीय के किया मेजा तका भा । दे भी बार्च अंतिर्मात सम सन्य रक्षिक साधीन देखिक वर्ज में प्रवार कर्य को कर रहे हैं।

बीचन को होज कर ह'। कन्होंने ११ सम्तरभर को विश्वासय के बयना कार्व क्षेत्र शोबी को बताना रीसरे स्थापक की वेक सोविस मसाद की विदास निकासी हैं। वे निव्यत किया है क्योंकि शंबी के मन्दर ईक्षाई पावरियों ने बहत कवि होत. समाज सेता की प्रचारासम्बद्ध भावनाको से कोल उथय बना स्ता है। देसे बेत क प्रोत हैं। वैदिक प्रमं के मिळांती निवायत ही सिद्ध कर रहा है वि के निरोध ज्ञान के लिए वे निराद वे किस साइस के व्यक्ति है। से निवसे थे। अपने उद्देश की बीयन में क्या करना संक्षते हैं। पूर्णि के किए वे महोब महात्मा मानन्द स्वामी की द्वारर संस्थार्थक **व्यथेसङ विश्वासन, स्पोतन अ** प्रसाहक्यन किया भीर हुन कार्सी-शिका त्राव करते रहे। तरकवात नार दिसा । ईस्कर कुमा करें वाकि क्टोने कार्य समाज के सर्वापक ने व्यवने वहील में वर्त सर्वत विश्वान, वार्टिक दिलोमांश श्रीकृष सच्छ हो । र्थ. असर लिख की से भी कलकता में वैदिक धर्म से शिद्धांतों के श्रानोपार्वन का सबक्द प्राप्त किया। यह दन कासी अध्यक्ष

थी मास्टर शातमाराम जी मृत्य 1.65 N. para व्यव सक्ति को रुकोंने इस कामबर से विशेष अबदेव **बदर्ज आत्माराम** पद बाभ बढावा । विकास १६६१ वे सापार्थ की उन्हें दाकाने हे

ये प्रस स्वास सी करते के साम

पर की पानी शब की व पोक्कर सिंह थी ने गेरिक क्रिक से बराजा । जनके का काल क्रिकेट WALL THE MAN 1 AND ADDRESS. व्य प्रव दक्तत भी ने २४/- केंद्र तका है कि कह को की 2/- वोसी समा**य थे**। शम विश् ।

शहेरिक समा के बढ़ोक्देशक वी रं. कम सेंग की कावे क्रिकेट ने शर्दका सें वी विशेष सरियन वे पर किर काल के पहचात स्व रलते हैं। विदार में बड़ी वे वैदिय वीन नेश्वितवा पत्र दे रूप हें दस्क धेश है। इसर्वेद्धशत की क्षोप से सी दरेंगे : वहां हैक्ट सर के क्रिके म्ब ह्यास भी ह ं, धन्द सैन भी को बहुत क्याई हो परम पिता

समामा दोनों नक्षकों हो शर्प व erar ež i दयासन्द्रं सान्वेशस

महाराज में इसाइका ने सास वर साक्ष्यका किया है और मोत्रे मोसे डिन्डुमों को स्रोम क्यादि है का इंसाई इस रहे हैं। बाल इ'विया रदामन्द साल्वेशन मिशन रोडकाकारे मध्ये कारेशक संबं कस वी कार्य को वहां प्रचरार्य थेव रिया है। ब्यासा है कि वहां के हिन्द भीर कार्य सवाजी का बे

राम बास प्रथम विरात चार्य समाज वसफसराय (श्रीन पार्क नई दिल्ली का जनाव

परान्यस सामोग हेंगे ।

कार्य, अस्य गरी —ही साविकारण वी मीवम, कर्प का संबी- हो उस कुन्य वी शतकी, वी मशकीर दिंश वी, बोक्जव -वी स्थापन के कारता, सहायस कोपनाथ-क

> গ্ৰহৰ ৰ'মান্তি-শীৰতি কুম্বা दृष्टरास करते<u>।</u> सदस्य-की क्रोस जब वी राषक विशेषक—को केर शक्ष वी कला भी प्लारे कता वी वमंश् भी एस. ही, पारहे :

ररेम्द्र **इयार की पारहे**, पुरस्कारक

ं. बी की देशी जी भावें तब समाहः कर्मियां के अन्त्राची इस बुद्धमध्या थे. बेका राम की कार्य समाज के कारों में रात किय म्ब **सहते हैं** कर के किसोग के आई समाय को मार्थ हानि हुई है।

परम पिता वसु दिवसण कारना को सद्भगित प्रदान करें। पूछ्य एं. बी को चेर्द तथा सामित तथान को । इसी प्रकार जांचे रुक्त नामा है. भी सोब प्रस्ताव पारित हका ।

वंत्री कार्च स्थाय करोब विस्तात

क्र विका इंदर्शन विस्तान

पुत्र व प्रचातक भी क्रवोजराज जी कान जानेतिक प्रतिस्थित क्ष्मा चेताल सावन्यर इत्ता नीर जिल्लान हो स. विकार होता काल्यान को स्राणिक मानंबनश्च कार्यासन महात्या हं प्रशास महत्व निवद कथाती नामान्यः राहर से स्वतितित मानंबर-च्याचे आवेतिक अविनिध स्था पंतपस



**भार्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसमा पंजाब जा**लन्यः का नाप्तादिक सुन्तर्गत्रः। देखीयोग म० ६०३४

Reed, No. P. 121

एक प्रांत का सुरुव १३ 📑 वैसे

14.11-64 वारिक साथा । स्पर्ध

वर्ष २४ सक् ४४)

३० आस्थित २०२१ रविधार ...दयानन्दान्त १४०- ४३ नवस्वर १९६४ (नार 'प्रादेशिक' जासम्पर

### वेद सक्तयः इन्द्रमभिद्रगायत

हे भनुष्यो ! इन्द्र का सारे जंगत के स्थानी अस्तरात का क्रि-⊩कीवाति वटा भर सन से ध्यावर-गावन हरे। सानव जीक्स शक्य पत. मार्च उसी धर**ा**शी का सावन करने उही : जगतपति को न मुली।

### म त्वा ममत्त

े हे मानद ! वह परमान्या रवानुष्य हो समत्त्राजन्य मे स्क्री दश्च दहीं की दर कार्क सवा ससी चना देवे। शीवन में सदा कानन्द ही कानन्द शिलवा रहे । भागन्य से बार्नर ∏ सिक्षे ।

### वाजे वाजे हवामहे हे हेब प्रभी। इस आपके

सदत साएंकी बाने वार्क हर बसकाती हरस कार्य में यह में, प्रत्येक स्थान स्वीत समय में पुकारते हैं, मुखाने हैं, बायबा स्थात करते हैं। नावक मानते हैं। स देव से

धिष्यता—श्री संतोषशज

### भाग्य भरोने बठे रहना मानव मन का अन हैं, बरना इस द्रान्या के अन्दर कौन किमीने कय है। रद्र रह कर कड़ता है कोई अन्तर मन में बेठा, रुको नहीं तम बढ़ते जानो चन ठ ६ दम मे दम है।।



द्धेम्प्रज यनिवसिटी इंग्लैंड के विद्यार्थी पं॰ जवाहरताल जी नेहरू

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

## ऋषि दर्शन एकः म्होत् योग्यः

वर्श एक प्रशेषकर सक्सी लाति वं बोस्य है। सबको उसी ची ही लगि कानी नगरिय । उसके 'यहा प्रकृति के प्रदाशी की सानि करेशा सलक्ष्मा का मारी भाषमान है वेतम पर-नेहकर की श्रृति करी।

## **ल्पासनायोग्योऽ**हित

वड्डी परमदेवड्डी व्यासना के योग्य हैं। इस वसके समत पुत्र 🖁। उमीधी गोद में बैठें इसके पास बर्डें। प्रकृति के पास वो बहुत-बहुत पहुले हैं पर उस जगरीश के पास वैठने से ही प्रश्न र्राप्रदेशा र

### ममाश्रियत् योग्यः सोगो । उद्योग साम्य सो.

सहारः एकडो । श्रीवन से सही श्मुद्धां स्थाधन के बोधन है। जो उस का कामव लेता है, जीवन मे कर जाना है । सम्य सामग्र हवाते हैं।

भाष्य सुविकासे

सम्पादक---(त्रलोक चन्द्र शास्त्री

नर्शनपदीं मैं कडोपनिका का व्यवमा १वड सहत्व है। बठोड-नियद का सुम्यस्थल है शुरु शिष्त

ा राहार में सुरू यस तथा शिष्य नविषेता हैं। यस तथा नविकेता परिवासिक न्यक्ति से वानदी यहां हम इस विवाद से नहीं पढ़ना चाहते। प्रश्न हो यहां सपनियह का है इतिहास का नहीं।

निविदेश का अथे हैं न तानने

पाला धर्यात जिल्लाम् । जिल्लामा चसे हो दोतो है जो जानवा न हो कानने वाले को शिक्षासा होने का भन् 🏻 क्यांप्य स्थानक कार्य है मृत्य । सम्बेद के ब्रह्म वर्ग शुक्त में वहा गया देखापार्थीमूल प्राचार्य मुरुष् होता है । दिस्य के द्वारा सामान के सम्मूल भावने पन को, स्व की धानुभृति को मिटा देना पहला है कतः चापाय कृतु है। जिस प्रकार मृत्यु से जनम का संवस्थ जुड़ा रहता है अर्थात जंसे सत्य के पश्चात वीबारमा नवीब अभ्य को शस्त्र होत. दै ताक इसी प्रकार शिक्य भी प्यायाग के दारा स्व को, सदले **प**न को मार कर नशीन जोन्वता को माण काता है, मधनी बहुता (मूर्जन) को समाध्य करता और विद्या को उपलक्षित करता है जिसे तिष्य का भवीन अन्य क्रमका इस**रा** जन्म बहुना सर्वेशा विश्व है। 🞹 प्रसंग में मूल्य भाषायं है तथा बीवारमा न जानने शका होने के कारम जिल्लास व्यवीत शिल्य है बत्तरथंभेष जिल्लासा ४कट बरता है। किमो महापुरुष ने कहा भी है— 'बाससो है गुब्दार वहीं जहां काल मुह में चेला' मृत्यु सचमुख गुरु है भीर खारमा चेता। मृत्यु ही है विस का ध्यान मानस में माते ही मानव स्व और विश्व. स्व नीवन कीर संसार के विकय में. इड सोक धीर परलोड के विकय में किनार

करने सम जाता है। संसार में देखा जाता है कि पार्मिक कर्म---

# उपानिषद विद्या

श्रोवेदम्ननिजी परिवाजक अध्यक्ष वैविकसंस्थान वालावामो(विजनौर) \*\*\*XENERONENEDICHENEDICHENEDICHENEDICHEN क्रके हमशान से सीटते हैं को लग

समन मन में कुछ संकार-विकार वठते हैं. वह बना है ? वह बडी तो हैं जो मृत्यु के कार्य की प्रायस देल वर ज्ञान वरफा होता है जो क्ल्य के (कम के) शारा कारवा (नविदेश) को जान प्रशान विका

मारका होता है. को प्राप्तके का

मिल्म को उपदेश होता है करा बड़ी वथा प्रतीव होना है कि अप-बिक्तेता दोनों काकार्य धीर शिष्य बाध्या क्या मृत्यु हैं। **बा**ये थस कर इस प्रक्रक में बस ने नविकेता को कारित भी कहा है। तमापने रूप को देखकर मुख भगु, स्रायि, इया चानकों से चानित फिनल धरिक इनको आपने करा-सब्द सिद्ध द्वाला है जिस का कार्य

है गवि करने काला । काल्या गवि

करता है, सरीर भी बालमा के

कारस ही पांत करता है 'क्यीर फिर

इस शरीर से उस शरीर में दया इस

तोब से उस क्षोक में गाँव कराम है बात: बारमा बर्धन है । समयथ ब्राट्स में तो राष्ट्र ही यहा है 'बाल्पेकान्ति' करत्या ही कान्ति है वतः आधार्य के द्वारा सचिवेता स्र वह वरबान शया करना झालात मार्थेक है।

पवि इस में से सबेक सब से क्सी प्रकार विज्ञासा करे जिल वकार शिष्य भाषार्थ से बरता है तो पश्चिक्ष कौर यस के संबाद का सम्बन्ध हो सकता है। प्रथमीकरण सर्वोल्ड्ड है, साइब क्या अभिद्रा योदे हैं फिरह कार्यान इम भी बोड़ी देर के लिए प्रत्यक्ती-बरख का साभ तथा क्रान्स्ट हों। क्रायार्थ ने बहा भारत रवी हैं,

इन्द्रियां शोबें हैं। विषय साग है रिक्थ मार्ग पर घोड़े श्रीड़ रहे हैं. सरपट भागे वा रहे हैं स्थ को निष्ठाशन बश्चकों में बिपटा रहता अब स्रोग किसी व्यक्ति भी बाल्वेडि होस्ट । रबी का कार्य है चोड़ों को है उस से कार्य बादे का सकता

व्यक्तिर से रसना चन्त्रमा प्रश नहीं स्य का क्ला बले ? कहा नहीं वा सक्का पोदे किस गरी में रथ को लेकर साल दें, पता नहीं किस विश्वय में फंसा दें कतः शावधान । सारवान हो भीर क्रम नुद्धि से कार्य कर क्या फिस्ड धर्मात् शरीर में इन्द्रियों की और बढ़ांद में वंच-भूतों की बोर पक्तकर कारो:कारो पसात् तो अभि है, क्रांप कहते हैं जाने वसने वासे हो, त की क्यों पलता है ? समस्त महामुखें हो पोले रख्य इनहे मार्थ पर मत कस इन्हें बायनेशार्न पर जला । इसके

ज्यसंकत बचार चलने से है ! गहराई में जाने पर एक ही इन्दियों के पीड़े जिए जीवास उत्तर सिख्तवा है कौर बढ़ बड़ कि तथा प्रकृति के पीड़े दिसे प्रस्तारमा हंबने क्रपते क्रांचि स्वकृत को नही के त दरांद कर सहेगा। तमे पहचाना विसे इंडोपनिषद ने बारने में, ता में ता शरीर में, स निकेश कहा है। इस निकेश ह<sup>र्</sup>न्द्रकों के पीहे कार्य करने वाली (न-चिर्वता) न जानने वाले को है शस्ति बात्य तत्व के दर्शन होते. ही फिल्हु साम हो इस अस्ति औ धारमानुभू व होयी और सांसारिक विषय भोगों, मंत्रीतक भोगों है पींछे विषे तथा तमर्थे स्थाप

परमारका के वर्शन होंगे उसकी

पान्ती होगी । श्रीपन की साझ

विसमें झारदा स्वी है और सरीर

भनुष्टुल बता । इनके भोग में सत

वंत इनको काश्स्यक्तानुसार केवल

बारश्यकता पूर्वि के क्षिप प्रयोग

कर ।

शरीर में ब्यास्त्र दह और श्राह्मारह में प्रसारमा वह यह वने के लिए है। स्थिति वही विचित्र है । सनुष्य संबाद की शर्वेफ बस्तू का नाश होटे देखवा है कौर फिर कसी

नहीं करता। वक्ष ने मुसिदिता से प्रशा—'विमापर्वस्तः शस' प्रश बारवर्ग क्या है १ धर्मराज कृष-व्हिर में बहा वही कि शुन हेसले है कि संसार की बोई क्यू किसी कं सी साथ नहीं जाती किन्तु विश भी जिल होते जाते हैं इन्ही बस्तुकों में :क्यों जी ! इस से क्ट कर सी कोई ब्राहर वे हो सकता है क्या ह सरवेर में कहा है 'पहवस्त बदशे' देखते 💵 नहीं देखते । यदि देखते होते वो समस्या वा समाजान हो गया होता। जन्हींन वास्त्रक मे देखा इस परिवर्तन शीस प्रसन् को उनका समस्या इस हुई कीर वह अमरत्व को शहा हो सवे। एक इस हैं कि इयारी टिप्ट भागे बाने को तैयार नहीं। कमी-कमी तो ऐसा प्रकोत होने खमका है *। व*ह हम आकार्य यस के सम्मुख उपस्थित ही नहीं हैं ऋषित स्थय साचार्य की रिवाति में हैं किन्तु धोही देर के परचात् फिर बढ़ी श्वित, फिर बची साधा-भोद्द, फिर वही पुत्र-म्बा. विश्वेषया, स्रोकेश्या ऐसा क्यों होता है ? इसका क्या कारण

है। बांद हमने कपने त्यसर के देश क्षिया द्वीका, नॉट्हम सम्ब को समाम गये होते तो इसारी स्थिति द्वार भीर ही होती। इस में ऋष्टिय होता, इस ऋषि होते, इस साक्षात कर जुके होते, जिल्लास का समामान हो समा होता। (कमशः)

🖈 बांद विधावा इसी पर क्त हो आर्थे तो केवस समझ क्यस वर का विश्वास नष्ट कर सकते हैं परन्त्र हुए और बस को प्रवस्त्रको का गुरू वह थी छहा

# ऋार्य जगत

वर्ष २४] रिववार २०२१, १४ ववम्बर १९६४ (अंक ४६

# श्रायों ! तथ्यार रहो

मार् समाज रूप समाने रहेश प्रमण्ड किया था रहा है। बासा एक विशाल आन्दोलन है। प्रारम्भ में की दसे साना वक्का के भोषों पर सदका पश है। प्रकात. क्षाताय की प्रमान से प्राप्त क्रम क्षिमी प्रकार का भी भेग हो कात समाज ने बट कर साथश किया बचा कथ भी विशे जारहा है। श्रानवता का रक्षक बना है। शारे देश को समोद वर अगावा रहता है। सारी मानवशा प्यंशीय सीह के वधों को दर करने का इस क दिस में स्थादर्द है हर सार्थात के समय कार्य समाध ही सब से काने कावा है। समय २ १८ उठते सुष्यनी का सुकार्यक्षा करने के स्टिप् यह वट आता है। काळ फिर सारे देश के सामने एक गारी अंबर का शया है।

बोरदार शभ्यः में किला बारहा है। यह सरवंबन कितना यहा होगा इस बाव का इसी बाद से धनुसान स्राया था सदता है कि इस में कारे हेजों से बसे र पावरी विज्ञानरी कारिक होने का नहें हैं। तीस स्वयं वैधोज्ञिक चर्च के वर्स गुरू बावे । व्यवस्थान में को बेट सबे कोव वास भी वेटिकन *शेस* से पता बर इस में भाग ने रहा है। बम्बई शास्त्र सम्मोधन हो रहा है-वि में किशनाइस के लिए प्रकार किया ता, यह बर्म्स करते की क्या अच्छा रहा है। स्वासी काहियाँ में इनके ठड़- था। हिल्द सिनेमा बनवा सन्त्रो

षमडीले वसोभनों के दैसे र तारों को पेंकाबा कामगा। वया इक होगा इस का ऋतुकान क्रमी से विशानियां देसवर विशा का सकत है। इमें किसी संस्था द्वारा चयने विपारी के प्रकार पर किसी प्रकार की ब्रावांच नहीं, सारे ब्रावने प्रवार में करकाव हैं। किन्तु विस हों। से इस का काबोकन हो। हहा है और जिस रौती से इसारी सर-कार भी इस में र्राच से रही है. दस वर इस को भाषांत है। प्रसन्तवा इस दाद की है कि सार्थ-देशिक सार्व प्रतिनिधि समा ने इस दर्मी प्रकार प्राप्त की लागिक में सब के बारे में समाप्त की गांवर इद से के कर ६ विसम्बर तक आश्त मानव का प्यान कार्यापत कर की विशास अगरी बस्बाई से सार दिया है। यम्बई में भी इस के बारे सीमार के ईसाईयों का बहा आरी ! में कई अल्में हो रहे हैं। ब्रार्थ विरुप ईसाई सम्मेसन श्रीन वा रहा । समाज के सिवाब देश पर बाले है। समाधार पत्रों म इस के नारे में वासी हा। शारी विप्रतियों की देश कर विल्ला भी किसे ४९ कार्य त्रादेशिक समा के चाविकारियों प्रकार से बाबबार जी कारी सभा ने भी काश जरत के डीप-ब्राब्टेड बें रथ चोर समात या विशेष ध्यान दिशासा है। डिन्ट हमार के समामन पान्सी कार्योंने जनत को पिना नहीं 🖩 क्या हो शहा है। तसकी वसा से इन्ह हो

हमारी धर्मीवरदेश मोतियों वाशी

सरकार भी असन्त में दिल्ला से

रही हैं। इस से योववास २६ साम

स्पर्यो की वस्तुएं शटिगा । एता नही

## वेद को खोलने वाला दयानन्द मारतीय नेताओं की श्रद्धांजलियां

कार्ड केन्द्रीय समा देहती, भी कोर से हीय साजा पर्व पर महर्षि विकास विकस को पैमाने पर बान्यकर लाकी प्रधानक वी बहाराष्ट्र की प्रधानना में बनावा यक्षा । वही सारी क्षत्रश की वर्णस्वीर्ण थी। इस विजेब ब्राम्बसर पर राष्ट्र ३ गृहसन्त्री भी वश यत्त्रचारी लास वी नन्ता, पनवांक्र मन्त्री भी सहा-श्रीर त्याची, स्वविदेश सम्बी भी राक्षा हिनेश जिल्लाकी से प्रकार कर महर्षि इवासन्द के दिव्य कार्यों की मूर्जर अशंका करते हुए क्रमची र अद्यांकस्थितं पेश की। गृहमन्त्रा भीयुव तन्दा जी ने कारने कान्दरिक सत्वों का प्रवाशन करते हर महा—

हैं, विवाहों का भारी स्टब कर सकते हैं. राग रहों में सर्व कर देते है। इसर क्यर के सेमे जैसे काओ में देश लगा देते हैं। अभी सन दिनों अमृतसर के एक स्वर्गाने-नार ने प्रकृतिकार में 6 लाख रुपये व्यय विश् । विश्वती का , सर्थ डी बस में २४ डबार रुपवे फुंब साले पर ईसाईमद के इस दोने बाजे इस विकार काक्सक की रोध्ने के लिए उनके पास एक देशा भी नदी है। व्यानेसमान जैशात में काका है। इस मोचे ur बाबे समात बट ग**वा** है। कार्यो । तैयार हतो । कसर कस लो। इस क्याने वासे बारी त्कान . सः सत्तपुरं स्वाविता स्ट्रनाहै। इसके सिए अपने पन की तिजो-रियां भी क्षील हो । सार्व प्रादेशिक नमा की मोली मह वो राक्ट इस

समात हे ओडा में वह जा गोल दिया । एक्टीने एक नई जागृति और तर्द किन्दरी का सभ्वेश विधा। सर्वाच बकारतस ने बसे बनावा कि बार फार्म क्या. जिस के मानने करते गुलाम और गरीब रहें। थी सङ्घा-भीर स्थामी भी से कापस को ससी शापक में बड़ा—मैं ने बचवन से ही कार्य समाज की जिला से उत्साह पाया या जीन सभी से प्रेरित डो कर कांग्रेस II शासिक हुए थे। लिलाफा काम्बोलन के ससय कारारा चे व है हर वांत्रक पुरुष और ६२ मांत्रशत स्थियां कार्य समाजी भी ! सक्रवि से धर्म का वार्खावड स्वस्त्य हमारे सामने रखा मर्डाष इयाक्य ने भारतीय बाँध स्वराज्यक्ष्मी पेड़ बोबा। महारमा साधी के कही। स्वयादक के किस काम किया क्योर हमें झाखादी विस-वाही राजा विनेहासिक्ष जी ने अवसी कांवरिक बद्धा प्रकट करते हम क्टा-सहिंद से कोई सका धर्म नहीं बताबा बर्क्स बेद के प्रशाने वर्म को ही फिर से शर्गत के मार्ग यर लग पर स्था यस विकास भावंसमात्री विता का पत्र होसे (वर गौरब ५वट हुए कार्थ समाजी सर्वयों से करतरोप किया कि वे काषि के बारों पर सरवाई से पसते हम देश को शक्तिशाली यनाने का स्वात संसम्प वर्रे ।

> मासिक चार्चनमाज. पुरतकात्वय, तथा व्यायामशासाम् की कांग काने पर सफ्त १ वर्ष तक विया जाएगा हिलें। जबदेव बदर्स पो. वा. ४६ बहोदा-१

ईसावत के क्याइ को रोका वा सके। —विजोधनन

# बम्बई में ईसाई प्रचारकों का ऋधिवेशन

(ले॰ श्री पृथ्वीचन्द्र वी एम. ए. गोतानगर हुनिवारपुर)

वर्ग्स् में होने वाले ईसाई श्वारकों के क्रिक्श्मन से भारतवासी आर्थ पर्माणतांक्यों को बरना नहीं जाहिये।

द्यार्थंसमार्जे जो नगर में वार्षिक क्तसक करती हैं, यदि उन करमयों पर अप किये जाने वाले पन से लब के ईकार्ट मेले के सनीप सम्प्रई में प्राप्ता शिवर क्षमा कर पार्म का चंदिक रूप उन हैं खाई के सुकार्य में अपना के सामने रास तो उपकान होगा।

राज्यधं महराची दो बसाव के पात है, उनको वस ईवाइयों के पर्यापितन ने राज्यभं के लिए पेबा और १ईवाइयों के राज्यभं किया वार्ष देताइयों को अपने वैतिक पात्र को शुक्तियों है, यह मेले में परि-चित्र अराख गार्थ कर्या वो हैशाई क्यापं वर्ष में ब्याना चार्षें करूँ मार्थ मार्थ में क्लेक कराया नार्थ ।

भाग मेहे में बार्थ आहेदन बांदा जाने। वर्ष हंताइयों का सम्मा भागाया किया जाते। हंगाई जोग सार के पहुंब भरों में वीचे रहेने बार्थ नहीं है। केवल का तक साम पहुँपाना वकारी है। "स्थापरेश अञ्चल कालाहास्त्रमान्य, स्तिह [' प्यां निश्चेप हुन्वेस्थाय को सामन्त्र के समुख्याराज के हत स्तोध को स्थान मानों परितार्थ करें कर सिने सभी सहाई की हैंगाई व्यापित

हेलाई सोमी वा भाग न्यास है कि हैता उनके सिषे एक ता हुँतमां पर पढ़ा है, महा वे समूज पूर्व करिंग। वहि यह हु सर्वा कि दो प्रकार थी हो करी है से सेक्सत क्षितानें की हो हो सम्ब्रा है, मध्य हैतारों की घोष नाहुं कर्य निहंद स्थान के विचार दिवे साने नाहिंद्यां करों ने कि स्थाप करता चाहियां।

## विश्व ईसाई सम्मेलन आर्क विशय द्वारा विरोध आर्य जनता बर्तव्य का पालन करे

सर्वदेशिक अर्थ प्रतिनिधि समा के सन्त्री थी ला, राक्योपालजी शास वाले का घाडान

अस्ति अस्ति

हरिक्षतन नेशमा पर्ये जाहीर वर्ष बाक विद्या गीपुर सन्त भिक्रिकम्म (क्षम्ब्री) में भी पोष के होम के माम 'दक कारीस निकास कर इस कम्मीसन का विरोध किया है, ताथ हो इस सम्मीसन में भागा मेंने के किए भारत न कोने को कमी साथना का है। जिरोज का कारक बताने कर उन्होंने सिका :—

हम जानकामी सांगारिक वैजय से यही कांच्यु काण्यासिक देवन से ब्यानिक देंगे हैं। इसाहित नारक में हम सम्मेतन के किर महुत कम बताइ है। सार्थिक तारक की होट से हो। इस सम्मेतन का सहुत हिंदों में पीटा जा रहत है। टुर्माण से मोबिक बारावी से शहकारण जाता का आरत की

र्स्थवत: समार पूर्वीय जगत के साथ सम्प्रके स्वापित हो गया है । इन

द्वा विकार है नहीं बीन से संवादाता कर का जा बात है हर है। व्यक्ति अपूर्ण कि प्राप्त के दिल्ला के प्राप्त कर कि व्यक्ति के स्वाप्त कर अपूर्ण कर कि व्यक्ति के स्वाप्त कर की है के स्वाप्त कर की दिल्ला के स्वाप्त कर की दिल्ला कर की दिल्ला के स्वाप्त कर की दिल्ला कर की दिल्ला कर की दिल्ला के स्वाप्त कर की दिल्ला की दिल्ला की दिल्ला कर की दिल्ला कर की दिल्ला कर की दिल्ला क

बन्धई के केन्द्र के क्रिकिश्च साथहेरिक समा के कार्यासर्वो द्वारा साहित्य की सेवारी पूरे बन्न के समय की वा रहो है। शीध ही कापरयक साहित्य शकाशित हो कर का जायगा क्रीर पर्याई में रु विभा भावना।

का र्रावरण के दिल्ली की सबस्य कार्य समामों के वेपान के होनी बात की कर केट्र में करेदिया कार्य कार्यकर्ति के केट्र में करेदिया कार्य कार्यकर्ति केट्र में करेदिया केट्र में कर केट्र में केट्र

कार्यों और दिन्दुकों के इस कार्य को कांकर से कांकर सरस्य काले के जिल सार्वदेशिक समा के दाण टड़ कार्य अर्थिय बोर नव की कट्टाकरा उरकाल केवारी पाहिए;

## समय है अब भी संभल जाओ

(नै०-स्वामनालाव<sup>े</sup> विद्यावां**पस्पति** उपमंत्री आदै ववक समाञ दपानन्द शहा बहाविद्यासय हिसार)

### \*\*\*\*\*\*\*\*

पाठक पृत्र ! होसबी किसने | भी ईसाईवां के सम्बोधन में काशी अने कांगतो है कि नृद नशाना १६६५ से बोने वासे ईसाइवें के विश्वसन्त्रेशन में ग्रनवन था। इं तारे सार्के पर बस दमतो महोचं चला-**ब**द्ध ओ(अतार्थ क्य द्वीगा ।

थे जेरे रेश के बोगों क्या तुम क्रोजिराब महत्रमा कृत्व को मुख शहे १ क्या द्य सहाजारत में राज् **र**ल को अब्द करने वाले सङ्ख् शतक भन्न व व गांडोव बहुत हो

मूल गर्वे १ कार्यों ! वि दत दीता है कि १८वीं शक्तान्त्रों के युगनिर्माण शहरि र्यानम् सरलक्षे को मूख रावे १ यदि कारता में साथ सम्ब के कारसी धर पत्ना बाइते हैं तो कृत्य तरह देशन प्रश्नतेय

व्याप को गीजों की रक्षा करने होगी । मारवीय युवको वरि आप को अञ्चल का गांबीक पतुप बार है नो समान्याक्रम में चनकर

शत्रधों को रोध कर [वित्रवी पनी । श्चीर वरि महर्षि द्यानन्त्र सरशको का स्वत्य है तो महचि द्यानव्य ब्त गेंडस्या निवि पडाबो चीर पासद करों 1

भी माध्यवदादर मी शास्त्री तथा सन्दर्भ राजापुरम्य महोदय समापार पत्रों से विदित तथा है कि भारतीय सरकार बण्यां 🕻 डाने बाले ईश्राहणों के बिक्क समोत्र में ६० साथ दश्श **व्यव** करेती । परन्तु आर-तीस भरकार के किये महान स**ं**श की बात है। शास्त्री की बॉक्टें में बादर देशो वेशारे गरीय कृष्ठी की पता कारण हो रही है। इपर [मारी नारतीय धरकार बनता **के** शहबार्च से अपार्थित सन-राशि

स्रो तरह श्वाहित हरेथी । यह स्कल भारतीय सरकार के लिये महान निर्दर्शन हैं । महान दाव है कि बारशेष प्रवास मन्त्री भी जनसङ्गदर वी शक्तो दका राज्यवि

राभा बृध्यन् वक्षां शबद् ब्रास्टीशन् देश्वर दिख् कावि (पार्वश्राण) विंद पम कीर भारत की सकत्रवता स्वित स्वाचे में बद्धान शावक शिक्ष

लाओं जी ! रोक्ष के योग का २६ बास रुप्ता तरीय जन्मः वे व्यव काने का स्थव प्रकोशन सह होगा कि दिशकों को (खार्कों से) स अपने पारे । हिन्द वर्षे से पश्चि करके शर्पन भंगूल में फांकर ईवाई कारी natar and i

रास्त्रों जी ! स्था संद्राक्षा शाब्दी के १६५१र में भारत म्होत्री का नारा भूभ गर 🎙 विदित्त क्षेत्र महात्मा नाभी जे

१६४२ में मारत फोबो का सारा वर्षेद्रप्रस पानारे हे की सहारत प्रा बिस के फासलका जोडे सार्वाको क्षे भारत मसन्दरा से बाजा पता। मरना सेर है कि भाग जैसे गांधी सानतीय भारतीय प्रमान सन्दी है व्यक्ति पर चलते वाले अधे उन्हों तर में ईमाईडों के सम्मेक्त में वा बर्द्ध शास सुवदा आहे बर

> वे अपनीष शासन दर्श । क्या क्रिक्ट क्रिक की गढ़ परे! वटि जारतीय सरकार की यही बीति स्त्री की-विक्ति सप्तेक जिस प्रकार थि. जिल्लाने पारिस्थान बियातसी प्रकार आज नहीं से **दब** ईवाई शहरी मी भारत में ही

ईक्षा के देश की साँच करेंगे। इस

के आसीवाँद ने वर मारत शेलती

को स्टोसवा करते में रूप हो हों।

# चरित्र निर्माता में मारी रुकावटें नं० ३

के॰ को विद्योरो तात वो 'शेष' रेष्मुका किना शिरमौर(**ह.स.)** \*\*\*\*\*\*\*\* कि विस देश के लोग मध्यर्थ का

(वर्गांड सं भागे) सहिता — महार स्वामी द्वापन्य पासन बन्दे हैं वो शक्तिकारणी सम्बद्धि जी सर्वाये छ्वछा है क्री( तेवस्वी होते **हैं और** को **मह**-शीसरे समस्ताम में किसते हैं वयं का पासन नहीं काने हे (उद्येक वर्षों की सर्वकों की पत कीर निस्तेत होते हैं। सहरिएका के शाका फ्रस्ट्स्ट्रेसे दो क्रीम दर होते हर सदाचयं तर का का का होती शक्षिकः उन में को अपन्या-वरना काँडन ही नहीं चापित m य प्रध्यापसर्' हो भयस असन्बंध भी है। बड़े २ विद्यान बच कारि हो, करवाकों से शह-भीर वर्गानी सर्वाच काव-सामग्रा शाल में स्व सिवां हो हो। तरदी व पंत्र असे हैं तो साधारबा व्यक्तिक का क्या बहुजा और अब की पाउराक्षा में सब परूप हों। पार्त क्षोर से काम बासना की रिश्वों की पाठमाका में एतं वयं महत्राने रासा वस्त्रावरम् हो और बातरश और उस्ते शे गठ-व्यस्पर पड़ने से जातबात अमि राजा में पांच का भी जाओं भी येश-विसाप का कावसर जी स्वा-

बहर्षि ने बेला क्यों जिला ? कार्षि उदार्थी थे। ये कारते ये तिवे भारतीय सरकार को इस विश्व में रखन गरेपगारमंग इंग से ब्राविपार विशियय ब्रावा

कारिके । भारतीय शेरो । भगवाद वेह ने स्थिता सम्बर्गण्या कि प्रश्न राम होऽलाहि कामान में राह हरना वयूं। ब्राइ रहावा भी वर्षे विडो अञ्चलकानः वर्षाः में राष्ट्र को (रातन्त्र कराते में सब से कामे रहा सातो मुक्तिरिक्यको स्वरहा बर्धन बानगंब इवें कृत वीरें

भाषा का राजन करो।

सकता है ? यां को चरण के पास रसकर वह फारा रसना कि सी विवते, यह शसंबव है । योशेव बासे तो इसका हुम्मरिकास देख वह और कर इसके विशेषी हो रहे हैं फरन्तु भारतवासी देश का विनाश करने के लिए परिश्व वोजना या प्रस्था-पुत्र्य सनुसर् च्द रदे हैं। सह-शिका करते स्वत्वे वा सामेजी में अपने करवां हो पदाना जान वसकर बापनी योधी-नाश्री कानुस सन्ताक को जक्ती शर्दकाय में चंत्रता है। अधि भारत में सद्दिशका को शोध वन्द न किया नवा से इसके उद्धारिकास की। उन्न देवे । घटा भाग सब का से देश को सम्बदा एउम् संन्कृति बनम्ब है कि संबक्तों और के बी

तह होने से १४ वहीं संदेगी। सब

थी समय है संगतने का (अवशा)

क्षत से बिल सकता हो, योक्स

की मस्ता हो विवेध बुद्धि कम हो.

देशों काशका में कथा जीवतान

वर्षांको स्थान सामसे संबास

### श्रावश्यकता

बार्व करावासव किरोजधा के लिए बच्चों की निवसनी चारते वह सुप्रस्मितेंदेंदे दी और कन्याओं को देखधान के खिर वह महिशा प्रयोग्टेंटेंट की कामानका है बेनम बोधनाननार दिया नायगा।

का व्यवहार अभिन्तात कार्य क्रमायकार किरोजपुर से कीं।

से फैबाबों के लिये हमारी सरकार

सना है 🏗 हमारे क्यान और

की सहायता की सम्मेगार होती ।

का प्रचम कारम किया था।

सामान, बोस, बाइड व न बाइज

माधनों से पादरियों ने दतने समय

हें क्य और में भी **श**नि व दिन्द की

को अधन क्या में देशाई बना सिया

अपना बड़ा कर करते इसाई

क्याया जाता है। जो धर्म संस्वाई

भीर तिवसों के बढ़ता के नाम से

सोते को बाद्धपित नहीं करसदता का

धर्मे उच्चा नहीं हो सकता। वह

बोगों के सापरण की अंवा नहीं

साधन प्रवोध नहीं किये जो 🕼

ईशाई पातरी दालामाम कर रहे हैं।

(वे॰ श्री महात्मा देवी चन्द्र जी M.A. प्रधान वेद प्रचारिको सदा होस्यारपुर)

हैं। पार्टिस्तान सबसे राज्य स्थार | विश्वा सरकार को वहीं है स्पी है। तिर्मन कोगों म पानो की नरह देता है। हमारी सरकार की तम शिक्षि न ही देश साविशों को है। सक्षीय का यही परिकास है कि जाता बोधों आर्व समावको और हिन्दू, धर्म के के हीसने वह नये हैं। वह प्रतिविध घपनी शांगें बदाते आते हैं चीर रही हैं। कि सबस्त जगत के रोबन भारत सरकार के साथ सम्मीता हैंथोडिक प्रदर्श तीस इकार क्षे करने के किए तैयार नहीं हैं।

हमारी सरकार की पर्य जिस्में हैं कर सकता। वैदिक प्रश्न से ब्रापने बढा दिये हैं। क्रमेवी इक्स्क के पेंसाय के लिये कभी सो कमीने । अमय भारत पत्र में विदेशी श्रद्धियों की सस्या १६०० भी परन्तु इस

सेंट वेक्यर, सेंट पास, और को विदेशी पाडरी भारत वर्ष में थाये और उन्होंने निर्धन, कनपद हिन्द भी को धापने वेशिक धर्म से Kina faar :

मैक्स सक्तर साक्रिक कपने पत्रों में माराज करें को रेसको सन अनीहार क्षते की रट सगाते रहे हैं। वह वैशों को श्रंजीक, इराज और जिन्दा-बस्मा से नीचा क्यान करते हैं। इर पर पाइरी की नहीं इच्छा है ि समस्त अगत ईसाई हो जावे ब्रार शेष सभी सने का नाम हो वडी हो सब्बा है। बाये । पारने योग दिलीकी व इमारी स्वतन्त्रता के विकट है। नामार्शेंड में श्रमरीका श्रीर इंप्लेंड के पाररी बैठे हैं और नागा सोगों को भारववर्ष के विरुद्ध उक्साते 🕏 ब्दीर एक खतन्त्र ईसाई स्टेट भारत में बनानी चाहते हैं। फिलो का पादरी स्काट से धना सम्बन्ध है। III पर्सारयों के प्रचार से नागार्तीक की चार शास्त्र की कानार्श में से वासियोंकीर सरकार नेस्टब्स्नुसम्बद्ध देना त्वीकार किया है। एकास से ६०% ईसाई यन पुर्क हैं जिन्होंने इसारी सरकार का नाक से दम में का दिया है। दवस कीर लोगों को

समय बह संख्या ४२०० है। हमारी सरकर निवेशी गावसियो पर कोई प्रशिवन्य नहीं सगाती जिल्ले ब्राजी पादें का नार्वे और देश की करता थे इसई बना सें। यह बात होक नहीं है यदि सारक्षेत्र इसाइयो थी ईरानी हुई III इ**बारे क्**यान राजा संस्था बढ़ आये कीश डिस्टुकों क कृत्य भी ते रोक्षन के योग शत संगया काम हो जावे तो सरकार की को इस कानमें स में शामिस होने एक दिन नवानक राजनेतिक सतरे का निमन्द्रमा दिया है। जब का सामना दरना पढ़ेगा : हैसाई इमारी सरकार की नीति पर्स बोमों की इसदी इंनलैंड और निरवेब है तो फर धार्मिक कामों भनरीका के साथ द्वायों और उस धी बदती हुई संख्या का परिश्वास

बीय ने सभी ईसाइ गाउरियों को बाबने देश से निदास दिया है। पाविस्तान में भी तम पर प्रतिकर्म क्षमाबा तथा है। परम्त हमारी सरकार सम पर श्रीसकान स्राप्ताना बरुरी नहीं सहस्रत ।

दो शास तुप चीव ने सारत वचे इस कार्यों स के जिस सात इतार पर काइमच किया उस का देखा टन सीसिट इयानी सरकार मे किया। १६ कोड रुपया होतों ने | न्यादा महबानों को भोजन नहीं N.D.F. में दिया । प्रत्य को पामिक भाष्यस सम्बं मे बटने की घटनार्वे यह हमा करते | २०-११-१६१४ को होगा कर की | हम कावर्ष स प्रवास करत

केंद्रीय सन्त्री भी इस बानाईस से सामित्र होते । भारत वर्ष को व्यक्ति अने सस्या का यस हिन्द धर्म है। बांद इसारी सरकार की कोर से भी किसी तबह की कान-हे मिनों के एकों में बद सुप्रमाधें स्थ वाँस की सहायता दी जायेगी को इमारी सरकार की नीति सर्म निरवेश नहीं रहेगी। परस्तु Pro-संस्था में बम्बई में कारफ़ेंस का christian होतो । सुधा है वि रहे हैं। बह कानक स २०११-१६६४ बीति ने ईसाई पद्मरियों के हीतिले भी लेकर ६-१२ १६६४ तक रहेगी पांच Exchange शाय वृत्ते के तास बादमियों की इस कावर्ष स वे बिए इस कानकेंस व्याहा दी गई है : वरन्त्र हवारी शासिस होने की काशा है । इस खोगों का धर्म सिन काने की हाती कानकेंस का क्या विषय है सिवाबे को सरकार अनुसर नहीं करती। इसके कि मारव क्वें को केरे धरन् बह तस्त्र स्परा Exchange ईसाई बनाया जाए । जब इसरे में बाध्य इसमें की स्थादा महत्ता देशों ने 💷 कामग्रेस को करने की देवी है। यह मीति मुक्ते परंत् नही माज्ञा नहीं दो थे। सारव सरकार है। काहित्तल ग्रेंट्चल आर्थ विस्तीय ने क्यों ही है। सुमे वह जानकर वस्पई से रोस के पोषणत को बलाते

> वह कानक स तो उक्तर होगी। स्व नहीं सकती परम् इसारा धर्म है कि इस इस का विशेष करें। आस इश्विका इयानन्द् साम्बेशन विशन होएवासपुर ने इस समय में क्यों दलस देशी है। यमें हिर-पर कापना केम्ब सम्बद्धी में सामाने पेस होने का तो सह सततव है कि का निरूपय किया है। सामेंद्रांशक न किसी अर्थ की सङ्ख्या चीर समाने भी इस समय ०१ प्रकार न किसी यत का किरोप करें। ब्दने का निश्यम किया है। भव्यक्ष के मेजर ने मी*शाम*ों को क्षिटरेक्ट ईसाई समें के सम्बन्ध जिला है कि इस कानकी में हैक्ट कादि वॉट बाएंगे। को सपन बनाने है किए इस सोमें-माल लोगों को ईसाई बनते वकार की सङ्ख्या है। सीविट की से रोका जाएसा।

का प्रकल्प कर रहे है ।

इमारे देश में बहुठ कभी हैं। परमू खरन्त्रता के परचात १० वर्ष हें ४४ लास विष्टु ईसाई बनावे जा लुके हैं । परम्यु इसारी शरकार चीर पोसिटीकत नेपाक्षरें को सम की कोई चिन्ता नहीं है । सन्दर्श दिया था सफता प्रस्तु बहु सानून धी शानीय कार्य वितिनिधि समा से कानमंस पर काण् वहीं होगा । भी सहायता देनी स्वीकार की है

(\$4E)

# ब्रार्स प्रतिनिधि सभा श्रद्धानन्द भाजार चन्त्र

## र्दमाइं निरोध सम्मेलन

बार्यसमाज ईसाई पार्दारवों को राष्ट्रवातक बम्बई सम्मेजन का पूरी शक्ति से मुकावला करेगा

बाल:कर के प्रसिद्ध आर्थनेता श्री अगदेवसिंह जो क्रिजानो संबद सदस्य को सिंह गर्वना

बाबस्यर ६ शवस्थर व्याये इंग्रहेर**ड को**र कमरीक में राष्ट्र संघ<sup>ने</sup> -समाज, वहातन्त् वाजार (कहा अब बाइग्रीस के विषय में मारक द्वोर्श्समस्युर) में ईमाई निशेष ला साल क्ली विका. तो इ'सलेड सम्बेशन में कार्यसमात के महान और असरोका से बाने करें रेशा थी जगदेशसिंह जी सिंहती क्रिकेशी कार**ी भारत के दिव**की संसद सकत्व ने प्रवस्त शब्दों में बकी हो सबसे । इदायने इदाय-बोबहा की कि बाये सप्तान ईसाई समाज के कार्य कर्ताओं से अपीत पार्वास्यों के राष्ट्र विशेषी कर्म्य दी वि शरोब सार्व-सर्वा की मधने समोजन का पूरी शक्ति से मुका-**ब**ंदे केंग है हैमाईवों की राष्ट्र पता करेगा। कापने वहा कि जब विरोधी मालों से अन्नता को सचेव कर्मा देश पर किसी प्रकार का **दर**ना वर्षाद्वर । झीर घर-पर तव कंटर भाग है ते सार्वसमान श्चावंसमान का साइश्य परंचा राष्ट्ररका चार्थ में सब से आगे का देमादेशदरियों भी सोवियों का श्रीता है। पंजाब के आवसमाज लरका करना पाविष् । का वो इस प्रकार के कार्य में विशेष द्वाय रहता है। इश्रीक्षिय आये वैदिकांग्रासकी स्त्रीर शामतास प्रक्रिनिधि समा पंजाब ने पूरी श्रांबन राज्या सदस्य सगर पाक्षिका न भी के साथ ईसाई प्रचल विशेष कादी बाह्य दिव और यह शक्षाव दारा मार्थे की 🖩 इंपाई के विदेशी क्षम प्रारम्भ कर दिवा दै। बन्बई प्रथार को होस्साइन न दिया आहे में बिरव ईसाई सम्मेजन के कावसर क्यीप राजधी मानिर्विधियों वर पायर्जी पर शासों की ग्रावाद में साहित्य सम्बद्दं ताते । बांद् इस स्थनमें को क्रियो, अंग्रेजी और क्रेंच माना में होकान गया वो भारत में सपना कर सारे देश में बोटा वाजिह सारित भंग होने की मारी बावेचा और ईसाई पानरियों के कारोका है। विसका क्लरवादित कुकों से देश को सावधान किया en निर्मात में पान पाल कीर बावेगा। भारत के गृह्वमन्त्री श्री शस्त्रवारीलाल सन्दा ने समा है धाधिकारियों को वह कान्दोलन . स्थानित करने की काफील की है किन्त समा के प्रधान प्रो० रामसिंह **भी फीर** मन्त्री भी रावधीर विद शास्त्री ने बन्हें स्पष्ट शब्दों में बता दिया है 🗎 ईसाई सम्बोधन से क्षारक को हैया स्थान बना कर पुन: ( mrolla करने का बोलाम है। इसम्बद्ध ब्रायेसमात्र राष्ट्र रवा के

विदेशी ईसाई पाररियों पर होगा। -केट्राट ताथ कार्यकृतेरामचन्द्रजादेश कारा क्राकाःनी वेप्रतगर करनाल का वःर्षिक्य चनाव

सम्बेजन में के नम्पनाल थी

त्रबाच-श० वस्थल रायडी. इन्प्रधान —दीवान सरदारीसासबी. को वह जानकर प्रसन्दर्श होयी ब चौ० ददस्तिगन जी. बन्दो—धी कि सार्व विद्या सभा सम्बन्धित देश्वरचन्द्र भी सरदावा, सर्वाची-द्ये, इ. वी. इस्तेज श्रक्तवःर्थ भी जगदीशचन्त्र थी. i -ईश्वरक्ष्य सरहाना मन्त्री समात्र | समा, चित्रमुख मार्ग, नई हिल्सी क्रिवे शेक्षे क्रम नहीं हता सकता।

थी रपुरु रसिर जी शास्त्री मंत्री आर्य मतिनिधि समा

### पंजाब 💵 नई दिल्ली में प्रेस वक्तव्य

त्री सास बद्दादुर शास्त्री ते चीराटी वर्ग्य में देशव में भाष्ट्र रेते ự शिव ईसर्व सम्बोत्तन की चकासक का बन मानस की भावना ह्ये देस पर् शई है।

क्षान-मंत्री के इस वक्कथ्य से देश में विदेशी पारित्यों भी कराष्ट्रीय महिदिधियों को निश्चित हम से बता मिलेगा ।

प्रवात-मंत्री का यह क्याच्य कार्टियल प्रेसवास से हुई जनकी टाका सेंट बर पश्चितव है। बस्तत: इस से राष्ट्र को उन धराजस कर्यों को बारी प्रोत्साहन मिला है जो १० वर्षों से मारत की संस्कृति की मिटाने के खिए और मुख्य को दुवंस करने में लगे हैं।

जनता का संदेश काब और भी टर हो गया है कि इस ईसाई सम्मेक्य की बाद में भारी घट पन्त्र खिया है और 🥅 कुरनीतिक बाख में दुसान्य से इसारे देश के प्रधान-मंत्रों व उच्च स्वविकारी मी कामने हैं।

देश में इस 'बिट्य ईसाई सब्येसन के बीव बढ़ते हवे विरोध को देस दर कैथोसिट अधिस के बाबोजकों के हाथ पेर पुतने तर रहे हैं। क्वोंकि ने कनुश्रव कर रहे हैं कि बिना सरकारी सहवोग के वह कैयोक्सिक कांग्रेस प्रकारको स्थापन कर कर रह आवेशी ।

प्राप्त प्रवितिधि समा वंशाय

### ने बार्च तम मार्थित प्रतिशेषक जै चुनाव संस्था शिक्षा करे चयने विकासकी

क्रार्थभगात असमागन देहती में होत्साहित करने के निशित्त में ६० गरोशक्स की बान प्रस्ती की १०००) की राशी कायनिय वर्ष में बार श्वका में <del>जिन</del>्य चराव सन्यन्त व्यय करने की झतुमांत प्रवास की शी। प्रधान-की सुभाष**र**म् वी, मन्त्री—मी रमेशभन्त भी, वप

कार्यसम्बद्ध

शार्य विद्यासभा

सका नई दिल्ली

सचना

µधी—वरेत्समार जी।

धायसमाओं, संस्थामां व क्रम्य सभी सन्दर्भों से दो इस विषय में स्वीप रहाते हों. सातरीय —किरावरीतास मंत्री शर्मनाबी जाती है कि बहु शंश्रित-शीघ कापने-क्रपने सेत में विवास करने के सबरान्त व्यवनी शिक्रा डी॰ए॰वी॰कालेज प्रबन्धकर्त संस्थाकों से संस्टर शिया के शोरसाहनार्थ घापने सन्ताव व होजनार्य थेडने की क्या करें. का**रके** 

बहबोत से ही सभा द्यापते दक्ष काय अन्ता व शंस्कृत-में स्वयों भ्येय में सफल होने की जाशा कर सब्बं है।

> —देवराज सहाजन एज्डसचळ वस्त्रवारेशर क्षाचं विशा सकः

'ऋादर्श विसह' शाधारकता प्राप्त विकास बसे बक्ते हैं को नैतिक राति से हो। परन्त वैदिक विकार पद्धति इक्ती लोफ निय हो चर्क है-कि सई होग बार्व समाजी न होते हुए मी बैदिक रीति से ही विवाद संस्कार कराना करच्या ससमते हैं। इस क्रिय करता वैक्रिक मेरित से विकास संस्कार का होना और इस के साथ at suit is sinerat foun सर्थी और दिलाने या होता (वैसे बाल प्रशास विकासी क्षतिको. कमार्थ, क्लोंबर, करावरी, वेंड, बाक्षे, गैस, मंत्रक्या, प्रांत्रायात्री, बाद द्वादि पर हवारों साव केशन व सात्र (इसाने के लिए पूर्व देना) इसे मानशं विकास नहीं कहा जा है सक्ता : हवारों रूपप का रहेव से स्रेना भी सावशे विवाद नहीं है। बादरो क्वाइ सैसे होना पाहिए ह

इसकी पत्र मांकी मैं पाठकों के

बस्मूल रसवा चाईशा है।

११.१०,६४ को दिन के २ कते न कार्य समात्र पंजाबी बहुत्ला 🖥 सम्बासा सावशी में बहाइय टीकान भन्य जी की दोइसी भी,विसोरी साल बी 'प्रेम' को सुपुत्री हमारी वोर 💆 बासा कार्य का शुभ विवाद देवशी के जी भार, राय के गरिक किरबीव बी सुख देव भी के साथ पूर्व वेदिक रीति से हुआ ! कोई बादम्बर नही, विकाश नहीं, फिल्क क्षर्थ नहीं, ने बीतों वचीं के ली परुष इस प्रकार ब्यायं समाज में बार जिस तकार क्रमान के क्रांत में प्राप्त विजी क्रस्यव में काले हैं। यर पक्ष काले भी बारास के सप में वेंब वाओं के साथ सब प्रव कर नहीं चाए। as ही सावारण रूप में कार में बैठ वर का गय करना पश्च वालों ने

विवाह संस्कार कारन्य हो गया । बध्द बसेश तूर हो संबर्ध हैं। क्याओं के विवाह की विका मी-कि इसे दिन शत कार बा नहीं है का फिला से भी मुख्हो एकी है। समाब में को आहपार पर् रहा है को भी कम हो सकत है। इस क्यूटी सन्ताल को उन्हों जिला बी दे स्थले है।

विकार संस्थार की समाप्ति पर वी ने अपने संक्षेत्र के कारण में व्यक्तिय तरी प्रकारों का सामान्य बहा :--वर्षि हमारा स्थाम इस पान झरा सरकार विका गया : पुढार सादगी से विवाह संस्थार कौर वर वपू शावि को कार में

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* नेहरू जी की स्पृति में

क्रमंत्रका अलग्री की वार्षों करते

सक्ताओं के सम्बाह्य स्त्री प्रकृ

ग्रवता क्षीर भी सँकतो प्रविचित

शोश क्या सत्तव वयस्थित वे:

वैसे कि बार्य बनाव का कोई

ज्ञान हो सहा हो। इस हार

क्रक्स पर सार्व 'वेन्द्रिय क्रमा

रिक्शी के बजी मी राममान

(ने०-बी राममूर्ति भी कालिया, एम.ए., नई दिल्सी) देश बंच से बना हत्य. किए बड़ां वका है ! परविश्व में रज सामि दूर, यस कहा दिया है ? नेतृत्व होड़ ट्रांनक से, तम रहे क्वों बर, इत्तम श्रेम दिया अन को. भी किस वे किया है ?

(%) बाब वरकी या क्या क्या कि शहरें पुकारे, सन्दें मन्त्रों को स्वस्य नेहरू के धारे। अवदी के हुएवा गगन के वे तुम तारे, दक्षित्रें, ब्राध्तों के अन केवल एक सहारे।



- मारत मां की चाह तुन्हें फिर शोद उठादे, वह कर भवना आह, तुन्हें किर से दुसराये। संभासो बीटी करूक, निज टोकी बहुनी; वदे बती (पर बोलां, "साहयो ग्रीर सहसी"

मृद्ध थाइ में दियी हुई दल जब की कार्यी, क्या कर करते कर तुन्हें नास्य के पानी। विवे वर्णांच्या साथ प्रश्न भी काल किला मी, करने को वैवान खड़े तेरी अवगानी।

ो हवारे वक्त से विदास्त विदा विदा शका। 🛍

विवाह में पहली बात वह बी---कि वे क्याह क्लिक सार्थ से सम्पन्न हुयां । इसरी कार शह-विवर एव वालों ने थोई डोब नहीं सिया कम्होंने पहते से ही यह का दिया था-कि इस कोई यी कीय दहेव में नहीं सेंगे । इस बचार बिया इहेच लिए वर पर्वे वाझे सँवहीं प्रतिक्षित स्त्री प्रवृत्ती al extent à ser mais प्रविष्ठा, प्रस्ताना और स्वामिनान के साथ विदा हुए। जनता ने हुंख बार्श विवाह की बहुत प्रदेश की । सारे कार में इस विकास की

> रमेश पन्द्र मन्त्री कार्यसभास पंजाबी मुद्दरका

थ्य सची हुई है।

### क्रम्बासा सावती त्रार्थ प्रदिशिक प्रतिनिधि सभा को वेद प्रचारार्थकर

पर्मेशांक (क्रांक्स) 808/-सादां सेदी (दिशार) ₹8/-पटी (श्रमकार) 220/-

ला व्यनन्तरास थी सरवादा १००)-सा. वेरपकास जी वनीती

(duist) too/-

मा. रमांकिशन राम स्वस्थ (**दिसार**) ३०/-

भी रासकरक की उचाना मही पर्शन मोहमसास थी कार्य बढोवा ११/-

भी देखराज की ठेकेशर

Saferal 1-/-थी वजीर जन्द्र भी महेन्द्र. c/o देव प्रकाश जी समझोता १०/-

हा. वरेन्द्रनाथ समतपास सी संदेशियां २४%

ी विकासागरओं (शस्त्रसर) ±3/-श्री 📺 इयास वी प्रश्नाका (वीती) २४/-

जगनीमा बिज औ प्रांशे (रोहरू) २२हें/-🗓 हो। सम्बदेश की (जासरकार) 🔭 🗸

हद्भव व प्रकाशक की अनोपराज भी बाव प्रदेशिक प्रतिनिध सभा संबाद आक्रम्बर आरा बीर मिकार में छ, फिकार रोड बाक्रम्बर से ब्रह्मित क्या कार्यकात कार्यका महारमा हंग्यान मक्त निकट कशहरी वसक्रमा शहर से प्रकारित मासिक-कार्य या देशिक प्रतिनिक्त समा पाल बातायर



Regd. No. P. 121

वर्ष २४ बंक ४६) ॥ मार्गसीय २०२१ गीबसार दशनन्यान्द्र १४०- २२ नवम्बर १९६४ । (शार 'प्रादेशिक' जालन्यर

## वेद सक्तयः

देनें राघ जनानाम् वह परनेवरर सारे बना-नाम्—सोगों धः राष:—पूरा पोर बराधना के बोन्स है खी रेव थी:—रेवा के हैं म महादेव वंशी व्यवसना करोयना करे!— पूजा करों। उसके स्थान पर

### किसी बॉर को न पुत्रो। संसक्तेन र मेर्माह

हुम सब भवतीन—भवने के मोरव उस भगवतम् की संभाति में मेंग्रें, पश्तें तका उस्ते के शादेश पर पतले रहें । वह पित्र है स्वीर हम अतके बच्चे हैं । इसीका सन करें का स्वामक बनका लाग प्रत्यें ।

### स्थासक सम्बद्ध साम स्टाप्ते । स्था समनसा नियण्डतम्

है लीको ! कानने इस शरीर के १थ को मन के साथ रोको ! करनी इन्द्रियों- को नक्ष में करों ! इनके श्रास मन नजों ! इयर-नक्षर मन कुमने ना ! सारा रव कहा में करके ग्रुमार्थ पर भवाते रही

. . . .

## वे दाम त

## श्रोडेस् सूर्युंदः स्तः । याने पदस्य स्वपा श्रासे दुर्चः सुवीर्यं दण्डरिंग मिष पोणं स्वाहा ॥ इदमनने पदमानाय इदस्त सम्राह्म व्यक्त कुल्ल ६६ सं० २१

कर-े- सब के बाजर (तुम-) इन्तवनात्र (मा-) विश्वना जनतः है (स्पर्ध) बांग्येश्व वरोक्षर : प्रवाद कुत कर्ष कर्षाव्य कर परिच करें (स्पर्ध) क्रान्येश्व के काम्म्री कहे हैं (सामें) हमारे किए (स्प्रे-) व्यक्ति के क्षात्र क्षात्र के काम्म्री क्षात्र कर क्षा क्षात्र कर क्षात्र कर क्षात्र कर क्षात्र कर क्षात्र कर

का कर-ने देश | कारण राजी जागान | कारणाव कार्यान्दे । कारणे मा मा बार पार्ट में हैं का बंग जीवित करीबारे हैं। मा पार्ट इसा से हम पार्ट पंतर मा हो। जा में हमां जीवन में माणित में हम स्वी टूर बद देशे | हमें कारणे के राज्य करें, इस के जाती वर्षेणां करें । सामकी इस से हुए मीकन में कारणांने कार्य कर पार्ट कारणे कारणे हमां हो हमा मालाका हो सार्च हैं हमा करते कारणे कारणे कुछ है । इस

**\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*** 

ग्राक्तशासा वन । यह me आपक बात शायके वर्षम ही है—सं०

### ऋषि दर्शन नमस्त्र योग्योऽस्ति

यही भगवान् ही नमस्कार योग्य है। जीता भोते बन कर इपर-क्यर ईर पल्यरी की। बनी वस्तुकों के सामने संसुख होकर भी मागठ जुकारे हैं। करल यह को ही जयस्वार

### क्वल यमु का हा जनस्वार वरना चाहिए। सर्वस्य जगतोऽधिराजा

यह सरवान् इन कारे भागत का जड़ हो था चेतन, का राजा ई स्वासी है। सबेब्बायक हो ग्हाई। इसका नियम सर्वद प्रकृता है। उसका मीहमा 🎟

### इर स्थान पर दर्शन हा रहा है। ऐस्वर्थस्य दातासि

है महान् देव ! कार ही हमें सारा ऐंदरने का सफड़ार बहात करने हा हमें हर सकार की बस्तुत देते हो। बाच दरह हो वह सभर राज्य बायकर हो तो है। इसक दाना मालिस बाय ही हो।

बाध्य मुझिकासे

#### वार्षिक कर्व

# नक्षयञ्च प्रसारक महर्षि दयानन्द की जय

(भे०-बी फिन्हो वास बी, जानी आर्बसमाज सोहगढ वनससर) इक्से पूर्व का बाग द-११-६४ के संब में करें

#### MONOMONOMONOMONOMONOMONOMONOMO

**क्षर्या**श्−स्थ विसक्त प्रसाद भी राव से इस प्रवार दोखे---होने पर दोनों निष्पाद—राम

बरमञ्च-ने दैनिक इत्वॉ--(क्रप्यः सन्ता प्रकृते समित्रोक्षित वह हरन आहि) का बातुष्टानकिया वे समनावामि रोचक॥ मार्ग में राम-अस्पवा को इतिहास हवा स्वतंत्रे ऋषि विद्वासित्र जा

रहे ये कि झायन वास्रो तनरिवर्धी र्व्ह । सबेरा हो गवा । हुन्हारा ने चनका भागमन देख कर. करवाय हो, उठी और वसने की तीनों का ब्यातियय किया । तब वैवासी बजी।

२१. सरहार स मनुबाद कथा बिर्वित्रयम् यथाई सत्रपन् सम्बा वाद्य चेर्सुवायह ॥ स्वयते समाहितः ॥

बास० २५-२०। षर्वात-वर्वाधिव सरकार कर के इन मुनियों ने क्रांतिविधों का आन्ति मान्ति की हका-वार्ताको द्वारा सबोरंतन किया। फिर का महर्षियों ने एकाशिया हो कर शासक २३-३ ववाचन् सन्ध्वः कृत्तः स्वं वद

> वन ब्रान्स में एडं ६१ विद्या मित्र ने यह को दौदा से को । उद मो राज और जरवन ने प्रवास वेशा हें...

किया ।

२२. प्रभाव काले चोल्याय पूर्वा सन्ध्यानुपास्य व पासः २६-३१

वर्षत्-में तम सरवद ने वसाव समाव तठ कर प्राचः कास ची पूर्वा सम्भवा का वातुच्छान दिवा क्षाप्तवात् अभि होव काने हे सिये बैठे हुए विस्तादित हो

नमस्कार किया । शोकबद नदी को पार वर के विश्वानिय जादि ने संगा भी के क्ट पर राजियास किया । अन रहा । में कहा--

बास- २४-१ | बीवी चारे प्रमात हुआ, तब वह २४. सुरबाता निया राम क्यं

> बाह्यः ३४-२ धर्मात्—मी राम ! राद मीत

२४. तच्छत्वा बचनं सार दत पूर्वोहिङ जिल: समनं रोधवामास

व्यर्गन्-पुनि की बात सुन कर प्लोड काल की किया—सम्ध्या बन्दन आहि—पूर्ण कर के भी राम बसने को हैसार हो गये और इस प्र**कार बोले का**गे जाकर हंशो ववा सारतों से सेवित पूरत सविसा मागीरथी का दर्शन करके शीराम जी के साथ समस्य सुनि बहुत वसन्त 🏢 । वहां स्तानादि करके ।

बाल० ३४-३

२६ इत्वा वैवन्ति होशाया शहश्यामृतयद्वविः । विविशुश्रहर्वे

ह्यें। यह कह कर विस्कृतिक सुनि

वीरे खना अदित **मान**सा: ॥ वास**ः** ३४-२० सर्वात्—सन्तिहोत्र दरहे शह तुल मीठे इविष्य का भोतन किया। व्यक्ता हे सभी क्रमाश्वास महर्दियों ने प्रसन्त विश्व होस्त गंना भी के वट पर देरे बाब विशे विश्वामित्र ने भी राम को गगारकत्व की क्या सुनाई कीर व्हा कि बहाराज भगीरथ पापस व्यपने बगर को श्रीटे । प्रशा प्रधान्त

२०. वंद है राज यहादा विक रोऽविक्रियोः सथा । स्तरित शास्त्रवि वह ते सन्पता बाबोऽकि काँने । बार्का १४-२०

कर्यात्—भी राम । वह राग की कथा मैंने सुन्हें विस्तार के साथ सुबाई है। तुन्हारा कावाया हो । चव बाध्ये, संगक्षमय सन्त्रा क्ष्यन बादि का सम्पादन करो । देखो सम्भवा कास बीठा वा सहर है।

वंगावधरवा की क्या सुनक्र मी राम-अवस्था की वह रात कर ब्यद्भुत कवा पर विवार करते ही व्यवीत हुई । तस्पश्चात

२८, ततः प्रशते विमन्ते विस्ता-सित्रं तपोयसम ज्याथ रायवी वाक्ये कुलाद्विक सरिंदम ॥

वास० ४४. ४.

व्यर्थात-निर्मेश तमात होने वशेषन विश्वामित्र की क्रम सफरा बन्धन आदि कित्व कमें से जिल्ला हो चुके थव राष्ट्र दसन भी रास से वनके पास जाकर कहा--

भी राम वन को तद । पुर-दास नी साथ चर्ते। पिता **व**री काहा का स्वरंश करते हुए सगशन राम चते जा रहे थे।

त्रार्वसमाज गोविन्दनगर कानपर

ब्यार्वेत्रसन् को समित किया वाका है 🎚 को देवीरासकी जी आक्रि भूष्य जी. वी हारिका शाथ जी. दथा वी कोक्राज श्री को कार्य-समाज के व्यविकारियों के विकट बिच्या प्र**वार का**ते. ऋतिस्थित त्या जनेवानिष्ठ कार्य करने और धार्यसमाजो में वैसनस्य फैलाने के कारया धार्यसमाज की सरावात मे शब्दे के ब्रिप पृथक कर दिव वये हैं।

धवदीय :--मोहनवास सन्त्री

इसी प्रसर सूरण के 🚎 दोते को सावं सरध्या की आय, बहु वसाब सम्बंश पर मध्यम और वारों के चरव होने पर कनिष्ठ-सार्च सन्द्रज्ञा के वे तोन भेद हैं।

भव गस्थीकीय शमावक के क्षेत्र प्रमाख देखिते ।

ऋषि विश्वामित्र वहारकार्य राम-लरमञ् को क्रापते क्रातम की कोर ते नते । मार्थ में सरवू-गंगा संगम पर राष काटो । प्रात: कास बठ कर राम को सन्वोधन कर के केसे-

१०. श्रीसन्या सुत्रमा राम पूर्वा स्था प्रवर्तने, बविष्ठ नर शाद<sup>8</sup>स क्लेंच्यं देवमाहिक्य

बाह्य कारह कान्याय २३ इजीक २ मर्वात—हे बीवन्छ दे सन्ते

बच्चे । पूर्व कालिक सन्द्या स समय हो गया है। हे पुरुष बिंह ! च्छ क्रोर दैनिक क्रमों का क्र<u>म</u>स्तान कर ।

१८. तस्ववे परमोदारं दकः बुला बरोचबी स्वात्वा इतोदकी **गो**री जे रतु. **१रम** जानः

व्यर्गत-अस परमोदार ऋषि विद्वासित्र के अवनों को सुनक्क दोता शतम पुरुष—ाम समा क्षरमया—ने स्नान किया और परम जप (ओं) का जाप किया।

श्रीप विदया किन्न ने बहा-१६. इहवासः परोऽस्माकं सुर्व कस्यागदे निशामा स्नात्वहम् **क**ते प्रत्यास्य 🏢 हत्याः नरोत्तमः 🛭

TREA 93-Rd

ध्ययांन-वडां हम रात भार परम सन्य पूर्वेश शिवास करेंसे (क्वीर पातः) स्नान कर के अप करेंगे और तरशरबात् इश्रम यक्ष का धाराष्ठान करेंगे ।

शरपञ्चात् र'नाः पार् हो कर २०, ततः प्रमाते विसस्रे कुला-शिक्सपरिन्तसी।

## त्र्यार्य जगत

वर्षे २४] रविवारं २०२१, २२ वसम्बर १९६४ विंक ४६

### क्या आप जानते हैं ?

कि स्त्री प्राप्त अवस्वर की **वारील** २० से ते कर ६\_विसम्बर तक बन्धई में सारे शतों के कैंबी-**बिन्द** ईसाईयों का एक विश्व सम्मेकन होने आ रहा है। उस में श्चमध्य शीम इतार डेसाई पार्टी सारे देशों से इक्ट्रेडी रहे हैं। हमारे शास्त्र की सरकार धापते काप को भर्म निरपेश बहती है. षर इस साम्बद्धांवक सम्मेलन के किए वड़ी २ सुविधार देखी है। **10 रे**सर्र सम्बोद्धत के सम्राचार से सारे दिन्द समाक्ष में पक वालक। स्टामचात्री। योगयास जी शामिल हो रहे हैं। इधियार के प्रदार की कांपेचा विधारों की सार श्रवानक होती है। ईसाई मत का श्रवार जिस मी किसी देश में डूका, बड़ो पड़िले पादरी मिश्चिरी दक्ष के इक्ष बन दर गये ! इस के बात इस रह्म की अच्छा को सब परिवर्तन 🛍 तारों में बकड़ते गए । मारतीय द्विन्द्रसमात की निधेनवा, सरसरा से दसरों ने चर्नाचत साथ नदाया । इस का प्रमाण करकार की क्षोप से दिवत दिए जांच संधीशजों से श्रक्षी मान्ति मिश्र जाता है। ईसाई स्रोग साम्रो नहीं करोड़ों स्पने पानी की तरह बचा देते हैं। क्रम भी क्रिन्ट समाञ्ज को ईसाई बसाने के शाप विवेशों से करोड़ी सपना तथा | शवा है । क्रन्य सामान बातां है। ईसाई स्रोध प्रयमे थन के बोर से नोजे

सोमों को अपने जाल में फंछाते हैं। हिन्द समाज व्यक्तिकात जीवय के किए तो स्रोचना है पर समाज के रूप में वह बद्धा कम विश्वासता

को इस शत की विकास सही 🕮 रास सक्तों के दोने का का क्या तहा है ? चौत्रातिक प्रकटन भी धार्यसमान को कोसने में ही क्रवनी कारपॉर्व सक्तमते हैं । वनकी वाने बास कि बन्दर्ड में विश्वना भयानद विकारों का बंड काक्सक होने छवा है। उनका बन राम बा प्रवास के स्मान में ही लगता है । प्रयक्त पड़ाहों पर देवी देवों के पामोरेक्स आकर स्वीर-पढी खाने किताने में ही सम रहा है। हरको देसे-ब्रेसे विचारों के झाकसदो की चिन्ता शीनदी है। वे सादि से काहिर निकालना तो जामते हैं। पर विवास गय समयते हैं नहीं से भारत की यह उर्देशा स होती । राम सीशः व राश्तशीसा तथा ऐसे वैश्वे कामों में वैमा बजाते में धर्म समस्ते हैं। इस वात ने वाति को स्ति प्रवस्था पर पर्टेपा दिया । सबंद सामने हैं। रावनैतिक दस मी ऋपनी-समनी राजनीति वी कियदी दक्षिया पदाने में ही राह-बिन समें रहते हैं। धनशा धर्म वो बाजस्म बोट बीर मोट बर

वेसी विषय भवत्वा में आर्थ मार्डेयो क्यीर बहिनो ! ब्यापके सियाद और भीन है तो हम बोचें समा को सबनी सार्शत है। टाहि पर अपने आपको प्रसूत कर सभा इस ईसर्ड सम्बेलन दे समय वेद का श्रेशवा सन्देग विवसियों सकता है इसे असन्यक्ष है कि बायेसमात्र आगस्य इस दिला में को वे शके।

#### श्रायंसमाज श्रीर सदाचारसमिति

के लिए सारमीय गृहसन्त्री वी ाटा की द्वारा महाबार समिति का निक्रीया किया गया ताकि इस के है यहां से अक्राइमारी यह. हारा अनुवा में सशकार का वाता-कार-द 'क्री बत, राधस्त्राः वरस्य देश दिवा का सके। विचार सत बा कारत वीराशास्त्र परश्च के बडा श्रम है। इस में राष्ट्रका भोगों के सामने कवते वत को वस्यास भी है। प्रत्येक शस्य से देवाने के निय ही दिवार है। उन दस समिति की शंतीय जाका का बडन विदा यदा है। पंजाब में इस के नेता प्रांत के प्रशेष सभ्य सभ्यी क्या क्सके बाद भाग्न श्रीत के तवर्षर की भीसभीन भी शरुवर श्चित विक तथ हैं । भी सम्बर की पराने चनमंत्री नेता हैं। उनका श्रीवन कार्य कर से प्रशंसा प्राप बरका रहा है। उनक बारे में किसी सारी बनता को भी बधाने के काब ते का राजा है। बावर्ट में भी इस**च**य है। इस अवसर पर क्षाओं की संख्या में हैं कह प्रकाशित करके र्रमार्डवों में बांटने होंगे अंगरेजी हिप्दी कादि नाना शापाओं में र बर क्यार्शन होने वर्शहर्थ । इस बन्मेलन में बाहर से माने वाझे ईकाईयों को भारतीय सन्देश देने के जिए सारी प्रवत्न किया जाद । नेश का सन्दर सन्देश इनके मनों पर शक्तित किया লাল নাগাঁসন সমার স্রীন্য স্বাহিত । समा इस काम में प्रशतशील दे इसकी बदी इसम्बद्धा है । 🖘 वें-ार्डोशक समा Care शासन्धर की कोर से भी इस दिशा में बढ़ा सुन्दर काम हो रहा है। प्रत्येक वर-रारी, समाज, संस्था, परिवार तथा व्यक्ति का क्लेव्य है कि दिस कोलकर इस धर्म बाह है

भारतीय करता में ज्यागढ़ समय भी कोई कात नहीं सुनले की नानाचेकों के अक्षणभार को दूर करते किसी । वेकाव में इस समय समिति को रुप्युक्त नेता की विकादि। र्जाद्धति के सामने कार्य भी हो वहा मारी है । झाज श्रीवन का हर पहल. टपिल हो सन्दर्भ है। छवंत्र सिसा-बद्ध अष्टाचार का प्रसर प्रवाह चल रहा है। रोग संचानक वल राया है । श्रास्थार करें पढ़र पढ़ा है : इस के अब अब अबी परि-त्रभ का सामा भ्रदेशा । यदि साम्यवर भी रूपवर भी ने इस वशरदाविश्व को सम्भाता है तो उन्हें इस में क्या आना पहेशा । सारत संस्कार जन्में लोका का इस **बना** कर मेज रही है। फिर सवाबार समिति का काम कैसे अज्ञेगा। इतने महान कास को शो भी सपपर जैसे सह।त कार्कतस्य क्षाते नेता ही कर सकते दि। स्था का पाने बाते पर ष्माशार्थं विश्वेस हो आर्थेशी। काडी क्रांशिवों का भाग यह समिति भी दशकों में या दशी र समाचार-पर्धों में 📗 रह अवसी। इस क्रिया है तो करना ही होगा। इस से

मांत का बड़ा बल्याख होगर। व्यार्थसमाज को एक सर्वागीया व विशास कांद्रोक्षन है। इस सं बीवन निर्माण तथा विश्व समार का प्रत्येक प्रदेश काशाबा है। वह समाम स्वयं ही सदायार समिति ह बिसका प्रत्येक सदाचार की स्नाश मो संजीव श्री ह है। फिर भी राध्य के जीवन को सन्दर बगाने के किए वो सदाबार समिति गठित की नई है। इस वंज्ञान के प्रायंसमात . स्रो निवेदन धरना चाहते हैं। कि सन का शत्मेक घटक, संस्था सथा परि-दार पर्से रूप झीर परी शक्ति से सदाचार समिति को सदयोग देशे ताबि राष्ट्रका ओवन शळ पविच ज्य सके ।

त्रिजोध पन्द

—त्रिसोक्चन्द्र

### ग्रार्यसमाज के रहते ईसाई षडयन्त्र सफल नहीं हो सकता

(ले०-श्री महातमा आनन्द स्थामो की की घोषसा)

#### रहाराम जी ने बहा कि ईसाइवॉ की

वर्ष्ट विस्त्री १७ नक्क्यर—पुष्प करात्मा क्षातन्त्र स्टामी जी सरलको ने सर्वादयस आर्यसमान धनारवती (रीविंग रोड) नर्ड विक्तों के वाषिक उत्सव वर धायो-बित विराट ईक्षाई विशेष सम्मेजन के क्राप्यक्षकर से आवश देते हर क्रोपका को कि बार्वभक्षा के होते हर इंसाइबों के परावना सफल आरी हो सकते । क्योंने कहा कि स्वयं महात्मा गांधी ने अपने का 'शंग प्रतिका' में भी ईसाई दक्का का कहा विरोध किया या ।

m अवसर वर आर्थ श्रीव-निधि सभा पंजाब के मन्त्री भी रघवीरसिंह शास्त्री से बडा कि हमारा रह संकाप है कि इस प्रत्येश मुक्त पर इन विदेशी पाइ-रियों से नेज की रका कोरी 1 समा ने कवर्ड म ईसाई सम्मेलन पर हिन्दी शंगरेती केंच आहे क्राचाची हैं साहित्य वक्रातिक **स**र्वे भारी संस्था में विश्वरता स्टो की पर्गे तैयाती का स्त्री है। सभा **धी** तरफ से संचालित काराच्यांत इसाई प्रचार निरोध समिति के संबोजक प॰ भारतेन्न्द्राय सर्वड-स्वासकार ने घोषका की कि बस्बई ने हो रहे ईसई सम्मेखन में पत्रार रहे पोपास के नाम श्रीतस्टर्ज पन हारा समान्त्रे कोश से ३६ शक्तों को उत्तरार्थ भेत दिवा राया है क्रीर साथ ही उन्हें शान्त्रामें के किए जना चैनेंत के दिवा श<del>का</del> है। अन्ति कहा कि पत्मेक नाम-रिक को पूर्व शक्ति के साथ इस राध्द्र वाथक सम्मेलन को असफस बताने में सभा को तब, सन, चन, से पर्धे सहयोग देना पर्राष्ट्रपः

minima aur is suna file.

सफसता का कारज हमारी साधा-विकृत्रदियां है। चर्चे हर करवा वादिया सम्बोधन में लार बोल गा। भार्यसमाह के तेराओं हारा यो**य को मेले तक पं**तेंड का ताक्षियों से स्वायत किया । इस क्रमधर पर गार्व श्रीविधि सदा वेबान की मोर से ईसाईविरोध प्रकार सम्बन्धी हैं वह विवर्धित किस

#### थार्थ प्रादेशिक सभा का महत्व पर्धा प्रस्ताव

कार्यं प्रादेशिक प्रतिनिधि समा की प्रतिश्व सन्ना में १३,११,६४ को निम्न शताब पास हुआ। र्डसाइक्षों की क्षोर से कर्न्ड में

होने क्षत्रे सम्बेखन पर विकार हमा तथा निश्वय हुआ कि सार्व-🌃 इस के बारे में वधोकित कर्ल-बाडी बरे । सार्देशिक सभा पादेशिक समा से जिस प्रकार की मी सहारता जांगेले बड ही जावारि १

सभी की स्रोट से इर समाज को सार्वेश पत्र भेड़े जात कि वह TE. 12. SW 41 ES BER GIRMIN वास करें 'कि सार्वदेशिक समा क्रमेन्ट्र को मालाई के for श्राबाहन करे कीर इस का शा प्रबंध वर्षे :

आर्य सज्जन आर्थः जगत के ग्राहक बर्ते औरों को बतायें

हातपन्द सारिवा

संत्रो सवा

### २= नवस्वर से ६ दिसम्बर तक ऋराष्ट्रीय ईमाई-प्रचार निरोध सप्ताह मनायें।

बार्च नेता को रचवीरसिंह शास्त्री, मंत्री बार्च प्रतिनिधि सँशी

प्रवाह की अपील।

#### बन्बई में बांदे था रहे हैं। बारत में विदेशो शहरियों

के चदवन्त्र समाध्य बस्ते के विये देश की अवता जाग वहां है : २० नवस्वर से ६ विसम्बर एक वस्वई में होने वाले विदय ईसाई सम्बोधन के उपलीकारों से सही शब्दीय प्राथमिक चिकित **है औ**र सम्बाह हारा की नई इस ऐतिहर्समक सन का परिष्ठार काने के दिने हपाय सोच खे हैं।

बाय समात द्वारा सभी से इ. हिस्त्यकर तक कराम्ट्रांच ईसाई प्रकार जिरोध सप्ताह मनाने की क्षार्थना की गर्ड है। इस परे सन्वाह

में देश को अनवा को इस सवरे से वरिधित बराते के शिये क्रमस जात चेरियों आदि साम्रायोगनस्य तज्ञा चाक्रिवे जह संशायें वर के मार्ग इस्ती थाहिये कि विदेशी गार्री देशिक सभा से शयना श्री जाब आरत होतें और सरकार अपने गुशवर कियाग द्वारा 📰 की जीव कराये । द्वपाद की सन्द्रशता के विये चेपटर-वश्चितार व सन्य सावस्यक

> ब्राह्मकी सर्वत्र क्षेत्री जा रही है। विन्हें समित्र को सावस्थाना हो दे (विता सस्य) पथ सिसा स्त ईसाई निरोप कार्यासब खाये र्वाविद्येष सक्ता पंजाब. १४ हनमान रोब नई रिक्सी से मंगा सक्ते हैं। सका की क्षेत्र में ४ टैक्ट बचे जो में और ४ दिन्दी में तैयार क्षेत्र कुछे हैं। सबर शहीद धटेय थी स्वाभी अञ्चासन्द द्वारा ब्रिसिस ३६ छन भी लगस्य तेवार है। संस्था का बड़े से बचा या हरी भी

क्रमात देश है हत क्राजों का समा

देने का साहस नहीं रखता है। यह

समय की मांग और क्येंग्य की पकार है कि देश की असता. राष्ट्र विरोधी परस्थकारी विजेती पारिसोंको क्षेत्र से किसामते के जिले भावं समाज के नेतृत्व में लड़ी हो

हमारा प्रमियान श्रद १६ बारी रहेशा अक्ष तद भारत में विदेशी पाश्चरिकों के पश्कान्त रहेतें ।

#### चार्य प्राटेशिक सभा की विशेष सचना

चंत्रनंत सम्रा के तानीय १३. ११. ६९ के अनसार सम का साधारक वार्षिक कासियेका ३१. १. ६४ को होना निश्चित हका है अध्यक्त के लाईबा है कि क्रमता दशीश ३१,१२,६४ तस समा कार्यात्रक में भेजने की क्या करें । इस निधि नह दिन समारों का दशाश नहीं शक्त होगा वह है प्रांतिविधी को अधिकेशन है

सम्मन्धि होने की बाता नही

होगी ।

#### संत्री-समा श्चावश्यकता

कार्षकात अस्तरकार है एक विद्वान पुरोदित की आवश्य-इसा है जो प्रशासमाओं विशास स्थास्थाला होने के ब्रातित्वल ब्दर्शनक स्था प्रचार के कार्य में थी सहायक हो सके।

व्ह सामारक दिन्ही क्टे क्रिसे सेक्ड की भी कार्यस्थकता है जो साईक्स चलावा जानता हो ।'

—सहरू समी प्रभार करी देश्ट औ समा कार्यस्य से । प्रत्येशयात्र सरम्बत्य प्रमुख्य

### चोट पर नमक

तेसक-श्री सत्पनीर जो शास्त्रो शोनावर

#### 

संस्कृत में यह सहायत है विदर-। mac विकासकी विदयदार्थन परी-श्रात: । विशास ही विद्यानों के प्रती-क्की को बाजते हैं। विद्वान बनने के सिव किवती वपरवा करनी पहली है किश्वम विस्ता होना पाडिएं, विसनी · अप्रयामित की काल्यक्टा होती है, में ही भाग सबसे हैं जो विद्यान क्रते हों।

श्रीव बमी प्रकार चीर सवी हो कौर तस पर क्याचित पश्क किए सका को विकास वर्ष होता है क्सका प्राम्भव स्थवं पोट वाला औ रूप सफल है का जिसे बातकन हो वही अन्य सदस्य है : क्ता बड़ी स्थिति हैहे हरिया

की नहीं है बचा ? है वैसे ?

निहोंनी संस्वासी सहयो मुरेन्द्राश्ट यो स्व भागमन सोसा-प्रत्में नर्भों के साथ-ग्राम सीवत पत्त के प्रारम्भ में एपड साथ में दया। सोजापुर के नियानियों को पन्होंने अपनी निमंत्रवासो से वैदिश दर्भ के प्रति सलकारा । व्योजन का सन्देश दिवा। वेद के प्रसाय विथ । त्याम का धैर्व दिया । निरमंक्ता स करतव विका।

भट्टत दिनों से एक समय लामी बी को सकारही वो एक बार वृषिण ६४ दौर। इर बाऊ' न वाते पैशान में रहते 🎹 कई शर कहींने इच्छा वस्ट की बी । स्टब्स सक्षत के बाब ही बावं पूरा झोता है क्यीर -का पनकी विशासिकाका एक बार मुर्चादुई। सोलापुर से मई साम वे दीरा कारम्भ किया और क्रिक म्बर पास में फिर से शोकापर माध्य समाध्य किया । स्वान स्थान ं के दूरम, नगर नगर की विशेषकार्यः मन्दिर मन्दिर की विविधवाद, प्रकारियों की नवीनवार्य सार्वि सर्व स्क रेका स्वामी मुरेन्ट्राकन्द् की ६६

निर्मीद संचामो है। यन वा बोज नो सेरामात्र भी नहीं है, वही फारक वै कि शोकापुर से बंगओर मदरा रामेश्वरम्, त्रिवेन्द्रम्, सैनकोर बदास मार्वि की सफर लाई सर्वा इसने हुए थी, बैदिक र्राष्ट्र से सम्पूर्व स्थानों वा निरीचक दिया होत बन्त में 📺 किर्तंब पर पर से ।

विश्वमासन्<sup>क</sup> का सहर पूर्व हो नदा सा मतीव होता दर, विस्त र्धिक को देखते ∭ा वह विकार लाजकानष्ट हो सका। बर्जनक को रुक्तिक के स्रोग राजक्त्यन से र्वानदिव विमुख हो रहे हैं। किर नेर की बात तो हर ही रही। श्वमी जी को दशा ही बळावर्थ हमा बद अनुर्ति देला कि तसः दिनारों में वसने बाले प्रधारो

पंत्राय के असवों दर्श जल्ह्यों

भो देखते 📰 विदिश्व होता पर वि

विश्व ही अन्तें समाज बस गया

हो । शोड़ी देर के ज़िर ''हरकनो

सव इस मसीटा ही हैं। न्तासी शंक्रशकार्य जी का जन्म स्थान "शबदो" हो को रूपेय देवाई ननः हुमा है। उससे स्कीर हमाने दक्षिण की क्या किकी होनो । कामश्री में जीवनाचारे महादिशास्त्र क्या ईबाई सहा-विद्यासक को हैं। स्वासी जी ने ग्रन्सपार्व वहावितासक के पाध्यापक से पृक्षा क्यों जी। झाव का क्या कांग्य है उन्ने उत्तर दिया केवण ह्यूटी रजन्ता। यहां ईमर्थयत का प्र**यम मा**बिक ही है। परन ईंशई प्राध्वापक से प्राप्त आजे बीक्स इस में भी करहें में दोव वर दक्ष मिला सर्व दवन लेख क बागसन हो स्था वह भोट पर क्लैंब्र पर्म का श्वार और वात से नवक दिश्वने के समान नहीं हैं ? वकाशः ।

मस्त्रकों के एतों में ईसाईश्व हा

चित्रह सदक्ष रहा है। चनके जिल

### वम्बा की रोमन कैयोलिक ईमाइयों की कानफ्रेंस और हमारा वर्तव्य ।

(से॰-को महास्मा देवी चन्द्र की एम, ए. होशियारपुर) \*\*\*\*\*\*\*\*

(गर्लंड से धारे) ने बहात्या धान्धी जी की क्रपील -सनावन पर्मा जैन और सिला को रद कर दिवा था। यह सुद्धा, बाह्यों से मैं भ्रमीस कहा है। कालिक हरफाल फठशास्त्रों, वसीम इस कान कीस के मनानक परिकालों जाने अपाइक बाबस और ईसाई से क्याने के लिये मिल दन संस्थार्ग देवज इसज़िए स्रोक्त हैं काम करें। सभी सोओटिकों को कि हिन्द लोगों को ईसाई बतास्थ बिस कर एक कोड भारतीय तो ईसाई वन चुके हैं। इन को वापस क्रिया जाये। सहातमा गर्था हैसाई बाबरियों की धार्मिक सरक्षियों को पंतर नहीं दस्ते में। दर हा स्वास था कि सेमा के स्थात से पाररी कास करें तो का यन कोई हर बहा

बाद ! कोई देश महत, काई वैदिय समें दार्जें की इस बटना को सानित से बाहन नहीं कर सहता । स्था डा॰ हो सहित्य काको डोक हो कामगी कि १००० वर्ष में कासिक मारव ईसाई बन जावेग्द । इसारा थमें है कि पुरानी बैदिक क्रिन्ट है वरन्त् यह मेना निष्ठास हो सम्बद्धा को बचाने के ज़िल राज-वर्दि इस सेवा के लोचे बसाल कृष्ण क लाम लेवों के पने 🗳 रजा के जिए हात एकत्र होफा काव मांच छ्रथा हुच्या है। कि इर स्थलर भींत का विरोध करें। स्त्रीर अक से जाहक और नवाडब सावनों से # इ. एक करोड़ दिखाओं की ईसाइका सोनों को कारने नैविह धर्म से से ब ताबा लें छव तह आभाग ज वंचित किया आए तो यह निहास्त ųž I इत्सब इस्ने क्षेत्रव है पार्कस्या ने ओ माई इस काम के किए

पन से महावता बरना नाइते है स्वतन्त्रता के समाप्त बादीय वह अपना दान ला० रामदास आ क्यान, बाल इतिह्रवा द्यातस्य कारवेशन बिरान, हाशिशास्त्र की शोम अनि शोम सेवने स ड्या करें।

संबद्धन बढ़ने सवा। हांट्रा से होटी मानव बलिएन जाडियों में संगठन बनः तिल्। इसका भूताक के हिल् भी बच्चा वस्त्रोग होते हता. आर्थसमाधी भी भएनी करनी दयानन्द निर्वाण दिवस बिरादरियों में ता मिले, पिर स्था

कीन कार्यसमाधी ? जिनके इहर

है से हमें स्वा करना साहिए।

#### एवं दीपावजी वर्र में श्रुवि को ब्योति, स्वामी बद्धातंत्र धार्यसमात्र संडवा में रिनोक

बी की बढ़ा, सहारमा हंतराब तो दे-११-६४ को दशासन निर्माण-का त्याग ५० गुरुइच जो भन्ने करान दिक्स एवं रीपावती वर्ष समार्थक प्रांक मनावा एवा एव प्रवृति के परिकारील समान वीका रुधि। धनुसार बद्ध वह प्रायंना अवस विनके नहीं में पहर रहा है वे ही के बाद महर्षि हवानम्ब के बीवन बावं नौहा को काने बढ़ा रहे हैं। सन्दर्भ सुलराम सार्थ ने सकत प्रवस दो दक्षित् में कार्यक्षमान सुबाये । तरपह बात भी ५० राम बस्य का विकास इच्छा हो नहीं। दुबरा वा क्षेत्रसी प्रवास सार्वसमाज कहवाने (-वें ह्रो विशेष्धा पर प्रा ऋषि इवाबन्द्र सहात थे) आवत दिका । शान्ति पाट के बाद कार्य-क्य स्थाप्त हुमा।

⊸रामपश् यत्त्री आर्थसमात्र सम्हर

मैं उत्तर देने को खड़ा शोगमा और मैंने बहा कि झार्थ

समात्र 🎟 मन्त्रों के एक २ राज्य क्वीर पकर अकर की सानता है भीर इन वे ही सन्तों के नहीं चारों बेटी के थक २ प्रावट को श्रापंसमाज मानक है इससिवे आर्थ समाध विस्तृत वैदिक वर्ष है क्रवेदिक ची( नास्तक सत स्वापि लहीं है। जो दो बेंद अन्त्र आपने बोले हैं वन में स्टब्ड माद्ध की गन्ध भी नहीं है सवकों का गाम कंट नहीं है। इन दोनों मन्द्रोमें ओवित पिठर-को बुलाने उनको ध्रयनी वार्वे सुनाने वन से उपदेश मांगजे कीर उन से रक्षाकी सामना करने आर्थिका

प्रथम मध्य में दहा है वह हमारे बुक्शने हुए फिर सोम रस पीने बाले विवर वहां कार्ये, हमारी प्रार्थना तथा हमारे प्रश्तों को सने की बुद्ध पुत्रों के क्रिये चहना योज्य है वह कहें और इमारी रक्षा करें।

बरांन है।

इसरे सन्त्र में स्था गया है श्वमारे वितर मुझे पुरुषों के मानों से बावें हमारे वज्ञ में बोजन करके प्रसाम हों इसको जपदेश दें और हमारी रहा करें।

इस मन्त्र में दिवरों के ओ सम्बन्ध कहे हैं वह जीवितों में ही घट सकत है नतकों में क्यापि मही। बीवित ही बुलाय वा सकते हैं। यद कोई किसी को को कि-क्षपुद व्यक्ति को बुखाओ, वर्ति दशी नाम का कोई यर सथा हो भौर उसी नाम का कोई अीबत की तो वह यह यह यह। प्रहेगा कि---इस नाम के मरे 🥅 को बलाउ या श्रीविश को । यदि कोई बेस पूछे थो १ छंको सुनने वाझे क्षोग मामस ही बताएंगे । सभी कडेंगे वि-- ११गल । बुकाया को अधिकत को जासकाई। स्थ्ले वाहा दव सर रहा था कव कंप पानी प्रकेष कौर्याप भी नहीं पी सकता मा जो

सृतक श्राद श्रौर मेरा सबसे पहला शास्त्रार्थ <sup>नहीं किया। करे</sup> वेश बारे (ले o-सारवार्य महाराधी ठा = अधरसिंह जी आर्थ पविक हापूर)

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* पीतां बा बहु 🔢 बुंडू से बद्दर निकल द्वाताचा, वह सरा हुवः सोजरम बादि कैसे वी सकता है कतः सोमरस कादि पीने वाका है रहे हैं और मेरी बोर इस्थ से भी जीवित ही होगा । यद कोई मरता है वब वसके स्त्री प्रजादि वहते हैं कि-इस हमारी भी समो ! सद इसको भी बद्धवाची ! इस के किये सभी की महत्व हैंगे बंद किसी की मुनतका है वा अवस्मुर वी शङ्करवार्य सी किसी को दूस कहण है जरीर कभी कसावा नहीं गया इस

दशा में भी थो न सुनना न बोक्स्ता देवड शरीर के नट ही जाने जलाप अने के पीछे, विना शरीर के बोज़ेगा भी चौर सुनेगा भी ऐसा कोई की बुद्धमान नतुष्व नहीं मात्र सकता है। वृद्धि पूर्वा

नाककृतियेंद (मीमांसा) वेद वे शस्य सुद्धि पूर्वक है राष्ट्र ही इस सम्बों में औषित पितरों की सेवा करने बाँद वनसे उंपदेशादि प्रतस करने स्थ बर्खन है मुक्कों का वस्त्रंत

मैं बढ़ बढ़ कर बेठा और पौराधिक पश्चित महादल जो वा नज़ा प्रसाद की जो से यह सब्हे हुए जीर मेरे किने प्रकों और विवरकों का इस भी सहभ न बरते 📺 सब से पूछने लगे कि-आपने जो दो वेद मन्त्रों के अर्थ सुनाथा है है यह किस प्राचार्य का किया

रात सन्त्रों में नहीं है ।

मैंने क्लास उत्तर दिशा हि-बद्द क्यर्थ मेरा है जबि इस में भाप कोई दीभापत्ति कर सकते हैं या इसका खण्डनकर सकते है तो करिये और बताइबे कि इन मन्त्रों में वह कीन से शंब्द है जिन का अर्थ मृतक पितर होता है ?

नेरी बात का इन्ह्र भी उत्तर न

देकर उच्छ पश्चिम जी ने इस्से मस्कराते हम कहा कि इस हो वी शङ्कराभाव भी का माप्य मुक् संकेत कर के कहा कि । ये शीमान **इ**.एस किंवा द्वर्ष सवा रहे हैं। (बनता से पुद्धा कि। चाप स्रोग

महाराज के भाष्य की ? में तत्कास करा हो थवा और मेंने बहा कि-

समा वान प्रवेष्टल्य बक्तस्थ वासमें बसम 1 क्ष्मुवन् विमुनन्यापि वरो

ज्ञाति विकिश्यो ॥ भगवान मनु सहते हैं कि समा हैं मुद्धी बाव को प्रुन बर चप रहने का उस का सबधत करने पर

मनुष्य शर्थ हो जाता है १ त्री शहराचार्यं श्री सहाराज से किसी भी बेद पा बेद मन्त्र पर भाष्य नहीं किया और भी पाँगहत मरी सभा मैं छन का देर साध्य बता कर माठ थोल नहें हैं। मैं इन के साथ बैठे 📰 दोंनों विद्वानो

स्रे प्रता र में भ्रश करता ह ये बोनों असला नहीं कोलेंगे। कुछ कर के बतलायें कि श्रे शङ्कराशायाँजी ने किस बेदपर माध्य क्रिया है और नह क्हां नर सुपा है। पहिले हो होती दन परिल्लों ने जो पीराशिक शासार्थ को के साथ थे त्राते चौर कह वीक्षते में संदोध हाथ में सेवर कड़े से कड़े वीराधिक किया पर मैंने तब बार-बार धाक्ष पंडित को बुतक बाद पर परास्त क्या वा सक्ता है।

विया और बनश ने भी उनका श्चर सबना चला वो दोवों सबे हो नवे और होनों ने उपि स्वर में कोक्या की कि जगदगुरू श्री

श्रंकराचार्य जी ने किसी मी वेद वा वेद सन्त्र पर भाष्य ही सारा बरहर देखिक समें की जर श्री दशक्य की सब एकिन धनरसिंह भी बी जब से गृज पदां। शुभको ब्यार्कसमाज के क्यान रिटा-वर्षे व्यसीलदार की सा० आमीर-चन्द्र भी तथा कार्व समाज के यन्त्री सी बा० वरपुराम औ एक-वोक्ट ने भोद में हठा सिया । भस मेरा शास्त्रायं महारको और शास्त्राय केसरी बनने का उसी बिन से सत्र-पात हो सका ।

अवतीत हो गये **चौ**र ४७का वर्ष बारण्य हो नवा। झात्र में सीरव चौर वन के साथ घोषका करता g किसारे भारत मरमें एक भी पौराशिक पण्डित ऐ**क्षा** नहीं है जो मतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ कर सकै।

इसी १ कक्तूबर सन १६६४]

को सुभ को उपदेशक बने ४६ वर्ष

मेस देश कर के पौरा-शिक पण्डितों को सला चैलेंच है कि कोई भी पांपतत गरे सम्बन्ध ख्यक आह को वेदालकत सिक करे। मेरा दावा है कि सार्थ समाज ने इन विषयों में विध्वक्रय प्राध्य कर ली है। पितृ पितर का क्रथं जीवित ही माता पिठा कार्ति हैं मरे हुए नहीं इस पर नोवित पितर नामको मेरी पस्तक में समासी प्रशास है। वसका सरहन कोई मी **पौरासिक** व्यविका नहीं कर सका न कर संदेगा । वह पुस्तक प्रत्येक स्माने के पास होनी चार्रिए। उस पुलक की

वेदों का पहना पहाना सनना सनाना श्रायो का परम धर्म

#### वार्यसमाज माडलटाउन यग्रनानगर सहोत्सव

#### संकीर्तन का ठाठें भारता हवा भव्यसागर ब्रिसिएल रसाराम जो समा प्रधान को बैजो जेंट

**AMAMAMMENTANCE** 

#### ८० राजपाल मदन मोळव की के दमुना नगर का जिस शकार

भारत राज्य एवं सन्दर और सम्पन्न बगरी है, पत्नी प्रकार वहां भावें समाव भी सचम्रव बादर्श क्रम में ही शानदार कास कर रहा है। समाज की कपनी बड़ी असिट .शिचन शंस्थाएं चछ रही हैं। की. व. की. हाईस्क्रम है. टी.ए.बी. -गर्म कातेत, दी, ए. वी. यन्तं सक्क क्रीर शिद्य पाउशासा है। हजारों राज साध्यं इन में शिका मेली है। पार्थ समाज के वार्यवर्त नारे हो वर्धनिष्ठ. बास्यन्य रासाडी कथा प्रभावशासी होने के कारग समात्र एवं संस्थाओं को बड़ा अंचा किय का रहे हैं वाधिकारी कर्णा को बोर की शेष परिवार के समान सिशंकर काम करती है। देवियों का उत्साह और अन्त मी प्रतेसा के योग्य हैं। ऋत्वे क्यारी तवा स्वको का समाज प्रेम क्वा क्षणम है। यह समाज हर प्रकार ू की अधित के प्रश्न पा जाने ही बढता जा रहा है। समाज के खमे-बोगो सरवर्ती में सीव्यमूर्ति सेड श्रमकाल जी प्रधान, भी महाजन वी मधी, थी मनोहरताल जी साहनी मैनेजर स्वतः भी चरतोड को सी दीवान शतपास जी, वी बोहराजी, भी भादिका करे, भी बांधी औ, माला सुरहोना को, भी दीक्षतराम जी, वहिंच राजोदेवी और कादि सारे ही प्रसादशाओ समाज की उल्लंब में लगे हर है। क्रसव से पूर्व सुन्दर बक्रशासा में बेद का पारायख बड़ा भी होता वा क्षिम् म अस्यविष्की,गर्भीर विद्वान

अरीले मजद होते थे। नगर संकी-तन कमाल का था। बक्का वरे वससे हो देख बर तगर की दमश वदनद प्रसम्ब हो उसी भी अक-पोषों व संगीतों से *बगर ब'ज* 

उस प्रतान है जा। प्रताहता

बी, विस्वित के रजाराज भी वज

ए, एम. एत. ए. प्रधान ब्रावें प्रावे-

हिन समा बाह्यपट, साचारं प्रियम्त भी बेद सामार्थात राजस्थ क्रीवर्ग, पं० तिसोक्तवन्द्र जी शास्त्री, झाशार्व शिवसमार ती शास्त्री, ५० राजपाल सहन मोहन वी चिमरा मंद्रशी, पं॰ बद्रपाल **वी. वडिम स्वीरा जी वादि प्**चारे। वयोमित विसीपन रजारास थी सबा प्रवास औं के हो भावना बढ़े ही प्रभावशाली हए। इन में आवे समाब हा बनवा हो विशेष सन्देश बिका । प्रवृत्ति का द्वार महा क्रवोदर था। समाज के प्रधान सेठ बयनशालाओं ने इस प्रावसर पर चंदर मार्मिक छन्देश दिया। इनक बन्देशक मोजी स्वामी वेदाशक क्षी की प्रधानता में सम्बन्त हुआ। रविवार को विज्ञास ऋषि संध्य शे क्याल का या। हजार के लगभग ने मित्र कर मोजन किया। बहिन शन्तोरेची की उपाध्यक्षा पंजाब विधान समा ने भी सन्देश दिवा। उत्सव 🎹 बद्धार से कमाल का या कार के का कार्य का भी भारत जा। समाको देह इक्स है हाला के उपस्ती, सीम्बर्मूर्त शहान विद्वान श्यान विभिन्न रज्ञाराम औ एक. ए. की सेवा में ४०१) (द० बेंट पॅ•रक्षाराखन्नोपेन्वियानानुको साल्यो क्रिय गर । समा के उनक को उनके शामिस में । सना की प्रतिद्ध संकारी | स्वत इस से पुश्क विका । जनस

### चरित्र निर्माण में भारी रुकावटें

(से e-ब्री पिशोरीलास जी श्रेम, रेज्का जिला सिरमौर हि०व०) . (≠∘ ૪)

(गठोक से भागे) विदेशका अगर का सामा कराव. बाद वक कहा कर है जिला से उन्हांब मी दसने कापने का का ताल का तिना, बह न माता विता का तहा न स्थान समान या शेलका। शराब के नहीं में सबबोद्या बोक्ट व्यक्ति 🎟 क्यार को मधाई सीर पाप करने में बन्त हो जाता है। बरेसे बग स्वक्ति भी होता थी द्रासन में ऐसे ट्रन्डमें बहावि नहीं दरेगा जो बढ़ उस्ते के पोड़े कर सवार डोकर कर बेता है।एक शरावी परित्रदान क्यी नहीं हो सक्ता। क सामधी वर्षकारी को कि सी या डेट सी शवर सासिक केवन से क्राधिक नहीं सेवा, क्रिसने परिवार का पातन-वोधक भी करना है, ऐसे रवित के किए का बैसे सम्बद है कि 💷 बिना रिङ्गात सिए प्रतिदिन शराब थी सक । इसी प्रकार सेंद्रनत क्रकरी करते काले वा छोटे दवान-राज बर्जार ओस जिल की ब्राज कर है वे जब कह वेईमानों से धन न क्यावें, शेजाता तथाव बैसे वी संस्ते हैं। वर्ड लोग 📰 सहस्रों में ब्या बाते हैं कि बाल्यमात्रा में क्रीपमी के रूप में इसका सेवन जामदायह है परश्त बहुत से बड़े वढ़े दाक्टरों को ये सम्मति है 🕼 सहिरा पान प्रत्येक संशाधा है मत्त्व के सिर्व द्वानिकार है करों ि इसमें चरकोडस (Alcohal) नाम का विष होता है। धर-होहल (Wine) वार्डन में १०% विवार ख्य सफल रहा। इस का बेब समाज के सारे सध्यकों को है। भारत है। नहें की खबस्था में नासी सीन्यमर्ति सेट श्रमतसास श्री

प्रचान समाज्ञ व इसके बारे शह-

बोर्रवर्षे को क्याई हो । श्री समाव

का बरसा भी समारोह से हका।

(Bear)# 1% fafes Whisky बांबी (Brandi) में ४०% वह की यात्रा में होता है। वारपर्य वह है 🕅 प्रत्येक किरम की शरान में वन्द्रोहल की स्यूत वा स्वरिद्ध मात्रा का प्रयोग होता है । जिस्ता विसमें अल्डोइस न्याता होगा कानी की बाद लेख होती । आठ देख (Dr. Dack) famit #. mash. इस एवं सरम अहर है जो जीव भी मारीय में फैस जाता है चरीन रवन गस व अस्तिएक की कार्य-प्रधाशी में बाधा पहुंचाता है। सुजन वैदा करता है । सभी-सभी सारे शरीर को कावाल द्रावि पश्चातः है ।' शोकैसर हैट्रि**शंग** (Prof. Hatzing) Great हैं.' शराब पीने की स्मादव वस्तिष्ड का यक रोग है चौर =०% इसा.श्री घटनाव सराव पीने के कारण होती है।" सि० प्रोहत (M. Pleten) विकर्त हैं। कान्द्रोहतः सतीर के केनास्थल पर अयानक कसर टास्सी है। वही कारण है कि सराब पोले वाजों से से बहुत से पायल हो जाते हैं।" भारतिको की बस्तात शराः ससी होती है तथा बिरगी, वपेदिक, वाराजवत उत्वादि रोगों में अस रहती है । शराब पीने बाते प्रायः निवंस होते हैं। इससे न केवस त्वास्त्य ही विनक्षता है अपितु इसके कन्य बहुद से मनानक परिकाभ होते हैं । शराव का बादी पर बार नेच कर मी शराब पीने से aती क्रिकक्रियामा अभके वाल क्यें असे बरते हैं और यह स्वर्थ कीही-कीही की मोहतात हो अला है। ब्यवतो परिश्रम से समर्थ हुई देनिक काब को रात की कलाज की पै

में शिर जाता है कुचे मुंह पाउते हैं

किर भी बह सब्बाहीन वन कर

कराव स्त्राते चला जाता है । (कशराः)

#### ्यस्तक समीश्रा शहबदावे जीवन (उपन्यास)

प्रकाशक--- जबवेद गावयां मारवाराम पम क्लोबा-१ ।

तेस**र**्याचार्व शिवपसर्वीत इत्त्वाहा, विषय R.A. सामपुर ।

4044 50 N. P .- 445 aium 48 ı माज्य शीवन हिंदा श्राप्त प्रदेश

स्रिकितिकारी में परिवर्धित होता है इस्पा व्यवंत क्याहर व देवका ही वो उपरोक्त पुस्तक का पतन क्षीविष् । क्ष्ण्यास स्व नावक निशानाम विश्व प्रवार करा क्रीर सुन्दरियों के कुणक में बंध कर क्षीयभ में सहस्रकाता है और यांत में इसका किस शकार क्यार होता है वह एक्यार में र्वडम । बालब क्रिका का द्रष्यांस्कास क्षेत्र रोकक कीर मार्थिक राज्यों इशांवा है। आयसमाज की संबद

मदिश कार विकासी के नगस में न पंश कर क्रांत्रम में म से किनाश करते हुए क्याने जीवन की संबन्नी क्लाने का सन्द रख कर इस प्रतक भी रक्ता से है।

वक्त्यास की भाषा सरस शैकी कार्थचेंड तथा शिक्षादायक है पुलक सम्पर्य पर्व विना नहीं होती. जानी बैसे २ ९६ते जाएंगे वस्तकता बळती amili i

प्राणि स्थान-अवदेव स्वसं कारबाराय वन क्वोदा~१

साहित्व प्रचारक मासिक भाषे समाज, प्रतका-तथा व्याचामशासाको द्धी सांग काले यर मुक्त १ वर्षे तक दिवा वादगा सिसें । जगदेश शादसं पो. वा. ४६

बडोदा-श

**人名英格兰斯斯斯斯斯斯** -ख इसरा

( 25 )

विन्हें समय ने बार रका है उनको तब क्रम मारो सम्बद्ध हो हो कामे गडफर निस्तों को इसारो चनर बराई से बचना है इस दुनिया में तमके वजे-वजे की चित्रश बोबी जब को जबा सकारी

श्व-रह करके शरह-शरह से हुके क्सर ने डीका पिर भी विवक्ति हमा नहीं मैं करा नहीं बार दोता इक्का रंग अही ६१ला में सीम रहा में केसे तुष्के स्थः इकान होता है मैं स्थापन वर्षों, बोहा

सोटा कामा क्षीत घरमना शह व्यक्तिसप अही है यम बहुता हु" मानकता की दीवन साथ नहीं है शंधो भाग बढ़ाव हैं अर्थ इस इसिका के बान्दर पराधीनका से वह धरके लेकिन क्रम नहीं है

--- विजय 'निर्वाध

बावई में होने वासे ईसाई सम्मेलन विशेषी ध्रस्तव This meeting of all the Arya Samajists held on 25th

October, 1964 at Chandarath views with great minglying and annety the Eucharast Conference of the Roman Catholic Church about to take places in the last week of November and early Describer this year in Bombay and Gos. This Conference has been detended so the helieum published by the presument. (Volume II., sace 6) as a crearce by the Christ's army for the conquest of India. About twenty to tharty thousand Rossan Catholies of the highest rock such as cardinals, archbishops and bishops are to assemble in Endia. Incm. Jorough, countries on this occupies. This is searching as-processingled in our history. This appears to be a part of a deep-laid plan to convert thousand of Hindus, Musiam & Esakhs to Christianity. This Conference is bound to have an adverse effect on the future development of Goa. This is a situation hanges with grave danger for India. We appeal to our country aren to afert and not to be taken in by the prous profession, but appear altroughy the machinations of the fereign mesonanes who sum at undertricing our national unity and solidienty. We knowled request the Govt. of India to take timely steps not to give any kind of help or encouragement to the scources of this Conference so that this menace to

2000 Se SE 200

संस्कृत शिक्षा व वश्ययन को अर्थ विद्यालयों में प्रोत्साहित करने का जिल्लाम ।

धार्थ संबार न संस्थान में कियाँ को वह बानका प्रसन्तता व संतोंक होना कि सार्व क्लिस क्ला. ्वानन् अमेष प्र<del>वस्त</del>ः स्ताः चित्रसम्ब सामे वह विक्**ष** के भगुरवार में हुए भपने यह कार्यिक कविषेत्रत में संस्कृत कामसूध क विकासमानी से दोस्परित करते के जिस्सा एक प्रसंस का औ रासी ब्रासिक वर्ष में अब ब्रासे

की समस्ति शहास की भी। करः कार्य स्टूबों के प्रवास-म्बापको, श्रन्य जिल्हा संश्वाको स संस्थत-प्रोमी कार्य शब्दानी ब सभा कार्थ समाजी से बा प्रक विषय में स्वि स्वती हों.

सामुरोय धार्मन्त्र की बालो है कि बहु घरनी सुविधासुकार री आधि श्रीय कावने व्यवने केंद्रों है विकास करते के क्यापन कर रम्बन्ध में क्यूने सम्बन्ध व पोक्रम मेकने की क्या करें, ताकि कारा का वर विकास वर इस मोर क्रमते

क्ष्म की पूर्व में स्थमता हो सके। निवेदच-देशराम महासम (९.गुकेशनक पश्चकार्रकर)

逐渐被英英英英英英英 विद्यापन

ग मध्यम शर-जिल ster feitreffer S. A. R. T. सकास दक्षवादा विशा क्षेत्रिसाएक

वोदिस क्ताक---थी. पी. सहयक H. No १३६ यकी नं. ५ सेंटकटीन वाकन्यत

कापको सुविव विवा जाना है कि जावके और तेका दल्ड क्टेक्सफ बोस्टारी त्यावासके दरमियान सी हेन-देन का महाबा है उसके फैकड़े के किए वारीस १-१२-६४ मुण्डरर क्षे आठी है इसकिर होवें ।

-त्रियोश्वित वैद्यास्टर वर्वाचेद लॉ स्टब्स्ट स्टब्स्स जिका होसियारपुर)) NATIONAL PROPERTY AND INCOME.

all the necessary stems to save our culture and freedom at this हुइंच व प्रकासक भी क्योचराज जी काल जादेशिक र्जातनिय सभा पंचाय काकन्यर इस्स बेर जिलाम प्रीय, विकास रोड आसम्बर से सुर्जीत तथा कार्यजनत सम्बोधन महारमा इंगाज नवन निकट स्वहरी कालम्बर रहर से मर्बाहर साहित-कार्य मार्थित असिमित समा प्रमाप मध

critical time in our history.

our culture and incolon may be averted. The foreign mission-

arges are also exploiting our already unhappy situation on acco-

unt of food scarcity. The meeting appears to the public to take

शास्त्र में देशीय नगर काग्रन्थर के

विकास कार्य समाज विका महत्त्वा

### ऋार्य जगत

वर्ष २४) रविवार २०२१, २९ अवस्वर १९६४ विंक ४७

#### श्रार्थो । श्रा ही गया क्या का यथा रे ब्राप के देशाय , की इस कावरवा के पर्व में

क्य बार इसी विशेष **अवगर** पर

enfance from moner II

अल्ल क्रिकारियों की नव नवा

का वार्षिक महोत्सव का गया है। जिल्हर **अदानरी प्राचेना पर** इसी महीते के भगते सजाह में MSP का स्थाप स्थाप स्थाप से रकार कर जनता को यह वर्ष के २६ तकस्पर श्विवार तक आर्थ र्वस्थ जीवज बक्तर देते हैं। प्रश बद्दारमा भागन् स्वामी वी का क्षमात्र किया शहरता वालगार थी अनुसार विकास है। बारे प्राप्त की बडोर से नदे ही कमारोड सार है का दियों वह मेहा-सा ही क्के समाया बारदा दै। समानों सार होशा है व का बेसे हो अलेख उत्सव धपने भाने शाने इस महोत्सव की स्त्य में स्वय क्ष बेसा होता है। वैदारी शरम है। समाव के एव किनु बात यह दे कि किया समाज शोकर की जुला नेता हा० इड्डमचन्द केन्द्र 🎟 विशास समाज है। बाही र्वा मनका, ता० कलोकराज की क्रमारक्की के समान इंध का मी प्ते सन्त्री समा, विस्पत प्हारा-कारे पंतास में पद महत्युर्ग स्थाप शास की देशे, मान्य विविधन है। यह बात इस सिय है कि वा त्रीयसेन गाव, मान्य विकास स्थात अन हेम् का हम शास्य काराव शी. मान्या विविध्व (काराव **कर** शक्त है। जनसम्बद न हमारी तो प्राचन रहता. विकिएस सन्द करी > जिल्ला संस्थाकों की बल औ प्राटिश समा मन्त्री क्षी, स. वी. फांसचे, ईसराज वहिला िक्षियन **क्रां**चरेच जी व्यार्थ सारे े कारोप, सर्व दास इत्तर सकेंद्रश ड्रो समाज के सम्बन्ध इस के प्रयत्थ **रहा,** इदानम् भावत स्कृत में समे उप है। दिवा समान दा লাব্ৰীবিক ভাইনে, ব্ৰাণন पुश्चर वस्त्रिर भी बन ठा थवा है। टेशनकर कालेज जार्द जेंगे — क्रमार वर सारील २३ स्थानार सावनियां मीजूद हैं। झावं समाव भोप्रकार से जनसे के उपसदय में के प्रेतः यहां बेटे हैं । ब्याय मावेशिय यथा शरम्भ हो। जाएगी । श्रवकार समा का फेरडीय कार्यालय मा बड़ी को कियान करन उन्ने भारत है। इस का जनका विशेष रूप से हका बलेवा । वादिर के कार मार्ट क्षमञ्च होता है। चारों कोर से बहिर्दे प्रभी से दम दिनों में इस है क्षाप्रते मध्यो य समाजी से करी शासिक होते की वैपानी का शंबदा में व्यक्त, मार्ड पहिने रखें। सारे काम बोड कर मी शासिस होते हैं। वहें २ लेवा अक्षता होता । संगठन **व** शक्ति संदारका विश्वाद इस में प्रधार कर सायप्रिकत सिल्लाई। यदि धन क्रिजों इक दो दिनों के बिद स्थानों में श्रवधरा करा दिया जाने वो

सार के बाल प्रश्नात्वर वर्ष प्रश्नाचन व वर्ष पुस्त मी का

#### त्रार्यसमाज लोहगढ का भव्य समारोह महात्मा भानन्द स्वामी को वेद प्रचारार्थ २५००) रुपये की बैली मेंट

मार्वसमाज सोहनह मस्तरम द्या वार्षिकोत्सव २६ मेरो नम रूप पार**क कर** क्या है। दूसने वस का स्वरम् करा देश है। इस वर्ष वह सदोलक क्रमानंद तक में व्यपना भारी प्रभाव राजा गया है

विरोपना वह है 🗎 समाज के साथ वाकी थी मूर्ज पड़ी भी यह है सी र्ग्स क्या बेदपारांक्य वह क्षे शान-दार पेदी भी इसी स्थात पर बनाई

सं.यत. वी बरोदा प्रयासन कालेश करकार, धे+ वेल्ला को वस<sub>्तर</sub> क यन्त्री कार्यर कारे सम्बन्धी के वर्ध-श्य से जनता टाढ का श्री सक भावंत्रका के प्रतिष्ठ तसकी साम यहारेका क्षात्र-व स्वाकी जी की क्ष्यास्त का प्रशाह असता रहा। बन्धा ने अनुत्रशन स्थि। यह में भी साक्षी अक्षानन्द जी बहा वाते छवा देव का संसद यात्र सन्हे मार्गे 👉 व्योतिसम्बद्ध की आहि

यद्वारभाओं, स्थाः ब्रह्मात्रस्य जो बीर बहुन की, स्वा० सोजाक्य जी, रं० प्रमुखेत की, रं० वर्मशास बी शसिद्ध III । रव ईसर्व अरोध बन्सेवन तथा जिस में भी कथा आस जी

M.L.A. भी अगरेश जी किटांटी M.P. र. पर्य पात को M.C. र्व, स्टब्स भी समी वसल सरस्य कर समाज आमी फिरहो दास औ में विकास करते किया प्रस्ताव भी कक्ते हैं। इस का सारा श्रीधान

हेते। सारे खब्बन सबी से नैवारी

व्यक्तिकारी समझ्य प्रवासित क

-- জিল্লী ঘণাৰ

पारिक किया संदेत । सस्या ह शकार से हातकार था । पूर सकारका की की सेका में लगा ह बेट श्यार के लिए २४००) र. के वेजी भेंट की गई। बफबता में हर को क्याई ।

#### वार्य समाज लोहगढ यमतसर का 'प्रस्ताव' ष्मार्थ समाज के तत्वावधान मे

हो तो बायलपर के जातरिकों का गई वी। समाज के पराने सहा-वर अधिका कार्यो है २८ नवस्त्री रथी झानी ज़िल्होरास भी विः १६६४ से ६ किसम्बर १६६४ तक होने वाक्षी शुक्रानीशतस वहेरि-रिटक कोपेस अर्थात क्रम्तरीयटीय बैध्वांक्षक सम्बोधन को भारतीय राष्ट्रीयवा के सिए हानिकारय एवं देशदिक के विपरीय समस्ता है। विद्या को वर्षों से विदेशी मिसन रियों की अधिकित्रों के असल बारत के करेक प्रान्धों में देश বিমাৰৰ বাজাৰংক বা নিদ্ধি हमा है जो भारत की अवस्थात वर्ष राष्ट्रीय स्थला के रिजे करवन्त १वारे थे। शतकाल यह और राव भारतक है । इसी सभीवर्तन के कारख को कमा इस्ती थी जनसे में पूज

देश को नागासैस्ट एवं या रसंद की सकस्याओं से वो चार होना पड़ा है। काने राग्ने विश्वनश्री राम्यान कारा आधिक बस पर बन्धई की निर्यम अनका को ६०, ३० सम्बा र्वार्थात्व का बालव देका धर्मधार बारने की सम्बादना है। बार: वह सम्मेखन जहां भारत हो १९५८वाडी अवता से देशाई इच्छाओं से साथ. पान रहते का कनुरोध करता है. बड़ी भारत सरकार से बसर्थक वांग करवा है कि काराण्डीय तस्वों

से देश को बचाने के लिए वस के वार्तको से किसी प्रसर का सह-दोश या होस्साहम न दें-सम्बन (शेव बच्ट ६ वर)

नई दिल्ली बारवं की राजधानी

है। यहां अनेकों अवन तथा पुरा-

वन इतिहास के सन्दर स्थान है ।

सम्बद्धा क्रवता-क्रवता सङ्क्त वर्ता

हकाहै। कार्वी के लिए भी वहे

सब्द देन्द्र हैं। शिक्षण संस्थाओं

का एक सम्बा जाल विकासका है।

भारत में सब से पहली बना राष्ट्रीय

शिक्या संस्थाओं की याला हती

वाने वासी इवानल वानेश

ध्यान्य क्योती का कार्योक्षय भी

बही है । इसके माननीय प्रधान

कातार नारत के सवीमकोई के

प्रथम मध्यन्यावाधीश बाक्टर मेहर-

चन्द्र जो महाजन जैसी विश्वविश्ववि

की गड़ी निवास करती हैं। मन्दिर

सारं नई दिल्लों में धामी-धामी

नये वने आर्थसमास ग्रामारकती

रीदिंग रोड के विशास सुन्दर

मनोरम मन्दिर को देखकर दिस

का मन गद-गद असल्ल नहीं हो

बारा ? कार्य शर्वशिक समा (बाब

आसन्बर और दी. ए. वी. कालेज

क्रोटी से सम्बन्धित संस्थाकों कें

इसका स्थान करत हो वा है। मात-

मीव बाक्टर संज्ञातन जी हे ऋष्टे

**ब**ल्य समाव श्रेमी साथियों को

भाव नेदर इस अध्य मन्तिर के

विभीया में जिस लक्षा, श्रेस, निन्दा

परिश्रम एवं मावना का कावलं

क्यपियन किया है । समसी जॉब

क्रमिट वसी रहेगी। कार्यतवत

के पत्रम तपानी, श्राह्माहमशह की

कानपद्म प्रतिहा सहात्मा धानव

श्वामी की मद्वारात ने भी इस

विशा में वहा काम किया है। कीत

शता सकता है। मन्दिर का विशास

हास संगमरमर का निर्मित है।

चालें उस की द्वार ही रह

शाती है। स्था-क्या में अदा

अरी है । वर्तमाल प्रधान भी

रम्यापवराव जी वसकाब की श्रेरणा-अरी प्रधानता में तथा विश्लार क्रमेड

बाद्धत देसकर

### राजधानी का मनोरम मन्दिर

(ब्रिनोक चन्द्र बास्वी सम्पादक)

#### WHENEVER PROPERTY WERE REPORTED FOR THE FOREIGN FOR THE FOREIGN FOR THE FOREIgn FOREig

वर्मकाय में क्ष्में हुए महाब विद्वार | बाटुगर ही हैं । बनवा सले हुए तरब्रवा की शचवच जीवी जागबी र्मात १० व्यासम भी शास्त्री वस.प. के मन्त्रित्व में, तूसरे सारे प्रेमी गरमधान्त समात्र प्रेतियों के क्रमाह से इस का वाधिकोत्सव सी एट मेहे का रूप भारथ करता जा त्वा है। इस दार का तो तह दया व

पट'च गया। संक्रपानी के **इ**स विशास के बड़े र तेता सम्पन्न प्रति-विकास करों सभा जिल्लाका सिनियटर पर्व शवर्तर तक भी इस समाज के सकामटों के चरित्र परिवार में गामिस हैं। इससिए इस के बल्से में विशेषता रहती है। स्या 4 वस्त देसा प्रतीय होता या, जैसे बहुन र्यके स्टर पर एक महासम्बोधन हो ग्रहा हो जिस में बहद इं**चे** नर-नारी शामिस हों । पून्य महात्मा धावन्द स्थामी जी का 🎹 समाव के साम बड़ा जार है। उनके आजिल्य में पादपंडा, रामी में बाद, सब में बाध्यातम प्रवाह तथा जीवन में प्रमान है। प्रतिवर्ष प्रायः स्था महात्मा जी भी ही होती है। प्राप्त काश्वटर सम्राप्तन को पा वेस सौर प॰ इवाराम की सास्त्री सन्त्री की प्राचेंना बनकों से ही कारते हैं । कथा में क्या वातावरण, क्या मीठा रस भीर नवा विश्वित्र काट होता है। यह तो कार्त्रि देखने बाबी देखती व सनते वाबे कान सन्ते हैं. रसना अवत पीती है।

क्रकर कोटरकारों की पांचन क्रमी

होत्री है। क्रम्पारी सहेश जी व

शीवक की के अपन संगीत म

साली फैला देते हैं। इस बार

क्या में विशेष बाद या।

थर्थों से विन राज यक करके इस विद्रालना औं वस अकार के

महोत्सव कमात्र की कवस्ता तक

वहेडी प्रमावकृत स्तर का बा। समात की चेठना चारों क्योर प्रतिक होती हो : ह कर कर करि. संगर का भारी विशास दश्य हो

एरहात में मन्त्रमुख रहती है शतः मलेगा नहीं । डाई इश्वार नर-नारी कास रिद्रान मान्य पे. वेमिनि जी र्येते हर जिसमें एक विशाल समाज शास्त्रो १व. ९. श्री अञ्चलका में परिवार के सप में सिखदर मोजन वेद पारावस्त का यज्ञ बज्जता रहा । कर रहे थे. तम समय का निका कमा स्त्रीर जन्ते में बती ही शीतक रैकस्य कार्यसमाजके संगठत व अद्या का पता सनता या । यह भूत्रदराज बी । इसमें चार्यसक्तात के तपसी जी भवता जैसे साहितक देवता वर्णन केमरी पिजारका का॰ डीवास-समाज वेसी दानी स्नात भी दक्ष चन्द जी रम.र. कानपुर वरोमृति समाज को सिले इए हैं। किस काषार्वे जानपन्द जी ०स. ए. संस्था में २४ मी सोनों ने धो ०० द्विसार, श्रीन्थता की सजीव प्रविमा किया। इसवा सारा स्वय रस शिविषत रक्षाराम जी एस. ए. ध्यकेले वर्मानेष्ठ सण्डन भी सल्ला प्रधान बार्व करे शक सभर, वीं ने भवती और शे जिला को अस्तो वस्ता ऐसी फल देवरात untenten un fom fie fanch की गजा बयानम्ब कासेज हिसार. को लिला सकते हो सिलाओ। बरुकेत्र याँनवर्तिटी के बावस-इतनी बड़ी संख्या में खोकों को चांसलर विशिषक सर्भाग वी मोजन परोसने बासे सरक्ष्मों ने की यस. ए. कार्वि लेखा विद्वान पतारे । वो सेवा में कमाल कर दिवा। सभा की शसिद्ध संजनी वे. राजका do दकाराम भी शास्त्री मन्त्री, मदन मोहत जी, पं. मेलाराम जी भी सोमनाथ जी गुज़ा, भी कल**वा**ड संगीवोगदेशक समा थे. हरिवृक्त श्री जो प्रधान, की दरवारीकाल जी.

भवनोपरेशक बाए । सुके बी

शामिल होने दा सीधान्य बिला ।

पूर्व्य सहारमा भी हो अन्मे के

स्थम्भ ये ही । ह. महेश की व

रीपक जी भी थे। कार्यक्रम के

**श्याव रक्तती** थी

शोबात ध्यः की का

वसा। यह की प्रक्रंद्रवि हो ना

प्रत्ये**ड** बैठड प्रापने कन्दर विशेष एक सवाह निवस्तर मेबा-सा নুবৰ सवा रहा। विश्वने जीवन पसटे सम्बेतन मी अपने इत् का अस होंगे।किक्जों ने अमृहपान विदा क्रमारों व दक्षी नेसमय बाल्य डोगा ब्लीर घेरका पर्छ होगी। दिवा । विसीयल हरिश्चन्द्र जो इ.सार युवको विक्षानों सब आई संयोजक को धवाई । कराप्टीय वडिनों ६ लिए शास्त्र प्रसाद ईमार्र विरोध सम्बोधन हो छन्। विशाः प्रांसों देखा दृश्य व था। बद्धा उत्साद व जोश या । काओं सने क्यन नहीं प्रजेंगे। महारमा जी २५१मता में सम्मन्त बह्न सन्दिर राजधानी का धर्म इक्षा । प्रावसमात की ग्रावाय का कार है। इस व्यवसं सफाता में बद्दा प्रश्नाव है । बद्दा दी सफल मान्य नेता बाक्टर महाजन श्री को था। प्रावेशमात्र का क्षेत्र इसके द्वारिक बधाई साना बीना भी शस जिए वचाई है रहे थे । भारत के कर दिन राज काम में लगे हुए फिशास्टर आर्थनगत् के नेवा डा॰ समाज की सीम्थर्मात ५० दवाराज्य. शास्त्री मन्त्री क सारे समाव श्रीमधीं को बहुत २ वशाई हो

क्योति करती रहे ।

क्रण्यापर व सहजों के कातों से

बदो सेवाकी। की नहीं जो शी

सन्धानी जैसे स्वार साथ प्रक

की बसंसा न करेगा ? कार्यसमाज

कागरक्त्री के पास वेसी-वेसी

सम्पन्ति भी तो हैं।

समझ नेश की चीर से जबर-

## वस्बई की रोमन कैथोलिक

कांत्रेस को प्रमारी सरकार की क्षोर से बहबह कर सहवीत देने की तैयारियों में शित बर भी पार्व नहीं काया ! और नहीं बानता कि पिळले कई वर्षी के इतिहास में हैसाइयों ठवा विशेषाया इस रोमन कैयोजिक बर्ग के ईसाइवों ने बारव के ब्रान्टर किस तरह घोला, करेब, सासच, दर, कुम्म और करवाचार द्वारा ईसाइयव का अवार किया। पारित्ववेट डारा नियक्त को गई न्योगी कमीशन तथा करद क्रिमेकार महासुमावों हारा की गई रहकी-कात से किद हो थवा है कि ईया . इत्रों को सहस्रों, कारोजी, इत्यवासे -तथा क्रमात ७५३। भावि बटिने के हारा भारतीय अस्ता की सेवा

सर्वता पोले ही नरी है हारे दलके भीतर एक ही तस्त्र कार्य कर रहा है कि क्रांश्रद से क्रांश्रद संस्था में **ईसाइयों** करूर में खपने प्रतेश्ट क्याबर हेम हो वहते पार्थिक होंग पर फिर राजनेतिक शीर पर गास व्यताया अस्ये ।

बढ़ देश की इत्पिक्षाई वह-**बिल्म**ती है कि वहां जनता की 'कावाब को कोई की मत नहीं । जो सरकार करता की बाकाज की सफराने की बाबी हो आजी है यह ें क्याचा देर तक नहीं यह सकते भीर न इसे सताराह रहने का प्राधिकार हो रहता है। वडी कारण है कि बाज जलत मारव सरकार की बीति से बेजार बो की है काश्मीर में अन्तरका कौर प्रमुक्ते सावियों को मारव विद्रह युवा की मान सक्काने की मुखी सुरी दे रशी है। काहमीरी अवश्वयाओं की विन्यते सुरात्मवे काते. हम्हें रिक्बत के का में हथित व अनुचित रिवाश्ते देते और कपना पूर्वक विचाय, तुवन स्थान

क्या पुरस्क संश्वा तह की स्थान

ते होने बालो रोमन देंगो(सक विक-न्यो बंक्स्प्रदत्त की समूर्त प्रधान कार्यसमात्र सदम्रास्य देकर उनके दिसाय की भाकारा संस्था जिल इंग्से वह रही है यह स<sup>क</sup> पर चड्डा एका है। वंदब और सवा ने ईसाइवं। भी बहुसंस्वः छएतः

> रहां है नामातींड में इन्ही दीशहको की कोर से बनाबत का सहका दंग दिया हवा है। वई दवों से वड़ी सारधार व काय सगाने का क्षम तारी है कीर हमाले सरकार भी ब्रोर से स्थार सर्ग सिंह क्षत्र भी वह धोषका कर रहें है कि तन डेसाम जो शान्ति बार्ताकाप का कम बारी है और इस कर्तावाच में जामाओं को बवादत ही शिक्षा देने वाले टबड़े सब से वहे गुरू-धंवास बादरी सबाट को चीवरी बनावा गवा है।

राज्मीर से सम्बोर रिवालियों की भोर से वार्जे व कान वन्द करके मैंडे रहने को मीति घरक साम-बाक सिखंडो रही है। विश्वसे हियो क्सरता भी एक सरिश्य से ca कमास दे त्यावासक में व्यान देव हुए बहु माना वा कि शहने समय हे १० इयार दिश्वको को सुक्तकान बनाया। बाबी रेख में इन सम्म-यानों भीर ईसाइयों की भीर से कितन कर्णेर वरावा जा रहा है। भावंसमध्य स्रोत इसके लेका समय पर इस बारे में चेतानको देवे रहते हैं। वरन्तु हमारी सरकार मध्री गरियों हो बनाने के किए सैक्ब्रेरियन की रेनकें सपार हर यह समझ रही है कि विदेशिकों और विवर्तियों से मोर से किये का रहे यह कारमक केंबल दिन्द्र जाति के जिए हो हानिकारक हैं। सरमु बन्हें वह

क्षित्व दास इवट्टा व्हा है बो एक दिन मारत ही त्यहन्त्रतः को पुनीसं राज्य स्वर्धपत बरने का यस्त बर देगा कीर तब इनहीं यह गहियां भी न क्य सकेंगे। किसी कॉब से ठीद हो बहुत है :--वयोगे व द्रम कीर साथी तस्हारे

क्या प्रामिड, सामाबिङ ह रावनीवह संस्थायों को शिक्षकर इस ध्रम पर उनडे सम के साथ विचार करना होवा कि इसारे देश रूपी बुध की बड़ों में क्य रहे इस थन को किस तरह ठीक किया बार। इतने से शही कि संसार वे मराविक्रमियों हो कपने निपारों दमारी सरकार की बोर से वे वनस्का पूर्व कानिकार है परन्त इमानी सरकारकी सेंबुक्तर बीटि कथा देश में वड रही महंगाई, वेकारी व निर्धनता का सम्बन्त समुचित लाभ क्याते हुए ईसाई वकारकों में विदेशां से भारहे करोड़ों स्वयों के सम भ्र इस व्यक्तिहरू का सबंबा दुवा-बोय किया है। नगर क्या पाश-यास में ईसाई ल्डुओं, कांब्रेओं क् हर-वालों डारा करेको युवको व क्वतियों के वर्म भए होने भी घट-नाथें इमारे सन्भूत धानी रहती हैं। सर्व हिन्द्र वृषकों को उच्च-शिक्षा नथा नौसरियों हे सोम से क्षीर वेनारे इरिजन क्षीर जन्द पिछडो जातियों में रुपया, कर्ड़ा, भवाज, दूभ के किल्बे दया विस्तृत मर्गद बांट कर वन में ईसाइयव तथा बाराष्ट्रिकता का प्रचार किया कारहाहै। स्वासे कपित दुःस की बात यह है कि ईसाहवों (अंब्रेज़ों) के अपने शास्त्र में आहां हैसाहरत वा इस बरह तेती के साथ प्रपाट व्यक्ति । विकास वादिस तेथी से समय तेना पाकिए कि देश है । स्वतन्त्रत गान होने के परवात हो मीकर हंबाहतों व बुक्कबाओं स्त्रे रहा है। बार्व समान के शिवत

नेवा भी बाजा देवीचन्य की १२०० प॰ ने पिछले विजों को आपको तैयार किये सम से पता समाज है कि इटली स्पेन, प्रतंतास, मास्ट्र-लिया, इंग्लैंट क्या ब्योरिका खे ब्राय पार्थियो द्वारा प्रति सास इतार हिन्दुकों को हैमाई बनाया कारहा है।

भारत वया भारतीयका से दिव रसम्बे वाले अस्येक मर-वारी का सर्वय्य हे सम्मिशित वर्ष संगटित ध्यमर बाव इत्री तो हकोगे सावे शक्ति इ.स. देश पर क्या रहे इन चात्र हमारे शासधी, नेताकी विदेशी नावलों की दृर करने का वत सें क्रीर तक बक शान्ति **से** प बैठें जब तक अन ईसाई हो चड़े वरोही बाहबोंको फिरसे धपने १वली के वेदिक धर्म में न से झावें कीर वह-२६ विदेशी पाहरी को शीयत पादरी स्टो ध्य की करह ग्रह करहे स्वामी सत्वाभन्द के हर में सकता वैदिक सिक्ष्मरी स बना कों। स्टाबस वह प्रसिद्ध दूरोपिक्स पाररी थारत में ईसाइबत व मधार में शीकश लाने कांहर संस्कृत सेहर कावा। बसने शिमसा में कारना हैह क्वार्टर बनावा परन्तु कार्य क्षमात्र के सम्पर्ध में ब्याते ही न केवस स्थ्ये खुद ही यया ऋषित वाक्री जोवन वंदिक वर्म के प्रकार के किये आर्थिक कर दिया ।

> \*\*\*\*\* श्रार्यसमाज शोलापुर १४-११-६४ की स्विकार के दिन भाषेसमात, सोबापुर ही भोर से भी S.N. प्रमाहार साहित यत्वोकेत को काव्यकता में राष्ट्र-कोर साडपव राथ कर बलिदान पर्वे सोत्साह यनाया गया। सराठी के शसिद्ध करता शान्दरपट फाक्ने की ने लाला की की समाज सेवा. राष्ट्र सेवा पर सर्वस्तार वडाल दाला । भी चौधरी भगवानस्था जी ने काला जो को प्रसानको भेट करते हव पार्थिक जनव में कार्थ समान द्वारा वैदा की गई कांत्रि की मुक्त करड से परांधा को। प्राप्तापक राजेन्द्र जिक्कास ने साता जी व व्यक्तियान को ऐतिहाति है सेवामरें व पट्छा पर प्रकार दा राजेन्द्र विश्वाद्य प्रश्वका

#### 'ऋ।र्यसमाज किला जालन्धर का कार्यक्रम

दार्गसमात्र विद्यापमा (दिला) सामन्त्रर साहर का उस्तव ता-२० से २६ तवस्वर ६५ को हो रहा है। क्सका कार्यक्रम तीचे संखेप से दिया का रहा है।

शक्कार ता० २ : नंबम्बर शक को विशास कविदरवार होगा।

सनिवार ता० २= नवम्बर

प्रात:-को अवस्त्र होते । यह स्वामी विद्यानानन भी तथा इसरी

do क्योप्रत प्रकाश की ब्यार्थ सहीपदेशक सार्व प्रावेशिक समा ।

दोपहर :-भाष्या रं० क्रिसोक चन्त्र शासी बार्च भादेशिक समा। विभिन्न बाजकार की एस. ए. द्वाचार्च दवानन्द ताल महाविधासन ।

रांत्री :--विकियन पंत्र सक्षमात्रा श्री यस. ए. एस. एस. ए. एस. चार्च शक्तेशक अभा तथा वीरचन्न इस की ।

रविवार ता॰ २९ नवस्वर

प्राप्त :-शिक्षिपस देवराज जी राजा एस. इ. तवासन्त कालेज हिसार दशा औ वश जी पूर्व शिक्षा मन्त्री पंजस्त ।

दोपहर :-को बराहिय ईसाई निरोध सम्मेकन का विसास श्रायोजन होगा।

रात :-प्रबचन प्रसिद्ध फिलाश्वर हा । डीवानचन्य भी यस. ६ कानपर तथा भी सन्त स्वास की पराक्षर प्रस. ए. ।

बर ७६ ए६ वटा सदान हवन यह

प्रतिदिन प्रात: ७ वजे से ६ वजे वक

हो रक्षा है। विस्तृत कार्यक्रम का

ध्यवसोकत करें । विशेषश्या ईसाई

साहे पार हजार वार्थ साटी

#### श्रार्थ समाज विऋम

### प्ररा (किना)

जालन्धर

भीने चाठ करें से सवा भी करें कह

प्रक विशेष सार्वेशन जो २३ जनगर कार्व समात्र विकापुरा *(फिला* २ एके बाद क्षेपहर से ४ कवे वय **बा**शग्यर सम्बद्धा वाविकोत्स्य २७ बार्रशस स्टब्स में होना यह २० झीर २६ नवण्यर शुक्त, शांव सम्मेलन बहुत महत्वपूर्ण होगा । स्त्रीर रविषार को बढ़े समारोड से विसमें तमास दिन्द्र वार्ति कर्यान साई दास ए० ऐस० हातर सेंबरदरी सन्तर्भः), सिल, जैन द्वादि सकत के बान्यर विशास मेंदात से उदन कोटि के विद्वान श्रयते-प्रापते सन्तया जा रहा है। जिसमें बने २ बिकार एकर बरेंचे । कोर कार्य बिद्धान सहीपवेशक वर्ष अञ्जीक में ईसाई विश्व सम्मेक्टन को २० प्रधारेंगे । २० नक्षम्बर २ वजे बाद वक्सर से ६ विसम्बर वह हो बोपहर साईशम स्टूस से बक बड़ा रहा है जो देवन मात्र हिन्द आवि बसम निक्रमेगा । इस के शासक को शासप देवर और ३६ शास में २३ से २६ स्वयम्बर तक प्रतिक्रित जाता करवा स्थय साथे हैसाई प्राप्त: ४ वजे से ७ वजे अह प्रमान बनाने के खड़ेश्य से हो रहा मेरी हो रही हैं और २३ से २६ है । जिसमें ३० हजार पायरी नवम्बर तक प्रतिदित वेदों की कथा देसाई विदेश से झास्त्र शासित होंगे रुक्ते भोजन हैं जिए सगहरा विक्रमपुरा साथ समाज में रात के

हो सहि है। ब्रोप २३ से २९ जन्म वन्त्री । ब्रोप सनद में बास्त

वेद शब्दकार

### ऋषि दयानन्द श्रीर सायगा

(श्रो एं॰ चनानीसास जी 'भारतीय', एम॰ ए॰ धनसँमैंट कालेख पानी (रावस्यान)

#### -----निरक्तकार दास्ड ने सिखा है :

स्यानुरयं भारहारः विकाशृद-बीस्य देवं २ किशासाति योऽधर्मं । वोर्षक्र इत्सन्त्वं महमानुते नास्मेवि ज्ञानांवपुत पाम्या । बार्थन् वो बनुष्य देहीं हो पहल्ल एवटे क्यों

को नहीं जानता, वह उस मारवाही प्या के तस्य है, तो विना जाने ही यस प्रमुखादि का बोब्द वटा रहा है सन्त वो धर्मझ है, यह सब्ब इत्याब को शक होता है तथा हात से पश्चित्र होका कल से योध

मुख को भी प्राप्त करता है। पार्वस्तान की तरह एक चौर इंसाई लाज की मांग की जारेगी, श्रो कात नहीं हो का वन बाएगा । परन्त इ.शारी सरकार

मारास्त्रा गांधी के वस नारे को मस गई को उन्होंने सम्बर्ड में पहली बार १६४२ में मारत छोड़ों का जगाना था. जिसके कारक उनको सारत छोडन। पढ़ा सगर इसके होते हर भी वह उसमें शामिस होकर शार्शीकर देगी इन वार्वे पर विचार करना है ।

#### त्रार्यसमाज लोहमह का भव्य समारोह

(इच्ट दीन का शेष) इससे उत्पन्न होने बाते दुर्जारसामी का सद इतर दाविश्व केनोम

सरकार पर होगा । यह सम्मेलन सफो क्रार्ट नेराओं को परा विश्वास रिकास है कि इस सम्बन्ध में जो भी छए-बुक्द कार्यक्रम वह मारम्य करेंने मारतीय बनक काको पुरा सह-योग देखे।

इसारे देश में वर्ड शवाध्विकेंट क वह वास्था प्रचांसद रही कि वेद मंत्रों का बोई क्यां नहीं होता ह श्नका क्यंबंट एक विनियोग द्दी कातरा पाडिये। शस्त्र के एस में भी कीएव केसे व्यक्ति है। जिल दा दयक या कि सन्ते का कोई क्रमं नहीं दोवा। परनद बास्त की सम्बन्धि इस के विकरीत थी। अक्षीन कीला के सब का अपने पना में बने समारोह. परेंद्र करवन विचा है और नह सिंद फिया है. कि वेत मंत्र साथेक हैं. परस्त चलका रहस्य बातने के बिरे विद्या, स्थाय क्या क्यम्बा का

सम पर्राप्तते ।

शाम के देव सम्मानी विचारों से व्यान द्वानन्द पूर्वतवा सहसक थे ! चनका यह टट् विश्वास वा कि वेडामें का आन्ध्रिपरिश्रम साध्य है, चौर स्वकं जिर राचीन शास्त्रीय परम्परा में पर्या व्यत्पन्त होना आवश्यक है। परन्तु विभारक्षीय यह है कि वेदार्थ के दिये किन २ राज्यों की सकावता क्रवेश्वत है कीन केट भाष्यकार को किस न जिलाकों सें. पारंग्य होना पारिये। तम इस बाव पर विशार इस्ते दें हो इसारे. समय यह समय साहित्य उपस्थित

हो जाता है जिसकी श्वना प्राचीन व्यक्तियों ने वेदाये के स्वक्तीकरका के किये भी थी। जाग्रय, विशवत. व्यासस्य, प्रविशादय आहि वे वस्थ हैं जो बेटार्थ में व्यत्वन्ध सहा--बच्च हैं। त्वयं ऋषि द्वामन्द मे क्षश्री देशमान्य अधिका के शास्त्र है द्धाव संबद्ध वसाधान विवय हैं: Reen It-(4RE)-



(बार्वत्रादेशिक प्रतिनिधिसमा वंजान जाजन्यर का साप्ताहिक संख्यत्र) Beed. No. P. 121 रेसीफोन न० ३०३७ र्शास्त्र सुद्ध ६ स्टब्स क्य प्रति का सक्त १३ तथे रेसे

क्षा २४ अंक ४०)

२२ मार्गेत्रीयं २०२१ रविवार...स्यानन्सास्य १४०- : दिसम्बर १९६४

(तार 'प्रादेशिक' अञ्चल

### वेद सुक्तयः तम्यं शावन्ति घेनवः

स्त्री ! इमारी ये पेमण:--र्जुति करने डाफी शर्मिकां शुक्तिको सुन्यम्-तेरे क्षिप ही सर्वान्त दीरतो है। इस जिल्ला भी सर्वतमान करते हैं। यह मारा खायके जिल्ह है।

कृषि नो यशसो जने इसारे देश कुरा स्तो। संभावें जो साथ है स्पातक हैं. बरासः-धरा स्ट्रीत नासे स्टिन्टर होबिब अने-मारे बनबंदन में बरासी पना देवें । इस कीर्त

बारी का कर रहें। करन देशी कृत करें। विश्वा अप विषोजिह प्रकेश्यर। हमारे बन्दर प

बाहर के जिल्ली भी दिये-बाप ferbal at g'if & en farei-यव को बन्दर्द भग देवें न बहि-बारा कर देवें। कोई भी शत न रहते याचे वाकि किन को द्वाचित्र हो।

#### वेदा मृत योजम तो नो श्रमने वस्त्रास्य विद्वार देवस्य हेडोऽस्या-

सिसीप्दः । यांज्ञप्दो वन्त्रितमः शोशना नो विस्वा द्वेषां स प्रमुक्तव्यसम्बद्धाः ॥

#### इदम्बिन बरुवारान्यां इदन्त गय ॥ श्रद्ध संदल ४ हरत १ मं ० ४

धर्मा-हे प्रचे-क्रायह देव ! (ले) काम (२) हमें (काराधा) भरेकर अन्ते हे बोन्य (विश्वात) (हेक्स) देव का (हेक) space, कमारत वर नाथ है उसे (अनवर्तनसीप्दाः) दर वर दीरंबचे ( करना वे'ब देश वर्रे । बाद (वजिष्ठः) बहुवय 👖 पूजरीय हो तथा (बिहातकः) क्षत्र के बारक हो, क्षत्र में बोह हो। चार (रोम्प्रकारः) स्ता प्रशासक तेत्रको हो। इस काके (किश्त) सारे (हेथींस) हुइ करों के (क्यूनिय) पूर्वहर से इहा हैवें, दूर कर देवें (कालव) हम से (काहा) वह मेरा कान सत्त्र हो। यह कार्नुत प्रमुखी मन्त्र व वरवरित वक्य रूप शक्तियों के जिस है मेरे जिस नहीं है।

माद:-वरित स्वकृत । संसार के पमकीते पित्र में पंतको हम सार से दर हो जाते हैं ! शहरके चीर बारण कर होकर मोनों में मक्ति कर जाती है । कुंस करो किन्न जी ! घानके महिन का बाव न्हार करें । साथ बुक्तशीब हैं, में बहुतम हैं तथा निश्त के पारक हो, परिण करने बांबे हो, कियो भी हीन के बाव है जिल से इस गिरते वाते हैं वे हम से दूर कर दीविय । आलके हुन वरम सकत वन कर कीवन में द'ने वड ±€-4•

शब्दसभा में तो शोग पाने वे बाहा इसरों की सारी मना की एस देने वाले होते । सम्बीर त्या जनस्त्याव वाले शास्त्र प्रकृति में होते. पादिए । स्ट्र**स्ट** क्रांचमानी त्यसाव हे स होचें।

#### राजदम्सित तद द्विविधम

वह को शस्त्र चसावे का कास है, रोब पर्य वा शासन है, बढ़ वो शकार का होता है राष्ट् के शाद विकास के दो ही सन इक्स असे हैं। होनों ही वर्षे ब्यान्डस्थ है। शासन रथ के दे qfqq ₹ l

#### एकं सहस्रद हितीय

सम्बद इन दोसों में एक तो शान्ति व श्रेम है और इसरा करता से कार्यक्रियान है। राष्ट्र का कार्य चळाने के शिष्ट शाचि भी भी धावदयस्य है नवा रंड भी जहरी होता है केवल एक से फाम श्री चला स्थ्ता ।

बाध्य समिता से Zaac:++++++ (सर्वाद से बरागे)

शक जगवान ने बदना जात्रम बना लिया थ्य बहाँ । **५१. इत्वाभिवेको राजस्** सीवा संप्रमित्रिदेव च ।

अधान गोडाक्शी दीरात् वतो असाः स्वमाधनम् B श्चावमं श्रमुकागस्य

रापवः सह सदमयः। क्रमा पौर्वक्षित्र कर्म वर्षे शासास्त्रागमस्।

ध्यस्य कारत १७-१,२ सर्वात-स्मान करके भीशम श्चवत्र ह्यौर संशा कोनों ही-उस शोदावरी तट के अपने आध्रम में

रस क्राबस में काकर तरमज सहित भीराम ने पूर्वाह काल के सरध्या इवन कादि कार्वे पूर्व क्षिते और वर्जेशाला में आफर

स्त्रीत भावे ॥भा

25 man **र**क्षांय वसी हनुमान सीवा स्राता कर स्रोज करते लंका भर में श्रम गये, कोई पतान चला। तन अही के तीर पर पहुँच कर सोचने सरों कि वर्दि सीमा ओवित है भीर है भी कही निकट ही वो-

थर. सन्दर्ग का**वस्**ना : इदासा ध्र वमेष्यति सामकी লৱী মুনাল্য বলা

सन्वार्थे वर-वर्षिनी सन्दर कारत १४-४९

ध्यर्थात्-यद् प्रातः काल की क्षात्या का समय है. इस में बन क्याति वाली काषात्र वीवन । जनक सन्दिनो सीता सन्द्रवा के क्षिए इस पुरुष सक्तिका नहीं के बढ़ पर

ब्राज्यसम्बद्धाः वर्धानेत्रते । **४३. वर्षि श्रीनति सा देवी** वाराधिय निश्चानना कागबिप्यति सावस्य

> बिसां शीत कवान नदीन ॥ सन्दर कोस १४-४१ द्यर्थात्—परि चन्द्रमुखी सीना

सर्थित है थे। ने इस शीवस वाजी वृष्टम्थल में पहु ने, बस समय नाना

থানিক বৰ্ণা-

### ब्रह्मयञ्ज प्रसारक महर्षि दयानन्द की जय

(भेo-भी पिण्डीदास जो जानी बार्य समाज सोहगढ़ अमृतसर)

श्चवहत्त पदार्थेखः करेंगी ।

बद सीता को शुवरी वार धनकास मिला को वह महर्षि धानमीकी के ब्राप्तम में रहती वीं। शीप स्वान करके सन्व्योगसना गर दर क्षा कावस से कावे । समी

रात शीवा के दोशों जुड़में पुत्र श्रुध भौरसद का जन्म हथा। यह बसायार समस्य शक्य को इतनी प्रसन्ता हुई कि यह वर्ण ऋत की

राज बाज की बाज में रुवतीय हो तर्वे तव --

४४. प्रभाते समहावीरः क्रमा चौर्मादकी विचास

सर्नि शंबलिसमण्य वनी परचानमुखः दुवः

चत्तर कांट ६६-१४ े अर्बात—स्वेश होने वर पूर्वान्ड बाध का कार्य-सन्दर्भ बन्दन बादि करफे महा-पराचमी शकन इाथ बोड़ मुनि से विदा ते परिश्रम

दिशा की कोर पक्ष दिये। भगवान को क्रयण और संध्या महाभारत के कछ प्रमास तब भगवान की कृष्ण्य समित्र दूत बनवर इस्तिनापुर की छोर वा रहे थे, राजे में वृष्ट्यव्यवस्था स्थाद

के पास पट'चने पर-४६ इध्यतं समासाय वेशकः पर वीरद्वरः रहमाश्रावित्ये.

व्योग्नि वे शोदिवायवि॥ ब्रवदीर्थ रथानुर्लं कावा गीचं यथा विशिष्

रवसोचनसादिख सन्ध्यामुद्यविदेश इ.॥ हकोग वर्ष-अध्यावदश्व रहोन्द्र २०-२१ ४८ वह करबाय दाराष्ट्र

वर्षात-शत्र बीरों का संशार करने वाहे भगवान वी कृष्ण उद

सरिता के ठट पर (सन्धा के सिये) | किरखों से मरिस्त 📷 अस्त होने क्षमें क्रीर पश्चिम के काकारा में क्षाची का गई। तक भगवान ने शीब स्थ से छक्ष कर छने सोखने की बाजा दो स्मीर विधि पूर्वक

> स्तरे में सर गये। वह आहान भी रूख इस्तिना-पुर को जाने लगे ठप-

> १४. वही ब्यवेश समित, सर्वे विश्वस वहते ॥ मञ्ज्याः पुरवनिधीपा वाचः शृशवंश्य सुहता।

> बाह्यवानो प्रतेशाला-श्रविद्यासिक कासकः अद

करबा प्रशंक्ति हुन स्तातः श्रविरशंकतः।

क्यक्तो विवस्यन्तं पावबं च जवादैतः (१६ रहोग**ः श**ध्वाद ६३ व्यर्थात्-तद्दन्दर वद रात्रि

या कामकार दूर हुया और निर्मत ब्रास्थश में सुबं देव के उदित होते पर भगवान जनाईन ने सब से पहते प्राटःशत ऋषियों के मुल से मंग्रह शह सुनने दाले देवराश उन्द्रको मान्ति विदयस महायो के बुला से पत्म मधुर संगत कलक पुरुवाह वयन सुन्ते हुए स्थान किया । फिर कन्होंने पवित्र क्षत्राध्यकों से चस्कृत हो सम्भ्या

बन्दत, सुर्वोषस्थात एवं भ्रान्तहोत्र काति वर्षाद्व शत्य स्थ्यम्य किए। जरावान श्रीकृष्य विद्रर गृह में हे। दर्वोधन क्या शहरि द्वारा युक्त।ये अपने पर यहाँ से चलते BEG-

ऋषमः सर्वे सारवधाम् सर्वमादरवर्ध वहे शह क्रमें बन्देश 1३

क्रवोद्यक्षमुख्याः सहवानिन

तकाषाहिता सम्बन्ध मुपातिकात साधवः॥६ स्रथ हवींचनः ग्रम्श

राष्ट्रनिरपापि सौबसः साध्यां तिस्त्रत्वस्थान दाशाईमपश्चितम् ॥

स्थोगः च । । । कार्यात् —तव समस्य वद्यंशियां के रिग्रोमिश दाराई भी कृत्या से राज्या से डडकर शतः काझका समान कालावह हुई स्थान सस्पन विद्या ॥।।

सन्भ्या वर्षेश और शर काके कारित होत करने के पश्चास मामव ने इन्लंपुत होस्टर उद्देश फास्स के समें का वदस्यान किया ॥६॥

इसी ससय राजा हुवींबन स्त्रीर *सुवस* पुत्र शक्षनि भी सन्भ्वोपासना में अने हर काराजित बीर दाशाई नन्दन भी कृष्य के यास गरे ।।आ वृत्तस्यक्ष में रात्रि व्यतीत करके

इस्तिनापुर की कोर चलने से पूर्व গ্ৰাৰ: বক্তৰ---

४४. शहरूबाय कृष्णुसू कृतवान सर्वेमाक्षिकम्। शासरी सम्बन्धातः क्रम बी जसरें प्रति ॥१।६

वयोग० ६० ५६ ब्रद्यांत्-मुफायस में प्रातः चट कर संध्यान की कृष्णा में सारा लिय कमें (शीन, सरव्या, क्रान्ति होत्र) पूर्व क्या । फिर महस्रों

की ब्राजा के बर हरियमपर बी क्योर प्रते । ं वाध्यें की सन्द्रवा करना

सम्ब बाग से सीट कर बन प्रशासन श्रीकृष्य सप्यान्य सगर वे

कावे कांश्र इस्तिनापुर का समस्त इसान्य पारदवों को सुवाकर विशास इतने के ब्रिए शिक्षम्थान पर गये ।

(पासराः)

# आर्य जगत

वर्ष २४] रविवार २०२१, ६ दिसम्बेर १९६' अंक ४=

### भारत की संस्कृति सारे विश्व को --जीवन पाठ पढाती हैं

कार की गोजनाओं में चरित्र निर्माण गोजरा नहीं है तपस्वी संत श्री. स्थाम जी पराचर एम. ए. का मायस

ती 🛍 सन्द इदाम जी पगहार | कि राम जाते हैं तो जाने दो 🖽 क्रम. ए. माध्य के विश्वानों में प्रसिद्ध 🕏 । विकास धीर बोळने की दोनों शक्तियां प्रमुसे मिक्षी हुई हैं। ब्रावेसमाथ किता के बल्से में विशास जनसमुदाय में प्रभावशासी साथ्या देवे हच् कापने च्या---कार्यंश्रमात सारे देश के समात का चीकोदार है । स्वामी दवानन्द की शायसव है। दर्द सोय समस्ते 🖢 कि आर्रसमात का काम समाध्य हो गवा है। ऐसा बहुना मानना भारी भूक है। बार्यसमान की नही श्चासरवक्ता है । स्नाट देग में काने, लोहे फीताद आदि के वने २ कारलाने 📧 रहे 💺 किन्तु भानव निर्माण करने का कोई भी केन्द्र नहीं । अस्वी सर्वी दश्वी की बोजनाओं में मनुष्य दनाने की सक भी योजना नहीं है। अह काम ब्राद समाय को करना है। जाउ के समय में इस तो साकार निरा-बार के काले में पने 🗊 है। हैदबर को मानने तो बोनों है। पर साथ जानते हैं कि कव तो वेता वर्ग पैदा हो चुडा है जो ईरवर को आतंत्र ही नहीं है १ नावित्रवता का स्थादं बदवा पता का रहा है । वह काम समाव ने करना होगा। धारतं चा चरित्र किशना डांचा था । क्षीचें 🖟 बनवास हो राम को शिक्ता शास्त्रक्षण को नहीं। बरि प्रम समय बाद की ६४

ं Maffrice की कांठा डोवी हो पत्रमी

शस्य 🌃 अधिकार कर सी। कर राज्ञास्त्र स्त्री को समय प्रतिप वर्गकी न थी। कार्यसमाज निससे युग को साथ हैकर वर्तमान युग से भिताना पा**इ**टा है। सुनिताने 6डा—सरत ! सर्द राम वन ने जाते हैं तो सुन्द्रशा अवंधना में हें कोई काम नहीं। शर्म में सवस को चरित्र वस से जीवा, केवल जानों ने नहीं। हमारा राष्ट्र महान

हैं। ब्रमारा धर्म परिपले है । हिव हमारा देश है और वांदेशी इस की संस्कृति है। इसी **औं बोरता आ**दि देश सुवारे हैं। बिटेशियों ने हमारे क्यों में वाये ज्ञतों के उन्हें २ प्रर्थ करके अस क्षेत्रकल को बातने का स्थास किया है पर वे सफल म हो सके। कार्यसमात की सब से बडी कावस्य क्या यह है कि भारतीय . सरस्वती संस्कृत को गङ्गा में वो बरसांबी पानो ब्याहर मिल गया देवसका किस्टर का वे। **का**श्र देश का परित्र गिरवा वा रहा है। इसे टोड धरना है। भविष्य क्या होगा रे भाव तो भारत को ईगर्लेंड व क्रमंगेका बनाने का प्रवास किया जाने लगा है। भाव सर्वा-क्रोर 🛮 बन गया है। देवता नहीं दायं समग्र हो रही हैं। यहा भी रहे, बर्ब इस हो रहा है। धर्म जब तक सर्वादा में रहतो है दशी तथा ईश्वर के ब्याधार पर देश श्चास माता है और अब ही द्रवा पढ सक्ता है। वर्स के विश सर्थका टट का॰ तो वह दायन र्द्धारत्र नहीं बनवा । (Morality बन बाली है। देश में गुरू शिव्य without Dharam cannot की मर्थाता कॉची की बाज

the Money in the goal of life धन ही बीवन का . सरोदादन यहा है। सम्बद्ध सञ्चल होता जा रहा है। साम भव से सहका मिल सब्बा है पर um नहीं संस्थता। भीरद मिस सन्ध्री पर वर्मपत्नी नहीं, ऐनड जिल्लो पर प्रांत नहीं। पर्शन किलता पर बींद नहीं । नीता सिक्तरी पर क्रान वडी। मूर्ति मित सक्ती वर मगकान नहीं। कादास**ि**शली कर तास्त्र नहीं। भावतर मिस्रज पर सुन्दरता नहीं। पित्र मिख संकता है परित्र नहीं । शाना मिस सक्दो पर मान व्यो । आसर्पन

मीठा नहीं बासा । उसने बहा कि um में दो **पैसे का** मीडा भी **बा**ल विश्व होता । **बारत को सम्बन्ध में सन्तों** का स्वान पहिलो पंदित में था और व्यक्तिकों कर उसरी जेंस्त में । किंग सब पनिच पहिली पॉक्ट पर आ यर है सन्त पीहे, बन दिए यर हैं। बड़ि बड़ देश सन्तों के हाय में होता हो क्षेत्रान प्रस्त की श्रवाया न होती। दर्घ चंद्रोक्ष के स्थान पर Self Control करना चाहिए बेद में ता प्रजा सांचने की प्रायंबाएं काशी है हो पत्र सांगी शहका सत प्रांतो । श्रावियों ने तो १६ संस्थार बनार पर छात्र देवल देव बनाय बाव के बाब जिल्लाका है। काले समात की यह कांग्र काला होगा।

महोत्सव का प्रसाद कार्यसभाव (किसा) विकास-पुरा जाशान्थ्य शहर का सक्षान

वाधिकीत्सय गतसहाह सम्पन्न हो गया। क्या, बक्र, अक्षस क्या बल्से का समारोह हर ५कार से थुमधाम से दुव्या। बी शानी पिस्डीहास जी अमृतसर ने बहा डोस प्रस्ताब इस में पेश करके रस पर बढा ही प्रमायशाली भाषक विया ! कानपर से प्रसिद्ध (प्रजा-क्या भी बाक्टर वीवान परंद वी बिसती पर शक्ति नहीं। मानव श्रा. १. डाजप दा पिजाकी से किल सकता है पर साववता नहीं अरा प्रदेवन भी क्ष्माल का बा मित्र सकती। यह पनी ने डाई क्य से क्य भाषवा जीवन प्रव हजार नोटों को जला कर एक मिय मा। ऋषि संगर का अवस्थ भी के फिर चार्व बनाई पर सम में सुन्दर था। धर्म की सरिता बहती रही इसके स्टिप् बयोव्यू भी डाक्टर **85मपन्द वी मस्त्रा क्या सादे** समाज के. विशास संस्थाओं सगर की सारी समाजों वर्ग धासपास के वेशिकों को बमाई हो। नेराध्यों के प्रवचनों का सीठा प्रसाद कार्य-जनत् के में भी भाईवों बहिनों की शेल में स्था == संस् में कीन इस क्रमिम जंक में दे रहे हैं। इंसराज महिला कांग्रेंब की छात्राक्ष्मों ने बेदसंत्रों के मभूर क्वनारवा में मन्त्र ग्रन्थ कर दिया। —तिस्रोद चन्द्र

#### दयानन्द महाविधालय. शोबापर की सफलत।

जाते हैं। हमारी सम्पन्त में पूर्व विव इ. तकावर की भाजमेर में भाशम क्या का है, दूसरा क्क**री** क क्रमिय प्राप्तीय क्रोनर सहा-का, तीसरा गुयन का भीर चीवा विद्यासबीन हिंदी बादविकाद प्रति-मागक्तने का है। भाग का लेख बोरिजा सम्पन्न हर्दे । इवानन्द महा-किसालय ने टाफी थीत की। कु० पन्तकता द्वारा क्या भी नाम्बद्धर रा. बो. ने प्रतिवोगिश में भाग ब्रिया था। इ० डागा को तथम पुस्कार विसाः

धनवानवास--वाशाय

धायसमाथ (किला) विकमपुरा बाजस्थर 🎚 महोत्सव में मारी ब्रसम्बद्धाव में ब्रावना भोजर्श आष्या कारत्य करते इस हो. क्स की एस, एल. ए. पूर्व शिका सन्त्री ने दहा-

कार्य समाज के सन्तास करू | अविकास का सब से बड़ा पैसेंब देश में शास्त्रीक्ताकी सावना की संवर्त बनाना है।

धार्यसमाध 📰 वैशेंत्र की मीक है कियस में क्रिक प्रशासिक येसा बरके बद्द न केवल भारत के मांबध्य को । नरिश्वत एवं मुर्रापुत बना सरुतः है बहिन सहिव द्वानन्द क्षार मी बचे एवं शब्द निर्मोण के क्रिय की गई एक कल्पनाका भी साहार कर सक्काहै। भाव देश का को डांचा वहा है

स्राप्तें इस कात की कोई गारंटी नहीं महर्कि दवानन्दने इतिहासके इसी दीन कि व्यवस्थित सामी के बाने वाने से देशवासी भाषक में सहना-मग-हमा गार नहीं बर देंगे। देश की चर्तसाल तालीहरूस बाल का संकेत क राजार के धवसा पर एक है कि बादे हम कान्यास्थवाद क्रीर शष्ट के निर्माण का त्रवस किया ग्रीर इस स्थितिस्था में देश-बर से श्वमात्र संपार की कितनी ही बावें करें, हमारा अधिदर तब वक बासर-सभी बर्मा के प्रान्यावियों को एक स्पिय है कीर सरका अनिवर्तित है सभा क्वाई तेकिन बाव सिरे न वदो । यति सहर्षि का वह शवास सथ वह राष्ट्र हा निर्माल नहीं होता देश में एकता का प्रधान है। चीज शक्स हो जातर वो ग्राज के मारव के काकमया के वर्तत बाद लोगों का नक्ता कब दसरा हो होता । में एक्स आहे लेकिन सब में कार्ड **एक**ता पर इस सरोसा नहीं कर सफ्ते। साजभी कोगों से शतीत सामनाएं हैं. भाषा और अमें के **माम** पर कमाद है।

सहर्षि त्यातम्ह ने वेश-वास्तिरे हें राष्ट्रीयता की सावता साते है विष क्रम कापनार्थ की जो बर्धारव में बाधी तक साकार नहीं हुई' । महत्त्या गांधी और जी नैहरू तथा चन्च राजनैतिक नेताको ने अपने शंग से राष्ट्र के निर्माण के ज़िए प्रवस्त्र किए जेकिन राष्ट्रीयत की परुष साम कानी मण्डम नहीं है कितनो होनी पादिए।

#### भाषा. धर्म और संस्कृति के आधार पर राष्ट्रितमांण करें धार्यमधान प्रदर्शि दशानन्द के स्वप्न को साकार बनाएं पंजाब के पूर्व शिक्षामन्त्री श्री दश जो का सावल

इतिहास के उस दीर में, जिस भी क्या ने शह माधा के साथ-साथ में पृथ्वीराज श्रीहान, महाराखा **एक राष्ट्र क्रिपि बनाने का भी मुकाय** क्लाप. शिवाची मरहटा, गुर विवासीर स्था कि इस से भाषा गोनिदसिंह भीर टीप समयान जैसे के सन्दर्भ में चनेड वड़ो समस्याई बहादर सेनापति पैदा हर, वे समी इस हो जाएगी। संस्थात के बारे बीर रूप साइम्रो थोड एड संयुक्त में छड़ोंने बहा कि शब गाश बोर्च बना कर नहीं बह छके। संस्कृति नहीं हैं । संस्कृति पास्तर से इन में से बोई सेवात के बिए, बोई हमारे दीवन के द्यानारभूत संस्कार बद्दाराष्ट्र के सिय भीर कोई पंजाब है। नाडे बारव के विभिन्न भागी यासीसर के लिए लड़ा। यदि वे के लोगों का पहराका स्त्रोर स्वाता-सभी समन्त्रे मारद के क्रिए उदने चे योजा मिल-फिल हैं ह्यापि संन्हर्त बारत का इतिहास दक्क भीर होता ह यस है। ब्रह्मां क्य ब्रह्में का सहस्थ है इसारे देश में क्रमेड धर्मों के को अपने सामने एक कर एक सी जोग है जेकिन हैता वह जिल्ला वर्षं पूर्वं महारानी विकटोरिया के यत है कि सार्थ समाध के इस सन्सान में दिल्ली में ब्रायोजित निषयों को ब्राधार बनाकर समुचे

भाषा, धर्म स्रीर संखर्मत ही दह के कार्यक्रम को स केन्स्र आर्य राष्ट्र का ब्रापार दन सकते हैं। समाज ने वरिक सभी समाज सुवा-शारत जैसे देश में भाषा राष्ट्र की रक संस्थाकों से यक का उसरे कर क्द क्षत्र में बांधने में बटा बता में लीकार किया और विग्रसे १०० बोगदान वर सब्बो है। दिन्दी वर्ष में समात्र ने जो उन्तरि की को राष्ट्र साथा स्वीदार दिया गया है उसका कही उदाहरका सही है खब उस को राजनाया के रूप में प्रक्रम करते का विरोध सिर्फ वही स्रोय कर रहे हैं जिल के करने कुल निवित स्थाओं है। यह बद्धना सरावर गलड है कि अंत्रेची मारठ की एक सयोजक माना है। यह विकार हो वृक्त राजनीर्वजी वा धमानरों स्प्रहो सकता है काया अन्तरा का नहीं।

विस्तवा । यार्थ जगत गोहतक के समाचार कार्तिक साम सं- कि० २०२१

विद्या को एक स्था में बांच सकते हैं

समार का एक कान्तिकारी कार्यक्रम

पेश किया और चपने बहात पहरने

से समाज का काशकाय भी किया

उन्होंने सहाबता, प्यार ह्यीर सेवा

से खेत-धेत एक समाज की रचना

को बाददा सहक बकावर । क्रक्री

महर्षि दंवातस्य ने सामाव-

बी श्रेसे म विकि क्या भारत की २० चरोड़ वारियों की सरकाज धोमधी त्यामिना विद्या-प्रणमा शी

र्यात की. ए. भी. टी. प्रशासन के रोहतक के वैविक अस्ति सामग्र. कार्य धनवंद्रे क्ष्मा हाईस्कृत, वार्ष श्त्री समाज बादरा तथा कार्यसमाम प्रसाम प्रोक्ता के कराज प्रसाम fear 1

गहर्षि निर्वासीत्सव के स्वतस्य में वार्षनकार प्रयास क्षोरस्था को कोर से तीन दिव वक शिक्स भोजार है कि स्थाप के जिल्ला है

सन्पर मास सं विक २०२१ की अथसा से प्रकारण किसा सक इसरी बार खार्मनतः विका-xmm वी ने मधन साधितिक दुःश की विन्तान करके चार दिस धरिक अवित आसम, बार दिन आस समाज मधाना मोहत्ना हथा एक दिन चार्च समाज बाबरा वाये श्री समाज शिवाजो कालीओ तवा कार्यसमात माहस टाइन से वेद बजा इन अपने वचन इन बरिशासन किया । निःसंबेह पण्डा स्वामिना जो भगवान द्यानम्द स्री के पथ की कानगामित्री हैं सीर एक वेड्-प्रचार की पीड़ा किने शहरे वहां प्रमारही हैं।

(विद्यार्थी रोहवड (नवासी)

### चटालती नोटिस

धीर्नियर स्थळक द्विसार-शीसती शान्तिवेची विश्ववा वर्जरेशनस्ट साध्य क्षत्रमा व्हसास किसा दिसार पनास

विश्लेखातान रासास बराए सार्टिफिकेट वान नहीं वे वरका पंकीर बन्द संख्याची बराई ४३४३/४ :

च'कि कारामुनास (अक्षरक पहलिक) ने गडश्या में दिवानी -पावालय की विशी के अन्तकास दारा इन्स्ट्रास धारी होते के ब्राधार पर इस न्यावालय में उक्त कियी के विष्णादन के लिए प्रायमा पत्र पेश क्ति है। ईसलिए कापको सकता हो अपनी है कि प्रापं इस न्यासासन में दिलांक २६. १२, ६४. का अप-विश्वत होरे कीए याँच किसी के जारी न किए बाने के सबन्ध में बाव को कोई ब्रापणि हो वो उसे पेश करें।

दशस्त बीनिया सम्बन्ध क्रिसार

कार्वेककाक विकास विकासित बावास्थ्य के कविकोत्सव पा विज्ञास विश्वाल में वार्यप्रवेशिक सामा पंजाब जालाचर के सानव क्रमान स्टेंग्न मृदि भिक्तिक रखाराय श्री थम. ए. एम. एक. प्. मे धापना क्षोत्रस्थी भाष्या देते हुए कहा — मार्चनवात्र को पानिक व सामा-

विक चेत्र में कार्य करते हुए राजान्त्री होने सभी है। इस कर्ल में स्वामी त्यानन्द्र की में देश के शिष्ट क्या विशेष देन से हैं ? यह विचारना नाहिय जन ऋषि ने कार्व बागरम किया, इस समय का बारत अर्थ-कर प्रतीत होता है। यस समय हम वरे निराश हो । स्वरथा स्पष्ट है । -मसरमानों का साक्रमण इका क्ष्म क्लिने पामात्र हुए। परीपकार की भावना स्थावतयन श्रीवन में हो -सक्ती है पर रोजनीतिक भीवता में कोई ब्राब्धन्ता इस पर दवा करेगा? ब्रेस भावना मुख्त को । एक हजार वर्षे तह इस करने को सन्वास न सके । मध्यकास के मारत का इति-द्वास भयानक है। इतने समय क्ष कीत दरस रक्षा है ? सम्यता में ते बोई भी देश हमारी तुक्षना में व्य द्वी नहीं सदला। इंश्वीतस्थान रोम के बाधीन रक्षा पर उसकी -बुम्सरा मो ३०० वर्षों वक ही रही। पर इस वो इसम् वर्ष दास रहे। इस पर विवान्त विचार करते रहन भाहिए कि क्या कारना थे ! मुस्सिमराध्य में हम फराज भी रहे श्चमानीत भी बड़े हुए, किन्तु एव विशेषठा यती रही 🌃 हमने कपनी न्द्रस्थानि को नहीं छोका राजनीति क्रासला की पर संस्कृति के शक् असारे भन्दर हीनशक्ता क्सी वही चाई इसने वनकी संस्कृति को मारतीय संस्कृषि से बेहतर गई। -सम्बद्धाः किन्तु अगरेशीराच्य में का प्रमाण काम गई। तम को भी

अवस्तीय पद गया यह समन्तरा या

कि हवारे पास रसा ही क्या है ?

बड़े क्षित्री परिवार ईसाईबों में चमें । मार्चनुक के साथ बावपीट में लड

### ऋषि दयानन्द ने संस्कृति के गोरव की जागत किया

#### हमें किसी के भव से भयभीत होने की जरूरत नहीं श्रार्थ प्रादेशिक सभा के प्रधान ब्रिसियल रताराप्त जी एक, ए, एस, एल, ए, का भाषरा ALBERTARRAMEN APRICARION RATER

प्राथना नहीं कर सकता

Dayanand cannot pray

for foreign rule in India.

सरे समाज की हीनमानवा थे

वदत्त ६९ इ.स.रा. सश्यक गोरव से

बहुत क्रंचा कर दिया। इस संस्कृति

में किसी भी पहिचनी देश के

काससी नहीं है। हमारा इस

से दुइरापे जाने तथा प्रार्थिक

ह्या में शिद्दे क्षीय विद्वाद गया

व्ये । हिन्द् के शंव म'स्वम शासन में वो नहीं उसदे किन्तु चांत्रेश रासन में फाद गर। हीन मामना ने हमें उस समय परादित ता कर रिश्व था । और बाबा बाउपनाराय वी के पिछा श्री पांच पांच सकात पदते थे। वह इन्हते थे 🖩 नुमे रदेशसमार मिसता ही इन्साम में है (Oneness of God) क विचार हिन्दुभमें में है ही नहीं।

दिशा में लिय साथ से अंपा हो मगवाद् को हिन्दुसमात्र का मिटला मंजूर व या । स्वामी है सारे देश में इस प्रकार की उदास साथना त्वामी दुवानव्ह ने पैदा की रवानस्य भी ने इस शीनता की हमें इस महान उपकार के लिए परिशासनोर्वास को बदशा । वेद कं द्वारा *द्विन्*तुसमात्र को बगाया। क्तह रहना शहिए। छन्होंने संप्रश्नों की प्रस्थीकी संस्कृति का ब्रह्म कि हिस्स की बकता का शिद्धान्त्र सन से पूर्व देद में हैं व्यो कार कर दिया। इमें क्षव ब्रानी सम्बदा पर मान है ह्यीर सिलाई है। वस सद्विमा बहुम चदा होना चाहिए । इस समय ब्रहरित क्या ही सरोजवर के परेस भारत में यह बरोब के सपारंग नाम हैं। कोई वसे कविन कर क इसाई हैं। बेनस व नागासेयह पुढारका है, कोई उसे यस, स्ट में उनकी मधिकता है। माब आदि से बाद करता है गीवा ने भी ईसई दचार भी धर्म मी ब्रावा है बाबुर्वमोऽन्नि :--वही वर्ष है। बाद यह है कि या शबु, यस, ऋषिन, वस्त्य कार्यं समस्य केवत प्रसिंह वहीं है बाब से बाद किया जाता है। यह व्यपितु सामाजिङ तथा राजनीतिः संस्कृत से गीरव करने की बात It is not a religious बबाबन्द की देन है। यह सब से problem, but it it a बहा स्पद्धार है कि संस्कृति के रूप social and economical वे होद माचवा को समाप्त कर problem. तासी व्यक्ति इस दिया। शब्दीतिक भावना में भी से प्रपमानित हो दर चले गए। दनका बहान स्वान है। सत्वार्थ हम ने उब से इंग्साओं का न्ववहार नकाश में सुनहरे राज्यों में शिका नहीं किया : सानव ने सान**व** को कि विदेशी रास्त पाई कितना ही दुश्राया । वह इसारी कमश्रोती क्षप्का क्यों न हो, वह क्रपने सक यो । बाइयस को पह कर ईसाई श्री सबक्षा नहीं कर सकता। भारत बनने क्षत्रे सूच विरत्ने हैं ज्यबदार दं उस समय दे नावसराव सार्थ

#### सभा मन्त्री जो की उद्धारता

वायं गरेशिक समा के महा मन्त्रो विस्तिपत ज्ञानपन्द जी आदिया ने व्यार्थकरमा समा क्षत्र के बार माहको के लिए कायी कीमत क्रमतो स्वारका से **भवनी लेव से देनी स्वीकार की** उड़ दिया कि साप के सस्य के है। ये चार साइक शोकापुर ब्दांकाकम स्थाने की में कमी महाराष्ट्र के वो तो. राखेन्द्र जा जिक्कासु एम. ए. द्वानन्द् कासेअ की इच्छा पर है। सान्य समा मन्त्री औषा द्यार्थ सम्ब वर्तारका का सला काधारी है। अन्य समाजो व सरवर्गो से प्राचेता है कि वे भी भी सन्त्री सबा जो के समान उतारता का परिषय देश्वर समा को सहयोग देते रहें -संव

> अंगरेत्र तो असूत-स्थान भी बनान पाइता था पर स्वामी द्यासन्द केशचार तथा धार में सद्वाल्या यांत्री के मरनावत के सद्दान पर हो प्रदेश संप्रकारत व जिल्ला सकी। वे क्रिन्डसमात का अंग बने रहे। Social Justice and epuality होती यहरी है। वर्षों का किशास बस्य के बचा पर फाई से बता पर बाद में फिरावट आ राई। स्वरमी मी ने 118 वराई की भो रोक कर समात्र में लग को सकात स्थात विकास । स्थानी भी का बतराविकारी आवेसमात्र ही है। काश बहुत वहें काम करने की काश्यवस्ता है। हमें चाहिए कि सरकार पर कोर देनें कि अन विखरी बारियों की भाविक समस्था तीक करे ? इस की आर्थिक महास्था है। इससे वे एवर नहीं कारोंगे । यह समानवा की भावना भी आरमी रसामन की देन है। ब्रावेसमाथ की हर प्रकार का स्वायोग, देवें ।

#### मध्य मंमार के ममत्त एक आवश्यक प्रश्न

अंसर के इस्तेक मानव में वह प्रवृत्ति रुप्टिगोचर होती है कि वह क्रम्योत्तर क्रमकृष्टतासे शत्कृष्ट पंच **क्री क्रोर अवसर होने को सम्**चेत रावा है। बिव्दित सन्दर्भ भी सदैव के किए बीजाकार में परे शहर। बसस्य नहीं करता । यह ब्रोप वाट है कि सामनों के समाप्त तथा विकास क्य इंडर्गन न बिखने से वह ध्वति क्या वर भग रस्त्रने से विवश रहे। परन्तु अक्टावस्था को प्राप्त करना हो प्रत्येक सत्तव्य का शहत होता

411 यह प्रकारण इसे सध्यमान के बहुआ करने से ही शाम होती है, जिसे महत्व करना, बानव मात्र का परमा चर्लच्य है। जो सस्व शार्भ को जान कर भी करास्य मार्गमें पढ़े रहते हैं के बाव्य वर्म परिवर्तन न किसी व्यक्ति वर्षा व्याप्त की निर्येत्सः क्वान्त तथा द्वाविद्यस्ति क्षक्था से कत-चित्र साम पढाते 🎹 किया जाता है चयवा करने का प्रवस्य किया जाता है हो इस इस एकंड पड़जा जाउने है कि क्या संस्था का बोर्ड सी विचारशील सम्य वर्ग नियम् व्यक्ति ब्रम ० क्रम के प्रश्ने वर्धकारेंग्र के प्रयास को सबित बहुते का साहस का सकता है। हमारा निरंदनत

बात है कि मध्य संसार की धोर से स्वका पत्तर व कार में ही हो सवता है।

भारत में अशिक भारतीय ईसाई समोतन को सम्बर्ध में इसी नवस्यर मास २४ विविशे में हो रहा है इत्यारे हैं। इसी किये कार्यसमाज आरत की कार्याभ दर्व धर्म हात

बी दं, देवप्रकाश भी प्रवर्तेन सार्यसमात्र के बड़े ही रापनी चनगढ कार्वेडर्थ हैं। बाप कारवी, पारधी के प्रसीद मेंडिस हैं धरका संस्थन विशासक क्षमतसर के ब्राचार्य रहे हैं । सादगी की सबीय मृति है। भीन होकर वर्षों का मध्यप्रदेश में काम कर रहे हैं । इतारों भीओं को ईसाईबों से खुड़ा कर वादिस सर्म

& \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* के प्रवर्त्तक सङ्गर्भ द्यानन्त् ने कार्यः । ते ब्यवदिचित बाहियों को इसी समाज के पतुर्व जिवस में शिका है

में साथ हैं। ब्राय एकिट देखक भी हैं।

"स्त्य की महत्व करने चीर क्रमध्य को क्षोबने के सिवे सत्तरा ष्ठवत रहना चाहिये।<sup>7</sup>

भारतः वरि बोर्ड व्ययनी समाति तमा किसी वर्म की सत्यता को समन-वस कर चल्चा धर्म परि-बरोन करता है तो इमें कोई व्यापांच नहीं। और हमें ही क्यों. प्रमारा तो विज्ञात है कि संबार के किसो भी विशासकीय निष्यद पर्व सध्य को बाने शक्ते नहीं हो सम्बद्धाः वरन्तु क्या याही

प्रसार पराध्या करने का एक सरियात प्रथमन है। ईसाइयों का क्राब्ट उक का आपन में पार्च पविकास का कार्य क्रमेक प्रकार के सक्त प्रयोग तथा प्रश्लोनमें के सहारे ही चळता

> ते० थो पं॰ देवप्रकाश जो वज्जेन मध्यभारत

रहा है। इन इस प्रवंशों का वर्शन हम यहां नहीं कर रहे हैं क्वोंकि इसके धिये स्थान और अग्रह क्रवेतिक है। यथा स्थान इक्षद्र विकास भवस्य दिवा जावगा । यहाँ इतना संकेतमात्र पर्याप्त होगा कि आस्त में ईसाईमर में परिवर्तन के fine

#### पोप पाल आज बम्बई पहंचेंगे

राष्ट्रपति स्वानत करेंबे

सम्बद्धे—राष्ट्रपति दा० राषा-कठारह वयंसे वल-विवा बारहा है ० क्रम्बन क्रम साम १ वने पोप पास का शहां कर चने पर लागत करेंगे। योग बड़ा ३ दिन उद्दर्शने । बह ३ डिसमार को डोशहर को राजमबन में शावति दाः राबाद्यस्यान से तथा क्यराष्ट्रपति **क**ः वादिन हुनैन भीर श्वानसन्त्री मी सामगादर शास्त्री से मित्रते आएगे । राष्ट्रपति उसी दिन शास ४ वने योग से सिसने जार्थी।

व्रत्येक सम्बन्ध सम प्रपेको प्रत्येक क्कार के बाले करों का अबीग तथा जानमें की प्रसंक विकास से क्रमाचित साम ब्हाने का यथेष्ट क्या किया जाता नहा है जिसके प्रअवस्य बासो मनुष्य वर्ग अह

किये वये । मेरा अपना अनुभव

हैंते जीवन के २० वर्ष मीन कंत में बिरावे हैं, यहां सहस्रों क्रीय रहते हे । इस में से कविकांश र्दमार्ट क्या जिये गये हैं । एक दिन 🔁 राजटो के पादरी से सहा, विन हजारों मोजों को चापने ईसाई

क्याचा है क्या हे पीश का लाम मी टीह टोह क्षेत्र सब्ने हैं। जिल्हें के जिल्हें कर है जो कि विकास के डीक डीक उच्चारक करवा कर वतसारवे । पादरी साहद क्या उत्तर देते । रे दिवश थे । कोई वीग्र का तार केंद्रा अक्ता ही न दा। ऐसी क्या के बक्र समात के समय पत्तर के सामने यह प्रश्न रक्षमा नाहते है कि क्या हा अधार का यस परि-

शांत कियी की दशा में भानवो-वित बचा जा सकता है प वर्षि नहीं, तो हम प्रत्येश स्थव व्यक्ति से सामोध अर्थना कोरी fie b ferreit & pur mitten

राजी सदस्तों की सेवा में क्लि-दन है, कि रोडक्क नगर में विदेशी धार्याची के काल कारनामी का मुकाबसा करने के सिए विश्व

इस क्षमच एक पादरियों के जास से "डीन क्टॉबर्स" बीह "दार सहदे" सदार है. सीर "शीस परिकार ईसाई होने से क्वार हैं। कटकों को प्राप्तारी लड़ और से सक्कों को प्रमास्त तक प्रथम देश लड़की मैद्रिक कर रिका दिशा कर तरशिंग कोर्स दिसावा, धार पह सरकारी नौकरी करती है। इसी प्रकार एक सबकी माध्यक्षी लक दमरी झांउंदी में शिका पा बड़ी है ь बक सहका किन्हों टाईप सीवार रक्षा है।

मधर पाइरी मी हाथ पर हाक धर कर नहीं बैठा हवा, स्राधित अपनी सारो शांश्त मोंधे औं है। बावश्यकता है कि वेड् अगवान के साथ प्यार रखने गांडे का भारत का दित पाइने वाले अपनी ग्राम कमाई से नक्दी, क्या, क्षताब तथा ववाईर्स सेत्र का हो। सहस्रोत हैं, ताकि इस दक्षियों के दास उक क्ष सर्वे ।

> शंभान स्वायंसमान प्रयाचा सीहल्सा मवानी रास कार्य शहर में औ बायैसमाज प्रभान मीहरता सत्यीव कीर श्रवारिका संबाग मं० ६७१ बी. ६ कार्य गती रोह क

विक्रोरी साम

आर्थ जगत में विज्ञापन देकर लाभ उठायें ।

#### भार्यममाज (किला) विक्रमपुरा जालन्धर का मध्य समारोह

सारे साथ में कार्यसमाज जान रहे का जय जयकार सबाज की मक्ति का ठाठें भारता हुचा भव्य जलस \*\*\*\*\*\*\*\* पतार की पेग्रीय जार्गसमाञ प्रस्का सिक्षता या। अक्षत में

तब से आये मोबे पर कोरेन (बिका) विकाश वाकावर रहार काक जिल्लीर पुरुष का ! शेवे का पार्विकीरसन्त महान सेस्ता हो। वाई देख सहस का बैंड कीटी बने २७ तवस्थर से २१ श्रथमध्य र्शावदार का साथा। दिर भारत तक सा देशम गरती बेरिक हायर पार्टका, विकास मध्यमंदर्श बैसंदरी सात है विशाल तथा छन्। ला, क्षेत्र स्कूत के सहर में बन्हें क्रके रव फिल्हांस में बढ़ी ही वय-नो, ए. पम. इर्ध तहत्र स्थापीर भाग से सम्पन्न हो गया। यह थी. ए. की. जूल तकोहर, हो. द क्रमीयम् असे शेर का प्रदेश सामा आवा है। इसवी मारी तैवारी की वी. लूक प्रशासकपुद, भी. ए. वी. आसी है। बरशन से पूर्व समाज है नुज बाकरपुर, समूराचे दावा हार क्षत राज्यभ्य, स्वास्त्र मार्गान **ब्र**यने सर्वातर्शित वस्टिर के विसास खुक बासम्बर, नियसकोस शास में योगवार रात से कार्य बम्याना सामनो, बेहरचन्द टैसने) क्रादेशिक सन्ता के शरीशक रंग विक्रोक्यन्त शहनी की वेद कवा बस बालेज सामध्यः त्यानथ न बेकारक से नेकिये कियर के -सरीक्षे मधन डोले थे । ५० आनवण भी के और असल हरा। एक रोत र्पंत्र राजपाल संदन भोड्न विमदा-बंदसी के मीटे भवन भी हुए। क्रफाइक वसर्व का सब्द का चबका रहा। बार में लामी बार्क्सवरं जा गती हैं। संस्थाओं विकासन्द भी रोडवड वालों को धराओं भा जार के गाउडास क्रव्यक्ता में इता ह

श्वक्तार दावहर बाद रहता के स्थ्य साहित ये। सारा शहर पादे विशास मेशन से वाचे श्रावसमात सबर रहे. श्रवि समात्र वर गानदार उदस निकता दराक्ट भी दय, मारत मात्र के अब से शृंद इदा : स्वाद-स्वाद अवंत्रवस समाध के प्रधान जीका शासा सन्तोपराव जी के दायों हार। पर रक्षाओं से, वैश्री तथा बाजारों से समुश पर पुष्य वर्ष की गई। कोश्य भाजा स्थाराई सई। पनके नशे में पूर्ता के बहुत दार बावे चार्य समाज की इस शक्ति, संगटन अप । मीजा सकेत को बाजाओं इत्सासन तथा योगः सो रेशका रिय के मन नदी शहबता था। .ते श्वर बीटा व्यव गीव गाया। शास के बोरि शतिस वालग्न अवा । कर शहर है. उस ने क्कार र में श्राष्ट्रेशमध्य को विधनी मारी द्वारित विश्वता जागरत किया है, संस्थाओं m sings है. क्लिमी वही २ का किश्रम शामग्रह ग्रह है, नगर क्षेत्राओं की विवास सामितां धी मह समाजों का विकास के क इसके पान मीहर हैं, किउनी सगत. क्सक्त, तोश रे-एवं सक् का है। इस बाहुत से करी बतों का

त्रार्यसमान प्रिरोजपुर चैंक को बोर से पूल्य बहात्मा चानन्दम्बामी जी

की सेवा में सभा देदप्रचार में एक इख्यार ८० की बैजी मेंट शार्ष समाय भी ह बादार

र्थाच्य काली सन्त एक स्थारण क्राध्यद लागी में मधाग की प्रस्त दरशने काडी क्या औ वनता ने चर्चणन किया। समाव के प्रधान की, जा, मोहर फर्ट जी वर्ष विभिन्नत ने स**बा**ण की **घ**ोर से लावें पादेशिक संधा जालचा के नेत प्रकार में इस इक्षार मध्यों की वेश मेंट की।

परिचय सिक्ता था। सारा बाता

दरश काटी से भरा हका था। बार्खेंहर बाहेश शक्यर, ही बन्ध स्वास २ वर भागत इस र. वी. कालेज जाजन्यर, स्थानीय रही भी। यहरू में प्रकार से कायक्रमाणं, धार्यसमात्र फिला, समात के प्रति सब को अजी मारी क्रवं दुवक समात ही, ए. से निया है। श्रूषानें, बुतको स बाहेर्ड बालपर के हवारी प्रश क्षताह देसकर दिल प्रसन्न होश बहुत में सामित्र थे। व्हीत होता बर र देना बतांत होता या कि साहै था कि चार्वतमात्र की रिशाह नकर में बार्वतवाब का श्रोतशक

> विद्रमें इब इलाइ और मीत को है का भोजन में आपि देश है मार्थ है। अवसी, अवसरी से बारा पाकसरक विनारित हो च्या । सदाब के बसादे वर्ग भी धानन्द सागर वार्त दा के बोस्ते २ नक्षा ही वैढ नदा। बब्दम हर प्रशार से सदस का ।

है। कार्यवयात्र के मारे वर्ष

भारत करता करता महत्व सम वेदों का पढ़ना पढ़ाना सुनना सुनाना

> द्यायों हा परम धर्म है

जार्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा को वेदश्वासर्व 🞮 🕯 थी पडव महात्मा आनन्त

स्वासी भी महत्राज की बेराग्र से सिक्ष्यर ६४ से नवस्वर ६४ तक स्था वेद प्रकारायं लगभव १६००० सपरा शाप्त हमा इसके लिए संभा उनकी সংখন্য ছবছ है। चिते अपर सद्धर में बार्य उत्तत ने

यात वेष्युक्डासभी सहवास २००/-कार्यसमाज समाती আমিক্স 9017-मही (HJP.) २६./wk

क्रांपर(राजस्थास्त्र)११५/-समान्यर ... १०१/-होशन भोडवदा सम्बद्धाः १२-११६%

नार्रेसरोद्द समस्याः ४०% महोद्याकात(क्षावस्था) १०१। विद्यो (रोक्सक) एका-

**मह**्र 90/-हा. वि. सामा 1% रांसका आक्र 224 ्युक्त संक्षान गांचा ११/-

> शान्त्रिकस्य सोमोदत २०/-मास्त्राप्तन नयस ANE ROSE

वैच विकासागर औ (असतसा) ३६/-सेंबरर द प्रतिशह ४००% चौर्क फिरोजपुर ४००%

बार्वसमाध मंदिर इस्ट मोसकरी क्रियेशभू ४००/-दयातस्य मोदस स्टब SINFUT foo/-

सी.प.बी.H/S स्थल वाहीगार २००/-बार्वमसात सोइवरीन लिकामा ३००/-

ू देवराक (दिसस) १४/-ती. व. बी. काहित दिसार २००१ ,, इन्हेंन्ड्रस्ट मंगवात २०/-भी संतोहरकाल जी सरवाह।

बाबार्ट, डारा भी परम चायम स्वयो से १०००

ध-प्रको, मात्र स्थलना हैं को अरिकां अभी कोली क काडे वे पासिक, राजनीतिक प (ते० वन कर्दरेन वी बार्य हिटीका, उपरेक्षक बाईकारेसिक सका) सकाजिक के साथ की हैं ने सभी इम में पर करके वा रही हैं। वही कारण है, इसारा अचार विचार faret at रहा है रोशनी से अवेरा क्ष बोता है पर इस विकालता के प्रकाश में भी संसार क्यन की कोर सारहा है। कारण वैदिक सर्वा-दाओं को कोइना वर्ग भूतना ही मैं समस्ता ह', इसी मोर भूक के कारण हमें सोग क्यों नहीं सकियें क्य विरोधी बढ़कीयर साथ क्या पार के बोधों के बातरील श्रो. वजकी बीडो नीवि में प्रेस कर वापनी काली प्रार्थ सर्वाता की शक है रक दिया, बारते हैम में भी करें बीना सीहर बने अबने देश कीर बैदिय संस्कृति को है। अने बादी बीर **प्रदेशा**ने शाबों की क्वाशरें स्थानी में पद नई उनको जंग सालई। क्यें नाना इंग के समझ्य पक्षे

मोंग्रे किए मोस प्रथा का किसे

इस दर्दशा को एक निकट कील्टान

भोगी वैदिक संस्कृति का रक्षक देवत

लरूप स्थानन्द सरावती ने देखा

भीर इस वा सुभार करने का बीवा बढाया. बारत के पाक: सभी जाती क्रीप्रधनों में इस बीट लेर में व्यपना गौरव दिखासा वेडिक प्राप्त वरिक संबार को ध्वारे व्यास्य का मर्वाता का विस्तानंत करावा विशेषी क्रपने वाचें के कारक इस ताप का सामना न कर सके। सभी क पांच सक्त्याद्य गये स्वतन्त्राता की सर्वप्रकार इस देवता ने आवात सठाई समी विचानशील विधान शुक्त वर्गहत्व प्रचारक प्राप्तिक है

भार्व समाव, पुलका-तथा व्यामामरासाओं की मांग काने पर सकत १ तके वद विवा बादना दिलें। जयदेव बादर्स पो. बा. ४६ बडोवा-१

त्व देश का सकार हो सकता है,

क्ष्मेल्य सम्बद्धाः नेता । व प्रविद्धारी

जी वे बक्रकों हैं कि सार्थ समाब

डी इस देश के सधार कार्य की भक्ते

क्वार से घर सकता है। यान्ते में

विद्य इसर्थ सम्प्रेसन होने शका है

दशका आरंग सामिक्षे पर स्था

श्माय हो सकता है इस यहराई को

इन समझते का प्रवास करें इच

समोदन करने शातों का मुक्ककत

वेनक सार्वे समाज ही पर सप्ता

है। इस समय हिन्दू बाल बार्य

समात्र की और देख रहा है।

कि बार्ने समाध इस समय गना

पग प्रद्वाता है। काहमीर की

समस्या नागासँव भी गुल्बी केसी

त्यच्या है स्त्री जावत्यक्ता है

वेकाराम राम के तेज को स्वीवार । के विश्वत है त्रवि बजा क्रीर विश्वत करते हैं वे मानुहें देखें ब्यायम रक्त्वा कार्तिके, वे क्षमाई है हैं कार्य समाय के किया समग्र का केरपास काराध्य सां समझता है'। के किये त्यारे 🎓 🥇 वासु रंगानंद लाल्य कारत में ध्वताचार चेत ते कार्यसभाग थी स्थापना की रहा है इसे बार्यसमय का कार्य बार्चस्थात ने अपने कमस्तक से क्याओं ही दर कर बच्छे हैं हां हमें तेका द्वाब तद सपना जी<del>का</del> रमस्य के विकासका के हैंक विष्युप (क्याचा है वे क्षेत्र कार्य बार क्षांच कर करना पर्वत्य

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

क्रोत कार्यसमात्र की क्रोत उन्हें चीन वे सोग सके वो शत दिन व्यानस्य भीर भावं समात्र को बारदन्त जरा सम्बद्धे में वे शमक नये बावे समाज ही दैदिक विचार बारा के किला इमारा करवाया नहीं होगा। इसी बारवा वे समस माने पर मार्थ समाज के कपोड कासे सेवक नेता वने, दल में दक्त महारमा इंसराब की एक है जिनकी राताबदी कार्य समाज १६६४ में बनाने पता है। जावों को कोन वही लदा से देखते ये दासक में द्यार्थ समाज ने मारत की क्यी

शमात्र के इतिहास को पतने से

के कारब श्रे

पदा समजा है।

विश्वा है। विश्व

क्षमधे इर्ज है जाया का शरन में काश देव करेश सुसारा, पार्मिक हमारा प्रदर्भ है कही हाति सह य क्ताबिक भीर शतनीविक केर्चे करा है देश की सुरूप और संस्था दृष्टि कोचों से अगव का अब्रा किया करने का शहन है कोर वी कों है। पर बाद पता नहीं क्वों फिर वार्ते हैं पारिभाव की लिए खे वार्व समाज से जिस्सा डांने करे धमकियां कोर पूर्व **साम्ब** का है। सन्य विशेषाबाद में बंध वर संबद है। बीच की स्वर्ग असीर अपने गौरद को बटा रहे हैं। मैं बी सामने हैं हंग एक संकटों में वहवा हु<sup>\*</sup> बाज भी **पड़ते से आ**धिक कार्य समाध को जागरक होना है, धार्व समाज की ब्यावस्थवता है हमें भी काएत थी **-रव**यन्त्रों नह इस के सन्दर इस निवय बीवन को गमीरता से विचार करवा होया इंशा बना देने वाले हैं नहरदासदा बेरे विकार से बाज काये समाव विश्वते स्थवनाय इस मार्ग के किया धी पासे से भी कवित आव-कीर प्रार्ग वहीं है। इवें क्वानम्

इस पर क्रम रोतानी में क्रम क्रमा हैं झारे बार भी स्थित करें बद्धभ की स्रोत के द्वारों । भारती समाराय की भी हो विदानों त्रविध्य में क्रानीसवास का काम काता असी बीचन का रूपन समर्थे इस सिवे की ज़िला जानेसमाय दी वाकानका।

भार्व समाज भी राज तकर का सार्विकोत्सव

and spins distracts to क्र वा वार्विकास दिलांक ११-१६-क्या १३ विसम्बद १६६४ को पूर्व सप्रकृत से बनावा समीमा । ११-१२-६४ को नगर संकीर्तन धा शाबोक्त दिया थवादेशस करायको श्रामन् सन्यन्त करने के क्रिए साथै क्रात के प्रश्नीक विद्यान व क्ष्यदेशक यहां वर्षेत्र रहे हैं जिन में से सी अक्रमानीय जी सारती संसद सदस्य भी स्थाबी रामेहबरा**नम्** जी संसद् श्वस्य भावि महाउसस्य पदार रहे हैं। सबी काञ्चल की गंतानवर

वह प्रचार ग्रीर संस्कार

🇯 शुक्कम वैदिय सामम वेदध्यास यो॰ पानपोप विश्वस्थारयस् वसीका ने बेजमां शक्त देशा मेंका में २० से २३ तक वी स्वामी शिशसम्ब वोर्थ भी की सम्बद्धता में सामग्रेम पाराच्या वक्ष इ.श. अन्य ,त्यानी -कार्यकर:औ. चर.कार्य अक्रा अक्षारी अत्यदेशम् के समय हो। २३-११-६४ को भी बोठ **वासीकात**. वी प्रशंका स्टेशन शहर केवा औ माता द्याची वर्षों वा श्रीमकी क्षणियाँ देशी भी का बान्तवेशि बंशकार पूर्व वेदिकविधि सेकन्यन्त हमाध्यास्यस्ति समास ने वर्षणक संक्था में भाग क्षिमा । इस अंश्वार का शरेवी क

क सम्बद्धि सार्व

SPECIAL SACRE SEE 1

हुद्रुक व प्रकाशक भी अनोपराथ की मान प्राप्तिक प्रतिनिधि सभा पंजाब कारूकर द्वारा चीर विश्वाप है स, विश्वाप रीड कार्यक्रम से प्रतिन क्या कार्यवास कार्यक्रम महारमा इंक्शन सका निस्ट क्ष्यहरी साम्रान्धः सहदं से स्वत्रहरू वास्त्रक-चार्य आहेरिक ज



श्चार्यप्रादेशिक प्रतिनिधितमा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक संखपत्री Band. No. P. 121 . रेशीयोज म० ३०१० वक प्रांत का मुक्क १३ अवे देने वार्षिक सम्ब ६ दपवे

वर्ष २४ संबद्ध ४८) २२ मार्गशोदं २०२ -श्वतार\_ह्यानन्दास्य १४०- १३ दिसम्बर १९६४ (तार 'प्रादेशिक' जासन्बर

#### मधर स्वाद प्रसाद प्रत्येक वर-नारी अपने

भ एसे एके कि में प्रस के भरकों में क्या लाउंगा ? उमके पाम कीत-सी बेंट से **१८ वामा होगा तथा प्रम**न्न चित्र होक्त संस्का-संस्का बर्द पहेंचीया। संसार का सारा है बर स्वीर यह ज़रीर भी वहीं पर रह जाएंसे । साथ ही देंने मेरे ताव तो बीवन में किए हुए श्म कमों की सम्पत्ति ही जाएगी ! जो शाथ जाता है उनको संचित बरने का ध्यान करो । श्रोशो के समान केवल दशरों के इपदे न शोते रही वरन अपने मन के मिन दस्ता मा छोते रहो ।

---वित्र फिलास्का रा० दीवान चन्द्र वो एक. ए.

### श्रार्थसमाज (किला) विक्रमपुरा जालन्धर का शानदार महोत्सव

मोप्रचार ता॰ २३ तवस्त्र से लेकर २६ तवस्त्र श्विवार तह दहे ही समारोह से सम्पन्न हथा। यह, क्या, गमातकेशी तया यन्य जलुस निकला। मारे नगर में जाग्रति, चेतना, उत्साह श्रोर जीवन का जीता जागता दृश्य । त्रार्थसमाञ की संस्थाचीं समाजों. नेताचीं विद्वानीं व रागियों का शक्तिशालो संगठन । युवकों का उपहल हचा और। नेताओं के दिव्य सन्देश। गत शंक में भी बसाद दिया गया है। इस अंक में भी दिया जा रहा है । लाग उठाएं।

ज्यास्थानों को एड दर श्रपने जीवन में श्राचरित करें तभी उत्सव की सफलता है और विद्वानों हा वर व में प्रधारना भी लामदायक सिद्ध होगा । \*\*\*\*\*

स्वामी दयानन्द की

बड़ी देन मारत की अनता ने करीत सम में बड़ी विध-तियों का समय देखा है । विदेशियों से अपमान भी सहा है। दासवा की चक्की में भी पिसते रहे हैं। परिचमी सभ्यता के चम-कीसी क्षारों में यह देश अपनी मंस्कृति से आसे मृ'दने समा या । इर शात में धर्मे पश्चिम अच्छा प्रतीत होता था स्थामी दयाजन्द मरस्वको की सब से बडी देन मारतीयों को यह है कि उन्होंने हमें अपनी परावन सनातन संस्कृति का कीरव प्रदान किया । मानसिक दासरा के बन्धन कारे । बाद इमें भगनी हरेक बात पर मान है। त्रिमीपस स्लारामळी एम.ए.

(यवांड से बहने) লামিক থকাঁ-क्षा... विस्तव सर्वात स्वतीक विसर् प्रश्नुसास

स्तरः आहरः पश्च भागायस्त कोवाति ॥ ३ क्षामानस्य व्यावस्था

मेषगत सामातः त्रभावत करूता दाका<del>र्य</del> पुतर्शन्त्रसमस्त्रम् ॥ ४

**छक्षो**ग = धः १४७ व्यवीत-ध्यनका सर्वात्व द्वीने कर शंची माई पारतय विशत

क्यादि सम राजाकरें को मिता कर क्रक्तोपासना दरने के परवास अगराम भी कृष्य ही में सन समा क्षर क्रम क्षम वस दन्ही का प्यान करते रहे । फिर दशाई कस मध्य भी हत्या को अुलाकर उनके साव शक्त सन्त्रमाः चरते श्रे । पारतय सेनाफों का सरवा यत्वन

ko, सम्पर्धा विकत्सु केंब्रेयु स्वंत्योद्यनं प्रति बाबाव संपृथवी बार्युनरफ्रे

स्वतंत्रितसान ।

श्रीच्या पर्व ग्रन्थ १६ रखोक १४ द्मर्मात-8वेंदिय के समय सभी सैतिक सम्भ्योपासना कर रहे में। किना बादस के ही व'दों के साथ बाद चक्रने शरी । उसके

साथ प्रेप की की वर्धका भी होते वी । हार्थं र—स्वरूव युद्ध के समय श्वत्रच के पिता महाराज नृद क्षेत्र सम्बद्धाः में मन्त्र ये---

ge. प्लस्मिन्नेव कांग्रे तु. मद क्षेत्रो सही वर्तः श्रम्यामपासी वेजाथी.

सम्बन्धी ठव सारिय चपासीसल क्ष्याय कृम्ब

देशं सङ्करवसम् । **जिल्ला**रायस्य मर्थानमस्य जे सम्मायकात्म ॥

द्रोबा पर्व कश्याय १६४-१२६-१२७ अर्थात-इसी समय भाषके सम्बन्धी तेवस्थी राक्षा वक्ष वत सम्बोपासमा वर शो से ।

#### ब्रह्मयज्ञ प्रसारक महर्षि दयानन्द की जय (से०-श्री पिष्टीदास वी आसी वार्व समाय लोडमड बम्रतसर)

### WINDSHIPPONDONICATIONSCHOOLOGGE

किया या सम्बद्ध है।

इसने सनेब प्रमाणों थे

बर्बन करके यह दशिन का यस्म

किया है कि हमारे परातत-शाबीन

बाक्सय में किश्ता सक्क्ष वर्कित

है कि सम्बदा दो ही काल में करना

आह सम्बद्ध हैं, कि सन्द्र्य तीन

क्या फल शास्त्र होता है।

राज प्रमाणों के काविरिक्त की

सन्दोशका में बेंडे हुए मन्त्रें का देशा अनुदम संग्र नुरुक्त के चंक में कर बाबा ने किया, और देशी विधि का करोस विस्तान वस्त्रम का कह काले | किया कि वर्ष किम पूर्व इस पर केशों भोगा शरका मनिकट इसका आधारत विका जाथ तो धाया-बाक्ष दिवा। निसंब, ब्राधिटीयंक वर्ष प्रापि

१२. अवाधातोऽपात्यस्ते वदा बिक्टि विश्व दक्षापं वरिधाव वासकीः पक्षर सन्धोपगश्चारि सत्त्रधो. हुवानको बद्धा जन्नाय बारमच ५६% রীমর্মানবর ক্রম্ম (৩ মাদ্যার ৬ क्रयांत-विधि पूर्वक ग्रुड अस में स्तान करके करा पटत

भगवान की कृष्या ने सम्प्रदोपासन

ह्दन तथा वर ६१ प्रजुप्टान दिवा। per की-उत्तम, सध्यम, कॉनस श्रिय पाठक बन्द ! इस ने इस —होती है। कि इसका **वर्गीकरवा** सेस में बढ़ भंकित किया है कि किस र्राप्ट से किया गया है: 🛭 बहर्षि इयासन्द के कार्य सेत हैं काला स्थाने का क्या प्रशासन है। श्वक्रीओं होते के समय देश हैं धीर 🗎 कच्या करने गते के सन्दर्भ बन्दन के सिये बाह्य त्वल

भास्त्रा वी. वो थी भी बढ़ झनिय-क्रित, **बरड-क्**रट और उत्त-त्रसस प्रदास्त्रीकीय समादता के करेकी मी। सहिषे ने वैदिक कालसम प्रमाश श्राह करके दर्शाया गया दा बासोहर करके इस एक है 🗎 प्रश्नीता एक्सोसम असवाग

सध बत्त्रश

क्यीत कोतो ससे से भी वं ही वक्त पंदास्त्रो. दम कावर को कर वहीं हो किस सर नहीं डिसाओ। 9a भी कार नहीं बनना है इस दीवन में तथ की. सथ दाओं को बोद खातकर कोरी गण सवाधी।

हमी किसी को कलप स्वर्थ रंच बात कर जानो, जीवनवात्र में कह बात्मा क्सरी है. पहचाने । इंडिंग्ट का मय कारामव करने सने काइमी किस दिन, क्यी रोज से अपन बाज का करके मन में बाती।

तके और पाटे की बार्ड सक में ही बार आक्रो. वो रंगी को झाम लग दो एक रंग हो आसी। सक्ताई तो सक्त: चिक्र है इसना सचना क्या है.

शक्तों की जिल्ला को होती हुछ को क्या क्याको ।

--- ਰਿਕਰ ਨਿਰਚਿ \*\*\*\*\*\*\*\*\*

राय का सीवन सन्दर्भ संद का: कि सर्मय, सीवा और राज्ञप्त भी

राज्या दिया दाते है । मी बद्धागका चौर बद्धामान्य

के प्रमानों के कारनोक्ता से शंगवाद की कृष्ण की की सन्दर्श मैं कार भवा शबर होती है: कि पास्डक हीर भी सम्बंधा में काशील रहते वे; कि युद्धस्थकी है भी पानदय सेवाएं समय पर अस्था किया काली भी और विभागत वस सम सम्बद्धा की तेका स्वतीत भौतिक इ.सो से सुटक्या ग्राप्त होने देना जीनत शही समझी है। (शेष क्या = वर)

> की बिसीपल भगवान दास जी एम॰ ए॰ का मार्च-

देशिक सभा के नाम पत्र पव्य सम्बं जी. साबेरेशिक कार्य शतिनिधि सका

रामकीला मैदान, वर्ड विक्ली सारा स्थले ! सेवा में भिवेदन है कि बार्क

समाज के सनयक कार्यकर्ण क्रीन यात्री सी हरिचस्ट जी बसात काले समाज भोरार तथा शास समाज है। नाननीय मेहा द्वा० शक्त की की बरकार ने एक बाझा अरा २३ नक्ष्यर से ६ दिसम्बर तक स्थापन बद कर दिया है। कारण कोई कि वह पोप के भारत आसे के सम्बन्ध में ही है। बड़ तो दो ही कार्यकर्ताकों के बारे में सचना मिसी है हो सचना है 🍱 बारे भी धार्यसमात्री नेताका तथा कार्य-क्योंकों पर पेसे प्रधार किये गये हों। भारत वर्ष है पासिक सामधार

एक विशेष भागरिक व्यक्तिकार रामान्त्रियों से पता चा रहा है। केवल एक इंसाई पीप के भारत में प्रसारते पर ब्रह्मयं समाज के प्रचार काचे पर इस बकार प्रशिवन्य समामा-कहां क्य स्थित हैं यह बात विश्लो-सकि समा को अवस्य सार्व जनता के प्रथमवर्शन के सिर्फ सोमानी चात्रिये स्था जो नित्त्रचय सभा करे उस क्रिक्क को बातता तथा सर-कर के सामने शीत चति शीव

> सेवध-सववास्त्रस प्रधान धार्वक्रमात्र, शोकस्प

वन्त्रवाव ह

रसना पाडिये ।

## त्र्यार्य जगत

वर्षे २४] रविवार २०२१, १३ दिसम्बर १९६४ विंक ४९

### देवता की याद

देववा उसे बढ़ा बाता है, जो व्यक्त बीवन लोड सेवा में मेंट **ब्हर हेशा है। त्याचे कारफ यह व्हीरो** को वमकाता है, त्वब उच्चे तार पर रह बर बिरन को इंचा से आग चाहना है। महापद्भ वश के देवता ही होते हैं । बार्वसमात की देव. बाजा के मनोरम सबकों में स्थापित श्वमंत्री पूज्य महात्या हस्तात्र श्री भी यह दिख्य सबके से । शह भी देवता ये । वनके अन्य को सी वर्ष बीचने भगे । शताब्दी होते सनी । सार्थे शरेशिक समा के संस्थापक वे। इयानन्द कालेज के श्वम दपस्की विभिन्न क्या कार में बमेटी के ध्यान हे । यनकी भी वर्षीय क्रमनी कासभाने किसँग का विशा कि प्रमधाम से मनावी है। वस दिनों कार्रेसकात क्रमारकती शैक्ति शेव नई देहती के महोत्सद पर साध--का वरिटम ता० मेहरफल की ब्रह्माजन से भी निवेदन किया कि इस देवता की जवन्ती भूमधान से -समार्थे। सारे क्लडनों के दर्शन go: चे तो चले श्रेम श्रदा से समे 🖁 । संग्रा प्रधान वर्णामृति जिसिक्स to श्राप्ताल जी समय दर **स्थ**ा कारत एक भी सारे करमें पर बास्स कारते भाषकों में इस बदन्ती को स्वकिय बनाने की सुन्दर धर्वा कारो रहते हैं । आर्थजनत के प्रसिद्ध कार सहारमा कानन्त स्वासी जी सञ्चाराज्ञ भी पूर्वे सङ्बोग पूर्वेड कारीशंद दे रहे हैं। सारी बनता -वैवार है। अभी पछ दिन राथ को साम्य ता० सम्तोपराज की पर्व -मान्त्री सन्तर के मर पर बैठे इस -सारी में बजड़े यत में बड़ी तरव

वेची। किस प्रकार से धनसंबद्ध क्ता वाये—बडी इसन कर्ते इस्ते रहे। सम देशना की जकती जी इसी चनुरूप मनानी पाहिए। स्व दा भारत इस क्रोर सता है। सभा के मान्य मध्यी विशिष्ण वालपन्द मी भारिया भी इस दिशा में प्रयत्नशोत हैं। सब वे बन में रत्साह बरा है । समारोह

में प्रजानी होगी। मामली जन्स नहीं होना । शहास्त्री को शहासी का कम देना चाडिशः देहती में मान्य साथ समाद वी सा**०** देवस्थात जी पर्वसन्त्री सभा शे वधनी स्व दरन देखने के दीशने क्षेत्र हैं : इसके जिए कार्य कारमा का देता पाडिए। उस मागलक क्रांत से हैं। अवस्थी समाने के शिए श्वयका

म्बद्रिकोश जेला है। एक सहारमा ब्रजन्स समझी की ताल १४ में १५ विकासर एकी को बार उन्हरोत जी पूर्व उपक्षान सभा के परिवार में स्वर्शीय प्रास्टर तथालामा की के जन्म दिवस पर यक्ष थ क्वा करने जासस्थर पंचार रहे हैं । जासम्बर के ज्ञान्य धाविकारी समझतों के बिय वह सम्बद्धार है कि वे सकारमा भी के पास चैत कर का से भी समारोह सम्पन्न कराने के सक्षाव व सहयोश जेवें। एक विशेष चैत्रह किसी सम्ब क्य काम के फिए जमानी कार्यक को हमारे सम्बद्ध कराय है, उनको भी बुता कर मिला कर चलन है। हमें सब का सहयोग जेगा है। ब्रह्मचा भी सब के है। पटकी बाद में भी सारे जिस आहें। बाक्यक है । .-विद्योदयन्त्र मानि का अनेश देशी है । यह

### ओश्म की पताका को सदा उच्च रखो क्या माज के मानने कभी भारी कर्म है

(बी० बाला संतोषराज जी किया समान प्रधात का प्रवचन) \*\*\*\*\*\*\*

की बाज सन्तोधराज जी कार्य पार्टेनिय सवा पंजाप शासन्धर के वर्षे महासन्त्री रहे है। अब जी सजा के सान्य कोचा ध्वक है मार्वसमात (विसा) विकासपुरा आलम्बर राष्ट्रर के प्रधान है। मीन होकर कार्य में सरो रहना स्वयान है । समाज के वार्विद्रोत्सव पर विशास अनसपु-दास के सामने कोश्म प्रशा को जहराते हए सामिक माध्य में स्था--वानी इंसराज महिला कांग्रेज

की खात्राकों ने अंडा-प्रंश रहे हमारा' का सरीमा गीठ गांवा है। बारत में हमते क्षणे जीवन में वन नाम की इस परव पराक। को उत-सन बन में चंदा रक्षण है । ब्यान संसार में धानेक प्रकार के भवमवान्तरों के अरदे हैं । किन्त हर्ने इतिहास के वीले कह विकित वर्ते भी जही हुई हैं । इत्सामी काहा कपने साथ ठाउँमा होका गया। जडो-जड़ां की गया वहां संबास का बाधार तमें दिया यया । इसी प्रकार देखांकर क सरहा भी धपने साथ युद्ध हो सार्थ क्रेक्ट प्रसा ! पतिश्रम में इस सरदे कालों ने बच्चे पर्यक्त संद्रात वारी रखा। इसे Holly war वा Crusade बहुदर पुढीश गया । इंसरका का पुराना इतिहास इस कत का ववाह है। ताना देशों से संमाम हर, रक्तवारारं वही । भिन्त इकारी प्रवद्या शान्ति, साव-कता. हो स वर्ग विकासकीय सन्देश वे कर वर्ष । बारत की संस्कृति बाज भी जाता, स्याचा, चीन, बायात, बोध्य के देशों में औरब

मल्दा पन नाम का है। इस से भारत असि: क्योज्यं वसिस्साः---विरक्षेत्र का सबेश सिकार है। हजारे महापुरुषों ने हसी प्रशास को किया में ब्रह्मका बाद कार्य में च्युरावा। इसे उंदा रखो ।

भयात्र के संस्थापक स्वामीर्थानन्त्र ने फिर से कोश्न के जीवन साकादा तीय प्राथक्षक बातें का शतक रखना है। पहलो यह कि हर द्यवस्था में भववात् का नाम जीवन में ऊषा रखना है। भोग वाद में पंसबर प्रमु को मूचना मब दूसरो बात यह है कि इस मतक्व का सारा विकास देखें कि क्या पाया धीर क्या नकावा । धार्य समात्र एक विशास मानसरोकर है। उसीको एक ब्राप्टा विका समात्र है। सारा वर्ष समात्र से संस्था, वज्र, श्रेग्यार तथा फल लोकोपदारक काम किया परशा भी साला रोडरवास भी बढ़ हो कर भी धनवक समाज के महान् कायकर्तको को इस से स्रो विका। कार्यसमात्र किता को प्रवाना द्वारण्य किया पर बोच में **मा**ते कर कर के यहें तर (सवान के किए उन का पत्ने जावा भारी पति है। : तीसरी बाद शह दे मार्थ समार ने काली कहा करण करना है बहुत कुछ सुधार का काम करवा होगाः मान सो वने २ तथान सामने हैं. काका शामना करना रे। चत्रः । चता लाकानाम लेका इस झाले काले बहान कार्य के जिल्ह संस्तृत कर्ते । समात्र सेवा कें तर सन बन का विशास क्ट सर्वे ।

मिसिएस देशराज की गुप्ता वय० ए० विश्वियस इवास्थ्य कालेख हिसार बायंधमात्र की प्रसिद्ध विज्ञ-रियों में से एक हैं। इस बोटी सी **धा**र् में मापने बड़ी प्रतिष्ठा पाई है बोलते हैं तो सत्त्रज्ञ सा कर बैते हैं अब मौर वाको का समन्वव क्षी जाता है। विकासमात के बरचे पर मधितभरा सभूर श्वचन देते हुए बहा-वेद में एक अन्त्र में मन्त्र के शारा सगवान से प्रार्थका की गर्ब है कि नेरे माकिक ! तेरा बीवन रथ कारों है वसो। यह बीको न रह काने । वेद में हो प्रकार | से उपदेश मिलवा है। एक वो श्रीमा परमास्था के द्वारा उपदेश है और नुसरा दंध वह है कि सन्त्य के द्वारा अगराज से प्रायना के का बें, ज्यदेश सिक्षता है इस युग्न में मानव प्रयोशका से प्रार्थना कर सहा है कि समन्दे विता भी ! मेरा वह भीवन का स्थ ससार वाता वे बीहो रह गया है। इसा इसके इसे आयो से पक्षों ताकि में विद्युत न बार्ड नेरी वंदिस कीन भी है, जै हिम्मत हारका का रहा है। से निरास होकर व्हता है कि प्रयो । बाप मीन क्यों हो है सेरी पुकार **⊞**तते क्यों नहीं। येकी प्रायंता **शरवेड** नरनारी कापने जीवन के विवा करती है। जिस का रक षीके रहण है। मैं बानता हु<sup>\*</sup> कि मैं कितने पानी में ह'। तुनिया में कोई बढ़ा नहीं। मैं अपनी वीसारी को भानवाह'। सुनेद बद्दवमी है; भौगें को सी। सक्त प्रविकाद व्यक्तिक जाने से वीसार होते हैं। बो सोग हिनेशा में काए वे भी

जैपोक्षियन ने सारे बोक्प में व्यक्तका सभावा वा एक ने वहा en- Europe is ringing your power, or fan à क्रमनी शक्ति का उपित स्वोध नहीं किया वह बहास होगा डी। कान्त की काशस्त्र में उस ने भी रहंग्या। यह बीवन का समझे

विशास को सार ।

### परमेश्वर ! मेरे जीवन रथ को आगे ही श्रामे ले चलें

संसार के किसी भी पदार्थ पर ऋडंकार भत करो विसिपक देवराज जी कृत एम**ः ए० दवा**नन्द कालेज

हिसार का प्रवचन कांस् बद्धाकर कहा वा 🖬 जेरे

क्छ में नहीं। में तो स्वय को भी भाषार नदी रस सका शांव वह मेरी हाएं , विश्व कहां है, जिस के बस पर में जीवता नहा। सारे देश मेरी नुद्दी में थे, सेरा प्रमाव मानते रहे, भवंभीत शोकर बेटे सामने सिर सुका देते वे। यह नेरा स्थ कुद समाम हो जुन्म है। व्यव को वैं भएना भी त्याभी नहीं हुं । मेरा साना पीना, च्छना सोना तक भी दूसनों के चारीन है। जुले मारी पराथव मिली है। हिटलर वापने द्वाप को Arram रहा का मान कर थला । इ।य में प्रार्थन बाने से बोस्प की श्रृष्टि को कुवस्ता गया । तुकान में सद को लपेट विया। वैस्थक्षेत्र वैद्या प्रकार**मध्यो भी संस्के परशों में इश्रदे महायुद्ध में शिरा | महारावा** र्सिय जाते हुद करते थे। क्सने वितना सरवाचार विना । पंरीकर्मा च करातार किसे सरका जी व्याना े शियों बच्चों को बान वे ब्रह्मवादिया। इस्था में इस्टा कि मेरा दिल घवरा रहा है र्थेने बरे-बरे होगी हा जीवन पढा है । टीक्ट बना, डोकैसर बना, द्याव जिलीयल भी बना हो। विस्तु में अपने जीवन में दवाबन पावा ? इसका किटने सेगों को विकार भावा है। शरीर पर पांच कोडिया है, कारें हैं, मूचि तका रेखनं भी है, परन्त भीवन का तेरा रथ किस स्थान पर सदा है । बीर पर पांच कोट खुने हुए हैं। माज रष्ट का स्व वीचे हो एका बाने वद रहा है या वीन्हें तो नही है। देश्वर्य वो झालबस से झाबेटा

बहा अस्त है। धापने से पूनों वि वेरा श्य पीने क्वो है ? महात्या क्वीरने कित्रा सुन्दर बहा है कि-मारी से स्था कहत 🗎 नाक्ष वेरे वस में नहीं। मन्ष्य इस वात का कहंकार करता है 🖮 मेरे पास इक्ता ठाट-बाट है । मेरे बपने **बा**भ्ये हैं, नेरा कट सुन्दर है । राराब पीचर वो सभी गरते हैं पर त तो विना शराब पिक सित ent ft i

साना-पीना की पाहिए। दाशा के जिए और भी **बाव्यक** वस्तु डोनी पर्वाहर । किन्तु वह सीमा बा क्षांतकस्य हो आए । सासय सीर महस्रार<sub>, सर</sub> सोल-कास्तर हो बार, उर कश्या क्या बनेवी । इस पर विचार (दरना झावडबड हो जाता है। क्यांक्ट होभ अथवा क्त्यमों का कईकार सहस्र के वीकन रव को ब्यागे बढ़ने से रोक देवा है। पीछे साम देवा है। के याने की सफावरें हैं जिसकी दर काना सकता करून है। इस क्षे परपर पता नहीं कितनी व्यक्षे दीतें इक्टरी दर देते हैं । यर स्थाप-पर बनाबर रक्ष देते है । मधा रे-श्रंब में तुसदा क्या देले'। यथ में तो प्रकात नहीं है

क्हरत से ब्वारा वेदा उर्वारत

पैदा करता है। बिंदी से क्या देश होता है. विश्व वे विश्वना है, कर स्ते सुर विशे में लेकने दी। राम बी को पनवास विसा प्रसम्ब हुए कि स्थितों के सामग्री की भूक माथे पर समाप्रता क्छीरी का जीवन विवादिया : कात के सारे राष्ट्र की रचा करने वामों की स्वयं की रक्षा की जाते सर्गा । हे शबो ! ऐसा वैमन हो जो हान देश करे। अहर्ति की नहीं वास्या की पूजा करी जो अपने हाय के कताय प्राथर के सारी सुक्ता है, यह कात्या का सुक्त क्या स्थानेगा। कात्या हो विश्वी मुस्ब धर भी नहीं वेचना चाडिए ह क्षे पन से नहीं श्रीते । क्वीर धन-वान के परिवार में पैदा नहीं हुए थे राष्ट्र निकास के सिए जीवन की बावदवस्ता है। जब वह ऐसी कीवनीयां नहीं बताई जाती, जो ऐश्यर्थ III प्रकोमन दुकरा **स**र बढ, बावड की दशावन्त्र के समान श्रीवन रखको कामे २ हे में सरीर की निश्ता नहीं वसें, हव हक राष्ट्र निर्माण नहीं हो परता। रारीर है को इसके जिल संदेशा । खरा देखते रहा कि जीवन

त्य कारो वा रहा है या पीके वाका है। मानिक से शायेगा करो कि मेरा रव द्यागे से वस्तो। श्रार्वसमाज पुलबंगश दिल्ली

का वाधिकोत्सव १३, १४, १४ नवस्वर को हुका ३ दिन झावाबे कृष्य जी को तथा आरंग्य स्टब्स-कोटि के विद्वानों के भाषत हुए। १४० रुक्यों की बेही ईसाई निरोध के किए दी गई।

धार्व कुमारों का मुन्दर परो-मास हुमा और सर की कुसार सभा ने भाषण श्रीत कोरिता पर बादी का सील्ड जीवा। प्रकार कार्य ए० गरीराइस सी भी वानपत्थी जो हे भागरेती होत पर भगूत्व सेवा की। वैदिक रीवि से संस्कार कराय १४/-

**अल्डारों से दान शाद** FLLS वार्य समाजों में उपदेश विष ३० यरों में दैनिक बक्क कराव फिर बीधन की सिद्धि हैसे मिसेयी मुक्त बोस्टर वक्ति 19200 कोट कोई क्रपनी समाज में साक्ष मेर दैनिक बज्र कौर वेद कथा की हरू

> पुष्य वानश्रवी की का आग स्था में पुष्प सामाओं से मन्द्रकातः क्षिमा गयाः।

> > -प्रदेश हमार कक

कार्वसमात के इसे मैला पूरव शा॰ देवीचन्द्र श्री एम० ६० शहान बबाबन्द् सारवेशन मिरान होस्थाद-अर बार्यक्रमाम के हुराते 🚃 के वसको प्रशासन्त है। सारा बीवन प्रार्थनमात्र की जेना है. शिका प्रसार क्या शक्ति के काम है सेंट कर विचा है। वज: व साम 🕅 का चंत्रदेशी में बाध्य वस्त्रे इस्स अपने के साध्य में सने हैं। प्रमुखरा स्थल रखे वाकि चारों

देशों का शामापारे का सकें। आह

समाग विस्ता गायत्वर के ईसाई

-स्थाप क्षेत्रक की कार्यन स्थापन

कता करते इष कापने भोजला

श्रापना देते हद बढा---

सावा इसन (बनामी ने सर्पनी वस्तिका 'डावते इस्ताम' में फिला बाद्ध सन्दु धम रश्तवकांना धन शहा है दसरे मत के लोगों क हिन्द पर्भ में जाने की बात हो स्वाधी दवातव्य से सिसाई है। उन से पहले कमी किसी इसने की विद सही बनाते वे । इस में तबलीर्य कात है सी वसी। साजा बत्तीय का ऐसा ६६मा और क्रिसना सबंदा समाव है। वेद का मर्स एक पूर्व क्या सार्वनीमित्र स**न्धी**की **वर्षे** शाप है। यजर्दर में भारत है-, अदेशां कार्थ कारकारीम य करवन्त्रो क्रियसार्थम—हे सेमो ! सारे sims में देव का प्रचार करने चन को वैदिश्व पर्वी बनाची। आर्थ बक्कारो । परमारवा बाजर देते हैं के केट भारतों को सापने मांड में भारत क्रमार्थे के समाज सबंग नेतोपरेश al वर्ण करते रही । सरपा सोहिय को से के का का नहीं। यह क्रोबो स्पर किन्द्रको को देवार बवाने के बिरे विदेशों से उनके सर्वेशा श्वरत मात्र लिसते व स्त्राते संदेश

अविश्व पराया में जिला है कि करव ग्रांच ने मिस देश ने इवारों बोर्सो को ग्रद्ध करके मार्थ का। **ब**× मारदीयों में मिसा दिया। राख हुन ब्यादि वार्श्वयां वाहर से बारत हिनोर्ट पढ़ देखों कि वे बैसे इक-

डेसाईयों के बढते हुए तुफान पर हट . कर सामना करो

गार्थममाज ही इस चैलेंज का उत्तर दे सकता है

महामता लाखा देवोशन्द वो एम० ए० प्रशास

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* में ही मिल नई । आपदीयों ने सम को करने पर्ज में वीकित कर जिया। शिका जी के काब में बाप-श्रम के अप्रीत शक्ति मधा बताई र्व्दंशी विस के ब्रारा करत से गैर-दिन्द्र विनद्र बन गए। शिवा जी

ने ऐसान किया कि वो दिन कैर-

विन्द से क्षिट वने नये तोगीं से

बंगा सलक करेता उसे केंद्र व दरह सन से रने हैं। इसको शहरोत व विया भावता । रक्ष समाज करत से मुक्तिमा हेरा टो क्षिपुरित्स स्त्रे विष्यानमें में का तमः अस्टित के धनकाराय ने बहुत से मुख्य-मानों को सामग्री सन्त्र से डिन्ड वताया । सिक्टर सोमी ते बहा कि तुम्बें फांसी बिसेगी। पर बह वर्ष काम है बाल एका । उसे वर्षनी पर सटका विका गया। शाहकश के राज्या जै स्वास्त्रकात के शक हिन्द ने मुस्समान ग्रुद्ध किए। उस पर बसे अधिकत अक्षा विका को पासीन रुपर शेवे हव सोटा । नवा : शकास चन सहयों ही, किन्होंने वर्श का वह कार दिया । भारत में अब प्रदेश ईसाई . पाररी श्रासा । उस में एक हजार क्रिक देखाई बताय । 22 त्रेक्षित ने ईसाई बनाद। योज संबा से वा पाइरी विकास दिए ग९, किन्तु भारत की सरकार ने लुखो हुद्धा दे रसी है।

जिस्को है। यहाँद्र प्रकार के को कार्यात तहीं, पर ने धन हा आरय देश्य हिट को ईशाई बनाने के हुछ भारी बरापति है । ब्राय निकोशी रियोर्ट क्या अस्टिस हो. ए. बी में बार्ड भीर सारत की दिन्दु-बालि क्यों ते तमें परिवर्तन करते हैं ।

होस्यारपुर का प्रवचन

शेद है कि इसारी सरकार से बार दा दोई action रही सिशा। दे स्रोध हिन्दुकों को हवाब और स्रोध रेक्ट ईसाई बनाते हैं। ये सारे भारत को ईसाई बनाना कारते है। सम्बद्धी दुधा सरोसन भी इसी की एक कही है । विन्ह्रकों को एकित करने में कबीने हरिकार म्बुल किर असे हैं। इनके हात

व्यक्तिवां रहाता है। यह धर्म ही क्वा है जो सम्बाई से व चेंग्रावा वाए । इनके स्कृत **कांग्रेश क**ष्ट विवारक के लिए नहीं सोले जाते ध्र तुमावती हैं। भन्दर इतका भाव ईवाई स्वाना होठा है । एक भीत ने पालीस स्पर ईसाई से जिए। सा कार्य यन गरा । उस ईसर्द ने उसे मारा । सैने भीव

पिलीन सेक्ट कराने से ईसाई क्लार काते हैं। किर्धनक स्रीत इक्सी जारताही से उसकी ईसाई यशने का बीका विक्रमा है । विन्द् वादि क्रोसें.स्य कर सोक्ष है । बार्वसमाम बारका है । ईमाईबों के हर श्वयंत्र की क्षत-पत बनाबर रस देश है।

सांव ह्यारी श्रद्धार सैक्यूकर हो बर भी वन भी दिशायत कर रही है। समय नहीं साता क्लो हो रहा है। अब कि योप काल के लयं बहा है कि में एक सुबद्धको रहत्त्वर बन वर मारत का रहा र्ड । ये ईकाई समत के फिर सकत वने इस हैं। केरल और नागलेंड में बना हो रहा है। विश्ले रेक्स

बढ़ में रकता देश को करता बरेगा यमें का प्रचार करने में इसे कोई चिन्ता नहीं, किन्तु समग्रे शाद है मध्योपका को सम्राध्य कारत। पाप्रते 🖹 । सार्वतमात इसी जिए पनव्य किनेय करता है। वेद में कई गई क्रिक्रो दुर्श: तीन ट्रेक्स्सी दुस्ता. सःस्वती सडी-मात्म्रीय, बाट् भाषा, भारतसंस्कृति क्षं पुत्रा कार्य समाज वस्ता पक्षा साथा है। गान्त्री जी शोक्षमेत कांग्रेस में बस सक्टन गए हो दोए से मिलने गए -पर पोप ने सिसने से इस्तार दर के शांधी भी का क्रवसाद क्या । जो इनका अपनान करता है. यह भारत व्य आन कैसे करेगा ईसाई शालार्थ के सत्मने नहीं कार्त क्योंक वे श्रवती क्यशेरी हो

में हिन्दुस्यों से कहना हूं कि मायससाम को धन से शकिताओ दमा हो । वहीं सारे समात्र स्व आहरेदार है। इसे मर्भ व देश की बंस्तुर्विको विका है। इसे शक्ति-शासी बना हो आहि इस तुकान धी बट सर मुशाबिका करें।

डाजो है।

महर्षि दयानन्द की जन्म समि टंकारा

के वाचियों के लिए वापसी टिकट की सुविधायें श्राप्त हों रेखवे क्रांपकारी ध्वात हैं।

बेर् प्रिक रं, प्रमेशीर जी चार्थ क्लापारी ने सबने बद्ध प वें रेखने मंत्री से बह मांग को है कि महर्षि द्यानन् की अन्त्रसृति ट बारामें जाने वाले समस्त शाविको की महा-शिवरात्रि के प्रक्रिक एवं या बावधी दिकट की सुविधान क्रमान बर मानि हसातन के प्रति बदने स्तम क्लेम्ब का पासन करें। इस संक्रम के रेक्ट्रे वंशी भारत सरकार से कार्य तेराजी है एक प्रतिविधि संस्ता के साथ व. भर्मेवीर जी ब्राफे अल्बाबाकी कीत

मिलॅंगे। मंत्री द बारा सहायक समित्र प्रार्वेसप्राप्त स्थोतवाग

अंग्रे किस्की

कारोसपात (फिसा) विकास-प्रता जासम्बद्ध के वार्षिक सहोत्सव के आयेजनत के प्रस्तित फिसारफर बाध्या यम्बसिटी के पूर्व उपकल-विविधिक्य सम्बद्ध दीवानचन्द aft par. ए. कानव्य ने व्यवने विकारकी से बरपूर गरमीर भाषन में इहा-वेद में एक मना साता डै-क्या हता सं बहेम...वैं शरीर से पसता हं कि कब प्रमु के चरवाँ कें माना भीगा ! क्या नेका आप्रोधा । यह कालो सब से पन के समीप बाइन्स । तीन प्रदन पुत्रे सव है। पंडका-कि मैं कराने शरीर से पत्र' कि कर असु के पास ब्राउदेश । दक्षरा यह कि क्या मेंट बेक्ट जाना होगा और जीतरा वह कि प्रवासी की कर वाईगा। <ई लोग हाम विश्वाते हैं परन्तु मदि मुक्ते रूपये भी स्थोतिकी दे तो भी नहीं दिसाक्ष्माः पहले इस वर विचार कों कि हैंने इब वक जीना है ? तकाम का ग्रेमा किरागरार फिल आहे जो स्वादा किरामा देवे हरेक वही स्रोधना है कि वांद मैं नहीं रहंगा थे। जासम्बर भी नहीं रहेमा। यह श्रम है। हमारे जसे जाने से क्यी चोचें नकी क्यार करी रहेंगी। किवना जीना चाहवा इं क्क शरीर से प्रवा का सकता है। जारोर वो पीग्रेट को बात बना सकता है। उनमें लाहीर कालेज में वा को सके बीयभी को एक दिन की बी शुरो को भी बावश्यवता नहीं पड़ी। शोचा कि देख कि वसार में क्वा डासत डोती है। बकार को मैंने निमन्त्रया शिका तो हिमा के लिया त्यार प्रश गया। मैं बढ़ हों से बढ़ा करवा था कि सीमध्य मध्य हो । यदि होना 🗗 ही है तो नमीं की व्यटिटवों में हो विवादरो। या उत्थर को हो

सावाक्तो । जिस शस्त्र

इमारा स्प्रीर चल रहा है, ज्लसे

क्लो कि यस सक बोबा है। जीने बि

### जीवनमें सदा उत्परकी श्रोर देखो नीचे नहीं वार कार्य की विकास की है। मानव जीवन केतम भोग भोगने को नहीं मिला

असिद्ध फिवास्फर बावटर वीबानधन्यजी हम.ए. कानपुर का प्रवचन 

कीत-मी मेंट असे सकत से बार-यान के समा हो बाड गा। वे करते, प्राप्त वा कि वस में शह . पुरवर्षे, दक्षे और सारा सामान नहीं पक्ष रह आएगा । बरलपर में व्यक्तिमानो एसा विक्रमापके बनाए सफान तो कहारों ने सम्बास शिए। सङ्क्रियां दामाद से यर । पुत्रों को बहुएं सम्भात बैठों । अन्य के पास क्या है। धारने लिए क्या बताबा। सद्धान धारि दो अनुदे विस्वनार भीर वेईशानो अपने लिए बनाई । क्या तमाशा है । बाज भ्रष्टाचार का बहा क्षेत्र क्री शोर है। मो बन्दा जी सारे देश की दात कहते **है** । यू० मी० में ११ जिले हैं। एक जिला ही ऐसा नहीं वे । वह जीवन का निसंसपना बनाकर दिला हो कि जियमें बाग-पार न हरे। कानपर में बैंने बोबी से पूछा कि दसरों के मैंसे करने प्रोते तन्हें २० वर्ष हो *स*न्द पर तम्हारे सपने सपने मेरे हैं। क्रपने भी घो तिया इसे वह बोला 🖩 ब्राप व्यादवान देते हो कि 💷 क्यो। पर माप वीकरते हो या है। बेटे रही भादि सब से नव-त्रΩं। वैंभी बोबी डंधीर खाप धी दोशी हैं। बाज लगे एक उसरें से बड़े वा रहे हैं। त्वबं

बाक्स्य करने साहे शोवे हैं।

को कि वेरी बास्त्री केंद्री करती जा रही है। यदने की बनामी ( प्रचमा बमरा साथ रकी : प्रक्रि क्षेड माई बहिन शक्ते को काव सार्व सम्पता को बह मेर कर हो सो सारा देश शर्द साध हो वायना । सम्बन्ध वह है कि हरेड दूधरे को वो योग प्रसुख फोपरफ विकारे थे। आ॰ मार्टरम है: साफ करने में और ओर ओ बी तीत अपितां में से वह थे। समा द्रमा है. पर धरपने चपडे मेंबे वनका सङ्ग्रक्त सुन्दरदास इस सर्हें-रसता है। भ्रापनी सफर्स की स्रोम रास स्टब शक्कार का पहला इसका स्टीक भी व्यान नहीं है। हैक्सभटर था। वह भवती आव वड़ी बारम है कि वेश बनवा नहीं। का दस विकात देते थे। १३० इस्ते बिच स्थार नहीं हो तहा। हर एक अपने साथ से एसा करे रुपनों में १३ रुपने वासिक समाज कि मैं अपने जीवन में तथ हो दिवा इस्ते । चीएडोटे में हास क्रमान्द्रा के पास क्या ले करते ये । बहीने के बाद वब देखर | बाइंगा । बीयन को बहस्य मिक्श वर पहले पर न प्राप्त बनाक्यो । देव में छपडेश विका नवा—बायर्वक्षेत्र चन्यकासः सीचे समाज काते भीर वह १६ बीवन वज्र के मर्पया का हो। ध्यवे देवर फिर पर जाते। वे इन यह जीन प्रधार के हैं । प्राप्तः तेरह रुपरों हो जपना समानें ही

का नाम बसुबक्क है। जो इपक्रर किया बार स्ट्रयज्ञ है तथा जो साय के समय होता है उसे भादित्व वक्क माना सद्य है । लेखें समय वो मन्त्र पढ़े जाते हैं एनकी वस्ताम रहसाम ववा मादिख-देवी है। इसी प्रधार वेईमानी और साम मोसा जाता है । वहां पर सब्द बाते हैं -सोददारम ...सोह के हार को लोख हो। इसके क्रिए जो नी कावसर मिल सकता है, उक्ते पूरा-पूरा साम उठावा बार। इन वीनों बारों के जास बे इनके कार्य काते हैं । शत: के वेईबाबि के यन से इस इन को यह की विशेषता क्स राज बी बेर्डवान बनाते या रहे हैं। में बार जाती है। दोपहर के या की बाद संद राज्य में विश्वीत है क्का साम यह की परिशास बाहित के सब्द से धनी वस्ता बिस जारी है। बझ के वे धीनों

हैं। केवल बोबीन बनो द्रापित समय और शब्द वहें ही सहस्य के हैं। वेदिक साहित्य में वही आरी विशेषता है कि एसके सकतें में बता रहस्य जरा पक्षा है । जनस्य बार २ नहीं कहता रहे कि मैं जीवन में वहा कर सहाई, बड़ाकर रक्षा है। प्रात: यस यह में करत ह'. दोपहर को स्ट बड़ से लगा है तथा साथ व्यादित्व यज्ञ मैं संस्थ्य ह' । दीनां बहार्ने करने कीवन में बर राहा ह' : ओयन ना इन पशा की करवे '

#### नि:मन्तान परिवार प्यान से पर्हे

या । सानगन में होटो सी महस्वी

s-दर पक्षी जाये तो वह व स्तर्थ

क्यां है और न साने को क्याने

विश्वत की कमाई भी सकती है-

न बच्छी क्यीर न दसरे धन को

क्यमे देलो है। निकास ही जाता

शिक्षी सम्बन्धी हैं। शिवत वा

वर्षि बार विवाह के बाद बाद राय राय निःशन्तान हैं वी इस रोग के सफल विकित्सक भी ४० श्वासमून्तर सी स्नावक (महोपदेशक पंजाब प्रदिनिधि समा) से मिलें या पश्च न्यवद्यार करें । भी भ्यातक जी भारत के बानेक परिवारों की सफाला पूर्वक विकिसा कर पुके हैं।

पूर्ण कोसं ३ मास व्यय २००/-

पता-स्थामसन्दर स्नातक महोपदेशक पंजान समा ३०३ रानीबाग सक्रवस्ती दे<del>ह</del>सी 

### आयों ! इस आक्रमण को रोकता है : प्रार्थेसमञ्ज घाज भी जागरूक शान्दोलन है

हिंसाई निरोध सम्मेशन का समारोह

\*\*\*\*\*\*\*\* भार्यसमात्र (चिता) किमन | सभी हंसले देशों में होता ही है।

बाक सारत में ३३०० हैसाई

निमानरी है क्या कि काले केवल

२००० ही ये। इस सम्बेशन

हे तिए शहर से बाने ताने जोते

की अपराजे के किए कार्क अपन-

राष्ट्र के तमाथ स्तुत का हेज बन्द

क्य दिने समे हैं। ब्रह्मात्मा यांची

वी के ये कशकारी क्स सम्बेशन

में शामित होने बाते रेसाई

मिशवरिकों के ज़िए विदेशी गराव

त्वा गोमांस का प्रथम स्ट रहे

है। इस ने इस तुस्त्रन वर दर

वर समय करता है। इसारे

पास देर जैसा इंडवरीय ज्ञात है।

मी राम, कृष्ण, व्यास दशकह

वैसे सहायत्व है। क्राउटियान

का हार शालार्थ के ज़िए उसके

क्षा है। सार्वकात के

परम स्थानी क्याची सर्वत्व गाँउ

करते काले सहस्रका ईसराज,

र्गसरमी शेर सामी बदायद हो.

समर शहीर ६० तेसराम जी

कार्य मुसाचित वरीले देवत

स्था ईसाई भीग कर सकते हैं।

मार्थसमात के सीतको है। कारका

शक्त से ही इस प्रकार के कड़े र

त्कानों का सामना किया है।

वय भी सकता कर रहा है।

बनवा की पादिर कि समाज के

श्राल इंडिया स्यानन्द सास्त्रे

मध्यमत हरे।

पुरा वाक्ल्पर शहर के वार्विकोत्सव ! क्रे श्रविकार बोकार क्ये ईशाई बिरोप सम्मेशन परित्र नेता ब्रह्ममता ला नेवीयना वी एत. थ. प्रधान इयानन्ह साल्वेशन-विकास होत्यास्त्रपर की अवस्था में बढ़े ही समझेह से सम्पन हुआ बक्कों कार्यवदात्र के प्राने पश-सभी प्राप्ती पिरक्षीटास भी कार्व-समाज खोडगद धमतस्य, भी ं. कोशमध्यास जी महोपदेशक समा भी कुद्वसाल थी चूर्ववां वाते, भी प्रवासदेय जी पूर्व बेह्रगास्टर. भी दवातन्त्र बार्व सास् मानन होशियारपुर ने ब्यपने-ब्रयमे विधार इस समय ईसायत के बढते हर क्रमात्र के स्थानमा में एक्ट किय मान्यवर हानी प्रश्रीकास भी ने इस बारे में एक काब्द्रयक अलाव क्रात्व किया जो बाद में सर्वसम्पर्दि क्षे जबमीय के साथ पार्वित हो दवा। सारे सब्बनों ने फोजबरी काश में होते वाते वैधोदिक पर्य है साथेसर हा जो प्रधान वारतीय aum पर पतिगा तथा भारत करकार सैनदशर होकर भी इस mescalas सम्मेलन को वे शर्वा है । अपनी क्रोप सारी जनता स्वात दिशाया । कार्य-समाज इसके लिए वो उस re रिक्षा में अचार कमा साहित्य बांट्रेस का कार्य कर रहा है। सारा Breaton stead (44) a

की ब्रानी भी वे प्रमान मरे बच्ची आपये में उस पर गोसते इप बहा 🖩 सैक्ट्सरिका हा हार्य Auti Hindwisen ? . Wester । वा ने न बाद के हैं। ये छैक्तुसर ber & fac auf fieber en

शन विशन होशियारपुर वी क्रोर से १२ इतिबन शार्थ को जो कि इर्द्रलम समय हाका सेचन्द्रशे न्ह्रज में शिवा पते हो शर्वक को ६/- साबिक झात्र वृद्धि देनी स्वोधार को है प्रार्थी है। विश्वन्दर तद झपने २ शर्यना एव ाते हैं। ईबाइबों की कांद्र व ग्राम विक को पर मेटें।

वेट प्रचार के महान लह्य की आर बदते चलो गापत्री जाप जीवन में गान्ति भर देता है

besi

पुरुष स्वामी विशासानस्य जी महाराज का प्रवसन **美美美美美美美美美美美美美美大大大大大大大大大** 

बाजे) मार्चसमाज की विश्वर्थ हैं। feminars à missione or am à son à strett or forra मान थे। ३२६४ के शास्त्र काठा-इस्या में यावडी को सेवर यन्त्रीत सहा में शक्यन देते हुए बहा-

शक्रिके सन्द्रकाशास है--चलारि शंक इस्ते कल पदा दे हीवें यस हलांची अन्य । किंग बड़ी बच्चो रोपर्वर्शन सहो वेवो सर्वा साविवेश । यस :--

केप में वर्त कार्ने प्रदेशी क्री प्रस्वोश्वर रूप में भी कारे हैं। इस मन्त्र में किसकृत्र वृष्य का वर्णन है। अपन सक को क्यों आवे बासे का नाम है पहिचय बाओं ने वेते १ मधी के रहत्व को सही स्थाना। सामी दशानद वे बॉव का शासा स्टोश दिया। यह सन्द यहरस्य भी है और साक्ष्मी परक मं है। बहा हो सुपर इस में उपदेश जिलता है। यह को पिता कीर यास्त्री को माता बहा सका है। रिवा से व्यक्तिकार व माधा से

प्यार मिकका है। गावती बारी क्यों के बिए हैं। सबको प्रविकार है। इसके पार मुंचों का क्रमें रह है कि बड़ मन्त्र पारों करों और मामयों के किए हैं। प्रश्वेत दर्श त्या व्याजन में रहते वाक्षा इस सम्बद्धासद इर सक्ता है। अस का संसार सब के जिए है। किसी के जिल्ह है। और विशो के तिय नही-ऐशी बात नहीं। चारों

के किए समान है। इयोज्य पादा :—इक वे रीज रेर है । इसका माथ यह है जात कार करान करीना ।

लामी विद्यानास्थ् मी महत्त्रम विद्यसके तीन माथ है। मु: भूषः (काचार्च सरदमुष्या श्री रोइक्ट स्टः। कोर्म् के भी तीन भाग हैं। च व स । कसे सः, पसे शकः स में स्व: । शः प्राया प्यारा, स्वय इ.स. नाशक तथा छ: संस स्वर्धन हैं। ब से स्टि. उसे निश्ति, म से प्रायं है। इस ब्रम्झ से वे तीन यामध्ये के पार है। हो शीरें--

हो सिर वासा है। इसका सम्बन्ध लोक व बरसोव से हैं । दोशों से किए अस देता है। यही इसके दो सिर हैं। गायत्री से लोक सी निटियो और **परशोक का सम** भी विश्वका है।

सम्बद्धसास:-इसके शाह हाम हैं। इसका बाये वह है कि गायकी बारा बादने पुष-प्रांत्रकों को सास प्रकार के प्रशासे देनी है। हरी देव-ह्याला और बहुत है इनका करता करता देश याता—इसमें सात पदार्थों की प्राप्ति का सलोग सिक्ता है। ब्रायु :-- मास-क्या कीकी, पहर, ट्रांचवा, सध्यवंत--वे साह---यावधी से फल बिसते हैं। बड़ी इसके मात हाथ हैं।

विधा वर :-- वह चपम खेल रथानी से कथा हुआ है । जान-कर्म-तपासमा---ये तीन येत की तुन्दर श्रीवदाएं हैं । विरुष का हान पाकर क्यें करते हर प्रश्न की प्रशा-सका करवा चीत वार्ते हैं। श्रीवय इन क्षेत्र वाशों के सिए इ । यह वज्र भी और गावले भी भरावों में रक्षते हैं। इसे सप्तर बद्धा गया है। क्वॉकि मुख को वर्ष करवा है। जार इसने बालों पर सुख की कर्ध करता रहता है । इस शकार इस सन्त्र में क्लिना सुन्तर कादेश क्रियात है। हुएँ तहवड़ी का सार्थक



#### -KANDRINGRONGROMENE SKONENCHEN KANDRINGROMEN AV पुज्य महातमा त्रानन्द स्वामी जी जालन्बर शहर में

यदे भौगान्य का समाशार है कि ब्रक्षणे बगात् के शक्ति १५१वी सन्त पूर्ण महात्मा कानन्त् स्वामी वो महातान ता० १३ दिसम्बर संगत्नकार से १० दिसम्बर कोरकार तक आसम्बर के प्यार रहे हैं। भी सा॰ धर्मपास जी, औ सा॰ इन्यूसेन की पूर्व कार्वकर्ता प्रयास समा ऋपने स्वर्गीय कृत्व विद्या मास्टर नन्द्रसस्य जी के जन्म दिवस पर अपने मरिवार में वेद का वज्र करा बहुत्सा त्री भी महुर क्या करा रहे हैं। महुत्त्वा त्री इस वह के कारवा होंगे तथा मधुर प्रवासनों का काबून विकासनी। जाल-न्थर की अनवा के सीमान्य है। समारोह में पथार कर कन्द

8=8/-

152/-

19/-

20/-

22/-

ko.L

भी कितना थन सिजकाते हैं। इस

वार्त का पता समामन्त्री विसिद्ध

ज्ञान रन्द वी माटिश के **कार्य** 

जनत के गर्ताक में विकरण से परा

इक्त है। महास्वाबी ने खबा को

भवनी उदारता से १८००० हजार

इपने नेरमान्य व नेर् प्रकार निश्व

में विवरायं है। महास्या जी के

मना में बाम बाने क्षते प्रशासी

का फिल्मा म्यान साथा है । उनको

र्यार्यसमाज साम्ब

शमात्र को उपश्चात का से सारज

क्या बाता है क्यों कि समाज के

समात्र के बराज अरी बने चौर न

ही सरसंगों में भाते हैं। दूबरा-

वी क्रोमधकारा जी सरस्य समाज

को उप-सन्ती करावा गया वा ।

नह यह यह स्वीकार नहीं करते,

इसक्षिर दनकी बच्चा ठाकुर

सरकार्थिक भी को १९८-४० जो

बी दुर्गोत्तम गुध्वा क्य-प्रचान

क्या की है।

#### Presentation excessions executed and a property of the present of व्यार्वश्रदेशिक सभा को वेद प्रचारार्थ घन श्रायसमात्र सीथ एकसर्टेशन विकास

पान करेगी।

.. का. वि. गरवासपर .. पीसी (सगहर) ्र हिसार , शुगकान (दिशार) ... समाना (रोहक्क)

₹0/-्र मन्दगढ (चढासी) स्त्री का .स. नेवाजी नमत वेजकी १०/-🚾 बेसुमात्र वकोदर 800/-्रमहात्मा जी का समाप्रेम

पत्र महारमा कानम्बलामी की महाराज के जब में सवा से क्यान से डेक्ट काद वह वह विश्वना में स है। अर्थ में पन्याव में समाओं के उत्स्वों, क्याओं के क्षिप अवना क्रमूनन समय देते हैं, कहां काप समा की कायरवा को देख कर इस के देद प्रचार के सिए

माहित्व श्रचारक मासि

चार्व समात्र, पुस्तदा-तवा ध्यावानशासामी की सांग काते पर सफ्त १ वर्षे **उक्त दिया जापमा शिलें।** जबदेव बादर्स पी. बा. ४६

बडोदा-१

पनाया जाता है। —वेदपदास वर्गा सन्त्री

#### शार्यसमञ्जू बंदी सिमाचल का प्रस्ताव

भारत में ईसाइयों की बराप्टिय तथा धार्याचयनक सर्विविधियों वर ब्रावंदवात संदी हियाचन प्रदेश का वस विशेष अधिवेशन विनोध २९, ११: ६४. थी क्रेटन इन्द्रमेन बी की बचानता में हुआ। विसमें

विम्बलिकित इस्तान सर्व सम्मर्ति से शह दिना गया। भारते व्यवस्त्र प्रोती विकासन

बदेश का यह विशेष अधिवेशन वर्स के बाम पर इबाइयों की करा-क्षेत्र कार्याचनन्छ गर्दायश्रियों पर विन्ता शब्द बरता है। और कार्ये बी शारोमकी सभा 'सापंदेशित कालो अभिनिधि सभा से शर्यना करता है कि पन्पर्ध में हो रहे विद्रव ईसाई सम्मेशन के फावकर पर ईमाइवों को शास्त्राय के सिए बाद्धान किया जार कीर इसके प्रकार की सम्बद्धां की जस्य ।

२. बार्यसभाव संद्रो हिदा-चल बटेश का यह क्राधिवेशन सार्व-कार समार्थ । देशिक सभा से यह भी शर्यना ब्दल है कि फिल ईसाई सम्बोधन के परपात सीमाविसीम गम्बाँ में मा चन्य दरपुरूत स्वान पर ऐंड

प्रतिष्ठ यास्त्रीत क्ष्मेश्वन का व्यायोजन करे किस से **शिक्षकों** की कराबीय गर्लिसियों से सार-रीय जनसामस्था को सनेच दिया बार और बन्ध्रों में शि रहे ईसारी सम्मेसन के क्रमभाव को हर किया

वासके। बन्त्री कार्वसमाश्च मश्की (हिमायस परेश)

#### नद्य यह वस्तारक.

(१९८ २ वा शेष) क्षीर पत्र पर चोर संस्टारमा स्थितिका अने पर भी सन्ध्या

सम्बन्धी बाप्ने जिल्ला परवार है शिविसता नदी दिलाते थे । बातः हर्दे भी चर्चित्र है कि साध्य प्रमाओं क्यौर पूर्व पुरुषा के बादार से रिका बहुव करते हुए, दन-मन से करवोपासन में सरका रहें बडीर देव दयानन्द्र का, स्वन्होंने सन्धा सम्बन्धो चिरविरमुत स्टब की पनः इसारे सामने वस पर्व निषठा पूर्वक व्यक्तिकत किया, शार्विक मञ्चलाय देते mi अनुसी जय-वय-

#### \*\*\*\*\*\*\*\*\*\* शुभ सचना

बीमान् वी साद्र नमसे !

जापको विदित हो कि पूर्व फिला स्वर्शीय **वी सा**स्टर क्यकास की की पुरुषस्पृधि के पासन में तीन दिन १४ से १५ विसम्बद्ध वह सामनेद् परादम् यह बदा रहे हैं। वह अविदिन त्राचः द वने से १० वने तब हुमा करेगा । यह के सहा पृथ्यपार मद्रात्मा ब्रान्त्य स्वामी की घरस्की होंगे । इसकिय ब्राए से स्वित्तव प्रार्थता है कि वज्र में परिवार सहित प्रकार कर अपन व्हाने बीर हमें बजुविहीत करें । परिदित वह के वार- १०१५१११-त्वां वी का प्रवचनायत का प्रशाह भी क्रोसा । पर्मपात. रणातेन, सरवपात, वे मधात, राज क्रवार, यहनसाव

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*



रवीकोन २० २०२७ (क्रार्यप्रदिशिक प्रतिनिधिसम् पंजाव जालन्धरं का सप्ताहिक मुखपत्रे) Bagd. No. P. 121 एक र्यक का सक्त ११ तमें रेसे

वर्ष २४ बंद ४०) ६ पीण २०२१ रिकार इयानन्दास्य १४० - २० दिसन्बर १९६४ (बार 'प्रादेशिक' जासन्धर

### वेद सूक्तयः

सदा हवनने विश्वपं नम् जो लोग झाले हैं, तमु के व्यादे क्वत हैं। के सक्ष तस विश्वपत्रिय सारे संस्कर ने क्वां तमा विश्व के श्वा काले वाले दरमारमा को ही क्वले-पुकाले हैं। उसी का सत्तम करते हैं। उसी के स्वासक होते हैं।

### श्रसि होता न ईंड्यः

श्यो ! काय होता हैं। इस सारे-संसार में सापका हा यहान नक्ष हो रहा है। काय इस सारे व्या के होता हो और नट-हवाने जिस हैंएय-मूर्ति के योग्य हो । सापकी स्तुति हम सोग्य किया

#### मित्रं वयं हवामहे

हम वस थरनान को नुवाते हैं, जो हमारा मित्र हैं। हस संक्षर के मित्र, साओं तो कह का पहने पर साथ होड़ कार्त हैं। पर स्त्रु देश परम मित्र है जो सहा हमारे क्या संग रह कर समी करवा है।

. . . . . . . . .

### वेदामृत

षोदेव् स त्वं नो कम्नेद्वमा भवोती ने दिण्डो प्रस्या उर्षेतो खुष्टो। ष्रव यक्त्व नो दक्ष्ण रहाको विदि मृश्वीकं प्रदेशो न र्षांचे स्वाहा ॥ इदमस्नि वरुयाग्यां इदम्ब सम् ॥

ऋक् मंडल ४ सूनत १ में, १

क्षत्रे—विकास सम्मान्त्र (ता श) व्याव का (त) इतारे (क्षण्ड) क्षाप्त (त) इतारे (क्षण्ड) क्षण्ड के ही। तथा पात (निर्माण) क्षण्ड के व्यवेद ही (क्षण्ड) क्षण्ड के हा व्यवेद के (क्षण्ड) क्षण्ड के व्यवेद ही (क्षण्ड) क्षण्ड के हा (क्षण्ड) क्षण्ड के हा (क्षण्ड) ही काण्य के व्यवेद का क्षण्ड के व्यवेद का व्यवेद के व्यवेद का क्षण्ड के व्यवेद का व्यवेद के व्यवेद का विकास के व्यवेद काण्य काण्य काण्य काण्य के व्यवेद काण्य काण्य के व्यवेद काण्य के व्यवेद काण्य के व्

#### ऋषि दर्शन जनम्य धर्मस्य सहस्यक

राज्य में शारी धारताती 
को कहा रस्त हैना श्रृतिक का
जब शासन को चलाने बाले का
ध्रमें का लक्ष्य हैं। इस्त हैना
वसके मर्स और कर्मक्य में
शामिता हैं।

#### उत्तमक में द्रास्थिय

श्रानंदकर: राध्य के नायक का श्राह धन है कि जो तथन काम करने वाले हैं, कर के लिए कानन्द-कारी का अपने (निवासों का

#### पासन करने बाजों को तो सुक्षी बनाया रहे क्या— हुन्देश्यो दुख:पद:

वो निष्य विश्वान व बानून को तोड़ कर राज्य में शहबह मयाते हैं, 1 वनको हु:स देवे बहुर दरद वेदे 1 नर्मा कर से कारी न वर्षे 1 कारा कों।

माध्य भू विका से

श्चार्वसमात्र की माज्य वियुक्ति प्रतिव विकास्त्र ४१० दीवानवय की रमः एः समयुर जार्वजन की विशिष्ट विभूवियों में से हैं। कापने मार्वेदयात्र विसा विकास कर आसम्बर के वार्षिकोत्सक वर को राज्यीर प्रथमन दिया था। इसका कुछ भान दी बादेजगर के करते के माध्यों में प्रवर्शन किया गमा है। शेष का विस्ता तसाद इस क्रांक में दिया सर रहा है। पाठक

धीवन को शालों में बहानंप

बाब न्हार्य--बं०

eur 3 .

श्रहा एवा है। इस निरम्धर वह बारी बारते हैं। यह के क्वेप सीत भाग है। यहका बस्त्यक्ष १. इद शा तथा बीधरा भादित्व चल का है। बसब्ध-बह दे वो बीवन की कारम्य की स्वयस्या में बीला है। पूर्व की कालु के ११ वर्ष हुद्ध किया आसा है। ३१ वर वर्ष बकाने कासा है। इस ब्या के द्वारा क्षापुरव क्रवजे वस्त निवास का Settel होने का प्रदश्य करता है। हों हे समान की फिल्म में गृहस्ती इसते को नृह्द बनावा है, जिल्ल समा शहता है। यह यह की प के स्थान या द्रावस्था पर वसने पहुं-समय में होता है। जो गृहश्वी हो श्साहै, ओ भी ऑपन का दसले हर धर के कार्यों में एका बाते शक्ते अपनाना है : बह इसी कवस्या है। विश्वविद्यों का शामना करने है मनुष्य क्षश्र है। यह बाबु ज्य **बी तिशिषय होता या निर्शेष अपने** में दिल लोक देते हैं। वे सह सह बाली होती है। इस्तेष्ट वदश इस को बाने साने नहीं होते । इस भाव में कांत्र परिश्र**म कर**ना क्रमध्य में रहते का स्थान बनाता है। उस ने किस क्षम को सक्ने बास्त्यक है । इस यह वे श्रीवत का तस्य बनाना है। किया पर का बाग वर्धी साम् के सबाव को किस अकल से नत ही जी बचता समुख्य की क्रमरात वर्षक विद्यावन है, तसक श्राणि स्वयक्ताभी स्वेत्य है। विश्रासिया हुनी ब्याय में बरना होता श्रीसरा १च क्रारित्य चक्र श्रामाण है । इसीरिक्ट इस यहका नाम भी है। वह इसल बोत्से की बन इस्त्यम है। मैंचे क्रवने शोवक **ला** त्या है। यह यह जुतारे की साय बद्ध समय पक्ष्में ज़िलाने में में दिना कक्षा है। आदमी समावा । संस्थवन को वैने समया जिल्लान हो जाता है । यह का प्रदेशन निविधन विश्वा । इस निह-बारा समा अपने पुत्रों पर बक्ष में हरेड क्या बरना सीलना शक्ष ६८ लवं यस हो जाग है। शक्ति, भशस्त्र, विता, अन्यार है। बाद करे विशी प्रकार वया कीर भी क्षानेक शक्योधी की किया नहीं होते कारिय करों को बना परश्च बाधा है । का कर होना मी है । इस बार | ही शाना है । वें आक्रफर खुना

### मानव जीवन बस स्द्र ग्राह्स्य तीन यहाँ के खिए है

## असवान के पास प्रसन्त मन होटे जाना है

(प्रसिद्ध फिलास्कर हा० दीवावकाल थी एस० ए० कानपुर) ( श्रवनंत्र का दूसरा माप) 

वह बचाने काला क्षा काला में कीय देश है। वालाव तव सनाम का ब्राध्य होन्न है रहे कोई भी हे क्लिश वही क्लावे त्वरास्त्रवाहै। श्रीका के इसरे बाग में बत्तरा है। यह देशक मब शाना 🖟 जाता है। परिचय बरते की कानत्या है । यह कार्न दुवरों के बिक्र देश है। महाश्व का यह माला गर्थ है। दाव में तो इन्ह कविकार ही या के दानों के जिल किलाबी दीव-बला है फिल्क्स में बहु वर्ग भी बाश रहवा है । सस्या बिल्प्ट बन क्ष करती होती है । साथ समय परिश्रक्ष के मार्ग पर चक्को हैं। का वरोक्सरी बचना होण है। प्राथम्य प्रमाद से गुरुवी का बास स्वाबी दवास्य संबुध में सुब अभी पश्चरा। पिरंभी एक राष्ट कितातम्य से पहले बाद तुर बोते रोजा है। इसके क्रिय शारा प्रमान ंट चारवे रहते व साने का प्रवन्त करना होता है। स्त्यन का था इर हो। स्व स्त्रंतस्य के दक बटोर परिश्व का दवा स्वाने व्यक्ति ने सामी दक्तरण को मुने बाला श्रह हुआ अरा है । यर्ज वने हेने हुह बर दिए। एक वे वस ब्रहान हा, हत्यान हा वर्ष सारे-पान हवा का प्रमत्य कर दिशा।

क्षमरे ने चार काले तेल के जिए किरत का दिये। क्या के आहरी बारते के कि किस कार्य को हम वे बोडी की कहाबना देते हैं, यह इतना सहान बार कर देश व बिहर का इक्स मारी कावें करेगा । वन का भी वह दक्ष ही चा। लागी हवातन्द को बराने में वस का भी स्वारोग शांख है-देश मातना ही पार्विद। परीज्यार का बद पर कर रहे हो, बाँद बीकारी भारते का नीत भी झा सभी हो- के उसे कही \_के वें ते यह कर शह ईं। **ब**बी पत्नी था। तुके राजकादश हका मैंने उसे सहा कि मैं से कामी बह कर रहा हूं। हे चल कर स्थ करेगी: -बजी शवद वसी वा ( क्षेत्ररा प्रश्न वह है कि प्रधानान्

देवास किस इसा में बाहरेगा। स्था रोते-रोते । स्थी--वेर बहर है कि सुपना :--(को प्रश्न होका

से कर पह यह विपार करके कि कहि-विभाग अपने न निकास कार का में आपने न निकास बार्क । क्षत्र अधिक का कार के इंक्ले इंक्ल क्षेत्र हो। रोने क स्या काम ? स्वासी की के पाय जब चीत चार्ड वो अक्तों ने वहा वि बात बना हास है ! बोबे-बीब तित के कार कार प्रतरास का हिन सिमा है। मैं देशक इच्छा वें हूं। यही फाहित्व यह है। धोई ऋसांक त होते। एक नुबन की समार्थ हो गर्द हो, सहका शह मोशा-क्रम इस से तर । राजी होते पर बहा-बन तुन अपने भा<del>श-रिवा हे गये। य</del>ण्या है। होते सर बड़ा कि बाव तक सकते क्राय से भी गए। सब तत सन्धन के लिए होवा है। सारी मान इन मनेशों में सभा रहता है । व्यक्ति या करते हो नहीं। इस संसम से रोडे स बाह्यो, इंक्ट्रे २ कस्मी ।

वह आवग दसका राजा ইকর'নামাল সামা।

हो बुधे सब बेरे काशा वैसी स्थित श्रीदन की बनार्ची वर्त्रहर । यह शब कर अगवान क है, उसी का दिया हुआ है। इस से पा २ काम बढाते रहो । परना ध्यासक्त सत् हो वाक्रो । तेन त्यक्षेत्र सम्बीमा—खागभाग छे मोगो : रीमो बझ वर्ते । प्रश्त में श्रोबसन ईयते २ इन् के पाश बाजा कादिय । बीवन था नहीं क्षण है ।

#### मल सुधार

बार्य जनम् के १३-१२-६४ के बंद में उहस्मत समाम की सूचना हें संस्थारे ही संस्था रेज के लाम पर केवल १० इच गाँ है तमा दाम की कंपना इंटर के स्थाप पर इध्यह सम वर्ष है पाठक लोड वह में ।

# श्चार्य जगत्

वर्ष २४] रविदार २०२१, २० दिसम्बर १९६४ विक ६०

### बलिदान के पथ पर

प्रति वर्ग दिसम्बर का मास | औरत के राष्ट्रिय क्षेत्र में सी सारे समाव को महान वांत्रतान निहरवा का बढ़ा प्रमाम प्रशा का पुनीत पाठ पहाला है। इस दस समय बद बहु इंजेस से बद्दीने भी २१ ताः क्टे शार्यसमाज काम (वस्ते में तब इन दी के वस महान देवता नेता में जननी शक्पीत, सेको तवा मापको बयन के हाओं फिलीज की बीन में इस निश्लेषपः का वरिश्ल सोबियों को शक्ते सीने पर लाहर सारी जलका को देश, वर्ष वर्ष समाजसेवा के पथ पर पराने वालों को बक्रिशम का मार्ग दिखाया था। इस दिन से हेकर झाल कह सामा समाज वस असर विकासी बार का अधर दिवस समारोह पूर्वक बना कर उस प्रकाश स्टब्स से बीवन में नामावित संदेश ही किरमें नेवा चला ब्या रहा है। बद् दिवस बहुत इस सीकरे. विवारनं क्या उसकी का दाका लेने का विषय है। यह विक्रिशन यज है। जिस देवता ने धापने रसत की सन्तिम जिन्दु भी धर्म तथा समाज के लिए क्रांपत कर ही, दस का यह अबर दिश्स प्रत्येक समाज को वदे समस्रोह से कपना जीवन वर्षेन्य मानकर मनाना चाहिए। वित्रम दुवारमा भद्वानत्त् का

भीवन एक चमकरा तबकरा जीवन है। उन में क्षतेक शकार की विशे-क्वाएं यी। सब स प्रक्रा का निश्रंयता थी। स्वामी भी का सारा बीवन निर्मेवता का प्रतीक पना ह्रणा याः) सङ्घि त्यासन्द् औ के र्रानों के वार जब उनके ओवत ने स्थरी पश्चा सावा तथा समाज के कार्थ में सारः समय है दिया। इस बयम हे जेकर सन्तिम सन्त्या /का वनके अवेक काम में निमंद्रता वी कूट २ वट वटी हो की। तनके

सिक्षया है। सक्ष तो उनको सक्त नहीं तका था । इस्लासर कवितां-बाबा बाग के निर्देशपूर्ण गोली-कांत्र के बाद अवसीय सार्वाओं कर नेतृत्व करने के ब्रिट क्रमृतसर व्यधिवेशन में उनकी निर्मव गांबने वाली तलकार कांत्र मी सब हो टीयन चेठना का पाट पहाशी है। सार्वसमात्र के कार्यों से एव**की** निर्भवता सर्वे प्रसिद्ध 🚻 है। स्वामी जी परमनिश्रवान से । गुरुक्त कांगदी की विशास सर्वतो-मर्सक्रिक्षा दनकी विद्या हा पारंचन देती है। एस सन में सन बीरास्मा ने बार्यसमात्र का तेतल जिस शान से मिटर होबर दिया। बड धीरहास के प्रश्नों में एक बामर क्षभ्याय दव लुदा है। रक्ष समय नहीं, देवश उसको सोचना है। समाज की जायाब कारे देश हैं गुंबती भी । इस का बारी अमाद इन भी कार्य समात्र की काकाक व दवदवा या निभेयता इसके अध्यन में कास करती भी । दूसरा महास्युष्ट लामी भी के बीवन का वक्षिशान या। क्रमता सर्व हुस समाज के करोग कर दिया। वनकी क्रीतकाल गाया क्रायर वन **पुषी है**। सराज के निमित्त हरीर भी है दिया। इस २३ वा॰ दिसम्बर को शतका वर्रक्षत्रत दिक्स मनावे हैं। इस दिन वे दोनों क्रियेक गयः इकारे वीका में काले कार्या र

### श्रानन्द पाने का मार्ग

(पूज्य महात्या अभिन्द स्वामी जो महाराज) 

बार्ववगत के शिक्ष करा वपत्वी सन्त परव सहात्मा झानस्थ-स्वाभी भी महाराज मधु के मध्दार है। दनका सब इस सक्यात है। शरीर क्ष्म्यम्, बासी के प्रक्रमा बबुसय, दर्शन नवुनय स्था सार्वत वी मधुषय है। इनके श्रथ भी यम की र्माधवाँ हैं। सारा औदन मञ्जूमव है । समय-समय पर क्रमत के पाठकों को उनके समूर तथा जनसमय बचन श्रवचनों का प्रसाद ध्यसंपान बरावा आहा है—हं,

बातरिक बातन्य को पारे का बार्गक्या है। इस रहस्य को समसार सानान के स्रोत के पान वह'बो । एकाव होस्ट ध्यान समा-का श्सको देखो; जिसकी स्रविध र्शावत सू, मुच:, ख: के इस पश को पत्ना रही है जो सब भी भा लः, सर्वित् व्यानन्द है परस्त इसे देखने के जिए पहली आवड्य-ब्धा है कि अपने चित्त की कृतियों को रोक्टे। वित्त को कही कि कब भौर किसी क्रोर जाना नहीं। श्रम सांच्यदासन्द की क्रोर जाना है । मीर बस देखना नहीं केवन प्रसकी देखना है। कीर इन्ह सोचना

को, वेद्यबार के काम को विर्मय a) वर काने ही काने से साने का संस्कर करें देवा धर्म सार्थी के प्रयमे औरन में से तर, सन, सन का बॉल्डान बरने में सदा अध्य रहें। इब देखें 🌃 इज समाज के हिस् क्या देते हैं ? अपनी झासकती का वित्तता भाग वर्ग प्रचार के लिए देते हैं। क्या यह बच्चे की वर्त के काम में जाना है—सोचें।

—विकोयकत

क्यीर दुख पाना नहीं देशस वसकी याना है। पित्त की बृत्ति को रोष-सर किसी एक स्थान पर कोई सहारा बनाओ ।

हमारे भीतर स्थान हैं, कहां ावान नवाता ना स**कता है** । एक हरूम कहां सीने की हाँहमाँ ब्राक्ट ब्रानी में (मसरी हैं. व्हां सबसे निवती परक्तियाँ के विश्वने के स्थात पर । इसर 'काताचक' होतें भाषों के मध्य, नाक के उत्तर माये में को स्थान है यहां। शीसरे कहा-रम्भ में शक्ष के अपर क्रिस को हड़ी के बीचे, मस्तिक भी कोवडी के कहा वह रिक्त स्थान है बड़ां---दन तीन में किसी भी स्थान वर भ्यास समाद्रो । परन्तु एक बात स्वर्ण स्त्रो । ध्वास के स्थान की बार २ वटलो छन्। एक स्थान धन कर पित उसे जोही सव । और वहां सपने किए कोई सहारा बनाको । व्यान का सहारा बनायो । ऐसी क्त का निर्श्व बरो जिसका तम म्यान कर सकी । करबे सहारे वो है--एक प्रकाश इसरा चोम--यह धनर जो रंडका ा निजनाम है । सहाथ प्रत्यक्रि ने कोशी के लिए सब कहा कि यह भ्याच धरे झीर शक यह भी सक्षा कि उस परम अब का ध्यास करे वब साथ ही बहा-

तस्य बाचकः प्रणवः

क्रोम् ही उसका शाम है। दूधरे शास्त्रों ने भी बढ़ा—

श्रोमित्येवं ष्यायत श्रात्मानस काला को, इस इंडबर का

ब्बान करना हो वो कोम् का ज्यान **बरे और सामबेद ने वृक्ष्मी दा**ल **फ** री--(तेष प्रथ्य ६ पर)

२४ तसम्बर की राजि को सहाराष्ट्र के प्रशासना विभाग के कोबदिव समाध सेवी उरुप उपानी श्वरिष्यग्ट जो ने बस्यना विशेष स्वक्ति क्षेत्र कर सके सुपना की कि ननके बारत सरका दिवस के **बा**नुसार ६ वि**सम्बर** कर स्वान थभ्य धर विका सका है । सरकारी कावेश में स्थानवडता का वोर्त कारण नहीं दिवा गया परना स्पष्ट प्रतीत होता है कि वह सब करा योग महोरक के भारत कामसन के स्थलक किया गया है । भी शत्य इरिज्यन्त जी ने मन्ते काणा वो 🗎 नाम्य काचार्व सनवान दास बी से पराक्षणे कर के सचित करे कि मैं यह आखा संगडकं या न । व्यक्तिस्य हैं साचार्य जो के दिशस स्थान पर पहुँचा खौर इ.ड चिवब कें पर का बारेश मोना । बाजावे की ने बाजा दी कि वह मारव

क कार्यकर्त मारत सरचा निवम का ध्यवस्य शिकार बने होंगे । व्याव १६-११-६५ को सुवसा विसी है कि सातर के सर्पत्य कार्य समाधी नेवा बान्टर ही० सार० कास की भी स्थानवट कर दिये सबे हैं।

स्थाचा नियम न वोर्डे । इस पत्र को

पास्त हमें बालोश हुई कि महाराष्ट्र

के बढ़ और भी भाग समाजी नेता

इन दोनां सहानुशानी के श्रीवन से पाठकों को परिचित कराने के तहें इस से यह संबंध तिकारहा है। श्री इश्टिबन्द्र जी क्यार्यसमात्र के एक समझ तस्त्री 🚼 । ३४-३६ वर्ष के लगभग छात्र भी काय है। काप निजाम स्टेट के देश हुए । **बालका**ल से डी चासिक वृत्ति के हैं। सिक्क्स तक कायते शिक्षा पार्ट । भी सहात्मा है र्याची हुवारमा अद्यानन्द जी ग्रहाराज, सहात्मा सुकरात व श्री टाह्मस्टाव की जिथनिया पद-बा ब्राप को सोक सेवा की ब्राग मते । साको की से सतार्थ ठ०००००००००००००००००००००००००

भारत सुरद्या नियम का शिकार श्रार्य समाज के तपापत देशभक्त हरिश्वन्द्र जी पदवाश्री

था । क्याप क्कांप पगती पष्टनते हैं

पर हैदराबाह के मुक्ति कान्दोतन

में सापने गांबी टोपो 'आश्वसहर

पहननी बारम्य कर हो । बारम्धी

रकामात्र कापश वय न पर संब

कार प्राईसरी में पहते वाले करने

साओं में इस्ती तीत्र भावनार्थ भरा

कार्त थे कि उनके एक पुराने शिष्य

ने क्रमें बनाबा कि गार भी हों

क्या करते थे कि वरि कोई रजा-

कार जाला की क्रोर काये तो

वयनो सहदक्षी तक्षांतवों य सहैटों

हें बचने श्रम से बाय बीरों का

में समिनक्षित हुए। भाष पर गोली

चलाई गई भाग तेट वर नोधा

की प्रतेशासी मस्तियों में पूम शर्व ।

से सब हमझे धेर हो।

से० बी राजेन्द्रजो जिज्ञास, प्राध्यापक, द्यानन्द कासेब सोलापुर ACREMISE ACREMISE REPORT REPORT ACREMISE ACREMIS प्रकाश कन्य पढ़ने को जिल्ल गया । स्थि दवानस्य के इस प्रंथ ने बारके क्यारों है श्रीत वैदा का री। स्नारने घरने तान औराट में यह पाईसरी माता जोसबर आन बान का कार्य कारम्थ कर विका निअम की वानासादी के विरुद्ध कापने अन जातास सीर रहत-हता काकोअन में बार नेता कारम हर दिवा ।

जटे रहते वे इसी कारण व्यापका जीवन भंडा संबद में रहा परस्त चापकी कठोर सावजा से सारा वाम वार्थ समाजी बार थया । ऋषने श्रम में ही नही उस्न्दर तक ब्राय गढ़ जी के जाय से विश्यात हो गर । उन दिनों गांधी टोपी पडनना रसाकारों के धायावारी को निमन्त्रण देवा

कार कार्यमधात्र के बचार में

दयानन्द-वचनामत

"बाजकों को बाहिए कि वे रह बविज्ञ हों, यह स्मरख रवलें कि परिज्ञा सक्त करना, वजन देवर न पासना, वहा मारी पात ह है । दे शहा कुत्रप्तशा रूप दोष से हर रहें, कोच य करें, कट बरन करनात्वा न करें। सन्दे, शीवल और प्रशन बचन ही कोलें । चहत बड़बड़ और वितरहाबाद का श्रामाब न क्यांचें । तबित, दित क्यीर मित थाची वर्ते । बड़े करां को सदातर दें, उनके बाते देख कर लड़े हों। चन्नामहत औह प्रमुख स्थापत करें। पृष्ठिते 'तमले' निवेदन करके वनको त्रभ्यासन पर बैठावें। तरश्रवात उनके सामने वत्रप्र कामन कर बाद भी कैटें। सहा-समाज में, बदनो दोग्दता के ब्राजनार, पहिले ही ऐसे स्थान पर बैठें वर्डा से कोई दाता न सके। किसो से वैर विरोध न वर्षि। धनी होने पर भी गुर्खी के बदया और दोनों के परित्याग का स्वभाव व ह्योहें । सन्दर्शों का सरसक करें, दुवेनों से दूर रहें। अपने साता-पिना और धादार्व की तन, मन क्यीर पतादि उत्तमीतक पतातीं से ब्रीति पर्वेष्ठ सेशा करें' ?" (स्थामी शरकानन्य श्री)

साठी व्हार करके भागकी हहियाँ तेम हैं। साथ वह साप के अंधे उन चोटों की बार से पुरे स्थाप नहीं हो शबे।

ब्साय पंजाब के डिन्ही रखा बान्दोडन वें अत्वा हेक्ट वर्षे : सामें में जासिकर स्टेशन पर वंडा के दुर्ग की मोर संकेत करके आए अपने साविनों से बोले न जाने महारानी स्क्रेसी ठोतिया टोपे एवं ओक्तियका व अल-शक्ति क कारण नेता की <u>स</u>भाष धन्द्र हत्वाहि क्रिक्ने बीरों ने श्क्त हेडर भारत की स्वच्छन्य करावा है वह कह कर चाप कुट-कुट ६१ रो पने सीर वेर वक रोते रहे। जिस से पठा चससा है कि अन के हृदय में मारामांस का कितना जार है।

निज्ञाम राध्य में अब वह युवहों को स्वतन्त्रका था पाठ पहासा स्तरे में तो गुलामी के यहरे संस्कर्ती के द्याप गोक्स के मुक्ति चांदीलन कास ने पुन्तों ये कि स्वतन्त्रता क्वा होती है। इस प्रधार अहा ण्ड कम्बा केका योचा सरवातार त्वक त्रहा की करपना भी शोध नहीं **बर सब्ते ये झापने सर्वस्य** कुंक बर शाहीय चेतना वैदा की। बाद अधावारी है। एर बाजा करके तोचा के प्लंगाबी ईसाई शासकों ने वेदिक बर्म का ज़बार करते रहते हैं । बार का विख्ता स्वान्धान है । बाप वहां बरते हैं 🏿 पुस्तकावाय मेरा प्राथ है।

> ब्याप स्वाचार की प्रतिया है । कटता हैरवर विदयाओं हैं । एक शार मैंने बारप की प्रशासना जिला दिया को फाए ने सिक्तों पर सारा कि मेरा श्रीवन सभी इतना पृथित नहीं कि साप समे महारमा करें। ब्राए नियोधन का अभीत अन्तर है। जन रजाकारों का भावंक या त्रव प्राप ने प्रपत्ने क्या के 🛥 वहे स्थापर कोश्य का सरका बहरा कर बहा कि वो इसे श्वारने ब्रावेक में एमड़ो क्षींबर नहीं कोड'गा। किसी को सक्ष्य व क्षा कि वहां से कारतसाथ का सरहा स्थार दे।

> > (शेव इच्छ ६ पर)

सही है।

(क्षांक से काते) बोट-इन से धर्म का शास

न्त्र, स्वम्बर के बांब में वरिष । भीर वो मेश बढ़ बस्म चवाता है, सो हो देर, देशांग,

चैतरेय, शरपय सहयाति वन्तों से चनुसार होता है. क्वोंकि जो जो वेदों के समागन स्वाध्यान है उनके प्रमानों से बनावा हैं. वही इस बी 'अपूर्व विशेषता है *(*'

परना देवार्य की समस्या केवल क्रची के प्रयोग या उनके स्टाहरका वे वेने मात्र से ही समाध्य नहीं हो वाली म ल्यम, निस्त्रत, प्रशा च्याची क्रांदि को देमाश्र क्रीर उन से अपने मत की पुष्टि करने क ज्ञावरन तो शायया ने भी किया है। डबके देद माध्य में भी हम ताश्चया. नियम्य कारि प्रश्ती के में को वदाहरण देखते हैं । फिर क्या बाव है कि सःयय और दवानन्द की वेदायें प्रति में मीकिक बानत है। नाम प्रमारे समय प्रशा काला है. **प**रापे कनार्थ रहिः तथा दृष्टिः क्रीयाकाः विश्वकार ने आधियों को

सप्रताश क्षीर प्रसं का सांबार कर्त

कहा है। ऋषि ने होते हैं जो मध्ये के मह तास्त्र वें की अपनी बोध क्रवादि अस्य क्रांग्रेफिक प्रांतसः से क्षप्रक क्षेत्रे हैं कीर मानव हिशार्थ sians से उस देवी सश्य का श**ना**र करते हैं। यह स्वित्व के तुस्व . क्रवि रवास्य में प्रांत्या चरितार्थ होते हैं। स्वानन्द क्सी कोटि के कवि से और बर में इस बसो मार्च विशा का चमरकार देखते हैं जो -बक्तिक, बामदेव मार्गर मंत्र रख क्रावियों में थी। ऋषि के जीवन में gar पडते हैं कि वे १०-१८ पस्टे तक की चलरड समानि सगाया काते से कीर जिंदर सावारकार किया करते हैं। इनका वेद मान्य सी भाषे प्रक्रिया और शेल-सन्द साकातभवि का परिकास था।

बेट भाष्यकार

### ऋषि दयानन्द ऋौर सायग

(बो वं • मनानीसाल जो 'भारतीय', एन • ए० गवर्गमँट कालेज पाली (राजस्थान)

#### \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

कि क्य २ रुप्टें किसी सन्द्रके प्राच्य ! को सिसने में बोई बरिनाई होची तब वे बेट प्राच्या देखन करते स्वधित

कर पढाना कोठरी में प्रविष्ट होकर समाधिस्य हो जाते है। समाहि है वे पश्चाव क्स केंद्र मंत्र का रहता वतके भिये इस्तासक्षयत हो जाना या, और दे पुनः देव सम्ब क्षिकाने

के कार्य में संस्थान हो आते है। मतः यह सह है कि श्रवि रंगानन्द का साम्य बडां एक क्षीर सक्ष्य, निरुष्त, ध्याच्य्या साथि वेदायं के सहायह जार्य प्रन्यों का बाबार झेबर खड़ा है बहुरे दुसरी झोर इसके तल आधार के रूप में ऋषि की वह कांतर्शी प्रतिया मी विश्वमान है जिल्हें क्यान में

वह आर्थ रचना न होकर वद गावितक विश्ववाद मात्र रह जाता बाव करि श्वासन के पर-वार्विकों के इत्य में इस माध्य भी जो प्रतिका है, उसका कारण यह नहीं है कि यह नाम्य उनके

वर कारसे क्षांकर भाग है. क्रिसकी रचता पर्स छाये पर्दात अर वर्ड है।

> क्र খনাৰ বিকাট वेशा है। जानक के देर बाध्य वे सब में कोई सीविक प्रोरास कार्य नहीं कर रही थी। इस ने इत्यने ब्राध्यक्तमा राजा की कामा पावर ही देद मान्य के लिए लेकशी च्छाई। देशी दशा में इस सावस H बेट भारत से किसी कार्यकों की व्यासा नहीं कर सकते । प्रार्थ होना क्षे दर सादया का जन्म वक ऐसे का भीर वातावरया में हजा था. बड़ां वैदिक प्रमें के प्रति सदा की एक बीस रेखा मात्र रोप रह न्द्रं बी। परिस्थिति तो द्यानस्य

के लिए भी विशेष प्रमुक्त नहीं

बी परना एकोने जो केर मर्स की

इन्तर्ति, **कौर** वेडों की पन: प्रसिद्धा को ही व्यपने ओकन का अध्य बनाबा चा. रसमिते वहि सर्वे सुरु की शुन्ति है प्रापित् यह वस्तुतः वैद्दिक ब्राम की शांति के लिए

#### #C#C#C#C#C#C#C#C#C#C#C#C#C# \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* महातमा जी का प्रमाद

परमक्त महाका बानव तामी की महाराज बापना बन्त सबस दिवास कर दोन दिनों के लिए जासन्धर पशारे की बाद दन्तरीन जी वर्ष कार्बेष्ट्ये प्रधान समा के परिकार में स्वर्गीय समस्य तत्त्वसात भी के <del>आर्थित</del>का के स्थानक में प्राथ-काल ता० १४ से १० दिसम्बर तक सामवेद का महान यह बहात्या की के बहात्व में साम्यन होता था तथा राज को पर मेलाराम भी रेडियो सिंगर के बचर अजनों के बाद दीक साढे काठ बने से साढे नी बंधे वह पत्थ मजारमा जी का बहा मीठा, रसीला, जीवन निमित्र करने वाक्षा काल्वासिक वपदेश होता था। सारे अन्य प्राप्त हो अले में। पाट हो को यह स्थाट प्रसार कवतः व्यक्ती क्रीड से तथा समारोड का समाधार मी दिया जादगा .

वनमा काची क्रीर हे काशानिक बी, वो इस में **इक्स की वि**श्वितक

द्यानम् सीर सावक के देशक : में सहायक समझ्यां में हमें एक क्रीर विस्ताना दिकाई देशी है। दवामन्द के कामें बेल में क्लार्यक करने से पूर्व ही उन्हें अपने शुक विरञ्जानन्य से एक क्सीटी जिस रही वी भीर वह थी बार्य समर्थ प्रश्नों आष्य में इसे कार्य प्रतिस की प्रदेशन । इसी को कलांजि स्वयं कारोध्य का काम्प्रस बनावा कीर सारव में एक अपूर्व धार्मिक क्रांश्त का कारम्ब किया ह वहीं कारण आ कि चरित ने जेना... नक्स धार्व ग्रंथों को श्री कारत म्बीदार दिहा । शास्त्रमं के प्रधा इस कार्षे बानार्थे विते विनी यक्ति दा सर्वथा ग्रामाव था । ध्रमैने यदि क कोर सक्षया और निकल है चारि झार्चे सम्बों का माजय जिला है तो साम ही वयोग करियत सुत्र प्रथ्वो, क्रमायं स्मृतियों क्रीर क्राफ्रिस पराशों की भी सद्रायना बेस्टर देशाचे को बिकत करने में कोई कसर नहीं छठा क्की। सावण के शक्य में जो हिंसा पुनश यह निवान, बदली-सता. संबविद्यास और सदियों के योपना का मात्र मिश्रत। है, शसका कारण उसकी बातार्थ प्रग्वों का क्रनसरक करने वाली विचारधारा है। हमारा यह रह विश्वास है कि दहिसायता के पास भी आर्थ बानार्थ विदेशिनी अब्रि होतो सो उसका माध्य इतना शोष-पुरु स्तरि

> बेटों का पहना पढ़ानी सनना सनाना ज्यार्थों का

गढिंव नहीं होता (

परम धर्म है

स्वीतास्य से आवे मावा : (हिंग्दो) काळ राहुमाना के पर पर क्ष्मोर्शनक है। इसका शबार देश क्षितियों में हो गया है जिस से वसे श्रात सम्बास पापा हमा । इस की इप्तति के सिवे जिन संस्थाकों ने कार्थ किया पन में कार्य समाज का शहर प्रमुख है ।

बारत वर्ष के भावित वपदेशकी ते अवने वपवेश जनमाधा में देना श्चावतवक समञ्चा। मनिष्य रक्ष श्राप से मुकरानी होते हमें, अंगात का कडिलीय परिश्वत होते हुये भी क्षप्त क्षत्र नेविक क्षणे का पुनस्त्वान "करते के किये किसी की है कारताला । यह शत समय के बाव है अब इसे पहले पहाले के fad maोरव समस्त्रे आही भी । •'কলৰ ছাংল হি.ভা বিদান উ **ब**ब्द्य इ.स. इस हैयेल ने इद्धा व **भार प्रा**थिक वन्सा होता यदि क्रिय बच्चों की नट्र सिसाई वाधी,

gez करने का कामास करावा क्रभा क्षिमें फ्रन्त में एक दिन वह के समने सर भवाना पहेंगा।' पेसे भगंदर समय में आवि ने भारते समाज के द्वारा दिल्दी का

pens (क्या । बरीह प्रत्येक सार्य के सिवे हिन्दी अनना शनिवार्य ब्ह्या। (क्षाय समाज के उपनियमों में कर इस काशन का भी दर्शनवन है।) वन्होंने क्याने समी पन्थ

क्रिकी ही में किसे दिश्लीये प्रचारने कार्यक्रमान के वोक्टान की डेनरो हुए की राम पन्द्र शुक्ता ने जिला संख्यत शन्त के परिश्वमी जिले और रंबाच है आर्थसमात के प्रमाप में किसी वह का प्रचार वर्ती हेती से हका र' परार्थ समाचार' कीर 'सम्रक सुक्ता अववेष' नामक वो समापार ऋषि के उत्साह देने पर तिकाने प्रास्थ हो गर थे।

सम समय जबकि प्रचार के

जार्यसमाध के उपकारी कार्य

### राष्ट्रमाषा हिन्दी का प्रचार

(के०-श्री मित्रसेन जी बार्व एम**० ए**० साहित्वाचार्व)

वे देरत यूज-दूस कर उसी भाषा विषे में साम सामय २००० है के बजार किया से पारे (समारात श्रीवर कार्य समावें हैं इनके माचा स्थानान न था) बादे नाचा सहस्तों की संस्का प्रशासन ३ करोड़ है । शबेड समाज वाविकोरसव क्कृते के । एक बार एक **ं**बाबी क्लकासर, सामसाक्ष्य, रात्रिपाठ-भक्त ने हिन्दी न समस्ते की

इटिमाई बताते हर स्वामी जी के प्रथों का वह बनुवाद करने की क्यान बाल है। क्षाका सांधी तह साथि ने बहा. माई नेरी अलिं तो उठ समय को रेजने के किये दरस रही हैं वद क्षत्रवीर से कन्त्र डनारी वह स्व भारतीय वह सावा को समझने कीर बोलवे कर जायने विन्हें सथमन मेरे माणों को जानते का

इन्छा होनी ने इस बार्व भारत

को बीक्षन कारता हुनेया समस्ती

क्रमणर वो विदेशियों के सिवे क्र कि एक देशी कोशी में विचार লগ্ৰহাৰ হৈ । को में समस्य ४०० आर्थ क्यार मूर्ण दराजन के हती कारते का कार्य समाज ने अलकरण किया है। सार्थ समाज के सभी वंश्वरत दिन्दी प्रचार के लिए इस

esार वांटे वा सक्ते हैं.~-१. बार्च समाय-सारे भारत

\*\*\*\*\*\*

ाई फेट

थ. बार्व कमार समार्थे—मारंव | जाते हैं ।

Bass कात्रम हिन्दी है । इसश सवाकों द्वारा इमारों में दियो

क्यार किया जाता है।

2. सहिमा समाद प्रीत सता-बाक्षण-इनमें भी इन्हीं प्रकारों से हिनो स्वाप क्षेत्र है।

(名面対:) भारत सुरचा नियम का

> शिकार (ब्रष्ट ४ का शेव)

भार्व समात्र के क्षत वपानत की सरकार से बारत सरका निका शासाओं बादि के रूप में दिन्दी का कारकार स्थानकड किया है सी भारत की रचा व रवक्तनता के ब्रिके सबस्य प्रांक जुड़ा है । क्यूके सीरे प्रदेशीयां प्रयोग वें —सभी प्राप्ती को इषक्-पूषक् प्रोतिकिंध के पढ़ीने से नहीं आवतु अवने स्थायं हैं। वो कादेवों, संस्कृतों रक से स्वराज्य संवास में राज्य के क्रम संकारक स्थले हैं। इसमें तपका को सीचा है । सराठवास हिन्दी बानिवार्थ है, समस्य कार्य वे लुओं व कालेओं में बाग मी द्विन्दी में होता है। इसके बनेकों यस यस कर वह देश सेवाब सदापार-एत हिन्दी से निक-स्रशासार की सामगाने स्वकों से यस्या रहता है। युवक अक्षा से ३, शिका संस्थायें—शिका चेत वनक चारों कोश सरदेश ऋसत कर ने जीत प्रश्न देश है वहें हैं। पान बरने के सिए एकतिल हो

व्याप इवानन्त् के ऐसे शके समार्थे सार्थ कर नहीं है तथा कीरों की बसवचन से दशका क मारत्ववीय भार्य कुमार, वरिवद का सकेवा । हा॰ **स**० शास । हास की वरीकाएं भी संचालित है। जी के विकास से इटना ही पर्योध है कि वह आर्थ समाय के बयोबुद्ध नेता है। बाजका श्रमा में अने ex) 🕏 ;

> करेंगे न पिस्तीस के बाद से इस । न वीके इटें धर्म प्रचार हो हवा। मिटे व बिटात स इस्ती हमारी। न होती दवाने से पस्ती हवारी स

( बन्द ३ का लेका

#### प्रमन्तं भीमहि

वस प्रकाश का स्थान करो । वस पर्सको वाली, लगास्ताव व्योर्थ का । इस्रोंकर दोनों से से किसी का स्थान की जिए. इस में झन्दर नहीं बक्ता । स्रोम का प्याप बारते बाह्या भी घनत में देशका है कि वस समूर का त्यान एक क्योति बेरही है। भीरे २ मध्के

### महात्मा जी का ओग्राम

वाय बहारमा आतम्य खामो जी महाराज इत दर्श वर्ष की काम् वें भी वर्तत्रकार के सिर विश्वता समय देते हैं। भाग के व्यक्त बीचांस से इस का परिचय जिला जाता है। ब्राप का बोबाम यह है :--

ब्रम्बद्धरनगर नई वेडकी १८ से २२ विसम्बर प्रस्थाद (विद्वार) વ્યક્તિકાર .. कार्यक्षमात्र कार्यकाविक रम विस. से ३ जनवरी १६६४ वर्ड सीर क्सदया

सरद (बीराह) = बतवरी से २० वह २१ से २८ बक्सी कर्या ३० जनवरी से १३ फर्वरी महास १४ फर्नरी से २६ फारी क्ष्मां २८ प्रश्नेती से ३ सार्थ र्दश्चरा

### क्विचार तरंग नं० (१)

ले श्रीराय मूर्ति क्षी कालिया, एम.ए. मालबीय वरर, नई दिल्ली 

सर्ववनायक सम्बंधन का संसार । चंचल प्रयक्ता क्रयना सुसका हिन्त-के बीकों पर बहुद करपह है। सरेखांचनी के काय. दुर्लेस मानव

वन को देन उसकी ग्रम का ही कार है। असकास कारण प्रक्रित द्यात है। तुबे, चन्द्रमा, बल एवं को बद्दित करना सराहतीय है

क्सुकों के सिर्माण्य के तिये कभी किसी ने प्रार्थभा की हो वेसा सबसे में भाषा नहीं। ये सब तो उसकी क्षेत्रको समा के फावकम ही है। एसभी क्याकों के होने पर भी कार भीर सांतरे के लिये शीव

भी राममृति सी कर्मसुवा हृदय के भावक हैं । इटक के क्षम्तरमञ्ज से निक्को १९ विचार साम्ब्रीतक क्रीवन क्री प्रदेश से थाने वासे हैं इत्य पटल घर गहरा कु स्थाई प्रसाद बालते हैं । वर्गमाल भीगवाद के यस में प्रकास अक्ष्य का बारा अस्ते आसे है यह विचारभारा काएकी सेवावें अति साम हो बार काटा करेगी । क्रवह्य पढें लाभ वडाई।

प्रकार के प्रश्नों का लक्ष्य पारवा का हेता है। इन्हीं प्रार्थनाओं से र्देश्वर की दिला जैने का संस्था कर भीत बोक्स में परिवर्तन करने की सोपता है। कभी र तो प्रार्थ-बाब्दों के काता विश्वान करता ही है बह जीवन की क्रान्तिम क्षत्रस्था की प्राप्त बरवा है ।

कर्मनाओं का संस्था दिया है देशी कई लोगों की सम्पता है। कांबबर मण्यन का तो कड़ता है कि वश्चिमों के मल्हार के फलस्काप क्ष सचे किरमें प्रथम है। विविज की दक्षांसें भरने से डी चन्द्रमा की र किरले प्रसन्ताती है और 'वन भीप नद्वा पुरुषा कल्बर, कपनी कांस

साबे हैं।' इस विकार से नई क्षोग सहसव होंगे । हो, बनका चपना सिकार है। शर्वताओं से स्टब्स्टा हे भावों

बादु वैसे दुर्लभ और आध्यायक और ईश्वर के शांत देशा करता इसारा पर्स है। इन शर्यश्राकों से इमारा मन सन्दर होता है और बीक्न में यदि झादी है। वह गति का माना ही प्रीवन है। सतरत के ंतीयम में परिवर्तन काला है। बायंनाओं में शक्ति है कि वह जिल्हान्त स्टब्स रहता है। प्रार्थना प्रदर्भ के शीक्षक में परिवर्णन आ विस से सन सदा भोत-बोच रहता | बन्हे किन्त को परिवर्तन दावी #########################

3 : शर्थनाको की यह गांच जाना संसाद में ताना भाइता है बह प्रार्थना नहीं व्यक्ति उसे स्वयं साना होगा । महान पुरुषों को बनकं झारने प्रथमधी के बाह्य पा सपक्ष्म विसनी है, साधनों के क्स सानदी। <sup>(</sup>किमा सिद्धिः

> शत्वे भवति भवता शोपकरके ठीक ही तो कहा है।

#### श्रमल्य वचन

बिस प्रश्तर फन्न होते पर वच नम हो जाते हैं. तबीन बात आने से मेच लुक बाता है वैसे 🛭 📰 वरुष भी सम्पत्ति पास्त बद्धाः सही होते मण्डि मण्डि सम हो आते है। सारांश यह कि यरोपकारी की बारा से, उन कक भर की बीचों का वह स्वभाव ही होता है।

### व्यार्थ समाजों के जलमों का समारोह जीवन जागति का जीता जागता दश्य

सभा के प्रधान की की सेवा में बैलिया भेंट

. बार्षे समाव साहरू 'Extention मं रेटकी में मान्य म, विकास परंद की करनी स्थापन वर ही पामाडी, प्राप्तकत वर्व समाह के समस्त केवी है। दन के तथा की टीवान चन्द भी प्रमात, भी समक्ष जी. मी सैरायती बास बो. योवस शी काडिसारे सश्दर्भों के जनात में पदवा वार्षिकोत्सव यस पास से सनावा गया। शान दार करि-दबार तथा हत्रो समात्र का तस्सा भी रुखा । तरसे में सक्षा के प्रधान मान्य विविधन रखातक की प्रसार विशेषण्य साम्बी, प ० राज्यश शायंसमाज अम्बाला शहर महत्त्रमोद्रन प्रसिद्ध चिमटा संदर्शी

सभा से प्रधारे है । बैक्क्यार समाजें सक्य प्रधान विसीपक्ष रक्षाराच जी sp c லில்ல நெண்க-पूर्वक थेबी मेंट की नई ४ प्रधान भी के हो आध्या 🎹 ।

नाम्ब भी बखरेवशिद्वजी मरुद्रारी पश्चोकेट: स्थामी सोमानन्य श्री महाराज, पिसियस मुल्करात्र की डी. प, वी. लुख, ला० मोकीरा**म** श्री एडवो∜ट, श्रीपुत सहका जी मा हा० रामसरवर्धी मर्न्श सहाय. मारा स्टब्स तथा यसकार्तस्थल ब्रहारि के प्रकार्य से इस बार भी सम्राज्ञ का जनसा वहें समारोह से सम्पन्त को स्वार । समा के बेट अधार

आवंसमाज गुरदासपुर

तर्का को बार्क मीठी क्या व ठा० टर्गासिह की तुपरन व र्पः शासपास बदनबोहन वी प्रसिद्ध चिमटा-सरवासी के समन होते रहे । जल्ले हें पळ खा॰ सर्वत्रथ जी दीनाanr. do विक्रोबक्ट मानी.

क्रविस्टाता पं॰ सुसीराम जी

क्रोजस्की क्वता हो, वेदीराम बी शर्मा २म. ए. बी. ए. वी. कालेज जारत्यर, ए० चलुसेन सी कार्य (क्रीक क्रांक प्रकार । त्यक्र के बच्चों व बान्य क्रम्यायक्री का बका कलाइ था भगर की दसरी सकाब के शब्दन भी प्रवादे ह ऽबन्ध **अक्षा ही सन्धर** या। सम्मे same de enfefreur 98.5 x arrell को मेंट दिव गय। सा. रामसहय की मन्त्री, भी अध्वारी की, मान्य विशिषक सन्दर्भाग श्री, जा, देसराग डी, भी कोलडी डो, बहिन शास्त्रि जी. मान्य वट सक्राहको-स**व** की यथार्ज हो-

बार्वसमात्र बार्याक्षा शहर का

वार्षिकोत्सय गुमनाम से सम्पन्त हो गया। क्या में स्वा. सत्वानस्य त्या <sup>थ</sup>. हजारी शास की का**म** काते रहे करसे में वहि विद्योत्तमा alt, fifteen reserve alt M. A., M. L. A. pera une mèleu सभा, पं. तिसोक चन्द् शास्त्री, पं. रावशक सदतमोद्दन चिमटा-संक्रणी, ६. चन्द्रसेन बी, ६. शसर लिहा भी काम्यच काम्याला संग्रस सी इंडडी, व कवित्र सी कार्र प्रभारे असल सी क्षा भारी था। धयने सारे स्वत कातेज व सारी कशार्जे साधित थी। ऋषि संसर की भी ल्बयम् सी । समाज के सारे सञ्जन बर्जिनों में सब जसाह था। १४०)

> री का वजी क्यें के लांक कि आर्थ स्त्री समात्र अम्बासा ाती का सम्बद्धात कम्यासा शहर**े** वे भी क्रयना क्लब वरे एताइ (शेष पष्ठ = पर)

४० वेदप्रयार सभा में समा के

क्यात विकित्य रम्याम भी एम हे.

#### ग्राय<sup>®</sup> प्रतिनिधि <sup>५</sup> समा

कामको विश्वीत भी है कि सार्क-क्रेप्टिंग प्राप्त अवितिष्टि समान्त्रात विचार्य समा, प्रार्थ विदाश विरा-उट. कार्च विकास सदक सार्च शिकाना रस्य ने वीन परोद्यार्थ गठ क्रा वर्ष से पता रही है जिन में की वर्ष के बार प्रश्निक विद्यालिक होते हैं। अब एक चड़कों विदार्थी ger witteraft all materi act ... Spit 🖥 । इन परीक्षओं को समिकापिक कोट दिस कराने की सामध्यक है और इस कार्य में मामका सह-बोग वरेषित है। प्राप प्रयो अक्षाओं को प्रेस्का करें कि वे इन प्रतिशाओं में क्रांत्रिक से काविय इसात सालाओं को विठाने क कायोजन कों। प्रवरीय

> शक्रमोगस सभा बल्डो

#### ऋषि निर्वाग दिवस व्यक्तिकाच क्रीवीशकाच वे

दिनांक ३-११-६४ को प्रायः सावे दश क्ले तढ 'नश्च हुद्या । सादे दस को १०।३ कते तक करि तियांक-वर्ष वही परमान से ले सरवानव की हरिकार की काश्वकता में यतावा गर्वा । जिसमें सर्नेड विदानों ने अपने-सपने विचार ऋषिश्वानन्य सरस्वी तथा आर-सीय संस्कृति के सङ्गत्व पर प्रकृत किये। काल में बी स्थाबी जी ले अध्यात पर से ऋषि त्यातन्त्र

मुक्त साहित्य प्रचारक मासिक षार्वं समात, पुश्वका-सर. हवा इवावासमहत्त्राच्या ्रिकी मान वाने पर सुक्त १ वर्ष वह विवा सारमा जिलें। नगरेव बादर्स पो. बा. ४६

• धहोदा-१

मन्त्र भावन निवा। दन्ते मन्द्री शमात्र वे यद पानंत्रज्ञे का कश्वाद क्या।

-क्सरीकास सन्त्री धार्वसनः । मेबा कपान मोचन पर

.वेट प्रचार की धर्म **्वमर्रासहको अध्यक्ष बम्बास**ा

मंद्रस के बाध सम्पल का नेवा बगावरी दासीस विद्वारमुद करना के शाथ प्रत्येष वर्ष पालिंद पश्चिमा को स्तर्थ पत्र-थाम से मनाक बाता है। इस **चवसर पर तसान भारत है विकिन्स** 

पान्तों से स्त्री व पुरुष पार्विक साव-नार्थ से कर वडां एकत होते हैं। इस वात को भ्वान में रखते हुए कि इस प्रकार से बड़े दर २ शंजों तक बड़ ऋषि इंदानन्द का पायब सन्देश प्यूच जला है। समाइस मेले के

क्षस्यन्य महस्य देशो है। वर्षे वर्षे को मानि इस वर्षे भी श्रमा को कीर से १४ नवम्बर १६६४ से १६-११-३५ वह विशास देन बचार कैम क्या कर निरम्ध ६ किम दर

ताट **रेर का सम्देश क्या** को समाया गया । २.--इस्त यह दरवेश शहने

पादिका सन्दर अनंत वा श्वके इताया अविश्वास का भी अवेश या । जिसमें इजारों स्त्री पुरूष प्रतिविच मोजन पर्त है । प्रत्ये गारेशिक प्रतिनिधि समाचे क्येकेशक व मजनीकों ने पूर्व सहयोग दिवा।

### त्रार्यं विद्या सभा, चित्रग्रप्त

सार्ग नहें दिल्डी चागानी तीन वर्षीय (१६६४-

६७ हैं। सदस्यका के सिए द्वार्य साम्बस शिवा संस्थाओं को सम का द्वाचित्रार ।

के विवासासकार प्रवितिषि सेवने कार्य विश्व सभा, विज्ञाय

विस्तरिक्षील साध्यक विश्वा-संस्थाओं से इस निराणि हारा ग्राभेक्त की जाती है। कि बड बनके अब दे क्यूज़ को हुई संक्ता दे क्युसार चरनी २ स्वानी द त्रशन्दद ब्मेरी व स्टाव्ड के उसकों में से

वार्ग, वर्ड दिखों से स्थानित

सभा के विधान प्रशा कीर के बतसर सको प्रतिशिष्टों के नाम संबा की काराओं तीत वर्णीय (tely-to fo) seriou it fait रोज से ने केंद्रों कर करें। का करून में अवस्थापकों की राज

द्वारा पार पत्र में हैं दिने तमे हैं। हत प्रतिविधियों के आहेरिए संगा के विधानाञ्चार समाव वास्त्रीवत स्टबों के वक्तासकारक द करना सहस्रों की प्रधानाच्या-रिकार्वे अथवा प्रकारक महोतव बी शवा के सन्तम होंगे।

धन्य विशेष सुषदा के शिवे समा के कार्याक्षण से पश्च-स्थरतार şř) क साम के जिल्ला<del>को</del> क दनहीं संस्था २०-१२-६४ के संद

में कों। देवराचे महात्रव

**एक्केशनक एडवाइक्ट** कोड शताव

वार्य समात्र सन्दर्भ के सक of shorts of supplient forfeign and good, an-क्वां बेट राकविषास श्री समसास बारि, ४-१२-६४ को 'सवानव **देहारकान हो गया । जार्य समाव** कारका का एक बहुद सदा सहयोगी तथा क्यंड सर्वेद्ध्यं इस संसार से

WE want a से किया। प्रशासा मान्त्र राज इस ईरकर से शर्वता करते हैं कि 🜃 दिवंगत कारया को शाणि व्यं इनके दशी परिवार को होक सान करने की शक्ति हरान करें।

इस सद धार्यमण धारनी महास्था करित करते हैं। वैकाशका वाशीयत क्षाने बनाव, सन्दर्भा रोवड वा ।

#### ऋषि बोधौतस्य (विवसकी) यहापर्व

(2 WIN 19.52) पहाँच दयाबन्द भी सरस्वती बी बन्य-प्रति दंशारा को

स्पेसस रेसगाडी वेशको जंगभन से शंकापा (युवदात)

सनी वार्व साई-विद्यों को यह जानकर करव-त इवे होया कि इस वर्ष सङ्घर्ष इवातन्त्रती को सन्मple som & fir toft it er touch d'uneur de mf 8 1 mc atm 2'9-2460 वसिति के प्रकारकार में १६-१-६४ ई० की राजि को देहती से चसकर २८-२-६५ की शक्त शंकरत पहुंच बारबी । इस बारंडन में झाव केन्स्रेस समा दिस्सी राज्य के सान-नीय पश्चिकारियों का पूर्व था-

जोग रहेता । बेक्की के देवारा का एक मोर का अपने स्थान प्रदेशक होता । टकरा से सन्य यात्रा सोम-अपन व्यक्ति के जिल किराना गय

हाता का प्रथमा होना ।

बाद तक १०० खबि मध्यों ने अंकारा अध्ये के शिक्षा कापना रेख किराका मेत्र कर कीर्टे वर करा सी हैं चन्य सन्दर्भ वो शांत के इच्यू हों वे जी किरावा नेजने की शिक्षत को सीर वाचनी सीर्टे ह ६ बरा हैं। सैतह होन के प्रत्येक किये में किये कि जा प्रयंत्र होगा।

का विष्य की बर केवें । यक समिति विक्ती कार्यास्य व्यापंत्रमान क्टोसमाग देवसी । —विशस्थररास मन्त्रे

टबारा सहायब बनिवि विस्त्री श्रार्यसमाजों के जरसों (इस ७ का शेष)

व्यारी बाँ, बांद्रेन पुष्पाभती जी, सन्दरको, सावित्री बी, शारेदा बी कीरकचाजी काविके परिश्रम से बहा सुन्द काम हो थवा । वरधी-बद्ध से बहिन सत्या नी प्रवासी ! त्त्री समाज को सादाकों वहिना ध्य जन्ता देश कर संग का प्रसन्द होता या । सार्वनंत



रबीफोन मं**० ३०१**फ श्चार्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसमा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक महापत्री Regd. No. P. 125 ब्द प्रति का मुक्त १३ नवे वैसे वार्षिक सुन्द ६ दश्ये

वर्ष २४ श्रंक ४०)

# १३ पीय २०२१ रविवार...दयावन्ताब्द १४०-- २७ दिसम्बर १९६४

## श्रोदम्हमंसे बस्साध्य हिम्समधा चस्ट्य ।

त्वामवस्यराच के स्वाहा १। इट वस्त्राच्य हटन्न मध् ॥ ऋ्क्संडल १ सक्त २६ मं. १९ कर्य:--हे देव ! (इसम्) इस (मे) नेरे (वरुष) वरवा करने वे

बोर्ख्य हे बहुश सर परमेश ! (शांब) सुतें (हयद) मेरे ,तबन एवं यावना मर्थै पुदार को (धय) साब इस सन्य (स) और मुख को (सृदय) **॥वों बना दंदे । मैं धारका करायक (स्वाम्) हुन्छ को (बदस्द) रहण** प्राच्य करने को ४वड़ा बाखा मैं झाय अ (आनक) सहस्य मद्भा करत ह'। (स्वाद्वा) यह मेरा क्लम सत्य होते। यह क्षम नत्य प्रमु के विन है, केने किय नहीं है ।

भाव :-हे बस्छ देश । बराव ही तो जाबन में दरया, बहुबा भीर अरोकार करते के बारव हैं। बारके शिवार बारि किसे व वर्गो नक्य बद्धा जाद ? सेरी पहार सनदे बाते ! मैं क्य से पदार वर रहा ह'. विक्रवी देश से देश सना रहा है। विक्रवे सहस्य से खाएकी कराजना में सभारवार । मेरी घर हो टेर पसार सब स्रो। ब्राउ ही हे पिछा श्री मेरी टेर पर ब्यान देवर मुखे सुसी दना शीवर । मेरे श्रीवन की दक्षाम विद्वित्वां मान आई, संस्ट टक आई । झायके बिना दुःस नासक एवं सुखदायक क्रीर दक्ता कीन हो सहशा है । मैं आपका ही को हैं, सम्बद्ध हैं। ब्राप विश्व ब्रीर याता हैं। मैं को सदा ब्रापके द्वारा रक्क्स **पश्चता ह**ा स्वाप रखन हैं। मैं शंचत हुं। धारपकी स्तृति में क्रम्य हूं । प्रशे ! कृत कर दो नाव ! मेरी हर फोर से रक्षा कर समा देवें----ग्र

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

### (तार 'प्रादेशिक' आसन्धर ऋषि दशन निर्वलानां रचक्रम

वर प्रतिप्रशासा का रूप्य वर्ज तथा शासन का को भन्ने है वह निर्वतों की उच्चा करने वाका होता है शता को चाहिए कि विक्लों की परी २ रचा करता

उत्तम् सुस्कारकम् यह सारे देश की प्रजा थे

कीवन के ज़िल क्लास समा का देने कता होवा है। जिएम का विषय है पासन होता है देशा रक्ष स्था सला से मावाबात होता जाता है बीट राजा सदा सलद यक होता है।

#### त्तत्र सर्वस्थात्वर्मणो बहत

यश्चिय का धर्मे, राज्य शासन सारे कामों में बड़ा है। उसम सीर राजा के राज्य में कारे असे केकाम मारी होते हैं। प्रका सुस शान्ति से निशम दिवा बरवी है । इसलिए उत्तय बर्मेंडै।

माया मूबि कासे

#### सम्बद्धमावसीमहे परमेश्बर ! श्रम सक तंत्रे प्यारे पुत्र पृत्रिको सन कर आप में भाव के रस मांकानक-वरम-सका प्रसमित वनते के प्रसाद का कामुधीमहे-चाइते हैं :

माप हमारे पत्र्यांसत्र यत वार्ये वो इमें स्रीर क्या वर्तहरू।

#### नः सोम मृहय समुदेव ! काप स्रोम हैं-

ताप संबोध को दृश करने वाले हो । सारे संबर्धे को करने काले चाप ही हैं। सुख शास्त्र के शका हो । इसा ६२वे 📰 नः— इसे एक्क-मूली बना दो। सदा व्याप की क्रमा से शक मिले ।

#### नः पुनान वायर क्रमदेव । क्राय सदा व्हिन हैं, शब हैं, प्रतात:-विसंत है।

हम मी तो झार के बच्चे हैं। भाष मी हवा के विकाहमें पश्चिम कीन बना सकता है। राज्ञ कीन कर छका है प्रविध द्भा दीविष---साम वेद से

वार्यसमाज के प्रसिद्ध नेवा मार्थित प्रयास स्वत्यास सी शासन्धर के जन्म-विषय पर उनके मान्य सुपूर्वो शेवुक धर्मेशल जी. सा. इन्द्रसेन की पूर्व कार्यकर्त प्रधान अमर्थपावेशिक सभा, जी हरतपास औ, श्री वे बपास की सारे परिवार ने वारील १३ दिसम्बर से १७ विसम्बर 📳 को क्रवने परिवार क्षे आपनेद का सहाबक्ष का समा-बोह प्राव महारमा झान-द स्वामी श्री सहाराञ्च के बकाला में रखा । दात को क्या में सद्दारमा जी ने क्षो सधर प्रवचन दिया । वह बगत के दोनी पातकों के किए विका सा रात है । साथ शरावें—सं.

धानवेद ज्याधना का वेद है । इसकें ज्याधना का बड़ा ही हान्दर क्रमेदा मिलाम है । बहु आंवत क्रमाम देव माना गता है । क्याम देव माना गता है । क्रमाम के धरवार है । अधानार की कवि कदकर पुजरा जाजा है । वेद भी बायम है , प्रयाजा की करिया के बमान की है । वेद में विक्रमा कराम वरोदी दिया है।

#### रूतं वो विश्ववेदसम क्षेत्रव वे वो कह भी मिनवा

है। यह मानव यही समन्दे कि सब ग्रेरे कम्बात के लिए है। का **ब्रह्म** कभी शन्दर' सभ्दरायाम् होते हैं तो कमी-कभी भीवता भीपया-आक्र का वाले हैं : हमें कभी सला विस्ताता है कौर कभी टा । यदि मन्त्य दःल में सामा जाव स्टीप प्रामेशका को बाबियां देने लगे तो यह आरी अन है। मैंने भगवान को गालियां देने बाबो लोग देले हैं। शोदी-सी आवर्ण कार्ड नहीं कि परसारका की बुराभला स्थाना शुरू कर देते हैं। यह वो मनवान को मानवा न्तरी । विक्रनी विपश्चियों, स्ट ब्लेश आराते हैं। से भी इसारे मले के क्रिए होते हैं। इब मैं डी मानग क्षीवल को परीका होती है। वदि

# भगवान् पर श्रीटल विश्वास रखी

\*\*\*\*\*\*\*\* क्टों में मानव पक्ता बावे तो तो है में स्वाब करतो रबीबाय समस्र देशा पाडिए कि वस पर कारी किन्ने ही सुपर बादेश करल बिकास नहीं है। अध्याद किन्ते हैं। यर वह दीवन बढ़ी गई का वर्त विषयांची बडे से बडे कर है। हो सार्वे कन्नी। एक सार वो में क्यी नहीं प्रदासा । तम के बीर्ट समय मार कर मनुष्य को मक्त की यही सब से बड़ी पहि-व्यक्ता देवी है तथा इसरी सात वान है कि इ.स. विपक्तियों में भी जार कर बसे सविज्ञा कर के साम वस रक्ष रहता है। वें बादने सन्तन्त्र वाडी है। इस का द्वाना भी थरा में बहुता है कि प्रस के बहुत है क्रीर बाज भी दुश है। संग्रान् विस्वास ने सारे परिवार को राष्ट्र देतारा है कि मनध्य के पास पन विश्वासन के समय असती चरित्र सम्पदा के झाने पर बालिसान थी की ध्याला से स्थाया। सामने

लड़ी मीत के मुख में नजी जाने दिया। मैं चनुवन के भारर क भी रची धर ऋशियान न वा। संव बहुता हूं कि परमहत्वा क **ब**ाटल विश्वास नदी से बडी असी-यह विशानी है कि सुख सम्पर्धियों यत से भी गर कर देता है। इस में क्से सद नहीं बहता। वह इसे बन पन्ता बाते हैं वो 🚃 ने प्रभुक्त महार दान समग्र कर ब्रमाश ही बीच है कामाच्या ले कीर भी अमेरकर का जाता बतत सदा इसारा रचक व सहारा है। बावा है। बाद तमिक विकार तो हम ही उसे सजा देते हैं। क्रों कि सक्क्य को क्रश्लिमान हो सी किस सिदा भीत सा ऐसा पदराकर किएसओं में प्रांत एक ये है जिस पर गर्व किया अ बाते हैं। कह स्क्रेस भी क्षे वदल है। यर मृथि, मदार बाहि पस्मारमा श्री क्या से काला है। को प्राप्ते दीकिए । यह अपन विसने सहन कर शिवा, वह स्तीर किर को बक्तरे सम्राते परीका में पास हो आला है।

### विस्व वेदसम्

मण्यार चन पार्णी काल कर्ष है, पर सु के पार्श के क्षेत्र क्ष्मीयमान सहित्रों होना वह सब इस्तु भगवार का दान समझ्या है। को या नहीं कुछा (पर किंग कुपर किया है। कब्क कर्ज हैं मीर्गुल-मार्थ चार्ट में नीते की मुद्द किया है। कब्क कर्ज हैं मीर्गुल-मार्थ चार्ट में तेन ते की पर में मार्च मार्च मार्थ में हुन कैदा है। वेद में पर मार्थ मार्थ की नित्ता क्ष्मी मार्थ है। क्ष्मी के मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ है। क्ष्मी के मार्थ मार्थ मार्थ कर्ण हों मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ कर्ण हों मार्थ मार्थ हो मार्थ मार्थ मार्थ कर्ण हों मार्थ कर्ण हों मार्थ मार्थ हम्मी वो नर। व्यक्तियानी भी अपने साम एक निरुद्धा एक मी नहीं हैं गर। पिट व्यक्तियान दिखा शह रू. किस कीस ! व्यक्तिय- देखा है कि स्तुरुप सम्माद्ध रहक में जो नहीं किस शता। इस किस म्ह्य एक माटक निरुद्धात दुस्कों के किस ग्या मानस्थक है कि करियान करी न करों!

### न्नर्य केन्द्रीय सभा करवास ईसाई शदरियों के हपकारों

से साथभानः ईसायत के प्रचार के खनीको शरीके पारांड की इद ।

करनास में ईसाई पावृश्विं ने बारि प्रश्न शक्त । साम्दर नन्दसास मोन्नी-भासी हिन्द बनता को धापते जी को अन सम्पत्ति के होने पर वास में प्रशाने के सिव वस-अस राख्या ध्रमनाका है अपने धर्तती वदे ही भरत व अग्र ये । अग् भक्तकी हारा यह प्रचार किया कि पश्की साहब मार्थना द्वारा हर तकार का रोग ठीक फरते हैं संतान द्वीनों को सन्तान कीर नेत्र होनों को नेत्र रेते हैं हर प्रकार का शारीरिक रोग शर्वना से 💵 करते हैं। जास-पास के इचारों नर-शारी निरका का में स्कार होते रहे सीर श्रादरी साहब बीसार और दक्षियों की बाकारी का बाद कहा की उनमें बाईश्त कीर इंग्राइक्त गा के किए इतना समय क्याचा बात त्रकार करते क्रीत दाल का वास्ता है, बहु भी को कक्षा नहीं शहक, दे<del>का</del> कर भी थटोरते रहें परन न इस की मरी बवानी सदा वनी काराय किसी दुश्ती शाबी को न रहरी है। न यह क्रम्ड समय किसी द्यावा । भावंग्रया**व के कार्यकां**स्रो के साथ जाता है। चार दिन वा ने सबा पेखेंत्र किया परन्त कोई परवाह नहीं की । सार्वसमाज ने बह बीचर, बीवन का बैसर है। प्रकार के प्रभाव प्रकार के जनक इसे पाकर व्यक्तिमान करना की रहनुवाई की । पार्शरेयों के विवनी मूर्वता है। इदिने दश प्रसाय को क्य किया । सार्वकरात है-हो दिन की विक्शनों में न बीर भारत सरकार को भारी इत्या स्थाय के पता। दनिया है चेजक्सी है। यह ईसाई पाएरी पत्र पद्मार कि रस्त्र संशत के क्षिती करकारों के एवंट है थे। वक्ष। साक्षा किया पर सक **ईका**क्त के अकार झरा मास्य पर १ क्रश्च है। क्वे-बने राजे सद्भारते विकेशी सामान के सामा है रहेती?। क्रावे क्षीर चत्रे गर। धरना २

वास्थ्य वार्वे स्टब्से वार्वे केन्द्रीयस्था स्टब्स्स

का काला मीत की मोनी में

# ऋार्य जगतु

.. वर्ष २४] रविवार २०२१, २७ दिसम्बर १९६४ (अंक ४१

# उत्तर प्रदेश नेता बना

तह ग्रुम समानार कितनो **अभ्रत्म**क से सुना वाप्ता कि क्तर अवेश की सरकार ने यह योगका कर वी है कि इस साने वाले रह व्यवस्ति के संवातन्त्र के पवित्र विषय से सरकार का सारा कार्य राष्ट्रभाषा डिन्ही में शरम्म कर विवा जावगा । राष्ट्रभाषा के तथा सारतीय विकास के सारे श्रेमियों को इस समाचार से हवे क्यों न श्रीमा ? बात इस ब्ह सक्ते हैं कि राष्ट्रभाषा को पूर्वरूप से सरकारी क्षमकात में सागू करने में उत्तर प्रदेश सारे देश का नेता क्या है। क्कर प्रदेश बांद देखा वाये तो बेसे भी भारत का प्रमुख पांत ही €। हमारी ऐतिहासिक वर्षियाँ स्मा बहुता सरत्वती की तिनेकी की भारायं भी बड्डां पर हैं। महा-श्रुविसार व तुलसी ने भी बहां पर ही अवना कान्य रस सारे देश को विश्वाया । विश्वास पवित्र बचरियां भी यहां पर हैं। मारतीय बादाश में चमचने बारी दिवा सर्व जीवन भवांका पुरुषोत्तम राम कार, होपाल क्रम्प भी तो इसी भारती पर हुए । पुत्र विरजानम् **क्()**ले देवडा ने ब्रयने प्यारे शिप्त हेब इंशानन्य की वेडप्रकार है स्रोवन दीचा मी समरा में दा की। राष्ट्रकृषि मैथिसी, निरासा, कृत, सहादेवी वर्ग क्या प्रसाद क्षे बही की विभूति हैं। मारत वृदे समा क्लेमान स्थाक-#oft भी इसी पवित्र मूर्गम क्षे देन हैं। स्वरान्य में इस मूनिका क्द कहा मारी द्वाम है। यह अंब नेबाबनासाहै। बन ४० दा

तराच्य झानोसन औँ यही ते कारम्भ हुमा या । एत्तरह् वर्षे कं याव राष्ट्रभाषा क्रिन्दी को अरकारी काम काट में जागू करने में भी उत्तर प्रदेश ने सारे देश की Lead किया है। इस क्षंत्रद्र पासन की आत्या में इस क्लर बरेश को सर-कार को हार्दिक क्वाई देते हैं। इस से भग्न शक्तों को सी प्रेरका मिलेगी तथा यह हीनवाबना दर होने की साथना बढ़ेनी कि कंग-रेबी के विना कास नहीं चलाधा

वा सक्ता। काव शतरह वर्ष देश को विदेशी बचा से बसग् 🏢 हो गर परन्तु राष्ट्रभाषा के साथ जो सी किसराद किया जा रहा है। उस केर किसे 30स नहीं होता । एक केटबा १६ वर्ष के बा**इ एम**० द० **इंट** सेवा है। इंडम्बू दितबर दुःस है 🛙 उतरह वर्ष के बाद भी झाज मारजीय नेता बहुते क्रिते हैं कि प्रगरेजी के विना काम नहीं पत खबरा । विकरी वडी सार्वास**क** रासता है। राष्ट्रभाषा का किवना मधाई बेते हैं। धपमान है। इस वरर प्रदेश के इस श्रीपत पन का स्वास्त काले हुद करन प्राप्तों से भी राष्ट्रभावा के मान के नाते कर से सी प्राप्तेक शान्तों में इसे काग करने की बाहत

बहेंगे № वपना बामकान हिन्दी में बारम्भ करें। -- त्रिश्वक्यत यह श्रनपम दश्य

करते हैं। पंजाब की धनवा से

गढ दिनों भार्य प्रादेशिक स्था पंजाब के कार्यकर्श प्रचार भी सा.

११ विसम्बर से १७ विसम्बर तक ओ श्रा**वदेव का महान** यहा क्या च्या सम्पन्त हमा । वह द्यव बनुदर ही या । श्रावेत्रगत के वरक सन्त वस्त्री महात्मा हराकर स्वासी की महाराज न अपने-इक्टबर्स स्थल समय से समय निकालकर इस यह का सक्रा बनना स्वीदार दिवा । प्राप्तःकाम यह पत्तता तथा रात को पुत्रव महत्त्वा भी का मधुर त्वादु दवन् बन्दासवार भरा शबदन चलत महारमा जो के जीवन व बाबी में सच्मत्र भारी ब्राडर्यय ठया बाह है। दोनों समय फितनी इपरिवर्तिः नर-प्रारिको की बद्धा उथा परिवार में सा. धर्मपाल थी, सा. इन्द्रसेन वी, ला. साववाल जी भे मवाल जी सारे भागकों में सात्विक भावना

से बहादि के इस कार्यक्रम में विकरी मद्रा शे--राध की क्या में दिवनी ससी होती थी-यह दश्य मूलेगा वहीं । धनाक्तपर्मी ब्बासिस स्थान मी प्रेम सं छबसे पहले प्रधारते से । सब है कि उड़ा सहारमा भारतः सामीशी बाजारं वहां का क्या-क्या भागन विमोर हो जाता है । तीन दिन अमृतस्वाह् 🗊 चळता रहा । जो देखा भूरोगा नहीं और जो सन वार रहेगा। इस बी हा, इन्हरेन थी के सारे परिकार को बहुत-बहुत

### श्रोफेसर शहर जी

शेफेक्टर रुवम पन्त श्री शास एम. ए. आर्थ कालेल कालीका चार्व समात्र के समस्ते सितारे है। व्यक्ते के संगठन में भारी बाब कर रहे हैं। सुभार तेसक ब क्योजस्वी दक्ता हैं। गत दिनों काप को वह किसी भाषत के बाधार वर वद्य सिया गया। ऋभियोग चस रहा है बसानत पर रिहा है। च कि प्रकटशा तर है उसलिए इस

पर यो दिप्पाची सरी बदना चारते । उन्हमेन जी के परिवार में जो **इ!—बा**ये समाम से बलपुर्वेश कहना चाहते हैं कि एत के केस पर पूर्व रूप से सहयोग देवे । वाकि येसे योज्य सन्त्रत काशाह पूर्व हो कर अपने अभियोग . भी इर प्रकार की तथ्यानी कर सकें। बोई स्वृतवा वहीं रहनी पाहिए।

#### शोक महाचार

होशियार पुर सी. ए. थी. कालेज कमेटी के श्यान भी चीपरी वक्तवीर सिंह भी के पिता जी का वया व्यभी २ उनकी मावा जी का विथन का दुःसद समाचार सुन कर इ। देक दुःल हुमा। एकदम दोली भागात हुए। चौधरी जी के काळ इस महान् दुःख में ब्रायं जगन् बहुत दुःसी है। ध्सु से दिवंगड बात्माओं की शास्त्र क लिय बावंता करवा है। मेलरास कार काहियसां के सरस्ती योग्य सरसे साध्या ६ गरासम् औ शर्मा की वान्या पर्भ पर्ला के खर्भवास के दःसर् समाचार से वसपात ही हणा। स्वर्गीया देवी जी दिवनी सार्विक, इन्निट, समाब की कर-वक काम करने वासी सी। रनमें विना समाव सुना हो गया है। श्री परिवास की को नहीं साहे समाज को धारी पक्का समा है। वन पर नजाशत में हार्दिक सम-वेदना है प्रभू पश्चित भी को इस क्षापात पर वैश्वे प्रदान करें। देवी जी की कारता को शास्ति वेर्वे ।

### श्राल इंडिया दयानन्ट

साल्वेधन मिखन होश्यारपुर वर्षसान संहशाई के कारण श्रपने कर्मश्रारियों को जिलका येतन महरगई सांइत सी हपवा या इससे क्य है, सन्हें १-११-१६६४ से सेवर ३१-३-१६६४ वक पांच १९ए मासिक व्यविक देता स्वीकार किया है । क्यापका शर्भाचनका.

रामदास प्रभात विकास ।

स वस्येताच्छक्रमकावमञ्जाकातांका **भेग्रजस**पाप पितम । कविजीतीती. पर्वितः स्वयम्बूर्यायाकव्यतोऽर्थाण्-व्यवपादवाक्तीध्वः अक्षायाः ॥

बला ४०-६ इस का क्रमें पा-मारमा के स्वरूप की प्रतिशादित स्त्रते वावा है । वैसे-

बष्ट (इंडवर) सर्वेध्यापक गण-क्ष्यावक शरीर तथा शारीविक विकारों से रहित और बाड़ी और मस ६ वन्यमों से भी रहित शह. श्रवंता. चन्त्रयोगी, सन्।तन, खर्च सिंद चपनी सनावन प्रजा के किये सनावन विद्या को बोध कराता करेंट क्षमें पक्ष का विभाग बरता है अह सब जगड परिपर्यों है । बज वेंडबर के स्वरूप का बर्शन जो बेद ने किया है देशा क्याचे और विज्ञान भुष्य है। समर सब तरा ईसाईबॉ के सुदर का खरूप भी देख ओजिने स्त्रहा ने जब अयत बनावा तो ठीस देस तिवा कि धनका है फिल्हु कामी नद्दत देर नहीं हुई थी तो शुदा (बड़ोबा) ने देखा कि सनुवर्शे की तुराई प्रश्चिकी पर कहुत यह गई है...तो यहोता पृथिशी पर सन्त्य के बनाने से पत्रकाना और वह मन में व्यक्ति सेवित इक्या। मो यहोबा में सोपा, कि मैं बतुष्य को जिसे मैंने सिरवा है, पृथिवी के ऊपर से मिटा दुंबा, नवा सनुत्रव, दवा प्रत

क्या रॅगने वाते चन्त्र, क्या ग्राह्मश के वसी सब को मिटा दूंगा। क्यों कि मैं इन हे बनाने से पद्मताता हूं। क्षत्वति ६-४-६-७- देशिये विद्या विवित्र सुराहै।मनुष्यति तक्षके विचार पापियों की स्वर्ग में डाल दे वेसे में हुए गरबह की उनके साथ परिन्दों परिन्दों की है सबीहों को मिटाने पर कटिकड हो गये और मिटाने के परभात शतन्त कैसे

रुपं वद्य भी जरा देखें :--'सराने रानी बरसाकर सब का किनारा कर दिवा शिवाए नह भी नाव के। जब बानी सुवा तो **शह की बा**प भी किनारे पर समी हो

### **ईश्वर का स्वरूप**

नि०--श्री पं० देव प्रकास वी तरुवैन मध्य प्रदेश।

### 

किये तो लशा ने सशत्रही वी व संवी...बीर फिर बड़ा कि फिर सारे बानदारों को उत्पाक ना। तरपश्चित-२० से २२ तक कोई सदब कीर शेष्ट सन्दिष्ट बाला मनुष्य वर्षि पेते स्थान से शुकरे बड़ां आव में जांस बक्ता हो, तो उसकी दर्गन्य से उसका दिमाय केक्टार हो आपना किन्तु ईमाई हा लगा है कि मांच कक्षने की वदन से बड़ा सानश्वित होता है और फिर वडां वह ही नहीं कपितु प्रसन्त डोक्ट यह प्रतिका की कि किन भारे जानदारों की न मार्चवा

करित में बच्ची देकर सन्दः की मेंट

स्त्राचि इन्२० से २२ वक किर देशा निर्वेश विकार रखने वाक्षा ल्या-क्रमी तो वह कह रहा मा सम प्राराधारियों को सदम कर इ'ता, भीर श्रव यह रहा है कि क्रयन बार्स्शाः

क्यों रह: वये तह: वट: तूप्ट: चरो परो ब्राव्यवस्थित चित्तार्था त्रसादोऽपि

मयंद्राः

टोब वही हात्तर ईसाईयी वे सुद्दा को है एक एख में रूट जाता है एक चला में सन्दुट हो जाता है देश सुराक्या सुराही सक्या है तो बाढे तो सब बेगनाडों को जीव के बाट श्वार है झाँर जो जाहे वी नहा था क्या भरोशा व ताने स्रोर बता प्रयक्त बर है।

ईसाई खुदा वारोरवारी है राकृत **प्रम्**तेसा शह गरा त्य कोई पुरुष ब्राइट पी पटने औ वस से मस्त्र वद करता रहा... उसने कहा तेरा नाम अब बाक्टब न रहेगा इक्षापेख रक्का यदा है, क्वोंकि सू परमेश्वर से क्वीर मनव्य न्द्र ने इस परिन्दे और परिन्दे से भी तुद्ध करके प्रवस हुआ है... क्ष बाह्द ने बहुदन क्षत स्थान का नाम एनी दश स्वत्यः 🗟 प्रमेश्वर की झामने क्षामने देखने पर भी मेरा श्रमा सच गवा है। **उत्पत्ति** ३२-२४ से ३२ वह ।

ईसाइयों का शुक्क सी सूच थिन्दा दिस है यन की मीज आई वो राध मर करती की करने में भूट गवे. परन्तु न जाने झाज **ध**स निराशका क्यों का गई कि कुशी अना वो दूर रहा किसी के साथ हाथ मिलाने भी नहीं भाता। हो सकता है कि देसा शरीर चारी सदा कडी विज्ञास के चक्कर में बीन

चा गवा हो । सदा साता पीता भी है

क्षव सदा शरीर बारी है तो काश पीना मी इसके शिवे जाव-श्यक है सो बाइक्स के क्ला ने इसको भी पुरा कर दिवा, जैसे इक्सीस प्रये के शंबी के शोक स्की पास के समय तन्त्र के हार पर बैठा हुम्स था, कि-बहोशा ने उसे दर्शन दिया

(वो स्मीर साथ दे) 'शह डीह कर इवाहीन स्वकं पास गया, और ब्हा', दे ब्लु वॉद सुकपर वेरी अनुबद्ध की दक्षि है तो अपने

हास के पास से चवा न आ.

बोदा-सा वक साथा शाथे सीर

अपने पांच योक्यों क्षीर वस

के तमे बैठ जाओ, और फिर

मैं रोटी का एक उक्का से बाद

कीर उस से तुम क्याने-अपने जीव

को ठंडा करो... श्रम्होंने कहा जैवा

त चढता है वेंसांडी कर सो

इमहोस ने तब में श्रप्ता के प्राप्त

वर्ती से भावर वटा शित सका

वैश क्रि से गृन्य, बीर उनके

का. फि...कोमस स्टीर सकत

बक्क्स क्षेत्रस्य सन्तरे शेक्स को विका

परीचा परिसास कार्य विश्व विद्यासय वदीवा हारा १२-१२-६४को स्वातिका परीका का परिचाम पोषित किया गया निभ्र हाजार्थ सारती समग्रहण "दशा" न्यावासाचार्वा योगित की

गाँ। चनका कमानशार साथ---(१) **इ**० रीका शासराव इश्वय में की (२) आराक्का बाबुराव द्वितीय ... (६) ६० वकावती शासनी भाई ... (४) , विश्वा शामकी मर्छ , (t) <sub>अ</sub> राशि जावबी माहे

था, क्षेत्रस इनके ब्यागे वर विवा... धीर वे साने सरो 15व धनोते इवाहीय से प्रत की पत्नी सामा के विषय में पृद्धा कि कहां है तो सब ने बहा तंत्र में है, उसने वहा मैं वसन्त ऋत में फिर हेरे पत्स काइंसा, बीर वेरी स्त्रे सारा पुत्र जनेनी । यह सुन कर सारा हंशी...तब बंहोबा ने इब्राहोय से ब्बा, सारा थह कह कर स्वी हंसी...क्या वहीवा के ब्रिश कोई काम बहित है। इस्वति १५-१ से

धनाडीम सीर **रहो**वा की बातचीत है इस से सदा का भोगन बरना मी सिंह है। ख्वाको संगुली भी है

११ तक आगे १६ से ३१ तक

बब परमेरवर मुखा से भीनी पर्वत पर ऐसी बात कर जुड़ा, तब इसने **दशको अपनी अंगुर्शसे सिम्बी** हाँ मादी देने वाली प्रश्वर की दोनों परिवासें दी निशंसन ३६-१८ कहां तक खिला वाने ईन्बर के यरोरकारी होने के सिए तो सारी वादवस मरी एवं। है वाठक सही-दव विचार करें कि ऐसी प्रश्तकों को सानने बाका मत क्यी सकता हो सबता है--

बार्ष बनत के वे मिनों की बड

वैविक पर्मे पर सर्वेश्वय वेट प्रधान

ें बी धर पतिदान हका वा। येट

अक्टम भी के सीर गति वाले पर

विश्वामों की मृ'सवा देती चली

कि संसार देश कर देश रह गया।

इपनेफ प्रकार से कार्य वीरों ने बीर

गति गर्ड । वहां सा सीहर जिसा

के सोविन्द राज जी को जिलाज के

रजाचार गुश्वों ने जीवित काग वें

चैंद बर चला विया । मैं एवं भी

ब्रार्थ जगत के ऋषि श्रंक में लिया

कुड़ा हुं कि समका अपराज यही

ना कि वह देवरावाद के स्वराध्य के

क्रिय संघर्ष बर रहे थे। वह देदरा-

बाद का सारव में विजय बाहते थे।

देश मक्त कार्य भीर जब बरा

परन्त माल समि के दिवों 🖹 रचा

के पण से विज्ञतित न हका।

समय बाने वर उनके जोवन व

अधिदान को ग्रामर क्यानी

**धार्य** जनव में सविस्तार तिश्व'गा ।

येतिहासिक रहिर से हम आयों के

किय बार्क्षण का बारण है परन्त

इससे भी बददर एसके जलाही

माधरिकों का धर्म ये य हमें बाक-

र्वित करता है । मान्य सामार्थ

बरायं प्रथश में यह लेख भी जिला

**या**। मैं दहां तीन दार हो चाया

हा। नगरो के आवंड्रपार, आव

सम्बन मदाल व वस्ताही है ।

शत-संबंधा ५४०० है । हिंबी सत्या-

sac में बड़ांसे ४० वीर शेख गय

से । महाराष्ट्र के इस मान में आर्थ

समाध के वपानी लागी समाज

शनरो मंत्रोटो पर कब वर्ष पर्व

मी बेट प्रकाश की अन्य-स्थको

से०--थी राजेन्द्र वी 'जिश्वाम' स्थानन्द कासेज सोसापर

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* में कियब दशमी के राशिव पर्ने पर गंडोटी कीशह गया । विजोटी के भी कामा विकासक के सम्बन पर कक्षा प्रदर्शनी किन्तु लाट **की को ≣** को करपना उच्चर मारव वे पाठक वर ही नहीं सहने। त्रडी से लेकर ११वी तक व दात्रों की कमा में इतनी सचि देखकर से र्वेग रह गवा । पंताब में तो बड़े २ नवरों में भी सम्भवतः देसे र क्याकार व निर्धे । महाराष्ट्र में की बाव है। कता वेस स्वामाविक है। परिवार वे ही बना के संस्थार विकासे हैं।

वसा प्रदर्शनों की सुरुव विशे-क्या वह थो कि सारी कला राष्ट्रीय सांस्कृतिक एवं रीविश्व राष्ट्रि से वी। 'भारत इसीन' बाम ही एक सोकी माठकों के छात्रों ने दिसाई कड से बनात को थी। इसी प्रकार दसवीं के एक कक्ष में विश्वास सम्बन्धी आनकारी देने का एक उत्तक श्यास था। हुनल्या चेत् प्रवक्त का चित्रान समय का एड वित्र मेरे मान्ड इदय को प्रमास्थित किये विनान रह सका।

अस्त्रकान दास जी ने सहीद की मेरे ववन सङ्गत हो तथे। विजय दराजी के उपसूद्ध हैं नगर कीर्यन र समा में दो से खेन हमार व्यक्ति सम्मिति 🏢 : क्साह का कोई दिकाना न या । वी रामचन्द्र थी, महर्षि द्**या**तन्द्र की, स्वामी महातस्य वी, ताः साधक्तराय, महाराज शिवाओ, बोर बेदप्रकारा, ध्वारमा इवामालक र्स भावंसमात हे बोक्तियों शहीहों व तेताओं के जब कारे सगले हा। क्षम्रेज व स्टूजों के क्षात्र, कार्य से दर वार्य समाज सवी वरिवार वीर इस में लूर्ति कुंबने शक्ने वीर के सदस्य के दारक विद्य र प्राम हे नेवा २६ व्यवस्त हाना ध्यविन्तरा व बास्त्रीवता स्र प्रस्तव कर रहे थे। क्रम बब हमें वहां हक्या । गंशोरी

चेतना की ज्वाला व ग्रातीन की मशाधि

क्षेत्रपापर जाने का भी काकसर दब को सो बागीसाथ औं के अप में एड सदा बारो, गर्सा व सिदास वे मी तस्य मिखा है। जो कार्रा-नाथ को०२० के विद्यार्थी है नंबोटी कार्यसमात्र को वर्तिकवित्री का ब्याधार यही यवस है । वरि निरन्तर प्रयस्न किया जावे ता इस नगरी को बाहरों आवें तमरी बनाया ज सकता है। सवास ५८ पर देतिक धर्म व चार्चसमाज अवर **में चार्य समाज के** तिए

किलना उत्पाद क प्यार है इस का परिश्य 💷 वात से मिलता है वि विश्व इसमी के इस समय गाउ में सररिवार गंडोडी अवस्त्र के सिव गवा । साथ विः समझन दास वो के परिकार के भी कुछ सदस्य वह वरापि स्थलप शिक्षित हैं सर थे। इस सकते सोवा कि भ्रमण स्थनसोत् व स्वामी है । के लिये गांव के माहर ग्रम किर कर बाद में बार्च समाज का संदिर देर प्रशस्त्र जो का चलितान स्थान चारि देखेंगे और कार्य वस्त्रक्षां से मिचेंगे। नहीं केतट पर इस

भोजन कर रहेथे कि एक बार्च क्ष्मार दीवता देखा ब्रावा । सांव के किस्रो सरदन ने सुके देखकर समाद में सुरता ता हो । आस वीरों का पता वज्ञ समा। हम ते भ्रमस् किया। जिस क्रेम का परिषय वड़ी बार्व परिवारों ने दिया यह ऋक्ष्रबीय है। असी पाति के बंधनों व सदियों के क्षेत्रह में पंते पंते नासपारी ब्रापं स्था प्रस्था पर सक्ते हैं कि परिकार सम्बन्धियों व प्रदेश

नगर जाने को जो भी चाहफा है व सच्युव चेवना की व्याका देशी। अमे अकारा के दिनों में

मिखा। **बड़ां** हो सन्दाह र**हा** १ विश्वविद्यालय का शिक्ट था है कोन्द्रापुर के राजा शाह वर्ष रिवामी महाराष्ट्र के वंशम थे । परोपकारनी समा के वह सम्बद्ध मी रहे। वहां प्रसिद्ध कार्य शिका शास्त्रो विकियस शा॰ **बासकथा** भी ने वैद्धि **वसे प्रवार का किसी** सबव सदान कार्व किया । सदेव क्ष्मान्याय श्री <del>।।।</del> श्रा⊁ श्राविज्ञान-वन्त्र जी वस ने भी वहां सेवर की वन-मामस पर आज भी का॰ वातकृष्ण जी की छाप है। क्रोन्हा-पुर मेरे लिये गौरवमव प्रतीत की समाधि थी। वहां चार्यसमाञ्च के प्रसार के लिए मैंने जो इस हो सका किया । एक कर्मेट बार्म संस्थाधी मुक्तानन्त् वहां रहते हैं ।

दन के वयोशन से ब्यार्थ समाध की चर्चा वहां है। वह व्यक्तिगक सन्पर्के स्थाहर साहित्य बांडले रहते हैं। भते, नंबे शह कर को धार्व समात्र की सेवा कर रहे हैं। समाज को वहां धाव भो श्वास के त्रवस्य को सम्बन्धि है।

कें में वहां इस साहित्य वांटा । ब्यौराइ के श्री इरिश्चन्द्र ग्रह जो जिनकी उत्तर चर्चा की र्था देशन के बड़ां कर शिक्स M. A. व M. Sc. बादि क्याओं में पदने हैं। इस स्थानस्य कालेक शोसापर के पराने बात है। इन से सम्पर्क जोका। इन पुक्की ने वेद सम्बेश सनाने में मेरा साम उठावा। यहां ससाज सेवा का बह दावित्व बन्होंने स्वयं संमासा व अभी उब में से एक का माशर्म सपदान दास श्री को यह पत्र सी. कारा है। किस से सार्ग दर्दन का श्रेम हरद में देशा श्रीत हो र्माना नवा है।

(थेर पुरुष ६ पर)

सेवो नी इरिस्थम्य जी अस-साथ मार-सार प्य-प्य कर लाखें व काशियों में दवकों से सम्पर्क ओड का बचार काते रहते हैं । वेदा अक्टा प्रकृतिक वालों है क्टी

बार सीमा गांव के निकासे हैं।

ं कड़ होता है। माप गंनोटी के

बडो वर वस्त्रेस करना आक-स्वक है कि इस नगर के बार्य बोर | गया है कि बार-बार ग्रहोत्रों के आर्थ प्रादेशिक प्रतिनिधि समा के नत साधारए अधिवेशन

ं तारीस २१-२-६४ में सर्व सम्मति से स्वीकृत

#### प्रस्ताव

यत प्रकाशन में कुछ भूल हो जाने के कारल पुनः प्रकाशित हो रहा है।

सार्वकारिता वर्षितियां कार संकारण वह शांवारण सांविकार विभिन्न क्यू वो हार अध्याहन पुरस्क पेर्स्टस्त में देशवारे के उठ था पठ में में वर्षस्थ्य के गोर पूचा त्या विशा है हॉट के हेशका है (इस क्यूंट देशक के दूर प्रस्कार है कि वेद त्यार त्यार देशवां व स्थार है शक्ते मिल्ली कार सा संवोधन, प्रस्कार, और परिचयंत्र करने वा किसी को मी संवकार नहीं। यही कारण है कि समीरण से सात वह सवस्य को का होते हैं।

भी विश्व वंधु भी का वह दुस्साइस समस्य मार्थ अर्डन की दुसीय प्राचीन संस्कृति का सुक्षोच्छेदन हैं बादः वह क्रमियेशन :---

(१) पंकास विद्यात विद्यालय से सामद साहरीय सांग सरसा है कि यह द्वारण हात पुरस्क को साहर्यकर से विकास है।

(२) सरकार से बहु मांग करता है कि इस पुत्रक की समल शरिमां बहुं भी भाग्य हो सकें, तुरुण भक्त की आने, नर्नोकि इस पुत्रक की समल काम जाति की धाकारों को देस पढ़ें पत्री है।

(३) यह व्यविदेशन समस्त मार्थ क्ष्यानी से सम्बद्ध निवेशन करता है कि विरावेशनराज्य वैदिक अनुसन्धान को कि निर्देशन कर से आ पी. विरावनमु थी की कान्यकृत में आयेक्सरत के सिद्धानों के विराव

### चेतना की ज्वाला व चतीत की समाधि

(प्रस्त ४ का शेष)

उपरोक्त शिविर में साट प्रध्यापक विसिन्त स्थानों से बाद से । बबको प्राय: वह शे ज्ञान था कि कार्यक्रमाज एक सुधारकारी संस्था है विसक्ते कहर देश अबद, निर्भोक एवं मुशिक्षित पुढिणादी तथा बसीदावी विष के होते हैं । कार्यसमाध्य शुद्धि हरता है । यह भी प्रावः बहुतों को क्या है पर झावसमाज देव को परम पर्य मानता है वह केवल कर्यी इते-सिने प्राय्वापकों को पता या जिल वक वि० जगवानदास जी पर्ट क क्षके या जिल कर बनके द्वारा केंद्रक सन्देश पहुंचा। यह दिन चर्चा इस्ते समय कोलाहपुर के जाञ्चादक योगी (वो संस्कृत व सराठी के स्स०ए० हैं और M. E. D. मी हैं) कुछ रांकार कर कैंटे मैंने बसर से केंद्र के कई मन्त्र व सुक्तियां सुनाई तो वह रंग रह यह हैं । बाएका बेद का दुवना अध्ययन है ? मैं बोक्षा मैं कार्यक्षमान का साधारण स्वर्षित हुं परिस्त नहीं, संलुधक भी नहीं पर परम धने के हैं इसकिय कल के को सममता है। वोसे किरे आर्थ समात केंद्र को इतना . प्रविद्य मानता है तो फिर तो प्रत्येक हिन्दु को कार्यसमाजी बनाता कडी तो यह वादि नहीं वप सबते। मिन कहा कि वेद विरुद्ध कोई वाट हुएँ भाग्य नहीं क्षत्र उनकी भीर भी गड़ा हुई शोग ऋषि को सुनना प्राहते **क्षे** पर समस्य कीन १

संपांठत का से कार्य पर रहा है, के साम कोई सम्बन्ध न रखें इस क्षक े कि वह इस म्यवहारमें परिवर्तन करके इसे बार्स किस्तुनातुकूस व बता के

स्थापक सानी पिंडीहास कतुमोदक-पं० स्ट्रांच संबंधनमधि से श्रीका

भार्य समाज श्री गंगानगर द्वा २५ वा वार्षिकोत्सव समाह

कार्य वयात्र में शंतावार राज्याम का प्योक्तां व्यक्तियां मार्थ करिया है सिकार के समझ्या पूर्वक स्थापना है। यह इस स्थाप में कार्य के सार्व व्यक्तियां कर राज्या कर्म व्यक्तियां करा स्थापना के सहेप्यत्यां के स्थापित कर राज्या के सुराधित शिक्षा कर सीवार वरण की स्थापना के स्थापना के स्थापना के सुराधित शिक्षा कर राजेस्सानम् की सहराज की स्थापना है। स्थाप के सुरास शिक्षार सी स्थापना करायां की सहराज की स्थापना है।

> संत्री कार्ये सम्राम की रामानात

मान के बोनवारी पुत में कावसमान को महा भारी काम करना है। जीवन में मारी कोर महाति है, बातावरक्ष तीन जी, मुद्राईसों फेस मही हैं। मन समान कमा ना रहा है। बायार का युक्त भौर ही तक्ष हो गया है। कार्यक्षमान से मंद्राई के पुत्र भौर का मी तक्ष मान को सारी रसता है। मिर्फ माई मीड़ी स्टब्स में तक्ष मान को सारी रसता है। मिर्फ माई मीड़ी स्टब्स के कमा को क्षाईसों कोई

# शोक प्रस्ताव

कार्य अपेरिक्ड स्था आक्रमर में ट्रेनिक प्राप्त के माखिक भी वेरिक्ट की सम. य. क्या भी के ० मेरेल औ एक. य. की पूच्चा माता की के शोक जमक रिवाय पर चारपी जा॰ २० रिवामर १५ की क्षेत्र कार्याय राभा की बेटक में इस क्षमण में बह शोक समान पान किया है—

वात्र करोहक व्यक्तिय कार्यों कार वार्यवार में विकार के स्थान कर विकार कार्यावर में विकार के स्थान के स्थान के स्थान कर विकार कार्याव के स्थान कर वात्र के स्थान कर वार्यावर के स्थान कर वार्यावर कार्यावर कार्यावर कर कार्यावर कार्यावर कर कार्यावर कार्य कार्

झामपन्धं -सन्त्री भावेषादेशिक स्था, वाकस्था

# स्वर्गीय मा. नन्दलाल जी की याद में

### WHENCE CONCRETE WAS A PROCESSION OF THE WAS A PARTY OF THE WAS A PARTY

जाकन्यर में स्वर्गीय जास्टर अन्यकास की कार्य समाय के बहुद कड़े नेदा थे। की. ए. वी कारोब तथा बार्च शहेरिक समा के परिवार में चनका स्थान वन मिले चुने नेशाओं में होता था। श्री. ए. वी. काहेज क्लेटी के अवान रह चुके थे। जासन्बर में **डी.** ए. वी. कालेज वथा ऋपनी सारी संस्थाओं, कार्यश्रमात्र किला क्यार्थ प्रदेशिक सभा के संचासन के क्षत मास्टर जी का बहुत वहा कीयदान है। समाज के बहान स्थान से। बन् का परिवार आवे परिवार है। इन के सारे मुप्त कार्य समाज के बड़े जस्त वरा क्रमिता सरवस हैं 1 ता, इन्ह्रसेन बीता सभा के कार्यकर्ता करि

प्रसान भी रह चड़े हैं।

बाएने पत्र्य त्यमीय पिता नी के अध्यदिवस के स्तृति दिन की Amrile से मनाने के सिए अपने बार पर शामबेद का महान यह किया। तथा कथा का श्वरण किया -धाम क्ष्मभी सम्भ पुष्य महास्मा क्योद्धन्य त्वामी जो सह के ऋशा वे अक्ष को महास्या की की क्रमुखबरी -कबा दोवी थी। **ग**न ११ से १७ क्य. वर कर्म मंग ही चलती शही । यह में पे, रविष्ण की शक् स प्रती प्रसाद थी. एं. प्रिकोक चन्द्र शास्त्री शामिक वे । एक्स -बाइस्था वी की बादु मेरी क्या को पर्व ६ नेका राम की चेरिकारे जिंतर के मीटि मजन क्या करने में कोई त्यनता नहीं थी । **आ**चारी बडेश जी के बसा वक्षाने वादे गीव होते में ाचारा विशास - स्थानान संपास**य** भरा रहता **बा** । अवस्थांभ्य नगर के जरनारी

पचारते रहे । एतिकार के की मान पर्मगास की, सर, इन्द्रकेन जी, सा॰ सःपणल ती. बा॰ हे प्रपात बी सारे मर्थ तथा इनके वर का होटा बढा धर्म के रंग में रंग हुमा कितनी कदा से इस कार्य में चगा इकासा। इसे देखकर तो चित्र इसन्त्र होता का। यन होते हुए भी इदनी सारिक्छा, सरस्वा वया बद्धा भावना ।

पस्त सहात्मा जी की कम स्वर्ग एक बाद है। मस्तो भर देवी है। पर्णाति के दिन तो सारा वातावरस्य दिवसा सुन्दर बना वा । कुव महात्मा की का सारे परिवार को श्रभाशीकृत बढा मनावदासी ब सीटाधाः। स्वर्गीय नास्टरः वनकास वी के प्रति व्यपने दिस के अरगारों को प्रकट करने में

समझनपर्ये के प्रसिद्ध विद्वान ए सैरक्षेत्रसम् वी रास्त्रे, सरहार इरिकेंट जी ८, रविदत्त जी, मां० अस्त्रक औ. ८ जिलोड पन शासी, य॰ कुन्दनताल की, रं० क्रजीक्सर वी दैः शिवसम् जी के आज किया । सबका धन्ववाद प्रकट करते हुए परिवार की फोर से बब बा॰ इन्द्रसेन भी बोसे हो गता वर बावा, कांसे वर बार्ड. कोळके-कोसते रह गए । सबकी क्षांकों में श्रांस का गर। बासिक शस्य वा । वह समारोह स्मरय रहेका । इसने वादे सब २१-नारियों का इर प्रकार से सम्बान सत्कार

सन का तेव बांटा गया—सर्वीय हरेंच वर ।

( गतंब से झारो ) ह. प्रचार कार्य-वैशे हो बार्च समाम का कोई भी सहस्य देखा नहीं वो क्रिन्दी श्वशरक न हो,

≆ाव'

फिर भी इस के देशनिक क्षीर व्यवैतनिव इक्क्सें इपदेशक हिन्ही का प्रवार करते हैं। शक्तिक बाराम, विहार चार्त की भवदर जातिबों में क्रीर विदेशों में भी इन कोगों से प्रकार किया भी। क्ष रहे हैं। करोड़ों टीक्ट सकत बांटे बाते 🕏 ।

u. एव-पत्रिकार्वे — भावसमात ने ही हिन्दी में परिश्ववर्षे निकासने इसी को देखकर कायसमाज ने की पहल की भी कौर चान सेंक्ड़ों, खुद बान्दोसन का पुनक्दार किया

चार्य समाज के उपकारी भी खंबे जो के बारत दिवसासन के पर्यात् वनगवाना के बांकड़ों से पता बसना है कि हिस्टओं की संस्था दिन प्रतिहित कता होती सा रही है कीर हास की अव-सक्का से यह दुसद बाव प्रबट हुई है कि भारत में बीद्र मतावसम्बी बहुछ बढ़े हैं। ये कुछ निम्म आर्था (शह) रुद्दे जाने वाले स्रोग ही बने हैं। इपर ईसाइबों की संस्वा भी विक-प्रतिदिन वृद्धि को प्राप्त होती आ रही है। यह समत्या केवल कांक क्ष कर तेने की नहीं है सानित नत यह ग्रम्भीर समस्या है । **साम** समात्र की स्थापना को वर्ज की अने व हिंदू विचर्ती हो गर वे ।

中原表现现在表演家在表达·液液原光表现在表演教徒。 त्री पं० सिवसेन जो चार्यसमात्र की श्राने वालो बीडो व होनहार पुत्र ह हैं। समान के निकांतो, कारों सवा बाप करानी के गंभोर क्यारक हैं, बारकी सैदांतिक रचनाएँ समाचार पत्रों में बकारित हं:बो रहती हैं। सार्व सिद्धानों पर आपकी लोटो बड़ी सगमगदस पुरवर्षे प्रकाशित हो पूर्व है। सार बगत में समात्र कार्यों से सम्बन्धित लेखवाता पिछते बंदी से रकाशित हो रही है। एसो का कवशित अंश इस लेख में पश्चिम ।

#### —न्यवस्थायक

इणारों की संस्का में देश-विदेशों में दैनिक साफाहिक, सब्दे साफा-हिक पांचिक मासिक वैसासिक वार्षिक क्रीर कहा वार्षिक पत्रिकार्य निष्यती हैं, बार्यसमात्र ने देश दो सनेद सन्य एतदार साहोपथ

 डिमी साहित्व— विभी साहित्व के अकसार को अरते से बारे समाज के ही जैसकों क विशेष द्वाब रहा है। कार्यसमार्थ विद्वानों ने बन्हर पुसाकें विसाधन हिन्दी बयत में पुरस्कार क्वीर यह प प्राप्त किये हैं। हिन्दी में चनेको श्रेष्ठ सार्वत्त्वदार द्याने समाध

की देन हैं। शक्ति ज्ञान्दोखन शन कर साने के बाद वेद श्रमास

इन संक्षीयां विश्वार वालों के इसका बहुत विरोध किया समस्ति इसे देशों के विकरीत आचारण बवावा ।परस्तु देव वो बंदे की लोज ये गुर्द्ध की योषगा करवा है :---रेज्यार कराय ग्रान्समं देव

क्कोश 1 वद्योऽधवा वराष्ट्रवरितं वः का सुधामि ॥ यक्ष० शश्चम कर्मात्-वे विद्यानों ! विद्या

गवा सम्पादन करने वाले जन करों और देव बच्च या परीपकार करने के लिए बाह्यों (पवित्रों) को शब्द करो । उन्हें बहो हे ब्बराहो (पवियो) रामको जो रोक

(शेष शब्द = पर)

| भाक बगत कावन्तर                                                 |
|-----------------------------------------------------------------|
| श्रार्यसमाज के उपकारी का                                        |
| (शुष्ट u का ग्रेक)<br>विशाली हैं का परित्र करते हैं,            |
| कुन्हारे वन शेचों की में ग्रुख                                  |
| करवाहै।                                                         |
| इस प्रचार इस देखते हैं कि                                       |
| नेर भी सुदि की जनका देश है।                                     |
| क्रिः क्यों न पन्हें शुद्ध किया आव                              |
| बाहको ! वर्षि झार्च समाग गुन्दि                                 |
| आसोपना को व अपनाता तो पता                                       |
| सदी फिसने सप विवर्शीहो जाते। स                                  |
| 🚃 क्षेत्रिकारक ने कहा या।                                       |
| क्रियंतर कर्म समान व होता                                       |
| हो स्थव साथे से कांधक हिन्दुओं                                  |
| के सिर पर इसे चोटी भी विसन<br>साई न पड़ती और योदे ही दिनों      |
| वे शिन्द्रकान हिम्मू-स्थान न स                                  |
| क्ट्र बचन स्थान हो जाता। इस                                     |
| कारण नेद के इस्त्रमतो विकासकंग                                  |
| बारे को बार्य क्ष्माज ने क्षपनामा                               |
| भार्य समाज की मुद्धि                                            |
| -                                                               |
| संस्थार्वे                                                      |
| युद्धि सान्योक्त भी सप्रकार<br>के क्रिये सार्व समात्र ने वर्तनस |
| क्षात्वय साथ स्थान न मालस<br>आरक्षेत्र श्रृद्धि समा, द्वानश्    |
| कारधन ग्राब समा, वनावन्य<br>का स्वेशन मिशन, बन्दर्शक्षयनिरी     |
|                                                                 |

व्यक्ति प्राप्त करेक संस्थाओं को क्ष्म विचा । क्रिकोंने स्वकों क्यित कालम सोसे हुए हैं, उहां

विरोष । काम तक इकारी हिन्दू निश्चों की, **शिवका कास्ट्रब** कर सिवा गया था, कार्यकर्शकों से कारते शास संबंद में बात कर बचावा कीर क्टरे राजे वार्त्यवर प्रविभावकी के पास पहुँचारा । जब रक साधम धी श्री कोर से निजान बोजन,

सुपत्त वाहित्व प्रवास्त वास्तिः, बार्वे समाव, प्रश्लहा-दया व्यापामशाकाओं की सांग भागे पर सुपत १ वर्ष क्य विया आपमा किलें। जबदेव बादमं पो. वा. ४६ बरोदा- १

भार्य विद्या सभा किन ग्रप्त भागी नई दिख्ली ( सर्वाच से कारी )

सालों भीतः गींदः स्थास जो माम संस्था संक्षा प्रविनिधि वि देवाई वन करे के शह किया। दी. ए. की. ऋकुता गमा। इतिजन, बाट स्था जिन्हें य, यस. श्राकाशसपुर शंभवेदे ठाडुर बहु। वास है सन र, वह, श्रम्भासा सगर क्र होगों को सालों की संख्या शं प. मी. कम्मास में गुरू करके हिन्द सकाय में हाक्से

-- 9.1 इन संस्थाओं ने खब बढ़ बत-

मग २० सङ्ख मसकाने कहा, मुक

वाट, गुजर तथा जोवी हास फिये।

किसामा ।

कार्य बसने हैं।

विरोध।

**\$टास**ी इस क्कार से जारे पाठको। थी. य. थी. चकाचीर व्यार्थ समाज ने चनविन्नते स्वकार म, इंबराज व्यवस्था सामक्बारि के इति किये हैं। ब्यां तो. य. शे. वस्त्रीय तक कों देश, जाति धीर प्रसास **वस्त्र**वा सुपार का ऐसा कोई भी कान न शुरदासपुर होता जिस का शरणन वार्यस्थात गदरियासा से न दुधा हो। जैसे सम्र दिवाद **धी. ए. बी. हिसार** बाई'सब जासन्पर नगर २३

निरोध, दिक्स विकाद विकास, मायक करा थियेथ, शिका किस्तार, - वस्ती नी " दिन्द अंग्रहम, समाय सुन्तर, स्वरेशी प्रयाम: वेदिक विकास, पर्मापार, शर्बद्ध वरश्रक, प्रकार रवा, दिन्दी शवार कारि । और की. ए. थी. दशानीर क्रम इस से वी व्यक्ति कारास्त बी. ए. वी. कांत्रक तका देश को वालीक अध्यक्त निम्म

 तांकक्स की बार क थी. य. सँगकात ह. एड. अक्षेत्रर २. साम्बर्गत की बाहर का इरकीर करना पानीपन ३. पार्श्वारक सम्बद्धा की बहुर श्री, ए. बी. कारियां से भारत की बचाना ।

me meren fall in बी कि को भारी भारत सहब वनको ! दुर्वाक्यो ! एको भीत सहिताको ! कामो इस पावन ब्रोप प्रतास के नीचे वेदी की लग बावा में बार्व समाध के कन्त्रे से धन्या विकासर इस देश, बाति क्रीर समाज की सेवा करें।

> ओ पादे क्यपिक रख. सीम देश ते देखा बो दोसों समसर वर्रे र्ताप्त कथिक रख वेद ॥

¥

82 ą ११ ě

8

शै. ए. वी.कन्था शुर**राषपुर** १ नर्क क्रम कावा आक्रमा 😕 5

की. द. वी. बरशारपर च्ह्यसा वेशवर, इरावी 2 ŧ

देखीर बन्या , 文章, 領衛 明

81 र्पाञ्चन हिन्द जी, एस, ए, क्यूना नगर द्वी. ९. वी. शह जी. रम. धार्व सन्या **प**क्षे

बी. ए. बी. सक्षशाय ही, प. थी, शिसला भाव सरबो पत 2

बार्य शया बी. प. वी. देश काडी धार्वकवा फिरोवकुर दावर्ती व बी. य. शे, बहरामपुर

विकास करे नों किसी र ब्दवा शंक, व्रिक्टी -१

वेववं रोड. लांक्सि रें: श्चम सामीरकी वेशो क्ष्मा शका-सीताराम, दिल्की १

बैंडिड नमेरी, चित्र गक्ष यार्ग वर्ड विकार बनगर बरुक, सर्वज्ञान र्खं दिस्ती प य. सह. प्रदर्श

ह्य तुपार

20-22-58 & ME CANNIE वाल्केशन विशान की सुचना है क्षात्रवृत्ति सभी आदि के कालों के किर है। देश्य प्रतिश्च बार्श के किए ही नहीं। पातक शेर कर हैं।

-NACTION धमल्य वचन कामानुसार्का न अर्थ न शक्ता । दानो पुरुष द्यो त **सम** स्वीत

व सम्बद्धा होती है। माता जी बाब बार्ध देनिक प्रवाप के माहित्क सी

बीरेन्द्र की दस. ध. साक्ष्मद, औ के. नरेम्यू की एम. स. देशकी की पूच्या माता भी थे देशान्य का द्रजार समाधार ग्रावश सम्बो भारी शोच व दुःस हका । बाह्म की ने कीवन में चार्स अध्यक्त के श की। भी करिया की व मरेका वी जैसे पुत्र रत्नों की समाम औ वेंट किया । क्यी लगीव बहाराव रुप्य जी के सर्गवास का रूप मना रहे थे कि शब माता भी भी कार्ते वन्त् वर गई । इस आरी क्ट में मार्गवरात् भी बीदेन्द्र शी बरेन्द्र भी तथा सारे परिवार के इ.स. में दुन्ती है शबु से व्हिन्दरस्य कात्मा की शालि की मार्चका परता है। भारी पूर्व में स<del>वक</del>ा र्पारकार को स्थान शासिक प्रशास ni ....et



### CHAPTER XXIV

# THE ATLANTIC CHARTER

My Original Draft of the Atlantic Charter – The President's Proposed Alterations – Our Discussions of the 11th – Need to Safeguard Imperial Preference – The Atlantic Islands – Our Agreement about Policy Towards Japan – My Reports of August 11 to the Foreign Office and the Cabinet – The Cabinet's Prompt Reply – Final Form of the Atlantic Charter – A Joint Anglo-American Message to Stalin – My Memorandum about American Supplies – Mr. Purvis Killed in a Plane Accident – Report of August 12 to the Cabinet – Congratulations from the King and Cabinet – Report to Australian Prime Minister – Voyage to Iceland – I Return to London, August 19.

RESIDENT ROOSEVELT told me at one of our first conversations that he thought it would be well if we could draw up a joint declaration laying down certain broad principles which should guide our policies along the same road Wishing to follow up this most helpful suggestion, I gave him the next day, August 10, a tentative outline of such a declaration. My text was as follows:

# JOINT ANGLO-AMERICAN DECLARATION OF PRINCIPLES

The President of the United States of America and the Prime Minister, Mr Churchill, representing His Majesty's Government in the United Kingdom, being met together to resolve and concert the means of providing for the safety of their respective countries in face of Nazi and German aggression and of the dangers to all peoples arising therefrom, deem it right to make known certain principles which they both accept for guidance in the framing of their policy and on which they base their hopes for a better future for the world

First, their countries seek no aggrandisement, territorial or other.

Second, they desire to see no territorial changes that do not accord

with the freely expressed wishes of the peoples concerned

Third, they respect the right of all peoples to choose the form of government under which they will live They are only concerned to defend the rights of freedom of speech and thought, without which such choice must be illusory

Fourth, they will strive to bring about a fair and equitable distribution of essential produce, not only within their territorial boundaries.

but between the nations of the world.

Fifth, they seek a peace which will not only cast down for ever the Nazı tyranny, but by effective international organisation will afford to all States and peoples the means of dwelling in security within their own bounds and of traversing the seas and oceans without fear of lawless assault or the need of maintaining burdensome armaments.

Considering all the tales of my reactionary, Old World outlook, and the pain this is said to have caused the President, I am glad it should be on record that the substance and spirit of what came to be called the "Atlantic Charter" was in its first draft a British production cast in my own words

August 11 promised to be a day of intense business.

Prime Minister to Admiralty Utmost strength to be put on deciphering telegrams from here during next twenty-four hours.

At our meeting in the morning the President gave me a revised draft, which we took as a basis for discussion. The only serious difference from what I had written was about the fourth point (access to raw materials) The President wished to insert the words "without discrimination and on equal terms". President also proposed two extra paragraphs.

Sixth, they desire such a peace to establish for all safety on the high seas and oceans

Seventh, they believe that all the nations of the world must be guided in spirit to the abandonment of the use of force Because no future peace can be maintained if land, sea, or air armaments continue to be employed by nations which threaten, or may threaten, to use force outside of their frontiers, they believe that the disarmament of such nations is essential. They will further the adoption of all other practicable measures which will lighten for peace-loving peoples the crushing burden of armaments

### THE ATLANTIC CHARTER

Before we discussed this document the President explained that his idea was that there should be issued simultaneously in Washington and London, perhaps on August 14, a short statement to the effect that the President and the Prime Minister had held conversations at sea, that they had been accompanied by members of their respective staffs, that the latter had discussed the working out of aid to the democracies under the Lend-Lease Act, and that these naval and military conversations had in no way been concerned with future commitments other than as authorised by Act of Congress The statement would proceed to say that the Prime Minister and the President had discussed certain principles relating to the civilisation of the world and had agreed on a statement of them. I deprecated the emphasis which a statement on these lines would lay on the absence of commitments This would be seized on by Germany and would be a source of profound discouragement to the neutrals and to the vanquished We also would not like it. I very much hoped therefore that the President could confine the statement to the positive portion which dealt with the question of aid to the democracies, more especially as he had guarded himself by the reference to the Lend-Lease Act. The President accepted this.

There followed a detailed discussion of the revised text of the declaration Several minor alterations were easily agreed. The chief difficulties were presented by Points 4 and 7, especially the former With regard to this, I pointed out at once that the words "without discrimination" might be held to call in question the Ottawa agreements, and I was in no position to accept them. This text would certainly have to be referred to the Government at home, and, if it was desired to maintain the present wording, to the Governments in the Dominions I should have little hope that it would be accepted. Mr. Sumner Welles indicated that this was the core of the matter, and that this paragraph embodied the ideal for which the State Department had striven for the past nine years. I could not help mentioning the British experience in adhering to Free Trade for eighty years in the face of evermounting American tariffs We had allowed the fullest importations into all our colonies Even our coastwise traffic around Great Britain was open to the competition of the world All we had got in reciprocation was successive doses of American Protection. Mr. Welles seemed to be a little taken aback. I then

said that if the words "with due respect for their existing obligations" could be inserted, and if the words "without discrimination" could disappear, and "trade" be substituted for "markets". I should be able to refer the text to His Majesty's Government with some hope that they would be able to accept it President was obviously impressed. He never pressed the point

As regards the generalities of Point 7, I pointed out that while I accepted this text, opinion in England would be disappointed at the absence of any intention to establish an international organisation for keeping peace after the war I promised to try to find a suitable modification, and later in the day I suggested to the President the addition to the second sentence of the words "pending the establishment of a wider and more permanent system of general security"

Continuous conferences also took place between the naval and military chiefs, and a wide measure of agreement was reached between them I had outlined to the President the dangers of a German incursion into the Iberian peninsula, and explained our plans for occupying the Canary Islands-known as Operation "Pilgrim"—for countering such a move I then sent to Mr. Eden a summary of this discussion.

Prime Minister to Foreign Office 11 Aug 41 The President has received a letter from Dr Salazar, in which it is made clear that he is looking to the Azores as a place of retreat for himself and his Government in the event of German aggression upon Portugal, and that his country's age-long alliance with England leads him to count on British protection during his enforced stay in these

2 If however the British were too much occupied elsewhere he would be willing to accept assistance from the United States instead The President would be well disposed to respond to such an appeal, and would like the British in the circumstances foreseen to propose to Dr Salazar the transference of responsibility. The above would also apply to the Cape Verdes.

3 I told the President that we contemplate the operation known as "Pilgrim", that we might be forced to act before a German violation of the peninsula had occurred, and that while this was going on we should be very busy. I pointed out that "Pilgrim" would almost,

### THE ATLANTIC CHARTER

though not absolutely certainly, provoke a crisis in the pennisula, and asked whether our having set events in train by "Pilgrim" would be any bar to his acceptance of the responsibility indicated in paragraph 1 He replied that as "Pilgrim" did not affect Portugal it made no difference to his action.

4 He would feel justified in taking action if the Portuguese islands were endangered, and we agreed that they would certainly be endangered if "Pilgrim" were to take place, as the Germans would have all the more need to forestall us there

5 In these circumstances he would none the less be ready to come to the aid of Portugal in the Atlantic islands, and was holding strong forces available for that purpose.

I have shown foregoing to President, who agreed that it was a

correct representation of the facts.

### \* \* \* \* \*

We then, on the same day, turned to the Far East The imposition of the economic sanctions on July 26 had caused a shock in Tokyo. It had not perhaps been realised by any of us how powerful they were Prince Konoye sought at once to renew diplomatic talks, and on August 6 Admiral Nomura, the Japanese Special Envoy in Washington, presented to the State Department a proposal for a general settlement Japan would undertake not to advance farther into South-East Asia, and offered to evacuate Indo-China on the settlement of "the China incident" (such was the term by which they described their six-years war upon China) In return the United States were to renew trade relations and help Japan to obtain all the raw materials she required from the South-West Pacific. It was obvious that these were smoothly worded offers by which Japan would take all she could for the moment and give nothing for the future. No doubt they were the best Konoye could procure from his Cabinet. Around our conference table on the Augusta there was no need to argue the broad issues. My telegram sent from the meeting to Mr. Eden gives a full account of the matter.

Prime Minister to Foreign Secretary

11 Aug 41

The position about Japan is as follows:

President proposed to Japan some time ago neutralisation of Indo-China and Siam under joint guarantee of United States, Japan, Britain, China, and others Japanese reply, which will be cabled you fully as soon as more urgent messages have been dealt with, agrees to the

principle of no encroachment upon Siam and military withdrawal from Indo-China, but adds a number of conditions fundamentally unacceptable. For instance, the withdrawal to take place after the China incident is settled, meaning thereby after Chiang Kai-shek is strangled, and further requiring recognition of Japan's preponderant position in these regions, also requiring United States to abstain from all further military preparations in these regions, and seeking lifting of the economic sanctions.

- 2 President's idea is to negotiate about these unacceptable conditions and thus procure a moratorium of, say, thirty days in which we may improve our position in Singapore area and the Japanese will have to stand still. But he will make it a condition that the Japanese meanwhile encroach no farther and do not use Indo-China as a base for attack on China. He will also maintain in full force the economic measures directed against Japan. These negotiations show little chance of succeeding, but President considers that a month gained will be valuable. I pointed out of course that the Japanese would double-cross him and would try to attack China or cut the Burma communications. However, you may take it that they consider it right to begin the negotiations on these lines, and in view of what has passed between United States and Japan it will be necessary to accept this fact.
- 3 In the course of these negotiations President would renew his proposals for neutralisation of Siam as well as Indo-China
- 4 At the end of the Note which the President will hand to the Japanese Ambassador when he returns from his cruise in about a week's time he will add the following passage, which is taken from my draft

"Any further encroachment by Japan in the South-West Pacific would produce a situation in which the United States Government would be compelled to take counter-measures, even though these might lead to war between the United States and Japan"

He would also add something to the effect that it was obvious that, the Soviet being a friendly Power, United States Government would be similarly interested in any similar conflict in the North-West Pacific

5 I think this is entirely good, and that we should associate ourselves therewith and endeavour to get the Dutch to join in full agreement, because either the Japanese will refuse the conditions the President prescribes—namely, continuance of the economic sanctions and no movement on the Japanese part and no invasion of Siam—or alternatively they will go on with their military action while lying about it diplomatically

### THE ATLANTIC CHARTER

In this case the conditions indicated by the final passage just quoted [in paragraph 4] would come into play with great force, and the full effect of parallel declarations could be realised. The Soviet Government should also be kept informed. It might be dangerous to tell the Chinese what we are doing for them, though they might be assured in general terms that we have had their security in mind in all that we have done

6 On all these grounds I consider that we should endorse the proposed course of action, and that the Dominions should be told about it and made to see that it is a very great advance towards the gripping of Japanese aggression by united forces

\* \* \* \* \*

To Mr. Attlee I sent a comprehensive summary of all the main points under discussion

Prime Minister to Lord Privy Seal

II Aug 41

Have reached satisfactory settlement about Naval Plan No 4 [the United States Navy to take over the America-Iceland stretch of the Atlantic]

Secondly, President is prepared to take very helpful action corre-

sponding with, or consequent upon, Operation "Pilgrim"

Thirdly, he intends to negotiate with Japan on the basis of a moratorium for, say, a month, during which no further military movements are to be made by Japan in Indo-China and no encroachment upon Siam. He has agreed to end his communication with a very

severe warning, which I drafted

Fourthly, the President wishes to issue at the moment of general release of meeting story, probably 14th or 15th, a Joint Declaration signed by him and me, on behalf of His Majesty's Government, of the broad principles which animate the United States and Great Britain at this favourable time. I send you herewith his draft of the statement, which you will see is not free from the difficulties attaching to all such declarations. The fourth condition would evidently have to be amended to safeguard our obligations contracted in Ottawa and not prejudice the future of Imperial Preference. This might fall into its place after the war in a general economic settlement, with decisive lowering of tariffs and trade barriers throughout the world. But we cannot settle it now. For the sake of speedy agreement I have little doubt he will accept our amendments.

The seventh paragraph is most remarkable for its realism. The President undoubtedly contemplates the disarmament of the guilty nations, coupled with the maintenance of strong united British and American armaments both by sea and air for a long indefinite period.

Having regard to our views about the League of Nations or other international organisations, I would suggest the following amendment after the word "essential"

"pending the establishment of a wider and more permanent system of general security"

He will not like this very much, but he attaches so much importance to the Joint Declaration, which he believes will affect the whole movement of United States opinion, that I think he will agree

It would be most imprudent on our part to raise unnecessary difficulties. We must regard this as an interim and partial statement of war aims designed to assure all countries of our righteous purpose, and not the complete structure which we should build after victory

You should summon the full War Cabinet, with any others you may think necessary, to meet to-night, and please let me have your views without the slightest delay. Meanwhile full accounts are being sent you immediately on the other points, together with Cadogan's report of the conversation. I fear the President will be very much upset if no Joint Statement can be issued, and grave and vital interests might be affected.

I had purposed to leave afternoon 12th, but we have both now postponed departure twenty-four hours

I had only finished dictating the telegrams about 2 p.m, and that I should have had in my hands within the next twelve hours the War Cabinet's most helpful reply reflects credit on all concerned. I subsequently learned that my telegrams had not reached London until after midnight, and that many of the Ministers had already gone to bed. Nevertheless a War Cabinet meeting was summoned for 1 45 a m, and there was a full attendance, including Mr. Peter Fraser, Prime Minister of New Zealand, who was in England at the time. As a result of a full discussion they sent me a telegram just after 4 a m, welcoming the proposal and suggesting a further version of Point 4 (non-discrimination in world trade) and the insertion of a new paragraph dealing with social security. Meanwhile I had heard that the President had accepted all the amendments I had suggested to him on August 11.

\* \* \* \* \*

On August 12, about noon, I went to see the President to agree with him the final form of the Declaration. I put to the President the Cabinet's revised version of Point 4, but he preferred to adhere to the phrasing already agreed, and I did not

### THE ATLANTIC CHARTER

press him further on this point. He readily accepted the insertion of the new paragraph about social security desired by the Cabinet. A number of verbal alterations were agreed, and the Declaration was then in its final shape.

# JOINT DECLARATION BY THE PRESIDENT AND THE PRIME MINISTER

## August 12, 1941

The President of the United States of America and the Prime Minister, Mr Churchill, representing His Majesty's Government in the United Kingdom, being met together, deem it right to make known certain common principles in the national policies of their respective countries on which they base their hopes for a better future for the world

First, their countries seek no aggrandisement, territorial or other Second, they desire to see no territorial changes that do not accord with the freely expressed wishes of the peoples concerned

Third, they respect the right of all peoples to choose the form of government under which they will live, and they wish to see sovereign rights and self-government restored to those who have been forcibly deprived of them

Fourth, they will endeavour, with due respect to their existing obligations, to further the enjoyment by all States, great or small, victor or vanquished, of access, on equal terms, to the trade and to the raw materials of the world which are needed for their economic prosperity

Fifth, they desire to bring about the fullest collaboration between all nations in the economic field, with the object of securing for all improved labour standards, economic advancement, and social

security

Sixth, after the final destruction of the Nazi tyranny they hope to see established a peace which will afford to all nations the means of dwelling in safety within their own boundaries, and which will afford assurance that all the men in all the lands may live out their lives in freedom from fear and want

Seventh, such a peace should enable all men to traverse the high seas and oceans without hindrance.

Eighth, they believe that all the nations of the world, for realistic as well as spiritual reasons, must come to the abandonment of the use of force Since no future peace can be maintained if land, sea, or air armaments continue to be employed by nations which threaten, or may threaten, aggression outside of their frontiers, they believe, pending

the establishment of a wider and more permanent system of general security, that the disarmament of such nations is essential. They will likewise aid and encourage all other practicable measures which will lighten for peace-loving peoples the crushing burden of armaments.

It was only after this that I received the telegram giving the results of a further meeting of the Cabinet on the morning of August 12. This telegram made clear the reasons for the misgivings which the Cabinet felt on the subject of Point 4. But I felt that the final text with the words "with due respect for their existing obligations", governing as they did the whole paragraph, sufficiently safeguarded our position.

The profound and far-reaching importance of this Joint Declaration was apparent. The fact alone of the United States, still technically neutral, joining with a belligerent Power in making such a declaration was astonishing. The inclusion in it of a reference to "the final destruction of the Nazi tyranny" (this was based on a phrase appearing in my original draft, amounted to a challenge which in ordinary times would have implied war-like action. Finally, not the least striking feature was the realism of the last paragraph, where there was a plain and bold intimation that after the war the United States would join with us in policing the world until the establishment of a better order

\* \* \* \* \*

The President and myself also drew up a joint message to Stalin

12 Aug 41

We have taken the opportunity afforded by the consideration of the report of Mr Harry Hopkins on his return from Moscow to consult together as to how best our two countries can help your country in the splendid defence that you are making against the Nazi attack. We are at the moment co-operating to provide you with the very maximum of supplies that you most urgently need. Already many shiploads have left our shores, and more will leave in the immediate future.

We must now turn our minds to the consideration of a more longterm policy, since there is still a long and hard path to be traversed before there can be won that complete victory without which our efforts and sacrifices would be wasted

The war goes on upon many fronts, and before it is over there may be yet further fighting fronts that will be developed. Our resources, though immense, are limited, and it must become a question as to

# Pain Pin Fee's meeting with Provident Roself - By. 74, Dayle of Four Declaration -

### NOST. SECRET

NOTE: This document should not be left lying about and, if it is unnecessary to rotain, should be returned to the Private Office.

### PROPOSED BECLARATION



The President of the United States of America and the Prime Minister, Mr. Churchill, representing His Majesty's Government in the United Kingdon, being met together, deem it right to make known certain common principles in the netional policies of their respective countries on which they base their hopes for a better future for the world.

First, their countries seek no aggrandisement, territorial or other;

Second, they desire to see no territorial changes that do not accord with the freely expressed wishes of the peoples concerned.

Third, they respect the right of all peoples to choose the form of growment indep which they will live, and they wish to see self-government centered to those from whom it has been forcibly romoved.

Fourth, they will endervour, with due respect to their existing obligations, to further the enjoyment by all peoples of access, on equal terms, to the trade and to the raw materials of the world which are needed for their economic prosperity.

Prosperity.

Fifth, they Support fullest collaboration between Nationa in Seconomic field with object of securing for all peoples fifted in the work improved lebour standards, economic advancement and social socurity

Sixth, they hope to see established a peace, after the final destruction of the Nazi tyronny, which will afford to all nations the mems of dwelling in security within their own boundaries, and which will afford assurance to all peoples that they may live out their lives in freeden from fear.

Seventh, they desire such a space to establish for all walk

Fighth, they believe that all of the nations of the world must be guided in spirit to the abandoment of the use of force, Frecus no future peace can be mainteined if land, sea or air armoments continue to be employed by nations which threeten, or may threaten, regression outside of their frontiors, they bolieve that the disarmment of such nations is essential pending the establishment of a wider and here permanent system of general cocurity. They will further the adoption of all other practicable measures which will lighten for peace-loving peoples the grunding burden of armoments.

Cherchein,

Privato Office. August 12, 1941

where and when those resources can best be used to further to the greatest extent our common effort. This applies equally to the manu-

factured war supplies and to raw materials

The needs and demands of your and our armed services can only be determined in the light of the full knowledge of the many factors which must be taken into consideration in the decisions that we make In order that all of us may be in a position to arrive at speedy decisions as to the apportionment of our joint resources, we suggest that we prepare for a meeting to be held at Moscow, to which we would send high representatives who could discuss these matters directly with you If this conference appeals to you, we want you to know that, pending the decisions of that conference, we shall continue to send supplies and materials as rapidly as possible.

We realise fully how vitally important to the defeat of Hitlerism is the brave and steadfast resistance of the Soviet Union, and we feel therefore that we must not in any circumstances fail to act quickly and immediately in this matter of planning the programme for the

future allocation of our joint resources.

\* \* \* \*

Lord Beaverbrook had been keen to accept my invitation, which I sent while on the outward voyage. At the same time I needed Mr Purvis, who was in any case returning to Washing-I considered that the combination of Beaverbrook and Purvis, who in many ways represented Canada, would give us the best chance of coping with the painful splitting of supplies between Great Britain and Soviet Russia which was desirable and also mevitable I also hoped that Beaverbrook would be able to spur and enlarge the whole scale of American production In anticipation of their arrival I drafted a memorandum, which will be found among the Appendices.\* Beaverbrook and Purvis started from Prestwick in different aeroplanes within a few hours of one another It was an even chance who went in either plane. Beaverbrook arrived safely at the Newfoundland airport, and joined me after a long train journey early on the 12th. Purvis and all with him were killed by one of those sinister strokes of fortune which make a plane fly into a hill of no great height within a few minutes of taking off Purvis was a grievous loss, as he held so many British, American, and Canadian threads in his hands, and had hitherto been the directing mind in their harmonious com-

<sup>\*</sup> Appendix I, p 762

### THE ATLANTIC CHARTER

bination When Max arrived I told him this shocking news. He was silent for a moment, but made no comment. It was war-time

\* \* \* \*

The following telegram summarises the result of our final conference.

Prime Minister to Lord Privy Seal 12 Aug 41

Please thank Cabinet for amazingly swift reply I put your alternative Clause 4 to President, but he preferred to stick to the phrasing already agreed I do not myself see any real difference Phrase about "respect for existing obligations" safeguards our relations with Dominions We could not see how competition of cheap labour would come in, as all countries preserve the right of retaining or imposing national tariffs as they think fit pending better solutions

The President cordially accepted your new paragraph 5, but you will see that the reference to "want" comes in where the President originally wished it—at the end of paragraph 6 A few verbal flourishes

not affecting substance have been added

3 We have laid special stress on the warning to Japan which constitutes the teeth of the President's communication. One would always fear State Department trying to tone it down, but President has

promised definitely to use the hard language

- 4 Arrival of Russia as a welcome guest at hungry table and need of large supplementary programmes both for ourselves and the United States forces make review and expansion of United States production imperative. President proposes shortly to ask Congress for another five billion dollars Lend-Lease Bill. President welcomes Beaverbrook's arrival at Washington, and I am convinced this is the needful practical step. See also the Roosevelt-Churchill message to dear old Joe. I think they will send Harriman to represent them, and I should propose that Beaverbrook should go for us to Moscow, or wherever Russian Government is. We do not wish conference in Russia to start before latter part of September, by when it is hoped we shall know where the Russian front will lie for the winter.
- 5. They are sending us immediately 150,000 more rifles, and I look for improved allocations of heavy bombers and tanks. I hope they will take over whole ferry service and deliver both in England and in West Africa by American pilots, many of whom may stay for war-training purposes with us

6 Your promptness has enabled me to start home to-day, 12th President is sending American destroyers with us, who are not considered escort but will chip in if any trouble occurs. Franklin Junior is serving on one of them, and has been appointed Liaison Officer to

me during my day in Iceland (C),\* where there will be a joint review of British and American forces.

- 7 Lord Beaverbrook is now proceeding with Harriman by air to United States
- 8 I trust my colleagues will feel that my mission has been fruitful I am sure I have established warm and deep personal relations with our great friend

Before sailing homewards I received a message of congratulation from the King During the voyage I replied to this and other telegrams

Prime Minister to His Majesty the King

13 Aug 41

Most grateful to Your Majesty for good wishes Lord Privy Seal will submit full text of all telegrams recording business. I have established with President most cordial personal relations, and trust Your Majesty will feel that results justify mission. President has given me personal letter, which I shall hope to deliver to you at luncheon on Tuesday, 19th

And to Mr. Attlee, who telegraphed on behalf of the Cabinet

Prime Minister to Lord Privy Seal

13 Aug 41

Many thanks for your kind message I am delighted you will broadcast statement and declaration yourself Please make a definite break between the preliminary statement and the actual text by saying, "I will now read the actual text of the Joint Declaration" I do not consider any comment will be required from me, as announcement is itself sufficient to fill the newspapers I might broadcast on the Sunday night following my return, when reaction in United States to our meeting and Joint Declaration will be apparent

Any necessary guidance can be given to the Press confidentially, but they will surely see that Joint Declaration proposing final destruction of Nazi power and disarmament of aggressive nations while Britain and United States remain armed is an event of first magnitude. It would be well to let this soak in on its own merits on friend and foe

- 2 For your secret information, President is remaining at sea until end of week in order to cover my return. I told him this was not necessary, but he insisted
  - 3 We shall be most interested to know how it is all taken
- 4 I read with much pleasure your admirable war statement at end of session
- \* To avoid confusion with Ireland, I had directed that Iceland was always to be written by the British authorities as Iceland (C) This was indeed a necessary precaution

### THE ATLANTIC CHARTER

I sent the following message to Mr. Menzies, Prime Minister of Australia:

You have no doubt seen the relevant cables about Atlantic meeting I trust you approve of what was accomplished. President promised me to give the warning to Japan in the terms agreed. Once we know this has been done we should range ourselves beside him and make it clear that if Japan becomes involved in war with United States she will also be at war with Britain and British Commonwealth. I am arranging this with Eden, and you will be advised through the regular channels. You should note that the President's warning covers an attack upon Russia, so that perhaps Stalin will line up too, and of course the Dutch. If this combined front can be established, including China, I feel confident that Japan will be quiet for a while. It is however essential to use the firmest language and the strongest combination.

2 United States Navy is effectively taking over America-Iceland stretch of Atlantic, thus giving us relief equal to over fifty destroyers and corvettes, soon to be available for home waters and South Atlantic

The voyage to Iceland was uneventful, although at one point it became necessary to alter course owing to the reported presence of U-boats near by Our escort included two United States destroyers, in one of which was Ensign Franklin D. Roosevelt, Jnr, the President's son. On the 15th we met a combined homeward-bound convoy of seventy-three ships, all in good order and perfect station after a fortunate passage across the Atlantic. It was a heartening sight, and the inerchant ships too were glad to look at the *Prince of Wales*.

We reached the island on Saturday morning, August 16, and anchored at Hvals Fiord, from which we travelled to Reykjavik in a destroyer. On arrival at the port I received a remarkably warm and vociferous welcome from a large crowd, whose friendly greetings were repeated whenever our presence was recognised during our stay, culminating in scenes of great enthusiasm on our departure in the afternoon, to the accompaniment of such cheers and hand-clapping as have, I was assured, seldom been heard in the streets of Reykjavik

After a short visit to the Althingishus, to pay respects to the Régent and the members of the Icelandic Cabinet, I proceeded to a joint review of the British and American forces. There was a long march past in threes, during which the tune "United States

399 14

Marines" bit so deeply into my memory that I could not get it out of my head. I found time to see the new airfields we were making, and also to visit the wonderful hot springs and the glasshouses they are made to serve. I thought immediately that they should also be used to heat Reykjavik, and tried to further this plan even during the war. I am glad that it has now been carried out. I took the salute with the President's son standing beside me, and the parade provided another remarkable demonstration of Anglo-American solidarity.

On return to Hvals Fiord I visited the Ramillies, and addressed representatives of the crows of the British and American ships in the anchorage, including the destroyers Hecla and Churchill.

As darkness fell after this long and very tiring ordeal we sailed for Scapa where we arrived without further incident early on the 18th, and I reached London on the following day.

### CHAPTER XXV

# AID TO RUSSIA

Russian Valour and the Approaching Winter - Lord Beaverbrook Champions Aid to Russia - Our Sacrifices of Vital Munitions - The Beaverbrook-Harriman Mission - My Letter to Stalin of August 29 - His Reply - Interview with Ambassador Maisky - An Air of Menace - My Answer to Stalin - I Communicate My Answeties to Roosevelt - Letter to Sir Stafford Cripps of September 5 - Further Message from Stalin - A Fantastic Suggestion - My Response - Lord Beaverbrook Sails for Archangel in the "London" - My Letter to Stalin of September 21 - The Beaverbrook Mission in Moscow - A Grim Reception - Cordial American Contacts - Protocol for Supplies to Russia - Continuous Cycle of Convoys to Archangel - Insistent Demands in Moscow for the Second Front - The Crisis of the Struggle in Russia - My Telegram to Sir Stafford Cripps of October 28 - A Plain Statement - Winter Casts its Shield Before the Russian Armies - Mrs Churchill's "Aid to Russia" Fund.

WO months, had now passed on the Russian front, and terrific blows had been struck by the German armies. But by now there was another side to the tale. Despite their fearful losses Russian resistance remained tough and unbending. Their soldiers fought to the death, and their armies gained in experience and skill. Partisans rose up behind the German fronts and harassed the communications in a merciless warfare. The captured Russian railway system was proving inadequate; the roads were breaking up under the heavy traffic, and movement off the roads after rain was often impossible. Transport vehicles were showing many signs of wear. Barely three months remained before the dreaded Russian winter. Could Moscow be taken in that time? And if it were, would that be enough? Here then was the fateful question. Though Hitler was still elated by

the victory at Kiev, the German generals might well feel that their early misgivings were justified. There had been four weeks of delay on what had now become the decisive front. The task of "annihilating the forces of the enemy in White Russia" which had been given to the Central Army Group was still not done.

But as the autumn drew on and the supreme crisis on the Russian front impended the Soviet demands upon us became more insistent.

\* \* \* \*

Lord Beaverbrook returned from the United States having stimulated the already powerful forces making for a stupendous increase in production. He now became the champion in the War Cabinet of Aid to Russia. In this he rendered valuable service. When we remember the pressures that lay upon us to prepare the battle in the Libyan desert, and the deep anxieties about Japan which brooded over all our affairs in Malaya and the Far East, and that everything sent to Russia was subtracted from British vital needs, it was necessary that the Russian claims should be so vehemently championed at the summit of our war thought. I tried to keep the main proportion evenly presented in my own mind, and shared my stresses with my colleagues. We endured the unpleasant process of exposing our own vital security and projects to failure for the sake of our new ally—surly, snarly, grasping, and so lately indifferent to our survival.

On the way home from Iceland I had felt that when Beaver-brook and Averell Harriman got back from Washington and we could survey all the prospects of munitions and supplies they should go to Moscow and offer all we could spare and dare. Prolonged and painful discussions took place upon the details on the lines of our joint offer of August 12. The Service departments felt it was like flaying off pieces of their skin. However, we gathered together the utmost in our power, and consented to very large American diversions of all we longed for ourselves in order to make an effective contribution to the resistance of the Soviets I brought the proposal to send Lord Beaverbrook to Moscow before my colleagues on August 28 The Cabinet were very willing that he should present the case to Stalin, and the President felt himself well represented by Harriman.

I therefore informed Lord Beaverbrook

Prime Minister to Lord Beaverbrook

30 Aug 41

I wish you to go to Moscow with Mr Harriman in order to arrange the long-term supply of the Russian armies This can only be achieved almost entirely from American resources, though we have rubber. hoots, etc. A large new installation must be made in the United States Rate of supply is of course limited by the ports of entry and by the dearth of shipping When the metre-gauge railway from Basra to the Caspian has been doubled in the spring this will be an important channel It is our duty and our interest to give the utmost possible and to the Russians, even at serious sacrifices by ourselves. However, no large flow can begin till the middle or end of 1942, and the main planning will relate to 1943. Your function will be not only to aid in the forming of the plans to help Russia, but to make suie we are not bled white in the process; and even if you find yourself affected by the Russian atmosphere I shall be quite stiff about it here. I am sure however you are the man for the job, and the public instinct has already endorsed this.

The decision to send Harriman means that Hopkins does not feel well enough to go lumself There is no point in sending Eden at the present time.

As to the date, we are in the hands of the Americans, but we must act in a bona fide spirit and not give occasion for anyone to say we have been fooling the Russians or playing for delay. It will be necessary to settle the date of the conference in the next few days. I do not think a fortnight one way or the other makes any difference, as 90 per cent of its work must relate to long-term projects.

As a preliminary to this mission I outlined the position in general terms in a letter to M Stalin.

29 Aug 41

I have been searching for any way to give you help in your splendid tesistance pending the long-term arrangements which we are discussing with the United States and which will form the subject of the Moscow Conference Maisky has represented that fighter aircraft are much needed in view of heavy losses. We are expediting the 200 Tomahawks about which I telegraphed in my last. Our two squadrons should reach Murmansk about September 6, comprising 40 Hurnicanes. You will, I am sure, realise that fighter aircraft are the foundation of our home defence, besides which we are trying to obtain air superiority in Libya, and also to provide for Turkey so as to bring her on our side. Nevertheless, I could send 200 more Hurricanes, making 445 in all, if your pilots could use them effectively. These would be eight- and twelve-gun Hurricanes, which we have found

very deadly in action. We could send 100 now and two batches of 50 soon afterwards, together with mechanics, instructors, space parts, and equipment, to Archangel Meanwhile arrangements could be made to begin accustoming your pilots and mechanics to the new type if you will send them to air squadrons at Murmansk If you feel this would be useful orders will be given here accordingly, and a full technical memorandum is being telegraphed through our Military Air Mission.

- 2 The news that the Persians have decided to cease resistance II most welcome Even more than safeguarding the oilfields, our object in entering Persia has been to get another through route to you which cannot be cut For this purpose we must develop the railway from the Persian Gulf to the Caspian and make sure it runs smoothly with reinforced railway material from India. The Foreign Secretary has given to Maisky for you the kind of terms we should like to make with the Persian Government, so as to have a friendly people and not be compelled to waste a number of divisions merely guarding the railway line Food is being sent from India, and if the Persians submit we shall resume payment of the oil royalties now due to the Shah, We are instructing our advance-guards to push on and join hands with your forces at a point to be fixed by the military commanders somewhere between Hamadan and Kasvin. It would be a good thing to let the world know that British and Russian forces had actually joined hands. In our view it would be better at this moment for neither of us to enter Teheran in force, as all we want is the through route. We are making a large-scale base at Basra, and we hope to make this a well-equipped warm-water reception port for American supplies, which can thus surely reach the Caspian and the Volga region
- 3 I must again express the admiration of the British nation for the wonderful fight the Russian armies and Russian people are making against the Nazi criminals. General Macfarlane was immensely impressed by all he saw at the front. A very hard time lies before us, but Hitler will not have a pleasant winter under our ever-increasing air bombardment. I was gratified by the very firm warning Your Excellency gave to Japan about supplies via Vladivostok. President Roosevelt seemed disposed, when I met him, to take a strong line against further Japanese aggression, whether in the South or in the North-West Pacific, and I made haste to declare that we would range ourselves upon his side should war come. I am most anxious to do more for Chiang Kai-shek than we have hitherto felt strong enough to do. We do not want war with Japan, and I am sure the way to stop it is to confront those people, who are divided and far from sure of themselves, with the prospect of the heaviest combination

### AID TO RUSSIA

On the evening of September 4 M. Maisky called to see me to deliver M. Stalin's reply. This was the first personal message since July.

Premier Stalin to Prime Minister 4 Sept 41

Personal message of Premier Stalin to Premier Churchill

I express thanks for promise to sell\* to Soviet Union a further 200 fighters in addition to the 200 previously promised. I do not doubt that the Soviet aviators will succeed in mastering them and

putting them into use.

I have however to say that these aeroplanes, which apparently cannot be put into use quickly and at once, but at different periods and in separate groups, will be incapable of effecting serious changes on the Eastern Front. They will be unable to effect serious changes not only because of the large scale on which the war is being waged, which necessitates the continuous supply of a large quantity of aeroplanes, but chiefly because the situation of the Soviet forces during the last three weeks has considerably deteriorated in such important areas as the Ukraine and Leningiad.

As a matter of fact, the relative stabilisation at the front which we succeeded in achieving about three weeks ago has broken down during the last week, owing to transfer to Eastern front of thirty to thirty-four fresh German infantry divisions and of an enoimous quantity of tanks and aircraft, as well as a large increase in activities of the twenty Finnish and twenty-six Roumanian divisions. Germans consider danger in the West a bluff, and are transferring all their forces to the East with impunity, being convinced that no second front exists in the West, and that none will exist. Germans consider it quite possible to smash their enemies singly first Russia, then the English

As a result we have lost more than one-half of the Ukraine, and in

addition the enemy is at the gates of Leningrad.

These circumstances have resulted in our losing Krivoi Rog iron ore basin and a number of metallurgical works in the Ukraine, we have evacuated one aluminium works on Dineper river and a further aluminium works at Tikhvin, one motor and two aircraft works in the Ukraine, two motor and two aircraft works at Leningiad, and these works cannot be put into operation in the new localities in less than from seven to eight months.

This has weakened our power of defence and faced the Soviet Umon with a mortal menace. The question arises how to emerge

from this more than unfavourable situation.

I think there is only one means of egress from this situation—to establish in the present year a second front somewhere in the Balkans

<sup>\*</sup> Author's stalics.

or France, capable of drawing away from the Eastern Front 30 to 40 divisions, and at the same time of ensuring to the Soviet Union 30,000 tons of aluminium by the beginning of October next and a monthly minimum of aid amounting to 400 aircraft and 500 tanks (of small or medium size)

Without these two forms of help the Soviet Union will either suffer defeat or be weakened to such an extent that it will lose for a long period any capacity to render assistance to its Allies by its actual

operations on the fronts of the struggle against Hitlerism

I realise that this present message will cause dismay to Your Excellency. But what is on, to do? Experience has taught me to look facts in the face however unpleasant they are, and not to fear to express the truth however unwelcome it may be. The Persian affair has in fact turned out pretty well. The joint operations of the British and Soviet forces predetermined the issue. So it will be in future as long as our forces act jointly But Persia is but an episode. The issue of the war will not of course be decided in Persia.

The Soviet Union, like England, does not desire war with Japan. The Soviet Union does not consider it possible to violate agreements, including its treaty of neutrality with Japan. But if Japan violates this agreement and attacks the Soviet Union she will meet with a due rebuff on the part of the Soviet forces.

Finally, allow me to express thanks for the admiration you have expressed at the actions of the Soviet forces, which are waging a bloody war with the robber hordes of Hitlerite bandits for our common cause of liberation.

\* \* \* \* \*

The Soviet Ambassador, who was accompanied by Mr. Eden, stayed and talked with me for an hour and a half. He emphasised in bitter terms how for the last eleven weeks Russia had been bearing the brunt of the German onslaught virtually alone. The Russian armies were now enduring a weight of attack never equalled before. He said that he did not wish to use dramatic language, but this might be a turning-point in history. If Soviet Russia were defeated how could we win the war? M. Maisky emphasised the extreme gravity of the crisis on the Russian front in poignant terms which commanded my sympathy. But when presently I sensed an underlying air of menace in his appeal I was angered. I said to the Ambassador, whom I had known for many years, "Remember that only four months ago we in this Island did not know whether you were not coming in against us on the German side. Indeed, we thought it quite likely that you

### AID TO RUSSIA

would. Even then we felt sure we should win in the end. We never thought our survival was dependent on your action either way. Whatever happens, and whatever you do, you of all people have no right to make reproaches to us." As I warmed to the topic the Ambassador exclaimed, "More calm, please, my dear Mr

Churchill," but thereafter his tone perceptibly changed.

The discussion went over the ground already covered in the interchange of telegranis. The Ambassador pleaded for an immediate landing on the coast of France or the Low Countries I explained the military reasons which rendered this impossible, and that it could be no relief to Russia. I said that I had spent five hours that day examining with our experts the means for greatly increasing the capacity of the Trans-Persian railway. I spoke of the Beaverbrook-Harriman Mission and of our resolve to give all the supplies we could spare or carry. Finally Mr. Eden and I told him that we should be ready for our part to make it plain to the Finns that we would declare war upon them if they advanced into Russia beyond their 1918 frontiers. M. Maisky could not of course abandon his appeal for an immediate second front, and it was useless to argue further.

\* \* \* \* \*

I at once consulted the Cabinet upon the issues raised in this conversation and in Stalin's message, and that evening sent a reply.

Prime Minister to Monsieur Stalin 4 Sept 41

I reply at once in the spirit of your message Although we should shrink from no exertion, there is in fact no possibility of any British action in the West, except air action, which would draw the German forces from the East before the winter sets in There is no chance whatever of a second front being formed in the Balkans without the help of Turkey I will, if your Excellency desires, give all the reasons which have led our Chiefs of Staff to these conclusions. They have already been discussed with your Ambassador in conference to-day with the Foreign Secretary and the Chiefs of Staff. Action, however well-meant, leading only to costly fiascos would be no help to anyone but Hitler.

2 The information at my disposal gives me the impression that the culminating violence of the German invasion is already over and that winter will give your heroic armies a breathing-space. This however

is a personal opinion

3. About supplies We are well aware of the grievous losses which Russian industry has sustained, and every effort has been and will be made by us to help you I am cabling President Roosevelt to expedite the arrival here in London of Mr Harriman's Mission, and we shall try even before the Moscow Conference to tell you the numbers of aircraft and tanks we can jointly promise to send each month, together with supplies of rubber, aluminium, cloth, etc. For our part we are now prepared to send you, from British production, one-half of the monthly total for which you ask in aircraft and tanks. We hope the United States will supply the other half of your requirements. We shall use every endeavour to start the flow of equipment to you immediately.

4 We have given already the orders for supplying the Persian railway with rolling-stock to raise it from its present capacity of two trains a day each way up to its full capacity, namely, twelve trains a day each way. This should be reached by the spring of 1942, and meanwhile will be steadily improving. Locomotives and rolling-stock have to be sent round the Cape from this country after being converted to oil-burners, and the water supply along the railway has to be developed. The first forty-eight locomotives and 400 steel trucks are

about to start

5 We are ready to make joint plans with you now Whether British armies will be strong enough to invade the mainland of Europe during 1942 must depend on unforeseeable events. It may be possible however to assist you in the extreme North when there is more darkness. We are hoping to raise our armies in the Middle East to a strength of three-quarters of a million before the end of the present year, and thereafter to a million by the summer of 1942. Once the German-Italian forces in Libya have been destroyed all these forces will be available to come into line on your southern flank, and it is hoped to encourage Turkey to maintain at the least a faithful neutrality Meanwhile we shall continue to batter Germany from the air with increasing severity and to keep the seas open and ourselves alive

6. In your first paragraph you used the word "sell". We had not viewed the matter in such terms and have never thought of payment Any assistance we can give you would better be upon the same basis of comradeship as the American Lend-Lease Bill, of which no formal

account is kept in money

7 We are willing to put any pressure upon Finland in our power, including immediate notification that we will declare war upon her should she continue beyond the old frontiers. We are asking the United States to take all possible steps to influence Finland.

I thought the whole matter so important that I sent simul-

### AID TO RUSSIA

taneously the following telegram to the President while the impression was fresh in my mind.

Former Naval Person to President Roosevelt

5 Sept 41

The Soviet Ambassador brought the subjoined message to me and Eden last night, and used language of vague import about the gravity of the occasion and the turning-point character which would attach to our reply. Although nothing in his language warranted the assumption, we could not exclude the impression that they might be thinking of separate terms. The Cabinet have thought it right to send the attached reply. Hope you will not object to our references to possible American aid. I feel that the moment may be decisive. We can but do our best.

With kindest regards . . .

The Soviet appeal was very naturally supported by our Amhassador in Moscow in the strongest terms. To this also I sent what I deemed a reply which would arm him in future arguments

Prime Minister to Sir Stafford Cripps

5 Sept 41

If it were possible to make any successful diversion upon the French or Low Countries shore which would bring back German troops from Russia, we should order it even at the heaviest cost All our generals are convinced that a bloody repulse is all that would be sustained, or, if small lodgments were effected, that they would have to be withdrawn after a few days. The French coast is fortified to the limit, and the Germans still have more divisions in the West than we have in Great Britain,\* and formidable air support. The shipping available to transport a large army to the Continent does not exist, unless the process were spread over many months The diversion of our flotillas to such an operation would entail paralysis of the support of the Middle Eastern armies and a breakdown of the whole Atlantic traffic It might mean the loss of the Battle of the Atlantic and the starvation and ruin of the British Isles Nothing that we could do or could have done would affect the struggle on the Bastern front From the first day when Russia was attacked I have not ceased to press the Chiefs of Staff to examine every form of action. They are united in the views here expressed

2 When Stalin speaks of a front in the Balkans you should remember that even with the shipping then available in the Mediterranean it took us seven weeks to place two divisions and one armoured brigade in Greece, and that since we were driven out the whole of the Greek and many of the island airfields have been occupied by the

<sup>\*</sup> Author's subsequent stalics

German and Italian Air Force and he wholly outside the range of our fighter protection. I wonder that the losses sustained by our shipping and the Fleet in the evacuations of Greece and Crete have been forgotten The conditions are far more adverse now than then, and our naval strength is reduced.

3. When you speak of "a superhuman effort" you mean, I presume. an effort rising superior to space, time, and geography Unfortunately

these attributes are denied us.

4 The situation in the West would be entirely different if the French front were in being, for then I have no doubt the invasion of Russia would have been impossible because of the enormous counterattacks that could be immediately launched. No one wants to recriminate, but it is not our fault that Hitler was enabled to destroy Poland before turning his forces against France, or to destroy France before turning them against Russia

5. The 440 fighter aircraft which we have taken from our seriously diminished reserve are no doubt petty compared with the losses sustained by the Russian Air Force. They constitute however a painful and dangerous sacrifice on our part. The attacks by the Royal Air Force both by day and by night are maintained with our utmost strength, and the even character of the fighting above the French coast shows the high degree of air-power still possessed by the Germans in the West

6 Nothing that we could do or could have done can affect the terrible battle proceeding on the Russian front. Arrangements can still be made to provide for the campaign of 1942. The route established through Persia will be opened to the full, and whatever can be found and shipped from British resources, and from American resources which would otherwise have come to Britain, will be sent as fast as possible. I am pressing President Roosevelt to send Mr. Harnman here at the earliest moment in order that the Russians may know what aid they may expect in 1942 to compensate for the losses sustained by their munitions industry and make their plans accordingly. Meanwhile I am sending a reply to Stalin's telegram to-day, and this present message is solely for your own guidance. I sympathise keenly with your feelings as you watch the agony of Russia at close quarters, but neither sympathy nor emotion will overcome the kind of facts we have to face.

In response to one of Stalin's requests I sent on September 9 the following telegram to our Ambassador in Moscow:

Please inform M Stalin from Prime Minister that we are arranging to supply 5,000 tons of aluminium from Canada as soon as arrange-

### AID TO RUSSIA

ments for shipment are completed, and 2,000 tons monthly thereafter. First shipments will be via Vladivostok, unless Persian route would be preferable to Russian Government

# On September 15 I received another telegram from Stalin

In my last message I stated the viewpoint of the Soviet Government that the establishment of a second front is the most fundamental remedy for improvement of the situation with regard to our common cause. In reply to your message, in which you stress once more the impossibility of a second front at the present moment, I can only reiterate that the absence of a second front simply favours the designs of our common enemy

I have no doubt that the British Government desires to see the Soviet Union victorious and is looking for ways and means to attain this end. If, as they think, the establishment of a second front in the West is at present impossible, perhaps another method could be found to render to the Soviet Union an active military help?

It seems to me that Great Britain could without risk land in Archangel twenty-five to thirty divisions, or transport them across Iran to the southern regions of the USSR. In this way there could be established military collaboration between the Soviet and British troops on the territory of the USSR. A similar situation existed during the last war in France. The arrangement mentioned would constitute a great help. It would be a serious blow against the Hitler aggression

It is almost incredible that the head of the Russian Government with all the advice of their military experts could have committed himself to such absurdities. It seemed hopeless to argue with a man thinking in terms of utter unreality. He continued

I thank you very much for your promise to render us assistance by the monthly deliveries of aluminium, tanks, and aircraft

I can only welcome the intention of the British Government to render this assistance in aluminium, tanks, and aircraft not on the usual commercial basis [but] of comradeship and collaboration. I hope the British Government will have ample opportunity of being convinced that the Soviet Government understands how to appreciate the help received from its ally

One remark in connection with the inemorandum delivered on September 12 to M Molotov by the British Ambassador in Moscow Sir Stafford Cripps In this memorandum it is said "If the Soviet Government were compelled to destroy its naval vessels at Leningrad in order to prevent their falling into the enemy hands, His Majesty's Government would recognise after the war claims of the Soviet

Government to a certain compensation from His Majesty's Government for the restoration of the vessels destroyed "

The Soviet Government understands and appreciates the readiness of the British Government to make partial compensation for the damage sustained by the Soviet Union in case the Soviet vessels at Leningrad should actually be destroyed. There can be no doubt that such a course will be adopted should the necessity arise. However, the responsibility for this damage would not be Britain's, but Germany's I think therefore that the damage after the war should be made good at the expense of Germany

I sent the best answer I could to this message.

Prime Minister to M Stalin

17 Sept 41

Many thanks for your message The Harriman Mission has all arrived, and is working all day long with Beaverbrook and his colleagues. The object is to survey the whole field of resources so as to be able to work out with you a definite programme of monthly delivery by every possible route, and thus help repair as far as possible losses of your munitions industries President Roosevelt's idea is that this plan should cover up till the end of June, but naturally we shall go on with you till victory I hope the conference may open in Moscow on the 25th of this month, but no publicity should be given till all are safely gathered The routes and method of travel will be signalled later

2 I attach great importance to opening the through route from Persian Gulf to Caspian, not only by railway, but by a great motor road, in the making of which we hope to enlist American energies and organisation. Lord Beaverbrook will be able to explain the whole scheme of supply and transportation, he is on the closest terms of

friendship with Harriman.

3 All possible theatres in which we might effect military co-operation with you have been examined by the Staffs The two flanks, north and south, certainly present the most favourable opportunities. If we could act successfully in Norway the attitude of Sweden would be powerfully affected, but at the moment we have neither the forces nor the shipping available for this project. Again, in the south the great prize is Turkey, if Turkey can be gained another powerful army will be available. Turkey would like to come with us, but is afraid, not without reason. It may be that the promise of considerable British forces and supplies of technical material in which the Turks are deficient will exercise a decisive influence upon them. We will study with you any other form of useful aid, the sole object being to bring the maximum force against the common enemy.

## AID TO RUSSIA

4 I entirely agree that the first source from which the Russian Fleet should be replenished should be at the expense of Germany Victory will certainly give us control of important German and Italian naval vessels, and in our view these would be most suitable for repairing losses to the Russian Fleet

\* \* \* \* \*

On October 25 I replied to the Ambassador about the fantastic proposals of twenty-five to thirty British divisions being landed at Archangel or Basra.

Prime Minister to Sir Stafford Cripps (Moscow)

25 Oct 41

You were of course right to say that the idea of sending "twenty-five to thirty divisions to fight on the Russian front" is a physical

five to thirty divisions to fight on the Russian front' is a physical absurdity. It took eight months to build up ten divisions in France, across the Channel, when shipping was plentiful and U-boats few. It is with the greatest difficulty that we have managed to send the 50th Division to the Middle East in the last six months. We are now sending the 18th Division by extraordinary measures. All our shipping is fully engaged, and any saving can only be made at the expense of our vital upkeep convoys to the Middle East or of ships engaged in carrying Russian supplies. The margin by which we live and make munitions of war has only narrowly been maintained. Any troops sent to Murmansk now would be frozen in darkness for the winter.

2 Position on the southern flank is as follows Russians have five divisions in Persia, which we are willing to relieve. Surely these divisions should defend their own country before we choke one of the only supply lines with the maintenance of our forces to the northward. To put two fully armed British divisions from here into the Caucasus or north of the Caspian would take at least three months They would then only be a drop in the bucket.

\* \* \* \* \*

Meanwhile the Beaverbrook-Harriman talks in London were completed, and on September 22 the Anglo-American Supply Mission set off in the cruiser London from Scapa Flow through the Arctic Sea to Archangel, and thence by air to Moscow. Much depended upon them I furnished Lord Beaverbrook with general instructions, which were approved by my War Cabinet colleagues on the Defence Committee. This document, which is of importance, will be found among the Appendices. In addition I gave Lord Beaverbrook the following letter to deliver personally to Stalin

21 Sept 41

My dear Premier Stalin,

The British and American Missions have now started, and this letter will be presented to you by Lord Beaverbrook. Lord Beaverbrook has the fullest confidence of the Cabinet, and is one of my oldest and most intimate friends. He has established the closest relations with Mr Harriman, who is a remarkable American, wholeheartedly devoted to the victory of the common cause. They will lay before you all that we have been able to arrange in much anxious consultation between Great Britain and the United States

President Roosevelt has decided that our proposals shall, in the first instance, deal with the monthly quotas we shall send to you in the nine-months period from October 1941 to June 1942, inclusive. You have the right to know exactly what we can deliver month by month, in order that you may handle your reserves to the best advantage.

The American proposals have not yet gone beyond the end of June 1942, but I have no doubt that considerably larger quotas can be furnished by both countries thereafter, and you may be sure we shall do our utmost to repair as far as possible the grievous curtailments which your war industries have suffered through the Nazi invasion I will not anticipate what Lord Beaverbrook will have to say upon this subject

You will realise that the quotas up to the end of June 1942 are supplied almost entirely out of British production, or production which the United States would have given us under our own purchases or under the Lend-Lease Bill. The United States were resolved to give us virtually the whole of their exportable surplus, and it is not easy for them within that time to open out effectively new sources of supply. I am hopeful that a further great impulse will be given to the production of the United States, and that by 1943 the mighty industry of America will be in full war swing For our part, we shall not only make substantially increased contributions from our own existing forecast production, but also try to obtain from our people an extra further effort to meet our common needs You will understand however that our Army and its supply which has been planned is perhaps only one-fifth or one-sixth as large as yours or Germany's Our first duty and need is to keep open the seas, and our second duty is to obtain decisive superiority in the air. These have the first claims upon the man-power of our 44,000,000 in the British Islands We can never hope to have an army or army munition industries comparable to those of the great Continental military Powers. None the less, we will do our utmost to aid you

General Ismay, who is my personal representative on the Chiefs of Staff Committee, and is thoroughly acquainted with the whole field

## AID TO RUSSIA

of our military policy, is authorised to study with your commanders any plans for practical co-operation which may suggest themselves

If we can clear our western flank in Libya of the enemy we shall have considerable forces, both an and army, to co-operate upon the southern flank of the Russian front.

It seems to me that the most speedy and effective help would come if Turkey could be induced to resist a German demand for the passage of troops, or, better still, if she would enter the war on our side You

will. I am sure, attach due weight to this

I have always shared your sympathy for the Chinese people in their struggle to defend their native land against Japanese aggression Naturally we do not want to add Japan to the side of our foes, but the attitude of the United States, resulting from my conference with President Roosevelt, has already enforced a far more sober view upon the Japanese Government I made haste to declare on behalf of His Majesty's Government that should the United States be involved in war with Japan Great Britain would immediately range herself on her I think that all our three countries should, as far as possible, continue to give aid to China, and that this may go to considerable lengths without provoking a Japanese declaration of war

There is no doubt that a long period of struggle and suffering lies before our peoples, but I have great hopes that the United States will enter the war as a belligerent, and if so I cannot doubt that we have

but to endure to conquer

I am hopeful that as the war continues the great masses of the peoples of the British Empire, the Soviet Union, the United States, and China, which alone comprise two-thirds of the entire human race, may be found marching together against their persecutors, and I am sure the road they travel will lead to victory

With heartfelt wishes for the success of the Russian armies and the

run of the Nazı tyrants,

Believe me, Yours suncerely, WINSTON S. CHURCHILL

On September 28 our Mission arrived in Moscow. Their reception was bleak and discussions not at all friendly. It might almost have been thought that the plight in which the Soviets now found themselves was our fault. The Soviet generals and officials gave no information of any kind to their British and American colleagues. They did not even inform them of the basis on which Russian needs of our precious war materials had

been estimated. The Mission was given no formal entertainment until almost the last night, when they were invited to dinner at the Kremlin. It must not be thought that such an occasion among men preoccupied with the gravest affairs may not be helpful to the progress of business. On the contrary, many of the private interchanges which occur bring about that atmosphere where agreements can be reached. But there was little of this mood now, and it might almost have been we who had come to ask for favours

One incident preserved by General Ismay in an apocryphal and somewhat lively form may be allowed to lighten the narrative. His orderly, a Royal Marine, was shown the sights of Moscow by one of the Intourist guides. "This," said the Russian, "is the Eden Hotel, formerly Ribbentrop Hotel. Here is Churchill Street, formerly Hitler Street. Here is the Beaverbrook railway station, formerly Goering railway station. Will you have a cigarette, comrade?" The Marine replied, "Thank you, comrade, formerly bastard!" This tale, though jocular, illustrates none the less the strange atmosphere of these meetings.

\* \* \* \* \*

In contrast with all this my American contacts were increasingly cordial

Former Naval Person to President Roosevelt

22 Sept 41

Your cheering cable [to Mr Harriman] about tanks arrived when we were feeling very blue about all we have to give up to Russia. The prospect of nearly doubling the previous figures encouraged everyone. The Missions have started in great goodwill and friendship Kindest regards.

Prime Minister to Mr Harry Hopkins

25 Sept 41

Now that our Missions are on their way to Moscow, it may be profitable to survey the field covered by the discussions in London

2 The offers which we both are making to Russia are necessary and worth while There is no disguising the fact however that they make grievous inroads into what is required by you for expanding your forces and by us for intensifying our war effort. You know where the shoe will pinch most in the next nine months

We must both bend our efforts to making good the gaps unavoidably created. We here are unlikely to be able to expand our programmes much above what is already planned. I earnestly hope that you will be able to raise the general level of yours by an immediate

short-term effort.

### AID TO RUSSIA

3. You will have heard that good progress was made in the discussions on overall requirements for victory. A joint memorandum giving estimated eventual requirements, as far as we can foresee them, was drawn up, and is being taken back to Washington by General Embick. Further work on this will have to be done in Washington, and an estimate of what is required to maintain Russian resistance will have to be added. Would it be possible to try to reach in the second half of 1942 the output now planned for the first half of 1943? If such an attempt were successful it would not only lay the foundations for the victory programme, but would help to meet more speedily than otherwise the short-term requirements of us both. It would also enable greater help to be given to the Russians in the second half of 1942

On October 2 I heard from the President about American plans for future tank and aircraft production. From July 1942 to January 1943 the United States would allocate 1,200 tanks a month to England and Russia together, and during the next six months 2,000 a month. The American Mission in Moscow had been told to promise the Russians 400 tanks a month as from July 1, and an increased number after that date after discussion with our representatives.

The United States would be able to fulfil this increased commitment as her tank production was being doubled, to reach a

figure of over 2,500 tanks a month.

The President also informed me that he had undertaken to supply Russia with 3,600 front-line aircraft between July 1, 1942, and July 1, 1943, over and above those already agreed upon

In the end a friendly agreement was reached in Moscow. A protocol was signed setting out the supplies which Great Britain and the United States could make available to Russia within the period October 1941 to June 1942. This involved much derangement of our military plans, already hampered by the tormenting shortage of munitions. All fell upon us, because we not only gave our own production, but had to forgo most important munitions which the Americans would otherwise have sent to us Neither the Americans nor ourselves made any promise about the transportation of these supplies across the difficult and perilous ocean and Arctic routes. In view of the insulting reproaches which Stalin uttered when we suggested that the convoys should not sail till the ice had receded, it should be noted that all we

guaranteed was that the supplies would "be made available at British and United States centres of production". The preamble of the protocol ended with the words, "Great Britain and the United States will give aid to the transportation of these materials to the Soviet Union, and will help with the delivery"

On October 4 Lord Beaverbrook telegraphed to me-

The effect of this agreement has been an immense strengthening of the morale of Moscow The maintenance of this morale will depend on delivery . . .

I do not regard the military situation here as safe for the winter

months I do think that morale might make it safe.

Impossible to restrain the feeling of optimism here

We gave our treasures, and they were accepted by those who were fighting for their lives

Prime Minister to Lord Beaverbrook (at Moscow)

Heartiest congratulations to you and all The unity and success proclaimed is of immense value. No one could have done it but you Now come home and make the [one group undecipherable] stuff

Prune Minister to Lord Beaverbrook (at sea)

6 Oct 41

We have not lost an hour in making good your undertakings. I have sent the following telegram to Stalin

Prime Minister to Premier Stalin

6 Oct 41

I am glad to learn from Lord Beaverbrook of the success of the Tripartite Conference at Moscow. Bis dat qui cito dat We intend to run z continuous cycle of convoys, leaving every ten days. Following are on the way and arrive Archangel October 12

20 heavy tanks

193 fighters (pre-October quota)

Following will sail October 12, arriving October 29:

140 heavy tanks.

100 Hurricanes

200 Bren carriers.

200 anti-tank rifles and ammunition

50 2-pounder guns and ammunition

Following will sail October 22nd

200 fighters

120 heavy tanks.

Above shows the total of the October quota of aircraft, and 280 tanks will arrive Russia by November 6 The October quota of Bren

## AID TO RUSSIA

carriers, anti-tank rifles, and 2-pounder anti-tank guns will all arrive in October. Twenty tanks have been shipped to go via Persia, and fifteen are about to be shipped from Canada via Vladivostok. The total tanks shipped will therefore be three hundred and fifteen, which is nineteen short of our full quota. This number will be made up in November. The above programme does not take into account supplies from United States.

<sup>1</sup> 2 In arranging this regular cycle of convoys we are counting on Archangel to handle the main bulk of deliveries I presume this part

of the job is in hand Good wishes.

Although General Ismay was fully empowered and qualified to discuss and explain the military situation in all its variants to the Soviet leaders, Beaverbrook and Harriman decided not to complicate their task by issues on which there could be no agreement. This aspect was not therefore dealt with in Moscow. Informally the Russians continued to demand the immediate establishment of the Second Front, and seemed quite impervious to any arguments showing its impossibility. Their agony is their excuse Our Ambassador had to bear the brunt.

It was already late autumn. On October 2 the Central Army Group of von Bock renewed its advance on Moscow, with its two armies moving direct on the capital from the south-west and a Panzer group swinging wide on either flank. Orel on October 8 and a week later Kalının on the Moscow-Leningrad road were taken. With his flanks thus endangered and under strong pressure from the central German advance, Marshal Timoshenko withdrew his forces to a line forty miles west of Moscow, where he again stood to fight. The Russian position at this moment was grave in the extreme. The Soviet Government, the Diplomatic Corps, and all industry that could be removed were evacuated from the city over five hundred miles farther east to Kuibyshev. On October 19 Stalin proclaimed a state of siege in the capital and issued an Order of the Day: "Moscow will be defended to the last." His commands were faithfully obeyed. Although Guderian's armoured group from Orel advanced as far as Tula, although Moscow was now three parts surrounded and there was some air bombardment, the end of October brought a marked stiffening in Russian resistance and a definite check to the German advance

I continued to sustain our Ambassador in his many trials and hardships and his lonely, uphill task.

Prime Minister to Sir Stafford Cripps (Kuibyshev) 28 Oct 41

I fully sympathise with you in your difficult position, and also with Russia in her agony. They certainly have no right to reproach us They brought their own fate upon themselves when, by their pact with Ribbentrop, they let Hitler loose on Poland and so started the They cut themselves off from an effective second front when they let the French Army be destroyed If prior to June 22 they had consulted with us beforehand, many arrangements could have been made to bring earlier the great help we are now sending them in We did not however know till Hitler attacked them whether they would fight, or what side they would be on We were left alone for a whole year while every Communist in England, under orders from Moscow, did his best to hamper our war effort. If we had been invaded and destroyed in July or August 1940, or starved out this year in the Battle of the Atlantic, they would have remained utterly indifferent. If they had moved when the Balkans were attacked much might have been done, but they left it all to Hitler to choose his moment and his foes That a Government with this record should accuse us of trying to make conquests in Africa or gain advantages in Persia at their expense or being willing to "fight to the last Russian soldier" leaves me quite cold If they harbour suspicions of us it is only because of the guilt and self-reproach in their own hearts.

2. We have acted with absolute honesty We have done our very best to help them at the cost of deranging all our plans for rearmament and exposing ourselves to heavy risks when the spring invasion season comes. We will do anything more in our power that is sensible, but it would be silly to send two or three British or British-Indian divisions into the heart of Russia to be surrounded and cut to pieces as a symbolic sacrifice. Russia has never been short of man-power, and has now millions of trained soldiers for whom modern equipment is required. That modern equipment we are sending, and shall send to the utmost

limit of the ports and communications

3. Meanwhile we shall presently be figuring ourselves as the result of long-prepared plans, which it would be madness to upset We have offered to relieve the five Russian divisions in Northern Persia, which can be done with Indian troops fitted to maintain internal order but not equipped to face Germans I am sorry that Molotov rejects the idea of our sending modest forces to the Caucasus. We are doing all we can to keep Turkey a friendly neutral and prevent her being tempted by German promises of territorial gain at Russia's expense Naturally we do not expect gratitude from men undergoing such

## AID TO RUSSIA

frightful bludgeonings and fighting so bravely, but neither need we be disturbed by their reproaches. There is of course no need for you to rub all these salt truths into the Russian wounds, but I count upon you to do your utmost to convince Russians of the loyalty, integrity, and courage of the British nation.

4 I do not think it would be any use for you and Macfarlane [head of our military mission to Russia] to fly home now I could only repeat what I have said here, and I hope I shall never be called upon to argue the case in public. I am sure your duty is to remain with these people in their ordeal, from which it is by no means certain that they will not emerge victorious. Any day now Hitler may call a halt in the East and turn his forces against us

Here we may for the present leave the unfolding of the Hitler-Stalin drama Winter now east its shield before the Russian armies

\* \* \* \* \*

My wife felt very deeply that our inability to give Russia any military help disturbed and distressed the nation increasingly as the months went by and the German armies surged across the steppes. I told her that a Second Front was out of the question and that all that could be done for a long time would be the sending of supplies of all kinds on a large scale. Mr Eden and I encouraged her to explore the possibility of obtaining funds by voluntary subscription for medical aid. This had already been begun by the British Red Cross and St John's, and my wife was invited by the Joint Organisation to head the appeal for "Aid to Russia". At the end of October, under their auspices, she issued hei first appeal

There is no one in this country whose heart has not been deeply stirred by the appalling drama now going on in Russia. We are amazed at the power of the Russian defence and at the skill with which it is conducted. We have been moved to profound admiration for the valour, the tenacity, and the patriotic self-sacrifice of the Russian people. And above all, perhaps, we have been shaken with horror and pity at the vast scale of human suffering. . . .

Among the supplies we have already sent to Russia are 53 emergency operating outfits, 30 blood-transfusion sets, 70,000 surgical needles of various kinds, and 1,000,000 tablets of M and B. 693. This drug is the wonderful new antiseptic which has revolutionised the treatment of many diseases caused by germs. In addition to these, we have sent half a ton of phenacetin and about seven tons of absorbent cottonwool. And this is of course only a beginning. . . .

We have declared our aim to be £1,000,000, and we have made a good start. Already the fund totals £370,000, and it is only twelve days old Our gracious and beloved King and Queen, in sending a further £3,000 to the Red Cross last week, expressed a wish that £1,000 of their joint gift should be allocated to the Aid to Russia Fund They have set a characteristic example

Much depends upon employers, and I would like to say this whereever the employer provides the facilities to get the fund started the workers come gladly with their weekly pennies. Thus, from the King and Queen to the humblest wage-earner and cottage-dweller, we can all take part in this message of goodwill and compassion. Between the cottage and the palace, between those who can spare only pennies and a great imaginative benefactor like Lord Nuffield—who can send a cheque for £50,000—there are millions of people who would like to share in this tribute to the Russian people

A generous response was at once forthcoming For the next four years she devoted herself to this task with enthusiasm and responsibility. In all nearly eight million pounds were collected by the contributions of rich and poor alike. Many wealthy people made munificent donations, but the bulk of the money came from the weekly subscriptions of the mass of the nation. Thus through the powerful organisation of the Red Cross and St John's and in spite of heavy losses in the Arctic convoys medical and surgical supplies and all kinds of comforts and special appliances found their way in unbroken flow through the icy and deadly seas to the valiant Russian armies and people.

## CHAPTER XXVI

# PERSIA AND THE MIDDLE EAST

Summer and Autumn 1941

Anglo-Soviet Requirements from Persia - Need for Joint Action -General Wavell's Strong View – Mr. Eden's Minute of July 22 – My Caution and Inquiries – Report of the Lord President's Committee – Decision to Act with Russia - Opposing Forces - The Fighting Begins - The Shah Submits - Conditions Imposed on the Persian Government - Abdication of the Shah and Accession of His Young Son -Anglo-Soviet Accords - Development of the New Supply Route to Russia - Convoys to Malta - The German View of Mediterranean Fighting - Need for Surface Forces at Malta - Birth of "Force K" -Design for a Mobile Reserve - I Appeal to the President - His Prompt Response - American Transports for Two British Divisions - His Aid in the Atlantic - Growing Strength of the Army of the Nile -Anxieties of the Chiefs of Staff - My Note of September 18 - Priority for the Desert Battle - My Telegram to General Smuts of September 20 - My Note on Battle Tactics - Restoration of Artillery - Guns versus Tanks - "Flak" Protection for Ground Troops - Relations of Army and Air Commanders in Battle.

THE need to pass munitions and supplies of all kinds to the Soviet Government and the extreme difficulties of the Arctic route, together with future strategic possibilities, made it eminently desirable to open the fullest communication with Russia through Persia. The Persian oilfields were a prime war factor. An active and numerous German mission had installed itself in Teheran, and German prestige stood high. The suppression of the revolt in Iraq and the Anglo-French occupation of Syria, achieved as they were by narrow margins, blotted out Hitler's Oriental plan. We welcomed the opportunity of joining hands with the Russians and proposed to them a joint campaign.

I was not without some anxiety about embarking on a Persian wai, but the arguments for it were compulsive. I was very glad that General Wavell should be in India to direct the military movements

On July 11, 1941, the Chiefs of Staff were asked by a Cabinet Committee to consider the desirability of joint military action in conjunction with the Russians in Persia in the event of the Persian Government refusing to expel the German community at present employed in that country On July 18 they recommended that we should adopt a firm attitude in dealing with the Persian Government. This view was also strongly held by General Wavell, who had telegraphed the War Office on the previous day in the following terms

The complaisant attitude it is proposed to adopt over Iran appears to me incomprehensible. It is essential to the defence of India that Germans should be cleared out of Iran now. Failure to do so will lead to a repetition of events which in Iraq were only just countered in time. It is essential we should join hands with Russia through Iran, and if the present Government is not willing to facilitate this it must be made to give way to one which will. To this end the strongest possible pressure should be applied forthwith while issue of German-Russian struggle is in doubt.

On the 21st I replied to General Wavell.

Cabinet will consider Persian situation to-morrow I am in general agreement with your view, and would like to give Persians an ultimatum from Britain and Russia to clear out the Germans without delay or take the consequences Question is what forces we have available in case of refusal

The Chiefs of Staff advised that action should be confined to the south, and that we should need at least one division, supported by a small air component, to secure the oilfields. This force would have to come from Iraq, where we had already insufficient troops even for internal security. They concluded that if a force had to be sent into Persia during the next three months it would have to be replaced from the Middle East.

In a minute of July 22 the Foreign Secretary sent me his view of the situation:

I have been giving further consideration this morning to the problem of pressure upon Iran The more I examine the possibilities of doing

this the clearer it becomes that all depends upon our ability to concentrate a sufficient force in Iraq to protect the Iranian oilfields. It would be highly dangerous even to begin economic pressure until we were militarily in a position to do this, for the Shah is fully conscious of the value of the oilfields to us, and if he sees trouble with us brewing he is likely to take the first step

Reports, apparently reliable, have reached us of Iranian concentrations on the Russian frontier, on the Iraqi frontier, and in the area of the oilfields. I hope that every effort will be made to strengthen our forces in Iraq at the earliest moment. If we can do this before the Russians suffer a severe reverse in the South there is a reasonable chance of imposing our will on the Iranians without resort to force. But we must not move diplomatically ahead of our military strength or we shall court disaster.

There is a further factor which increases the need for the early reinforcement of Iraq Should Russia be defeated we shall have to be ready to occupy the Iranian oilfields ourselves, for in such an eventuality German pressure on the Iranians to attempt to turn us out would be irresistible

\* \* \* \* \*

I was not satisfied that this Persian operation had received the co-ordinated planning essential to its eventual success. On July 31 therefore on the eve of my voyage to Placentia I gave instructions that a special committee should be set up under the Lord President for this purpose.

I cannot feel that this operation, involving war with Persia in the event of non-compliance, has been studied with the attention which its far-reaching character requires. While agreeing as to its necessity, I consider that the whole business requires exploring, concerting, and clamping together, as between the Foreign Office and the War Office, and between the Middle East Command and the Government of India. We must not take such grave steps without having clear-cut plans for the various eventualities For instance, what happens if the Persian troops around and about the Ahwaz oilfields seize all Anglo-Persian Oil Company employees and hold them as hostages? What attitude is expected from the Bakhtiari and the local inhabitants? What happens to British residents in Teheran? Is there any danger of the oil-wells being destroyed rather than that they should fall into our possession? We must be very careful not to commit an atrocity by bombing Teheran. Are our available forces strong enough to occupy the Ahwaz oilfields in the face of local and official Persian opposition? How far

north do we propose to go? What aerodromes are available? How

is the railway to be worked if the Persians refuse to help?

These and many other questions require to be thought out. It would be well if the Lord President with the Secretaries of State for Foreign Affairs, War, and India reviewed the whole matter and reported to the War Cabinet during the early part of next week. Meanwhile all necessary action of a preparatory character should proceed. I am in favour of the policy, but it is of a very serious character, and should not be undertaken until the possible consequences and alternative situations have been thoroughly surveyed and careful, detailed plans made and approved.

I was sure that the similarity of the names, Iran and Iraq, would lead to confusion

Prime Minister to Foreign Secretary, Sir Edward Bridges, 2 Aug 41

end General Ismay

In all correspondence, it would be more convenient to use the word "Persia" instead of "Iran", as otherwise dangerous inistakes may easily occur through the similarity of Iran and Iraq In any cases where convenient, the word "Iran" may follow in brackets after Persia.

Formal correspondence with the Persian Government should of

course be conducted in the form they like.

And later

Prime Minister to Minister of Information 29 Aug 41

Do try to blend in without causing trouble the word Persia instead of Iran

I am indeed glad to learn that the Persian Government have

now (1949) adopted officially this change.

During my absence at sea this committee reported to me by telegram the results of their work, which had meanwhile been approved by the War Cabinet. It was clear from their message of August 6 that the Persians would not meet our wishes regarding the expulsion of German agents and residents from their country, and that we should have to resort to force. The next stage was to co-ordinate our plans, diplomatic and military, with those of the Russians. On August 13 Mr. Eden received Mr. Maisky at the Foreign Office, and the terms of our respective Notes to Teheran were agreed. This diplomatic move was to be our final word. Mr. Maisky told the Foreign Secretary that "after the presentation of the memoranda the Soviet Government would be ready to take military action, but they would not

take such action except in conjunction with us." On receiving this news I minuted (August 19), "I think the Russian view is reasonable, and we ought to move with them while there is time"

We were now committed to action. In the event of stronger Persian resistance than had been anticipated we had to consider the possibility of further reinforcement of the Middle East area. On August 24, on the eve of our planned advance into Persia, I sent the following minute to the Chiefs of Staff.

It is essential that more reinforcements should be set in motion east-wards at once. Is it true that the 10th Indian Division has not got a British battalion to each brigade? If so, three battalions of British troops should be sent to join General Quinan by the fastest possible route. As General Auchinleck proposes to remain inactive in the Western Desert for many weeks, he should be directed to move larger forces eastwards than are at present arranged. At least the equivalent of one extra division, including the three British battalions aforesaid, should be set in motion now. If all goes well they can easily be countermanded. Let me know what forces are likely to be available in Egypt. Where is the last brigade of the 50th Division? Surely Cyprus is in no immediate danger.

In view of the recalcitrance of the Peisian Government. General Quinan, who was commanding in Iraq, had been ordered on July 22 to be ready to occupy the oil refinery at Abadan and the oilfields, together with those 250 miles farther north near Khanaqin. The joint Anglo-Soviet Note of August 17 met with an unsatisfactory reply, and the date for the entry of British and Russian forces into Persia was fixed for the 25th. The Imperial forces in the Abadan sector, under General Harvey, comprised the 8th Indian Infantry Division; in the Khanaqiii sector, under General Slim, the 9th Armoured Brigade, one Indian regiment of tanks, four British battalions, and one regiment of British artillery. The supporting air forces consisted of one Army Co-operation, one fighter, and one bomber squadron The first objective was the capture of the oilfields, the second, to advance into Persia and, with Russian co-operation, to control Persian communications and secure a through route to the Caspian. Opposition on the southern front could be expected from two Persian divisions, with sixteen light tanks, and in the north from three divisions.

The capture of the Abadan refinery was made by an infantry brigade, which embarked in naval craft at Basra and landed at dawn on August 25. The majority of the Persian forces were surprised but escaped in lorries. Some street fighting took place and a few Persian naval craft were captured. At the same time other troops of the 8th Division captured the port of Khurramshahr from the landward side, and a force was sent north towards Ahwaz. As our troops were approaching Ahwaz news of the Shah's "Cease fire" order was received, and the Persian general ordered his troops back to barracks. In the north the oilfields were easily captured, and General Slim's force pushed thirty miles along the road towards Kermanshah. They were now faced however with the formidable Pai-tak Pass, which if held by determined troops would have been a definite obstacle. To deal with this a column was sent to turn the position from the south. After overcoming some opposition these troops reached Shahabad, behind the Persian defence, on August 27. This movement, combined with some bombing, proved too much for the defenders of the pass, who abandoned their positions hastily. The advance on Kermanshah was resumed, and on the 28th the enemy were found again to be drawn up on a position across the road. But just as the attack was about to be launched a Persian officer arrived with a white flag and the campaign was over Our casualties were 22 killed and 42 wounded.

Thus ended this brief and fruitful exercise of overwhelming force against a weak and ancient state. Britain and Russia were fighting for their lives. *Inter arma silent leges* We may be glad that in our victory the independence of Persia has been preserved.

\* \* \* \* \*

Persian resistance had collapsed so swiftly that our contacts with the Kremlin became again almost entirely political. Our main object in proposing the joint Anglo-Russian campaign in Persia had been to open up the communications from the Persian Gulf to the Caspian Sea. We hoped also, by this direct co-operation of British and Soviet forces, to establish more intimate and friendly relations with our new Ally. We were of course both agreed on the expulsion from Persia or capture of all Germans and the wiping out of German influence and intrigues in Teheran and elsewhere. The deep and delicate questions about oil,



Communism, and the post-war future of Persia lay in the background, but need not, it seemed to me, impede comradeship and goodwill.

Prime Minister to General Ismay, for COS Committee 27 Aug 41
Now that it seems that the Persian opposition is not very serious, I wish to know what are the plans for pushing on and joining hands with the Russians and making sure we have the railway in working order in our hands. We do not simply want to squat on the oilfields, but to get through communication with Russia. We have made certain proposals to the Shah, but these may be rejected, or the Russians may not agree to them. What therefore are the plans to join hands

with the Russians, and what are the troop movements foreseen in the next week by our different forces?

Prime Minister to General Wavell

30 Aug 41

I am so glad the Persian adventure has prospered There is now no reason why you should not return home as you proposed. I am deeply interested in your railway projects, which are being sedulously examined here.

Everyone here is delighted you have had another success,

General Wavell's visit to London was however shelved by the need for his presence in Teheran. I also hoped that, speaking Russian fluently as he did, he might become an important link with the Soviet High Command.

Prime Minister to General Wavell

I Sept 41

I agree with Chiefs of Staff that your presence in Teheran at present would be helpful to Bullard [the British Minister] in dealing with military requirements and for ensuring that Russian influence is kept within reasonable bounds

Prime Minister to Sir R. Bullard (Teheran)

3 Sept 41

We cannot tell how the war in these regions will develop, but the best possible through route from the Persian Gulf to the Caspian will be developed at the utmost speed and at all costs in order to supply Russia. It is very likely that large British forces will be operating in and from Persia in 1942, and certainly a powerful Air Force will be installed.

We hope it will not be necessary, in the present phase at any rate, to have an Anglo-Russian occupation of Teheran, but the Persian Government will have to give us loyal and faithful help and show all proper alacrity if they wish to avoid it. At the present time we have not turned against the Shah, but unless good results are forthcoming his misgovernment of his people will be brought into the account Although we should like to get what we want by agreement with the Persian Government and do not wish to drive them into active hostility, our requirements must somehow be met, and it ought to be possible for you to obtain all the facilities we require, bit by bit, by using the leverage of a possible Russian occupation of Teheran. There is no need to fear undue Russian encroachments, as their one supreme wish will be to get the through route for American supplies.

Prime Minister to Premier Stalin

16 Sept 41

I am most anxious to settle our alliance with Persia and to make an intimate efficient working arrangement with your forces in Persia There are in Persia signs of serious disorder among tribesmen and of

breakdown of Persian authority. Disorder, if it spreads, will mean wasting our divisions holding down these people, which again means burdening the road and railway communications with movements and supplies of aforesaid divisions, whereas we want to keep the lines clear and improved to the utmost in order to get supplies through to you Our object should be to make the Persians keep each other quiet while we get on with the war. Your Excellency's decisive indications in this direction will speed forward the already favourable trend of our affairs in this minor theatre

\* \* \* \* \*

Prime Minister to Lord Beaverbrook (on Mission to Russia) 21 Sept 41 General Wavell proposes to go to Tiflis via Baghdad on his return to India. He speaks Russian, and I contemplate his directing, or possibly, if the forces grow large enough, commanding, the right hand we shall give to the Russians in and about the Caspian basin in the forthcoming campaign. It is therefore important that he should confei with high Russian military authorities on the whole position of their southern flank and in Persia.

You may bring this into your discussions, and see that the most is made of it

Prime Minister to Premier Stalin

12 Oct 41

Our only interests in Persia are, first, as a barrier against German penetration eastward, and, secondly, as a through route for supplies to the Caspian basin. If you wish to withdraw the five or six Russian divisions for use on the battle-front we will take over the whole responsibility of keeping order and maintaining and improving the supply route. I pledge the faith of Britain that we will not seek any advantage for ourselves at the expense of any rightful Russian interest during the war or at the end. In any case, the signing of the Tripartite Treaty is urgent to avoid internal disorders growing, with consequent danger of choking the supply route. General Wavell will be at Tiflis on October 18, and will discuss with your generals any questions which you may instruct them to settle with him.

Words are useless to express what we feel about your vast heroic struggle We hope presently to testify by action.

\* \* \* \*

All arrangements with the Russians were smoothly and swiftly agreed. The conditions imposed on the Persian Government were, principally, the cessation of all resistance, the ejection of Germans, neutrality in the war, and the Allied use of Persian communications for the transit of war supplies to Russia. The

further occupation of Persia was peacefully accomplished. British and Russian forces met in amity, and Teheran was jointly occupied on September 17, the Shah having abdicated on the previous day in favour of his gifted twenty-two-year-old son. On September 20 the new Shah, under Allied advice, restored the Constitutional Monarchy, and his father shortly afterwards went into comfortable exile and died at Johannesburg in July 1944. Most of our forces withdrew from the country, leaving only detachments to guard the communications, and Teheran was evacuated by both British and Russian troops on October 18. Thereafter our forces, under General Quinan, were engaged in preparing defences against the possible incursion of German armies from Turkey or the Caucasus, and in making administrative preparations for the large reinforcements which would arrive if that incursion seemed imminent

The creation of a major supply route to Russia through the Persian Gulf became our prime objective. With a friendly Government in Teheran ports were enlarged, river communications developed, roads built, and railways reconstructed Starting in September 1941, this enterprise, begun and developed by the British Army, and presently to be adopted and completed by the United States, enabled us to send to Russia, over a period of four and a half years, five million tons of supplies.

#### \* \* \* \* \*

We can now return to the dominant theatre of the Mediterranean.

Both sides used the summer to reinforce the armies in the Libyan desert. For us the replenishment of Malta was vital The loss of Crete deprived Admiral Cunningham's fleet of a fuelling base near enough to bring our protecting sea-power into action. The possibilities of a seaborne assault on Malta from Italy or Sicily grew, though, as we now know, it was not until 1942 that Hitler and Mussolini approved such a plan. Enemy air bases both in Crete and Cyrenaica menaced the convoy route from Alexandria to Malta so seriously that we had to depend entirely on the West for the passage of supplies. In this task Admiral Somerville, with Force H from Gibraltar, rendered distinguished service. The route the Admiralty had judged the more dangerous became the only one open. Fortunately at this time the demands

of his Russian invasion compelled Hitler to withdraw his air force from Sicily, which gave a respite to Malta and restored to us the mastery in the air over the Malta Channel. This not only helped the approach of convoys from the West, but enabled us to strike harder at the transports and supply ships reinforcing Rommel.

Two considerable convoys were fought through successfully The passage of each was a heavy naval operation. In July a convoy of six supply ships reached Malta, and seven empty vessels were brought out Two nights later the Italians delivered their only heavy attack upon Valetta harbour, with about twenty E-boats and eight midget submarines. The harbour defences, manned largely by Maltese, destroyed almost the whole attacking force in spite of its daring. In September another convoy of nine transports came through, with the loss of only one, under a very strong escort, comprising the battleships Prince of Wales and Rodney, the Ark Royal, five cruisers, and eighteen destroyers. Besides these main convoys, a number of other supply ships reached the island In all thirty-two ships out of thirty-four came in safely after much peril and gallant conduct. This nourishment enabled the fortress not only to live but to strike During the three months ending with September forty-three Axis ships, of 150,000 tons, besides sixty-four smaller craft, were sunk on the African route by British aircraft, submarines, and destroyers, acting from Malta In October over 60 per cent. of Rommel's supplies were sunk in passage. This may well have played a decisive part in the Desert struggle of 1941.

\* \* \* \* \*

In September, as we now know, the German admiral serving with the Italian High Command reported:

Now, as ever, the British Fleet dominates the Mediterranean. . . The Italian Fleet has been unable to prevent operations by the enemy's naval forces, but, in co-operation with the Italian Air Force, it did prevent the Mediterranean route being used for regular British convoy traffic

The most dangerous British weapon is the submarine, especially those operating from Malta. In the period covered there were thirty-six submarine attacks, of these nineteen were successful.. Owing to the weakness of the Italian Air Force in Sicily, the threat from Malta to the German-Italian sea route to North Africa has increased

in the last few weeks ... Moreover, almost daily attacks on Tripoli are made from Malta Recently the Italian seaports in Sicily have been visited by British aircraft more frequently than before. .. The formations of the Italian Air Force now stationed in Sicily and North Africa are insufficient to stop the British Air Force and naval operations . I again issue an urgent warning against an under-estimate of the dangers arising from the situation at sea in the Mediterranean.

\* \* \* \* \*

My anxieties about the Desert delay and the reinforcements reaching Rommel were not allayed by the success of the measures described, and I urged even greater efforts upon the Admiralty. I desired specially that a new surface force should be based upon Malta

Prime Minister to First Sea Lord. General Ismay to see 22 Aug 41 Will you please consider the sending of a flotilla, and, if possible, a

cruiser or two, to Malta, as soon as possible.

2 We must look back to see how much our purpose has been deflected. There was the plan, considered vital by you, of blocking Tripoli harbour, for which Barham was to be sacrificed. There was the alternative desperate proposal by the C-in-C. Mediterranean to bombard it, which was afterwards effected without the loss of a man or a single ship being damaged. There was the arrival of Mountbatten's flotilla in Malta. All this took place several months ago. It would be well to get out the dates. How is it that the urgency of this matter has declined? How is it that we are now content to watch what we formerly thought unendurable, although it is going forward on a bigger scale against us?

3 The reason why Mountbatten's flotilla was withdrawn from Malta was less because of the danger there than for the needs of the Cretan affair, in which the flotilla was practically destroyed. We have thus lost sight of our purpose, on which there was such general agreement, and in which the Admiralty was so forward and strong

- 4 Meanwhile three things have happened First the Malta defences have been markedly strengthened in the air and A.A. guns, and the German air forces have been drawn away to some extent to Russia Secondly, the Battle of the Atlantic has turned sharply in our favour, we have more anti-U-boat craft, and we are to expect a substantial relief through American action west of the 26th meridian affecting our destroyers and corvettes. Thirdly, General Auchinleck is dismiclined to move before November.
- 5 Are we then to wait and allow this ever-growing reinforcement, mainly of Italians and of supplies, to pile up in Libya? If so, General

Auchinleck will be no better off, relatively to the enemy, when at last he considers himself perfectly ready than he is now

6 I shall be glad to hear from you over the week-end, and we could

discuss it at the Staff meeting on Monday night

The policy was accepted, though time was needed to bring it into force. In October a striking force known as "Force K", comprising the cruisers Autora and Penelope and the destroyers Lance and Lively, was formed at Malta. This presently rendered important and timely service.

\* \* \* \* \*

I had at this time wider aims. In war it is always desirable. though not always possible, to plan ahead The lull which followed Auchinleck's decision to delay his offensive and the successful Persian campaign offered an opportunity From every point of view I desired at this time to reinforce the East to the utmost shipping limit. I could not tell what would happen in the impending Desert battle, nor how the Russian front in the Caucasus would hold. There was always, besides, the menace of Japan, with all its potential peril to Australia and New Zealand I wished to have two more British divisions moving eastward If these could be rounding the Cape about the end of the year we should have something substantial in hand for unknowable contingencies. Here would be, in fact, that mobile reserve, that "mass of manœuvre", which alone could give superior options in the hour of need. I had learnt about this in a hard school where lessons are often only given once.

It therefore became my ambition to make assurance doubly sure by throwing in another two divisions for the Desert army, as well as to have a mobile reserve for other needs or chances in the Middle East. For this we had no shipping All that could be spared from the Atlantic struggle was employed in convoys round the Cape or from Australia or India. Even Leathers could offer no solution. But I felt sure, from the increasing cordiality in my correspondence with the President, that he would lend me some fast American transports. Nor, as will be seen, was I wrong. This could not of course operate for a good many months, but I longed to have something in hand moving through the Indian Ocean for one or other of the various disagreeable emergencies

which might come upon us

Prime Minister to CIGS and Minister of Shipping 22 Aug 41

Let me have a scheme prepared that we could consider Monday night, for sending two more complete infantry divisions to the Middle East, at the callicst moment Let me know what shipping will be required Some of the lorries can surely go direct from the United States from the great numbers now being loaded When these figures have been supplied I will ask President Roosevelt for the loan of this

shipping for this particular purpose, and I dare say I can get it

As a modification of the above, the divisions could go to Halifax or New York, and re-embark there upon American ships. The Minister of Shipping should throw himself into this plan, and let me have a report from all angles. I am convinced that by the end of November we should have two more divisions in that theatre, though whether they would operate in Persia, Iraq, or the Middle East Command must depend upon circumstances Let me also have the time-table of the movement of the 1st Armoured Division to the Middle East

The intricate details were thrashed out with Lord Leathers and the Chiefs of Staff

Prime Minister to General Ismay

26 Aug 41

Pray make arrangements with Lord Leathers and the War Office Movements Branch to further this reinforcement in the light of our discussion last night Ingenuity and contrivance must be used to minimise the demand I must make upon the President The request will be for one round voyage of a certain number of ships from America to this country, to the Middle East, and back to the United States They ought to have them at their disposal again in January or in February If Normandie could be taken over transhipment might be possible at Trinidad, which would release earlier some of the smaller liners Arrangements for reception in the Middle East, involving transhipment to smaller vessels, must also in that case be considered

Let me have the best plan possible, and focus the outstanding points of difficulty, so that I can myself preside over the final conference.

Imports may be cut

# I now appealed to the President.

Former Naval Person to President

The good results which have been so smoothly obtained in Persia puts us in touch with the Russians, and we propose to double, or at least greatly improve, the railway from the Persian Gulf to the Caspian, thus opening a sure route by which long-term supplies can reach the

Russian reserve positions in the Volga basin Besides this there is the importance of encouraging Turkey to stand as a solid block against a German passage to Syria and Palestine. In view of both these important objectives, I wish to reinforce the Middle East armies with two regular British divisions, 40,000 men, in addition to the 150,000 drafts and units which we are carrying ourselves between now and Christmas. We cannot however manage to find the whole of the shipping by ourselves. Would it be possible for you to lend us twelve United States liners and twenty United States cargo ships manned by American crews from early October till February? These would come carrying cargo to United Kingdom ports under any flag arrangement convenient. If they could arrive here early in October we would send them forward as additions to our October and November conveys to the Middle East.

- 2 I know, Mr President, from our talks that this will be difficult to do, but there is a great need for more British troops in the Middle East, and it will be an enormous advantage if we can hold Turkey and sustain Russia, and by so doing bar further advance eastward by Hitler. It is quite true that the loan of these liners would hamper any large dispatch of United States forces to Europe or Africa, but, as you know, I have never asked for this in any period we can reasonably foresce in the near future
- 3 It is for you to say what you would require in replacements of ships sunk by enemy action. Hitherto we have lost hardly anything in our well-guarded troop convoys. I am sure this would be a wise and practical step to take at the present juncture, and I shall be very grateful if you can make it possible.

This produced a most helpful and generous response "I am sure," said the President on the 6th, "we can help with your project to reinforce the Middle East army. At any rate I can now assure you that we can provide transport for twenty thousand men." He said that these ships would be United States naval transports manned by Navy crews, and that the American Neutrality Act permitted public ships of the Navy to go to any port. The United States Maritime Commission would besides this arrange to place ten or twelve additional ships in the North Atlantic to run between American ports and Great Britain, so that we could release ten or twelve of our British cargo ships for the voyage to the Middle East. "I am loaning you," he said, "our best transport ships. Incidentally I am delighted you are going to reinforce the Middle East."

Former Naval Person to President Roosevelt 7 Sept 41

I am indeed grateful for your prompt response to my appeal about Middle East shipping, and very glad you like the policy. I am also planning to send seventeen more squadrons of fighter aircraft to the same theatre

- 2 In my telegram about supply help for Russia, I meant to add "If they keep fighting it is worth it, if they don't we don't have to send it" We are hitting ourselves very hard in tanks, but this argument decided me
- 3. We all await with profound interest your promised statement for Monday I am speaking Tuesday in the House.

At the same time the President brought into operation the agreements which he had made with me at Placentia to intervene more directly in the Atlantic.

## \* \* \* \* \*

I now proceeded to use the President's invaluable gift of transports to the best advantage

Prime Minister to Colonel Hollis, for GOS Committee

All possible must be done to accelerate the movement and turnround of the fast American transports in order to secure to us the
benefits of a second trip. The sailing of these transports from America
must not be delayed for the sake of carrying the Canadian armoured
troops. To carry them is convenient, but not essential. The delay of
reloading of these ships in UK ports from October 23 to November 15
cannot be accepted. An evolution should be made of putting No. I
extra division on board in the shortest time. At least a fortnight should
be saved on this if it can be reconciled with convoy movements

2 The Field State of the Army of the Nile is good. This is not surprising considering they are taking nearly five months' rest from all fighting. The sixty British battalions average 880, and the forty-five artillery regiments are only short by 9 per cent. It is inconceivable that more than a quarter of this artillery can be heavily engaged in continuous bombardment during the next four months. Drafts for the artillery cannot therefore have high priority. The six Tank Transporter and sixteen Standard M.T. companies deserve a high place. This applies also to the naval relief, to the Indian reinforcements and to the artillery, etc., for the two new Indian divisions in Iraq. 10,000 to 20,000 drafts for the infantry can be worked in as convenient, and there may be some specialist items in the R.A.S.C. (Royal Army Service Corps) field which are urgently needed. Let us remember, however, that nothing can now get there before

"Crusader". Malaya can wait, and West Africa can be fitted in or not as convenient The problem we have to settle is one of priority.

3. The supreme object to be aimed at is to send British divisions Nos. 1 and 2 to the Middle East in accordance with the proposal made to President Roosevelt. Spreading the movement over another month or two, especially if we get the American second trip, will surely provide for all the desiderata. There is no question of saying that anything never goes.

4 I look to the Air Ministry to make the existing squadrons in

Middle East go forward with their expansion to 621 squadrons

5 I should be grateful if these points could be woven into a revised programme of reinforcement for the Middle East, and I shall be very glad to discuss any difficulties outstanding with the C.O S. Committee to-night or to-morrow night

\* \* \* \* \*

Although the Chiefs of Staff had agreed to the dispatch of the two additional divisions to the East, there were misgivings Various dangers were pressed upon me. I still assigned priority to Auchinleck's offensive.

Prime Minister to Colonel Hollis, for COS. Committee 18 Sept 4r It is our duty to take a view about whether serious fighting will take place or not in the interval before all convoys arrive. It should not be assumed that the risk of this is evenly spread over the whole period, and that at any given moment we must provide the maximum addition of effective fighting strength. It would seem that the only serious fighting to be expected is our long-delayed offensive in the Western Desert, for which nothing more [ie, not yet dispatched] can now arrive in time However, should this offensive succeed, very great strain will be thrown upon the transport (RASC) services, including specialised units, either to hold the ground gained or to make an ambitious leap forward to the west. In these circumstances I am disposed to meet, if possible, the RASC requirements, which at first I thought excessive 13,500 are provided in the COS minute, 4,000 more could be obtained by delaying the five infantity battalions promised to India in the October convoy There seems more urgency in the former than in the latter case. India is no doubt very thin, but on this new showing they will still receive 7,900—namely, three battalions plus drafts for expansion This is a considerable infusion of British troops Therefore I wish the five battalions, 4,000, to be delayed till the New Year, and the 4,000 passages saved devoted to reinforcement of the R.A.S.C. for Middle East. It should be explained to India

at Headquarters that the delay is only a short one and that the expansion programme should proceed

- 2 It is difficult to see from what quarter and by what line of advance other "serious fighting" will develop in the period covered by our convoys to the end of 1941 and their arrival by the end of February 1942. In this five-month period it is not likely that Turkey will open the door to a German invasion of Syria, and still less likely that, if she refuses, a way through Asia Minor can be forced by the enemy. Unless there is a complete collapse of Russia, the Germans will be chary of embarking on a major war with Turkey, costing perhaps another million men. Therefore I cannot see the risk of invasion of Syria, Palestine, etc., from the north as likely to be operative before the winter is over—say, March. This is also the view which has been taken in various C O S papers
- 3 The only other route by which serious attack can fall upon us is through the Caucasus and across the Caspian. This presupposes the mastery of the Black Sea, in which the Russians have at present an overwhelming naval superiority, involving the capture of Sebastopol and also of Novorossisk, the subsequent traversing of the Caucasus from Batum to Baku, or alternatively a movement north of the Black Sea and through the Caucasus from north to south. This would be a prohibitive winter operation. A third possibility would be a German march round the Caspian, forcing the line of the Volga and destroying the last reserve armies of Russia. This is plainly an operation impossible to complete within the next six months, unless we assume the surrender or collapse of Russia. Unless this happens, the Caspian, strongly held by Russian naval forces, must remain a great shield to the northward.
- 4 Therefore, in order to bring about the "serious fighting" suggested, Turkey and/or Russia must yield in the period mentioned, or the Germans must force their way from Anatolia or through the Caucasus or round the north of the Caspian A sensible, practical view of the admitted uncertainties of war should exclude all these possibilities before the spring of 1942
- 5. I cannot therefore accept the theory of continuous even risk from day to day, and I consider that we are justified in relying upon no "serious fighting" other than in the Western Desert in this theatre till March 1942, unless of course we choose to take the offensive. In these circumstances I feel free to give proper weight to the major political-strategic issues involved in the broad decision to send two additional divisions in the van of the reinforcements
- 6 What are these considerations? First, the moral need of our having a substantial, recognisable British stake and contribution in the

Middle East, and freeing ourselves from the imputation, however unjust, of always using other people's troops and blood. Secondly, the effect produced upon Turkey by our being able to add two divisions to the forces already mentioned in the Staff conversations, thus appreciably increasing the chances of influencing Turkish action. Thirdly, the basis of my appeal to the President, which I do not wish upset Fourthly, the possibility that these two divisions may move in by Basia, in order to give an effective right hand to the Russian reserve forces to the north of the Caspian.

The various alternatives will remain open to us in the three months

during which these divisions will be in transit ...

\* \* \* \* \*

# As usual I kept Smuts informed

Prime Minister to General Smuts

20 Nov 41

Am sending two divisions and about 80,000 other reinforcements to Middle East between now and Christmas To help in this I have had to beg loan of American transports from Roosevelt, which has been kindly given If we can clear up Cyrenaica we shall have substantial forces to give right hand to Russia in Caspian region and/ or influence action Turkey. This last regard as our most immediate prize Hope at least to procure Turkish resistance to German demands for passage through Anatolia. Meanwhile Beaverbrook and Harriman are leaving for Moscow. We have had to make terrible sacrifices in tanks and aircraft and other munitions so sorely needed. If Russians stay in it is worth it. If they quit we don't have to send it. Hope to reach total of twenty-five divisions from Caspian to Nile during 1942 I doubt very much whether Russians would be wise to press us to cumber the Trans-Persian railway, which we are rapidly developing, with movement and supply of the few divisions we could actually send into Russia. All these matters will be discussed at Moscow and studied by our Staffs Will keep you informed

\* \* \* \* \*

All our minds were constantly turned to the Desert I may recur to the note I had written on the voyage to Placentia in the first week of August about the impending Desert operations I showed my draft to the Chief of the Imperial General Staff and to General Brooke, Commander-in-Chief of our Home Forces They both expressed their full concurrence, subject to a few minor alterations not affecting the principles involved.

I circulated this paper to various high commanders as from

October 7, 1941. The ruling given in paragraph 4 about the military and air commands was made operative by telegrams to General Auchinleck and Air Marshal Tedder, defining their relation and affirming the supremacy of the military commander over the use to be made of the Air Force, both during a battle and in its preparatory phase. This rule prevailed henceforward in the British Service, and was later independently developed by the United States

## A NOTE BY THE MINISTER OF DEFENCE

Renown awaits the Commander who first in this war restores Artillery to its prime importance upon the battlefield, from which it has been ousted by heavily armoured tanks. For this purpose three rules are necessary:

(a) Every field gun or mobile A A gun should carry a plentiful supply of solid armour-piercing tracer shot thus every mobile gun will become an anti-tank gun, and every battery

possess its own anti-tank protection

(b) When guns are attacked by tanks they must welcome the occasion. The guns should be fought to the muzzle. Until the approaching tanks are within close range batteries should engage them at a rapid rate of fire with H.E.\* During this phase the tracks of the tanks are the most vulnerable target. At close quarters solid A.P. † shot should be fired; this should be continued so long as any of the detachments survive. The last shot should be fired at not more than ten yards' range. It may be that some gun crews could affect to be out of action or withhold their fire, so as to have the superb opportunity of firing A.P. at the closest range.

(c) It may often happen as a result of the above tactics, especially when artillery is working with tanks, that guns may be over-run and lost Provided they have been fought to the muzzle, this should not at all be considered a disaster, but, on the contrary, the highest honour to the battery concerned. The destruction of tanks more than repays the loss of field guns or mobile A A. guns. The Germans have no use for our captured guns, as they have a plethora of their own types, which they prefer. Our own supplies are sufficient to make

good the deficiencies

The principle must be established by the Royal Artillery that it is not good enough for tanks to attack a group of

<sup>\*</sup> High explosive † Armour-piercing

British batteries properly posted, and that these batteries will always await their attack in order to destroy a good proportion of tanks. Our guns must no more retreat on the approach of tanks than Wellington's squares at Waterloo on the approach of hostile cavalry.

- 2. The Germans made a practice from the beginning of their invasion of France, and have since developed it consistently, of taking what they call "flak" artillery with their most advanced parties and interspersing all their armoured and supply columns with it. We should do the same. The principle should be that all formations, whether in column or deployed, should be provided with a quota of A.A guns for their protection. This principle is applicable to columns of all kinds, which should be freely supplied with machine-guns, as well as with Bofors as the supply of these weapons becomes more plentiful.
- 3 250 Bofors are now being sent to General Auchinleck for him to use in the best possible way with all his columns, and at all the assembly points of his troops or refuelling stations required in the course of offensive operations.

Nevermore must the Army rely solely on aircraft for its protection against attack from the air. Above all, the idea of keeping standing patrols of aircraft over moving columns should be abandoned. It is unsound to "distribute" aircraft in this way, and no air superiority will stand any large application of such a mischievous practice.

- 4 Upon the Military Commander-in-Chief in the Middle East announcing that a battle is in prospect, the Air Officer Commanding-in-Chief will give him all possible aid irrespective of other taigets, however attractive. Victory in the battle makes amends for all, and creates new favourable situations of a decisive character. The Army Commander-in-Chief will specify to the Air Officer Commanding-in-Chief the targets and tasks which he requires to be performed, both in the preparatory attack on the rearward installations of the enemy and for air action during the progress of the battle. It will be for the Air Officer Commanding-in-Chief to use his maximum force for these objects in the manner most effective. This applies not only to any squadrons assigned to Army Co-operation permanently, but also to the whole air force available in the theatre.
- 5 Bombers may, if required, be used as transport or supply machines to far-ranging or outlying columns of troops, the sole object being the success of the military operation. As the interests of the two Commanders-in-Chief are identical it is not thought that any difficulty should arise. The Air Officer Commanding-in-Chief would naturally lay aside all routine programmes and concentrate on bombing the

rearward services of the enemy in the preparatory period. This he would do not only by night, but by day attacks with fighter protection. In this process he will bring about a trial of strength with the enemy fighters, and has the best chance of obtaining local command of the air. What is true of the preparatory period applies with even greater force during the battle. All assembly or refuelling points or marching columns of the enemy should be attacked by bombers during daylight with strong fighter protection, thus bringing about air conflicts not only of the highest importance in themselves, but directly contributing to the general result.

General Montgomery was not one of those to whom the paper was sent, and it was not till after I met him in Tripoli in 1943, after the victory of the Eighth Army at Alamein eighteen months later, that I chanced to show him a copy "It is as true now," he wrote, "as when it was written" Renown by then had certainly attended his restoration of artillery to its position upon the battlefield.

## CHAPTER XXVII

# THE MOUNTING STRENGTH OF BRITAIN

# Autumn 1941

Review of Our Military Position - My Minute of October 4 - Need to Preserve the Military Efficiency of the Home Forces - Restrictions upon Air Defence of Great Britain - Immense Advance in Our Air Fighter Strength - Limitations on Our Bombing Offensive - Army Strength My Directive of October 9 - The Problem of Man-power. My Memorandum of November 6 - I Question the Invasion Menace -A Plan for the Home Guard - General Embick's Mission and Report -My Comments Thereupon - Our Atlantic Life-line - The President's "Śhoot First" Order, September 11 – Telegram to General Smuts – Greater Safety of the Convoys - Sinking of the "Reuben James", October 31 - Our Air Offensive in the Bay of Biscay - A Submanne Surrenders to an Aeroplane - The Sea Routes to Russia - Our First Convoy to Russia, August 12 - The Focke-Wulf Mastered - We Develop the Escort Carrier - Our Foremost U-Boat Killer - U-Boats in the Mediterranean - War on the German Surface Raiders - British Power in the Autumn of 1941 - Table of Shipping Losses.

As the winter approached the strength and organisation of the Army in 1942 had to be reviewed in a new light of circumstances. We could not be sure that Germany had not by now constructed many varieties of landing and tanklanding craft for invasion. We ourselves were doing this on an ever-increasing scale. Surely her need was even greater. We could not be certain in October that, having smitten and hurled back the Russian armies in the first phase of his onslaught, Hitlei might not suddenly halt and take up a winter position as he was

first advised to do by his host of generals Having made preparations in good time, might he not switch back twenty or thirty divisions across his lateral roads for a spring invasion of Britain? It was not even known whether he had not sufficient good troops still remaining in the Western theatre. It also seemed possible that the German Air Force could very rapidly be made to shift its weight back again from the East to the West. At any rate, we must be ready for such a sudden change. Sir Alan Brooke, Commander-in-Chief of the Home Forces, was responsible for representing this vital need. He was quite right to set forth the claims of Home Defence, and this was certainly done by him and his powerful staff in a most vigorous fashion. They demanded large numbers of men, and confronted us with grisly reductions of fighting units if these were not forthcoming. It fell on me as Minister of Defence with the Chiefs of Staff to decide the true apportionment of our already heavily strained man-power and woman-power.

Prime Minister to Secretary of State for War and CIGS 4 Oct 41 I was greatly disturbed by the statement of C-m-C Home Forces that he would have to reduce his standard divisional formations to II fully mobile divisions, apart from 3 in Ireland, by the spring This destruction of more than half our Army would be intolerable, and the Cabinet should certainly have been warned by you before any such situation even approached the limits of discussion

- 2 There is no sort of warrant or necessity for such mutilation of the Army Apart from active operations, the impending losses in the winter through normal wastage cannot exceed 60,000 men, and an intake of more than that number has been arranged. The 26 standard divisions and the 9 county divisions and the 7 armoured divisions, including the Guards (forming), are not on any account to be reduced. If new units are required easement may be found in the 4 or 5 independent brigades and the 12 unbrigaded battalions.
- 3 Please investigate the Commander-in-Chief's statement at once, and give me your report upon it. In the meantime the following rule must be observed. No existing divisional formation is to be reduced in standard or converted to a different form without my express authority, obtained in each case beforehand in good time. I must also be informed of any new units you wish to create in substitution for existing units, and any important changes in the establishments, whether in personnel or equipment. Let me have a list of any that are now in progress or in prospect.

## THE MOUNTING STRENGTH OF BRITAIN

At the same time I did all in my power to uphold the efficiency of the Home Forces, and to ward off from them the many specious and plausible derhands that were made upon them by the civil departments.

Prime Minister to Secretary of State for War

5 Oct 41

I do not approve the idea of using the Army to dig land drains or for other work of this character during the winter. It is not the case that the Air Force have a similar scheme. Their proposal is to send 8,000 skilled technicians of the R.A.F., in uniform, on loan to the factories for about six months. Their case is entirely different from that of the Army, and I think their plan is a good one.

2. Military considerations should rule your thoughts, and you should not yield to the weak elements in the country who do not understand that quality, efficiency, smartness of bearing, high discipline, are the vital characteristics of an armed force that may have to

meet the Germans

3 In any emergency like heavy air raids or the harvest the Army should of course give immediate and generous aid. But we shall want all our men in the spring, and every unit in the highest state of readi-There may even be operational demands before the spring Your responsibility is to have them all ready like fighting cocks, in accordance with the directions which I give as Minister of Defence Parades, exercises, and manœuvres, the detailed development of the individual qualities of sections, platoons, and companies, continual improvement and purging of the officers of middle rank, courses and competitions of all kinds, should occupy all ranks. There should be plenty of marching with bands through towns and industrial districts The monotony should be relieved by more generous leave being granted both to officers and men Facilities for transport to the towns for amusement should be elaborated, as a little fun in the counterpart of the hard training which must be exacted. We need regular units of the highest type, and not a mud-stained militia that is supposed to turn out and take a hand in the invasion should it come. I pointed out to the House last week the dangers of yielding to soft, easy, and popular expedients, and the dark places into which we have been led thereby

The main source from which our man-power for mobile fighting troops could be sustained was of course the anti-aircraft batteries and other air defence units under General Pile's command. The fear of renewed air attacks on an even larger scale had led to demands for actual increases in our Air Defence. I

resisted these tendencies, and began again to argue the case against the invasion danger, which nevertheless always lurked in my mind.

Prime Minister to Colonel Hollis, for COS. Committee

## AIR DEFENCE OF GREAT BRITAIN

## DIRECTIVE BY THE PRIME MINISTER

October 8, 1941

We cannot state how severe the air raids will be this winter or what the danger of invasion will be in the spring. These two vultures will hang above us to the end of the war We must be careful that our precautions against them do not unduly weaken our Mobile Field

Army and other forms of our offensive effort

2 It would seem reasonable to fix the total of Air Defence of Great Britain (ADGB) personnel at its present figure of 280,000, plus any additional recruitment of women that they can attract This will give them at least 30,000 more than what we got through the air raids with last year. The proposed addition of 50,000, [making] a total of 330,000. cannot be supplied Many more high- and low-ceiling guns are coming to hand now. Some of these might be mounted in additional batteries. but unless A.D G.B. can contrive by praiseworthy thought and ingenuity to man them within the limits of the personnel mentioned they will have to be kept in care and maintenance.

3 Having regard to the parity now existing between the British and German Air Forces, and the Russian factor, it is unlikely that the enemy will make heavy and continuous air attacks on Great Britain in combination with or as a prelude to invasion. He would need to

save up for that ...

4 A D G.B. must therefore become as flexible as possible and keep static defence at a minimum. For this purpose as large a proportion as possible of A D.G B should be in a mobile form General Pile should prepare schemes for giving the utmost reinforcement of mobile flak to General Brooke's army. Sometimes they must take their guns from the site. In other cases a duplicate set of mobile guns may be made available. Thus we can shift the weight from one leg to the other as the need requires

6 Above all, we cannot go on adding gun to gun and battery to battery as the factories turn them out, and so get an ever larger proportion of our limited trained man-power anchored to static and

passive defence.

7 General Pile should be assisted in every way to prepare schemes for increasing the mobile flak of the Army and reinforcing the coast

batteries, while at the same time, without any addition (apart from women) to his numbers (280,000), maintaining the indispensable minimum which served us so well last year

8. The Chiefs of Staff Committee is requested to advise, and consider what proposals should be made to give effect to the foregoing principles

\* \* \* \*

Our air fighter strength had now made an immense advance, and not only gave increased security against invasion but opened other prospects to strategic planning.

Prime Mutister to C.A.S. I Sept 41

I was delighted to see in the last return that we have practically 100 fighter squadrons (99%) in the Metropolitan Air Force The vast changes in the war situation arising from the arrival of Russia as a combatant, and the improvement of our position in the Middle East, including Persia, make me inclined to a large further reinforcement of the Middle East to influence Turkey and/or sustain Russia on her southern flank My thought is turning to the dispatch of as many as twenty fighter squadrons complete to the Iraq-Persia and Syrian theatre It may be these squadrons would come into action against German bombers and dive-bombers while defending territories under our control or that of our Allies, and that we should then reproduce the favourable conditions of fighting which enabled us to inflict such heavy losses upon the Germans when they made their air attack upon us last year in the Battle of Britain This might be a more paying business than the very hard struggles in France, which of course we must continue as occasion serves. This force would have to go by long sea route round the Cape, and could not come into action till the end of the year. It should take with it the effective organisation of one or two control centres (like No 11 Group), so that the full power of the fighter defence could be manifested. It would not leave the country till the invasion period is over. It is of course additional to all you have in hand for the East.

I shall be obliged if you will have this situation examined in all its bearings, and let me know about numbers of personnel required, what demands on shipping, and what you think of this important transference of war power. Such forces operating north and south of the Caspian would be a gigantic contribution to Russia's war effort, and allied with bomber forces might long dispute the eastward advance of the Germans. The Indian Air Force would come into action in

the same areas.

I never ceased to do my utmost to increase and stimulate the production of bombers, which lagged far behind even the most moderate claims of their partisans.

Prime Minister to Lord President of the Council I have been deeply concerned at the slow expansion of the production of heavy and medium bombers. In order to achieve a first-line strength of 4,000 medium and heavy bombers, the Royal Air Force require 22,000 to be made between July 1941 and July 1943, of which 5.500 may be expected to reach us from American production. The latest forecasts show that of the remaining 16,500 only 11,000 will be got from our own factories If we are to win the war we cannot accept this position, and, after discussion with the Minister of Aircraft Production and Sir Chailes Craven, I have given directions for a plan to be prepared for the expansion of our effort to produce a total of 14,500 in the period instead of 11,000. This can only be done by a great concentiation of effort and by making inroads on our other Materials and machine tools should not present an requirements insuperable difficulty, and there will be enough pilots to fly the aircraft The crux of the matter will be the provision of sufficient skilled labour to set up the machines and to train great numbers of fresh men and women This skilled labour can only be found at the expense of other projects

I have asked the Minister of Aircraft Production to draw up a plan for this new programme and to state the demands he must make for its fulfilment. I have also asked him to make suggestions as to how these demands could be met. I have asked the Secretary of State for Air to adjust his programme for the expansion of the Royal Air Force to fit the new production programme. This will give some easement in the preparation of airfields, the manufacture and filling of bombs, etc., since the full first-line strength will be achieved rather later than

is at present planned.

I wish you to take the plan which the Minister of Aircraft Production will produce, to convene such Ministers as may be concerned, and to prepare for my consideration proposals for implementing the plan. It will be necessary to show what the effect on our other activities will be. It may be necessary to slow up the Admiralty programme or to reduce the flow of equipment for the Army. Above all, it will certainly be necessary drastically to curtail the building of the great number of new factories, which are now in the early stages of construction, or which are about to be started, and which absorb so much labour, not only in their erection but in the fabrication of the materials they require. You should call for a return of all such factories, showing the object for which they are intended, the date when they were started

and the state of their progress, and the year and month in which they are likely to come into operation. Other long-term projects must

give way to the overriding need for more bomber aircraft.

I regard this subject as a major factor in the war at the present time, and I should like to receive your preliminary proposals in a formight Thereafter you must watch over the progress of the scheme, and I will hold periodic conferences to stimulate action.

# \* \* \* \* \*

At the same time I was forced to cool down the claims which some of our most trusted officers put forward in their natural ardour. Coastal Command was particularly hard hit by the cuts which we were forced to make in its expected scale of expansion. My task at this time was to fight on all the administrative fronts at once, and amid conflicting needs to advise the Cabinet upon the right solution.

Prime Minister to C.A.S. 7 Oct 41

We all hope that the air offensive against Germany will realise the expectations of the Air Staff Everything is being done to create the bombing force desired on the largest possible scale, and there is no intention of changing this policy. I deprecate however placing unbounded confidence in this means of attack, and still more expressing that confidence in terms of arithmetic. It is the most potent method of impairing the enemy's morale we can use at the present time. If the United States enters the war it would have to be supplemented in 1943 by simultaneous attacks by armoured forces in many of the conquered countries which were ripe for revolt. Only in this way could a decision certainly be achieved. Even if all the towns of Germany were rendered largely uninhabitable it does not follow that the military control would be weakened or even that war industry could not be carried on.

2 The Air Staff would make a mistake to put their claim too high. Before the war we were greatly misled by the pictures they painted of the destruction that would be wrought by air raids. This is illustrated by the fact that 250,000 beds were actually provided for air-raid casualties, never more than 6,000 being required. This picture of air destruction was so exaggerated that it depressed the statesmen responsible for the pre-war policy, and played a definite part in the desertion of Czechoslovakia in August 1938. Again, the Air Staff, after the war had begun, taught us sedulously to believe that if the enemy acquired the Low Countries, to say nothing of France, our position would be impossible owing to the air attacks. However, by not paying too

much attention to such ideas we have found quite a good means of keeping going.

- 3. It may well be that German morale will crack, and that our bombing will play a very important part in bringing the result about But all things are always on the move simultaneously, and it is quite possible that the Nazi war-making power in 1943 will be so widely spread throughout Europe as to be to a large extent independent of the actual buildings in the homeland
- 4. A different picture would be presented if the enemy's Air Force were so far reduced as to enable heavy accurate daylight bombing of factories to take place. This however cannot be done outside the radius of fighter protection, according to what I am at present told One has to do the best one can, but he is an unwise man who thinks there is any certain method of winning this war, or indeed any other war between equals in strength. The only plan is to persevere

I shall be delighted to discuss these general topics with you whenever

you will.

\* \* \* \* \*

I now arrived at general conclusions about the strength and character of the Army at which we should aim for 1942, as well as upon the man-power measures necessary to sustain it. I obtained the agreement of the authorities concerned to the following programme and consequential measures which were enforced.

# ARMY STRENGTH

# DIRECTIVE BY THE MINISTER OF DEFENCE

October 9, 1941

We have now in the United Kingdom (including Northern Ireland) 26 standard motorised infantry divisions and the Polish Division, total 27, well equipped with guns and transport, with an average strength of about 15,500 men, with 10 corps organisations and corps troops (61,000). There are 8 county divisions for work on the beaches, averaging about 10,000, without artillery other than coast artillery and with little transport. We have 5 armouned divisions and 4 Army tank brigades; the whole comprising 14 armouned brigades (with 5 divisional elements), 4 brigade groups with artillery and transport, 7 infantry brigades, and 12 un-brigaded battalions; furthermore, 8 aerodrome defence battalions and the 100,000 men in the Home Defence and Young Soldiers battalions

2. It is proposed to transform this organisation into 27 standardised divisions (hereinafter to be called Field Divisions), plus the Polish Division (which will have an armoured element), total 28, and to

increase the armoured forces to 7 armoured divisions with 8 Army tank brigades, the whole comprising 22 armoured brigades (with 7 divisional elements). The 4 brigade groups are to remain. Instead of the 8 county divisions and other units mentioned above, there will be 13 brigades, plus the equivalent of 2 Ally brigades, and 8 "detached battalions", the foregoing constituting the Home Field Army, which can thus be reckoned the equivalent of 45 divisions. In addition, there will still be the 8 aerodrome battalions and the Home Defence and Young Soldiers battalions.

3 The object of these changes is to increase the war-power of the Army, particularly in armoured troops, and to provide additional field, anti-tank, and flak artillery, including that required for 5 additional Indian divisions, to be formed during 1942. For this last purpose also it will be necessary to provide up to 17 British battalions for the

Indian Army

4. No reduction in the force mentioned in para. 2 is compatible with our war needs. To maintain it during the next nine months, ie, to July 1, 1942, and also to maintain the drafts for the Army of the Middle East, for India, and for our garrisons in Iceland, Gibraltar, Malta, and Hong Kong, etc., with a normal wastage of 50,000 a quarter, there must be provided an intake to the Army of 278,000 men. Measures are being taken to provide this. The Army also requires at least 142,000 more women above the 63,000 already recruited.

I then set forth in detail our forces at home and abroad. The conclusion shows the strength of our military resources and deployment before the supreme events which brought the United States into the war. The directive continues

10 If we estimate our Army in divisions or their equivalent, the general layout for 1942 is as follows

| United Kingdom          |     |        | • • |     |   | 45 |
|-------------------------|-----|--------|-----|-----|---|----|
| Anti-aircraft divisions |     |        |     |     | • | 12 |
| Army of the Nile        |     |        |     |     | • | 16 |
| Army of India in Iraq   | and | Persia |     |     | • | 9  |
| Army of India at hom    |     |        |     |     | 4 | 8  |
| Fortress garrisons      |     |        |     |     |   | 7  |
| Native African division | ns  |        |     |     |   | 2  |
|                         |     |        |     |     |   |    |
| Grand total .           |     |        | • • | • • |   | 99 |

11 It is our duty to develop, equip, and maintain all these units during 1942

Besides manning the forces, heavier demands were now put forward on behalf of the expanding munitions factories and workshops. If the country's morale was to be sustained the civil population must also be well nourished. Mr. Bevin at the Ministry of Labour and National Service used all his knowledge and influence as an experienced trade union leader to gather the numbers It was already obvious that man-power was the measure alike of our military and economic resources. Mr. Beyin, as the supplier of labour, and Sir John Anderson, Lord President of the Council, together devised a system which served us in good stead up to the end of the war, and enabled us to mobilise for war work at home or in the field a larger proportion of our men and women than any other country of the world in this or any previous war. At first the task was to transfer people from the less essential occupations. As the reservoir of man-power fell all demands had to be cut. The Lord President and his Manpower Committee adjudicated, not without friction, between competing claims. The results were submitted to me and the War Cabinet

The first of these man-power surveys came before the War Cabinet in November. I put before my colleagues my own reflections on the main issues presented to us in the Lord President's review. Obviously we must now cast a heavy burden on women.

# MAN-POWER

# MEMORANDUM BY THE PRIME MINISTER

November 6, 1941

It may be a convenience to my colleagues if I set out the provisional views which I have formed on some of the major issues which we have to settle

The age of compulsory military service for men should be raised by ten years, to include all men under 51 While this might not make very many men available for an active fighting rôle, it would assist the Minister of Labour in finding men for non-combatant duties in the Services

The possibility that the age should be raised again later on need not be excluded, but it would seem that an increase of ten years in the upper limit would be sufficient at the moment.

2. The case for calling up young men at 18½, instead of 19, seems fully established Indeed, I would go further and call them up at 18 if this would make any substantial contribution

3. On the whole, I am not yet satisfied, in view of the marked dislike of the process by their Service menfolk, that a case has been established for conscripting women to join the Auxiliary Services at the present time. Voluntary recruitment for these Services should however be strongly encouraged.

4 Should the Cabinet decide in favour of compelling women to join the Auxiliary Services, it is for consideration whether the method employed should not be by individual selection, rather than by calling up by age groups. The latter system would inevitably discourage

women from joining up until their age group was called

5 The campaign for directing women into the munitions industries should be pressed forward. The existing powers should be used with

greater intensity . .

6 Employers might well be encouraged, in suitable cases, to make further use of the services of married women in industry. This would often have to be on a part-time basis, and means must be found to ease the burden on women who are prepared to perform a dual rôle.

# \* \* \* \* \*

It was inevitable that the whole question of an invasion would have to be argued out again, and I addressed myself to this task with increasing conviction that it would not happen. At the same time the process was healthy and led to important judicious dispositions of our available strength. Enormous requests were now made by the Home Command for armour, and tales of heavy German construction of tank-landing craft received some credence. No one can understand without reading the papers written at the time how hard was the strain, and how easy it was to make decisions which might be tragically falsified by events. I was like a keeper in the Zoo distributing half-rations among magnificent animals. Luckily they knew I was an old and friendly keeper

Prime Minister to CIGS. 3 Nov 41

All experience shows that all Commanders-in-Chief invariably ask for everything they can think of, and always represent their own forces at a minimum. . . It is only a few months ago that I saw with pleasure that we might have a thousand tanks available to meet an autumn invasion. Now we have got two thousand or more, and at least another fifteen hundred should be available by the spring, making 3,500.

General Brooke should organise these in the best possible way, bearing in mind that for Home Defence against invasion the utmost possible should be put in the front line of formations, and that the

reserve need not be on the scale required in the Middle East.

2. While I am calling for the most vigorous measures to resist invasion in the spring, I am of course very sceptical of the stories that are told about its scale. The evidence which supports the tale of the 800 flat-bottomed vessels, each carrying at 8 knots 10 tanks, rests on the flimsiest foundation—viz, an agent saw some of these vessels being made at one place, and he thought others were being made at other places to the number of 800. If there is any other evidence behind this story, let me have it

3 With the improvements in photography and the increased power in the air very formidable resistance should be made to the assembly of large numbers of vessels in the river-mouths of the Low Countries Now that we have the command of the air over the Pas de Calais, it is not seen how Dunkirk, Calais, and Boulogne can be used for the purposes of invasion. All shipping gathered in these harbours and the smaller ones could be bombed by daylight under fighter cover. This

was not the case last year

4 There can be no question of our going back on our promises to Russia. If of course Archangel freezes up we must do our best by other routes. But it is far too soon to raise any such issues now, when the ink is hardly dry on our promise, and we have been unable to do anything else to help the Russians...

I thought it necessary to have a scheme which would enable a selected proportion of the Home Guard to be used as military formations in the event of invasion.

Prime Minister to Secretary of State for War 23 Nov 41

It is thought that the invasion danger will manifest itself gradually by the assembly in the ports and river-mouths of large numbers of ships and landing-craft, and also by troop movements on a great scale. At a certain stage in these proceedings, which may conceivably take months and after all may only be a blind, we should have to proclaim the "Alert". If this moment were rightly chosen it should be about a fortnight before zero day. It is not intended that the whole of the Home Guard should thereupon cease their civilian occupations, but only that a special section of them should be called out and embodied, like the Militia used to be

2 The rest of the Home Guard would not be called out until a few days before zero hour, as far as we can tell, or perhaps only when the embarkation of the invaders had already begun. They would however increase their vigilance between the "Alert" and the alarm

3 The special section I have in mind would of course consist, not of persons under 18 and over 60 years, but of the great mass of hefty manhood now in reserved occupations who are not allowed to join

the Army but have volunteered for the Home Guard. This class would attend additional drills, and would be paid for attendance at these drills. They would not come out whole-time till the "Alert". There is no need to make heavy weather of the proposal by forming brigades with the War Office standards of equipment. They would be armed with rifles, machine-guns, and Bren carriers. They can be organised in battalions. They would not alter their characteristic civilian and voluntary status until the "Alert".

Pray let me have definite proposals on the scale of four battalions

in each corps area

\* \* \* \* \*

I welcomed the keen interest which the United States military chiefs took in the defence of our Island, which they already regarded as the bastion of American security. We have seen how they feared lest in our efforts to hold the Middle East we should endanger our safety at home. In September and October an American officer, General Embick, was sent over by General Marshall, and I cordially invited him to go round all our home and beach defences and report fully the conclusions which he formed, both to me and to his own Government. General Embick was a most capable critic, and a good friend to Britain I felt from the first however that he was unduly alarmist. Towards the end of November he produced his report, and I print my comment upon it as I wrote it at the time.

Prime Minister to General Ismay, for C.O.S. Committee 23 Nov 41 This report by General Embick on the British defence system proceeds on the assumption of the strength of invasion which has been adopted here as a basis for our preparations. These were no doubt imparted to General Embick, but I must make it clear that though these data may be accepted in order to keep our defence up to the mark, they do not rest on any solid basis other than that of

prudent apprehension. . . .

The great fault of this paper, as of many studies about invasion, is that it ignores the time-sequence of events. An invasion on so vast a scale could not be prepared without detection. Not only 800 alleged landing-craft, but many other vessels and large ships, would have to be assembled in the river-mouths and harbours. Aerial photography would reveal this process, and the Air Force would subject them to the heaviest bombing during what might well be a fortnight or more. From Dunkirk to Dieppe our air strength is now sufficient to enable us to make daylight attacks under fighter air cover.

of embarkation have been surmounted it will still be necessary to marshal these ships and bring them across the sea. By that time it is reasonable to expect that naval resistance will be available in a very high form. General Embick assumes that there will be no warning, and that all our small craft will be engaged in the Battle of the Atlantic But this is incorrect, once the scale of the invasion is raised above the level of heavy raids. Let me have a time-table (on one sheet of paper) of what the Navy will do on each day from the "Alert" on Day 1 to Day 20, and what forces will be in hand

The whole of this preliminary but indispensable phase plays no part in General Embick's thought, yet in it is comprised the main and proved defence of the Island from invasion. Wishing to train our Aimy and keep it keen, we have, naturally, stressed what happens after the enemy lands, but the Royal Navy and Royal Air Force are responsible for shattering the assembly of the Armada and for striking into it decisively in passage. There must be no lifting of this obligation

off these two Services

\* \* \* \* \*

We could as the year 1941 drew to its end—and unforeseeable climax-also survey the course of the mortal U-boat war with solid reassurance The favourable tendencies which I had unfolded in Secret Session in Parliament at the end of June had become more plain with every week. Our resources were mounting By July we had been able to institute continuous, if slender, escort for our convoys throughout the North Atlantic, and on the route to Freetown. While Germany was straining every nerve to multiply her U-boats, active co-operation by the United States was becoming a reality. Our new weapons, though still in their infancy, and the effective tactical combination of our sea and air forces in the task of killing U-boats, were improving The seagoing Radar equipment on which so much depended had been put into production, not without risk of failure, straight from the drawing-board. We still had to rely on evasion at sea as our principal means of defence. The day when we could court attack was still far ahead

On September 4 the United States destroyer Greer was unsuccessfully attacked by a U-boat while proceeding independently to Iceland A week later, on September 11, the President issued his "shoot first" order. In a broadcast he said. "From now on, if German or Italian vessels of war enter the waters the protection of which is necessary for American defence they do so at their

own peril. The orders I have given as Commander-in-Chief to the United States Army and Navy are to carry out that policy at once" On September 16, for the first time, direct protection was given to our Halifax convoys by American escorts. This brought instant relief to our hard-pressed flotillas. But two months elapsed before the President succeeded in freeing his hands from the neutrality laws, by which American ships could not carry goods to Britain nor even arm themselves in their own defence.

I kept General Smuts informed.

Prime Minister to General Sniuts

14 Sept 41

I am content with President's action, which can only be judged in relation to actual naval movements concerted at our meeting. His line runs from North Pole down 10th meridian to about Faroes, then trends away south-west to 26th meridian, which is followed to the equator He will attack any Axis ship found in this vast area Sixteen U-boats have cut up one of our convoys in last few days off the tip of Greenland, nearly a thousand miles inside the prohibited zone When I asked that American destroyers should be sent from Iceland to help our escorts, they went yesterday at once, and, had the U-boats not vanished meanwhile, Anglo-American forces would have been in action together against them United States assumption of responsibility for all fast British convoys other than troop convoys between America and Iceland should enable Admiralty to withdraw perhaps forty of the fifty-two destroyers and corvettes we now keep based on Halifax and concentrate them in home waters. This invaluable reinforcement should make killing by hunting groups other than escorts possible for the first time. Hitler will have to choose between losing the Battle of the Atlantic or coming into frequent collision with United States ships and warships. We know that he attaches more importance to starving us out than to invasion. American public have accepted the "shoot at sight" declaration without knowing the vast area to which it is to be applied, and in my opinion they will support the President in fuller and further application of this principle, out of which at any moment war may come. All the above is for your own most secret information

\* \* \* \*

Although five times as many U-boats were now operating as in 1940 our shipping losses were greatly reduced. No merchant ship in the fast Halifax convoys was sunk between July and November The slow convoys sailing from Sydney, Cape

Breton Island, for which British and Canadian escorts remained solely responsible throughout the voyage, were also free from attack in July and August. In September however there was the seven days' combat from Greenland to Iceland, mentioned in my cable to General Smuts, with a pack of over a dozen U-boats Sixteen ships out of sixty-four in the convoy were sunk, and two U-boats. On October 31 the immunity of the Halifax convoys from attack was at last broken, and the American destroyer Reuben James was torpedoed and sunk with severe loss of life. This was the first loss suffered by the United States Navy in the still undeclared war. In August the limits on the number of ships sailing in any one convoy were removed. The fast and slow convoys were often combined for part of their voyage, and on August 9 a combined convoy comprising a hundred ships came safely in For the three months up to the end of September the weekly average of imports was nearly a million tons, an increase of about 80,000 tons a week.

Our air patrols watching the German cruisers in Brest noticed that the U-boats based on Biscay ports normally made the passage to and from these bases on the surface and along fairly well defined routes across the Bay of Biscay. Here was an opportunity for our Coastal Command, but to make full use of it two needs had to be met. The first was the problem of identification Although our airborne Radar was now yielding modest results we had no means of identifying targets at night until, a little later, the development of an aircraft searchlight solved the problem. The second need was an airborne weapon which would sink a U-boat The bomb and the depth-charge with which our aircraft were armed were not sufficiently accurate or deadly for the fleeting opportunities of attack which offered. Nevertheless during the three months ending with November twenty-eight attacks were made By December the enemy was forced to cross the dangerous area of the bay either in darkness or underwater Thus the time during which a U-boat could hunt was reduced by about five days.

In August a Hudson aircraft of Coastal Command attacked a U-boat with depth-charges in the Western Approaches. The U-boat was injured and unable to dive, and the crew attempted to man their guin, but the Hudson with her own machine-guins drove them below, and for the first time in war a submarine

hoisted the white flag and surrendered to an aeroplane. A heavy sea was running and no surface vessel was near, but the Hudson maintained relentless watch over her prize Aid was summoned. and the next day the U-boat was towed by a trawler to Iceland. She was later commissioned into the Royal Navy The incident is unique.

A new burden was now laid upon the British Navy. The need to aid Russia focused attention upon the sea routes to Archangel and Murmansk Towards the end of July Vian-now an Admiral -had been ordered to reconnoitre Spitzbergen. He landed a force to demolish the coal dumps and rescue the few Norwegians who had been pressed into German service. Three loaded German colliers were also captured in this neatly executed operation. About the same time fifty-six aircraft from the carriers Furious and Victorious gallantly attacked German shipping in the ports of Petsamo and Kirkenes at the top of the North Cape. Some damage was done, but sixteen of our planes were lost, and the operation was not repeated.

On August 12 the first "P Q." convoy of six ships for Russia sailed from Liverpool by Iceland to Archangel. Henceforward convoys to North Russia ran regularly once or twice a month They were strongly escorted and not yet interfered with by the enemy When Archangel became icebound Murmansk was There was too much jubilation and publicity about the successful passage of supplies to the Russian Army, and heavy

forfeits were to follow in another year

With the Russian entry into the war the German air attacks on shipping near our coasts somewhat lessened The Focke-Wulf ranged widely, but our fighter-catapult ships, devised for this very danger, were now coming out, and soon gained successes. The converging homeward routes from Gibraltar and Sierra Leone became the target of German air and U-boat attacks, costing us during August and September thirty-one ships and three escort vessels Among these was the famous destroyer Cossack of Altmark and Bismarck fame. The first true escort carrier, H.M.S. Audacity, operating six aircraft from a flying deck, came into action in September, and immediately proved the value of her

type. Not only could she destroy or drive off the Focke-Wulf, but by air reconnaissance in daylight she could keep the U-boats down and give timely warnings about them. The Audacity became the model on which in later years large numbers of vessels were built in the United States to play a vital part in the U-boat war and later in amphibious operations.

The Audacity herself had a short career. She was sunk by a U-boat on December 21 after a most gallant action while escorting a homeward-bound convoy from Gibraltar. Commander F. J Walker, who commanded the convoy escort, greatly distinguished himself on this occasion in a combat lasting several days and nights, during which four U-boats were destroyed out of about nine, besides two Focke-Wulfs. One night his ship, the Stork, pursued and rammed a U-boat in the darkness. The two ships were side by side and so close together that the 4-inch guns of the Stork could not be sufficiently depressed and the guns' crews were "reduced to fist-shaking and roaring curses", until depth-charges did their work. Commander Walker was promoted and became our foremost U-boat killer. Before his untimely death from illness in 1944 he and the several groups he commanded had sunk twenty U-boats, six of them at one go

Further relief was given to us in the Atlantic Ocean by the German decision to send U-boats into the Mediterranean Five of these were destroyed in the Straits of Gibraltar, and six others damaged and forced to return, but twenty-four successfully made the passage, and, as will be seen in a later chapter, became a grievous factor there

# \* \* \* \* \*

War on our ocean commerce was also maintained by the disguised German merchant ships. The Australian cruiser Sydney encountered "Raider G" off the west coast of Australia. The German, thanks to his disguise, succeeded in enticing his adversary to point-blank range before opening fire. Both ships were sunk Twenty-five Germans were picked up later, and others eventually landed in Western Australia. Of the Sydney's crew of over seven hundred none survived. This was a sombre sacrifice in lonely waters

A few days later "Raider C", which had destroyed twenty ships, of about 140,000 tons in all, was caught and sunk in the

South Atlantic by the cruiser *Dorsetshire* The losses inflicted by the disguised German surface raiders, of whom there were from first to last nine, were as follows

|      | S     | No of<br>Ships Sunk | Gross Tons |
|------|-------|---------------------|------------|
| 1940 | •     | 54                  | 366,644    |
| 1941 |       | 44                  | 226,527    |
| 1942 | <br>• | 30                  | 194,625    |
| 1943 |       | 6                   | 49,482     |

We had therefore solid reasons even in 1941 for satisfaction at the whole trend of the ocean war upon our commerce. In November 1941 our losses from U-boats fell to the lowest figure since May 1940. In spite of all Hitler's boasts and the multiplication of his U-boat and air strength and our ever-increasing convoys at sea, British and Allied shipping losses in 1941 were hardly greater than in 1940. Of course there were more targets on both sides, but the number of U-boats sunk by us (including Italian) rose from forty-two in 1940 to fifty-three in 1941. The table at the end of the chapter deserves careful study



Thus on the eve of a supreme change in the war we had made formidable increases in our military power and were still steadily advancing both in actual strength and in the mastery of our many problems We felt ourselves strong to defend our Island, and able to send troops abroad to the utmost limit of our shipping We wondered about the future, but, after all we had surmounted, could not fear it Invasion had no terrors, and at the same time our life-lines across the ocean grew safer, broader, more numerous and more fruitful. Our control of the approaches to the Island grew better every month The threatened stranglehold of the German Air and U-boats had been broken, and the enemy was driven far from our shores Food, munitions, and supplies arrived in an ever-expanding stream. The output of our own factories increased every month. The Mediterranean, the Desert, and the Middle East were still in peril, but in the closing days of November on land and sea and in the air we felt thankful with the way the war had so far gone

TOTAL LOSSES, IN GROSS TONS, OF BRITISH, ALLIED, AND NEUTRAL MERCHANT SHIPS AND FISHING VENSELS

# BY ENEMY ACTION

# (Numbers of ships in brackets) Corrected to May 1, 1949

| U-boat Mine 423,769 (116) 252,697 (79) 2,186,158 (471) 509,889 (201) 2,162,168 (429) 229,838 (108) |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 9 (116) 2' (8 (471) 8(429) 22                                                                      |
|                                                                                                    |

# CHAPTER XXVIII

# CLOSER CONTACTS WITH RUSSIA

Autumn and Winter 1941

Anglo-Soviet Relations – Difficulties of Military Concert – Our Efforts to Help in the Caucasus – Question of Our Declaring War on Finland, Roumania, and Hungary – My Telegram to Stalin of November 4 – His Reply, November 8 – Mr. Eden's Conversation with the Soviet Ambassador, November 20 – I Offer to Send Mr Eden to Moscow – Stalin Accepts – I am Reluctant to Face the Breach with Finland, Roumania, and Hungary – My Appeal to Field-Marshal Mannerheim – Mr. Eden's Mission to Moscow – My Directive of December 5 – 'The First Failure of a German Blizknieg.

WO themes now dominated our relations with the Soviet Union. The first was the vague and unsatisfactory state of our consultations on military matters, and the second the Russian request that we should sever relations with the Axis satellites, Finland, Hungary, and Roumania. As we have seen, little progress had been made in the former direction during the recent meetings in Moscow. About the first, on November 1 I sent the following minute to the Foreign Secretary

Prime Minister to Foreign Secretary

I Nov 41

I was not aware that we had ever taken the line that there should be no consultation on military matters. On the contrary, did we not tell them definitely we would consult on military matters? Certainly I wrote a paper for Lord Beaverbrook's guidance\* which dealt entirely with the military situation apart from that of supply General Ismay was sent to Russia for the purpose of embarking on the military discussion. It could have made no difference in fact, as there is no practical step of any serious importance which can at present be taken. He might have explained by facts and figures how very foolish and

<sup>\*</sup> See Appendix J, p 764

physically impossible was the suggestion that we should send "twenty-five or thirty divisions" to the Russian front. He could have explained how even moving two or three divisions in at either end of the Russian front would choke the communications needed for Russian supplies. On the other hand, I do not see why these conversations did not take place at some time or other in the conference. Undoubtedly Lord Beaverbrook and Stalin touched upon the military issue.

General Wavell has already been to Tiflis without finding anyone in authority to speak to him. He speaks Russian well, and it might well be that he should undertake a journey to Moscow. It is only by the southern flank that we could enter for many months to come

Anyhow, let us get the facts straightened out

PS—You should see Wavell's telegram just received, showing how even two divisions at or north of Tabriz will completely choke the Trans-Persian railway

I felt that if only a machinery of military consultation could be established the problem of joint operations could be discussed in a reasonable manner which would not lead to misunderstanding. The unsatisfactory nature of the existing position is clear from my following minute

Prime Minister to General Ismay, for C O S. Committee 5 Nov 41 We do not know when the Germans will arrive in the Caucasus, nor how long it will be before they come up against the mountain barrier. We do not know what the Russians will do, how many troops they will use, or how long they will resist. It is quite certain that if the Germans press hard neither the 50th nor the 18th British Division could be on the spot in time. We are held in a grip by the delay in "Crusader", and it is not possible to see beyond that at the present moment. I cannot feel any confidence that the Germans will be prevented from occupying the Baku oilfields, or that the Russians will effectively destroy these fields. The Russians tell us nothing, and view with great suspicion any inquiries we make on this subject.

2 The only thing we have it in our power to do is to base four or five heavy bombing squadrons in Northern Persia to aid the Russians in the defence of the Caucasus, if that be possible, and if the worst happens to bomb the Baku oilfields effectively and try to set the ground alight. These squadrons will of course require fighter protection. Neither the bombers nor the fighters can be provided till after "Crusader" and its consequences can be judged. A plan should however be made based on a large transference of air from Libya to Persia, so as to deny the oilfields to the enemy as long as possible. Pray let this be done during the next week, so that we can see what is involved.

# CLOSER CONTACTS WITH RUSSIA

One cannot tell how long the Russians will retain the command of the Black Sea, although with their forces it is inexcusable that they should lose it

\* \* \* \* \*

The question of our breaking off relations with Finland had first been raised, as we have seen, by M Maisky in his interview with me on September 4 \* I knew this was a subject on which the Russians felt strongly. The Finns had taken the opportunity of the German attack on Russia to renew hostilities on the Karelian front in July 1941. They hoped to regain those territorics lost by the Treaty of Moscow the previous year. Their military operations in the autumn of 1941 represented a grave threat not only to Leningrad, but also to the supply lines from Murmansk and Archangel to the Russo-German front. Both the American Government and ourselves had since August been warning the Finns in severe terms of the possible consequences of the situation Their attitude was that they needed the disputed province of Eastern Karelia for their own security against Russia, and the history of the previous two years lent strength to their view But now that Russia was engaged in a life-and-death struggle with Germany it was clearly impossible for the Allies to allow the Finns, acting as a German satellite Power, to cut Russia's main northern lines of communication with the West

The position of Roumania was similar to that of Finland. The Russians had occupied the Roumanian province of Bessarabia, and thereby gained control of the mouth of the Danube, in June 1940. Now, under the leadership of Marshal Antonescu, and in alliance with Germany, the Roumanian armies had not only reoccupied Bessarabia, but had bitten deep into the Black Sea provinces of Russia, as the Finns were doing in Eastern Karelia The Hungarians also, in a key position astride the communications of Central and South-Eastern Europe, were of direct assistance to the German war effort

But I was by no means certain that a declaration of war was the correct method of dealing with the situation. There was still a possibility that, under pressure from the United States and ourselves, Finland would agree to fair and reasonable peace terms. In the case of Roumania at least there was every reason to believe that the dictatorial régime of Antonescu would not

<sup>\*</sup> See p 406

last indefinitely I decided therefore to address myself again to Marshal Stalin on both the question of military planning and cooperation and that of avoiding a declaration of war against these Axis satellite Powers.

Prime Minister to Premier Stalin

4 Nov 41

In order to clear things up and to plan for the future I am ready to send General Wavell, Commander-in-Chief in India, Persia, and Iraq, to meet you in Moscow, Kuibyshev, Tiflis, or wherever you will Besides this, General Paget, our new Commander-in-Chief, secietly designated for the Far East, will come with General Wavell General Paget has been in the centre of things here, and will have with him the latest and best opinions of our High Command These two officers will be able to tell you exactly how we stand, what is possible and what we think is wise They can reach you in about a fortnight Do

you want them?

- 2 We told you in my message of September 6 that we were willing to declare war on Finland Will you however consider whether it is really good business that Great Britain should declare war on Finland, Hungary, and Roumania at this moment? It is only a formality, because our extreme blockade is already in force against them judgment is against it, because, first, Finland has many friends in the United States and it is prudent to take account of this fact Secondly. Roumanna and Hungary these countries are full of our friends, they have been overpowered by Hitler and used as a cat's-paw, but if fortune turns against that ruffian they might easily come back to our side A British declaration of war would only freeze them all and make it look as if Hitler were the head of a grand European alliance solid against us Do not, pray, suppose it is any want of zeal or comradeship that makes us doubt the advantage of this step Our Dominions, except Australia, are reluctant Nevertheless, if you think it will be a real help to you and worth while, I will put it to the Cabinet again
- 3 I hope our supplies are being cleared from Archangel as fast as they come in A trickle is now beginning through Peisia. We shall pump both ways to our utmost. Please make sure that our technicians who are going with the tanks and aircraft have full opportunity to hand these weapons over to your men under the best conditions. At present our Mission at Kuibyshev is out of touch with all these affairs. They only want to help. These weapons are sent at our peril, and we are anxious they shall have the best chance. An order from you is

necessary

4 I cannot tell you about our immediate military plans, any more than you can tell me about yours, but rest assured we are not going to be idle

#### CLOSER CONTACTS WITH RUSSIA

- 5 With the object of keeping Japan quiet we are sending our latest battleship, *Prince of Wales*, which can catch and kill any Japanese ship, into the Indian Ocean, and are building up a powerful battle squadron there I am urging President Roosevelt to increase his pressure on the Japanese and keep them frightened so that the Vladivostok route will not be blocked
- 6 I will not waste words in compliments, because you know already from Beaverbrook and Harriman what we feel about your splended fight. Have confidence in our untiring support

7 I should be glad to hear from you direct that you have received

this telegram

On November 11 M. Massky brought to me Stalin's chilling and evasive reply to this message.

M Stalin to the Prime Minister

8 Nov 41

Your message received on November 7.

I fully agree with you that clarity should be established in the relations between the USSR and Great Britain. Such a clarity does not exist at present. The lack of clarity is the consequence of two circumstances

(a) There is no definite understanding between our two countries on war aims and on plans for the post-war organisation of peace

(b) There is no agreement between the USSR and Great Britain on mutual military assistance against Hitler in

Europe

As long as there is no accord on both these questions there can be no clarity in the Anglo-Soviet relations. More than that to be frank, as long as the present situation exists there will be difficulty in securing mutual confidence. Of course the agreement on military supplies to the USSR has a great positive value, but it does not settle, neither does it exhaust, the whole problem of relations between our two countries. If the General Wavell and the General Paget whom you mention in your message will come to Moscow with a view to concluding agreement on the two fundamental questions referred to above, I naturally would be happy to meet them and to discuss with them these questions. If however the mission of the Generals is confined to the questions of information, and to the consideration of secondary matters, it would not be, I think, worth while to intrude upon the Generals. In such a case it would also be very difficult for me to find the time for the conversations

2. It seems to me that an intolerable situation has been created in the question of the declaration of war by Great Britain on Finland,

Hungary, and Roumania The Soviet Government raised this question with the British Government through the secret diplomatic channels Quite unexpectedly for the USSR., the whole problem, beginning with the request of the Soviet Government to the British Government and ending with the consideration of this question by the USA. Government, received wide publicity. The whole problem is now being discussed at random in the Press—friendly as well as enemy And after all that the British Government informs us of its negative attitude to our proposal. Why is all this being done? To demonstrate the lack of unity between the USSR. and Great Britain?

3 You can rest assured that we are taking all the necessary measures for speedy transportation to the right place of all the arms coming from Great Britain to Archangel The same will be done with regard to the route through Persia In this connection may I call your attention to the fact (although this is a minor matter) that tanks, planes, and artillery are arriving inefficiently packed, that sometimes parts of the same vehicle are loaded in different ships, [and] that planes, because of the imperfect packing, reach us broken?

\* \* \* \* \*

Even Stalin seems after a while to have felt that he had gone too far in the tone of this communication, which I had not attempted to answer. The silence was expressive On November 20 the Soviet Ambassador in London called on Mr Eden at the Foreign Office. The following is Mr Eden's record of the conversation as sent in a telegram to Sir Stafford Cripps, now at Kuibyshev

The Soviet Ambassador asked to see me this afternoon, when he said that he had received instructions from M Stalin, who had asked him to convey to me that in sending his recent message to the Prime Minister he had only practical and businesslike questions in view. It had certainly not been M Stalin's intention to cause any offence to any members of the Government, and least of all to the Prime Minister.

M Stalin was very busy indeed with affairs at the front, and had had virtually no chance to think of anything else but affairs at the front. He had raised important practical issues about mutual military assistance in Europe against Hitler and the post-war organisation of peace. These questions were very important, and it was very undesirable to complicate them by any personal misunderstanding or feelings. M Stalin had also overcome certain personal feelings in pursuing the line he had taken, because the Finnish business had greatly hurt him and the whole of the Soviet Union. "My Fatherland," said M Stalin, "finds itself in a humiliating position. Our request was made secretly.

#### CLOSER CONTACTS WITH RUSSIA

Then the whole thing was published, and also the fact that His Majesty's Government did not consider it possible to accept the Soviet request This has put my country in a humiliated position, and has had a depressing effect on the minds of my people." M Stalin had felt himself hurt by this, but, in spite of this, he still pursued only one end to reach an agreement on mutual military assistance against Hitler in Europe and the post-war organisation of peace

Stalin's answer had made it clear that purely nulitary talks would have little concrete result in the present state of mind of The almost hysterical note of Stalin's the Russian leaders message about Finland showed the gap in understanding between our two countries I proposed therefore to make a further attempt to smooth out relations between us by offering to send Mr. Eden himself on a mission to Russia. It was in this sense that I telegraphed to M Stalin on November 21

Many thanks for your message, just received At the very beginning of the war I began a personal correspondence with President Roosevelt, which has led to a very solid understanding being established between us and has often helped in getting things done quickly My only desire is to work on equal terms of comiadeship and confidence

with you

2 About Finland I was quite ready to advise the Cabinet to declare war upon Finland when I sent you my telegram of September 4. Later information has made me think that it will be more helpful to Russia and the common cause if the Finns can be got to stop fighting and stand still or go home, than if we put them in the dock with the guilty Axis Powers by a formal declaration of war and make them fight it out to the end However, if they do not stop in the next fortnight and you still wish us to declare war on them, we will certainly do so I agree with you that it was very wrong that any publication should have been made. We certainly were not responsible

3 Should our offensive in Libya result, as we hope, in the destruction of the German-Italian army there, it will be possible to take a broad survey of the war as a whole, with more freedom than has hitherto

been open to His Majesty's Government

4 For this purpose we shall be willing in the near future to send the Foreign Secretary, Mr Eden, whom you know, via the Mediterranean to meet you at Moscow or elsewhere He would be accompanied by high military and other experts, and will be able to discuss every question relating to the war, including the sending of troops not only into the Caucasus but into the fighting line of your armies in the south. Neither our shipping resources nor the communications will

allow large numbers to be employed, and even so you will have to

choose between troops and supplies across Persia.

of peace. Our intention is to fight the war in alliance with you and in constant consultation with you to the utmost of our strength, and however long it lasts, and when the war is won, as I am sure it will be, we expect that Soviet Russia, Great Britain, and the United States will meet at the council table of the victors as the three principal partners and agencies by which Nazism will have been destroyed. Naturally, the first object will be to prevent Germany, and particularly Prussia, breaking out upon us for the third time. The fact that Russia is a Communist State and Britain and the United States are not, and do not intend to be, is not any obstacle to our making a good plan for our mutual safety and rightful interests. The Foreign Secretary will be able to discuss the whole of this field with you

6 It may well be that your defence of Moscow and Leningrad, as well as the splendid resistance to the invader along the whole Russian front, will inflict mortal injuries upon the internal structure of the Nazi régime. We must not count upon such good fortune, but simply have an appropriate them to the upper to the property with much and make them.

keep on striking at them to the utmost with might and main

# M. Stalin replied two days later, and in a calmer tone

23 Nov 41

Many thanks for your message I sincerely welcome your wish as expressed in your message to collaborate with me by way of personal correspondence based on friendship and confidence. I hope this will contribute much to the success of our common cause

2 On the question of Finland, the USSR. never proposed anything else—at least, in the first instance—but the cessation of the military operations and the de facto exit of Finland from the war. If however Finland refuses to comply even with this in the course of the short period you indicated, then I believe the declaration of war by Great Britain would be reasonable and necessary. Otherwise an impression may be created that there is no unity between us on the question of war against Hitler and his most ardent accomplices, and that the accomplices of Hitler's aggression can do their base work with impunity. With regard to Hungary and Roumania, we can perhaps wait a little while

3 I support by all means your proposal of an early visit to the U.S.S.R. by the Foreign Secretary, Mr. Eden. I believe our joint consideration and acceptance of an agreement concerning the common military operations of the Soviet and British forces at our front, as well as speedy realisation of such an agreement, would have a great positive value. It is right that consideration and acceptance of a plan

# CLOSER CONTACTS WITH RUSSIA

concerning the post-war organisation of peace should be founded upon the general idea of preventing Germany, and in the first place Prussia, once more from violating peace and once more plunging peoples into terrible carnage

- 4 I also fully agree with you that the difference of the State organisation between the USSR on the one hand and Great Britain and the United States of America on the other hand should not, and could not, hinder us in achieving a successful solution of all the fundamental questions concerning our mutual security and our legitimate interests. If there are still some omissions and doubts on this score I hope they will be cleared away in the course of the negotiations with Mr Eden
- 5. I beg you to accept my congratulations on the successful beginning of the British offensive in Libya
- 6 The struggle of the Soviet armies against Hitler's troops remains tense. In spite however of all the difficulties the resistance of our forces grows and will grow. Our will to victory over the enemy is unbending

As a result of Stalin's pressing appeal it was decided to go ahead with arrangements to deliver an ultimatum with a time limit to the Finns, and also to Roumania and Hungary I was most reluctant to be forced into this position, as the following minutes show

Prime Minister to Foreign Secretary

28 Nov 41

You seem to be taking st for granted that war will be declared on all three Powers [Finland, Roumania, and Hungary] on December 3 I do not wish this decision to be taken till we know what Finland will do Moreover, the 3rd is too soon. The 5th is a fortnight after my telegram to Stalin. I am only to-night sending my telegram to Mannerheim. We must leave reasonable time for a reply

My opinion about the unwisdom of this measure remains unaltered, and I still have hopes that the Finns will withdraw. I was not aware

that this step would be taken at this juncture.

Prime Minister to Foreign Secretary 29 Nov 41

Finland and Co I don't want to be pinched for time if there is a chance of Finland pulling out of the big war See also my telegram to Stalin [of November 21], which says, "if they do not stop in the next fortnight and you still wish us to declare war on them." Procedure therefore should be as follows. If we have not heard by the 5th that the Finnis are not going to pull out, or have heard they are contumacious, we then telegraph to Stalin saying that "if he still wishes it"

we will declare war forthwith The Roumanian and Hungarian declarations will follow, also in accordance with whatever he may desire.

\* \* \* \*

Meanwhile I thought it worth while, with the knowledge and agreement of the Soviet Government, to make a final and personal appeal to the Finnish leader, Field-Marshal Mannerheim.

Prime Minister to Field-Marshal Mannerheim 29 Nov 41

I am deeply grieved at what I see coming, namely, that we shall be forced in a few days out of loyalty to our ally Russia to declare war upon Finland. If we do this, we shall make war also as opportunity serves. Surely your troops have advanced far enough for security during the war and could now halt and give leave. It is not necessary to make any public declaration, but simply leave off fighting and cease military operations, for which the severe winter affords every reason, and make a de facto exit from the war. I wish I could convince Your Excellency that we are going to beat the Nazis. I feel far more confident than in 1917 or 1918. It would be most painful to the many friends of your country in England if Finland found herself in the dock with the guilty and defeated Nazis. My recollections of our pleasant talks and correspondence about the last war lead me to send this purely personal and private message for your consideration before it is too late.

On December 2 I received Field-Marshal Mannerheim's answer.

Field-Marshal Mannerheim to Prime Minister Churchill 2 Dec 41

I had yesterday the honour to receive through the intermediary of the American Minister at Helsinki your letter of November 29, 1941, and I thank you for your courtesy in sending me this private message I am sure you will realise that it is impossible for me to cease my present military operations before my troops have reached positions which in my opinion would give us the security required. I would regret if these operations, carried out in order to safeguard Finland, would bring my country into a conflict with England, and I will be deeply grieved if you will consider yourself forced to declare war upon Finland. It was very kind of you to send me a personal message in these trying days, and I have fully appreciated it.

This reply made it clear that Finland was not prepared to withdraw her troops to her 1939 frontiers, and the British Government therefore went ahead with the arrangements to declare

# CLOSER CONTACTS WITH RUSSIA

war. Similar action followed in regard to Roumania and Hungary.

It was against such a background that preparations were made for Mr Eden's mission to Moscow He was to be accompanied by General Nye, Vice-Chief of the Imperial General Staff. A general review of the war in both its military and general aspects was to be undertaken in these talks in Moscow, and if possible the alliance was to be put on a formal and written treaty basis

On December 5 I drew up a general directive for the Foreign Secretary, reviewing certain aspects of the military situation as seen from our side. The battle in the Desert, which will presently be described, was already at its height

5 Dec 41

The prolongation of the battle in Libya, which is drawing in so many Axis resources, will probably require the use both of the 50th and 18th British Divisions, which we had hoped might be available for the defence of the Caucasus or for action on the Russian front In the near future therefore these divisions cannot be considered available The best form which our aid can take (apart from supplies) is the placing of a strong component of the Air Force, say ten squadrons, on the southern flank of the Russian armies, where, among other things, they can help protect the Russian naval bases on the Black Sea. These squadrons will be withdrawn from the Libyan battle at the earliest moment when success has been gained. The movement of their ground personnel and stores will not unduly choke the Trans-Persian communications, as would be the case if infantry divisions were sent. The High Command in the Middle East has been ordered to make plans for this movement, the completion of which will of course depend upon the facilities afforded for detailed reconnaissance

2 The attitude of Turkey becomes increasingly important, both to Russia and to Great Britain. The Turkish army of fifty divisions requires air support. We have promised a minimum of four and a maximum of twelve fighter squadrons to Turkey in the event of Turkey being attacked. In this event we might require to withdraw some of the squadrons proposed to be sent into action on the Russian southern front. The best use of our aircraft on both shores of the Black Sea and the types to be employed require to be decided according to circumstances by consultation between the British and Russian

Governments and Staffs

During these interchanges the urgency of the military crisis on the Russian front had diminished. Hitler had determined on one more great effort, and on November 13 he issued orders for an "autumn campaign" to take Moscow before the end of the year. The plan was opposed by Bock and Gudeiian, who suggested that the armies should dig in for the winter. They were overruled. Some small progress was made on the flanks during the latter part of November, but the main attack in the centre, launched on December 4, broke down completely, not only on account of the stubborn resistance of the garrison and of the inhabitants, but also because of the extreme cold which had now set in Automatic weapons failed to function, aircraft and tank motors could not be started. With inadequate winter clothing the German soldiers were half frozen

Like the supreme military genius who had trod this road a century before him, Hitler now discovered what Russian winter meant. He bowed to mexorable facts. Instructions were given for the troops to withdraw to a better line in rear, though they were to resist any Russian attacks in the meanwhile. These attacks were not lacking For the rest of the year they were continuous, and the German armour both north and south of Moscow was forced back until by December 31 the front was stabilised on a line running north and south sixty miles from the city, from which they had already been within twenty miles. In the north the Germans had had no better fortune Leningrad indeed had been completely cut off, and was closely invested in the south by the Germans and in the north by the Finns But all assaults had been repulsed. There was more to show in the south. Rundstedt had once reached Rostoy and rounded the corner to the Caucasus, Here he had overreached himself and was beaten back forty miles. Nevertheless he had advanced five hundred miles southern industrial area of Russia, and the rich wheatlands of the Ukraine were behind him. Only in the Crimea were there still Russians to dislodge or destroy

Thus in the six months' campaign the Germans had achieved formidable results and had inflicted losses on their enemy which no other nation could have survived. But the three main objectives which they had sought, Moscow, Leningrad, the lower Don, were still firmly in Russian hands. The Caucasus, the Volga, and Archangel were still far away. The Russian Army,

# CLOSER CONTACTS WITH RUSSIA

far from being beaten, was fighting better than ever, and would certainly grow in strength in the coming year. The winter had fallen The long war was certain.

All the anti-Nazi nations, great and small, rejoiced to see the first failure of a German Blitzkrieg. The threat of invasion to our Island was removed so long as the German armics were engaged in a life-and-death struggle in the East. How long that struggle might last no one could tell. Hitler at least was still confident of the future. The many arguments he had had with his generals during the autumn, and their failure to satisfy his far-reaching intentions, led to the removal of the Commander-in-Chief, Brauchitsch. Rundstedt went too Henceforward Hitler took personal command of the armies in the East, confident in his generalship, and with high hopes of an early Russian collapse in 1942.

Our discussions with the Soviets, which seemed in their later stages to be progressing favourably, have anticipated the launching by General Auchinleck of his offensive in the Desert which has next to be described. Both discussions and offensive were alike relegated to a different plane by the Japanese attack upon the United States at Pearl Harbour on December 7. We shall return to them in due course amid a vastly different grouping of world forces.

# WAR COMIS TO AMIRICA

Algiers, Oran—or to Sicily or Sardinia. Such are the advantageous options open to naval power. What other plan of active offensive warfare was open to Britain and the Empire by themselves during 1042. How could we engage the Germans on a large scale? What schemes would offer to us so many choices, which are so desirable amid the uncertainties of war? It might be beyond our single-handed strength. It might go wrong. But at any rate it did not endanger our life-lines across the Atlantic or our power to defend ourselves from invasion at home.

It is one thing to see the forward path and another to be able to take it. But it is better to have an ambitious plan than none at all All turned first on the success of General Auchinleck's longprepared offensive in the Western Desert. All had to be reviewed in relation to the unknown dangers which would be opened upon us by a Germin penetration to the Caspian, or their possible movement through Turkey in the same direction, or into the Middle Fast - Syria, Palestine, Persia, and Iraq But throughout I regarded all these as comparatively unlikely possibilities. In the event this proved the correct view. I carried with me in the pursuit of these conjectural schemes at every stage the convictions and support of the Chiefs of Staff, and of my Ministerial colleagues on the Defence Committee and in the War Cabinet. In the end all were fulfilled in the exact order designed, but not until 1942 and 1943, and in very different and more favourable circumstances than those we could foresee in October 1941.

\* \* \* \* \*

While all these speculations influenced opinion in our secret circles I was determined that the preparation of the apparatus and plans for the invasion of the Continent should not slacken. Sir Roger Keyes had now reached the age of seventy. He had performed invaluable service in building up the Commandos and in pressing forward the design and construction of invasion craft. His high rank as Admiral of the Fleet and strong personality had created a certain amount of friction in the Service departments, and I reached the conclusion with much regret on personal grounds that the appointment of a new and young figure at the head of the overseas organisation would be in the public interest. Lord Louis Mountbatten was only a capit in in the Royal Navy, but his exploits and ibilities seemed to me to fit him in a high

# THE PATH AHEAD

degree for the vacant post. He was at this time on a special nussion to the United States, where he was received with great consideration. He cruised with the Pacific Fleet, and on his return to Washington had long discussions with the President, to whom he was authorised to disclose what we were doing in preparations for landings on the Continent and the plans I harboured. The President showed him the greatest confidence and invited him to stay at the White House. Before this visit could take place I had to summon him home.

Prime Minister to Lord Louis Mountbatten

We want you home here at once for something which you will find of the highest interest

Prime Minister to Mr Harry Hopkins

10 Oct 41

We want Mountbatten over here for a very active and urgent 10b

Please explain to the President how disappointed he was not to be able to fulfil the invitation to the White House with which he had been honoured. He will seek an audience before leaving

\* \* \* \* \*

I had been vexed by a final delay of nearly a fortnight which General Auchinleck demanded in order to perfect his arrangements

Prime Minister to General Auchinleck 18 Oct 41

Your telegram confirms my apprehensions. Date was mentioned by you to Defente Committee, and though we felt the delay most dangerous we accepted it and have worked towards it in our general plans. It is impossible to explain to Parliament and the nation how it is our Middle East armies have had to stand for 4½ months without engaging the enemy while all the time Russia is being battered to pieces. I have hitherto managed to prevent public discussion, but at any time it may break out. Moreover, the few precious weeks that remain to us for the exploitation of any success are passing. No warning has been given to me of your further delay, and no reasons I must be able to inform War Cabinet on Monday number of days further delay you now demand

Moreover, the Lord Privy Seal leaves Monday for United States, carrying with him a personal letter to the President. In this letter, which would be handed to Mr Roosevelt for his eye alone and to be burnt or returned thereafter, I was proposing to state that in the moonlight of early November you intended to attack. It is necessary for me to take the President into our confidence, and thus stimulate

his friendly action. In view of the plans we are preparing for "Whip-cord",\* I am in this letter asking him to send three or four United States divisions to relieve our troops in Northern Ireland, as a greater safeguard against invasion in the spring. I fixed the date of the Lord Privy Scal's mission in relation to the date you had given us. Of course, if it is only a matter of two or three days the fact could be endured. It is not however possible for me to concert the general movement of the war if important changes are made in plans agreed upon without warning or reason. Pray therefore telegraph in time

The date was finally fixed for November 18, as General Auchinleck desired

\* \* \* \* \*

Feeling the way the President's mind was probably moving, I determined, on the eve of Auchinleck's considerable venture in the Desert, to lay my whole thought before him Mr. Attlee, now generally recognised as Deputy Prime Minister, was to visit Washington to attend the International Labour Conference, and I sent by his hand to the President the letter which follows It will become evident that this fell in very closely with the march of Mr Roosevelt's own thought.

# PRIME MINISTER TO PRESIDENT

# PART I

20 Oct 41

My dear Mi Piesident,
Some time this fall General Auchinleck will attack the German and Italian armies in Cyrenaica with his utmost available power † We believe his forces will be stronger than the enemy's in troops, in artillery, in aircraft, and particularly in tanks. His object will be to destroy the enemy's armed and above all armoured forces, and to capture Benghazi as quickly as possible.

2 Should this operation prosper the plans which have been prepared for a further rapid advance upon Tripoli may be carried out Should success attend this further effort important reactions may be

expected which it is provident to study in advance.

3 General Weygand may be stirred into joining in the war, or the Germans may make demands upon him or Vichy for facilities in French North Africa which may force him into the war

4 To profit by these contingencies we are holding a force equivalent to one armoured and three field divisions ready with shipping from

\* The invasion of Sicily

<sup>†</sup> The actual date and the code-name "Crusader" were given in a separate note

# THE PATH AHEAD

about the middle of November. This force could either enter Morocco by Casablanca upon French invitation or otherwise help to exploit in the Mediterranean a victory in Libya

5 In order to cover effectively these preparations we have prepared large-scale plans for a descent upon the Norwegian coast, and also for a reinforcement of the Russians in Murmansk There is substance as

well as shadow in these plans.

6 It seems therefore probable that we shall have to send away from Great Britain four or even five divisions, besides the 18th Division, which will arrive at Halifax on November 7 on its journey round the Cape to Suez. We must expect that as soon as Hitler stabilises the Russian front he will begin to gather perhaps fifty or sixty divisions in the West for the invasion of the British Isles. We have had reports, which may be exaggerated, of the building of perhaps 800 craft capable of carrying eight or ten tanks each across the North Sea and of landing anywhere upon the beaches. Of course there will be parachute and airborne descents on a yet unmeasured scale. One may well suppose his programme to be 1939, Poland, 1940, France; 1941, Russia, 1942, England, 1943——? At any 1ate, I feel that we must be prepared to meet a supreme onslaught from March onwards

7. In moving four or five divisions, including one armoured division, out of the United Kingdom in these circumstances we are evidently taking risks. Should events happily take the course assumed in the earlier paragraphs of this letter, and should we in fact reduce our forces at home to the extent mentioned, it would be a very great reassurance and a military advantage of the highest order if you were able to place a United States Army Corps and Armoured Division, with all the air force possible, in the North of Ireland (of course at the invitation of that Government as well as of His Majesty's Government), thus enabling us to withdraw the three divisions we now have for the defence of Great Britain, besides the troops in Iceland, which

are now being relieved

8 We should feel very much freet to act with vigour in the manner I have outlined if we knew that such a step on your part was possible Moreover, the arrival of American troops in Northern Ireland would exercise a powerful effect upon the whole of Eire, with favourable consequences that cannot be measured. It would also be a deterrent upon German invasion schemes. I hope this may find a favourable place in your thoughts. I do not suggest that any decision should be taken until we see the result of the approaching battle.

After some paragraphs dealing with questions of command and the relations of air and naval services to the Army, my letter continued

# PART II

- 13 All my information goes to show that a victory in Cyrenaica of the British over the Germans will alter the whole shape of the war Spain may be heartened to fight for her in the Mediterraneau neutrality A profound effect may be produced upon the already demoralised Italy Perhaps, most important of all, Turkey may be consolidated in her resistance to Hitler We do not require Turkey to enter the war aggressively at the present moment, but only to maintain a stolid, unyielding front to German threats and blandishments As long as Turkey is not violated or seduced, this great oblong pad of poorly developed territory is an impassable protection for the eastern flank of our Nile Army If Turkey were forced to enter the war we should of course have to give her a great deal of support which might be better used elsewhere, either in French North Africa or in the Caucasus We are making promises of support to Turkey (contingent on the military situation) which amount to between four and six divisions and twenty or thirty air squadrons, and we are actively preparing with them the necessary airfields in Anatolia But what Turkey requires to keep her sound is a British victory over Germans, making all promises real and living
- 14 These dispositions, as I have set them out, do not allow us in the next six months to make any serious contribution to the Russian defence of the Caucasus and Caspian basin. The best help we can give the Russians is to relieve the five Russian divisions now crowded into Northern Persia If these are brought home and used in the battle I have pledged the faith of Britain to Stalin that no rightful Russian interest shall suffer and that we will take no advantages in Persia at their expense I do not however see how, in the period mentioned, we can put more than a symbolic force into the Caucasus and the Russians retain a similar representation in Persia. The Russians much disturb Persia by their presence, their theories, and their behaviour, and the outbreak of disorders would mean that we should have to spread three or four British-Indian divisions to keep open the communications from the Persian Gulf to the Caspian These communications, which are a vital part of our joint Aid to Russia policy, would thus be largely choked by the need of supplying the extra forces I have been trying to get the Russians to see this point
- 15 In my telegram of July 25, 1941, which I sent you before our Atlantic meeting, I spoke of the long-term project for 1943 of the simultaneous landing of say 15,000 tanks from hundreds of specially fitted ocean-going ships on the beaches of three or four countries ripe for revolt. I suggested that the necessary alterations could easily be made at this stage to a proportion of your merchant ships now building

#### THE PATH AHEAD

on so vast a scale I now send you the drawings prepared by the Admiralty, which illustrate the kind of treatment the vessels would require. You will see that it is estimated only to add about £50,000 to their cost, and I suppose a proportionate delay. It seems to me that not less than 200 ships should be thus fitted. There is sufficient time, as we cannot think of [executing] such a plan before 1943 But the essential counterpart of the tank programme you have now embarked upon is the power to transport them across the oceans and land them upon unfortified beaches along the immense coastline Hitler is committed to defend I trust therefore, Mr. President, that this will commend itself to you.

- 16 I send you a short note which I have made upon the use of artillery, both field and flak. This has its bearing upon the approaching offensive described in Part I, as well as upon the organisation of our Home Army to meet invasion \* All the authorities are agreed upon the principles set forth, and you are very welcome to show this paper, should you think it worth while, to your officers
- 17. I also send, for your own personal information, a note I have made on the structure, present and future, of the British and Imperial armies which we are endeavouring to organise in 1942 † Of course the figure of about a hundred divisions does not, as is fully explained, mean a hundred mobile standard field divisions. Some are garrison, some are anti-aircraft, and some are equivalents in brigide groups. Broadly speaking however it represents a much more considerable deployment of military strength than we had planned at the outbreak of the war. This has been rendered possible by the fact that we have not been engaged to any serious extent since the losses of Dunkirk, and that munitions and reserves have accumulated instead of being expended on a great scale.
- 18 I have not referred to the Japanese menace, which has seemed to grow so much sharper in the last few days, nor to the splendid help you are giving us in the Atlantic, because we discussed these great matters so fully at our meeting, and events are now telling their own tale in accordance with our anticipations. I still think however that the stronger the action of the United States towards Japan the greater the chance of preserving peace. Should however peace be broken and the United States become at war with Japan, you may be sure that a British declaration of war upon Japan will follow within the hour. We hope to be able before Christmas to provide a considerable battle squadron for the Indian and Pacific Oceans.
  - 19 Lastly, Mr President, let me tell you how I envy the Lord Privy

<sup>\*</sup> See p 446 † See p 452

Seal in being able to fly over to the United States and have a good talk with you. My place is here, and therefore I have taken this opportunity of writing you so long a letter. Might I ask that all teference to the forthcoming operations shall be kept absolutely secret, and for yourself alone? For this purpose I have separated the first part of the letter [containing the actual date of our offensive] from the rest, in the hopes that after reading it you will speedily consign it to the flames

With kindest regards and every good wish,

Believe me, Mr. President,

Your sincere friend,

WINSTON S. CHURCHUL

\* \* \* \* \*

I also exposed these designs fully to the Middle East Commanders-in-Chief through the Minister of State, in order that they might realise that "Crusader", the battle they were about to fight, might open to us a continuing path, and also to emphasise once again the urgency of their offensive. This paper, addressed to a different quarter, presents another aspect of the same conception as my letter which Mr Attlee, in full accord, was bearing to the President.

Prime Minister to Minister of State

25 Oct 41

No one can assume that Germany will continue to be inextricably engaged in Russia during the winter. It is far more probable that in a month or so the front in Russia, except in the south, will be stationary. Russia, through loss of munitions capacity, will have been reduced [temporarily] to a second-rate military Power, even if Moscow and Leningrad are held. At any time Hitler can leave, say, one-third of his armies opposite Russia and still have plenty to threaten Great Britain, to put pressure upon Spain, and to send reinforcements to discipline Italy, as well as pushing on in the East

- 2. No one must suppose therefore that things will be better for us next year or in the spring On the contrary, for "Whipcord" [Sicily] it is probably a case of "Now or never" In my view, by the end of December these prospects will be indefinitely closed.
- 3 Hitler's weakness is in the air. The British Air Force is already stronger than his, and, with American aid, increasing more rapidly. The Russian Air Force is perhaps two-thirds of the German, well organised in depth and quite good. Even when the Italian Air Force is counted for what it is worth, Hitler has not enough Air for the simultaneous support of the operations open to his armies. However,

# THE PATH AHEAD

the main part of the British Air Force has to be kept at home against invasion and is largely out of action.

4 It is therefore of importance to us to seek situations which enable us to engage the enemy's Air Force under favourable conditions in various theatres at the same time. Such an opportunity is presented

in a high degree by "Whipcord"

5 If we can before January secure the combination of airfields—Tripoli, Malta, Sicily, and Sardinia—and can establish ourselves upon them, a heavy and possibly decisive attack can be made upon Italy, the weaker partner in the Axis, by bombers from home based on the above system of airfields. The lack of aerodromes in Italy north of Sicily should make this possible. All air fighting in this new theatre is a direct subtraction from the enemy's normal air effort against Great Britain, against the Nile Valley, and in support of his south-eastward advance

6 Other advantages would be gained from British air predominance in the Central Mediterranean Subject to what is said in paragraph 9, the sea route from the Mediterranean would be opened to strongly escorted convoys, with all the savings in shipping accruing therefrom, as well as the stronger support of Eastern operations

7 The reaction upon France and French North Africa following such achievements, including the arrival of British forces on the Tunisian border, might bring Weygand into action, with all the

benefits that would come from that

8. The foundation of the above is of course a victorious "Crusader". You ought to welcome the very powerful diversion of enemy strengths, particularly air strengths, which "Whipcord" would bring, provided it runs concurrently with "Acrobat" [the British conquest of Tripolitania]. Nothing gives us greater safety or baffles the enemy more than the sudden simultaneous upspringing of a great variety of targets This applies particularly in the few weeks which remain while the enemy is disentangling his surplus air forces from the Russian theatre and re-equipping them for action elsewhere As I am sure you realise, a slow advance in Libya by gradual stages after full preparation, making everything sure as you go, while nothing else happens anywhere, ensures the maximum of opposition, and certainly gives the time for it to be brought to bear Such a course would certainly give ample time for the strong German reinforcement of Sicily and for further domination of Italy by German troops I hope you feel, as I do, the fleeting character of the opportunity presented and how short is the breathing-space which now remains before Germany, having tidied up her front against Russia, can redispose her forces in other theatres It is, as you truly say, "a question of timing"

o What will be the enemy's reaction to our attempt to gain a zone of air predominance in the Central Mediterranean and thus to open the passage? To bring superior air-power to bear will take him time. in view of the disposition of the airfields which will remain to him in Italy Therefore he will need to put pressure on Spain to procure the closing of the Straits of Gibraltai We are led to believe that the Spaniards will resent and resist any invasion of their country by the Germans, who are hated by the morose and hungry Spanish people A British victory in "Crusader" will powerfully affect the mood of the Spanish Government Hitler no doubt can force his way through Spain, just as he can dominate Italy. His deterrent is found in the political sphere His aim is to establish a United States of Europe under the German hegemony and the New Order This depends not only upon the conquest, but even more upon the collaboration, of the peoples Nothing will more effectively destroy such hopes than the continuance of the murders and reprisals, slaughter of hostages, etc. which is now going on in so many countries. It will be a very serious step for him to take to add Spain and Italy to the already vast subjugated and rebellious areas over which his troops are spread

To For all the above reasons the close synchronisation of "Crusader" and "Whipcord" and their intimate connection seem highly desirable. On the other hand, it must be realised that we shall not be able to remain inactive except for the advance in Libya. I am confronted with Russian demands for a British force to take its place in the line on the Russian left flank at the earliest moment. It will not be possible in the rising temper of the British people against what they consider our inactivity to resist such demands indefinitely. If therefore it were decided to abandon "Whipcord" or alternative action in French North Africa at French invitation, as mentioned in Chiefs of Staff paper, it would be necessary to make preparations soon for moving a sub-

stantial force into Russia

11 Your further comments should reach us by Monday night, when Defence Committee will meet

#### \* \* \* \* \*

The Commanders-in-Chief at Cairo took a different view. They looked to the defence of the Delta and the Canal, of Basra and the Caucasus, and the "bastion of the Taurus range" as the first essentials. They did not consider Sicily either practicable or necessary. Their minds lay right-handed and to the East, and should it be decided to move westward and should our efforts prosper they preferred the occupation of Bizerta to any attempt on Sicily. I fully understood their reasoning, which was strongly

supported by General Wavell from India. They expressed then conclusions in a telegram on October 27 embodying the arguments I have set forth

In consequence I abandoned the idea of an attack on Sicily ("Whipcord")

Prime Minister to General Ismay, for COS Committee 28 Oct 41 In view of the Middle East latest telegram and of your own decisive abandonment of the project "Whipcord", which you advocated and which I espoused, I now consider that plan at an end

- 2 A force equivalent to two divisions and one armoured division should however stand ready to exploit "Crusader" and "Acrobat" should they be successful. There is no leason, unless hope be a reason, to expect that General Weygand will invite us into Bizerta or Casablanca as the result of our impending operations. Should he do so, we must be ready to profit by so great a turn of fortune. The same Commanders should study this case forthwith, and it should be concerted with Middle East H.Q., and especially with Admiral Cunningham.
- 3 The situation might arise either through the effect of a British victory, if gained, on French moiale, or, which is not to be excluded, by a German demand on Pétain for the use of this theatre in consequence of the loss of Tripoli, actual or probable

4 The name of this operation will be "Gymnast"

- 5. It is important to know at once what orders should be issued to convert "Whipcord" into "Gymnast", so as to make the least possible ini oads upon shipping, and, secondly, what the demands upon shipping would be and their full effect.
- of I have received advices from America that our friends there are much attracted by the idea of American intervention in Morocco, and Colonel Knox talked to Lord Halifax about 150,000 United States troops being landed there. We must be leady, if possible, with a simultaneous offer, or anyhow a British offer, to General Weygand at any moment which seems timely after a success in "Crusader". This might turn the scale in our favour. The offer should therefore be couched in most effective terms. I will not myself address the President on the subject until after results of "Crusader" are apparent

7 I have had a letter from him by Lord Louis Mountbatten, in which he expresses lively interest in Tangier. This should also be examined, but it evidently raises very great complications with the Spaniards and the French, and it would be wrong to sacrifice the

chance of French co-operation for the sake of it.

Apart from dropping the Sicily project, we all held firmly to

our estimate of values and chances, and I had no difficulty in procuring a united decision.

Prime Minister to General Ismay, for CO.S Committee 2 Nov 41 and CIGS

While fully understanding General Wavell's point of view, we have definitely decided to play the sequence, "Crusader", "Acrobat", "Gymnast" There can be no going back on this

Our plan, if everything prospered, was therefore the clearance of Cyrenaica by the defeat of Rommel's army, the advance to Tripoli, and, with the French help and invitation, if forthcoming, the entry into French North-West Africa 'The Sicily project was dependent upon the favourable outcome of the first two, and would be an alternative to the third. All this was however so speculative that I did not wish to continue the strategic argument with the Middle East Command.

Prime Minister to Minister of State

11 Nov 41

I could find no answer but silence to your and Auchinleck's telegiams about "Crusader" No view can be taken of the future until we know how this goes A battle is a veil through which it is not wise to peer

\* \* \* \* \*

It may be well to see in the afterlight what was passing in the

enemy's mind

In July 1941 the German Army Planning Staff had made a study of future operations, called Plan "Orient", to overthrow the British position in the Middle East. Their major assumption was that the Russian war would come to a successful end in the autumn. If so—a big "If"—a Panzer Corps from the Caucasus would drive southwards through, Persia in the winter of 1941–42. From Bulgaria, if Turkey were acquiescent, a force of ten divisions, half of them armoured and motorised, would traverse Anatolia into Syria and Iraq. If Turkey resisted double that strength would be needed, and in consequence the plan would have to wait till 1942. The German and Italian forces in Africa were given only the third place. Their rôle during the summer and autumn of 1941 was to be purely defensive, except that Tobruk was to be taken. By the winter their losses in men and equipment would be made up, and then, when the general assault

### THE PATH AHEAD

was made on Persia and Iraq, and our attention and forces were distracted, the Axis army in Libya would advance on Cairo

The African adventure had never been favoured by the German High Command. German forces had only been sent to stop the Italian rout. When this was checked, and we were driven back, the success did not lead to any change of heart. The sea voyage across the Mediterranean, with its perils from submarines and air attacks from Malta, was not to their liking North Africa would always remain a minor theatre, owing to the "greater difficulties in reinforcement which would be experienced by the Axis as compared with the Allies". Nor was co-operation with Italians, on land, sea, or air, particularly attractive to German minds. It was only with grudging acquiescence that Rommel's shortages were made up If the enemy had chosen they could have spared and ferried, at an accepted cost, the forces necessary to make our position untenable. It will presently be seen how it was that Malta, their chief obstacle, was never assaulted No doubt their heavy loss in Ciete was a deterrent

# \* \* \* \* \*

A letter sent at the beginning of August 1941 from the German War Staff to the generals commanding the West, North, and South Groups outlined the objectives which would be pursued on the morrow of a Russian defeat

(a) Strengthening of the armed forces in North Africa with a view to rendering possible the capture of Tobruk. In order to permit the passage of necessary transports attacks by the German Air Force on Malta should be resumed.

Provided that weather conditions cause no delay and the service of transports is assured as planned, it can be assumed that the campaign against Tobruk will begin in mid-September

(b) Plan "Felix" [1 e, the seizure of Gibraltar, with the active participation of Spain] must be executed in 1941

(c) Should the campaign in the East be over, and Turkey comes to our side, an attack on Syria and Palestine in the direction of Egypt is contemplated, after a millimum period of 85 days for preparation . . .

#### \* \* \* \* \*

The autumn and winter months were therefore our opportunity. The German Air was gone from Sicily. The Russian

front lapped up the fuel needed for the Italian Fleet During August 33 per cent of the supplies and reinforcements to Rommel were lost. In October this important figure rose to 63 per cent The Italians were pressed to organise an alternative route of supply by air At the end of September Mussolini undertook to carry reinforcements by air to Tripoli at the rate of fifteen thousand men a month, but by the end of October only nine thousand had arrived Sea transport to Tripoli was at the same time brought to a standstill, and only a few convoys ran our blockade and reached Benghazi October losses at last however forced the German High Command to send oil to the Italian Navy A far more important step was also taken Admiral Doenitz reluctantly agreed to move twenty-five German U-boats from the Atlantic struggle into the Mediterranean Here was a real stroke, the consequences of which were not long to be delayed

In the interval our control exercised from Malta was decisive, and the activities of "Force K", which the Admiralty, at my desire, had created there, yielded rich prizes. On the night of November 8, acting on an aircraft report, they pounced upon the first Italian convoys since the resumption of traffic, consisting of seven merchant ships, escorted by six destroyers, two cruisers, and supported by four other destroyers. All the merchant ships were quickly annihilated. One destroyer was sunk and another damaged by our cruisers. The Italian cruisers took no part in the

affair I sent this good news to the President.

Former Naval Person to President Roosevelt 9 Nov 41

The destruction between Italy and Greece of the Axis convoy destined for Benghazi is highly important both in itself and in its consequences. It is also noteworthy that the two Italian heavy cruisers would not face our two 6-inch light cruisers, nor their six [actually four] destroyers our two

I have also an increasingly good impression of the Moscow front

Once more the convoys were suspended, and Rommel had good reason to complain to the German High Command

General Rommel to OKW\* 9 Nov 41

- I The tempo of the transport of troops and supplies to North Africa has been reduced still more. To the end of October 1941 of the
  - \* Oberkommando des Wehrmacht, Supreme Command of the German Army

# THE PATH AHEAD

60,000 tons of supplies promised by the Italians only 8,093 tons have reached Benghazi. Of those troops originally intended for the attack on Tobruk about one-third of the artillery and various important communications units will not arrive from Europe even by November 20 Furthermore, it is uncertain when the twenty 15.5-cm guns bought from France in Tunis will arrive. Of the requested three Italian divisions for an attack in November only one will be available, and that below strength

\* \* \* \* \*

But now our interval of immunity and advantage came to its end. The U-boats arrived upon the scene. On November 12, while returning to Gibraltar after flying more aircraft into Malta, the Ark Royal was struck by a torpedo from a German U-boat. All attempts to save the ship failed, and this famous veteran, which had played such a distinguished part in so many of our affairs, sank when only twenty-five miles from Gibraltar. This was the beginning of a series of grievous losses to our Fleet in the Mediterranean and a weakness there which we had never known before. All was however now ready for our long-delayed offensive, and it is to the Western Desert that we must now turn.

\* \* \* \*

On November 15 I sent General Auchinleck a message from the King for him to use "if, when, and as" he thought fit

Prime Minister to General Auchinleck 15 Nov 41

I have it in command from the King to express to all ranks of the Army and Royal Air Force in the Western Deseit, and to the Mediterianean Fleet, His Majesty's confidence that they will do their duty with exemplary devotion in the supremely important battle which lies before them. For the first time British and Empire troops will meet the Germans with an ample equipment in modern weapons of all kinds. The battle itself will affect the whole course of the war. Now is the time to strike the hardest blow yet struck for final victory, home, and freedom. The Desert Army may add a page to history which will rank with Blenheim and with Waterloo. The eyes of all nations are upon you. All our hearts are with you. May God uphold the right!

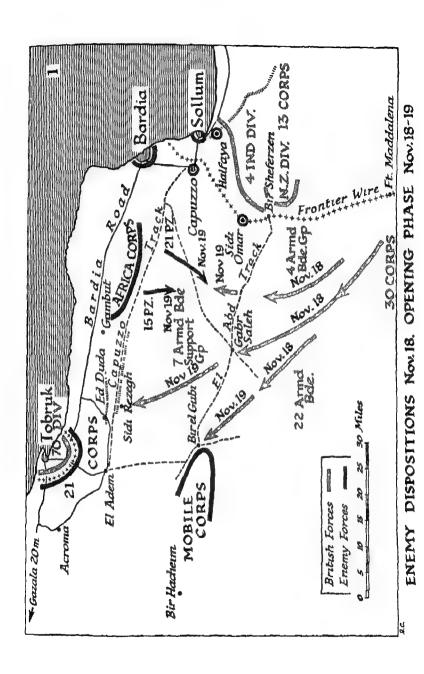
# CHAPTER XXX

# OPERATION "CRUSADER" ASHORE, ALOFT, AND AFLOAT

Sense of Drama Absent from Modern Battles — The Opposing Armies and Plans — The Eighth Army Attack — Surprise Achieved — The First Three Days — The XIIIth Corps Pierces the Frontier Line — General Auchinleck's Account of the Battle — Rommel's Daring Stroke — The Swaying Struggle — Auchinleck Flies to the Desert Headquarters — His Orders to General Cunningham Save the Battle — His Decision to Replace General Cunningham — My Letter to the President of November 20 — The Vichy Danger — Naval Attacks upon the Enemy Convoys — Resolute Advance of the New Zealand Division to Sidi Rezegh — Rommel Retreats, Abandoning His Frontier Garrisons — Tobruk Relieved — Losses in the Battle — Gloom in Rome — Naval Disasters — "Ark Royal" and "Barham" Sunk — "Human Torpedoes" Attack in Alexandria Harbour — "Queen Elizabeth" and "Valiant" Heavily Damaged — "Force K" Stricken — Loss of the "Neptune" — Viitual Elimination of the British Eastern Mediterranean Fleet — Hitler Brings Back Air-Power from Russia to Sicily — Our Nadir in the Mediterranean.

ESCRIPTIONS of modern battles are apt to lose the sense of drama because they are spread over wide spaces and often take weeks to decide, whereas on the famous fields of history the fate of nations and empires was decided on a few square miles of ground in a few hours. The conflicts of fast-moving armoured and motorised forces in the Desert present this contrast with the past in an extreme form

Tanks had replaced the cavalry of former wars with a vastly more powerful and far-ranging weapon, and in many aspects their manœuvres resembled naval warfare, with seas of sand instead of salt water. The fighting quality of the armoured



column, like that of a cruser squadion, rather than the position where they met the enemy, or the part of the horizon on which he appeared, was the decisive feature. Tank divisions or brigades, and still more smaller units, could form fronts in any direction so swiftly that the perils of being outflanked or taken in rear or cut off had a greatly lessened significance. On the other hand, all depended from moment to moment upon fuel and ammunition, and the supply of both was far more complicated for armoured forces than for the self-contained ships and squadrons at sea. The principles on which the art of war is founded expressed themselves therefore in novel terms, and every encounter taught lessons of its own.

The magnitude of the war effort involved in these Desert struggles must not be underrated. Although only about ninety or a hundred thousand fighting troops were engaged in each of the armies, these needed masses of men and material two or three times as large to sustain them in their trial of strength. The fierce clash of Sidi Rezegh, which marked the opening of General Auchinleck's offensive, when viewed as a whole, presents many of the most vivid features of war. The personal interventions of the two Commanders-in-Chief were as dominant and decisive and the stakes on both sides were as high as in the olden times.

\* \* \* \* \*

General Auchinleck's task was first to recapture Cyrenaica, destroying in the process the enemy's armour, and, secondly, if all went well, to capture Tripolitania. For these purposes General Cunningham, who was to command the newly named Eighth Army, was given the XIIIth and the XXXth Corps, comprising, with the Tobruk garrison, about six divisions, and three brigades in reserve.\* The total British tank strength was 724, including 367 cruisers with another 200 in reserve. The Royal Air Force was to intensify its action for a month beforehand, so as to harry the hostile communications and 'gain mastery in the air for the

\* The following was the composition of the Eighth Army

XIII Corps (Godwin-Austen) 4th Indian Division New Zealand Division 1st Army Tank Brigade XXX Corps (Norrie)
7th Armoured Division
(7th Armoured Brigade,
22nd Armoured Brigade)
4th Armoured Brigade Group
1st South African Division (two brigades)
22nd Guards Brigade Group

# "CRUSADER": ASHORE, ALOFT, AND AFLOAT

battle. Under Air Vice-Marshal Coningham, the Western Desert Air Force consisted of sixteen fighter squadrons, twelve medium bomber, five heavy bomber, and three Army Co-operation squadrons. Out of 1,311 modern combat aircraft on the strength 1,072 were serviceable, in addition to ten squadrons operating from Malta

Seventy miles behind Rommel's front lay the garrison of Tobruk, comprising five brigade groups and an armoured brigade This fortress was his constant preoccupation, and had hitherto prevented by its strategic threat any advance upon Egypt. To eliminate Tobruk was the settled purpose of the German High Command, and all preparations possible had been made to begin the assault upon it on November 23. Rommel's army comprised the formidable Afrika Corps, consisting of the 15th and 21st Panzer Divisions and the 90th Light Division, and seven Italian divisions, of which one was armoured The enemy tank strength was estimated at 388, but, as we now know from enemy records. was actually 5,58 Of the medium and heavy, two-thirds were German and carried heavier guns than the 2-pounders of our The enemy were moreover markedly superior in antitank weapons The Axis Air Force consisted of 190 German aircraft, of which only 120 were serviceable at the moment of attack, and over 300 Italian aircraft, of which possibly 200 were serviceable

\* \* \* \* \*

The Eighth Army, under General Cunningham, was to attack with its two corps and drive west and north towards Tobruk, whose garrison was at the same time to make a heavy and violent sortie towards them. For this purpose the XIIIth Corps was to engage and hold the enemy frontier defences from Halfaya to Sidi Omar, and outflank and surround them, thus cutting off all the troops who held them, and then march towards Tobruk. Meanwhile the XXXth Corps, which contained almost the whole of our armour, was to sweep widely on the Desert Flank, seeking to find and fight the mass of Rommel's armour, and at least to occupy them so that the XIIIth Corps was shielded

\* \* \* \* \*

In spite of the immense preparations complete tactical surprise was achieved. The Axis army was in process of taking up

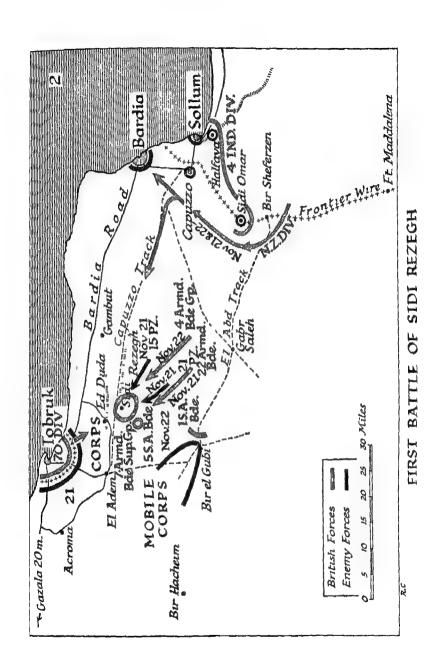
fresh positions for the attack on Tobruk due for November 23. In order to strike at the brain and nerve-centre of the enemy's army at the critical moment, fifty men of the Scottish Commando, under Colonel Laycock, were carried by submarine to a point on the coast two hundred miles behind the enemy's line. The thirty who could be landed in the rough sea were formed into two parties, one to cut telephone and telegraph communications, and the other, under Lieut-Colonel Keyes, son of Admiral Keyes, to attack Rommel's house. At midnight on the 17th one of the Headquarters houses was broken into and a number of Germans were shot, but Rommel himself was not there. In the close fighting of a pitch-dark room Keyes was killed. The award of a posthumous Victoria Cross was the tribute to his conduct.\*

\* \* \* \* \*

Early on November 18, in heavy rain, the Eighth Army leapt forward, and, according to their plan, the XIIIth Corps curled round the enemy positions on the frontier, while the XXXth Corps, meeting at first with no resistance, pressed upwards from the south to Sidi Rezegh. This ridge, about a hundred feet high, is almost a cliff on its northern side, dominating the Capuzzo track, Rommel's main line of communications from west to east Near it lies a very large airfield. Southwards, although not a conspicuous feature, it gives a good view over the undulating deseit. It was judged by both sides to be the key to the whole battle area and the essential step to the relief of Tobruk.

For the first three days all went well. On the 19th what was thought to be the bulk of the German armour moved south from the coastal zone where they had been lying, and next day met our 4th 1nd 22nd Armoured Brigades fifteen miles west of Sidi Omar. The British 7th Armoured Division in its search for the enemy became widely dispersed. One of its brigades (the 7th) and the Support Gioup took Sidi Rezegh. These and other units were successively attacked by the Afrika Korps, whose armour had been kept more concentrated. During the whole of the 21st and 22nd a savage struggle raged, mainly around and upon the

<sup>\*</sup> The sea was too rough for the re-embarkation of the survivors of the two raiding parties, and under fierce pursuit Colonel Laycock ordered them to scatter and hide in the broken country. Only Colonel Eaycock and Sergeant Tetry, who had been conspicuous in the attick on the German Headquarters, eventually regained our lines, after five weeks of privation and desperate adventures.



airfield. Into this arena virtually all the armour on both side was drawn, and surged to and fro in violent struggles under the fire of rival batteries. The stronger armament of the German tanks and the larger numbers they brought to the points of collision gave them the advantage. In spite of the heroic and brilliant leadership of Brigadier Jock Campbell the Germans prevailed, and we suffered more heavily than they in tanks. On the night of the 22nd the Germans recaptured Sidi Rezegh. General Norrie, commanding the XXXth Corps, having lost two-thirds of his armour, ordered a general withdrawal of twenty miles in order to reorganise his command in the area north of the El Abd track. This was a heavy setback.

\* \* \* \* \*

On the night of the 19th Auchinleck telegraphed to me "It now seems certain that the enemy was surprised and unaware of the imminence and weight of our blow. Indications, though these have to be confirmed, are that he is now trying to withdraw from area of Bardia-Sollum. Until we know the area reached by our armoured troops to-day it is not possible to read the battle further at the moment. I myself am happy about the situation. . . ." Tedder also reported. "The present phase in the air battle appears to be going satisfactorily. The exceptional storms on the 17/18th upset our plans for neutralising the German fighters, but they also helped to limit enemy air action during the first two days. Another fourteen Ju.87's were burnt on the ground yesterday. There were fifty-six heavy bomber sorties at night. Malta included Benghazi among its targets. Ten tons of ammunition were flown up to the 4th Armoured Brigade."

\* \* \* \* \*

Meanwhile on November 21, the enemy armour being committed to battle, General Cumpingham ordered the XIIIth Corps to advance. The 4th Indian Division had already curled round Sidi Omar On its left the New Zealand Division, under General Freyberg, moved north, and reached the outskirts of Bardia, thus severing the communications of all the frontier garrisons. They captured the headquarters of the Afrika Korps, and on the 23rd nearly regained Sidi Rezegh, from which their comrades of the 7th Armoured Division had just been driven. On November 24 Freyberg concentrated the bulk of the New Zealanders five miles

# "CRUSADER". ASHORE, ALOFT, AND AFLOAT

to the east of the airfield. On this day therefore our armoured forces were reorganising after their repulse from Sidi Rezegh. The sortie from Tobruk had been launched, and was fighting hard against German infantry, but had not broken through. The New Zealand Division stood before Sidi Rezegh after a triumphant march. The enemy frontier garrisons had been cut off, and their armour, having won its battle against the XXXth Corps, lay to the north of El Gubi. Very heavy blows and severe losses had been exchanged, and the battle hung in the balance.

No better account can be given of this battle than is contained in General Auchinleck's final dispatch, which was published in the Gazette in 1948

Since the Panzer divisions now seemed to be committed to battle and were reported to be losing a considerable number of tanks, General Cunningham allowed the signal to be given for the Tobruk sorties to begin and for the XIIIth Corps to start operations November 21 however our difficulties began. The enemy, as was to be expected, reacted at once to the threat to Sidi Rezegh, and his armoured divisions evaded the 4th and 22nd Armoured Brigades The whole of the enemy armour then combined to drive us from this vital area and to prevent help reaching the Support Group and the 7th Armoured Brigade, which were isolated there Neither of these formations was designed to carry out a prolonged defence, and it is greatly to their credit that they managed to do so, unaided, throughout the 21st The 5th South African Infantry Brigade, which was expected to reach the scene before the development of the enemy attack, failed to do so, partly owing to the opposition of the Ariete Armoured Division and partly because of inexperience in handling the very large number of vehicles with which it took the field

Next day all three armoured brigades joined in the defence of the area. But our tanks and anti-tank guns were no match for the German, although they were fought with great gallantry, and on the evening of November 22 the XXXth Corps was compelled to retire, having lost two-thirds of its tanks and leaving the garrison of Tobruk with a huge salient to defend.

The enemy rounded off his success in spectacular fashion. In a night attack he surprised and completely disorganised the 4th Armoured Brigade, whose hundred tanks represented two-thirds of our remaining armoured strength. On the 23rd he practically annihilated the 5th South African Infantry Brigade, one of the only two infantry

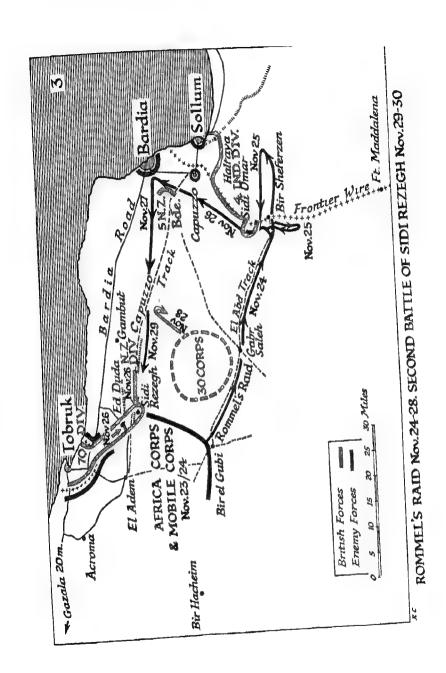
the 24th with his armoured divisions he troke to the frontier. Before this it had irst reports had grossly exaggerated enemy it least as many tanks as we had and better, ecover more from the battlefield, which

ance of strength between the opposing a most critical situation.

atic episode which recalls "Jeb" Stuart's

\* \* \* \*

1862 on the York Town peninsula in r. It was however executed with an as an army in itself, and whose destrucd the rest of the Axis army Rommel ical initiative and to force his way eastth his armour in the hope of creating ng so much alarm as to prevail upon our e struggle and withdraw. He may well the fortune which had rewarded his preceding Desert battle of June 15 and led treat at the crucial moment. How nearly vill be apparent as the story proceeds. er part of the Afrika Korps, still the most ield, and thrust down the El Abd road or rowly missing the headquarters of the great dumps of supplies, without which nued the fight On reaching the frontier lumns, some of which turned north and on twenty miles into Egyptian territory our rearward areas and captured many however made no impression on the 4th were pursued by detachments hastily Armoured Brigade, the Support Group, Above all our Air Force, which had ree of mastery in the air above the conhim all the time and all the way Romy unsupported by their own Air Force, troops had known and endured when it ninated the battle skies. On the 26th all



the enemy's armour turned northwards and sought haven in and near Bardia. Next day they hurried off to the west, back to Sidi Rezegh, whither they were urgently summoned. Rommel's daring stroke had failed, but, as will now be seen, only one manthe opposing Commander-in-Chief—stopped him.

\* \* \* \* \*

It may be of interest to cite some extracts from the daily telegrams which reached me during this period from Auchinleck and Tedder. On the 21st Auchinleck sent favourable news. "With luck the earth is stopped and the hounds in full cry." And later in the day: "Engagements between the 22nd Armoured Brigade and enemy armoured forces at El Gubi on November 18 heavier than earlier reports showed, and apparently resulted in our losing about forty cruiser tanks, of which many have since been repaired, against estimated enemy losses of fifty-five. Sidi Rezegh is held by the Support Group of the 7th Armoured Division and the 5th South African Infantry Brigade. Tobruk garrison made its sally this morning. . . . It is very difficult to arrive at a firm estimate of the enemy tank losses, as the battle has moved and is moving with such great speed . . . A marked feature of operations to date has been our complete air supremacy and excellent co-operation between ground and air." On the 22nd he summed up his report. "Prospects of achieving our immediate object, namely, the destruction of the German armoured forces, seem good "And later: "Spirit and dash shown by commanders and troops have been remarkable. opinion Cunningham has so far fought this extremely complicated battle with great skill and daring. . . . I think much depends on whether a substantial proportion of tanks of the 15th German Armoured Division took part with the 21st Armoured Division in the armoured battles of the last four days, or whether this division is still more or less intact. I hope for the first, but cannot yet be certain" On the 23rd a somewhat darker impression was conveyed: "It looks as if the battle is moving to its climax. Some at any rate of the German tanks north of El Gubi succeeded in breaking out. Our troops at Sidi Rezegh were being strongly pressed yesterday from east and west by enemy reported to have a hundred tanks in action. . . . "

These fragmentary quotations show the impressions prevailing

# "CRUSADER" ASHORE, ALOFT, AND AFLOAT

almost from hour to hour at the Supreme Headquarters, and are of course a very small part of the reports which they sent

# \* \* \* \*

The heavy blows we had received and the impression of disorder behind our front, caused by Rommel's raid, led General Cunningham to represent to the Commander-in-Chief that a continuation of our offensive might result in the annihilation of our tank force, and so endanger the safety of Egypt. This would mean acknowledged defeat and failure of the whole operation At this decisive moment General Auchinleck intervened personally. At Cunningham's request he flew with Air Marshal Tedder to the Desert Headquarters on November 23, and, with full knowledge of all the dangers, ordered General Cunningham "to continue to press the offensive against the enemy". By his personal action Auchinleck thus saved the battle and proved his outstanding qualities as a commander in the field

To me he telegraphed on the 24th from the Advanced Head-

quarters

On arrival I found Cunningham perturbed at the situation, owing to the very small number of our tanks reported still in running order Apparently five days' continuous fighting and manœuvring resulted in considerable disorganisation and losses from enemy action and mechanical breakdowns in our armoured division. There are sure to be reasons for this, but they do not matter now. yesterday evening the enemy used Italian tanks, which I take as evidence that he is running short of his own I am convinced that he is fully stretched and desperate, and that we must go on pressing him relentlessly We may immobilise temporarily at least practically all our tanks in the process, but that does not matter if we destroy all his The fact that he has abandoned Sidi Omar and Sollum garrisons to their fate and that we have already taken over three thousand prisoners, including a thousand Germans, . . is significant I have accordingly ordered General Cunningham to attack with all available resources, regain Sidi Rezegh, and join hands with Tobruk garrison, which is to co-operate by attacking the enemy on its front. Commanders and troops in great heart, and New Zealand Division is concentrated in front of Sidi Rezegh with Infantry tanks. The enemy is fighting desperately, but we always expected that.

I replied at once:

Prime Minister to General Auchinleck

25 Nov 41

Yours of 24th I cordially endorse your view and intentions, and His Majesty's Government wish to share your responsibility for fighting it out to the last inch, whatever may be the result. It is all or nothing, but I am sure you are the stronger and will win

2 You have no doubt had my message about the rest of the 1st Armoured Division landing at Suez to-day Ram it in if useful at earliest without regard for future Close grip upon the enemy by all

units will choke the life out of him

3 Am immensely heartened by your magnificent spirit and will-power Say "Bravo" to Tedder and R. A.F. on air mastery.

\* \* \* \* \*

On Auchinleck's return to Cairo on the 25th he telegraphed to me. "I have decided to replace General Cunningham temporarily by General Ritchie, my present Deputy Chief of Staff. This is not on account of any misgiving as to the present situation in my mind, but because I have reluctantly concluded that Cunningham, admirable as he has been up to date, has now begun to think defensively, mainly because of our large tank losses. Before taking this drastic step I gave the matter prolonged and anxious consideration and consulted the Minister of State on my return this afternoon. I am convinced that I am right, though I realise the undesirability of such a step at present on general grounds. I will try and minimise publicity as much as possible."

In his official letter to General Cunningham, Auchinleck wrote "I have formed the opinion . . . that you are now thinking in terms of defence rather than offence, and I have lost confidence in your ability to press to the bitter end the offensive which I have ordered

to continue."

The Minister of State, Oliver Lyttelton, explained and strongly supported the Commander-in-Chief's decision. To him I telegraphed at once

Prime Minister to Minister of State

25 Nov 41

General Auchinleck's authority over all commanders is supreme, and all his decisions during the battle will be confirmed by us. Your action and attitude highly approved. Communicate [this] to General Auchinleck.

Here I shall leave this incident, so painful to the gallant officer concerned, to his brother the Naval Commander-in-Chief, and to General Auchinleck, who was a personal friend of both. I

# "CRUSADER". ASHORE, ALOFT, AND AFLOAT

particularly admired General Auchinleck's conduct in rising superior to all personal considerations and to all temptations to compromise or delay action.

\* \* \* \* \*

At this point in the battle I must turn aside to record some other closely related events. On November 20, while the news was still good, I sent an account to the President urging him to do all in his power to keep Vichy motionless in these cardinal days.

Former Naval Person to President Roosevelt 20 Nov 41

The approach and deployment of our forces in Libya has been most successful, and the enemy was taken by surprise. Only now does he realise the large scale of our operations against him. Heavy fighting between the armoured forces seems probable to-day. Orders have been given to press what is now begun to a decision at all costs. The chances do not seem to be unfavourable.

2. It would be disastrous if Weygand were to be replaced by some pro-Hun officer just at the moment when we are likely to be in a position to influence events in North Africa both from the East and from home. I hope you will try your utmost to persuade Vichy to preserve Weygand in his command. If this cannot be achieved some friendly figure from retirement, like General Georges, might be agreed upon. I have not seen Georges since the collapse, but I have reason to believe his heart is sound. I knew him very well. Anyhow, Mr. President, Tunis and all French North Africa might open out to us if we gain a good victory in Libya, and we must be ready to exploit success. I am afraid, on the other hand, lest Hitler may demand to occupy Bizerta in view of possible danger to Tripoli. It is now or never with the Vichy French, and their last chance of redemption.

\* \* \* \* \*

It was vital also at this moment to cut off Rommel's fuel supply, and I therefore telegraphed both to General Auchinleck and the Naval Commander-in-Chief urging that a blow should be struck at the enemy communications

Prime Minister to General Auchinleck 23 Nov 41

When one sees the invaluable cargoes of fuel now being directed upon Benghazi, and the enemy air concentration at Benina, it would seem that quite exceptional risk should be run to sterilise these places, even for three or four days. The enemy's fear of this operation is obviously well founded. The only time for such a venture is while he is in the throes of the battle. Chance of success will diminish as

soon as he has been able to reinforce with troops withdrawing or escaping from the battle zone. There is a lot to be picked up cheap now, both at Benghazi and west of Agheila, which will rise in price enormously once the main battle is over. I am sure you will be considering this. Please remember how much they got by brass and bluff at the time of the French collapse. What is the mission of the Oasis force?

Prime Minister to Admiral Cunningham, Commander-in- 23 Nov 41 Chief Mediterranean

I asked the First Sea Lord to wireless you to-day about the vital importance of intercepting surface ships bringing reinforcements, supplies, and above all fuel, to Benghazi. Our information here shows in number of vessels now approaching or starting. Request has been made by enemy for air protection, but this cannot be given owing to absorption in battle of his African air force. All this information has been repeated to you. I shall be glad to hear through Admiralty what action you propose to take. The stopping of these ships may save thousands of lives, apart from aiding a victory of cardinal importance.

# The Admiral replied to me personally forthwith

Yours of the 23rd I am naturally very much alive to vital importance of Benghazi supply route, and First Sea Lord will by now have told you dispositions which were already in hand to deal with situation Our first move was to hold up enemy convoys by means of threats from the forces at each end of Mediterranean, and this has had considerable success. Now that convoys are resuming sailings they will be attacked by surface air and submarine forces. Unfortunately the reported absorption of the German Air Force in land battles to which you refer has not been borne out in practice, and a very lively interest is being taken by the enemy in our movements. Conversely, our main weakness in reconnaissance forces is adding a heavy hazard to work of our light forces, who have of necessity to operate without close support if use is to be made of their speed.

He did his utmost, but it was from Malta that the most effective blow was struck. On the night of the 24th the cruisers and destroyers of Force "K" sallied forth and caught the two oil transports on which the enemy counted highly To Auchinleck I was able to send this good news:

25 Nov 41

We sent Aurora and Penelope out from Malta last night, and duly sank the two vital oil transports Procida and Maritza The Admiral is after the others

# "CRUSADER": ASHORE, ALOFT, AND AFLOAT

While Rommel was engaged with the Afrika Korps on his audacious but costly excursion through the communications and rear of the British Eighth Army, Freyberg and his New Zealanders, supported by the 1st Army Tank Brigade, pressed hard upon Sidi Rezegh. After two days of severe fighting they recaptured it Simultaneously the garrison of Tobruk resumed its sortie and captured Ed Duda On the night of the 26th contact was established between the Tobruk garrison and the relieving force. Some units of the New Zealand Division and the XIIIth Corps Headquarters entered beleaguered Tobruk. This situation brought Rommel back from Bardia. He fought his way to Sidi Rezegh, attacked in flank by the reorganised 7th Armoured Division, now mustering 120 tanks He recaptured Sidi Rezegh. He drove back the 6th New Zealand Brigade with crippling loss. They and the 4th Brigade, except for two battalions which joined up with the Tobruk garrison, were withdrawn southeastwards to the frontier, where the heroic division re-formed after losing more than three thousand men. The Tobruk garrison, again isolated, held on by a bold decision to all the ground gained

General Ritchie now regrouped his army so as to bring the garrison of Tobruk under the XIIIth Corps and to pass the New Zealand Division into reserve El Adem, in a valley fifteen miles west of Sidi Rezegh, lay also upon the main east-to-west communications of the enemy, and was now the objective. Both our corps were used. The XIIIth advanced from Ed Duda, and the XXXth came up from the south During these preparations Rommel made a final thrust to rescue his frontier garrisons. It was repulsed. The general retreat of the Axis army to the Gazala

line then began.

Our telegrams continued to flow. On the 26th Auchinleck said "The news to-day is so far scanty, but good Tobruk garrison was within sight of the New Zealanders this morning, and I have just heard that the latter recaptured Sidi Rezegh. Fierce fighting continues. Enemy armoured and motorised forces are still apparently milling around in our rear areas between Bardia, Sheferzen, and Halfaya, but with little result. It is now certain that this armoured and motorised thrust was a raid to divert our attention from Tobruk. It has failed signally."

About General Cunningham's replacement he added: "I am

most grateful to you for your support. In this, as in everything else, I cannot tell you what it means to us, and it is not to be measured in terms of armoured divisions or anything else. Rommel is not done yet, but we have regained the initiative, I feel, and I trust we shall keep it "

Prime Minister to General Auchinleck

26 Nov 41

You are no doubt constantly considering the movement forward of reserves towards the battle zone. I am well aware that this is conditioned by transport and how important it is for you to do the work with the minimum mouths to feed. I should be glad however to know what you have in reserve. Suppose you need another division, or two or three brigades, where would you get them from? You could, I suppose, if necessary, bring a brigade of the 50th Division back from Baghdad.

Please let me know your resources and ideas

Auchinleck replied that, on account of the difficulty of maintaining them in the Desert, it was more a question of being able to replace tired troops by fresh ones than of adding new formations, though he would of course be glad to have more troops forward to ensure momentum. He was bringing one infantry brigade group of the 50th Division into the GHQ reserve, but did not think it necessary to recall the other two brigade groups, which were on their way to Iraq.

Although I cordially approved what had been done in the High Command, I thought it a pity that Auchinleck did not take it over himself instead of entrusting it to one of his staff officers, as yet unproved in the field

Prime Minister to General Auchinleck

27 Nov 41

CIGS and I both wonder whether, as you saved the battle once, you should not go up again and win it now Your presence on the spot will be an inspiration to all However, this of course is entirely for you to judge

He replied.

I considered very carefully whether I should not myself take Cunningham's place in command of the Eighth Army I realise well what hangs on this battle, but concluded that I was more useful at G.H Q, where I could see the whole battle and retain a proper sense of proportion I shall go forward to visit [Ritchie] of course, as required

# "CRUSADER": ASHORE, ALOFT, AND AFLOAT

Neither I nor the C I.G.S. was convinced, but we did not pres

our point

Auchinleck's message of the 30th concluded: "Our supply column reached Tobruk morning of 20th The Commander of XIIIth Corps' [General Godwin-Austen] birthday message to you is, 'Corridor to Tobruk clear and secure. Tobruk is as relieved as I am.'"

On December 1 Auchinleck went himself to the Advanced Headquarters, and remained for ten days with General Ritchie He did not assume the command himself, but closely supervised his subordinate. This did not seem to me the best arrangement for either of them. However, the power of the Eighth Army was now predominant, and on December 10 the Commander-in-Chief could tell me: "Enemy is apparently in full retreat towards the west. El Adem is taken. South African and Indian troops joined hands there with British from Tobruk, and I think it now permissible to claim that the siege of Tobruk has been raised. We are pursuing vigorously in fullest co-operation with the Royal Air Force."

We now know from German records that the enemy losses in the "Crusader" battle, including the garrisons now cut off at Bardia, Sollum, and Halfaya and later made prisoners, were about 13,000 Germans and 20,000 Italians, a total of 33,000, together with 300 tanks. The comparable British and Imperial Army losses in the same period (November 18 to mid-January) were 2,908 officers and men killed, 7,339 wounded, and 7,457 missing; total, 17,704, together with 278 tanks Nine-tenths of this loss occurred in the first month of the offensive.

\* \* \* \* \*

Here then we reached a moment of relief, and indeed of rejoicing, about the Desert war The German records show the gloom that descended on military circles in Rome

2 Dec 41

The situation in North Africa demands the utmost efforts to supply the German forces, to replenish the considerable losses, and to bring up first-rate reinforcements. With the present position at sea, air transport must be the main carrier across the Mediterranean

And again on December 4

The Duce speaks of freeing Bizerta as the only means of overcoming transport difficulties. The occupation of Malta is not possible. He does not believe that Libya can be held much longer without supply through Tunisia. The situation for the Axis in the Mediterranean and North Africa is critical because the supply routes were not kept open in time. Past decisions have been strongly influenced by the campaign against Russia.

'The Fleet was at all times a vital factor in the Desert war. By destroying Axis supplies and sustaining the Eighth Army in its advance, the Royal Navy as well as the Royal Air Force had helped to bring Rommel's armies to the brink of ruin. But now at this crucial moment our naval power in the Eastern Mediternancan was virtually destroyed by a series of disasters.

\* \* \* \* \*

The impact of the U-boats in the Mediterranean was heavy. The Alek Royal was gone A fortnight later the Barham was struck by three torpedoes and capsized in as many minutes with the loss of over 500 men. More was to follow. On the night of December 18 an Italian submarine approached Alexandria and launched three "human torpedoes", each controlled by two men They penetrated the harbour while the boom gate was open for the passage of ships. They fixed time-bombs, which detonated carly on the morning of the 19th under the battleships Queen Elizabeth and Valiant. Both ships were heavily damaged and became a useless burden for months. Thus in the course of a few weeks the whole of our Eastern battle fleet was eliminated as a fighting force. I have yet to tell of the loss in another theatre of the Prince of Wales and Repulse We were successful in concealing the damage to the battle fleet for some time. In Secret Session a good deal later I said to the House of Commons. "In a few weeks we lost, or had put out of action for a long time, seven great ships, or more than a third of our battleships and battlecruisers "

But Force "K" was also stricken. On the very day of the Alexandria disaster news reached Malta of an important enemy convoy heading for Tripoli. The cruisers Neptune, Aurora, and Penelope, with four destroyers, at once went out to catch them Approaching Tripoli our ships ran into a new minefield. The Neptune was hard hit, and both the other cruisers were dainaged,

# "CRUSADER". ASHORE, ALOFT, AND AFLOAT

but were able to steam away. Presently the destroyer Kandahar entered the minefield to rescue the crew of the Neptune, but she too struck a mine and became helpless. The Neptune, drifting in the minefield, struck two more mines and sank. Only one man of her crew of over 700 survived—and he as a prisoner of war after four days on a raft, on which his captain, R. C. O'Connor, and thirteen others perished. The Kandahar remained afloat and eventually drifted clear of the minefield, and the next night the destroyer Jaguar found her, and saved most of her company

The German Staff comment on this incident is instructive "The sinking of the Neptune may be of decisive importance for holding Tripolitania. Without this the British force would probably have destroyed the Italian convoy. There is no doubt that the loss of these supplies at the peak of the crisis would have

had the severest consequences"

Thus was extinguished the light of Force "K". The cruiser Galatea had also been sunk by a German U-boat. All that remained of the British Eastern Mediterranean Fleet was a few destroyers and the three cruisers of Admiral Vian's squadron

Up to the end of November our combined efforts by land, sea, and air had prevailed in the Mediterranean. We had now suffered fearful naval losses. And now on December 5 Hitler, realising at last Rommel's mortal peril, ordered the transfer of a whole Air Corps from Russia to Sicily and North Africa. A new air offensive against Malta was launched under General Kesselring's direction. The attacks on the island reached a new peak, and Malta could do no more than struggle for life. By the end of the year it was the Luftwaffe who held the mastery over the sea routes to Tripoli, and thus made possible the refit of Rommel's armies after their defeat. Seldom has the interaction of sea, air, and land warfare been so strikingly illustrated as in the events of these few months

But now all paled under the stroke of world events.

# CHAPTER XXXI

# JAPAN

Japan and the Nineteenth Century - A Prodigy of Adaptation - Old Japan Veiled - Inscrutable - The Hierarchy of the Japanese Army - And of the Navy - German and British Tuition - The Commercial Classes - The Japanese Constitution of 1889 - The "New Genro" -The Anti-Comintern Pact, 1936 - The Hitler-Stalin Non-Aggression Pact of August 1939 - Japanese Tensions after the Fall of France -Prince Konoye at the Helm - The Tripartite Pact - Winter Reflections on British Resistance - The Ferment Grows - The Emperor and the Imperial Princes - The Effect of Anglo-American Economic Sanctions of July 26, 1941 - British Constant Anxieties - Our Danger of having to Fight Japan Alone - My Minutes of August 25 and 20 -Naval Dispositions - My Report to Australia, New Zealand, and South Africa - Prince Konoye Resigns, October 1941 - General Tojo in Command - Appeal from Chiang Kai-shek - My Telegram to President Roosevelt of November 5 - And his Reply - My Telegram to General Smuts, November 9 - Speech at the Guildhall, November 10 -My Minute to the Foreign Secretary, November 23 - The President's Account of his Negotiations - The Modus Vivendi and the Ten-Point Note - Mr Hull's Decision - Limitations of British Knowledge -"Magics" - My Telegram of November 30, 1941 - The Die is Cast, December 1 - My Minute of December 2, 1941 - Threat to the Kra Isthmus - A Tremendous Episode in American History - United Attiude of the American Leaders - "The Lord Hath Delivered Them nto Our Hands" - Guilt of Japan - One Advantage of Madness.

THE moment had come when in the long, romantic history of Japan the most fearful plunge was to be made. Not since 1592, when the war lord Hideyoshi resolved to embark on mortal conflict with China and used sca-power to invade Korea, had any such fateful step been taken. A strong continuity of

tradition and custom had guided the redoubtable islanders of the Far East across the centuries. Valour, discipline, and national spirit, never divorced from the mystic, had maintained the stamina of this stern and hardy Asiatic race. Europe had first heard of their existence from Marco Polo about A D. 1300 religion of the Japanese nation was a form of Buddhism The later incursion of the Christian missionaries, the devotion of their converts, and their fierce-fought extermination had been an episode little noticed in Europe. The merciless slaughter of the Christian population, numbering over a quarter of a million, took twenty-four years, and was finished around the year 1638. After this deed Japan plunged into strict seclusion, and had remained almost unknown for many generations when the nineteenth century with its own strident challenges broke upon the world. There had been a spell of complete isolation. The arts, culture, and faith of the Japanese had supported a rigid structure of society. Science, machinery, and Western philosophies did not exist for them.

But the steam-engine altered the proportions of the globe, and about a hundred years ago ships arrived from across the ocean spaces and knocked at the well-barred feudal doors of Japan with weapons and ideas. For some time after Commodore Perry's American squadron had paid its unwelcome visit in 1853 a British or American gunboat could enforce the will of a British or American Government upon the external behaviour of the Japanese State With the foreign warships came the revelation of the wonderful tricks which the White Man had found out, and which he was prepared to teach or sell. The gaunt and grave civilisation of the thirteenth century was presented with that of the nineteenth, grinning, prosperous, and well armed.

\* \* \* \* \*

Uncle Sam and Britannia were the god-parents of the new Japan. In less than two generations, with no background but the remote past, the Japanese people advanced from the two-handed sword of the Samurai to the ironclad ship, the rifled cannon, the torpedo, and the Maxim gun, and a similar revolution took place in industry. The transition of Japan under British and American guidance from the Middle Ages to modern times was swift and violent. China was surpassed and smitten. It was with

amazement that the world saw in 1905 the defeat of Czarist Russia, not only on the sea, but by great armies transported to the mainland and winning enormous battles in Manchuria. Japan now took her place among the Great Powers. The Japanese were themselves astonished at the respect with which they were viewed "When we sent you the beautiful products of our ancient arts and culture you despised and laughed at us, but since we have got a first-class Navy and Army with good weapons we are regarded as a highly civilised nation" But all they had added was the trappings and panoply of applied science. All was on the surface. Behind stood Old Japan. I remember how in my youth the British caricaturists were wont to depict Japan as a smart, spruce, uniformed messenger-boy. Once I saw an American cartoon in quite a different style. An aged priestly warrior towered up, august and formidable, with his hand upon his dagger

I do not pretend to have studied Japan, ancient or modern, except as presented to me by the newspapers and a few books and in the official documents I saw in the many departments of State in which I have served. I was on her side in the Russo-Japanese War. I welcomed the Anglo-Japanese Treaty which had preceded it. At the Admiralty during the First World War I rejoiced in the Japanese accession to the Allies and at the extirpation of Germany from the Far East. It was with sorrow that in 1921 I became a party to the ending of the British alliance with Japan, from which we derived both strength and advantage. But as we had to choose between Japanese and American friendship I had no doubts what our course should be.

\* \* \* \* \*

In war and policy one should always try to put oneself in the position of what Bismarck called "the Other Man". The more fully and sympathetically a Minister can do this the better are his chances of being right. The more knowledge he possesses of the opposite point of view, the less puzzling it is to know what to do. But imagination without deep and full knowledge is a snare, and very few among our experts could form any true impression of the Japanese mind. It was indeed inscrutable. The old and new societies, with the chasm of the ages between them, were intermingled and reacted upon each other in ways that no foreigner could understand. Indeed, it is doubtful whether Japan knew her

own mind, or what forces in her nature would predominate in the hour of decision.

The hierarchy of the Japanese Army formed a series of concentric circles united by the Samurai tradition, which inspired all its chiefs and their subordinates to die for the military honour of Japan and to face each man's court of ancestors with confidence But as Japan emerged from long seclusion into the vast world which opened about her and blithely placed lethal weapons of hitherto unimagined power in the hands of her warriois there also formed with cold, slow growth the design to master Asia, and perhaps thereafter lead that continent to the conquest of the world. There was even talk of "the Hundred Years Plan", though this was but the impelling background to continually changing conditions and events

The strongest check on the power and ambitions of the Army. in the period after the outbreak of the Second World War, came from the Navy. In the mneteenth century the Japanese Army was trained by German instructors, and the Navy by British This left lasting differences of mentality, which were emphasised by the conditions of Service life. Army officers hardly ever went abroad—except to make war—and cultivated a more narrowly arrogant, nationalist spirit than naval officers, who frequently visited foreign ports and knew something of the world outside Japan. Whereas also the Army was conscious of its capacity to defeat or hold its own against any military forces existing in the Far East, or which could get there, the Navy was painfully aware of its inferiority in fleet strength to the British and American Navies, especially for action outside Japanese home waters Thus the Navy tended to be more cautious and moderate in outlook than the Army.

The commercial classes had no official recognition or organisation like the Army or Navy, nor had they ever a single policy common to all the various financial, industrial, and trading interests by which they lived. Their influence was exerted partly through the political parties in the Diet, and partly through connections with Court circles. In general, the commercial interests were opposed to serious warlike adventures, but some of them, particularly those with investments in China, supported the Army in expansionist policies. The masses of the Japanese people tended in a crisis to support the Army rather than the liberal

bourgeois leadership, because of the Army's traditional prestige and the popular belief that it was the custodian of the national interest against the aims of private capitalists.

\* \* \* \* \*

By the Japanese Constitution of 1889 the making of treaties. the declaration of war, and conclusion of peace lay within the prerogative of the Emperor and were not subject to control by the Diet. The Emperor also had the supreme command of the armed forces. He was however supposed to exercise his authority on the advice of the Army and Navy Chiefs of Staff and to conduct foreign policy on the advice of the Cabinet The Cabinet under the Japanese Constitution was not responsible to the Diet. though it needed a majority in both Houses to legislate. It was for the Emperor to choose and appoint the Prime Minister. By custom he did so on the advice of a body of "elder statesmen", or Genro Early in the present century there were several Genro. but they died without being replaced, until in 1940 only Prince Saionii was left After he died at the end of that year the nomination was made by a conference of all ex-Premiers, known as the "New Genro", of whom in 1941 there were eight

The Army and Navy Ministers of the Cabinet had to be respectively a general and an admiral on the active list. If a Prime Minister could not find a general or an admiral to hold these offices he could not form or maintain a Cabinet, and professional spirit was so strong that no general or admiral would serve as Army or Navy Minister in a Cabinet whose policy was strongly disapproved of by his Service. Thus the Army and Navy Staffs were able to exert a continual and at times decisive influence on policy by withdrawing, or threatening to withdraw, the Service Ministers from a Cabinet.

\* \* \* \* \*

In 1936 Japan had concluded with Germany the Anti-Comintern Pact, which was originally negotiated by the Japanese War Ministry, with Ribbentrop representing the Nazi Party, behind the backs of both the then Foreign Ministers. This was not yet an alliance, but it provided the basis for one. In the spring of 1939 the Army Minister in the Cabinet headed by Baron Hiranuma tried to conclude a full military alliance with Germany. He failed owing to the opposition of the Navy Minister, Admiral

Yonai. In August 1939 Japan was not only engaged in the war in China which had begun in July 1937, but was also involved in localised hostilities with Russia about the boundary between the newly created state of Manchukuo and Outer Mongolia. Along and behind this smouldering front large armies lay. When, on the eve of the European war, Germany made her Non-Aggression Pact with Russia without consulting or informing Japan, her Anti-Comintern partner, the Japanese felt with reason that they had been ill-used. Their dispute with Russia fell into the background and Japanese resentment against Germany was strong. British support and sympathy for China had estranged us from our former ally, and during the first few months of the European war our relations with Japan were already by no means friendly. There was however in Japan little or no enthusiasm for Germany.

The Hiranuma Cabinet "lost face" on account of the German-Soviet Pact and had to resign. It was succeeded by a Cabinet under General Abe, who, although an Army man (retired), was reckoned a moderate, and he in January 1940 was replaced by Admiral Yonai, who as Hiranuma's Navy Minister had opposed the alliance with Germany. Under the Abe and Yonai administrations Japan's policy was neutrality in Europe combined with the prosecution of Japan's own war in China. But soon supreme convulsions shook the world. With the fall of France and the Low Countries under Hitler's onslaught, and the prospect of the invasion and destruction of Britain in the autumn of 1940, longcherished, glittering schemes sprang from dreamland into reality. Was Japan to gain nothing from the collapse of France, of Holland, and it might well be of Britain, with all their vast possessions in East Asia? Had not her historic moment come? Deep passions stirred in Army and Nationalist political circles. It was demanded that Japan should at once begin to move south and seize French Indo-China, Malaya, and the coveted Dutch East Indies. To force this policy the Army Minister, General Hata, withdrew from the Cabinet, and thus compelled Admiral Yonai to resign his Premiership.

The sober and prudent elements, which Japan has never lacked, were hard pressed to maintain their control. In Yonai's place the Genro nominated Prince Konoye, an aristocrat in the prime of life who had close connections with the Imperial Court, but was also on good terms with the leaders of the Army Prince Konoye

held office from July 1940 to October 1941. He was a highly respected and extremely subtle politician, whose method was to give the Army symbolic satisfactions without ever allowing it to drag the country into a major war. During the summer of 1940 Prince Konoye managed to restrain the Army from making any attack on British or Dutch possessions. On the other hand, he agreed to put pressure on Vichy France for air bases in Northern Indo-China, and in September he concluded the Tripartite Pact with Germany and Italy. This instrument bound Japan to enter the European war on the Axis side if America should enter it on behalf of Britain.

Meanwhile other great events became apparent By the end of November 1940 the result of the Battle of Britain and Hitler's recoil from his invasion boasts were recognised in Japan as facts of the first order. The successful British air attack on the Italian Fleet at Taranto, throwing modern first-class battleships out of action for many months, profoundly impressed the Japanese Navy with the power and possibilities of the new air arm, especially when combined with surprise. Japan became convinced that Britain was by no means finished. She was undoubtedly going on, and indeed growing stronger. There was a widespread feeling that the Tripartite Pact had been a mistake Always there loomed the fear of united action by the British Empire and the United States, with its combination of the two strongest navies affoat and with resources which, once developed, were measureless and incomparable This danger seemed to draw ever nearer. In the spring of 1941 Konove obtained the agreement of his Cabinet to open conversations with the United States for the settlement of outstanding issues between the two countries. It is worthy of note that on this occasion General Tojo, as Army Minister, supported the policy of Konoye against the Foreign Minister, Matsuoka, whose protests that such talks with America would be contrary to the German alliance were thus overruled.

#### \* \* \* \*

Nevertheless the ferment in Japanese minds grew constantly more intense. Beneath the normal modernised processes of their political life thousands of officers and persons occupying responsible, if minor, positions seemed to hear

Ancestral voices prophesying war.

Must they not be worthy of their fathers, who had paid with interest the vengeance they owed to the Mongols of the thirteenth century, whom they had identified with the Russia of the Czars? This prodigious feat of the preceding generation incited their sons to the utmost daring. And here was the whole world in storm and flux New forces and new Titans had appeared There was to be a "New Order" in Europe Was this not the time to have a "New Order" in Asia? Within all this framework lay plans evolved with minute and patient care and brought up to date with every change in the movement of world catastrophe. It was claimed by the Army leaders that they should be the authority to select the moment when the signal should be given. They could certainly assert that if Japan was to strike at all the best opportunity—the fall of France—had already been missed by cautious or craven politicians

The Emperor and the Imperial Princes, around whom gathered the highest aristocracy, were against an aggressive war. They had too much to lose in a violent era. Many of them had travelled and met their equals in foreign courts. They admired the life of Europe and feared its power and that of the United States. They admired the secure majesty of the English monarchy. They leaned continuously upon their skin-deep parliamentarianism, and hoped they might continue to reign or rule in peace. But who should say what the Army would do? No patriarchate, no Emperor, no dynasty could separate themselves from it. The Emperor and the Princes were for peace and prudence, but had

no wish to perish for such a cause.

# \* \* \* \* \*

The drastic application of economic sanctions in July 1941 brought to a head the internal crisis in Japanese politics. Conservative elements were shocked and the moderate leaders scared. The domestic prestige of the Japanese Army as a constitutional factor in shaping Japanese policy was already involved. Hitherto the Navy had exerted its restraining force. But the embargoes which the United States, Britain, and Holland had enforced cut off from Japan all supplies of oil, on which the Navy, and indeed the whole war-power of Japan, depended. The Japanese Navy was at once forced to live on its oil reserves, and at the outbreak of the Pacific war had in fact consumed four out of eighteen

months' supply. It was evident that this was a stranglehold, and that the choice before them was either for Japan to reach an agreement with the United States or go to war. The American requirements involved Japanese withdrawal not only from their new aggression in Indo-China, but from China itself, where they had already been fighting at heavy expense for so long. This was a rightful but a hard demand. In these circumstances the Navy associated itself with the Army in the policy of war if an acceptable diplomatic agreement could not be obtained. The fact that the Navy had now developed its air arm to a high pitch of offensive capacity hardened them in this course of action.

The tense debate within the ruling circles in Japan was prolonged throughout the summer and autumn. The supreme question of facing war with the United States was, we now know, discussed on July 31, on the morrow of the embargoes It was clear to all the Japanese leaders that the time for choice was short Germany might win the war in Europe before Japan had realised any of her ambitions. The conversations between the Japanese and American Governments continued. The Japanese conservative politicians and the Imperial Court hoped to obtain terms which would enable them to control their war party at home. The State Department at Washington believed, as I did, that Japan would probably recoil before the ultimately overwhelming might of the United States.

\* \* \* \* \*

The reader has seen how from the first day of the war our anxieties about Japan weighed relentlessly upon us. Her appetites and opportunity were alike obvious. We wondered why she had not struck at the moment of the French collapse. Afterwards we drew breath more freely, but all the time we were at our utmost stress and strain to defend the British Island from destruction and carry on the war in the Western Desert. I confess that in my mind the whole Japanese menace lay in a sinister twilight, compared with our other needs. My feeling was that if Japan attacked us the United States would come in. If the United States did not come in we had no means of defending the Dutch East Indies, or indeed our own Empire in the East. If, on the other hand, Japanese aggression drew in America I would be content to have it. On this I rested. Our priorities during 1941

stood first, the defence of the Island, including the threat of invasion and the U-boat war, secondly, the struggle in the Middle East and Mediterranean, thirdly, after June, supplies to Soviet Russia, and, last of all, resistance to a Japanese assault. It was however always understood that if Japan invaded Australia or New Zealand the Middle East should be sacrificed to the defence of our own kith and kin. This contingency we all regarded as remote and improbable because of the vast abundance of easier and more attractive conquests offered to Japan by Malaya, Siam, and above all the Dutch East Indies. I am sure that nothing we could have spared at this time, even at the cost of wrecking the Middle Eastern theatre or cutting off supplies to the Soviet, would have changed the march of fate in Malaya. On the other hand, the entry of the United States into the war would overwhelm all evils put together

It must not be supposed that these broad decisions were taken unconsciously or without profound and constant heart-searching by the War Cabinet and their military advisers.

## \* \* \* \* \*

As time passed and I realised the formidable effect of the embargoes which the President had declared on July 26, and in which we and the Dutch had joined, I became increasingly anxious to confront Japan with the greatest possible display of British and American naval forces in the Pacific and Indian Oceans Naval forces were all we could spare. Narrowly did we scan our resources.

On August 25 I sent a minute to the First Sea Lord about the formation of an Eastern Fleet and setting out my views regarding its composition. I felt strongly that it should be possible in the near future to place a deterrent squadron in the Indian Ocean, and that this should consist of the smallest number of the best ships. The First Sea Lord replied that the Admiralty plan was to build up a force in Ceylon by the beginning of 1942, comprising the battleships Nelson and Rodney, the battle-cruiser Renown, and the small aircraft-carrier Hermes. The Ark Royal would follow later, but not until April. Meanwhile the four "R" class battleships would be sent to the Indian Ocean as escorts for troop convoys. In his memorandum the First Sea Lord dwelt on the overriding importance of the Atlantic theatre, where he

considered it essential to retain all three of our latest battleships of the King George V class to guard against a possible break-out

by the Tirpitz.

I did not like these dispositions. The use of the old "R." class for convoy work was good against 8-inch-gun cruisers, but if the enemy were prepared to detach a fast modern battleship for raiding purposes they and their convoys would become an easy prey. In their present state these old ships would be floating coffins It would therefore be necessary to have one or two fast capital ships to deter the Japanese from detaching individual heavy raiders.

I ended my correspondence with the Admiralty as follows.

... I must add that I cannot feel that Japan will face the combination now forming against her of the United States, Great Britain, and Russia, while already preoccupied in China. It is very likely she will negotiate with the United States for at least three months without making any further aggressive move or joining the Axis actively. Nothing would increase her hesitation more than the appearance of the force I mentioned, and above all a KGV. This might indeed be a decisive deterrent \*

It was decided to send as the first instalment of our Far Eastern Fleet both the *Prince of Wales* and the *Repulse*, with four destroyers, and as an essential element the modern armoured aircraft-carrier *Indomitable*. Unhappily the *Indomitable* was temporarily disabled by an accident. It was decided in spite of this to let the two fast capital ships go forward, in the hope of steadying the Japanese political situation, and also to be in relation to the United States Pacific Fleet. Our general naval policy was to build up under the remote cover of the main American Fleet in the Pacific a British Eastern Fleet based on Singapore, which by the spring of 1942 would comprise seven capital ships of varying quality, one first-class aircraft-carrier, ten cruisers, and twenty-four destroyers. Admiral Sir Tom Phillips, till now our trusted Vice-Chief of the Naval Staff, was selected for command, and hoisted his flag at Greenock on October 24.

\* \* \* \* \*

<sup>\*</sup> For those who wish to study this matter in more detail, the correspondence which passed between me and the First Sea Lord at this time is printed in Appendix K. For reasons which could not at this time be foreseen, the *Prince of Wales* and not the *Nelson* or *Rodney* was sent

At the end of October I telegraphed to the Prime Ministers of Australia, New Zealand, and South Africa, and gave them details of our proposed naval dispositions in the Far East

I am still inclined to think that Japan will not run into war with ABCD [American-British-Chinese-Dutch] Powers unless or until Russia is decisively broken. Perhaps even then they will wait for the promised invasion of the British Isles in the spring. Russian resistance is still strong, especially in front of Moscow, and winter is now near

2 Admiralty dispositions had been to build up towards the end of the year Rodney, Nelson, and four "R.s", based mainly on Singapore. This however was spoiled by recent injury to Nelson, which will take

three or four months to repair

3 In the interval, in order further to deter Japan, we are sending forthwith our newest battleship, *Prince of Wales*, to join *Repulse* in Indian Ocean. This is done in spite of protests from the Commander-in-Chief Home Fleet, and is a serious risk for us to run. *Prince of Wales* will be noticed at Capetown quite soon. In addition the four "R." battleships are being moved as they become ready to Eastern waters. Later on *Repulse* will be relieved by *Renown*, which has greater radius.

4 In my view, Prince of Wales will be the best possible deterrent, and every effort will be made to spare her permanently. I must however make it clear that movements of Prince of Wales must be reviewed when she is at Capetown, because of danger of Tirpitz breaking out and other operational possibilities before Duke of York is ready in December

\* \* \* \* \*

In October Prince Konoye laid down his burden. He had asked for a personal meeting with Roosevelt at Honolulu, to which he hoped to bring his military and naval chiefs, and thus bind them to what might be settled. But his proposal had been declined by the President, and Army opinion became increasingly critical of this wise statesman. His place was taken by General Tojo, who became Prime Minister, War Minister, and Home Minister at the same time. General Tojo, who after the war was hanged by the conquerors, according to modern practice, said at his trial that he himself took over the Home Ministry because "he faced a fearful trend foreboding internal confusion if peace was decided upon instead of war". At the Emperor's behest he renewed diplomatic negotiations with the United States, but under a secret understanding with members of his Government that Japan would go to war if the Cabinet representations were

rejected. When in November 1941 Tojo and the Chiefs of the General Staff informed the Emperor that war might be necessary the sovereign expressed the hope that still further efforts might be made to avert this calamity, but told Tojo that "if the state of affairs is as you have described it there will be no alternative but to proceed with the preparations for operations."

\* \* \* \* \*

At the beginning of November I received an agitated warning of further Japanese action in China from General Chiang Karshek. He thought that the Japanese were determined upon an attack from Indo-China to take Kunming and cut the Burma Road. He appealed for British aid by air from Malaya. He concluded.

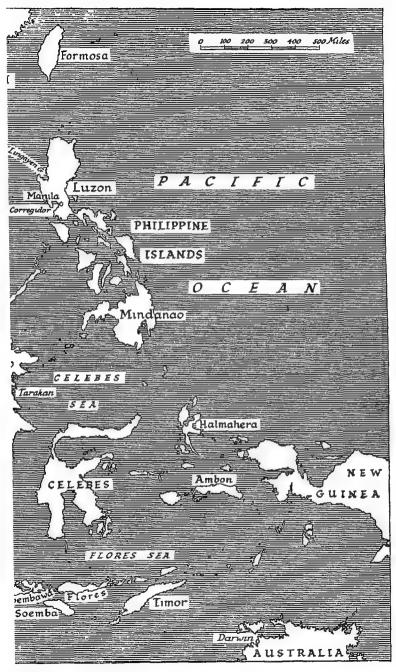
You might feel at a first glance that this would involve you in a war with Japan while you are fighting with such courage in Europe and the Middle East I see things otherwise. I do not believe that Japan feels that she has the strength to attack so long as the resistance of China persists, but once she is rid of this she will attack you as and when it suits her. . China has reached the most critical phase of her war of resistance. Her ability to defend the land approaches to Singapore and Burma now depends primarily on Butish and American willingness to co-operate in the defence of Yunnan If the Japanese can break our front here we shall be cut off from you, and the whole structure of your own air and naval co-ordination with America and the Netherlands East Indies will be gravely threatened in new ways and from a new direction. I should like to express with all the strength at my command the conviction that wisdom and foresight demand that China be given the help that I have indicated Nothing else can ensure alike the defeat of Japan and success of countries now resisting aggression. Feagerly await your teply.

I could do little more than pass this to the President.

Former Naval Person to President Roosevelt

I have received Chiang Kai-shek's appeal addressed to us both for air assistance. You know how we are placed for air strength at Singapore. None the less, I should be prepared to send pilots and even some planes if they could arrive in time.

2 What we need now is a deterrent of the most general and formidable character. The Japanese have as yet taken no final decision, and the Emperor appears to be exercising restraint. When we talked



4INA SEA

about this at Placentia you spoke of gaining time, and this policy has been brilliantly successful so far But our joint embargo is steadily forcing the Japanese to decisions for peace or war

3 It now looks as if they would go into Yunnan, cutting the Burma Road, with disastrous consequences for Chiang Kai-shek. The collapse of his resistance would not only be a world tragedy in itself, but it would leave the Japanese with large forces to attack north or south

4 The Chinese have appealed to us, as I believe they have to you, to warn the Japanese against an attack in Yunnan. I hope you might think fit to remind them that such an attack, aimed at China from a region in which we have never recognised that the Japanese have any right to maintain forces, would be in open disregard of the clearly indicated attitude of the United States Government. We should of course be ready to make a similar communication.

5 No independent action by ourselves will deter Japan, because we are so much tied up elsewhere But of course we will stand with you and do our utmost to back you in whatever course you choose. I think myself that Japan is more likely to drift into war than to plunge

in Please let me know what you think

The President replied on November 9 that while it would be a serious error to under-estimate the gravity of the threat, he doubted whether preparations for a Japanese land campaign against Kunning would warrant an immediate Japanese advance in the immediate future. He would do what he could by Lend-Lease aid to China and the building up of the American Volunteer Air Force there He felt that in Japan's mood any "new formalised verbal warning or remonstrance" might have at least an even chance of producing the opposite effect "The whole problem will have our continuing and earnest attention, study, and effort."

I did my best to comfort the Generalissimo by repeating the

substance of this guarded answer

There was no course for us but to continue with our naval plans in the Far East and to leave the United States to try by diplomatic means to keep Japan as long as possible quiet in the Pacific

\* \* \* \* \*

I wrote to General Smuts, who had raised larger issues

9 Nov 41

I do not think it would be any use for me to make a personal appeal to Roosevelt at this juncture to enter the war. At the Atlantic meeting I told his circle that I would rather have an American declaration of

18

war now and no supplies for six months than double the supplies and no declaration. When this was repeated to him he thought it a hard saying. We must not underrate his constitutional difficulties. He may take action as Chief Executive, but only Congress can declare war. He went so far as to say to me, "I may never declare war, I may make war. If I were to ask Congress to declare war they might argue about it for three months." The Draft Bill without which the American Army would have gone to pieces passed by only oné vote. He has now carried through the Senate by a small majority the virtual repeal of the Neutrality Act. This must mean, if endorsed by the other House, constant fighting in the Atlantic between German and American ships. Public opinion in the United States has advanced lately, but with Congress it is all a matter of counting heads. Naturally, if I saw any way of helping to lift this situation on to a higher plane I would do so. In the meanwhile we must have patience and trust to the tide which is flowing our way and to events.

\* \* \* \* \*

On November 10 at the annual Guildhall banquet, which the Prime Minister by custom attends, I said:

I must admit that, having voted for the Japanese alliance nearly forty years ago, in 1902, and having always done my very best to promote good relations with the Island Empire of Japan, and always having been a sentimental well-wisher to the Japanese and an admirer of their many gifts and qualities, I should view with keen sorrow the opening of a conflict between Japan and the English-speaking world.

The United States' time-honoured interests in the Far East are well known. They are doing their utmost to find ways of preserving peace in the Pacific. We do not know whether their efforts will be successful, but should they fail and the United States become involved in war with Japan it is my duty to say that the British declaration will follow within the hour.

Viewing the vast, sombre scene as dispassionately as possible, it would seem a very hazardous adventure for the Japanese people to plunge quite needlessly into a world struggle in which they may well find themselves opposed in the Pacific by States whose populations comprise nearly three-quarters of the human race. If steel is the basic foundation of modern war, it would be rather dangerous for a Power like Japan, whose steel production is only about seven million tons a year, to provoke quite gratuitously a struggle with the United States, whose steel production is now about ninety millions; and this would take no account of the powerful contribution which the British Empire can make. I hope therefore that the peace of the Pacific will

be preserved in accordance with the known wishes of Japan's wisest statesmen. But every preparation to defend British interests in the Far East, and to defend the common cause now at stake, has been and is being made.

On November 20 Japan forwarded to Washington her "final word". Although it was clear from these proposals that Japan was in effect attempting merely to obtain the fruits of victory without war, the United States Government felt obliged to make one last diplomatic offer. We were informed of the Japanese Note and were asked for our views. On November 23 I wrote in a minute to the Foreign Secretary:

Prime Minister to Foreign Secretary

Our major interest is, no further encroachments and no war, as we

Our major interest is, no further encroachments and no war, as we have already enough of this latter. The United States will not throw over the Chinese cause, and we may safely follow them in this part of the subject. We could not of course agree to an arrangement whereby Japan was free to attack Russia in Siberia. I doubt myself whether this is likely at the present time. I remember that President Roosevelt at the Atlantic Conference himself wrote in, "There must be no further encroachment in the North." I should think this could be agreed [with the Americans]. The formal denunciation of the Axis Pact by Japan is not, in my opinion, necessary. Their stopping out of the war is in itself a great disappointment and injury to the Germans. We ought not to agree to any veto on American or British help to China. But we shall not be asked to by the United States.

Subject to the above, it would be worth while to ease up upon Japan economically sufficiently for them to live from hand to mouth—even if we only got another three months These however are only first impressions

I must say I should feel pleased if I read that an American-Japanese agreement had been made by which we were to be no worse off three months hence in the Far East than we are now

\* \* \* \* \*

On November 25 the President cabled to me an account of the negotiations. The Japanese Government had proposed to evacuate Southern Indo-China, pending a general settlement with China, or a general restoration of peace in the Pacific, when Japan would be prepared to withdraw altogether from Indo-China. In return the United States was to supply Japan with petroleum, to refrain from interfering with Japan's efforts to

restore peace in China, to help Japan to obtain the products of the Netherlands East Indies, and to place commercial relations between Japan and the United States on a normal basis. Both sides were to agree to make no "armed advancement" in North-East Asia and the Southern Pacific

The American Government, in its turn, was proposing to make a counter-offer, accepting in general the terms of the Japanese Note, while outlining specific conditions to be attached to the Japanese withdrawal from Southern Indo-China and making no mention of the position in China. The United States was prepared to accept a limited economic arrangement modifying the original freezing order. For instance, petroleum could be shipped on a monthly basis for civilian needs only. This American proposal would be valid for three months on the understanding that during this period a general settlement covering the whole Pacific area would be discussed

When I read the draft reply, which was, and is still, called the "modus vivendi", I thought it inadequate. This impression was shared by the Dutch and Australian Governments, and above all by Chiang Kai-shek, who sent a frantic protest to Washington I was however deeply sensitive of the limits which we must observe in commenting on United States policy on an issue where decisive action lay with them alone. I understood the dangers attending the thought "The British are trying to drag us into war". I therefore placed the issue where it belonged, namely, in the President's hands, and, mentioning only the Chinese aspect, sent him the following cable.

Former Naval Person to President Roosevelt

Your message about Japan received to-night

Also full accounts

from Lord Halifax of discussions and your counter-project to Japan

Of course it is for you to handle this business, and we certainly do not want an additional war. There is only one point that disquiets us. What about Chiang Kai-shek? Is he not having a very thin diet? Our anxiety is about China. If they collapse our joint dangers would enormously increase. We are sure that the regard of the United States for the Chinese cause will govern your action. We feel that the Japanese are most unsure of themselves.

This message of course arrived in Washington at dawn of the same day it was dated. Mr. Hull says in his memoirs

During the night a cable came in for the President from Mr Churchill commenting on our modus vivendi Obviously influenced by Chiang Kai-shek's cable to him, the Prime Minister wondered whether the Generalissimo was not getting "rather meagre rations" under the modus vivends. China, he said, was the cause of his being anxious, and the Chinese collapse would hugely augment our common danger After talking this over again with the Far Eastern experts of the State Department I came to the conclusion that we should cancel out the modus vivendi Instead we should present to the Japanese solely the ten-point proposal for a general settlement, to which originally the modus vivendi would have been in the nature of an introduction Although the modus vivendi proposals contained only a little "chicken feed" in the shape of cotton, oil, and a few other commodities in very limited quantities as compared with the unlimited quantities the Japanese demanded, it was manifest that there would be widespread opposition from American public opinion to supplying Japan even limited quantities of oil The Chinese were violently opposed, the other interested Governments either unfavourable or luke-warm The slight prospect of Japan's agreeing to the modus vivendi therefore did not warrant assuming the risks involved in proceeding with it, especially the risk of collapse of Chinese morale and resistance, and even of disintegration

## \* \* \* \* \*

We had not heard up to this moment of the "Ten-Point Note", which not only met our wishes and those of the associated Governments, but indeed went beyond anything for which we had ventured to ask. On this same 26th Mr Hull received the Japanese envoys at the State Department. He did not even mention to them the modus vivendi about which the President had telegraphed to me on the 23rd. On the contrary, he handed them the "Ten-Point Note". Two points of this were as follows

The Government of Japan will withdraw all military, naval, air, and

police forces from China and Indo-China

The Government of the United States and the Government of Japan will not support—militarily, politically, economically—any Government or régime in China other than the National Government of the Republic of China, with capital temporarily at Chungking.

The envoys were "dumbfounded", and retired in the greatest distress. This may well have been sincere. They had been chosen largely on account of their reputation as peace-seeking and

moderate men who would lull the United States into a sense of security till all was decided and all was ready. They knew little of the whole mind of their Government. They did not dream that Mr. Hull was far better informed on this than they were. From the end of 1940 the Americans had pierced the vital Japanese ciphers, and were decoding large numbers of their military and diplomatic telegrams. In the secret American circles these were referred to as "Magics". The "Magics" were repeated to us, but there was an inevitable delay—sometimes of two or three days—before we got them. We did not know therefore at any given moment all that the President or Mr. Hull knew. I make no complaint of this.

That same afternoon the President sent the following message

to the High Commissioner of the Philippines:

Preparations are becoming apparent . . for an early aggressive movement of some character, although as yet there are no clear indications as to its strength or whether it will be directed against the Burma Road, Thailand, Malay peninsula, Netherlands East Indies, or the Philippines Advance against Thailand seems the most probable I consider it possible that this next Japanese aggression might cause an outbreak of hostilities between the US and Japan . . .

\* \* \* \* \*

When on November 29 our Ambassador, Lord Halifax, visited the State Department Mr. Hull said to him that the danger from Japan "hung just over our heads" "The diplomatic part in our relations with Japan is now virtually over. The matter will now go to the officials of the Army and Navy, with whom I have talked . . . Japan may move suddenly and with every possible element of surprise. . . My theory is that the Japanese recognise that their course of unlimited conquest, now renewed all along the line, probably is a desperate gamble and requires the utmost boldness and risk" He added "When Churchill received Chiang's loud protest about the modus vivendi it would have been better if he had sent Chiang a strong cable to brace up and fight with the same zeal as the Japanese and Americans were displaying Instead he passed the protest on to us without objection on his part . "

I did not know that the die had already been cast by Japan or

how far the President's resolves had gone.

Former Naval Person to President Roosevelt

30 Nov 41

It seems to me that one important method remains unused in averting war between Japan and our two countries, namely, a plain declaration, secret or public as may be thought best, that any further act of aggression by Japan will lead immediately to the gravest consequences I realise your constitutional difficulties, but it would be tragic if Japan drifted into war by encroachment without having before her fairly and squarely the dire character of a further aggressive step I beg you to consider whether, at the moment which you judge right, which may be very near, you should not say that "any further Japanese aggression would compel you to place the gravest issues before Congiess", or words to that effect We would of course make a similar declaration or share in a joint declaration, and in any case arrangements are being made to synchronise our action with yours Forgive me, my dear friend, for presuming to press such a course upon you, but I am convinced that it might make all the difference and prevent a melancholy extension of the war

Both he and Tojo were already far ahead of this. So were events

\* \* \* \* \*

On the 30th, shortly after noon (American time), Mr Hull visited the President, who had on his desk my cable of the same date, sent overnight.\* They did not think my proposal of a joint warning to Japan would be any good. Nor can we be surprised at this when they had already before them an intercept from Tokyo to Berlin, also dated November 30, telling the Japanese Ambassador in Berlin to address Hitler and Ribbentrop as follows

Say very secretly to them that there is extreme danger that war may suddenly break out between the Anglo-Saxon nations and Japan through some clash of arms, and add that the time of the breaking out of this war may come quicker than anyone dreams

I received the decode of the telegrams on December 2. It required no special action from Britain. We must just wait. The Japanese carrier fleet had in fact sailed on the 25th with the whole naval air force which was to attack Pearl Harbour. Of course it was still subject to restraining orders from Tokyo.

\* \* \* \* \*

<sup>\*</sup> The reader need not be puzzled by the datings of the telegrams, so long as they are in their proper sequence. I worked up till two or three in the morning (British time), and any mess ge I sent took two or three hours to code and decode. Nevertheless any message which I drafted before I went to bed would reach the President almost instantaneously for practical purposes—1 e, when he woke up, or was, if need be, awakened.

At an Imperial Conference at Tokyo on December 1 the decision was taken to go to war with the United States. According to Tojo's testimony at his trial, the Emperor did not utter a word. For the following week a deadly hush settled in the Pacific The possibilities of a diplomatic settlement had been exhausted. No act of military aggression had yet occurred. My deepest fear was that the Japanese would attack us or the Dutch, and that constitutional difficulties would prevent the United States from declaring war. After a long Cabinet on December 2 I sent a minute to the Foreign Secretary embodying our conclusions.

Prime Minister to Foreign Secretary

2 Dec 41

Our settled policy is not to take forward action in advance of the United States Except in the case of a Japanese attempt to seize the Kra Isthmus there will be time for the United States to be squarely confronted with a new act of Japanese aggression. If they move, we will move immediately in support. If they do not move, we must

consider our position afresh.

A Japanese attack on the Dutch possessions may be made at any time. This would be a direct affront to the United States, following upon their negotiations with Japan. We should tell the Dutch that we should do nothing to prevent the full impact of this Japanese aggression presenting itself to the United States as a direct issue between them and Japan. If the United States declares war on Japan, we follow within the hour. If, after a reasonable interval, the United States is found to be incapable of taking any decisive action, even with our immediate support, we will nevertheless, although alone, make common cause with the Dutch.

Any attack on British possessions carries with it war with Great Britain as a matter of course

\* \* \* \* \*

British Intelligence and air reconnaissance, which were vigilant, soon perceived movements and activity showing that "Japan is about to attack Siam, and that this attack will include a seaborne expedition to seize strategic points in the Kra Isthmus". We reported this to Washington A series of lengthy telegrams passed between us and our Commander-in-Chief in the Far East, and also with the Australian and American Governments, about whether we should take forestalling action to protect the Kra Isthmus. It was rightly decided, both on military and political grounds, that we should not complicate the course of

events by striking first in a secondary theatre. On December 6 it was known both in London and Washington that a Japanese fleet of about thirty-five transports, eight cruisers, and twenty destroyers was moving from Indo-China across the Gulf of Siam. Other Japanese fleets were also at sea on other tasks.

\* \* \* \* \*

A prodigious Congressional Inquiry published its findings in 1946 in which every detail was exposed of the events leading up to the war between the United States and Japan and of the failure to send positive "Alert" orders through the military departments to their fleets and garrisons in exposed situations. Every detail, including the decoding of secret Japanese telegrams and their actual texts, has been displayed to the world in forty volumes. The strength of the United States was sufficient to enable them to sustain this hard ordeal required by the spirit of the American Constitution.

I do not intend in these pages to attempt to pronounce judgment upon this tremendous episode in American history We know that all the great Americans round the President and in his confidence felt as acutely as I did the awful danger that Japan would attack British or Dutch possessions in the Far East and would carefully avoid the United States, and that in consequence Congress would not sanction an American declaration of war The American leaders understood that this might mean vast Japanese conquests, which, if combined with a German victory over Russia and thereafter an invasion of Great Britain, would leave America alone to face an overwhelming combination of triumphant aggressors. Not only would the great moral causes which were at stake be cast away, but the very life of the United States, and their people, as yet but half awakened to their perils, might be broken. The President and his trusted friends had long realised the grave risks of United States neutrality in the war against Hitler and all that he stood for, and had writhed under the restraints of a Congress whose House of Representatives had a few months before passed by only a single vote the necessary renewal of compulsory military service, without which their Army would have been almost disbanded in the midst of the world convulsion Roosevelt, Hull, Stimson, Knox, General Marshall, Admiral Stark, and, as a link between them all, Harry Hopkins,

had but one mind. Future generations of Americans and free men in every land will thank God for their vision.

A Japanese attack upon the United States was a vast simplification of their problems and their duty. How can we wonder that they regarded the actual form of the attack, or even its scale, as incomparably less important than the fact that the whole American nation would be united for its own safety in a righteous cause as never before? To them, as to me, it seemed that for Japan to attack and make war upon the United States would be an act of suicide. Moreover, they knew, earlier than we in Britain could know, the full and immediate purpose of their enemy. We remember how Cromwell exclaimed when he watched the Scottish army descending from the heights over Dunbar, "The Lord hath delivered them into our hands"

Nor must we allow the account in detail of diplomatic interchanges to portray Japan as an injured innocent seeking only a reasonable measure of expansion or booty from the European war, and now confronted by the United States with propositions which her people, fanatically aroused and fully prepared, could not be expected to accept. For long years Japan had been torturing China by her wicked invasions and subjugations. Now by her seizure of Indo-China she had in fact, as well as formally by the Tripartite Pact, thrown in her lot with the Axis Powers. Let her do what she dared and take the consequences.

It had seemed impossible that Japan would court destruction in war with Britain and the United States, and probably Russia in the end. A declaration of war by Japan could not be reconciled with reason. I felt sure she would be ruined for a generation by such a plunge, and this proved true. But Governments and peoples do not always take rational decisions. Sometimes they take mad decisions, or one set of people get control who compel all others to obey and aid them in folly. I have not hesitated to record repeatedly my disbelief that Japan would go mad. However sincerely we try to put ourselves in another person's position, we cannot allow for processes of the human mind and imagination to which reason offers no key.

Madness is however an affliction which in war carries with it the advantage of Surprise.

## CHAPTER XXXII

# PEARL HARBOUR!

Sunday, December 7, at Chequers - My American Guests - Nine o'Clock News on the Wireless - Japan Attacks the United States -I Call the President - My Message to Mr. de Valera - I Rejoice - The Certainty of Victory - I Decide to Go to Washington - Letter to the King - The President's Anxiety about the Return Voyage - British Declaration of War on Japan - My Letter to the Japanese Ambassador - Parliament Approves the Declaration of War Unanimously - Mr. Duff Cooper's Appointment - Magnitude of the American Disaster -The Stroke in the Philippines - Hitler's Astonishment - We Discuss the Employment of the "Prince of Wales" and the "Repulse" -Admiral Phillips's Adventurous Plan - Air Support Lacking - The Admiral Withdraws - Tries Again - The Deadly Japanese Attack -"All Sunk Beneath the Wave" - The Morning Brings Fearful News - My Preparations for Departure - My Statement to the House, December 12 - Mr. Eden Starts on His Mission to Moscow - I Tell Him Some News.

Averell Harriman were alone with me at the table at Chequers I turned on my small wireless set shortly after the nine o'clock news had started. There were a number of items about the fighting on the Russian front and on the British front in Libya, at the end of which some few sentences were spoken regarding an attack by the Japanese on American shipping at Hawaii, and also Japanese attacks on British vessels in the Dutch East Indies. There followed a statement that after the news Mr. Somebody would make a commentary, and that the Brains Trust programme would then begin, or something like this. I did not personally sustain any direct impression, but Averell said there was something about the Japanese attacking the Americans, and, in spite

of being tired and resting, we all sat up. By now the butler, Sawyers, who had heard what had passed, came into the room, saying, "It's quite true. We heard it ourselves outside. The Japanese have attacked the Americans." There was a silence. At the Mansion House luncheon on November 11 I had said that if Japan attacked the United States a British declaration of war would follow "within the hour". I got up from the table and walked through the hall to the office, which was always at work. I asked for a call to the President. The Ambassador followed me out, and, imagining I was about to take some irrevocable step, said, "Don't you think you'd better get confirmation first?"

In two or three minutes Mr. Roosevelt came through. "Mr. President, what's this about Japan?" "It's quite true," he replied "They have attacked us at Pearl Harbour. We are all in the same boat now" I put Winant on to the line and some interchanges took place, the Ambassador at first saying, "Good," "Good"and then, apparently graver, "Ah!" I got on again and said, "This certainly simplifies things. God be with you," or words to that effect. We then went back into the hall and tried to adjust our thoughts to the supreme world event which had occurred, which was of so startling a nature as to make even those who were near the centre gasp. My two American friends took the shock with admirable fortitude. We had no idea that any serious losses had been inflicted on the United States Navy. They did not wail or lament that their country was at war. They wasted no words in reproach or sorrow. In fact, one might almost have thought they had been delivered from a long pain

\* \* \* \*

Parliament would not have met till Tuesday, and the Members were scattered about the Island, with all the existing difficulties of communication. I set the office to work to ring up the Speaker, the Whips, and others concerned, to call both Houses together next day. I rang the Foreign Office to prepare to implement without a moment's delay a declaration of war upon Japan, about which there were some formalities, in time for the meeting of the House, and to make sure all members of the War Cabinet were called up and informed, and also the Chiefs of Staff and the Service Ministers, who, I rightly assumed, had had the news.

This done, my thought turned at once to what has always lain near my heart. To Mr. de Valera I sent the following message

8 Dec 41

Now is your chance Now or never! A nation once again! I will meet you wherever you wish

I thought also of struggling China, and telegraphed to Chiang Kai-shek

8 Dec 41

The British Empire and United States have been attacked by Japan. Always we have been friends now we face a common enemy

We also sent the following

Prime Minister to Mr Harry Hopkins 8 Dec 41 Thinking of you much at this historic moment—Winston, Averell.

No American will think it wrong of me if I proclaim that to have the United States at our side was to me the greatest joy. I could not foretell the course of events I do not pretend to have measured accurately the martial might of Japan, but now at this very moment I knew the United States was in the war, up to the neck and in to the death So we had won after all! Dunkirk, after the fall of France, after the horrible episode of Oran, after the threat of invasion, when, apart from the Air and the Navy, we were an almost unarmed people; after the deadly struggle of the U-boat war-the first Battle of the Atlantic, gained by a hand's-breadth; after seventeen months of lonely fighting and nineteen months of my responsibility in dire stress. We had won the war. England would live, Britain would live, the Commonwealth of Nations and the Empire would live. How long the war would last or in what fashion it would end no man could tell, nor did I at this moment care. Once again in our long Island history we should emerge, however mauled or mutilated, safe and victorious. We should not be wiped out. Our history would not come to an end. We might not even have to die as individuals. Hitler's fate was sealed. Mussolini's fate was sealed. As for the Japanese, they would be ground to powder. All the rest was merely the proper application of overwhelming force. The British Empire, the Soviet Union, and now the United

States, bound together with every scrap of their life and strength, were, according to my lights, twice or even thrice the force of their antagonists. No doubt it would take a long time. I expected terrible forfeits in the East; but all this would be merely a passing phase. United we could subdue everybody else in the world Many disasters, immeasurable cost and tribulation lay ahead, but there was no more doubt about the end.

Silly people, and there were many, not only in enemy countries. might discount the force of the United States. Some said they were soft, others that they would never be united. They would fool around at a distance. They would never come to grips. They would never stand blood-letting. Their democracy and system of recurrent elections would paralyse their war effort. would be just a vague blur on the horizon to friend or foe. Now we should see the weakness of this numerous but remote, wealthy. and talkative people. But I had studied the American Civil War, fought out to the last desperate inch. American blood flowed in my veins. I thought of a remark which Edward Giev had made to me more than thirty years before—that the United States is like "a gigantic boiler. Once the fire is lighted under it there is no limit to the power it can generate". Being saturated and satiated with emotion and sensation, I went to bed and slept the sleep of the saved and thankful.

\* \* \* \* \*

As soon as I woke I decided to go over at once to see Roosevelt. I put the matter to the Cabinet when we met at noon. On obtaining their approval I wrote to the King.

December 8, 1941

Sir.

I have formed the conviction that it is my duty to visit Washington without delay, provided such a course is agreeable to President Roosevelt, as I have little doubt it will be The whole plan of the Anglo-American defence and attack has to be concerted in the light of reality. We have also to be careful that our share of munitions and other aid which we are receiving from the United States does not suffer more than is, I fear, inevitable The fact that Mr Eden will be in Moscow while I am at Washington will make the settlement of large-scale problems between the three great Allies easier.

These reasons were accepted by my colleagues in the Cabinet unanimously to-day, and I therefore ask Your Majesty's permission

to leave the country. I should propose to start quite soon, in a warship, and to be absent altogether for about three weeks. I shall take with me a staff on the same scale as I took to the Atlantic meeting

During my absence the Lord Privy Seal will act for me, assisted by the Lord President of the Council, the Chancellor of the Exchequer, and other members of the War Cabinet. I would propose that during this period the three Service Ministers should temporarily sit with the War Cabinet. While I am away the Foreign Office will report to the Lord President, and the Defence Committee to the Lord Privy Seal I shall of course be constantly in touch by wireless with all that goes on, and can give decisions whenever necessary. I should propose to take with me the First Sea Lord and the Chief of the Air Staff, as the concert of all our arrangements with the Americans on a high level is all-important.

I hope I may receive Your Majesty's approval of this course. I am,

of course, keeping my intention secret.

With my humble duty,

I remain Your Majesty's most devoted, faithful servant and subject,

WINSTON S CHURCHILL

PS—I am expecting that Germany and Italy will both declare war on the United States, as they have bound themselves by treaty to do so I shall defer proposing my visit to the President until this situation is more clear

The King gave his Assent.

\* \* \* \* \*

Former Naval Person to President Roosevelt

9 Dec 41

I am grateful for your telegram of December 8. Now that we are, as you say, "in the same boat", would it not be wise for us to have another conference? We could review the whole war plan in the light of reality and new facts, as well as the problems of production and distribution. I feel that all these matters, some of which are causing me concern, can best be settled on the highest executive level. It would also be a very great pleasure to me to meet you again, and the sooner the better.

2 I could, if desired, start from here in a day or two, and come by warship to Baltimore or Annapolis. Voyage would take about eight days, and I would arrange to stay a week, so that everything important could be settled between us. I would bring Pound, Portal, Dill, and

Beaverbrook, with necessary staffs

3. Please let me know at earliest what you feel about this.

The President feared that the return journey would be dangerous. I reassured him.

Former Naval Person to President Roosevelt

10 Dec 41

We do not think there is any serious danger about the return journey. There is however great danger in our not having a full discussion on the highest level about the extreme gravity of the naval position, as well as upon all the production and allocation issues involved I am quite ready to meet you at Bermuda, or to fly from Bermuda to Washington. I feel it would be disastious to wait for another month before we settled common action in face of new adverse situation, particularly in Pacific. I had hoped to start tomorrow night, but will postpone my sailing till I have received rendezvous from you. I never felt so sure about the final victory, but only concerted action will achieve it. Kindest regards.

The next day I heard again from the President. He said that he was delighted that I was coming to stay at the White House He felt that he could not leave the country himself. Mobilisation was taking place, and the naval position in the Pacific was uncertain. He felt sure that we could work out all the difficulties connected with production and supply. He emphasised again the personal risk of my journey, which he thought should be carefully considered.

\* \* \* \* \*

The War Cabinet authorised the immediate declaration of war upon Japan, for which all formal arrangements had been made. As Eden had already started on his journey to Moscow and I was in charge of the Foreign Office I sent the following letter to the Japanese Ambassador

Foreign Office, December 8th

Sir,

On the evening of December 7th His Majesty's Government in the United Kingdom learned that Japanese forces without previous warning either in the form of a declaration of war or of an ultimatum with a conditional declaration of war had attempted a landing on the coast of Malaya and bombed Singapore and Hong Kong

In view of these wanton acts of unprovoked aggression committed in flagrant violation of International Law and particularly of Article 1 of the Third Hague Convention relative to the opening of hostilities, to which both Japan and the United Kingdom are parties, His Majesty's Ambassador at

Tokyo has been instructed to inform the Imperial Japanese Government in the name of His Majesty's Government in the United Kingdom that a state of war exists between our two countries

I have the honour to be, with high consideration,

Sir,

Your obedient servant,

WINSTON S CHURCHILL

Some people did not like this ceremonial style But after all when you have to kill a man it costs nothing to be polite

\* \* \* \* \*

Parliament met at 3 p m., and in spite of the shortness of notice the House was full. Under the British Constitution the Crown declares war on the advice of Ministers, and Parliament is confronted with the fact. We were therefore able to be better than our word to the United States, and actually declared war upon Japan before Congress could act. The Royal Netherlands Government had also made their declaration. In my speech I said.

It is of the highest importance that there should be no underrating of the gravity of the new dangers we have to meet, either here or in the United States. The enemy has attacked with an audacity which may spring from recklessness, but which may also spring from a conviction of strength. The ordeal to which the English-speaking world and our heroic Russian Allies are being exposed will certainly be hard, especially at the outset, and will probably be long, yet when we look around us over the sombre panorama of the world we have no reason to doubt the justice of our cause or that our strength and will-power will be sufficient to sustain it.

We have at least four-fifths of the population of the globe upon our side. We are responsible for their safety and for their future. In the past we have had a light which flickered, in the present we have a light which flames, and in the future there will be a light which shines over all the land and sea.

Both Houses voted unanimously in favour of the decision.

. . . . .

I thought it necessary at this juncture that Mr Duff Cooper, who had returned to Singapore, should be at once appointed Resident Minister for Far Eastern Affairs.

Prime Minister to Mr. Duff Cooper

5 Dec 41

You are appointed Resident Cabinet Minister at Singapore for Far Eastern Affairs. You will serve under, and report directly to, the War Cabinet, through its Secretary. You are authorised to form a War Council, reporting first its composition and the geographical sphere it will cover. This will presumably coincide with the geographical sphere of the military Commander-in-Chief. Your principal task will be to assist the successful conduct of operations in the Far East (a) by relieving the Commanders-in-Chief as far as possible of those extraneous responsibilities with which they have hitherto been burdened, and (b) by giving them broad political guidance

2 Your functions will also include the settlement of emergency matters on the spot, where time does not permit of reference home You will develop a local clearing-house for prompt settlement of minor routine matters which would otherwise have to be referred to separate departments here. On all matters on which you require special guidance you will, provided there is time, refer the matter home. You will in any case report constantly to His Majesty's Government.

3. When Captain Oliver Lyttelton was appointed Minister of State at Cairo it was laid down that this did not affect the existing responsibilities of His Majesty's Representatives in the Middle East, or their official relationships with their respective departments at home. The same will apply in the Far East. The successful establishment of this machinery depends largely on your handling of it in these early critical days.

4. With your knowledge of the various public departments and of Cabinet procedure, it should be possible for you to exercise a powerful, immediately concerting influence upon Far Eastern affairs. Telegraph to me at once your concrete proposals and the form in which you would like your appointment and its scope to be defined and published. All good luck and kindest regards. We must fight this thing out everywhere to the end

Duff Cooper addressed himself to these new duties with vigour and clarity of thought, but the arrangements we made at Washington with the United States for a Supreme Commander in the Far East to my regret made his office redundant, and a little more than a fortnight later I instructed him to return home He was unlucky not to be allowed to go down fighting.

\* \* \* \* \*

We were not told for some time any details of what had happened at Pearl Harbour, but the story has now been exhaustively recorded.

Until early in 1941 the Japanese naval plan for war against the United States was for their main fleet to give battle in the waters near the Philippines when the Americans, as might be expected, fought their way across the Pacific to relieve their garrison in this outpost. The idea of a surprise attack on Pearl Harbour originated in the brain of Admiral Yamamoto, the Japanese Commander-in-Chief. Preparation for this treacherous blow before any declaration of war went forward with the utmost secrecy, and by November 22 the striking force of six carriers. with a supporting force of battleships and cruisers, was concentrated in an unfrequented anchorage in the Kurile Islands. north of Japan proper. Already the date of the attack had been fixed for Sunday, December 7, and on November 26 (East longitude date) the force sailed under the command of Admiral Nagumo. Keeping far to the northward of Hawaii, amidst the fog and gales of these northern latitudes, Nagumo approached his goal undetected. Before sunrise on the fateful day the attack was launched from a position about 275 miles to the north of Pearl Harbour. Three hundred and sixty aircraft took part, comprising bombers of all types, escorted by fighters. 7.55 a.m. the first bomb fell. Ninety-four ships of the United States Navy were present in the harbour. Among them the eight battleships of the Pacific Fleet were the prime targets. carriers, with strong cruiser forces, were fortunately absent on missions elsewhere.

The story of this attack has often been vividly related. It is sufficient here to state the salient facts and to note the ruthless efficiency of the Japanese airmen By 8.25 a.m. the first waves of torpedo and dive-bombers had struck their blow. By 10 a.m. the battle was over and the enemy withdrew. Behind them lay a shattered fleet hidden in a pall of fire and smoke, and the vengeance of the United States. The battleship Arizona had blown up, the Oklahoma had capsized, the West Virginia and California had sunk at their moorings, and every other battleship, except the Pennsylvania, which was in dry dock, had been heavily damaged. Over two thousand Americans had lost their lives, and nearly two thousand others were wounded. The mastery of the Pacific had passed into Japanese hands, and the strategic balance of the world was for the time being fundamentally changed.

Our American Allies had yet another set of misfortunes.

In the Philippines, where General MacArthur commanded a warning indicating a grave turn in diplomatic relations had been received on November 20 Admiral Hart, commanding the modest United States Asiatic Fleet, had already been in consultation with the adjacent British and Dutch naval authorities, and in accordance with his war plan, had begun to disperse his forces to the southward, where he intended to assemble a striking force in Dutch waters in conjunction with his prospective allies He had at his disposal only one heavy and two light cruisers. besides a dozen old destroyers and various auxiliary vessels. His strength lay almost entirely in his submarines, of which he had twenty-eight At 3 am. on December 8 Admiral Hart intercepted a message giving the staggering news of the attack on Pearl Harbour. He at once warned all concerned that hostilities had begun, without waiting for confirmation from Washington At dawn the Japanese dive-bombers struck, and throughout the ensuing days the air attacks continued on an ever-increasing scale On the 10th the naval base at Cavite was completely destroyed by fire, and on the same day the Japanese made their first landing in the north of Luzon Disasters mounted swiftly Most of the American air forces were destroyed in battle or on the ground, and by December 20 the remnants had been withdrawn to Port Darwin, in Australia Admiral Hart's ships had begun their southward dispersal some days before, and only the submarines remained to dispute the sea with the enemy. On December 21 the main Japanese invasion force landed in Lingayen Gulf, threatening Manila itself, and thereafter the march of events was not unlike that which was already in progress in Malaya, but the defence was more prolonged

Thus the long-nurtured plans of Japan exploded in a blaze of

triumph. But this was not the end

\* \* \* \* \*

The dispatch of the Japanese Ambassador to Berlin tells of his visit to Ribbentrop.

The day after Pearl Harbour at one o'clock I called on Foreign Minister Ribbentrop and told him our wish was to have Germany and Italy issue formal declarations of war on America at once Ribben-

trop replied that Hitler was then in the midst of a conference at General Headquarters [in East Prussia], discussing how the formalities of declaring war could be carried out so as to make a good impression on the German people, and that he would transmit your wish to him at once and do whatever he was able to have it carried out properly.

Both Hitler and his staff were astonished. Toll tells at his trial how Hitler "came in the middle of the night to my chart room in order to transmit this news to Field-Marshal Keitel and myself. He was completely surprised". On the morning of December 8 however he gave the German Navy orders to attack American ships wherever found This was three days before the official declaration of war by Germany on the United States.

I convened a meeting, mostly Admiralty, in the Cabinet War Room at ten o'clock on the night of the 9th to review the naval position. We were about a dozen. We tried to measure the consequences of this fundamental change in our war position against We had lost the command of every ocean except the Atlantic. Australia and New Zealand and all the vital islands in their sphere were open to attack. We had only one key weapon in our hands. The Prince of Wales and the Repulse had arrived at Singapore They had been sent to these waters to exercise that kind of vague menace which capital ships of the highest quality whose whereabouts is unknown can impose upon all hostile naval calculations How should we use them now? Obviously they must go to sea and vanish among the innumerable islands. There was general agreement on that

I thought myself they should go across the Pacific to join what was left of the American Fleet. It would be a proud gesture at this moment, and would knit the English-speaking world together We had already cordially agreed to the American Navy Department withdrawing their capital ships from the Atlantic. Thus in a few months there might be a fleet in being on the west coast of America capable of fighting a decisive sea battle if need be. The existence of such a fleet and of such a fact would be the best possible shield to our brothers in Australasia. We were all much attracted by this line of thought. But as the hour was late we decided to sleep on it, and settle the next morning what to

do with the Prince of Wales and the Repulse.

Within a couple of hours they were at the bottom of the sea.

\* \* \* \* \*

The tragedy of these ships, in which Chance played so fatal a

part, must now be told

The Prince of Wales and Repulse had reached Singapore on December 2. On December 5 Admiral Tom Phillips arrived in Manila by air to discuss possible joint action with General MacArthur and Admiral Hart. Admiral Hart agreed that four American destroyers should join Phillips's flag. Both Admirals felt that neither Singapore nor Manila could at the moment be a suitable base for an Allied Fleet. Next day news came that a large Japanese scaborne expedition had entered the Gulf of Siam. It was clear that decisive events were at hand. Phillips got back to Singapore on the morning of the 7th. Soon after midnight on the 8th it was reported that a landing was actually in progress at Kota Bharu, and later that other landings were being made near Singora and also at Patani (see map). A major invasion of Malaya had begun \*

Admiral Phillips judged it his duty to strike at the enemy while they were disembarking. At a meeting of his senior officers all agreed that it was impossible for the Navy to stand out of the battle at this critical stage. He reported his intentions to the Admiralty. He requested the Singapore Air Command to move fighters to our northern airfields, and requested the utmost help from our meagre. Air Force—namely, reconnaissance 100 miles north of his squadron on December 9, reconnaissance off Singora from daylight on December 10, and fighter protection over Singora on the morning of December 10. This last all-important aid could not be given, first because of the expected attack on Singapore, and secondly because the northern airfields were already untenable. The Admiral had sailed at 5.35 p.m. on the 8th with the Prince of Wales and Repulse and the destroyers Electra, Express, Vampire, and Tenedos when this signal reached him. It

<sup>\*</sup> The Japanese attacks in Malaya and the Far Fast occurred within a few hours of that on Pearl Harbour This is not readily apparent owing to the different times kept. The following table shows the sequence of events, related to Greenwich time.

| First landing in Malaya         |    |
|---------------------------------|----|
| Attack on Pearl Harbour         |    |
| First air raid in the Philippin | CS |
| First air raid in Hong Kong     |    |

Lotal Time Greenwich Time
12 25 4 m, Dec 8 4 55 p.m., Dec 7
8 00 a m, Dec 7 6 30 p m, Dec 7
Dawn, Dec 8 9 00 p m, Dec 7
8 00 a m, Dec 8 11 30 p.m., Dec 7

added the warning that large Japanese bomber forces were based in Southern Indo-China. As the frequent rain squalls and low cloud were unfavourable for air action, Phillips resolved to press on. On the evening of the 9th the weather cleared, and he soon had reason to believe that he was being shadowed by enemy aircraft. The hope of surprise was gone, and heavy air attacks must be expected the next morning near Singora. At this Admiral Phillips reluctantly abandoned his daring enterprise, and after dark turned homewards He had certainly done his best, and all might have yet been well. About midnight however by a hard mischance another enemy landing was reported at Kuantan, more than 150 miles south of Kota Bharu. Admiral Phillips thought it unlikely that his force, last sighted by the enemy on a northerly course, would be expected so far south by daylight on the 10th. After all he might achieve surprise. He accepted the risk and turned his ships towards Kuantan.

Japanese records make no claim to have sighted the British squadron from the air on the 9th, but a submarine reported them steering north at 2 p.m. The Japanese 22nd Air Flotilla, based near Saigon, was loading bombs for an attack on Singapore. They immediately exchanged bombs for torpedoes and decided to make a night attack on the British ships. They found nothing, and returned to their base by midnight. Before dawn on the 10th another Japanese submarine reported that the British were steering south, and at 6 a.m. a searching force of nine Japanese aircraft set forth, followed an hour later by a powerful striking force of eighty-four bombers and torpedo bombers, organised in waves

of about nine aircraft each.

The report of the landing at Kuantan proved false, but as no amending message had been sent from Singapore the Admiral remained expectant, until soon after daylight the destroyer Express reached the harbour and found no sign of the enemy. Before resuming their southerly course the squadron spent some time in searching for a tug and other small craft which had been sighted earlier. But now the crisis came and fortune was hard. The Japanese air fleet had ranged as far south as Singapore without sighting anything. It was returning home on a northerly course, which by chance led them straight to their quarry.

At 10.20 a.m. a shadowing aircraft was sighted by the Prince of

Wales, and soon after II a m. the first wave of bombers appeared The enemy attacked in successive waves. In the first the Repulse received one hit from a bomb which caused a fire, but this was soon under control and the ship's speed was not impaired. In the second the Prince of Wales was struck simultaneously by what seemed to be two torpedoes close together, which caused very severe damage and flooding Both port propellers were put out of action, and the ship was never again under complete control. The Repulse was not hit in this attack. A few minutes later another wave closed in on the Repulse, and again she escaped damage. The ships by now had become somewhat separated, and Captain Tennant, having made an emergency signal to Singapore, "Enemy aircraft bombing", turned the Repulse towards the Admiral

At 12 22 p.m. another attack proved fatal to both capital ships. After successfully avoiding a number of torpedoes the Repulse was struck amidships. Soon afterwards, in yet another attack, a torpedo wrecked her steering gear, and then in quick succession three more torpedoes found their mark Captain Tennant realised that his ship was doomed. He promptly ordered all hands on deck, and there is no doubt that this timely action saved many lives. At 12.33 p.m the Repulse turned over and sank The Prince of Wales had received two more torpedo hits at about 12 23 p.m. and another shortly afterwards. Her speed was reduced to eight knots, and she too was soon in a sinking condition. After another bombing attack, which scored one more hit, she capsized and sank at 1 20 p.m. The destroyers rescued two thousand officers and men out of nearly three thousand The Commander-in-Chief, Admiral Sir Tom Phillips, and his Flag-Captain, John Leach, were drowned.

\* \* \* \* \*

In reply to certain questions of the Chiefs of Staff about why no fighter aircraft were sent from Singapore to aid the squadron, it was confirmed that Admiral Phillips did not signal his change of plan on the 9th, as he was keeping wireless silence. His position on the morning of the 10th was not therefore known in Singapore till Captain Tennant's emergency signal was received at noon Fighters were then sent at once They arrived only in time to witness the sinking of the Prince of Wales.

In judging the actions of Admiral Phillips during these calamitous days it should be emphasised that there were sound reasons for his belief that his intended attack at Kuantan would be outside the effective range of enemy shore-based torpedo bombers, which were his chief anxiety, and that he would only have to deal with hastily organised strikes by ordinary long-range bombers during his retirement. The distance from the Saigon airfields to Kuantan was four hundred nules, and at this date no attacks by torpedo bombers had been attempted at anything approaching this range. The efficiency of the Japanese in air warfare was at this time greatly under-estimated both by ourselves and by the Americans

#### \* \* \* \* \*

I was opening my boxes on the 10th when the telephone at my bedside rang It was the First Sea Lord. His voice sounded odd He gave a sort of cough and gulp, and at first I could not hear quite clearly "Prime Minister, I have to report to you that the Prince of Wales and the Repulse have both been sunk by the Japanese—we think by aircraft Tom Phillips is drowned " "Are you sure it's true?" "There is no doubt at all" So I put the telephone down. I was thankful to be alone. In all the war I never received a more direct shock. The reader of these pages will realise how many efforts, hopes, and plans foundered with these two ships As I turned over and twisted in bed the full horror of the news sank in upon me There were no British or American capital ships in the Indian Ocean or the Pacific except the American survivors of Pearl Harbour, who were hastening back to California Over all this vast expanse of waters Japan was supreme, and we everywhere were weak and naked

I went down to the House of Commons as soon as they met at eleven that morning to tell them myself what had happened.

I have bad news for the House which I think I should pass on to them at the earliest moment. A report has been received from Singapore that H M S Prince of Wales and H M S. Repulse have been sunk while carrying out operations against the Japanese in their attack on Malaya No details are yet available except those contained in the Japanese official communiqué, which claims that both ships, were sunk by air attack

I may add that at the next sitting of the House I shall take occasion

to make a short statement on the general war situation, which has from many points of view, both favourable and adverse, undergone important changes in the last few days

\* \* \* \* \*

All plans were now being made in secret for my starting for the United States on the 14th. The intervening ninety-six hours were crowded. On the 11th I had to make a full statement to the House upon the new situation. There was much anxiety and not a little discontent with the long-drawn battle in Libya, which evidently hung in the balance. I did not at all conceal the prospect that very severe punishment awaited us at the hands of Japan. On the other hand, the Russian victories had revealed the fatal error of Hitler's Eastern campaign, and winter was still to assert its power. The U-boat war was at the moment under control, and our losses greatly reduced. Finally, four-fifths of the world were now fighting on our side. Ultimate victory was certain. In this sense I spoke

I used the coldest form of factual narration, avoiding all-

promises of early success. I ended thus

Naturally, I should not be prepared to discuss the resulting situation in the Far East and in the Pacific or the measures which must be taken to restore it. It may well be that we shall have to suffer considerable punishment, but we shall defend ourselves everywhere with the utmost vigour in close co-operation with the United States and the Netherlands. The naval power of Great Britain and the United States was very greatly superior—and is still largely superior—to the combined forces of the three Axis Powers. But no one must underrate the gravity of the loss which has been inflicted in Malaya and Hawau, or the power of the new antagonist who has fallen upon us, or the length of time it will take to create, marshal, and mount the great force in the Far East which will be necessary to achieve absolute victory

We have a very hard period to go through, and a new surge of impulse will be required, and will be forthcoming, from everybody We must, as I have said, faithfully keep our engagements to Russia in supplies, and at the same time we must expect, at any rate for the next few months, that the volume of American supplies reaching Britain and the degree of help given by the United States Navy will be reduced. The gap must be filled, and only our own efforts will fill it. I cannot doubt, however, now that the 130,000,000 people in the United States have bound themselves to this war, that once they have settled down to it and have bent themselves to it—as they will—as

their main purpose in life, then the flow of munitions and aid of every kind will vastly exceed anything that could have been expected on the peace-time basis that has ruled up to the present. Not only the British Empire now but the United States are fighting for life, Russia is fighting for life, and China is fighting for life. Behind these four great combatant communities are ranged all the spirit and hopes of all the conquered countries in Europe, prostrate under the cruel domination of the foe. I said the other day that four-fifths of the human race were on our side. It may well be an under-statement. Just these gangs and cliques of wicked men and their military or party organisations have been able to bring these hideous evils upon mankind. It would indeed bring shame upon our generation if we did not teach them a lesson which will not be forgotten in the records of a thousand years.

The House was very silent, and seemed to hold its judgment in suspense. I did not seek or expect more.

\* \* \* \* \*

During the night of December 7–8 Mr. Eden had sailed from Scapa Flow on his journey to Moscow while the news of Pearl Harbour was actually breaking upon us. There would have been time to turn him back, but I considered his mission was all the more important in consequence of the new explosion. The relations between Russia and Japan and the inevitable reshuffling of all American supplies of munitions both to Russia and Britain raised large issues, which were also delicate. The Cabinet took this view strongly. Eden continued his voyage, and I kept him well informed. There was plenty to tell.

Prime Minister to Mr. Eden (at sea) 10 Dec 41

Since you left much has happened United States have sustained a major disaster at Hawaii, and have now only two battleships effective in Pacific against ten Japanese. They are recalling all their battleships from the Atlantic. Secondly, according to American sources, we are going to be heavily attacked in Malaya and throughout Far East by Japanese forces enjoying command of the sea. Thirdly, it seems to me certain that Italy and Germany will declare war on United States Fourthly, magnificent Russian successes at Leningrad, on whole Moscow front, at Kursk and in South, German armies largely on defensive or in retreat, under terrible winter conditions and everstrengthening Russian counter-attacks. Fifthly, Auchinleck reports tide turned in Libya, but much heavy fighting lies ahead on this our

second front. Sixthly, urgent necessity to reinforce Malaya with aircraft from Middle East.

- 2 In view of above you should not offer ten squadrons at present time. Everything is in flux with United States supplies, and I cannot tell where we are till I get there.
  - 3 Hope you are better We are having a jolly [sic] time here

And further as I embarked.

Prime Minister to Mr. Eden (at sea) 12 Dec 41 The loss of the Prince of Wales and Repulse, together with United States losses at Pearl Harbour, gives Japanese full battle-fleet command of Pacific. They can attack with any force overseas at any point, Happily area is so vast that the use of their power can only be partial and limited We think they will go for Philippines, Singapore, and the Burma Road. It will be many months before effective superiority can be regained through completion of British and American new battleships The United States, under shock of Pacific disaster and war declarations, have embargoed everything for the present I hope to loosen this up, but in present circumstances, with a Russian victory and our new dangers, we cannot make any promises beyond our agreed quota of supplies You should point out what a grievous drain the aeroplanes are to us, with all these demands for fighters in the East On the other hand, accession of United States makes amends for all, and with time and patience will give certain victory ...

Am just off.

## CHAPTER XXXIII

# A VOYAGE AMID WORLD WAR

Our Voyage in the "Duke of York" – My Party – Our Signals and Contacts with Home – Should We Press the Soviets to Declare War on Japan? – Mr Eden's Conversations with Stalin and Molotov, December 16–18 – Stalin's Views on the Post-War Settlement – Soviet Claim to the Baltic States – My Protests are Supported by the Cabinet – Further Moscow Conversations – Russia and Japan – A Friendly Parting – Our Relations with Vichy Blessing or Cursing – The Japanese Attack on Hong Kong – Devoted Resistance of the Garrison – Capitulation – Japanese Landings in Malaya – My Telegram to Wavell, December 12 – A Grave Strategic Issue – Duff Cooper's Advice and My Convictions – Progress of the Desert Offensive – Rommel Retreats to Agheila – The German Air Force Returns to the Mediterranean – Anxieties about United States Policy – Lord Beaverbrook's Optimism – Unfounded Fears.

ANY serious reasons required my presence in London at this moment when so much was molten. I never had any doubt that a complete understanding between Britain and the United States outweighed all else, and that I must go to Washington at once with the strongest team of expert advisers who could be spared. It was thought too risky for us to go by air at this season in an unfavourable direction. Accordingly we travelled on the 12th to the Clyde. The Prince of Wales was no more. The King George V was watching the Tirpitz. The newborn Duke of York could carry us, and work herself up to full efficiency at the same time. The principals of our party were Lord Beaverbrook, a member of the War Cabinet, Admiral Pound, First Sea Lord, Air-Marshal Portal, Chief of the Air Staff, and Field-Marshal Dill, who had now been succeeded by General Brooke as Chief of the Imperial General Staff. I was

anxious that Brooke should remain in London in order to grip the tremendous problems that awaited him. In his place I invited Dill, who was still in the centre of our affairs, trusted and respected by all, to come with me to Washington. Here a new sphere was

to open to him.

With me also came Sir Charles Wilson, who had during 1941 become my constant inedical adviser. This was his first voyage with me, but afterwards he came on all the journeys. To his unfailing care I probably owe my life. Although I could not persuade him to take my advice when he was ill, nor could he always count on my implicit obedience to all his instructions, we became devoted friends. Moreover, we both survived.

It was hoped to make the passage at an average of 20 knots in seven days, having regard to zigzags and détours to avoid the plotted U-boats. The Admiralty turned us down the Irish Channel into the Bay of Biscay. The weather was disagreeable There was a heavy gale and a rough sea The sky was covered with patchy clouds. We had to cross the out-and-home U-boat stream from the Western French ports to their Atlantic hunting grounds There were so many of them about that our captain was ordered by the Admiralty not to leave our flotilla behind us, but the flotilla could not make more than six knots in the heavy scas, and we paddled along at this pace round the South of Ireland for forty-eight hours. We passed within four hundred miles of Brest, and I could not help remembering how the Prince of Wales and the Repulse had been destroyed by shore-based torpedo aircraft attack the week before The clouds had prevented all but an occasional plane of our air escort from joining us, but when I went on the bridge I saw a lot of unwelcome blue sky appearing However, nothing happened, so all was well The great ship with her attendant destroyers plodded on. But we became impatient with her slow speed. On the second night we approached the U-boat stream. Admiral Pound, who took the decision, said that we were more likely to ram a U-boat than to be torpedoed by one ourselves The night was pitch-black we cast off our destroyers and ran through alone at the best speed possible in the continuing rough weather We were battened down and great seas beat upon the decks. Lord Beaverbrook complained that he might as well have travelled in a submarine

wireless a great deal of business. To a limited extent we could reply. When fresh escorts joined us from the Azores they could take in by daylight Morse signals from us in code, and then, dropping off a hundred miles or so, could transmit them without revealing our position. Still, there was a sense of radio claustrophobia—and we were in the midst of world war.

\* \* \* \* \*

All our problems travelled with us, and my thoughts were with the Foreign Secretary, also at sea and hastening in the opposite direction. The most urgent question was our policy about asking the Soviet Government to declare war on Japan. I had already sent Mr Eden the following telegram

12 Dec 41

Before you left you asked for views of Chiefs of Staff on the question whether it would be to our advantage for Russia to declare war on Japan Chiefs of Staff considered views are as follows

Russian declaration of war on Japan would be greatly to our advantage, provided, but only provided, that the Russians are confident that it would not impair their Western front either now or next spring

They then set forth in considerable detail the pros and cons On the balance they emphasised the prime importance of avoiding a Russian breakdown in the West.

I continued to the Foreign Secretary:

If your discussions lead you to the opinion that the Russians would be prepared to declare war on Japan, it is for consideration whether the exercise of any pressure required should be by the Americans rather than ourselves

As a postscript to him after his arrival in Moscow I added

In view of evident strong wish of United States, China, and I expect Australia, that Russia should come in against Japan, you should not do anything to discourage a favourable movement if Stalin feels strong enough to do so. We should not put undue pressure upon him, considering how little we have been able to contribute.

And the next day.

It may well be that recent successes on the Russian front may make Stalin more willing to face a war with Japan The situation is changing

from day to day in our favour, and you must judge on the spot how far and how hard it is wise to press him

During our voyage I received from Mr Eden, soon at Moscow, a series of messages setting forth the Soviet ideas on other matters with which he had been confronted on arrival

The substance of these messages is summarised in his own words in the full dispatch, dated January 5, 1942, which he wrote on his return

At my first conversation with M Stalin and M. Molotov on December 16 M Stalin set out in some detail what he considered should be the post-war territorial frontiers in Europe, and in particular his ideas regarding the treatment of Germany. He proposed the restoration of Austria as an independent State, the detachment of the Rhineland from Prussia as an independent State or a protectorate. and possibly the constitution of an independent State of Bavaria He also proposed that East Prussia should be transferred to Poland and the Sudetenland returned to Czechoslovakia He suggested that Yugoslavia should be restored, and even receive certain additional territories from Italy, that Albania should be reconstituted as an independent State, and that Turkey should receive the Dodecanese, with possible adjustments in favour of Greece as regards islands in the Ægean important to Greece Turkey might also receive certain districts in Bulgaria, and possibly also in Northern Syria In general the occupied countries, including Czechoslovakia and Greece, should be restored to their pre-war frontiers, and M Stalin was prepared to support any special arrangements for securing bases, etc., for the United Kingdom in Western European countries—e g, France, Belgium, the Netherlands, Norway, and Denmark As regards the special interests of the Soviet Union, M Stalin desired the restoration of the position in 1941, prior to the German attack, in respect of the Baltic States, Finland, and Bessarabia The "Curzon Line" should form the basis for the future Soviet-Polish frontier, and Roumania should give special facilities for bases, etc., to the Soviet Union, receiving compensation from territory now occupied by Hungary

In the course of this first conversation M Stalin generally agreed with the principle of restitution in kind by Germany to the occupied countries, more particularly in regard to machine tools, etc., and ruled out money reparations as undesirable. He showed interest in a postwar military alliance between the "democratic countries", and stated that the Soviet Union had no objection to certain countries of Europe

entering into a federal relationship, if they so desired

In the second conversation, on December 17, M Stalin pressed for

the immediate recognition by His Majesty's Government of the future frontiers of the U S.S.R., more particularly in regard to the inclusion within the USSR of the Baltic States and the restoration of the 1941 Finnish-Soviet frontier He made the conclusion of any Anglo-Soviet Agreement dependent on agreement on this point I, for my part, explained to M Stalin that in view of our prior undertakings to the United States Government it was quite impossible for His Majesty's Government to commit themselves at this stage to any post-war frontiers in Europe, although I undertook to consult His Majesty's Government in the United Kingdom, the United States Government. and His Majesty's Governments in the Dominions on my return This question, to which M. Stalin attached fundamental importance, was further discussed at the third meeting on December 18

In the forefront of the Russian claims was the request that the Baltic States, which Russia had subjugated at the beginning of the war, should be finally incorporated in the Soviet Union There were many other conditions about Russian imperial expansion, coupled with fierce appeals for unlimited supplies and impossible military action As soon as I read the telegrams I reacted violently against the absorption of the Baltic States

Prime Minister to Lord Privy Seal

Stalin's demand about Finland, Baltic States, and Roumania are directly contrary to the first, second, and third articles of the Atlantic Charter, to which Stalin has subscribed There can be no question whatever of our making such an agreement, secret or public, direct or implied, without prior agreement with the US. The time has not yet come to settle frontier questions, which can only be resolved at the Peace Conference when we have won the war

2. The mere desire to have an agreement which can be published should never lead us into making wrongful promises Foreign Secretary has acquitted himself admirably, and should not be downhearted if he has to leave Moscow without any flourish of trumpets Russians have got to go on fighting for their lives anyway, and are dependent upon us for very large supplies, which we have most painfully gathered, and which we shall faithfully deliver

3 I hope the Cabinet will agree to communicate the above to the Foreign Secretary. He will no doubt act with the necessary tact and

discretion, but he should know decisively where we stand

The Cabinet shared my view, and telegraphed accordingly To Mr. Eden I replied as follows.

559

19

Prime Minister (at sea) to Foreign Secretary (at Moscow)

Naturally you will not be rough with Stalin. We are bound to United States not to enter into secret and special pacts. To approach President Roosevelt with these proposals would be to court a blank refusal, and might cause lasting trouble on both sides.

2 The strategic security of Russia on her western border will be one of the objects of Peace Conference. The position of Leningrad has been proved by events to be of particular danger. The first object will be the prevention of any new outbreak by Germany. The separation of Prussia from South Germany, and actual definition of Prussia itself, will be one of the greatest issues to be decided. But all this lies in a future which is uncertain and probably remote. We have now to win the war by a hard and prolonged struggle. To raise such issues publicly now would only be to rally all Germans round Hitler.

3 Even to raise them informally with President Roosevelt at this time would, in my opinion, be inexpedient. This is the sort of line I should take, thus avoiding any abrupt or final closing of interviews. Do not be disappointed if you are not able to bring home a joint public declaration on lines set forth in your Cabinet paper. I am sure your visit has done utmost good and your attitude will win general approval.

This voyage seems very long.

Mr Eden's account gives in his own words the ending of his talks with Stalin in Moscow.

We took leave of one another in a very friendly atmosphere. After my explanations M. Stalin seemed fully to understand our inability to create a second front in Europe at the present time. He showed considerable interest in the progress of our Libyan offensive, and regarded it as most desirable to knock out Italy, on the principle that the Axis would collapse with the destruction of its weakest link.

He did not consider that he was yet strong enough to continue the campaign against Germany and also to provoke hostilities with Japan. He hoped by next spring to have restored his Far Eastern army to the strength which it had before he had been obliged to draw upon it for the West. He did not undertake to declare war on Japan next spring, but only to reconsider the matter then, although he would prefer that hostilities should be opened by the Japanese, as he seemed to expect might be the case.

The most acute issue however that lay in our minds in foreign relations at this moment was France. What would be the effect on Vichy France of the American declaration of war between the

United States and Germany? In Britain we had our relations with de Gaulle The United States Government—and particularly the State Department—were in close and helpful touch with Vichy Pétain, held in the German grip, was ailing Some said he must undergo an operation for enlarged prostate gland Weygand had been recalled from North Africa to Vichy and dismissed from his command Admiral Darlan was, it seemed, on the crest of the wave. Moreover, Auchinleck's success in Libya and beyond opened on the highest level all questions about French North Africa. Would Hitler, rebuffed in the Desert and halted in Russia, insist upon sending German forces, not now through Spain, but by sea and air into Tunis, Algeria, Morocco, and Dakar? Would this, or some of it, be his rejoinder to the entry of America into the war?

There were indications that Admiral Darlan might succeed or supersede Pétain, and the Foreign Office had received surreptitious inquiries as to how he would stand with us and our great Ally. These baffling possibilities involved our whole naval position—the Toulon fleet, the two unfinished battleships at Casablanca and Dakar, the blockade, and much else On our journey in the train from Chequers to the Clyde I had sent a minute on the naval aspects to the First Sea Lord in his adjoining compartment

13 Dec 41

I hope we may make together a joint offer of blessing or cursing

to Vichy, or, failing Vichy, to French North Africa

We cannot tell yet how France will have been affected by the American entry. There are also the hopes of favourable reactions from a Libyan victory. Above all, the growing disaster of the German armies in Russia will influence all minds. It may well be that an American offer to land an American Expeditionary Force at Casablanca, added to the aid we can give under "Gymnast", would decide the action of French North Africa (and incidentally Madagascar) At any rate, it is worth trying I don't want any changes in our dispositions about "Gymnast" or "Truncheon" until we know what the reply of Vichy will be

It must be borne in mind that the United States would be generally in favour of North and West Africa as a major theatre for Anglo-

American operations

To General Smuts I said

20 Dec 41

I thought it my duty to cross the Atlantic again, and hope in a few days to confer with President Roosevelt on the whole conduct of the war. I hope of course to procure from him assistance in a forward policy in French North Africa and in West Africa. This is in accordance with American ideas, but they may well be too much preoccupied with the war with Japan. I will keep you informed.

# \* \* \* \* \*

Meanwhile the fighting proceeded in all the theatres, old and new I had no illusions about the fate of Hong Kong under the overwhelming impact of Japanese power. But the finer the British resistance the better for all. Hong Kong had been attacked by Japan at nearly the same moment of time as Pearl Harbour. The garrison, under Major-General Maltby, were faced with a task that from the outset was beyond their powers. The Japanese employed a force of three divisions, against which we could muster six battalions, of which two were Canadian. In addition there was a handful of mobile artillery, the Volunter Defence Corps of civilians, two thousand strong, and the coast and anti-aircraft guns defending the port. Throughout the siege the Japanese enjoyed undisputed mastery of the air. An active Fifth Column among the native inhabitants was no small help to the enemy.

Three battalions of the gairison, with sixteen guns, were deployed on the mainland in order to delay the assailants until demolitions had been carried out in the port of Kowloon. They were soon heavily attacked, and on December 11 were ordered to withdraw to the island. This was skilfully accomplished during the ensuing two nights under conditions of much difficulty.

Prime Minister to Governor and Defenders of Hong Kong

12 Dec 41

We are all watching day by day and hour by hour your stubborn defence of the port and fortress of Hong Kong

You guard a link between the Fai East and Europe long famous in world civilisation. We are suite that the defence of Hong Kong against barbaious and unprovoked attack will add a glonious page to British annals

All out hearts are with you in your ordeal Every day of your resistance brings nearer our certain final victory.

The enemy's preparations for crossing the mile-wide stretch of water between the mainland and the island took some days, during which they systematically shelled, bombed, and mortared

our positions. On the night of December 18 they made their first landing, and successive reinforcements pushed actively inland. The defenders were forced back step by step by attacks of evergrowing strength, their own numbers diminished by heavy casualties. They had no hope of reinforcement or succour, but they fought on

Prune Minister to Governor, Hong Kong 21 Dec 41

We were greatly concerned to hear of the landings on Hong Kong Island which have been effected by the Japanese We cannot judge from here the conditions which rendered these landings possible or prevented effective counter-attacks upon the intruders. There must however be no thought of surrender. Every part of the island must be fought and the enemy resisted with the utmost stubbornness.

The enemy should be compelled to expend the utmost life and equipment. There must be vigorous fighting in the inner defences, and, if the need be, from house to house. Every day that you are able to maintain your resistance you help the Allied cause all over the world, and by a prolonged resistance you and your men can win the lasting honour which we are sure will be your due.

These orders were obeyed in spirit and to the letter Among many acts of devotion one may be recorded here. On December 19 the Canadian Brigadier Lawson reported that his headquarters were overrun; fighting was taking place at point-blank range, he was going outside to fight it out. He did so, and he and those with him were killed. For a week the garrison held out. Every man who could bear arms, including some from the Royal Navy and Royal Air Force, took part in a desperate resistance. Their tenacity was matched by the fortitude of the British civilian population. On Christmas Day the limit of endurance was reached and capitulation became inevitable. Under their resolute Governor, Sir Mark Young, the colony had fought a good fight. They had won indeed the "lasting honour" which is their due

\* \* \* \* \*

Another set of disasters loomed upon us in Malaya The Japanese landings on the peninsula on December 8 were accompanied by damaging raids on our airfields which seriously crippled our already weak air forces and soon made the northerly aerodromes unusable At Kota Bharu, where the beach defences were manned by an infantry brigade extended over a front of

thirty miles, the Japanese succeeded in landing the greater part of a division, though not without heavy casualties inflicted both by our troops on shore and from the air. After three days of stiff fighting the enemy were firmly established on land, the near-by airfields were in their hands, and the brigade, which had lost heavily, was ordered to withdraw southwards.

Farther north on that same December 8 the Japanese had made unopposed landings at Patani and Singora Dutch submarines, boldly handled, sank several of their ships. There was no serious fighting until December 12, when the enemy with one of their finest divisions made a successful attack on the 11th Indian

Division north of Alor Star, inflicting severe losses

\* \* \* \* \*

Before leaving I had telegraphed to General Wavell, Commander-in-Chief India

12 Dec 41

You must now look East Burma is placed under your command. You must resist the Japanese advance towards Burma and India and try to cut their communications down the Malay pennisula. We are diverting the 18th Division, now rounding the Cape, to Bombay, together with four fighter squadrons of the R. A.F., now en route for Caucasus and Caspian theatre. We are also sending you a special hamper of A.A. and A.T. guns, some of which are already en route. You should retain 17th Indian Division for defence against the Japanese. Marry these forces as you think best and work them into the Eastern fighting front to the highest advantage.

2 It is proposed at a convenient moment in the near future by arrangement between you and Auchinleck to transfer Iraq and Persia to the Cairo Command. The Russian victories and Auchinleck's Libyan advance have for the time being relieved danger of German irruption into the Syrian-Iraq-Persian theatre. The danger may revive,

but we have other more urgent dangers to meet

3. I hope these new dispositions arising from the vast changes in the world situation of the last four days will commend themselves to you I shall endeavour to feed you with armour, aircraft, and British personnel to the utmost possible, having regard to the great strain we are under Pray cable me fully your views and needs

And also.

Prime Minister to Lord Privy Seal, and to General Ismay, 13 Dec 41 for C O S Committee

Pray do all in your power to get men and materials moving into

India, and reinforce with air from the Middle East as soon as the battle in Libya is decided in our favour. An effort should be made to send armoured vehicles at the earliest moment after a Libyan decision.

Prime Minister to Governor of Burma 13 Dec 41

Wavell has been placed in charge of military and air defence of Burma We have diverted 18th Division, four fighter squadrons, and A A and A T guiss, which were rounding the Cape, to Bombay for him to use as he thinks best. The battle in Libya goes well, but I cannot move any air from there till decision [in the battle] is definitely reached All preparations are being made to transfer four to six bomber squadrons to your theatre the moment battle is won

Every good wish.

A grave strategic choice was involved in the tactical defence of the Malay peninsula. I had clear convictions which I regret it was not in my power to enforce from mid-ocean.

Prime Minister to General Ismay, for COS Committee

Beware lest [that] troops required for ultimate defence Singapore Island and fortress are not used up or cut off in Malay peninsula Nothing compares in importance with the fortress. Are you sure we shall have enough troops for prolonged defence? Consider with Auchinleck and Commonwealth Government moving 1st Australian Division from Palestine to Singapore Report action

I was glad to find that our Minister of State, Mr. Duff Cooper, had independently reached the same conclusion.

Prime Minister to General Ismay, for COS Committee 19 Dec 41 Duff Cooper expresses the same anxieties as I conveyed to you in my message beginning "Beware". Duff Cooper's proposal to concentrate on defence of Johore for the purpose of holding Singapore conforms exactly to view taken by Dill here

2 After naval disasters to British and American sea-power in Pacific and Indian Oceans we have no means of preventing continuous landings by Japanese in great strength in Siam and the Malay peninsula. It is therefore impossible to defend, other than by demolitions and delaying action, anything north of the defensive line in Johore, and this line itself can only be defended as part of the final defence of Singapore Island fortress and the naval base.

3 The Commander-in-Chief should now be told to confine himself to defence of Johore and Singapore, and that nothing must compete with maximum defence of Singapore This should not preclude

his employing delaying tactics and demolitions on the way south and making an orderly retreat

4. You do not say who is now Commander-in-Chief Far East Has Pownall got there? If not, where is he? He should fly there at earliest moment

5 It was always intended that all reinforcements diverted from the Cape to India should be used by Wavell for the defence of Burma or sent forward to Far East Command as situation requires Your action in diverting the anti-aircraft guns and fighter squadrons is fully approved

6 18th Division can similarly be used by Wavell either for his own needs or to help Far East Command But why stop there? If 18th Division is sent eastward it would seem wise to get at least one Aus-

tralian division moving into India to replace it

7 Please say what you are doing and how you propose to overcome the growing difficulties of sending reinforcements into Singapore Also, what has been done about reducing number of useless mouths in Singapore Island? What was the reply about supplies?

\* \* \* \* \*

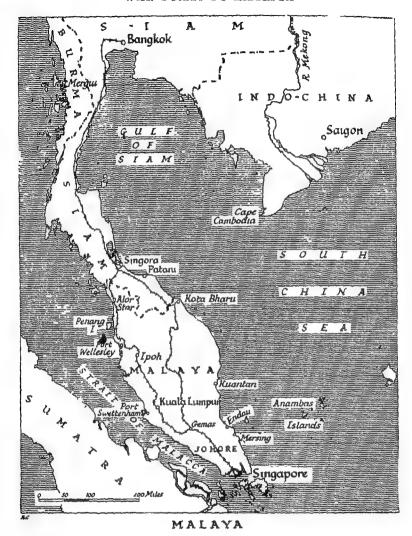
It is not possible to pursue the story to its conclusion in this volume The tragedy of Singapore must presently unfold itself, Suffice it here to say that during the rest of the month the Indian Division fought a series of delaying actions against the enemy's main thrust down the west coast of the peninsula. On December 17 the enemy invaded Penang, where, despite demolitions, a considerable number of small craft were seized intact later enabled him to mount repeated flank attacks made by small amphibious forces. By the end of the month our troops, several times heavily engaged, were in action near Ipoh, a full hundred and fifty nules from the position they had first held, and by then the Japanese had landed on the peninsula at least three full divisions, including their Imperial Guard. In the air too the enemy had greatly increased his superiority The quality of his aircraft, which he had speedily deployed on captured airfields, had exceeded all expectations We had been thrown on to the defensive and our losses were severe On December 16 the northern part of Borneo also was invaded, and soon overrun, but not before we had succeeded in demolishing the immense and valuable oil installations In all this Dutch submarines took toll of the enemy ships

While we sailed the seas General Auchinleck's battle in the Desert went well The Axis army, skilfully evading various encircling manœuvres, made good its retreat to a rearward line running southward from Gazala On December 13 the attack on this position was launched by the Eighth Army. This now comprised the 7th Armoured Division, with the 4th Armoured Brigade and Support Group, the 4th British-Indian Division, the Guards Brigade (motorised), the 5th New Zealand Brigade, the Polish Brigade Group, and the 32nd Army Tank Brigade. All these troops passed under the command of the XIIIth Corps headquarters. The XXXth Corps had to deal with the enemy garrisons cut off and abandoned at Sollum, Halfaya, and Bardia. which were fighting stubbornly. The enemy fought well at Gazala, but their desert flank was turned by our armour, and Rommel began his withdrawal through Derna to Agedabia and Agheila. They were followed all the way by all the troops we could keep in motion and supplied over these large distances

With the first week in December came a marked increase in the hostile air-power. The 1st German Air Corps was withdrawn from the Russian theatre and arrived in the Mediterranean. The German records show that their strength rose from 400 (206 serviceable) on November 15 to 637 (339 serviceable) a month later. The bulk went to Sicily to protect the sea route to North Africa, but over the desert dive-bombers, escorted by the highly efficient Me. 109 fighters, began to appear in increasing numbers. The supremacy which the Royal Air Force had gained in the first week of the battle no longer ruled. We shall see later how the revival of the enemy air-power in the Mediterranean during December and January and the virtual disappearance for several months of our sea command was to deprive Auchinleck of the fruits of the victory for which he had struggled so hard and waited too long.

\* \* \* \* \*

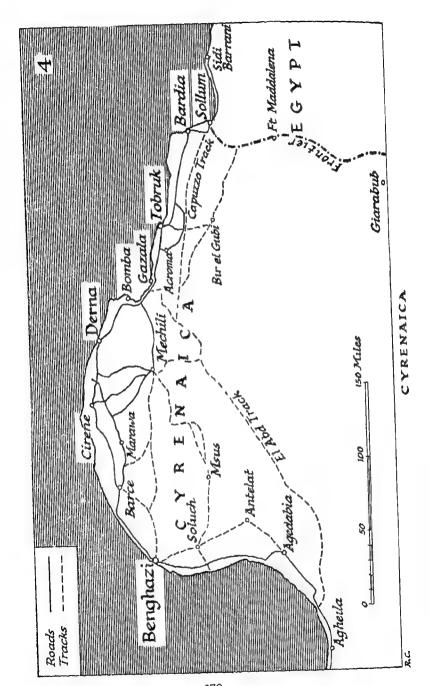
Everyone in our party worked incessantly while the Duke of York plodded westwards, and all our thoughts were focused on the new and vast problems we had to solve. We looked forward with eagerness, but also with some anxiety, to our first direct contact as allies with the President and his political and military advisers. We knew before we left that the outrage of Pearl Harbour had stirred the people of the United States to their



depths. The official reports and the Press summaries we had received gave the impression that the whole fury of the nation would be turned upon Japan. We feared lest the true proportion of the war as a whole might not be understood. We were conscious of a serious danger that the United States might pursue the war against Japan in the Pacific and leave us to fight Germany and Italy in Europe, Africa, and in the Middle East.

I have described in a previous chapter the enduring, and up to this point growing, strength of Britain. The first Battle of the Atlantic against the U-boats had turned markedly in our favour We did not doubt our power to keep open our ocean paths. We felt sure we could defeat Hitler if he tried to invade the Island We were encouraged by the strength of the Russian resistance We were unduly hopeful about our Libyan campaign our future plans depended upon a vast flow of American supplies of all kinds, such as were now streaming across the Atlantic Especially we counted on planes and tanks, as well as on the stupendous American merchant-ship construction. Hitherto, as a non-belligerent, the President had been able and willing to divert large supplies of equipment from the American armed forces, since these were not engaged. This process was bound to be restricted now that the United States was at war with Germany, Italy, and above all Japan. Home needs would surely come first? Already, after Russia had been attacked, we had rightly sacrificed to aid the Soviet armies a large portion of the equipment and supplies now at last arriving from our factories. The United States had diverted to Russia even larger quantities of supplies than we otherwise would have received ourselves We had fully approved of all this on account of the splendid resistance which Russia was offering to the Nazi invader

It had been none the less hard to delay the equipment of our own forces, and especially to withhold vitally needed weapons from our army fiercely engaged in Libya We must presume that "America first" would become the dominant principle with our Ally We feared that there would be a long interval before American forces came into action on a great scale, and that during this period of preparation we should necessarily be greatly straitened This would happen at a time when we ourselves had to face a new and terrible antagonist in Malaya, the Indian Ocean, Evidently the partition of supplies would Burma, and India require profound attention and would be fraught with many difficulties and delicate aspects. Already we had been notified that all the schedules of deliveries under Lend-Lease had been stopped pending readjustment. Happily the output of the British munitions and aircraft factories was now acquiring scope and momentum, and would soon be very large indeed. But a long array of "bottlenecks" and possible denials of key items, which



would affect the whole range of our production, loomed before our eyes as the *Duke of York* drove on through the incessant gales Beaverbrook was, as usual in times of trouble, optimistic. He declared that the resources of the United States had so fai not even been scratched, that they were immeasurable, and that once the whole force of the American people was diverted to the struggle results would be achieved far beyond anything that had been projected or imagined. Moreover, he thought the Americans did not yet realise their strength in the production field. All the present statistics would be surpassed and swept away by the American effort. There would be enough for all. In this his judgment was right

All these considerations paled before the main strategic issue Should we be able to persuade the President and the American Service chiefs that the defeat of Japan would not spell the defeat of Hitler, but that the defeat of Hitler made the finishing off of Japan merely a matter of time and trouble? Many long hours did we spend revolving this grave issue. The two Chiefs of Staff and General Dill with Hollis and his officers prepared several papers dealing with the whole subject and emphasising the view that the war was all one. As will be seen, these labours and fears

both proved needless

# CHAPTER XXXIV

# PROPOSED PLAN AND SEQUENCE OF THE WAR

My Three Papers for the President - Part I, The Atlantic Front -Hitler's Failure and Losses in Russia - My Ill-founded Hopes of General Anchinleck's Victory in Cyrenaica - Possible German Thrust Through the Caucasus - Urgent Need to Win French North Africa -British and American Reinforcements for North Africa - Request for American Troops in Northern Ireland - Request for American Bomber Squadrons to Attack Germany from Great Britan - Possible Refusal by Vichy to Co-operate in North Africa - The Consequential Anglo-American Campaign of 1942 - On Relations with General de Gaulle - The Spanish Problem - The Main Objectives of 1942 - Part II. The Pacific Front - Japanese Naval Superiority - Their Resources a Wasting Factor - Our Need to Regain Superiority at Sea - British Offer to America of the "Nelson" and the "Rodney" - The Warfare of Aircraft-Carriers - Vital Need to Improvise - Danger of Creating Too Large an American Army - My Assertion of the Need for Large-Scale Operations on the Continent - Part III, The Campaign of 1943 - Possible Situation at the Beginning of 1943 - West and North Africa in Anglo-American Control - Turkey Effectively in the Allied Front -A Footing Gained in Italy and Sicily - Need to Prepare for Landings in Western and Southern Emope - Major Assault in 1943 - Largely an Amphibious Operation - Continuous Preparation by Bombing of Germany and Italy - Hope of Ending the War in 1943 or 1944 - Staff Concurrence with My Views - All the Objectives Ultimately Achieved - A Fortunate Delay in the Final Assault

HE eight days' voyage, with its enforced reduction of current business, with no Cabinet meetings to attend or people to receive, enabled me to pass in review the whole war as I saw and felt it in the light of its sudden vast expansion.

# PROPOSED PLAN AND SEQUENCE OF THE WAR

I recalled Napoleon's remark about the value of being able to focus objects in the mind for a long time without being tired-"fixer les objets longtemps sans être fatigué". As usual I tried to do this by setting forth my thought in typescript by dictation In order to prepare myself for meeting the President and for the American discussions and to make sure that I carried with me the two Chiefs of Staff, Pound and Portal, and General Dill, and that the facts could be checked in good time by General Hollis and the Secretariat, I produced three papers on the future course of the war, as I conceived it should be steered Each paper took four or five hours, spread over two or three days. As I had the whole picture in my mind it all came forth easily, but very slowly In fact, it could have been written out two or three times in longhand in the same period. As each document was completed after being checked I sent it to my professional colleagues as an expression of my personal convictions. They were at the same time preparing papers of their own for the combined Staff conferences I was glad to find that although my theme was more general and theirs more technical there was our usual harmony on principles and values. No differences were expressed which led to argument, and very few of the facts required correction. Thus, though nobody was committed in a precise or rigid fashion, we all arrived with a body of doctrine of a constructive character on which we were broadly united.

The first paper assembled the reasons why our main objective for the campaign of 1942 in the European theatre should be the occupation of the whole coastline of Africa and of the Levant from Dakar to the Turkish frontier by British and American forces. The second dealt with the measures which should be taken to regain the command of the Pacific, and specified May 1942 as the month when this could be achieved. It dwelt particularly upon the need to multiply aircraft-carriers by improvising them in large numbers. The third declared as the ultimate objective the liberation of Europe by the landing of large Anglo-American armies wherever was thought best in the German-conquered territory, and fixed the year 1943 as the date for this supreme stroke.

I gave these three papers to the President before Christmas I explained that while they were my own personal views, they did not supersede any formal communications between the Staffs.

I couched them in the form of memoranda for the British Chiefs of Staff Committee. Moreover, I told him they were not written expressly for his eye, but that I thought it important that he should know what was in my mind and what I wanted to have done and, so far as Great Britain was concerned, would try to bring to action. He read them immediately after receiving them, and the next day asked whether he might keep copies of them. To this

I gladly assented

Although I had not had any formal reply to my letter of October 20 on these subjects\* which Mr. Attlee had presented, and did not indeed expect one, I felt that the President was thinking very much along the same lines as I was about action in French North-West Africa In October I could only tell him what our British ideas and plans were while we remained alone. We were now Allies, and must act in common and on a greater scale I felt confidence that he and I would find a large measure of agreement and that the ground had been well prepared. I was therefore in a hopeful mood

# PART I THE ATLANTIC FRONT

16 Dec 41

Hitler's failure and losses in Russia are the prime fact in the war at this time. We cannot tell how great the disaster to the German Aimy and Nazi régime will be. This régime has hitherto lived upon easily and cheaply won successes. Instead of what was imagined to be a swift and easy victory, it has now to face the shock of a winter of slaughter and expenditure of fuel and equipment on the largest scale.

Neither Great Britain nor the United States have any part to play in this event, except to make sure that we send, without fail and punctually, the supplies we have promised. In this way alone shall we hold our influence over Stalin and be able to weave the mighty

Russian effort into the general texture of the war

†2 In a lesser degree the impending victory of General Auchinleck in Cyrenaica is an injury to the German power. We may expect the total destruction of the enemy force in Libya to be apparent before the end of the year. This not only inflicts a heavy blow upon the Germans and Italians, but it frees our forces in the Nile Valley from the major threat of invasion from the west under which they have long dwelt. Naturally, General Auchinleck will press on as fast as

<sup>\*</sup> Sec p 482

<sup>†</sup> This paragraph was to be falsified by General Auchinleck's later defeats. At this time we had good grounds for hope

# PROPOSED PLAN AND SEQUENCE OF THE WAR

possible with the operation called "Acrobat", which should give him possession of Tripoli, and so bring his armoured vanguard to the French frontier of Tunis He may be able to supply a forecast before we separate at Washington.

- 3 The German losses and defeat in Russia and their extirpation from Libya may of course impel them to a supreme effort in the spring to break the ring that is closing on them by a south-eastward thrust either through the Caucasus or to Anatolia, or both However, we should not assume that necessarily they will have the war energy for this task. The Russian armies, recuperated by the winter, will lie heavy upon them from Leningrad to the Crimea may easily be forced to evacuate the Crimea There is no reason at this time to suppose that the Russian Navy will not command the Black Sea Nor should it be assumed that the present life-strength of Germany is such as to make an attack upon Turkey and a march through Anatolia a business to be undertaken in present circumstances by the Nazi régime. The Turks have 50 divisions, their fighting quality and the physical obstacles of their country are well known Although Turkey has played for safety throughout, the Russian command of the Black Sea and the British successes in the Levant and along the North African shore, together with the proved weakness of the Italian Fleet, would justify every effort on our part to bring Turkey into line, and are certainly sufficient to encourage her to resist a German inroad While it would be imprudent to regard the danger of a German south-west thrust against the Persian-Iraq-Syrian front as removed, it certainly now seems much less likely than heretofore
- 4. We ought therefore to try hard to will over French North Africa, and now is the moment to use every inducement and form of pressure at our disposal upon the Government of Vichy and the French authorities in North Africa The German setback in Russia, the British successes in Libya, the moral and military collapse of Italy, above all the declarations of war exchanged between Germany and the United States, must strongly affect the mind of France and the French Empire Now is the time to offer to Vichy and to French North Africa a blessing or a cursing A blessing will consist in a promise by the United States and Great Britain to re-establish France as a Great Power with her territories undiminished. It should carry with it an offer of active aid by British and United States expeditionary forces, both from the Atlantic seaboard of Morocco and at convenient landing-points in Algeria and Tunis, as well as from General Auchinleck's forces advancing from the east. Ample supplies for the French and the loyal Moors should be made available Vichy should be asked to send their fleet from Toulon to Oran and Bizerta and to bring France into the war again as a principal.

This would mean that the Germans would take over the whole of France and rule it a occupied territory. It does not seem that the conditions in the occupied and the hitherto unoccupied zones are widely different. Whatever happens, European France will inevitably be subjected to a complete blockade. There is of course always the chance that the Germans, tied up in Russia, may not care to take over unoccupied France, even though French North Africa is at war with them.

- 5. If we can obtain even the connivance of Vichy to French North Africa coming over to our side we must be ready to send considerable forces as soon as possible. Apart from anything which General Auchinleck can bring in from the east, should he be successful in Tripolitania, we hold ready in Britain (Operation "Gymnast") about 55,000 men, comprising two divisions and an armoured unit, together with the shipping. These forces could enter French North Africa by invitation on the twenty-third day after the order to embark them was given Leading elements and air forces from Malta could reach Bizerta at very short notice. It is desired that the United States should at the same time promise to bring in, via Casablanca and other African Atlantic ports, not less than 150,000 men during the next six months. It is essential that some American elements, say 25,000 men, should go at the earliest moment after French agreement, either Vichy or North African, had been obtained.
- 6 It is also asked that the United States will send the equivalent of three divisions and one armoured division into Northern Ireland These divisions could, if necessary, complete their training in Northern Ireland. The presence of American forces there would become known to the enemy, and they could be led to magnify their actual numbers The presence of United States troops in the British Isles would be a powerful additional deterrent against an attempt at invasion by Germany It would enable us to nourish the campaign in French North Africa by two more divisions and one complete armoured division If forces of this order could be added to the French Army already in North Africa, with proper air support, the Germans would have to make a very difficult and costly campaign across uncommanded waters to subdue North Africa. The North-West African theatre is one most favourable for Anglo-American operations, our approaches being direct and convenient across the Atlantic, while the enemy's passage of the Mediterranean would be severely obstructed, as is happening in their Libyan enterprise
- 7. It may be mentioned here that we greatly desire American bomber squadrons to come into action from the British Isles against Germany Our own bomber programme has fallen short of our hopes It is formidable and is increasing, but its full development has been

# PROPOSED PLAN AND SEQUENCE OF THE WAR

delayed It must be remembered that we place great hopes of affecting German production and German morale by ever more severe and more accurate bombing of their cities and harbours, and that this, combined with their Russian defeats, may produce important effects upon the will to fight of the German people, with consequential internal reactions upon the German Government. The arrival in the United Kingdom of, say, twenty American bomber squadrons would emphasise and accelerate this process, and would be the most direct and effective reply to the declaration of war by Germany upon the United States. Arrangements will be made in Great Britain to increase this process and develop the Anglo-American bombing of Germany without any top limit from now on till the end of the war

8 We must however reckon with a refusal by Vichy to act as we desire, and on the contrary they may rouse French North Africa to active resistance. They may help German troops to enter North Africa, the Germans may force their way or be granted passage through Spain, the French fleet at Toulon may pass under German control, and France and the French Empire may be made by Vichy to collaborate actively with Germany against us, although it is not likely that this would go through effectively The overwhelming majority of the French are ranged with Great Britain, and now still more with the United States It is by no means certain that Admiral Darlan can deliver the Toulon fleet over intact to Germany It is most improbable that French soldiers and sailors would fight effectively against the United States and Great Britain Nevertheless, we must not exclude the possibility of a half-hearted association of the defeatist elements in France and North Africa with Germany. In this case our task in North Africa will become much harder

A campaign must be fought in 1942 to gain possession of, or conquer, the whole of the North African shore, including the Atlantic ports of Morocco. Dakar and other French West African ports must be captured before the end of the year Whereas however entry into French North Africa is urgent to prevent German penetration, a period of eight or nine months' preparation may well be afforded for the mastering of Dukar and the West African establishments Plans should be set on foot forthwith If sufficient time and preparation are allowed and the proper apparatus provided, these latter operations present no insuperable difficulty

9 Our relations with General de Gaulle and the Free French movement will require to be reviewed. Hitherto the United States have entered into no undertakings similar to those comprised in my correspondence with him. Through no particular fault of his own his movement has created new antagonisms in French minds. Any action which the United States may now feel able to take in regard to him should

have the effect, inter alia, of re-defining our obligations to him and France so as to make these obligations more closely dependent upon the eventual effort by him and the French nation to rehabilitate themselves. If Vichy were to act as we desire about French North Africa, the United States and Great Britain must labour to bring about a reconciliation between the Free French (de Gaullists) and those other Frenchmen who will have taken up arms once more against Germany If, on the other hand, Vichy persists in collaboration with Germany and we have to fight our way into French North and West Africa, then the de Gaullists' movement must be aided and used to the full

the Spaniards will not give the Germans a free passage through Spain to attack Gibialtar and invade North Africa. There may be infiltration, but the formal demand for the passage of an army would be resisted. If so, the winter would be the worst time for the Germans to attempt to force their way through Spain. Moreover, Hitler, with nearly all Europe to hold down by armed force in the face of defeat and semistarvation, may well be chary of taking over unoccupied France and involving himself in bitter guerrilla warfare with the morose, fierce, hungry people of the Iberian peninsula. Everything possible must be done by Britain and the United States to strengthen their will to resist. The present policy of limited supplies should be pursued.

The value of Gibialtar harbour and base to us is so great that no attempts should be made upon the Atlantic islands until either the peninsula is invaded or the Spaniaids give passage to the Germans

offensive effort, the occupation and control by Great Britain and the United States of the whole of the North and West African possessions of France, and the further control by Britain of the whole North African shore from Tunis to Egypt, thus giving, if the naval situation allows, free passage through the Medicinanean to the Levant and the Suez Canal These great objectives can only be achieved if British and American naval and air superiority in the Atlantic is maintained, if supply lines continue uninternipted, and if the British Isles are effectively safeguarded against invasion

#### \* \* \* \* \*

My second paper on the Pacific was was only completed after we had landed

#### PART II

# THE PACIFIC FRONT

20 Dec 41

The Japanese have naval superiority, which enables them to transport troops to almost any desired point, possess themselves of it,

# PROPOSED PLAN AND SEQUENCE OF THE WAR

and establish it for an air-naval fuelling base. The Allies will not have for some time the power to fight a general fleet engagement. Their power of convoying troops depends upon the size of the seas, which reduces the chance of interception. Even without superior sea-power we may descend by surprise here and there. But we could not carry on a sustained operation across the seas. We must expect therefore to be deprived one by one of our possessions and strong-points in the Pacific, and that the enemy will establish himself fairly easily in one after the other, mopping up the local garrisons.

- 2 In this interim period our duty is one of stubborn resistance at each point attacked, and to slip supplies and reinforcements through as opportunity offers, taking all necessary lisks. If our forces resist stubbornly and we reinforce them as much as possible, the enemy will be forced to make ever larger overseas commitments far from home, his shipping resources will be strained, and his communications will provide vulnerable targets upon which all available naval and air forces, United States, British, and Dutch—especially submarines—should concentrate their effort. It is of the utmost importance that the enemy should not acquire large gains cheaply; that he should be compelled to nourish all his conquests and kept extended, and kept burning up his resources.
- 3. The resources of Japan are a wasting factor. The country has long been overstrained by its wasteful war in China They were at their maximum strength on the day of the Pearl Harbour attack If it is true, as Stalin asserts, that they have, in addition to their own Air Force, 1,500 German aeroplanes (and he would have opportunities of knowing how they got there), they have now no means of replacing wastage other than by their small home production of 300/500 per Our policy should be to make them maintain the largest possible number of troops in their conquests overseas, and to keep them as busy as possible, so as to enforce well-filled lines of communication and a high rate of aircraft consumption. If we idle and leave them at ease they will be able to extend their conquests cheaply and easily, work with a minimum of overseas forces, make the largest gains and the smallest commitments, and thus inflict upon us an enormous amount of damage. It is therefore right and necessary to fight them at every point where we have a fair chance, so as to keep them burning and extended
- 4 But we must steadily aim at regaining superiority at sea at the carliest moment. This can be gained in two ways first, by the strengthening of our capital ships. The two new Japanese battleships built free from Treaty limitations must be considered a formidable factor, influencing the whole Pacific theatre. It is understood that two

new American battleships will be fit for action by May Of course. all undertakings in war must be subject to the action of the enemy, accidents, and misfortune, but if our battleship strength should not be further reduced, nor any new unforeseen stress arise, we should hope to place the Nelson and the Rodney at the side of these two new American battleships, making four 16-inch-gun modern vessels of major strength Behind such a squadron the older reconstructed battleships of the United States should be available in numbers sufficient to enable a fleet action, under favourable circumstances, to be contemplated at any time after the month of May The recovery of our naval superiority in the Pacific, even if not brought to a trial of strength, would reassure the whole western seaboard of the American continent, and thus prevent a needless dissipation on a gigantic defensive effort of forces which have offensive parts to play We must therefore set before ourselves, as a main strategic object, the forming of a definitely superior battle fleet in the Pacific, and we must aim at May as the date when this will be achieved

5 Not only then, but in the interval, the warfare of aircraft-carriers should be developed to the greatest possible extent. We are ourselves forming a squadron of three aircraft-carriers, suitably attended, to act in the waters between South Africa, India, and Australia The United States have already seven regular carriers, compared with Japan's ten, but those of the United States are larger To this force of regular warship aircraft-carriers we must add a very large development of improvised carriers, both large and small In this way alone can we increase our sea-power rapidly. Even if the carriers can only fly a dozen machines, they may play their part in combination with other carriers. We ought to develop a floating air establishment sufficient to enable us to acquire and maintain for considerable periods local air superiority over shore-based aircraft and sufficient to cover the landing of troops in order to attack the enemy's new conquests Unless or until this local air superiority is definitely acquired, even a somewhat superior fleet on our side would fight at a serious disadvantage. We cannot get more battleships than those now in sight for the year 1942, but we can and must get more aircraft-carriers. It takes five years to build a battleship, but it is possible to improvise a carrier in six months. Here then is a field for invention and ingeniuty similar to that which called forth the extraordinary fleets and flotillas which fought on the Mississippi in the Civil War must be accepted that the priority given to seaborne aircraft of a suitable type will involve a retardation in the full-scale bombing offensive against Germany which we have contemplated as a major method of waging war. This however is a matter of time and of degree We cannot in 1942 hope to reach the levels of bomb discharge in Germany which we had prescribed for that year, but we shall surpass

# PROPOSED PLAN AND SEQUENCE OF THE WAR

them in 1943 Our joint programme may be late, but it will all come along. And meanwhile the German cities and other targets will not disappear. While every effort must be made to speed up the rate of bomb discharge upon Germany until the great scales prescribed for 1943 and 1944 are reached, nevertheless we may be forced by other needs to face a retardation in our schedules. The more important will it be therefore that in this interval a force, be it only symbolic, of United States bombing squadrons should operate from the British Isles against the German cities and seaports.

The paragraphs which follow, dealing with the acquisition of air bases, with Russian intervention, with convoy protection in the Pacific, and with the use to be made of Singapore, need not be reprinted here. Finally.

shock is over, absorb an unduly large proportion of United States forces. The numbers of troops that we should wish them to use in Europe in 1942 will not be so large as to be prevented by their Pacific operations, limited as these must be What will harm us is for a vast United States Army of ten millions to be created which for at least two years while it was training would absorb all the available supplies and stand idle defending the American continent. The best way of preventing the creation of such a situation and obtaining the proper use of the large forces and ample supplies of munitions which will presently be forthcoming is to enable the Americans to regain their naval power in the Pacific and not to discourage them from the precise secondary overseas operations which they may perhaps contemplate.

\* \* \* \* \*

So many tales have been published of my rooted aversion from large-scale operations on the Continent that it is important that the truth should be emphasised. I always considered that a decisive assault upon the German-occupied countries on the largest possible scale was the only way in which the war could be won, and that the summer of 1943 should be chosen as the target date. It will be seen that the scale of the operation contemplated by me was already before the end of 1941 set at forty armoured divisions and a million other troops as essential for the opening phase. When I notice the number of books which have been written on a false assumption of my attitude on this issue, I feel bound to direct the attention of the reader to the authentic and

responsible documents written at the time, of which other instances will be given as the account proceeds.

#### PART III

# THE CAMPAIGN OF 1943

18 Dec 41

If the operations outlined in Parts I and II should prosper during 1942 the situation at the beginning of 1943 might be as follows.

(a) United States and Great Britain would have recovered effective naval superiority in the Pacific, and all Japanese overseas commitments would be endangered both from the assailing of their communications and from British and American expeditions sent to recover places lost.

(b) The British Isles would remain intact and more strongly pre-

pared against invasion than ever before

(c) The whole West and North African shores from Dakar to the Suez Canal and the Levant to the Turkish frontier would be in Anglo-American hands

Turkey, though not necessarily at war, would be definitely incorporated in the American-British-Russian front. The Russian position would be strongly established, and the supplies of British and American material as promised would have in part compensated for the loss of Russian munitions-making capacity. It might be that a footing would already have been established in Sicily and Italy, with reactions inside

Italy which might be highly favourable

2 But all this would fall hort of bringing the war to an end. The war cannot be ended by driving Japan back to her own bounds and defeating her overseas forces. The war can only be ended through the defeat in Europe of the German armies, or through internal convulsions in Germany produced by the unfavourable course of the war, economic privations, and the Allied bombing offensive. As the strength of the United States, Great Britain, and Russia develops and begins to be realised by the Germans an internal collapse is always possible, but we must not count upon this. Our plans must proceed upon the assumption that the resistance of the German Army and Air Force will continue at its present level and that their U-boat warfare will be conducted by increasingly numerous flotillas.

3 We have therefore to prepare for the liberation of the captive countries of Western and Southern Europe by the landing at suitable points, successively or simultaneously, of British and American armies strong enough to enable the conquered populations to revolt. By themselves they will never be able to revolt, owing to the ruthless counter-measures that will be employed, but if adequate and suitably

equipped forces were landed in several of the following countries, namely, Norway, Denmark, Holland, Belgium, the French Channel coasts and the French Atlantic coasts, as well as in Italy and possibly the Balkans, the German garrisons would prove insufficient to cope both with the strength of the liberating forces and the fury of the revolting peoples. It is impossible for the Germans, while we retain the sea-power necessary to choose the place or places of attack, to have sufficient troops in each of these countries for effective resistance. In particular, they cannot move their armour about laterally from north to south or west to east, either they must divide it between the various conquered countries—in which case it will become hopelessly dispersed—or they must hold it back in a central position in Germany, in which case it will not arrive until large and important lodgments have been made by us from overseas

4 We must face here the usual clash between short-term and long-term projects. War is a constant struggle and must be waged from day to day. It is only with some difficulty and within limits that provision can be made for the future. Experience shows that forecasts are usually falsified and preparations always in arrear. Nevertheless, there must be a design and theme for bringing the war to a victorious end in a reasonable period. All the more is this necessary when under modern conditions no large-scale offensive operation can be launched without the preparation of elaborate technical apparatus.

5 We should therefore face now the problems not only of driving Japan back to her homelands and regaining undisputed mastery in the Pacific, but also of liberating conquered Europe by the landing during the summer of 1943 of United States and British armies on their shores Plans should be prepared for the landing in all of the countries mentioned above. The actual choice of which three or four to pick should be deferred as long as possible, so as to profit by the turn of events and make sure of secrecy.

- 6 In principle, the landings should be made by armoured and mechanised forces capable of disembarking not at ports but on beaches, either by landing-craft or from ocean-going ships specially adapted. The potential front of attack is thus made so wide that the German forces holding down these different countries cannot be strong enough at all points. An amphibious outfit must be prepared to enable these large-scale disembarkations to be made swiftly and surely. The vanguards of the various British and American expeditions should be marshalled by the spring of 1943 in Iceland, the British Isles, and, if possible, in French Morocco and Egypt. The main body would come direct across the ocean.
  - 7. It need not be assumed that great numbers of men are required.

If the incursion of the armoured formations is successful, the uprising of the local population, for whom weapons must be brought, will supply the corpus of the liberating offensive. Forty armoured divisions, at 15,000 men apiece, or their equivalent in tank brigades, of which Great Britain would try to produce nearly half, would amount to 600,000 men. Behind this armour another million men of all arms would suffice to wrest enormous territories from Hitler's domination. But these campaigns, once started, will require nourishing on a lavish scale. Our industries and training establishments should by the end of 1942 be running on a sufficient scale.

- 8 Apart from the command of the sea, without which nothing is possible, the essential for all these operations is superior air-power. and for landing purposes a large development of carrier-borne aircraft will be necessary This however is needed anyhow for the war in 1942 In order to wear down the enemy and hamper his counterpreparations, the bombing offensive of Germany from England and of Italy from Malta, and if possible from Tripoli and Tunis, must reach the highest possible scale of intensity. Considering that the British first-line an strength is already slightly superior to that of Germany, that the Russian Air Force has already established a superiority on a large part of the Russian front and may be considered to be three-fifths the first-line strength of Germany, and that the United States resources and future development are additional, there is no reason why a decisive mastery of the air should not be established even before the summer of 1943, and meanwhile heavy and continuous punishment [be] inflicted upon Germany Having regard to the fact that the bombing offensive is necessarily a matter of degree and that the targets cannot be moved away, it would be right to assign priority to the fighter and torpedo-carrying aircraft required for the numerous carriers and improvised carriers which are available or must be brought into existence.
- 9 If we set these tasks before us now, being careful that they do not trench too much upon current necessities, we might hope, even if no German collapse occurs beforehand, to win the war at the end of 1943 or 1944. There might be advantage in declaring now our intention of sending armies of liberation into Europe in 1943. This would give hope to the subjugated peoples and prevent any truck between them and the German invaders. The setting and keeping in movement along our courses of the minds of so many scores of millions of men is in itself a potent atmospheric influence.

I read this paper during our voyage to the Chiefs of Staff on the day it was written. The following is from the note of our conference.

# PROPOSED PLAN AND SEQUENCE OF THE WAR

The Prime Minister said he wished the Chiefs of Staff to examine the whole of this note, which he intended to use as the basis of his conversations with the President. He thought it important to put before the people of both the British Empire and the United States the mass invasion of the continent of Europe as the goal for 1943. In general the three phases of the war could be described as

(1) Closing the ring

(11) Liberating the populations

(in) Final assault on the German citadel

I found my professional colleagues in full agreement with these views, and generally with those set forth in the other papers, which indeed summed up the results of our joint study and discussion of the war problem as it had now shaped itself

\* \* \* \* \*

Reviewing these three documents, with which, in the afterlight, and taken as a whole, I am content, it will be seen that they bear a very close correspondence to what was actually done by Britain and the United States during the campaigns of 1942 and 1943. I eventually obtained the President's agreement to the expedition to North-West Africa (Operation "Torch"), which constituted our first great joint amphibious offensive. It was my earnest desire that the crossing of the Channel and the liberation of France (the operation then called "Round-up", which was subsequently changed to "Overlord") should take place in the summer of 1943.

While however it is vital to plan the future, and sometimes possible to forecast it in certain respects, no one can help the time-table of such mighty events being deranged by the actions and counter-strokes of the enemy. All the objectives in these memoranda were achieved by the British and United States forces in the order here set forth. My hopes that General Auchinleck would clear Libya in February 1942 were disappointed. He underwent a series of grievous reverses which will presently be described. Hitler, perhaps encouraged by this success, determined upon a large-scale effort to fight for Tunis, and presently moved above two hundred thousand fresh troops thither through Italy and across the Mediterranean. The British and American Armies therefore became involved in a larger and longer campaign in North Africa than I had contemplated. A delay of four months

was for this reason enforced upon the time-table. The Anglo-American Allies did not obtain control of "the whole of the North and West African possessions of France, and the further control by Britain of the whole North African shore from Tunis to Egypt", by the end of 1942 (Part I, para. 11). We obtained these results only in May 1943 The supreme plan of crossing the Channel to liberate France, for which I had earnestly hoped and worked, could not therefore be undertaken that summer, and was perforce postponed for one whole year, till the summer of 1944

Subsequent reflection and the full knowledge we now possess have convinced me that we were fortunate in our disappointment. The year's delay in the expedition saved us from what would at that date have been at the best an enterprise of extreme hazard. with the probability of a world-shaking disaster. If Hitler had been wise he would have cut his losses in North Africa and would have met us in France with double the strength he had in 1944. before the newly raised American armies and staffs had reached their full professional maturity and excellence, and long before the enormous armadas of landing-craft and the floating harbours (Mulberries) had been specially constructed. I am sure now that even if Operation "Torch" had ended as I hoped in 1942, or even if it had never been tried, the attempt to cross the Channel in 1943 would have led to a bloody defeat of the first magnitude. with measureless reactions upon the result of the war. I became increasingly conscious of this during the whole of 1943, and therefore accepted as inevitable the postponement of "Overlord", while fully understanding the vexation and anger of our Soviet Ally.

Once it became certain that we could not cross the Channel till 1944 the need of forcing the campaign in the Mediterranean was clear. Only by landing in Sicily and Italy could we engage the enemy on a large scale and tear down the weaker at least of the Axis partners. It was for the express purpose of securing this decision that I obtained the President's consent for General Marshall to come with me from Washington to Algiers in May 1943. All this will be recounted in detail as the actual events

occur

# CHAPTER XXXV

# WASHINGTON AND OTTAWA

Arrival at the White House – A Hearty Welcome – A Whirl of Business – Anglo-American Intervention in French North Africa – My Report to the War Cabinet of Our First Discussion – Design of the Grand Alliance – Mr. Hull and the Free French – Mr. Knox and Wake Island – Australian Anxieties – My Report to Mr Curtin of December 25 – Christmas at the White House – I Address Congress – An Impressive Experience on Boxing Day – The South-West Pacific Command – General Wavell Appointed – An Unpromising Task – I Prolong my Stay – Journey to Ottawa – Address to the Canadian Parliament, December 30 – Sir Harry Lauder – A Forecast of the War Future – New Year's Eve in the Train.

Thad been intended that we should steam up the Potomac and motor to the White House, but we were all impatient after nearly ten days at sea to end our journey. We therefore arranged to fly from Hampton Roads, and landed after dark on December 22 at the Washington airport. There was the President waiting in his car. I clasped his strong hand with comfort and pleasure. We soon reached the White House, which was to be in every sense our home for the next three weeks. Here we were welcomed by Mrs. Roosevelt, who thought of everything that could make our stay agreeable.

I must confess that my mind was so occupied with the whirl of events and the personal tasks I had to perform that my memory till refreshed had preserved but a vague impression of these days. The outstanding feature was of course my contacts with the President. We saw each other for several hours every day, and lunched always together, with Harry Hopkins as a third. We talked of nothing but business, and reached a great measure of agreement on many points, both large and small. Dinner was a

more social occasion, but equally members and microscopy President punctiliously made the preliminary cocktails himself. and I wheeled him in his chair from the drawing-room to the lift as a mark of respect, and thinking also of Sir Walter Raleigh spreading his cloak before Queen Elizabeth I formed a very strong affection, which grew with our years of comradeship, for this formidable politician who had imposed his will for nearly ten years upon the American scene, and whose heart seemed to respond to many of the impulses that stirred my own both, by need or habit, were forced to do much of our work in bed, he visited me in my room whenever he felt inclined, and encouraged me to do the same to him. Hopkins was just across the passage from my bedroom, and next door to him my travelling map room was soon installed. The President was much interested in this institution, which Captain Pim had perfected. He liked to come and study attentively the large maps of all the theatres of war which soon covered the walls, and on which the movement of fleets and armies was so accurately and swiftly recorded. It was not long before he established a map room of his own of the highest efficiency.

The days passed, counted in hours. Quite soon I realised that immediately after Christmas I must address the Congress of the United States, and a few days later the Canadian Parliament in Ottawa These great occasions imposed heavy demands on my life and strength, and were additional to all the daily consultations and mass of current business. In fact, I do not know how I got through it all.

\* \* \* \* \*

A record has been preserved of our first discussion on the night of the 22nd. I immediately broached with the President and those he had invited to join us the scheme of Anglo-American intervention in French North Africa. The President had not of course at this time read the papers I had written on board ship, which I could not give him till the next day But he had evidently thought much about my letter of October 20. Thus we all found ourselves pretty well on the same spot. My report home shows that we cut deeply into business on the night of our arrival

Prime Minister to the War Cabinet and COS Committee 23 Dec 41
The President and I discussed the North African situation last

Beaverbrook, and Lord Halifax also took part in the discussion

- 2. There was general agreement that if Hitler was held in Russia he must try something else, and that the most probable line was Spain and Portugal en route to North Africa Our success in Libya and the prospect of joining hands with French North African territory was another reason to make Hitler want, if he could, to get hold of Morocco as quickly as possible. At the same time, reports did not seem to suggest threat was imminient, perhaps because Hitler had enough on hand at the moment.
- 3. There was general agreement that it was vital to forestall the Germans in North-West Africa and the Atlantic islands. In addition to all the other reasons, the two French battleships, Jean Bart and Richelieu, were a real prize for whoever got them. Accordingly, the discussion was not whether, but how
  - 4 Various suggestions were made:
    - (a) The United States Government might speak in very serious and resolute terms to Vichy, saying that this was final chance for them to reconsider their positions and come out on the side that was pledged to restoration of France As a symbol of this Pétain might be invited to send Weygand to represent him at an Allied conference in Washington
    - (b) An approach might be made to Weygand in the light of a North African situation fundamentally changed by British advance and by United States entering into war and their willingness to send a force to North Africa.
- 5 It was suggested, on the other hand, that the effect of such procedure might be to extract smooth promises from Pétain and Weygand, the Germans meanwhile being advised of our intentions, and that, accordingly, if these approaches were to be made, it would be desirable to have all plans made for going into North Africa, with or without invitation.\* I emphasised immense psychological effect likely to be produced both in France and among French troops in North Africa by association of United States with the undertaking Mr Hull suggested that it might well be that a leader would emerge in North Africa as events developed.

The President said that he was anxious that American land forces should give their support as quickly as possible wherever they could be most helpful, and favoured the idea of a plan to move into North Africa being prepared for either event, i.e., with or without invitation

6. It was agreed to remit the study of the project to Staffs on

<sup>\*</sup> Author's stalics

that the Libyan campaign had, as it was expected to do, achieved complete success. It was recognised that the question of shipping was plainly a most important factor.

7. I gave an account of the progress of fighting in Libya, by which the President and other Americans were clearly much impressed and

cheered

8. In the course of conversation the President mentioned that he would propose at forthcoming conference that United States should relieve our troops in Northern Ireland, and spoke of sending three or four divisions there. I warmly welcomed this, and said I hoped that one of the divisions would be an armoured division. It was not thought that this need conflict with preparations for a United States force for North Africa.

\* \* \* \*

The first major design which was presented to me a day or two later by the President was the drawing up of a solemn Declaration to be signed by all the nations at war with Germany and Italy, or with Japan. The President and I, repeating our methods in framing the Atlantic Charter, prepared drafts of the Declaration and blended them together. In principle, in sentiment, and indeed in language, we were in full accord At home the War Cabinet was at once surprised and thrilled by the scale on which the Grand Alliance was planned. There was much rapid correspondence, and some difficult points arose about what Governments and authorities should sign the Declaration, and also on the order of precedence. We gladly accorded the first place to the United States. The War Cabinet very rightly did not wish to include India as a separate sovereign Power. Mr Hull was opposed to the insertion of the word "authorities" by which I meant to cover the Free French, at that time in disgrace with the State Department.

This was the first time I had met Mr. Cordell Hull, with whom I had several conversations He did not seem to me to have full access at the moment to the President. I was struck by the fact that, amid gigantic events, one small incident seemed to dominate his mind. Before I left England General de Gaulle had informed us that he wished to liberate the islands of St. Pierre and Miquelon, which were held by the Vichy Governor, Admiral Robert The Free French naval forces were quite capable of doing this, and the Foreign Office saw no objection. However, as it appeared later on, the American State Department wished the occupation

to be made of a comment

Gaulle to refrain, and he certainly said he would do so. Nevertheless he ordered his Admiral Muselier to take the islands. The Free French sailors were received with enthusiasm by the people, and a plebiscite showed a 90 per cent. majority against Vichy.

This made no impression on Mr. Hull. He considered that the policy of the State Department had been affronted. He issued a statement on Christmas Day saying, "Our preliminary report shows that the action taken by the so-called \* Free French ships at St. Pierre and Miquelon was an arbitrary action contrary to the agreement of all parties concerned, and certainly without the prior knowledge or consent in any sense of the United States Government." He wanted to turn the Free French out of the islands they had liberated from Vichy. But American opinion ran hard the other way. They were delighted in this grave hour that the islands had been liberated, and that an obnoxious radio station which was spreading Vichy lies and poison throughout the world, and might well give secret signals to U-boats now hunting United States ships, should be squelched. The phrase "so-called Free French" was almost universally resented.

Mr Hull, whose sterling qualities I recognised, and for whom I entertained the highest respect, in my opinion pushed what was little more than a departmental point far beyond its proportions. The President in our daily talks seemed to me to shrug his shoulders over the whole affair. After all, quite a lot of other annoyances were on us or coming upon us. Strongly urged by our Foreign Office, I supported General de Gaulle and "so-called" Free France. Chapters have been written about this incident in various American and French books, but it did not at all affect our main discussions.

\* \* \* \*

One afternoon Mr Knox, Secretary for the Navy, came into my room in great distress. He said, "You have had plenty of disasters I would like you to tell me how you feel about the following. We ordered our fleet to fight a battle with the Japanese to relieve Wake Island, and now within a few hours of steaming the Admiral has decided to turn back. What would you do with your Admiral in a case like this?" I replied, "It is dangerous to meddle with Admirals when they say they can't do

591

20

<sup>\*</sup> Author's stalics

tnings. They have always got the weather or fuel or something to argue about" Wake Island fell that day, having been desperately defended by a handful of United States Marines, who inflicted far heavier losses than their own numbers upon the Japanese before they were killed or captured.

\* \* \* \*

Every allowance must be made for the state of mind into which the Australian Government were thrown by the hideous efficiency of the Japanese war machine. The command of the Pacific was lost, their three best divisions were in Egypt and a fourth at Singapore They realised that Singapore was in deadly peril, and they feared an actual invasion of Australia itself. All their great cities, containing more than half the whole population of the continent, were on the sea-coast A mass exodus into the interior and the organising of a guerrilla without arsenals or supplies stared them in the face Help from the Mother Country was far away, and the power of the United States could only slowly be established in Australasian waters. I did not myself believe that the Japanese would invade Australia across three thousand miles of ocean, when they had so much alluring prey in their clutch in the Dutch East Indies and Malaya The Australian Cabinet saw the scene in a different light, and deep forebodings pressed upon them all. Even in these straits they maintained their party divisions rigidly The Labour Government majority was only two They were opposed to compulsory service even for Home Defence. Although the Opposition was admitted to the War Council no National Government was formed.

I cabled to Mr Curtin as follows:

Prime Minister to Prime Munster of Australia

25 Dec 41

On Japan coming into the war we diverted at once the 18th British Division, which was rounding the Cape in American transports, with President's permission, to Bombay and Ceylon, and Mr Roosevelt has now agreed that the leading [British] brigade in the United States transport Mount Vernon should proceed direct to Singapore We cancelled the move of the 17th Indian Division from India to Persia, and this division is now going to Malaya A week ago I wirelessed from the ship to London to suggest that you recall one Australian division from Palestine either into India to replace other troops sent forward or to go direct, if it can be arranged, to Singapore I have

up the forces needed for the defence of Singapore and Johore approaches in attempting to defend the northern part of the Malay peninsula. They will fall back slowly, fighting delaying action and

destroying communications

2 The heavy naval losses which the United States and we have both sustained give the Japanese the power of landing large reinforcements, but we do not share the view expressed in your telegram to Mr Casey of December 24 that there is the danger of early reduction of Singapore fortress, which we are determined to defend with the utmost tenacity

3. You have been told of the air support which is already on the way. It would not be wise to loose our grip on Rommel and Libya by taking away forces from General Auchinleck against his judgment just when victory is within our grasp. We have instructed Commanders-in-Chief Middle East to concert a plan for sending fighters and tanks to Singapore immediately the situation in Libya permits.

- 4 I and the Chiefs of Staff are in close consultation with the President and his advisers, and we have made encouraging progress. Not only are they impressed with the importance of maintaining Singapore, but they are anxious to move a continuous flow of troops and aircraft through Australia for the relief of the Philippine Islands, if that be possible. Should the Philippine Islands fall the President is agreeable to troops and aircraft being diverted to Singapore. He is also quite willing to send substantial United States forces to Australia, where Americans are anxious to establish important bases for the war against Japan. General Wavell has been placed in command of Burma as well as India, and instructed to feed reinforcements arriving in India to Malayan and Burmese fronts. He, like everyone else, recognises the paramount importance of Singapore. General Pownall has now arrived. He is a highly competent Army officer.
- 5. You may count on my doing everything possible to strengthen the whole front from Rangoon to Port Darwin I am finding co-operation from our American allies. I shall wire more definitely in a day or two

\* \* \* \* \*

Simple festivities marked our Christmas. The traditional Christmas tree was set up in the White House garden, and the President and I made brief speeches from the balcony to enormous crowds gathered in the gloom. I venture to reprint here the words that I used, as they seemed to rise so naturally in my mind on this occasion and in these surroundings.

my family, yet I cannot truthfully say that I feel far from home Whether it be the ties of blood on my mother's side, or the friendships I have developed here over many years of active life, or the commanding sentiment of comradeship in the common cause of great peoples who speak the same language, who kneel at the same altars, and, to a very large extent, pursue the same ideals, I cannot feel inyself a stranger here in the centre and at the summit of the United States I feel a sense of unity and fraternal association which, added to the kindliness of your welcome, convinces me that I have a right to sit at your fireside and share your Christmas joys

This is a strange Christmas Eve. Almost the whole world is locked in deadly struggle, and, with the most terrible weapons which science can devise, the nations advance upon each other. Ill would it be for us this Christmastide if we were not sure that no greed for the land or wealth of any other people, no vulgar ambition, no morbid lust for material gain at the expense of others, had led us to the field. Here, in the midst of war, raging and roaring over all the lands and seas, creeping nearer to our hearths and homes, here, amid all the tumult, we have to-night the peace of the spirit in each cottage home and in every generous heart. Therefore we may cast aside for this night at least the cares and dangers which beset us, and make for the children an evening of happiness in a world of storm. Here, then, for one night only, each home throughout the English-speaking world should be a brightly lighted island of happiness and peace.

Let the children have their night of fun and laughter. Let the gifts of Father Christmas delight their play. Let us grown-ups share to the full in their unstinted pleasures before we turn again to the stern task and the formidable years that he before us, resolved that, by our sacrifice and daring, these same children shall not be robbed of their inheritance or denied their right to live in a free and decent world

And so, in God's mercy, a happy Christmas to you all

The President and I went to church together on Christmas Day, and I found peace in the simple service and enjoyed singing the well-known hymns, and one, "O little town of Bethlehem", I had never heard before Certainly there was much to fortify the faith of all who believe in the moral governance of the universe

It was with heart-stirrings that I fulfilled the invitation to address the Congress of the United States The occasion was important for what I was sure was the all-conquering alliance of

the English-speaking peoples. . .....

Parliament before Yet to me, who could trace unbroken male descent on my mother's side through five generations from a lieutenant who served in George Washington's army, it was possible to feel a blood-right to speak to the representatives of the great Republic in our common cause. It certainly was odd that it should all work out this way, and once again I had the feeling, for mentioning which I may be pardoned, of being used, however unworthy, in some appointed plan.

I spent a good part of Christmas Day preparing my speech. The President wished me good luck when on December 26 I set out in the charge of the leaders of the Senate and House of Representatives from the White House to the Capitol. There seemed to be great crowds along the broad approaches, but the security precautions, which in the United States go far beyond British custom, kept them a long way off, and two or three motor-cars filled with armed plain-clothes policemen clustered around as escort. On getting out I wished to walk up to the cheering masses in a strong mood of brotherhood, but this was not allowed Inside the scene was impressive and formidable, and the great semicircular hall, visible to me through a grille of microphones, was thronged

I must confess that I felt quite at home, and more sure of myself than I had sometimes been in the House of Commons. What I said was received with the utmost kindness and attention. I got my laughter and applicate just where I expected them. The loudest response was when, speaking of the Japanese outrage, I asked, "What sort of people do they think we are?" The sense of the might and will-power of the American nation streamed up to me from the august assembly. Who could doubt that all would

be well?

I ended thus.

Members of the Senate and members of the House of Representatives, I turn for one moment more from the turmoil and convulsions of the present to the broader basis of the future. Here we are together facing a group of mighty foes who seek our ruin, here we are together defending all that to free men is dear. Twice in a single generation the catastrophe of world war has fallen upon us, twice in our lifetime has the long arm of Fate reached across the ocean to bring the United States into the forefront of the battle. If we had kept together after

the last war, if we had taken common measures for our safety, this

renewal of the curse need never have fallen upon us

Do we not owe it to ourselves, to our children, to mankind tormented, to make sure that these catastrophes shall not engulf us for the third time? It has been proved that pestilences may break out in the Old World which carry their destructive ravages into the New World, from which, once they are afoot, the New World cannot by any means escape. Duty and prudence alike command, first, that the germ-centres of hatred and revenge should be constantly and vigilantly surveyed and treated in good time, and, secondly, that an adequate organisation should be set up to make sure that the pestilence can be controlled at its earliest beginnings before it spreads and rages throughout the entire earth.

Five or six years ago it would have been easy, without shedding a drop of blood, for the United States and Great Britain to have insisted on fulfilment of the disarmament clauses of the treaties which Germany signed after the Great War, that also would have been the opportunity for assuring to Germany those raw materials which we declared in the Atlantic Charter should not be denied to any nation, victor or vanquished That chance has passed. It is gone. Prodigious hammerstrokes have been needed to bring us together again, or, if you will allow me to use other language, I will say that he must indeed have a blind soul who cannot see that some great purpose and design is being worked out here below, of which we have the honour to be the faithful servants It is not given to us to peer into the mysteries of the future Still, I avow my hope and faith, sure and inviolate, that in the days to come the British and American peoples will for their own safety and for the good of all walk together side by side in majesty, in justice, and in peace.

Afterwards the leaders came along with me close up to the crowds which surrounded the building, so that I could give them an intimate greeting, and then the Secret Service men and their cars closed round and took me back to the White House, where the President, who had listened in, told me I had done quite well.

\* \* \* \* \*

At Washington intense activity reigned. During these days of continuous contact and discussion I gathered that the President with his staff and his advisers was preparing an important proposal for me. In the military as in the commercial or production spheres the American mind runs naturally to broad, sweeping, logical conclusions on the largest scale. It is on these that they

foundation has been planned on true and comprehensive lines all other stages will follow naturally and almost inevitably. The British mind does not work quite in this way. We do not think that logic and clear-cut principles are necessafily the sole keys to what ought to be done in swiftly changing and indefinable situations. In war particularly we assign a larger importance to opportunism and improvisation, seeking rather to live and conquer in accordance with the unfolding event than to aspire to dominate it often by fundamental decisions. There is room for much argument about both views. The difference is one of emphasis, but it is deep-seated.

Harry Hopkins said to me, "Don't be in a hurry to turn down the proposal the President is going to make to you before you know who is the man we have in mind." From this I saw that the question of forming a supreme Allied command in South-East Asia and drawing boundary lines was approaching

The next day I was told that the Americans proposed that Wavell should be chosen I was complimented by the choice of a British commander, but it seemed to me that the theatre in which he would act would soon be overrun and the forces which could be placed at his disposal would be destroyed by the Japanese onslaught I found that the British Chiefs of Staff, when apprised, had the same reaction

I am recorded as saying to them at a meeting on December 26 that I was not at all convinced that this arrangement was either workable or desirable "The situation out there was that certain particular strategic points had to be held, and the commander in each locality was quite clear as to what he should do The difficult question was the application of resources arriving in the area. This was a matter which could only be settled by the Governments concerned" Nevertheless it was evident that we must meet the American view

\* \* \* \* \*

M1. Attlee sent me his own and the Cabinet's congratulations on my speech to Congress, and in reply I opened to him the question of the South-West Pacific Command

Prime Minister to Lord Privy Seal 28 Dec 41
Am so glad you were pleased Welcome was extraordinary

Work here is most strenuous. 10-uay for five hours and received representatives of all other Allied or friendly Powers and British Dominions, and made heartening statements to them My talks with President increasingly intimate and friendly Beaverbrook

also had great success with him on the supply side.

2. Question of unity of command in South-West Pacific has assumed urgent form. Last night President urged upon me appointment of a single officer to command Army, Navy, and Air Force of Britain, America, and Dutch, and this morning General Marshall visited me at my request and pleaded case with great conviction American Navy authorities take opposite view, but it is certain that a new far-reaching arrangement will have to be made. The man President has in mind is General Wavell. Marshall has evidently gone far into detailed scheme and has draft letter of instructions. So far I have been critical of plan, and while admiring broadmindedness of offer have expressed anxiety about effects on American opinion. Chiefs of Staff have been studying matter all day, and to-night I will send you my considered advice after receiving their views

3 I leave to-morrow afternoon for Ottawa, staying two clear days and addressing Canadian Parliament on Tuesday, then back here for another three or four days, as there is so much to settle We are making great exertions to find shipping necessary for the various troop movements required. My kindest regards to all colleagues. It is a great

comfort to act on such a sure foundation.

Marshall

Before I could receive any considered advice from home it was necessary to meet the urgent wishes of the President and General Marshall Events were moving too fast for lengthy discussions across the Atlantic I passed the 28th in conference with the President and in drafting with my staff the series of telegrams which follow, and tell the tale in carefully weighed words

Prime Minister to Lord Privy Seal

I have agreed with President, subject to Cabinet approval, that we should accept his proposals, most strongly endorsed by General

(a) That unity of command shall be established in South-Western Pacific Boundaries are not yet finally settled, but presume they would include Malay peninsula, including Burmese front, to Philippine Islands, and southwards to necessary supply bases, principally Port Darwin, and supply line in Northern Australia

(b) That General Wavell should be appointed Commander-in-Chief, or if preferred Supreme Commander, of all United and air who may be assigned by Governments concerned to that theatre

(c) General Wavell, whose headquarters should in first instance be established at Surabaya, would have American officer as Deputy Commander-in-Chief. It seems probable General Brett would be chosen

(d) That American, British, Australian, and Dutch naval forces in the theatre should be placed under the command of American admiral, in accordance with general principle set forth in

paragraphs (a) and (b)

(e) It is intended General Wavell should have a Staff in the South Pacific portion, as Foch's High Control Staff was to the great Staffs of British and French Armies in France. He would receive his orders from an appropriate Joint Body, who will be responsible to me as Minister of Defence and to President of the United States, who is also Commander-in-Chief of all United States forces.

(f) Principal commanders comprised in General Wavell's sphere will be Commander-in-Chief Burma, Commander-in-Chief Singapore and Malaya, Commander-in-Chief Netherlands East Indies, Commander-in-Chief Philippines, and Commander-in-Chief of Southern Communications via South Pacific and North Australia

(g) India, for which an acting Commander-in-Chief will have to be appointed, and Australia, who will have their own Commander-in-Chief, will be outside General Wavell's sphere, except as above mentioned, and are two great bases through which men and material from Great Britain and Middle East on the one hand and the United States on the other can be moved into the fighting zone

(h) United States Navy will remain responsible for the whole Pacific Ocean east of Philippine Islands and Australasia, in-

cluding United States approaches to Australasia

(1) A letter of instruction is being drafted for Supreme Commander safeguarding the necessary residuary interests of various Governments involved and prescribing in major outline his tasks. This draft will reach you shortly

2. I have not attempted to argue case for and against our accepting this broadminded and selfless American proposal, of merits of which as a war-winner I have become convinced Action is urgent, and may perhaps have to be taken even before my returning from Canada on January 1. Australia, New Zealand, and Dutch will of course have

to be consulted, but this should not be done until I have been instructed by hearing views of War Cabinet Meanwhile staff here will be working upon details on assumption that all consents will be obtained.

Prime Minister to Lord Privy Seal 29 Dec 41

Things have moved very quickly. The President has obtained the agreement of the American War and Navy Departments to the ariangement proposed in my last telegram, and the Chiefs of Staff Committee have endoised it. I therefore anxiously await your approval. The President will address the Dutch the moment I tell him you agree. Foreign Office should follow suit.

You should also dispatch the following telegram to General Wavell Staffs here are working on details both by themselves and with Americans Position of Duft Cooper's mission requires to be reviewed, and in any case must not complicate these larger solutions Please

give me your ideas

I must rely on you to keep the King informed at every angle and obtain his approval

The offer which I had to make to General Wavell was certainly one which only the highest sense of duty could induce him to accept. It was almost certain that he would have to bear a load of defeat in a scene of confusion.

Prime Minister to Lord Privy Seal

29 Dcc 41

Pray send following to General Wavell when Cabinet have approved

general policy

The President and his military and naval advisers have impressed upon me the urgent need for unified command in South-West Pacific, and it is unanimously desired, pressed particularly by President and General Maishall, that you should become Supreme Commander of Allied forces by land, air, and sea assigned to that theatre. The letter of instructions referred to is being diafted, the terms of which will be issued shortly. While I hope these terms will set your mind at ease on the various unprecedented points involved, I should of course be ready to receive your observations upon them.

2 I feel sure you will value the confidence which is shown in you, and I request you to take up your task forthwith Matters are so urgent that details which are being studied by the Chiefs of Staff Committee must not delay the public announcement, which must be

made, at latest, Thursday, January 1

3. You are the only man who has the experience of handling so many different theatres at once, and you know we shall back you up and see you have fair play. Everyone knows how dark and difficult

been made by his desire.

4. Pray let me know your ideas as to Staff, which will be essentially a front Staff rather than an actual handling body. If you like to take Pownall as your Chief of Staff Percival might discharge the duties of Singapore and Malaya Commander.

### \* \* \* \* \*

On December 27 I had sent the following telegram to Mr Attlee:

Prime Minister to Lord Privy Seal 27 Dec 41

Thank you so much for agreeing to lengthen my stay

On Tuesday, December 30, I am addressing the Canadian House of Commons Utterly impossible to lay another egg [1e, deliver a speech in the House of Commons] so early as the New Year.

I travelled by the night train of December 28-29 to Ottawa, to stay with Lord Athlene, the Governor-General. On the 29th I attended a meeting of the Canadian War Cabinet. Thereafter Mr. Mackenzie King, the Prime Minister, introduced me to the leaders of the Conservative Opposition, and left me with them These gentlemen were unsurpassed in loyalty and resolution, but at the same time they were rueful not to have the honour of waging the war themselves, and at having to listen to so many of the sentiments which they had championed all their lives expressed by their Liberal opponents.

On the 30th I spoke to the Canadian Parliament. The preparation of my two transatlantic speeches, transmitted all over the world, amid all the flow of executive work, which never stopped, was an extremely hard exertion. Delivery is no serious burden to a hard-bitten politician, but choosing what to say and what not to say in such an electric atmosphere is anxious and harassing. I did my best. The most successful point in the Canadian speech was about the Vichy Government, with whom Canada was still

ın relations.

It was their duty [in 1940] and it was also their interest to go to North Africa, where they would have been at the head of the French Empire. In Africa, with our aid, they would have had overwhelming sea-power. They would have had the recognition of the United States, and the use of all the gold they had lodged beyond the seas. If they had done this Italy might have been driven out of the war

nation in the councils of the Allies and at the conference table of the victors. But their generals misled them When I warned them that Britain would fight on alone whatever they did, their generals told their Prime Minister and his divided Cabinet, "In three weeks England will have her neck wrung like a chicken." Some chicken! Some neck!

This went very well. I quoted, to introduce a retrospect, Sir Harry Lauder's song of the last war which began:

If we all look back on the history of the past We can just tell where we are.

The words "that grand old comedian" were on my notes On the way down I thought of the word "minstrel". What an improvement! I rejoice to know that he was listening and was delighted at the reference. I am so glad I found the right word for one who, by his inspiring songs and valiant life, rendered measureless service to the Scottish race and to the British Empire.

At the end of the speech I ventured to attempt a forecast of the war future

We may observe three main periods or phases of the struggle that lies before us. First there is the period of consolidation, of combination, and of final preparation. In this period, which will certainly be marked by much heavy fighting, we shall still be gathering our strength, resisting the assaults of the enemy, and acquiring the necessary overwhelming air superiority and shipping tonnage to give our armies the power to traverse, in whatever numbers may be necessary, the seas and oceans which, except in the case of Russia, separate us from our focs. It is only when the vast shipbuilding programme on which the United States has already made so much progress, and which you are powerfully aiding, comes into full flood that we shall be able to bring the whole force of our manhood and of our modern scientific equipment to bear upon the enemy. How long this period will last depends upon the vehemence of the effort put into production in all our war industries and shippards

The second phase which will then open may be called the phase of liberation. During this phase we must look to the recovery of the territories which have been lost or which may yet be lost, and also we must look to the revolt of the conquered peoples from the moment that the rescuing and liberating armies and an forces appear in strength within their bounds. For this purpose it is imperative that no nation or region overrun, that no Government or State which has been con-

the day of deliverance The invaders, be they German or Japanese, must everywhere be regarded as infected persons to be shunned and isolated as far as possible Where active resistance is impossible passive resistance must be maintained. The invaders and tyrants must be made to feel that their flecting triumphs will have a terrible reckoning, and that they are hunted men and that their cause is doomed. Particular punishment will be reserved for the Quislings and traitors who make themselves the tools of the enemy. They will be handed over to the judgment of their fellow-countrymen.

There is a third phase which must also be contemplated, namely, the assault upon the citadels and the home-lands of the guilty Powers

both in Europe and in Asia

Thus I endeavour in a few words to cast some forward light upon the dark, inscrutable mysteries of the future. But in thus forecasting the course along which we should seek to advance we must never forget that the power of the enemy, and the action of the enemy, may at every stage affect our fortunes. Moreover, you will notice that I have not attempted to assign any time-limits to the various phases. These time-limits depend upon our exertions, upon our achievements, and on the hazardous and uncertain course of the war

I was lucky in the timing of these speeches in Washington and Ottawa. They came at the moment when we could all rejoice at the creation of the Grand Alliance, with its overwhelming potential force, and before the cataract of rum fell upon us from the long, marvellously prepared assault of Japan. Even while I spoke in confident tones I could feel in anticipation the lashes which were soon to score our naked flesh. Fearful forfeits had to be paid not only by Britain and Holland but by the United States, in the Pacific and Indian Oceans, and in all the Asiatic lands and islands they lap with their waves. An indefinite period of military disaster lay certainly before us. Many dark and weary months of defcat and loss must be endured before the light would come again. When I returned in the train to Washington on New Year's Eve I was asked to go into the carriage filled with many leading Pressmen of the United States. It was with no illusions that I wished them all a glorious New Year. "Here's to 1942. Here's to a year of toil-a year of struggle and peril, and a long step forward towards victory. May we all come through safe and with honoui!"

### CHAPTER XXXVI

# ANGLO-AMERICAN ACCORDS

Signing of the United Nations Pact – Litvinov's Fears – American Troops for Northern Ireland – Report of January 3 to the War Cabinet – The Combined Chiefs of Staff Committee – Its Smooth Efficiency – The Russians Not Represented On It – Special Position of Sir John Dill – Lord Beaverbrook's "Ferment" – The American "History of the War Production Board" – Vast Expansion of American Supplies – And of Output of Merchant Shipping – Repose at Palm Beach – Effective Secrecy – Bad News from Alexandria – The Italian "Human Torpedoes" – Our Mediterranean Battle Fleet Out of Action – Air Reinforcements for Egypt – Untimely Proposals about Indian Self-Government – Russia and the Baltic States – My Telegram to Mr. Eden, January 8 – Wendell Willkie: an Amusing Incident – Back to the White House.

N my return to the White House all was ready for the signature of the United Nations Pact. Many telegrams had passed between Washington, London, and Moscow, but now all was settled. The President had exerted his most fervent efforts to persuade Litvinov, the Soviet Ambassador, newly restored to favour by the turn of events, to accept the phrase "religious freedom". He was invited to luncheon with us in the President's room on purpose. After his hard experiences in his own country he had to be careful. Later on the President had a long talk with him alone about his soul and the dangers of hell-fire. The accounts which Mr. Roosevelt gave us on several occasions of what he said to the Russian were impressive. Indeed, on one occasion I promised Mr. Roosevelt to recommend him for the position of Archbishop of Canterbury if he should lose the next Presidential election. I did not however make any official recommendation to the Cabinet or the Crown upon this

reported the issue about "ieligious freedom" in evident fear and trembling to Stalin, who accepted it as a matter of course. The War Cabinet also got their point in about "social security", with which, as the author of the first Unemployment Insurance Act, I cordially concurred. After a spate of telegrams had flowed about the world for a week agreement was reached throughout the Grand Alliance.

The title of "United Nations" was substituted by the Piesident for that of "Associated Powers" I thought this a great improvement I showed my friend the lines from Byron's Childe Harold

Here, where the sword United Nations drew,
Our countrymen were warring on that day!
And this is much—and all—which will not pass away.

The President was wheeled in to me on the morning of January I I got out of my bath, and agreed to the draft. The Declaration could not by itself win battles, but it set forth who we were and what we were fighting for. Later that day Roosevelt, I, Litvinov, and Soong, representing China, signed this majestic document in the President's study. It was left to the State Department to collect the signatures of the remaining twenty-two nations. The final text must be recorded here.

A Joint Declaration by the United States of America, the United Kingdom of Great Britain and Northern Ireland, the Union of Soviet Socialist Republics, China, Australia, Belgium, Canada, Costa Rica, Cuba, Czechoslovakia, the Dommican Republic, El Salvador, Greece, Guatemala, Haiti, Honduras, India, Luxemburg, the Netherlands, New Zealand, Nicaragua, Norway, Panama, Poland, South Africa, and Yugoslavia

The Governments signatory hereto,

Having subscribed to a common programme of purposes and principles embodied in the Joint Declaration of the President of the United States of America and the Prime Minister of the United Kingdom of Great Britain and Northern Ireland, dated August 14, 1941, known as the Atlantic Charter,

Being convinced that complete victory over their enemies is essential to defend life, liberty, independence, and religious freedom, and to preserve human rights and justice in their own lands common struggle against savage and brutal forces seeking to subjugate the world, DECLARE.

(1) Each Government pledges itself to employ its full resources, military or economic, against those members of the Tripartite Pact and its adherents with which such Government is at war.

(2) Each Government pledges itself to co-operate with the Governments signatory hereto, and not to make a separate aimistice or peace with the enemies.

The foregoing declaration may be adhered to by other nations which are, or which may be, rendering material assistance and contributions in the struggle for victory over Hitlerism.

\* \* \* \* \*

Among other requests which I had made to the President the movement of three or four United States divisions into Northern Ireland stood high. I felt that the arrival of sixty or seventy thousand American troops in Ulster would be an assertion of the United States' resolve to intervene directly in Europe. These newly raised troops could just as well complete their training in Ulster as at home, and would at the same time become a strategic The Germans would certainly consider the move as an additional deterrent against the invasion of the British Isles I hoped they would exaggerate the numbers landed, and thus continue to pay attention to the West. Besides this, every American division which crossed the Atlantic gave us freedom to send one of our matured British divisions out of the country to the Middle East, or of course—and this was always in my mind—to North Africa. Though few, if any, saw it in this light, this was in fact the first step towards an Allied descent on Morocco, Algeria, or Tunis, on which my heart was set The President was quite conscious of this, and while we did not give precise form to the idea I felt that our thoughts flowed in the same direction, although it was not yet necessary for either of us to discuss the particular method.

Mr Stimson, the War Secretary, and his professional advisers also found this move to Ireland in harmony with their inclination to invade Europe at the earliest moment. Thus all went forward smoothly. We were anxious that the enemy should be aware of

course specifying numbers. We hoped also that this would detain German troops in the West and thus be not unhelpful to the Russian struggle. The British public and newspapers could not be made privy to our reasons, and many unsound criticisms arose. "Why," for instance, it was asked, "should American troops be sent to Ulster? Would they not be much better employed at Singapore?" When later on I became conscious of this point of view I thought of Pope's lines

> Ye gods! annihilate but space and time, And make two lovers happy.

It was of course physically impossible to send an army all that way in time to be of any use.

I reported all these decisions to the War Cabinet.

Prime Minister to Lord Privy Seal

You will have got my two telegrams about what we did yester-President has chosen the title "United Nations" for all the Powers now working together This is much better than "Alliance", which places him in constitutional difficulties, or "Associated Powers", which is flat

2 We could not get the words "or Authorities" inserted in the last paragraph of the Declaration, as Litvinov is a mere automaton, evidently frightened out of his wits after what he has gone through. This can be covered by an exchange of letters making clear that the word "Nations" covers authorities such as the Free French, or insurgent organisations which may arise in Spain, in North Africa, or in Germany itself Settlement was imperative because with nearly thirty Powers already informed leakage was certain President was also very keen on January I

3. Speed was also essential in settling letter of instructions to Wavell Here again it was necessary to defer to American views, observing we are no longer single, but married I personally am in favour of Burma being included in Wavell's operational sphere; but of course the local Commander-in-Chief Burma will be based on India and will have a job of his own to do He will have to get into friendly touch with Chiang Kai-shek, upon whom, it appears, Wavell

and Biett made a none too good impression

4. The heavy American troop and Air Force movements into Northern Ireland are to begin at once, and we are now beating about during their currency.

5 We live here as a big family, in the greatest intimacy and informality, and I have formed the very highest regard and admination for the President. His breadth of view, resolution, and his loyalty to the common cause are beyond all praise. There is not the slightest sign here of excitement or worry about the opening misfortunes, which are taken as a matter of course and to be retrieved by the marshalling of overwhelming forces of every kind. There will of course be a row in public presently

6 Please thank the War Cabinet for their very kind New Year's message I am so glad you like what I said in Canada My reception

there was moving

\* \* \* \* \*

It may well be thought by future historians that the most valuable and lasting result of our first Washington conference— "Arcadia", as it was code-named—was the setting up of the now famous "Combined Chiefs of Staff Committee" Its headquarters were in Washington, but since the British Chiefs of Staff had to live close to their own Government they were represented by high officers stationed there permanently. These representatives were in daily, indeed hourly, touch with London, and were thus able to state and explain the views of the British Chiefs of Staff to their U.S colleagues on any and every war problem at any time of the day or night. The frequent conferences that were held in various parts of the world-Casablanca, Washington, Quebec, Teheran, Cairo, Malta, and the Cimea-brought the principals themselves together for sometimes as much as a fortnight. the two hundred formal meetings held by the Combined Chiefs of Staff Committee during the war no fewer than eighty-nine were at these conferences, and it was at these full-dress meetings that the majority of the most important decisions were taken

The usual procedure was that in the early morning each Chiefs of Staff Committee met among themselves. Later in the day the two teams met and became one, and often they would have a further combined meeting in the evening. They considered the whole conduct of the war, and submitted agreed recommendations to the President and me. Our own direct discussions had of course gone on meanwhile by talks or telegrams, and we were in intimate contact with our own staff. The proposals of the professional advisers were then considered in plenary meetings, and

sharp the conflict of views at the Combined Chiefs of Staff meeting, however frank and even heated the argument, sincere loyalty to the common cause prevailed over national or personal interests. Decisions once reached and approved by the heads of Governments were pursued by all with perfect loyalty, especially by those whose original opinions had been overruled. There was never a failure to reach effective agreement for action, or to send clear instructions to the commanders in every theatre. Every executive officer knew that the orders he received bore with them the combined conception and expert authority of both Governments. There never was a more serviceable war machinery established among allies, and I rejoice that in fact if not in form it continues to this day.

The Russians were not represented on the Combined Chiefs of Staff Committee. They had a far-distant, single, independent front, and there was neither need nor means of staff integration. It was sufficient that we should know the general sweep and timing of their movements and that they should know ours. In these matters we kept in as close touch with them as they permitted I shall in due course describe the personal visits which I paid to Moscow. And at Teheran, Yalta, and Potsdam the Chiefs of Staff of all three nations met round the table.

The enjoyment of a common language was of course a supreme advantage in all British and American discussions. The delays and often partial misunderstandings which occur when interpreters are used were avoided. There were however differences of expression, which in the early days led to an amusing incident. The British Staff prepared a paper which they wished to raise as a matter of urgency, and informed their American colleagues that they wished to "table it". To the American Staff "tabling" a paper meant putting it away in a drawer and forgetting it. A long and even acrimonious argument ensued before both parties realised that they were agreed on the merits and wanted the same thing.

I have described how Field-Marshal Dill, though no longer Chief of the Imperial General Staff, had come with us in the Duke of York. He had played his full part in all the discussions, not only afloat, but even more when we met the American leaders.

upon the highest level. No British officer we sent across the Atlantic during the war ever acquired American esteem and confidence in an equal degree. His personality, discretion, and tact gained him almost at once the confidence of the President. At the same time he established a true comradeship and private friendship with General Marshall.

\* \* \* \* \*

Immense expansions were ordered in the production sphere In all these Beaverbrook was a potent impulse. The official American history of their industrial mobilisation for war\* bears generous testimony to this. Donald Nelson, the Executive Director of American War Production, had already made gigantic plans. "But," says the American account, "the need for boldness had been dramatically impressed upon Nelson by Lord Beaverbrook on December 29... What happened is best portrayed by Mr. Nelson's own words"

Lord Beaverbrook emphasised the fact that we must set our production sights much higher than for the year 1942, in order to cope with a resourceful and determined enemy. He pointed out that we had as yet no experience in the losses of material incidental to a war of the kind we are now fighting . . . He emphasised over and over again the fact that we should set our sights higher in planning for production of the necessary war material. For instance, he thinks we should plan for the production of 45,000 tanks in 1942 against Mr Knudsen's estimate of 30,000

### The American account continues:

The ferment Lord Beaverbrook was instilling in the mind of Nelson he was also imparting to the President. In a note to the President Lord Beaverbrook set the expected 1942 production of the United States, the United Kingdom, and Canada against British, Russian, and American requirements. The comparison exposed tremendous deficits in 1942 planned production. For tanks these deficits were 10,500; for aircraft 26,730; for artillery 22,600, and for rifles 1,600,000. Production targets had to be increased, wrote Lord Beaverbrook, and he pinned his faith on their realisation in "the immense possibilities of American industry". Production goals for 1942 should include 45,000 tanks,

<sup>\*</sup> History of the War Production Board, 1940-1945

tity of anti-aircraft guns then programmed, including all contemplated ıncreases

The outcome was a set of production objectives whose magnitude exceeded even those Nelson had proposed The President was convinced that the concept of our industrial capacity must be completely He directed the fulfilment of a munitions schedule overhauled calling for 45,000 combat aircraft, 45,000 tanks, 20,000 anti-aircraft guns, 14,000 anti-tank guns, and 500,000 machine-guns in 1942.

I reported all this good news home.

Prime Minister to Lord Privy Seal

4 an 42 A series of meetings has been held on supply issues These were presided over by the President himself and the Vice-President Negotiations were carried forward and discussions of details took place every day Then on Friday there was a meeting presided over by the President and myself There were two meetings on Saturday. Final conclusions were.

It was decided to raise United States output of merchant shipping in 1942 to 8,000,000 tons deadweight and in 1943 to 10,000,000 tons deadweight New 1942 programme is increase in production of onethird.

War weapons programmes for 1942 and 1943 were determined as follows.

| Weapons                      | 1942       | 1943      |
|------------------------------|------------|-----------|
| Operational aircraft         | <br>45,000 | 100,000   |
| Tanks                        | <br>45,000 | 75,000    |
| Anti-aircraft guns .         | <br>20,000 | 35,000    |
| Anti-tank guns               | 14,900     | Not fixed |
| Ground and tank machine-guns | 500,000    | Not fixed |

New 1942 programme represents increase on programme for 1942, which has been fixed after United States entry into the war as follows

| Operational ancraft  | • •      | • |   | 31,250  |
|----------------------|----------|---|---|---------|
| Tanks                |          |   |   | 29,550  |
| Anti-aircraft guns . | •        |   | • | 8,900   |
| Anti-tank guns       |          |   |   | 11,700  |
| Ground and tank mach | nnc-guns |   |   | 238,000 |

Directives have been issued to all the departments concerned [Presidential] Message to Congress this week will give abridged account of programme Budget will contain necessary financial provisions

Max has been magnificente and Aropeans a governor and programme

These remarkable figures were achieved or surpassed by the end of 1943. In shipping, for example, the new tonnage built in the U.S.A. was as follows:

1942 . . . . 5,339,000 tons 1943 . . . . 12,384,000 tons

Continued concentration of mind upon the war as a whole, my constant discussions with the President and his principal advisers and with my own, my two speeches and my journey to Canada, together with the heavy flow of urgent business requiring decision and all the telegrams interchanged with my colleagues at home, made this period in Washington not only intense and laborious but even exhausting. My American friends thought I was looking tired and ought to have a rest. Accordingly Mr. Stettinius very kındly placed his small villa in a seaside solitude near Palm Beach at my disposal, and on January 4 I flew down there. The night before I started the air-conditioning of my room in the White House failed temporarily, the heat became oppressive, and in trying to open the window I strained my heart slightly, causing unpleasant sensations which continued for some days Sir Charles Wilson, my medical adviser, however decided that the journey south should not be put off General Marshall came with us in the plane all the way, and I had some very good talks with him. Five days we passed in the Stettinius villa, lying about in the shade or the sun, bathing in the pleasant waves, in spite of the appearance on one occasion of quite a large shark. They said it was only a "ground shark"; but I was not wholly reassured. It is as bad to be eaten by a ground shark as by any other. So I stayed in the shallows from then on.

My movements were kept strictly secret, and a notification was given from the White House to the Press that all movements by the President or by me were to be regarded as if they were the movements of American battleships. Consequently no word ever appeared On the other hand, numbers of people greeted me in Florida, and many Pressmen and photographers, with

whom I had pleasant interchanges, watten official the charance to our retreat, but not a trickle ever leaked into print

Prime Minister to Lord Privy Seal

5 an 42

I am going south for a few days, hoping to remain in complete privacy, and President will go to Hyde Park Meanwhile the staffs are working hard, and on our return we shall deal with results There are many difficulties to be overcome in making offensive plans, but we must persevere. The big movement of United States troops into Ireland is all arranged at this end You must make sure that everything is getting prepared on our side Please see that a fine job is done over this, and their special food, etc., studied

2 I suppose you realise we are trying not only to meet the immediate needs, but to make a plan for the effective application of the American armies to the enemy's fronts wherever possible. Shipping is the limiting factor

3 I shall be glad to have everything necessary sent forward, as I shall be in constant telegraphic touch. They are trying here to keep my whereabouts secret. It would be well to discourage speculation in our Press about my return or movements.

Prime Minister to Lord Privy Seal

7 Jan 42

Am resting in the south on Charles Wilson's\* advice for a few days after rather a strenuous time. President is stopping all mention in the United States Press. Please make sure no notice is issued in England, otherwise American Press will be vexed, and I shall be overrun with them and tourists

\* \* \* \* \*

While I was reclining in the mellow sunlight of Palm Beach and dictating all these telegrams and memoranda the news reached me of the Italian "human torpedo" attack in Alexandria harbour which had disabled the Queen Elizabeth and Valiant This has already been described in an earlier chapter. This misfortune, following upon all our other naval losses at this moment, was most untimely and disturbing. I saw its gravity at once. The Mediterranean battle fleet was for the time being non-existent, and our naval power to guard Egypt from direct overseas invasion in abeyance. It seemed necessary in the emergency to send whatever torpedo planes could be gathered from the south coast of England. This had, as will presently be seen, an unpleasant sequel.

Prime Minister to General Ismay, for C.O.S. Committee, and to 7 Jan 42

Secretary of State for Air

In view of naval position Mediterranean it is evidently urgent and important to send strong air reinforcements, especially torpedo planes, from Coastal or Bomber Command. Proportionate relaxation of bomber offensive against Germany, etc., and shipping must be accepted. General Arnold\* tells me he is sending as soon as possible two bomber groups, ie, eighty bombers, as well as some fighter squadrons for Ulster Pray tell me what you are doing and whether Admiral Cunningham is comforted

I was also concerned lest the Italian exploit should be repeated at Scapa Flow

Prime Minister to First Sea Lord

9 Jan 42

The incident at Alexandria, which was so unpleasant, has raised in my mind the question of the security of Scapa Flow against this form of attack. Are we in fact patrolling the entrances with depth-charges every twenty minutes? No doubt the strong currents would give far greater protection than the calm water of Alexandria.

How does the matter stand?

It was above all things important that the true condition of our two great battleships, which rested upon even keels in Alexandria harbour, should not become known to the enemy.

\* \* \* \* \*

I now found time to deal with several difficult questions which pursued me There was of course a recurrence, both by the Viceroy and the Cabinet, to the idea of making a new constitution for India under which the Congress Party would rally to the common cause and their own security. We shall see in a later volume that this was a vain illusion.

Prime Minister to Lord Privy Seal

7 Jan 42

I hope my colleagues will realise the danger of raising constitutional issue, still more of making constitutional changes, in India at a moment when enemy is upon the frontier. The idea that we should "get more out of India" by putting the Congress in charge at this juncture seems ill-founded. Yet that is what it would come to if any electoral or Parliamentary foundation is chosen. Bringing hostile political elements into the defence machine will paralyse action. Merely picking and choosing friendly Indians will do no serious harm, but will not in any way meet the political demands. The Indian Liberals, though plausible,

<sup>\*</sup> Head of the US Army Air Force.

fighting splendidly, but it must be remembered that their allegiance is to the King-Emperor, and that the rule of the Congress and Hindu priesthood machine would never be tolerated by a fighting race

2 I do not think you will have any trouble with American opinion All Press comments on India I have seen have been singularly restrained, especially since they entered the war. Thought here is concentrated on winning the war as soon as possible. The first duty of Congress nominees who have secured control of provincial government is to resume their responsible duties as ministers, and show that they can make a success of the enormous jobs confided to them in this time of emergency. Pray communicate these views to the Cabinet. I trust we shall not depart from the position we have deliberately taken up

I was much disturbed by the reports which Mr Eden had brought back with him from Moscow of Soviet territorial ambitions, especially in the Baltic States. These were the conquests of Peter the Great, and had been for two hundred years under the Czars. Since the Russian revolution they had been the outpost of Europe against Bolshevism They were what are now called "social democracies", but very lively and truculent Hitler had cast them away like pawns in his deal with the Soviets before the outbreak of war in 1939. There had been a severe Russian and Communist purge All the dominant personalities and elements had been liquidated in one way or another. The life of these strong peoples was henceforward underground. Presently, as we shall see, Hitler came back with a Nazi counter-purge. Finally, in the general victory the Soviets had control again. Thus the deadly comb ran back and forth, and back again, through Estonia, Latvia, and Lithuania There was no doubt however where the right lay. The Baltic States should be sovereign independent peoples

Prime Minister to Foreign Secretary 8 Jan 42

We have never recognised the 1941 frontiers of Russia except de facto. They were acquired by acts of aggression in shameful collusion with Hitler. The transfer of the peoples of the Baltic States to Soviet Russia against their will would be contrary to all the principles for which we are fighting this war and would dishonour our cause. This also applies to Bessarabia and to Noithern Bukovina, and in a lesser degree to Finland, which I gather it is not intended wholly to subjugate and absorb.

2 Russia could, upon strategical grounds, make a case for the

There are islands in the Baltic which may be essential to the safety of Russia. Strategical security may be invoked at certain points on the frontiers of Bukovina or Bessarabia. In these cases the population would have to be offered evacuation and compensation if they desired it. In all other cases transference of territory must be regulated after the war is over by freely and fairly conducted plebiscites, very differently from what is suggested. In any case there can be no question of settling frontiers until the Peace Conference. I know President Roosevelt holds this view as strongly as I do, and he has several times expressed his pleasure to me at the firm line we took at Moscow. I could not be an advocate for a British Cabinet bent on such a course.

- 3 I regard our sincerity to be involved in the maintenance of the principles of the Atlantic Charter, to which Stalin has subscribed. On this also we depend for our association with the United States . . .
- 5 About the effect on Russia of our refusal to prejudice the peace negotiations at this stage in the war, or to depart from the principles of the Atlantic Charter, it must be observed that they entered the war only when attacked by Germany, having previously shown themselves utterly indifferent to our fate, and indeed they added to our burdens in our worst danger. Their armies have fought very bravely and have shown immense unsuspected strength in the defence of their native soil. They are fighting for self-preservation and have never had a thought for us. We, on the contrary, are helping them to the utmost of our ability because we admire their defence of their own country and because they are ranged against Hitler.
- 6. No one can foresce how the balance of power will lie or where the winning armies will stand at the end of the war. It seems probable however that the United States and the British Empire, far from being exhausted, will be the most powerfully armed and economic bloc the world has ever seen, and that the Soviet Union will need our aid for reconstruction far more than we shall then need theirs.
- 7. You have promised that we will examine these claims of Russia in common with the United States and the Dominions. That promise we must keep. But there must be no mistake about the opinion of any British Government of which I am the head, namely, that it adheres to those principles of freedom and democracy set forth in the Atlantic Charter, and that these principles must become especially active whenever any question of transferring territory is raised. I conceive therefore that our answer should be that all questions of territorial frontiers must be left to the decision of the Peace Conference.

Juridically this is how the matter stands now.

While at raim death I was or compe in constant rouch by telephone with the President and the British Staffs in Washington, and also when necessary I could speak to London. An amusing, though at the moment disconcerting, incident occurred. Wendell Willkie had asked to see me. At this time there was tension between him and the President. Roosevelt had not seemed at all keen about my meeting prominent members of the Opposition, and I had consequently so far not done so. Having regard however to Wendell Willkie's visit to England a year before, in January 1941, and to the cordial relations I had established with him, I felt that I ought not to leave American shores without seeing him. This was also our Ambassador's advice. I therefore put a call through to him on the evening of the 5th. After some delay I was told, "Your call is through." I said in effect, "I am so glad to speak to you. I hope we may meet. I am travelling back by train to-morrow night. Can you not join the train at some point and travel with me for a few hours? Where will you be on Saturday next?" A voice came back: "Why, just where I am now, at my desk." To this I replied, "I do not understand." "Whom do you think you are speaking to?" I replied, "To Mr. Wendell Willkie, am I not?" "No," was the answer, "you are speaking to the President." I did not hear this very well, and asked, "Who?" "You are speaking to me," came the answer, "Franklin Roosevelt." I said, "I did not mean to trouble you at this moment. I was trying to speak to Wendell Willkie, but your telephone exchange seems to have made a mistake." "I hope you are getting on all right down there and enjoying yourself," said the President. Some pleasant conversation followed about personal movements and plans, at the end of which I asked, "I presume you do not mind my having wished to speak to Wendell Willkie?" To this Roosevelt said, "No." And this was the end of our talk

It must be remembered that this was in the early days of our friendship, and when I got back to Washington I thought it right to find out from Harry Hopkins whether any offence had been given I therefore wrote to him

I rely on you to let me know if this action of mine in wishing to speak to the person named is in any way considered inappropriate, because I certainly thought I was acting in accordance with my duty to be civil to a public personage of importance, and unless you advise me to the contrary I still propose to do so

Hopkins said that no harm had been done.

It was now time to come home.

Prime Minister to Lord Privy Seal

9 Jan 42 3. You will have seen by the telegrams which have passed that I have not been idle here. Indeed, the seclusion in which I have lived has enabled me to focus things more clearly than was possible in the stir of Washington I am in the midst of preparing a considerable paper on Anglo-American co-operation, which I shall discuss with the

Staffs and then with the President as soon as I get back

4. I am so glad the debate of the 8th passed off peacefully, and that the House was willing to postpone the discussion on the main issue Of course the naggings and snarlings have been fully reported over here, and one would think that they represented the opinion of the House Several remarks have been reported which are not very helpful to American opinion, and I am pointing out to the President that we can no more control the expression of freak opinion by individual members than he can those of Congress backwoodsmen Try to let me have the gist of what you and Anthony said

5. It might be convenient if I made my statement on Tuesday as a statement, and the adjournment was moved by somebody else immediately after This would enable the usual criticisms to be made without my having exhausted my right to reply. Perhaps however you will not think this necessary I cannot help feeling we have a good tale to tell, even though we cannot tell the best part of it

I set out by train to return to Washington on the night of the 9th, and reached the White House on the 11th. Business kept me company.

### CHAPTER XXXVII

# RETURN TO STORM

Some Further Notes on the War after Anglo-American Discussions -Expansion of the United States Army - And of the Air Force -Growing Output of Munitions and Shipping - Importance of Sending an American Army to Northern Ireland - Rommel's Stubborn Resistance and Retardation of North African Plans - Need to Wear Down the German Air-Power by Continuous Engagement - Relief Afforded by the Successful Russian Resistance in the South - Potential Dangers in the Caucasus - The War Against Japan - Our Need to Regain the Initiative - Mobile Striking Force to Attack Japanese Conquests -Final Conference at the White House on January 12 - Complete Anglo-American Agreement - General Marshall's Question - We Start for Home - The President's Apprehensions - The Boeing Flying-Boat - My Wish to Use Her - Expert Advice of Portal and Pound - The Decision to Go by Air instead of in the "Duke of York" - I Address the Bermuda Assembly - A Very Long Flight - A Critical Moment at Dawn - Safe Arrival at Plymouth.

URING my rest in Florida I prepared a fourth memorandum in two parts addressed to the Chiefs of Staff Committee and for the Defence Committee of the War Cabinet. This was written also for American eyes. It differed from the three previous papers in that it was composed after the opening discussions in Washington between me and the President and his advisers and between the Combined Chiefs of Staff. Subsequently on my return to London I circulated all these papers to the War Cabinet for information. A very large measure of agreement had already been reached between our two countries, and the War Cabinet accorded in effect a very wide degree of approval to the direction which had been given to our affairs. I present only the more general aspects here \*

<sup>\*</sup> Paragraphs 9, 10, 14, 15, and 16 are omitted for reasons of space.

General Ismay, for U.O o. Commune min 20,000 -

I have availed myself of a few days' quiet and seclusion to review

the salients of the war as they appear after my discussions here.

The United States has been attacked and become at war with the three Axis Powers, and desires to engage her trained troops as soon and as effectively as possible on fighting fronts. Owing to the shipping stringency this will not be possible on any very large scale during 1942. Meanwhile the United States Army is being raised from a strength of a little over thirty divisions and five armoured divisions to a total strength of about sixty divisions and ten armoured divisions. About 3\frac{3}{4} million men are at present held or about to be called up for the Army and Air Force (over a million). Reserves of man-power are practically unlimited, but it would be a misdirection of war effort to call larger numbers to the armed forces in the present phase

2 It does not seem likely that more than between a quarter and a third of the above American forces can be transported to actual fighting fronts during the year 1942. In 1943 however the great increases in shipping tonnage resulting from former and recent shipping programmes should enable much larger bodies to be moved across the oceans, and the summer of 1943 may be marked by large offensive

operations, which should be carefully studied meanwhile.

3. The United States Air Force, already powerful and rapidly increasing, can be brought into heavy action during 1942. Already it is proposed that strong bomber forces, based on the British Isles, should attack Germany and the invasion ports. American fighter squadrons can participate in the defence of Great Britain and the domination of such parts of the French shore as are within fighter reach.

4. The declaration by the President to Congress of the enormous increases in United States output of munitions and shipping to proceed during 1942, and reach full flow in 1943, makes it more than ever necessary for Hitler to bring the war to a decision in 1942, before the power

of the United States can be fully brought to bear

5 Hitler has had the time to prepare, perhaps in very great numbers, tank-transporting vehicles capable of landing on any beach. He has no doubt developed airborne attack by parachutes, and still more by gliders, to an extent which cannot easily be measured. The President, expressing views shared by the leading American strategists, has declared Great Britain an essential fortress of the United Nations. It is indeed the only place where the war can be lost in the critical campaign of 1942 about to open. It would be most imprudent to allow the successful defence of the British Isles to be hazarded.

6 The sending of four United States divisions (one armoured) into Northern Ireland is therefore a most necessary war measure, which

troops in Iceland (C) liberates an additional British division. It is suggested however that the United States authorities should be asked to consider the training in Iceland of as many troops as possible to work on mountains and under snow conditions, as only the possession of such trained mountain and ski troops in considerable numbers can enable a liberating operation in Scandinavia to be prepared for the future.

- 7. The stubborn resistance of the enemy in Cyrenaica, the possibilities of General Rommel withdrawing, or of being able to escape with a portion of his troops, the reinforcements which have probably reached Tripoli, and others which must be expected during the delay, and above all the difficulties of supply for our advancing troops—all will retard, or may even prevent, the full completion of "Acrobat" the clearance of Tripoli] We are therefore in a position to study "Super-Gymnast" [the Anglo-American occupation of French North Africa] more thoroughly, and to proceed with "Magnet" [the movement of American troops to Northern Ireland] with the utmost speed
- 8 . The German front-line Air Force is already less strong numerically than the British A considerable portion of it must now be left opposite Russia. But the bulk of the British Air Force has to be tied up at home, facing, at the present time, a much smaller concentration of German bombers and fighters, and yet not able to be moved because of the good interior communications possessed by the enemy and his power of rapid transference. In addition, there is the Italian Air Force to consider.
- 11. The object we should set before ourselves is the wearing down by continuous engagement of the German air-power. This is being done on the Russian front On the British front it can only be done to a limited extent, unless the enemy resumes his bombing or daylight offensive. But in the Mediterranean the enemy shows an inclination to develop a front, and we should meet him there with the superior strength which the arrival of American air forces can alone give It is of the utmost importance to make the German Air Force fight continuously on every possible occasion, and at every point of attack We can afford the drain far better than they can Indeed, like General Grant in his last campaign, we can almost afford to lose two for one, having regard to the immense supplies now coming forward in the future Every German aircraft or pilot put out of action in 1942 is worth two of them in 1943 It is only by the strain of constant air-battle that we shall be able to force his consumption of air-power to levels which are beyond the capacity of his air plants and air schools In this way the initiative may be regained by us, as the enemy will be

fully occupied, as we have been hitherto, in meeting day-to-day necess

and keeping his head above water.

We must acclaim the very great deliverance afforded to us by the successful Russian resistance along the Don and in the Crimea, carrying with it the continued Russian command of the Black Sea Thice months ago we were forced to expect a German advance through the Caucasus to the Caspian and the Baku oilfields. That danger is almost certainly staved off for perhaps four or five months till the winter is over, and of course continued successful Russian resistance in the south would give complete protection to us.

13 The danger may however recur in the late spring. The oil stringency, which is already serious in Germany and the German-conquered countries, makes the seizure of the Baku and Persian oil-fields objects of vital consequence to Germany, second only to the need of successfully invading the British Isles. The enormous power of the German Army may be able to reassert itself as soon as weather conditions improve. In this case they might well be content to adopt a defensive attitude along the northern and central sectors of the Russo-German front, and thrust an offensive spearhead south-east through the Caucasus to the oilfields which he beyond.

## THE WAR AGAINST JAPAN

17. It is generally agreed that the defeat of Germany, entailing a collapse, will leave Japan exposed to overwhelming force, whereas the defeat of Japan would not by any means bring the World War to an end Moreover, the vast distances in the Pacific and the advantageous forward key points already seized or likely to be seized by the Japanese will make the serious invasion of the homelands of Japan a very lengthy business. Not less lengthy will be the piecemeal recovery, by armies based mainly on Australia and India, of the islands, airfields, and naval bases in the South-West Pacific area now confided to General Wavell It seems indeed more probable that a decision can be reached sooner against Germany than against Japan. In any case, we cannot expect to develop adequate naval, air, and military superiority in the aforesaid area for a considerable time, having regard to other calls made upon us and the limitation of shipping

18 While therefore it is right to assign primacy to the war against Germany, it would be wrong to speak of our "standing on the defensive" against Japan, on the contrary, the only way in which we can live through the intervening period in the Far East before Germany is defeated is by regaining the initiative, albeit on a minor scale

19 In a theatre of a thousand islands, many capable of being converted into makeshift air and naval bases, insoluble problems are set

command of the sea, and air predominance over considerable areas, it is within their power to take almost any point they wish, apart, it is hoped, from the fortress of Singapore. They can go round with a circus force and clean up any local garrisons we or the Dutch have been able so far to hold. They will seek to secure their hold by a well-conceived network of air bases, and they no doubt hope to secure, in a certain number of months, the possession of the fortress of Singapore. Once in possession of this as well as Manila, with their air bases established at focal points, they will have built up a system of air and naval defence capable of prolonged resistance... The naval superiority of the United States, to which Great Britain will contribute to the best of her ability, ought to be regained by the summer of 1942.

20 Thereupon, or at least as soon as possible, raids should be organised upon islands or seaports which the Japanese have seized The President has, I understand, ordered the formation of a force on the west coast of America akin to the Commandos Such a force, on account of its individual qualities, will be exceptionally valuable by gaining key points and lodgments in amphibious operations. It would require to be supported by a number of small brigade groups, whose mobility and equipment would be exactly fitted to the particular task foreseen, each task being a study in itself. It is not necessary, unless required on strategic grounds, to stay in the captured or recaptured islands. It will be sufficient to destroy or make prisoners of the garrison, demolish any useful installations, and depart. The exact composition of the forces for each undertaking and enterprise is a matter for separate study According to our experiences, it would seem essential that there should be adequate cover by seaborne aircraft and detachments of tanks and tank-landing craft The enemy cannot possibly be prepared, and must be highly vulnerable at many points. After even a few successful enterprises of this character, all of which are extremely valuable experiences to the troops and commanders for instructional purposes, he will be terrorised out of holding places weakly, and will be forced to concentrate on a certain number of strong points It may then be possible for us to secure very easily suitable islands, provided we do not try to hold too many, in which air and refuelling bases of a temporary or permanent character can be improvised The establishment of a reign of terror among the enemy's detached garrisons would seem to be an extremely valuable preliminary to the larger operations for reconquest and the building up of strong bases as stepping-stones from Australia northward.

This paper I gave to the President

When I got back to the White House I would that Elear progress had been made by the Combined Chiefs of Staff, and that it was mostly in harmony with my views. The President convened a meeting on January 12, when there was complete agreement upon the broad principles and targets of the war. The differences were confined to priorities and emphasis, and all was ruled by that harsh and despotic factor shipping. "The President," says the British record, "set great store on organising a 'Super-Gymnast'-i.e., a combined United States-British expedition to North Africa. A tentative time-table had been worked out for putting 90,000 United States and 90,000 British troops, together with a considerable air force, into North Africa." It was settled to send two divisions of American troops to Northern Ireland, with the objects which have been described. The President had told me privately that he would, if necessary as quickly as possible, send 50,000 United States troops to Australia and the islands covering its approach by the Japanese, Twenty-five thousand were to go as soon as possible to occupy New Caledonia, and other stepping-stones between America and Australasia. On "Grand Strategy" the Staffs agreed that "only the minimum of forces necessary for the safeguarding of vital interests in other theatres should be diverted from operations against Germany". No one had more to do with obtaining this cardinal decision than General Marshall

One evening the General came to see me and put a hard question. He had agreed to send nearly thirty thousand American soldiers to Northern Ireland We had of course placed the two "Queens"—the only two 80,000-ton ships in the world—at his disposal for this purpose. General Marshall asked me how many men we ought to put on board, observing that boats, rafts, and other means of flotation could only be provided for about 8,000. If this were disregarded they could carry 16,000 men. I gave the following answer "I can only tell you what we should do. You must judge for yourself the risks you will run. If it were a direct part of an actual operation, we should put all on board they could carry If it were only a question of moving troops in a reasonable time, we should not go beyond the limits of lifeboats, rafts, etc It is for you to decide." He received this in silence, and our conversation turned to other matters. In their first voyages these ships carried only the lesser numbers, but later \* \* \* \* \*

The time had now come when I must leave the hospitable and exhilarating atmosphere of the White House and of the American nation, erect and infuriate against tyrants and aggressors. It was to no sunlit prospect that I must return. Eager though I was to be back in London, and sure of ultimate victory, I felt continually the approaching impact of a period of immense disasters which must last for many months. My hopes of a victory in the Western Desert, in which Rommel would be destroyed, had faded. Rommel had escaped The results of Auchinleck's successes at Sidi Rezegh and at Gazala had not been decisive. The prestige which these had given us in the making of all our plans for the Anglo-American descent on French North Africa was definitely weakened, and this operation was obviously set back for months.

\* \* \* \* \*

Prime Minister to Lord Privy Seal

12 Jan 42

As I shall soon be silent for a while, though I trust not for ever, pray cable to-night any outstanding points which require decision here before I leave.

On the 14th I took leave of the President. He seemed concerned about the dangers of the voyage Our presence in Washington had been for many days public to the world, and the charts showed more than twenty U-boats on our homeward courses. We flew in beautiful weather from Norfolk to Bermuda, where the Duke of York, with escorting destroyers, awaited us inside the coral reefs. I travelled in an enormous Boeing flyingboat, which made a most favourable impression upon me. During the three hours' trip I made friends with the chief pilot, Captain Kelly Rogers, who seemed a man of high quality and experience I took the controls for a bit, to feel this ponderous machine of thirty or more tons in the air. I got more and more attached to the flying-boat. Presently I asked the captain, "What about flying from Bermuda to England? Can she carry enough petrol?" Under his stolid exterior he became visibly excited we can do it. The present weather forecast would give a forty miles an hour wind behind us. We could do it in twenty hours "

l asked how far it was, and no said, hundred miles." At this I became thoughtful.

However, when we landed I opened the matter to Portal and Pound. Formidable events were happening in Malaya, we ought all to be back at the earliest moment. The Chief of the Air Staff said at once that he thought the risk wholly unjustifiable, and he could not take the responsibility for it. The First Sea Lord supported his colleague. There was the Duke of York, with her destroyers, all ready for us, offering comfort and a certainty, I said, "What about the U-boats you have been pointing out to me?" The Admiral made a disdamful gesture about them, which showed his real opinion of such a menace to a properly escorted and fast battleship. It occurred to me that both these officers thought my plan was to fly myself and leave them to come back in the Duke of York, so I said, "Of course there would be room for all of us." They both visibly changed countenance at this. After a considerable pause Portal said that the matter might be looked into, and that he would discuss it at length with the captain of the flying-boat and go into weather prospects with the meteorological authorities. I left it at that.

Two hours later they both returned, and Portal said that he thought it might be done. The aircraft could certainly accomplish the task under reasonable conditions, the weather outlook was exceptionally favourable on account of the strong following wind. No doubt it was very important to get home quickly. Pound said he had formed a very high opinion of the aircraft skipper, who certainly had unrivalled experience. Of course there was a risk, but on the other hand there were the U-boats to consider. So we settled to go unless the weather deteriorated. The starting time was 2 p.m. the next day. It was thought necessary to reduce our baggage to a few boxes of vital papers. Dill was to remain behind in Washington as my personal military representative with the President. Our party would consist only of myself, the two Chiefs of Staff, and Max Beaverbrook, Charles Wilson, and Hollis. All the rest would go by the Duke of York.

That afternoon I addressed the Bermuda Assembly, which is the oldest Parliamentary institution in the Western Hemisphere. I pleaded with them to give their assent and all their aid to the establishment of the United States naval and air bases in the island, about which they were in some distress. The life of the whole Empire was at stake. The success trouble

the United States made final victory certain, however long the journey might be. They did not demur. The Governor, Lord Knollys, gave a banquet that night to the island notables and their fleeting guests. We were all in high spirits. Only Tommy,\* my Flag Commander, as I called him, was in terror that there would be no room for him. He explained how deeply wounded he was at the idea of going home by sea I reminded him of his devotion to the naval service, and of the pleasures to a hardy sailor of a life on the ocean wave. I dwelt upon the undeniable hazards from the U-boats. He was quite inconsolable. However, he had a plan. He had persuaded one of the stewards of the flying-boat to let him take his place; he would do the washing up himself But what, I asked, would the captain say? Tommy thought that if at the last moment the captain were confronted with the arrangement he would make no objection. He had ascertained that he weighed less than the steward. I shrugged my shoulders, and on this we went to bed in the small hours of the morning.

I woke up unconscionably early with the conviction that I should certainly not go to sleep again. I must confess that I felt rather frightened. I thought of the ocean spaces, and that we should never be within a thousand miles of land until we approached the British Isles. I thought perhaps I had done a rash thing, that there were too many eggs in one basket. I had always regarded an Atlantic flight with awe. But the die was cast Still, I must admit that if at breakfast, or even before luncheon, they had come to me to report that the weather had changed and we must go by sea I should have easily reconciled myself to a voyage in the splendid ship which had come all this way to fetch us.

Divine sunlight lapped the island, and the favourable weather prospects were confirmed. At noon we reached the flying-boat by launch. We were delayed for an hour on the quay because a picket-boat which had gone to the *Duke of York* for items of baggage had taken longer than expected. Tommy stood disconsolate. The captain had brushed his project aside in a way that captains have The steward was a trained member of the crew, he could not take one single person more; every tank was filled to the brim with petrol. It would be quite a task getting off the water even as it was. So we taxied out to the far end of the

<sup>\*</sup> Commander Thompson, R N,

harbour, leaving Tommy lamenting as bitterly as Lord Onin in the poem,\* but for different reasons. Never before and never afterwards were we separated in these excursions.

It was, as the captain had predicted, quite a job to get off the water. Indeed, I thought that we should hardly clear the low hills which closed the harbour. There was really no danger, we were in sure hands. The flying-boat lifted ponderously a quarter of a mile from the reef, and we had several hundred feet of height to spare. There is no doubt about the comfort of these great flying-boats. I had a good broad bed in the bridal suite at the stern with large windows on either side. It was quite a long walk, thirty or forty feet, downhill through the various compartments to the saloon and duning-room, where nothing was lacking in food or drink The motion was smooth, the vibration not unpleasant, and we passed an agreeable afternoon and had a merry dinner. These boats have two storeys, and one walks up a regular staircase to the control room. Darkness had fallen, and all the reports were good. We were now flying through dense mist at about seven thousand feet. One could see the leading edge of the wings, with their great flaming exhausts pouring back over the wing surfaces. In these machines at this time a large rubber tube which expanded and contracted at intervals was used to prevent using The captain explained to me how it worked, and we saw from time to time the ice splintering off as it expanded. I went to bed and slept soundly for several hours

\* \* \* \* \*

I woke just before the dawn, and went forward to the controls. The daylight grew. Beneath us was an almost unbroken floor of clouds.

After sitting for an hour or so in the co-pilot's seat I sensed a feeling of anxiety around me. We were supposed to be approaching England from the south-west and we ought already to have passed the Scilly Islands, but they had not been seen through any of the gaps in the cloud floor. As we had flown for more than ten hours through mist and had had only one sight of a star in that time, we might well be slightly off our course. Wireless communication was of course limited by the normal war-time rules. It was evident from the discussions which were going on that

<sup>\*</sup> Thomas Campbell's Lord Ullin's Daughter.

been studying the position, had a word with the captain, and then said to me, "We are going to turn north at once." This was done, and after another half-hour in and out of the clouds we sighted England, and soon arrived over Plymouth, where, avoiding the balloons, which were all shining, we landed

comfortably.

As I left the aircraft the captain remarked, "I never felt so much relieved in my life as when I landed you safely in the harbour" I did not appreciate the significance of his remark at the moment Later on I learnt that if we had held on our course for another five or six minutes before turning northwards we should have been over the German batteries in Brest. We had slanted too much to the southward during the night Moreover, the decisive correction which had been made brought us in, not from the south-west, but from just east of south-that is to say, from the enemy's direction rather than from that from which we were expected This had the result, as I was told some weeks later, that we were reported as a hostile bomber coming in from Brest, and six Hurricanes from Fighter Command were ordered out to shoot us down. However, they failed in their mission

To President Roosevelt I cabled, "We got here with a good

hop from Bermuda and a thirty-mile wind."

# APPENDICES

## APPENDIX A

#### LIST OF ABBREVIATIONS

Anti-aircraft guns, or ack-ack guns A A guns Air Defence of Great Britain A D.G.B AFVs Armoured fighting vehicles Adjutant-General Royal Marines A G.R.M. Air Raid Precautions ARP Anti-tank rifles AT rifles ATS (Women's) Auxiliary Territorial Service Chief of the Air Staff C.A.S. Chief of the Imperial General Staff CIG.S. Commander-in-Chief C.-in-C Third Sea Lord and Chief of Material CONTROLLER Chiefs of Staff CO.S Director of Naval Construction DNC. Foreign Office FΟ General Headquarters GHQ. General Officer Commanding GOC. Home Forces HF. His Majesty's Government HMG Ministry of Aircraft Production MAP. Ministry of Economic Warfare M.E W Ministry of Information M.O I. Mmistry of Labour M of L. Ministry of Supply M OF S Prime Minister PMUnrotated projectiles-i e., code name for rockets U.P. Vice-Chief of the Air Staff VCAS Vice-Chief of the Imperial General Staff VCIGS Vice-Chief of the Naval Staff VCNS Women's Auxiliary Air Force WAAF Women's Royal Naval Service ("Wrens") WRNS

## APPENDIX B

#### LIST OF CODE NAMES

German code names are marked with an asterisk

ACROBAT: Advance from Cyrenaica into Tupoli.

ARCADIA First Washington Conference, December 1941.

\*BARBAROSSA German plan for invasion of Russia.

BATTLEAXY. Offensive operations in Sollum, Tobruk, and Capuzzo area, June 1941.

Canvas, Attack on Kismayu.

Colorado Crete

CRUSADER Operations in Western Desert, November 1941.

EXPORTER Operations in Syria.

\*Felix German plan for seizure of Gibialtar

GYMNAST British occupation of French North Africa.

INILUX Occupation of Sicily

JAGUAR Reinforcements to Malta, 1941

Lustre Aid to Greece.

MAGNET Movement of American troops to Northern Ireland

MANDIBLES. Operations against Dodecanese

\*Marita German plan for invasion of Greece.

MULBERRY Artificial harbour

ORIENT German plan to overthrow British positions in the Middle East

Overlord. Liberation of France, 1944

PILGRIM Occupation of Canary Islands

\*Punishment German bombing of Belgrade

ROUND-UP Liberation of France, 1943 (subsequently changed to Overlond)

SCORCHER Defence of Crete

\*SEA LION: German plan for invasion of Britain Supercharge, Relief of Australians in Tobruk

SUPER-GYMNAST Anglo-American occupation of French North Africa. Tiger. Passage of part of convoy W S 8 through the Mediterianean.

TORCH Anglo-American operations against French North Africa

TRUNCHEON Combined raid on Leghorn.

WILLDCORD Plan for invasion of Sicily.

Workshop Capture of Pantelleria.

# APPENDIX C

# PRIME MINISTER'S PERSONAL MINUTES AND TELEGRAMS

# JANUARY-JUNE 1941

# JANUARY

Prime Minister to Sir Edward Bridges, General Isinay, and Mr Seal

I Jan 41

With the beginning of the New Year a new intense drive must be made to secure greater secrecy in all matters relating to the conduct of the war, and the following points should have your attention. You should consider them together and report to me

Renewal of the cautions issued a year ago against gossip and talk about Service matters. Probably a new set of posters is required to

attract attention

2 Renewal of the orders which were then issued to all departments.

3 Severe further restrictions on the circulation of seciet papers, especially those relating to operations, strength of the aimed forces, foreign policy, etc. Every department should be asked to submit proposals for restricting the circulation of papers. This is all the more important on account of the ever-increasing elaboration of Government departments and the Whitchall population.

4 The use of boxes with snap locks is to be enforced for all documents of a secret character / Ministers and their private secretaries should have snap-lock boxes on their desks, and should never leave

confidential documents in trays when they are out of the room

5 Boxes should always be snapped to when not immediately in use Access to rooms in which confidential secretaries and Ministers are working should be restricted wherever possible, and ante-rooms

provided into which visitors can be shown

6 A small red star label should be devised to be placed on most secret papers—i e, those dealing with operations and the strength of the armed forces. It is not necessary for all the private secretaries in the office to read these starred documents. They should always be circulated in locked boxes, and transferred immediately to other locked boxes for my use and for the use of Ministers.

7 Å restriction of telegrams relating to future operations is to be made. Sometimes lately I have received an account of future operations where the name of the place is mentioned as well as its future code-word. This happened in the case of "Influx" yesterday. All such

documents which contain the name of the place and the code-word should be collected and either destroyed by fire or put in a safe

8. Ministers should be requested to restrict as far as possible the circle within which it is necessary to discuss secret matters. It is not necessary for Parliamentary Private Secretaries (unless Privy Councillors) to be informed more than is necessary for the discharge of their Parliamentary and political duties.

9 We are having trouble through the activities of foreign correspondents of both sexes. The disclosures of Engel published in to-day's papers are a capital example. Proposals should be made for restricting the facilities accorded to them in obtaining confidential information. It must be remembered that everything said to the American Press is instantly communicated to Germany, and that we have no redress

tendency to multiply reports of all kinds must be curtailed. Each department connected with the war should be asked to submit a report showing what further restrictions and curtailments they propose to introduce in the New Year. Some time ago the late Cabinet decided that Ministers not in the War Cabinet should submit beforehand speeches on the war, or references in speeches to the war, to the Minister of Information. This has apparently fallen into disuse. Let me have a report as to what is happening. A more convenient method might be that Ministers wishing to refer to these subjects should consult General Ismay as representing the Minister of Defence beforehand. No officials who have, for instance, been on missions abroad should make public statements concerning their work without previous Ministerial approval.

11. I have already dealt with the circulation of secret information to friendly Attachés, and we have restricted the character of the information. This process should continue—the bulk of the documents circulated being made up by interesting padding such as might well.

appear in the newspapers.

12. The newspapers repeatedly publish—mostly with innocent intentions—facts about the war and policy which are detrimental. Where these have not been censored beforehand a complaint should be made afterwards in every case. The Ministry of Information should report what they are doing

Pray consider all these matters and let me know of any others that occur to you, and advise me on how these points are to be made, and

through what channels, to the various authorities affected.

Prime Minister to Colonel Jacob

3 an 41

I presume that this [German] corps will be most carefully scrubbed and re-scrubbed to make sure no Nazi cells develop in it. I am very

strict discipline, instead of remaining useless in concentration camps, but we must be doubly careful we do not get any of the wrong breed

Prime Minister to First Lord and First Sea Lord

3 Jan 41

(Copies sent to Minister of Supply and Minister of Shipping)

I was greatly distressed at the loss of the cargo of the City of Bedford It is the heaviest munitions loss we have sustained Seven and a half million cartridges is a grievous blow. It would be better to disperse these cargoes among more ships

2 I presume you have inquired into the causes of this collision, and of the two in-coming, out-going convoys being routed so close

together. I must again emphasise the gravity of the loss.

Prime Minister to Sir Edward Bridges

4 Jan 41

Let me have a list of all committees of a Ministerial character forming part of the Central Government, with any offshoots there may be.

2 Ask each department to furnish a list of all the committees of a

departmental nature which exist at the present time

3 This information is the prelude to a New Year's effort to cut down the number of such committees

Prime Minister to Sir Edward Bridges

4 Jan 41

The Committee on War Aims has largely completed its work in the draft statement which it has drawn up, and which should now be circulated to the Cabinet In any case, war aims is quite a different matter from the reconstruction of this country, which is entrusted to the Minister without Portfolio . We must be very careful not to allow these remote post-war problems to absorb energy which is required, maybe for several years, for the prosecution of the war

(Action this Day)

Prime Minister to General Ismay, for General Loch and others concerned

4 Jan 41

In the photo-electric [PE] fuze \* the greatest interest attaches to high-altitude work against machines flying over 10,000 feet which are not dive-bombing but trying to hit HM ships or land targets, perhaps with improved bomb-sights. It is desired to be able to burst salvoes of eight or more in close proximity to the enemy aircraft with fatal results. Even if this could be achieved only in clear, good weather it would be of the highest advantage, as important operations would be arranged to seek that weather.

2 Is this high-altitude work being pressed to the full, both in the manufacture and in the Research Training sphere? Are the officers

<sup>\*</sup> PE an early type of proximity fuze

original purpose, and this may well be achieved both by P.E. and A.D., but the emphasis must now be placed upon high-altitude work

3 This also applies to the AD fuze firing the aerial mines at the highest altitudes of all. It is in this direction that the highest tactical and operational results will be achieved \*

Prime Minister to Home Secretary and Minister of Health 4 Jan 41

What happens in the case where a shelter is not safe, but is nevertheless occupied, as many are? The ruling should be, I think, that every shelter that is occupied, whether safe or not, must be under the responsibility of the Minister of Health for its internal arrangements, and that there should be no distinction between approved and unapproved shelters. The Minister of Health must act wherever the shelter is used. On the other hand, as shelter accommodation increases and improves the Minister of Home Security would naturally be closing down the most unsafe ones

Pray let me know that this view is correct.

Prime Minister to S of S. for Foreign Affairs and Minister for Economic Warfare

5 Jan 41

My message to Italy was deliberately designed to separate the Italian people from the Fascist régime and from Mussolini; and now that France is out of the war I certainly intend to talk rather more about the Nazis and rather less about the Germans. We must not let our vision be darkened by hatred or obscured by sentiment

A much more fruitful line is to try to separate the Prussians from the South Germans. I do not remember that the word "Prussia" has been used much lately. The expressions to which I attach importance and intend to give emphasis are "Nazi tyranny" and "Prussian militarism".

(Action this Day)

Prime Minister to Minister for Works and Buildings

ő Jan 41

(Minister of Health to see )

The great increase in the destruction and damage to house property makes it all the more necessary that you should regard emergency first-aid work to buildings slightly damaged as the most important task. Please let me have a weekly report of what you are doing in this respect. I continue to see great numbers of houses where the walls and roofs are all right, but the windows have not been repaired, and which are consequently uninhabitable. At present I regard this as your No 1 war task. Do not let spacious plans for a new world divert your energies from saving what is left of the old.

<sup>\*</sup> A D . a rocket and parachute device for use against aircraft.

You spoke to me the other day about the length of telegrams I feel that this is an evil which ought to be checked. Ministers and Ambassadors abroad seem to think that the bigger the volume of their reports home the better is their task discharged. All kinds of gossip and rumours are sent, regardless of credibility. The idea seems to be to keep up a continued chat which no one ever tries to shorten. I suggest that you should issue a general injunction, but that in addition telegrams which are unduly verbose or trivial should be criticised as such, and their authors told "this telegram was needlessly long." It is sheer laziness not compressing thought into a reasonable space. I try to read all these telegrams, and I think the volume grows from day to day

Please let me know what can be done

Prime Minister to Secretary of State for War and 12 Jan 41 C I G.S.

The mechanisation of the Cavalry Division in Palestine is a distressing story. These troops have been carried out with their horses and maintained at great expense in the Middle East since the early months of the war. Several months ago it was decided by the War Office that they should be mechanised. I gladly approved. Now I learn, as the result of one of my own inquiries, that nothing has been done about this, that the whole division is to be carted back again home—presumably without their horses—and that this is not to begin until June 1. After that there will be a further seven or eight months before they will be of any use. Thus 8,500 officers and men, including some of our finest Regular and Yeomanry regiments, will, except for security work, have been kept out of action at immense expense for two years and five months of war.

- 2 Let me have a calculation of the cost involved in:
  - (a) Sending these troops to the Middle East
  - (b) Maintaining them with rations, pay, and allowances from the beginning of the war to the beginning of March 1942
  - (c) Transporting them home again
- 3 There must be many better uses to which these troops could be put in the Middle East. Having regard to their high intrinsic quality, they should very quickly acquire new additional training. It is not necessary that the organisation and establishment should follow exactly the same patterns approved for mechanised or armoured formations at home. The establishments of the independent motorised brigade groups here might be more suitable than those of a division. The Household Cavalry in the spring of 1918 or autumn of 1917 were very rapidly converted into a machine-gun regiment, and achieved their

training in a course of and

Cavalry Division should not train in Palestine, where at any rate they count as local security troops. One would have thought it was the very country.

4 Some of the captured Italian tank equipment might be taken over by these highly competent Regular or quasi-Regular units. Alternatively, or in partial substitute, we have a good supply of Bren-gun

carriers, 200 of which could certainly be sent out.

5. There are various other solutions. They might be converted into an infantry division, as several cavalry divisions were in the last war, or formed, perhaps, into independent brigade groups. In this case they would be drafted up to full strength as infantry battalions. If this is not acceptable they could be sent to India to liberate an equal number of Regulars in battalions serving there—say eight battalions. Or, again, they might form the kernel of a force to dominate Iraq. One thing is certain now that we are starving ourselves to send men to the East with ever-dwindling shipping, there can be no question of bringing this large body of men and these invaluable cadres home, especially perhaps at the very moment when the fighting in the Middle East is at its height.

Prime Minister to Secretary of State for Air and C A.S.

12 Jan 41

Must the operational reports from the Middle East be of their present inordinate length and detail? It surely is not necessary to describe minutely what happened in every individual raid of a dozen aircraft over the enemy's lines and encipher and decipher all this at each end, and cable it, thus congesting the lines.

I suggest that the average weekly wordage of these routine telegrams should be calculated for the last two months and Air-Marshal Longmore asked to reduce them to, say, one-third their present length

The Foleign Office are also asking for condensation of their messages

Prime Minister to Home Secretary

12 Jan 41

This kind of propaganda\* ought not to be allowed, as it is directly contrary to the will of Parliament, and hampers the maintenance of resistance to the enemy. I do not see why if Mosley is confined subversives and Communists should not be equally confined. The law and the regulations ought to be enforced against those who hamper our war effort, whether from the extreme Right or the extreme Left. That is the position which the Conservative Party adopt, and I think it is a very strong one, and one of which the country as a whole would approve. I know it is your wish to enforce an even justice, and if you

<sup>\*</sup> Communist circular addressed to all active working men and women

Prime Minister to General Ismay, for C O S. Committee

13 Jan 41

I do not think it would be wise to attack these smaller islands of the Dodecanese. They are no use in themselves, they are not necessary for the attack upon the larger islands now that we hold Crete. Stirring up this quarter will put the enemy on their guard, and will bring about the disagreement between Greece and Turkey, which has become only too apparent as we have explored tentatively this subject. The Defence Committee have not approved these operations.

Prime Minister to Dominions Secretary

17 Jan 41

I have read these two documents, which do not seem to me to add very much to what we already know or what is obvious in the existing Southern Irish situation. The strategic position has been repeatedly examined, and the Admiralty have a paper on the urgent need for the Irish bases, as well as for airfields on the south and west coasts. I am asking General Ismay to see that this information is placed before you

I do not consider that it is at present true to say that possession of these bases is vital to our survival. The lack of them is a grievous injury and impediment to us More than that it would not at present be true to say I could not, however, give the assurance suggested by Mr Dillon that in no circumstances should we "violate Irish neutrality". I do not personally recognise Irish neutrality as a legal act. Southern Ireland having repudiated the Treaty, and we not having recognised Southern Ireland as a sovereign State, that country is now in an anomalous position. Should the danger to our war effort through the demal of the Irish bases threaten to become mortal, which is not the case at present, we should have to act in accordance with our own self-preservation and that of our Cause. Meanwhile the policy which we recently decided on should be carried out as you are doing, and the influence of the United States must be invoked by every means open to us It is possible that Mr. Hopkins, with whom I have had long talks, will himself visit Ireland, and I am of opinion that his visit might be useful I do not think the time is ripe yet for you to visit Ireland, unless you receive a direct invitation from Mr de Valera It would be better to see how the economic and shipping pressures work. At any time the slow movements of events in Ireland may be violently interrupted by a German descent, in which case with or without an invitation we should have to go to turn out the invaders. For the present therefore I see no policy other than the one we have recently adopted.

If you approve I should like Livorno to be called in the English—Leghorn; and Istanbul in English—Constantinople. Of course, when speaking or writing Turkish we can use the Turkish name; and if at any time you are conversing agreeably with Mussolini in Italian Livorno would be correct

And why is Siam buried under the name of Thailand?

(Action this Day)

Prime Minister to General Ismay, for C.O S. Committee

19 Jan 41

and Home Secretary

Many and increasing indications point to the early use of gas against us. The armed forces have been kept fully abreast of these possibilities, and are accustomed to use their masks and eye-shields. It would be well however to issue renewed instructions to all commands, and also to consider whether any new filter is required for possible new toxic gases.

Let me have a report on this (one page).

2 But what is the condition of the gas masks in the hands of the civil population? Have they been overhauled regularly? Very few people carry masks nowadays. Is there any active system of gas training? It appears that the whole of this has become extremely urgent. Let me have an early report of the present position, and what is being done to bring it up to full efficiency. This report should also cover the decontamination system, and staffs.

3 Finally, it is important that nothing should appear in the newspapers, or be spoken on the B B C., which suggests that we are making a fuss about anti-gas arrangements, because the enemy will only use this as part of his excuse, saying that we are about to use it on him I am of opinion nevertheless that a nation-wide effort must be made

Prime Minister to Commander-in-Chief Home Forces 20 Jan 41

How would you propose to deal with a limited number of large amphibian tanks which got ashore and roamed about? Am I right in supposing that your light forces would surround them and follow them about at the closest quarters, preventing the crews from refuelling or getting food and sleep, or from ever leaving the armour of their vehicles? If, say, not more than forty of these tanks came ashore, would they be followed and hunted to death in this manner, apart from anything that artillery, mines, and tank traps could do?

Anyhow, please let me know what would be your plan

Prime Minister to Lord President of the Council

I see that deliveries of coal to London during recent weeks have been running at 250,000 tons per week. It appears, if the Mines Department's

March.

I should be glad to know whether you agree with the estimates of the Mines Department, and, if so, what steps you propose to take to increase deliveries by the required amount. I find it hard to understand why deliveries by rail during the last three months should have fallen to only three-fifths of last year's figure

Prime Minister to Minister of Health

21 Jan 41

Is it not possible to reduce more rapidly the number of homeless people in the London rest centres? I am hoping that this week will show that they have practically all been dispersed. One cannot tell when another heavy attack may not be made upon us, and a quiet week should be a precious gain

Prime Minister to General Ismay, for C.O.S Committee 22 Jan 41

I should like to feel sure that the Chiefs of Staff have carefully considered whether this operation against the Lofoten Islands is likely to stir up the Norwegian coast and lead to reinforcements of the German forces in the peninsula. It seems to me that as the attack is on islands, and obviously connected with blockade measures, this danger is obviated. There would be no need to go on to the mainland, as I understand the operation

Pray advise me \*

Prime Minister to C.A S, First Sea Lord, and Fifth 23 Jan 41
Sea Lord

(Copy sent to First Lord and Secretary of State for Air.)

I wish to draw your attention to the prime importance of arranging as speedily as possible for a dozen or more Grumman Martletts or converted Brewsters being embarked upon aircraft-carriers operating in the Mediterranean. I have pressed for this for some time, and now the C.-in-C. Mediterranean, 824, says quite definitely that "Fulmars are really not fast enough". It is absolutely necessary to have a comparatively small number of really fast fighter aircraft on our carriers. Without these the entire movement of our ships is hampered. I am well aware of the difficulties of non-folding wings, absence of arresting hooks, etc., but I cannot easily believe that they cannot be solved before April

In a second raid, carried out on December 26, the port was again occupied temporarily

by our forces

<sup>\*</sup> A highly successful raid was carried out in the Lofoten Islands, in Northern Norway, on March 4, 1941, by two Commandos Important enemy supplies and much shipping were destroyed, 200 German prisoners taken, and 314 Norwegian volunteers brought safely out

important relief and advantage. Surely a few dozen could be converted to folding wings by hand-labour as a special job.

I am not satisfied that the urgency and significance of this com-

paratively small change is realised.

Prime Minister to Minister of Supply

Rifles (New). Since August the production of rifles has fallen off as follows:

 August
 ...
 9,586

 September
 ...
 8,320

 October
 ...
 7,545

 November
 ...
 4,363

 December
 ...
 4,743 (mainly from existing stocks of component parts)

I understand that this fall is due to raids on Small Heath, Birming-ham, which completely stopped production. Pray inform me what

progress has been made towards resuming production

2. A.A. Mountings, 3.7-inch. Production of 3.7-inch A.A. mountings, which control the assembly of equipment, was at the rate of about eighty per month in September, October, and November. In December however it was down to 67 per cent., which I am informed is a repercussion of the raids on Birmingham and Coventry. How will the forecasts of deliveries be affected?

Prime Minister to General Ismay, for CO.S Committee 26 Jan 41 I was much concerned when I visited Dover on Friday to find the slow and halting progress in the installation of the latest and best batteries

(1) Some guns which are ready-mounted cannot be brought into action because ancillary material, such as sights and control instruments, has not been delivered. A suggestion of the Controller indicated that these guns could be brought into action quickly by the intelligent improvisation of simple means of control, workable, although not so technically satisfying as those to be supp! d eventually.

(2) Some guns cannot be completed for action owing to delay in the work involved in anchoring the mountings, reasons given for this being lack of shuttering timbers for concreting, inefficient labour, and

the weather.

As regards (1), the attached Progress Report shows the situation, and it is difficult to escape the conclusion that there is a lack of initiative on the spot when such a bald statement as "No dates given for delivery" is accepted.

referred to the Ministry of Labour,

I was informed that all the causes of delay had been reported through the "usual channels", but as far as those on the spot were aware nothing very much seems to have happened. It would seem best therefore to start from the other end of the "usual channels" and sound backwards to find where the delay in dealing with the matter has occurred

I gathered from Admiral Ramsay that in his opinion the lack of drive behind this work was due to the fact that no one senior officer seemed to regard the whole matter as his personal interest, although several, somewhat less senior, were active in their own particular spheres.

The Controller said that he could deal with the two points raised about deficiencies in ammunition—i e, shortage of 5 5-inch fuzes and 6-inch cartridges—but the report of this too seems to be grounded in

mid "usual channels".

The completion of these batteries is of the utmost urgency, and I request the Chiefs of Staff to give all the necessary instructions and to call for a weekly report to be forwarded to me.

Prime Minister to Dominions Secretary

31 Jan 41

I agree with the general line of your talk [with Mr. Dulanty]. I could in no circumstances give the guarantee asked for, and for the

reasons you state

About arms. If we were assured that it was Southern Ireland's intention to enter the war we would of course, if possible beforehand, share our anti-aircraft weapons with them, and make secretly with them all possible necessary arrangements for their defence. Until we are so satisfied we do not wish them to have further arms, and certainly will not give them ourselves

The concession about Lough Swilly is important and shows the way things are moving. No attempt should be made to conceal from Mr de Valera the depth and intensity of feeling against the policy of Irish neutrality. We have tolerated and acquiesced in it, but juridically we have never recognised that Southern Ireland is an independent sovereign State, and she herself has repudiated Dominion status. Her international status is undefined and anomalous. Should the present situation last till the end of the war, which is unlikely, a gulf will have opened between Northern and Southern Ireland which it will be impossible to bridge in this generation.

Prime Mi. ister to Minister of Economic Warfare I Fcb 41

(Copies to Chancellor of the Exchequer, Minister of Supply)

You have no doubt been considering what we can do to prevent Germany obtaining supplies of copper, in view of the fact that although she may be able to substitute aluminium she may well become subject

to a severe stringency in the two metals taken together

I understand that considerable excess capacity exists in the South American copper-mines. I am told that we have no evidence that copper has proceeded from South America to Germany, but that last year South America exported about 70,000 tons to Russia and 150,000 tons to Japan, whose stocks are estimated at a year's consumption. As soon as Germany exhausts her stocks it is obvious that she will make every effort to obtain South American copper, and it is vital to take measures in advance to prevent Japan and Russia building stocks and to prevent Germany obtaining access to the surplus capacity which exists in Chile

Apparently we are importing about 600,000 tons of copper from Canada, Rhodesia, South Africa, and the Belgian Congo As these sources are under our control we should be able to divert purchases to South America without danger that Germany would obtain supplies

from the sources we gave up

I understand that you have been giving consideration to this problem, and that the Treasury is doubtful if the expenditure of dollars on pre-emptive purchase is justifiable Will you let me have a report on your plans?

Prime Munister to General Ismay, for CO.S. Committee "Marie" [Jibouti] might be an operation of the greatest value The Senegalese should not be sent into Abyssinia, but should be kept till the Foreign Legion battalion arrives. Where would they be kept, and how?

One must consider that at any moment Weygand might move our way, in which case the Free French troops could go into Jibouti to animate the converted garrison, and even begin operations against the Italians

Another favourable situation might be reached if, as a consequence of our advance in Eritrea, the British forces were able to get into touch with the French colony at Jibouti. Anyhow, with these favourable possibilities in the wind it would be a great pity not to keep our Free French force in hand As for the political consequences, they can only be judged a few days before launching operations

cross-country run is enforced upon all in this division, from general seprivates? Does the Army Council think this a good idea? It looks to me rather excessive. A colonel or a general ought not to exhaust himself in trying to compete with young boys running across country seven miles at a time. The duty of officers is no doubt to keep themselves fit, but still more to think for their men, and to take decisions affecting their safety or comfort. Who is the general of this division, and does he run the seven miles himself? If so, he may be more useful for football than war. Could Napoleon have run seven miles across country at Austerlitz? Perhaps it was the other fellow he made run. In my experience, based on many years' observation, officers with high athletic qualifications are not usually successful in the higher tanks.

Prime Minister to General Ismay, for Secretary of State for War and C I G.S 4 Feb 41

(Copy to C -in-C. Home Forces.)

The statement that one division could not be transferred from Great Britain to Ireland in less than eleven days, no matter how great the emergency nor how careful the previous preparations, is one which deserves your earnest attention When we remember the enormous numbers which were moved from Dunkirk to Dover and the Thames last May under continued enemy attack it is clear that the movement of personnel cannot be the limiting factor The problem is therefore one of the movement of the artillery and vehicles This surely deserves special study. Let me see the exact programme which occupies the cleven days, showing the order in which men, guns, and vehicles will embark. This would show perhaps that, say, nine-tenths of the division might come into action in much less than eleven days. Or, again, a portion of the mechanical transport, stores, and even some of the artillery, including Bren-gun carriers, might be found from reserves in this country and sent to Ireland in advance, where they would be none the less a reserve for us, assuming no need in Ireland arose Surely now that we have the time some ingenuity might be shown in shortcuing this period of eleven days to move 15,000 fighting men from one well-equipped port to another-the voyage taking only a few hours If necessary some revision of the scale of approved establishments might be made in order to achieve the high tactical object of a more rapid transference and deployment.

We must remember that in the recent training exercise "Victor" five German divisions, two of which were armoured and one motorised, were [supposed to be] landed in about forty-eight hours in the teeth of strenuous opposition, not at a port with quays and cranes,

eleven days required to shift one division from the Caylor to Access. We have also the statement of the Chiefs of Staff Committee that it would take thirty days to land one British division unopposed alongside the quays and piers of Tangier. Perhaps the officers who worked out the landings of the Germans under "Victor" could make some suggestion for moving this division into Ireland via Belfast without taking eleven days about it. Who are the officers who worked out the details that this move will take eleven days? Would it not be wise to bring them into contact with the other officers who landed these vast numbers of Germans on our beaches so swiftly and enabled whole armoured divisions and motorised troops to come into full action in forty-eight hours?

Evidently it would be wiser to keep open the option of moving this division as long as possible, and in order to do this we must have the best plan worked out to bring the largest possible portion of the division into action in Ireland in the shortest possible time. I am not prepared to approve the transfer of the division until this inquiry has been made. There must be an effort to reconcile the evident discrepancies as between what we assume the enemy can do and what in fact we can do ourselves

Prime Minister to Home Secretary

5 Feb 41

I think it would be wrong to use soldiers or men of military age for smoke-protection purposes. You ought to try to do your best with over-age volunteers, or women or young persons. Pressure upon effective man-power will be very heavy in the near future. I could not support your claim to the War Office as at present advised.

(Action this Day)

Prime Minister to First Lord and First Sea Lord

5 Feb 41

A number of convoys with most important munitions cargoes are now approaching. I know what your stresses are, and I feel sure you will make every effort possible

2. We have now the gift announced of 250,000 more rifles and 50 million rounds—300. To get this here quickly and safely is a prime object. Pray go into the matter with others concerned and let me know what is possible. I cannot bear to see more than 50,000 rifles or 10 million rounds in any one ship. Less if possible.

Prime Minister to Minister of Agriculture

6 Feb 41

I observe that you fear that anything up to 500,000 tons of Northern Ireland potatoes may have to be destroyed as unsaleable, the heavy decline in pig population having limited the stock-feeding outlet

200,000 win, william vin b ---

It seems a great pity that there should have been this great reduction in the number of pigs owing to the fear of shortage of feeding stuffs, if there really is this large surplus. I trust that some way will be found of utilising it. We cannot afford in these days to throw away hundreds of thousands of tons of edible material.

Prime Minister to CAS.

6 Feb 41

Some time ago we asked Greece to prepare airfields for fourteen squadrons, and this work is still going on Then, after various interchanges, you proposed sending ten squadrons to Turkey, which the Turks have not yet accepted, but which they may accept The President has cut short his journey on my message. Suppose they do accept, and after that Greece demands further aid beyond the five squadrons allotted, what are you going to do? I am afraid you have got to look at this very seriously. I am in it with you up to the neck But have we not in fact promised to sell the same pig to two customers? We might have a legal quibble about the word "promise", but I think we have got to look into this matter rather more deeply than that Let me know what you feel about it and what you think can be done

Nothing was said about time or priority, so we have that to veer and haul on

(Action this Day)

Prime Minister to Minister of Shipping 11 Feb 4:

Is it true that the steamship New Toronto, which arrived at Liverpool, was ordered to proceed north-about to London, and is it true that this order was only cancelled as a result of the protest of the captain, who pointed out the enormous value of the cargo, which contained, inter alia, 19,677 sub-machine guns and 2,456,000 cartridges? The arrival of these ships with large consignments of invaluable munitions ought to receive your personal attention in every case

Pray give me a report I attach my copy of the expected arrivals, on which I always follow the movements of these important cargoes The

ship referred to is on page 5

Prince Minister to First Lord and First Sea Lord

12 Feb 41

I should be glad to have a report every three days on the state of the Furious Night and day work is required to fit her for her duties, which are of the highest urgency.

Prime Minister to Foreign Office

12 Feb 41

We have made Weygand great offers, to which we have had no

not be one of appeal to him. Until he has answered through some channel or other the telegram I sent him he ought not to be given supplies. Not one scrap of nobility or courage has been shown by these people so far, and they had better go on short commons till they come to their senses.

The policy of occasional blockade should be enforced as naval means are available.

(Action this Day)

Prime Minister to General Ismay and Sir E. Bridges 12 Feb 41

I see a new marking [on telegrams], "Officers Only" I do not think this is suitable, considering how many people who are not officers must be privy to the most secret matters. I should like to know the reasons which have led up to starting this, but at present I am entirely unconvinced that it should continue.

Prime Minister to Lord President of the Council 12 Feb 41

There is too much truth in what Dr. Burgin says [in his letter of complaint about the State as an employer] for him to be put off by the usual official grimace. I suggest that you see him and deal with his proposition. I hear a great many cases where the Government absolutely fail to pay individuals what is admittedly their due. It seems to me that Dr. Burgin's letter might prove a very good peg for you to hang a real stirring-up of these departments upon. When one is in office one has no idea how damnable things can feel to the ordinary rank and file of the public. Dr. Burgin is a very able man and has experience. Could you not draw him out and see what suggestions he has to make, and also what examples he has to give of the shortcomings which I fear with too much justice he alleges?

Prime Minister to Minister of Supply, for Import 14 Feb 41 Executive

I am very anxious to send a complete infantry division, with their guns and essential vehicles, to the Middle East in Convoy W S 7. The men can be fitted in by displacing others, but the guns and vehicles will require extra ships. I am told that eight mechanical transport ships will be wanted over and above those required to carry the 450 vehicles which the War Office already wish to send in the convoy

I understand that loading would have to start about February 21 if these ships are to arrive in Egypt at the same time or shortly after the convoy. Pray consider how these eight ships could be found, and let me have a report of what can be done and at what cost in imports, but take no action in the meanwhile

defences] But this was certainly not the opinion of the reportation officers I met on the spot. I was distressed by the vigour of their complaints, and the evident feeling behind them. Let me have a report each week from the Commander of the Corps Coast Artillery, and let it pass through your office, with any comments you may wish to make

Prime Minister to Sir Edward Bridges

15 Feb 41

(Circulate to War Cabinet and Service Ministers only, by my

special directions)

We went through all this [vulnerability of Whitehall to air attack] last September, and came to the conclusion that we could fight it out in London. Meanwhile many improvements have been made, although the buildings are far from secure. The difficulties of moving are very great indeed, but certainly the alternative citadels should be brought to a live state of readiness by March I. I have been concerned that there is no kind of protection for GHQ Home Forces except that afforded by the fairly strong structure of the building in which they live.

How many bombs have been thrown within a thousand yards of the Central War Room? I do not myself agree that no serious attempt has been made, but we should certainly be prepared for a new assault

with 2,000- and even 5,000-pound bombs.

More speed and energy should be put into covering G.H.Q.

Prime Minister to Minister of Economic Warfare

16 Feb 41

(Minister of Information to see )

I agree about co-ordinated leaslets [for propaganda in France and Belgium], but all depends upon an intimate liaison between you and the Ministry of Information on the one hand and de Gaulle on the other. We must not the de Gaulle up too tightly. We have never received the slightest good treatment or even courtesy from Vichy, and the Free French movement remains our dominant policy. I am sure if you consult with de Gaulle or his people all will be satisfactory. I think he is much the best Frenchman now in the arena, and I want him taken care of as much as possible.

(Action this Day)

Prime Minister to Secretary of State for War and VCIGS

17 Feb 41

I do not think it is desirable to move this division [to Northern Ircland], especially in view of the possibilities of our sending the 50th away.

Mersey as well as the Clyde. Are there no smaller ports from which embarkation could be made? (b) Would it not be possible to arrange the move on the basis of a precautionary period of four days in which additional M.T. ships could be assembled? (c) The objections about moving part of the vehicles deserves further study. For instance, the troops might have issued to them an additional quantity of transport while in England to break it in, and then either this or the old could be sent to Ireland. I cannot believe that there is no floating reserve of transport capable of providing for such a small need as this. A little combing out and tightening up of the Mechanical Transport depots, Slough, etc., would certainly yield what is required.

3 We must not be content with anything less than a saving of five days out of the eleven during which the division will be out of action on both sides of the Channel. This period must be shortened to six

days, but a reasonable precautionary notice might be expected

Princ Minister to Secretary of State for War

I deeply regret the whole story of this fine body of men [the Cavalry Division in Palestine], and that the War Office can devise nothing better than to bring them all home in June to begin a training which will keep them so long out of effective action.

What exactly does the CIGS mean by "late autumn"?

Meanwhile the division will have to render whatever service is necessary in guarding the Suez Canal, maintaining order, etc., or, if necessary, escorting prisoners, so as to liberate British battalions for active service.

The 1st Cavalry Division was redesignated 10th Armoured Division on July 23, 1941, but it did not appear in the field for a long time. Its tanks were taken from it during the spring of 1942 to replace the battle losses of the 1st and 7th Armoured Divisions. In August 1942 its Headquarters and one brigade (8th) went up to the front and took part in the battle of Alam Halfa. The other brigade (9th) came up later and was attached to the New Zealand Division, taking part in the Alamein battle

Prime Minister to General Ismay

17 Feb 41

What are the arrangements in British Columbia for dealing with the Japanese colony there should Japan attack? The matter is of course for the Canadian Government, but it would be interesting to know whether adequate forces are available in that part of the Dominion About thirty years ago, when there were anti-Japanese riots, the Prime Minister to Foreign Office

I regard these developments [about appointment of Admiral Darlan as successor to Marshal Pétain] with misgiving and distrust. We have received nothing but ill-treatment from Vichy. It would have been better to have had Laval, from our point of view, than Darlan, who is a dangerous, bitter, ambitious man, without the odium which attaches to Laval. I think it is important at the moment to be stiff with these people, and to assert the blockade whenever our ships are available. In the meantime an end should be put to the cold-shouldering of General de Gaulle and the Free French movement, who are the only people who have done anything for us, and to whom we have made very solemn engagements. The emphasis should be somewhat shifted.

Prime Minister to Sır Alexander Cadogan

17 Feb 41

17 Feb 41

Please draw attention again to Mr Eden's injunction against the length of telegrams sent to the Foreign Office by their representatives abroad.

The zeal and efficiency of a diplomatic representative is measured by the quality and not by the quantity of the information he supplies. He is expected to do a good deal of filtering for himself, and not simply to pour out upon us over these congested wires all the contradictory gossip which he hears. So much is sent that no true picture can be obtained. One cannot see the wood for the trees. There is no harm in sending "background" on by bag

Prime Minister to COS Committee, Secretary of State

for War, and VCIGS

The term "division" must not become a stumbling-block A division is a tactical unit of all arms for use in its integrity against the enemy Divisions are joined together to form corps, armies, and groups of armies, with appropriate troops for the larger formations. These characteristics do not arise where there is no prospect of using a division in its integrity, or as a part of a larger formation. Although for administrative purposes a divisional command may be bestowed upon a number of troops equal to a division, who have special duties assigned to them, this should not mislead us

We speak, for instance, of a "division" in Iceland, but it would be absurd to treat this division as similar to those which would operate against the Germans. We now know what this division has got to do, and how it is distributed. It is divided into the garrisons of several posts at landing-places in a considerable country, and no doubt should

communication services should be organised and accounted for on a scale suited to the actual task of these troops in Iceland. It should properly be called "the Iceland Force", and would in no way resemble the conventional establishment of a division. It might want more of one thing and less of another

3 The African Colonial divisions ought not surely to be called divisions at all. No one contemplates them standing in the line against They comprise a large body of West and East a European army African riflemen organised in battalions, and here and there, largely for administrative purposes, in brigades. We can now expect that the Italians will in a few months be liquidated in North-East Africa. What enemy then will oppose these three African Colonial divisions? Anyone who knows these vast countries can see that these African "divisions" will be distributed in small posts and garrisons, with a number of mobile columns comprising armoured cars, etc. The idea of their being supplied with divisional and corps artillery, together with a share of the lines of communication troops on the British scale. is not sensible. They cannot be used so far north as Libya on account of the cold. We cannot contemplate holding down Abyssinia once it has been "liberated" Indeed, one imagines the whole of North-East Africa returning very rapidly to peace-time conditions Therefore I cannot accept these three African Colonial divisions as such. They are, indeed, only miscellaneous units of the African Defence Force

Prime Minister to V C I G.S. and Director of Military Operations

17 Feb 41

General Wavell has thirty-one British Regular battalions, of which, as far as I can make out, only about fifteen are incorporated in divisional formations. Pray correct me if I am wrong. It is indeed astonishing that he should be put to these straits to find a few battalions for Crete and Malta. If the West African Brigade were transferred from Kenya to Freetown two British battalions now degenerating there could come

forward to the Nile Army.

The use of three battalions to escort prisoners to India, the whole Yeomanry and Regular Cavalry Division unemployed in Palestine, large numbers of Australian troops for which we are told there is no equipment on the Regular scale of establishment, the Polish Brigade, the drafts awaiting incorporation in units which have not yet suffered any casualties—all these are large resources if ingeniously and economically used

Are there any British battalions in East Africa? Please give me your aid in the study of these aspects.

aujosa of atacit me taem tolone she carried. I always keep check myself personally of the approaching ships which are carrying large consignments of munitions Do you not get these lists in good time, and do you not yourself personally watch over the fate of these vitally important cargoes? If not, please make arrangements to do so, and report to me when these arrangements are made and what they are

Prime Minister to Minister of Labour and National Service

20 Feb 41

(Copy to Minister of Supply)

We are very short of ammunition Production is held up entirely on account of filling, which in turn is held up on account of labour With our present factories we could increase the ammunition output two-and-a-half-fold by mid-May if we could provide the labour to run them

The additional labour required is

|               |     |     |     | By March 31 | By Mid-May |
|---------------|-----|-----|-----|-------------|------------|
| Skilled males | • • |     | • • | 340         | 940        |
| Other males   |     | • • |     | 9,100       | 20,100     |
| Females       |     | • • |     | 22,500      | 40,900     |
|               |     |     |     |             |            |
| Total (say)   |     |     | • • | 32,000      | 62,000     |

Please inform me what difficulties stand in the way of providing this labour and what measures are being taken to overcome them

Prime Minister to Minister of Supply

20 Feb 41

It is satisfactory that arrangements have now been made to link the shipping figures more closely to those on which plans for consumption will be based

Meanwhile it appears that the rate of delivery of steel to consumers during the first five weeks of the current quarter has been no higher than during the last three quarters, despite the greater need

I understand that imports of steel during the last seven months have been equivalent to 2.3 million finished tons and output to 5 I million finished tons, while deliveries to consumers have been only 6 I million finished tons Would not the position be greatly relieved if some of this apparent excess of 1 3 million tons could be made available for consumption?

I see that imports of iron ore continue ahead of programme, while steel and other commodities lag behind This seems strange in view

of the shipping situation.

655

Prime Minister to Secretary for Petroleum

21 Feb 41

The very low imports of oil previously reported for the week ended January 11 have remained low, amounting to only half what they were in January last year, and covering only half the consumption

I trust steps are being taken to draw as much oil as possible from America, thus avoiding the long haul from the Persian Gulf round the Cape It should be possible to arrange with the American producers for their customers in the East to be supplied from the Persian Gulf, Burma, and the Netherlands East Indies in return for a corresponding amount of oil being delivered to us, some arrangement being made to retain goodwill.

Prime Minister to Prime Minister of Canada

21 Feb 41

I was delighted to read your speech in the Canadian House of Commons on February 17. You are quite right to prepare men's ininds for a coming shock of extreme severity. It is a comfort to think how

much better prepared we are than in the autumn

Let me also tell you how encouraged everyone here was by the strong array of facts which you brought together when broadcasting on February 2. Your ships and planes are doing great work here. The air training scheme is one of the major factors, and possibly the decisive factor, in the war. Your plans for the Army are of enormous help. I lunched with McNaughton last week, and had very good talks with him and his principal officers about the Canadian Corps. They lie in the key positions of our National Defence. The Secretary of State for Wai, who is with me now, wishes to endorse all this, and sends his kindest regards.

What a pleasure it is to see the whole Empire pulling as one man, and believe me, my friend, I understand the reasons for your success in marshalling the great war effort of Canada

Prime Minister to Secretary of State for War

22 Feb 41

The approved scale of the Army is 55 divisions plus I additional South African division, and minus, in my opinion, 3 African Colonial divisions, total tactical divisional units=53, of which II are to be armoured I see no reason to alter this target at the present time

2. During the next six months only 130,000 men are required by the Army, and the Minister of Labour is ready to supply 150,000. Would it not be prudent to take a decision governing the six months only, and review the position in four months' time, when we shall know more of the scale and character of the fighting?

3 Will you kindly give me your views upon the Minister of Labour's paper, and also some notes prepared for me by Professor Lindemann, which are to be treated as private. I am very much inclined to a greater development of armoured divisions than we have now, but it is not necessary to take a decision at the present time, as tanks and tank guns, not personnel, are the bottle-neck

4 You may count on me to sustain the Army in every possible

way, provided I am convinced that it will comb itself

Prime Minister to Sir A Cadogan

23 Feb 41

All this goes to show that we should continue to give increasing support to General de Gaulle I cannot believe that the French nation will give their loyalty to anyone who reaches the head of the State because he is thought well of by the Germans. We should reason patiently with Washington against giving any food to unoccupied France or North Africa. For this purpose all the unsatisfactory feeling about the Vichy-Weygand scene should be in the hands of our Ambassador in Washington. I am sure Darlan is an ambitious crook. His exposure and Weygand's weakness will both, as they become apparent, interest to the credit of de Gaulle.

Prime Minister to VCIG.S

25 Feb 41

Let me know what older guns they have in India now, and how many of each nature. I should like the new regiments which are forming out there to train on the 25-pounders, but actually to have available for local purposes enough of the older unconverted 18-pounders. I presume also that the old regiments of artillery in India not to be included in the artillery of the four divisions have also got their regular complement of guns.

Are there any reserves of guns of the older natures in India?

Prime Minister to General Ismay

26 Feb 41

Let me know the field state and ration strength of the troops in Malaya and of the garrison at Singapore, showing what military formations there are.

(Action this Day)

Prime Minister to First Lord and First Sea Lord 28 Feb 41

City of Calcutta, due Lock Ewe March 2, is reported to be going to Hull, arriving March 9 This ship must on no account be sent to the East Coast. It contains 1,700 machine-guns, 44 aeroplane engines, and no fewer than 14,000,000 cartridges These cartridges are absolutely vital to the defence of Great Britain, which has been so largely confided by the Navy to the Army and the Air. That it should be proposed to send such a ship round to the East Coast, with all the additional risk, is abominable I am sending a copy of this minute to the Minister of Transport

Another ship now of great importance is the Euriades, due Liverpool

March 3. She has over 9,000,000 cartridges

#### APPENDIX C

I shall be glad to receive special reports as to what will be done about both these ships

#### MARCH

Prime Minister to Secretary of State for War

1 Mar 41

I am relieved to hear that the 250,000 rifles and the 50,000,000 rounds of ammunition have arrived safely with the Canadian troop convoy. When I raised the point of getting the Admiralty to give up the 303 rifles and take the American 300 in exchange it was proposed to me on other papers that a very much larger and better change was possible by giving the newly arrived American rifles to the static troops in Great Britain, thus liberating 250,000 303's for the Regular Army I presume this will now be done. On the last occasion when we got the American rifles across we made a regular evolution of it, and had special trains waiting, and the like. I now hope you will make a rapid evolution of this new windfall, so that the weapons are in the hands of those who need them at the earliest moment.

Perhaps you will let me know what arrangements are being made

Prime Minister to Secretary of State for the Colonies I Mar 4.

General Wavell, like most British military officers, is strongly pro-Arab At the time of the licences to the shipwrecked illegal immigrants being permitted he sent a telegram not less strong than this, predicting widespread disaster in the Arab world, together with the loss of the Basra-Baghdad-Haifa route. The telegram should be looked up, and also my answer, in which I overruled the General and explained to him the reasons for the Cabinet decision. All went well,

and not a dog barked

It follows from the above that I am not in the least convinced by all this stuff. The Arabs, under the impression of recent victories, would not make any trouble now. However, in view of the "Lustre" [Greek] policy I do not wish General Wavell to be worried now by lengthy arguments about matters of no military consequence to the immediate situation. Therefore Doctor Weizmann should be told that the Jewish Army project must be put off for six months, but may be reconsidered again in four months. The sole reason given should be lack of equipment.

Prime Minister to Minister of Home Security, Minister 7 Mar 41

of Information, and Secretary of State for Air

For the last two months there has been a great decline in air raids, and I do not see why the carefully considered method by which we got through the period July-November inclusive should be now cast

#### APPENDIX C

aside I am not aware of any "depressing effect" produced upon the public morale, and as a matter of fact I thought they were settling down very well to the Job I should therefore, as at present advised, strongly deprecate change in the practice which has carried us through a very severe (and now perhaps discarded) indiscriminate attack upon the civil population. Still more should I regret precise signals being given of the hits the enemy make on specific military targets. These are however my personal views, and I am quite agreeable to the whole matter being discussed again in Cabinet, should you think this necessary.\*

Prime Minister to General Ismay 9 Mar 41

I am thoroughly mystified about this operation [against Castelo-11220], and I think it is the duty of the Chiefs of Staff to have it probed properly. How was it that the Navy allowed these large reinforcements to be landed, when in an affair of this kind everything depended upon the Navy isolating the island? It is necessary to clear this up, on account of impending and more important operations. One does not want to worry people who are doing so well for us in many ways and are at full extension, and yet it is indispensable for our success that muddles of this kind should not be repeated †

Prime Minister to General Ismay

10 Mar 41

Low-flying attack should only be a real danger on days of low cloud or mist, when our fighters cannot find the enemy. The use of aerial mines hung from small balloons should be considered for the defence of factories. Only 20 lb lift is required, so that quite a small balloon should be sufficient. When this proposal was put forward for defending estuaries it was decided that a considerably greater altitude was required, so as to have a double-purpose defence, which has entailed the production of much larger balloons, which in turn require power winches, etc. We must be content with defence up to heights of 1,000 or 1,500 feet by smaller, simpler balloons without power winches. On windy days they could be replaced by kites

This method of defence is not desirable for aerodromes, since the balloons would all have to be hauled down when our own machines were taking off or landing. For the defence of aerodromes therefore

rockets carrying mines into the air seem particularly suited

\* This is a reply to a minute from the Minister of Home Security, the Secretary of State for Air, and the Minister of Information about measures to check the spread of

harmful rumours about air-raid casualties and damage

† Castelorizzo island lies midway between Rhodes and Cyprus, and forms a link in the chain reaching out from the Dodecanese towards Syria. A British Commando occupied this island on February 25 after slight opposition. The naval forces then withdrew to Cyprus without watching events. Later heavy air attacks developed and the enemy landed reinforcements, unopposed by our naval forces. It was necessary to abandon the island.

(Action this Day)

Prime Minister to Minister of Information 10 Mar 41

Obviously there are two conditions, districts where fighting is going on and districts where it is not. The words "stay put" are wholly inapplicable to the second class, which is by far the more numerous, probably 99-100ths of the country. For these districts the order should be "Carry on".

Neither is the expression "Stay put" really applicable to the districts where fighting is going on. First of all, it is American slang, secondly, it does not express the fact. The people have not been "put" anywhere What is the matter with "Stand fast", or "Stand firm"? Of the two I prefer the latter. This is an English expression, and it says exactly what is meant by paragraph 3

The paragraphs about destroying maps, etc, clearly apply only to the fighting areas. In the present context you might have a wholesale massacre of maps, motor-cars, and bicycles throughout the

country

You might begin like this. "If this Island is seriously invaded everyone in it will immediately receive orders either to 'Carry on' or to 'Stand firm' In the vast majority of cases the order will be 'Carry on', as is set out in the first three paragraphs of the following paper. The order 'Stand firm' applies only to those districts where fighting is actually going on, and is intended to make sure that there will be no fugitives blocking the roads, and that everyone who has decided to stay in a likely area of attack, as, for instance, on the East and South Coasts, will 'Stand firm' in his dwelling or shelter till the enemy in the neighbourhood have been destroyed or driven out"

Prime Minister to Minister of Food

10 Mar 41

Yours of March 8 Would you kindly let me know what will be the objects and duties of the Food Mission you propose to send to the United States. I am at this time actively considering sending Sir Arthur Salter there to expedite and animate the whole business of merchant shipbuilding. This is a process which requires continued effort and attention, as an enormous scheme of shipbuilding has to be set on foot in American yards. What has been done up to the present is less than half of what we need

I do not however see food problems in the same plane as this. There is plenty of food in the United States, and with our dollar allocations we should be able to select wisely what to use in our tonnage Why does this require a special mission?

I have been trying as much as possible to keep the missions to the United States as few as possible However, I shall be very glad to

hear what your reasons are

Prime Minister to Secretary of State for War and others

10 Mar 41

It is of the utmost importance that a clear and consistent picture of our requirements should be presented to the United States Administration, and that their efforts on our behalf should not be hampered by

any doubts as to our vital needs and their order of priority

I had occasion to deal with one aspect of this matter recently, when I directed that all statistical statements relating to our war effort intended for the United States Government should be co-ordinated centrally here and dispatched through our Ambassador at Washington

Another aspect of the same question has now been brought to my notice. Mr Hopkins has reported that the Service attachés at the American Embassy in London are in the habit of sending messages, based on contacts with subordinate officers in the Service and Supply departments in London, which may well differ from the case which is being put to the Navy and Army Departments in Washington. He quoted a case in which the Navy Department were being pressed to allot destroyers to us, and found themselves confronted with an expression of opinion of some anonymous officer in one of the Service departments in London, conveyed through a Service attaché of the United States Embassy in London, to the effect that it was no good hoping to cope with submarines by destroyers until we had more long-range fighters

I should be glad if you would be good enough to take the necessary steps to ensure that officers in your department who are brought into contact with the staff of the American Embassy, and particularly with the Service attachés, do not express opinions which are likely to conflict with the views which are being urged on our behalf in Washington. These officers may not perhaps be aware that the views which they happen to express casually are liable to be reported to Washington. It would also seem important that officers who are in contact with the United States Service attachés should be acquainted in general terms with the nature of the requests which are being put from time to time to the United States Government in Washington, so that they may be on their guard against making remarks which would be incon-

sistent with those requests

Prime Minister to Professor Lindemann

11 Mar 41

I am expecting you to have ready for me to-night the general layout of the imports programme under different heads, so that I can see where I can scrape off with a pencil another half-million tons for food

Prime Minister to C A S

12 Mar 41

I see accounts of Germans increasing their aerodrome accommodation in Northern France I suppose our aerodromes in the south-east of the Island which we planned some time ago will now be coming steadily into use? Let the have a note on the augmentation which is in progress or has been achieved

(Action this Day)

Prime Minister to C.A.S. 14 Mar 41

The egg-layer pulled off another success last night Only one was up, but it got its prey. I cannot understand how there has been this frightful delay in devising and making the release gear. More than three months seem to have been consumed upon a task so incomparably easier than many which are being solved. Failing any mechanical solution, why cannot a hole be cut in the floor of the aeroplane and a man lying on his stomach push by hand the eggs, which are about the size of a Stilton cheese, one after another through the hole? The spacing would not be absolutely regular, but it might be just as lucky. At any rate, I want to see this hold-up and hitch for myself. I could come to Northolt Aerodrome at four o'clock this afternoon, Friday, if you can arrange to have the people concerned on the spot. It would be very nice if you would come too, and spend the night at Chequers

There is a new danger. Now that the Admiralty balloon barrage people have exposed the idea of the aerial mine and its wire, parachute, etc., the cutter may soon be coming along, and when we are at last

ready we may be too late

Surely now, when they seem to be turning on to the Mersey and the Clyde and will have to be working up to those fixed points, now is the time of all others for the egg-layers to reap their harvest

Prime Minister to Secretary of State for Air 14 Mar 41

Your programme [of R.A.F expansion] assumed for these four months a loss [in pilots] of 1,550, whereas actually 1,229 was the figure. You have therefore saved 321 pilots, and your original estimate

was 26 per cent on the safe side. This is satisfactory

2 I always expected and repeatedly told you that there would be a marked falling off in war activity during the winter months. This has always been so Let me know what are your forecasts for the next four or six months, including March. The "postulates", as you like to call them, though "forecasts" seems more natural, are in any case only of academic interest, because we are making every pilot we can as fast as we can, and our programme is based on capacity, not assignment. None the less, one may just as well see what the possibilities are

Prime Minister to General Ismay 15 Mar

I agree that the 50th Division should go with WS 8, and that that convoy should have additional ships provided to make sure that none of the essentials, apart from the 50th Division, which is to go in its

#### APPENDIX C

integrity, are cut out. Let me know what this will involve, in extra drain on shipping

(Action this Day)

Prime Minister to Controller, Admiralty

15 Mar 41

Give me a report on the progress of the ships to carry and disgorge tanks. How many are there? What is their tonnage? How many tanks can they take in a flight? When will each one be ready? Where are they being built? What mark of tank can they carry?

Prime Minister to Foreign Office

15 Mar 41

Being a strong monarchist, I am in principle in favour of constitutional monarchies as a barrier against dictatorships, and for many other reasons. It would be a mistake for Great Britain to try to force her systems on other countries, and this would only create prejudice and opposition. The main policy of the Foreign Office should, however, be to view with a benevolent eye natural movements among the populations of different countries towards monarchies. Certainly we should not hinder them, if we cannot help.

Prime Minister to Minister of Food

21 Mar 41

I hope the term "Communal Feeding Centres" is not going to be adopted. It is an odious expression, suggestive of Communism and the workhouse. I suggest you call them "British Restaurants" Everybody associates the word "restaurant" with a good meal, and they may as well have the name if they cannot get anything else

(Action this Day)

Prime Minister to First Lord and First Sea Lord

21 Mar 41

When I was at the Admiralty I repeatedly asked that more attention should be paid to the development of fuelling at sea. Now we find the German battle-cruisers are able to remain out for many weeks at a time without going into any base or harbour to replenish. If they can refuel at sea it is a scandal that we cannot do so. Again and again our ships have to be called off promising hunts in order to go back to fuel, six or seven hundred miles away. The argument that the Germans can send their tankers where they know they will find them, when we never know what is going to happen, being on the defensive and not having the initiative, does not appeal to me. Arrangements should be made to have a few tankers in suitable positions off the usual routes, so that if our ships are operating as they are now they could call one of these up and make a rendezvous. The neglect of this principle of fuelling at sea is a grievous drag on the power of the Fleet. It is the duty of the Admiralty to solve the problem.

2. Even more painful is the fact that we are not apparently able to

fuel our destroyers in the comparatively calm waters off the African coast The spectacle of this big convoy now coming up from Sierra Leone having one or two ships sunk every day by a trailing U-boat. and now the battleship escort herself also being torpedoed, is most painful Nothing can be more like "asking for it" than to have a battleship escort waddling along with a six-and-a-half-knot convoy without any effective anti-submarine escort (other than the three The Sierra Leone convoys will have to have destroyers with them Ships sunk in these waters are just as great a loss to us, and just as much a part of the Battle of the Atlantic, as if they are on the North-Western Approaches. I am told that destroyers cannot go the distance Why can they not be refuelled at sea, as has now been done. under pressure of events, for the corvettes? I am glad to hear about the air reinforcements. But destroyers are needed too. They must go all the way and be refuelled by the escort

3. The whole question of the Cape Verde Islands being used as a German U-boat fuelling base must now be reviewed with a view to action being taken. I shall be glad to hear from you on all these points

Prime Minister to First Lord of the Admiralty and

21 Mar 41

Secretary of State for Air

The use of aeroplanes, not only to attack our ships, but also to direct the U-boats on to them, is largely responsible for our losses in the North-Western Approaches No effort to destroy the Focke-Wulfs should be spared. If we could employ Radar methods to find their positions and to direct long-range fighters or slup-borne aircraft to the attack we ought to be able to inflict serious casualties. Might it not be feasible to place a Radar station on Rockall? However inconvenient and unpleasant, the geographical position appears to be so good that it would be worth making a great effort to maintain a station there, at any rate during the summer months The hills south of Lough Erne would also offer a valuable site. It might be even better if we could find ways and means of establishing stations on Tory Island or on one of the islands off the Kerry coast. These islands might be leased privately by some wealthy American friends. Please let me have a report from the technical point of view on the military results which could be expected if any of these things could be done, and upon any other possibilities that have been, or might be, examined

We should also study methods of disturbing the aircraft's communications with U-boats. I understand that the system is that the Focke-Wulf signals to Brest, whence directions are sent to the U-boat, the process taking about an hour and a half Is it not practicable either to jam these communications or to confuse all concerned by a series of

spurious messages? Presumably apparatus of the usual type for interfering with the Focke-Wulf's radio methods of navigation, which must be vital over the sea in bad weather, has not been neglected

I assume that we DF the signals he uses If he uses ASV. it should be practicable to locate and home on him with suitable apparatus\*

(Action this Day)

Prime Minister to First Lord and First Sea Lord 22 Mar 41

If the presence of the enemy battle-cruisers in a Biscayan port is confirmed every effort by the Navy and the Air Force should be made to destroy them there, and for this purpose serious risks and sacrifices must be faced. If however unhappily they escape and resume their depredations, then action on the following lines would seem to be necessary, and should be considered even now

In order to regain the initiative in the Atlantic, three hunting groups should be formed at earliest, namely, Renown and Ark Royal, Hood and Furious, Repulse and Argus Each of these groups must have one or two tankers, and every device is to be used to enable them to refuel at sea The tankers need not necessarily accompany the groups, but should be in positions where the groups could rendezvous with them

- 2 The sea-front from Iceland to Cape Verde will be roughly divided into three sectors, in each of which one hunting group will normally be working. Although working independently of the convoys, they will give an additional measure of protection to convoys passing in their neighbourhood. These dispositions should be completed by the end of April, and will come into operation in instalments at earliest.
- 3 A plan will be made to replace Furious at earliest, by converting one or more ships as aircraft transports. At the same time the Air Ministry will arrange for increased crating to Takoradi.
- 4 Considering how far we have carried the dispersal of the Fleet on escort duty, no objection could be taken to using Nelson in place of Hood
- 5 A flotilla must be found for the Freetown convoys This can be achieved out of the remaining twenty-five American destroyers which will have to work up in this Southern area. Arrangements must be made to fuel the destroyers from the escort cruiser or battleships
- 6. The evidences of German infiltration into the Cape Verde Islands, and the probability that they are being used to refuel U-boats, make it necessary to carry out Operation "Brisk" at the earliest date. Once we have got possession we must make a good refuelling base there, and
- $\star$  DF , direction-finding equipment, used to determine the direction of the source of a wireless signal

ASV airborne Radar

expel the enemy's U-boat tenders from these islands. I will discuss separately the political pros and cons of this.

As many flying-boats as can be spared, up to six, should be employed in the Freetown axea, and will also work from the islands when captured

7. Pray let me have your thought on the above, together with all possible means of carrying it out

Prime Minister to Professor Lindemann

22 Mar 41

On the assumption that an [import] programme of 35 million tons is maintained, you should consider transferring in the least harmful manner 2 million tons from Ministry of Supply to Ministry of Food. If the 35 million tons is not realised this transference must be reduced pro rata, but in any case the existing minimum requirements of food should be met. Make a sketch plan for me to discuss with Sir Andrew Duncan to-morrow night.

(Action this Day)

Prime Minister to General Ismay

23 Mar 41

War Office and Middle East should be called upon for an exact account of all refrigerated meat ships they have requisitioned, and where and how these are at present employed. I have been told that some are used in the Middle East as depots for stores. Let me have a full list, distinguishing between vessels which have been heavily converted to troop-carriers and those which could easily return to their normal duties.

Prime Minister to General Ismay, for CO.S.

23 Mar 41

Committee and Admiralty

Is it true that the War Office demand provision for eight gallons of water a day per man on a troopship, and that this has become a factor greatly reducing the numbers which can be taken? Has there been any impartial investigation of the War Office standards? I was much surprised to learn that only about 3,500 men were taken in the Queen Elizabeth and the Queen Mary each. This is hardly more than the numbers they carry when engaged in luxury passenger service. If I remember rightly, over 8,000 men were sent in the Aquitania or Mauretania to the Dardanelles in May 1915

2 Could any saving in shipping be effected by transhipping personnel from the transports into the giant liners at Capetown? Now that the Red Sea will soon be clear of enemy submarines and aircraft it would seem attractive to organise a fast service from Capetown. The

matter should at any rate be examined

Prime Minister to General Ismay

23 Mar 41

Most of this is mere talk. What is the use, for instance, of saying

that no demand has been made for cranes at the smaller ports when these smaller ports have not been used and so do not feel the pinch? Surely we ought to have facilities prepared both for unloading into lighters and coasters and for removing traffic from the small ports by improved land communications by road or rail. Let me have a list of the ports which could so be used, and let me have proposals for a minute, which I will thereafter draft, to procure effective action as a vital insurance. We have far too much at stake in the Clyde and Mersey

For the purposes of this use any help you may require.

Prime Minister to the Maharaja Jam Sahib of Nawanagar

24 Mar 41

My colleagues and I are moved by the terms of the resolution passed by the Chamber of Princes of March 17, and I am specially touched by the generous reference to myself. His Majesty's Government in the United Kingdom gratefully recognise the valuant contribution which Indian troops have made to the Imperial victories in North Africa, and they well know that this contribution will increase still further in size and in scope as the months roll on. On behalf of my colleagues I ask your Highness to express to the Chamber of Princes our appreciation of the resolute spirit with which the Princes and the peoples of India have shown themselves to be inspired.

Prime Minister to Dominions Secretary

25 Mar 41

What is the point of worrying the Dominions with all this questionable stuff [about the likelihood of invasion]? Have they asked for such an appreciation? Surely the other side should be stated too, namely:

That even if they make their original landings the communications to these lodgments will be interrupted by the Fleet inside a week

2 That we have every reason to believe that we can maintain the superiority in the British daylight air, and that our Bomber Force will therefore "Namsos" all the landings by day as well as by night

3 That, apart from the beaches, we have the equivalent of nearly thirty divisions with 1,000 tanks at April 1, held in reserve to be hurled at the different invasion points

4 That we have 1,600,000 men in the Home Guard, of whom a million possess rifles or machine-guns to deal with sporadic descents of parachutists, etc

Frankly however I do not see the object of spouting all this stuff out—some of it injurious if it leaked—unless it is thought the

Dominions require to be frightened into doing their duty

Prime Minister to Foreign Office 28 Mar 41
Monsieur Stoyadinovic should be treated with formal courtesy,

but kept under constant surveillance The Governor should be informed that he is a bad man, and was at this juncture undoubtedly a potential Serbian Quisling. It is not desirable that relations other than formal should spring up between him and the Governor or his household, or between him and people in Mauritius. Food and comfort should be appropriate to the scale of a colonel

Prime Minister to General Ismay, for C.O S.

30 Mar 41

Committee and Commander-in-Chief Home Forces

r. In the invasion exercise "Victor" two armoured, one motorised, and two infantry divisions were assumed to be landed by the enemy on the Noifolk coast in the teeth of heavy opposition. They fought their way ashore, and were all assumed to be in action at the end of forty-

eight hours.

2 I presume the details of this remarkable feat have been worked out by the staff concerned Let me see them. For instance, how many ships and transports carried these five divisions? How many armoured vehicles did they comprise? How many motor lorries, how many guns, how much ammunition, how many men, how many tons of stores, how far did they advance in the first forty-eight hours, how many men and vehicles were assumed to have landed in the first twelve hours, what percentage of loss were they debited with? What happened to the transports and store-ships while the first forty-eight hours of fighting was going on? Had they completed emptying their cargoes, or were they still lying inshore off the beaches? What naval escort did they have? Was the landing at this point protected by superior enemy daylight fighter formations? How many fighter aeroplanes did the enemy have to employ, if so, to cover the landing-places?

All this data would be most valuable for our future offensive operations. I should be very glad if the same officers would work out a scheme for our landing an exactly similar force on the French coast at the same extreme range of our fighter protection, and assuming that the Germans have naval superiority in the Channel. Such an enterprise as this accomplished in forty-eight hours would make history, and if the staffs will commit themselves definitely to the adventure and can show how it is worked out in detail I should very much like to bring it before the Defence Committee for action at the earliest moment

### APRIL

Prime Minister to Sir Andrew Duncan and Imports Executive

1 Apr 41

At the last meeting of the "Battle of the Atlantic" Committee the impression was conveyed that the great improvement in the turn-

round of tankers was mainly due to improved methods of pumping This is not so. The time has been reduced from 11 3 days to 3 3 days. The main proportion of this time saved was due to good and improved organisation. This is shown in the subjoined table. Improved discharge accounts for less than a third of the total saving. Two-thirds of it is in more able organisation.

You and your committee should look into this and see how far the Ministry of Shipping can adopt the methods of the Petroleum Depart-

ment

Prime Minister to Home Secretary

2 Apr 41

I see a note in the Daily Telegraph that you are shortly going to make a statement to Parliament on the future of horse-racing Will you kindly let me know beforehand what you think of saying? If anything were done which threatened to terminate horse-racing in time of war or ruin the bloodstock it would be necessary that the whole matter should be thrashed out in Cabinet first.

Prime Minister to First Lord and First Sea Lord

4 Apr 41

Fuelling at sea Considering that the Malaya was escorting an 8-knot convoy, or perhaps even a 6-knot convoy, I do not see why the danger of her oiling a destroyer at 12 knots should be stressed. It is quite true that during the period of oiling the destroyer the battleship could not manœuvre to avoid a torpedo. On the other hand, the advantages of having destroyers along with the convoy far more than repay this temporary disability. If four destroyers were taken along with the convoys one would be oiling while the other three would be protecting. Anyhow, nothing could be worse than to have a battleship tethered to a 6- or 8-knot convoy without any anti-U-boat craft to protect her. This is what was done on the convoy in question.

Prime Minister to CAS

5 Apr 41

Two things [about the Air Force in the Middle East] are to me ncredible

I That with a total personnel strength of 26,600 and a pilot strength of 1,175 and 1,044 aircraft on charge we can only fight 292 aircraft

against the enemy

2 That with this immense personnel and mass of obsolete machines the C-in-C Air cannot find the necessary servicing staff for the new aeroplanes as they arrive, but that large numbers have to be sent round the Cape, with resultant destructive delays

Prime Minister to First Lord and First Sea Lord

5 Apr 41

If seven cutters are available at New York within a week, why not make an evolution of getting them manned and into action from Iceland a fortnight later? Anyhow, let me be assured that all this is

in train for manning and bringing into action these vessels at the carliest moment.

Prime Minister to Sir Edward Bridges

8 Apr 41

It is very important not to have a serious break in the work at Easter. The normal Monday meeting should be at 5 p.m. Ministers are responsible for being available on the telephone at the shortest notice. It is much better for Ministers to take their holidays in rotation.

Let me have a list of who will go and who will stay I am told that

Easter is a very good time for invasion.

Prime Minister to General Ismay

8 Apr 41

We must have the fullest information about Tobruk. Let a large-scale plan be prepared, and as soon as possible a model, comprising not only Tobruk but the El Adem area. Let me have, meanwhile, the best photographs available, both from the air and from the ground

Prime Minister to Minister of Supply

8 Apr 41

I observe with some concern from the census of machine tools that there was a reduction in the average hours worked by production machine tools from sixty-six to fifty-eight hours per week between June and November 1940. It is of course not possible to reach such perfect balance between different machines that all machines are fully exploited. But the hours actually worked seem lower than might have been hoped. A small loss (1½ hours per week) is attributed directly to air raids. Some further loss is presumably due to the tendency to close factories during hours of darkness. Perhaps you would let me know the number of shifts that are being worked in the factories

It will be extremely difficult to make a case for the urgent delivery of machine tools from America if we cannot employ those we have to

better advantage

I am addressing similar minutes to the Minister of Aircraft Production and the First Lord.

(Action this Day)

Prime Minister to Secretary of State for India 10 Apr.

Thank you very much for prompt and efficient action which you took yesterday. I shall be greatly interested to see the plan you will make in the next few days for making Basra a great American assembly point. Naturally you will plan your scheme in stages so that we can have the use of it as it develops progressively. A widespread defence scheme against air attack must also be prepared. The necessary Radar stations to enable our fighters to get into the air in good time must be provided. Ask the military for plenty of photographs of the place, and send them forward with your report. Try to keep the report very short.

Prime Minister to CIGS

15 Apr 41

By this return, which I study every week, you will see that you have 1,169 heavy tanks in this country in the hands of troops. The monthly production of over 200 is going to increase in the near future. If the training of the men has not kept pace with the already much-retarded deliveries of the tanks, that is the responsibility of the Wai Office. I do not wonder that difficulties are encountered in training when 238 cruiser tanks are given to one armoured division and only thirty-eight to another. Perhaps if the 11th Armoured Division had a few more "I" tanks it would come along quicker.

Personally, I am not convinced that it is right to make each division entirely homogeneous. A judicious mixture of weapons, albeit of varied speeds, should be possible in the division. Moreover, some of these armoured vehicles ought to carry field artillery, and even one or two large guns or mortars. Let me have a report on what the Germans

do

Prime Minister to First Lord

15 Apr 41

I have heard that the use of long Actæon nets or similar device for towing behind escort vessels on either side of convoys is being investigated by the Admiralty I should be glad to have a report on progress made

If something of this sort could be developed it might go a long way to solving our problems \*

Prime Minister to Secretary of State for Air

15 Apr 41

I remain far from satisfied with the state of our preparations for offensive chemical warfare, should this be forced upon us by the actions of the enemy.

I have before me a report on this matter by the Inter-Service Committee on Chemical Warfare, together with a commentary thereon by the Ministry of Supply From these two documents the following special points emerge

(1) The deficiency of gas shell is still serious. Although the production of 6-inch and 5 5-inch gas shell was due to start in February, none has yet been produced. I understand that the shortage of 25-pounder gas-filled shell is due to the lack of empty shell cases.

(2) The production of 30-lb. L.C bomb, Mark I, will not keep pace with the production of the 5-inch UP weapon, the new mobile projector for use with the Army Indeed, supplies

will be insufficient even for training purposes

<sup>\*</sup>The Action net defence against torpedoes was being developed for use in merchant ships It could not be towed by escort vessels without seriously hampering their freedom of movement. See Vol. I, Appx. II, under date 21 IX 39

(3) The production of phosgene gas is inadequate. The output from the plant is now about 65 per cent. of capacity, having previously been only 50 per cent. over a period of some months.

I propose to examine the whole position at an early meeting of the

Defence Committee (Supply).

In order that this examination may be as complete as possible, I shall be glad to receive from the Minister of Aircraft Production and the Minister of Supply, for circulation in advance of the meeting, brief comprehensive statements of the position so far as each is concerned, showing in respect of each of the main gas weapons and components (including gases):

(1) Total requirements notified to them, with dates

(2) Stocks of components in the custody of each on April 1

(3) Supplies delivered by April 1 to RAF or Army authorities

(4) Estimated output during each of the next six months

I shall be glad if these statements can be submitted within a week They should be addressed to Sir Edward Bridges

I am addressing similar minutes to the Secretary of State for War, the Minister of Supply, and the Minister of Aircraft Production

Prime Minister to Colonel Jacob

16 Apr 41

Let me have on one sheet of paper lists showing at present time and in September last the strength of British Home Forces in (a) rifles and S A Å, (b) artillery—including all types of field and medium guins under one head, and also coast-defence batteries, and also A Å, both heavy and light (c) Number of "I" tanks and cruiser tanks in the hands of the troops (d) Ration and rifle strength of the fighting formations, (e) Number of divisions and brigade groups (i) on the beaches, (ii) behind the beaches in Army or G H Q Reserve or otherwise. (f) Strength of fighter aircraft available for action at the two dates (g) Strength and weight of discharge of bomber aircraft at the two dates (h) Strength of the flotillas in home waters at the two dates Very general and round figures will do Don't go too much into details

(Action this Day)

Prime Minister to C A.S.

17 Apr 41

It must be recognised that the mability of Bomber Command to hit the enemy cruisers in Brest constitutes a very definite failure of this arm. No serious low-level daylight attack has been attempted. The policy of the Air Ministry in neglecting the dive-bomber type of aircraft is shown by all experience to have been a very grievous error, and one for which we are paying dearly both in lack of offensive power and by the fear of injury which is so prevalent affoat.

2 The German battle-cruisers are two of the most important vessels

in the war, as we have nothing that can both catch and kill them. I have never asked that you should try to fight weather at the same time as the enemy, but good weather may increasingly be expected. I do not think this target ought to be abandoned. On the contrary, efforts ought to be made to overcome the causes of failure. Let the following be examined with the Admiralty.

Take Victorious in her unworked-up condition and let her mount twenty Hurricane fighters on her upper deck. Would this degree of fighter protection suffice to enable a dawn attack to be made by daylight by, say, a dozen bombers with the best-aiming bomb-sight we have been able to develop? Let this be studied forthwith and a report made to me

3 Naturally, I sympathise with the desire to attack Germany, to use the heaviest bombs and to give Berlin a severe dose, and I agree that the bulk of Bomber Command should be used against German targets, but photographs should be taken every day of the battle-cruisers and frequent attacks made upon them, by smaller numbers when weather is suitable or by larger forces when any movement is observable, during dark hours, apart altogether from the special daylight operations suggested above.\*

(Action this Day)

Prime Minister to CIGS.

18 Apr 41

After the capture of Benghazi on February 6 the 7th Armoured Division, which had done so much good hard service, was ordered back to Cairo to refit. This involved a journey of over 400 miles, and must have completed the wearing out of the tracks of many of the tanks. It was an act of improvidence to send the whole division all this way back, in view of the fact that German elements were already reported in Tripoli. The whole of the tanks in this division could not have been all simultaneously in a condition of needing prolonged heavy repairs. Workshops should have been improvised at the front for lighter repairs, and servicing personnel sent forward. Thus, besides the 3rd Armoured Brigade, there would have been a considerable proportion of the Armoured Brigade in the 7th Division. General Wavell and his officers seem however to have thought that no trouble could arise before the end of May. This was a very serious miscalculation, from which vexatious consequences have flowed

\*The Gueisenau had in fact been torpedoed in Brest harbour on April 6 by an aircraft of Coastal Command. In this gallant attack the aircraft and all the crew were lost. The pilot was awarded a posthumous V.C. A few days later Bomber Command aircraft scored four hits on the same ship with bombs. These successes were not known to us at the time.

In July the Scharnhorst moved from Brest to La Pallice, in the Bay of Biscay, for trials and sea training, but three days later she was successfully bombed in harbour there and severely damaged She returned to Brest for further extensive repairs

2 After their journey back at least II4 cruisers and 48 Infantry tanks, total 162, entered the workshops in Egypt, and are still there, and are not expected to come out faster than 40 by May I5 and 41 by May 30 It seems incredible that machines that could have made their journey back under their own power should all have taken this enormous time, and that only the handful of tanks in Tobruk have emerged from the workshops. Let me have a return showing exactly on what dates the cruiser and Infantry tanks entered the Egyptian workshops, and on which dates any came out and the rest are expected to come out There seems to be a degree of slackness and mismanagement about this repair work which is serious

3 What exactly are the sixty cruisers M.3, said to be arriving from the United States by the end of April? We have not heard about these

so far

Prime Minister to Secretary of State for War

20 Apr 41

In Libya some German tanks are now in our possession. Even if these were damaged, we should take all possible steps to get them examined by a skilful designer of British tanks or some other suitable engineering expert

If circumstances permit, a German tank, or suitable parts of one, could be sent home in due course. Meanwhile, if there is no adequate expert already in the Middle East, one should be sent out immediately

to conduct an examination on the spot.

I am sending a similar minute to the Minister of Supply

Prime Minister to General Ismay

21 Apr 41

I wish to have a conference on tank questions and future developments, to which the commanders of the tank divisions should be invited, as well as representatives of the Ministry of Supply. This conference should be fixed for Monday week—i e, May 5

The officers of the tank forces should be encouraged to prepare papers of suggestions, and are to be free to express their views. An agenda should be prepared in the same way as is done for the confer-

ences of Commanders-in-Chief

Pray put this all in train, and let me have a minute in a suitable form to send to the War Office.

(Action this Day)

Prime Minister to CIG.S

22 Apr 41

I have examined the tank situation with General Crawford After the 67 cruiser tanks and their spares have gone, deliveries in the next three months should be over 288 Deliveries of "I" tanks may reach 500, and we shall almost certainly have in May and June a good delivery of the A 22's It appears that the spare parts of the Mark IVs

and the Mark VIs are largely identical, except for the steering gear and one or two minor points. The engines are identical, and there is a good supply of spares already in the Middle East on which the Mark VI can draw. Therefore we only have to send the parts which are not identical.

Your trouble in the next three months is going to be finding properly trained units for the tanks which will reach you.

2. I should be very glad if you would you self look into the question of not wearing out too rapidly in training the 1,100 tanks now in the hands of troops. We do not want to be told all of a sudden that the tanks of a whole division on which we are counting have to go in for a long refit, like those of the 7th Armoured Division, just at the moment we need them most. It seems to me that training should be divided into two parts (a) training in the use of the tank, for which, even in divisions not yet fully supplied, model tanks must be provided, and (b) tactical training. In this field everything possible should be done to spare the movement of masses of tanks. A great number of exercises can surely be carried out with Bren-gun carriers driven at the corresponding speed of the tanks, and only now and again should the tanks themselves be made to wear out their tracks. The principle of the "cover hack" being ridden till you get to the meet should commend itself to cavalry officers

Pray give me a report on this.

Prime Minister to C I.G.S.

23 Apr 41

I fancy your trouble in the near future is going to be a plethora of tanks [at home] You speak of the speed and range of these vehicles In practice things do not work out like that It is only very rarely that a large homogeneous force has to make a prolonged advance or manœuvre Most times there are many hours wasted in each action when everyone is standing about and only a few can get on. Thus there is far more to be said for a mixed grill, and I cannot think of anything more foolish than stripping five divisions of cruiser tanks in order to have one all of a kind. This is one of the matters which must be discussed at the Tank Parliament about which I am sending you a note A meeting must be held in the near future. In England there are very short distances and enclosed country, and the differences between cruiser and "I" tanks will tend to diminish almost to vanishing point Uniform organisations ought not to be higher than a brigade. The tanks ought to be more evenly distributed between the units in this lull.

Prime Minister to Secretary of State for War

All the lessons of this war emphasise the necessity for good anti-

can be produced is necessarily limited; all the more need therefore to

press forward with whatever substitutes can do the track

I thought that the bombard was distinctly hopeful, and I was told that you had decided to order 2,000 of these, with 300,000 anti-tank projectiles and 600,000 anti-personnel projectiles. When can we expect these weapons to be in the hands of the troops? And at what rate? Pray let me have a programme.

Prime Minister to Secretary of State for War

23 Apr 41

There are persistent rumours that the Germans are constructing tanks with very thick armour—figures of four to six inches are mentioned. Such armour would be impervious to any existing anti-tank gun, or indeed any mobile gun; the tracks and other vulnerable parts

are very small targets.

Tests have shown that plastic explosive applied to armour plate, as, for instance, in the bombard developed by Colonel Blacker and Colonel Jefferis, has very great cutting power, and this may be a solution to the problem. In any event, we must not be caught napping I feel sure that the War Office are alive to the threat of the very thick-skinned tank, and have an antidote in mind Pray let me have a report

Prime Minister to General Wavell

24 Apr 41

Would not smoke-screens used from different directions, according to wind, give considerable immunity to ships in Tobiuk harbour?

Have you the necessary materials and appliances?

2. We should be glad to have details about the German tanks recently captured by the Tobiuk garrison. In particular, are they tropicalised, desert-worthy, and fitted for use in the very hot weather?

Prime Minister to Secretary of State for War and

24 Apr 41

Minister of Supply

I propose to hold periodical meetings to consider tank and antitank questions, the first of which will be at 10 Downing Street on Monday, May 5, at 11 am These meetings would be attended by yourselves, accompanied by appropriate officers. From the War Office I would propose that the CIGS, ACIGS, and General Pope should come, and General Martel and his Armoured Divisional Commanders should also be invited. On the Supply side I should like Mr Burton, Admiral Brown, and General Crawford to be present.

2 I am particularly anxious that all officers attending the meeting should be encouraged to send in their suggestions as to the points which should be discussed, and to express their individual views with complete freedom. I contemplate, in fact, a "Tank Parliament".

3 An agenda will be prepared for each meeting by my Defence Office, and it will include any points which you wish to place upon it,

and any suggestions or questions which the Tank Commanders wish to put forward I myself should like to discuss the organisation of armoured divisions, and the present state of their mechanical efficiency, as well as the larger questions which govern 1943

Prime Minister to Viscount Halifax

28 Apr 41

Do not discourage the President from posing his questions direct to me or allowing any of the Naval Staff to do so. My personal relations with him are of importance, and it would be a pity if they were superseded by ordinary staff routine.

Prime Minister to General Ismay

28 Apr 41

Let me have this day the minute\* which I wrote in the summer of last year directing that 5,000 parachute troops were to be prepared, together with all the minutes of the departments concerned which led to my afterwards agreeing to reduce this number to 500. I shall expect to receive the office files before midnight

2 Let me have all the present proposals for increasing the parachute and glider force, together with a time-table of expected results

Prime Minister to CIGS

28 Apr 41

The Director of Military Operations yesterday spoke of plans which had been prepared in certain eventualities for the evacuation of Egypt Let me see these plans, and any material bearing upon them

Prime Minister to First Lord and First Sea Lord

28 Apr 41

The C-m-C Mediterranean has been fully occupied in the successful conduct of the evacuation, but now he must resume his efforts to blockade Cyrenaican ports and to catch these ships or as many of them as possible. It ought to be far easier to blockade Cyrenaican ports than Tripoli. Both must be attempted, but failure to achieve the second would be specially lamentable.

Prime Minister to General Ismay, for COS

29 Apr 41

Is it not rather strange that, when we announced that the port of Benghazi while in our occupation was of no use, and, secondly, that on our evacuation we had completely blocked it, the enemy are using it freely?

Prime Minister to General Ismay

20 Apr 41

I noticed that several of the parachutists who landed on Saturday had their knuckles terribly cut. Has the question of protecting their hands and [also giving them] knee-caps been considered?

\* General Ismay, for COS Committee

I Sept to
Of course, if the Glider scheme is better than parachutes, we should pursue it, but is it
being seriously taken up? Are we not in danger of being fobbed off with one doubtful
and experimental policy and losing the other which has already been proved? Let me
have a full report of what has been done about the Gliders

### MAY

Prime Minister to General Ismay

. 4 May 41

Let me have a report on the efficiency of the gunners and personnel managing the 15-inch batteries and searchlights at Singapore Are they fitted with Radar?

Prime Minister to Secretary of State for Air

4 May 41

This [draft telegram to President Roosevelt about expansion of bomber production in U.S.A.] should surely be put forward through the regular channels. I do not like to send telegrams to the President about the general programme, which ought to be thrashed out by the very elaborate machinery provided for the purpose.

Prime Minister to Chancellor of the Exchequer

4 May 41

Is it true that the widow of a Service man killed by enemy action on leave gets only half the pension she would if her husband were killed on duty?

Prime Minister to Chancellor of the Exchequer

10 May 41

Do you think this distinction is justifiable? Is there much money in it? I was told of a case of a sailor who was drunk on duty and drowned in consequence, his widow getting full pension; while another sailor on well-earned leave, killed by enemy action, was far worse treated in respect of his wife. I doubt very much whether treating leave earned by service as equivalent to service for these purposes would cost you much, and it would remove what seems to be a well-founded grievance

Prime Minister to Chancellor of the Exchequer

IO May 41

I draw a clear distinction between deaths arising from the fire of the enemy and ordinary accidents. This is the line of demarcation which we have successfully maintained in the Bill dealing with compensation for war injuries. The air attack on this country is novel and sporadic, and can also quite safely be kept in a compartment by itself. Therefore, I reject the arguments about the concessions spreading to ordinary accidents, and from the armed forces to persons in employ on a parttime system, such as air-raid wardens and the like. I consider that in a Regular service persons bound by discipline on permanent engagement have a right to be considered when on leave as enjoying the same privileges in regard to pensions for their widows, etc., as when they are with their units. Here again is a frontier which can be effectively maintained.

In a Regular disciplined force leave is regarded as earned, and is part of the normal system of the force, and it breeds contempt of the governing machinery when one man's widow is left with half the

pension of the other merely because he was hit by the enemy's fire while on leave

Let me know what would be the expense if the regulations were amended as I have here suggested

Prime Minister to CIGS

6 May 41

Inquiries should be made whether the troops in Crete have a sufficiency of good maps. Otherwise we shall soon find that any German arrivals will be better informed about the island than our men.

Prime Minister to First Sea Lord

6 May 41

How was it [the Mobile Naval Base Defence Organisation] took twelve weeks on passage, and why was the equipment packed without any relation to its employment? One would have thought a mobile naval base plant would above all other things have been stowed so that it could have been taken out and employed

It seems to me an inquiry should be held into this lapse of Staff work

Prime Minister to Foreign Secretary

7 May 41

Will you consider whether it would not be a good thing to publish my letter to Matsuoka. I think it is important that the people of Japan generally and a circle wider than the Matsuoka military circle should be apprised of the direction in which they are moving

Prime Minister to General Ismay

8 May 41

Now that we have taken Bardia, Tobruk, Massawa, Assab, Kismayu, and other Italian African ports, pray let me have a report of the exact armament of coastal and aerial defence found there, and compare this with our Intelligence estimates beforehand. A fortnight may be allowed for the preparation of this paper. I want, in the first instance, the facts, and the Intelligence must not realise that a comparison will be made with their figures.

Prime Minister to General Smuts

8 May 41

I wonder if you would care for me to suggest to the King your appointment as an Honorary Field-Marshal of the British Army. It seems to me that the great part you are playing in our military affairs and the importance of the South African Army would make this appropriate in every way, and I need not say how pleasing it would be to your old friend and comrade to pay you this compliment.

Prime Minister to the Belgian Prime Minister

10 May 41

On the anniversary of the day when, in violation of their most solemn undertakings, the German Government, without cause or provocation, launched their armed forces against the territory of Belgium, I wish to acknowledge in the name of His Majesty's Government the effective help which the Belgian Government, the Belgian

Empire, and the Belgian armed forces and merchant marine have given to the Allied cause throughout the past year. We remember also your soldiers who resisted the invader in the Battle of Belgium, and who now in their homes oppose the will of the invader. The sympathy and admiration of His Majesty's Government and of the British people go out in especial measure to the Belgian people now under the hateful Nazi tyranny, who, by their courage and endurance, daily contribute to the defence of freedom

(Action this Day)

Prime Minister to C A.S.

10 May 41

The result of the Battle of Egypt now depends more upon the air reinforcements than upon the tanks. From every quarter and by every route, including repeated "Jaguars", fighter aircraft must be sent. The Takoradi bottle-neck must be opened up and the congestion relieved. I have asked on other papers for a further large dispatch of Wellingtons, half a dozen additional squadrons at the least. A regular flying-boat service should be established to bring back pilots who are accumulating in Egypt surplus to machines. Advantage should be taken of the presence of Air Chief Marshal Longmore in England to make a comprehensive plan of reinforcements. Speed is essential, as from every side one gets information of the efforts the enemy are making.

Prime Minister to Mr Mackenzie King

II May 41

I am delighted to hear that Mr Menzies' visit was so successful. He was with us here through times of peculiar stress, and we found him a staunch comrade. A meeting of the Imperial Conference about July or August for a month or six weeks would be most desirable if it could be arranged. I hope we shall give a good account of ourselves in the Middle East. It will not be for want of trying. Every good wish. It is splendid the way you have carried Canada forward in such perfect unity.

Former Naval Person to President Roosevelt

10 May 41

I expect you are now acquainted with the splendid offer which General Arnold made to us of one-third of the rapidly expanding capacity for pilot training in the United States to be filled with pupils from here. We have made active preparations, and the first 550 of our young men are now ready to leave, as training was to have begun early next mouth. A second batch of 550 will follow on their heels. I now understand there are legal difficulties. I hope, Mr. President, that these are not serious, as it would be very disappointing to us and would offset our arrangements if there were now to be delay. General Arnold's offer was an unexpected and very welcome addition to our training facilities. Such ready-made capacity of aircraft, airfields, and instructors

all in balance we could not obtain to the same extent and in the same time by any other means. It will greatly accelerate our effort in the air

Prime Minister to General Arnold 11 May 41

I am much obliged for the information reported by your observer in Egypt. The Air Ministry tell me that we have recently sent out to Takoradi the best officers we can find, but they are necessarily less familiar with American than with British types of aircraft and engines and welcome your offer of American experts. Details of numbers and grades desired will be sent to you by the Air Ministry as soon as possible

2 In the climate of tropical West Africa no man can work as hard or as long as at home. We should like to work three shifts, and are

planning to use ships for additional living quarters

3. We are sending to Africa one of our most energetic and competent senior technical officers, who will be responsible to Commander-in-Chief for repair and maintenance in Egypt and for general control of Takoradi reinforcement route, sole responsibility for which lies with Air Ministry. Some decentralisation of local control is necessary on a route which begins in British or American factories and ends in Egypt.

4 Criticism of technical inexperience of certain drafts to Takoradi is justified, but there is now great dilution throughout R A F We are now sending picked men. We gratefully accept your offer of loan of experts, and M A P is being pressed to provide tools and equipment

5 We agree about importance of BPC inspection, and I am

passing your criticism to the MAP

6 I am much obliged for the help already given and for your offer of skilled men. Assembly of aircraft is not sole bottle-neck of deliveries from Takoradi. Any acceleration must be matched by corresponding increase in transport aircraft for ferry pilots. Can your promised deliveries of American transport aircraft to Africa be accelerated? Thank you so much for cabling direct to me

(Action this Day)

Prime Minister to First Lord and First Sea Lord 14 May 41

Further to my "Tiger" No 2, one would hope that it could be fitted in during the moonless period after about the middle of June. In order to give greater security it might be well to send *Victorious* right through, and thus give the C-in-C. Mediterranean what he longs for, namely, two armoured aircraft-carriers. For this purpose however it is most desirable that *Victorious*, and if possible the other aircraft-carriers who would be accompanying her, should have a proportion of the best and fastest fighters which can be thrown off a float. What happened to those American Martlett aircraft? I have not heard of them for some months, yet we were told they were so promising on account of their high speed. How is the unloading of "Tiger" going on?

### APPRNDIX C

Prime Minister to General Ismay

16 May 41

What is the situation at Martinique? Are the 50 million pounds of gold still there? What French forces are there? What French vessels are in harbour? I have it in mind that the United States might take over Martinique to safeguard it from being used as a base for U-boats in view of Vichy collaboration.

Prime Minister to C.I G.S.

16 May 41

Your minute of May 15 You tell me that the total number of ciuiser tanks in a brigade of the 7th Armoured Division is 210 (including 20 per cent. reserves), and that of the "I" Tank Brigade 200 "I" tanks—say 400 heavy tanks in the 7th Armoured Division. We must try to compare like with like I am told that the German principle is two light tanks to every heavy, thus there would be in a German armoured division about 135 heavy tanks. In other words, it would have fewer heavy tanks than one of our tank brigades. What is the additional outfit of our armoured brigades in light tanks or armoured cars? Surely they have an adequate outfit of these ancillaries. It would be enormously helpful and simplify our work if you would kindly let me have in two columns the standard outfit of the 7th Armoured Division on the basis you indicate, and the outfit of a German full armoured division, and add a third column for a German colonial division

Have you noticed the reports from various sources that the Germans are using only one brigade in their divisions identified by contact?

Prime Minister to First Lord and First Sea Lord

17 May 41

At the end of February the Admiralty seem to have had forty ships of 10,000 tons and over employed as armed merchant cruisers, since when I believe about three have been sunk. We are so short of troopcarriers now that I must ask for some of these ships to be surrendered I suggest you hand over any you have left in excess of thirty—i e, about seven—leaving them with their armaments, but with reduced naval crews, and choosing those which will carry the largest number of troops. They will thus be able to defend themselves and the convoy of which they form a part.

Prime Minister to First Lord

17 May 41

This chart of the immense work of the Salvage Department makes me anxious that you should convey to those in charge of that branch a very high and express measure of commendation. Perhaps you will let me see a draft of what you propose.

Prime Minister to General Ismay

26 May 41

It is interesting to see how very much exaggerated were the estimates formed by our Intelligence Service of the coastal defences of the various

Italian ports that have now come into our hands. I have long suspected that the Italians, and probably the French also, like to have it thought that their seaward defences are on a very heavy scale. We were told, for instance, that Massawa was defended by four 8-inch, ten large calibre, and sixteen 6-inch, total thirty high-powered guns. Not one existed. In the light of this exposure the Intelligence Branches of the different departments should carefully re-examine their scale of foreign coastal fortifications, which otherwise may prove to be a deterrent upon action.

Prime Minister to General Ismay, for C.O.S. Committee 27 May 41

This is a sad story [about parachute troops and gliders], and I feel myself greatly to blame for allowing myself to be overborne by the resistances which were offered. One can see how wrongly based these resistances were when we read the Air Staff paper in the light of what is happening in Crete, and may soon be happening in Cyprus and in Syria.

2. See also my minute on gliders of September 1, 1940 † This is exactly what has happened. The gliders have been produced on the smallest possible scale, and so we have practically now neither the

parachutists nor the gliders, except these 500

3 Thus we are always found behindhand by the enemy We ought to have 5,000 parachutists and an Airborne Division on the German model, with any improvements which might suggest themselves from experience. We ought also to have a number of carrier aircraft [i e., transport aircraft] These will all be necessary in the Mediterranean fighting of 1942, or earlier if possible We shall have to try to retake some of these islands which are being so easily occupied by the enemy We may be forced to fight in the wide countries of the East, in Persia or Northern Iraq. A whole year has been lost, and I now invite the Chiefs of Staff to make proposals for trying, so far as is possible, to repair the misfortune

The whole file is to be brought before the Chiefs of Staff this

evening

|                                                    | Port | Total Intelligence<br>Estimate       | Total reported after Capture |
|----------------------------------------------------|------|--------------------------------------|------------------------------|
| Tobruk<br>Benghazi<br>Bardia<br>Massawa<br>Kismayu |      | 26<br>37<br>7 to 9<br>64<br>10 to 11 | 15<br>12<br>5<br>29<br>23    |
| Grand to                                           | otal | 144 to 147                           | 84                           |

<sup>†</sup> See footnote at page 677

Prime Minister to General Ismay, for C O.S. Committee

27 May 41

I am in general agreement with the appreciation of CIGS., but it is clear that priority and emphasis of the operations must be prescribed from here

I should be glad if the Chiefs of Staff would consider forthwith the

following proposed directive

In view of General Wavell's latest messages, he should be ordered to evacuate Crete forthwith, saving as many men as possible without regard to material, and taking whatever measures, whether by reinforcement or otherwise, are best

2 With the capture of Suda Bay or Kastelli on the south side the enemy will be most eager to land a seaborne force. The Navy must not open their sea guard yet, and should try, in any case, to take the heaviest toll, thus getting some of our own back.

3. The defence of Egypt from the west and from the north under the increased weight of the air attack from Crete presents the standard military problem of a central force resisting two attacks from opposite quarters. In this case the choice seems clearly dictated by the facts.

4. The attack through Turkey and/or through Syria cannot develop in great strength for a good many weeks, during which events may

make it impossible.

- 5 In the Western Desert alone the opportunity for a decisive military success presents itself. Here the object must not be the pushing back of the enemy to any particular line or region, but the destruction of his armed force, or the bulk of it, in a decisive battle fought with our whole strength. It should be possible in the next fortuight to inflict a crushing defeat upon the Germans in Cyrenaica. General Wavell has upwards of 400 heavy tanks, against 130 enemy heavy tanks, plus their 9-tonners, as well as light armoured forces upon both sides. He has a large plurality of other arms, particularly artillery. He has sure communications, ample supplies, and much help from the sea. He should therefore strike with the utmost strength in the Western Desert against an enemy already in great difficulties for supplies and ammunition. Here is the only chance of producing a major military success, and nothing should stand in its way.
- 6 There is no objection meanwhile to the advance he proposes with the forces specified into Syria, and he may get the aerodromes there before the Germans have recovered from the immense drain upon their air-power which the unexpectedly vigorous resistance of Freyberg's army has produced.

7 Forces should not be frittered away on Cyprus at this juncture We cannot attempt to hold Cyprus unless we have the aerodromes

in Syria. When we have these, and if we have gained a decisive victory in Cyrenaica, an advance under adequate air cover into Cyprus may become possible We must not repeat in Cyprus the hard conditions

of our fight in Crete

8 For the above purposes "Jaguar" must immediately be resumed and expanded *Victorious* is now at liberty. The movement of all troops and transport from Abyssinia northward must be pressed to the utmost, observing that the 50th Division from England less one brigade is also already approaching, together with other reinforcements

9 To sum up, the orders should be.

(a) Evacuate Crete.

(b) Destroy the German force in Cyrenaica, thus disengaging Tobruk and securing the airfields to the westward

(c) Endeavour to peg out claims in Syria for reinforcement after a Cyrenaican victory as in (b)

All these operations should be capable of completion before the middle of June

Prime Minister to Prime Minister of Australia (Mr Menzies)

29 May 41

Sincere congratulations on the powerful moving addiesses you have delivered in Canada, the United States, and above all on your return home. These have been fully reported in England, and have confirmed all the goodwill you gathered from our people. I thank you also for your very kindly references to me. Reading the Australian dispatches, I often think of Chatham's famous invocation. "Be one people!" Best of luck

Prime Minister to Minister of Agriculture and Secretary of State for Scotland 30 May 41

I have been considering the minutes you sent me early in April concerning the production of sugar-beet in Scotland. It seems to me agreed that it is desirable that in order to save shipping space the production of sugar-beet should be maintained. I am also informed that the starch equivalent of beet products per acre is two-thirds greater than that of potatoes. But I infer from what you say that for financial reasons farmers prefer to produce potatoes, of which there is no shortage.

It seems clear therefore that measures should be taken to ensure that sufficient beet is produced, if necessary at the expense of potatoes. It ought to be possible to settle between the Ministries concerned whether the increase is to be made in Scotland or in Northern England, but it certainly appears that it would be most convenient to produce the additional quantity for the Cupar factory in Scotland

If it is too late to obtain this extra output this year steps should be

taken to make sure that the shortage is not repeated in 1942 Indeed, since beet is appaiently a very valuable crop in present circumstances it should be considered whether a much larger acreage should not in future be devoted to it. Please report to me further on this at a later date.

JUNE

Prime Minister to General Ismay, for COS.

I June 41

Although I hold most strongly that we should not fritter away our torces in defence of Cypius [at this moment], I do not wish to exclude the possibility of air defence, even before we are masters of the Syrian airfields. If as a result of a successful outcome of "Tiger-cubs" it should be found possible to spare two or three fighter squadrons, these should be sent; and anyhow meanwhile preparations should be made to receive them at short notice in Cypius I do not know what is the position and state of the existing aerodromes

I should be glad if the whole subject could be reviewed by the Staffs

(Action this Day)

Prime Minister to General Ismay, for Chiefs of Staff

I June 41

Adverting to my wish that the West African Brigade should be returned from East Africa to Freetown forthwith, and that the captured Italian arms should be used to equip the Shadow Brigade now forming at Freetown or thereabouts, I have had a talk with General Giffard He says that the West African battalions require an average of eighty British officers and non-commissioned officer personnel, and that these will be lacking for the Shadow Brigade, and that even if supplied they would be better employed on handling any modern equipment we can find It has been suggested to me that the great plethora of Polish officers in Polish divisions, amounting to several thousands, might be married up to this West African Shadow Brigade I am sure that General Sikorski could easily be persuaded to find two or three hundred, and they would be very good

Pray let this be examined and a plan made General Giffard should be consulted, and I should like to have a report before he leaves the country, the object being the transfer of the West African Brigade from east to west, and the development of the Shadow Brigade on

Italian equipment and Polish white infusion \*

Prime Minister to Minister of Information

I June 41

It is most dangerous to inform the enemy that Parliament is sitting on any particular day while there is time for an attack to be made. I

\* About four hundred Polish officers were sent as proposed to the West African Division, and served with high credit

do not admit the assumption that the enemy knows all that is attributed to him

(Action this Day)

Prime Minister to C A S

2 June 41

I am glad you are pressing on with this vital business [of lengthening the range of fighters] Anyone can see you will have to pay in guinfire and mancuvrability for the advantage of range, but this may be well worth while

I do not regard your last sentence as exhaustive Machines must be modified so as to enable us to fight at particular points in daylight, both by bombers and fighters. This is particularly true of the Ægean Archipelago, where we ought to be able to bomb the Cretan and Dodecanese aerodromes by daylight under fighter protection. We have got to adapt machines to the distances which have to be traversed Again, now that so much of the German Air Force is moving East, and France is largely weakened, we ought to attempt daylight raids into Germany for bombing on a severe scale. For this the range of our fighters must be extended. If this is not done, you will be helpless in the West and beaten in the East

Prime Minister to Governor of Malta

6 June 41

I am entirely in agreement with your general outlook. The War Office will deal in detail with all your points. It does not seem that an attack on Malta is likely within the next two or three weeks. Meanwhile other events of importance will be decided, enabling or compelling a new view to be taken. You may be sure we regard Malta as one of the master-keys of the British Empire. We are sure that you are the man to hold it, and we will do everything in human power to give you the means.

(Action this Day)

Prime Minister to Professor Lindemann

7 June 41

I have several times asked you to check up on German and British air strengths as we left it at the end of Mr Justice Singleton's investigations. Pray let me have this return by Monday at latest.

I should imagine that the enemy have lost a great many more aircraft than we have, but what is the new rate of construction which he has achieved? How do matters stand? It is over two months ago since I had a thorough check made

Prime Minister to Prime Minister of Australia

9 June 41

It is not possible to hold Cyprus without having control of the Syrian airfields. We therefore thought it better to try to gain these, when we should be in a position to support Cyprus more effectively. In the meanwhile there is one Australian divisional mechanised cavalry

687

regiment and one British battalion with local troops and six Hurricanes. They are a deterrent on anything but a fairly substantial hostile scale of attack. If the enemy comes in force before we have got hold of Syria, the 1,500 men in Cyprus will have to take to the mountains, which are jugged and high, and there maintain a guerrilla as long as possible. If we cannot get control of Syria or if the Germans defeat the guerrilla in the mountains, we shall probably get a good many away. Chiefs of Staff do not think this is an unfair task to set troops. There are many worse in war. No other course is open except immediate evacuation, inviting unopposed landing. I am anxious to help you in your difficulties, and, if you wish it, I will see that Australian troops are withdrawn from Cyprus with or without relief.

Prime Minister to Colonial Secretary and General Ismay

11 June 41,

Our policy is the strictest possible blockade of Jibouti. The fairest terms have been offered to these people. Nothing must be done to mitigate the severity of the blockade. It might however be possible to arrange that if a return were furnished of the number of new-boin babies and young children a very limited amount of nourishment might be allowed to pass into the town under the most strict restrictions and surventance.

On no account must the Governor of Aden take any action which will weaken the blockade, and no supplies of any kind are to move into the town without my approving the arrangements first

Prime Minister to Lord President

14 June 41

I learn that under the scheme for reducing the basic civilian ration of petrol by half once every three months the reduction is to be made

for the first time this August

Could not this be avoided? We have to think of Bank Holiday and of the fact that many people may be getting leave this August for the first time since the war. They are no doubt counting on having their cars full at the end of July, and having also at their disposal the full ration for August.

Could you not arrange to begin the experiment in October? To make good the loss an extra half-ration month could be intercalated

during the winter

(Action this Day)

Prime Minister to Lord Woolton and

14 June 41

Minister of Agriculture

I was very glad to hear from you that the twelve hens scheme would be abandoned in favour of "No official food for more than twelve hens unless you come into the public pool" "Public chicken-food for public eggs" 2 Have you done justice to rabbit production? Although rabbits are not by themselves nourishing, they are a pretty good mitigation of vegetarianism. They eat mainly grass and greenstuffs, so what is the

harm in encouraging their multiplication in captivity?

I welcome your increase of the meat ration, but it would be a pity to cut this down in the winter, just when fresh vegetables will also drop. Can you not get in additional supplies of American corned beef, pork, and bacon to bridge the winter gap? The more bread you force people to eat the greater the demands on tonnage will be Reliance on bread is an evil which exaggerates itself. It would seem that you should make further efforts to open out your meat supplies

4 I view with great concern any massacre of sheep and oxen The

reserve on the hoof is our main standby

Prime Minister to Secretary of State for Air and CAS 15 June 41 I suggested to you some time ago that Sir Hugh Dowding should be asked to write a dispatch about the Battle of Britain, which was fought under his command during July, August, and September last I understood from the CAS, and I think also from you, that there was no objection to this

Will you kindly have the necessary official action taken?

Prime Minister to General Ismay 18 June 41

Please have a glossary drawn up to-day of the places in Syria and Libya which are most frequently mentioned. Choose in each case the simplest spelling and well-known form. This will then be telegraphed to the Middle East and circulated with supplements to all concerned.

Prime Minister to Secretary of State for Air and CAS

Is June 41

I saw a statement in the papers the other day that the Air Force were calling for several thousand volunteers to defend their aerodromes. What is the meaning of this? It was represented that this was a part of the application of the lessons of Crete. But many people have wondered why such a petty measure should have been paraded. Perhaps however it is all nonsense.

2 This gives me the opportunity to say that all Air Force ground personnel at aerodromes have got to undergo sharp, effective, and severe military training in the use of their weapons, and in all manœuvres necessary for the defence of the aerodromes. Every single man must be accounted for in the defence, and every effort should be made to reach a high standard of nimbleness and efficiency.

Will you kindly let me have a report on this

Prime Minister to General de Gaulle 19 June 41
Thank you for your message to me of June 13. I value your views highly They have been specially helpful in the light of most recent

events in Syria. You may be sure that I always cherish the interests of the Free French movement, so vital to the rebirth of France Best wishes.

Prime Minister to General Ismay

20 June 41

Please focus clearly in writing-

(a) The arrangements now proposed for more intimate association of the Army and the co-operating Air Force squadrons, and

(b) The responsibility for airfields in the United Kingdom in the event of invasion.

Prime Minister to General Ismay, for C.O S.

23 June 41

Committee

The success which has attended the admirable offensive of the R.A.F. over the Pas de Calais should encourage this to be pressed day after day as long as it proves profitable. The number of bombers going by day should be increased as much as possible, so as to take full advantage by daylight of the various targets presented. For this purpose the Cabinet should be asked to agree to the bombing of any important factories which are being used on a large scale for the repair or manufacture of enemy aircraft, and any important objectives in the area dominated should be subjected to the heaviest daylight bombing and effectively destroyed. The French workmen should at the right moment be warned to keep away from the factories, though this should not prevent our beginning before they have notice

2 On the assumption that our domination of the air over this area will be successfully established, the Staffs should consider whether a serious operation in the form of a large raid should not be launched under full air protection. I have in mind something on the scale of 25,000-30,000 men—perhaps the Commandos plus one of the Canadian divisions. It would be necessary to create a force exactly adapted to the tactical plan rather than to adhere to the conventional establishments of divisions. As long as we can keep air domination over the Channel and the Pas de Calais it ought to be possible to achieve a considerable result.

3 Among the other objectives, the destruction of the guns and batteries, of all shipping (though there is not much there now), of all stores, and the killing and capturing of a large number of Germans present themselves The blocking of the harbours of Calais and Boulogne might also be attempted

4. I should like to have a preliminary discussion this evening at 9 45 pm, and if the principle is approved the plans should be perfected as soon as possible, in case the air domination should be achieved Now the enemy is busy in Russia is the time to "Make hell while the

sun shines."

Prime Minister to General Ismay, for COS Committee, 27 June 41 Controller Admiralty, and others concerned

British amphibious attacks overseas are begun usually in the dark hours, during which it is hoped to get a certain number of Bofors guns ashore, but these will be quite inadequate to cover the landing-places from the dive-bomber attack, which must be expected almost anywhere at dawn or shortly after. The guns will have taken up positions in the dark, and cannot possibly have their predictors and combined control effective in so short a time.

2 To bridge the gap between the first landing and the seizure of airfields, with consequent establishment of British fighter squadrons and air protection, it is necessary that effective A A artillery support, at least in low-ceiling fire, should be provided How is this to be done? It can only be done by the provision of floating batteries which can take their stations in the dark hours of the first attack and be ready to

protect the landing-places from daylight onwards

3 170 tank landing-craft are now rapidly coming out month by month At least one dozen of these should be fitted as floating batteries They should be armed either with Bofors or with multiple UP projectors with AD or PE fuze. The large-size tank landing-craft are well suited to this Let a plan be made of the best possible arrangement of the guns or projectors, or both mixed The best forms of fire-control and the principle of the four-cornered ship, so as to fire at attacks from various quarters simultaneously, should be developed This is a task for gunnery and UP experts, who should be given the dimensions of the deck space available, and should work out a full scheme in technical appliances and personnel required. The Controller should report what alterations would be necessary in the ships. One ship should be so fitted at once, and a nucleus of officers trained in the fighting of a floating battery under these conditions. It would not be necessary to arm more than one ship at the present time, and it could be used for training and experimental purposes, but the remaining eleven should be got ready, with any improvements which may suggest themselves, to receive their guns or projectors All the base fittings should be made and built in so that the weapons can be rapidly mounted Meanwhile the guns and projectors can continue to play their part in ADGB, the necessary number being earmarked for speedy transfer should an amphibious operation become imminent

Pray let me have a report in one week, showing the proposed action and the time-table \*

<sup>\*</sup>This minute shows the genesis of the landing craft-flak (LCF), which was a converted tank landing-craft carrying a powerful bittery of light anti-aircraft guns. It was used to provide close air defence to landing-craft during an assault. Six of these were in service by May 1942, and thereafter the numbers greatly increased.

Printe Minister to General Ismay

27 June 41

Let me have a note of the number of Commanders-in-Chief, and the names, who have visited the room at the Ministry of Defence for the purpose of reading the files each week, so that I can see who take advantage of it Let me also see the first specimen file available for their scrutiny.

(Action this Day)

Prime Minister to Secretary of State for War and CIGS

27 June 41

Some time ago I formed the opinion that it would be far better to give names to the various marks of tanks. These could be kept readily in mind, and would avoid the confusing titles by marks and numbers. This idea did not find favour at the time, but it is evident that a real need for it exists, because the "I" tank, Mark II, is widely known as Matilda, and one of the other Infantry tanks is called Valentine Moreover, the existing denominations are changed and varied. A 22 has an alias, I think. Pray therefore set out a list of the existing official titles of all the tanks by types and marks now existing or under construction or design in our service and in the American service, together with suggested names for them, in order that these may be considered and discussed

(Action this Day)

Prime Minister to Foreign Secretary, First Lord, and First Sea Lord

28 June 41

Who has been responsible for starting this idea among the Americans, that we should like their destroyer forces to operate on their own side of the Atlantic rather than upon ours? Whoever has put this about has done great disservice, and should be immediately removed from all American contacts. I am in entire agreement with Mr. Stimson May I ask that this should be accepted at once as a decision of policy, and that it should be referred, if necessary, to the Cabinet on Monday?

Prime Minister to Secretary of State for Air

28 June 41

I understand that little or no provision is made for the defence of aerodromes between the date at which they are fit for operational use and the date at which they are actually taken over, and that this interval is often a long one, especially if some minor adjustments have to be made after the main work is completed. This appears to be a serious gap in our defences. Pray let me know what the position is

Prime Minister to Secretary of State for Air and Chief of the Air Staff

29 June 41

Chief of the Air Staff

Further to my minute of June 20, about the responsibility of the

Air Force for the local and static defence of aerodromes Every man in Air Force uniform ought to be armed with something-a rifle, a tommy-gun, a pistol, a pike, or a mace, and every one, without exception, should do at least one hour's drill and practice every day Every airman should have his place in the defence scheme At least once a week an alarm should be given as an exercise (stated clearly beforehand in the signal that it is an exercise), and every man should be at his post 90 per cent should be at their fighting stations in five minutes at the most It must be understood by all ranks that they are expected to fight and die in the defence of their airfields. Every building which fits in with the scheme of defence should be prepared, so that each has to be conquered one by one by the enemy's parachute or glider troops Each of these posts should have its leader appointed. In two or three hours the troops will arrive, meanwhile every post should resist and must be maintained—be it only a cottage or a mess—so that the enemy has to master each one This is a slow and expensive process for him

2 The enormous mass of non-combatant personnel who look after the very few heroic pilots, who alone in ordinary circumstances do all the fighting, is an inherent difficulty in the organisation of the Air Force. Here is the chance for this great mass to add a fighting quality to the necessary services they perform. Every airfield should be a stronghold of fighting air-groundmen, and not the abode of uniformed civilians in the prime of life protected by detachments of soldiers.

3 In order that I may study this matter in detail, let me have the exact field state of Northolt Aerodrome, showing every class of airman, the work he does, the weapons he has, and his part in the scheme of defence. We simply cannot afford to have the best part of half a million uniformed men, with all the prestige of the Royal Air Force attaching to them, who have not got a definite fighting value quite apart from the indispensable services they perform for the pilots

Prime Minister to Secretary of State for War and C I G S

29 June 41

We have to contemplate the descent from the air of perhaps a quarter of a million parachutists, glider-borne or crash-landed aeroplane troops Everyone in uniform, and anyone else who likes, must fall upon these wherever they find them and attack them with the utmost alacrity—

"Let every one Kıll a Hun"

This spirit must be inculcated ceaselessly into all ranks of H M forces—in particular military schools, training establishments, depots—All the rearward services must develop a quality of stern, individual resistance. No building occupied by troops should be surrendered without having

### APPENDIX D

to be stormed. Every man must have a weapon of some kind, be it only a mace or a pike. The spirit of intense individual resistance to this new form of sporadic invasion is a fundamental necessity. I have no doubt a great deal is being done.

Please let me know exactly how many uniformed men you have on

ration strength in this Island, and how they are armed.

I should like Sir Alan Brooke to see this minute and enclosure, and to give me his views about it. Let me also see some patterns of maces and pikes

Prime Minister to General Ismay, for C.O S.

Committee

30 June 41

Although we take a heavy toll, very large enemy reinforcements are crossing to Africa continually. The Navy seem unable to do anything. The Air Foice only stop perhaps a fifth. You are no doubt impressed with the full gravity of the situation.

(Action this Day)

Prime Minister to Minister of Supply

30 June 41

In the Secret Session on Sir Andrew Duncan's vote questions were asked by Mr Shinwell and others about how we stood in "heavy tanks" We have hitherto regarded A 22 as the heaviest we should make, though a great deal of work has been done, I think by Stern, on a still larger type. I believe there is even a pilot model. Of course our problem is different from the Russian or great Continental Powers because of shipment, although that is no final bar

However, it now appears, on the highest authority, that the Russians have produced a very large tank, said to be over 70 tons, against which the German A/T 6-pounder has proved useless. It seems to me that the question of a much heavier tank has now come sharply to the front. The whole position must be reviewed, and we must know where

we are-and that soon.

### APPENDIX D

# ESTIMATED BRITISH AND GERMAN AIR STRENGTHS, DECEMBER 9, 1940\*

## NOTE BY PRIME MINISTER AND MINISTER OF DEFENCE

Since the war began fifteen months ago the German Air Force is believed to have received 22,000 aircraft of all types, and the British

### APPENDIX D

Air Force 18,000 of all types for use in all theatres and for all purposes In the last eight months of hard fighting the German Air Force has received from April to November inclusive 12,000 new machines, and the British Air Force 11,000, exclusive of 1,000 from overseas. In these eight battle months, when both Air Forces have been at full extension, the intake has been about equal, averaging 1,400 to 1,500 machines a month

2 During these eight months the front-line strength of the British Air Force of about 2,100 machines has scarcely changed. Thus a monthly output of 1,400 machines has just sufficed in a period of active warfare to keep up a front-line strength of 2,100 machines.

If we reckon that of the 1,400 machines 500 were trainers, and another 200 were operational machines devoted to training—a very generous allowance in the heat of the battle—this implies that 700 operational machines, ie, one-third of our front-line establishment, was written off every month. Actually the number is probably greater than this, at any rate in the bomber squadrons, where a number of bombers equal to two-fifths of the front-line establishment is lost monthly

- 3. The German losses have certainly not been less pro rata Their battle losses between May and August were estimated by the Air Ministry as about 3,000, and from August to the end of October as 2,800 machines—1 e, 5,800 in all Our battle losses in the equivalent period were less than half of this
- 4 Information leads the Air Intelligence Branch at the Air Ministry to believe that the German front-line Air Force on May I was about three times as great as ours—say, 6,000 machines. If this were so, and their pro rata losses were not higher than ours, their monthly wastage must have been at least 2,000 machines (on the two-fifths figure even higher). If our figures for their average output, 1e, 1,500 machines, are correct, and if the statement that 1,100 of these were operational is accepted, the German Air Force must diminish at the rate of 2,000 minus 1,100, 1e, at least 900 machines in the first month. As the front line decreased, of course the losses and the rate of drop would fall, but the strength would be well below 4,000 at the end of four months

The only way of escaping this conclusion is to assume that the Germans carried an immense reserve of machines stored for such an eventuality. The pre-war output does not justify such an assumption. In any event, it would be an uneconomical proceeding, as the machines would rapidly become out of date. Any well-arranged Air Force reckons to have a reserve at the outbreak of war to tide it over the first two or three months while the war machine begins to operate, and to run on production thereafter.

### APPENDIX D

An investigation should be made showing exactly what proportion of our front-line establishment was written off each month, and what were the causes. It should be possible to make a fairly accurate estimate of our battle losses and the German battle losses, and the calculation should be made assuming that their other losses are pro rata the same as ours. It should be borne in mind that the Germans must send to the training establishments and write off therein an equivalent number of those which we have to devote to this purpose, O T U s counting as training establishments.

5 According to our information, only 400 German trainers are produced each month. This number seems most madequate to replace the pilot wastage in such a huge An Force as the An Intelligence attributes to the Germans. We use considerably more, without count-

ing those delivered direct to the training schools in Canada

We are told that Germany had a huge reserve of pilots trained before the war, and that few pilots trained since have been found among the prisoners. If this were so, and if the huge reserves of machine also had really been in existence, it seems inconceivable that they should not have been brought together and the operational strength correspondingly increased for the duration of the great air battles.

6 Every effort must be made to clear up the present contradiction. The MEW estimate for the output is incompatible with a front-line strength much higher than 3,000 machines. This figure is consonant with the weight of the German effort at Dunkirk and in the Battle of Britain (taking account of the favourable geographical factors). The Air Intelligence estimate is nearly twice as great.

At present the only possible explanations seem to be

- (a) That MEW is wildly wrong, and that the German output is nearly twice as great as they believe. Further, that the Germans did not make any very great effort in the Battle of Britain or at Dunkirk.
- (b) That, on the contrary, our German Section have been misled, possibly intentionally, by the Germans, and are pinning their faith to an estimate far in excess of the real figure.
- (c) That the units identified by the German Intelligence Section are not all of them what we should call front-line units, but that a considerable proportion of them (at least one-third) are non-operational, perhaps corresponding to OTUs

# APPENDIX E

# MONTHLY SUMMARY OF LOSSES OF BRITISH, ALLIED, AND NEUTRAL MERCHANT SHIPS AND FISHING VESSELS BY ENEMY ACTION

(Figures corrected to May 1, 1949)

|           |             | Витіѕн | SH         | ALLIED      | IED        | NEUTRAL     | TRAL       | To.                    | Total      |
|-----------|-------------|--------|------------|-------------|------------|-------------|------------|------------------------|------------|
| 1941      | No of Ships |        | Gross Tons | No of Slups | Gross Tous | No of Ships | Gross Tons | Gross Tons No of Ships | Gross Tons |
| Tanifary  | 44          | _      | 209,394    | 30          | 107,693    | I           | 2,962      | 75                     | 320,048    |
| February  | - 5         | _      | 316,349    | 20          | 82,223     | н           | 3,197      | 100                    | 401,768    |
| March     | . 8         |        | 366,847    | 32          | 138,307    | 6           | 32,339     | 139                    | 537,493    |
| April .   | . 62        | _      | 362,471    | 67          | 256,612    | <b>∞</b>    | 34,877     | 154                    | 653,960    |
| May       | 96          |        | 387,303    | 24          | 98,539     | 9           | 14,201     | 126                    | 500,003    |
| Tune      | . 8         |        | 268,634    | 35          | 142,887    | IO          | 19,516     | 108                    | 431,037    |
| Tuly      | 300         |        | 95,465     | 0           | 23,994     | н           | 1,516      | 43                     | 120,975    |
| August .  | 31.         |        | 686,96     | 0           | 32,010     | н           | 1,700      | 41                     | 130,699    |
| September | . 61        |        | 215,207    | 13          | 47,950     | 9           | 22,595     | 83                     | 285,752    |
| October   | 32          | 43     | 151,777    | 14          | 53,43+     | 5           | 13,078     | ŞI                     | 218,289    |
| November  | - 8         | _      | 91,352     | ,4          | 6,260      | H           | 6,600      | 34                     | 104,212    |
| December  | 124         |        | 271,401    | 44          | 159,276    | 61          | 55,308     | 187                    | 485,985    |
| Totals    | 772         |        | 2,833,189  | 298         | 1,149,203  | 7.1         | 207,889    | 1,141                  | 4,190,281  |

Note.—The losses in December include about 270,000 tons lost in the Far East. Of this 194,000 tons was British

### APPENDIX P

### APPENDIX F

### MILITARY DIRECTIVES AND MINUTES

### JANUARY-JUNE 1941

Prime Minister to Secretary of State for War and CIGS

6 Jan 41

W S 5A has already started and B starts immediately. There is therefore no question about them. They contain together 55,000 men, of whom 12,000 are for India, etc., and 43,000 for M E. Of the 43,000 M E, about 22,000 are for fighting units and drafts, and 21,000 technical, L of C, base, etc., of which about 4,000 are Navy and R A F. Thus the Army in M E receives 22,000 fighting and 17,000 other men

2 The present composition of the Army in the Middle East (excluding Kenya and Aden, nearly 70,000) reveals 150,000 fighting troops Behind this are 40,000 L of C and 20,000 base establishments and details—1 e, 150,000 to 60,000 To this will now be added by W S 5A and B 22,000 fighting and 17,000 L of C, base, etc, making a total

of 172,000 fighting and 77,000 rearward services

3 Convoy WS6, now being loaded, contains 8,500 fighting troops, plus fighting share of 4,000 diafts—say 2,500—equals total fighting troops 11,000, excluding the Mobile Naval Base, 5,300 (of which later), and the RAF (including training school to Capetown) and RN 7,000, 2,000 Fice French, and about 9,000 base and other details. Upon the arrival of this convoy the total figure for the Middle East will stand at fighting troops 183,000 and 86,000 rearward units—1e, 15 to 7 The progressive deterioration in the proportion

between fighting troops and rearward services must be noted

4 But the category "fighting troops" requires further searching analysis. We are told, for example, that the 7th Australian Division, 14,800, is untrained and largely unequipped, and there is the Cavalry Division, 8,500, whose mechanisation has not yet made progress, and who cannot really be called fighting troops except for local order. There are several other units I could specify which are similarly not fighting troops in the effective mobile sense—say 6,000. Thus 29,000 should properly be subtracted from the fighting total, reducing it from 183,000 to 154,000, and added to the rearward services and non-effective, raising them from 86,000 to 115,000. The condition of the Army of the Middle East (excluding the 70,000 in Kenya and Aden) is therefore represented by 154,000 fighting troops and 115,000 rearward and non-effective (except for immediate local security). The

proportion of non-effectives seems much too high. It must be remembered that further great reductions could be made from the effective fighting troops, since every division or brigade group has its own first-line transport and is supposed to be a self-contained military unit Further, it should not be forgotten that in order to supply all this rearward and unorganised or non-effective strength the rations of the British people have had to be severely reduced, and further cuts are in prospect, and that every man and every ton of stores has to be carried and transported at heavy risk from enemy U-boat, air, and raider attacks round the Cape of Good Hope by ships whose thereand-back voyage occupies, with turn-round, not less than four months. It is therefore incumbent upon all loyal persons, whether at home or in ME, to try to increase the fighting troops and to keep at the lowest possible the rearward and non-effective services. In this lies a great opportunity for brilliant administrative exertion, which might produce results in war economy equal to those gained by a considerable victory in the field

5. If I could be assured that the plethora of rearward services contained in the aforesaid convoys W S 5A and B and W S 6 would animate and render effective the 29,000 non-effective fighting men mentioned in paragraph 4 above I should be content. For instance, will the 7th Australian Division gain the ancillary services necessary to fit it for other than local action? Will the 8,500 Cavalry Division become a mechanised unit capable of acting in brigades, or at least regiments, against the enemy? Then, although the proportions of non-fighting troops now crowding our convoys would still be a very hard measure, at any rate the Army in the ME would grow markedly in fighting strength, and the delay in sending the 50th Division would be tolerable. It may be that some consoling information will be forthcoming about this

The question of whether it would be better to send the 1st Brigade of the 50th Division instead of the Mobile Naval Base in W S 6 is nicely balanced, but preparations may have advanced too far for a convenient change of plan. This must be considered to-morrow (7th) by C O S. Committee, observing that it will be out of action for nearly three months

6 It is otherwise necessary to approve the dispatch of W S 6 (reduced to 34,000 or less) as now proposed. I deeply regret the resultant composition of the Army in the M E. When all these convoys have arrived its total will amount to 240,000, plus 43,000, plus 20,000—total over 300,000, to which must be added 70,000 in Aden and Kenya—total 370,000 men, on pay and ration strength. From this enormous force the only recognisable fighting military units are the following

### APPENDIX F

6th Australian Division
One New Zealand Division, comprising two brigade groups
4th Indian Division.
5th Indian Division.
16th Infantry Brigade
2nd Armoured Division.
7th Armoured Division (incomplete).
6th British Division (incomplete)

And such fighting units as have been formed from the 70,000 men in Kenya and Aden—e g, two South African brigades, two West African brigades, and local East African forces. It is hoped that to these will soon be added (a) the completion of the above incomplete units, (b) a seventh British division formed out of the unclassified and by combing the rearward services.

the 7th Australian Division, and a mechanised cavalry division

This will amount to about ten divisions, infantity, almoured, and cavalry, plus say, one division from Kenya—total 11 divisions. Even this would be a very small crop to gather from so vast a field

Prime Munster to General Ismay, for COS.

21 Jan 41

The following decisions arise from our discussion last night

Three Glen ships, with full complement of landing-craft and with the Commandos assigned to those ships on board, less one Commando (which General Wavell already has), should sail at earliest round the Cape to Sucz

2. There will remain behind

(a) The Commandoredundant through one being already in Egypt

(b) The Commando troops embarked on Karanya

(c) The rest of the Commando force in this country. This should be made up immediately to the full strength of 5,000 and be fully equipped, and should continue their training at full speed. If this is not done we shall have lost an essential weapon of offence needed to man and use the new landing-craft, which are coming out steadily now from the builders. It will be necessary for D.C.O. to remain at home to reorganise and rebuild this force up to its full 5,000.

Pray let me have a plan to implement paras, 1 and 2 during the day

(21st)

3 General Wavell should be told that his plans for advancing to Benghazi are approved Unless this presents altogether unexpected difficulties he should at the same time be able to prepare in the Delta a

force sufficient to take the principal "Mandibles" [Rhodes] when the landing-craft and the Commandos arrive. In the meanwhile he is to make all preparations in order that the attack may be delivered at the earliest moment. He should be asked to report on the above assumption when he could do this, and what main units he would use. It is hoped that the attack would be delivered not later than March i

4. General Wavell should also begin immediately to build up in the Delta a strategic reserve to be used in Greece or Turkey as occasion may require. Having established himself strongly at Benghazi with a field force and an armoured division based on that port, he could drop the overland line of communication and thus save both men and transport

Benghazi, if captured [by us], should be made a strongly defended naval and air base, guns, etc, being drawn as may be necessary both from Alexandria and intermediate ports or posts on the lines of communication. He ought therefore to be able to create a strategic striking force (of which the troops for "Mandibles" will form a first instalment) in the next two months. It is hoped that this force may soon attain the equivalent of four divisions, though probably brigade group organisation would be preferable.

5 The air disposition must conform to the above, subject to the commitments we have already made to Greece. The first duty of the A O C -in-C M E is none the less to sustain the resistance of Malta by a proper flow of fighter reinforcements. To enable these tasks to be performed Furious will make another voyage with a third consignment

of forty Hurricanes

6 An expeditionary force of two divisions, plus certain corps units and the Commandos when reorganised, should be prepared for action in the Western Mediterranean, whether for "Influx" or "Yorker," to aid General Wavell as circumstances may suggest. Both these plans are to be studied and perfected, "Yorker" being the more probable. A commander should be appointed and an attempt made to be ready to act after March 1. The impingement of the above on later convoys to M.E. must be examined and reported.

Prime Minister to Secretary of State for War

I am very much obliged to you for the considerable effort you have made to meet my views and reduce Army demands upon the man-

power of Great Britain.

2 I still do not understand how a division supposed to be complete with 15,000 men of all arms requires 35,000 men, or 20,000 extra Perhaps it will be simpler to take a corps of three divisions, which on your calculations would require 105,000 men, of which 45,000 only would be included in field units. Let me have a table showing how the remaining 60,000 are divided between

(a) corps troops,

(b) share of Army troops,

- (c) lines of communication troops
- 3 Neither do I understand the scale on which the lines of communication troops is calculated. The troops in Great Britain lie in the midst of their base of supplies and of the most highly developed railway network in the world. They have roads innumerable and of high quality. In the event of invasion the advances they would have to make are in the nature of 70–100 miles at the outside, although of course a larger lateral movement by rail from south to north, or vice versa, might be required. Such conditions are not comparable at all with those prevailing in France, where, owing to our choosing to base ourselves on St. Nazaire, etc., we had a 500-mile line of communication, mainly by road, to maintain. What are the differences in the scale of L of C. troops provided for the first ten divisions in France this time last year and those you now propose for the troops retained in Great Britain for defence?
- 4 The problem will not be solved without taking a view forward of what is likely to happen in the next twelve months. We shall certainly have to keep not less than fifteen British divisions behind the beaches to guard against invasion. For the bulk of these a scale much less than the French scale (BEF) should suffice. The forces in the Middle East, now that the Mediterranean is closed, can only be built up at a reduced rate. But we ought to assume that by July there will be in the Delta or up [along] the Nile 4 Australian, I New Zealand, 1 + 1 South African, \* 6 out of 8 Indian, and 3 British divisions, or their equivalents in brigade groups. In addition, there will be in Africa the four African Colonial divisions These last, surely, are not divisions in the ordinary sense—ie, capable of being used as integral tactical units in the field? Are they not, in fact, the garrisons of East and West Africa and the Soudan, requiring only small complements of artillery and technical troops, and with lines of communication provided locally? Let me know what scale of corps troops, share of Army troops and L of C. troops you contemplate for these four sedentary or localised so-called "divisions". Is it not a mistake to call them divisions in any sense?
- 5. Returning to the Army of the Nile, with its sixteen divisions, it must be observed that once Benghazi has been taken and strongly fortified with a field force based upon it the conditions in Egypt should be such as to enable internal order to be maintained by Indian divisions, who will in fact be living very close to the possible centres of disturbance, and who will not have to take the field like a British division

<sup>\*</sup> Extra to original 57

acting in France or Flanders, or even a British division at home What scale of L of C. troops are you providing for these? Do you think it necessary to organise them in corps, and supply them with the European quota of medium and heavy artillery, etc?

- 6 We must however contemplate as our main objective in this theatre the bringing into heavy action of the largest possible force from the Army of the Nile to fight in aid of Greece or Turkey or both How many divisions, or their equivalent, do you contemplate being available by July for action in South-East Europe? I should have thought that the 4 Australian, I New Zealand, I of the 2 South Africans, the 3 British, and 3 of the 6 Indian divisions should be available—total 12 These troops must be equipped on the highest scale, for it is Germans they will have to fight. On the other hand, they will come into action only gradually—probably 4 divisions by the end of March, and the rest as shipping and equipment becomes The problem, therefore, is for a first-class scale for 12 divisions against the Germans, a very much reduced second-class scale against the disorders in Egypt, or to take charge of conquered Italian territory, and a still lower scale for the so-called African Colonial Division I hope that with this picture, which the General Staff should consider carefully, your problem may be more precisely defined viz, 5 British divisions at home at highest mobility, 10 at secondary, working up to 12 in the Middle East in action against the Germans in Greece of Turkey on the highest scale, 4 in Egypt, Soudan, etc., on a moderate scale, and 4 African Colonials, according to local conditions -total 35, to which must be added 2 Indian divisions, for service in Malaya, total 37, leaving from your total of 58\* 21 divisions Of these 9 are armoured divisions, leaving 12 British infantry divisions to be accounted for
  - What is the picture and forecast for these 12 British divisions? Up to 6 they have to go at very short notice to French North Africa, or alternatively perhaps to work with a friendly Spain. We cannot do both. These 6 divisions will come into operation in 2 corps of 3 divisions each, but owing to shipping exigencies they can only come gradually into operation. In so far as they come into action at all, it will be against the Germans. Therefore, whatever is thought to be the most appropriate scale must be provided. It must however be observed that neither of these theatres offers opportunities for the use of heavy or much medium artillery, and that in the Spanish alternative the war might well take a guerrilla form.
  - 8 We cannot hope to arm the remaining 6 divisions to the full scale for many months to come, but if they were brought to the anti-

<sup>\*</sup>One South African division extra to original 57

#### APPENDIX 1

German scale for oversea operations by the end of August 1t would be satisfactory

- 9. Nine armoured divisions are comprised in the total number of 58. What is the distribution contemplated for these? At first sight 4 at home, 2 available for amphibious action in the West, and 3 in the Middle East or Balkan theatre would seem appropriate. It is clear that the rearward and repair services of any of these divisions sent abroad require to be on a larger scale than those which he handy to all the great workshops of Great Britain. Have these differentiations been allowed for?
- 10 Battle wastage at 8,500 a month is not excessive as a theoretical forecast. In practice however it does not seem likely that, apart from invasion, action on this scale will begin for several months. It might be safe as a working arrangement to bring this monthly figure of 8,500 into account only from July 1, 1941. This would save 60,000 men [from the calculation]
- year, appears a high figure, and one wonders whether it may not be reduced as better accommodation and more settled conditions are established in Great Britain, and as the men themselves become more seasoned. I should like to know how many of these men discharged from the Army are unfit for any other form of war work. What is the number of deaths per month, the total incapacitated, those fit for lighter duties, and those fit for munitions work? I should expect that at least 10,000 a month would be capable of some other form of employment. This point is important for the War Office, as in stating the man-power demand which is to be made upon the nation the Army should credit itself with any men who are yielded up who are still capable of civilian service. This of course does not affect the problem, but only the statement of the problem; none the less it is important
- 12 I regard A D.G B as a source which may well at some future date yield economies because of new methods and our increasing ascendancy in the air. It is astonishing how great are the numbers of men required per gun. Careful study should make it possible to reduce the numbers in many localities, and to accept a slightly lower scale of immediate preparedness. Even a small percentage of saving under these heads would enable the additional guns and searchlights now coming into action to be manned with a smaller demand upon man-power
- 13. I hope I am not to infer from the expression "beach battalions" that any body of young, physically fit, efficiently trained men would be relegated to a particular function. It is indispensable that a continuous rotation should take place, all brigades taking their place on the beaches in turn, or coming into the back areas for service in the mobile divisions.
  - 14 Generally speaking, I do not consider that 11 demand by the

Army for 900,000 men, less 60,000, less 150,000 (paragraphs 10 and 11)=690,000 net up to October 1, 1942, is excessive. The training process must be maintained, wastage must be made good. [When] once the Army is heavily engaged it would be more natural to draw large numbers from the public and to comb the munitions and A R P services. It is the demand in the next six months, while military operations are at a minimum, that I am anxious to keep within limits

15 I await the further information which I ask for in this paper, but meanwhile I should greatly legret to see 20 medium regiments or 480 guns retrenched for a mere saving of 18,000 men out of the enormous totals presented, and similarly, 7 field regiments of 168 guns for the sake of saving 5,600 men. It is essential to strengthen the Army in fighting troops, and it is better to take some risks in theoretical calculations of wastage, even if these should be falsified at a later date, than to fail at this moment to produce the proper quota of artillery

# ARMY SCALES

# DIRECTIVE BY THE MINISTER OF DEFENCE

6 Mar 41

When in September 1939 the Cabinet approved the formation of a Field Army of 55 divisions it was not realised that a division as contemplated by the War Office, with its share of corps, Army, G H Q, and L of C formations, would require 42,000 men, exclusive of all training establishments and of all garrisons, depots, or troops not included in the Field Army. At that time also it was assumed that the bulk of our Army would stand in the line with the French under conditions comparable to those of the last war, whereas the bulk of our Army now has to stay at home and defend the Island against invasion. Thirdly, the shipping stringency makes it impossible to transport and maintain very large forces overseas, especially on the high scales which the War Office regard as necessary.

2 Out of the 55 divisions (now become 57), 36 are British and 21 overseas troops Of the 36 British divisions, I (so-called) division is in Iceland, and I (the 6th) is forming in Egypt, together with 2 armoured divisions there, total British divisions now overseas=4

3 Twenty-five British infantry divisions and the equivalent of 7 armoured divisions in process of formation, total 32, are now included in the Home Forces Army At 19,500 men apiece, these 25 British infantry divisions aggregate 487,500 men, and the 7 armoured divisions at 14,000 apiece aggregate 98,000, total 575,500. In addition to the divisional organisation, C-in-C Home Forces has 10 independent brigades, including the Guards brigades, 27 beach brigades, and 14 unbrigaded battalions, all British At an average of 3,500 men apiece,

#### APPENDIX I

these 42 brigades or equivalents account for about 150,000 men. Therefore the total number of British in tactical formations at home amounts to 735,500 men.

- 4. There are on our ration strength at home 1,800,000 British soldiers 735,500 are accounted for in the above formations, leaving 1,064,500 to be explained as corps, Army, and G.H Q troops and A D G B., or as training establishments, depots, etc., and as part of the rearward services of the forces overseas.
- It is upon this pool of 1,064,500 that the Army must live By wise economies, by thrifty and ingenious use of man-power, by altering establishments to fit resources, it should be possible to make a very great improvement in the fighting stiength. Apart from this capital fund of man-power, the Army can count each year upon its 18's and 19's. It is only in the event of heavy casualties being sustained through many divisions being simultaneously and continuously in action—which, except in the case of invasion, is extremely unlikely—that any further inroad can be allowed upon the man-power resources of Great Britain. In other words, the Army can rely on being kept up to something like their present figure of about 2 million British, and they will be judged by the effective fighting use they make of it
- 6 At the same time, it will be well to plan an eventual increase of armoured formations to the equivalent of 14 armoured divisions (or 15 if the Australian armoured division materialises), in which would be included the Army tank brigades. A reduction of several infantry divisions would be required, and the British Army would then be composed of 14 armoured divisions (or their equivalent) and about 22 infantry divisions. The War Office and Ministry of Supply should work out proposals on these lines
- 7 The 3 East African divisions and the West African division should not be organised in formations higher than brigades or small mobile groups adapted to the duties they have to perform.
- 8 It will be impossible for us to maintain from Great Britain any large addition to our Army in the Middle East, because we have to go round the Cape The main accretion of this Army must come from India, Australasia, and South Africa, with later on munitions from the United States Three or four more British divisions is the most we can hope to send and keep there. One must consider that General Weygand's silence has released us from any offer of helping him up to six divisions, although of course we might act on our own volition. An amphibious striking force of eight or ten divisions, mostly armoured, is the utmost that need be envisaged in the West. There can be no question of an advance in force against the German armies on the mainland of Europe

9 The above considerations and the situation as a whole make it impossible for the Army, except in resisting invasion, to play a primary rôle in the defeat of the enemy. That task can only be done by the staying power of the Navy, and above all by the effect of air predominance. Very valuable and important services may be rendered overseas by the Army in operations of a secondary order, and it is for these special operations that its organisation and character should be adapted.

10 The reactions of the foregoing directive on man-power accom-

modation, ammunition, stores, etc., should be worked out

Prime Minister to General Wavell

4 June 41

I have for some time been considering means by which I could lighten the burden of administration which falls on your shoulders while you have four different campaigns to conduct and so much

quasi-political and diplomatic business

2 During the last nine months we have sent you close on 50 per cent of our whole output here, excepting tanks and less India's subshare. You have at the present moment 530,000 soldiers on your ration strength, 500 field guns, 350 A.A. guns, 450 heavy tanks, and 350 anti-tank guns. In the months of January to May upwards of 7,000 mechanical vehicles have reached you. In drafts alone, apart from units, we have sent since the beginning of the year 13,000. The fighting in the South has for two months past enabled a northward movement to begin, yet you are evidently hard put to find a brigade, or even a battalion, and in continual telegrams you complain of your shortage of transport, which you declare limits all your operations

3 In order to help you to produce the best results, I wish to relieve you as much as possible of administration, and thus leave you free to give your fullest thought to policy and operations. Here at home General Brooke has a very large Army to handle and train, but he has behind him the departments of the War Office and of the Ministry of Supply. Something like this separation of functions must be established in the Middle East, although in this case your ultimate authority as

Commander-in-Chief will reign over the whole theatre

4. What has been said above applies also, mutatis mutandis, to the

Air Force and Fleet Air Arm

5 The shipping stringency has prevented the reinforcement of the Middle East to the scale which I had hoped for some months ago, and the undoubted threat of invasion in the late summer and autumn had made the General Staff and the Home Forces Command most close-fisted Nevertheless it is hoped, depending on the situation, to send you in the next four months, that is to say, June, July, August, and September, an additional infantry division, besides the 50th, as

#### APPLNDIX I

well as a full supply of drafts, details, and equipment of all kinds. Thus it should be possible to organise for the autumn and winter campaigns, which may well be very severe, the following mobile field forces.

Four Australian divisions.

One New Zealand division

Two British Indian divisions (4th and 5th).

Two South African divisions

The 6th British Infantry Division—to be organised on the spot,

The 50th British Infantry Division, and

The new division (total British divisions thice).

You have now ready or in process of construction the 7th and the 2nd Armoured Divisions, and you have got to make the best you can of the trained Cavalry Division, which is being reconstituted as an armoured force Total, fifteen divisions This represents about 600,000 men, from which, without prejudice to the mobile divisions, internal security forces and rearward services must also be provided

6. All future British-Indian divisions will go in at Basra, and I hope that Eritica, Abyssima, Kenya, and the Somalilands can be left to native African forces (less one West African brigade to be returned to

West Africa) and armed white police

7 The development and maintenance of the Army of the Nile, operating in Cyrenaica and in Syria, would require organisation and workshops on a far larger scale than you have yet enjoyed. Not only must the Egyptian workshops be raised in strength and efficiency, but further bases, with adequate port facilities, will have to be built up, say at Port Sudan and Massawa, using perhaps the town of Asmara, which has fine buildings, and also Jibouti, when we get it. At the same time developments on a great scale will be set on foot by the Government of India, with our active aid, it being hoped that at least six or seven divisions, with apparatus, may presently operate thence.

8 I therefore propose to set up under your general authority an organisation under an officer of high rank, who will be styled "Intendant-General of the Army of the Middle East" This officer will be equipped with an ample staff, drawn largely from your existing administrative staff and with a powerful of growing civilian element, to discharge for you, as mentioned above, many of the services rendered by the War Office and Ministry of Supply to General Brooke His duties will include the supervision and control of rearward administrative services, including the military man-power not embodied in the tactical units or employed in the active military zone.

9 President Roosevelt is now sending, in addition to the thirty ships under the American flag, another forty-four vessels, which carry, among other things, 200 additional light tanks from the United States

Army Production, and many other important items, of which I will furnish you a list. It seems to me probable, and I am trying to arrange, that a great part of the supply of your armies will come direct from the United States, both by the eastern and western routes.

To Accordingly, we are sending out by air General Haining and Mr T C L Westbrook, of the Ministry of Aircraft Production General Haining will be appointed Intendant-General. The War Office are telegraphing to you separately instructions which are being issued to him. Under him Mr Westbrook will take charge of the development of ports and transportation facilities and the reception, maintenance, and repair of the whole of the armoured vehicles and mechanical transport. He will be accompanied by a number of consultants on specialised subjects, such as transportation, port development, and workshops. He will collaborate with Air Marshal Dawson, who is in charge of the cognate activities of the Royal Air Force and Fleet Air Arm, with a view to pooling resources.

the spot and to discuss with you the implementing and precise definition of the general directive and policy set forth in the preceding paragraphs, which must be accepted as a decision of His Majesty's Government. After not more than a fortnight from the date of his airival the report must be telegraphed home. I hope it may be agreed, but any points of difference will be settled promptly by me. Moreover, I shall not allow the scheme to lose any of its force and scope in the

detailed application which must now be given to it

12 Because of the great mass and importance of the American supplies, and the fact that the war in the Middle East cannot be conducted at its needful scale without them, I have asked Piesident Roosevelt to allow his envoy here, Mr Harriman, to proceed forth with to the Middle East with the other members of the mission Mr Harriman enjoys my complete confidence, and is in the most intimate relations with the President and with Mr. Hairy Hopkins No one can do more for you Mr Harriman will be accompanied by one or two of his own assistants, who have shown great aptitude and aidour over here It would be disastrous if large accumulations of American supplies arrived without efficient measures for their reception and without large-scale planning for the future Besides this it will be necessary that considerable numbers of American engineers and mechanics should come for the servicing and repair of their own types of aircraft, tanks, and MT I commend Mr Hairiman to your most attentive consideration He will report both to his own Government and to me as Minister of Defence

# PRIME MINISTER'S PERSONAL MINUTES AND TELEGRAMS

# JULY-DECEMBER 1941

# JULY

Prime Minister to King of Greece

I July 41

I have been thinking a great deal about your Majesty in these months of stress, danger, and sorrow, and I wish to tell you how much your bearing amid these vicissitudes has been admired by your many friends in England, as well as by the nation at large. The warmest welcome awaits you here, where all are resolved to conquer or to perish. It is my confident hope that when the good days come the glory which Greece has won will help to heal the memory of her present suffering

Prime Minister to General Ismay

1 July 41

The Germans are making a good deal of use of flame-throwers. How does this matter stand?

(Action this Day)

Prime Minister to First Lord and First Sea Lord

I July 41

I presume that effective arrangements have been made to prevent temforcement of the Vichy forces in Syria by sea. How does this stand?

Prime Minister to Secretary of State for Air

1 July 41

I note that your actual expenditure of bombs in May, 2,920 tons, was less than half the monthly estimated expenditure for the second quarter of this year, and that at this rate of expenditure your stock represents 30 months' supply

The last thing we wish of course is to have any shortage of bombs if and when you are ready to drop them in quantity. But in the light of these figures you might perhaps wish to review your requirements, which seem to be largely attributable to your desire for a six months' reserve.

reserve

Unless you are really assured that you will be in a position to make full use of these great quantities, we should consider whether some filling capacity should be transferred to other uses

Prime Minister to Munister of Food

2 July 41

I am glad that the egg scheme attributed to you was not actually

the scheme you had in mind. It is always difficult to hold the balance between the need for increasing total food supplies and the need to maintain a fair distribution. We should not be too hard on the private individual who increases his supplies by his own [productive] efforts

It is satisfactory that the meat prospects are improving, and I hope that pressure on the United States to increase her pork output will soon enable us to raise the ration without risk of having subsequently to reduce it

We do not wish to create a grievance among farmers by compelling them to slaughter beasts which they can fatten without imported feeding stuffs, on the other hand of course the country cannot go hungry because farmers do not choose to bring their beasts to market. It will no doubt be possible to arrange with the Minister of Agriculture, perhaps by a carefully worked out price policy, a scheme which will keep the meat supply as constant as possible having regard to seasonal factors

As to wheat, the point I had in mind was not so much our stock as the danger of getting into a vicious circle: people eat more bread owing to a shortage of meat, and thereby compel you to import more wheat, thus reducing the shipping space available for bringing in other foods. I do not believe there is great danger of the harvest being destroyed by the enemy this year. We have found it very hard to burn crops, and if you will ask the Air Ministry they will explain to you why the dew conditions in this country make it even harder here than on the Continent.

Prime Minister to Secretary of State for War and C.I.G S In forming a very large armoured force such as we contemplate, while at the same time carrying on the war, a large element of improvisation is necessary, and this applies especially to the more backward formations It is highly questionable whether the divisional organisation is right for armoured troops. A system of self-contained brigade groups forming part of the Royal Tank Corps would be operationally and administratively better One can see how ill-adapted the divisional system is when the 7th Armoured Division, one of our most highly trained and armoured units, goes into action "less one brigade", it having in fact only two, with certain additional elements However, where divisional formations have grown up and have been clothed with armed reality the conditions of war do not permit the disturbance of a change With the more backward formations the case is different They should be brought into coherent existence as brigade groups, armed with the best weapons available at the moment, and worked up gradually by increasing the proportion of the latest armoured vehicles Care should be taken that in every phase of their working

up they should have a definite fighting value. It may not be possible to give all the armoured brigade groups the same equipment at the same time. They must take what is going, and make the best of it For instance, in forming a new or backward armoured brigade group in this country it should first of all receive a full complement of armoured cars or Bren gun carriers, and should immediately become "bugade conscious". They should be trained in regimental and brigade exercises just as if they were a fully equipped armoured formation This is specially true in all wireless telegraphy services. In an emergency they would act as a motor machine-gun unit. proper tanks become available, these should be infused into the regiments as a growing core, until finally the men are well used to looking after motor vehicles and well trained in the manœuvres of an armoured brigade formation They would then eventually receive their full equipment of whatever tanks are available, these tanks themselves being replaced by later models as they come to hand or are transferred to them from the more fully equipped formations. Thus at every stage there would be weeded out the non-tank-minded personnel. there would be an expansion of instruction in tank tactics, and a practical value in the event of emergency would be maintained

2 Different conditions present themselves in the case of the Cavalry Division, which has so long been in Palestine ineffective as a military factor This Cavalry Division should be reorganised as fast as emergency conditions of war permit, in two brigade groups, each of which should consist of three tank regiments, twelve motorised field guns, one motorised machine-gun regiment, and ancillary services formation of these two armoured brigade groups should have a high priority, certainly one in advance of any more backward British armoured units. It would be a great convenience if these two brigades could in the first instance be ripened from mere motor machine-gun units into tank units by receiving the flow of light medium tanks from the United States which has now begun President Roosevelt has informed me that he has allocated (apart from the sixty already approaching and other orders) 200 light cruiser tanks for shipment in American vessels to Suez in the next few months. Surely these additional 200 should form the main equipment of the two ex-cavalry armoured brigade groups The balance of the various regiments would continue to use pro tem the armoured cars or Bren gun carriers which they had begun to work with The marrying of these good troops to the windfall of 200 American light cruiser tanks would bring into being two effective armoured brigade units extremely well adapted for Palestinian, Syrian, and Iraqian warfare at a far earlier date than any equal fighting value could be [otherwise] achieved

---

Prime Minister to Major Morton

6 July 41

Please make sure that a list is kept of young Frenchmen who are sentenced by the Vichy courts to imprisonment for de Gaullist sympathies in France or in Morocco, so that they may be looked after later on.

(Action this Day)

Prime Minister to C I.G.S

6 July 41

It is nearly six months since you and Mr Eden went to Cairo, charged, inter alia, with the task of reporting on the interior economy of the Army in the Middle East Yet to-day the condition is deplorable, and our detailed knowledge most defective. The War Office ought to have a full picture of the development of the fighting formations, and I certainly cannot discharge my responsibilities without it

2 It is not much to ask a division or brigade group to send in a monthly return of their major items of equipment. I cannot imagine a competent divisional general who would not know where he was in this matter from week to week—indeed, almost from day to day

3 We should have a monthly return, considering the immense daily flow, including Air Force trivialities

General Haining's organisation ought to know the whole position,

and there ought to be no difficulty in their telling us

You are wrong in supposing that this return is needed for statistical purposes only. Without a clear up-to-date picture of the state of Middle East formations no view or major decisions can be taken by the Defence Committee or the War Cabinet. The alternative is to continue in the state of ignorance and confusion which is leading us towards disaster.

While I should be ready to agree to some small simplification of details, if you will propose it to me, I must insist upon knowing all the essential facts.

Reference CIGS minute of July 5, 1941, referring to the Prime Minister's request for a detailed distribution list of equipment, by formations, in the Middle East

(Action this Day)

Prime Minister to Secretary of State for War 6 July 41

Why have we not yet been told that the Blues, Life Guards, and Essex Yeomanry took part in the capture of Palmyra? These units have long ago been identified by contact, and there cannot be any military reasons for not disclosing this interesting piece of information to the British public

It is this kind of abuse of censorship, in the name of operational secrecy, that rightly irritates the House as well as the Press, and makes

the more important positions more difficult to hold

Prime Minister to Minister of Food

7 July 41

I am glad that you are preparing for the American authorities an estimate of our full requirements of pork and dairy products, and that you have asked them for a greatly increased programme for eggs. The total figure of the food imports to be obtained from America will, I trust, be much bigger than the one and a third million tons at present envisaged. With due notice I feel sure that the Americans, without rationing themselves, could produce much more food for export to us. (Pork production in the United States frequently fluctuates by nearly half a million tons from year to year.)

I trust that every effort is made to get our meat from the nearest sources. With due warning and a guarantee perhaps the Argentine

could also expand their meat production.

Oil and oil-seeds are no doubt obtained so far as possible from Africa and imported on ships returning from the Middle East We can ill afford to send ships to India or the Pacific for this purpose now

Prime Minister to Foreign Secretary

9 July 4

Something like the following should be sent to the Minister of State for his information

Following from Prime Minister. Personal and secret. Begins An agent who we think is sure came a formight ago to establish a liaison between us and Vichy Our talks with him were on the dead level. He now sends us the following, dated July 5

"I The French Government has given the following general instructions to General Dentz

"When Syria is occupied by the British the French civil servants must remain at their posts and carry on with their duties in collaboration with the Free French forces

"2 I am requested to beg of you most earnestly to take these instructions into account. Goodwill on your part on this occasion

will make the best impression

"3 Failure to meet this, the first wish expressed by my Government so soon after my return, would have an unfortunate influence on my future actions."

This must be considered in relation to the formal request for armistice with which you have already been acquainted. We propose replying to the agent for Pétain and Huntziger to the effect that

I England has no interest in Syria except to win the war

- 2 Arab independence is a first essential and nothing must conflict with that,
- 3 De Gaulle must naturally in the circumstances represent French interests in Syria in the interim. He will thus keep alive the fact

that, without prejudice to Arab independence, France will have the dominant privileged position in Syria among all European nations

4 Everything must be done to soften (adoucir) the relations between the de Gaulle and French adherents in the meanwhile. We are all committed to Arab independence, but we think that France could aim at having in Syria after the war the same sort of position as we had established between the wars in Iraq.

5 Don't forget that when we win, as we shall, we shall not tolerate any separation of Alsace-Lorraine or of any French colony from France. So try your best to feel your way through the detestable difficulties by which we are both at present afflicted

Prime Minister to General Ismay

10 July 41

In future the expression "landing" will be applied exclusively to landings from the sea. All arrivals from the air will be described as "descents", and this terminology will rule throughout official correspondence

Prime Minister to Commander-in-Chief Home Forces, and to General Ismay, for C O S. Committee

10 July 41

#### PARACHUTE EXERCISE

It is said that the attack will be made at dawn. This cannot however imply that all the parachute and glider troops will arrive simultaneously at dawn. To move as many as 1,000 troop-carrying planes, or their equivalent, from French, Belgian, and Dutch bases would occupy several hours—at least four or five, 1.e, almost all the present hours of darkness. Therefore, as the journey is short, they would either be arriving in instalments during the night (in which case zero hour would probably be 1 a m), or if the first ones arrived at dawn the rest would straggle out during the remaining hours of daylight. In the latter case they would be cut to pieces by our fighters. There can be no question of parachutists arriving in instalments by daylight. It is noticeable that the Germans have never yet tried these descents by night. There are very great difficulties in finding exact points at which to make low-altitude descents at night

The Air Staff must be consulted upon all these vital problems. It is no good starting staff exercises or studies of this kind, involving so much dislocation, upon a basis which is unreal and could not possibly occur. It is quite easy to say, "12,000 parachutists land at dawn. What would you do?" but this statement is meaningless without a detailed analysis of the movements which I have indicated

2 A smaller scale attack might well be more dangerous. Five hundred desperadoes, coming out of the blue without the slightest preliminary indication, might descend by day, or at any rate in the half-light of dawn, at or near the centre of government. These however would first be picked up by the R.D.F., and would run serious risk of interception by night and almost certain destruction by day Nevertheless, surprise has such sovereign virtues in war that the proposition should be attentively examined. The centres of government and executive control should at any rate be made reasonably secure against a sudden rush of this kind if upon examination any probability can be attached to it. The first hour is the only hour that matters, and the first ten minutes are the minutes that matter most.

3. I shall be glad if Home Forces will consult with the Air Staff and hack me out clear-cut answers to the above queries and suggestions

Two or three days should suffice for the study

Prime Minister to Commander-in-Chief Home Forces, and to General Ismay, for C O S. Committee

10 July 41

How do we stand at present on the strategic and tactical camouflaging of defences against enemy attacks on airfields? What body is studying the lessons of Maleme and the batteries thereabouts?

Obviously action proceeds on two lines, viz

(a) The concealment of the real guns and deceitful presentation of the dummy guns. There might well be two or three dummy guns, or even more, for every real gun.

(b) The best of all camouflage is a confusing variety of positions made in which no one can tell the real from the sham

The tactics of holding fire from particular batteries during the early phases of an attack are no doubt also being studied

Pray let me have a report by Saturday next

Prime Minister to Sir Edward Bridges

11 July 41

Take the Hansards of the two days' production debate, and have all the passages which affect particular departments extracted and sent to the departments concerned with a request for their answers by July 19

Also pick out any passages which affect the central direction of the

war and let me have them

It seems to me there were a lot of very good points made.

Prime Minister to Secretary of State for Air

11 July 41

Although radio beam bombing was neutralised last winter by our interference, it seems that the enemy is re-equipping his whole bomber force with improved radio receivers, and hopes to overwhelin our counter-measures next winter by the multiplicity of his beam stations.

No radio methods can of course prevent his finding and bombing targets like Coventry and Birmingham on fine moonlight nights. But it is on these that our normal night defence should be most effective

It is the dark, cloudy nights that will be our main danger, and we should make every preparation to deal with the enemy beams, whose

positions and wave-lengths we now know

I am informed that the equipment needed is not very remote from that used in ordinary commercial practice, so that it should be possible to obtain it from America even if it cannot be manufactured here Everything should be ready by the autumn Pray let me know what the position is and what measures are in hand to counter enemy developments

Prime Minister to Minister of Food

12 July 41

I am pleased to learn that the amount of food "requisitioned" in USA is now far above the figure quoted in your May report. I understand that the programme of our full requirements is much higher than the amount "requisitioned" so far. I am sure that, given sufficient warning, America can and will produce or in some way provide a very large quantity of the food-stuffs we need so badly. If we can import them on the short haul, shipping for almost all we require should be available.

The only point in doubt is whether you have asked for sufficient pork. America would find it difficult to provide us with beef or mutton, but pork supplies can be rapidly expanded, and if necessary

imported in non-refrigerated tonnage

(Action this Day)

Prime Minister to Ministry of Aircraft Production, Sir Charles Craven, Secretary of State for Air, CAS (General Ismay to implement or report

12 July 41

progress in one week), and Lord Cherwell

I was deeply concerned at the new programmes of MAP, which show a static condition for the next twelve or eighteen months in the numbers of aircraft. No doubt new production would be bent on in the later phase. I asked that these figures should be subjected to the test of man-hours involved in each type of machine. This certainly shows an improvement of about 50 per cent in the British field by the twelfth month from now. The American figures improve the calculation both from the number of aircraft and the man-hours standpoint, and one might almost say that the output for July 1942 would be to the present output as 1 to 1.75

2 I cannot feel that this is enough Our estimate of German monthly production by numbers is 2,100, which is the numerical level at which we stand up till July 1942, and indeed thereafter, apart from new projects We must assume that the Germans also would derive comfort from translating their numbers of aircraft into the man-hours

They may or they may not be making a similar expansion in size and quality. Broadly, from the figures put before me, the impression would be one of equality for the next twelve months, so far as British and German construction is concerned, leaving any increase to be supplied by our share of United States production. Moreover, this takes no count of MAP.'s caveat that their estimates may be reduced by 15 per cent.

3 We cannot be content with the above situation, which excludes all possibility of decisive predominance indispensable for victory. I wish therefore these programmes to be re-examined, and the following three methods of expansion, together with any others suggested, to be explored by the highest authorities concerned. The three

methods are

(a) An improvement in the existing figures by speeding up and working the machine-tools longer, or by any other measures

taken in the sphere of M A.P production.

(b) By the construction of new factories and assembling plants, or by the reoccupation or full occupation of plants vacated for the sake of dispersion. This may well be justified in view of our increasing command of the British air by day and the improvement in night-fighting devices.

(c) By a reclassification of the bomber programme so as to secure

a larger delivery from well-tried types in that period

Fighter aircraft must continually strive for mastery, and rapid changes of design may be imperative. But a large proportion of the bomber force will in the next twelve months be employed under steady conditions and within ranges which are moderate. While all bombers required for longdistance or great heights or daylight action must be the subject of intensive improvement, a large proportion of the bombing force will be carrying their nightly load to, say, the Ruhr or other near-by targets. It would seem that the Air Staff could divide their activities into near and far, and that on this basis some good lines of production, which have not yet reached their maximum, could be given a longer run at the peak, with very definite addition to numbers This would, for instance, seem to apply to the Blackpool Wellington, which is a new supply, reaching its peak in November, but only running for six months at that level If it were allowed a twelve-month run at the peak it may be that a larger delivery would be possible from November on

4. The criterion of bomber strength is the weight of bombs deliverable per month on the reasonably foresecable targets in Germany and

Italy Have the Air Staff plans been applied to the figures of production with this end in view? It may be that a heavier load carried by a new machine would give better results. But a machine which is good enough to carry two tons to the Ruhr ought to have a long run in continuous production before it is discarded. There are no doubt other instances. I have asked the MAP. to review their programmes accordingly, having regard to the grievous loss on too hasty change-overs

5. The new programme is substantially less than the March figures, and far below the October [1940] figures However, many materials have been accumulated on the October basis. A substantial expansion should therefore be possible if all factors are fitted to the optimum The Air Ministry should show how this latest programme, apart from any expansion, fits in with their pilot production for the next twelve months, having regard, on the one hand, to the reduced scale of losses which has been found operative by experience, and, on the other, to the much more lavish pilot establishment now said to be necessary in proportion to machines Bombs, explosives, guns, and all accessories must be measured in relation both to the existing programme and the necessary expansion. In principle however we must aim at nothing less than having an Air Force twice as strong as the German Air Force by the end of 1942 This ought not to be impossible if a renewed vast effort is made now It is the very least that can be contemplated, since no other way of winning the war has yet been proposed

Prime Minister to Secretary of State for Air

Investigations by the Ministry of Home Security into the effect of German high-explosive bombs has shown that a far greater amount of damage is done by blast, which destroys buildings, etc., than by splinters, which find very few useful targets, especially at night, when most people are under cover

The higher the proportion of high explosive to bomb-case the greater the blast. If the weight of the metal case is increased we get

more splinters

Our general purpose bombs have a charge-weight ratio of about 30-70. The Germans work with a larger ratio, about 50-50. These are not only more efficient for destroying cities, they are also cheaper

In these circumstances the charge-weight ratio of our bombs ought to be reconsidered, especially now that the Air Ministry have asked for such a large expansion in output

Prime Minister to Secretary of State for Air 16 July 41

I should be glad if you could send me a brief report on the blindlanding position, showing how far the RAF is equipped with this aid

719

Prime Minister to Sir Edward Bridges

17 July 41

I have a feeling that Parliament does not at all understand the very great advance made in the refinement of priority questions through the development of the allocation principle. Let me have a note on this, not exceeding one page. In fact, I think we hear very little about priorities now. Here and there there may be a focal point, but, speaking generally, am I not right in supposing that all is running smoothly? See, for instance, how well the giving of First Priority to the production of tanks on psychological grounds has been adjusted. Priorities now resolve themselves into the opening out of bottle-necks. No one has an absolute priority to the exclusion of all others. There have been no recent clashes. Comment freely on this by Friday.

Prime Minister to General Ismay, for departments concerned 17 July 41 What is the cause of the failure to produce containers in June? A fall from 1,500 to 500 tons is shocking, and absolutely contrary to the express instructions of the Cabinet over many months. Who is responsible? The absolute maximum effort must be used, with superpriority to make, store, and fill into containers the largest possible quantities of gas.

Let me know exactly who is responsible for this failure

At any moment this peril may be upon us Papers must be prepared for Cabinet discussion next week,

Prime Minister to Home Secretary

19 July 41

I should like to have my opinion put on record that this sentence [of five years' penal servitude on Miss Elsie Orrin for saying to two soldiers that Hitler was a good ruler, a better man than Mr. Churchill] is far too heavy for expressions of opinion, however perincious, which are not accompanied by conspiracy. Nothing in the internal state of the country justifies such unreasonable and unnatural severity. I consider such excessive action defeats its own ends.

(Action this Day)

Prime Minister to First Sea Lord, and to General Ismay, 20 July 41

for COS Committee

I strongly deprecate bringing this [Glen] ship home. We sent these three ships all round the Cape with much heart-burning in the hopes of "Mandibles" and for other island attacks. The Commandos have been frittered away, and are now disbanded. The late régime in the Middle East showed no aptitude for combined operations. There was no DCO [Director of Combined Operations], but only a lukewarm and uninfluential committee. Nevertheless we cannot exclude the need of landing operations in the future. The other two Glen ships are being mended, and it would be altogether wrong to take this one

away. I hope therefore the Chiefs of Staff will consider the matter in all its bearings.

(Action this Day)

Prime Minister to C A S.

21 July 41

Under the directions given at the time when the Battle of the

Under the directions given at the time when the Battle of the Atlantic was declared in March, the Coastal Command received a special flow of reinforcements. I understand that in pursuance of this all the Flying Fortresses, B.24s, that have come from the United States recently have been sent to Coastal Command In the United States these machines are considered the ideal bombers for Berlin, etc. Mr Hopkins has been asking me about their use, and seemed to be recording an American impression that they were lying idle because we had no crews wherewith to man them I am correcting this impression, but I think on the widest grounds it would be a very good thing if these bombers were used against Germany in bombing raids Furthermore, Coastal Command have been reinforced by sixty-five Catalinas and many Sunderlands, and the Battle of the Atlantic is very much eased by recent results, as well as by the impending developments following upon the United States occupation of Iceland, of which the First Sea Lord will tell you.

Pray let me have your views

C-in-C Bomber Command says he is very short and not expanding

Prime Minister to General Ismay, for C.O.S. Committee

I wish the Commandos in the Middle East to be reconstituted as soon as possible. Instead of being governed by a committee of officers without much authority, Brigadier Laycock should be appointed. Director of Combined Operations. The three Glen ships and the D.C.O., with his forces, should be placed directly under Admiral Cunningham, who should be charged with all combined operations involving sea transport and not exceeding one brigade. The Middle East Command have indeed maltreated and thrown away this invaluable force.

Prime Minister to General Ismay

Let me have, on one sheet of paper, the exact strength and details of the reinforcements and stores which got into Malta, and also the previous strength of the Malta garrison

Prime Minister to Colonel Jacob 25 July 41

Let me have a short account of what has happened to our rifle production. What were the forecasts in September 1939? What have been the results? What loss was attributed to the bombing? What are the new forecasts up to the end of the year 1941?

Former Naval Person to President Roosevelt

25 July 41

I am most grateful for your message about the tank programme. This addition to our tank resources in the coming critical months is splendid. As to the longer-term policy, all our experience goes to show that more heavily armed and armoured vehicles are required for modern battle, and we should therefore plan to increase the output of medium tanks at the expense of light tanks, but not of course at the expense of your air programme.

2. I am much interested in your suggestion that men for our Tank Corps should be trained in the United States. We are examining it

here, and will let you know our views as soon as possible.

3 We have been considering here our war plans, not only for the fighting of 1942, but also for 1943 After providing for the security of essential bases, it is necessary to plan on the largest scale the forces needed for victory. In broad outline, we must aim first at intensifying the blockade and propaganda Then we must subject Germany and Italy to a ceaseless and ever-growing air bombardment These measures may themselves produce an internal convulsion or collapse. But plans ought also to be made for coming to the aid of the conquered populations by landing armies of liberation when opportunity is ripe. For this purpose it will be necessary not only to have great numbers of tanks, but also of vessels capable of carrying them and landing them direct on to beaches. It ought not to be difficult for you to make the necessary adaptation in some of the vast numbers of merchant vessels you are building so as to fit them for tank-landing fast ships

4. If you agree with this broad conception of bringing Germany

to her knees, we should not lose a moment in.

(a) Framing an agreed estimate as to our joint requirements of the primary weapons of war, e.g., aircraft, tanks, etc.

(b) Thereafter considering how these requirements are to be met

by our joint production

3 Meanwhile I suggest that our combined staffs in London should set to work as soon as possible on (a), and that thereafter our technical experts should proceed with (b)

Prime Minister to General Ismay and Colonel Hollis, 26 July 41

for COS, Committee

Great importance should be attached to furnishing C-in-C. Home Forces with a much larger number of mobile anti-aircraft batteries, particularly of low-ceiling guns, to work with the field divisions and accompany the troops and armoured columns

The Germans are quite right in always keeping their flak to the fore. No large body of troops should be assembled or be on the line of march without mobile Bofors batteries, to give them protection

Do I understand that the 218 guns will be employed in this way? If so, I think the arrangement is very sound. If not, I should like the Chiefs of Staff to consider this point

Otherwise I am in full agreement with the redeployment proposed.

Prime Minister to Minister of Food 27 July 41

I understand that you have under consideration a flexible coupon system, should it become necessary to ration the secondary foodstuffs, which would make the coupons available for the purchase of a variety of alternative goods and dispense with registration at particular shops. Though rigid rationing might be easier to administer, some system which left the consumer a reasonable freedom of choice would seem much better. Individual tastes have a wonderful way of cancelling out. Besides, your power of varying the prices of the different commodities both in money and coupons would enable you to exercise great control over demand.

Should you decide that the extension of rationing is inevitable, it would seem therefore that the flexible coupon system has much to commend it. I look forward to hearing your views about this in due

course.

Prime Minister to Lord President of the Council, Minister of 27 July 41 Labour and National Service, and Secretary of State for War

Evidence is accumulating that the figure of 2,195,000 men is too small for Army needs, and that the number ought to be increased as soon as possible; and the Secretary of State for War is now engaged

on a detailed examination of his additional requirements

2. Accordingly, the comprehensive review by the Man-Power Committee which has already been ordered by the War Cabinet must be pressed forward with all speed. As soon as the main facts have been assembled, and without waiting for the full report, I should be glad if the Lord President of the Council, in consultation with the Ministers concerned, would give consideration, as a matter of urgency, to the additional requirements of the Army in the light of the general manpower position, and report on the measures that will be necessary to meet these requirements

Prime Minister to Minister of Aircraft Production 30 July 41

I shall look forward with interest to hearing of the success or otherwise of the trials of the Whittle engine in the fortnight's time. I hope they will be favourable, but I gathered from you that the present turbine blades were working. We must not allow the designer's desire for fresh improvements to cause loss of time. Every nerve should be strained to get these aircraft into squadrons next summer, when the enemy will very likely start high-altitude bombing

Prime Minister to General Ismay

31 July 41

I shall want plenty of photographs of Port Soudan, Massawa, the new port which is being developed in the Red Sea, Asmara, Basra, Tobruk, etc.

# AUGUST

Prime Minister to Lord President

9 Aug 41

I understand there is a proposal to make it a penal offence for any motorist who gets a supplementary ration of petrol not to keep a log-

book in which every journey is entered.

To create and multiply offences which are not condemned by public opinion, which are difficult to detect and can only be punished in a capricious manner, is impolitic. To make it a penal offence not to keep a log-book might come under this heading, especially as only one-twenty-fifth of our oil consumption is involved.

I understand there is an alternative proposal to tell motorists that unless they can produce a log-book they will risk having their supplementary ration refused or reduced Might not this be sufficient?

Prime Minister to Chairman of the Import Executive 9 Aug

I understand that the Import Executive will shortly consider the airangements made to provide cargoes for the additional ships to be put at our disposal by the USA. In the near future. It is of the first importance that all the shipping space that becomes available to us, whether from United States sources or from an improvement in the shipping position, is fully utilised to bring in cargoes which will increase our war effort and give the people a healthy and varied diet

2 Cargoes must be readily available for shipment as opportunity offers, and a report should be prepared at once, showing the steps taken to this end by increasing our orders and by building up reserve stocks

close to ports overseas

3. I see that it is proposed to import 748,000 tons of soft-wood and 422,000 tons of hardwood in the second half of the year. This is far more than the figures mentioned at a recent Battle of the Atlantic meeting. Is this large import of timber being brought in because no more useful cargoes are available? Has the Minister of Agriculture been given the chance of suggesting any alternatives? For example, half a million tons of maize (which should be obtainable in the United States) would be of great value in keeping our chicken population going.

Prime Minister to First Lord of the Admiralty, Secretary of 16 Aug 41 State for Air, and Minister of Aircraft Production

This is a melancholy story You will see from reading the minutes that we were promised Grummans, with folding wings, at twenty a

month, beginning in April We still have none, and are only promised the schedule set out in the First Lord's minute of July 26.\*

2. I regard the supply of from six to twelve Grummans to Victorious and Ark Royal as of first importance. Especially is this the case with any carrier operating in the Mediterranean. The surprise which will be effected upon the enemy when these fast fighters rise to engage them may give considerable easement, almost at once.

The cutting down of enemy bomber aircraft attack at sea far exceeds in importance and urgency any other duty which can be performed by a carrier in the Mediterranean Even if they can only work within forty to fifty miles of the parent ship they can do all that is necessary The enemy must be made to feel that to go near a ship convoyed by an aircraft-carrier is to incur heavy losses from aircraft almost equal to shore-based fighters

3 We have now no aircraft-carners in the Eastern Mediterranean Therefore there is no point in sending folding-wing Grummans there at present The August, September, and October quotas for Grummans now assigned to the United Kingdom (total 22), and the 24 now assigned to the Middle East in the September and October quotas-total 46-should all be made available in the United Kingdom for the equipping of our aircraft-carriers. Deliveries to the Middle East after October should be considered later

Let me have a monthly report of the equipment of the aircraftcarriers with Grummans.

4 When do we get our next new aircraft-carrier, Indomitable?

5 Unless there is some reason to the contrary of which I am not aware, the following orders should be given now.

"The September and October batches of twelve Grummans with folding wings should be sent to the United Kingdom and not [repeat not] to the Middle East "

Prime Minister to General Ismay

16 Aug 41

## COMMANDOS

I settled with General Auchinleck that the three Glen ships were all to remain in the Middle East and be refitted for amphibious opera-

tions as soon as possible

2. That the Commandos should be reconstituted, as far as possible, by volunteers, by restoring to them any of their former members who may wish to return from the units in which they have been dispersed, and that Brigadier Laycock should have the command and should be appointed Director of Combined Operations.

3 The DCO and the Commandos will be under the direct

\* About deliveries of Martlet II aircraft

command of General Auchinleck This cancels the former arrangement which I proposed of their being under the Naval Commander-in-Chief.

(Action this Day)
Prune Minister to C I.G.S, and General Ismay, for
C.O.S. Committee

19 Aug 41

The important thing is not so much to reduce our troops in Iceland as to make it a training ground for Alpine units. Can you not give some mountain guns to the artillery, instead of withdrawing them? Let me have a scheme for providing skis, snowshoes, etc., for the largest number that can be trained in mountain fighting under glacial conditions. The fact that a few more Americans have come should make the training all the easier. I regard the creation of these Alpine units as a vital feature in our organisation. I ask that this may be taken up with the utmost vigour

Prime Minister to C.A.S

19 Aug 41

Thank you very much for your full explanation \* Even if the airmen had been in error they would not have been to blame, because it is the system that is at fault. The lack of effective and intimate contact between the air and the ground forces calls for a drastic reform. The needs of the Army should be met in a helpful spirit by the Air Ministry. It is the responsibility of the Air Force to satisfy the Army now that the resources are growing. I hope I may have your assurance that you are striving night and day to end this lamentable breakdown in the war machine. We need not go into the past, but if the Army is not well treated in the future the Air Ministry will have failed in an essential part of its duties.

(Action this Day)

Prime Minister to Minister of Supply

20 Aug 41

Pray see the attached statement [on gas and gas weapons] prepared at my direction by Lord Cherwell We must expect gas warfare on a tremendous scale. It may break out at any moment. Please see the alarming restriction which has had to be imposed on the production of mustard gas; and also the explanation of this. What do the Air Ministry mean by stopping the charging of 250-lb bombs? This seems most improvident, and is contrary to a number of Cabinet decisions, which are to the effect that the maximum possible gas is to be produced and charged into suitable containers, or otherwise stored.

I invite you to give your personal attention to this new aspect. The whole matter is dangerous and urgent in the last degree.

<sup>\*</sup> About the action of the 2nd Armoured Division during the withdrawal from Cyrenaica, in March and April 1941

Prime Minister to Lord President

20 Aug 41

I am by no means convinced that there are sufficient reasons for imposing this additional obligation [of keeping a log-book by motorists] on the public. There is a growing and justifiable impatience of multiplying the filling up of forms and providing a new foundation upon which further layers of officials may build their homes. If you feel there is no other means of securing your objects it would be better to bring the matter before the Cabinet.

Prime Munister to Secretary of State for India

20 Aug 41

Certainly let an invitation be sent, provided that in general you see U Saw

This refers to a minute from Mr. Amery about conditions in Burma and a proposed visit to this country by the Burmese Premier, U Saw

Prime Minister to First Sea Lord

25 Aug 41

Will you please let me have on one sheet of paper a list of the effective Japanese Fleet and flotillas, with dates of construction, and the ships which are ready now

(Action this Day)

Prime Minister to Minister of Agriculture

26 Aug 41

I hear bad tales about the harvest What is the position to-day? We are clear of St Swithin's forty days now If we get fine weather what sort of estimate can you make? Alas, we spoke too soon!

Prime Minister to Production Executive

26 Aug 41

I am concerned at the great amount of man-power and raw materials which are still being directed to constructional work. The works and building programme is using 2½ million tons of imported materials a year (iron, steel, and timber) and three-quarters of a million men

Has not the time come to disallow all new projects of factory construction, save in very exceptional cases? Can we justify further expenditure when so much existing plant is only half employed? Could not building resources be better used in providing hostels and amenities for the labour needed to man extra shifts in the existing plant?

The utmost economy should also be sought in Service requirements, which are apt to be on a more lavish scale than the needs of the

moment or the available resources justify

I trust that there is some machinery for preventing designs being accepted which are wasteful of imported material

Please inform me what safeguards you have to ensure

(a) That new factories or building undertakings are really essential

- (b) That the plans and designs for such undertakings are of the most economical character.
- (c) That building labour is used to the best advantage.

Prime Minister to C A.S. 27 Aug 41

I have certainly sustained the impression that the Air Ministry in the past has been most hard and unhelpful both to the Army and to the Navy in meeting their special requirements. The Navy succeeded in breaking away before the war, but the Army lies under a sense of having been denied its proper air assistance. To some extent this can be excused by the plea that the need of increasing the R.AF was paramount. Now that that need is no longer so overwhelming I trust the Army's grievances and complaints will be met

There is a widespread belief that we have not developed divebombers because of the fear of the Air Ministry that a weapon of this kind specially associated with the Army might lead to a formation of

a separate Army wing.

All these things happened before your time, but their consequences are with us to-day

Prime Minister to Foreign Office 27 Aug 41
Give me in a few lines the reasons which led to Siam calling itself
Thailand. What are the lustoric merits of these two names?

Prime Minister to General Ismay, for C.O.S. Committee 27 Aug 41
In several quarters there are indications of a German move against Murmansk. It appears that, though there were no transports found when we made our abortive air attack, considerable numbers are on the move now. What are we going to do about it now? Is it settled that we can do nothing more in the North? When do our two squadrons reach Murmansk? Can nothing naval be done to obstruct the movement of German transports?

Prime Minister to Chancellor of the Exchequer

28 Aug 41

How much gold have we actually got left in this island or under our control in South Africa? Don't be alarmed. I am not going to ask you for anything.

Prime Minister to Sir E Bridges

Mr Harcourt Johnstone will preside over an interdepartmental committee containing representatives of the offices concerned for the purpose of devising the best possible plan for relaxation of the black-out restrictions during the present comparative lull in the enemy's air

attack

(a) on vehicles required for vital war services; and

(b) for factories and ports

The object is to secure the maximum of production for war purposes

2 The committee should consider, inter alia

(a) the categories of vehicles permitted to relax,

(b) the subdued character of the lighting enabling them to pro-

ceed at a reasonable speed,

(c) the particular routes over which and areas in which these relaxations may be specially required by the Ministry of Supply, Ministry of Aircraft Production, and the Admiralty, and, finally,

(d) the means of speedy return to present style if and when this is rendered necessary by enemy action in any district or

throughout the country.

3 The committee is to report in one week to the Prime Minister All departments are expected to co-operate in the public interest to the utmost. The preparation of the best possible plan must be considered a technical study, and does not necessarily commit the Ministerial heads of the departments concerned to its adoption. This may be remitted to a committee of War Cabinet Ministers on grounds of general policy.

(Action this Day)

Prime Minister to Secretary of State for War

29 Aug 41

I must draw your attention to the state of the cruiser tanks [in Britain]. This week, out of 408, there are actually more unfit for service than fit This figure and the system on which it rests require evidently strong handling The proportion of unfit is getting worse each week

Let me know who is responsible, and what you are going to do about it.

(Action this Day)

Prime Minister to CAS

29 Aug 41

The loss of seven Blenheims out of seventeen in the daylight attack on merchant shipping and docks at Rotterdam is most severe. Such losses might be accepted in attacking Scharnhorst, Gneisenau, or Tirpitz, or a south-bound Tripoli convoy, because, apart from the damage done, a first-class strategic object is served. But they seem disproportionate to an attack on merchant shipping not engaged in vital supply work. The losses in our bombers have been very heavy this month, and Bomber Command is not expanding as was hoped. While I greatly admire the bravery of the pilots, I do not want them pressed too hard. Easier targets giving a high damage return compared with casualties may more often be selected.

Let me have a return showing all bombers written off in August for

any cause, including crashes on landing, and also the number of bombers received from M.A.P., and the number manufactured and imported

(Action this Day)

Prime Minister to CAS. 30 Aug 41

What is being done about increasing the night-fighter defence in the Middle East? I gather they are by no means up to date with our devices, yet Alexandria, Suez, and the Suez Canal are places of the highest consequence.

Pray let me have a short report. General Pile might be helpful in drawing up a list of an advanced echelon of night-fighting devices, organisation, and supplies. All this is very important. Speed is vital

Prime Minister to C.A.S

30 Aug 41

This estimate of 1,700 German aircraft knocked out in the Russian fighting should now be brought into relation to the results of the second Singleton survey of the relative British and German air strength in all theatres.

Let me know the result at your convenience

Prime Minister to V.C.A S.

30 Aug 41

Good.

"The devotion and gallantry of the attacks on Rotterdam and other objectives are beyond all praise. The charge of the Light Brigade at Balaclava is eclipsed in brightness by these almost daily deeds of fame."

Tell the squadions and publish if you think well.\*

Prime Minister to General Ismay, for COS Committee 30 Aug 41
Although personally I am quite content with the existing explosives,
I feel we must not stand in the path of improvement, and I therefore
think that action should be taken in the sense proposed by Lord
Cherwell, and that the Cabinet Minister responsible should be Sir
John Anderson †

I shall be glad to know what the Chiefs of Staff Committee think

Prime Minister to First Sea Lord

31 Aug 41

If you think fit, and the ships are safely in port, please convey to the Admiralty War Staff, Trade Division, C-in-C Western Approaches, Coastal Command, and others concerned my compliments upon the vigilance, ingenuity, and flexible organisation which has in the last week enabled so great a number of ships to pass through the exceptionally heavy U-boat concentration

\* This refers to a minute about Bleuheim attacks on shipping in Rotterdam † This refers to early plus for atom-boinb research, for which we used the code name "Tube Alloys"

Prime Minister to Minister of Information

31 Aug 41

How is our big broadcasting station, which is to override foreign broadcasts, getting on? There was a long delay in setting about it, but I understand the fullest priorities have been given. Please give me a short report—half a page

2. I think it very important that the German films of the invasion of Russia should be shown in England, and also that they should be sent to the United States. Mr Winant fully concurs with this last I sent you a message last week that I thought ten minutes of these German atrocities would be the best possible prelude to the Atlantic meeting and Iceland films What has been done about this?

3 Have the Icelanders got a copy of the film about themselves?

## SEPTEMBER

Prime Munister to CIGS

8 Scpt 41

Please let me have a short report on the present position of delayedaction fuzes

At the end of the last war the Germans used these on a great scale for rendering impossible the use of railway-lines, and also for booby-

traps, when they retreated in France

The periods of delay should be varied from a few days to several months, so that uncertainty is never absent and breakdowns on the lines are continual. I understand the method was a small metal box, not much bigger than a cigar-case, in which an acid gradually ate through a metal wire, thus establishing a contact or opening an orifice

No doubt many improvements have taken place

The whole aspect of our lay-out in the East leads me to think that provision of these devices on a very considerable scale should be undertaken. We are making airfields in Anatolia, Syria, Persia, Cypius, etc., and railways and roads are being improved and pushed forward We ought to have the means of making them unusable by the enemy for a considerable time, should we have to fall back. The best way of doing this would be to build in the mines beforehand, leaving a small sealed passage through which the appropriate fuze could be passed. should it become necessary to arm these mines. Every airfield should have twenty or thirty mines built into it Should it be necessary to evacuate, the fuzes could be put in and the surface smoothed over. The danger period must certainly last at least six months, and railroads (at any rate in their forward sections) should have at least three or four mines to the mile, and all bridges and tunnels should be mined The uncertainty of when a line or road would be out of order is more baffling than even widespread destruction, which is over once and for all

Prime Minister to Minister of Labour

8 Sept 41

Is there any truth in the allegations made in the newspapers that many of the so-called Jehovah's Witnesses are strong young healthy fellows, who do not take part in the war effort?

Prime Minister to Minister of Supply

10 Sept 41

(Copy to the Secretary of State for Air)

In your minute of August 29 you tell me that the order for 50,000 Jessens bombs (puss-balls) cannot be produced and that you can offer

10,000 only.

I take it that this is due to the shortage of the explosive. I am informed that the contents of nine sticky bombs will fill two puff-balls. We could thus obtain the remaining 40,000 puff-balls by post-poning the filling of 180,000 stickies. This, I understand, is only about six weeks' output at the present rate, and I therefore agree that we should postpone filling in this way.

The bombard should continue in production unaffected

(Action this Day)

Prime Minister to C.I G.S.

10 Sept 41

Please see attached from Lord Beaverbrook [about the Trans-Persian railway] In view of the danger to Murmansk and the masses of stuff we are planning to send to Russia and the difficulties of developing the railway through Persia and carrying at the same time, it seems most urgent to explore the full possibilities of road transport I could cable Mr. Hopkins asking for the necessary lorries, drivers, and mechanics, if these are necessary, and I have little doubt the United States would ship them to Basra pretty quickly. I know nothing about the roads, but the whole matter must be examined, together with a plan for improving the roads while the vehicles are coming from America.

Let me have your views on this, if possible by to-morrow, so that can act.

Prime Minister to General Ismay, for COS Committee

It will not be possible for the whole British Army (other than those in the Middle East) to remain indefinitely mert and passive as a garrison of this Island against invasion Such a course, apart altogether from military considerations, would bring the Army into disrepute. I do not need to elaborate this

2. An Expeditionary Force equivalent to six divisions should be

organised for action oversea.

3 Unless unexpected developments open a new theatre in Spain or Morocco, or invasion becomes imminent, we should attempt the liberation of Norway at the earliest suitable moment.

4 A plan should be prepared to act in whatever is thought to be the best place This plan should be brought before the Defence Committee before the end of the present month

Prime Minister to Sir Edward Bridges and General Ismay 13 Sept 41
It is certain that confusion will arise between Bandar Shahpur and Bandar Shah, at either end of the Trans-Persian railway. Therefore for all British official purposes the two places should be called Bandar Caspian and Bandar Gulf. Pray let directions be given in this sense.

Prime Minister to General Ismay

13 Sept 41

It is certainly necessary that this appreciation [on general strategy for the Dominions Prime Ministers] should be brought up to date. It does not take any account of our occupation of Persia, and of the importance of the through route to Russia, with whom we have joined hands. It will be much easier at the end of September or in mid-October to take a view about Russian prospects. No reference is made to a possible attack or pressure upon Turkey, and its consequences.

What is the hurry about this paper? In its present form it will only hustle and worry the Dominions Take, for instance, the suggestion that one of the reasons for holding Egypt is to prevent the Italian fleet from charging through the Canal to hunt the British Navy out of the Indian Ocean I should be very sorry to base our case for holding

Egypt on such an argument.

Prime Minister to General Ismay, for C.O.S. Committee 13 Sept 41 I have never asked for a second voyage [of American ships for convoying Middle East reinforcements], though I hoped it would come. But it would be a great help in working off the masses of troops overdue for the Middle East All this is most gratifying. I should be glad presently of details to express thanks. Please report on facilities opened up by second trip.

Prime Minister to Minister of Information

Surely more stir ought to be made about Hitler shooting the Norwegian trade unionists, and sending others for long periods of penal servitude Ought not the Trade Union Congress to pass resolutions of sympathy? Why don't you get into touch with Citrine and work up a steady outcry? The names of the two victims should be publicised as martyrs.

Prime Minister to Sir Andrew Duncan

At my request Lord Cherwell has prepared a short note upon the import forecast. You are now considering the programmes at the Import Executive. I work in calendar years, and the import budget

which I wish to make must be for the year 1942. I should like to settle this budget at latest during November. Meanwhile comparisons between the first and second years of the war, and forecasts of the third year, are useful.

You must always bear in mind that I may have to make a large further demand for shipping, in case an Expeditionary Force has to be dispatched. Perhaps you will let me have your preliminary ideas.

for which the Professor's paper forms a convenient peg

Prime Minister to Lord Cherwell

13 Sept 41 It will be necessary to prevent any diminution in the strength of the Army in 1942, and very special measures will have to be adopted to secure this There can be no question of switching off Army munitions for some time to come. I have asked that an Expeditionary Force of six divisions, in addition to the two going East, should be prepared. Where it will go must depend on events. What is left will be barely sufficient to give security at home.

The provision of the necessary men will cause great difficulties I hope, however, that ADGB, ARP., Coastal Defence, and the heavy artillery, together with some of the rearward services, may yield two or three hundred thousand men. We shall draw sharply upon reserved occupations. At the present time there is grave danger of

several divisions having to be broken up.

Please take the above for your guidance

(Action this Day)

Prime Minister to General Ismay, for C.O.S Committee The Air Force demand shows the unbridled use of ground personnel We are planning to place eighty squadrons in the Middle East by the spring of 1942 There are already 45,000 air-groundmen there, and it is now proposed to add 40,000 more, making a total of well over 1,000 men to every squadron of sixteen aircraft first-line strength It is evident that a searching inquiry must be held into these establishments, which on their present scale will ruin our war effort

In the meanwhile only 20,000 Air Force personnel can be included

in the convoys up to the end of December.

It should be noted that only thirteen air squadrons are being sent

from here, not seventeen, as stated in these papers

2 The additional divisions should go intact, in accordance with my request to the President. He would never have given me the extra shipping but for the attraction of placing two strong additional divisions in the Middle East. I cannot face him with a demand to use his ships for details and drafts.

3. The above makes a total of 60,000 The troops for India would

seem to come next, in view of the four extra divisions we are to get as a result of them. The A.T. and A.A. artillery would naturally have precedence over the field and medium, with which the Middle East is already so heavily supplied. Eighteen thousand additional Army Service Corps is a requirement very hard to justify. What particular task is this force, almost equivalent to a division in numbers, needed for?

4. With regard to drafts The Army of the Nile has not fought lately, and although there is the usual wastage for sickness I cannot feel that drafts to complete the first reinforcements—ie, 10 per cent drafts at the base over and above full strength with the units, or drafts to cover estimated additional wastage—should take precedence over organised fighting troops They should fit in as convenient.

5 Meanwhile let me have a table showing the present strength of each of the battalions or artillery regiments (British) for which these 31,000 additional drafts are now said to be required. Infantry drafts

should receive priority over other branches

6 Some time ago I had some figures showing the ratio of fighting troops to the rearward services in the Middle East Could these be brought up to date, on the assumption that it was possible to carry the whole 142,000 now asked for?

Prime Minister to Foreign Secretary

20 Sept 41

(Copy to Secretary of State for Air)

I think that great value might be obtained at the present time by dropping leaflets on Italy referring particularly to the fact that hundreds of thousands of Italians have been sent from sunny homes to die in the frozen mud of the Ukraine. Pray have this matter considered by the Political Warfare Executive

I am sending a copy of this minute to the Secretary of State for Air, in order that the operational aspect also may be considered.

(Action this Day)

Prime Minister to Colonel Hollis

21 Sept 41

Many bombards are now being delivered. What has been done about their tactical employment? An experimental Bombard Battery or Regiment should be set up at once to develop the use of the weapon and to further its distribution to troops. Let me have proposals how this can be achieved

Prime Minister to C A S.

21 Sept 41

Do our fighter pilots over France carry a sufficient supply of French money? I am told they are only given 50 francs. In my view at least 3,000 francs should be carried as part of a pilot's equipment, and passed from hand to hand.

Prime Minister to C.I.G.S.

21 Sept 41

I am not prepared to let this lapse or be slurred over, or fall into oblivion. More than admonitions are required when 600 German Legionnaires are allowed to go back to Vichy France for further use by Germany against us. It might take 600 British lives to deal with these men so casually and incontinently allowed to slip through our fingers. A formal letter should be written by the War Office to the Commander-in-Chief Middle East, asking for the action taken by him, and pointing out the gravity of the injury to British interests involved in this supine conduct of the Command in Syria. If a sergeant or a corporal makes a slip he is punished or reprimanded. The Staff officers around General Wilson are to blame for not having raised the point and understood what was going on. If General Wilson takes the blame himself it can be written off against his good services in other directions, but he ought to be left in no doubt of the harm that has been done. The fullest detailed explanation should be provided.\*

Prime Minister to C.I.G.S.

21 Sept 41

Thank you. I am glad to see by later telegrams that it is proposed to reorganise the forward area, so that any similar movement of the enemy can be struck at offensively by the forward troops. I understand this readjustment is to be completed about 23rd instant. If this is right now, I still do not see why it was not right earlier. The losses of ten tanks, etc., that the enemy suffered at the hands only of armoured cars without tanks shows that a pretty good "cop" could have been staged. However, perhaps we shall get a second chance. P'raps not. Fortune is a jade

Prime Minister to Chiefs of Staff

25 Sept 41

I attach a summary of the official correspondence which has passed in the last fifteen months in regard to offensive and defensive measures in chemical waifare, together with a table showing the stock position of the more important gas-filled weapons. Please report whether you are satisfied with the present position and our means of retaliating on the Germans if necessary.

There may be a difficulty in maintaining stocks owing to chemical deterioration. Normally, if there were a consumption stocks could be replaced. Please let me have your views on this aspect of the matter as well

Prime Minister to Foreign Secretary

25 Sept 47

We now know that the Grand Musti is in the Japanese Legation at Teheran It seems of the utmost importance to obtain his surrender,

<sup>\*</sup> The explanation divided the responsibility to an extent which was difficult to follow by disciplinary action

and meanwhile I presume all measures are being taken to pievent his getting away Will you please do whatever is possible?

Prime Minister to Secretary of State for War

25 Sept 41

Many plans are being made for the amusement of troops during the winter. They are allowed to use Government transport, within limits, to get to the nearest sizeable town. Officers are not allowed to have this privilege. It might be possible to arrange for officers to have reasonable use of available Government transport on paying for the petrol. Many of them are too poor to hire any other form of transport, but this would be fair and acceptable. The use might be controlled by the Corps Divisional Staff.

Pray let me have your views on this.

Prime Minister to First Lord and First Sea Lord 25 Sept 41

Why not give the Graph U-boat, when she is repaired, to the Yugoslav Navy? They have a submarine crew which has arrived at Alexandria, but their vessel was in too bad a condition for the Admiral to allow it to go to sea I rather like the idea of the Yugoslavs working a captured German U-boat.\*

Prime Minister to Minister of Works and Buildings

27 Sept 41

I doubt very much whether it will ever be possible for me to live at Walmer Castle, or indeed whether anybody will be able to live in such fine houses after the war. I mentioned this to the King when accepting the Lord Wardenship of the Cinque Ports, which I regard as a compliment. Clearly I cannot attempt to reside there at the present time, as it is well within range of the enemy's batteries on the French coast, and the mere report of my residing there would be sufficient to get the whole place knocked down. In these circumstances I think it would be perfectly proper for the Office of Works to take it over during the war in whatever way they think most conducive to the public interest. I should hope therefore that as long as I do not use the castle at all or derive any benefit from it, it and the gardens could be taken care of by the State. After the war the position could be reviewed

Perhaps you will let me know what you think can be done.

(Action this Day)

Prime Minister to Colonel Hollis, for C.O S. Committee 30 Sept 41

When I visited Indomitable last week I was astonished to learn that the handful of Hurricanes to be allotted to this vital war unit were only of the lower type, Hurricane Ones. I trust it may be arranged that only the finest aeroplanes that can do the work go into all aircraftcarriers. All this year it has been apparent that the power to launch

\* This was the U-boat captured by a Hudson aircraft in the Western Approaches in August 1941. See p. 460.

the highest class fighters from aircraft-carriers may reopen to the Fleet great strategic doors which have been closed against them. The aircraft-carrier should have supreme priority in the quality and character of suitable types.\*

### OCTOBER

(Action this Day)

Prime Minister to Secretary of State for War and C.I.G S. I Oct 41

The danger of our forces being organised on a basis so cumbrous that they will be incapable of effective overseas or amphibious action has now grown very great. The condition of the armoured divisions has recently attracted attention. As new ideas and new requirements come along the tendency to growth is continual. In order to preserve the efficiency of the Army a continued process of pruning is indispensable.

- 2. The dire need of finding men to maintain the fighting units at proper strength makes ceaseless economy in the rearward services imperative. I am doing my utmost to sustain the strength of the Army against the growing volume of criticism about its reputed size and obvious enforced passivity. I feel therefore bound to press for assistance from the War Office, and I hope I may count upon you to help me
- 3. For this purpose a committee of officers acquainted with the establishments should be set up, with orders to make a plan for a 25 per cent. reduction in the rearward services and non-fighting troops, showing how this can be done with the least possible injury. This work should be completed by the 15th instant, and the Defence Committee will then be able to see what is entailed in the particular cuts proposed. I wish to be consulted about the personnel of this committee. If it fails I shall have to ask for an outside committee, as I know how hard it is for a department to reform itself.

Prime Minister to Minister of War Transport

3 Oct 41

I should be glad if you would submit a report for consideration at the next meeting of the Battle of the Atlantic Committee, showing the progress which has been made with the provision of alternative port facilities for use if any of the major ports on which we now rely should be put out of action.

(Action this Day)

Prime Minister to Colonel Hollis, for C O S Committee 4 Oct

I attach the utmost importance to tanks and aircraft reaching Archangel early in October It is vital that delivery should begin at once Pray let proposals and preparations for this be made forthwith, and let me have a report on Monday evening. A special convoy will probably be necessary.

\* Later types of British fighters could not at this time be spared by the R A F for the use of the Navy (See also minute of Aug 16, 1941)

I cannot too strongly emphasise the vital importance and extreme urgency of this transaction.

(Action this Day)

Prime Minister to Secretary of State for War

б Oct 41

I feel some anxiety regarding the scheme conducted by the new Army Bureau of Current Affairs. The test must be whether discussions of such matters conducted by regimental officers will weaken or strengthen that tempered discipline without which our armies can be no match for the highly trained forces of Germany. The qualities required for conducting discussions of the nature indicated are not necessarily those which fit for command in the field. Will not such discussions only provide opportunities for the professional grouser and agitator with a glib tongue? They seem to be in a different category from educative lectures by trained teachers or experts.

Pray consider this matter and let me have your personal views. Meanwhile please suspend action

Former Naval Person to President Roosevelt

8 Oct 41

After discussion with Ambassador Winant I send you this note setting out the result of our Cabinet discussion on the matter which

has been causing us some difficulty

We have been considering carefully what should be the next step regarding the conference upon wheat which is due to iesume its deliberations next week I feel a certain amount of concern as to the repercussions on the war situation of the proposed Wheat Agreement in its present form. The draft seems to give the impression that it is contemplated to force on the wheat-importing countries of Europe, as a condition of immediate post-war relief, a series of obligations, including a drastic restriction of their wheat production, which would vitally affect their agricultural systems. This is to touch a tender spot in the policy of many countries Any Wheat Agreement capable of this construction would, in our view, be dangerous in the extreme It would supply Nazi propaganda with a weapon which it would not be slow to use It would arouse widespread suspicions as to the spirit in which the United States and the United Kingdom mean to use their power when the war is over, and would confuse and dishearten the elements in Europe now hoping and working for the defeat of Germany We regard it as essential therefore to remove from the draft agreement all provisions implying Anglo-American interference in European agricultural policy

The relation of Russia to any agreement also raises a difficulty Russia was still a neutral at the time when the arrangements for the Wheat Conference were made But, as things are now, it appears to us virtually out of the question either to conclude an agreement which

may seriously affect her interests without consulting her, or to approach her on such a matter at a time when she is engaged in a life-and-death struggle, and when her richest wheatfields are in the battle area

We have been considering what instructions we can give to our delegates, who are now on their way to Washington, with a view to meeting these difficulties, but we have not been able to find a really satisfactory solution consistent with the present framework of the draft agreement. Considerable revision would certainly be required; and we are alive to the danger, which we are anxious to avoid, of protracted negotiations which might lead to a breakdown. For our part, we welcome the proposals for establishing a pool of wheat for post-war rehef. There are other important features of the agreement which do not prejudice, or which could easily be given a form which would not prejudice, the interests of unrepresented countries—e.g., the agreement of the four exporting countries represented as to the ratios of their respective export quotas, and the provisions for an "ever-normal" granary.

The other issues of policy might usefully be explored by the Conference with a view to preparing the ground for later decisions, but it seems to me that we should be ill-advised to attempt to reach definite conclusions about these now. Apart from the fact that important countries not represented at the Conference are affected, there seems to be advantage in trying to fit these questions into the larger discussions on Anglo-American collaboration in regard to post-war economic problems generally which, as Lord Halifax will be able to explain more fully, we hope to be able to begin at an early date

If you agree generally with my view I will instruct our delegation accordingly.

Prime Minister to Secretary of State for War and Secretary of State for Air 8 Oct 41

(Copy to Secretary of State for Dominion Affairs)

I think now the time is ripe to form an Irish Brigade, also an Irish Wing or Squadron of the R.A.F. If these were taken in hand they would have to be made a great success of The pilot Finucane might be a great figure \*

\* Wing-Commander "Paddy" Finucane, D S O., D F C. and two bars, was killed at the age of twenty-one in July 1942, when, after continuous exploits, he was leading a fighter wing in a mass attack on enemy targets in France. It was always said that the Luftwaffe would never get him, and it was actually a pround shot from an unusual single machine-gun post which hit his Spithre. He flew slowly out to sea, talking calmly to his comrades. Finally, when ten nules from the French coast, he sent his list message, spoken probably as his engine stopped. "This is it, chaps." He crished from about ten feet above the sea, and his machine sank at once

I mucane had always yowed not to be taken prisoner, and it was probably this that made him fly out to see rather than inland, where he would have had a good chance of

survival

Pray let me have proposals. The movement might have important political reactions later on.

(Action this Day)

Prime Minister to Secretary of State for War and CIG.S 9 Oct 41
Pray let me have your views, and if possible your plans, for the forming of an Irish Brigade

Prime Minister to Secretary of State for War 10 Oct 41

I see some odd court-martial cases mentioned in the papers. First, a sergeant who told a Home Guard lieutenant "So what?" and "Put a sock in it" in the presence of troops, but who was merely reprimanded. He should surely have been reduced to the ranks. Second, some soldiers who were heard calling the sergeants "bastards with three stripes", but who apparently were honourably acquitted on the grounds that this was a word of common use in the Army The major giving evidence said he had often turned a deaf ear to it when used about himself

In sharp contrast, two Canadians who deserted in Canada, and made their way over here after great adventure in order to fight, received sixty days.

All this seems to require very clear guidance from you and the Army authorities.

(Action this Day)

Prime Minister to Secretary of State for Air, Minister

11 Oct 41

of Supply, and MAP

I have re-read the report of the Select Committee on the Albemarles, and I think it requires a far more definite and categorical reply than those which have hitherto been presented to me. I should be glad to know what is the evidence which the two Supply Ministers will give, especially on the financial side; and from the Secretary of State for Air I desire to learn (a) what real use this machine will be when the first 500 are completed Can he tell me that it will be a bona fide useful machine in the summer of next year? What parts of Germany could it bomb, or is it only of use on the French invasion ports? (b) What are the reasons, shortly, for refusing to publish the report? What information in particular is contained in it which would be of value to the enemy?

As this matter will be debated on Wednesday and I shall have to watch over it myself in all probability, I want to be sure of my ground

The matter is urgent

Prime Minister to Minister of Supply

12 Oct 41

During your absence I have considered the questions you raised with me about the U.P.\* weapon and its subsidiary variants of the

\*Unrotated projectile Disguised name for rocket. See footnote to minute of Dec 6, 1941

**74I** 

proximity fuze, viz, P.E. and radio. The great need is the manufacture of A.D ammunition for the fifty batteries which are already deployed P.E. and radio are in the sphere of research and experiment; but these researches should be pressed to the utmost because of the immense strategic advantages to the Navy which would flow from their effective solution

Up to the present time I take full responsibility for all that has been done. You wish as Minister of Supply to have full control of both the manufacture and research, and I shall be very glad if you will assume it as from the date of this minute. As the three Services are concerned, you will no doubt arrange for the necessary consultations

Prime Minister to Secretary of State for India

15 Oct 41

Kindly let me know how many words His Majesty's representative at Kabul has telegraphed since the day when the question of turning the Germans out of Afghanistan was first mentioned to him.

Prime Minister to Sir Edward Bridges

16 Oct 41

An inquiry should be held into the question of who was responsible for the various messages sent over the radio to the Germans about the exchange of prisoners. These messages contained expressions of thanks, and were couched in the form of direct communications with the enemy. The inquiry is to be formal, and a report is to be made to me as Minister of Defence.

Pray suggest the composition of the inquiry

(Action this Day)

Prime Minister to Lord President of the Council

17 Oct 41

The Shelter Programme has had a pretty good run since March, and although it may not be completed according to the target plan it must be far better than last year. Having regard to the air-raid and air-raid defence situation, they must expect to have to make a definite contribution to the man-power stringency, including particularly the Army. De-reservation should play over this area. Before I send any minute to the Home Secretary and others on the subject, I should like you to take this into the scope of your general scheme and report to me

Prime Minister to Secretary of State for War

17 Oct 41

I do not approve of this system of encouraging political discussion in the Army among soldiers as such. The material provided for the guidance of the officers in the short notes is hopelessly below the level of that available in the daily Press. Discussions in which no controversy is desired are a farce. There cannot be controversy without prejudice to discipline. The only sound principle is "No politics in the Army"

I hope you will wind up this business as quickly and as decently as

possible and set the persons concerned in it to useful work

(Action this Day)

Prime Minister to Secretary of State for War 18 Oct 41

During my visit to the Richmond Anti-Aircraft Mixed Battery I learned, with much surplise, that the present policy of the [Women's] Auxiliary Territorial Service is that A T S personnel in mixed batteries should not consider themselves part of the battery, and that no "battery esprit de corps" was to be allowed. This is very wounding to the A T.S. personnel, who have been deprived of badges, lanyards, etc., of which they were proud. Considering that they share the risks and the work of the battery in fact, there can be no justification for denying them incorporation in form

2. In present circumstances it is possible also that the whole efficiency of a battery could be upset by an older from the War Office, A.T S Headquarters, moving one of a predictor team to another unit. The A A Command has no say in such matters. Obviously this cannot continue when we are relying upon these mixed batteries as an

integral part of our defence

3 I found a universal desire among all ranks that the women who serve their country by manning guns should be called "Gunners" and "Members of the Royal Regiment of Artillery" There would be no objection to the letters "A T S" being retained

Prime Minister to Chief Whip

18 Oct 41

If the House wishes to divide in Secret Session it must itself organise the division, and provide not only the ordinary tellers, but also Members who would act as clerks, and mark the lists accordingly These division lists would remain privileged documents in the custody

of Mr Speaker

2 Should, however, the House by a majority, whether on the motion of the Government or otherwise, decide that it was in the public interest, or necessary because of constitutional reaction following the division, that the division list and the questions put should be published, the House would also have to decide by conference among the Party Leaders upon such version of what had taken place in Secret Session as might be in accord with the public interest being made public at the same time. The consultations between the Party Leaders or Members chosen by the House would follow the lines of the consultations which take place when it is necessary to express differences with the House of Lords, or perhaps of the conferences contemplated under the Parliament Act. In this case however it would be necessary that the version of the Debate in Secret which was to be published should be debated and approved by the House word by word as if it were a Bill, and with full right of amendment.

3. Thus the House, which is the only authority, would in every

stage be master of its own proceedings and express its will by majority I am of opinion that they would endorse this procedure

Prime Minister to President of the Board of Trade

19 Oct 41

I am very much obliged to you for the clear and full account you have given me of the forecast for 1942 in accordance with my minute of September 13. You seem to me to be sufficiently insured in wheat and steel, and we have also a very good account of oil from the Petroleum Executive. I approve the principle of a 33,000,000-ton import, which we should by all means in our power try to achieve. I should be very glad if the meat ration could be improved. I am assuming that the impact of the Russian liabilities will be met outside the 33,000,000 limit, which limit we should regard as our minimum in all our discussions with the United States.

You should now prepare a statement for the War Cabinet, which, after examination by the Lord President's Committee, can be discussed during November.

Prime Minister to His Majesty's Representative at Kabul 19 Oct 41

I have been much pleased with the way in which you have handled the question of turning out the Germans and Italians, but I think you ought to know that from September 11, when this task was entrusted to you, to October 17, you have sent 6,639 cipher groups. The labour and cost of this profuse telegraphing and the choking effect of such lengthy messages upon the higher administration ought never to be forgotten. Clarity and cogency can, I am sure, be reconciled with a greater brevity

(Action this Day)

Prime Minister to Minister of Labour

20 Oct 41

In my Army Strength paper, which you have seen, the total [intake] for the Army was given as 278,000, including 50,000 casualties. This covers the nine months from now till the end of June 1942. How do these figures square with your 355,000 for the twelve months so ending?

- 2 The Royal Air Force demands cannot be accepted as they stand They are queueing up more and more air-groundmen behind the pilot. Have you subjected them to any cutting or analysis, or do you have to face the figures as they put them? I should think 50,000 could be got off here.
- 3 Prima facie I am not prepared to recognise the need for any additions to Civil Defençe How was this figure arrived at? Has it been subjected to any scrutiny? Far from adding to Civil Defence personnel, I am hoping that 1942 will see them increasingly combed

Prime Minister to C.A S.

24 Oct 41

I am not content with the arrangements made for the two squadrons in Murmansk. I thought they were to take their aircraft and move

to the south of the front, where they might have come into action with the Russian Air Force. Instead of this, the personnel only is being sent. When is it expected that these two squadrons will again come into action, and where? The most serious mistake we have made about the Russians was in not sending eight Air Force fighter squadrons, which would have gained great fame, destroyed many German aircraft, and given immense encouragement all along the front. This is the only criticism, among the many that have been made, which I feel strikes home.

Prime Minister to Director of Military Intelligence 24 Oct 41

My general impression is that the scale of the fighting [in Russia] has diminished on both sides, and that many fewer divisions are engaged each day than a month ago What do you say to this?

What date is the winter expected to set in in earnest in the Moscow

region?

Is there any sign of digging in on any part of the front?

What, in your opinion, are the chances of Moscow being taken before the winter? I should be inclined to put it evens.

Prime Minister to Secretary of State for War 29 Oct 41

All this seems to make many difficulties out of fairly simple things Women should be enlisted in the ATS and should always wear that badge. This ensures that their special needs in treatment, accommodation, etc, are kept up to a minimum standard wherever they may be by the women influences organising the A.TS. When however they are posted to a combatant unit and share in practice with the men the unavoidable dangers and hardships of that unit they should become in every respect members of it. They should wear, in addition to the ATS badge, all regimental insignia appropriate to their rank. Although their well-being is still supervised by the ATS authorities, they should be considered as detached from the ATS and incorporated in the combatant unit. This does not imply any alteration in their legal status, nor need it involve any Parliamentary discussion (although Parliamentary authority could easily be obtained were it necessary)

2 Considering the immense importance of having a large number of women in A A batteries and that the efficiency of the batteries depends upon carefully organised gun teams, it is imperative that these women should not be moved without reference to the Battery Command. The idea that there is an army of A T S under its own Commander-in-Chief, part of which lives alongside particular batteries and gives them a helping hand from time to time, is contrary to our main interest, namely, the maintenance of a larger number of

A A batteries with a smaller number of men

3. You are good enough to say that I have been misinformed on various points. I should like to go further into this. I shall be glad

to have a meeting at 5 p.m. on Tuesday, November 4, at which General Pile and other officers of the A.D G.B., as well as representatives of the A.T.S., are present, and I trust you and the Adiutant-General will also come

(Action this Day)

Prime Minister to C.I.G.S.

31 Oct 41

I am very glad to see the 50th Division moving out of Cyprus, and am glad that it can be relieved by elements of the 5th Indian Division. No decision has however yet been taken about moving the 50th Division to the Caucasus. Where will it wait in the interval?

2. Nothing in these moves is on any account to interfere with

"Crusader". Pray reassure me on this.

## NOVEMBER

Prune Musister to First Lord and First Sea Lord

5 Nov 41

I much regret that the number of U-boat prisoners taken by us should have been published I commented unfavourably upon this publication six months ago. The figure is so small that it advertises to the world the failure of all our efforts against them. There was absolutely no need to make such a disclosure, gratuitously encouraging the enemy and discouraging our friends

Were you aware beforehand that this was going to be done?

Prime Minister to Secretary of State for Air

5 Nov 41

Your reply to my minute

I do not think you should dismiss a matter like this [whereby mechanics and fitters worked for certificates of competence in each different make of engine] so lightly. I am told it is the explanation of the far higher economy reached by the Germans in maintaining their Air Force

I must beg you to have the matter more searchingly examined

Prime Minister to First Lord

7 Nov 41

The 20 assault landing-craft, the 20 heavy support craft, and 127 tank landing-craft seem to me insufficient. This programme must be carefully concerted with the Army. Very large operations may be required in 1943

3 If a small floating dock is constructed in India, how long will it take, and what alternative construction will it displace?

\* These comments refer to the Admiralty programme of new naval construction for 1942 Many changes were made in it at later dates. The following notes indicate the size of our effort

(1) Convoy Fecult Vessels Over 100 frigates, ordered about this time and built in

American yards, were delivered to us by the middle of 1944

(11) The aircraft-carrier Logle is referred to here for the first time. She was laid down late in 1942, and was expected to take nearly four years to build. In fact this ship has not yet been completed

4 In view of the sad tale of the King George V class, it would be wrong to proceed with the construction of the Lion, let alone the later ones, without the whole design being examined by a conference of sea officers who have either commanded or used these ships. I favour the principle of three triple 16-inch-gun turrets. What are your armour demands for 1942? If the question of design were satisfactorily settled I would support making a beginning upon the turrets and mountings, provided of course that the tank programme is not interfered with

5. Let me have the legend of the 100 convoy escort vessels to be built in the United States

6 Let me have the list of the eleven new or modernised capital ships attributed to Germany, Italy, and Japan at the end of 1943, and the list of our eleven. It seems probable that the war will be finished before any new capital ships can be built—1e, 1947 If we win the war we shall disarm the enemy If we lose it he will disarm us

7 The new aircraft-carrier must be weighed against other demands for armour and shipbuilding labour. How long will she take to make?

8. I agree to the three 6-inch-gun cruisers and to the triple 8-inch turrets of one 8-inch-gun cruiser.

9 Let me have the brief legend for the "heavy support craft"

To You do not mention destroyers in your programme I suppose this is because all the yards are fully booked up with them. Let me have a return showing what you have got building, dividing them into three classes and showing the rates at which each class can be built

(Action this Day)

Prime Minister to General Ismay, for C.O.S Committee, 9 Nov 41 and C A S

Let us hurry up the arrangements for sending volunteer pilots and aeroplanes to join Chennault's party [International Air Force in China] Let me know what is proposed

(Action this Day)

Prime Minister to Secretary of State for Air, and CA.S. II Nov 41
The losses sustained both by the night bombers and day fighters have lately been very heavy. There is no need to press unduly the offensive by the fighters over France, about two sweeps a month instead of

(iii) 6-inch-gun Cruisers Two of the ships mentioned became H M ships Defence and Superb The 8-inch-gun cruiser was never built

(1v) Destroyers The following were on order or in various stages of construction

| Type                           | On Order | Rate of Completion per annum |
|--------------------------------|----------|------------------------------|
| Fleet destroyers               | 74       | 8, rising to 15              |
| Destroyers classed as frigates | 50       | 30                           |
| Canadian                       | 4        | All by late 1943             |
| Ex-foreign                     | 2        | Early 1942                   |

(v) Landing-craft Very large increases in all types of landing-craft construction were made in later years

four should be sufficient, combined with a continuance of the attacks on shipping. While the degree of attack may be lightened, the im-

pression of its continuance should be sustained.

2. I have several times in Cabinet deprecated forcing the night bombing of Germany without due regard to weather conditions. There is no particular point at this time in bombing Berlin. The losses sustained last week were most grievous. We cannot afford losses on that scale in view of the short fall of the American bomber programme. Losses which are acceptable in a battle or for some decisive military objective ought not to be incurred merely as a matter of routine. There is no need to fight the weather and the enemy at the same time.

3 It is now the duty of both Fighter and Bomber Command to

re-gather their strength for the spring.

4 Let me have a full report about the heavy losses of bombers on the night of the last heavy raid on Berlin.

(Action this Day)

Prime Minister to C.A S.

II Nov 41

The continued wastage of aircraft in relation to production is very serious. Let me have each week a precise return by types of all aircraft stationed in the United Kingdom written off either by enemy action or other causes. Let me also have, though this is not so urgent, a list of aircraft damaged each week, repairs of which cannot be executed by the squadrons

Prime Minister to C A S.

11 Nov 41

Is it true that for the first fortnight in October Bomber Command were withdrawn from attacks on shipping to take part in Army manouvers, and that consequently there were no losses to the enemy in that period?

When was this decision to abandon operations for manœuvres taken,

and by whom?

Prime Minister to Viceroy of India

12 Nov 41

I was startled to learn how far you had gone about the release of the remaining Satyagrahi prisoners. As you know, I have always felt that a man like Nehru should be treated as a political detenu and not as a criminal, and have welcomed every mitigation of his lot. But my general impression of this wholesale release is one of a surrender at the moment of success. Undoubtedly the release of these prisoners as an act of elemency will be proclaimed as a victory for Gandhi's party. Nehru and others will commit fresh offences, requiring the whole process of trial and conviction to be gone through again. You will get no thanks from any quarter. The objections of Hope and Hallett should not be lightly turned aside.

2 The Cabinet, to whom I mentioned it this evening, felt they must

have more time to consider the matter after they have received your official advice. It will not be possible for us to send an answer before Monday at earliest, so I asked the Secretary of State to desire you to postpone the motion on the 17th for a few days. We often do this in the House of Commons when replies from other Governments have to be awaited.

(Action this Day)

Prime Minister to Secretary of State for War 13 Nov 41

Pray see the attached epitome of the Beveridge report on skilled men in the Services and the letter of the Minister of Labour Evidently the report is most damaging to the War Office, and before it can be published it is imperative that good, clear proposals for mending the evil should be formulated by the War Office and published at the same time as the report

No one would expect the Army, which is expanding twentyfold, to have the same efficiency of organisation as the Navy, which is hardly doubled But you ought to be up to the standard of the Air

Force, which is also growing very rapidly

I should advise you to set up a small committee, with perhaps the Financial Secretary in the chair, to hack out a good scheme. This scheme should be ready in a fortnight, and after I have approved it the whole publication can be brought before the Cabinet.

(Action this Day)

Prime Minister to First Lord and First Sea Lord 14 Nov 41

I am much disquieted by these facts. We are sinking less than two U-boats a month \* They are increasing by nearly twenty. The failure of our methods, about which so much was proclaimed by the Admiralty before the war, is painfully apparent. I presume we have lost a far higher proportion of British submarines placed in service since the beginning of the war than the enemy

Let me have the actual figures

2 I regard the whole position as so serious that I wish to have a special meeting in the near future to survey the whole problem and consider whether anything can be done beyond the present measures

Let me know what increases are to be expected month by month in our anti-U-boat hunting-craft. Let all the considerations about the German difficulty of training crews and other aspects be assembled and reviewed. Let me know when you will be ready.

Prime Minister to Home Secretary

IS Nov 4F

I shall be glad to know what action you have taken about enabling

\* Post-war analysis shows that German U-boat losses at this period were as follows September, 2; October, 2, November, 5, December, 9 British submarine losses during the same period were three

the twelve couples of married internees to be confined together. Now that order has been restored in the Isle of Man there should be no particular reason against their going there. If not there must surely be some prisons in England in which airangements could be made for reasonable association of husband and wife

Is it true that when aliens are interned husband and wife are interned in one place? If so it seems invidious to discriminate against those of

British nationality

Feeling against 18B is very strong, and I should not be prepared to support the regulation indefinitely if it is administered in such a very onerous manner. Interiment rather than imprisonment is what was contemplated.

Sir Oswald Mosley's wife has now been eighteen months in prison without the slightest vestige of any charge against her, and separated

from her husband.

Has the question of releasing a number of these internees on parole been considered, or on condition of their finding sureties for good behaviour, etc.?

I should be glad if you would make proposals to the Cabinet before the debate in the House takes place.

Prime Minister to Secretary of State for War and CIGS 17 Nov 41 It seems a pity that the nine beach or county divisions should be rated at a lower level than the field divisions. All they lack are two Royal Engineer companies and one regiment of artillery each, together with transport on the higher scale. Pray let me have a plan to raise these divisions to the field division scale by March 31, or, if that is impossible, by the end of June 1942, and let me know what additional man-power would be required and whether the equipment is forthcoming.

At the rate at which lorries, etc., are coming out, the extra transport should soon be available, especially if reasonable tail-combing is used on the main corpus of the Army

Prime Minister to Lord Cherwell, Sir Edward Bridges, 17 Nov 41 and General Ismay

It is my wish before the end of the year to have fully planned the War Production Budget of 1942 and to submit this for approval to the Cabinet For this purpose the programmes of the Navy, Army, and Air Force, which are already far advanced, must be settled and the resulting tasks of the Supply Department set forth

At the same time the import programme, already completed on a basis of 33 million tons, and the home production should be surveyed. I should propose that of the extra 2 million tons import available half a million tons should go to food or feeding-stuffs and the other

1½ million tons to munitions in order to make up for their heavy cut this year. But this does not mean that needless imports, like timber, should be allowed undue expansion. The emphasis must be placed on a sharper war effort.

The third major element is man-power, now under Cabinet dis-

cussion but far advanced towards settlement

It should be possible to state the above in broad outlines in a directive to be circulated about December 15 Perhaps you will let me have a preliminary study. The directive should not exceed one of my white square double sheets, and should follow the model of last year.

Prime Minister to President of the Board of Education

22 Nov 41

Let me have a short note showing the number of boys who leave the public elementary schools at 15 years and over, under the war conditions of 1941

How many of these go into any form of industry and employment? How many are there in munitions between the ages of 15 and 18½ years? How many go into cadet corps of various kinds? How many pursue their education in secondary schools or go on to the universities?

I am anxious that the educational and disciplinary aspects of these boys' lives shall rank as prominently in our minds as the need to find considerable numbers for ARP, AA batteries, etc

Prime Munister to First Sea Lord

23 Nov 41

What is the present plan about the distribution of the aircraft-carriers? Since these telegrams were received we have lost the Ark Royal, but we still have four good new ones. I do not want to waste any one of them by sending it all round the Cape, unless such a voyage coincided with an inevitable working-up period. At present I am waiting to see what will happen in the Mediterranean. Of course if Admiral Cunningham is going to take station in the Central Mediterranean, or if we get Tripoli or perhaps French North Africa comes out, it would be worth putting at least two aircraft-carriers there. We cannot see ahead clearly enough at present. I suppose you will give one of the older ones to the Indian Ocean and Pacific

Please let me have a short note.

Prime Minister to Commander, Force K

27 Nov 41

Many congratulations on your fine work since you arrived at Malta, and will you please tell all ranks and ratings from me that the two exploits in which they have been engaged, namely, the annihilation of the enemy's convoys on November 8 and of the two oil ships on Monday last, have played a very definite part in the great battle now raging in Libya. The work of the force has been most fruitful, and all concerned may be proud to have been a real help to Britain and our cause

751

25

Prime Minister to General Ismay, for CO.S. Committee, 28 Nov 41 and C.A.S.

Everything in human power should be done [to help the guerrilla fighters in Yugoslavia]. Please report what is possible

Printe Minister to First Sea Lord

28 Nov 41

I cannot help feeling that the estimate of thirty-six U-boats operating in the North Atlantic by December 15 is worse than it will be \* I hope you will consider the possibility of reinforcing the Mediterranean with at least a dozen destroyers. They need not necessarily be there very long, as the situation may change with the decision in Libya. Numbers are however the essence of successful hunting, and we ought to get good results.

Pray let me know whether anything more can be done.

Let me have U-boat sinkings for November

Prime Minister to General Ismay

29 Nov 41

I am dissatisfied with the way in which this project for Polish officers in West Africa, in which I took a personal interest, has been followed up. It was evidently necessary that a proper outfit allowance should be paid to the Polish officers proceeding to these tropical regions. Yet all these months have passed haggling about it. First  $\mathcal{L}_5$  is offered, then finally  $\mathcal{L}_{15}$ . I expect this is typical of the way in which the experiment has been handled

On other papers I have directed that 200 more Polish officers are to be invited to present themselves for examination. A weekly report is to be supplied to me personally of the progress made both in West Africa and at home Please report to me any signs of obstructionism, and pursue the matter yourself from the Defence Office Let me know who is the officer responsible in the War Office for dealing with this, and make sure you keep him up to the mark by constant inquiries

Prime Minister to Foreign Secretary

30 Nov 41

I think it most important that the United States should continue their relations with Vichy and their supplies to North Africa and any other contacts unostentatiously for the present. It would be a great mistake to lose any contacts before we know the result of the battle in Libya and its reactions. There is always time to break, but it is more difficult to renew contacts.

## DECEMBER

Prime Minister to C.A S and Commander-in-Chief Fighter Command

6 Dcc 41

The following are the main conclusions which we reached in our talk last night

<sup>\*</sup> Post-war figures show that the average daily number of U-boats operating in the

I "Gee"\* is to be started on February 1, 1942, unless examination shows that the weather conditions over the last ten or twelve years prove that March is likely to be far more favourable than February In that event the matter should be referred to me again for decision

2 Every effort is to be made to broaden the front of the fighter force To this end reserves of pilots and machines should be disposed in squadrons, and thus allow roulement to be extended in the event of

protracted fighting.

3 As an experiment a night-fighter wing is to be issued with dayfighting machines with a view to introducing a system of dual purpose fighter squadrons, if the experiment proves successful

Prime Minister to Minister of Food

6 Dec 41

Amid your many successes in your difficult field, the egg distribution scheme seems to be an exception. I hear complaints from many quarters, and the scarcity of eggs is palpable

I send you a note which the Minister of Agriculture has furnished

on his side of the problem

Will you please give me a very short statement of your plans and policy

Prime Minister to Munister of Supply

I hope to be able to go to Shocburyness on the afternoon of Thursday, December 11, and would be grateful if you would arrange for a demonstration of the following types of UP weapons †

I Type K

- 2 Apparatus AD, Type L
- 3 Apparatus AD, Type J
- 4 Rocket U, 5-inch
- 5 Rocket U, 3-inch

Before coming to a decision on the priority proposals set out in your minute of December 2 it is desirable, I think, to see these various weapons and decide their relative merits. I hope therefore that you will be able to accompany me

Of course, if cloudy it must be cancelled

North Atlantic during December 1941 was eight. In addition, on any given day many others were on outward or homeward passages

The shipping losses by U-boats during November 1941 were 61,700 tons, the lowest

figure recorded for any month since May 1940

\* "Gce" was the name given to a radio device by means of which our bombers could fix their positions when operating over Germany

† Type K anti-aircraft rocket

Apparatus A D, Type L rocket for defence of aerodromes and similar places
Apparatus A D, Type J against low flying aircraft
Rocket U, 5-inch original design was for delivering chemical warfare charge, but

subsequently became area barrage weapon

Rocket U, 3-inch anti-aircraft barrage weapon

Prime Minister to General Ismay 7 Dec 41

What has been done with the Italian rifles which have been captured in Abyssinia, Gondar, and elsewhere? How many of them were there, and how much ammunition?

Prime Minister to Secretary of State for War (Personal)

9 Dec 41

I have considered carefully your munute to me about the A.T.S., and I am willing that the principles you propose should have a trial It is up to you to make these batteries attractive to the best elements in the A.T.S. and those who are now being compelled to join the A.T.S. I feat there is a complex against women being connected with lethal work. We must get rid of this. Also there is an idea prevalent among the ladies managing the A.T.S. that nothing must conflict with loyalty to the A.T.S and that battery esprit de corps is counter to their interest or theme. No tolerance can be shown to this. The prime

sphere of the women commanders is welfare, and this should occupy their main endeavours.

The conditions are very bad and rough, and I expect will get worse now that large numbers are being brought into the War Office grip by compulsion or the shadow of compulsion. A great responsibility rests upon you as Secretary of State to see that all these young women are not treated roughly. Mrs Knox and her assistants should be admirable in all this, but do not let them get in the way of the happy active life of the batteries or deprive women of their incentives to join the batteries and to care as much about the batteries as they do about the A.T.S.

I shall be very glad to have a further report from you on how the principles enunciated in your minute are in fact being applied. Every kind of minor compliment and ornament should be accorded to those

who render good service in the batteries.

why a certain number of trees should not be left

Prime Minister to Chairman of the Forestry Commission 9 Dec 41

I see reports in the papers that timber-felling companies are ruthlessly denuding for profit many of our woodlands. What airangements have you got to make sure that some of the finest trees are left and that due consideration is given to the appearance of the countryside? I know we have got to cut down very severely, but there is no reason

Let me know in a few lines what you are doing to replant. Surely you are replanting two or three trees for every large one you cut down.

Prime Minister to Minister of Food

0 Dec. 41

You say that you would have preferred to bring sweets and chocolates within the points scheme, and hope to do so subsequently. Would it not be better to postpone rationing of them until you are

able to do so? If you introduce a sweets ration now all the forces of conservatism and arguments of administrative economy will be arrayed against any subsequent proposal to alter matters

I gather that it was admitted in the Lord President's Committee that a sweets ration would lend itself to irregularities more easily than our other rations. Anything which diminishes respect for the rationing regulations is objectionable. If we create artificial illegalities that are neither enforceable nor condemned by public opinion the habit of evasion may spread to cases where it would be injurious.

We have done without a sweets and chocolate ration for so long that a small further delay may be tolerated. We should avoid allowing exceptions to the principle that any rationing of the secondary foods which you feel compelled to introduce should be incorporated in the points system.

(Action this Day)

Prime Minister to Minister of Labour

10 Dec 41

I see it reported that you say Members of Parliament are liable to be called up equally with others. The rule I have made, which was followed in the last war and must be followed in this, was that service in the House of Commons ranks with the highest service in the State. Any Member of Parliament or Peer of Parliament has a right to decide at his discretion whether he will fulfil that service or give some other form. Members of either House are free, if at any time they consider their political duties require it, and reasonable notice is given, to withdraw from the armed forces or any other form of service in order to attend Parliament.

I could not possibly agree to any smirching of this principle

Prime Minister to Lord Privy Seal and Minister of Food

12 Dec 41

It would be a mistake, in my opinion, to announce these restrictions of rations now. It would savour of panic. Our position has immeasurably improved by the full involvement of the United States. The reserves are good. We are all in it together, and they are eating better meals than we are

I trust no announcements of this character will be made in the immediate future, and I hope I may be consulted before any final decision is taken by the War Cabinet

Prime Minister to C.I G.S. (Sir Alan Brooke)

[Your minute about the possibility of forming a Polish Armoured

Division ]

I do not consider that the issue of tanks to the Poles should be delayed until all the British armoured divisions have not only been completed but have a large reserve of tanks standing behind them I thought it was agreed that in the first place the divisions were to be

given their initial equipment, and the reserve built up alterwards as more tanks come to hand. The Poles should be treated on this footing equally with the British divisions. I do not see how the date of April I, 1943, could possibly be accepted as a fair treatment of the problem by General Sikorski. I hope therefore you will let me have proposals on the basis I have indicated.

2. It should surely be possible to give a good outfit of tanks to the Poles and yet enable them to work together as a corps. It is convenient, but not indispensable, that every unit in the Army should have exactly the same organisation. It is not necessary that the Poles should have the identical equipment, i.e., the whole 3,500 vehicles to which the British armoured divisions have been expanded. A practical solution would be to let them have a couple of hundred more tanks during the next six months, and work up to the full usual formation later. It should surely be possible to use the Polish force together, and not to separate the tank component from the rest.

I hope you will let me have further proposals.

Prime Minister to Secretary of State for War

21 Dec 41

Your minute about the Beveridge report.

The memorandum to be published by the War Office at the same time as the Beveridge report on the use of skilled men in the Services must be both more effective and more precise than that at present

2 The War Office should also take their stand on the grounds that it is their duty to make an efficient fighting machine rather than a well-conducted industrial establishment. Nothing must therefore be done seriously to break the cohesion of section, platoon, and company, and no general disturbance of the Army system in home ports can be tolerated in view of the danger of invasion

3. It must however be clearly shown how skilled men in units, as they at present exist, are being used, and how still better use will be made of them. The memorandum should thus firmly rebut those suggestions in the Beveridge report which would affect the cohesion

and military efficiency of the Army

4 This does not mean that the War Office can use the excuse of military efficiency to cover over the grave defects brought to light by the report. The memorandum should not appear merely to be a whitewashing document, but should show that a really serious effort is being made to rectify shortcomings. Parliament and the public will only be reassured if the War Office can state in concrete, rather than in abstract, how amendment is being made. The memorandum should therefore deal specifically and in a manner readily understood by the layman with the main points in the report.

5 These are

(a) That the reservoir of unused skill in the Army is sufficient to cover all future demands for skilled men, except armament artificers

(b) That economy in skilled men could be secured by review of

the establishment of many field units

(c) That more effective steps could be taken to utilise the skill of those men whose units will be required at the front but which at present are not engaged

(d) That great improvements are possible in the machinery for

testing, remuster, and transfer of skilled men

(e) That a special corps of mechanised engineers should be formed to put an end to present duplication

(f) That men should be enlisted into the Army as a whole and not into specific corps or units

6 The War Office reply will have to be carefully drafted if it is to be effective You should set up a small committee, which I suggest might consist of the Financial Secretary, Sir James Grigg, and the Adjutant-General, to prepare it I should like the reply to be submitted to me about January 10, so that the matter can, if necessary, be brought before the Cabinet in good time

Prime Minister to Commander-in-Chief Home Forces

22 Dec 41

(General Paget)

This is a most admirable paper [on the training of infantry, by General Utterson-Kelsol, and I agree with every word of it I am glad to think that in your new great sphere you will have an opportunity of putting into force the many wise and stimulating principles it contains. You may count on my assistance in every way. I have already done all in my power to prevent sections and platoons from being disturbed needlessly, or the infantry used for civil purposes other than in emergencies or the harvest While I greatly admire the conception of a well-armed infantry battalion working with the elan and combined individualism of a pack of hounds, I am also anxious about the smart side of things I hope there are going to be no fussy changes in the Manual Exercises and that "spit and polish" will not be incompatible with effective field training

2 Pray let me have a further note to show how you are applying the ideas of this paper, and return it to me I have been very much

pleased by it.

Prime Minister to Minister of Food

22 Dec 41

Your minute about the egg distribution scheme The fact that 370,000 small producers have enough gumption to

#### APPENDIX H

keep chickens is a matter for congratulation, under this head the only complaint I have heard is that this practice is not sufficiently encouraged. After all, the backyard fowls use up a lot of scrap, and so save cereals

I quite recognise your difficulties, with your imports cut to onethird, but I hope that you will get in the quantity which you had planned, so that this important animal protein which is so essential in the kitchen should not be deficient.

Prime Minister to C I.G S (Sir Alan Brooke) 22 Dec 41

Surely it was a very odd thing to create these outlandsh numbered regiments of Dragoons, Hussars, and Lancers, none of which has carbines, swords, or lances, when there exist already telescoped up the 18th, 20th, and 19th Hussars, 5th Lancers and 21st Lancers. Surely all these should have been revived before creating these new unreal and artificial titles. I wish you would explain to me what was moving in the minds of the War Office when they did this

## APPENDIX H

# PRIME MINISTER'S TELEGRAMS TO THE GOVERNMENT OF AUSTRALIA

Prime Minister to Prime Minister of Australia\*

Now that you have taken up your great office, I send you my most cordial good wishes for success, and assure you that I and my colleagues will do everything in our power to work with you in the same spirit of comradeship and goodwill as we worked with Mr. Menzies, who, we are so glad to see, is serving under you as Minister for the Coordination of Defence

2 We have followed attentively the difficulties which have arisen in Australia about your representation over here, and perhaps it will be a help if I let you see our side of the question and how we are situated.

3 Since the declarations of the Imperial Conference of 1926, embodied in the Statute of Westminster, all Dominion Governments are equal in status to that of the Mother Country, and all have direct access to the Crown The Cabinet of His Majesty's Government of Great Britain and Northern Ireland, of which at present I have the honour to be the head, is responsible to our own Parliament, and is appointed by the King because they possess a majority in the House of Commons. It would not be possible therefore, without organic changes, about which all the Dominions would have to be consulted,

<sup>\*</sup> See p 366.

#### APPENDIX H

to make an Australian Minister who is responsible to the Common-wealth legislature a member of our body. The precedent of General Smuts in the last war does not apply, because he was an integral member of the War Cabinet of those days, appointed by the King because of his personal aptitudes, and not because he represented the South African or Dominions point of view

- 4. In practice however whenever a Dominion Prime Minister visits this country—and they cannot visit it too often or too long—he is always invited to sit with us and take a full part in our deliberations. This is because he is the head of the Government of one of our sister Dominions, engaged with us in the common struggle, and has presumably the power to speak with the authority of the Dominion concerned, not only on instructions from home, but upon many issues which may arise in the course of discussion. This is a great advantage to us, and speeds up business.
- 5 The position of a Dominion Minister other than the Prime Minister would be very different, as he would not be a principal, but only an envoy Many Dominions Ministers other than Prime Ministers have visited us from Australia, Canada, New Zealand, and South Africa during the present war, and I am always ready to confer with them or put them in the closest touch with the Ministers of the various departments with which they are concerned. In the normal course the Secretary of State for the Dominions and the High Commissioner for the Dominion concerned look after them, and secure them every facility for doing any work they may have to do. This arrangement has given satisfaction, so far as I am aware, to all concerned
- 6 I have considered the suggestion that each of the Dominions should have a Minister other than the Prime Minister sitting with us in the Cabinet of the United Kingdom during this time of war. I have learnt from the Prime Ministers of the Dominions of Canada, South Africa, and New Zealand that they do not desire such representation and are well content with our present arrangements. Some of the Dominion Prime Ministers have indeed taken a very strongly adverse view, holding that no one but the Prime Minister can speak for their Governments except as specifically instructed, and that they might find their own liberty of action prejudiced by any decisions, some of which have to be made very quickly in war-time, to which their Minister became a party
- 7. From our domestic point of view, as His Majesty's servants in the United Kingdom, there are many difficulties. We number at present eight, and there has been considerable argument that we should not be more than five The addition of four Dominion representatives would involve the retirement from the War Cabinet of at

least an equal number of British Ministers. Dwelling within a Parliamentary and democratic system, we rest, like you do, upon a political basis. I should not myself feel able, as at present advised, to recommend to His Majesty either the addition of four Dominions Ministers to the Cabinet of the United Kingdom, which would make our numbers too large for business, or the exclusion of a number of my present colleagues, who are the leading men in the political parties to which they belong.

8. If you desire to send anyone from Australia as a special envoy to discuss any particular aspect of our common war effort, we should of course welcome him with the utinost consideration and honour, but he would not be, and could not be, a responsible partier in the

daily work of our Government

9. His relationship with the existing High Commissioner for Australia and with the Secretary of State for the Dominions would be for you to decide. It would seem however if such an envoy remained here as a regular institution that the existing functions of the High Commissioner would to some extent be duplicated, and the relations of the Secretary of State with the High Commissioners generally might be affected. Such difficulties are not insuperable, but they may as well be faced. The whole system of the work of the High Commissioners in daily contact with the Secretary of State for the Dominions has worked well, and I am assured that the three other Dominions would be opposed to any change.

Ministers if that could be arranged, but the difficulties of distance and occasion are, as you know, very great. We are also quite ready to consider, if you desire it, the question of the formation of an Imperial War Cabinet. So far-reaching a change could not however be brought about piecemeal, but only by the general wish of all the Governments

now serving His Majesty

Prime Minister to Prime Minister of Australia 7 Sept 41 Our position in Syria and Iraq may be threatened by a German advance.

(a) on Syria through Anatolia,

(b) on Iraq through the Caucasus and Persia (Iran),

(c) a combination of (a) and (b)

Through Anatolia—If Turkey does not grant passage to German forces the large land and air forces necessary for conquering Turkey could hardly be withdrawn from Russia, refitted and reconcentrated, in less than six to eight weeks. Weather conditions in Anatolia virtually preclude operations from December 1 to the end of March. We therefore feel that the concentration by the Germans of sufficient

forces on the Turkish frontier to overcome that country is now improbable until a date so late that an attack on Syria through Anatolia

is not likely before the spring

If however, contrary to expectations, Turkey were to give passage to German forces, three or four German divisions might arrive on the Syrian frontier before the end of the year, and be reinforced at the rate of one division a month. This force might be supplemented if sea routes through Turkish territorial waters were available. A great deal therefore depends on what help the Turks may expect from us. As to this we have instructed our Attachés at Ankara to speak on the following lines.

(a) If Turkey resists we will come to her aid at once with substantial forces. Our essential object in the Middle East is the destruction of the German Afrika Corps and the reconquest of Cyrenaica, but we expect that at latest by December 1 we could send to Turkey four divisions and at least one armoured brigade. Air support will be on a considerable scale, and preparations should be made to receive a force of eight fighter, one Army Co-operation, two heavy, and six medium bomber squadrons.

(b) We shall provide a strong force of anti-aircraft artillery for the defence of our own troops and of those aeiodiomes allotted to us, and in addition we are sending to the Turks an immediate and special consignment of one hundred 3 7-inch anti-aircraft guns. These are in addition to the normal

allocation of six equipments per month

Through the Caucasus and Persia—Even in the event of an early Russian collapse a full-scale drive through the Caucasus on Persia and Iraq would not be possible this year. The control we have gained in Persia adds greatly to the security of our right flank in these regions

Turning now to our own action to meet a German advance, whichever way it may come, our first requirement is facilities to operate air forces both offensively and defensively. Steps are accordingly being taken to improve and increase aerodrome facilities throughout this area, and by consent of the Turks in Anatolia. These will give flexibility to our air forces in the Middle East.

The second requirement is to improve communications, both rail and road, throughout the areas under our control. This is being

pushed forward with all dispatch

In addition, steps are being taken to develop as rapidly as possible our maintenance arrangements in the Basra area, including construction of additional ports, so that the proposed increased forces in the Persian Gulf area can be maintained

#### APPENDIX I

Western Desert —We must clear Eastern Cyrenaica at the earliest possible moment, not only for the defence of our base in Egypt, but also to retain control of the Fastern Mediterranean. Position is as follows:

It is estimated that the enemy has at present in Cyrchaica two German divisions (one armoured and one light motorised) and six Italian (including one motorised and one armoured). We do not think that with these forces he could undertake a major offensive against the Delta. He is in considerable difficulties with his supply and is short of mechanical transport. In addition, we are sinking a good proportion of his reinforcements of men and material from Italy. If however he were able to establish a firm base on the Halfaya-Capuzzo-Bardia line and to build up the necessary mechanical transport and supplies, it is possible that a limited offensive might be carried out against Sidi Barrani.

Our aim is to take the offensive as soon as a favourable opportunity presents itself, but Commander-in-Chief does not wish to risk another setback, such as "Battleaxe", or to move until he feels he can go right forward. He estimates that for this offensive his armoured force must not be less than two armoured divisions. These will not be ready for action until November 1, but this would not preclude him from attacking sooner if a favourable opportunity were presented to him. The importance of holding Tobruk has been clearly demonstrated.

## APPENDIX I

# THE BRITISH PURCHASING COMMISSION IN THE UNITED STATIS\*

DIRECTIVE BY THE PRIME MINISTER OF AUGUST 11, 1941

A great mass of orders has already been placed in the United States for British war munitions, etc. These have been harmonised both as between British departments and between British home production and British orders placed in America. Mr Purvis has been made finally responsible, and any discordances should be reported to him for settlement in the office of the Minister of Defence. However, it is now necessary to make further large provision, particularly in respect of shipping, bomber aircraft, and tanks, both for the British account and for the United States' armed forces. Moreover, the arrival of Russia as an active partner against Hitler will require not only certain readjustments of British orders, original and supplementary, but also

<sup>\*</sup> Sce p 396

#### APPENDIX I

rable expansion of plants and installations for the longer-

, the British supplementary programme is concerned, no trouble about priorities as between heavy bomber iks We no longer consider priorities as dominated by the it prefer to deal in simultaneous quantitative allocations is, if our American colleagues will state what are the ther through improved production from existing plants tion of new ones, of greatly increasing production, and ow their views about how it is to be divided between nited States needs, we will do the share-out between partments For instance, we do not think that our need nental programme of heavy bomber aircraft should nultaneous expansion in tanks The ratio for the whole s between heavy bomber aircraft and tanks would be. 6½ to 3½, both types of production proceeding simulast as possible. This method of approach is suggested nvenient

atly welcome a further assignment of 150,000 rifles. munition is very short, these are absolutely needed to nnel defending the fighter airfields. At least 150,000 of present to rely on pikes, maces, and grenades. Even ammunition in Great Britain is very short and does not ove 80 rounds per rifle, production is now flowing in ates for our benefit, which will this month be clear of of the overdrawn 50 million rounds, and should amount illion rounds per month. Even if only ten rounds could it to the men at certain airfields with their rifles, this better than the makeshifts we now have to employ, and the strictest instructions to be given to all uniformed ight to the death, which instructions can hardly be given itly when no weapon can be placed in the hands of irmen concerned.

nerefore that the most rapid deliveries possible of 150,000 made, as the invasion season is fully operative after;. In the event of our reporting to the President that two preparations are being made by the enemy in the an, and French ports for invasion, of which there is no t, we would ask as a matter of emergency that a further of .300 ammunition should be rushed across, this being or from our monthly quotas of production

I seem indispensable that the re-equipment of the Russian I be studied at once upon the grand scale. After pre-

## APPENDIX J

liminary conferences between the British and United States supply departments, it would seem advisable, and indeed inevitable, that a further conference should be held in Moscow. Both for this purpose and in any preliminary conference that may be necessary the Prime Minister would nominate Lord Beaverbrook, Minister of Supply, who should arrive here to-day, as the British representative, with power to act for all British departments.

# APPENDIX J

# THE ANGLO-AMERICAN-RUSSIAN CONFERENCE\*

GENERAL DIRECTIVE BY THE PRIME MINISTER AND MINISTER OF DEFENCE

22 Sept 41

The position reached as the result of the Beaverbrook-Harriman conversations is set out in Lord Beaverbrook's report of to-day's date. We must consider ourselves pledged to fulfil our share of the tanks and aircraft which have been promised to Russia, and Lord Beaverbrook must have a considerable measure of discretion as to what quantities of other equipment and of material should be offered at the conversations in Moscow.

- 2. Assurance must be given to Russia of increased quotas from July 1, 1942, to June 30, 1943. During this period British war production will be at its height, and American ditto in its third year of development. It would be wiser not to be committed to precise figures based on optimistic forecasts of Anglo-American production. There are dangers also in promising the Russians a percentage of British and American output, which they may immediately ask should be increased. We should not disclose speculative figures of our joint production when none are given of theirs by the Russians. They should however be invited to set forth their remaining resources in accordance with the various rearward lines they may hope to hold. Lord Beaverbrook should be free to encourage the prolonged resistance of Russia by taking a justifiably hopeful view of these more distant prospects.
- 3. Russian attention should be directed to the limitations of shipping, and still more of transportation from the various ports of access. The rapid destruction of world shipping, the effort required to make it good, and the vital needs of this country, now cut to the bone, should be stressed.

<sup>\*</sup> Sec p 413.

### APPENDIX J

- 4. Encouragement should be offered, with American approval, to the keeping open of the Vladivostok route and overawing Japan for that purpose Special emphasis should be laid upon the development on the largest scale and with the utmost energy of the route from the Persian Gulf to the Caspian, both by rail and road. The practical limitations which time enforces both upon working up the traffic on the Trans-Persian railway and upon the motor-road construction should be explained. The conflict between the movement of supplies and of troops and their maintenance at any given period along this route must be pointed out. The Russians will no doubt give their own estimate of the capacity and facilities of Archangel and of its railway connections with Central Russia, having regard both to winter ice and probable enemy action.
- 5. The Conference must proceed upon the basis that the United States is not a belligerent. The burden upon British man-power is already heavy, and the strain will be intense during 1942 and onwards Apart from the help we get from the Dominions, India, and the Colonies, our man-power is fully engaged We have to feed ourselves and keep alive by maintaining vast merchant fleets in constant movement. We have to defend the British Isles from invasion, for which the Germans can at any time gather a superior army, and also from the most dangerous forms of air attack by the main strength of the enemy Air Force, which can rapidly be transferred from east to west at the enemy's convenience We have to maintain our armies in the Middle East and hold a line from the Caspian to the Western Desert We hope to develop on this front during 1942 approximately twentyfive divisions, British, Indian, and Dominion, comprising, with all the exceptional rearward services needed in these undeveloped regions and strong proportionable Air Force, about a million men The strain on shipping in supplying these forces largely round the Cape, and the time taken in the turn-round of available ships, should be explained, if necessary, in detail
  - 6 For the defence of the British Isles we have an army of slightly over two million men, backed by about one and a half million Home Guard We possess only about three and a half million rifles, and can only get 100,000 more or so in the next year. Of this army of two million men, 900,000 constitute the Field Force, comprising twenty mobile infantry divisions, nine less mobile county or beach divisions, and six armoured divisions, three of which are only partly formed, together with five Army tank brigades, of which only one is as yet complete. Nearly a million men will be required for the enormous Air Force we are creating, 750,000 are already enrolled. The Navy already absorbs half a million sailors and Marines. When to this is

added the shipbuilding, aircraft production, and munitions industries, and the need of food production at home and other domestic civilian industries, all cut to a minimum, it will be seen that the man-power and available woman-power of a population of 44,000,000 is, or will soon be, engaged to the limit.

7 Out of the 1,100,000 men behind the Field Army at home, the air defence of Great Britain, the Coastal Defence, the garrison of Northern Ireland, the draft-producing units and training schools, the defence of aerodromes and vulnerable points, leave only a small

margin.

8. It will not be possible to increase the Field Army at home beyond the number of divisions—less than forty—already mentioned, and great efforts will be needed to maintain the existing strength at home while supplying the drafts for the Middle East, India, and other garrisons abroad—e g, Iceland, Gibraltar, Malta, Aden, Singapore, Hong Kong.

- 9. We could not allow the force needed in Great Britain to repel invasion to fall below twenty-five infantry and four or five armoured divisions. It must be noted that troops can be transferred by the enemy across the main lateral railways of Europe incomparably quicker than any of our divisions could be recalled from abroad. The number of divisions available for offensive oversea action is therefore small.
- posed to be built up in the Middle East during 1942, an Expeditionary Force of six or seven divisions, including two armoured divisions, is the maximum that can be conceived. This is being prepared Even if more were available the shipping does not exist to carry larger forces and maintain them overseas. All ideas of twenty or thirty divisions being launched by Great Britain against the western shores of the Continent or sent round by sea for service in Russia have no foundation of reality on which to rest. This should be made clear
- 11. We have every intention of intervening on land next spring, if it can be done. All the possibilities are being studied, including action on the northern and southern flanks of the Russian front. In the north an expedition into Norway would raise a serious revolt, and might, if it succeeded, win the Swedish Government, with its good army, to our cause. This has been studied in detail. It is not however seen how the Russian forces could help, in fact, their intervention would antagonise. Sweden beyond all hope. The hostility of Finland is already declared.
- 12 At any moment we may be called upon to face the hostility of Spain and the penetration of the Germans into Moiocco, Algeria, and West Africa Should the French resist in Africa our available force

### APPENDIX J

might be sent to help them there. In both these cases the sea routes are short and not comparable with the vast distances round the Cape.

- 13 In the Middle East, on the southern flank of Russia, we shall deploy the strong forces mentioned above. Once the Western Desert and Cyrenaica have been cleared of the German and Italian armies now active there our Middle Eastern forces would have a choice of If they increasingly give their right hand to the Russians, either in the Caucasus or east of the Caspian, it must be realised that their supply will choke the rail and road connection from the Persian Gulf On the other hand, Turkey, if she could be gained, is the great prize Not only would the German road to Syria and Egypt be barred by powerful Turkish armies, but the Black Sea naval defence could be maintained with great advantages, thus helping the defence of the Caucasus The action of Turkey one way or the other may be determined in the near future by the promises, should she become involved. of help in troops and modern equipment, including especially aerodromes, tanks, anti-tank and anti-aircraft artillery, etc It should be made clear to the Russians that much of this equipment and the greater part of the troops would of course be withdrawn from the contributions available for Russia, which are all we can give In order however to induce Turkey to come in on our side, especially in the near future. it would be well worth Great Britain and Russia revising their arrangements
- T4 We are much interested in the development of the Polish and Czech armies in Russia, the latter being only small, and we should be glad to help in their equipment. It should be pointed out that the Poles and Czechs have influential communities in the United States If a proportion of our equipment could be earmarked for the Poles and Czechs it would have a good effect
- The Russians will no doubt ask how you propose to win the war, to which our answer should be, "By going on fighting till the Nazi system breaks up, as the Kaiser's system broke up last time." For this purpose we shall fight the enemy wherever we can meet them on favourable terms. We shall undermine them by propaganda, depress them with the blockade, and, above all, bomb their homelands ceaselessly, ruthlessly, and with ever-increasing weight of bombs. We could not tell last time how and when we should win the war, but by not giving in and not wearying we came through all right. We did not hesitate to face Germany and Italy alone all last year, and the determination of the British masses to destroy the Nazi power is inflexible. The phrases "Nazi tyranny" and "Prussian militarism" are used by us as targets rather than as any implacable general condemnation of the

#### APPENDIX K

German peoples We agree with the Russian Government in hoping

to split the Germans and to isolate the criminal Nazi régime

16. Of course we cannot predict what action the United States will take. The measures already sanctioned by President Roosevelt and his Government may at any time in the near future involve the United States in full war, whether declared or undeclared. In that case we might look forward to a general offensive upon Germany in 1943. If German morale and unity were seriously weakened and their hold upon the conquered European countries relaxed it might be possible to land large numbers of armoured forces simultaneously on the shores of several of the conquered countries and raise widespread revolts. Plans for this are now being studied by the British Staffs

## APPENDIX K

# FLEET DISPOSITIONS IN THE INDIAN OCFAN

CORRESPONDENCE BETWEEN THE PRIME MINISTER AND THE FIRST LORD AND THE FIRST SEA LORD

Prime Minister to First Lord and First Sea Lord 25 Aug 41 It should be possible in the near future to place a deterrent squadron in the Indian Ocean Such a force should consist of the smallest number of the best ships. We have only to remember all the preoccupations which are caused us by the Tirpitz—the only capital ship left to Germany against our fifteen or sixteen battleships and battle-cruisers to see what an effect would be produced upon the Japanese Admiralty by the presence of a small but very powerful and fast force in Eastern waters It may be taken as virtually certain that Tirpitz will not sally forth from the Baltic while the Russian Fleet is in being, as she is the only unit which prevents Russian superiority there. Nevertheless, in making dispositions which take some time to alter we must provide for two KGVs and one Nelson with the C-in-C This allows for accidents, refits, and leave One aircraft-carrier, preferably sone of the unarmoured, should also be provided for the broad waters

2 The most economical disposition would be to send Duke of York, as soon as she is clear of constructional defects, via Trinidad and Simonstown to the East. She could be joined by Repulse or Renown and one aircraft-carrier of high speed. This powerful force might show itself in the triangle Aden-Singapore-Simonstown. It would exert a paralysing effect upon Japanese naval action. The Duke of York could work up on her long, safe voyage to the East, leaving the C.-in-C.

Home Fleet with two KGVs, which are thoroughly efficient. It would be, in my opinion, a more thrifty and fruitful use of our resources than to send Prince of Wales from regions where she might,

though it is unlikely, meet Tirpitz

3 I do not like the idea of sending at this stage the old "R" class battleships to the East. The manning problem is greatly increased by maintaining numerically large fleets in iemote waters, owing to the greater number of men in transit. Besides this, the old ships are easy prey to the modern Japanese vessels, and can neither fight nor run. They might, however, be useful for convoy should we reach that stage, which is not yet by any means certain, or even, in my opinion, probable

4 I am however in principle in favour of placing a formidable, fast, high-class squadron in the aforesaid triangle by the end of October, and telling both the Americans and Australians that we will do so It seems probable that the American negotiations with Japan will linger on for some time. The Americans talk now of ninety days, and the Japanese may find it convenient to wait and see how things go in Russia.

5 It would always be an advantage, if possible, to change the armoured [aircraft-carrier] Victorious for the Ark Royal for service in the narrow waters of the Mediterranean, and I suppose you will wish to strengthen Force H with one of the Nelsons as well as either Repulse

or Renoum

6 Naturally, C-in-C Home Fleet will require a first call upon an aircraft-carrier, preferably Ark Royal Furious will have to do some more work on ferrying aircraft to Takoradi Victorious would be well placed in Force H. This would leave Illustrious, Formidable, and Indomitable, as they come to hand, together with Eagle and Aigus, for the needs of the Eastein triangle and the Mediterranean. You ought to be very well off by the end of the year

Pray let me have your thoughts on the above

First Sea Lord to Prime Minister 28 Aug 41
Please see attached proposed disposition of capital ships and aircraft-

I This question had been under review before receipt of your

minute, and was again reviewed after its receipt

The chief difference between your suggestion and the proposed disposition is in the allocation of King George V class and Nelson class. I fully appreciate the attractiveness of sending one of the King George V class to the Indian Ocean when fully worked up, but after considering this most carefully I cannot recommend it, for the reasons given in this memorandum.

3. I do not consider that any of the King George V class should be sent abroad until fully worked up, for the following reasons

#### APPENDIX K

(a) A ship cannot work up unless she has all the necessary targets at her disposal.

(b) If a ship does not get an uninterrupted working-up period

she never really recovers from it

(c) With a combination of the intricate machinery and electrical installations, and 60 per cent. of the crew being men under twenty-one who have never been to sea before, it is inevitable that mishandling of material should occur at first. It is therefore essential that the working up should be carried out in proximity to a dockyard or contractor's yard

4 It is unfortunate that we cannot achieve the redistribution of capital ships earlier, but the number of ships under repair or refitting prevents this As long as both Bismarck and Tirpitz were

affoat we had to postpone refits

5 The situation as regards aircraft-carriers is also unsatisfactory, but this is due to action damage to *Illustrious* and *Formidable* and essential refits to *Furious* and *Ark Royal*.

### CAPITAL SHIP AND AIRCRAFT-CARRIER DISPOSITIONS

Note — The date in brackets against the name of a ship is the date on which she will arrive on her station.

#### FINAL DISPOSITIONS TO BE WORKED TO

|                    | Capital Ships                   | Aircraft-carriers               |
|--------------------|---------------------------------|---------------------------------|
| Home Fleet         | Two King George V (Sept 3)      | Victorious (now)                |
|                    | Malaya (Sept 21)                | Furious (Feb )                  |
| Force H            | One King George V  (carly Dec?) | Indomitable (Nov.)              |
| Mediterranean      | Queen Elizabeth (now)           | Illustrious (Jan )              |
|                    | Valiant (now)                   | Formidable (Feb )               |
|                    | Barham (now)                    |                                 |
|                    | Warspite (late Jan )            |                                 |
| Trincomalee        | Nelson (end Nov)                | Hermes (now)                    |
|                    | Rodney (end Jan )               | Ark Royal (Apr '42)             |
|                    | Renown (mid-Jan )               | Indomitable (in emer-<br>gency) |
| Indian Ocean Troop | Revenge (mid-Sept)              | <i>5 77</i>                     |
| Convoy Escort      | Royal Sovereign (mid-<br>Nov?)  |                                 |
|                    | Ramillies (mid-Dec )            |                                 |
|                    | Resolution (carly Jan )         |                                 |
| Spare Ship         | Repulse                         |                                 |
| 1                  | 770                             |                                 |

#### APPENDIX K

## REASONS FOR THE PROPOSED "FINAL DISPOSITIONS"

Home Fleet and Force H (r) The Atlantic is the vital area, as it is in that ocean and that alone that we can lose the war at sea

(2) As long as Tirpitz is in being it is essential to have two ships of King George V class available to work in company

(3) A combination of a King George V and a Nelson is not a satisfactory one, owing to their difference in

speed

(4) In order to have two King George V's available at all times it is necessary to have three of that class in home waters, to allow for one being damaged by torpedo, bomb, or mine or refitting.

(5) It is considered that the third ship can be in Force H at Gibraltar and that all three ships need not

be at Scapa

(6) If the Tirpitz did manage to break out she could paralyse our North Atlautic trade to such an extent that it would be essential to bring her to action at the earliest possible moment, and we could not afford to have one of the King George V's absent from the scene of operations

(7) The capital ship in Force H should not only be able to resist air attack, but should also be fast. This combination is only obtained in the King George V.

class

(8) Malaya is allocated to Home Fleet, as it is necessary to have one capital ship in the Atlantic in addition to King George V class for the following duties

(a) Escorting important troop convoys

(b) Giving cover to convoys east of 26° W in emergency.

(c) To back up Force H for operations in Western Mediterranean when necessary

(9) (a) Ark Royal is not shown in the dispositions, as she has to refit on relief by Indomitable and will not be available until April '42

(b) Eagle is not shown in the dispositions, as she
is being kept available in home waters for
"Pilgrim" [occupation of the Canary Islands]

Trincomalee

(10) It is proposed to send Nelson, Rodney, and Renown to Trincomalee or Singapore, for the following reasons:

- (a) Nelson and Rodney will eventually form part of the Eastern Fleet, when it is possible to form one. which is dependent on the availability of cruisers and particularly of destroyers.
- (b) Nelson and Rodney will give the best backing to the "R" class when the Eastern Fleet is formed. and the combination will form the most homogeneous fleet we can provide as regaids speed
- (c) Until we can form a fleet in the Far East which is capable of meeting a Japanese force of the strength they are likely to send south it is necessary to deter Japanese action in the Indian Ocean

By sending capital slups to escort our convoys in the Indian Ocean we hope to deter the Japanese from sending any of their battleships to this area

By sending a battle-cruiser and aircraft-carrier to the Indian Ocean we hope to deter the Japanese from sending their 8-inch-gun cruisers to attack our trade in this area.

It is not considered that the substitution of one of the King George V class for one of the above would give sufficient added security to justify the disadvantages which her absence from the home area would involve, as her speed is inadequate to run down a Japanese 8-inch-gun cruiser

- (d) Depending on the situation at the time, and if war with Japan has not broken out, it may be found desirable to send Nelson, Rodney, Renown, and the aircraft-carrier to Singapore in the first instance, as they would thus form a greater deterrent war eventuated they would have to retire to Trincomalec
- (e) Owing to the necessity to refit Ark Royal it will not be possible to send a large carrier to join this force until April '42, unless we take Indomitable away from Force H

Indian Ocean Escorts

It is proposed to send the four "R" class to the Indian Troop Convoy Ocean now, for the following reasons

- (a) They are no longer required for North Atlantic convoy escort
- (b) They will eventually form part of the Eastern Fleet, and until this time it is desirable to keep

## APPENDIX K

them in waters where they will be free from air and U-boat attack.

(c) By employing them for escorting troop convoys

they will relieve the cruiser situation.

(d) Their presence in the Indian Ocean, together with Nelson, Rodney, and Renown, will go some way to meet the wishes of Australia and New Zealand for the Far East to be reinforced

## INTPRIM DISPOSITIONS TO STRENGTHEN INDIAN OCEAN

It is necessary to retain the Repulse in home waters until King George V is again available on September 3. Repulse will escort W.S II, and subsequently arrive at Trincomalee on October 7

Prime Minister to First Sea Lord

29 Aug 41

It is surely a faulty disposition to create in the Indian Ocean a flect considerable in numbers, costly in maintenance and man-power, but consisting entirely of slow, obsolescent, or unmodernised ships which can neither fight a fleet action with the main Japanese force nor act as a deterrent upon his modern fast, heavy ships, if used singly or in pairs as raiders. Such dispositions might be forced upon us by circumstances, but they are inherently unsound in themselves

2 The use of the 4 R s for convoy work is good as against enemy 8-inch-gun cruisers. But if the general arrangements are such that the enemy is not afraid to detach an individual fast, modern battleship for raiding purposes all these old ships and the convoys they guard are easy prey. The R s, in their present state, would be floating coffins. In order to justify the use of the R s for convoy work in the Indian and Pacific Oceans it would be necessary to have one or two fast heavy units, which would prevent the enemy from detaching individual heavy raiders without fear of punishment. We should inculcate the true principles of naval strategy, one of which is certainly to cope with a superior force by using a small number of the best fast ships.

3 The potency of the dispositions I ventured to suggest in my minute is illustrated by the Admiralty's own extraordinary concern about the Tirpitz Tirpitz is doing to us exactly what a K.G.V. in the Indian Ocean would do to the Japanese Navy It exercises a vague general fear and menaces all points at once It appears, and disappears, causing immediate reactions and perturbations on the other side

4 The fact that the Admiralty consider that three KG V.s must be used to contain Tirpitz is a serious reflection upon the design of our latest ships, which, through being under-gunned and weakened by hanguis in the middle of their citadels, are evidently judged unfit to

fight their opposite number in a single-ship action. But, after making allowances for this, I cannot feel convinced that the proposal to retain three K.G.Vs in the Atlantic is sound, having regard (a) to the American dispositions which may now be counted upon, and (b) to the proved power of aircraft-carriers to slow down a ship like Tirpitz if she were loose. It also seems unlikely that Tirpitz will be withdrawn from the Baltic while the Russian Fleet remains in being, and, further, the fate of Bismarck and all her supply ships must surely be present in the German mind. How foolish they would be to send her out, when by staying where she is she contains the three strongest and newest battleships we have, and rules the Baltic as well! I feel therefore that an excessive provision is being made in the Atlantic, and one which is certainly incomparably more lavish than anything we have been able to indulge in so far in this war.

5 The best use that could be made of the R s would be even at this late date to have them rearmoured against aircraft attack and used as a slow-moving squadron, which could regain for us the power to move through the Mediterranean and defend Malta indefinitely.

6 I must add that I cannot feel that Japan will face the combination now forming against her of the United States, Great Britain, and Russia, while already preoccupied in China It is very likely she will negotiate with the United States for at least three months without making any further aggressive move or joining the Axis actively. Nothing would increase her hesitation more than the appearance of the force I mentioned, and above all a KG.V. This might indeed be a decisive deterrent.

## APPENDIX L

## TANKS FOR THE MIDDLE EAST

Prime Minister to Secretary of State for War and Minister of Supply

11 July 41

Out of 1,441 Infantry and crusser tank, with the troops [at home] 391 are "unfit for action". This is far too high, and I am sure it is capable of reduction if something like the arrangements for repair introduced into the Air Force last year could be provided

Will you please consult together and make me a proposal for the more prompt handling of these repairs. The number of tanks out of action ought never to exceed 10 per cent of those in this country. More especially is this the case in view of the period of maximum preparedness which is now approaching

Prime Minister to Secretary of State for War

19 Aug 41

Your minute of July 15, 1941 [about repair of tanks at home], states a number of requirements which, if they could all be met, would make life too easy. Everything practicable should be done to meet the various desiderata, but the main contribution must be a genuine effort and good management. I am shocked to see that a month later we still have 25 per cent of Infantry tanks out of order, and that out of 400 cruiser tanks no fewer than 157 are unfit for action I have no doubt there can be made plenty of explanations for such a failure, but failure it remains none the less

Pray do not let it be thought that you are satisfied with such a result If you simply take up the attitude of defending it there will be no hope

of improvement

Prime Minister to Secretary of State for Air

27 Aug 41

Your minute of August 6 shows that the most promising weapon at present in sight for aerial attack on tanks is the Jefferis bomb, and

I am pleased to note that you have ordered 50,000 of these

As I understand these weapons go into the ordinary light bomb container, it should be possible to put them into use at once, and I should favour postponing further manufacture of the sticky bomb and a part of the bombard ammunition in order to obtain immediately an adequate supply of these aerial bombs. It seems likely that when the tactics have been worked out and the pilots have had some practice considerable improvement in the chance of hitting, as shown in the first trials, may be expected. We should get immediately a large supply of dummy bombs and give a selected group of pilots plenty of practice against ground targets. If the expected improvement is achieved we should investigate at once the possibility of sending through the Mediterranean at an early date in a warship an adequate supply with the pilots who have practised with the dummy bombs.

It might also be well to consider whether the Russians might be able to improvise these bombs rapidly, in which case they should be

given full details

\* \* \* \* \* \*

(Action this Day)
Prime Minister to Minister of Supply and CIGS 27 Aug 41

We ought to try sometimes to look ahead The Germans turned up in Libya with 6-pounder guns in their tanks, yet I suppose it would have been reasonable for us to have imagined they would do something to break up the ordinary "I" tank. This had baffled the Itahans at Bardia, etc. The Germans had specimens of it in their possession taken at Dunkirk, also some cruiser tanks, so it was not difficult for them to prepare weapons which would defeat our tanks

## APPENDIX L

- 2. I now try to look ahead for our side, to have Alpine troops formed for Norway, and to have the power to spring a surprise in tanks on the enemy in Libya. Instantly everyone tries to make difficulties, so that in three or four months, should it be desired to take action, we shall be confronted with the usual helpless negation. We ought to have it in our power to place at least 100 A. 22's in a desert-worthy condition in the field by January or February at latest. To do this it is necessary to get over all the minor modifications for desert warfare Why should this not go forward at the same time as the final improvements are being made in the tank itself? The people in Egypt will never believe the tank is desert-worthy unless they have it tried on the spot. The various improvements made at home can be flown out or explained by telegram Instead of this, we are to wait till the beginning of 1942, and then send two tanks out, which are to be then sniffed at and experimented with, and a whole new lot of faults found by the Nile authorities
- 3 What I have asked is this that two of these tanks shall go out now with a certain number of skilled men and spare parts, that these men shall be kept in close touch with the improvements made here, and shall at the same time deal with the "desert-worthy" aspect, imparting to us the result of any improvements they make I would have been willing to have allowed the double process to go on at home, but if it is going to take till 1942 anyhow at home, and then have to be gone over all again in the Middle East, I feel that my original thought was right

Pray let me have some help in this matter

Where is it supposed these tanks will fight in the spring of 1942, except in the Middle East?

These two Churchill tanks were shipped to the Middle East at the end of September, and arrived on December 12. General Auchinleck had promised to give his personal attention to their tests in the desert, and I was therefore shocked to receive the following telegrain from him on the 25th

"These vehicles were stowed on forward well-deck, unshected and unlocked. In consequence vehicles were exposed to sca-water, and when received both tanks had water on floors and showed rust markings nine inches up the walls."

"Considerable damage to electrical and wireless gear, requiring fourteen days' expert attention before tanks can run. Method of dispatch and stowage most unsatisfactory. All American tanks are dispatched with all crevices and doors pasted up with masking tape . . "

## APPENDIX L

I immediately asked Mr Justice Singleton to conduct an inquiry He reported on March 10, 1942. "The case discloses mismanagement to an amazing degree." The tanks had been loaded on the open deck, ungreased, their doors unlocked, and not even covered with water-proof sheets "The damage," he said, "was caused through their not having been prepared for shipment in the normal way. Much of it could and would have been avoided if the two fitters had accompanied the tanks." This of course was precisely what Lord Beaverbrook and I had asked should be done and what the War Office had ordered Mi Justice Singleton said that it was difficult to tell who was responsible, as the General concerned in the War Office was dead. He continued as follows

"The arrangement which had been made was altered under somewhat strange circumstances which it is not easy to follow. The managing director of the firm of manufacturers and the Major-General met at a luncheon party at the Savoy on September 15, when the former asked if it was not possible for his fitters to be sent to the Middle East by air, as they could be usefully employed here and could keep in touch with improvements. The General then instructed the Ministry of Supply to arrange for the two men to be flown to the Middle East rather than that they should waste several weeks on board ship."

No one from the firm of manufacturers even saw the tanks loaded on board. The Ordnince Officer at the port did not go inside either of them and knew nothing of their condition. His staff sergeant entered one and noticed that it was not properly "greased up", but reported the fact to nobody.

By the time however that the investigation had been finished the war had swept on, and on June 1, 1942, I minuted to General Ismay

"Alas, I am too busy to chase these rabbits as they deserve, and no one clse will do anything."

(Action this Day)

Prime Minister to General Ismay

Please check and point this up for me in time for to-night's meeting I Clarification is needed about the telegrams from Middle East General Auchinleck says that the 150 tanks which he had expected in September only arrived October 4th to 14th Actually they arrived on October 2, or only one day later than he had expected. Twelve days were taken in unloading the whole of these tanks. What happened to them then? We are told they had to be stripped down to be made desert-worthy and have their front axles strengthened. We now

#### APPENDIX L

know this was not necessary so far as the axles were concerned, and that the desert-worthy additions could all have been executed at the unit in a day or two. We do not know however what Middle East has done. Have they in fact already pulled these tanks to pieces and begun splicing the axles? If so the three weeks' delay of which they speak may be unavoidable, even though the process was unnecessary. How was it no one went out with the tanks to tell the people out there about them?

- 2 By other telegrams and discussions it is known that an armoured brigade or division requires to be a month with its new vehicles to fire the guns and perform combined exercises. How far does this apply to the 22nd Aimoured Brigade, who were fully trained with these very tanks when they went out? I suppose they would say they must have some additional desert practice, which seems reasonable
- 3 But if these 150 tanks only cleared arrival on October 14 and then there is a three-weeks period to make them desert-worthy, this would carry us to November 7 What then happens to the necessary month, or perhaps somewhat shorter period, for them to be practised in the hands of troops and work in the desert with their commanders? The story we have been told, as now pieced together, does not hold water, even on the revised programme. We have got to find out (1) what has been or is being done mechanically and what is the existing state of each of the 150 tanks; (2) what changes will be made in their treatment as a result of the War Office telegram about the axles, and will any shortening up of the date be possible, (3) what about the desert training pariod of the 22nd Armoured Brigade?

Have this all cleaned up and the necessary telegram drafted for my

consideration to-night

Prime Minister to General Ismay

24 Nov 41

Let me have your full report about the remainder of the 1st Armoured Division. When did they arrive, and what is the condition of their tanks? How far are they desert-worthy? What about their axles? How far are they trained? Can anything be done to speed them up or to speed up their unloading?

\* \* \* \* \*

I print these details to show how difficult it is to get things done even with much power, realised need, and willing helpers

## APPENDIX M

## APPENDIX M

# NAVAL DIRECTIVES AND MINUTES MARCH-DECEMBER 1941

## NAVAL BUILDING PROGRAMMES

The gun-power of our new battleships had always interested me deeply. In Volume I, I have summarised my discussions with the Admiralty in 1937, when the design of the King George V class was under review.\* These five ships were in my view gravely undergunned. The four ships of the Lion class which were to follow them were intended to mount the 16-inch gun, and the first two had been actually laid down before the outbreak of war, but all work on them had been stopped in October 1939. I reverted to this subject in my directive of March 27, 1941, where I stated my general views on our future naval building programme, in the light of the many other pressing commitments which clamoured for attention.

# NAVAL PROGRAMME, 1941 DIRECTIVE BY THE MINISTER OF DEFENCE

27 Mar 41

Naval programmes have been continuous throughout the war, all slips being filled as vacated. It is nevertheless convenient at this time of year that the Admiralty should present their present needs of new construction in a general list and obtain Cabinet sanction for their

policy.

2 No one can doubt that the construction of small craft for anti-U-boat warfare, for minesweeping, for combating the E-boats, and for assault landings should proceed to the full extent of our resources. It is essential however that simplicity of design, speed of construction, and the largest possible numbers should govern the whole of this small craft programme. The construction of destroyers should in no case exceed fifteen months. I understand from the Controller that, apart from enemy action or strikes, he can guarantee this in respect of the forty now projected.

3. We cannot at the present time contemplate any construction of heavy ships that cannot be completed in 1942. This rules out further progress upon the Lion and Temeraire and the laying down of Conqueror and Thunderer It also makes it impossible to begin the four heavy cruisers contemplated in the programme of 1940 Work will there-

<sup>\*</sup> See Volume I, Chapter IX

fore be limited to completing the three remaining battleships of the King George V class and to building the three light cruisers of the 1941 programme, all of which, it is understood, can be completed before the end of 1942. An additional monitor, for which the guns are already available, can also be completed before the end of 1942

- 4 The need of concentrating labour on merchant repairs and on repairs to the fighting fleet makes it impossible to begin any new aircraft-carriers after *Victorious*, *Indomitable*, and *Indefatigable* have been completed. Such new aircraft-carriers could not in any case be ready until 1944.
- 5 The requirements of the Navy in armour-plate can on the above basis be adjusted to meet the needs of the Army tank programme, and can be limited to 16,500 tons in 1941 and 25,000 tons in 1942. No new armour-plate plant need be erected at present.
- 6 The one exception to the above principles is the Vanguard, which can complete in 1943 and is the only capital ship we can by any means obtain before 1945. As we have the guns and turiets for the Vanguard, it is eminently desirable that this vessel should be pressed forward, provided that this can be done within the limits of the armour-plate provision in paragraph 5.
- 7 Nothing in the above should hinder the work on the drawings and designs of any of the postponed vessels, including especially the new aircraft-carrier
- 8 In view of the need to concentrate on repairs, the output of new merchant ships may be reduced from 1,250,000 tons, which is the present target, to 1,100,000 tons in 1942, and we should not at the present time proceed with any merchant vessels which cannot be completed by the end of 1941. It is to the United States building that we must look for relief in 1942.
- 9 The whole of our heavy ship construction will be reviewed on September 1, 1941, in the light of
  - (a) the Battle of the Atlantic, and
  - (b) the relation of the United States to the war

Prime Minister to First Lord, First Sea Lord, and Controller 16 Aug 41 I am greatly interested in the proposed design of the Lion and Temerane Let me know the exact point which has been reached in the general construction and in the drawings

- 2 It is most important not to reproduce in these two ships the faults which are apparent in the five K.G.V.s, namely
  - (a) The retrogression to the 14-inch gun from our well-tried 15-inch type, and

(b) The marring of the structure by the provision of the aerodrome amidships Merely for the sake of having a couple of low-quality aircraft, the whole principle of the citadel so well exemplified in the Nelson and the Rodney has been cast aside

The space of about forty feet amidships entails a degree of heavy armouring in this vital area, which is improvident having regard to the needs for carrying a lesser protection as far forward and aft as possible. It may well be that 1,000 or 1,500 tons of armour are misplaced through the opening of this hiatus in the citadel of the ship.

3. I understand, and hope, that the Lion and Temeraire will carry nine 16-inch guns in three triple turrets, with six guns firing directly ahead, and the rear turret on the most forward bearing possible. These three turrets should be grouped together as closely as possible to form the central citadel, comprising funnels and director tower, and covering with the turret and heaviest armour the magazines and vital machinery spaces. If this were done it should be possible to give a 6-inch turtle [underwater] deck carried very far forward, if possible to the bow, thus protecting the speed of the ship from bow damage.

4. Although it looked very progressive to be able to fly two aeroplanes off a battleship, the price paid in the rest of the design was altogether excessive. It might however be possible in a ship with a citadel outlined above to arrange to flip off one or two aircraft from the quarterdeck, but no serious sacrifice of design must be made for this. A capital ship of the consequence of the Lion or Temeraire must depend upon having an aircraft-carrier working with her, or at the very least a cruiser capable of flying off an aircraft. She should on no account be spoiled for the sake of carrying aircraft

beyond what is at present approved Before however any final decision is taken upon the design there ought to be a confesence of a number of sea officers, including the late and present Commanders-in-Clinef, who have served in the King George V or Prince of Wales. The successful design of the Arethusa was evolved from a conference of admirals convened, at my direction, in the winter of 1911.

Pray let me have your views.

The First Sea Lord confirmed that these ships would mount nine 16-inch guns in three triple turrets and that the Commanders-in-Chief had been consulted about the design. He maintained that the aircraft hangars in the King George V class did not weaken the citadel. This had to include protection for the machinery spaces, which were enormously increased in these ships as compared with the Nelsons.

The resumption of work on the Lion and Temeraire was closely considered, but we decided against it for the following reasons:

## APPENDIX M

- (a) The building of turrets would interfere with the production of A A equipment and coast defence gun mountings
- (b) The requirements for armour would conflict with tank production.
- (c) The demands which these ships would make on our shipyard labour force.

What finally clinched the matter was the fact that there could be no reasonable chance of completing these vessels during the war. They were therefore cancelled.

I was anxious to know how our King George V class compared with contemporary American ships.

Prime Minister to First Sea Lord

I Sept 41

I cannot help grieving that we have not got the three triple 16-inch turrets for the five K.G.V.s The matter is academic and irretrievable. None the less, as my thought has dwelt on these matters for the last thirty years, I should like to know what is known at the Admiralty about the American ships contemporary with K.G.V. Admiral Stark told me that they were three triple turrets of 16-inch. When I asked him whether he had not overrun the 35,000-ton limit he said, "No, but they had given up the 500 tons they used to keep to veer and haul upon."

Please let me have the legend of these American ships as far as you

have knowledge of them at the Admiralty.

Let me also know what they do about the hangar, and any advantages in strength and structure possessed by KGV, to compensate for the loss of gun-power

The First Sea Lord replied that the equivalent American ship (U S S. North Carolina) had a heavier main armament, but somewhat lighter secondary armament. The British ship had heavier protection and slightly higher speed. He preferred the British method of carrying two aircraft in hangars amidships as compared with the American practice of providing two exposed catapults on the quarterdeck. The discussion continued with my minute of September 22 and his reply dated October 2

Prime Minister to First Sea Lord, Controller, and DNC. 22 Sept 41
COMPARISON BETWEEN USS "NORTH CAROLINA" AND HMS
"KING GEORGE V"

Naturally, being all for stiff ships, I am very glad we have 1,370 tons more armour, and another 790 tons of weight in the hull. The deeper armour belt and hard nose are good. It is very satisfactory to be able to combine this with superior speed, as has been done. I am still not

convinced however that the lengthening of the citadel area caused by interpolating the aerodrome amidships instead of aft has not used up a lot of this fine armour without advantage to the "citadel" principle, on which fighting and flotation alike depend I should like to go further into this on other papers

2. Our ship is longer, narrower, and deeper than the American

I presume this makes for speed.

3 We have exceeded the Treaty limit by 1,750 tons, while the Americans with the 16-inch guns are either within it or only 200 tons over it. Can this be true?

4 There is as much to be said for twenty 5-inch guns for A A and secondary armament as for sixteen 5 25-inch guns, in fact, some people would prefer more numerous gun positions to deal with multiplied

air attacks

- 5 It is when we come to compare nine 16-inch guns with ten 14-inch guns that sorrow rises in the heart, or ought to Nine 16-inch at 2,700 pounds per round equals 24,300 pounds Ten 14-inch guns at 1,500 pounds equals 15,000 pounds Difference, 8,400 on the broadside
- 6 It is interesting to note that the Germans in the Bismarck chose four turrets of two 15-inch, whereas we went to the other extreme of three turrets, of which two were four-gun, but a smaller gun The Americans, coming in between the two, may have hit the happy medium, and have as well the biggest punch

First Sea I ord to Prime Minister 2 Oct 41 I attach some further remarks referring paragraph by paragraph to the points you have raised.

## USS "NORTH CAROLINA" AND HMS "KING GEORGE V"

The King George V arrangement of space anudships for aircraft has been repeated in Lion and Temeraire This space, 55 ft long, gives the impression of a hiatus, but actually involves no hiatus in the citadel below the armoured deck. The space from the fore end of "A" turret to the after end of "Y" turret is completely occupied by magazines, shell-rooms, and propelling machinery, which must be protected by heavy armour Were the aircraft removed no armour would become available to be fitted elsewhere

2 This is confirmed

3 In King George V we set out to build a ship of 35,000 tons standard displacement, but additions were made during construction and some of the estimated weights (principally armament) were not realised Hence the ship came out 1,750 tons heavy

The American ship may also have come out heavy But if we were

## APPENDIX N

prepared to accept the hull scantling reported and the protection of the American ship, we estimate we could build her to a standard displacement of 35,200 tons.

4. The number of 5-inch guns mounted in the American ship are

got in at the expense of close-range A A weapons

5 I agree generally The King George V was designed for twelve 14-inch guns, but two guns were given up for increased armour protection. It is probable that the rate of fire of the 14-inch is slightly

6 Bismarck's standard displacement is estimated to be 41.150 tons. It would appear that as soon as the Americans could design a ship they really liked with 16-inch guns they went to 45,000 tons in the lowar

class

## APPENDIX N

## MINISTERIAL APPOINTMENTS FOR THE YEAR 1941

(Members of the War Cabinet are shown in italics)

PRIME MINISTER AND FIRST LORD OF THE TREASURY, MINISTER & Mr Winston S Churchill OF DITINCE

ADMIRALTY, FIRST LORD OF THE AGRICUITURL AND FISHLRIES. MINISTER OF

AIR. SECRETARY OF STATE FOR AIRCRAFT PRODUCTION, MINISTER OF

BURMA, SICRETARY OF STATE FOR COLONIES, SECRETARY OF STATE IOR THE

DOMINION AFFAIRS, SECRETARY OF STATE TOR ECONOMIC WARFARE, MINISTER

MR A V ALLXANDER MR R S HUDSON

SIR ARCHIBALD SINCLAIR

(a) Lord Beaverbrook

(b) LILUT-COIONEL | T C MOORE-BRABAZON (appointed May 1)

MR L S AMERY

(a) LORD LLOYD (till Feb 4)

(b) LORD MOYNL (appointed Feb. 8)

VISCOUNT CRANBORNL

Mr Hugh Dairon

## APPENDIX N

EDUCATION, PRESIDENT OF THE BOARD OF

Exchequer, Chancellor of the Food, Minister of Foreign Affairs, Secretary of State for Health, Minister of

HOME DEPARTMENT, SECRETARY OF STATE FOR THE HOME SECURITY, MINISTER OF INDIA, SECRETARY OF STATE FOR INFORMATION, MINISTER OF

LABOUR AND NATIONAL SERVICE,
MINISTER OF
LANCASTER, CHANCELLOR OF THE
DUCHY OF

LAW OFFICERS
ATTORNLY-GENERAL
LORD ADVOCATE

SOLICITOR-GENERAL SOLICITOR-GENERAL FOR SCOTLAND

LORD CHANCELLOR
LORD PRESIDENT OF THE COUNCIL
LORD PRIVY SLAL
MIDDLE EAST, MINISTER OF STATE
RESIDENT IN THE
MINISTER OF STATE

Minister without Portfolio Paymaster-General (a) Mr. HERWALD RAMSBOTHAM

(b) MR R A, BUTLER
(appointed July 20)
Sir H Kingsley Wood
LORD WOOLTON
Mr. Anthony Eden

(a) Mr MALCOLM J MAC-

(b) Mr A E Brown (appointed Feb 8)

MR HERBERT S MORRISON

Mr. L S Amery

(a) MR A DUFF COOPER

(b) Mr Brendan Bracken (appointed July 20)

Mr Ernest Bevin

(a) LORD HANKEY

(b) MR A DUFF COOPER (appointed July 20)

SIR DONALD SOMERVELL

(a) MR T M. COOPER

(b) Mr J S C Reid (appointed June 6)

SIR WILLIAM JOWITT
(a) MR | S C REID

(b) SIR DAVID KING MURRAY
(appointed June 6)

VISCOUNT SIMON
Sir John Anderson
Mr Clement R Attlee
Mr Oliver Lyttelton
(appointed July 1)

Lord Beaverbrook

(May 1-June 29) Mr Arthur Greenwood

(a) VISCOUNT CRANBORNE

(b) LORD HANKEY
(appointed July 20)

#### APPENDIX N

Pensions, Minister of Postmaster-General Scotland, Secretary of State For

SHIPPING, MINISTER OF\*

SUPPLY, MINISTER OF

TRADE, PRESIDENT OF THE BOARD OF

TRANSPORT, MINISTER OF\*

WAR, SECRETARY OF STATE FOR WAR TRANSPORT, MINISTER OF

WORKS AND BUILDINGS, MINISTER OF

SIR WALTER WOMERSLEY MR. W S MORRISON

(a) MR A. E BROWN

(b) Mr Thomas Johnston (appointed February 8)

Mr R H Cross (resigned May 1)

(a) SIR ANDREW DUNCAN

(b) Lord Beaverbrook

(appointed June 29)
(a) MR OLIVER LYTTELTON

(b) Sir Andrew Duncan (appointed June 29)

LIEUT - COLONEL J T. C. MOORE-BRABAZON

(resigned May 1)

Captain H D R Margesson Lord Leathers

(appointed May 1)

LORD REITH

<sup>\*</sup> The office of Minister of Transport was united with that of the Minister of Shipping, and a new office of Minister of War Transport created May 1, 1941

Abdul-Ilha, Emir of Iraq, 225, 234 Abe, General, 519 Abyssinia, Haile Selassie returns to, 5, 19, 73; campaign in, 6, 15, 19, 60, 69, 73, 77-9, Italian defeat in (1896), 71, Italian capture of, 71-2, Patriot movement in. 72-3, 80, 82; fate of Italian population in. 78, 82, mentioned, 708 "Acrobat", Operation, 487, 489-90, 575, 621, 634 Actwon nets, 671 Addis Ababa, 78, 80-1, 179 Aden, troops from, take Berbera, 77, troops in, 699-700 Admiralty, minutes to, 100, and repair of ships, 101, moves Western Approaches centre to Liverpool, 103, and protection of convoys, 108, requirements for armour-plate, 113, 747, 780, puts pressure on C-in-C Mediterranean, 212-15, programme of naval construction, 746-7 n Adowa, battle of, 71 Adriatic Sea, 197 Ægean Sea, operations in, 255-61 Aerial mines, 662, fast (F.A.M.), for Malta, 187, in defence of factories and estuaries, Aerial-nune throwers, 52, 638
Aerodromes, defence of, 378, 659, 689, 692-3, 763, defence battalions for, 452-453, lacking in N Italy, 487, in SE England, 661-2, in Syria, importance of, 684-5, camouflaging defences of, 716, delayed-action mines on, 731, rockets for defence of, 753 n, Turkish, 761, on battleships, 781, 783 Afghanistan, 742, 744 Africa, campaigns in, 5, Hitler discusses action in, 12-13, Italian empire in, 70-72, occupation of whole coastline of, 573, 578 See also East African Campaiga, North Africa, South Africa, West Africa African Colonial Divisions, 654, 656, 702-African troops, in East African campaign, 77, 82, 654, strength of, 453 Afrika Korps, Itahan troops in, 362, sup-

plies for, 363, Panzer, 369, 479, 501, in

Operation "Crusader", 498, 502, capture

of headquarters of, 500

Abadan, oil refineries, 288, capture of,

Abdiel, H.M S , 263, 266, 371

427-8

Agedabia, 175, 177, 180, 191, 567 Agheila, gateway to Cyrenaica, 173, 177. German threat to, 175, 178, attack on, 179-80, 190, vulnerable road to, 186-7, German withdrawal to, 567 Agriculture, Munstry of, 113 Ahwaz oilfields, 425, 428
"Aid to Russia" Fund, 421 Air attacks, on Atlantic shipping, 99, 107, 127, 130, 725, on U-boats, 110, 460-2. on Army in Battle of Crete, 257-4, 261-262, on Fleet in Battle of Crete, 256-8, 264-6, on Germany, 340, 346, 404, 408, 451-2, 577, 580-2, 584, 673, 718-19, 721-2, 767, place of, in battle, 443-4, on Great Britain, lessening chance of, 447-8, over-painted picture of destruction wrought by, 451-2, merchant ships lost through, 464, vulnerability of Whitehall to, 651 See also Air raids Air Coastal Command, 99 Air Defence of Great Britain (A D G B), 447-9, 704 Air Force-see Flect Air Arm, Royal Air Force, also French, German Air Force, Air Intelligence Branch, and strength of German Air Force, 695 Air Ministry, Intelligence of, on German air strength, 35-7, unhelpful to Army and Navy, 728 Airborne troops, German, 240-1, 248-9,

252-5, use in invasion, 693-4 See also Gliders, Parachute Troops

Aircraft, launched from ships, 107, 121, 127, 129, reinforcements of, to Middle East, 216, 449, 613-14, troop-carrying, in Crete, 254, seaborne, in Far North, 344, sent to Russia, 345, 403-5, 408, 410-11, 417-18, 553, searchlight, 460, U-boat surrenders to, 460-1; needed for Malaya, 553, German, in Japanese Air Force, 579, priority to fighter and torpedo-carrying, 584, Allied production of, 610-11, transports for, 665, rate of production of new, 717-19, wastage of, in relation to production, 748, carried by battleships, 781, 783 See also Bomber aircraft, Fighter aircraft, Focke-Wulf, Hurricanes, etc

Aircraft Production, Ministry of, on German air strength, 35, static programme of, 717-19 Aircraft-carriers, improvised, for Pacific,

573, 580, 584, high-speed aircraft for,

643, 681, distribution of, 751, 769-72, for Indian Ocean, 768, 770, 772, construction of new, 780

Airfield-see Acrodrome

Air-raid shelters, unsafe, 638, production of, 742

Air raids, on British harbours and approaches, 37-9, 108, defences against, 38, 40-2, casualties in Britain, 42, damage to buildings, first-aid repairs, 638, causing falling off in munitions production, 644, and public morale, 658-9 See also Air attacks

Ajav, H M S, 205; in Battle of Crete, 255, 264

Alamein, 444, 652

Albania, Greek Army in, 9, 12, 17, 24, 58, 88, 195, Italian defeat in, 13, question of withdrawal of Greek troops from, 68, 89-90, 96, 196, 199, possibilities of yugoslav attack in, 96-7, 146, 152, 154, Greeks surrender in, 202, post-war, 558 Albemarle bombers, 741

Aleppo, 296

Alexander, Rt Hon A V, First Lord of Admiralty, minutes to, 114, 341, 637, 648-9, 657, 663-5, 669, 671, 677, 681-2, 692, 710, 724, 737, 746, 749, 768, 780, mentioned, 784

Alexandria, Greek Navy escapes to, 206, German threat to, 211, 217, operation "Tiger" and, 222, evacuation of troops to, from Crete, 265, discontinuance of Malta convoy from, 432, Italian "human torpedoes" in harbour of, 512, 613
Algeria, 479, Anglo-American plan for

575

Algiers, 586

541, 785

Aliakhmon Line, 87-9, 195-6, 199

Alpine units, Iceland as training ground for, 726, for landing in Norway, 776 Aluminium, works lost by Russia, 405,

sent to Russia, 408, 410-11 Amba Alagi, 80

American Volunteer Air Force in China,

Amery, Rt Hon L S, minutes to, 225, 670, 727, 742, mentioned, 784-5

Amphibious force, protection of, by artil-

lery, 691, mentioned, 706
Anderson, Rt. Hon. Sir John, Lord President of Council, minutes to, 102, 642, 650, 688, 723-4, 727, 742, committee of, on Persian operation, 425-6, Manpower Committee of, 454, mentioned,

Anglo-American Supply Mission, 397, 402-3, 410, 412-19, directive for, 764-8 Anglo-Iraqi Treaty, 224, 226 Anglo-Japanese Treaty, 516, 528

Anglo-Russian agreement, outline of, 341-343

Antelat, 178, 180

Anti-aircraft, for convoys, 108, needed for Crete, 239, 244, 247, artillery, use of, 442-3, batteries for Home Defence, 447-449, 722-3, divisions, 453, Allied production of, 610-11, high-altitude, 637, mountings, falling off in production of, 644, Eire and, 645, guns for Middle East, 735, A T.S serving in batteries, 743, 745, 754, rockets, 753 n, for Turkey, 761

Anti-Commtern Pact, 518-19

Anti-tank protection for guns, 442; guns, US production of, 611, weapons, need for, 675-6; guns for Middle East, 735

Antonescu, Marshal, 11, 467 Aosta, Duke of, 78, 82, 303

Arabia, 62

Arabs, German propaganda among, 287, meeting aspirations of, 294, and Jewish Army, 658, independence for, in Syria, 714–15

"Arcadia", Operation, 608, 634

Archangel, British supplies to, 344-5, 347, 351, 404, 418-19, 456, 461, 468, 470, 738-739, 765, question of landing British divisions at, 411, 413; Finnish threat to communications of, 467

Arctic Ocean, British fleet in, 340-1, Russia asks for Second Front in, 343; convoys through, 351, 417-19, 422, 461

Argentia, US base at, 120

Argus, H.M.S., 243, 665, 769, at Murmansk, 345

Argyll and Sutherland Highlanders, in Crete, 263

Ariete Armoured Division, 305, 501
Arizona, USS, 545

Ark Royal, H M S, 222, 243, 665, 769-70, bombs Leghorn, 55, in pursuit of Bismarck, 271-2, 279, 282, escorts Malta convoy, 433, loss of, 493, 512, 751, for Far East, 523, 770, 772, Grummans for,

Arliss, Captain, 264, 266

Armoured divisions, British, 657, in North Africa, 5, 56, 64, 180-1, 183, 220, 299-300, 305-7, 354-6, 700, 726 n, in Greece, 14, 16, 191-2, 194, 196, 198, 7th, withdrawn to Egypt, 173-4, 179, 673-5, weakness of, in Cyrenaica, 179-80, 190-2, 217, technical difficulties in re-forming 7th, 304-5, Auchinleck's requirements of, 354-6, 358, entirely British, 356, in home defence, 374-5, 452-3, 675, in Persia, 427, in Operation "Crusader", 496 n, 499-502, 504, 506, 509, 567, for Second Front, 583-4, Cavalry Division

redesignated, 652, organisation of, 677. 711-12, 738, tank strength of Brigade of, 682, in Middle East, 704, 708, increase m, 706, Australian, 706, Polish, 755-6, desert training of, 778 See also Tanks

Armour-piercing shot, 442

Armour-plate, supplies of, 113, Admiralty requirements, 747, 780

Army-see British, French, German Army,

Army Bureau of Current Affairs, 739 Army Tank Brigade, 706, 765, in Operation "Crusader", 496, 509, 567

Arnold, General H H (USA), 614, 680-

Artillery, in Army of Nile, 438, Churchil's note on use of, 442-4, 485, support of in amphibious operations, 691

Asmara, 79, 179, 708, 724

Assab. 670

Athens, Wavell in, 17, 19, 66, Eden in, 61, 66-9, R A F victory near, 202

Athlone, Earl of, 601

Atlantic Charter, 385-99, 605, tentative outline of, 385-6, final form of, 392-5. broadcast on, 398, Stalin's claims con-

trary to, 559, 616

Atlantic Conference, 384, 385 et seq , 529 Atlantic Ocean, U-boat warfare in, 99. 118-21, 344, 458-62, long-range aircraft in, 99, 344, 461-2, surface raiders ın, 104–6, 124–6, 162, 270, 462–3, Anglo-US defence of, 119-26, 377, 458-60, US bases to protect, 119-20, US Security Zone of, 122-3, 216, 399, 434. improved position in, 257, chase of Bismarck in, 270 et seq, "decisive battle of war" in, 378, US-German clashes likely 12, 528, American báttleships recalled from, 547, 553, importance of Allied supremacy in, 578, 771, Churchill flies over, 625-9, action against battlecruisers in, 665, number of U-boats in North Atlantic, 752

Atom-bomb research, 730 n

Attlee, Rt Hon Clement R, Lord Privy Scal, 19, 785, Deputy Prime Minister, 383, 482, 541, Churchill to, on Atlantic Charter, 391-2, 397-8, broadcast of, 398, mission of, to US, 481-2, 486, telegrams, minutes, etc., to, 559, 564, 597-601, 611, 613-14, 618, 625, 755

Auchinleck, Field-Marshal Sir Claude, offers troops for Iraq, 225-6, 228-9, 237, 300, telegrams, etc., to, 232, 353-5, 358-359, 361, 367-8, 370-1, 481, 493, 506-507, 510, Commander-in-Chief, Middle East, 309-10, 313, 353, armoured strength required by, 354-6, 358-9, 373, sends British troops to Cyprus, 357, 359,

delays attack in Desert, 357-8, 360, 364, 369, 427, 434-5, 481-2, 762, telegrams, etc, from, 360, 500-1, 504-5, 509-10, 776, visits London, 361, and relief of Australians in Tobruk, 367-71, offensive of, 477, 482, 494 et seq , 553, 574. King's message to, 493, personal intervention m battle, 505, 510-11, Iraq and Persia transferred to command of, 564, deprived of fruits of victory, 567, 585, 625, and Operation "Acrobat", 574-6, and Commandos, 725-6, reports on arrival of tanks, 776, mentioned, 442

Audacity, H M S , 461-2 Augusta, USS, 381, 384

Aurora, H M S, 435, 508, 512

Australia, Japanese threat to, 158, 435, 523, 547, 592-3, unfavourable comment in, 357, British differences with, 364-72, changes in Government of, 365-7, 370, surface raider off, 462, and US proposal to Japan, 530, reinforcements to Philippines through, 593, U.5 troops for, 593, 624, a great base for war supplies. 599, Churchill's telegrams to Governments of, 758-62, seeks representation in War Cabinet, 758-60

Australian troops, in Libyan campaign, 5, 56, in Egypt, 63, 592, in Cyrenaica, 64, 174, 179, 181-2, 184, 364, in Greece, 64, 69, 90, 92-4, 181, 195, 198, 201, 205, losses of, in Greece, 206, in Crete, 244, 247, 263, in Syrian campaign, 290-1, 295-6, in Tobruk, evacuation of, 367-372, in Middle East, 372, 655, 698-70, 702-3, 708, movement of, to Singapore

565, 592-3, in Cyprus, 687

Austria, 558

Auxiliary Services, conscription of women for, 455

Auxiliary Territorial Service (ATS), women of, serving with Artillery, 743, 745, 754

Azores, in US Security Zone, 122, 388-9, British plans to occupy, 123, 125, Salazar plans retreat to, 388

Back, Captain G R B, 265 Baghdad, Axis propaganda in, 224, advance on, 230-4. 291, troops from, for Libya, 510

Baillie-Grohman, Rear-Admiral, 203 Baku oilfields, 31, German threat to, 466,

622 Balkans, German threat to, 5, 8-19, 23, 26-9, 59, 62, 66-8, 83, 317, effects of loss of, 90, 315-16, effect of Soviet-German Pact on, 139, Axis aims in, 147, 163, hope of common front in, 149-52,

315-10, 338, Russia seeks influence on, 163; effect of resistance in, on Russian campaign, 316, 320-1, German action m, 376, Stalin asks for Second Front m. 405, 407, 409 Baltic States, under Russian rule, 164, 615, Russia chimis, 558-60, 615 Banat, promised to Hungary, 145 Bandar Shahpur and Bandar Shah, 733 "Barbarossa", Operation, 37, 144, 316, 634 See also Russian campaign Bardia, harbour, 363, enemy cut off in, 500, 509, 511, 567, Rommel at, 504, soo, Italian defences of, 679, 683, mentioned, 5, 13, 184-5 Barham, H M S., 193, 770, for blocking Tripoli harbour, 213-14, 434, damaged in defence of Crete, 269, loss of, 512 Basra, British base at, 224, 404, troops arrive at, 225-9, 232, 234, 237, 428, 441, Wavell and Auchinleck at, 232, railway to Caspian from, 403, US assembly point at, 670, 732, mentioned, 724, 761 Battle of the Atlantic Committee, 106-7, 128, 668, 738 "Battleaxe", Operation, 292-3, 298 et seq . 355-6, 634, value of, 357 Battle-cruisers, German, fuelling at sea by, 663; attacks on, 665, 672-3 Gneisenau, Scharnhorst Battleships, German, 106, King George V class, 112-13, 524, 769-71, 774, 779-81, and sinking of Bismarck, 286, "IL" 523-5, 769, 772-4, Japanese, 580, reduced Allied strength in, 580, 611, I rench, 589, fuelling of destroyers from, 665, 669, disposition of, 770-3, construction and design of, 779-84; American, 782-3 Bavaria, 558 Beach battalions, 704, divisions, 750 Beam bombing, radio, 41-2, 716-17 Beaufighter aircraft, 129, 219 Beaverbrook, Lord, Minister of Supply, 313, 786, at first conference between Churchill and Roosevelt, 383, 396-7, sent to Moscow, 397, 402-3, 412-19, 441, 465-6, 764 n, mission of, in US. 398, minutes, etc., to, 403, 418, 431, 694, 726, 732, 741, 753, 774-5, at Washington, 541, 555-6, 589, 598, 610, on American supplies, 570-1, transatlantic flight of, 626, Minister of State, 785, mentioned, 331, 732, 784 Beda Fomm, 56 Beirut, 295 Belfast, air raids on, 39

Belgium, assists in Abyssiman campaign,

82, Communist propaganda in, 164,

representative of, expelled from Russia. 326, possible landings on, 583, propaganda leaflets to, 651; acknowledgment of help of, 670 Belgrade, revolution in, 142-4, 148, 319, air hombardment of, 145, 155, 196. Dill's mission to, 152-4, Germans enter. Belvoir, Vale of, air raid on, 41 Benghazi, capture of, 5-6, 9, 14, 17, 18, 12, 56-8, 62, 173, 482, 700-2, garrison and air base at, 60, destruction of port of, 64, 177, German threat to, 175, 177-8; air attacks on, 179, 500; evacuation of, 180-181, German use of harbour of, 221-2. 299, 305, 362 3, 677, night bombardments of, 222, supplies arriving at 402. 507-8, Italian defences of, 683 Benma, 507 Berbera, 77 Berchtesgaden, Yugoslav visits to, 139-41 Beresford-Peirse, General, 185, 305-6 Berganzoli, General, 36 Bergen, Bismarck at, 271-2 Berlin, Matsuoka in, 161-7, bombing of, Bermuda, US bases in, 122, 626, surface raider south of, 125, Churchill at, 625-7 Bessarabia, 407, Russian claims to, 558, 615-16 Beveridge report on skilled men in Ser-VILC1, 749, 756 Bevin, Rt. Hon. Frnest, Minister of Labour and National Service, 454, 785; minutes to, 655, 721, 732, 714, 755 Birmingham, 644, 710 Birmingham, 11 M S , 271 Biscia, 5 Bismarck, enters Atlantic, 126, 270-3, attacks on and end of, 274-84, design of, 783-4, mentioned, 106, 113 Bizerta, 488-9, 575-6, possible German occupation of, 507, 512 Black Sea, danger of German mastery of, 440, 467, RAI to help defend 475, Russian command of, 575, 622 Blacker, Colonel, 676 Black-out, relaxation of, 728-9 Blamey, General Sir Thomas, 201 361 Blast, effects of, 719 Blenheim bombers for Middle East, 243, in Crete, 247, over Rotterdam, 729-30 Blind-landing equipment, 719 Blues, the, 713 Bock, General von, 337, 419, 476 Hofors for convoys, 108, in N Atrica. 443, in amphibious operations, 691, for Home Forces, 722 Bombard, anti-tank, 676, 732, 775. Battery, 715

Bomber aircraft, use of, in battle, 443-4, slow expansion of, 450-1, 729, Japanese torpedo, 549-51, US, in British Isles, 576-7; and battle-cruisers, 672-3, production of new, 718-19, criterion of strength of, 718, losses of, 729-30, 747-748, device for fixing position of, 753 n. from US, 762-3 Bombs, high-explosive, damage done by, 719; Jefferis, 732, 775; sticky, 732, 775 Bordeaux, U-boats based on, 123 Borneo, invasion of, 566 Boulogne, 456 Bowhill, Air Chief Marshal Sir F W . 103 Boyd, Captain, 53 Bracken, Rt Hon Brendan, Minister of Information, 379, 785, minutes to, 731. 733, mentioned, 20, 43 Brauchitsch, General von, Hitler overrules, in plan of Russian campaign, 347-8, removed from office, 477 Brazil, possible US bases in, 122 Brenner Pass, conference held at, 362 Brescia Infantry Division, 305 Brest, surface raiders at, 104-5 129, 270, 460, Prinz Eugen arrives in, 277, Churchill in flying-boat near, 629, bombing of battle-cruisers in, 672 673 m Brett, General, 599, 607 Brewsters, 247, 643 Bridges, Sir Edward, minutes to, 128, 383, 426, 635, 637, 650-1, 670, 716, 720, 728, 733, 742, 750, mentioned, 102, 331, 672 "Brisk", Operation, 665 Bristol, air raid on, 39, 100 Bristol Channel, obstructions in, 100, air attacks on, 108, volume of trade in, 131 British Army, strength of, 4, 378, 445. 452-3, 463, 485, Scales, 112, 656, 705-707, in Greek campaign, 205-6, in Crete, 244, 247, in Middle East, objects of, 291, in Syria, 295, 50th Division sent to Cypius, 356-7, 359, 369, 662, 746, Stalin asks for divisions of, 411, 420, 466, 471, 488, in Persia, 427-30, 432, in N Africa, 438, usc for civil purposes, 447, 757, running in training of, 647, in Middle East, composition of, 698-700, proportion of "fighting troops" and noneffectives in, 698-9, 738, demands of, on man-power, 701-6, 723, 734, 744, line of communication troops in, 702, wastage in, 704, RAF and, 726, 728, prevention of decrease in strength of, 734, amusement of officers and troops in, 737, political discussions in, 739, 742, Beveridge report on skilled men in, 749, 756-7, training of infantry in, 757.

Dragoons, Hussars, and Lancers in, 758 See also Armoured Divisions, Guards Brigade, Home Forces British Columbia, Japanese colony in, 652-British Empire, U 5 view of problems of, 378 British Purchasing Commission, 762 British Red Cross and St. John's "Aid to Russia" Fund, 421-2 British Restaurants, 663 British Somaliland, recapture of, 77 Broadcasting station, new, 731 Brooke, Field-Marshal Sir Alan (Viscount Alanbrooke), on threat to Caspian, 351, demands of, for Home Defence, 446, 455. Chief of Imperial General Staff, 555-6, minutes to, 642, 715-16, 755, 758, 775, mentioned, 441, 694, 707 Brown, Admiral, 676 Brown, Rt Hon A E, 785-6 Building labour, use of, 727-8 Bukhovina, 615-16 Bulgaria, German advance through, 9, 13-14, 16-18, 29-32, 58, 66, 87, 197, Russian pressure on, 11, German influence on, 13, 23, 33, 163, regarded by Russia as security zone, 29, 163, joins Tripartite Pact, 141, asked for military support against Yugoslavia, 144-5, postwar, 558, mentioned, 315-16 Bullard, Sir R , 430 Burgin, Dr L, 650 Burma, Wavell in command in, 564-5, 593, in South-Western Pacific Command, 598-9, 607, visit of Premier of, 727 Burma Road, Japanese threat to, 526-7, 532, 554 Burton, Mr. 676 Butler, Rt. Hon, R A, President of Board of Education, 62, 785, minute to, 751

to, 45, 653, 657, at conference between Churchill and Roosevelt, 380, 382, 384, mentioned, 62
Cairo, Eden in, 56, 59, 63, 90, 181, Smuts in, 85, Intendant-General, for, 311, 314, German planned advance on, 491
Calais, 456
Calcutta, H M S, 255, 265-6
California, U S S, 545
Campbell, Brigadier Jock, 500
Campbell, Rt Hon Sir Ronald, Ambassador at Belgrade, 86-7, Churchill's instructions to, 142, 197, captured by Italians, 198 n
Canada, help of, in defence of Atlantic.

Cadogan, Rt Hon Sir Alexander, minutes

120, 460; Atlantic bases in, 129, aluminium from, 410, Churchill speaks in Parliament of, 588, 598, 601-3, 608, Japanese m, 652-3, war effort of, 656, Menzies in, 680, 685, does not desire representation in War Cabinet, 759

Canadim troops, in Hong Kong, 157, 562-563, mentioned, 656

Canarias, 283

Canary Islands, plan for occupying, 123, 388-9, 634, 771

Canea, zir attacks on, 253-5, collapse of front 1t, 262-3, mentioned, 241, 248

"Canvas", Operation, 75, 634

Cape of Good Hope, convoys sent round, 18-19, 223, 355, 483, 698, route of shipping to and from, 125, tank personnel sent round, 218, 354

Cape Verde Islands, British preparations to occupy, 123, 125, 665-6, US and, 388-9, U-boat fuelling base, 664-5

Capetown, Prince of Holes at, 525, transfer of troops at, 666, R A F training school it. 698

Capuzzu, 300-303, 306 Cardiff, air ruds on, 38

Carlisle, H M S , 255-6

Cisablanca, 483, 489, unfinished battleship at, 561, U.S. landing at suggestion of, 561, 576

Caspian Sea, German threat to, 351, 440, 622, railway across Peisir to, 403-4 130-1, British aircraft for, 449

Castelorizzo, 659

Catalina flying-boats, 99, in search of Bromarck, 279, in Coastil Command 721 Catapult ships, 127-9, 461-2

Catroux, General, and Syria 232, 289

204 Caucasus, 251, German advance on, 347-8, 440, 466, 476, 622, Russii holds line of 351, British help in defence of, 466, 471, 475 484, 746, 767, Germin plans for

advince through, 490 Cavallero, General, on situation in N

Africa, 362-4

Cavalry Divisions, in Syrian campaign, 288, 202, 205-6, mech misition of, 639-640, 652, 698-9, 708, 712, U.S. tanks for 712

Cavite, 546

Censorship, abuse of, 713 Centurion, H M 5 , 187 Ceylon, Elect to be based on, 523 Chikmak, Marshal, 31, 85

Chaney, Major-General (USA), 377-8 Chatalja lines, 150

Chemical warfare, Inter-Service Committee on, 671, rocket for, 753 # Chequers, awaiting news of Bismarck at, 272, 274, news of attack on Russia reaches, 329-31, Auchinleck at, 361

Cherbourg, Radir station near, 42 Cherwell, Baron (Prof. Lindemann). minutes to, 661, 666, 687, 717, 734, 750, recommends atom-bomb research, 730. on import forecast, 733-4, mentioned. 35, 102-3, 380, 656 726

Chang Ku-shek, Generalissino, appeals for aid, 526-7, protests at U.S. proposals to Japan, 530-2, Churchill's wire to.

539, mentioned, 390, 404, 607

China, Japanese action in, 159, 519, 526, 536, American mediation in, 171, "incident", 389 90, and Atlantic Charter. 390-1, British sympathy with, \$15, 519, US demands Japanese withdrawal from, 522, 531, British aid sought by, 526-7, American help to, 526-7, 520. 531, opposed to US offer to Japan 530-2, International Air Force in, 747

Churchill, Mrs, and "Aid to Russia" l und, 421-2, mentioned, 22, 39, 303

Churchill, Randolph, 311 Churchill, Rt Hon Winston S, Eden's minute to, 13, correspondence with Roosevelt, 20, 22-4, 16, 78, 97, 111, 113-17, 121-5, 157-8, 185, 188, 260, 272, 286, 294, 313, 330, 350-1, 409, 416, 430-8, 478, 481-6, 492, 507, 520-7, 530, 533, 541-2, 680, 722, 739, promises aid to Turkey, 30-1, in Bristol after air raid, 39-40, discusses Hess episode with Stalin, 19, takes charge of Foreign Office, 62, proclaims Bittle of Atlantic, 106-0. gives unified direction in Battle of Atlantic, 130, directorship of, 131, combines Shipping and Transport, 132, speeches of, in House, 133-4, 283-4, 543, 551-3, first speech as Leader of Conservatives, 148-9, his correspondence with Matsuoka, 167-8, 171, 679, his silute to Rommel, 177, directive by, on Mediterranean theatre, 186-8, appeals for U.S. participation in war, 208-9, broadcasts of, 209-10, 329, 331-3, 398, and Operation "Tiger" 218-23, awaits news of Bismarck, 272, 274, 277 282 and replacement of Wavell, 308-10, 313-14, and Intelligence reports, 319, warns Stalin, 320-3, receives news of attack on Russia, 329 31, on help for Russia, 331-3, correspondence of, with Stalm, 340, 342-6, 403-7, 411-12 411 418, 430-1, 468-73, visits Mosiow, 351 Menzies objects to powers of, 165, his first meeting with Roosevelt, 377, 380, 384, voyage of, in Prince of Wales, 381-384, 399-400, and drifting of Atlantic Charter, 385-95, appoints committee

to consider Persia, 425-6, note of, on strategy, 441-4, memorandum of, on man-power, 454, Guildhall speech of, on Japan, 528, 538, telephones to President, 538, visits Roosevelt in Washington, 540-2, 551, 555, 587 et seq, 604 et seq, voyage of, in Duke of York, 555-7, 567-8, 572, papers of, on plan and sequence of war, 572 et seq, 619-23, plans Second Front, 581-6, his affection for Roosevelt, 588, 608, map room of, 588, Christmas speech of, at White House, 593-4, speaks to Congress, 594-7, speaks to Canadian Parliament, 589, 598, 601-3, goes to Palm Beach for rest, 612-13, 617-18, 619, his 'phone call to Wilkie, 617-18, transatlantic flight of, 625-9, personal minutes and telegrams of, 635-694, 710-58, military directives and minutes of, 698-709, Lord Warden of Cinque Ports, 737, naval directives and minutes of, 779-84 Churchill, HMS, 400

Churchill tanks, 776–7
Ciano, Count, 72
City of Bedford, the, 637
City of Calcutta, the, 657
Civil Defence Services, 38, 744
Clan Fraser, the, 196
Clan Lamont, the, 223
Clothing coupons, 312
Clough, Arthur Hugh, quoted, 210
Clyde, river, 667, air-raids on, 38, 100

108, 131, volume of trade in, 131 Coastal Command, 103, 107, cuts in expansion programme of, 451, attacks Uboats, 460-1, Gneisenau torpedoed by,

673 n, Flying Fortresses in, 721 Code names, operational, 634, careless use

of, 635-6

Coldstream Guards, 303-4
"Colorado", Operation, 249

"Colorado", Operation, 249-50, 300, 634
Colville, Mr (private secretary to WSC), 331

Combined Chiefs of Staff Committee, 608-9, 624

Combined Operations, Director of, in Middle East, 720-1, 725

Commandos, and Operation "Workshop", 51–2, and Operation "Mandibles", 60, in Egypt, 238, 700, in Crete, 262–3, 268, in Syria, 296, attack Rommel's headquarters, 499, raid Lofotens, 643 n, occupy Castelorizzo, 659 n, sent to Middle East, 700–1, in England, 700, frittered away by Middle East Command, 720–1, reconstitution of, 725–6, mentioned, 187, 480

Commons, House of, destruction of, 42,

277-8

Communism, Japanese ideal of moral, 166, Churchill the opponent of, 331

Communist Party, Yugoslav, 154, British, 339, 420, subversive propaganda of, 640 Conant, Dr. J. B., 39

Congo, troops from, 82

Congress, against participation in war, 528, 535, Churchill speaks to, 588, 594-7
Congress Party, Indian, 614-15
Congressional Inquiry, on US-Japanese

War, 535

Conungham, Air Vice-Marshal Sir Arthur, 497

Conscription, raising age for men, 454, for women, 455

Constantinople, 12, 30, 642

Convoy(s), sent round Cape, 18-19, 218, 223, 355, 483, 698, air attacks on, 99, 107, 127, 130, 725, attacked by surface raiders, 104-5, 124, U-boat attacks on, 105, 109, 119-21, organisation of escorts for, 105, 121, 123-4, 127, 129, 458, Canada provides escort for, 120, US notified of movements of, 122, 124, US, to Iceland, 129, of tank-carrying ships through Mediterranean, 218-23, threatened by Bismarck, 271-2, 277, Arctic, 351, 417-19, 422, Malta, 432-3, US transports for, 435-9, 441, 733, U S escorts for, 459, loss of Italian, 492, collision in, 637, of munitions, reception of, 648-9, 654, 627, "R" class ships to escort, 770, 772-3

Cooper, Rt Hon Alfred Duff, Minister of Information, minutes, telegrams, etc., to, 128, 544, 651, 658, 660, 686, Minister of State in Far East, 379, 543, 600, and defence of Singapore, 565, mentioned,

785

Cooper, Rt Hon T M, 785 Copper supplies and Germany, 646 Corinth Canal, Germans cross, 204 Cornwallis, Sir Kinahan, 225-6 Corvettes, Canadian, 120, refuelling of, 664

Cossack, H M S, 279, 461
Coventry, air raids on, 39, 644, 716
Coventry, H M S, 205
Cracow, German troops moved to, 319
Cranborne, Viscount (5th Marquis of Salisbury), Dominions Secretary, 331,

740, 784, minutes to, 641, 645, 667 Craven, Sir Charles, minute to, 717, mentioned, 450

Crawford, General, 674, 676 Creagh, General, in Operation "Battle-axe", 305-7, mentioned, 56, 180, 220

Crete, 59, arfields in, 9, 239, 247, garrisoning of, 199-200, 239, 244, importance of holding, 200-1, 209, 238, 240, 245, 248,

201, troops evacuated to, 205, 240-1, 244, 247, tanks for, 223, 247, 249-50, 260, 308, reinforcements for, 232, 243. 247, 249, 260; defences of, 238, 241, 244-245, 247, 250, 308, vulnerability of, 239, 243-4, 246, German preparations for attack on, 240-1, 243, airborne attack on, 240-1, 245-6, 248, 252-5, 259, 261; seaborne attack on, 240, 243, 245-6, 248, 255-7, 259-61; daylight blockade of, 247, plan of attack on, 248, hopeless position of Army in, 261-3, evacuation of troops from, 263-6, 268, 684, troops left on, 266; reprisals on peasants of, 266, casualties of battle for, 268, German report on British defence of, 269, effect of German capture of, 292, 432; cnticisms about, 293; enemy air bases on, 432, maps for troops on, 679

Crimea, German aims in, 347, mentioned, 476, 575, 622

Cripps, Rt Hon. Sir Stifford, Ambassador to Moscow, 163-4, 169, 419, minutes, etc., to, 320, 341, 409-10, 413, 420, 470, minutes, etc., from, 321-2, and Churchill's warning to Stalin, 321-3, returns to England, 326, 331, mentioned, 331

Croatia, 197

Croats, antagonism between Serbs and, 138-40, Hitler assumes support of, 144 Cross, Rt Hon Sir Ronald, Minister of Shipping, 786, minutes to, 101, 649

Cruiser tanks, in Cyrchaica, 191-2, 217-219, 304, 674, in Greece, 192, training men for, 671, 675, U S, 674, output of, 674, in Britain, unfit for service, 729, 774-5, mentioned, 1611

Cruisers, and sinking of Bismarck, 286, construction of new, 747, 779-80

Crusader", Operation, 361, 371, 439, 634, 746, actions to follow up a victorious, 479-80, 486-90, 574-8, course of, 494 et seq., 553, 567, losses of men in, 511, French reactions to victorious, 561, 752, increased German air strength in, 567, indecisive result of, 621, 625

Cumingham, General Sir Alan, Somaliland campaign, of, 73-7, chosen to command in Western Desert, 361, in Operation "Crusader", 496-7, 500-1, 504-5, relieved of command, 506

Cunningham of Hyndhope, Admiral of the Fleet Viscount, on transport of troops to Greece, 84-5, and prevention of enemy reinforcements to Africa, 186-188, 508, at Battle of Cape Matapan, 193-4, assists re-embarkation of troops, 203, averse to bombardment of Tripoli or blocking harbour, 211-13, minutes, etc, from, 211-14, 259-60, 508, minutes, etc, to, 212, 215, 242, 250, 259, 508, and Operation "Tiger", 222, air reinforcements for, 242-3, 261, and Crete, 255, 257-8, 265-6, 432, and advance into Syria, 291, and rehef of Australians, 372, Commandos under, 721, 726, mentioned, 53, 61, 182, 250, 489, 614, 751

Curtin, Rt Hon John, Prime Minister of Australia, 367, telegrams, cables, etc., to, 370, 372, 592

"Curzon Line", 558

Cutters, US, 669 Cvetkovic, M, 139–40, 142–3; Churchill's

appeal to, 141

Cyprus, importance of holding, 354, reinforcement of, with British division, 356-357, 359, 369, 427, and Syrian airfields, 684-5, 687, defence of, 686, 688, Indian Division in, 746, mentioned, 199, 260, 201

(yrenaica, campaign in, 5, 9, 56, régime in, 60, garrison for, 64, Italian acquisition of, 71, British weakness in, 173-4, 177-9, 217-18, Wavell on enemy threat to, 174-5, 178-9, 182, Wavell and Dill visit front in, 178, German strength in, 190, 217, 305, 762, object of Army in, 291, 762, priority given to operation in, 292, 300, 684-5, air superiority in, 292-3, 355, 358, reoccupation of, 354, 358-9, 496, 762, British need for airfields in, 354, enemy air bates in, 432, blockade of ports of, 677. See also "Crusader" Operation, North Africa, Libya

Czech troops, in Russia, 767 Czechoslovakia, post-war frontiers of, 558

Dakar, unfinished battleship at, 561, plan to capture, 577, mentioned, 209, 251, 470

D'Albiac, Air Marshal Sir J H., 197 Dalton, Rt. Hon. Hugh, Minister for Economic Warfare, 784, minutes to, 638, 646, 651

Damascus, 295-6
Dardanelles, Russia seeks bases on, 163
Darlan, Admiral, and the Dunkerque, 114116, grants Germans concessions in
Syria, 288-9, on crest of wave, 561, and
Toulon fleet, 577, to replace Pétain, 653,
mentioned, 251, 657

Dawson, Air Marshal W. L., 709 De Valera, Eumon, 539, 645 Debra Markos, 80 Debra Fabor, 82 Decoy, H. M. S., 264 Decoy fires, 38-9 Defence, H. M. S., 747 n

Degaussing, 108 Dekanosov, M., 324, 327-8 Delayed-action fuzes, 731 Denmark, possible landings on, 583 Denmark Strait, Bismarck in, 271-3 Dentz, General, 288-9, 295-6, 714 Derby, 41 Derna, harbour of, 363. German withdrawal through, 567, mentioned, 184, Dessie, 80 Destroyers, operating from Malta, 55, as escort for convoys, 107, 664-5, sent from US., 123, 692, and sinking of Bismarck, 286, fuelling at sea by, 664-5, 669, construction of, 747, 779, for Mediterranean, 752 Diamond, HMS, 205 Dido, H M S , 255, 264 Dill, Field-Marshal Sir John, C I G S , 182, 302, 441, 510, on mission to Middle East, 56, 59-68, 85, 87, 91-2, 96-7, 149, telegrams from Wavell to, 73-4; on Mission to Belgrade, 152, 153, Churchill's message to, 152, on difficulty of defending Desert Flank, 178, returns home, 182, opposes sending additional tanks to Cyrenaica, 219, brings news of invasion of Russia, 330, paper of, on dangers of invasion, 373-6, Churchill's answer to, 375-6, on Middle and Far East, 378-9, at first conference of Churchill and Roosevelt, 380, minuses, etc., to, 436, 455, 639, 647, 671, 673-5, 677, 679, 692-3, 698, 711, 713, 726, 731-2, 736, 738, 741, 746, 750, accompanies Churchill to US, 541, 555-6, 571, 573, 609-10, remains in Washington, 626 Dillon, Mr., 641 Direction-finding equipment (DF) of Focke-Wulfs, 665 Diredawa, 77 Disarmament and Atlantic Charter, 386, 39I Ditchley, 217 Dive-bombers attacks on ships by, 52, 219, 258, protection against, 187, 216, 637; Japanese, 545-6; in Desert battle, 567, British neglect of, 672, 728 Divisions, Army, 653, Field, 452, 750, time taken to transport, 647-8, 651-2, 668, number of men required in, 701, Dnieper, German advance on Lower, 338, Germans cross, 347 Dobbie, General Sir William, Governor

of Malta, 54, minute to, 687

attacks on, 641, 687

Dodecanese, German air bases in, 287,

Doenitz, Admiral, "wolf-pack" tactics of. 110, and American aid to Britain, 126, moves U-boats to Mediterranean, 492 Dominions, and agreement with Russia, 341-2, and War Cabinet, 365, 758-60, and Atlantic Charter, 387, 397, and invasion menace, 667; paper on general strategy for, 733 Don, river, 348, 476, 622 Donetz Basın, German aims in, 347 Donovan, Colonel, 24, 97, 140 Dorsetshire, H.M.S., 463, torpedoes Bismarck, 283 Douglas, Lewis, 132 Dover, Churchill visits, 22, 644, delay in completion of batteries, 644-5, 651 Dowding, Air Chief Marshal Lord, 689 Duke of York, HMS, Churchill's voyage m, 555-7, 567, waits at Bermuda, 625-527, for Indian Ocean, 768, mentioned, 525 Duncan, Rt Hon Sir Andrew, Minister of Supply, 694, 786, minutes to, 103, 644, 650, 655, 668, 670, 733, 744, Preudent of Board of Trade, 786 Dunkerque, the, 113-17 Dunkirk, 456-7 Durham Light Infantry, 300 Dutch East Indies, Japanese threat to, 158-161, 380, 522-3, 532, 592, Japan desires products of, 530, Japan attacks British vessels in, 537, in unified South-Western Pacific Command, 599 Eagle, H M S , 746 n , 747, 769, 771

native troops in, 654 East African Division, 706 East Coast, munitions ships deflected to, 649, 654, 657 Bast Indies, Japanese occupation of, 158 See also Dutch East Indics Economic Warfare, Ministry of, on German air strength, 35, 37 Ed Duda, 509 Eden, Rt Hon Anthony, Foreign Secretary, minutes, telegrams, etc., from, 13, 63-8, 85, 87, 181-2, 320-2, 470, 558, 560, 679, minutes, telegrams, etc., to, 45, 63, 65, 68, 86, 90-2, 94-5, 140, 149, 181, 202, 225, 319, 322, 388-9, 465, 473, 529, 534, 553-4, 557, 560, 615, 638-9, 642, 692, 714, 735-6, 752, on mussion to Middle East, 57, 59-69, 85 et seq , 713, Yugoslavia declines visit from, 140, 153. returns to Athens, 149, 152, returns home, 182, warns Soviet Ambassador, 328, at Chequers, 331, on Soviet-Polish Agreement, 349-50, on help to Russia,

East African campaign, 72-82, 85, 303,

407, and campaign in Persia, 424, 426; goes on mission to Moscow, 471-3, 475, 540, 553, 557, 615, general directive for, 475, mentioned, 19, 403-4, 421, 785 Egg rationing scheme, 710-11, 753, 757-8 Egypt, defence of, 5, 8-9, 32, 58, 62, 185, 209, 354, 684, army of manœuvre in, 33, 60, 69, 83, 701, enemy spies in, 95, effect of German victories on, 185, 288, reinforcement of, 190, 217-18, effects of loss of, 208, 375, threat to, 216, 291, reinforcements from, for Iraq, 228, 230, aircraft from Crete evacuated to, 248, 50th British Division in, 356-7, 705, enemy discusses attack on, 362, 364, 491; relative importance of Singapore and, 375-6, 379, danger to, from loss of battle fleet, 613, slow repair of tanks in, 673-4, plans for evacuation of, 677; workshops in, 708, a reason for holding, 733 Eighth Army, composition of, 496 n, in Operation "Crusader", 496 et seq., 567 Eire, Britain denied use of ports in, 99, 118-19, 641, and US troops in N Ireland, 483, neutrality of, 641, 645, Radar stations needed on, 664 Eisenhower, General Dwight D, 53 El Abd track, 500, 502 El Adem, 509, 511 670 El Gubi, 501, 504 Electra, H.M.S., 548 Elizabeth, Queen, gift of, to Red Cross,

Embick, General, 417, 457-8 Empire Song, the, 222 Eritrea, campaign in, 5, 15, 60, 63-4, 69, 79-80, mentioned, 70, 708 Erne, Lough, 279 Escort Groups, 129; vessels, convoy, 746 11, 747 Esmonde, Lieutenant-Commander, 277 Essex Ycomanry, 713 Estonia-see Baltic States Euriades, the, 657 Expeditionary Porce, organisation of, 732, 734, 766 "Exporter", Operation, 291, 634 Express, HMS, 548-9

Factories, curtailment of building of, 450, munitions, directing women into, 455, munitions, shortage of labour for, 655, defence of, by aerial mines, 659; aircraft, 718, construction of new, 727 Fadden, Rt Hon A W, telegrams, etc. to, 151, 366, 368, 758-62, mentioned, 366-70 Falluja, 230, 233

Far East, Japanese activity in, 150-61, 172. cramping of British defences in, 152, Minister of State for, 379, 544; British battle squadron for, 485, 523-5, 768-74, reinforcements for, 564-6 See also Indian Ocean, Malaya, Pacific, etc. "Felix", Plan, 491, 634

Felmy, General, 234

Ferfer, 76

Field Divisions, 452, 750, Army, 705, 76 s-6

Fighter aircraft, increased strength in, 449, fast, for aircraft-carriers, 643, 725; lengthening range of, 687; night and day squadrons, 753. See also Aircraft. Hurncane fighters, etc.

Fijl, H M S , 222, 257-8

Finland, Russo-German differences in, 12, 163, British warnings to, 407-8, 467, 474, Britain asked to break off relations with, 465, 467-73, Britain declares war on, 474, US relations with, 467-8, Soviet post-war plans for, 558-9, 615-16

Funnish troops in Russia, 338, 405, 467 Finucane, Wing-Commander Paddy, 740

Frume, the, 194

Fleet Air Arm, in Mediterranean, 187, 295, based on Crete, 206, 247, helps in evacuation of Crete, 265

Flying Fortresses, 721

Flying-boats, Boeing, Churchill crosses Atlantic on, 625-9, for Freetown area, 666

Focke-Wulf 200, over Atlantic, 99, 107, challenged in air 127-8, 461-2, in North-Western Approaches, 664-5

Food imports, 112-13, 714, 717, 750, rationing, 689, 710-11, 723, 753-5, restrictions, 755

Food, Ministry of, 112-13 Food Policy Committee, 649

Force H, raids Genoa, 54, escorts tankcarrying convoy, 222, in pursuit of Bismarck, 271-2, escorti Malta convoys, 432, reinforcement for, 769, capital ship for, 770-1

Force K. 435, successes of, 492, 508, loss of, 512-13, Churchill congratulates, 751 Forestry Commission, minute to chairman of, 754

Formidable, HMS, 52, 769-70, at Cape Matapan, 193-4; in defence of Crete, 259, 261, 269, damage to, 770

forrestal, Mr., 125

France, British blockade of occupied, 8, 576, 650, 653, 657, American supplies for, 117, Russia demands Second Front m, 339, 343-4, 406-7, fortified coast of, 339, 344, 409, Allied conditional promise to, 575, possibility of Germans taking over all, 576, 578, possible landings on, 583, 690, liberation of, 585-6. propaganda leaflets to, 651, aerodromes in Northern, 661, bombing of factories in, 690, and Syria, 715, escape of German Legionnaires to, 736; RAF fighters over, 735, 747 See also Vichy Govern-

Franco, General, refuses passage to German troops, 11

Fraser, Admiral, 282

Fraser, Rt Hon Peter, Prime Minister of New Zealand, telegrams, etc., to, 245. 525, at meeting of War Cabinet, 341. 392, and Imperial War Cabinet, 365

Free French, and French Somaliland, 77-8, 646, and Syria, 227, 232, 288, 290-1 294-5, 714-15, Anglo-US relation with, 577-8, and liberation of St Pierre and Miquelon, 590-1, mentioned, 651,

Freeman, Air Chief Marshal Sir W R.

Freetown, troops from Kenya wanted for, 74-5, 654, 686, attacks on convoys from, 105, 121, 124, catapult ships for convoys from, 129, possibility of French attack on, 295, escort for convoys from, 665

French Fleet, fear of Germans getting possession of, 113-17, 576-7

French Somaliland, 77-8

French troops, in Syria, 287, in N Africa 576

Freyberg, General Sir Bernard C, in command of Crete, 241-2, 245, 262, minutes from, 243-4, 246, 250, 254, Churchil's messages to, 250, 260, 262, on hopeless position in Crete, 261, evacuated from Greece, 266, in Operation "Crusader", 500,509, mentioned, 242

Frigates built in US, 746 II

Fuelling at sea, 663-5, 669

Fulmar aircraft, for Middle East, 243, 643, in Crete, 247, help in evacuation of Crete, 265

Furious, H M S, 649, 665, 770, carries aircraft to Takoradi, 9, 216, 243, 769, in action at Petsamo, 461, carries reinforcements to Malta, 701

Fuzes, delayed-action, 731, proximity, 742

Gallabat, 72 Galatea, H.M S , 513 Gallant, H M.S., 53

Gas warfare, retaliatory, 378, 736, protection against, 642, preparation for, 671-2, 720, danger of, 726

Gaulle, General de, and blockade of Jibouti,

77-8; and invasion of Syria, 288, 291, 714-15, telegrams, minutes, etc , to, 294, 690, promises independence to Syria and Lebanon, 294, British relations with, 561, 578, 651, 653, 657, US relations with, 577-8, 590, and occupation of St Pierre and Miguelon, 590-1

Gavrilovic, M, 154-5

Gazala, retreat of enemy to line of, 509, 567, mentioned, 625 "Gee", 753

Genoa, naval raid on, 54-5

Genro, 518-19

George VI, King, Churchill's correspondence with, 384, 398, 540-1, gift of, to Red Cross, 422, sends message to Auchinleck, 493

Georges, General, 507

German Air Corps, 240, 252-3, 297,

"battle report" of, 269

German Air Force in Mediterranean, 13, 18, 50-2, 94, 163, 621, in Bulgaria, 23, 30, strength of, 34-7, 161, 165-6, 486, 687, 694-6, 730, concentrates on British harbours and approaches, 37, Radar of, 42, deployed towards Russia, 130, destruction of Belgrade by, 145, in North Africa, 175, 180, 184, 363, 497, 513. in Greek campaign, 195-6, 202-3, ın Iraq, 230-1, 233, ın attack on Crete, 248, 253-5, 256-9, 268-9, allowed to land in Syria, 288, 291, in Russian campaign, 317, 621, and invasion of Britain, 374-5, moved from Sicily, 433, 479, comes to Rommel's assistance, 513, 567, importance of wearing down by continuous fighting, 621, losses in, 695, radio beam receivers of, 716, production of new aircraft in, 694-5, 717

German Army, moves to Balkans, 11-12, moves into Bulgaria, 87, strength of, 161, 409, triumphs of, 165, in Tripolitama, 174-6, attacks Agheila, 178-80; North African successes of, 180-5, 191, held up at Tobruk, 186, 190, reinforcements to, in N Africa, 186, 190, 216-17, 221, 362-3; in Greece, 195-6, in Yugoslavia, 195-7, speed of, in N Africa, 222, difficulties of, in N Africa, 299, 302, 362-4, on Eastern front, 316-19, 323, 347-8, Southern Group of, 323, 338, 347, conduct of, towards Russians, 329, Northern Group of, 337, 347, Central Group of, 337, 347, 402, 419, faces Russian winter, 401-2, 476-7, 553. 574, 622, reinforcement of, 405, 511

German atrocities, films of, 731 German Navy, strength of, 162, told to attack US ships, 547 See also Battlecruisers, U-boats

German Parachute Division, 240, 248, 252, 268

Germans, recruitment of friendly, 637; hopes of splitting from "Nazis", 767-8 Germany, and invasion of Great Britain. 4, 10, 23, 445-6, 455-8, and Spain, 7, 11, 124-5, 766, plans invasion of Balkans, 8-19, 23, 27-9, 66-8, 83, 86, 140; plans invasion of Russia, 37, 42-3, 84, 130, 170, 251, 315-20, 323-7, air defences of, 42-43, Hest on terms of, to Britain, 46, return of colonies to, 46, 49, Britain aims at air offensive over, 133; difficulties of, 134; certain defeat of, 141, seeks Japan's entry into war, 156-7, 160, Ribbentrop on might of, 161-3, differences between Russia and, 163-4, 169, Communist propaganda in, 164, Hitler on triumphs of, 165-6, invades Russia, 172, 323, 328-30, 337-8, Iraq breaks off relations with, 224, Russian supplies to, 317, 324, 338, Russian commussions sent from, 323, Russian appeasements of, 326-7, declares war on Russia, 127-8, air offensive on, 340, 346, 404, 408, 451-2, 577, 580-2, 584, 673, 718-19, 721-2, 767, aims of, in Persia, 423, impairing morale in, 451-2, 577, 582, Allied war aims concerning. 472-3, plans Middle East and N African offensive, 490-1, 760-2, and Japan's attack on America, 518-19, 546-7; at war with USA, 541, 546-7, 553, 575, Russian ideas as to post-war treatment of, 558, 560; restitution in kind by, 558. priority given to operations against, 624. keeping copper supplies from, 646; daylight raids on, 687, American bombers over, 721; night bombing of, 747-8. British measures for defeat of, 767

Ghormley, Admiral, "exploratory conversations" of, in Britain, 119, 122-3, 125, 377, on weakness of supply-line to

Middle East, 378

Gibraltar, possibility of German attack on, 7, 11, 125, 491, 578, possibility of Vichy attack on, 251, 295, U-boats sunk in Straits of, 462, closure of Straits of, 488, value of, to Britain, 578, mentioned, 62

Giffard, General, 686

Gladiator fighters, 226, 247 Glasgow, Churchill visits, 22

Glen ships, 187-8, 700, 720-1, 725 Glennie, Rear-Admiral Sir I G, 255

Glengyle, assault ship, 265

Gliders, troop-landing, in Crete, 248, 253,

British, 677, 683

Glowester, H M S, 53, 222; at bombardment of Tripoli, 214, in defence of Crete, 257-8 Gneisenau, the, attacks shipping, 104-5, 124; in Brest, 129-30, 270, 672; damage to, by torpedo, 673 n

Godwin-Austen, General Sir A R, in Operation "Crusader", 496 n, 511, mentioned, 185

Goering, Hermann, 144, airborne force of, 240, 252-3, 268-9, lost opportunity of, 268-0

Gojjam, 73, 80

Gold, in Martinique, 682; in Great Britain 728

Gondar, 80, 82

Graziani, Marshal, 71

Great Britain, danger of invasion of, 4, 10. 23, 58, 355, 358-9, 373-5, 445-9, 455-7, 766, promises France assistance in Africa. 8, air and submarine menace to, 10, 37, 98-100, 104, 165-6, air-attacks on, 37-43; air defences of, 40-2, 374-5, 447-8, Hitler's admiration for, 44, 48, Hess on German terms to, 46, blockade of, 46, 98 et seq. U S supplies for, 57, 111, 251, 314, 355, 397, 552-3, 569, fall in imports to, 100, 103, 107, protection of ocean routes to, 100, 107-8, secret Staff discussions with US, 119, American escort and Air Force bases in, 119, hopes for air ascendancy, 133, 414, warns Hungary she will declare war, 148, danger of Japanese attack on, 156-61, 165, 522-3, Ribbentron on defeat of, 164, effect of German invasion of Russia on, 325, and help 'for Russin, 331-3, 338-9, 343-6, 351, 402 et seq , 569, 764-8, and Poland, 349-50, Russia at first a liability to, 351-352, defences of, 374-5, 378, 445-9, 765-766, freezes Japanese assets, 380, 521, Free Trade in, 387, warns Japan, 399, 415, primary duties of, 414, Army strength in, 452-3, plan for (1941-2), 479-80, removal of divisions from, 482-483, undertakes to declare war on Japan. 485, 528, 534, 538, influence of resistance of, on Japan, 520, declares war on Japan, 538, 542-3, European bases for, 558, growing strength of, 569, demands on man-power of, 765-6

Greece, British aid to, 8-9, 16-17, 27-8, 33, 58-61, 63-9, 83 et seq, airfields in, 9, 195, 649, German threat to, 13, 16-19, 26-7, 87-91, 144-5, 162, 319, unwilling for British troops to land in, 17, 58, commander of British troops in, 61, 65-6, forces available for, 64-5, 194-5, determined to fight on, 66-7, 91-3, worsening situation in, 87-90, and Yugoslavia, 140; Italian attack on, 147, German invasion of, 195-6, 198, British evacuation of, 199-206, 410, surrender

of, 203; assembling of invasion force in. 240-1, German air bases in, 291, Ambassador of, banished from Russia, 326, transport of troops to, 409, post-war, 558, disagreement between Turkey and, 641, air squadrons for, 649 Greece, King of (George II), and evacuation of Greece, 199-200, 202-3, in Crete, 239, escapes from Crete, 266, telegram to, 710, mentioned, 66-7, 88, 91 Greek Army, exploits of, 8, 207; in Albania, 9, 12, 17, 24, 198, 202, 207, in Macedonia, 87-8, strength of, 195, disintegration of, 199, in Crete, 200, 241, 244, 247 Greek expedition, 194 et seq, setback to, 181, strength of troops, 194-5, evacuation of British troops, 199-206 Greek Navy, joins British, 206 Greenland, 120, US bases in, 121-2, aerial reconnaissance from, 124, U-boat battle off, 459-60 Greenwood, Rt Hon Arthur, 785 Greer, USS, 458 Greyhound, HMS, 257 Grigg, Rt Hon Sir James, 757 Grummans, aircraft, for Mediterranean, 52, 643, 724-5, with folding wings, 724 Guards Brigade, in North Africa, 300, 305-6, 496 n , 502, 567, in Home Forces 795 Guderian, General, 419, 476 "Gymnast", Operation, 489–90, 561, 576, 631

Habbaraya, 224, 226-32, 236 "Habforce", 232-3, 291, in Syria, 296 Haining, General Sir Robert, 713, Intendant-General, Middle East, 311, 314 Haile Selassie, Emperor, re-enters Abyssınıa, 5, 19, 73, re-enters Addıs Ababa, 80. Churchill congratulates, 81 Halder, General, 329 Hilfaya, 302, 497, Germans in, 303-6, enemy garrison cut off in, 509, 511, 567 Halifax, Earl of, arrival in USA, 22-3, in discussions at White House, 589, telegrams, etc., to, 677; mentioned, 530, Halifax convoys, attacks on, 105, 119-20, 459-60, US escort for, 459 Hamilton, Duke of, 43, 45, 47 Hampton, Captain T C , 257 Hankey, Lord, 785 Harrar, 76-7, 179 Harriman, Averell, at Chequers, 272, 273, 277, 537, in Cairo, 314, 378, 709, sent to

Moscow, 397, 402-3, 410, 412-19, 441, 764, and Pearl Harbour, 537, 539; mentioned, 124, 378 Hart, Admiral, 546, 548 Harvey, General, 427 Hata, General, 519 Haushofer, Albrecht, 45 Haushofer, Karl, 45, 47 Hebrides, new airfields in, 99 Hecla, HMS, 400 Herakhon, defence of, 247, 250, 254-5, 262-3; rescue of garrison from, 264-5, mentioned, 241, 248, 261 Hereward, HMS, 264 Hermes, H M S , 523, 770 Hero, H M S , 372 Hess, Rudolf, 43-0 Hillgarth, Captain, 7 Hipper, the, 104-5, 270 Hiranuma, Baron, 518-19 Hitler, Adolf, seeks passage through Spain, 7, letter of, to Mussolini, 10-13, realises failure of Battle of Britain, 37, plans invasion of Russia, 37, 164, 251, 315-320, 323-4, and Hess, 44-9, speech of, on U-boat menace, 103-4, fearful of war with America, 126, 160, 167, Yugoslav leaders visit, 139-42, determines to destroy Yugoslavia, 144-6, receives Matsuoka, 165-6, instructions of, on Iraq, 234, on conduct of troops towards Russians, 329, Britain determined to withstand, 332-3, overrules Army chiefs, 347-8, 476, takes command of armies, 477, ultimate aim of, 488, Japanese message to, on war with US, 533, reinforces Rommel, 585, and Baltic States, 615, need for speedy victory of, 620 Holland, Communist propaganda in, 164, freezes Japanese assets, 380, 521, and Atlantic Charter, 390, 399, and US proposal to Japan, 530, Britain promises. support to, against Japan, 534, declares war on Japan, 543, possible landings on,

583
Holland, Vice-Admiral Lancelot, 274
Holland, Colonel Sir Leslie, 380, minutes to, 16, 438-9, 448, 722, 735, 737-8, accompanies Churchill to Washington, 571, 573, 626

Home Defence, 374-5, 378, weakness in tanks, 219, 374-5, prepared for airborne attack, 268, claims of, 446-7, battalions, 452-3

Home Field Army, 453 Home Forces, protection of G.H Q of, 651, strength of, 672, 705-6, anti-aircraft for, 722-3, plans for action of, 732-3 Home Guard, 4, 456-7, 667, court-martial case, 741

Hong Kong, reinforcements for, 157, Japan

attacks, 543, resistance of, 562-3 Hood, H M S, 271-2, 665, loss of, 273, 274 Hopkins, Harry L, 20-2, 24, 403, 587-8, 661, 709, 732, cables, etc., to, 111, 416, 481, 617, second mussion of, 377-8, 380; in Moscow, 381, 394, realises risk of neutrality, 535, telegram to, 539, in discussions at White House, 589, 597, and vint to Lire, 641, on use of Flying Fortresses, 721

Horse-racing, 669 Horthy, Admiral, 147 Hotspur, HMS, 264

Hudson, Rt Hon Robert, Minister of Agriculture and Fisheries, 784, minutes to, 648, 685, 688, 727

Hudson aircraft captures submarine, 460-1 Hull, air raids on, 39

Hull, Cordell, on crisis with Japan, 530-3, realises risk of neutrality, 535, in discussions at White House, 589, and Free French, 590-1

Humber, the, 131

Hungary, co-operates with Germany, 11-12, 27, 146-7, 467, Transylvania awarded to, 139, 147; Yugoslav pact of amity with, 139, 147, gives military support against Yugoslavia, 144-5, 147, 197, British declaration of war on, 465, 467-8, 472-5, Soviet post-war plans for, 558

Hurricane tighters, for Middle Fast, 9, 243, for Malta, 54, 701, flying off merchantmen, 121, 129, in Greece, 221, in Tobruk, 221, in Ciete, 244, 247, for "Battleaxe", 299, at Murmansk, 345, 403, for Russia, 403-4, in Cyprus, 688, for Indomitable, 737-8

Hyals Fiord, 309-400

Hyderabad, destroyer given by, 266

Iccland, 669, British bases in, 120-1, 123, 129, in US Security Zone, 122, 399, 459; US base in, 129, 721, Bismarck near, 271-2, Churchill in, 398-400, U S troops to replace British in, 621, training ground for Alpine troops, 726, films of, 731

iceland Force, 653-4, 705 Ilic, M., Yugoslav Wir Minister, 153 Illustrious, HMS, 52, 769, bomb duninge to, 53-4, 770 Imperial, HMS, 264

Imperial Conference, 680, 758 Imperial War Cabinet, 365, 760 Import Executive, 101-3, 109, minutes to, 101, 104, 650, 668, 724, programmes of. 111-13, 733, 744, 750

Imports, fall in, 100, 103, budget for (1941), 111-13, of food, 112-13, 714. 717, 750

Indefatigable, H. M.S., 780

India, 62, troops from, for Iraq, 225, 230, 232, 234, Auchinleck in, 309, Wavell appointed C-in-C, 309-10, 313, defence of, 424, reinforcements for, 439, 564-5, 592, 698, 734, and Washington Declaration, 590, a great base for wir supplies, 599, question of new constitution for, 614-15, transport of prisoners to, 655, old guns in, 657, floating dock for, 746, release of Satyagrahi prisoners m. 748

Indian Air Force, 440

Indian Ocean, dangers from Japanese Navy th, 158, Prince of Wales in, 469, battle squadron for, 485, 523-5, Japanese mastery of, 551, disasters to come in 603, Fleet dispositions in, 768-74

Indian troops, 153, in East Africa, 6, 72. 79-80, 179, in North Africa, 64, 181, 184, 305, 496 m., 500, 502, 511, 567, 667, in Iraq, 225, 230, 232, 234, 237, 438, 453, in Syria, 295-6, British with, 356, 453, in Persia, 420, 427, 453, reinforcements to, 438, formation of new, 453, in Malaya, 564, 566, 592, in Middle East, 700, 703, 708, to keep order in Egypt, 702, m Cyprus, 746

Indo-China, Jupanese menace to, 156-7. 172, 520, occupation of, 379-80, 189-390, 522, 529-31, 536, Japanese air-bases m, 520, 548

Indomitable, II M S , 524, 725, 737, 769-70, 772, 780

Infantry tanks, in training troops, 671, 675. "unht for action", 774-5, weapons to defeat, 775 See also Tanks, mentioned. 16 n , 304, 674

"Influx", Operation, 8, 90, 634, 701 Information, Ministry of, 636

Inonii, President, Churchill's letters, telegrams, etc., to, 30, 149

Intelligence, British, and attack on Crete, 240, in North Africa, 299, 302, 309, and invasion of Russia, 317-19, and defences of Italian African ports, 679, 682-3

Intendant-General of Army of Middle East, 311, 314, 708-9

International Air Force in China, 747 Internment of married couples, 750

Invision, lessening danger of, 4, 477. attack on Russia a prelude to, 333, preparations against, 355, 358-9, 373-8, 445-0, 455, 483, 620, 667, 707, 763, massing of shipping for, 456-7, state of

'Alert", 456-7, US opinion on dangers of, 457-8, US troops in Ireland a deterrent to, 576, 606, amphibian tanks in, 642, instructions to population in case of, 660, countering airborne attack in, 693-4, troops needed to repel, 702

Invasion, Continental, preparations for, 480, 722, Churchill on, 581-4 See also Second Front

Ipoh, 566

Iran-see Persia

Iraq, German designs on, 46, 49, 229, 234-236, 490-1, British treaty with, 224, 226, Axis propaganda in, 224, British troops sent to, 225-9, 291, German aid to, 226. 230, 233-6, 288, impossibility of negotiating settlement with, 228-31, 237, air support for troops in, 228-31, British immediate aims in, 231, 300, victory in, 232-5, 297, 358, troops from, for Persia, 424-5, transferred to Middle East Command, 564, German threat to, 760-1, mentioned, 62, 201, 308

Iraqi Air Force, 230

Ireland-see Eire, Northern Ireland Irish Brigade, 740-1

Irish Channel, obstructions in, 100

Ismay, General Lord, nunutes to, 5, 14, 16, 52, 55, 128 157, 218, 225, 228, 289, 319 11, 383, 126, 429, 436, 457, 466, 489-490, 564-6, 614, 620, 635, 637, 641-4, 646-7, 650, 652, 657, 659, 662, 666, 668, 670, 674, 677-9, 682-6, 688-92, 710, 715-16, 720-2, 724-6, 728, 730, 732-4, 747, 750, 752, 754, 777-8, at Chequers, 272, on General Wavell, 308-9, sent on mission to Russin, 114-16, 419, 465, mentioned, 380, 636, 641

Istanbul, 12, 30, 642

Italian Air Force, 486, in East Africa, 76, 79-80, in Albania, 94, in North Africa, 180, 497, m iraq, 234, weakness of, m Sicily, 433 4

Italian Armistice Commission, in Syria, 287-8

Italian Army, surrenders in Cyrenaica, 57, 173, final defeat in East Africa, 80, 82, lack of armour in, 162, troops in Afrika Korps, 362, in Operation "Crusader",

Italian I ripire, destruction of, 5, 15-16, 60,

70 11 44 Italian Navy, defeated at Cape Matapan, 193-1, out of action, 196, its chance of exploiting British weakness, 269, attacks Valetta, 433, German admiral on, 433; short of oil, 492

Italian Somaliland, 70-1, campaign in, 73-

Italo-Yugoslav Pact, 139

Italy, low morale in, 15, 54, passage of German troops through, 26, naval raids on mainland of, 54-5, asked for military support against Yugoslavia, 144-6, relations with Iraq, 224, German reinforcements to, 486-7, air attacks on, 487, 584, 722, shortage of aerodromes in, 487-8, at war with USA, 541, 546, 553, moral and military collapse of, 575, possible landings on, 582-3, 586, Churchill's message to, 638, propaganda leaflets on, 735

Jacob, Maj -Gen Sir E I C, 380, minutes to, 636, 672, 721

Jaguar, HMS, 513

"Jaguar", Operation, 243, 634, 680, 6h,

Janus, HMS, 295

Japan, informed of German movement in Balkans, 28, menacing attitude of, 56 156, 352, 435, 485, 522-9, German pressure on, to enter war, 156, 160, 167, dangers from participation of, in wai, 157-9, China "incident" and, 159, 389-390, 415, Churchill's questions to, 167-8, negotiates with US, 161, 170-1, 389, 520, 522, 525, 529-31, 774, occupies Indo-China, 379-80, 519, economic sanctions against, 380, 389, 521-3, strong US attitude to, 390-1, 397, 399, 415, 469, 485, 522, 531, Russia and, 404, 407, 519, 557, 560, attacks Pearl Harbour, 477, 533, 537-8, 544-5, Great Britain undertakes to declare war on, 485, rapid modernisation of, 514-16; society in, 516-17, moderating influences on, 517, 519-21, Constitution of, 518, sees opportumty for conquest, 519, 521, contemplates war, 525-6, 532-6, Churchill suggests joint warning to, 533, warns Germany of war with US, 533, acts of aggression of, 536, madness of, 536, Britain declares war on, 542-3; attacks Malaya, 542, 548-9, 553, 563-6, resources of, a wasting factor, 579, strategy against, 622-3, South American copper for, 646 Japanese in Canada, 652-3

Japanese Air Force, attacks Pearl Harbour, 545, sinks British battleships, 548-50, efficiency of, 551, 566, German aircraft

ın, 579 Japanese Army, power and ambitions of,

517-18, 521

Japanese Emperor, 518, 521, 525-6, 534 Japanese Navy, 727, increasing activity of, 156, effects of participation of, in war, 157-8, a moderating influence, 517-18, 521, lacks oil, 521, Air arm of, 522,

warlike activities of, 535, and Pearl and Imperial War Cabinet, 365, tele-Harbour, 545, has command of Pacific, grams to, 656, 680 King George V. HMS. 773: transports 545, 547, 551, 554, 578-9, new battle-Halifax to USA, 22-3, in pursuit of ships of, 579; Indian Ocean fleet to act Bismarck, 271-2, 274, 278, 279, 282, as deterrent to, 768, 772-4 Japanese-Soviet Neutrality Pact, 169-70. Churchill's voyage on, 555 et seq , compared with USS Northern Carolina, 782 172 lean Bart, the, \$80 King George V class battleships, 112, faults in, 747, 779-82; for Indian Ocean, 768lefferis, Colonel, 676 leffens bomb, 732, 775 769, 773-4, disposition of, 770-1, 773. displacement of, 783 Jehovah's Witnesses, 732 Kingston, HMS, 255 Jelib, 75 lervis, HI M S , 55, 258 Kipling, H M S , 258 Icwish Army, 658 Kirkenes, 461 Jibouti, blockade of, 77-8, 688, mentioned, Kirkuk, 231-2 Kismayu, 62, operation against, 73-5, 85, 646, 708 Italian defences of, 679, 683 luga, 76 Jodl, General, 144, 547, on attack on Yugo-Knezevic, Major, 142 Knollys, Lord, 627 slavia, 146 Knox, Colonel W F. 489, 535, and Johnston, Rt Hon Thomas, 786, minute to, 68 t capture of Wake Island, 591 Johnstone, Harcourt, 728 Knox, Mrs. 754 Konoye, Prince, 170, 389, restraining in-Johore, 565, 593 Jowitt, Rt Hon Sir William (Viscount), fluence of, \$19-20, resignation of, 525 Korysis, M. Prinic Minister of Greece, 785 Juba, river, 75 66-7, 93, suicide of, 200 Kota Bharu, 548-9, 563-4 lunkers 88, 107 Juno, HMS, 255 Kotor, 197, 198 n Kra Isthmus, 534 Krebs, Colonel, 170 Kabul, telegrams from, 742, 744 Kuantan, 549-51 Kurbyshev, Soviet Government moved to Kalamata, 205 419, British mission at, 468 Kalının, 419 Kandahar, 11 M 5, 255, 511 Kuneitra, 295 Karcha, Lastern, 467 Kursk, 553 Kashnur, H M S , 258 Kassala, 5-6, 72, 74 Kettel, Lield-Marshal, 144, 329, 547; on La Pallice, Schurnhorst ii. 673 ii Labour, Ministry of, and Production attack on Yugoslavia, 146, on situation in North Africa, 362-4 Executive, 101, and interchingeability Kelly, IIMS, 258 of labour, 108 Kenya, attack on Abyssima from, 6, 15, Labour Party, Australian, 365, in office, 367, 370-1 73, troops m, 60, 64, 73-5, 654, 699-700 Lampson, Rt. Hon. Sir. Miles (Baron-708, Smuts visits, 73 Keren, check at, 63-4, 72-3, 96, victory Killcarn), 311 Lance, HMS. 435 it, 70, 179 Landing-craft, needed for Second Front, Kermanshah, 429 339, 484, 583, 746, 747 n, German, Kerr, Captam Ralph, 274 Kesselring, Field-Marshal, 42, 513 455-7, 483. British, preparation of, 480, flak (LCF), 691 See also Tank land-Keyes, Admiral of the Heet Sir Roger (Baron), and Operation "Workshop", ing craft 51-2, prepares invasion of Continent, Larissa, 199, 201 Latona, H M S , 371-2 480 Latvia-see Baltic States Keyes, Lieut -Colonel, 498 Lauder, Sir Harry, 602 Keynes, Baron, 102 Khanaquin, 427 Laval, Pierre, 10, 653 Khurramshahr, 428 Laverick, General, 182 Lawson, Brigadict, 563 Kicv, 338, 347, 402

King, Rear-Admiral, 255-7, 265

King, Rt Hon W L Mackenzie, 601,

Laycock, Brig idier, 238, 263, 498, Director

of Combined Operations, 721, 725

Leach, Captain John, 274, 382, 550 Leathers, Lord, Mmister of War Transport. minute to, 738, mentioned, 131-2, 435-436, 786 Lebanon, promise of independence to, 294 Lee, Brigadier-General, 178 Leeb, General von. 337 Le Gentilhomme, General, 77, 295 Leghorn, 55, 642 Lemnos, 96 Lend-Lease Bill, 111, 113, 159, 397, supplies sent on to Russia, 377, 396, 414, working out of aid under, 387, between Britain and Russia, 408, aid to China by, 527, temporary hold-up of supplies by Leningrad, German advance on, 337-8. 405, withstands siege, 347, 476, 553, Russian naval vessels at, 411-13, Finnish threat to, 467, dangerous position of, 560, 616 Levant, danger from German dominance in, 287-9, 291-2, need to occupy coastline of, 573 Libya, 71, attacks on enemy reinforcements for, 55, 433, garrison for, 60, value of victory in, 232, enemy remforcements for, 353, 434, release of troops from, to aid Russia, 408, 415, transference of aircraft to Persia from, 466, 475 See also Cyrenaica, North Africa Libyin cimpaigns, 5-9, 14, subordinated to aid to Greece, 16-17, to come before Greek evacuation, 201 See also "Battle-axe", Operation, "Crusader", Operation Life Guards, 713 Lindemann, Professor—see Cherweli. Baron Linlithgow, Marquis of, Viceroy of India, minutes to, 310, 748, mentioned, 225 Lion, HMS, 747, 779-81, 783 List, General, 197 Lithuania—see Baltic States Little Entente, Yugoslavia turns from, 139 Litvinov M, and United Nations Pact, 604-5, 607 Lively, II MS, 435 Liverpool, air raids on, 39, 127; controlling centre of Western Approaches, 103, 129, volume of trade at, 131 Lloyd, Lord, of Dollobran, 784 Loch, General, 637 Lofoten Islands, raids on, 643 London, air raids on, 39, 41, 43; restricted trade in Port of, 100, 131, stir among Japanese in, 157-8, deliveries of coal in, 642, homeless in rest-centres of, 643 I ondon, H.M.S , 413 Longfellow, H. W , quoted, 24-5

Longmore, Air Chief Marshal Sir A M. 9, 16, 61, 182, 200, confers in Athens, 17, needs reinforcements, 94, 96, on air protection for Tobruk, 221, operational reports from, 640 Lorient, U-boats based on, 123 "Lustre", Operation, 152, 261, 634 Lutjens, Admiral, 105, 282, 283 Lutzow, 330 Luzon, Japanese landing on, 546 Lyttelton, Rt Hon Oliver, 382, Minister of State, Middle East, 312-14, 544, 785, telegram to, on Australians in Tobruk, 369, paper to, on outcome of "Crusader", 486, telegrams, etc., to, 490, on replacement of Cunningham, 506. President of Board of Trade 786

MacArthur, General, 546, 548 Macdonald, Rt Hon Malcolm J, Minister of Health, 785, minutes to, 638, 643 Macedonia, Greek forces in, 66, 87-8, 195, promised to Bulgaria, 145, German invasion of, 197 Macfarlane, General, 404, 421 Machek, Dr., 138-9 Machine tools, production of, 670 Mack, Captain, 55, 258 "Magics", 532
"Magnet", Operation, 621, 634 Maisky, M., 342, 405, 469, and Soviet-Polish Agreement, 348, and supplies for Russia, 403, 406, demands Second Front, 407, and action against Persia, 426-7; on breaking relations with Finland, 467, 470-I Malaya, Japanese threat to, 160-1, 379-80, 523, 532, 592, cramping of defence of, 352, Japan attacks, 542, 548-9, 553, 563-566; aircraft needed for, 553; reinforcements for, 592-3, in South-Western Pacific Command, 598-9, troops in, 657 Malaya, H M S, fuelling destroyers from, 669, duties of, in Atlantic, 771, mentioned, 54, 105, 222, 770 Maleme, 248, defence of, 247, 253, taken by enemy, 254, the Fleet bombards, 261, RAF attack, 263 Malta, 62, defence of, 5, 26, 187, 434, strategic importance of, 50-1, convoys to, 53, 432-3, air raids on, 54, 179, 491, 513, reinforcements for, 54-5, 219, 222, 701, 721, submarines operating from, 55, raids on Tripoli from, 179, naval and air forces based on, 187, 190, 243, 433, 497, possible seaborne attack on, 432, force based on, 434-5, 492, 508, 751, never assaulted, 491, 512, minute to Governor of, 687

Malthy, Major-General, 562 Man, Isle of, internees on, 750 Manchester, air raid on, 38 Manchester, HMS, 271 Manchukuo, 519 "Mandibles" Operation, 32, 60, 634, 701, 720 Manila, 546, 548, 623 Mannerheim, Field-Marshal, Churchill's exchange of notes with, 473-4 Man-power, 751, source of, for mobile troops, 447, Churchill's memorandum on, 454, Army demands on, 701-6, 723, Committee, 723, use in building, 727-8, demands on British, 765-6 Margesson, Rt Hon David (Viscount), Secretary of State for War, minutes 10, 446-7, 456, 639, 647, 651-3, 656, 058, 661, 674-6, 692-3, 698, 701, 711, 713, 723, 729, 737-43, 749-50, 754, 756 774-5, mentioned, 786
"Marita", Operation, 144-6, 634 Markovic, M., 139-40, 142 Marshall, General G C (USA), 612, realises risk of neutrality, 535, in Algiers, 186, on commander for South-Western Pacific, 598, 600, Dill's friendship for, 610, on transport of troops to Ireland, 624 Marshall-Cornwall, General, 185 Martel, General, 676 Martinique, 682 Martlett aircraft, 681 Massawa, 79, 679, 683, 708, 724 Matapan, Battle of, 103-4, 196 Matthews, Mr. American Counsellor at Vichy, 115 Matsuoka, Yosuke, visits Moscow, 158, 161, 166, 160, visits Berlin, 158, 161-7, visits Rome, 168. Churchill's letter to, against talks with U.S. 520

167-8, 678, his reply, 171, fall of, 172, Mauritius, 668 Meat ration, 689, 711, 714, 717, 744 Mechili, 177, 181, 183-4, 190 Mediterranean, effect of French participation on, 7-8, German air warfare in, 13, 18, 50-4, 94, 163, 508, fear of German intervention in, 26, 32, attacks on British convoys in, 53, attacks on German communications in, 55, 185-7, 190, 243. 507-8, 511-12, 694, moving troops across Eastern, 84, removal of Fleet from Eastern, in event of Japanese entry into war, 158, convoy of tanks sent through, 218-23, position in, before attack on Crete, 251; Eastern, unusable for convoys, 432, 762, U-boats in, 462, 492-3, plans for British expedition in, 479-80, 482-1; British air supremacy in Central,

487-8, reopening of, to convoys, 487, Britain loses naval and air supremacy in, 512-13, 567, 613, free passage through. 578, torpedo aircraft for, 613-14, highspeed fighters needed in, 643, aircraft carriers and, 750, 769, destroyers for, 752 Mediterranean Fleet, duty of, to stop enemy traffic to Africa, 186-7, 215, 242, 433, reinforcements for, 187, 190, 215-216, 222, bombardment of Tripoli by. 187, 212-15, defeats Italian Fleet, off Cape Matapan, 193-4, and embarkation of troops from Greece, 203-6, and defence of Crete, 245-6, 255-61, losses of. 257, 259-60, 269, nearing exhaustion, 261, evacuates troops from Crete, 263-6. and Tobruk, 371-2, loses fuelling base in Crete, 432, dominates Mediterranean, 433, U-boat losses in, 493, 512-13, assists in Operation "Crusader", 508, 512, loss of Eastern, 512-13

Melos, 256, 261
Menzies, Rt Hon R. G., and Australian troops for Greece, 59, 69, 94, and organisation of War Cabinet, 365, loses office, 364-6, telegranis to, 365-6, 390.

office, 365-6, telegrams to, 365-6, 399, 685, 687, in Canada, 680, 685, Minister for Co-ordination of Defence, 758, mentioned, 39

Merchant crusers, armed, 682

Merchant ships, aircraft launched from, 107, 121, 127-9, arming of, 108, building of, 108, 780, speeding up turn-round of, 108-9, 131, sunk by U-boat, 135-7, disguised German, 462-3, losses of, 464, 697, conversion of, into landing-craft, 484-5, 722, US production of, 611, protection of, by nets, 671 n See also Atlantic Ocean, Convoys, Shipping Mersa Matruh, 184, 211, 217, 304

Mersey, 125, 667, air ruds on, 38-9, 100, 108, 131

Messervy, General, 305-6 Metaxas, General, 17, 200

Middle East, strength of British arms in, 6-7, 63, disposition of forces in, 61, 63-4, effect of Japanese participation on, 158, effect of loss of, 208, air reinforcements to, 216, 251, 449, 680, 734, Hitler's lost chance in, 235, Cavalry Division in, 288, 292, 295-6, 639-40, air-power governing position in, 291, change in command in, 308-10, 313-14, 353, "Intendant-General" for, 311, 314, 708-709, Cabinet Minister in, 311-14, U.S. supplies to, 314, 355, 708-9, "British" troops in, 356-7, 368-9, 440-1, remforcements for, 358, 377, 408, 435-9, 441, 650, 685, 698, 706-7, 733-5, relation of, to security of U.K., 373-6, ar

"indefensible position", 377-8; troops from, for Persia, 424, 427, mass of manœuvre in, 435-6, 701, possibilities of action in, 440-1, 767, Germany plans action in, 490-1, aircraft from, for Far East, 553, 565, refrigerated meat ships in, 666, composition of Army in, 698-700, 702, interior economy of Army of, 713, 735, Commandos wasted in, 720-1, night-fighter defences in, 730; tanks for, 774-8 dillitary intelligence. Director of minute

Military Intelligence, Director of, minute to, 745

Minefields, to cover North-Western Approaches, 99, losses to Force K in,

Mines, magnetic, 99, 127, shipping lost through, 464 See also Aerial mines Ministers, speeches of, on war, 636 Miquelon, occupation of, 590-1 Mirkovic, General Bora, 142 Mobile Naval Base Defence Organisation, 238-9, in Crete, 241, 247, transport of,

679 Modus vivendi, 530–1

Mogadishu, 76, 85 Mohawk, H M S , 55

Molotov, Vyacheslav, 317, 325, 411, 420, 558, and Matsuoka, 161, 166, 169-70, and German threat of invasion, 326-7, receives German declaration of war, 328 Monastir, 197-8

Monemvasia, 205

Montgomery, Field-Marshal Sir Bernard (Viscount), 176, on Churchill's note on strategy, 444

Moore-Brabazon, Rt Hon J T C (Baron), Minister of Transport and Minister of Aircraft Production, 450, 784, 786, minutes to, 654, 717, 723-4, 741

Morocco, 7-8, 479, 483, danger of German arrival in, 209, 589, Anglo-American intervention in, 489, 575-8 See also North Africa

Morrison, Rt Hon Herbert S., Home Secretary and Minister of Home Security, 785, 786, minutes to, 638, 640, 642, 648, 658, 669, 720, 749

Morshead, General, at Tobruk, 185 Morton, Major Desmond, 319, minute to,

Moscow, Matsuoka in, 161, 166, 169–70, advance on, 347–8, 401, 419, 745; Churchill visits, 351, Hopkins's mission to, 381, British-U S mission to, 396–70, 407–8, 410, 412, 764–8, state of siege in, 419, Wavell to go to, 466, Eden in, 471–3, 475, 540, 553, 557, German failure before, 476, 553

Mosley, Sir Oswald, 640, 750 Mosul, 231-3

Mount Vernon, the, 592

Mountbatten, Admiral Lord Louis (Earl), in defence of Crete, 258, at Malta, 434, new post for, 480-1, mission of, to US, 481, 489

Moyne, Lord, Secretary of State for Colomes, 784, minutes to, 658, 688

Msus, 56

Musta of Jerusalem, 224, 234, 736

"Mulberry", 634

Munitions, scale of Allied production, 610-612, falling off in production, due to air raids, 644; reception of slips carrying, 648-9, 654, 657, from United States, 762-3

Murmansk, RAF squadrons based on, 345, 403, 744-5, carriage of supplies to, 347, 351, 461, Finnish threat to communications of, 467, reinforcement of Russians in, 483, German move against, 728, 732

Murray, Rt Hon Sir David King, 785 Muselier, Admiral, 591

Mussolini, Benito, Hitler's letters, telegrams, etc., to, 10-13, 143-6, African adventures of, 71, 80, Matsuoka visits, 168, and supplies to North Africa, 492 Mustard gas, 726

Nagumo, Admiral, 545 Naiad, H M S , 222, 255-6 Napier, H M.S , 266 Nauphon, 204 Navy—see Royal Navy,

Navy—see Royal Navy, also German, Italian, Japanese, United States Navy,

Nawanagar, Maharaja of, 667 Nazi-Soviet Pact, and Poland, 348-9 Nazi-Soviet Relations, 29, 323 n Neame, General, 66, 179-80, capture ot,

182, 192 Nehru, Pandit, 748

Nelson, Donald, 610-11 Nelson, H M S, 187, 215-16, 665, 781, for

Far East, 523, 524 n, 525, 580, 770-1 Nelson class battleship, 768-9

Neptune, H M S, 512-13 Neutrality Act, American, 437, 459, virtual repeal of, 528

New Caledonia, 624 New Toronto, the, 649, 654

New Zealand, Japanese threat to, 158, 435, 523, 547, anxious about troops in Crete, 244-5, does not desire representation on War Cabinet, 759

New Zealand Star, the, 222

New Zealand troops, in Africa, 5; in

Greece, 64, 69, 89-90, 92-5, 194, 196, 198-9, 201, 205, 245-6, losses of, in Greece, 206, commander of, 242, 245, ncrete, 243-5, 247, 253, 255, 263, 268; feel unappreciated, 246, in Operation "Crusader", 496 n, 500-1, 505, 509, 367, in Middle East, 700, 702-3, 708

Newfoundland, U.S. bases in, 120, 122, 124, surface raiders off, 124, capital ship stationed at, 124, Churchill and Roosevelt meet in, 380, 384

Night-fighting devices, 730

Nile, Army of the, 5-6, 9, 33, 453, 702-3, reinforcements for, 18-19, 75, 735, achievement of, 57, to be sent to Greece, 83, 97; Field State of, 438, development and maintenance, 708

Nizam, H.M.S, 266

Noble, Admiral Sir Percy, Commanderin-Chief of Western Approaches, 103, 129

Nomura, Admiral, Washington mission

of, 161, 171, 389

Non-Aggression Pact, Russo-German, 519 Norfolk, HMS, in pursuit of Bismarck, 271-4, 278

Normandie, the, 436

Norrie, General, 496 n , 500, 502

North Africa, hopes of French co-operation in, 7-8, 766, Weygand's policy in. 10-11; Smuts on campaign in, 14, attacks on supplies and runforcements 10, 55, 185-7, 190, 243, 507-8, 511-12, 694, 762, question of removing French ships to, 114, Desert Flank in, 173 et seq , consequences of German successes in. 211, preparations for battle in, 298-305. 354, supply difficulties in, 299, 302, 357. 362-4, 762, supplies for, and Russian needs, 351, German High Command on situation in, 362-4, US interest in French, 479, 489, 561-2, British plans for French, 479, 482-3, 489-90, 507, 561, 574-8, 582, 703, 751, German plans regarding, 490-1, 561, 766, change of fortune in, 512-13, Alhed intervention in French, 575-8, 585-6, 588-90, 606, 624-5, possible Franco-German collaboration in, 577, Vichy's duty in, 601, indecisive success in, 625, defence of ports of, 679, 682-3, air reinforcements to, 680

Northern Australia, supply line in, 598
Northern Carolina, USS, compared with

If M S King George V, 782-4 Northern Ireland, new airfields in, 99, U S troops for, 482-3, 576, 590, 606-7, 613, 620, 624, U S bombers for, 614, transfer of division to, 647-8, 651-2, unsaleable potatoes in, 648 North-Western Approaches, protection of, 107, 121, 123; shipping losses in, 111, 664, U S bases in, 126, catapult ships for, 129

Norway, representative of, expelled from Russia, 326, sweeps off coast of, 340, landing of troops in, 343, 345, 483, 583, Second Front in, 412, 766, liberation of, 732, shooting of trade unionists in, 733 Nottingham, air raid on, 41

Nova Scotia, US bases in, 122, 124,

capital ship stationed off, 124

Novorossisk, 440 Nubian, H M S, 255, 261 Nuffield, Viscount, 422 Nuremberg Records, 144, 157, 329 Nye. General, 475

O'Connor, Captain R. C., 573 O'Connor, General Sir R. N., 56, 180, capture of, 182, 192

Oil, protection of pipe-line, 227, German threat to Russian supply, 347, Japan deprived of, 380, 521, 529-31, safeguarding of Persian, 423-5, 427-9, destruction of wells in Borneo, 566, German need for, 622, British imports of, 622, 656 See also Petrol

Oklahoma, USS, 545 Olympus, Mount, 199, 201 Oran, 575, Dunkerque m, 113, 115-16

Orel, 419
"Orient", Plin, 490, 634

Orion, HMS, at Cape Matapan, 193-4, in Battle of Crete, 255, 204

Orrin, Elsic, 720

Ottawa, Churchill in, 189, 598, 601-3 Ottawa Agreement, and Atlantic Charter, 387, 391

'Overlord' Operation, 585-6, 634

Pacific Ocean, dangers from Japanese Navy in, 158, U 5 warns Japan against encroachment in, 390, British battle squadron for, 485, 523-5, Japanese terms for peace in, 529-30, Japanese mastery of, 545, 547, 551, 554, 578-9, 623, regaining command of, 573, 579-80, 582, 622-3, unified commands in South-Western, 597-601, disasters to come in, 603

Paget, General Sir Bernard, Commanderin-Chief Home Forces, 468-9, minute to, 757

Pai-tak Pass, 429

Palaret, Sir Michael, 91-2, 200, 266
Palestine, 62, troops from, for Iraq, 227210, 289, defence of, 288, 158, reinforce-

ments for, 288-9, route to, through supplementary ration of, and log-book Turkey, 359, 437, 440, 491, Cavalry Division in, 288, 639-40, 652, 655, 712, Petroleum Department, 669, 744, minute illegal immigrants to, 658 to, 656 Palm Beach, 612-13 Petsamo, 461 Palmyra, 296, 713 "Phantoms, the", 176 Pantelleria, 26, plan to capture, 51-3 Philippines, Japanese menace to, 161, 165. Panzer troops, 176, in North Africa, 185, 380, 532, 554, Japanese attack on, 546, reinforcements for, through Australia. 299, 303, 305, 362, 369 Papagos, General, 13, 17, 67-8, 91, plan 593, in South-Western Pacific Comof, against German threat, 87-90, 96, mand, 598-9 Phillips, Admiral Sir Tom, 524, 548-51 and disposition of Greek forces, 195-6, suggests British evacuation, 199-200 Parachute troops, German, in N Africa, Phoebe, HMS, 265-6 Phosgene gas, inadequate production of, 175, German, in Crete, 240-1, 248, 252, 672 254, British neglect of, 677, 683, protec-Pile, General, 447-8, 730, 746 tion to hands of, 677, points concerning "Pilgrim", Operation, 388-9, 391, 634, 771 Pim, Captain, 588 exercise for, 715 Parliament, division in Secret Session, 743. Piræus, the, blowing up of munition ship calling up of Members, 755 ın, 196 Pas de Calais, British air superiority over, Pisa, raid on, 55 Placentia Bay, 380, 384, 438 456-7, 690 Platt, General, 72, 75, 79-80, 179 Patam, 548, 564 Paul, Prince, Regent of Yugoslavia, 138, Plymouth, air raids on, 39, controlling centre of Western Approaches moved British appeal to, 87, his fear of Germany, 139~41, abdication of, 143 from, 103 Pearl Harbour, Japanese attack on, 161, Points system, 723, 754-5 477, 533, 537-8, 544-5, US losses at, Pola, the, sinking of, 194 Poland, preparations for Russia's invasion 545, 554 in, 318, Russian negotiations with, 348-Pedder, Colonel, 296 Peloponnese, German troops in, 204 350, post-war frontiers of, 558 Polish troops, for Greece, 64, 95-6, 195, Penang, invasion of, 566 for Crete, 249, leave Syria, 287, in Pensions of widows of Service men killed Russia, 349–50, 767, in Tobruk, 367, in Britain, 452, in N Africa, 567, in Middle on leave, 678 Penelope, HMS, 435, 508, 512 Pennsylvania, USS, 545 Percival, General AE, 601 East, 655, officers from, for West Africa, 686, 752, armoured, 755-6 Pope, General, 676 Persia, plans for defence of, 351, 432, brought into Allied camp, 358-9, 404, 406, 430-2, transport of supplies to Port Darwin, US Air Force at, 546, supply base at, 598 Russia across, 403-4, 410, 412, 419, 423, Port Emergency Committees, 38 429-32, 436, 468, 472, 484, 732, 765, transport of British troops across, 411, Port Sudan, 708, 724 Portal, Marshal of the Royal Air Force Sir 413, 466, 472, 767, Russian troops in, Charles (Viscount), 380, and Operation "Tiger", 219, on strength of RAF, 413, 420, 431, 484, Germans in, 423-4, 378, minutes to, 449, 451, 640, 643, 649, 426, 429, 431, ultimatum to, 424, 426-7, 661-2, 669, 672, 680, 687, 689, 692, 717, Anglo-Russian invasion of, 426-30, conditions imposed on, 431-2, British air 721, 726, 728-30, 735, 744, 747-8, 752, accompanies Churchill to Washington, squadrons in North, 466 475, Germany 541, 555, 571, 573, and transatlantic plans attack on, 490-1, 761, transferred to Middle East Command, 564, improvflight, 626, 629 Ports, British, air attacks on, 37-9, 108, ing communications in, 732, 761 improving service at, 108-9, 133, diffi-Persia, Shah of, 428-30, 432 culties regarding use of, 131, use of Perth, H M S , 255, 265-6 small, 667, alternative facilities, 738 Pétain, Marshal, 8, 11, 589, and removal Portsmouth, air raids on, 38-9 of Dunkerque, 114–17, possible German Portugal, and Azores, 123, 388, German demand to, 489, illness of, 561 pressure on, 124, question of passage of Peter II, King of Yugoslavia, 143, 197, German troops through, 589 evacuation of, 198 n

Petrol, reduction in basic ration of, 688,

Post-war relief, pool of wheat for, 740

Poultry, backyard, 688, 757-8 Pound, Admiral of the Fleet Sir Dudley, First Sea Lord, discussions of, with Ghorniley, 123, and attack on Tripoli, 212-13, agrees to Operation "Tiger". 219, 222, and Bismarck, 282, minutes, ctc, to, 341, 434, 561, 637, 643, 648-9. 657, 663, 665, 669, 677, 681-2, 692, 710, 720, 727, 730, 737, 746, 749, 751, 768, 771, 780, 782, at first conference between Churchill and Roosevelt, 380, 382, and Far Lastern Fleet, 523-4, at Washington, 541, 555, announces loss of battleships, 551, on Duke of York, 556, 571, 573, and transatlantic flight, 626, minute from, on disposition of Fleet in Indian Ocean. 769-73, on battleship design, 781-4, mentioned, 106, 378 Pownall, Lieut.-General Sir Henry, 272, 566, 601, in Singapore, 593 "P Q" convoy, 461 Press, disclosures made by, 636 Pridham-Wippeil, Vice-Admiral, 193, 203 Prien, Captain, 110 Prince of Wales, II M S , 286 781, in pursuit of Biomarck, 271-3, 277, in action, 271, 286, Churchill's voyage in, 380-4, 399-400, Roosevelt on, 384, escorts Malta convoy, 433, sent to Far East, 469, 524-5, 547-8, 769, loss of, 548-51, 554 Princes, Chamber of, 667 Prinz Lugen, the, 270-3, 275, 277 Priorities, system of, 720 Prisoners, exchange of, radio messages concerning, 742 Production I accutive 101-2, minute to Proximity fuze, 742 Prussia, post-war treatment of, 558, 560 "Prusuan militarism", 638 "Puff-balls , 732 "Punishment", Operation, 155, 034 Purchasing Commission, British 762 Purvis, Arthur, 396, 762 Purvis Programme, 112

Queen Elizabeth, 222, 770, damage to, 512, 613-14, American troops on, 624, number of troops on, 666
Queen Mary, American troops on, 624, number of troops on, 666
Quinan, General 427, 437

Radar, 40, German, 42, use against U-boats, 110, 127, 458, use of, in pursuit of Bismarck, 278, airborne (A 5 V), 460, 665, stations in N W Approaches, 664, stations at Basra, 670

Radio beam bombing, 41-2, 716-17 Raeder, Admiral, and American aid to Britain, 126 Railways, delayed-action mines on, 731 See also Trans-Persian railway Ramillies, H M S , 105, 400, 770, in pursuit of Bismarck, 271, 277 Ramsay, Admural Sir B H, 645 Ramsbotham, Rt Hon Herwald, 785 Rashid Ali, attacks British, 226, 229, 231, 236, flight of, 234, steks German aid. 288, Russia recognises, 326, mentioned, 46, 225 Rawlings, Rear-Admiral, 255, 257, 264 Rayak, 205 Red Sea, end of Italian naval force in, 80, clear of enemy, 666 Regent, HMS, 198 H Reid, Rt Hon J S C , 785 Reith, Lord, Minister of Works and Buildings, 786, minutes to, 638, 737 Renown, HM 5, 51, 222, 605, in pursuit of Bismarck, 271-2, 279, for Far East, 523, 525, 768-71 Repulse, IIM 5, 665, 770, in pursuit of Bismarck, 271, sent to Far East, 524 5, 547, 768-9, 773, loss of, 548-51, 554 Resolution, HMS, 770 Retimo, 241, 248, 261, defence of, 247, 254-5, 262-3 Reuben James, USS, 460 Revenge, HMS, 770, in pursuit of Bismarck, 271, 277 UŠ Reykjivik, convoys to. Churchill in, 399-400 Rhodes, Butish plin to capture, 18, 32, 59 60, 64, 90, 96, 238, shelving of plan, 85, 89 90, 181, 211 239, German air bases in, 196, 241 Ribbentrop, Herr von, 144, 317, 518, 533, on German troop movements in Bilkans, 27 9, urges Japan to attack Singapore, 156, 160, Matsuoka's discussions with, 161-5, 167, delivers duclar ition of war, 327-8, told of Japanese attack on America, \$46 Richelien, the, 589 Rifles, production of, 644, 721, convoys carrying, 648, 658, American, for Home Defence, 658, 763, captured Italian, 754 Rintelen, General von, 146

Robert, Admiral, 590
Rockall, Radar station on, 663
Rockets, in defence of Milti, 187, carrying terial mines, 659, in chemical wirfare, 671, researches in, 741-2, various
types of, 753
Rodney, 11 M S., 105, 187, 215-16, in

Ritchie, General, in command of "Cru-

sider", 506 509-11

pursuit of Bismarck, 271, 277, 279-82, escorts Malta convoy, 473, for Far Bast, 523, 524 n, 525, 580, 770-I

Rogers, Commander Kelly, 625-9

Rome, Matsuoka at, 168

Rommel, Marshal Erwin, 175-7, sent to North Africa, 163, 176, attacks Agheila, 179, reinforcements for, 216-17, 221, 302-5, 433-4, 492, 507-8, 585, 621, British need to defeat, 298, 479, difficulties of, 299, 302, 357, 362-4, on defensive, 307, 362, complains of lack of supplies, 492, composition of army of, 497, attack on headquarters of, 498, raid of, 502-4, 509, intercepted oil supplies of, 507-8, retakes Sidi Rezegh, 509, Air Forces come to assistance of, 513, escape of, 621, 625

Roosevelt, Elhott, 384

Roosevelt, Mrs , 587

Roosevelt, President Franklin D, Churchill's correspondence with, 20, 22-4, 46, 78, 97, 111, 113-17, 121-125, 157-8, 185, 188, 207-9, 259, 272, 286, 294, 313, 330, 380-1, 409, 416, 436-8, 471, 478, 481-6, 492, 507, 526-7, 530, 533, 541-2, 680, 722, 739, and Harry Hopkins, 20-2, concerned for Italians in Abyssinia, 78, assents to Lend-Lease Bill, 111, gives armed aid to Britain, 119, 165, and Atlantic defence. 119-26, 458-9, on evacuation from Greece, 207-8, on Russian strength, 351, and defence of Middle East, 377, first meeting with Churchill, 377, 380, 384, and drafting of Atlantic Charter, 385-95, message of, to Stalin, 394, and supplies for Russia, 412, 414, 416-17, lends US transports, 435-9, 441, "shoot first" order of, 458-9, desires to bring US to war, 478, 527-8, 535, and Mountbatten, 481, his interest in N Africa, 489, 606, declines to meet Konoye, 525, on negotiations with Japan, 529, confirms Japanese attack, 538, Churchill visits, 540-2, 551, 555, 587 et seq, 604 et seq, and Stahn's proposals for post-war settlement, 560, 616, and Churchill's papers on future course of war, 573-4, Churchill's affection for 588, 608, map room of, 588, anxious to get US troops into action, 589, 624, and United Nations Pact, 590, 604-5, on need for unity of command in South-Western Pacific, 597-8, 600-1, talks to Litvinov, 604, and American war production, 610-11, and Churchill's 'phone call to Wendell Willkie, 617-18, allocates tanks to Egypt, 708, 712, mentioned, 397, 399-400

Rostov, 476

Rotterdam, air attack on, 729-30

Roumania, 315-16, co-operates with Germany, 11-12, 144, German troop concentration in, 16-17, 23, 27, 30, 58, 66, 147, bombing oilfields of, 31, Hungary and, 146-7, Germany guarantees, 163, British declaration of war on, 465, 467-468, 470, 472-5, invasion of Russia by, 467, Soviet post-war plans for, 558-9 Roumanian troops in Russian campaign,

317, 338, 405 "Round-up", Operation, 585, 634

Royal Air Force, increasing strength, 4, 765, in Greece, 9, 14, 27, 31, 93-4, 195, 198, 202, 206, strength of, compared with German, 36-7, 486, 687, 694-6, 719, 730, in Middle East, 61, 187-8, 245, 355-6, 439, 669, reinforcements needed for, 93-4, attacks battle-cruisers at Brest. 129, 672-3, based on Malta, 187, 434, in Iraq, 226, 228-30, 233, weakness of in Crete, 245, 247, aids evacuation of Crete, 263, 266, authorised to act against German aircraft on French territory, 289, in Operation "Battleaxe", 307, 355-6, raids Germany, 340, 346, 410, in Russia, 345, 403, 744-5, and defence of Britain, 374-5, 456-8, 487, use to be made of, during and before battle, 442-443, technicians lent to factories, 447, increased fighter strength, 449, need for more bombers for, 450-1, to help defend Caucasus, 466, 475; in Operation "Crusader", 496-7, 500, 502, 504, 506, 511, 567, at Singapore, 548, sent to India, 564-5; tied up at home, 621, training of pilots for, in USA, 680-1, daylight bombing by, 687, 690, ground personnel of, to defend aerodromes, 689, 692-3, in co-operation with Army, 726, 728, ground personnel of, scale of, 734, 744, over France, French money for, 735, Irish Wing of, 740, losses in, 747-8

Royal Army Service Corps, 438-9, 735 Royal Artillery, 442

Royal Canadian Navy, 120, 126

Royal Navy, shipbuilding and repairs in, 108, 112-13, 779-84, help given to Russia by, 340, 344, and defence of Britain, 458, in Far East, 469, 485, 523-525, needs to develop fuelling at sea, 663-4, Air Force and, 728, value of rocket to, 742

Royal Sovereign, HMS, 770

Rubber, sent from Russia to Germany, 326, sent to Russia from England, 346, 408

Rundstedt, Marshal von, in Russian cam-

paign, 323, 338, 347-8, 477, advance of, 476

Russia, Soviet, effect of German action 'n Balkans on, 9-10, 12, 26-9, 84, pressure of, on Bulgaria, 11, relations with Germany, 12, 163-4, 167, 169-70, s10, effect of British action on, 31, German preparations to invade, 37, 42-43, 49, 84, 130, 164, 170, 251, 315-20, 323-7, Hitler's hatred of, 44. and Furkey, 97, 163, occupies Bessarabia and Bukovina, 139, ties between England and, 163-4, signs Neutrality Pact with Japan, 169-70, 172; German invasion of, 172, 323, 328-30, 337-8, disastrous mistakes of, 315, 328-9, sends supplies to Germany, 317, 324, 338, seeks to appease Germany, 326-7, Germany declares war on, 327-8, conduct of German troops in, 329, US-British help for, 330-3, 338-9, 343-6, 351, 377 383, 395-6, 402 et seq, 432, 552, 569 574, 582, demands "Second Front". 339-40, 343, 405-7, 409-13, 419, and agreement with Poland, 348-50, Polish prisoners in, 348-50, at first a liability rather than an asset to Britain, 351-2, and Atlantic Charter, 390-1, 399, and invasion of Persia, 404, 424, 427, and Japan, 404, 406, 519, 529, 553, 557, 560, losses in, 405; possibility of capitulation of, 409. British troops to 21d, 411, 420, 441, 466, 471, 488, reception of Anglo-US Mission in, 415-16, transport of supplies to, 417-18, 436-7, 456, 461, 466, morale in, 418, unreasonable reproaches of, 420, 469-70, medical aid to, 421-2, consultations with, on military matters, 465-6, 468-73, 475, German failure in, 553, 574-5, 745, Stalin's territorial ambitions for, 558-60, 615-16, Eastern Army of, 560, not represented on Combined Chiefs of Staff Committee, 609, S American copper for, 646, and Wheat Agreement, 739, munitions of war for, 762-4, directive for Anglo-American conference with, 764-8, Polish and Czech armies in, 767

Russian Air Force, destroyed on ground, 323, 328-30, 350, losses sustained by,

410, strength of, 486

Russian Army, taken by surprise, 328, 350, strength of, 338, 476-7, in Persia, 413, 420, 427, 429, 431-2, 484; re-equipment of, 763-4

Russian campaign, German policy for conduct in, 329, German initial successes, 337-8, 347-8, 350-1, 405, effect of, on N Africa, 355, 359-60; Russian resistance in, 401, 404, 419, 472, 476, 622, guerrilla warfare in, 401, effect of winter on, 476-7, 486, 553, 574, 622; German aircraft lost in, 730, German films of, 731 Russian Military Mission, 340-1 Russian Navy, British contact with, 341, compensation for losses in, 411-13 Rutba, 230-1

Saigon, 136, 549, 551 St. John's, Newfoundland, escort base at. St Pierre, occupation of, 500-1 Satonii, Prince, 518 Sakhalın, 169 Salazar, Dr., 188 Salford, air raids on, 38 Salonika, German threat to, 9, 13, 16-17, 30, 145, difficulty of covering, 64, 68, defence of, 86-7 Salter, Sir Arthur, 660 Salvage Service, 104, 130, 682 Sandford, Brigadicr, 73 Sarajevo, 142 Satyagrahi prisoners, 748 Scandinavia, preparing troops for landing in, 621 See also Norway Scapa Flow, 22, 381, security of, 614 Scarpanto, attack on, 261, 264 Scharnhorst, the, attacks shipping, 104-5 124, in Brest, 129-30, 270, 672, damage to, 673 # Scheer, the, attacks shipping, 104 Schulenburg, Count von, 28, 144, 161, on-Matsucka's visit to Moscow, 169-70, interviews Hitler before invasion of Russia, 123-4, telegrams of, on Russian-German relations, 325-7, delivers declaration of war, 327-8, end of, 328 ii "Scorcher", Operation, 232, 249-50, 300, Scotland, new airfields in, 99, production of sugar-beet in, 685 Scottish Commando, exploit of, 499 "Sea Lion", Operation, 634 Sebastopol, 440 "Second Front", destruction of, 315, 338, 420, Russian demand for, 339, 343, 405-7, 411-13, 419, impossibility of forming, 339, 344, 407, 409-10, 560, Northern, 408, 766, in Sicily, 479-80, Churchill's plans for, 573, 581-4, 766, Secrecy, drive to secure greater, 635-6, 650 Secret Scisson, division in, 743 Serbia, German army in, 197 Serbs, antagonism between Croat and, 138~40 Sforza Count, 78

Shadow Brigade, West African, 686 Shahabad, 429 Shaiba, 225, 229 Sheferzen, 502, 509 Sheffield, HMS, 54, 222, in pursuit of Bismarck, 272, 279, 282 Shigemitsu, Mr., 167, visits Churchill. 150-60 Shinwell, Rt. Hon. Emanuel, 694 Shipbuilding, US programme, 602, 611-612 Shipping air attacks on, 99, 107, 127, 130. 461-2, reduction of operative fertility of, 100, losses of, 100-2, 106, 110-11, 120-1. 127-8, 135-7, 463-4, 697, 753 H; repair of damaged, 100-1, 104, 108, 121, 130, salvaging of, 104, 130, weekly publication of losses discontinued, 128, 133, German estimates of losses, 162; not available for Second Front, 409-10, 412-413, from US, 435-9, 441, 708, 724, assembly of, for invasion, 455-8. Japanese attack on British, 537, shortage of, for Allied transport, 590, 598, 613, 620, 622, 624, 682, 705, 707, 766, mechanical transport, 650, refrigerated meat, 666, demands for, 734, limitations of, in help to Russia, 764-5 Shipping, Ministry of, 101, 132 Shoeburyness, 753 Siam, 642, 728, armistice between Vichy and, 156, Japanese encroachments in, 157, 389-90, Japanese threat to, 523, 532, 534, 565 Sicily, German Air Force in, 8, 26, 52, 433, 491, 513, 567, scheme for occupation of, 8, 90, 479-80, 482, 486-90, Italian Air I orce in, 433-4, German reinforcement of, 487, Allied landings on, 586 Sidi Azeiz, 300 Sidi Barrani, 762 Sidi Omar, 303, 306, 497, 499-500, enemy garrison cut off in, 305 51di Rezegh, battle for, 496, 498-501, 504-505, 509, 625 Sidi Sulciman, 302, 306 Sidon, 295 Sierra Leone convoys, raids on, 105, 461, need destroyer escort, 664 Sikorski, General, 95-6, 686, 756, and Soviet-Polish Agreement, 348-9 Simon, Viscount, 785, interviews Hess, Simovic, General, 140-4, 153-4 Sinclur, Rt Hon Sir Archibald, Secretary of State for Air, minutes to, 34-6, 640, 658, 662, 664, 671, 678, 689, 710, 716-717, 719, 724, 735, 740-1, 746-7, 775, mentioned, 450, 784

Singapore, Japanese urged to attack, 156-8, 160, 165, relative importance of Egypt and, 375-6, 379, defence of, 376, 565, Duff Cooper at, 379, 543, British Eastern Fleet based on, 524-5, Japan attacks, 543, 554, British battleships at, 547-8, 772, aircraft based on, 548, 550, 772, reinforcements for, 565-6, 592-3, peril of, 592-3, 623; garrison of, 657; personnel of batteries, etc , at, 678 Singleton, Lord Justice, reports on dispatch of Churchill tanks, 777, mentioned, 36-37, 687, 730 Singora, 548-9, 564 Skoplje, 142 Slamat, the, sinking of, 204-5 Slim, Field-Marshal Sir William, in Persia, 427, 429 Slovenia, 197 Smart, Air Vice-Marshal, at Habbaniya, 226, 229, minute to, 230 Smoke-screens, against air attack, 38, 648, for Tobruk harbour, 676 Smolensk, German capture of, 338 Smuts, Field-Marshal Rt Hon J C, 95, telegrams from, 17, 73; telegrams, etc., to, 19, 62, 65, 85, 250, 326, 441, 459, 525, 527, 561-2, 679, confers with Eden, 61, 64, 85, 92-3, sends fresh troops to Kenya, 73-5, agrees on aid to Greece, 94, and Imperial War Cabinet, 365, as Honorary Field-Marshal, 679, in War Cabinet, 759 Smyrna, 30 Sollum, 184-5, 222, 232, 355, Gott's attack on, 299-302, Germans hold, 306, enemy garrison cut off in, 505, 511, 567 Somaliland campaign, 69, 75-8 See also British, French, Italian Somaliland Somervell, Rt Hon Sir Donald, 785 Somerville, Admiral of the Fleet Sir James, raids Genoa, 54-5, escorts tank-carrying convoy, 222, in pursuit of Bismarck, 271-272, 275, 277, 279, escorts Malta convoys, 432 Soong, T V, signs United Nations Pact, Soudan, Italians driven from, 72 Soudanese troops, in Abyssinia, 80 South Africa, does not desire representation on War Cabinet, 759 South African Air Force, 76, 79 South African troops, 656, 679, in East African campaign, 15, 19, 76-7, in Kenya, 60, 64, 73, 75, 700, in Egypt, 85, 97, 702-3, in North Africa, 179, 251, 496, 501, 504, 511, 708 South America, copper supplies of, 646 Southampton, HMS, 53

Soviet-German Pact, effect on Yugoslavia, 139, and Poland, 348-9

Soviet-Polish Agreement, 148-50

Spain, question of passage of German troops through, 7, 11, 577-8, 589, 766, German pressure on, 124-5, 251, 486, 488, 491, influence of American aid to Britain on, 126, growing pessimism in, 208, effect of British success in Africa on, 484

Sphakia, 239, 246, troops evacuated from,

Spitzbergen, British warships at, 344-5,

British raid on, 461

Stalin, Generalissimo, and Hess episode, 49, prepares pact with Yugoslavia, 154-155, 324, Matsuoka visits, 161, 166, 169-170, demonstrates friendship for Germany, 170, blunders of, 316, 328-9, and division of British Empire, 317-18, 338, Churchill's correspondence with, 320-3. 340, 342-6, 403-7, 411-12, 414, 418, 430-1, 468-73, chairman of Council of People's Commissars, 325, demands Second Front, 339-40, 343, 405-6, 409, 411-13, Hopkins's mission to, 381, Churchill-Roosevelt message to, 394, and Arctic convoys, 417, on post-war organisation of peace, 469, 473, \$58-60, demands British rupture with Finland, 469-74, and war with Japan, 557

Stark, Admiral, 535, 782 Statistical Department, 102

Steel, import of, 112, 655, production in English-speaking nations, 168, Japanese deficient in, 528

Stettinius, Edward R., 612

Stimson, H L, 692, realises risk of neutrality, 535, and US troops for Ircland, 606

York, HMS, 402

Stoyadinovic, M. 139, 067-8

Submarines, British, in Arctic, 344, midget Italian, raid Valetta, 433, British, based on Malta, 433, "human torpedoes" from, Italian, in Alexandria, 512, in US Asiatic Fleet, 546, Dutch, in Far East, 564, 566, value of, in Far Fast, 579, British losses in, 749 See also U-boats Suda, attack on, 248, 255

Suda Bay, fuelling base at, 55, warships based on, 84, 238, defences of, 239, 241. 247, air attacks on, 255, 261, hopeless position of troops at, 261-2, enemy reaches, 263

Suez Canal, mines in, 64, 84, 89-90, 163, US supplies to, 251, air attacks on, 287-8, defence of, 296

Suffolk, IIMS, in pursuit of Bismarck, 271-3, 278

Sugar-beet production, 685-6 Sunderland flying-boats, in Coastal Command, 721

Superb, H M S, 747 n "Supercharge", Operation, 370, 634 "Super-Gymnast", Operation, 608, 621, 624, 634

Supply, Ministry of, and Import Executive. 101, and import programme for 1941, 112-13

Surabaya, 599

Surface raiders, attack shipping, 104-6. 124-6, 162, 270, disguised merchant ships as, 46?-3, losses due to, 464

Swansea, air raids on, 38 Sweden, 412, 766

Sweets rationing, 754-5

Swilly, Lough, 645

Swordfish torpedo aircraft, attack Bismarck, 278-9, 282

Sydney, Australian cruiser, 462

Sydney, Cape Breton, convoys, 459-60 Syria, 232, possible breach with Vichy over, 78, Axis Armistice Commission in, 224, 287, troops for invasion of, 227, 288-90, 293, 295, effects of German control of, 287-8, 291, preparations for occupation of, 200-4, 710, promise of independence to, 294, campaign in, 295-207, 354, defence of, 351, 358-60, risk to, from North, 437, 440, 490-1, 760-1, airfields of, importance of owning, 684-685, 687, Vichy instructions to, 714, escape of German legionnaires from, 736

Takoradi, 9, 62, 665, route to Egypt via, 243, 681; bottleneck at, 680-1

Tangier, German penetration into, 125, US interest in, 189, time needed to land division at, 648

Tank landing-craft, 663, 746, conversion of merchant ships into, 484-5, 722, converted to entry guns, 691

Tank Parliament, 674-7

Tankers, refuelling from, 663, improve-

ment in turn-round of, 668-9

Tanks, different types, 16 n, Wavell's need for, 217-18, sent through Meditertanean, 218-23, 232, 298, Home force shortage of, 219, 455, imperfect for Desert fighting, 304, losses of, in "Battleaxe", 307, Auchinleck's requirements, 354-6, 358-9, use of, in invasion 374-5, sent to Russia, 408, 417-19. American production of, 416-17, 610-611, 708, 712, 722, 762-3, artillery versus, 442-3, battle in Desert, 494, 496, strength of, in Operation "Crusider' 496-7, losses of, in "Crusader", 500-1,

504-5, amphibian, tactics against, 642, training of men for, 671, 675, 712; captured German, 674, 676, conference on question of, 674-5, German "thickskinned", 676, number of, to brigade. 682, Wavell's strength in, 684, names for, 692, need for heavier, 694; number unfit for service, 729, 774-5, repairing of, 774-5, aerial weapons against, 775. making desert-worthy, 776-8, faulty transport of Churchill, 776-7 Tedder, Marshal of the Royal Air Force (Baron), 182, 231, 442, and battle for Crete, 249-50, 263, and advance into Syria, 201, minutes to, 300, and Opera-non "Cirusader", 500, 505-6, telegrams, etc, from, 504 Teheran, 404, 425, Germans in, 423-4, Wavell in, 430, occupation of, 432, Mufti at. 736 Telegrams, unnecessary length of official, 639-40, 653, 742, 744 Teleki, Count, 147-8 Temeraire, H M S , 779-81, 783 Tempe gorge, 201 Tenedos, II M 5, 548 Tennant, Captain, 550 Thadand - tee Siam Thermopyle, retreat to, 199-202 Thomas, General, 326 Thompson, Commander, 627-8 Thrace, Turkish Army in, 30, 33, 150, Greek troops from, 195 Tiflis, Wavell in, 431, 466 "Tiger", Operation, 218-23, 232, 243, 208, 307, 634, No 2, 681 "Tiger Cubs", 299, 686 delays in utilising 302-3, 305, 308 Tikhvin, 405 Timbaki, 239, 246, 263 Timber, import of, 724, 751, felling of, 754 Timoshenko, Marshal, Army Group of, 347, withdraws towards Moscow, 419 Tirpitz, the, 106, 524-5, preoccupations caused by presence of, 768, 771, 773-4 Tobruk, capture of, 5-6, 8, 14, 17, German threat to, 177, 181, 355, defence of, 182-186, 188, 221, 364, reinforced by sea, 184, 188, 201, 364, prisoners taken by, 186, 221, aircraft destroyed in, 221, need to relieve, 298, 304, 307, sorties from, 302, 308, 362, 364, 497, 501, 504-5, 509, enemy strength before, 305; difficulty of holding, 356, 358, a threat to enemy, 357, 362-4, 497, air raids on, 364, 368, relieving Australians in, 367-72; remforcements to, 367, R N and, 371-2; German plan to take, 490-1, 493, 497, 498, contact established with, 509, 511, tanks in, 674, protection to ships at, 676;

enemy defences of, 679, 683, mentioned, 353, 670, 724, 763 Tojo, General, 520, 534; Prime Minister, 525-6 Tomahawk fighters, 94, for Middle East, 243, for Russia, 345, 403 "Torch", Operation, 585-6, 634 Torpedo aircraft sent to Egypt, 613-14 Tory Island, 664 Toulon, proposal to transfer Dunkerque to. 113-17, French fleet at, 561, 575, 577 Tovey, Admiral of the Fleet (Baron), in pursuit of Bismarck, 271, 277, 282 Trade unionists, Norwegian, shooting of, Trans-Persian railway, 733, improvements to, 403-4, 407-8, 438, 732, 765, sending of troops by, 441, 466, 767 Transport, Ministry of, and Import Execuuve, 101, 109, combined with Ministry of Shipping, 132 Transport aircraft, for ferry pilots, 680-1. need for, 683 Trento Motorised Division, 305 Trincomalee, Fleet at, 770-2 Tripartite Pact, Bulgaria and, 11, 141, Yugoslavia and, 12, 140-2, Hungary and, 146-7, Japan and, 159-60, 172, 520, Russia offered accession to, 163, purpose of, 165 Tripoli, enemy communications with, 51-52, 186-7, 362-3, advance against, 58-9, Italian acquisition of, 71, Rommel sent to, 163, 176, bombardment of, 187, 212-215, 434; blocking harbour of, 187, 213-214, 434; bombing of, 212, 214-15, 434, reinforcements arriving at, 221, 621, British scheme to capture, 479, 482, 507, 575, 621, 751, air transport to, 492, minefield near, 512-13, blockade of, 677 Tripolitania, German armoured troops in, 174-6; vulnerable coastal road of, 181, 186-7, 362-3; British plan to occupy, 487, 490, 496 "Truncheon", Operation, 561, 634
"Tube Alloys", 730 n Tula, 419 Tunisia, rallying of Vichy in, 479, enemy need for supply route through, 512, Anglo-American plan for, 575, German troops in, 585 Turkey, 14; Britain seeks entry of, into war, 9, 61, 84-6, 95, 149-51, 403, 407, 412, 415, 575, 767, effect of events in Greece and Balkans on, 17-19, 29, 58-9, 65, 93, German threat to, 26-7, 30, 32-3, 86, 315-16, British promise of aid to, 31-2, 58, 63-5, 475, 484, 649, 761, 767,

neutrality of, 65, 90, 408, 420, 436, 582,

Eden's discussions with, 85-6; influence

of American aid on, 126, effect of British withdrawal from Eastern Mediterranean on, 158, Russian declaration to, 163, growing pessimism of, 208, communications with, through Iraq, 227, effect of German control of Syria on, 288, 296, possibility of German attack hrough, 292, 359-60, 415, 437, 440-1, 190, 575, 684, 760-1; effect of Russian campaign on, 358, a protection to flank of Army of Nile, 484, 767, post-war, 558, disagreement between Greece and, 641, air squadrons for, 649

I yncside, Churchill visits, 22

U-boats, 104, 381-2, increasing numbers of, 99, 122, 126, 162, 459, attack convoys, 105, 119, 459, 664, measures taken against, 107, 110, 118, 458-61, 730, 749, "wolf-pack" tactics of, 109-110, 119, losses of, 110, 462-3, 749, move farther west, 118-21, 123, crews for, 126-7, merchant ships sunk by, 135-7, 165, 464, come to help of Bismarck, 283, 185, in Bay of Biscay, 460, captured by anteraft, 460-1, 737 n, m Mediterranean, 462, 492-3, 512-13, fuelling base of, 064-6, Focke-Wulf signals to, 664-5, for Yugoslav Navy, 737, prisoners from, 746; number of, in Atlantic, 752 Ukraine, 251, 405, 476

United Nations Pact, 590, 604-7 United States, Halifax arrives in, 22-3, supplies from, 57, 111, 251, 314, 355, 397, 552-7, 569, aid from, in shipping, 100-1, 435-9, 441, 708, 724, 733, Lend-Lease Bill passed in, 111, 113, attitude of, to France, 113-17, 209, 507, 561, 752, armed aid from, 119, 762-3, secret Staff discussions with Britain, 119, bases of, in British territory, 119, 122, Greenland bases of, 121, extends Security Zone, 122-3, 388-9, 391, 399, 434, 459, acrial reconnaissance of, in Atlantic, 121, moves nearer war, 126, 243, 251, 458-60, 768, Hitler anxious to avoid war, 126. 160, 167, Unlimited National Emergency in, 126, Icelandic base of, 129, possibility of Japanese aggression against, 158-61, 165, Ribbentrop on aid from, to Britain, 165, Japanese negotiations with, 170-1, 520, 525, 529-33, reaction of, to Greek campaign, 207, supplies from, to Middle East, 314, 355, 708-9, sends warnings to Russia, 328, and help to Russia, 330, 333, 339, 345, 351, 377, 381. 395-6, 402-3, 408, 412, 414, 416-18, 553, sends Mission to Britain, 377-8, attitude of, to Japan, 379-80, 404, 415, 485, 520522, 527; Protection in, 387, Japanese proposals to, 389-90, 529-10, and Atlantic Charter, 395; finishes Persian railway, 432, interest in British desence in, 457, 620; warns Finland, 467, attacked by Japan, 477, 537 et seq, Mountbatten in, 481; Britain promises support to, against Japan, 485, 528, 534, and intervention in Morocco, 489, 561, help to China from, 527, deciphers Japanese messages, 532-3, 535, risks of neutrality of, 535, enters war, 538-40, temporary embargo on supplies from, 554, immeasurable resources of, 570-1, Free French and, 577-578; security precautions in, 595, shipbuilding programme in, 602, 611-12, 620, 660, scale of production in, 610-12, 620, "Commandos" on W coast of, 623, Food Mission to, 660, messages from Service attachés at Embassy of, 661; tanks from, 674, 708, 712, 722, British pilots trained in, 680-1, and Martinique, 682, pork output of, 711, 717, aircraft production in, 717-18; bombers from, over Germany, 721, British tank personnel trained in, 722, lorries from, for Persia, 732, convoy vessels built in, 746 n., 747

United States Air Force, squadrons of, in Britain, 576-7, 620, to assist in bombing of Germany, 581, 620, experts at

Takoradi, 681

United States Army, troops for N Ireland, 482-3, 576, 590, 606, 613, 621, 624, for Morocco, 489, 576, 624-5, and passing of Draft Bill, 528, 535, numerical strength of, 581, 620, in Australia, 593. to replace British in Iceland, 621; transport of troops to Ircland, 624-5

United States Navy, patrols W Atlantic, 216, 459, transports of, lent to Britain, 437, 441, first loss suffered by, 460, losses of, at Pearl Harbour, 545, Asiatic I lect of, attack on, 546, British battleships and, 547, 580, responsible for E Pacific

UP weapon-see Rockets Upholder, HMS, 55 U Saw, 727 Utterson-Kelso, General, 757

Valetta, air-raid on, 433 Valiant, H M S , 770, at Battle of Matapan. 193-4, at bombardment of Tripoli, 214, in defence of Crete, 255, 257-9, damage to, 512, 613-14 Valona, 9, 14, 26, 195, 197 Vampire, H.M.S., 548 Vanguard, 11.M S , 113, 780

Vian, Admiral Sir Philip, 279, 461
Vichy Government, and North Africa, and
Jibouti, 77–8, and Syria, 78, 287, 294–5,
714, and removal of Dunkerque to
Toulon, 113–17, armistice between Siam
and, 156, Communist propaganda in,
164, U.S. handling of, 209, 507, 589,
752, and Gibraitar, 251, effect of Desert
victory on, 479, 482, 487, 507, 575,
Japanese pressure on, 520, effect of U.S.
participation in war on, 560–1, 575,
Churchill speaks to Canadian Parliament
on, 601, relations with Britain, 650, 651,
653, agent from, 714, mentioned, 7–8,
10–11, 479, 482–3, 575–8
"Victor", training exercise, 647–8, 668

"Victor", training exercise, 647-8, 668
Victorious, H M S, 243, 461, 780, in pursuit of Bisimarck, 271-2, 274, 277-8, in attack on battle-cruisers, 673, for Mediterranean, 681, 685, 769, Grummans for, 725

Vittorio Veneto, damage to, 194 Vladivostok, supplies through, 404, 411, 419, 469, 765 Vyshinsky, M, 321-2

Wake Island, 591-2
Wake-Walker, Admiral Sir William, 274
Walker, Commander F J, 462
Walmer Castle, 737
Wanklyn, Lieut-Commander Malcolm,
VC, 55

War Aims, statement of Committee on,

637

War Cabinet, decides on aid to Greece, 94, representative of, m Middle East, 311-314, and agreement with Russia, 341, Menzies and, 365, and Atlantic Charter, 392, 397, approves Persian operation, 426, man-power surveys before, 454, declares war on Japan, 538, 542, Churchill's reports to, from USA, 588-90, 598, 600, and United Nations Pact, 590, 605, Australia seeks representation on, 758-60

skilled men in Army, 749, 756-7
War Production Budget (1942), 750-1
War Transport, Ministry of, 132, 786 n
Warspite, H M S, 770, at Battle of Matapan, 193, at bombardment of Tripoli, 214, in defence of Crete, 255, 257, 259.

Washington, secret Staff discussions at, 119, Churchill's visit to, 540-2, 587 et seq, 604 et seq, 624-5

Wavell, Field-Marshal Sir A P (Earl), 6, 182, North African campaigns of, 9, 16-17, 305-9, minutes, telegrams, etc., to, 16, 18, 56, 74, 76-8, 178, 180, 183-4, 186, 190, 192, 200, 220-1, 227, 229-31, 241, 243, 246, 249-50, 260, 289-92, 299, 302, 309, 313, 430, 564, 600, confers in Athens, 17, 19, 61, 66-8, 88, told to give Greek situation priority, 17, 32, 58, confers with Eden and Dill, 57, 59, 63-5, 92, minutes, telegrams, etc, from, 59, 73, 76, 174, 179, 183-4, 186, 191, 217, 223, 230, 241, 249, 262, 291, 299, 302-4, 707, and disposition of forces in Middle East, 64, 654-5, East African campaigns of, 72, 74-80, against blockade of libouti. 77, and weakness of Desert Flank, 173-4, 179-80, on German threat in North Africa, 174, 179, 217, 221-2, nspects Desert Flank, 178, visits front, 180, 182-183, authorises withdrawal in Greece, 199, orders re-embarkation of troops, 202-3, on his weakness in armour, 217, 304, 354, desires not to repeat "Tiger", 223, reluctant to help in Iraq, 227-31, 235, 308, multitudinous cares of, 235, 239, 288, 707, in Crete, 241, and evacuation of troops from Crete, 262, 265, and invasion of Syria, 288, 290-1, 296, misunderstanding with, 290-1, offers to resign, 290, 308, achievements of, 297, prepares for attack in Western Desert, 298-305, 684-5, 700, during attack, 306, 308, replacement of, 308-10, 313-14, effect of German desert victories on, 308-9, and Persia, 359, "led astray" by politicians, 360-1, and Persian campaign, 424, 430, at Tiflis, 431, 466, suggested visit of, to Moscow, 466, 468-469, against Operation "Whipcord", 489-90, and defence of Burma, 564-5, 593, reinforcements to, 565-6, 593, 707, chosen to command in South-Western Pacific, 597-601, 607, pro-Arab, 658, miscalculation of, 673, strategic reserve of. 701

Weizmann, Dr, 658 Weizsacker, M, 324-5

Welles, Sumner, at conference between Churchill and Roosevelt, 381, 384, 387, in discussions at White House, 589

Wellington bombers, in Greece, 195, in Iraq, 229, in N Africa, 680

Welsh Regiment, in Crete, 261

Werth, General, 148

West Africa, Allied plans regarding, 561-562, 582

West African Brigades, 706, in Kenya, 74, 654, 700, 708, Polish officers for, 686, 752.

West Indies, US bases in, 122 West Virginia, USS, 545

Westbrook, T C L, 709

Western Approaches, controlling centre of, 103, U-boats sunk in, 110, 118, Uboat captured by urcraft in, 460-1

Western Desert, fighting in, 232, 250, question of renewed offensive in, 353-301, 369, 439, 684-5, reinforcements for. 412, Auchinleck's offensive in, 471, 473, 475, 477, 482, plans to follow up victory m. 479-80, 482-4, 486-90, effects expected from victory in, 484, Air Force, 497 See also Cyrcnatca, Libya, North Africa

Weygand, General, 7-8, 10-11, 589, 646, reaction of British N African victories on, 482, 487, 489, 589, replacement of. 507, 561, fails to reply to British offers, 649-50, 706; weakness of, 657

Wheat Agreement, 739-40

"Whipcord", Operation, 479-80, 482, 486-8, 634, abandonment of, 488-9

White House, Churchill's visit to, 587 et seq, 604 et seq, 624-5, Christmas at.

Whitehall, vulnerability of, to air attack,

Whatle cogne, 723

Willkie, Wendell, 23, Churchill's 'phone call to, 617-18

Wilson, 5ir Charles (Lord Moran), 550, 612-13, 626

Wilson, Field-Marshal Sir Henry Maitland, commands forces in Greece, 66, 88, 91, 195, 198-201, minute to, 199, and advance into Syria, 200-1, suggested for N Africa, 354, 359, 361, and escape of German Legionnaires, 736

Wmant, John G, and Pearl Harbour, 537-538, on German strouty films, 731, mentioned, 39, 330-1, 739

Wingate, Colonel, 73, 80

Wolverine, HMS, 110

Women, recruitment, for air defence, 448-449; needed for Army, 453, conscription

of, 455, employment of married, 455, in anti-aircraft batteries, 743, 745 Womersley, Rt. Hon Sir Walter, 786 Wood, Rt Hon, Sir Kingsley, Chancellor of Exchequer, 541, 785, minutes to, 678, Woolton, Lord, Minister of food, 785, munutes to, 660, 663, 688, 710, 714, 717, 753, 755, 757 "Workshop", Operation, 51-3, 634 Wryneck, H M 5, 205

Yamamoto, Admiral, and Pearl Harbour, 545 Yannina, 197 Yonai, Admiral, 518-10 "Yorker", Operation, 701 Young, Sir Mark, 563 Young Soldiers Battalions, 452-3 Yugoslavia, 14, 315-16, Britain seeks cooperation of, 9, 19, 33, 58-9, 61, 65, 83-4, 86-7, 141-2, t51-4, German wish for co-operation of, 12, 140-1, 147, doubtful attitude of, 66, 68, 86, 95, 139-42, effect of British action in Grecce on, 93, value of ittack on Albima by, 96-97, division and disintegration in, 138-139, signs pact with Hungary, 130. Churchill's appeal to, 141-2, Revolution in, 142-4, 148, I littler prepares to destroy, 114-7, fuls to act, 153-4, Russia prepures pact with, 154-5, 324, German invasion of, 195 8, capitulation of, 198, effect of revolution in, on Hither's plans, 319-20, 323, Minister of, expelled from Russia, 126, post-war, 558, U-boat for, 737, guerrilli warine m, 752

Zagreb, 142-3, 197 Zara, the, sinking of, 194

Zemun, 140, 113

Yunnan, Japanese threat to, 526-7